

DUE DATE SLIP**GOVT. COLLEGE, LIBRARY**

KOTA (Raj)

Students can retain library books only for two weeks at the most

BORROWER'S No	DUE DATE	SIGNATURE

॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रंथमाला

६२

७७७७७

आदर्श-

हिन्दी-संस्कृत-कोशः

डॉ० रामसरूप 'रसिकेश'

शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल० (संस्कृत), एम० ए०

पीएच० टी० (हिन्दी), विद्यावाचस्पति (वर्ष०)

पूर्व-प्राध्यापक, डी० ए० बी० कॉलेज (लाहौर), हंसराज कॉलेज

(दिल्ली) तथा दिल्ली विश्वविद्यालय



चौरवम्बा विद्याभवन

वाराणसी २२१००१

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय सस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)

चोक (बनारस स्टेट बैंक भवन के पोछे),

पोस्ट बाक्स नं० ६६

वाराणसी २२१००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण

१९७६



अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा सुरमार्ती प्रकाशन

(भारतीय सस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक-विक्रेता)

के० ३७/११७, गोपाल मन्दिर सेन

पोस्ट बाक्स नं० १२६

वाराणसी २२१००१

मुद्रक—

श्रीजी मुद्रणालय

वाराणसी

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
32

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



ĀDARSA—

HINDĪ-SANSKRIT-KOŚA

By

Dr Ramsarupa 'Rasikesha'

*Shastri M A, M O L (San), M A Ph D, (Hindi),
Vidyacharya (Dharmashastra)*

Ex Professor

D A V College (Lahore), Hansraja College (Delhi)
and Delhi University



THE
CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
VARANASI

© CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)
Post Box No 60
VARANASI 221001

Second Edition

1979

Price Rs ~~50.00~~ 1

Also can be had of
CHAUKHAMBA SURABHARATI PRAKASHAN
(*Oriental Booksellers & Publishers*)
K 37/117, Gopal Mandir Lane
Post Box No 129
VARANASI 221001



समर्पणम्

दिवङ्गतां जननीं

सीतां

प्रति

नमस्कृत्य वदामि त्वां यदि पुण्य मया कृतम् ।
अन्यस्यामपि जात्यां मे त्वमेव जननी भव ॥



प्राक्कथन

प्रोफेसर विश्वबन्धु शास्त्री

M A, M O L., d' A Kt. C. T.

आदरणीय संचालक, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

संस्कृत भाषा का विशाल, सर्वतोमुख साहित्य हो, निःसंदेह, वह सर्वोत्तम बपीती है, जो प्राचीन भारत से नवभारत को मिली है। संस्कृत-भाषा अतीव चिरंजीविनी है, वस्तुतः, अमिट और अमर है। सद्गुरुओं वर्यं पूर्व के हमारे पुरखा इसी देवबाणी के द्वारा अपना सब वाग्यवहार चलाते थे। धीरे-धीरे फिर वह समय आया, जब शिक्षित जन ही इसका शुद्ध प्रयोग कर पाने में और शेष-सर्व-साधारण लोग इसके अनेक विकृत रूपों का प्रयोग करने लगे थे। वही विकृत रूप, पीछे—माली, प्राकृत तथा अपभ्रंश कहलाए और बोल-चाल एवं साहित्य-सृष्टि के समुद्रत माध्यम भी बने। परन्तु, उस समय भी, साधारण जनता भले ही शुद्ध संस्कृत न बोल सकती हो, वह, जबस, उसे समझ लेती थी। संस्कृत की वही अमिट छाप हमारी आधुनिक भारतीय भाषाओं पर भी पड़ी हुई है, जिसके कारण, हमारे आज के विभिन्न प्रादेशिक वाग्यवहार के अन्दर ४०-५० से लेकर ८०-९० प्रतिशत तक, मानो, स्वयं संस्कृत-भाषा ही बोली और लिखी जा रही है। शुद्ध संस्कृत के माध्यम से होने वाली साहित्य-सृष्टि तो कभी रुकी ही नहीं। प्राचीन तथा मध्यकालीन युगों की बात तो अलग रही, आज के युग में भी संस्कृत-भाषा के सभी प्रकार के साहित्य की सृष्टि बराबर चालू है। आशा प्रतीत होती है कि देश की स्वतन्त्रता के साक्षान् फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना इस ओर प्रतिदिन अधिकाधिक जागृत होती जायेगी।

यह प्रसन्नता की बात है कि देश-भर में जहाँ-तहाँ अभिवृक्त जन इस समय संस्कृत-ध्ययन के रङ्ग-दङ्ग को सरलतर बनाने के प्रयत्न में लग रहे हैं। एतदर्थ कई प्रकार के अभिनव शिक्षण-क्रमों का आविष्कार तथा साधन-भूत सहायक साहित्य का निर्माण किया जा रहा है। प्रस्तुत 'आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश' उक्त सहायक साहित्य के ही अन्तर्गत एक उत्तम रचना है। इसके सुयोग्य लेखक ने इसे सब प्रकार से उपयोगी बनाने के लिए सकल प्रयास किया है।

एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना मुकर नहीं होता । जब तक दोनों भाषाओं के प्रयोग-स्वरूप का अच्छा बोध प्राप्त न किया हो, तब तक मक्खी पर मक्खी मारने के अतिरिक्त और कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता । अतः छात्रों को चाहिए कि दोनों भाषाओं के सत्साहित्य के सागर में स्वतन्त्र रूप से खुला अवगाहन करे । कोई भी व्याकरण या कोश का ग्रन्थ इस प्रधान साधन का स्थान नहीं ले सकता । परन्तु उक्त विस्तृत पठन के साथ-साथ, प्रतिदिन के कार्याभ्यास में प्रस्तुत कोश ऐसे सहायक ग्रन्थों का निश्चय ही अपना स्थान एवम् उपयोग है ।

इस कोश में जिन सुविपुल विशेषताओं का आधान करते हुए इसे गुणवत्तर बनाया गया है, इसकी 'प्रस्तावना' में उनका विवरण भली प्रकार से कर दिया गया है । छात्रों को चाहिए कि इसकी 'प्रस्तावना' के पाठ द्वारा उन विशेषताओं का परिचान प्राप्त करते हुए इसका सदुपयोग करते रहे, जिससे उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके ।

साधु आधम, होशियारपुर }
१६-६-५७

—विश्वबन्धु



डॉ० राम सरूप 'रसिकेश'

प्रस्तावना

(द्वितीय संस्करण)

‘आदर्श हिन्दी-मन्त्रालय’ की उपयोगिता व लोकप्रियता इसी से प्रमाणित है कि उनका प्रथम संस्करण अभी ही समाप्त हो गया और इसकी माँग, शुक्ल पक्ष के नौद के समान, निरन्तर बढ़ती हो गई। मस्कृत प्रेमियों, पुस्तक विक्रेताओं, प्रकाशक व लेखक सभी की उत्कट इच्छा थी कि द्वितीय संस्करण पद्याशोभ प्रकाशित हो, जिससे देव-बागी की अधिकाधिक वृद्धि हो। परन्तु, इस सप्ताह में परिस्थितियाँ अभी-अभी के प्रतिकूल रूप धारण कर लेती हैं कि वन पर विजय पाना दुष्कर हो जाता है। यही कारण है कि संस्कृत प्रेमियों को सुदीर्घकाल तक अप्रत्याशित प्रतीक्षा करनी पड़ी, जिसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं। अस्तु।

सभी भाषा-शास्त्री जानते हैं कि कोई भी जोड़त भाषा वर्षों तक एक ही रूप में नहीं रहती। उसके शब्द भंडार के दि में परिवर्तन होता ही रहता है। इसी नियमानुसार दो दशान्तरों में हिन्दी-शब्द भंडार का पर्याप्त विस्तार हुआ और परिणामतः हमने भी कोश का परिवर्धित संस्करण ही प्रकाशित करना समीचीन समझा। प्रथम संस्करण में कुछ अशुद्धियाँ भी रह गई थीं। उनका संशोधन भी अपना पवित्र कर्तव्य था। इस कार्य में हमें अपने मित्र श्री० गोपालचंद्र पाण्डेय, पूर्व-उपनिदेशक, शिक्षाविभाग, उत्तर प्रदेश, ने स्तुत्य सहयोग दिया है, जिसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं। शतना ही नहीं, उन्होंने ‘संस्कृत-कोशों का उद्भव और विकास’ शीर्षक अनुसंधानात्मक निबन्ध भी लिखा है, जिसमें संस्कृत प्रेमियों की इस विषय की रोचक व मूल्यवती जानकारी भी उपलब्ध होगी। कोश के सन्दर्भ में नि विभिन्न विद्वानों ने स्वाभूष्य सन्मनियों प्रदान की हैं उनके प्रति हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं। साथ ही कृतज्ञ है जीतन्वा विद्याभवन के सचालक श्री वल्लभराम गुप्त के जिन्होंने विरम परिस्थितियों में भी कोश को प्रस्तुत सुन्दर रूप में प्रकाशित किया है। हमें विश्वास है कि प्रस्तुत संस्करण पूर्ण की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

पठकों से निवेदन है कि प्रथम संस्करण की प्रस्तावना को भी सावधानता से पढ़ने की कृपा करें, क्योंकि इसका बिना वे कोश में पथेष्ट लाभ न उठा सकेंगे।

अन्य में, विद्वानों व अध्यापक-वर्ग से सादर निवेदन है कि प्रस्तुत संस्करण की छुट्टियों की ओर हमारा ध्यान अवश्य आकर्षित करें ताकि कोश के आगामी संस्करण सुदृढतर रूप में प्रकाशित हो सकें। धन्यवाद।

बी-१४१
नया रावबेद्रनगर
नई दिल्ली-११००७०
वैशाखी-२०३६ वि०

}

विनीत,
रामसरूप

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

संस्कृत का अध्ययनाध्यापन करते समय और कभी हिन्दी शब्दों व संस्कृत पद्यावा को जिज्ञासा के समय अनेक बार हिन्दी-संस्कृत-कोश की आवश्यकता प्रतीत होती थी। बाजार में कोई भी ऐसा कोश प्राप्य न था जो स्कूलों, कॉलेजों, ग्रन्थालयों, कृषिकुलों आदि में पक्ष बन्धुओं के विद्यार्थियों तथा संस्कृत-अध्ययन के दृष्टिकोण से प्रौढ मज्जनों और अध्यापकों की आवश्यकताओं पूर्ण कर सके। यह देखकर दुःख भी होता था और आश्चर्य भी कि सात समुद्र पार से आई हुई अंग्रेजी भाषा के कुछ लाख शब्दाओं के लिए तो अंग्रेजी-संस्कृत-कोश प्रकाशित हो चुके हैं परन्तु करोड़ों हिन्दी-प्रेमियों के पास ऐसा कोई कोश नहीं जिसमें वे संस्कृताध्ययन में सहायता प्राप्त कर सकें। संस्कृतानुराग और उक्त अभाव की प्रबल प्रेरणा से मैं १९४३ ई में कोश संचालन में लग गया और लगभग चार वर्ष के परिश्रम से इस दृष्टिकोण को सम्पन्न कर पाया। देश का विभाजन न होता तो सम्भवतः यह कोश दस वर्ष पूर्व ही प्रकाशित हो जाता, परन्तु परिस्थितियों की प्रतिकूलता के कारण यह अब प्रकाशित हो रहा है—'देवी विचित्रा नति'।

जिन दिनों मैं कोश का संचालन आरम्भ करने को था उन दिनों हिन्दी-उद्ग्रहिन्दिस्तानी का प्रश्न जोर-शोर से छिड़ा हुआ था। प्रत्येक भाषा के प्रभु स्व-स्व पक्ष की पुष्टि के लिए अनेक युक्तयुक्त युक्तियाँ प्रस्तुत करते थे। तब मेरे समुख प्रश्न यह उठा कि मूल (अन्य) शब्दों में विशुद्ध हिन्दी के ही शब्द रखे जाएँ या विदेशी शब्द भी। सोच विचार के पश्चात् मैंने यही उचित समझा कि इसके मूल शब्दों में फ़ारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं के भी प्रचलित शब्द अवश्य रखने चाहिए। उक्त निश्चय का परिणाम यह है कि कोश के प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर पचास-सात विदेशी शब्द, जो शताब्दियों के प्रयोग से स्वदेशी बन गये हैं, आपको मिल ही जाएँगे। इसका हृदय यह होगा कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बन जाने और परिणामतः प्रत्येक भारतीय के हिन्दी में परिवर्तित हो जाने के कारण उन अन्यभाषा-व्यंजनों को भी संस्कृत मीखने में अधिक ह्रास हो जाएगा, जिनकी भाषाओं के प्रचलित शब्द इस कोश में संगृहीत कर लिये गये हैं। मूल शब्दों के चुनाव के समय दूसरी समस्या पारिभाषिक शब्दों की थी। प्रत्येक कला और विज्ञान से सम्बन्धित सहस्रों पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग प्रायः उन्हीं विषयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों तक ही सीमित रहता है। प्रस्तुत कोश में उन सरल मूलानुगत शब्दों का, न वांछनीय। इसीलिए मैंने औद्योगिक, रसायन, भूगोल, गणित, खगोल, वैद्यक आदि का उन्हीं अत्यंत प्रसिद्ध शब्दों का संग्रह किया। जो जन-सामान्य या सामान्य शिक्षित जन द्वारा प्रतिदिन प्रयुक्त होते हैं। कोश के मूल शब्दों की सराया लगभग ३०००० है जिनमें ४००० के लगभग तथाकथित विदेशी शब्द, पारिभाषिक शब्द तथा मुहावरे भी सम्मिलित हैं।

करे कोशों में समरूप विभिन्न शब्द एक ही शब्द के नीचे मुद्रित रहते हैं। प्रस्तुत कोश में ऐसा नहीं किया गया। कारण, जब सोन (आकर माया) और व्युत्पत्ति पृथक्-पृथक् दो नो शब्दों के पाँच-पाँच में सन्देह नहीं रहता। ऐसी दशा में उन्हें, केवल रूपमय के कारण, एक ही शब्द के अन्तर्गत रखना सुझा उचित नहीं लगेगा। ऐसे समरूप शब्दों के उदाहरण १, २, ३, ४ आदि के निम्न दृष्ट कर दिये गये हैं जिसमें ऊपर से किसी की ओर निर्देश करते समय कठिनता न हो, उदाहरणार्थ 'आम' और 'आया' शब्द देखिये। इस कोश में प्रत्येक मूल शब्द को तो स्वतन्त्र स्थान दिया गया है परन्तु उससे बने हुए समस्त शब्दों का मुहावरे को अधिकतर मूल शब्दों के नीचे ही

१९४७ को मई में जब साम्प्रदायिक दलों के कारण टी ए वी कल्लेन, लाहौर, पूर्व वर्षों की अपेक्षा कुछ शीघ्र ही बन्द हो गया तब कल्लेन के छात्रावास को अपने घर में अधिक सुरक्षित समझ में कोश की परिदृष्टि को धरु वक्ता में बंद कर वहीं छोड़ बैचनाथ (पूर्वी पनाव) चला आया। बाद में वहाँ जो लुट-मार हुआ, उसके कुछ सुन-सुनकर यहाँ विचार आता था कि मरा 'कोश' भी लुट ही गया होगा। मैं इसी खबर में, जान जोरिम में टालकर, मितम्बर १९४७ में लाहौर गया परंतु कुछ पता न चला। दूसरी बार जब दिसम्बर १९४७ में फिर गया तो सौभाग्यवश यह सुरक्षित मिल गया। उन दिनों लाहौर का टी ए वी कल्लेन और उसका छात्रावास शरणार्थी-कैम्प बना हुआ था। किसी शरणार्थी साइज वक्ता को तो छोड़ना था, परन्तु कोश को देना न था। कैम्प के स्वयंसेवकों ने इसे कोश नाम की वस्तु समझ, में माल रखा था। इस अवसर पर मैं उस अज्ञान शरणार्थी साइज को जिसने इसे ज्यों-का-त्यों रखने दिया और उन अपरिचित स्वयंसेवकों को जिन्होंने इसे कर मास तक भँभाले रखा, हार्दिक धन्यवाद देना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ।

कोश के प्रकट, मरे मित्र श्री हरिवंशदास शास्त्री यदि परिश्रमपूर्वक न देखते तो इस सूक्ष्म सूक्ष्मकाय में बहुत छुट्टियाँ रह जातीं। दो परिशिष्टों के सम्पादन में मरे मित्र श्री० राजपतराज एम ए ने बड़ा हाथ बँटाया है। इन दोनों सज्जनों के प्रति भी मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। अन्त में कोश के प्रकाशकों के प्रति भी अपना कायार प्रदाशस्त करता हूँ जिन्होंने इसे सुन्दर रूप में छपे ही समय में प्रकाशित कर दिया है।

मनुष्य की अपनी तथा अपनी कृतियों की छुट्टियों स्वभावतः ही कम दिवादा देती हैं। इसी नियम के अनुसार मैं भी प्रस्तुत पुस्तक की गूँथताओं और आश्रितियों से अज्ञान ही परिचित हूँ। अब सब ज्ञान-ज्ञान मूलों के लिए क्षमा-याचना करता हुआ मैं निरद्वन्द से निवेदन करता हूँ कि ये कृष्णकवि की निम्नांकित सूक्ति—

दोषाक्षिरस्य गृह्णन् गुणमस्या मनीषिण ।

पासुनगम्य मन्वा मकरन्दमिवालय ॥

के अनुसार निम्नोक्त अवधि के मर-द का पात्र और पराग का परिचाय कर सुने मरी छुट्टियों में परिचय करायें तथा एन अमूल्य सुझाव भर्षे दिनमें कोश का आगामी संस्करण अधिक किर्दों और उपयोगी हो सके। प्रभु से प्रार्थना है कि उस देववर्गी सङ्ग का भूतल पर अधिकार प्रसर हो जिससे साहित्य-मुखा का अनन्द ज्ञान मोरनभूमि में भी इने गिन हल लोग ले रहे हैं।

डी-१४१
शारदानिकेतन
राजेंद्र नगर, दिल्ली
दीर्घवर्षी २० २०१४

विनीत,
राममरद

विद्वत्सम्मतिःसर

M ANANTHASAYANAM AYYANGAR

(SPEAKER LOK SABHA)

I went through a portion of the Hindi-Sanskrit Dictionary prepared by Prof. Ram Saroop, Prof. of Hindi and Sanskrit, Hans Raj College, Delhi. The pages have been taken at random from the middle of the book. Almost every word in Hindi in ordinary use and even those that are rarely used has been noticed in this book.

There are many Sanskrit-Hindi Dictionaries, but correspondingly there is practically no Hindi-Sanskrit Dictionary. Sanskrit is the mother of Hindi and all the northern Indian Languages. Any new expressions have to be coined from Sanskrit source. It is therefore necessary that any body who desires to have a proficiency in Hindi should have equally good knowledge of Sanskrit. All Hindi writers and those in regional languages have been great Sanskrit scholars. In fact they did not read regional language by itself at any time. After acquiring proficiency in Sanskrit they automatically and without any special attempt, and with little or no effort, became proficient in their own respective language.

I welcome such a book and I hope and trust that it will be found useful not only by scholars but also by laymen who ought to have a working knowledge of Sanskrit if they want to acquire a good knowledge of Hindi. A Dictionary of this type is worth having in every library.

Prof. VISHVA BANDHU, M. A., M. O. L.

(Director, V. V. R. Institute, Hoshiarpur.)

It has given me real satisfaction to find that he has taken pains in this behalf and succeeded in producing a handy work which should be of great help to those who may be learning the somewhat difficult art of translating modern Hindi originals into the ancient language of gods.

Dr. SURYA KANT SHASTRI, D. Litt., D. Phil.

(Hindu University, Varanasi)

In my opinion this dictionary will prove of great help to the students of Hindi and Sanskrit, since a dictionary of this type and size is not available in the market.

Dr N N CHOWDHURI, M A, D Litt.

(Reader in Sanskrit, University of Delhi)

I have read with great interest a part of the manuscript copy of your Hindi-Sanskrit dictionary A book of this type is urgently needed in these days I congratulate you on this excellent work you have under-taken

श्री एन वी गडगिल, एम पी

श्री रामसरूप शास्त्री द्वारा सम्पादित 'हिन्दी संस्कृत कोश' के कुछ मुद्रित पृष्ठ पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। सूक्ष्म दृष्टि से उन पत्रों को देखकर इस बात से प्रमत्तता हुई कि प्रियवर शास्त्रीजी ने इतना सुन्दर, सुस्पष्टरचित और उपयुक्त कार्य किया है कि इस कार्य से वे समाज के अग्रणी उपाधि ही नहीं हुए, वरन् उन्होंने समाज को उपकृत भी किया है।

लखन महोदय को इस महत्वपूर्ण स्तुत्य कार्य के लिए बधाई देता हूँ।

केशवनाथ शर्मा, सारस्वत

सम्पादक—'संस्कृतरत्नाकर'

मन्त्री, अखिलभारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

श्रीयुत रामसरूप शास्त्री एम ए, एम बी एल, विद्यावाचस्पति, प्रोफेसर, हुंमराज काष्ठिन, देहली द्वारा सम्पादित हिन्दी संस्कृत कोश का कुछ भाग देखने का अवसर मिला है। मैं जो कुछ देख सका उसके आधार पर कह सकता हूँ कि यह इस युग के अनुकूल और आवश्यक प्रयत्न है।

इस समय ऐसे प्रामाणिक कोश का अभाव जबकि देश का ध्यान संस्कृत की ओर आटूट हो रहा हो, बहुत खटक रहा था। मुझे विश्वास है—इस अभाव की बहुत कुछ पूर्ति इस कोश से हो सकेगी। सम्पादक महोदय का यह प्रयत्न सर्वथा स्तुत्य और श्रेष्ठ है। इससे अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार की कामना करता हूँ।

महामहोपाध्याय श्री प० परमेश्वरानन्द शास्त्री, विद्याभास्कर

(ओरिएण्टल कालेज, जालंधर, पूर्व प्रिंसिपल, सनातनधर्म संस्कृत कालेज, लाहौर)

प्रोफेसर श्रीरामसरूप शास्त्री, एम ए, एम बी एल, विद्यावाचस्पति विरचित 'हिन्दी संस्कृत कोश' को देखकर मेरा हृदय अत्यन्त प्रसन्न हुआ। मूल हिन्दी शब्दों के संस्कृत में पर्याय देने वाला कोश मेरी दृष्टि में यह पहला ही है। ऐसे कोश की बहुत समय से बड़ी भारी आवश्यकता ममझी जा रही थी। संस्कृत के विद्वान् अपने छात्रों को अनुवाद की शिक्षा देते हुए बड़ा घटिर्गर्भ अनुभव करते थे और करते हैं। संस्कृत भाषा का व्यवहार में प्रचलन न होने के कारण हिन्दी शब्दों के संस्कृत पर्याय ढूँढने में उन्हें बड़ी मुश्किल पड़ती है। इस मुश्किल को विद्यावाचस्पति श्रीरामसरूप शास्त्रीजी ने हिन्दी-संस्कृत कोश की रचना करके बहुत अंशों में हल कर दिया है। इस उपकार के लिए संस्कृत के अध्यापक और उनके शिष्य प्रोफेसर महोदय के अत्यन्त अमारी हार्दिक, ऐसी आशा है।

हिन्दी माध्यम के द्वारा संस्कृत शिक्षाविधियों के लिये तथा हिन्दी मार्ग में अग्रसर होने के लिए संस्कृत के विद्वानों के लिए भी—यह कोश अत्यन्त उपयोगी है। स्कूल कालेजों में, संस्कृत

पाठशालाओं में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए हिन्दी में संस्कृत में अनुवाद करने में यह कोश अच्छा सहायक सिद्ध होगा—येमी मुझे पूर्ण आशा है ।

इस कोश ने केवल हिन्दी की ही नहीं, अपितु संस्कृत की भी श्रीवृद्धि की है, अतः दोनों भाषाओं के प्रेमियों की ओर से विद्वान् ग्रन्थकार धन्यवाद के पात्र हैं ।

प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति एम पी

(चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली)

हमराज कानेर, दिल्ली के प्रो. रामसरूप एम ए , एम ओ एल. ने अपने आदर्श हिन्दी-संस्कृत कोश का कुछ भाग मुझे दिखाया है । कोश में हिन्दी के तीस हजार शब्दों के व्युत्पत्ति-सहित संस्कृत पर्याय दिये गये हैं । अभी तक ऐसे कोश का अभाव था । प्रो रामसरूपजी का यह प्रयत्न उस अभाव की पूर्ति कर देगा । "इसमें सन्देह नहीं कि इनकी शान्दव्य बातों से यह कोश अत्यन्त उपयोगी होगा ।

श्री० दा० सातवलेकर

(अय्यक्ष, स्वाध्याय मंडल, पारडी जि० सूरत)

आपका यह कोश संस्कृत सीखने वालों के लिए तथा संस्कृत शिक्षकों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा, इसमें सन्देह नहीं है ।

पं० ब्रह्मदत्त जिजासु

(मोतीझील, धाराणसी)

'यह ग्रन्थ संस्कृत के छात्रों तथा अध्यापकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा । हिन्दी से संस्कृत बनाने वालों को बहुत लाभ होगा । इस विषय पर आगे काम करने वालों को भी इसमें बहुत सहायता मिलेगी । इसमें इस विषय में उत्तरोत्तर उन्नति का मार्ग खुलेगा । इस दृष्टि में इस ग्रन्थ की उपादेयता और बढ़ जाती है ।'

प्रो० चारुदेव शास्त्री

एम. ए , एम. ओ. एल.

(पूर्व प्राध्यापक, डी ए बी कालेज, लाहौर)

प्राध्यापकेन श्रीरामसरूपशास्त्रिणा प्रणीतो हिन्दी-संस्कृतकोषो मया केषुचित्स्थलेष्वालोचितः । इन्द्रप्रथमः प्रथम इति प्रशस्यः । महानत्र शब्दराशिः समृद्धीनः । प्रतिहिन्दीशब्दमनेकं संस्कृत-मभिधानमुपन्यस्तम् । तत्रोपन्यासेऽपि प्रसिद्धमपेक्ष्य विशिष्टानुपूर्वी समाश्रिता येनैतदुपयोक्तारः परपरतराण्यब्दान् विहाय पूर्वपूर्वतरान् प्रयोष्यन्ते प्रसिद्धिं च नातिकमिष्यन्ति । सर्वस्मिन् भारते व्यवहारमवनीर्णया हिन्ध्यामीदृशः कोषोऽत्यन्तमपेक्षितोऽमुदिनि स्थाने प्रयत्नः शास्त्रिवर्येण विदावरेण ।

वामुदेव द्विवेदी शास्त्री

(सार्वभौम सस्कृत प्रचार कार्यालय, वाराणसी)

प्रो० रामसरूप शास्त्री द्वारा सञ्चालित एवं सम्पादित “आदर्श हिन्दी सस्कृत कोश” के द्वितीय संस्करण को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। हिन्दी-सस्कृत कोश कक्ष में यही एक ऐसा कोश था जो अकार, शब्दमय्या एवं उपयोगिता की दृष्टि से सर्वोत्तम था और इसीलिये हमका अमन बहुत दिनों तक परटक रहा था। मेन्टों विद्वान्मनों की तो मैंने ही इस कोश की सूचना दी होगी परन्तु अब उम्हें यह मालूम हो जाता था कि यह कोश सम्प्रति उपलब्ध नहीं है तो वे हार्दिक दुःख प्रकट करते थे और चाहते थे कि यह कोश किसी प्रकार उन्हें उपलब्ध हो जाय। आप माननीय शास्त्रीजी ने इसका पुनः सम्पादन तथा चौखम्बा विद्यामण्डल में इसका प्रकाशन कर जो अमर्यव श्रेणियों की आकांक्षाओं की पूर्ति की है इसका लिये ये दोनों हार्दिक धन्यवाद दे पाते हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी-सस्कृत कोश का सम्पादन सस्कृत-हिन्दी कोश के सम्पादन की अपेक्षा एक कठिन कार्य है। कारण कि आप की हिन्दी में अरबी, फारसी एवं अंग्रेजी के भी बहुत से शब्द प्रचलित हो गये हैं। इनके अनिश्चित देशों तथा लोकभाषाओं के शब्दों की भी सत्या कुछ समझ नहीं है। फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का एक विशाल भण्डार बलगत ही है। इन शब्दों के पर्यायवाची शब्द पुरानी सस्कृत में नहीं मिलने जन उत्तम लिये नये सस्कृत शब्दों का निर्माण करना पड़ता है जो माधुर्य विद्वान से संभव नहीं है।

यही शक्ति उन सभी शब्दकोशों में पाई जाती है जो अंग्रेजी, बंगाल, मराठी, गुजराती, तमिल एवं तेलगू आदि भाषाओं में सस्कृत में मिले गये हैं। मेरे कार्यालय में ऐसे अनेक कोश हैं। इन शब्दकोशों में भी पर्वत सख्या में नये सस्कृत शब्द बनाये गये हैं।

अब कठिनाई यह है कि विभिन्न कोशों में जो नये शब्द बनाये गये हैं उनमें एकरूपता नहीं है। ऐलकों ने अपने अपने ज्ञान एवं शक्ति के अनुरूप शब्दों का निर्माण किया है। ‘विश्वोक्ति’ कोशों में उत्तर एवं दक्षिण भारत के प्रादेशिकता का भी प्रभाव परलक्षित होता है। ऐसी शक्ति में नवीन सस्कृत शब्दों में अन्य भाषाओं से लब्ध शब्दों के लब्ध अर्थों का सहज बोध होना या बराना वक्तव्य एवं श्रोता दोनों के लिये असंभव या कठिन होता है। सस्कृत के आधुनिक लेखकों एवं वक्ताओं के लिये यह एक समस्या है निम्नका समाधान होना काम आवश्यक है।

संस्कृत कोश में शास्त्रीजी ने एक कठिनाईयों के निवारण के लिये जो प्रयास प्रयत्न किया है जो उनकी भूमिका पढ़ने से अच्छी तरह निहित होता है। यदि कोई सभा या शब्द निर्माण समिति विभिन्न कोशकारों द्वारा लब्धभिन्न सस्कृत शब्दों के अन्तिम भारतीय विद्वत्समाज की दृष्टि में सर्वमान्य और सर्वत्र समानरूप में प्रचलित करने की योजना बनावे तो उसकी सफलता में इस बोध से बड़ी सहायता मिल सकती है। परन्तु जब तक इस प्रकार की कार्य योजना नहीं बनती, और जिसके बनने की संभावना भी कम ही दीखती है, तब तक इसी बोध को आदर्श कोश माना जा सकता है। इस दृष्टि से हमका ‘आदर्श हिन्दी-सस्कृत कोश’ नाम में सर्वथा व्यर्थ मानना है।

संस्कृत का प्रत्येक विद्वान् एवं विद्यावी इस कोश की एक प्रति अपने पास रखकर और हमने सहायता देकर सस्कृत शब्दों एवं लिपि में अन्वयगति में आगे बढ़ सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकेत-सूची

(क) पदपरिचयसंबंधी संकेत

- अ०, अर्थ — अर्थ ।
 उप — उपमर्ग ।
 क्रि अ — क्रिया, अङ्गक ।
 क्रि प्रे — क्रिया, प्रेरणार्थक ।
 क्रि वि — क्रिया विशेषण ।
 क्रि स — क्रिया मयुक्त ।
 क्रि म — क्रिया मङ्गलक ।
 प्रत्य — प्रत्यय ।
 सु — सुहावरा ।
 वि — विशेषण ।
 स पु — महा पुराण ।
 सदी — मङ्गल ।
 स स्त्री — सदा स्त्री ।
 सर्व — सर्वनाम ।

(ख) स्रोतसंबंधी संकेत

- (अ = अँग्रेजी)
 (अ = अरबी)
 (अनु = अनुकरणात्मक)
 (अप = अपभ्रंश)
 (क्षप = क्षयार्थक)
 (गु = गुजराती)
 (द्र = द्रामी)
 (ता = तातारी)
 (तु = तुर्की)
 (देश = देशीय)
 (प = पंजाबी)
 (पा = पालि)
 (पुर्न = पुर्नगान्धी)
 (पु रि = पुरानी हिंदी)
 (पूर्व = निर्वचन पूर्ववत्)
 (प्रा = प्राकृत)
 (फा = फारसी)
 (फा = फ्रांसीसी)
 (व = बंगाली)
 (यू = यूनानी)

(ले = लेटिन)

- (स = संस्कृत)
 (स्पे = स्पेनिश)
 (हिं = हिंदी)
 (म रिन् = महाभारिन् २)
 (ग) घातुसंबंधी संकेत
 (अ प ने = अदादि परस्मैपदी गेट)
 (क अ म = कयाप्ति अत्मनेपदी अनिट)
 (चु उ वे = चुरादि उभयपदी गेट)
 (जु - - = जुशोरगादि - -)
 (न - - = ननादि - -)
 (तु - - = तुदादि - -)
 (दि - - = दिवदि - -)
 (भ्वा - - = भ्वादि - -)
 (व - - = वधादि - -)
 (स्वा - - = स्वादि - -)

(कर्तृ = कर्तृवाच्य)

(कर्म = कर्मवाच्य)

(न' धा = नामधातु)

(प्रे = प्रेरणार्थक रूप)

(भ व = भाववाच्य)

(मत्र = मत्रन्त रूप)

(घ) शास्त्रीय संकेत

(अयो = अयोनिशास्त्र)

(धर्म = धर्मशास्त्र)

(न्या = न्यायशास्त्र)

(मो = मोघामात्रास)

(योग = योगशास्त्र)

(रा ना = राननोनिशास्त्र)

(वे = वेदानशास्त्र)

(वै = वैशेषिकशास्त्र)

(भ्या = भ्याकरणशास्त्र)

(संग = संगीतशास्त्र)

(सा = साहित्यशास्त्र)

(मा = साहित्यशास्त्र)

संस्कृत-कोषग्रन्थों का उद्भव एवं विकास

संस्कृत-वाङ्मय की अन्य शाखाओं के समान 'कोषविद्या' का भी अपना विशेष महत्त्व है। वैदिक युग से लेकर अद्यावधि कोषग्रन्थों की रचना होते रहना ही इसका ज्वलन्त प्रमाण है। आरम्भ में कोषग्रन्थों का निर्माण विशेष उद्देश्य को अभिलक्षित कर प्रारम्भ हुआ था। यह उद्देश्य भी व्यावहारिक था। इस कारण शब्दों के समाकलन की इस विद्या में कोषकारों को सफलता मिलती चली आ रही है। जनसाधारण की शब्दज्ञानसम्बन्धी पिरासा को दान्त करने में कोषग्रन्थों ने सुमधुर स्रोतस्विनी के समान अपनी सार्यकता सिद्ध की है। कोषकारों ने 'शब्द' की इयत्ता निर्धारित करने के अनेक प्रयत्न किये किन्तु वे इसका अन्त न पासके। 'शब्द' 'वस्तुतः' नित्य है। नित्य शब्द का अन्त कहाँ ? 'शब्द' की व्यापकता का एक मात्र कारण उसके विस्तृत प्रयोग का होता है। इस सम्बन्ध में महामाष्यकार पतञ्जलि ने इस ओर संकेत भी किया है कि शब्दों के प्रयोग का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सात द्वीपों से युक्त विशाल भूखण्ड में भारतीय वाङ्मय का विस्तार कुछ कम नहीं है। वेदों की ही कई शाखाएँ हैं। इगमें से यजुर्वेद की १०१ शाखाएँ हैं। सामवेद की एक हजार शाखाएँ हैं। ऋग्वेद के इक्कीस प्रकार हैं। अथर्ववेद नौ शाखाओं का है। इसके अतिरिक्त इतिहास, पुराण, वैद्यक इत्यादि सभी विषयों में शब्दों के प्रयोग का ही क्षेत्र है—

“महान् हि शब्दस्य प्रयोगविषयः। सप्तद्वीपा वसुमती। त्रयो लोकाः। चत्वारो देवाः साङ्गाः सरहस्याः बहुधा विभिन्नाः। एकशतमध्वर्युशाखाः, सहस्रवर्मा सामवेद, एकविंशतिधा बाह्वृष्यं, नवधाऽथर्वणो वेदः, षाको वाक्यम्, इतिहासः, पुराणम्, वैद्यकम्—इत्येतावान् शब्दस्य प्रयोगविषयः” (महामाष्य पस्पशाह्निक)।

यह जानते हुए भी प्राचीन समय में उद्ब की इयत्ता निर्धारित करने का प्रयत्न अवश्य किया गया होगा। इसी को पतञ्जलि ने इस अर्थवाद गमित वाक्य के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि शब्द का प्रतिपद पाठ सम्भव नहीं है। तदनुसार उन्होंने इस व्याख्यान की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि 'वृहस्पति ने इन्द्र को देवों के एक हजार वर्ष तक प्रत्येक शब्द का उच्चारण कर शब्दशास्त्र पढ़ाया, फिर भी शब्द समाप्त नहीं हुए'। इस प्रसङ्ग में भाष्यकार ने दूसरा व्याख्यानक प्रस्तुत करते हुए यह बताया है कि जब वृहस्पति सदा स्थाननामा व्याख्याता, इन्द्र जैसा विज्ञ शिष्य, देवों के एक सहस्र वर्ष की अवधि अध्ययन-काल नियत किया गया तो भी शब्दों का अन्त ज्ञात नहीं हुआ। फिर आजकल की बात ही क्या ? जो सब तरह निरोगो रहकर चिरायु होता है,

अधिक मे अधिक वह सौ वर्ष तक जीता है। इसके अतिरिक्त आगे निरूपण करते हुए उन्होंने कहा कि विद्या की सार्थकता चार प्रकार से होती है— (१) गुरुमुख से समझ लेते समय, (२) मनन के समय, (३) दूसरो को सिखाते समय और (४) व्यवहार करने में—“एव हि ध्रूयते। बृहस्पति-रिन्द्राय दिव्य वर्षसहस्रं प्रतिपदोक्तानां शब्दानां शब्दपरायण प्रोवाच, नाग्नं जगाम। बृहस्पतिश्च प्रवक्षा, इन्द्रश्च अध्येता, दिव्य वर्षसहस्रमध्ययनकालः, न च अन्तं जगाम। किं पुनरख्ये ? य. सर्वथा चिर जीवति न यथंशत जीवति। चतुर्भिश्च प्रकरारंविशेषयुक्ता भवति आगमकालेन, स्वाध्यायकालेन, प्रवचन-कालेन, व्यवहारकालेनेति।” अन्तः प्रायोगिक शब्दों के समाकलन को व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी समझ कोपकारो ने उन्हें ग्रन्थों के रूप में प्रस्तुत कर संस्कृत भाष्य के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। इस प्रकार शब्दों के संग्रह करने में ‘कोप’ शब्द रूढ़ हो गया है।

वैदिक काल में कोप ‘निघण्टु’ के नाम से विख्यात रहे। ‘निघण्टु’ से अभिप्राय उन वैदिक शब्दों के संग्रह से है, जिनमें सज्ञाशब्दों के साथ क्रिया-पदों को भी एकत्र कर लिया गया था। निघण्टु का उद्देश्य वैदिक शब्दों के अर्थ समझने में सहायता पहुँचाना भी रहा है। इसके विपरीत लौकिक ‘कोपो’ में अधिकतर सज्ञाशब्दों का समाकलन हुआ है। नामसंग्रह के अनन्तर परिशिष्ट-रूप में छद्मयो के अर्थ का संग्रह भी इन कोपग्रन्थों में उपलब्ध होता है। लौकिक कोप पद्यमय होने के कारण कविजनों के परिश्रम को कम करने में उपयोगी सिद्ध हुए हैं। फलतः कण्ठस्थ करने में सरलता होने के कारण इनका प्रचार होने में बड़ी सुविधा हुई है। अन्तः विद्यार्थियों को वाच्यशिक्षा देने के साथ ही ‘कोप’ कण्ठस्थ कराने की परिपाटी रही है। अर्थ की दृष्टि से प्राचीन काल में कोपो का विभाजन दो प्रकार से किया गया था—(१) समानार्थक कोप तथा (२) नानार्थक कोप। लिङ्ग-निर्धारण करने की समस्या को कोपकारों ने बड़ी बुद्धिमत्ता से सुलझाया है। इसके लिये उन्होंने कई विधियाँ अपनाई हैं। कहीं-कहीं तो शब्दों के प्रथमान्त प्रयोग से उनका लिङ्ग-निर्देश किया है और कहीं ‘पु’ ‘स्त्री’ ‘क्लीब’ आदि लिङ्गलोकक शब्दों का प्रयोग कर इस विशिष्टता का परिचय दिया है। शब्दचयन के भी अनेक सिद्धान्त हैं। समानार्थक कोपों में विषयों के अनुसार शब्दों का सकलन कर पूरे कोपग्रन्थ को अनेक वर्णों में विभक्त कर दिया है। नानार्थक-कोपों में अन्तिम वर्णों के अनुसार शब्दों का सकलन कर कान्त, तान्त, गान्त आदि शब्दों का चयन किया गया है। कहीं आदिम वर्णों को भी महत्त्व दिया गया है। कहीं आदिम तथा अन्तिम दोनों वर्णों की दृष्टि में रखकर शब्द-चयन की प्रक्रिया सम्पन्न की गई है।

निघण्टु—यह 'निघण्टु' ग्रन्थ यास्क से प्राचीन है, क्योंकि इसी के आधार पर यास्क ने 'निरुक्त' लिखा है। महाभारत से अनुसार प्रजापति वश्यप इस निघण्टु के रचयिता हैं। इसमें पाँच अध्याय हैं। आदि के तीन अध्यायों में 'पृथ्वी' आदि के बोधक समानार्थ शब्दों का सङ्कलन है। इस प्रकरण को 'नैघण्टु-काण्ड' कहा जाता है। चतुर्थ अध्याय में अव्ययपत्र तथा गूढार्थक शब्दों का चयन किया गया है। इन्हीं 'नैघम-काण्ड' की सजा दी गई है। पाँचवें अध्याय (देवतकाण्ड) में मित्र-मित्र देवताओं के रूप तथा स्थान का विस्तृत निरूपण है। 'निघण्टु' के प्रमुख व्याख्याता देवराज यज्वा हैं। ये सायण से प्राचीन अवश्य हैं, क्योंकि सायण के ऋग्वेद-भाष्य में एक स्थान पर निघण्टुभाष्य के वचनों का उद्धरण मिलता है। देवराज ने अपने भाष्य में सौरस्वामी को अपने पूर्ववर्ती भाष्यकार के रूप में स्मरण किया है। सौरस्वामी 'अमरकोष' के सुप्रसिद्ध टीकाकार हैं। अतः देवराज यज्वा का समय १२ वीं तथा १३ वीं शताब्दी के मध्य प्रमाणित होता है।

वैदिक कोष—प्राचीन परिपाटी के अनुसार भास्कर राय ने वैदिक-कोष की रचना ऋग्वेदिक कोषों के ढग पर की है। इस कोष के सङ्कलित शब्द तो वे ही हैं जो निघण्टु में हैं, किन्तु उन शब्दों का अर्थ 'अनुष्टुप् छन्द' द्वारा अभिव्यक्त किया गया है। इस कोष का रचना-काल १७७५ ई० है। भास्कर राय ने अपनी गुप्तवनी टीका में अनेक स्थलों पर नागेश की सप्तशती-टीका का खण्डन किया है। उक्त ये नागेश के समकालीन अथवा उनसे कुछ ही समय के अनन्तर हुए होंगे।

पुरोत्तम देव ने अपने लौकिक-संस्कृत के पुराने कोषकारों का उल्लेख 'हारावली' कोष के अन्त में वाचस्पति, व्याडि तथा विक्रमादित्य का नाम लेकर किया है। तदनन्तर केशव ने कात्य, व्याडि, वाचस्पति, नागुरि, अमर, मङ्गल, साहमाङ्ग, महेन्द्र तथा हेमचन्द्र का नामोल्लेख किया है। इनके अतिरिक्त किसी हस्तलेख के आधार पर १८ प्रसिद्ध कोषों के विषय में परिज्ञान होता है। इस प्रकार अमर-कोष को केन्द्रबिन्दु मानकर सञ्चित बाह्यमय के कोषग्रन्थों को आचार्य पं० बलदेव उपाध्याय जी ने तीन कालों में विभक्त किया है—

(१) अमरपूर्व काल, (२) अमरकाल तथा (३) अमरोत्तर-काल।

अमर-पूर्व-कोषकार—अमर-पूर्व कोषकारों में व्याडि सर्वप्राचीन कोषकार है। व्याडि के कोषग्रन्थ का नाम 'उत्पलिनी' या 'पुरोत्तम' ने अपने हारावली कोष के अन्त में इसका उल्लेख किया है। इस कोष में समानार्थ शब्दों की प्रपञ्चता थी। इन्होंने व्युत्पत्ति के द्वारा अर्थानुसन्धान की प्रक्रिया का दिग्दर्शन कराया है। जैसे 'निघण्टु' की व्याख्या इन्होंने इस तरह की है—“अर्थान् निघण्टयन्यस्मात् निघण्टुः परिकीर्तितः”। ये व्याडि कदाचिद् पाणिनि के समकालीन सुप्रसिद्ध 'संग्रह' नामक ग्रन्थ के कर्ता ही होंगे।

काव्य—इनके कोषग्रन्थ का नाम 'नाममाला' था। शीरस्वामी, हेमचन्द्र आदि ने इनका उल्लेख किया है। इनके कोष की विशेषता यह थी कि इन्होंने कही-वही अर्थ का वर्णनात्मक परिचय भी दिया है—“क्षुद्राच्छिद्रसमुपेतं चालनं तितल पुमान्”। इनका निश्चित समय ज्ञात नहीं हो सका।

भागुरि—यह त्रिकाण्ड-कोष के रचयिता हैं। अमरसिंह ने 'त्रिकाण्ड' की प्रेरणा इन्हीं से प्राप्त की होगी। इन्होंने केवल समानार्थ शब्दों का ही उल्लेख किया है। व्याकरण के प्रसिद्ध ग्रन्थों में भागुरि के मत का अनेक स्थलों पर उल्लेख मिलता है। विशेषतः हलन्त वाचू, निश्च, दिश् आदि शब्दों की आकारान्त बनाने में इनके नाम का उल्लेख मिलता है “वष्टि भागुरिरस्तोपमवाप्योरुपसर्गायौ। आप चैव हलन्ताना यथा वाचा निशा दिशा”। सायण आदि वेदभाष्य-कर्त्ताओं ने इनके कोष ग्रन्थ से पर्याप्त सहायता ली है।

रत्नमाला के अज्ञात-नामा लेखक का उल्लेख सर्वानन्द ने अपनी “अमरकोष” की टीका में किया है। तदनुसार इस कोष के परिच्छेदों का वर्गीकरण लिङ्ग के आधार पर था। इसमें समानार्थ-शब्दों का चयन था।

अमरदत्त—इन्होंने 'अमरमाला' नामक कोषग्रन्थ की रचना की। हलामुधन अपने कोषग्रन्थ का उपजीव्य 'अमरमाला' को माना है। सर्वानन्द ने इस कोष से अनेक उद्धरण अपनी अमर-टीका में दिये हैं। इनका समय भी अतिशित ही है।

धाषस्पति—यह मुप्रसिद्ध 'शब्दाणव' कोष के रचयिता थे। यह 'अनुष्टुप्-छन्द' में विरचित विशाल कोष था। इसकी विशेषता यह थी कि एक शब्द के विभिन्न रूपों का तथा वर्तनी का भी इसमें उल्लेख है। हेमचन्द्र ने इनके कोष से पर्याप्त सहायता ली है। इनका वास्तविक समय भी अज्ञात है।

धन्वन्तरि—यह वैयाक-निषण्डु के रचयिता हैं। वैयाक निषण्डुओं में यह कोष सब से प्राचीन है। शीरस्वामी ने अपनी अमर-टीका में यह उल्लेख किया है कि अमरसिंह के 'अमरकोष' के वनोपधि-वर्ण का उपजीव्य यही कोष रहा है। विक्रम के नवरत्नों में इनका भी उल्लेख है। उस दृष्टि से तो यह भी अधिक प्राचीन है।

महाशपणक—इनके नाम से दो कोष-ग्रन्थ हस्तग्रन्थों में उल्लिखित मिलते हैं। ये दोनों अनेकार्थ-ध्वनिमञ्जरी तथा अनिकार्यमञ्जरी नाम से प्रसिद्ध हैं। ये दोनों ग्रन्थ एक ही होंग, क्योंकि अधिकतर टीकाकर्त्ताओं ने 'अनेकार्थमञ्जरी' नाम का ही उल्लेख किया है। 'रघुवरा' की टीका में कलमदेव ने 'अनेकार्यमञ्जरी' का अवतरण उद्धृत किया है। महाशपणक काश्मीरी थे। इनके समय का भी कोई निर्णय नहीं हो सका है। यदि यह भी विक्रम के नवरत्नों में से एक हो तो विश्वमादित्य अथवा चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्यकाल के आसपास इनकी स्थिति के विषय में अनुमान किया जा सकता है।

अमरसिंह—सुप्रसिद्ध “नामलिङ्गानुशासन” कोष के रचयिता अमरसिंह की स्थापति कोषकर्ता के रूप में सबसे अधिक है। इनके नाम से ही यह ग्रन्थ अमरकोष प्रसिद्ध हो गया। इनसे पूर्व प्राचीन कोषकारों ने दो प्रकार की शैलियाँ अपनायी थीं। कतिपय कोष केवल नामों का ही निर्देश करते थे और कुछ कोष लिङ्गों के ही विवेचन को अपना मुख्य विषय मानते थे। अमरसिंह ने दोनों का समन्वय कर अपने कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया। तीन काण्डों में विभक्त कर इस ग्रन्थ को ‘त्रिकाण्ड’ सजा भी दो गई। इसका उपविभाग ‘वर्णों’ के नाम से किया गया है। ‘अमरकोष’ पद्यबद्ध रचना है। ‘अनुष्टुप्’ छन्द के १५३३ श्लोकों में यह रचना सम्पूर्ण हुई है। ग्रन्थ का छठा भाग नानार्थ के वर्णन में है। दोष भाग में समानार्थ शब्दों का निरूपण किया गया है। समानार्थ-भाग में एक विषय के वाचक नामों का एकत्र सकलन है। नानार्थ-खण्ड में अन्तिम वर्ण के अनुसार पदों का संग्रह है। अव्ययों का वर्णन एक स्वतन्त्र वर्ग में किया गया है तथा ग्रन्थ के अन्त में लिङ्गों के साधक नियमों का उल्लेख किया गया है।

अमरसिंह के समय का निर्णय भी एक समस्या बना हुआ है। इतना तो अवश्य निश्चय है कि यह ग्रन्थ छठी शताब्दी से पहले ही रचा गया था। गुणरात द्वारा चीनी भाषा में इसका अनुवाद किया जाना उस समय की पश्चिम (अन्तिम) अवधि है। इसकी लोकप्रसिद्धि का सबसे अधिक प्रमाण यह है कि इस पर लगभग ४० टीकायें लिखी गई हैं। इनमें क्षीरस्वामी और रामाश्रम (मानुदीक्षित) द्वारा लिखित टीकायें बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। इन दोनों में से रामाश्रमी का पदव्युत्पत्ति-प्रदर्शन अधिक सूक्ष्म तथा परिनिष्ठित है। अमरसिंह बौद्ध थे। इनके समय की पूर्वसीमा २२५ ई० के आसपास निर्धारित की जाती है।

कोष ग्रन्थों में अमरकोष का प्रचलन अद्यावधि सर्वाधिक है। संस्कृत के विद्याधियों को बारम्बार इसमें ही इसे कठस्थ कराया जाता रहा। यह परम्परा अब भी थोड़ी-बहुत दिखाई पड़ती है। सरल भाषा एवम् अनुष्टुप्-छन्द में विरचित होने के कारण इसे हृदयङ्गम करने में कठिनाई नहीं होती। अमरकोष के अतिरिक्त शब्द-तान का लघुभूत उपाय दूसरा कोई नहीं है। इस प्रकार अमरसिंह अपने पश्चाद्गती कोषकारों के प्रेरणा स्रोत बन गए। इसी कारण उनकी सरणि को अधिक प्रशस्त बनाने में आगे के कोषकार उत्पन्न होते हुए दिखाई पड़ते हैं।

अमरसिंह के पश्चाद्गती कोषकार—बाद के कोषकार शब्दों के वैशिष्ट्य का निदर्शन कराने में बड़े सिद्धहस्त प्रतीत होते हैं। उनके प्रकरण भले ही सीमित हो किन्तु उनका क्षेत्र अधिक विस्तृत है। कतिपय कोषकारों ने केवल नानार्थ-कोषग्रन्थों की ही रचना स्वतन्त्र रूप में की है, किन्तु उन्होंने शब्दों की सूक्ष्म

समीक्षा कर अपने पाण्डित्य तथा अर्थ-निर्णय करने की क्षमता का परिचय दिया है। इस दृष्टि से निम्नलिखित विद्वान् प्रसिद्ध कोषकारों के रूप में सर्वमान्य हैं।

शाश्वत—इनका समय भी छठी शताब्दी के आस-पास माना जाता है। इन्होंने स्वयम् अपने विषय में यह लिखा है कि मैं तीन व्याकरणों को देखा तथा पाँच लिङ्गानुशासनो का अध्ययन किया। केवल इतना ही नहीं किन्तु दिष्ट-प्रयोगों के देखने में भी कोई कमी नहीं होने दी।^१ इनका विरचित कोष अनेकार्थ-समुच्चय है। इस कोष में केवल अनेकार्थ शब्दों का विस्तृत चयन है। शब्दों के चयन में अमरकोष की अपेक्षा अधिक विस्तार तथा प्रौढ़ता दृष्टिगोचर होती है। प्रह्लन कोष के अन्तिम पद्य से यह संकेत मिलता है कि ग्रन्थकार ने कवि महाबल तथा बराह से भी इस सम्बन्ध में परामर्श किया था^२। अनेक विद्वानों के सहयोग से इस कोष की रचना होने के कारण इसमें व्यापकता होना स्वाभाविक है।

धनञ्जय—शाश्वत के लगभग दो शताब्दी पश्चात् धनञ्जय ने 'नाममाला' कोष की रचना की। यह कोष व्यवहार में आने वाले लोकप्रचलित संस्कृत शब्दों का उपयोगी कोष है। इसे लघुकोष कहना ही उचित है। इसमें केवल २०० श्लोक हैं। विशेषता इस बात में है कि ग्रन्थकार ने शब्दों की रचना के सुन्दर उपाय बताये हैं। उदाहरणार्थ पृथ्वीवाचक शब्दों में 'धर' लगा देने से सर्वतवाची शब्दों का बोध होता है (मही + धर, पृथ्वी + धर आदि)। इसी प्रकार मनुष्यवाची शब्दों में 'पति' शब्द जोड़ देने से राजा के नाम (नर + पति, नृ + पति) तथा वृक्षवाची शब्दों में 'चर' शब्द जोड़ने से बन्दर के समानार्थक शब्द बन जाते हैं (द्रुम + चर, वृक्ष + चर आदि)। इस कोष की यही विशेषता है कि शब्दों के चयन में लोकव्यवहार को विशेष महत्व दिया गया है। 'अनेकार्थनाममाला' इसका पूरक अङ्ग है। कोषकार के अतिरिक्त धनञ्जय कवि भी हैं। इनका 'द्विसन्धान' काव्य द्वायाश्रय काव्यों में बड़ा प्रसिद्ध है। इस काव्य में द्दिलिप्त १६० के द्वारा रामायण और महाभारत के कथानकों का विद्यद वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनका समय आठवीं शताब्दी का उत्तरार्ध निश्चित-प्रायः है। इस विषय में बीरसेन स्वामी द्वारा 'पटुखण्डानम' की धबला नामक टीका में 'अनेकार्थनाममाला' का उद्धृत एक श्लोक ही पर्याप्त प्रमाण माना जा

१. दृष्टदिष्टप्रयोगोऽहं दृष्टव्याकरणतयः।

अधीनी मदुपाध्यायान् त्रिज्ज्ञानैषु पञ्चसु ॥

—शाश्वतकोष—आरम्भ का ६ श्लोक

२. महाबलेन कविना बराहण च भीमना।

सह सम्भक् परामृद्व्य निमित्तोऽयं प्रयत्नन ॥

सकता है। घदला टीका ८७३ विक्रमी संवत् (= ८१६ ई०) में लिखी गई थी। अतः धनञ्जय ७४०-७९० ई० के मध्य अवश्य रहे होंगे।

पुरयोत्तमदेव—धनञ्जय के लगभग ४०० वर्षों के उपरान्त पुरयोत्तमदेव ने तीन कोप-ग्रन्थों की रचना की। ये ग्रन्थ हैं—(१) त्रिकाण्ड कोप, (२) हारादली तथा (३) वर्णदेशना। इनमें से प्रथम तो 'अमरकोष' का पूरक ग्रन्थ है। इसका क्रम 'अमरकोष' के समान है। सधनुसार इसमें भी तीन काण्ड तथा पच्चीस वर्ण हैं। इसमें भी लोकव्यवहार में प्रयुक्त शब्दों के साथ ही 'अमरकोष' में अनुपलब्ध शब्दों का भी सग्रह किया गया है। हारादली में अप्रचलित तथा असामान्य शब्दों का समाकलन किया गया है। २७० पद्यात्मक 'लघुकोष' होने पर भी यह दो भागों में विभक्त है—(क) समानार्थक तथा (ख) नानार्थक। समानार्थक भाग के तीन अंश हैं—पहले में पूरे श्लोक में समानार्थक शब्द हैं, दूसरे में अर्ध श्लोक में तथा तीसरे में एक चरण में ही। नानार्थक खण्ड की भी यही सरणि है। वर्तनी अर्थात् शब्दों की शुद्धता बतलाना वर्णदेशना का मुख्य ध्येय है। इन ग्रन्थों की उपादेयता इस कारण सुविदित है। स्वयं ग्रन्थकार ने यह उल्लेख किया है कि गौड़-लिपि में भिन्नता होने के फलस्वरूप शब्दों के रूपों में भ्रान्ति होना सम्भव है। इसके निराकरण-हेतु 'वर्णदेशना' की उपयोगिता है। अमरसिंह की भांति पुरयोत्तमदेव भी बौद्ध थे। इन्होंने सर्वप्रथम बुद्ध को 'मुनीन्द्र' रूप में नमन किया है। इस कार्य में यह अमरसिंह से और आगे बढ़े। देवनागरी के सम्बन्ध में इन्होंने बुद्ध के बाद बुद्ध के पुत्र राहुल का, अनुज देवदत्त का, मायादेवी का तथा प्रत्येक बुद्ध का क्रमशः उल्लेख किया है। यह बंगाल के शासक राजा लक्ष्मणसेन ११७०-१२०० के समकालिक थे। इन्हीं के आदेश से पुरयोत्तम देव ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर 'भाषावृत्ति' नामक वृत्ति लिखी। अतः इनका समय बारहवीं शती का उत्तरार्ध मानना युक्तिसंगत है।

हलामुघ—इनकी रचना अभिघान-रत्नमाला के नाम से प्रसिद्ध है। इस कोप में पाँच काण्ड हैं—स्वर्, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्थ। इनमें से प्रथम चार काण्डों में समानार्थक शब्दों का वर्णन है तथा अन्तिम काण्ड में नानार्थ एवं अव्ययों का। इन्होंने अमरसिंह को ही अपना आदर्श माना है। यह मान्यशेट्ट के राजा कृष्णराज तृतीय ९५० ई० के समकालिक थे। अतः इनका समय दशम शती का उत्तरार्ध माना गया है।

यादवप्रकाश द्वारा विरचित वैजयन्ती कोप बड़ी महत्त्वपूर्ण रचना है। यह दो खण्डों में विभक्त है—समानार्थ तथा नानार्थ। समानार्थ-खण्ड में पाँच भाग हैं—स्वर्ग, अन्तरिक्ष, भूमि, पाताल तथा सामान्य। नानार्थ-खण्ड में तीन भाग हैं, जिनमें ग्रन्थकार द्वारा शब्दों का चयन अक्षरक्रम से किया गया है।

वर्णक्रम से शब्दसंग्रह किया जाना इसकी नवीनता है। दूसरी विशेषता यह है कि इसमें वैदिक शब्दों का सकलन भी किया गया है। रामानुजाचार्य (१०५५-११३७ ई०) के यह गुरु थे। अतः इनका स्थितिवाक्य ११ वीं शती का उत्तरार्ध निश्चितप्रायः है।

महेश्वर—इनका विश्वप्रकाश-कोष नानार्थ-शब्दों का सकलनात्मक ग्रन्थ है। इस कोष में शब्दों का चयन अन्तिम वर्ण के आधार पर किया गया है। रूपभेद का निर्देश भी इसमें किया गया है। ग्रन्थान्त में अव्ययों का सकलन विद्यमान है। ग्रन्थकार ने स्वयम् अपना परिचय इस कोष के अन्त में दिया है। तदनुसार इस कोष की रचना सन् ११११ ई० में हुई थी। मल्लिनाथ ने इस कोष का उपयोग अपनी टीकाओं में विशेषतया किया है।

अजयपाल—यह बौद्धमतानुवर्ती थे। इनकी रचना नानार्थसंग्रह नाम से प्रसिद्ध है। इस कोष में १७३० शब्द हैं। इस कोष में भी वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। इनके मत का उल्लेख अमरकोष के टीकाकार सर्वानन्द टीकासर्वस्व (११५९ ई०) में बहुधा किया है। इसके अतिरिक्त वर्धमान ने अपने व्याकरण ग्रन्थ 'गणरत्नमहोदधि' (रचना ११४० ई०) में इसका बहुधा उल्लेख किया है। फलतः यह बारम्बार शती से कुछ पहले हुए होंगे। इन्होंने 'घ' तथा 'व' में अन्तर नहीं माना है। इस कारण इनके वगदेशीय होने का अनुमान किया जाता है।

मेदिनीकर—इनका ग्रन्थ 'मेदिनीकोष' के नाम से प्रसिद्ध है। यह भी नानार्थ कोष है। मेदिनीकर ने शब्दों के चयन में दो प्रकार अपनाये हैं—१. कारादि वर्णक्रम तथा अन्तिम वर्णक्रम। मेदिनी ने विश्वप्रकाश को 'बहुदोष' बतला कर अपना महत्त्व सूचित किया है। मेदिनीकोष शब्दों की संख्या में तथा चयन की व्यवस्था में विश्वप्रकाश की अपेक्षा अधिक विशद एवं सुव्यवस्थित है। जयशेखराचार्य (लगभग १३०० ई०) के मैथिली भाषा में लिखित वर्णरत्नाकर ग्रन्थ में मेदिनीकर का उल्लेख होने से डा० गोडे ने इन्हें १२००-१२७५ ई० के मध्य माना है।

मह—इन्होंने भी अन्तिम व्यञ्जनो के आधार पर अनेकार्थ-कोष की रचना की है। इसमें १००७ पद्य हैं। इसका विभाजन परिच्छेदों में नहीं किया गया है। इनका स्थितिकाल ११२८-११४९ के मध्य माना गया है। यह काश्मीर के राजा जयसिंह के राज्यकाल में विद्यमान थे। इस कोष में प्रायः काश्मीर के कवियों द्वारा प्रयुक्त शब्दों का चयन किया गया है।

हेमचन्द्र—कोषग्रन्थों के इतिहास में यह सर्वाग्रणी हैं। इन्होंने चार कोषग्रन्थ लिखे हैं—अभिधानचिन्तामणि (समानार्थकोष), अनेकार्थसंग्रह (नानार्थ-

कोष), निघण्टुकोष (वंदक) तथा देशीनाममाला (प्राकृतकोष) । इनमें से अभिधानचिन्तामणि को छह काण्डों में विभक्त किया गया है—देवाधिदेव, देव, मर्त्य, भूमि, नरक तथा सामान्य । यह काण्ड नानावृत्तों में निम्न १५४२ पदों में समाप्त हुआ है । इस पर स्वयं ग्रन्थकार ने ही टीका लिखी है । अनेकार्यसंग्रह भी छह काण्डों में विभक्त है । इसमें १८२९ श्लोक हैं । शब्दों का संग्रह दो प्रकार से है—अग्निम ज्वाले द्वारा तथा -दिम अक्षरों द्वारा । इन्होंने व्याख्यान में आने वाले संस्कृत शब्दों का यथावत् संगृहीत कर उनके प्रति निष्ठा द्योतक की है । यह ग्रन्थ महाराष्ट्र के राजा सोमदेव के ग्रन्थ मानमोन्लाप (रचना ११३० ई०) का समकालिक प्रतीत होता है । हेमचन्द्र का प्रभाव अवान्तरशालीन कोषकारों पर विशेष रूप से पड़ा है ।

केशव स्वामी—इनके द्वारा विरचित नानार्णव-संक्षेप नानार्थ शब्दों का सबसे बड़ा कोष है । इसमें लगभग ५८०० श्लोक हैं । अक्षरों की गणना के आधार पर यह कोष भी छह काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड लिङ्ग के अनुसार पाँच भागों में विभक्त है । इसमें वैदिक शब्दों का सकलन भी विद्यमान है । यह ग्रन्थ चोलपट्टी नरेश राजराज चोल के आश्रय में रहकर लिखा गया है । इनका समय १२०० ई० के आस पास माना जाता है । इस ग्रन्थ के छह काण्डों में प्रति-काण्ड पाँच अध्याय हैं । काण्डों का विभाजन एकाक्षर में लेकर षडक्षर तक है । अध्यायों का विभाजन लिङ्ग के अनुसार किया गया है—स्त्रीलिङ्ग, पुल्लिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग, वाच्यलिङ्ग तथा संकीर्णलिङ्ग । प्रत्येक अध्याय में शब्दों का अक्षर-क्रम से किया गया है । आधुनिक काण्ड-ग्रन्थों में यही क्रम स्वीकृत है ।

केशव—अद्यावधि ज्ञात समानार्थ कोषों में केशव का कल्पद्रुकोष सबसे विशाल है । इसमें लगभग ४०० श्लोक हैं । इसके तीन स्वरूप हैं—भूमि, भुव तथा स्वर्ग । प्रत्येक स्वरूप प्रकाण्डों में विभक्त है । ग्रन्थकार के अनुसार इसकी रचना १६६० में हुई । इस काण्ड के शब्दचयन में बड़ी विविधता है । अनेक ज्ञातव्य तथ्यों के संग्रह ने इसे विश्वकोष का रूप दिया है । इसमें समानार्थ शब्दों के साथ प्रयुक्त विषयों का विस्तृत वर्णन भी विद्यमान है ।

शाहजो—यह विश्वविख्यात छत्रपति शिवाजी के भतीजे थे । तज्जोर के इतिहास के अनुसार शाहजो का राज्य-समय (१६८४-१७१२ ई०) विद्योत्पत्ति के लिये प्रसिद्ध रहा है । इनकी समा में ४७ विद्वान् रहते थे । इनका विरचित शब्दरत्नसमन्वय-कोष शब्दचयन की दृष्टि में बड़ा महत्त्वपूर्ण है । इस कोष में प्रत्येक वर्ग के भीतर अक्षर-क्रम से शब्दों का विन्यास किया गया है । शब्दों का अवान्तर क्रम भी अकारादि क्रम के अनुसार विद्यमान है । यह विशेषता संस्कृत के बहुत कम कोषों में पाई जाती है । इन्होंने 'ख' को अठम वर्ण के रूप में

स्वीकार किया है। उसमें आरम्भ होने वाले शब्दों को अन्त में रखा है। इस कोश में लगभग ३५०० श्लोक हैं। इस कोश का दूसरा नाम राजकोश भी है।

हर्षकीर्ति—इन्होंने समानार्थक शब्दों के आरक्षीयाभिधानमाला नामक कोश की रचना की। यह तीन काण्डों में विभक्त है तथा प्रत्येक काण्ड को भी वर्गों में विभक्त किया गया है। प्रथम काण्ड के तीन वर्ग हैं—देववर्ग, व्योमवर्ग तथा धरावर्ग। द्वितीय काण्ड चार वर्गों में विभक्त किया गया है—अङ्गवर्ग, भयोपादिवर्ग, सगीतवर्ग तथा पण्डितवर्ग। तृतीय काण्ड के पाँच वर्ग हैं—ब्रह्म, राज, वैश्य, शूद्र तथा सकीर्ण। पूरे ग्रन्थ में केवल ४३५ श्लोक हैं। कोश के अतिरिक्त हर्षकीर्ति ने अनेक (शास्त्रीय विषयों पर) ग्रन्थों की रचना की। यह जैनधर्मावलम्बी थे। इनके गुरु चन्द्रकीर्ति रहे, जिन्होंने जर्हागीर (१७ वीं शती) से विशेष सम्मान प्राप्त किया। इन्होंने एक दूसरे कोश की भी रचना की। उस कोश का नाम है—शब्दानेकार्थ। इण्डिया आफिस लाइब्रेरी में इस पुस्तक का रचनाकाल वि० स० १६६५ लिखा है। अतः इनका समय सत्रहवीं शती का आरम्भिक अरण मानना युक्तिमय प्रतीत होता है।

नवीन ढंग के कोष

विदेशी भाषाओं के सम्पर्क में आने पर कुछ विद्वानों ने विविध कोशों का संहृत में सकलन किया। इस पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग शब्दकल्पद्रुम नामक प्रख्यात कोष में किया गया। इस कोष को सुप्रसिद्ध मनीषी राजा राधाकान्तदेव ने मान्य पण्डितों की सहायता में अनेक खण्डों में १८२२ तथा १८५८ ई० के बीच प्रकाशित किया। इसमें शब्दों का चयन वर्णक्रम से है तथा पुराण, धर्मशास्त्र आदि प्रमाण ग्रन्थों के उद्धरणों का समावेश होने से इसकी श्रामा-निकता बहुत बढ़ गई है। वस्तुतः यह संहृत का विश्वकोष है। इसमें वैदिक शब्दों का प्रायः अभाव है। शब्दों की व्युत्पत्ति देने से इस कोष की उपादेयता बढ़ गई है। प्रस्तुत कोष में रचना क्रम से आये हुए शास्त्रोपयोगी शब्दों के प्रसङ्ग में प्रमाणों के अतिरिक्त उनकी प्रायोगिक उपयोगिता को भी बतलाया गया है। उन पदार्थों के लक्षण, स्वरूप तथा शिखादि देकर कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाया है। इन सब विषयों का समावेश सात काण्डों में किया गया है। राजा राधाकान्तदेव ने कोष के आरम्भ में 'सुखबन्धन' (भूमिका) लिखते हुए प्रसङ्गवश यह सूचित किया है कि लौकिक कोषों का आदिम स्वरूप 'अग्नि-पुराण' में वर्णित कोष-प्रकरण है। इस प्रकरण का क्रम इस प्रकार है—स्वर्ग-पातालादिवर्ग, अव्ययवर्ग, नानार्थवर्ग, भूवर्ग, पुर-वर्ग, अद्रि-वर्ग, वनोपदिवर्ग, सिंहादिवर्ग, मनुष्यवर्ग, ब्रह्मवर्ग, क्षत्रियवर्ग, वैश्यवर्ग तथा शूद्रवर्ग। इसके अतिरिक्त दोष भाग में सामान्य नामलिङ्गों का वर्णन है। राधाकान्त देव के

अनुसार अमरकोषकार ने अधिकतर अग्निपुराणोक्तद्रुम ही अपनाया है। थोड़ा-बहुत परिवर्तन कर 'अमरकोष' की पूर्ति की है। जटाधर ने भी अमरकोष का अनुसरण किया है। शब्दकल्पद्रुम में २९ कोषों का उपयोग किया गया है।

शब्दकल्पद्रुम के टग पर आगे चलकर दो कोष और बनाये गये। इनमें प्रथम शब्दार्थचिन्तामणि तो उतना विशाल नहीं है। उसमें केवल चार भाग हैं। उसके रचयिता सुतानन्दनाथ रहे। कोष की रचना १८६४-१८८५ तक हुई। दूसरा कोष वाचस्पत्यम् बड़ा विशाल है। सर्वप्रथम यह कलकत्ता से २० भागों में प्रकाशित हुआ (१८७३-१८८४ ई०)। इसके सकलनकर्ता तारानाथ तर्कवाचस्पति थे। इसने वैदिक शब्दों का भी समावेश है, किन्तु उनकी व्युत्पत्ति अधिकतर कल्पनाप्रसूत है।

इसी समय राय तथा बोथलिक नामक जर्मन विद्वानों द्वारा महान् संस्कृत कोषों का प्रणयन हुआ, जिसमें वैदिक शब्दों का भी पूर्ण समावेश है। इसकी रचना भाषावैज्ञानिक रीति पर की गई है। जर्मन विद्वानों ने अनेक पण्डितों की सहायता से शब्दों के प्रयोगस्थलों का भी निर्देश किया है। इसके साथ ही शब्दों के अर्थविकास को अङ्कित करने का भी दलाध्य प्रयास किया है। उस समय तक प्रकाशित तथा अप्रकाशित समस्त संस्कृत ग्रन्थों का विधिवत् अनुशीलन कर इस विशाल कोष की रचना की गई है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार डा० राय ने वैदिक शब्दों का तथा डा० बोथलिक ने वैदिकेतर शब्दों का विवरण भाषाशास्त्रीय पद्धति पर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है। डा० बोथलिक ने इसका एक सक्षिप्त संस्करण भी जर्मन भाषा में प्रकाशित किया था।

इसी क्रम में डा० मोनियर विलियम्स ने एक संस्कृत-अंग्रेजी कोष की रचना की। इनका परिश्रम दलाध्यनीय है। शब्दों के चयन तथा अर्थनिर्देश में बड़ा परिश्रम किया गया है। केवल कमी इस बात की है कि प्रयोगस्थलों का निर्देश नहीं किया गया है। इस कोष की रचना उपर्युक्त जर्मन कोषों के आधार पर हुई है। यह कोष समानार्थक शब्दों के सम्बन्ध में बड़ा प्रामाणिक माना जाता है। इसका दूसरा स्वरूप अंग्रेजी में संस्कृत में भी है।

इस प्रकार के कोषों की रचना में आगे चलकर भारतीय विद्वान् भी अग्रसर हुए, जिनमें वामन सदाशिव ाप्टे का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है। इन्होंने भी संस्कृत-अंग्रेजी तथा अंग्रेजी-संस्कृत कोषों की रचना की। यह कोष विद्वानों तथा छात्रों के लिये समान रूप से उपकारक है। इस कोष में वर्णक्रमानुसार शब्दों का चयन किया गया है। प्रयोगस्थलों के निर्देश में पुराण तथा काव्यादि के उद्धरणों का उपयोग किया गया है। शास्त्रीय परिभाषाओं, छन्दों, प्राचीन

भौगोलिक एवं ऐतिहासिक स्थलों का विवेचन भी यथास्थान किया गया है। हाल में इसका नवीन संस्करण तीन खण्डों में पुणे से प्रकाशित हुआ है। इसके अतिरिक्त छात्रोपयोगी संस्कृत हिंदी लघु संस्करण भी प्रकाशित हुआ है। नवीन संस्करण में शब्दों के चयन में सम्पादकों ने वृद्धि की है।

शब्दपरायण की प्रक्रिया को अभिनव रूप देने वालों में महामहोपाध्याय पण्डित रामादितार दामा प्रमुख रहे हैं। उन्होंने एक विशाल कोष की रचना की। इस कोष का नाम है—चाङ्गमयार्णव। दामाजी (१८७७-१९२९ ई०) ने इस कोष का प्रारम्भ १९११ ई० में किया। जीवन भर वे इसमें परिवर्तन परिवर्धन करते रहे। अचार्य बलदेव उपाध्यायजी के अनुसार यह कोष नामलिङ्गानुशासन की परम्परा का सार्वभौम ग्रन्थ है। यह नानार्थक कोष है। इसमें शब्दों का चयन वैज्ञानिक वर्णक्रमानुसार किया गया है^१। वैदिक तथा लौकिक दोनों प्रकार के शब्दों का इसमें समावेश है। इस कोष में प्रत्येक शब्द की व्युत्पत्ति के साथ उसके प्रयोगस्थलों का भी समुचित निर्देश किया गया है। इसमें २०,००० शब्द उपन्यस्त हैं। साथ ही इस कोष की रचना पद्यमयी है तथा ६७९६ अनुष्टुप्ओं में समाप्त हुआ है। ग्रन्थ के आरम्भ में १६ पद्यों का उपक्रम है एवम् अंत में ६ श्लोको में समापन किया गया है। ग्रन्थकार के निधन के ३८ वर्षों के सुदीर्घ काल के पश्चात् सन् १९६७ ई० में ज्ञानमण्डल प्रकाशन द्वारा यह प्रकाशित किया गया है।

वर्तमान काल की काव्य निर्माण प्रवृत्ति

जर्मन संस्कृत कोष के प्रकाशन के लगभग एक दशक के बाद नवीन वैदिक कोष की आदिसूचना प्रतीत होन पर होशियारपुरस्थ विद्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान से अनेक विद्वानों के सहयोग से एक बृहद् वैदिक कोष का प्रकाशन हुआ है। इस काव्य न वैदिक साहित्यों के सम्बन्ध में ऋषियों के सन्दर्भ की समस्या हल कर दी है। यद्यपि इसे शब्दपरायण की दृष्टि से कोष के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है तथापि इसमें वैदिक शब्दों की सूची विशदमान होने से वैदिक मूल-शब्दों का परिचय सुलभ हो जाता है। इसके १६ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके

१ वर्णानुक्रमविपरिणामवेगमयोद्भूते ।

२०२४ मधुसूदनसिंह वैद्यकान्तो महाशय ॥

विद्योपदेश स्वयुक्तप्रमत्तीनां पदसुख ।

मोचयुक्तोदाहृतिभिर्दृष्ट्यने समल्लङ्घन ॥

सचित्र प्रचुरावर्धन्यवैज्ञानिकपदोच्चय ।

परिशिष्टेषु बहुभिः कोष एव परिष्कृत ॥

अतिरिक्त "संस्कृत का बृहत्तम कोष" प्रकाशन करने की योजना डेक्कन कालेज, पुणे के शोध-विभाग के निदेशक सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० एस० एम० कात्रे ने भी प्रस्तुत की है। उनके साथ अनेक विज्ञ सहयोगी भी इस कार्य में सलग्न हैं। अब तक इस कोश के ३ खण्ड प्रकाशित हुए हैं। इसके समग्र भाग प्रकाशित होने पर कोश-साहित्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जायगा। इसकी विशेषता यह है कि शब्दों का अर्थ देने में भाषा-वैज्ञानिक पद्धति का आश्रय लिया जा रहा है तथा यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अधिकाधिक प्रचलित शब्दों का विधिवत् समा-कलन हो जाय।

शब्दराशि को समाकलित करने में विद्वानों की प्रवृत्ति आज भी देखी जाती है। इस प्रवृत्ति में शब्दों का प्रयोग एवं प्रचलन ही मुख्य कारण है। शब्दों के प्रचलन एवं प्रयोग होने में देश-काल की परिस्थिति मुख्य रूप से साधक होती है। अतः कोष-रचना की प्रक्रिया बराबर चलती रहती है। इसके फलस्वरूप बाराणसी से श्रीगोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री ने भी बृहत् संस्कृतकोष के प्रकाशन की योजना बनाई है। उसका एक खण्ड प्रकाशित हुआ है। इसके सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर हिन्दी जगत् को संस्कृत-वाङ्मय में अवगाहन करने के लिए अच्छा अवसर मिलेगा। वर्तमान समय के कोषकारों में सुप्रसिद्ध विद्वान् डा० सूर्यकांत का योगदान भी प्रशंसनीय है। उन्होंने संस्कृत हिन्दी-अंग्रेजी कोश की रचना की है। इसके पूर्व चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा का संस्कृतशब्दार्थकोस्तुभ (संस्कृत-हिन्दी) का अच्छा प्रचार हुआ है। इन्होंने कोष लिखकर अनेक विद्वानों को कोष-रचना करने के लिए प्रेरित किया है।

विविध कोश

(क) इस प्रसङ्ग में संस्कृत के समानान्तर पालि-प्रकृत कोशों पर भी विचार करना आवश्यक है। रचना-क्रम में पालि-कोश अधिकतर वैदिक निघण्टुओं के समान परिलक्षित होते हैं। ये कोश श्लोकबद्ध नहीं हैं। पालिकोशों में सर्वप्रसिद्ध कोष महाय्युत्पत्तिकोश है, जो २८४ प्रकरणों में विभक्त है। इसमें लगभग ९०० शब्द संकलित हैं, जिनमें समानार्थक शब्दों के अतिरिक्त धातुरूप भी सङ्गृहीत हैं। इसके अतिरिक्त पालिकोशों में मोगलान की अनिघानप्पदीपिका नामक कोश अत्यधिक लोकप्रिय है। यह बारहवीं शती की रचना है तथा अमरकोष की शैली में लिखा गया है।

प्राकृत कोषों में सबसे प्राचीन कोष पाण्डित-तल्लिखनाममाला है। इसके रचयिता धनपाल हैं। इसे ग्रन्थकार ने ९७२ ई० में लिखा था। इसमें २७९ गापायें हैं। हेमचन्द्र ने इस कोष का उपयोग अपने देशी नाममाला में किया है।

हमचन्द्र वा वेशोत्तममाला प्राकृत कोश बड़ा सुन्दर तथा रोचक है। इसमें आठ अध्याय (वर्ग) हैं। इन अध्यायों में शब्दों का सग्रह आदिम अक्षर को अभिलक्षित कर किया गया है। पर्यायवाची शब्द के अनन्तर उसी अक्षर से आरम्भ होने वाले नानार्थ शब्द भी रखे गए हैं। इस ग्रन्थ में तद्भव शब्दों की प्रधानता होने से प्राकृत शब्दों के ज्ञान में बड़ी सहायता मिलती है। इस कोष के अनुशीलन से उस युग (१२वीं शती) के रीति रिवाजों का भी पता चलता है।

इस बीच दो प्राकृत कोशों का प्रकाशन बड़ा उपयोगी मिष्ट हुआ है। ये दो कोश हैं—(१) अभिधान राजेन्द्र-कोश तथा (२) प्राकृत-शब्दमहार्णव। इनमें से प्रथम ग्रन्थ तो जैनधर्म का विद्वत्कोष ही है, जिसमें जैनधर्म, जैन दर्शन तथा साहित्य के विषयों को अभिलक्षित कर प्राचीन ग्रन्थों के उद्धरणों के साथ बड़ा साङ्गोपाङ्ग विवेचन है। यह ग्रन्थ विशालकाय है, सात खण्डों में विभक्त है। इसकी पृष्ठ संख्या १०,००० है। प्राकृतशब्दमहार्णव इसकी अपेक्षा लघुकाय है। इसका आयाम लगभग १५०० पृष्ठों में सीमित है। यह नवीन शैली का कोश है। इसमें प्रयोगस्थलों का निर्देश बड़ी सुन्दरता के साथ किया गया है।

(ख) मुगलकाल में फारसी का प्राधान्य होने के कारण फारसी-संस्कृत कोषों की आवश्यकता प्रतीत हुई। इसके फलस्वरूप अकबर बादशाह के आदेश से बिहारी कृष्णदास मिश्र ने पारसीप्रकाश ग्रन्थ की रचना की। इस ग्रन्थ के दो भाग हैं—कोश तथा व्याकरण। २६९ अनुष्टुप् श्लोकों में पारस्य प्रकरणों का समावेश किया गया है। प्रकरणों का शीर्षक अधिकतर अमरकोष के समान है। इसमें फारसी शब्दों के संस्कृत पर्याय दिये गए हैं। इसी प्रकार का दूसरा ग्रन्थ बेबाङ्गराय द्वारा विरचित पारसी प्रकाश (१६४७ ई०) है। इसमें फारसी तथा अरबी के शब्दों का संस्कृत में अर्थ दिया गया है। तीसरा ग्रन्थ पारसी-विमोद भी इसी समय लिखा गया। इसके रचयिता ब्रजभूषण थे। महाकवि क्षेमेंद्र का लोकप्रकाश भी इस दृष्टि से उपयोगी है। इसमें भी फारसी के बहुत शब्दों का प्रयोग हुआ है। इस ग्रन्थ में साहजिकी का भी उल्लेख होने से यह विदित होता है कि इसमें कुछ अथ सत्रहवीं शती में जोड़ दिया गया हो।

विशिष्ट-कोष

संस्कृत वाङ्मय के विशिष्ट विषयों को अभिलक्षित कर भी विद्वानों ने अनेक कोष ग्रन्थ बनाये। संगीत में संगीतराज नामक विशालकाय ग्रन्थ का एक भाग कोष के रूप में प्रख्यात है। उस अंग को नृत्यरत्नकोष कहा गया है। इसके ऐश्वर्य महाप्राणा कुम्भकर्ण हैं। किसी अज्ञात लेखक ने वस्तुरत्नकोश की रचना भी की है। इसमें वस्तु-विषयों के नामों के अर्थ दिए गए हैं।

विवेक है। प्रथम भाग सूत्रात्मक है तथा दूसरा सूत्रों तथा तत्सम्बन्धी विवरणों से युक्त है। यह ग्रन्थ सम्भवतः १०००-१४०० ई० के मध्य लिखा गया है।

इस प्रमत्त में वैद्यक-कोशों का उल्लेख करना अत्यावश्यक है। इन कोशों की भी निघण्टु संज्ञा है। इनमें प्रमुख है—“(क) घन्वन्तरिनिघण्टु। यह नव गण्डों में विभक्त है। क्षीरस्वामी के अनुसार यह अमरकोष से प्राचीन है। अवान्तर् निघण्टुओं में (ख) माधवकर की रत्नमाला (नवी शती) तथा हरिचरण सेन का (ग) पर्यायमुक्तावली ग्रन्थ सुविदिन हैं। इन ग्रन्थों के अतिरिक्त (घ) हेमचन्द्र का निघण्टुशेष, (ङ) मदनपाल का मदनपालनिघण्टु (१३७४ ई०) (च) केशव का सिद्धमन्त्र (१२५० ई० के लगभग), (छ) केशवदेव का पञ्चारम्भबोधक निघण्टु एवं (ज) नरहरि का राजनिघण्टु भी वैद्यक निघण्टुओं में मान्य हैं। इन सबमें राजनिघण्टु सबसे बड़ा है। इसके लेखक नरहरि नामक वैद्य हैं (१३८० ई० के आसपास)। इन सबके अनिरिक्त नानार्थ-ओपधकोशों में (झ) शिवकोश (१६७३ ई०) बड़ा महत्वपूर्ण है। इसके रचयिता शिवदत्त मिश्र थे। ग्रन्थकार ने इसकी व्याख्या भी स्वयं लिखी है। यह नानार्थक ओपधि-कोष है। इसमें ऐसे ओपधि-वाचक शब्द संकलित किये गए हैं, जिनके अनेक अर्थ उपलब्ध होते हैं।

इन पृष्ठों में वर्णित कोशग्रन्थों के अतिरिक्त अनेक कोशग्रन्थ हस्तलिखित रूप में हैं तथा अनेक कोश केवल उद्धरणों के रूप में ही ज्ञात हैं। ऐसे कोश-कारों में अजयपाल (धरणीकोश के कर्ता), रन्तिदेव, रभस, आदि अनेक विद्वान् प्रसिद्ध हैं।

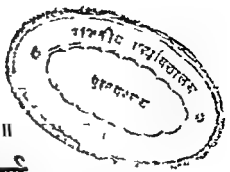
अधिकतर कोशों में सज्ञाशब्दों का ही साहचर्य है। कतिपय कोश क्रिया के अर्थ का निरूपण करने के लिए भी लिखे गए हैं। ऐसे क्रियाकोशों में दो कोश विख्यात हैं—भट्टमल्ल (१२ वीं शती) की आख्यातचन्द्रिका तथा हलायुध का कविरहस्य। इस प्रकार के अन्य ग्रन्थों में ये भी प्रसिद्ध हैं—विद्यानन्द का क्रिया-रत्नाकर, क्षीरपाण्ड्य की क्रियापदार्थदीपिका, रामचन्द्र का क्रियाकोश, गुणरत्नसूत्रि का क्रिया-रत्नसमुच्चय तथा दशबल का धातुरूप भेद। इन ग्रन्थों का उल्लेख ‘आख्यातचन्द्रिका’ की भूमिका में किया गया है। इसी प्रकार उणादि कोष भी रचा गया है। अब तो कोष-ग्रन्थों की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि ग्रन्थविशेष में प्रयुक्त शब्दों के सम्बन्ध में भी कोषग्रन्थों की रचना होने लगी है। कादम्बरी आदि प्रसिद्ध ग्रन्थों के कोष तैयार होने लगे हैं। इसके साथ ही प्रत्येक शास्त्र के पारिभाषिक-कोष एवं शास्त्रीय-कोषों की भी अब बाढ़-सी आ गई है। सार्वजनिक लोकोपयोगी विधि एवं व्यवहार-कोषों की भी रचना हो गई है। जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसको अभिलिखित कर कोष-रचना न हुई हो। रामायण-

कोष, महाभारतकोष, पुराणकोष, व्याकरण, साहित्य, धर्मशास्त्र, भौमाशा-
न्याय, योग, तन्त्र, सांख्य, वेदान्त, अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों के कोष अब
उपलब्ध हो चुके हैं। जो विषय छूटते रह गए हैं उन विषयों पर भी कोषग्रन्थों
की रचना दी गई हो जायगी। उपनिषदों के आधार पर जैबब का उपनिषद्-
वाक्यकोष बहुत पहले ही बन चुका था (१८९१ ई०)।

कोषविद्या के इस समिष्ट विवरण से यह निष्कर्ष निकलता है कि सम्पूर्ण
तथा प्राकृत के विद्वानों ने अपनी शब्दनिधि को सुरक्षित रखने तथा प्रचलित
करने के लिये कोषग्रन्थों की रचना कर जो प्रयास किये हैं वे सर्वथा हलाकतीय
हैं। विश्व में कोषग्रन्थों का इतना विस्तृत एवं प्राचीन परिचय बीनीमाया को
छोड़ कर फिर संस्कृत में ही विद्यमान है। इस परोक्ष को सुरक्षित रखना
प्रत्येक संस्कृतज्ञ का पवित्र कर्तव्य है।

—गोपालदत्त पाण्डेय





॥ श्रीः ॥

आदर्श-

हिन्दी-संस्कृत-कोशः

अ

फडकना

अ

अ, देवनागरीवर्णमालाया प्रथम स्वरवर्ग, अकार ।

अ-, (= नञ्), अव्य० (स) तत्सादृश्यमभावश्च तदन्त्यस्य तदव्ययता । अप्राशस्त्य विरोधश्च नञर्थी षट् प्रकीर्तिता । उदाहरणानि—
(सादृश्ये) अमाश्वत्थम् = माश्वत्थम्, (अभावे) अमौननम् = मोहनाभावः, (अन्वये) पण्डितः षट् = षट्भिन्नाः, (अन्वये) अनुदरी कन्या = कल्पोदरी, (अप्राशस्त्ये) अथन चर्मघनम् = अप्राशस्त्यघनम्, (विरोधे) अथर्म परापकार = धर्मविरोधी ।

अक, स पु (स) चिह्न अमिश्रणं, लक्षणम् २ सत्याचिह्नम् (१, २, ३ आदि) ३ लेख ४ मास्यम् ५ रूपकभाग ६ कोटम् ७ शरीरम् ।

—गणित, स पु (स न) गणितभेदः, अङ्कविद्या ।
—गत, वि, गृहीत, निरुद्ध ।
—पाली, स स्त्री, परिचारिका ।
—दायिनी, स स्त्री, पत्नी, जाया ।
—देना, भरना वा लगाना, मु, आलिङ्ग (भ्वा, प से), आशिष् (दि, प अ) ।

अकम्, स पु (स न) चिह्न-लक्षण, दानम् २ लेखनम्, ३ गणनम् ।

अकित, वि (स) चिह्नित, लान्छित, २ लिखित ।

अकुर, स पु (न) अकूरः, प्ररोहः, उद्भिदः (पु) ।

अकुरित, वि (स) स्फुरित, सांकुर, उद्भिदः ।

अकुशः, स पु (स) अकुशः (स्त्री), अक्षुष ।

अकोरः, (अकवारः), स पु (स अक) कोट-ट-डा, वत्स्य २. उत्कोचः, उपायनम् ।

अकुशा, स. पु, दे 'अकुर' ।

अग, स. पु (स न) शरीरः, देहः, कायः, २. अवयवः, प्रतीकः, अगकः, अपयनः ३. अगः, मास ४. वेदागशास्त्रानि [= शिक्षा, कल्पः, व्याकरणः, निरुक्तः, ज्योतिषः, छन्दस् (न.)] ।

—अ, स. पु (स) पुत्रः ।

—आ, स. स्त्री (स) पुत्री, तनया ।

—खिचना, स पु, आक्षेपक (रोगभेदः) ।

—फडकना, स पु, प्राण्डवन्तर्गत-रोग २ अंगस्फुरण (शकुनभेदः) ।

—रखा, स पु (स अगारखक >) अगारखणी ।
 —राग, स पु (स) गायरजन, विलेपनम् ।
 अंगरेज, स पु (पुतं इगलेज) आग्लदेशीय ।
 अंगरेजी, स स्त्री (हि अंगरेज) आग्लभाषा ।
 अगार (-रा,) स पु (स) अगार र,
 दग्धकाष्ठखण्ड अलान, उत्तमूकम्, निर्धूमाग्नि ।
 अंगिया, स स्त्री (स अगिका) कञ्जुलिका,
 कचुली, कचूलम्, आंगिक क, जेलिका,
 कु (कु) पॉस सक् ।
 अग्नी, वि (स गिन्) शरीरिन्, देहिन्
 २ भवयथिन् ३ प्रदान, सुरय ४ दे 'अंगिया' ।
 अग्नीकार, स पु (स) अगावरण, स्वीकार,
 प्रतिग्रह, प्रतिपत्ति (स्त्री) आदानम् ।
 —करना, कि, स अग्नी स्त्री, क (त उ अ),
 आ दा (जु आ अ), प्रतिपद् (दि आ अ)
 प्रतिपद् (तु प से) ।
 अग्नीकृत, वि (म) स्वी उरी उररी, कृत,
 आ स-उप, द्युन, उपगन ।
 अग्नीमी, म स्त्री (हि अग्नीमी) अगार,
 धानिया श्वटी, हसनी, हसन्ती ।
 अग्नीध, वि (स) अगदेदीय २ शरीरक, वाधिर ।
 अगुल, स पु (स) अष्टयवपरिमाणम् ।
 अगुली, स स्त्री (स) अगुलि (स्त्री), अगुरी
 रि (स्त्री), वरशाखा ।
 —काटना, मु, विस्मि (भ्वा आ अ) वनिन
 (वि) + भू ।
 —कटारानी, मु अगुली, माटन० स्फोटनम् ।
 अगुरताना, म पु (पा) अगुलित्राणम्,
 अगुलत्राणम् ।
 अगुष्ट, स पु (स,) वृद्धाङ्गुलि (स्त्री) ।
 अगुटा, स पु (स अगुष्ट) वृद्धाङ्गुलि (स्त्री) ।
 —चूम्ना, मु, काटुभि तुप् (प्रे), अचीन
 (वि) + भू ।
 —दिखाना, मु, सावमानप्रत्यादिस् (तु प अ) ।
 अंगुटी, स स्त्री (हि अंगुठा) अगुरी (स्त्री) य,
 अगुरी (स्त्री) यक, मुद्रा, कर्मिका ।
 अगूर, स पु (पा), (वेळ) दाया, स्वादी,
 मधुरसा, गोखाना-नी २ (पल) दायाफलम्
 आदि ।
 अगुरी, वि (पा) दायाफल २ दायावर्ण ।
 अगोद्धा, पु स हि अग + पोटना) अगोद्धा
 नम् ।

अग्निस पु (स) वरण, पाद २ वृक्षमूलम्
 ३ छन्दश्चरणम् ।
 अचल स ॥ दे औचल ।
 अजन, स पु (स न) वजनल, नेपरजनम् ।
 अजर पजर, ॥ पु (स पजर र्म्) (पसली)
 पर्जुना, पार्थक्य, पार्थारिथि (न)
 २ वजाल-लम्, पजर र्म् ।
 अजली, म स्त्री (स) अजलि, वर-इस्त,
 सम्पुट ।
 अजस, वि (स) मरल अवक २ निष्कपट
 निष्प्राथ । (अजसी स्त्री०) ।
 अजाम्, स पु (पा) परिणाम, फलम्, अज,
 पाक ।
 अजित, वि (स) सानन, धज्जलफलित ।
 अजीर, स पु (पा) (वृक्ष) अजीर, उदुम्बर
 नातीया वृक्ष २ (फल) अजीरम् ।
 अजुमन, स स्त्री (पा) सभा, परिषद् (स्त्री) ।
 अज्ञा, स पु (म अनध्याय) अनध्यायदिवस
 २ अरसाश, क्षण, कार्यनिवृत्ति (स्त्री) ।
 अटिया, स स्त्री (हि अटी) शुच्छ, सघात,
 लघुभार ।
 अटियाना, कि स (हि अटी) छलैत आत्म-
 साय क । स पु, छलैत अपहार, प्रसनम् ।
 अटी, म स्त्री (स अटि >) ग्रन्थि, शक्ति
 नाया अटिलक्ष कुञ्जल मोक्त वा २ अगुलीना
 मध्वस्थमन्तरम् ।
 अट, स पु (स पु न) मुष्क, वृषण, शुक
 ग्रन्थि २ दे 'अटा' ३ विश्वम्, लाक मण्डल
 म् ४ बीर्ब, शुकम् ।
 —कोश, स, पु (स) दे. 'अट' ।
 —कोश वदना, स पु, मुष्क वृषण कोश, इष्टि
 (स्त्री) शोफ ।
 —ज, म पु, खगसर्पमीनादयो जीवा ।
 अटवट, स पु (अनु०) प्रलाप, अनर्थक वचनम्
 २ वि, व्यर्थ, अन्यवस्थित ।
 अटा, स पु (स अण्डम्) शोष ३, हिम,
 पेयीधि (स्त्री) ।
 —देना, कि स, अण्डानि प्र-म् (अ आ अ) ।
 —सेना, वि स, अण्डेभ्य प्रनोरपत्ति क ।
 अटाकार, वि (स) अण्डावृत्ति ।
 अट्टी, स स्त्री (स एण्ट) हचक, चित्रक,
 गट २ अट्टकलस्य बीजम् ३ वल्लभेद ।

—विश्वास, स पु (स) निर्विकेक तर्कशून्य,
विश्वास प्रत्यय विश्रम्भ ।

अंधा, स पु (स अन्ध) अनयन, अनेज,
नेत्रहीनजीव । वि०, विवेक विचार, शून्य रहित ।

—धुध, स स्त्री, घोरान्धकार, अन्धन्तमस
(न) (२) कुप्रबन्ध, अन्याय । वि०
विचार-नाय, शून्य रहित । किं वि, विश्वाङ्ग,
अन्धवत्, रमसा, साहसेन, असमीक्ष्य ।

अधेर, स पु (स अन्धकार >) अन्याय,
घपद्रव, अत्याचार, कुन्यवस्था ।

—खाता, स पु अव्यवस्था, अन्यवाचार,
कुन्यवस्था ।

—अरना, सु, अन्याय्य आचर (स्वा प से) ।

अंधेरा, स पु (स अन्धकार) ध्वान्त,
तमिस्र, तिमिर, तमस् (न), वि निरालोक,
निष्प्रभ तमो, वृत्त मय ।

धना-, अन्धतमसम् ।

योद्धा-, अवतमसम् ।

व्यापक-, सन्तमसम् ।

अंधेरे धर का उजाला, सु, एकल सुत,
व्याकिपुत्र ।

अंधेरी, स स्त्री (हि अंधरा) प्रवृत्त, वात्या,
ज्ञादात २ कुणा रात्री, निश्चन्द्रा रवनी ।

—कोटरी, स स्त्री, निरालोक वीह, २ गर्भ
३ रहस्यम् ।

अध्र, स पु (स बहु०) अन्धराज्यम् २
अभ्रजना ३ वक्ष-विशेष ।

अध्र, स पु (स आभ्रम्) आभ्र रसाळ, पलम्
२ रसाळ, आभ्र (वृक्ष) ।

अध्रक, स पु (स न) नेत्रम्, नयनम्
(स पु) पितृ, जनक ।

अधर, स पु (स न) आकाश शृ, गगनम् ।
२ वक्ष, वसनम् । ३ मेघ, जलद ४
मुग्धाधिद्रव्यभेद ।

अधरीय स पु (स) अधोध्याया वेण्वनृप
विशेष २ विष्णु ३ शिव ।

अधा, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री), जननी
२ पार्वती, दुर्गा ।

अधवार, स पु (पा) निकर, राशि, सभार ।

अधारी, स स्त्री (अ अमारी) परितो (हो)
म, प्रवेणी, सज्जना, वरपना ।

अधालिका, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री), जननी
२ सभारो ३ विचित्रवीर्यपत्नी ।

अधिका, स स्त्री (स) मातृ (स्त्री) २ पार्वती
३ विचित्रवीर्यमाया ।

अधु, स पु (स न) जल, पानीयम् ।

—ज, स पु (स न) कमलम् ।

—द, स ॥ (स) मेघ, जलद ।

—धि, निधि, पति, राशि, स पु (स) सागर ।

अभ्र, स पु [स अभ्रस (न)] जल, वारि
(न) ।

अभोज, स पु (स न) कमलम् ।

अभोद, स पु (स) मेघ, अभ्रद ।

अमोधि, स पु (स) अभो, निधि, राशि,
समुद्र ।

अश, स पु (स) वि, भाग, दण्ड ध,
शुक्ल लं, प्र, देश अवयव, अङ्गम् २ वृत्तस्य
षष्ठ्यधिकविधानमो भाग ३ लामाश
४ आज्ञाक ५ रिक्ताश ।

अशु-स पु (स) (-Degree of latitude)
देशान्तर, स पु (स) श्वाश (= Degree
of longitude)

अशु, स पु (स) विरण, रदिम ।

—मास्ती, स पु (स लिम्) अशुमत्, सूर्य ।

अकटक, वि (स) निष्कटक, कण्टक-शून्य,
शून्य २ निर्विक, निरन्तराय ३ शुद्धशय ।

अकट्ट, स स्त्री (स आ + कट्ट = गर्व करना)
गर्व, दर्प २ भृङ्गता ३ आग्रह ।

—बाज़, वि (हि + का) वृत्त, गणित २ भृष्ट
३ आग्रहिन् ।

—बाज़ी, स स्त्री, अभिमानित, इत्तवम् ।

अकट्ट, स स्त्री (स आ + कट्ट = कटा होना)
प्रस (सा) र, आतान, आतति (स्त्री)
२ दृढता, अनन्यता ३ वक्तता ।

—वाई, स स्त्री, मात्रोपधात, आक्षेप,
उद्बोधनम् ।

अकट्टा, किं अ (स आकट्टनम्) गर्व,
आकट्ट (दोनो स्वा प से) ।

अकट्टना, किं अ (स आकट्टनम्) आकट्ट
(स्वा प से), दृढी-वक्त्री, भू ।

अकथ, वि (स अकथ्य) अकथनीय, वर्णना
तीत, अनाख्येय ।

अकथक, स स्त्री (अनु०) प्रलाप २, चिन्ता
३ चेतन्यम् । वि चकित, अवाक् ।

अकरणीय, वि (स) अविशेष, अकार्य ।

अकर्म, स पु (स अकर्मन् न) कुकार्यम्
२ पापम् ।

अकर्मक, वि (स) कर्मरहित (क्रिया, पातु
आदि) ।

अकसर, कि वि (अ) प्राय, प्रायश, बहुश,
सामान्यत (सब अर्थ) ।

अकसीर, स स्त्री (अ) रसायन, इष्टशो
रसभरो यो भान् सुवर्गाकरोति २ सजीव
नौपथम् । वि, अमोघ, सिद्धिकर ।

अकस्मात्, कि वि (अ) सहसा, एकपदे,
अकस्मात्, अकस्मिन्, देवात् हठात् (सब
अर्थ) ।

अकाज, स पु (स अकार्यम्) कार्यहानि
(स्त्री), विघ्न, अनाराध २ कुवायम् ।
कि वि, व्यर्थ, निष्प्रयोजनम् ।

अकाव्य, वि (स अ + हि काव्यम्) अखण्ड
नीय, अप्रत्यारयेय, अवाक्य ।

अकाय वि (स) विदेह, अशरीरिन् ।

अकारण, वि (म) निष्कारण, अहेतुक,
नियमित २ स्वयम्भू । कि वि, निष्प्रयो
जन निष्कारणम् ।

अकारथ, वि (स अकार्याथं) निष्फल, मोष ।
कि वि, वृथा, व्यर्थम् ।

अकारात्, वि (स) अदन्त, अवर्णान्त ।

अकारादि, अवर्णां वि (स) अवर्ण, आरम्भ
वपक्रम ।

अकार्य, वि (स) अकर्तव्य, अकरणीय २
अनुचित । स पु (स न) कु-निन्दित, कार्य
कर्मन् (न) ।

अकाल, स पु (स) दुर्मिष्ट, दुष्काल, नीवाक,
आहारामात्र २ दुःसमय ।

—मृत्यु, स स्त्री (स पु) असामयिको मृत्यु ।

अकालिक, वि (म) अनवसर, अप्रामाण्य,
असमयोचित ।

अकाली, स पु (म लिन्) गुरुनानकमनानु
यायिभेद ।

अकासी, दे० 'बील' ।

अकिञ्चन, वि (स) निर्धन, निःस्व, दरिद्र,
दरान ।

अकिञ्चनता, स स्त्री (स) दारिद्र्य, निर्धनता,
दीनता ।

अकिञ्चित्कर, वि (म) अशक्त, असमर्थ,
अक्षम ।

अकिल, स स्त्री दे 'अडु' ।

अकिलिप, वि (स) निष्पाप, अनघ, निर्दोष ।

अकीदत्त, स स्त्री (अ) श्रद्धा, निष्ठा ।

—मन्, वि, श्रद्धात्, सनिष्ठ, निष्ठावद् ।

अकीद, स पु (अ) विधास, मतम् ।

अकीर्ति, स स्त्री (स) अ-अप, यशस् (न),
वाच्यता ।

अकुलाना, कि अ (स आकुल) (वर्
(स्वा आ से), आनु कु २ आकुलो भू,
रुद्धिज (तु आ अ) ।

अकृत, वि (स अ + हि कृत्वा) अमित,
अगणित ।

अकृतज्ञ, वि (स) कृतज्ञ (कृतज्ञी स्त्री),
अकृतवेदिन् ।

अकृत्रिम, वि (स) नैसर्गिक, स्वामाविक २
यथार्थ, वास्तविक २ हार्दिक ।

अकेला, वि (स एकल) एकाकिन् (नी स्त्री),
असहाय २ अनुपम, अप्रतिम ।

अकेले, कि वि (हि अकेला) असहायनेव,
—मात्र ।

अकोत्तर स्त्री, वि (स अकोत्तरशतम्) एकाधि
कशतम् ।

अकखड, वि (स अक्षर) उग्र, उद्धत,
उत्कृष्ट २ अक्षरकलि, प्रिय, सुपुत्र २ नि
र्भव ४ अक्षिष्ट ५ खड ६ स्पष्टवादिन् ।

—पन, स पु, उग्रता, कलहप्रियता, निर्भवता,
असम्भ्यता आच्यम्, स्पष्टवादिता ।

अकटोवर, स पु (अ) आंगवर्षस्य दशमो
मास ।

अकु, स स्त्री (अ) बुद्धि मति (स्त्री),
प्रज्ञा ।

—मद, वि, बुद्धिमत्, प्राज्ञ ।

—मदी, स स्त्री, बुद्धिमत्ता, प्राज्ञता ।

अक्ष, स पु (स) देवन, पाशक (हि पाँसा)
२ अक्षरेखा ३ पूत पाशक कीडा ४ रुद्राक्ष
५ व्यवहार (हि मुकदमा) ६ आत्मन् ७
इन्द्रियम् ८ जघनम् ।

—कीडा, स स्त्री (स) पूत पाशक-कीडा ।

—माला, स स्त्री (स) अपमाला, अक्षमूत्रम् ।

अक्षत, वि (स) अत्रय, अक्षण्डित, समग्र ।

सं पु (सं नित्य बहु) देवपूनायै मीढय-
(बहु) २. यवा ।

—योनि, वि स्त्री (स) पुरुषसंसर्गरहिता
(क्या नारी वा), नक्षत्राणि ।

—घोर्य, वि पु (स) आत्मसंरहित (पुरुष),
नक्षत्राणि ।

अक्षम, वि (स) अक्षय्य, अक्षय्य,
अतिरिक्त २ अक्षय्य, असमर्थ ।

अक्षमता, स स्त्री (म) अक्षय्यता २
अक्षय्यत्वम् ।

अक्षय्य, वि (स) नित्य, अक्षय्य अक्षय्य,
अक्षय्य, अनक्षय्य २ कस्याप्यक्षय्यम् ।

अक्षय्य, वि (स) दे 'अक्षय्य' ।

अक्षय्य, वि (स) अक्षय्य स्थित, नित्य । स
पु, अक्षय्ययो वर्णा, ध्वनिचिह्नानि ।

—न्यास, स पु (स) डेल, डेलयम् ।

—ज्ञ, कि वि (स) प्रत्यक्ष, सामर्थ्येन ।

अक्षि, स स्त्री (सं न) नेत्र, नयनं, चक्षुः
(न), डेलयम् ।

—गोलक, स पु (स) अक्षिमण्डलम् ।

—तारा, सं स्त्री (स) वनीनिका, तारका ।

—पटल, स पु (स न) नेत्र नयन, चक्षुः
(हिं पक्ष) ।

अक्षुण्ण, वि (स अक्षुण्ण) अक्षय्य, समग्र,
अक्षिण्ण ।

अक्षोनि, स स्त्री (स अक्षोनि) मर्या
विशेषयुक्त सेना, सम्पूर्ण वस्तुमिणी सेना
(=१०९३५० पैदल, १५६१० घोडा, २१८७०
रथ, २१८७० गज) ।

अक्षय्य, स पु (अ) प्रति, छाया प्रति, विवरूपम् ।
अक्षय्य, दे 'अक्षय्य' ।

अक्षय्य, वि (स) सम्पूर्ण, समग्र २ सतत,
निरन्तर ३ निर्विघ्न, निर्वाह ।

अक्षय्यनीय, वि (स) अक्षय्य, अविनाश २
पुष्ट, इष्ट ।

अक्षय्य, वि (म) दे 'अक्षय्य' ।

अक्षय्य, सं पु (हिं अक्षय्य) मष्ट, बाहुयोध ।
अक्षय्य, स पु (अ) सयाचार कृत मगद,
पत्रम् ।

—नयीस, स पु सम्पादक, सयाचार कृत
—लेखक ।

अक्षय्य, कि अ (सं अक्षय्य) अक्षय्य
जन् (मे), अक्षय्य (मे), नक्षय्य (भा
भा से) ।

अक्षय्य (—टी), स स्त्री (स अक्षय्य >)
वर्णमाला २ वर्णमालाकमानुसारी पक्षसमूह ।

अक्षय्य, स पु (म अक्षय्य), (वक्ष) अक्षय्य
२ (पक्ष) अक्षय्यम् ।

अक्षय्य, स पु (अ) चरित्रम्, सदाचार ।
सम्पत्ता, विद्या ।

अक्षय्य, स पु (स अक्षय्य) मक्षय्य
निपुणम् (स्त्री) २ साधुमण्डलम् २ साधु
निवास ४ गायकसमुदाय ५ गायक, नृत्य
शाला ६ अक्षय्य, अक्षय्यम् ।

अक्षय्य, वि (स) अक्षय्य, अनक्षय्य ।

अक्षय्य, वि (म) समग्र, समग्र, निमित्त ।

अक्षय्य, स पु (स—अक्षय्य) परमात्मन्,
विश्वरूपम् ।

अक्षय्य, अक्षय्य (अनु) अक्षय्य ।

अक्षय्य, वि (स अक्षय्य >) दीर्घ, आयन
२ रथ, वक्ष ।

अक्षय्य, वि (अनु) अक्षय्य असङ्गत ।
स पु, प्रकाश २ अक्षय्य कार्यम् ।

अक्षय्य, वि (म) सामा य, साधारण २
अक्षय्य, गणनातीत ।

अक्षय्य, वि (म) तुच्छ, प्राण २ अक्षय्य,
सत्त्वानि ।

अक्षय्य, वि (म) अक्षय्य, निराशय्य, अनाथ ।

अक्षय्य, वि (म) अक्षय्य निराशय्य, स्वयम् ।
स पु (म) अक्षय्य, अक्षय्य, अक्षय्यम् ।

अक्षय्य, स पु (म) अक्षय्य, जीव्य ।

अक्षय्य, वि (स अक्षय्य) अक्षय्य, गहन २ विद्वत्,
वर्तन ३ अक्षय्य, अक्षय्य ४ अक्षय्य, अक्षय्य
५ अक्षय्य, अक्षय्य ।

अक्षय्य, वि (स) दे 'अक्षय्य' ।

अक्षय्य, स पु (म अक्षय्य) अक्षय्य, राजाई,
वृणाम् ।—अक्षय्य, स स्त्री, (स अक्षय्य) ।

अक्षय्य, अक्षय्य (फा) अक्षय्य, अक्षय्य ।

—अक्षय्य, अक्षय्य (फा) अक्षय्य, अक्षय्य ।

अक्षय्य, कि वि (फा) अक्षय्य, अक्षय्य,
अक्षय्य ।

अक्षय्य, वि (म अक्षय्य >) पूर्व, वीररथ २
पूर्ववर्तिन्, प्रथम ३ प्राचीन, पुराण ४ आगा
मिन् ५ अपर, दिनीय । सं पु, प्रधान, २
प्राण ३ पूर्व ।

अगवाहं, स स्त्री (स अग्रे + गमन >) प्रत्युद्-
गमन, प्रत्युद्गमनम् । स पु, नेनु, अग्रणी
(पु) ।

अगवाडा, म पु (स अग्रवा >) गृहद्वारस्थ
पुरोवर्तिनी भूमि (स्त्री) २ गृहस्थाग्रिमो
भाग ।

अगवाणी, स स्त्री दे 'अगवाहं' ।

अगरान्, स पु (अ आगस्ट) आग्लवर्षस्या
हमो मास ।

अगस्त्य, म पु (म) ऋषिविशेष २ नक्षत्र
विशेष ३ कृष्णभेद ।

अगहन, म पु (म अग्रहायन-ण) मार्गशीर्ष ।

अगाऊ, म पु (म अग्र >) अग्रिम, पूर्वोक्त
मूल्याश । वि आग्रम अग्रथ ।

अगाडी, कि वि (स अग्रे) पुरत, पुरस्ताद
२ अनागतवेला, भावस्थाला । स स्त्री,
अभस्याग्रिमा रज्जु । (स्त्री) ।

अगिनयोद, म पु (स अग्नि + अ) अग्निपोन,
वायोपनी (स्त्री) ।

अगुओ, स पु (स अग्र >) अग्रसर, अग्रणी
(पु) २ मुरद, नायक, ३ पथप्रदर्शक ४
विवाहसन्नादक ।

अगुण, वि (म) निर्गुण भूतः । स पु दोष,
दूषणम् ।

—अ, वि (म) अनभिष्ट, अपरोक्षक ।

अगुह, नि (स) ह्वाद्य २ अक्षिष्ट । स पु
(स) लघु हस्व, कर् ३ दे 'अगुर' म पु ।

अगोचर, वि (स) इन्द्रियातीत, अतीन्द्रिय,
अग्रत, अव्यक्त, अप्रत्यक्ष ।

अग्रि, स स्त्री (म पु) अनल, पावक ज्वलन,
वहि, दहन, हुतादहन, बैथानर, हुशान,
हुतवह, हव्यवाहन, कियमानु, विभावसु,
शुक्र, शुचि ।

—कर्म, स पु (स न) देवयज्ञ, अग्निहोत्रम् ।
२ शवदाह, कत्येष्टिसंस्कार, अग्निक्रिया ।

—अदीडा, स स्त्री (म) दे 'आतश्वाणी' ।

—अवाला, म स्त्री (स) अग्रि, जिज्ञा शिम्बा,
अचिम् (स्त्री, न), कील-ञ्च ।

—दाह, स पु (स) प्लोप, ताप, ज्वलन २
शवदाह ।

—परांवा, स स्त्री (स) तप्तद्रव्यम् २ अग्नौ
अग्नादिपरोक्षान् ।

—वाण, स पु (स) अनल-दहन, शर सायक ।

—विद्या, स स्त्री (स) अग्निहोत्रविधि ।

—शुद्धि, स स्त्री (स) अग्निना शोधनम्
२ दे 'अग्निपरीक्षा' ।

—संस्कार, स पु (स) दाहकर्मन् (न),
शवदाह २ अग्निना शोधनम् ।

—सप्ता, स पु (स खि) वायु, पवन ।

—सेवन, स पु (स न) वह्निनिषेवनम् ।

—होत्र, स पु (स न) यज्ञभेद, होम,
हवनम् ।

—होत्री, स पु (स, विन्) आहिताग्नि,
याजक, याज्ञिक ।

अग्न्यस्त, म पु (स न) आग्नेयास्तम् ।

अग्न्याधान, म पु (स न) विधिपूर्वमग्नि
स्थापन २ अग्निहोत्रम् ।

अग्र, म पु (स न) अग्रभाग, शिखर,
प्रान्त, मुख, अणि, (पु, स्त्री) । वि अग्र-
सर, उत्तम, प्रधान ।

—अग्र्य, वि (स) ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, मान्य ।

—ग्रामी, स पु (म विन्) पुरोग, नायक ।

—ज, स पु (स) अग्रजन्मन्, ज्यावान्
भ्रातृ (पु) ।

—णी, स पु (स णी, पु) नायक, नेनु,
पुरोग ।

—आग, स पु (स) पूर्व पुरो-भाग खण्ड ।

—यायी, म पु (स यिन्) अग्रनर,
पुरोगामिन् ।

—वर्ती, वि (स वर्तिन्) अग्रस्थ, पुरारिप्त ।

—सर, स पु (स) नायक, अग्रणी (पु),
नेनु ।

—अग्रह, स पु (म) अग्रहणम्, त्याग ।

—अग्रानीक, स पु (स न) सेना, मुख,
अग्रम् ।

—अग्राम्य, वि (स)

अग्रामीण, नागरिक २ वन्य, अग्र्य ।

अग्रानाम, म पु (स न) देवादिदेवो
भक्ष्यायाश्च ।

अग्रानस, स पु (स न) समान—श्रेष्ठ—
आसन स्थानम् ।

अग्राह, वि (स) त्याग्य, परिहार्य, हय ।

अग्रिम, वि (स) भाविन्, आगामिन् २
प्रथम, अग्रथ ।

अघ, स पु (स न) पाप, पातक, दुरितम्,
यन्म् (न) २ दुःखम् ३ व्यसनम् ।

अघट, वि (स अ + घट्) अशक्य, असम्भव
२ दुर्घट, दुष्कर ।

अघट, वि (हि घटना) अक्षय, अक्षय्य,
अन्यय ।

अघटित, वि (म) अभूत २ असम्भव ३
कठिन ४ अयोग्य ।

अघमर्षण, वि (स) अघ पाप, हारिन् नानक ।
स पु, ऋग्वेदस्य पापनाशक सूक्तविशेष ।

अघारि, वि (स) पापनाशक २ अव्यक्तस्य
नाशक कृणो विष्णुर्वा ।

अघोर, वि (स) सौम्य शामन, शिवदर्शन ।
—नाथ, स पु (स) शिव, भूतनाथ ।

—पथ, म पु (स - पथ) शैवानां सन्ध
दायविशेष ।

अघोरी, स पु (स अघोर >) अघोरमता
नुयायिन् २ सर्वनाशक ३ दुर्दय ।

अघोष, वि (स) नीरव, निश्शब्द २ अल्प
ध्वनियुक्त ३ मौपहीन । स पु, वर्णमालया
'क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म' वर्णा ।

अचभा, स पु (स असम्भव >) आश्चर्य,
विस्मय २ चमत्कार, कौतुक् ३ अद्भुत
वस्तु (न) ।

अचभित, वि (हि अचम्भा) चकित,
विस्मित ।

अचकन, म पु (स कक्षक) ।

अचक्षु, वि (स क्षुम्) अघ २ निरिन्द्रिय ३
अतीन्द्रिय ।

अचर, वि (म) स्थावर, अवल ।

अचरज, स पु (स आश्चर्यम्) विस्मय,
चमत्कार ।

अचल, वि (स) निश्चल, स्थिर २ चिर
स्थायिन्, नित्य । स पु (स) पवन, गिरि
२ कील, राकु ३ सप्तसख्या ४ अक्षन्
(न) ५ शिव ६ आत्मन् ।

अचला, वि (म) स्थिरा, गतिशून्या । म स्त्री
(स) पृथिवी ।

अचानक, कि वि (स अचानक >) अकस्मात्,
सहसा, एकपदे, अकण्ठे । (स न अघ्य)

अचार, म पु (चा) सन्धित, सन्धान, तेमन,
निष्ठानम् ।

अचितनीय, वि (स) अतर्क्य, अचित्य,
अज्ञेय ।

अचितित, वि (म) अनर्कित, अविचारित,
आवरिमक २ निश्चिन्त ।

अचित्य, वि (स) अज्ञेय, अतर्क्य, वक्ष्यता
सीत २ अतुल ३ आशानीत ४ आकरिमक ।

—आत्मा, स पु (म — त्मन्) यदमात्मन् अत
र्क्यस्वरूप ।

अचिक्त्स्य, वि (म) अनुपचार, असाध्य
(रोगादि)

अचित्ति, स स्त्री (स) अशानम्, अवोध ।

अचिर, अव्य, (म) क्षीनसपदि (अव्य)
२ वर्तमाने ३ किंचित् पूर्वम् । वि धगिक,
नस्वर २ वर्तमान, —विषयक सम्प्रदिन् ।

अचीप्सी, वि (स अचितित) आकरिमक
२ अचित्य ।

अचूक, वि (स च + हि चूकता) अमोघ,
सफल । कि वि, अवश्य ध्रुवम् ।

अचेत, वि (स - त्तम) अचेतन, निष्प्राण,
निर्जाति २ -वाकुल ३ अनवरित ४ मूढ ।

अचेतन, वि (म) विचेतन, पट, निष्प्राण,
स्थावर २ नित्य, अचिन्तित । स पु जड
व्यम् ।

अचेतन्य, वि (म) अचेतन, स्थावर । स पु
(स न) निर्जावता, निष्प्राणता ।

अच्छा, वि (स अच्छ = स्वच्छ >) उत्तम,
भद्र, भेद २ निर्दोष ।

अच्छाई, म स्त्री (हि अच्छा) भद्रता,
सौख्यम् ।

अच्छिन्न, वि (न) निश्छिद्र २ पूर्ण,
असंछिन्न ।

अच्छेद्य, वि (म) अशेष अलाभ्य, भविनाशिन ।

अच्छुल, वि (स) अपतित २ दृढ, नाथ ३
अमोघ ।

अच्छुता, वि (मं अक्षुत) अक्षुट २ जव,
पवित्र ।

अजट, म पु (अं एजेट) प्रति निधि-हस्त ।

अजसी, स स्त्री (अ एजसी) प्रतिनिधि, —
कार्यालय निवास ।

अज्ञ, वि (न) स्वयम्भू, जन्महीन । म पु
मज्ञन् (पु) २ विष्णु ३ शिव ४ कामदेव
५ छाग ६ मेघ ।

अजगर, म पु शृगु, बाहस ।

अजगरी, म स्त्री (स अजगर >) आलस्यम् ।

अजदहा, म पु (पा) दे 'अनगर' ।

अजमरी, वि (पा) आगन्तुक, विदेशीय
अपरिचित ।

अजन्मा, वि (न मन्) अन स्वयम्भू,
अनादि ।

अजव, वि (य) अद्भुत, विचित्र विलक्षण ।

अजमत, म स्त्री (अ) प्रनाप, प्रभुत्व,
महत्त्वम् ।

अजय्य, वि (म्) अध्याय, अदम्य, अज्रेय ।

अजर, वि (म) जराहीन, बार्दक्यरहित ।

अजवायन, स स्त्री (म यवानिरा) शूलहन्त्री ।

अजस्र, कि वि (म न) सदा, अनवरत,
नित्यम् ।

अजहद, कि वि (पा) असीम, अत्यधिक ।

अज्ञा, वि स्त्री (म) जन्महीना । स स्त्री
छाया २ प्रकृति (स्त्री) ।

अज्ञात, वि (म) अज्ञ, अनुरपन्न, जन्महीन ।

—ज्ञान, वि (स) शत्रुहीन, सर्वमित्रम् । स
पु सुविष्टार २ शिव ३ मगधराजविशेष ।

अज्ञान, वि (म अज्ञान) मूर्ख, मन्द ३ अज्ञात,
अपरिचित । म पु, अज्ञानिता, अज्ञता ।

अज्ञात, म पु (अ) दानता, पीडा ।

अज्ञामिल, म पु (म) कथित पापी ब्राह्मणो
यो मृत्युशाले नारायणनामकस्य निनस्रतस्य
नामोच्चार्य मुक्ति लेभे ।

अजायब, स पु (अ 'अज' का बहु०) अद्भुत
भूतवस्तुनि, विलभणा व्यापारा ।

—घर, म पु अद्भुतालय, मग्नहालय ।

अजित, वि (स) अपरानित, स्वतन्त्र । म पु,
विष्णु २ शिव ३ बुद्ध ।

—इन्द्रिय, वि (म) इन्द्रियलोलुप, विषयासक्त ।

अजिन, स पु (म न) मृग-चर्मन् (न),
इति (पु स्त्री), कृत्ति (स्त्री) ।

अनिर, स पु (स न) अगमन, प्राङ्गण,
चत्वर रम् ।

अजी, अव्य (सं अयि ।) मो, आर्य्य, अज्ञ
(सनो) ।

अजीव, वि (अ) प्रिय, तान, वत्स ।

अजीत, वि (म अनित) अनेय, अन्य,
अध्याय ।

अजीव, वि (अ) अद्भुत, विलक्षण, विचित्र ।

अजीर्ण, स पु (म न) अजीर्ण (स्त्री),
मन्दाग्नि, अन्नविकार, अपाक २ आधि
क्यम् । वि नर, नूतन ।

अजीवन, वि (म) आजीविका-उपजीविका
-रहित-हीन म पु (म न) मृत्यु ।

अज्या, स पु (अ) अद्भुत वस्तु (न),
विचित्रवाचा ।

अज्रेय, वि (स) दे 'अनय्य' ।

अजैकपाद, म पु (स) रत्नविशेष २
विष्णु ।

अजैव, वि (म) जीवन-हीन-विरहित
(इन-आर्गेनिक)

अज्ञ, वि (स) मूर्ख, मूढ, अज्ञानम् ।

अज्ञता, स स्त्री (स) जाह्य, मौख्य, मूढता ।

अज्ञात, वि (म) अविदित, अज्ञ, अपरिचित ।

—वास, स पु (म) गुप्तवास ।

अज्ञान, स पु (स न) अविद्या, जाह्य, मूर्खता ।

अज्ञानता, स स्त्री (स) जडता, अवोधता ।

अज्ञानी, वि (स -निन्) मूढ, मूर्ख, अवोध ।

अज्ञेय, वि (स) अतर्क्य, बोधागम्य, ज्ञानातीत ।

अटवर, स पु (स अट् + का अवार) राशि
(पु), मस्तर, निचय ।

अटक, म स्त्री (दि अटकना) विघ्न, बाध था
२ सङ्कोच ३ सिन्धुनदी ४ नगरविशेष
५ हानि (स्त्री) ।

अटुकना कि अ (दि अ + टिकना) १ प्र
उप-शय (दि प से), विरम् (भ्वा प अ)

निष्पृ (भ्वा आ से), स्था (भ्वा प अ),

निश्चल (वि) + भू । २ पादौ पद (भ्वा
प से), जालबद्ध (वि) + भू, निरत

आसक्त (वि) + भू ३ खिद (दि प से),

अनुर (कर्म०), भाव-अभिलाष + क्त्

(क् प अ) ४ विवद (भ्वा आ से),

विप्रलप (भ्वा प से), वेरायते (ना धा) ।

अटल, स स्त्री (म अट् + कल >) अनुमान,

वि, तर्क, उद्वा, अनुमिति (स्त्री) ।

—पच्चा, स पु कपोलकल्पना, अनुमानम् । वि

कात्पनिक ।

—वाज, वि, अनुमात्र ।

अटकाना, कि स (हि अटकना) अवस्था (प्र), रुध् (रु उ अ) २ पाशेन बन्ध (क प म) जाले धृ (जु) ३ स्नेह पादै बध ।

अटकाय, स पु (हि अटकना) विभ्र, वष । २ विलम्ब ।

अटन, स पु (स न) भ्रमण, चलन, विचरणम् । अटपट, वि (अनु०) कठिन, कुटिल, विकट २ कटिल, गुठ ३ असम्बद्ध, असंगत ४ प्रत्यक्ष-विवक्षित (शृम्) ।

अटपटाना, कि अ (हि अटपट) आकुली भू, मुह (दि प से) २ विकल्प विलम्ब-पाशक (भ्वा आ से) ।

अटपरी, स स्त्री (हि अटपट) रुद्रम, व्यामोह विकल्ब, विनर्क ।

अटपय, स पु (स आटपय >) अटकार, गर्व ।

अटल, वि (स अ + हि टलना) अवक, स्थिर, मित्य, भुव, अवस्थमाविन ।

अटलम, स पु (अ) मालचित्र-देशालख, प्रत्य-

अटारी, स स्त्री (स अटारी) अट्ट दू, अट्टाल मिरा, शिरोगेह, बन्दसाला ताली ।

अटाला, स पु (स अटाल >) राशि, निचय २ परिच्छेद, यात्रासामग्री ३ मासिक सौमिक, वसति (स्त्री) ।

अट्ट, वि (स अ + हि टटना) अष्टेष्ट, अष्टशङ्कनीय २ अजैव, अजन्म ३ निरन्तर ४ अत्यधिक ।

अट्टम, स पु (स अति + इरण >) मूत्रवल्ब यनिर्माणार्थं दधुग्राह्यन्म, आवापनम् ।

अट्टरना, कि स (हि अट्टरन) आवापनेन पञ्ची रच (जु) ।

अट्टास, स पु (स) अति प्रउडै, दाम ।

अट्टी, स स्त्री (हि अट्टना) पञ्ची ।

अट्टालिका, स स्त्री, (स) दे 'अटारी' ।

अट्टा, स पु (स अट्टन् >) अष्टचिह्नयुक्त कीटापन्नम् ।

अट्टाईस, वि (स अष्टाविंशति स्त्री) ।

—वौ (वी), अष्टाविंश (शी), अष्टाविंशति तम (मी) ।

अट्टानवे, वि (स अष्ट (१) नवति स्त्री) ।

—वौ (वी), वि, अष्ट (१) नवतिनम (मी), अष्ट (१) नव त (-ती) ।

अट्टावन, वि (स अष्ट (१) पञ्चाशत् स्त्री) ।

—वौ (वी), वि, अष्ट (१) पञ्चाशत्तम (-मी), अष्ट (१) पञ्चाश (-ती) ।

अट्टासी, वि (स अष्टाशीति स्त्री) ।

अट्टासिर्वी (-वी), अष्टाशीतिनम (-मी), अष्टाशीति (-ती) ।

अट्टासिल, स पु (स अट्टन् + अ कौसिल) सभा, मसद् परिषद् (स्त्री), गोष्ठी (स्त्री) २ मन्त्रालयम् ।

अट्टासेली, स स्त्री (स अट्टकेलि >) चपलता, चाञ्चल्य, दहोल २ मद्यपि (स्त्री), मदोद्वतगमनम् ।

अट्टाशी, स स्त्री (स अट्टन् + आण >) अष्टाशी, अष्टाणवी ।

अट्टापहला, वि (स अट्टन् + पा पदम्) अष्ट, वीण पार्श्व ।

अट्टपाव, स पु दे 'कथम्' ।

अट्टावोसा, वि (स अट्टमास) आष्टमासिक (शिषु) २ सीमा-तोत्रयनसंस्कार ।

अट्टावारी, स पु (हि आठ + व बार) * अष्टवार, अष्टाह, दिनाष्टयम् । २ सप्ताह, दिनसप्तकम् ।

अट्टहत्तर, वि (= अष्ट (१) सप्तति स्त्री) ।

—वौ (-वा), वि, अष्ट (१) सप्ततिनम (-मी), अष्ट (१) सप्तत (-ती) ।

अट्टारह, वि (स अष्टादश) । —वौ (-वी) अष्टादश (-शी) ।

अट्टगा, स पु (हि अट्टाना + टांग) विभ्र, दस्तक्षेप, बाध-भा ।

अट्टचन, स स्त्री (हि अट्टना + चलना) विभ्र, कठिनता, आपत्ति (स्त्री) ।

अट्टतालीस, वि (स अष्ट (१) चत्वारिंशत् स्त्री)

—वौ (-वी), वि, अष्ट (१) चत्वारिंशत्तम (-मी), अष्ट (१) चत्वारिंश (-ती) ।

अट्टनीस, वि (स अष्टाविंशत् स्त्री) ।

—वौ (वी), वि, अष्टाविंशत्तम (-मी), अष्टाविंश (-ती) ।

अट्टना, कि अ (स अट्ट = रावता >) दे 'अट्टना २ आम्ह न मुच् (रु उ अ) निर्द-भेन वध् (जु) ।

अद्वय, वि (हि अदना + म वक्तु) वक्तु,
विषय, नतोन्नत २ विकट, दुर्गम ३ विलक्षण ।
अद्वोकेट, म पु (अ एवोकेट) पञ्चममर्थक,
दे 'वकील' ।
अद्वस्त, वि (म अष्ट (१) षष्ठि स्त्री) ।
—चौ (-चा), वि अष्ट (१) षष्ठिनाम (-मी),
अष्ट (१) षष्ठ (-ष्टी) ।
अद्वाना, क्रि स, दे 'अटकाना' ।
अद्विग, वि (म अ + हि द्विगना) निश्चल,
स्थिर इष्ट ।
अद्विपल, वि (हि अदना) उद्वन दुर्दम,
दुर्विनीत २ अलम, मन्द्रालु ३ अविनेय
स्वारन् दुराग्रह ।
अद्वी, म स्त्री (हि अदना) दुराग्रह, इष्ट,
निर्वन्ध, प्रतिनिवेश ।
अद्वीट, वि (म अद्विष्ट) अद्विष्ट, लोचनागोचर
२ गुप्त, अन्तर्हित ।
अद्वेल, वि (म अ + हि डोलना) अचल,
निष्कम्प, स्थिर ।
अद्वोम पडोस, म पु (हि पडोम) मन्त्रिधि,
पञ्चण्ड, सामीप्य प्रतिवेश ।
अद्वोमी पडोसी, म पु (हि, अद्वोम पडोम)
प्रतिवेश वैश्य-वैश्यन् वासिन्, निकट-ममी
प, स्थ वामिन् ।
अद्वु, म पु (म अद्वु >) निवेशस्थान, लगन
२ आदवान (-नी) ३ सवेत, गृह स्थल,
समागम मन्त्रेण स्थानम् ४ चतुष्पाष्टम् ।
अद्वैम, स पु (अ एडैम) अभिनन्दनपत्रम्
२ पत्रमाला, निवाममन्त्रेण ।
अगि, स स्त्री (म) अणी, धारा, अग्र, कोटि-
(स्त्री), सीमा, प्राग ।
अणिमा, स स्त्री (म अणिमन् पु) अणुता,
सूक्ष्मता २ योगस्याष्टसिद्धिषु प्रथमा, यथा यो
गिनोऽदृश्या भवन्ति ।
अणिमादिक, म स्त्री (=) यागस्याष्टसिद्धय,
(= अणिमा महिमा, गरिमा, लविमा, प्राप्ति,
प्राप्ताम्भ, इशित्वम्, वणिक्त्वम्) ।
अणु, स पु (म) एव, देश, षष्ठिपरमाणु
मात्र वण, धूलिका । वि, अतिमूढम् क्षुद्र ।
—वीचण, म पु (म न) सूक्ष्मदर्शकयन्त्रम् ।
२ छिद्रा-वपणम् ।
अन, क्रि वि (म) अस्मादेव कारणात्, अनेन
कारणन हेतुना, इति ह्यतो ।

अत एव, वि वि (म) अस्मादेव कारणात्,
अनेनैव हेतुना ।
अतर, म पु (अ इत्र) निर्यास, पुष्पसार ।
—दान, म पु (अ + पा) पुष्पसारपात्रम् ।
अतरमो, क्रि वि (म इतर + थ >) आगामा
गतो वा स्नातो दिवम् ।
अतर्कित, वि (म) अविचारित, आकस्मिक
(-की स्त्री), अचिन्तित ।
अतर्क्य, वि (म) अचिन्त्य, अचिन्तनीय,
अविवेच्य, अनिर्वचनीय ।
अतल, वि (म) तलहीन, अतिगम्भीर । म
पु (म न) सप्तसु पातालपु प्रथमम् ।
—स्पर्शी, वि अतिगम्भीर, अतलस्तम् ।
अतलम्, म स्त्री (अ) अर्नाचक्षण कौशय
पटम् ।
अतलानक, म पु (अ एतलाटिक) अन्धमत्ता
मागर समुद्रविशेष ।
अता, म पु (पा) दान, त्याग विसर्जनम् ।
—करना, —परमाना, मु, दे० 'दना' ।
अति, वि (म अत्य) अत्यन्त अत्यर्थ अधिक ।
म स्त्री, आधिक्य, अतिशय, सीमाद्वेषणम् ।
अतिक्रिया, म स्त्री (म) अतिरजित, —व्या—
—आख्यायिका—गद्य २ निरर्थक-व्यर्थ,—
भाषान् ।
अतिकाल, म पु (म) विराम, कालानिपात ।
अतिक्रमण, म पु (म न) नियम मर्यादा
सीमा-उद्वेगन अतिक्रम ।
अतिथि, स पु (म) अभ्यागत, प्राप्ति,
प्राप्ति (णि) क, गृहागत २ मन्त्र्यामिन् ।
—पूजा, म स्त्री, आतिथ्य, अतिथि, सत्कार
सेवा क्रिया ।
—यज्ञ, म पु (म) अतिथिपूजा ।
अतिरिक्त, क्रि वि (म) विसा, श्रुते अति
रिच्य, विहाय (सब अन्य) । वि (स)
अवशिष्ट २ अभ्र, पृथक् ।
अतिवेला, म स्त्री (स) दे 'अतिकाल ।
अतिशय, वि (स) बहु अधिक ।
अतिसार, म पु (म) प्रवाहना ।
अतीन्द्रिय, वि (म) अगोचर, इन्द्रियान्त,
अव्यक्त, पराम् ।
अतीत, वि (म) गत, व्यनीत २ विरक्त,
निर्लेप ३ मृत, दिवगत ।

अतीव, वि (स अत्य) अधिक, बहु, प्रभूत ।
अनुल, वि (स) अनुस्य, अनुलिन, अनुपम
० अमेय, अत्यधिक ।

अत्तार, स पु (अ) गन्धोपनीविन्, गन्धिक,
गन्ध, विक्रियन् वणिन् २ औषधयिकेष्ट ३ मेघ
नगर ।

अत्यन्त, वि (म) अत्यर्थे, अमित अत्यधिक ।
अत्याचार, स पु (म) निष्ठुर कूर निर्दय,
कर्मन् (न) कार्यम् २ पाप, दुरितम् ३ पाप
पह ८, आत्मर ।

अत्याचारी, वि (स-रिन्) पाप, दुराचारिन्
२ निष्ठुर, क्रूरकर्मन् ३ पापविद्वन्, धर्मघ्न ।
आयुक्ति, स स्त्री (स) आयुषचय, सत्याति
धन ० अन्नारभेद (सा) ।

अय, अय्य (न) भगलसूचकशब्द २ आरम्भ
३ अतन्तरम् । —अ, अय्य (न) अन्वय,
अपर च, अपि च, चिच ।

अथर्व, स पु (म) अथर्वन् चतुर्वेद ।
अथर्वणि, स पु (म) अथर्ववेदश्च २ पुरोहित ।
अथवा अन्य (म) वा, किं वा यद् वा ।
अथाह वि (म) अ+हि याह अमाध अनल
रपृष्ट, अतिग (म) भीर २ अत्यधिक अमीन
३ गृह, दुर्बोध ।

अदत्त, वि (स) दशन दन्त, विहीन रहित
२ अज्ञान दम्भ-दशन ।

अद्व, स पु (अ) मत्वा २ मरवावाधिवृ
मनेनो वा ।

अदना, वि (अ) कुण्ड, हुद्र २ साधारण
प्राज्ञ ।

अद्व, स पु (अ) शिक्षाचार, शिक्षता विनय ।

अद्वय, वि (म) प्रचण्ड अजेय, दुर्बल ।

अद्वक, स पु (स) आद्वक गृह्येयम् ।

अद्वल, स पु (अ) न्याय, धर्म नय ।

अद्वलवद्वल, स पु (अ) परि, वर्त-वर्तनवृत्ति
(स्त्री), विपर्यय ।

अदा, वि (अ) दत्त, द्योषित । स स्त्री,
लीला विग्रम २ प्रवार, विधि ।

अदालन, स स्त्री (अ) न्यायालय, अधि
करण, व्यवहारमण्डप, न्याय धर्म, सभा ।

अदालती, वि (म) अदालत) आधिरारणिक,
न्यायालयमन्त्रिणम् ।

अदावत, स स्त्री (अ) अनुना, नेरम् ।

अदूरदर्शी, वि (स-शिन्) दूरनुदि अष्ट ।

अद्वय, वि (स) परोक्ष, अमीवर, अलक्ष्य ।

अद्वष्ट, वि (स) वन्तर्हित, छुप्त, अलक्षित ।

—पूर्व, वि अद्वुत, अभूतपूर्व, विमिश्रण ।

अदेह, वि (स) अनाय, अशरीर । स पु,
कामदेव, मदन ।

अद्रोष, वि (म) निर्दोष, निष्पाप, निरपराध ।

अद्भुत, वि (स) विमय आश्चर्य, अनन्य, अपूर्व,
अलौकिक ।

अतज्ञालय, स पु (म) मग्नहालय ।

अद्वितीय, वि (स) एतल, एताकिन्, एक
२ अनुपम, अनुस्य ३ प्रधान ।

अद्वैत, वि (म) दे 'अद्विनाय' (१, २) ।

—वाद, स (म) 'मद्वैत' सत्य अन्यद
सब मिथ्या' इति सिद्धा न ।

अय, अय्य (स) नीचै, अभस्ताय (दोनों
अन्य) ।

—पतन, स पु (म न) नीचै पतन
० अवनति (स्त्री) ३ दुदशा, दुर्गति (स्त्री)

४ विनाश, क्षय ।

अय, वि (स अर्द्ध) सामि (समास में ही) ।

—कचरा, वि, अपरिपक्व, अपूर्ण २ अदक्ष,
अकुशल ।

—कपारी, स स्त्री, अर्द्धशिरावेदना, अर्द्धाव
भेदक ।

—खिला, वि, अर्द्धविकसित, सामिवियच ।

—खुला, वि, अर्द्धविहृत, अर्द्धपाहृत २ अर्द्ध
मीलित ।

—पर्दे, स स्त्री, अर्द्धपाद, पाशाईम् ।

—मरा, स पु, प्राय-वत्प, अर्द्ध सामि, घृत ।

—मुआ, स पु, अर्द्धसेर, सेराईम् ।

अघन, वि (म) निर्धन, दरिद्र ।

अघड़ी, स स्त्री (म) अर्द्धांगी) अर्द्धांगी,
अर्द्धांग-शक ।

अघन्य, वि (स) समदमाग्य, गर्ह ।

अधम, वि (स) नीच, निरुद्ध २ पापिन्, दुष्ट ।

—अधम, वि (स) पापिष्ठ, महानाच ।

अधमर्ण, वि (म) अधिग्न, धारक, ऋणग्रस्त ।

अधमाग, (स पु (म न) पाद, पद, पदम् ।

अधमा स स्त्री (स) नायिका भेद २ ३ अर्द्ध
ज्ञा-अन्वयज्ञा, -नारी ।

अधमाई, स स्त्री (स अधम >) नीचता, अधमता ।

अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ (२) (ऊपर का) ओष्ठ, रद-रदन-रत-रदन च्छद ।

—अधर, स पु (स) अधस्तन ओष्ठ ।

—विध, स पु (स न) रत्नैः ।

अधरे, स पु (स अ+हि धरना) आकाश
श्च अन्तरिक्षम् । वि देय > नीच ।

अधर्म, स पु (स) पात्र, पानक अन्दाद
दुकर्मन् (न) ।

अधर्मी, वि (स-मिन्) पाप पापिन् पापकिन् ।

अधार्मिक, वि (स) दे 'अधर्मा' ।

अधिक, वि (न) बहु प्रभूत > अनिश्चित
देव । —तर, क्रि वि, प्राय, प्रायशः बहुशः ।

—ता, स स्त्री (स) बहुत्व अधिक्य बाहुल्यम् ।

—मास, स पु (स) पुष्पैश्चमन-मल-अमकान्
माम् ।

अधिकरण, स पु (स न) आपार, आभय

& कारकविशेष (व्या) & प्रवरा दीर्घम् ।

अधिकाश, स पु (स) अधिकमार । वि
बहु । क्रि वि प्राय, बहुशः ।

अधिकाधिक, वि (ए) अधिकतम, भूविद्व ।

अधिकार, स पु (स) प्रभुत्व, स्वत्व, &
स्वामित्व, अधिपत्यम् & क्षमता, योग्यता &
प्रकरण, दार्ढ्यम् ।

अधिकारी, स पु (स रिन्) प्रभु, स्वामिन्
& स्वत्ववत् & योग्य, क्षम । (स्त्री अधिका
रिणी, स) ।

अधिकृत, वि (स) इत्यात, उपलब्ध । स
पु, अध्यक्ष, अधिकारिन् ।

अधिकृति, स स्त्री (स) स्वत्वम्, अधिकार ।

अधिरमण, स पु (स न) आरोहणम् &
आक्रमणम् ।

अधिष्ठित, वि (स) तिरस्कृत, अपमानित &
क्षिप्त & प्रेषित ।

अधियका, स स्त्री (स) पर्वतस्योर्ध्वा भूमि-
(स्त्री) ।

अधिदेव, स पु (सं) इष्ट-नुष्ठ-देव ।

अधिनायक, स पु (स) अधिकृत, अधिका
रिन्, अधिकारिक, नायकविशेष & प्रभु,
स्वामिन् ।

अधिप, स पु (म) स्वामिन् & अविनारिन्
& नृप ।

अधिपति, स पु (स) दे 'अधिप' ।

अधिवास, स पु (स) निवास, स्थ-स्थान
& परावृष्टिर्वा वास ।

अधिवसन, स पु (स न) स्ना, मगन,
गोष्ठो, मनागन ।

अधिष्ठाता, स पु (स-तु) अध्यक्ष निर्वाहक,
प्रभु, व्यवस्थापक, अवैभक्त, प्रवर्तक, बाल
क अधिकृत ।

अधीन, वि (अ) अश्रित बन्धीभूत, आश्रित
वर्तिन् विवश, परवश ।

अधीनता, स स्त्री (न) परवशता, परतन्त्रता ।

अधीर, वि (न) वैराग्यहीन उद्विग्न, व्याकुल,
विह्वल चञ्चल & सन्तोषशून्य ।

अधीरता, स पु (स) स्वामिन् & नायक
अधीरवर } & नृप ।

अधीरा, वि (हि अध+पूरा) अपूर्ण, अर्द्ध,
छिन्न, क्लममा ।

अधेष्ट, वि (इ अध) अनयोजन, मध्यमव्ययक ।

अधेष्टा, स पु (हि अध) अज्ञाता ।

अधोगति, स स्त्री (स) पन्न, अवसान,
विनिर्वात । - अवनति (स्त्री), हय, दुःशा ।

अध्यक्ष, स पु (म) स्वामिन्, प्रभु & नायक,
अधिकारिन् & अधिष्ठातृ ।

अध्ययन, स पु (स न) पठन पाठ,
अध्यापि (स्त्री), वाचन, अध्याप ।

अध्ययनीय, वि (स) अध्यय्य, पठितव्य ।

अध्यर्द्ध, वि (स) सार्द्धक ।

अध्यवसान, स पु (स न) निश्चय &
प्रयत्न & अध्यवसाय ।

अध्यवसाय, स पु (म) सततोद्योग, निर-
न्तरपारमर्श & उत्साह & निश्चय ।

अध्यवसायी, वि (स-विन्) उद्योगिन्,
उद्यमिन्, उत्साहिन्, उद्युक्त ।

अध्यापक, स पु (स) शिक्षक, गुरु,
उपदेष्टु, शस्त्र । (स्त्री, अध्यापिका) ।

अध्यापकी, स स्त्री (म अध्यापक >) शिक्षिका,
अध्यापन, पाठनम्, अध्यापकव्यवसाय ।

अध्यापन, स पु (स न) दे 'अध्यापकी' ।

अध्याय, म पु (स) पाठ, सर्ग, परिच्छेद,
ग्रन्थविभाग ।

अध्येतव्य, वि (स) पठनीय, पठितव्य,
अध्ययनाई, पाठ्य, अध्येय ।

अध्येता, स पु (स अध्वेतु) पाठक,
विद्यार्थिन् ।

अध्व, म पु (स ध्वन्) मार्ग, पथिन् ।

—ग, म पु (म) पान्थ, पथिव, यात्रिक ।

अध्वर, स पु (स) यज्ञ, याग, मद्य,
सत्र क्रतु ।

अध्वर्यु, स पु (स) अस्त्रिभेद, यज्ञे यजुर्वेद
मन्त्रादीं ब्राह्मण ।

अनग, वि (स) अवाय देहहीन । स पु
काम, मदन ।

अनन, वि (स) अपार, अक्षेप, निरवधि
२ सतत, अपिरत, निरन्तर ३ नित्य,
अनवर । स पु विष्णु २ शेषनाथ ३
आकाश श ४ बाहुभूषणभेद ।

अनन्तर, कि वि (स १ अन्व) पश्चात्,
ऊपर (पक्षी के साथ, उ तन पर इ)
२ सतत । वि, अन्यवहित, सन्निहित, आसन्न ।

अनगिनत, वि (म अगणित) अनन्तर,
मर्यादीत, बहु ।

अनगिन, वि (स) अनगिनहोमिन् २ अधार्मिक
३ अविमान्य प्रल ४ अविवाहित ।

अनघ, वि (स) निष्पाप, निर्दोष २ शुद्ध,
पवित्र । स पु (म न) पुण्य, सुकृतम् ।

अनचीता, वि (म ० हि अन + म चिन्तिन)
अचितित, अनल्पित २ अनिष्ट, अवांछित ।

अनजान, वि (स अन् + हि जानना) अज्ञ,
अज्ञानिन्, मूर्ख २ अज्ञान, अनुद्ध ।

अनङ्गवान्, स पु (स अनङ्ग) वृष वृषभ,
बल १ (स्त्री० अनङ्गो, अनङ्गवाही = गौ)

अनङ्गवा, वि (■ अन् + हि देखना) अङ्ग,
अनीक्षित ।

अनधिकार, म पु (स) अनधिक (स्त्री),
असामर्थ्यम् ।

अनधिकारी, वि (स रिन्) अधिकार
प्रमुख, रहित, अशुभ । स पु, अपात्रम् ।

अनध्याय, स पु (स) अवकाशदिनम् ।

अनघास, स पु (भाजीविधिन, नानस)
धूपभेद उत्पन्न च ।

अनन्य, वि (स) एतन्निष्ठ २ अनुपम,
अद्वितीय ।

—गति, वि (म) एक, आश्रित-गति निष्ठ ।

—चित्त, वि (म) एकाग्र, एकामचित्त, अनन्य-
धृति मनम् ।

अनपद, वि (म अन् + हि पदना) निरक्षर,
अनक्षर, विद्या ज्ञान, शून्य, अशिक्षित ।

अनघन, स स्त्री (स अन् + हि बनना)
विरोध, वैपरीत्य, विम्वार, मतभेद ।

अनभिज्ञ, वि (स) अज्ञ, अवोध (अनभिज्ञा
स्त्री) ।

अनभिज्ञता, म स्त्री (स) अज्ञता, मोरर्ह,
अपरिचय ।

अनमना, वि (स अन्मनम्-रक >) निम्न,
स्थान, विषण्ण, उद्विग्न, अवमन्न २ रुग्ण,
रोयिन् ।

—पन्न, स पु, रिक्कता, स्थानता ० अ य
मनस्कता ।

अनमिल, वि (म अन् + हि मिलना)
अमयत, अमदद २ भिन्न, अलग्न ।

अनमेल, वि (स अन् + मेल >) अममद
२ विमुक्त ।

अनमोल, वि (स अन् + हि मोल) अमूल्य,
महार्घ, बहुमूल्य २ श्रेष्ठ, उत्तम ।

अनगोल, वि (स) निरङ्कुश, उच्छृङ्खल, उदाम
२ विचार विवेक, दूय ३ निरन्तर ।

अनर्घ, वि (स) हुक्मेय, बहुमूल्य २ सुख
क्रेय, अवमूल्य ।

अनर्घ्य, वि (स) अपूज्य, अवन्ध २ बहुमूल्य ।

अनर्चित, वि (स) अनुपाजित, अममेण प्राप्त
२ अप्राप्त, अलभ्य ।

अनर्थ, स पु (स) विपरीत अयुक्त, अर्थ
२ कार्यशानि (खा), विचार, उपद्रव,
अनिष्ट, अपद (खा) ३ अन्वायाजित धनम् ।

अनर्थक, वि (स) निरर्थक, अर्थहीन २ मोघ,
—क्रे ।

अनर्थ, वि (स) अपात्र, अनधिकारिन्,
अयोग्य ।

अनल, स पु (स) दे 'अभि' ।

—चूर्ण, स पु (स न) आग्नेयचूर्णम्
(= वास्व) ।

अनलस, वि (म) उपमिन्, उद्योगिन्, उदयुक्त ।

अनलहृक, स पु (अ) अह म्हास्मि ।
 अनल्प, वि (स) बहु, अधिक ।
 अनवगाह, वि (स) अगाध, अनलस्पन्द ।
 अनवध, वि (स) अनिन्द्य, अवाध्य ।
 अनवधान, स पु (स न) प्रमाद,
 चित्तविक्षेप ।
 अनवरत, क्रि वि (स न) निरन्तर,
 सतत सदा ।
 अनवस्था, स स्त्री (स) अव्यवस्था २ व्याकु-
 लता ३ दोषभेद ('याय०) ।
 अनशन, स पु (म न) उदवास, अन्न
 त्याग निराहारव्रतम् ।
 अनश्वर, वि (म) नित्य अविनाशिन्
 अनुसूनी वि स्त्री (म अन् + हिं सुनना)
 अमुन अनाकर्णित ।
 अनस्तिव, स पु (म न) अभाव, अविष-
 माकता ।
 अनहृद् नाद, स पु (स अनाहतनाद)
 निरितकर्णं योगिभिः अवभाण शब्दभेद
 (योग०)
 अनहोत्री, स स्त्री (म अन् + हिं होना)
 अलौकिकघटना, असम्भववार्ता ।
 अनागत, वि (स) आगमिन्, भाविन् २
 अनुपस्थित ३ अज्ञान ४ अन् ५ अकृत ।
 अनाचार, स पु (स) वदचार, दुराचार
 २ कुप्रथा, कुरीति (स्त्री) ।
 अनाचारी, वि (स रिन्) दुराचारिन्, भ्रष्ट ।
 अनाप, स पु (म अनापम्) अन्न, धान्य,
 दास्य, आहार ।
 अनाडी, वि (स अनार्य > ?) मूर्ख, अज्ञ २
 नैपुण्यहीन ।
 —पन, स पु, मूर्खता २ नैपुण्याभाव ।
 अनाद्य, वि (स) दूरिद, निर्धन, अपन्न ।
 अनातप, वि (स) आनपरहित, छायायुत
 २ शीतल ।
 अनाथ, वि (स) नाथ प्रभु, हीन २ मातृ-
 पित्रहीन ३ असहाय, निराश्रय ४ दीन,
 परवश ।
 अनाथालय, स पु (स) अनाथाश्रम ।
 अनादर, स पु (स) अवज्ञा, तिरस्कार,
 अवधीरणा, अव-अप-मान, मानभङ्ग ।

अनादि, वि (स) आदि-ज-म-आर-म, 'त्य,
 (उ, ईश्वर, नीव, प्रवृत्तिश्च) ।
 अनादिस्व, स पु (सं न) अनादिता, आरम्भ-
 शून्यता, नित्यत्वम् ।
 अनादेय, वि (स) अग्राह्य, अग्रणीय,
 अपरिग्राह्य ।
 अनाप-शानाप, स पु (स अनाप > + अमु)
 प्रलाप, निस्तार निरर्थक वचनम् ।
 अनामिका, स स्त्री (स) उपकतिष्ठिका,
 अनामन् (पु) ।
 अनायास, क्रि वि (म न) परिश्रम विना,
 सहसा अकस्मात् ।
 अनार, स पु (पा) (वृक्ष) कुचफल वृक्ष,
 पुष्पवृक्ष, दाहि (लि) म-मा दाढव २
 (फल) कुचफल रक्तबीज, दाहि (लि) मम्
 ४ (आतश्वाजीका) अग्नि-कीडादादिमम् ।
 —दान, स पु (पा) दाहिमबीजम् ।
 अनार्य, स पु (म) दुष्ट, जल, धुद्राण्य,
 अधम, 'अन्य' २ श्लेष्म ।
 अनावश्यक, वि (स) निष्प्रयोजन, अनपेक्षित
 २ असार, धुद्र, उपेक्षणीय ।
 अनायृष्टि, स स्त्री (स) अ(ना)यष्टि ।
 अवग्र (ग्रा) ह, 'नलशेष, वृष्टिविधान ।
 अनाहृदवाणी, स स्त्री (स अनाहत >)
 आकाश-देव गान, गिरा-वाणी ।
 अनाहार, स पु (स) भोजनत्याग (२) भोजना-
 भाव । २ अनशनव्रतिन् ।
 अनाहुत, वि (स) अनिमज्जित, अनाकारित ।
 अनित्य, वि (म) नश्वर, विनाशिन् ३ अगुर,
 अस्थायिन्, २ मिथ्या, असत्य ।
 अनित्यता, स स्त्री (स) नश्वरता, भङ्गुरता,
 अस्थिरता ।
 अनिमि(मे)प, वि (स) निर्निमेष,
 स्थिरवृष्टि, निमेषरहित । क्रि वि, निर्निमेष,
 स्थिरवृष्ट्या । स पु (स) देव २ मत्स्य ।
 अनियत, वि (म) अनिश्चित, अनिर्दिष्ट,
 अनिर्धारित २ अस्थिर, अट्ट ३ अपरिमित
 ४ विक्षिप्त ।
 अनियतात्म्य, वि (स-सम्) अजितेन्द्रिय,
 छोलचित्त ।
 अनियम, स पु (सं) नियमामाव, व्यतिक्रम ।

अनियमित, वि (स) व्यवस्थारहित, अव्यवस्थित, विधिविरुद्ध २ अनिश्चित, अनियत ।
अनियारा, वि, दे 'रैना' ।

अनिरुद्ध, वि (स) अरुद्ध २ निर्बाध ३ स्वतन्त्र ।

अनिर्दिष्ट, वि (स) अकृतनिर्देश, अमकोतित २ अकनिष्ट, अनुक्त ३ अनादिष्ट, अनाज्ञापित ।

अनिर्वचनीय, वि (स) अकथनीय, अवर्णनीय, अनिर्वाच्य ।

अनिल, स पु (स) वायु, पवन, वात ।

अनिवार्य, वि (स) अवश्यभाविन्, अपरिहार्य, भुव, परमावश्यक ।

अनिश्चित, वि (स) अनियत, अनिर्धारित, अनिर्दिष्ट ।

अनिष्ट वि (स) अनपेक्षित अवाञ्छित, अनभिलषित । स पु (स न) अमल, अहिम, हानि (स्त्री) ।

अनी, स स्त्री (स अनीणि) पूर्व-अग्र, प्रात भाग ।

अनीक, स पु (स पु न) सेना सैन्य २ समूह ३ गुटम् ।

अनीकिनी, स स्त्री (स) सेना, सैन्य २ पूर्णसेनाया दशमो भाग ३ तलिनी, कमलिनी ।

अनीति, स स्त्री (स) अत्याय, पक्षपात २ उपद्रव, उत्पात, ३ अस्वाकार ।

अनु, उपसर्ग (स) सामीप्यमाश्रयादिषोक्त उपसर्ग ।

अनुकपा, स स्त्री (स) दया, कृपा अनुग्रह २ सहायभूति (स्त्री), समवेदना ।

अनुकरण, स पु (स न) अनुकार, अनुकृति-अनुकृति (स्त्री), अनुसरण २ विटम्बनम् ।

अनुकरणीय, वि (स) अनुकरणाद्, अनुसरणीय ।

अनुकूल, वि (स) हितकर, उपकारक २ सहाय ३ प्रसन्न ।

अनुकूलता, स स्त्री (स) अनुग्रह, कृपा २ सहायता ३ प्रसाद ।

अनुकूल, वि (स) अनुकूल २ विरुद्ध ।

अनुकृति, स स्त्री (स) दे 'अनुकरण' ।

अनुक्त, वि (स) अकथित, अनुदित, अभाषित ।

अनुक्रम, स पु (स) अन्वय, अनुपूर्व, परपरा ।

अनुक्रमण, स पु (स न) अनु, गमन सरण चलनम् ।

अनुक्रमजिका, स स्त्री (स) अनु क्रम, परपरा, सूची वि (स्त्री) २ ग्रन्थभेद ।

अनुक्रीडा, स पु (स) अनुकम्पा दया ।

अनुक्षण, किं वि (स न) प्रतिक्रान् २ समतन्त्र ।

अनुयामन, स पु (स न) अनु-सरण गति (स्त्री) २ अनुवरण ३ सम्मेलन सहवास ।

अनुयामी, वि (स मिन्) अनु-यायिन् वतिन् २ अनुकर्तृकारिन् ३ आहापालक ४ सम्भाषिन् ।

अनुगृहीत, वि (स) उपकृत २ कृतम् ।

अनुग्रह, स पु (स) कृपा, दया, अनुकम्पा ।

अनुग्राहक, वि (स) कृपात्र, दयात्र, महा-यक, उपकारक ।

अनुचर, स पु (स) सक्, किङ्कर, दास ३ शय्य, सहार ।

अनुचित, वि (स) अनुक्त अनर्ह, अयोग्य ।

अनुज, वि (स) पश्चादुत्पन्न । स पु (स) कनीयान् भ्रातृ २ स्थलपक्षम् । (अनुजा स्त्री) ।

अनुजीवी, वि (म विन्) अधीन जायस, आभित । स पु सेवक, दास ।

अनुज्ञा, स स्त्री (स) अनुमति (स्त्री) अनुमतम् । २ आज्ञा, आदेश ।

अनुज्ञाप, स पु (स) पश्चात्ताप, अनुज्ञाप, अनुशोक २ उपन दाह ३ छेद, दुःखम् ।

अनुत्तर, वि (स) निरुत्तर, प्रतिवचनारहित ।

अनुदात्त, वि (स) उच्च, गुच्छ २ स्वर भेद (व्या) ।

अनुदिन, किं वि (स न) प्रतिदिनम् ।

अनुनय, स ॥ (स) विनय, प्रार्थना, आवेदन, याचना, याचना २ प्रसादन, आराधन, अनुरजनम् ।

अनुनाद, स पु (स) 'अन' ।

अनुनासिक, वि (स) मुखनासिकाभ्यामुष्ण
रणीदा वर्णा (ङ, ञ, ण, न्, न् तथा अनु
स्वार) ।
अनुनीत, वि (स) सान्त्वित, प्रसादित ?
प्राथिन, याचित ।
अनुपद, वि वि (म न) अन्वय, सप्त,
पञ्चाद, अव्यवहितोत्तरकालम् ।
अनुपदिष्ट, वि (स) अदिक्षित उपदेष्ट
शिक्षा —वचन ।
अनुपपत्ति, स स्त्री (स) ममापानामाव
असंगति-असिद्धि-अप्राप्ति (स्त्री) ।
अनुपपन्न, वि (स) अनिष्ट, असपन्न ।
अनुपम, वि (स) अप्रतिम निरूपम, अतुल
अनुव्य, असदृश, अप्रतिरूप, अद्वितीय अनुपमेय ।
अनुपयोगी, वि (म गिन्) निष्प्रयोजन,
निरर्थक, निर्गुण, व्यर्थ ।
अनुपयोगिता, स स्त्री (स) निरर्थकता व्यर्थता ।
अनुपस्थित, वि (स) अविद्यमान, अवर्तमान,
दूरस्थ, स्थानान्तरागत ।
अनुपस्थिति, स स्त्री (स) असन्निधि,
परीक्षणा ।
अनुपान, स पु (स) सम्भवताम्य, आनुश्रव्य
२ गणिते त्रैराशिकक्रिया ।
अनुपान, स पु (स न) औषधन सह सेव्य
वस्तु (न) ।
अनुप्रास, स पु (स) वर्णसाम्यम्, शब्दा
स्कारभेद (सा, ङ क्येकिलशुलकलृप्तिगन्
२) ।
अनुपध, स पु (स) सम्बन्ध, सम्पर्क २
आरम्भपरिणामी ३ मित्र, सहृद् ४ हस्तशुका
वर्णा (ज्यो) ५ अनुसरण ६ भाविनुभाभुमे ।
अनुभव, स पु (स) साक्षात् उदलभ्य ज्ञानम्
२ परीक्षा प्राप्ता बोध, परीक्षणम् ।
अनुभवी, वि (स विन्) परिप्लवण, बहुद
क्षिन् सातुभव ।
अनुभाव, स पु (स) महत्त्व, प्रभाव, महि
मन् २ रोमाञ्चवटाङ्गादिचेष्टा (सा) ।
अनुभावी, वि (स विन्) अनुभाववत्, प्रभा
वशालिन । स पु प्रत्यक्षमाधिन् २ मृतस्य
निश्चसम्बन्धिन् ।
अनुभूत, वि (स) साक्षात्ज्ञान, परीक्षित ।
अनुभूति, स स्त्री (स) अनुभव, परिज्ञान,
बोध ।

अनुमति, स स्त्री (स) अनुज्ञा, अनुमत २
आज्ञा ३ चतुर्दशीयुक्ता पूर्णिमा ।
अनुमत्त, वि (स) इष्टोन्मत्त, अत्यानन्दित ।
अनुमरण, स पु (न) दे 'सती होना' ।
अनुमाता, वि (स — ह) तर्कयिष्ट, क्लिष्ट ।
अनुमान, स पु (स न) वि, नर्क, क्लृ, अ
भ्युह, अभ्युहन, अनुमिति (स्त्री) ।
—करना, कि म, क्लृ (भ्या भा से),
अनुमा (जु आ अ अ व अ), नर्क (जु),
उनो (म्वा प अ) अनुमान कृ ।
—सिद्ध, इव तर्क-अप्राह, साधित-वृद्धोक्त ।
अनुमिति, स स्त्री (न) दे 'अनुमान' ।
अनुमेद्य, वि (स) तर्कणीय, अभ्युहनीय,
उनेय ।
अनुमोदन, स पु (स न) समर्थन, वृद्धो
करण, उपोद्बलन २ हर्षप्रकाशन, मौढानुभव ।
अनुयायी, वि (स यिन्) अनु, नामिन्
कारिन् ।
अनुरक्त, वि (स) अनुरागिन्, बडानुराग,
रूपप्रणय, आसक्तचित्त २ लीन, मग्न ।
अनुराग, स पु (न) राग, प्रेमन् (पु न),
स्नेह, प्रणय, भाव, प्रीति-आसक्ति (स्त्री) ।
अनुरागी, वि (स गिन्) दे 'अनुरक्त' ।
अनुरूप, वि (स) सदृश, समान, दुव्य २
योग्य, उपयुक्त, अनुकूल ।
अनुरूपता, स स्त्री (स) सादृश्य, सामान्य
२ अनुकूलता, उपयुक्तता ।
अनुरोध, स पु (स) आग्रह, निर्बन्ध,
अभिनिवेश २ प्रेरणा ३ विप्र ।
अनुलेपन, स पु (म न) वि, लेपन,
अभ्यञ्जन ममालम्भ, उद्वर्तनम् ।
अनुलोम, स पु (स) निम्नग अवतरण, क्रम,
अवरोह ।
—विवाह, स पु (स) उधवर्णपुरुषस्य हीन
वर्णया स्त्रिया विवाह ।
अनुवर्तन, स पु (म न) अनु, नामन-करण
सरणम् ।
अनुवर्ती, वि (म गिन्) अनु, नामिन् कारिन्
सारिन् । (अनुवर्तिनी स्त्री) ।
अनुवाद, स पु (स) भाषांतरम् २ पुन
रुक्ति (स्त्री), पुनर्वचनम् ।
अनुवादक, स पु (स) भाषान्तरकार ।

अनुवादित, वि (स) माषान्नरित, अनूदित, वृत्तानुवाद ।

अनुवृत्ति, म स्त्री (म) उपजीविका, संवा मार्ग २ पूर्ववर्तिवाक्याश्रय्य अर्थस्पष्टतायै अग्रे योजनम् ।

अनुशासक, वि (म) अनुशासित्व नियन्त्र, अनुशास्त्र, अनुशासित्व २ शिक्षक, उपदेशक ३ दण्ड ।

अनुशासन, स पु (स न) भादेश, वाङ्मा २ उपदेश, शिक्षा ३ न्यायदान, विवरणम् ।

अनुशासित, वि (स) अनुशिष्ट, नियमित २ उपदिष्ट ३ दण्डितम् ।

अनुशीलन, स पु (स न) चिन्तन मनन, आलोचन २ आवृत्ति (स्त्री), पुनरभ्यास ।

अनुशोक, स पु (स) अनु, तप -शय, पश्चात्ताप ।

अनुपपत्ति, स पु (स) सम्बन्ध, समर्ग २ कल्पना, दया ।

अनुष्ठान, स पु (स न) कार्याक्रम २ सविधिसम्पादन ३ फलविशेषाय देवतास्थापन, पुनश्चरणम् ।

अनुसन्धान, स पु (स न) अन्वेषणणा, निरूपण, मार्गणम् २ प्रयास, प्रयत्न ।

अनुसरण, स पु (स न) अनुसमन सहगमन २ अनुकरण ३ अनुकूलाचरणम् ।

अनुसार, किं वि (स न) अनुकूल, सङ्गममान (मङ्गलम्) ।

अनुचान, स पु (स) साङ्गवेदाध्योना, ज्ञातक २ विद्यागस्तिक ३ चरित्रवत् ।

अनुस्वार, स पु (स) स्वरानन्तरमुच्चार्यमाणानुनासिका वर्णविशेष २ अनुनासिक चिह्न () ।

अनूरा, वि (स अनुत्थ >) अपूर्व, विलक्षण विविध २ सुन्दर, श्रेष्ठ ।

—पुन, स पु वैचित्र्यम्, वैलक्षण्यम् ।

अनूदित, वि (म) पुन कथित-वाणन २ अनुवादित, भाषांतरित ।

अनूप, वि (सं) जल, प्राय बहुलम् । स पु नलप्रायदेश, जलबहुल ।

अनूप, वि (स अनुपम) अनुपम, अद्वितीय २ सुन्दर, स्वच्छ ।

अनेक, वि (सं) वृत्ताधिक, बहु, असंख्येय ।

अनोरथा, वि (स अनु + वीक्ष >) अनुत्त, विलक्षण २ नूतन, नव २ सुन्दर, मन्दप ।

—पुन, स पु, विलक्षणता, नूतनता, सुन्दरता ।

अन्न, स पु (स न) भक्ष्यपदार्थ २ दे 'अन्नान्न ३ पचयन्न, भक्षम् ।

—जल, स पु (स न) भाजनपान २ जीविका, वृत्ति (स्त्री) ३ देव, देव, योग घटना गति (स्त्री) ।

—दाता, स पु (स तु) अन्नदा, भक्ष्यदायक २ पोषक । (दात्री स्त्री) ।

—पूर्णा, स स्त्री (स) अन्नाभिधाना देवी ।

—प्राशन, स पु (स न) शिष्टानासत्कारभेद ।

—मध्यकोश, स पु (म) मध्यकोशम् ।

अन्ना, स स्त्री (स नन्ना >) धान, उपमा (स्त्री), धातुका, भक्षुपात्री ।

अन्नाद, स पु (स) अन्नमद्यक २ ईश्वर ३ दिष्णु ।

अन्य सर्वे (स) अपर, द्वितीय, अन्तर्गामी, पर, भिन्न ।

—देशीय, वि (स) पर वि, देशीय ।

—पुरुष, स पु (स) भिन्न पर अपर, पुरुष २ प्रथमपुरुष (व्या) ।

—पुष्ट, स पु (म) विक, कोटिम् ।

—समस्क, वि (स) चिन्तित, विवर्ण, खिल । अन्यत, अन्य (स) अन्यरमात् जनात् स्थानात् वा ।

अन्यत्र, अन्य (म) अपरत्र अयस्मिन् स्थाने ।

अन्यथा, अन्य (स) इतरथा, २ विपरीत, विरुद्ध ३ असत्यम् ।

अन्यापदेश, स पु (स) दे 'अन्योक्ति' ।

अन्याय, स पु (स) अधर्म, अन्याय, अन्यायि (स्त्री) ।

अन्यायी, वि (स विद्) अन्यायवात्, अन्यायाचारिन्, कूर, पाप धर्मेविमुख ।

अन्याय्य, वि (स) न्याय-धर्म-रहित-विपरीत विरुद्ध ।

अन्योक्ति, स स्त्री (म) अन्यापदेश, अन्याकारभेद (सा) ।

अन्योन्य, किं वि (स न) परस्पर, मित, हतरेतर २ वि परस्पर ।

—आश्रय, स पु (स) अन्योऽन्यापेक्षा, परस्परामय २ सापेक्षज्ञानम् ।

अन्वय, म पु (म) परस्परसम्बन्ध
२ सयोग, ससर्ग ३ षष्पदानां गद्यत्रयवत्
स्थानम् ४ अवकाश, शून्यस्थान ५ कार्य
कारणसम्बन्ध ६ वश, कुलम् ।

अन्वयः, वि (स) अर्थानुसारिन्, सार्थक ।
अन्वित, वि (स) युक्त, सहित, संगत ।
अन्वीक्षण, म पु (स न) ध्यान, भावन,
विमर्श २ हे 'अनुसन्धान' ।

अन्वेपण, स पु (म न) ३ 'अनुसन्धान' ।
अन्वेपी, वि (म-विन्) अन्वेषक, अन्वेष्टु
(पु), गवेषक, अनुसन्धातु ।

अन्वेष्टव्य, वि (स) अन्वेषणीय, अनुसन्धेय,
विवेच्य ।

अपग, वि (स अपाग) हीनांग, व्याप्त, न्यूनांग
२ पशु, मशक्त (हीनांगी, पशु स्त्री) ।

अपह्नि, वि (स) अह, मूर्ख, निरक्षर ।

अप, उप (स) वैपरीत्यविरोधविकारद्विधोग
मर्जनादिघोतक उपमर्ग ।

अपकर्ता, वि (स-र्तृ) अनिष्ट-हानि-अहित-
कर्तृ-कर-कारक ।

अपकर्ष, म पु (स) नीचैः कर्षण, पातन
२ अवनति (स्त्री), क्षय ३ अपमान,
अनादर ।

अपकार, म पु (स) अमित्र, अहित, अनिष्ट
पातन, हानि अपकृति (स्त्री) ।

अपकारक, वि (म) अपकारिन्, हानिकारक ।

अपकीर्ति, म स्त्री (स) दुष्कीर्ति, अदयशम्
(न) वाच्यता, कलक, निन्दा ।

अपकृष्ट, वि (स) पतित, अह २ अपम,
निन्द ३ घृणित ।

अपच, म पु (स >) अपाक, अजीर्ण,
अनीर्ण (स्त्री), म-शक्ति, अनविकार ।

अपचय, स पु (स) क्षति हानि (स्त्री)
२ -पय, नाश ।

अपठ, वि (म अपठ) निरक्षर, अशिक्षित,
पठनलक्षणात्मक २ मूर्ख ।

अपत्य, म पु (स न) सन्तान, म-नति
प्रभृति (स्त्री), प्रजा, प्रसव, लोकम् ।

अपय, स ॥ (स पु न) कु विकट, मार्ग,
कुपय ।

अपय्य, वि (स) कुपय्य, रोगजनक, स्वास्थ्य-
नाशक २ अहितकर ।

अपना, वि (स आत्मनः) स्वीय, स्वकीय,
स्वक, आत्मीय, निज, स्व, आत्मन् ।

—पन, स पु-आत्मीयता, ममता २ आत्मा
मिमान ।

अपनाना, क्रि स (हि अपना) आत्मसात्
कृ, स्वाधीन स्वायत्त (वि) + कृ २ स्वीकृ,
अगीकृ, प्रतिपद (दि आ अ), अभ्युपगन्
३ ग्रह (क व मे) ।

अपञ्चश, म पु (म) पतन भवति (स्त्री)
२ विकार ३ विकृतशब्द ४. प्राकृतभाषा-
भेद । वि विकृत ।

अपमान, स पु (स) अनादर, अवमान,
अवज्ञा, अवधीरणणा, उपेक्षा, तिरस्कार,
परिमव ।

—करना, क्रि, स, अवमन् (दि आ अ),
उपेक्ष (ध्वा आ से), अवज्ञा (कृ उ अ),
अवगण (चु), तुच्छी कष्ट-कृ ।

अपमानित, वि (म) अनादृत, अवमानित,
अवज्ञात, अवधीरित, अवगणित ।

अपमान्नी, वि (स निन् >) तिरस्कर्तृ, अव
ज्ञातु अवगणयितु ।

अपमृत्यु, स पु (स) कुमृत्यु २ अकाल
असमय, मृत्यु ।

अपयश, स पु (म शस् न) दे 'अपकीर्ति' ।

अपर च, अ-व्य (सं) अन्यच्च २ पुन,
पुनरपि ।

अपरपार, वि (स अपरपार >) अनन्त,
असीम, अमित, निरवधि ।

अपर, वि सर्वे (स) प्रथम, अग्रिम २
अन्तिम, अन्त्य ३ अ-व्य, मित्र ४ आत्मीय,
स्वकीय ।

—पच, म पु (म) असित-कुण्ड, पक्ष २
प्रतिवादिन् ।

अपरा, स स्त्री (स) लौकिक पदार्थ विद्या
२ पश्चिम-विद्या । वि अन्या ।

अपराध, स पु (म) दोष, वैरम् २ अरुचि
(स्त्री) ३ असन्तोष ।

अपराजित, वि (स) अजित, दे 'अजोत' ।

अपराज्य, वि (स) अजेय, दे 'अजय्य' ।

अपराध, स पु (स) दोष, प्रमाद, स्खलित,
छिद्र, पाप, वाच्यम् ।

—करना, कि अ, विभ्रम् (स्वा दि, प से), अपराध् (दि स्वा ष अ), उत्पद्य वा (अ प अ), स्वल्-विचल्-व्यतिचर (स्वा प से), प्रमद (दि प से प्रमावति)।

—हीन, वि (स) अनिर, दाघ, अनघ, अनवद्य।

अपराधी, वि (स चिन्) सापराध, दोषिन्, दोषवत्, वाक्य निन्द्य, सावण। (अपराधिनी स्त्री) अपराह् स पु (अ अपराह्,) पराह्, विहाह, दिनस्य वृत्तीयो याम।

अपरिग्रह, स पु (स) अरवो अनगी, कार, दानत्याग २ विराग, समत्याग।

अपरिचित, वि (स) अज्ञात, पर, पारक्य, अन्यजन २ परिचयरहित अज्ञ।

अपरिमित, वि (स,) असीम, अमित, अनन्त २ अमर्य, अगणित।

अपरिमेय, वि (स) अमेय, अपरिमाण, दुर्मेय, महद्, बहु।

अपरिवर्तनीय, वि (स) स्थिर, शुभ २ अपरिहाय, अवश्यमाविष् ३ अविनिमेय।

अपरिवर्तित, वि (अ) अविवृत्त, परिवर्तन रहित।

अपरीक्षित, वि (स) अकृतपरीक्ष, अननुयुक्त, अप्रतिष्ठत।

अपरोक्ष, स पु (अ आपरोक्षम्) शल, क्रिया कर्मन् (न), उपाव-उपवार चित्तिः।

अपर्याप्त, वि (स) न्यून, अल्प, हीन, क्षीण।

अपवर्ग, स पु (स) मोक्ष, वि, मुक्ति (स्त्री) निस्तार, निर्वाण २ त्याग, दानम्।

अपवाद, स पु (अ) विरोध, प्रतिवाद २ निन्दा, अपकीर्ति (स्त्री) ३ दोष, पाप ४ बाधकशाल, विशेष।

अपवादी, वि (स दिन्) अपवादक, निन्दक २ बाधक, विरोधिन्।

अपवित्र, वि (म) पाप, अपार्थिक २ अनुद्ध, मलिन, दूषित, अनुचित।

अपवित्रता, स स्त्री (स) धर्महीनता, पाप शीलता २ मलिनता, अनुचिता।

अपव्यय, स पु (सं) शुक्लस्वरत्व, अति बहु अमित, न्यय, अयोत्सय।

अपव्ययी, स पु (स-चिन्) शुक्लस्वर, लोपगिन्, व्ययपरः।

अपशकुन, स पु (स पु न) कु अशुभ दूर, लक्षण, अजन्य, दुश्चिह्नम्।

अपशब्द, स पु (स) गाली, अपवाद २ अशुद्धपद ३ निरर्थकशब्द ४ अपान ज्ञान, वाग वायु।

अपसम्य, वि (स) दक्षिण सन्ध्येतर २ विपरीत ३ दक्षिणस्कन्धेन यक्षोपवीतधारणम्।

अपस्मार, स पु (स) आमर, अगविकृति (स्त्री), भूतविक्रिया। दे 'मिरगी'।

अपहरण, स पु (स न) अपहार, भोषण, विलुण्ठनम् २ मगोवन, लोचनम्।

अपहृत, वि (स) चोरित, हराद् नीतम्।

अपहृति, स स्त्री (म) अपहृत, गोपन, प्रच्छादन तिरोधानम्। २ ह्यान, कप, छल, अपदेश।

अपाग, स पु (म पु न) नेत्रकोण, जयनो पात २ कटाक्ष। वि व्यह, अगाहीन।

अपात्र, वि (स न) गुणहीन, अनर्ह, अयोग्य ३ कुमाण्ड, कुपात्रम्।

अपादान, स पु (स न) धृक् अपा, करणम् २ पञ्चम कारकम् (स्वा)।

अपान, स पु (स) नासिकया बहि क्षिप्य भागो वायु २ अन्न गुदस्थ, वायु ३ गुद, मलदारम्। वि दुःखलाशङ्क (श्चर)।

—वायु, स स्त्री (स पु) पचप्रागेपु अन्य तम २ अन्न गुदस्थ, वायु।

अपाप, स पु (स न) पुण्यम्। वि निष्पाप, धार्मिक।

अपाय, स पु (सं) प्रस्थानम् २ पार्थक्यम् ३ लोप ४ नाश ५ विपत्ति, (स्त्री) ६ हाति (स्त्री)।

अपाद, वि (स) असीम, अनन्त २ असंख्य, बहु।

अपाधिक, वि (स) अमार्थिक, अमृमय २ अर्थात् ३ दिव्य, अलौकिक।

अपावन, वि (म) अनुद्ध, अपवित्र, मलिन।

अपावरण, स पु (स न) अपावृति (स्त्री), उद्घाटनम् २ आप्रा मदाच्छादनम् ३ परिवेष्टनम्, परिवारणम्।

अपाहिज, वि (स अवभञ्ज्) विकलांग (-गो स्त्री) विनक्त, -यव, हीनाङ्ग।

अपि, अल्प (म) १ (= भी) च अपि च,
पुनश्च, अपर च । २ (= ही) केवल, एव,
मात्र ।

—च, अथच, पुनश्च ।

—नु, किनु, परन्तु २ प्रयुज् ।

अपील, म स्त्री (अ अप्पील) पुनर्विचार-
प्रायेणा २ निवेदन ३ प्रार्थनापत्रम् ।

अपीलाट, स पु (अ) निवेदक, विचारार्थ
प्राप्तिन् ।

अपुत्र, वि (स) निरपत्य, निरसन्तान २
पुत्रहीन ।

अपूत, वि (स) अपवित्र, अशुद्ध ।

अपूत, वि (म अपुत्र दे) । म पु, कुपुत्र ।

अपूप, स पु (स) पूष, पिष्टक ।

अपूर्ण, वि (स) अममात्र, सावशेष २ -यून ।

अपूर्व, वि (म) अभूत-अदृष्ट, पूर्व २ अदभुत,
अलौकिक ३ अनुपम, श्रेष्ठ ।

अपूर्वता, म स्त्री (म) विलक्षणता, लोकोत्तरता ।

अपेक्षा, स स्त्री (म) आकांक्षा, इच्छा,
अभिशाप २ आवश्यकता ३ तुल्यता, अपे-
क्षा (दोनों तुल्यवाचक) ।

अपेक्षित, वि (म) अभीष्ट, आवश्यक ।

अप्रचरि(लि)त, वि (स) अप्रयुक्त
अव्यवहृत ।

अप्रतिपत्ति, म स्त्री (स) बोधामामय्य
२ निश्चयामात्र ।

अप्रतिम, वि (स) अप्रगल्भ, प्रतिमा-स्फूर्ति,
दृश्य २ निर्बुद्धि ३ अलस ४ लज्जावत, सलज्ज ।

अप्रतिम, वि (स) अतुल्य, अप्रतिरूप,
दे 'अतुल' ।

अप्रतिरथ, वि (म) अनुपम-अतुल्य वीर
१ अनुपम, अप्रतिम ।

अप्रतिष्ठ, वि (स) कुख्यात, अपमानित
२ अस्थिर, चंचल ।

अप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) अपमान, अगमान,
निराकार २ अस्वर्ग्य, चानल्यम् ।

अप्रत्यक्ष, वि (म) परोक्ष, गुप्त, इन्द्रियान्त ।

अप्रयुक्त, वि (म) अव्यवहृत, अप्रचरि(लि)त ।

अप्रसन्न, वि (स) कुपित, कुद २ अप्रोत,
अनुष्ट ३ रिपु, शोकाकुल ।

अप्रसन्नता, स स्त्री (स) प्रीति प्रसाद,
अमात्र २ रोष ३ रोद, विमनस्कता ।

अप्रसिद्ध, वि (स) अविश्रुत, अविरयात
२ गुप्त ।

अप्रस्तुत, वि (स) अनुपस्थित, अविद्यमान
२ अप्रासंगिक ३ अनुपत ४ गौण ।

—प्रद-सा, स स्त्री (स) अलंकारभेद (सा) ।

अप्राप्त, वि (स) अलभ्य, २ अनधिगत
२ दुर्लभ ३ अप्रस्तुत ४ अनागत ।

अप्राप्य, वि (स) अलभ्य, अनधिगम्य,
अप्राप्तम् ।

अप्रामाणिक, वि (स) अवैध, प्रमाणरूप
२ अविश्वसनीय ।

अप्रासंगिक, वि (म) असम्बद्ध, अप्रस्तुत,
प्रकरणासंगत ।

अप्रिय, वि (स) अनिष्ट, अगचिकर, अनभि-
मत । स पु, शत्रु ।

अप्रेंटिस, म पु (एप्रेंटिस) अन्तेवासिन्,
शिष्य, शिष्यविद्यार्थिन् ।

अप्रैल, म पु (अ एप्रिल) आंग्लवर्षस्य
चतुर्थमास ।

—फूल, स पु विशेषहास्य, मधुमासमूर्ख ।

अप्सरस, स स्त्री (म) अप्सरस (ली बट्ट),

स्वर् स्वर्ग, वेग्या, नाकनर्तकी ।

अफ़यून, म स्त्री (फा) दे 'अफ़ीम' ।

अफ़रना, कि अ (म स्कार = प्रनुर >)
म-परि, तप-नुष (दि प अ) २ स्फाय

(भ्वा आ से), प्र-उप, चि (भा वा प्रची
यने इ) ३ दे 'ऊचना' ।

अफ़रा, स पु (स स्कार) उदर, स्फीति
(स्त्री)-उपचय २ अजीर्णवातादिभि उदर

वृद्धि (स्त्री) ।

अफ़रातफ़री, ॥ स्त्री (अ अफ़रात तफ़रीत)
सङ्ग्रोह, अव्यवस्था २ सप्रम, आकुलत्वम् ।

अफ़रीका, ॥ पु (अ एफ़िका) कालदोषम् ।

अफ़ल, वि (स) निष्फल, मोघ, व्यर्थ ।

अफ़वाह, स स्त्री (फा) जन, प्रवाद, जन
श्रुति (स्त्री), किंवदन्ती, लोक वाद वाचा ।

अफ़सर, स पु (अ ऑफ़िसर) दे 'अधिकारी' ।

अफ़सरी, स स्त्री (दि अफ़सर) अधि-
कारिता २ शासन ।

अफ़साना, स पु (फा) कथा, आख्यायिका ।

अफ़सोस, स पु (फा) दुःख, छेश २. पदधा-
चाप, अनुशय, अनुशोक, छेद ।

अफारा, स पु (हि अफरना) आघ्यानम्
(उदररोग) ।

अ(प) फीडेविट, स पु (अ) शुष्य
पत्रम् ।

अफीम, स स्त्री (शू ओपियन, ज ओपियम)
अहिफेन अफेनम् ।

अफीमी । पु (हि अफीम) अफेन अहि
अफीमची केन, यक्षक-व्यसनिन् ।

अब, कि वि (स अथ, अथ) अनुना,
इबानी, सम्प्रति, साम्प्रत, वर्तमाने ।

—का, वि, आधुनिक, साम्प्रतिक ।

अवज़ारवेदरी, स स्त्री (अ आबजवेदरी)
मानमन्दिर, केशशाला ।

अवतर, वि (फा) निम्नित, गह्रं २ विकृत ।

अघतरी, स स्त्री (फा) विकार, विकृति (स्त्री) ।

अवरक, (-क) स पु (म अन्नव) गिरिजा
मल, शुभ्र, बहुपत्रम् ।

अवरी, स स्त्री (फा) विकृणपत्रमेद
२ पीतपाषाणमेदम् ।

अयरु, स स्त्री (फा) भू (स्त्री), भूकृता ।

अबला, स स्त्री (स) नारी, रमणी ।

अवाच, वि (स) निर्विघ्न, निर्वाध
२ असीन ।

अवाच्य, वि (स) उच्छृङ्खल, तद्वाम २ अवि
चार्य, अप्रतिहार्य, दुर्निवार ।

अवाधील, स स्त्री (फा) कृष्णा, कृष्ण
चटकमेद ।

अवीर, स पु (अ) दे 'गुलाल' ।

अयुक्त, वि (॥ अयुक्त) मूर्च्छ, अक्ष, अनुष ।

अवे, अव्य, (स अयि ?) अरे, हे ।

अवोध, स पु (स) अज्ञानं, भौक्ष्यम् । वि,
मूलं, अक्ष ।

अब्ज, स पु (स न) कमल, पद्मम्
२ नलजात पदार्थ ३ शश ४ चन्द्र
५ धन्वन्तरि ६ कर्पूर ७ शत कोट्य ।

अब्जा, स स्त्री (स) लक्ष्मी (स्त्री), रमा ।

अब्द, स पु (स) वर्षं वै, हासन, वत्सर
२ मेघ ३ कर्पूर ४ आकाश शम् ।

अधि, स पु (स) समुद्र २ तद्वाम ३
समेति मल्या ।

अध्या, स पु (फा) विद्य, जनक ।

अय, स पु (फा, स अन्नम्) मेघ, जन ।

अन्यद्वयम् ॥ (स न) अनाद्वयोनित कर्मन्
(न) २ हिसादिकर्मन् ।

अनाद्वय, स पु (स) अविप्र, अभूय, ,
नाद्वय विप्र-इतर । वि नाद्वयरहित ।

अनय, वि (स) पूर्ण, सकल २ नित्य,
अनन्तर ३ अनन्तरत, मितन्तर ।

अनगुर । वि (स) इन्द्र, अखण्ड
अभंजन २ अनन्तर ।

अनक्त, वि (स) मक्ति-प्रदा, हीन-रहित २
अखण्ड, सम्पूर्ण ।

अनक्त्य, वि (स) अक्षय, अनोज्य ।

अनक्त, वि (म) अनुम, अमागलिक २ शुभ्र ।

अनक्त, वि (स) निर्मल, असीत । स पु
(स न), भय-नाश, अभाव ।

—दान, स पु (स न) रक्षा प्राण, वचन
प्रतिष्ठा २ रक्षणं, शरणदानम् ।

—पद, स पु, (स न) मुक्ति (स्त्री) ।

अनर्तका, स स्त्री (स) विपत्ता, रक्षा २
कुमारी, कन्या ।

अनक्त्य, वि (स) अनुम, अमागलिक
२ कुदर्शन, कुरूप ३ अभावितव्य ४ अस्मृति
५ अशिष्ट ।

अनारा, वि (स अनार) अ मन्द, भाग्य,
प्रारम्भ भाग्य, हीन ।

अनारी, वि (स गिम्) भाग्यहीन २ भाग
हीन, अदावाद ।

अभाग्य, स पु (स न) दुर्देन, मन्द-हीन,
भाग्यम् ।

अभाजन, स पु (स न) अभाव, कुपाय, दुष्ट ।

अभाव, स पु (स) सत्ताडमात्र, अविद्यमानम् ।

अभावनीय, (स) अचितनीय ।

अभि, उप (स) सामीप्यदूरताऽभिमुख्य
नीप्तादिद्योतक उपसर्ग ।

अभिक्रमण, स ॥ (ज न) दे 'आक्रमण' ।

अभिक्षया, स स्त्री (स) शोभा, श्री (स्त्री)
२ यशस (न) कीर्ति (स्त्री) ।

अभिसमन, स पु (स न) उपसर्पण
२ मेषुनम् ।

अभिगाभी, वि (स गिन्) उपसर्पक
२ सम्योगकर्तृ ।

अभिचार, ॥ पु (स) भवैर्मारणोच्चाटनादिक्रिया ।

अभिचारक, वि (स) अभिचारिन् ।

अभिजन, स पु (स) कुल, वंश, २ जन्म
भूमि (स्त्री) ३ कुले वृद्धतम पुरुष ४
रयाणि (स्त्री) ।

अभिजात, वि (म) कुलीन, सुकुलोत्पन्न २
बुध, पटिन, ३ योग्य ४ माय ५ सुन्दर ।

अभिज्ञ, वि (स) शास्त्र, विद्व २ निपुण, कुशल ।

अभिज्ञान, स पु (स न) स्मृति (स्त्री),
अनुबोध २ लक्षण, स्मारकचिह्नम् ।

अभिताप, स पु (स) अतिशय अत्यधिक
ताप-दाह २ पीडा, वेदना ।

अभिधा, स स्त्री (स) शब्दस्य वाक्यार्थ
प्रकाशिका शक्ति (स्त्री, सा) ।

अभिधान, स पु (स न) सद्भा, नामन् (न)
२ कथन, ३ शब्दकोश (-श) ४
(धन्) ।

अभिधायक, वि (स) नामकारक २ वक्त्र
३ परिचायक ।

अभिधावन म पु (स न) आक्रमणम्,
अभिद्रव ।

अभिधेय, वि (स) वाक्य, प्रतिपाद्य । स पु
(स न) नामन् (न), सप्ता ।

अभिध्यान, स पु (स न) इच्छा, वाछा
२ लोभ ३ चिन्तनम् ।

अभिनन्दन, स, पु (स न) प्रशंसा
२ आनन्द ३ स तोष ४ प्रोत्साहन
५ प्रार्थना ।

—पत्र, म पु (स न) प्रशंसा प्रतिष्ठा, पत्रम् ।

अभिनन्दनीय, वि (स) स्तुत्य, वन्दनीय ।

अभिनय स पु (स) नाट्य, भगविलेख
२ अवस्थानुकृति (स्त्री) ३ नाटकक्रीडा ।

—करमा, कि स, नट् निरूप (सु), अभिनी
(म्वा प अ), प्रयुज (चु) ।

अभिनव, वि (स) नव, प्रत्यय ।

अभिनिविष्ट, वि (स) प्रविष्ट २ उपविष्ट
३ मग्न, लीन ।

अभिनिवेश, स पु (स) प्रवेश २ मनो
योग, एकाग्रचिन्तनम् २ दृढसंस्कार ४ शृङ्ख
मयद्वेष ।

अभिनीत, वि (स) उपनीत २ अलकृत
३ रूपित, नाटित ४ उचित ।

अभिनेता, स पु (स -नेत्) नट, नर्तक,
कुशीलव, शैल्य (अभिनेत्री, नटी, नर्तका स्त्री)

अभिनेय, वि (स) नाटयितव्य, रूपणीय,
अभिनयार्ह ।

अभिन्न, वि (स) अविभक्त, संलग्न, समष्ट ।

अभिप्राय, स पु (स) आशय, भाव
अर्थ, तात्पर्य, प्रयोजनम् ।

अभिप्रेत, वि (स) इष्ट, अभिलषित ।

अभिभव, स पु (स) पराजय २, अवज्ञा,
तिरस्कार ।

अभिभावक, वि (स) अभिमाविन्, परानेतृ
तिरस्कर्तुं (२) वशिन् (३) सरसक ।

अभिभाषण, स पु, (स न) समापति
(लिखित) भाषणम् २ व्याख्यानम्
३ कथनम् ।

अभिभूत, वि (स) पराभित, विजित
२ पीडित ३ वशीभूत ४ व्याकुल ।

अभिभ्रमण, स पु (स न) भ्रमै पवित्री
करण-संस्करणम् २ आवाहनम् ।

अभिमत, वि (स) इष्ट, मनोनीत, वाञ्छित
२ सम्मत । स पु, मत, मति (स्त्री)
२ विचार ३ अभीष्टपदार्थ ।

अभिमन्यु, स पु (स) अर्जुनसुत ।

अभिमान, स पु (स) अहकार, गर्व,
मद, दप, वस्तेक, अवलम्ब, मान, अहमान ।

अभिमानो, वि (स -निन्) गर्वित, दृप्त, मत्त,
वस्तेक अहकारिन्, मानिन्, अवलम्बित ।

अभिमुख, कि वि (स) अभि स, मुखमुखे,
पुर, पुरत, पुरस्ताद, समक्ष, अग्रे ।

अभियुक्त, वि (स) प्रायश्चित्, प्रतिवादिन् ।

अभियोक्त, वि पु (स -क्त) अधिन्, वादिन्,
अभियोक्तिन् ।

अभियोग, स पु, (स) व्यवहार, कार्य,
अक्ष २ आक्रमण ३ उद्योग ४ मनो
योग ।

अभिराम, वि (स) आह्लादक, मनोहर,
सुन्दर, रम्य ।

अभिरुचि, म स्त्री (स) रुचि प्रवृत्ति (स्त्री),
काम, अभिलाष, छन्द, इच्छा ।

अभिरूप, वि (स) मनोहर, रमणीय ।

अभिलषित वि (स) वाञ्छित, ईप्सित, इष्ट ।

अभिलाषा, स स्त्री (स -ष) वाञ्छा, वाह्वा,
स्पृहा, ईहा ।

अभिलाषी, वि (स-विन्) इच्छु ईप्सु,
अभिलाष(पु) क, वाञ्छक ।

अभिवादन, स पु (स न) प्रणाम, नम
स्कार २ स्तुति (स्त्री) ।

अभिव्यक्त, वि (स) प्रकाशक, सूचक,
बोधक ।

अभिव्यक्त, वि (स) प्रकटित, दर्शित स्पष्टीकृत ।

अभिव्यक्ति, स स्त्री (सं) प्रकाशन, आवि
ष्कार, साक्षात्कार ।

अभिव्याप्ति स स्त्री (स) सर्व, व्यापकता
व्यापिता २ समावेश ।

अभिशास, वि (स) आबुद्ध, शापमस्त,
अभिशास २ मिथ्यादूषित ।

अभिशास्ति, स स्त्री (स) अभि, शाप,
आक्रोश २ विपत्ति-भाषति (स्त्री) ।

अभिशाप, स पु (सं) शाप, आक्रोश
२ बोधारीय मिथ्यामिथ्यायोग ।

अभिशापित, वि (स) हे 'अभिशास' ।

अभिपग, स पु (स) पराजय २ निन्दा
३ मिथ्यापवाद ४ आलिंगन ५ शपथ
६ हानम् ७ भूतावेश ।

अभिपद, स पु (स), सोमस्य निष्पीडनम्
२ सोमपानम् ३ यज्ञ ४ यज्ञकानम् ।

अभिपिक्त, वि (स) क(जा)पित, प्रक्षा
नित २ सिंहासने उपवेशित ३ दधाविधि
निपुक्त ।

अभिपेक्ष, स पु (स) अभिपेक्षन, प्रोक्षण,
आश्रय-संक २ मार्जन ३ सिंहासने स्थापन
४ यज्ञान्तर शान्तये सानम् ।

अभिप्यद, स पु (स) सव, क्षरण, प्रवाह
२ नेत्ररोगभेद ।

अभिसधि, स स्त्री (स पु) अभिसधान,
प्रवर्तण गा, वञ्चन ना २ कुचक, पटवत्रम् ।

अभिसार, स पु (सं) अभिसरण, नायक
नायिकयो निश्चिन्तस्थाने गमन २ आश्रय,
साहाय्य ३ युद्धम् ।

अभिसारिका, सं स्त्री (स) अभिसारिणी ।

अभिसारी, स पु (स-विन्) अभिसारक ।

अभिहित, वि (स) उक्त, कथित, उदित ।

अभी, कि वि (हि अभ-हो) साम्प्रतमेव,
अधुनेव, अचिरात् ।

अभीर, सं पु (स अभीर) गोप-गोपात् ।

अभीष्ट, वि (स) काङ्क्षित, अभिलषित २
अभिप्रेत ३ मनोनीत । स पु, मनोरथ ।

अभूत, वि (स) अवदित २ वर्तमान
३ विलक्षण ।

—पूर्व, वि (स) अवदितपूर्व ० अपूर्व,
अदभुत ।

अभेद, स पु (स) भेदामात्र, एकत्व, अभि
क्षता २ समानता । वि, भेदरहित समान ।

अभेद्य, वि (स) अच्येय अक्षरणीय,
अभेदनीय ।

अभोज्य, वि (स) दे अभक्ष्य ।

अभौतिक, वि (स) अप्राकृतिक २ अगोचर ।

अभौम, वि (स) अपाथिक, अभूभिज्ञ ।

अभ्यग, स पु (स) लेन, लेपन ० तैल
मर्दन, स्नेहनम् ।

अभ्यजय, स पु (स न) दे 'अभ्यग' २
नेत्रया वज्र-निक्षेप ३ अग्राग ।

अभ्यतर, स पु (स न) मध्य, मध्य, भाग
वेश, गम २ हृदयम् ।

अभ्यर्थना, स स्त्री (स) प्राप्तिना याचना
२ प्रत्युद्गमनम् ।

अभ्यर्थनीय, वि (स) याचित य २ प्रत्युद्ग
मनीय ।

अभ्यर्दन, स पु (स न) उत्पीडनम् २ ।

अभ्यसित, अभ्यस्त, वि (स अभ्यस्त) नित्य,
अनुष्ठित आचरित, असक्त्य पीन पुन्येन व्याव
र्तित मेवित कृत ।

अभ्युत्थान, वि (स) उपस्थित । स पु, अतिथि ।

अभ्यास, स पु (स) अभ्यसन, आवृत्ति
(स्त्री), अनुशीलनम् २ (= भारत) शील,
नित्यव्यवहार, वृत्ति (स्त्री) ।

—करना, कि स, अभ्यस (दि प से) पुन पुन
विधा (जु उ न) -क सतत अनुष्ठा (स्वा प
अ), असक्त्य सेव (स्वा आ से) ।

अभ्यासी, वि (स सिन्) साधक, अभ्यास
आवृत्ति, कर-कारक ।

अभ्युत्थान, स पु (स न) उत्थानम् २
प्रत्युद्गम ३ समुद्भि-उन्नति (स्त्री) ४
आरम्भ, उदय ।

अभ्युदय, स पु (स) सुषोदीनामुरथ २
प्रादुर्भाव ३ मनोरथसिद्धि (स्त्री) ४
शुभावतर ५ उन्नति (स्त्री) ।

अभ्युपगम, स पु (स) समीपगमन, प्राप्ति (स्त्री) २ स्वी अङ्गो, वार ।

अभ्र, म पु (स न) मेघ, जलद २ आकाश ३ अश्रक ४ सुवर्णम् ।

अभ्रगल, वि (स) अश्रुम अभद्र, अशिव ।
म पु (स न) अशुभ कर्मद, दौर्भाग्य कनिष्ठम् ।

अभ्रचूर, स पु (म आभ्रचूर्ण) आभ्रघोद ।
अभिन, म पु (अ) क्षान्ति (स्त्री), उपसृगमाय ।

—अमान, —चैन, स पु, सुखशान्ति, मंगल, भद्रम् ।

अमर, वि (स) अमर्य, नित्य । म पु, देव, देवता (स्त्री) २ पारद, रस ३ अमरमिह (कौशकार) ।

—यैल, स स्त्री, अमरवती आकाशवहरी ।
अमररत्न, स पु (म न) मुक्ति (स्त्री) २ दत्त ३ चिरजावनम् ।

अमरस, स पु (स आभ्ररस) रसाद्रव २ आभ्र, पर्वट पट्टो (हि अमपापक) ।

अमरागता, म स्त्री (म) देवागता, देवी, अमरी ।

अमरा, म स्त्री (स) अमरावती, दे ।

अमराई, स स्त्री (स आभ्रराजी) आभ्र, चन वाटिका ।

अमरावती, स स्त्री (स) इन्द्रपुरी, स्वर्ग ।

अमरीका, स पु (अमेरिका) महाद्वीपविशेष ।
अमरुत (वृ), स पु (स अमृत >) पेरुक, इडलीज, नामलम् ।

अमरेश श्वर, स पु (स) दे 'इन्द्र' ।

अमर्ष, स पु (स) क्रोध, रोष २ क्षमाऽभाव, असहिष्णुता ।

अमल, वि (स) स्वच्छ, निर्मल २ निर्दोष ।
स पु, (स न) अश्रक, गिरिजामलम् ।

अमल, म पु (अ) व्यवहार, आचरण, चरितम् २ अधिकार, शासन ३ मद, माद, शौण्डेता ४ शील, वृत्ति (स्त्री), स्वभाव ५ प्रभाव ६ समय ।

—करना कि स, आवह (भ्वा प अ), आचर (भ्वा प से), विषा (जु उ अ), कृ ।

—में आना, कि अ, वृत् (भ्वा आ से), भू ।

—दारी, स स्त्री (अ + दार) शासन, राज्यम् ।

अमलतास, स पु (स अमल) वृक्षप्रकार ।

अमलवेत, म पु [स अ (वा) अमलवेतस]
वेतसाम्, वीर राज रस, -आम् ।

अमला, स स्त्री (म) लक्ष्मी (स्त्री) २ सातलावृक्ष ।

अमला, म पु (अ) कायोध्यम् ।

—फैला, स पु, न्यायालयकर्मचारिण ।

अमली, वि (अ) व्यवहारविषयक २ कर्मण्य ३ मद्य, पानासक्त, मादकद्रव्यसक्ति ।

अमहर, म स्त्री (स आभ्र >) शुष्काश्रयकम् ।

अमा, स स्त्री (म) अमावस्या २ गृह ३ इहलोक ।

अमात्य, स पु (स) सावव, मन्त्रिन् ।

अमान, स पु (अ) रक्षा, प्राण २ शरण, आश्रय ।

अमानत, म स्त्री (अ) स्थाप्य, निभय, -वास, उपनिधि ।

—रखना, कि स, निषा (जु उ अ), निक्षिप (तु प अ), -यस (दि प स), आधी कृ ।

—दार, वि, न्यासधारिन्, निक्षेपप्राप्तक ।

—दारी, स स्त्री, प्रत्यय, विश्वास ।

—मे रायानत, स स्त्री, स्थाप्यापहरण दुर्धि निरोध ।

अमानिता, स स्त्री (स) अमानित्वम्, नम्रत्व, नम्रता ।

अमानी, वि (स निन्) नम्र, विनीत, निरभिमान ।

अमानुष, वि (स) अपौरुषय, अमानवीय, अनिमर्य २ पाशव, पेशाचिक । स पु, मनुष्येतरा जीव २ राक्षस ३ दब ।
(अमानुषी = अपौरुषेयी स्त्री) ।

अमारी, स स्त्री (अ) वरदक ।

अमावट, स स्त्री (हि आम >) दे 'अमरस' ।

अमावस, स स्त्री [स अमाव (१) स्या]
अमावासो, कृष्णपक्षस्यान्तिमतिथि (पु स्त्री), दश, सूर्येन्दुसमागम ।

अमिट, वि (स अ + हि मिटना) अनाश्य, अमाहं-य, शाश्वत (-ती स्त्री) ।

अमित, वि (स) असीम, अपरिमित २ अत्यधिक ।

अभिप्रा, स पु (स) शत्रु । वि मित्रदोन ।

अमीन, स पु (अ) अधिकरणस्य कर्मधारिभेद ।
अमीर, स, पु (अ) अधिकारिन् २ धनिक
३ उदार ।

अमीरी, म स्त्री (अ) पनाङ्गता, समृद्धि
(स्त्री) ।

अमुक, वि (स) सङ्केतित, निर्दिष्ट ।

अमूर्त, वि (स) मूर्ति प्रतिमा, रहित, निरकार,
निरवयव ।

अमूल्य, वि (स) अनघ, अनर्घ्य, २ बहुमूल्य,
महा-र्थ ।

अमृत, म पु (स न) सुधा, पी (पे) दूध,
निरर, ममुदनवनीतक २ जल ३ घृत ४
अ न ५ मोक्ष ६ दुग्ध ७ विष ८ सुवर्ण ९
हृष्यपदार्थ १० मधुरद्रव्यम् ।

—कर, म पु (म) षड् ।

—फल, स पु (स पु न) पारावत पटोक,
वृक्ष फल ।

—वान, स पु शृङ्गीकृत मृदाण्ड, चिकण कुट ।

—सार, स पु, नवनीत, घृतम् ।

अमृतत्व, स पु (स न) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) ।

अमृताणु, स पु (स) शीताणु, चन्द्र,
सोम ।

अमृता, स स्त्री (स) मध, सुरा २ आमलकी
३ हरीतकी ४ तुलसी ।

अमृत्यु, वि (स) अमर, अमरण । स्त्री
अमरत्वम् । पु विष्णु ।

अमेध्य, वि स अवधिन्न, अवज्ञाई, निम्न ।

अमेय, वि (स) असीम २ अखेव ।

अमोघ, वि (स) सफल, सार्थक, फलवत् ।

अमोनिया, स पु (म) तिष्ठाति (स्त्री) ।

अमोल, अमोलक, वि (स) अमूल्य दे० ।

अमौलिक, वि (स) निर्मूल, विनय, मिथ्या ।

अम्मो, स स्त्री (॥ अम्मा) माता, जननी ।

अम्मामा, स पु (अ) मशोष्णीष-यम् ।

अम्भ, म पु (स) रसभेद । वि अम्भ शुक्ल ।

अम्भता, स स्त्री (स) अम्भत्त, शुक्लत्वम् ।

अम्हीरी, म स्त्री (स अम्मस) समैकष्टक
कम् ।

अयन, स पु (म न) गति (स्त्री) २ सूर्य
चन्द्रयोर्निभेद ३ ज्योति शास्त्रम् ३ सेना
गति ५ मार्ग ६ आश्रम ७ स्थान ८ गृह ९
काष्ठ १० अश्व ११ दशभेद १२ अयस् (न) ।

अयश, स पु (स अस्त्वन) अपकीर्ति (स्त्री) ।

अयस, म पु (स अयस न) दे 'लोहा' ।

अयस्कान्त, स पु (स) कान्तायस, कान्त,
कान्तलोह ।

अय्यो, वि (अ) प्रकट २ स्पष्ट ।

अय्यान, वि (हिं अजान) अज्ञ, मूर्ख ।

अयाल, म पु स्त्री (तु० याल) वेश (स) १,
सय ।

अयाल, स पु (अ) सगति (स्त्री) ।

—दार, वि शुद्धिन्, गृहस्थ ।

अयि, अन्य (स) हे, अरे, मो ।

अयुक्त, वि (स) अनुचित २ अभिहित, मित्र
३ युक्तिशून्य ।

अयुग, वि (स) विषम, अयुगम् ।

अयुगम्, वि (स) अयुग, विषम २ एकल,
एकाकिन् ।

अयुत, वि (स न) सहस्रदशकम् ।

अयोग, वि (म अवोग्य) अनुचित, अयुक्त ।

अयोग्य, वि (स) अजह, अनुपयुक्त । २
पाठवश्या ३ अशक्त ४ अपात्रम् ५ दे
'अवोग' ।

अयोध्या, म स्त्री (स) साकेत, नगरीविशेष ।

अयोनि वि (स) अज, निरय ।

अयोनिज, वि (स) अगर्भज २ स्वयम्भू
३ अदेह, अकाश ।

अयौक्तिक, वि (स) युक्तिविरक्त, अनुपपन्न,
असंगत ।

अयौगिक, वि (स) अम्युरपन्न, रुद्ध (वा) ।

अरु, स पु, दे 'वरु' ।

अर, स पु (स पु न) चक्राह २ कौश-
३ जैवाल ।

अरु स पु (अ) आसव २ रस
३ प्रत्येद ।

—निकालना, कि स शु स्वन्द (प्रे), आ
अभि, सु (स्वा ल अ) ।

—अरक होना, मु, (प्र) त्विन्द (दि-
प अ) ।

अरचित, वि (स) अत्राण, अत्राण अपान ।

अरगजा, म पु (स अग्रज-जा) पीत
वर्ण सुगन्धिद्रव्यभेद ।

अरगनी, स स्त्री (स आरुग) वसना
लम्बनी, वखालम्बनाय रञ्जु (स्त्री) वशी वा ।

अरगल, स पु (स ल) अरगला, कपाटा ।
वष्टम्भमुत्तलम् ।

अरगवानी, स पु (पा) रक्तवर्ण, लोहित
रग । वि रक्त-लोहित, -वर्ण २ नीललोहित,
धूमवर्ण ।

अरघा, म पु (स) ताम्रमयोऽर्घ्यपात्रभेद
२ शिवलिङ्गाधारपात्रम् ।

अरणि, णी स स्त्री (स पु स्त्री) निर्मन्थ्य
हार (न), अग्निमन्थनकाष्ठम् ।

अरण्य, स पु (स न) वन, जङ्गलम् ।

—गान, स पु (म न) सामवेदस्य
गानविशेष ।

—रोदन, स पु (स न) अरण्यरुदित,
—यधविलाप काननक्रन्दनम् २ —यधवचनम् ।

अरत्ति, स स्त्री (स पु स्त्री) कूर्पूर, रक्त
(पो) णि (पु स्त्री), २ मुष्टि (पु
स्त्री), मुष्टी ३ बाहु ४ कूर्पूरात् मध्यमाङ्गुली
पर्यन्त मानम् ।

अरथी, स स्त्री (स रथ >) शवधान, खाट,
खाटी ।

अरदल, स पु (देश०) वृक्षभेद ।

अरदल, स स्त्री (अ ऑर्दर) आद्या,
नियोग ।

अरदली, स पु (अ ऑर्दरली) परिचारक,
विकार, वैभ्य ।

अरदास, स स्त्री (फा नर्जदास) उपहार,
प्रोत्तिदान २ उपासना, आराधना, प्राधना ।

अरधग, दे० 'अर्धांग' ।

अरध (धौ) गी, स स्त्री (स अर्द्धांगिनी)
पत्नी, भार्या, अर्द्धांगम् ।

अरना, स पु (स अरण्य >) वन्यमहिष,
वन्यसैरिम ।

अरनी, स स्त्री, दे 'अरणि' ।

अरब, स पु (स अरुंद -दे) शतकोटिसंख्या ।

अरब, स पु (स अरबन्) घोटक २ इन्द्र ।

अरब, स पु (अ) मरुदेशविशेष, अरबदेश
२ अरबदेशीयोऽथो जनो वा ।

अरयी, वि (फा) अरबदेशीय । ॥ पु

१—२ अरबदेशीयोऽथ लघु वाचभेदो वा ।

स स्त्री, अरबदेशस्य भाषा ।

अरमान, स पु (तु) शलसा, आकाशा ।

अरर, अव्य (स जररे) आश्चर्यघृणादिसूचक
शब्द ।

अरराना, क्रि अ (अनु) पुरुष ध्वन् स्वन्
(भ्वा प मे) २, सहसा पठ (भ्वा प से)

अरविंद, स पु (स न) कमल, पद्मम् ।

अरविंदिनी, स स्त्री (स) नलिनी, कमलिनी
२ कमलसमूह ३ पद्माकर ।

अरवी, स स्त्री, दे 'कवात्' ।

अरस, वि (स) नीरस, विरस २ असभ्य
३ अलस ४ निर्दल ५ अयोग्य ।

अरसा, म पु (अ) समय ० विल ३ ।

अरहट, स पु (स अरपट्ट) अरघट्टक ।

अरहर, स स्त्री (स आठकी) तुवरी, तद,
रिका, वृत्तबीजा ।

अराजक, वि, (स) राजहीन दासकरहित ।

अराजकता, स स्त्री (स) राजहीनता ।
२ शामनाभाव ३ उपद्रव, अशांति
(स्त्री) ।

अराति, सं पु (स) शत्रु २ कामक्रोधलोभ
मोहमदमासत्कर्माणि (न बहु) ३ ज्योति
शारे कुण्डल्या वध स्थानम् ।

अरास्ट, स पु (न (अ एरोस्ट) अरास्ट,
कन्दभेद २ अरास्टचूर्णम् ।

अरिदम, वि (ए) शत्रुघ्न, अभिन्नवातिन्
२ विप्रयिन् ।

अरि, स पु (ए) शत्रु, वैरिन् ।

—मर्दन, वि (स) रिपु, मृदन-दमन, शत्रुघ्न ।

अरिघ्न, स पु (स न) क्षि (क्ष) पणी णि
(स्त्री), नौ नौका, -दण्ड, केनिपातक ।

अरिष्ट, स पु (म न) कलश २, विषद
(स्त्री) ३ दुर्भाग्य ४ अपशकुन ५ लशुन
७ निम्ब ८ काक ९ गृध्र १० केनिल
११ मधुमेद १२ बाय १३ भूकम्पादय
सत्पाता १४ मथित १५ प्रसूतिगृह । वि
अनश्वर २ शुभ ३ अशुभ ।

अरिष्टक, स पु (स) केनिलवृक्ष । (स न)
केनिलबीजम् (रीठा) ।

अरिहा, वि (स -इन्) रिपुदमन, रिपुनय ।
स पु शत्रुघ्न ।

अरी, अव्य (सं अरे) अयि ।

अरंतुद, वि (स) मर्म, भेदिन् स्पृश २ दुःख
दायक ३ कष्टभाषिन् । (॥ पु) शत्रु ।

अरुंधती, स स्त्री (स) वसिष्ठपत्नी २ दक्ष पुत्री ३ नक्षत्रविशेष ।

अरु, अरु, दे 'और' ।

अरुई, स स्त्री दे 'कचालू' ।

अरुचि, स स्त्री (स) इच्छाऽभाव २ अग्नि मानव ३ घृणा ।

—कर, वि नीमस्त, गर्स, उद्देगकर ।

अरुचिर, वि (स) अमिय, अरुचिकर, अरुच्य, नीभन्त ।

अरुज, वि (स ज) नीरोध, स्वस्थ ।

औरण, वि (म) रक्त स्नाहित । स पु सूर्य २ सूर्यसारथि ३ सन्धिप्रकाश ४ प्रमान ५ कुकुम ६, पुट ।

—उदधि, स पु (स) समुद्रविशेष ।

—उदय, स पु (स) प्रमान, दिनमुग्वम् ।

—उपल, स पु (स) पद्मराग, गोणरत्नम् ।

—भूड, म पु (स) कुलकुट ।

अरणा, स स्त्री (स) मजिष्ठा २ कद्व ३ रक्तवर्णा गो ४ उपस (स्त्री) ।

अरुणाई, स स्त्री (स अरण >) रक्तता, अरुणिमन् ।

अरुणागमज, स पु (स) छनि, शनैश्चर, मीरि २ यम ३ सुमीव ४ कर्ण ५ अग्रायु ।

अरुणिमा, स स्त्री (स गिमन् पु) रक्तिमन्, लोहित्यम् ।

अरुप, वि (स) अमूर्त निराकार ।

अरे, अरु (स) हे, अयि, अये, ओ २ अहो (मव अन्य०) ।

अरोडा, स पु (स आरुड >) पवनदग्रान्तीय जातिविशेष ।

अर्क, म पु (स) सूर्य २ इन्द्र ३ रफटिक ४ विष्णु ५ मन्दार ६ अग्रज ७ रविवार ८ उत्तराफास्वुनीनक्षत्रम् ९ द्वादश इति सरया १० पण्डित । वि (म) पूज्य, अर्चनीय ।

—मदल, स पु (स न) सूर्यविन-यम् ।

अर्क, स पु (अ) दे 'अरक' ।

अर्कज, स पु (स) सूर्यपुत्रा [१ यम २ गनेश्वर ३ अश्विनी (दि) ४ सुमीव ५, कर्ण]

अर्कजा, स स्त्री (स) सूर्यपुत्री (यमुना साधो च नद्यी) :

अर्गल, स पु (स न) अर्गला, कपाटाव हम्मकमुसल २ कपाट ३ अवरोध ४ कटोल ५ सम्प्राप्ता घना ।

अर्गला, स स्त्री (स) दे 'अर्गल' २ (चित्तवनी) कौल-ल ३ गजबन्धनशृङ्खला ४ अवरोध ।

अर्घ, स पु (स) पूजाविधिभेद २ पूजा सामग्री ३ हस्तधावनाय जल, तदान वा ४ मूष्य ५ उपहार ६, सम्मानार्थ जलेन सेक ।

—देना, उदकादिदानेन दप् (प्रे०), निधिच् (तु प अ)

—पात्र, स पु (म न) शलाकार ताम्र पात्रम् ।

अर्घट, स पु दे 'राष्ट्र' ।

अर्घा, म पु (म अर्घ >) दे 'अर्घपात्र' ।

अर्घ्य, वि (स) पृथक् २ बहुमूष्य । स पु (स न) पूजाद्वयम् २ मधुभेद ।

अर्चक, वि (स) पूजक, उपासक ।

अर्चा, स स्त्री (स) पूजा २ प्रतिमा, मूर्ति (स्त्री) ।

अर्चि, स स्त्री (म) अधिस् (न, स्त्री) शिक्षा २ नेत्रस (न) ३ किरण ।

अर्चित, वि (स) पूजित २ सज्जित ।

अर्चन, स पु (स न) पूजा, अर्चा, अर्चना २ मत्कार ।

अर्चनीय, वि (स) पूजनीय २ सत्कार्य ।

अर्चिष्मान्, वि (स अल) भाष्टुर, कातिमद शिक्षा-उवाला-नुत अन्विता । स पु (स) अग्नि २ सूर्य ३ विष्णु ।

अर्ज, स स्त्री (अ) प्रार्थना, याचना २ विस्तार, परिणाह ।

—करना, कि स, याच (ह्वा उ से) सविनय निविद (प्रे) ।

अर्जन, स पु (स न) उपाजन, सपथ, सप्रद, उपादानम् ।

—करना, कि स, उप, अर्ज (जु) मप्रद् (क प से)

अर्जित, वि (स) उपाजित, संगृहीत, सजित ।

अर्जि, स स्त्री, (अ) प्रार्थना-निवेदन, पत्रम् ।

अर्जि—दावा, स पु (अ) अभियोग-भाषा, पत्रम् ।

अर्जुम, स ॥ (र) धनजय, पार्श्व, कपि ध्वज, गुहाकेश, गण्डोविन् २ सद्भ्रातृजुन ३ वृक्षभेद ४ मयूर । वि श्वेत २ स्वच्छ ।
अर्जुनी, स स्त्री (म) शुद्धा र्थं (स्त्री) २ कथा ३ कुट्टनी

अर्जव, म पु (स) ममृद २ मूर्ध ३ जन रिक्त ४ चतुर इति संख्या ।

अर्जिका, स स्त्री (म) अग्रजा, (अर्जिका) ज्येष्ठभगिनी ।

अर्जि स स्त्री (म) पीडा, श्रवा २ चापाम् ।

अर्थ, म पु (स) शब्दाशय २ प्रयोजन ३ कर्मन् (न) ४ इन्द्रियविषय ५ धनम् ।

—देना, कि स अभिधा (जु ङ अ) मूच् (जु), घृह (प्रे) ।

—दत्ताना, कि स, व्याख्या (अ प अ), विद्व (स्वा उ ने), व्याचक्ष (अ आ से) अर्थ प्रकाश (प्रे) ।

—कर, वि (म) लाभप्रद, फलावह । (-करो स्त्री) ।

—दृढ, स पु (स) धनदण्ड ।

—पति, स पु (स) कुवेर २ नृप ।

—पिशाच, वि (स) कृपण, लोभिन् ।

—बाह, स पु (म) निविषणाक्षेपु अन्य-तमन् (न्या) ।

—वेद, स पु (स) शिल्पशास्त्रम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) धनप्राप्तिरक्षावृद्ध्यायुपायदर्शक शास्त्रम् ।

—सचिव, स पु (स) अर्थमन्त्रिन् ।

अर्थात्, अ० (स) अथ आशय, दे 'यानी-ने' ।

अर्थान्तर, स पु (स न) अन्य भिन्न द्वितीय, अर्थ ।

—न्यास, स पु (स) अर्वाङ्कारभेद (सा) ।

अर्थापत्ति, स स्त्री (स) प्रमाणभेद (न्या) २ अलङ्कारभेद (सा) ।

अर्वाङ्कार, स पु (स) अर्थचमत्कारयुक्तोऽलङ्कार (सा) ।

अर्थी, वि (स यिन्) इच्छु, इच्छुक, इच्छक, अभिलाषिन् २ कार्यायिन् । (अर्थिनी स्त्री) स पु, वादिन्, अभियोक्तृ २ मेवक ३ धनिक ।

अर्दन, म पु (स न) पीडन, हिंसा २ याचनम् ।

अर्दित, वि (म) पीडित २ हत २ याचिन ४ गत ।

अर्द्ध, वि (स) सामि—। स पु, अर्द्ध -र्द्ध, अर्द्ध, भाग -अंश ।

—चद्र, म पु (स) अष्टम्याक्षन्द् २ चन्द्रक, मयूरपक्षस्यचन्द्रचिह्न ३ नक्षत्रत ४ चन्द्रावदु (~) ५ दक्षिणाराय ग्रीवानो ग्रहणम् ६ त्रिपुङ्गवेद ।

—भाग, स पु (स) अर्द्ध -र्द्ध, अर्द्धांश ।

—सागधी, स स्त्री (म) प्राकृतभाषाभेद (यह कभी मथुरा से पटना तक बोली जाती थी) ।

—वृत्त, स पु (स न) वृत्तार्द्ध, अर्द्धमंडलम् २ वृत्तपरिधेरर्द्धभाग ।

—समवृत्त, स पु (स न) छन्दोभेद ।

अर्द्धांग, स पु (स न) अर्द्ध, -भाग -अंश २ पक्ष, -भाषात -वायु ३ शिव ।

अर्द्धांगिनी, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या ।

अर्द्धांगी, स पु (स -गिन्) शिव । वि, अर्द्धांगरोगग्रस्त, पक्षवायुपीडित ।

अर्पण, स पु (स न) उपहारण, उपनयन, दान २ उपायन, उपहार ३ स्थापनम् ।

—करना, कि स, उपहृ-उपनी (भ्वा प अ) उपस्था (प्रे) ॥ (प्रे अर्पयति) ।

अर्पित, वि. (स) दत्त, उद्-दि, -सृष्ट ।

अर्जुद, स पु (म पु न) दशकोटिसंख्या २ अरावलीपर्वत ३ मेघ ४ मासकीलोग ५ दैमासिको गर्भ ।

अर्वा, वि (अ०) चतुर ।

अर्भक, वि (स) अल्प, लघु, २ मूर्ध ३ कुश । स पु, बालक, वड्ड ।

अर्थ्य, स पु (स) स्वामिन् २ इदवर ३ वेदय । वि श्रेष्ठ । (अर्था, अर्थाणी, अर्थांस्त्री) ।

अर्थ्यमा, स पु (स -मन्) सूर्य २ आदि स्वविशेष ३ विशिष्टा पितर (बड्०) ४ उपराफासुनीनक्षत्रम् ।

अर्वाक्, अन्य (स) पश्चात्, इदानींतने काले,
नानिष्ठिरात् प्राक्, अचिर २ समीपये,
निकटटे ।

अर्वाचीन, वि (स) नूतन नातिपुराण,
आधुनिक (—को खो), अमिनव ।

अर्श, म पु (स—शस्त्न) शुद्धकीर्त्तिक,
शुद्धाङ्कुर ।

अर्श, स पु (अ) आकाश-स २ स्वर्ग ।
अर्हत, स पु (न) जिन २ बुद्ध ३ शिव
वि मान्य ।

अर्ह, वि (स) पूज्य २ योग्य ।

अर्हणीय, वि (स) पूज्य, समान्य,
पूजनीय ।

अर्हण, वि (स) मान्य, अर्चनीय ।

अर्हित, वि (स) पणित, समानित ।

अल, अन्व, दे 'अलम्' ।

अलकार, स पु (स) आभरण, मण्डन,
वि, भूषण २ शब्दार्थबोधमत्कारविशेष
(सा०) ।

अलकृत, वि (स) वि, भूषित, महित,
धृताभरण २ मस्कृत, परिष्कृत ।

—करना, कि स, वि, भूष (चु०), अलकृ,
परिष्कृ, सस्कृ, मण् (चु०), प्रसाध
(प्रे०) ।

अलघनीय, वि (स) अलम्य, हुरतिक्रम,
दुस्तर ।

अल, स पु (स न) (= विष्णु का ड्ड)
लुप्त, अ(मा)लिङ्ग, इ(द्रो)ण, कण्टक-
शकु । २ हरितालक २ विष, विषम् ।

अलक, म पु (स) तुरक, चूर्णकुतल
= देश, पादा-रक्षण ।

अलकवरा, स पु दे कोलटाश् ।

अलकनदा, म स्त्री (स) नदीविशेष ।

अलकली, म स्त्री (अ) विद्यार ।

अलका, स स्त्री (स) कुबेरनगरी,
अक्षपुरम् ।

—पति, स पु (स) कुबेर ।

अलकावलि, स स्त्री (स) केशवलाप ।

अलकोहल, स पु (अ) सुषव ।

अलक, अलकक, स पु (स) का (रा)
घा, अतु (न), दाव, रक्षा, द्रुमामय
२ लाक्षानिमित्तरागभेद ।

अलक्षित, वि (स) अदृष्ट, अवोक्षित २.
अदृश्य ३ अज्ञान ४ गुप्त ।

अलक्ष्य, वि (स) अदृश्य २ अतीन्द्रिय ।

अलक्ष, वि (म अलक्ष्य) दे 'अलक्ष्य' ।

—धारी, स पु (स अलक्ष्यधारिन्) गोरक्ष
नाथानुयायिन साधव (वहु०)

—जगाना, सु, भिक्षायाचनम् ।

अलक्ष, वि (स अलग्न) पृथक् (अण्य) वि,
मिश्र, वियुक्त, विच्छिन्न, असलग्न ।

—करना, कि स, पृथक् कृ, विघट् विधिप्
(प्रे), वियुज् (चु०) ।

—होना, कि म, पृथक् भू, वियुज् (ना०
वा) विधिष् (दि प अ) ।

अलग्ननी, स स्त्री (स आलग्न >) वसना
छात्री ।

अलग्नोद्गा, म पु (अ) सुरली वशा
यणु, भेद ।

अलग्न, वि (म) निर्लज्ज, धृष्ट, विपात ।

अलपाका, स पु (स्वे० एलपाका) ज तुभेद
२ तस्य कर्ण ३ तदूर्णानिमित्त सूक्ष्म
वस्त्रभेद ।

अलफ, स पु (अ अलिफ) अरबीवर्णमाला
या प्रथमवर्ण ।

अलवत्ता, अन्व (अ) निरस्तदेह, निरसशयम्
२ आम्र, ससयम् ३ किन्तु, परन्तु ।

अलबम, स पु (अ) विषपत्रिका ।

अलवेला, वि (स अलम्य > ?) वेपा
भिमनिष्ठ, छेक, रूपमयित, दर्शनीयमानिन्
२ अदभुत ३ कामचारिन्, अननदित ।

अलवध, वि (स) अपाप्त, अनयिगत,
अहस्तगत ।

अलम्य, वि (स) अप्राप्त २ दुर्लभ
३ अमूय ।

अलम्, अन्व (म) यथेष्ट, पर्याप्त, प्रचुरम् ।

अलम, स पु (अ) शोक, दुःख २ ध्वन ।

अलम्यत्रक, म पु (अ), पचात्र, पत्रिका ।

अलमस्त, वि (पा) मद्य, क्षौत्र २ निधित्त ।

अलमारी, स स्त्री (पुर्न० अलमारियो)
उत्थितवित्तक ।

अलमास, स पु (फा) हीरक, वज्र-जम् ।

अललटप्प, वि (देश०) देवार्थीन,
आकरिमक ।

अलवान, स पु (अ) और्णप्रावार ।
 अलम्, वि (म) मन्द, मन्दर आलस्य
 शील ।
 अलमान नि, स स्त्री (स आलस्यन्)
 मान्द्यम्, तन्द्रिका ।
 अलमाना, कि अ, (हि अलसान) शिथि
 लावन (ना धा), शिथिली-स्थी मन्दो, भू ।
 अलसी, स स्त्री (स अनसी) उमा, धुमा ।
 (बीज उमा भवती, बीजम् ।
 अलहदनी, स स्त्री (अ०) धृक्कना पार्थक्यम्
 अलहदा, वि (अ) अन्य, भिन्न, धृक्क ।
 अलात, स पु (स न) अक्षर २ अवलघ
 काष्ठ, उल्का ।
 —अल, स पु (स न) उत्तपूषणन चक्रम् ।
 अलान, स पु (स आलान) गजबन्धनसम्भ
 २ इतिवचनश्रुत्या ३ वचन, निगड ।
 अलानिया, अ० (अ०) प्रकट, निर्भय, नि
 श्चक्रम् ।
 अलाप, स पु दे 'आकाप' ।
 अलापना, क्रि स्त्री (स आलापनम्) आलप
 (आ प मे), स्वरलदम् उतपद (मे०) २ वै
 (आ प अ गायति) ।
 अलामन, स स्त्री (अ) लक्षण, विह, अभि
 हानम् ।
 अलामं घडी, स स्त्री (अ अलामं + स घनी)
 प्रवाहन घटी घटिका ।
 अलात्र, स पु (स मलात्र >) अग्निराशि,
 अक्षरानिकर ।
 अलावा, कि वि (अ) विना, शून्य २ दे
 'अतिरिक्त' ।
 अलिग, वि (म) लिङ्गलङ्ग विह, रहित
 शील । स पु, ईश्वर २ विहामाव ।
 अलिना, स पु (म) (इला घडा) अलनर,
 मणिक २ (सव्तर) कर्करी, गलन्तिका,
 बाहु (स्त्री) ।
 अलिद, स पु (स अलान्द्र) अनर
 द्विर ।
 अलिद्, स पु (स) आलीन्द्र प्रध (वा) न,
 प्रध (वा) न, २ बहिर्वाप्रबोध ।
 अलि, स पु (स) अमर, शिथीमुख २ पिक
 १ नाक ४ इक्षिक, ५ कुनकुर ६ दे
 'अली' ।

अली, स स्त्री (म आलि) सखी, महचरी
 २ श्रेणी, पक्ति (स्त्री) ।
 अली, स पु (म अलि) षट्पद, भ्रमर ।
 अलीक, वि (म) असत्य, अनृत, विषय ।
 अलील, वि, (अ) रोगिन्, रण्य ।
 अलुमीनम, स पु (अ एलुमीनियम) स्फ
 यानु (न) ।
 अलुचा, स पु (फा आलुच) अलुचम् ।
 अलेख, वि (स) अलेख २ अमणित ।
 अलेख, वि (स) अलक्ष्य अदृश्य ।
 अलेख्य, वि (स) लेखनार्थ ।
 अलोत ना, वि (स अलवा) लवङ्गीन २
 नारस (अलोनी स्त्री) ।
 अलेल-कलेल, स स्त्री (म लोल कल्लोल)
 कीरा, लीला, एला ।
 अलौकिक, वि (स) लोकोत्तर, लोकबाह्य २
 अपूर्व, अव्युत्त, ३ अति, मर्त्य मानुष,
 अमानुषिक ।
 अल्लिमेदम स पु (अ) अल्लिमेदम्,
 अल्लिम, उपवास अल्लिमिषि (पु) ।
 अल्लिबायोलेट रे, स स्त्री (अ) अतिनाला
 रुगरदिम ।
 अलप, वि (स) स्वयं, स्तोत्र, दान, मूल,
 शुद्ध अवयव-तन्त्र, परिमाण २ हस्त, खर्च, वापन ।
 —आहार, स पु (स) भिन्नमोचनम् ।
 —आहारी, वि (स रिन्) भिन्नमुत्,
 अलानान ।
 —आयु, वि (स-युस) अचिर, जीवन नीविन् ।
 स पु, आय, छाय ।
 —आवी, वि (म विन्) अचिरायुष्य ।
 —अ, वि (स) स्ताकञ्च, अल्पविद् २ मद्
 बुद्धि ।
 —अता, स स्त्री (स) स्तोत्रकृता २ अक्षता ।
 —आण, स पु (स) अलपणाचार्याचार्या (ज्,
 ग, क, च्, ज्, ज्, आदि ।)
 —अुद्धि, वि (स) मूछे, मूढ, दुर्भन्ति, जड ।
 —अयस्क, वि (स) अलपत, अव्यवहार वय
 स्क, बाल ।
 अल्पता, स स्त्री (स) न्यूनता त्व, अल्पत्व
 २ लघुता त्व ।
 अल्पता, अव्य (स) स्तोत्रक, अल्पाल्प
 ० अने अने, कमज (सव अव्य)

अल्ल, स पु (अ आल) वृक्षनामन् (न),
उपगोत्रनामन् (दुम्बे, चोवे आदि) ।

अल्लम-नाल्लम, स पु (अनु) प्रलाप,
दे 'अल्लवट' ।

अल्लाह, स पु (अ) ईश्वर ।

—ओ अकवर, वाक्य (अ) ईश्वरो हि मद्दान् ।

अल्लहि वि (स अल्ल = बहुत + लल्ल =
पुण्या >) विलासिन्, विनादिन् २ अनव
धान ३ अस्वयस्क ४ उद्धत ५ अश्रु । म
पु नवज्ञानरस ।

—पन, स पु, विनोदिता २ अनवधानता ३
अस्वयस्कता ४ उद्धता ५ अश्रुता ।

अवति-ती, अवन्तिका, स स्त्री (स) उज्जयिनी
नगरी ।

अव, उप (स) निश्चयानादरन्यूनतानिम्नता
भ्यासित्वक उपसर्ग ।

अवस्त्रन, स पु (स न) दर्शन, ईक्षण,
वीक्षणम् २ अवगमन, ज्ञानम् ३ ग्रहणम् ।

अवकाश, स पु (स) स्थानं, स्थल, प्र,
देहा २ गगन ३ दूरता ४ अवसर ५
विश्राम ।

अवकिरण, स पु (स न) विकिरण, विक्षेपण,
प्रासनम् ।

अवकीर्ण, वि (म) प्रविभा, कीर्ण, प्रवि
भक्त, विक्षिप्त २ भ्रष्ट, जातिग ३ स,
क्षुण्ण ।

अवकीर्ण, वि (म णिन्) क्षुण्ण, महवीर्य ।

अवकुचम, स पु (स न) मोदन, वक्रोत्कर्ष,
व्यावर्तन, आकुञ्चनम् ।

अवकुञ्चित, वि (म) कातर, कभीर, मीर ।

अवकृष्ट, वि (म) वक्रिष्णु २ निगलित ३
नीच । म पु दास ।

अवकेपी, वि (स-णिन्) निष्कल २
निरन्तरान ।

अवक्रय, स पु (स) मूढ्य, अर्थ २ (किराया)
दाय, तारिख, आनर ४ कर ।

अवक्रोश, स पु (स) आक्रोश, शाप,
गर्हा ।

अवगत, वि (म) विविक्त, ज्ञान, बुद्ध परिचित
२ निगम, पतित ।

अवगति, सं स्त्री (स) ज्ञान, बोध, अवगमन
२ वृत्ति नियति (स्त्री) ।

अवगाढ, वि (स) निविष्ट, गुप्त २ निमग्न,
प्रविष्ट ।

अवगाहन, स पु (स न) जले प्रविश्य
स्नान, निमग्न्यन २ प्रवेश ३ मथन विलो
ठन ४ अनुसन्धान ५ मनन, विचारणा ।

अवगीत, वि (स) निन्दित, लाञ्छित । स
पु (स न) निन्दा, अपवचनम् ।

अवगुंठन, स पु (स न) आवरण, व्यवधान,
आच्छादन, सहरण २ (धूषण) आवरण इम् ।

अवगुणन, स पु (स न) सम्प्रथन, वि,
रचन, तन्त्रीभिर्गुणैर्वा वन्धनम् ।

अवगुण, स पु (स) दोष, व्यवसर्ग ३ अपराध,
स्फुरितम् ।

अवग्रह, स पु (म) विघ्न, प्रतिबन्ध २
अनावृष्टि (स्त्री) ३ सेतु वप्र, बाध, वप्र ४
सन्निविच्छेद (-वा०) ५ शाय ।

अवघट, वि (म अव + षट् >) विकट, दुर्गम ।

अवघपण, स पु (म न) दे 'रगहना' तथा
'पीसना' ।

अवचन, स पु (म न) नि हन्ता, तूष्णीं
भाव । २ निन्दा ।

अवचनीय, वि (स) अकथनीय, अग्लौल २
अनिग्य, अगर्ही ।

अवचय, स पु (स) उत्पादन उद्घरण,
उत्पुचनम् ।

अवच्छिन्न, वि (स) पुष्पकृन्, निहलेपित २
तप्तम्, ३ सविशेषण, विशिष्ट ।

अवच्छेद, सं पु (स) भेद, पृथग्भाव २
इच्छा ३ अवधारण, निश्चय ४ परिच्छेद,
विभाग ।

अवच्छेदक, वि (म) विभाजक, भेदक २
इच्छाकारक ३ अवधारक ४ निश्चयक । स
पु, विशेषणम् ।

अवज्ञा, स स्त्री (स) अवअप, मान, अनादर,
अवपीरणणा २ आश्लेषण ३ पराजय ४
अलकारभेद (सा) ।

अवज्ञान, वि (स) अवधोरित, अपमानित,
तिरस्त्रन ।

अवतस, स पु (स पु न) भूषण, अलकार
२ शिरोभूषण ३ कर्णभूषण ४ मुकुट ५
शेष्ठवन ६ माला, हार ७ मातृव्य ८-
पाणिप्राहक ।

अवतरण, म पु (रु न) अवतरेद्, अयोगमन २ पारगमन ३ दूरीरधारण, अमग्रहा ४ प्रतिपेक्ष, प्रतिष्ठिषि-प्रतिष्ठिति (स्त्री), ५ प्रादुर्भावे ६ घट्ट, मोषान ७ घट्ट ।

अवतरणी णिका, स स्त्री (ण) घन्त्युत्तन, प्रस्तावना भूमिका-वराद्धात् २ रीति (स्त्री) ।

अवतार, स पु (म) पुराणमतानुसारं देव विश्वस्य जीवविशेषस्य वा दूरीरधारणम् । (विष्णु जी के २४ कवचार-श्रद्धा, वाराह, नारद, नरनारायण, कपिल, वसुधेय, वरु, श्रवण, पृथु मत्स्य, कूर्म, अवतारि, माहिनी, नृसिंह, वामन, परशुराम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध कल्कि, हंस, हयग्रीव) ।

—लेना, क्रि, अ, अगृह्ण (स्वा प से), अवतह (स्वा प छ), दूरीरह (प्रे) ।

अवतारण, म पु (स न) नीचैर्नयन २ अनुकरण ३ दहरणम् ।

अवतारी, वि (स-रिन्) अवरोहिन्, अथो गामिन् २ वैश्वधारिन्, अलौकिक ।

अवदात, वि (स) श्वेत, शुभ २ शुद्ध ३ गौर ४ पीत ।

अवदान, स पु (स न) सुकर्मन् (न) २ शोभन ३ पराक्रम ४ शोभन ५ वशीकरणम् ।

अवधारण, स पु (ङ) ककचेन टेशन-पाननम् २ विमावन ३ सदानम् ४ दे 'कुदल' ।

अवदीर्ण, वि (स) ककचेन पाठित २ विनाशित ३ क्षात ।

अवद्य, वि (स) अवयव, पाप, २ निन्द्य, कुस्मित ।

अवध, स, पु (स अवोध्या >) कोश (स) शा (वृद्ध) २ अयोध्या ।

अवध, वि (स अवध्य) रक्ष, नगार्ह ।

अवधान, स पु (स न) मनोयोग, अवस्था, सतर्कता ।

अवधार, स पु (रु) निश्चय, निश्चितता २ सीमा, अवधि (पु) ।

अवधारण, म पु (म न) निर्धारण, निश्चय ।

अवधारित, वि (स) निर्धारित, निश्चित ।

अवधार्य, वि (स) निर्धारणीय, निश्चेतव्य ।

३ आ० हि०

अवधि, म स्त्री (स पु) सीमा, पराकाष्ठा, पर्यन्त २ नियत, काल-समय ३ मृत्युकाल । अव्य (स) वाच्य (उ मया वधि = अथ यावत् = भाव तक) ।

अवधी, वि (हि अवध) कोश (स) ससम्बन्धिन् २ कांस (उ) लप्रान्तस्य मास ।

अवधीरणा, स्त्री स्त्री (स) दे, 'अवध' ।

अवधीरित, वि (म) अवधान, तिरस्कृत ।

अवधूत, स पु (ण) सन्ध्यासिन्, योगिन् सधु । वि (स) कपित २ विनष्ट ।

अवधेय, वि (स) विचारणीय, ध्येय २ अध्येय ३ शान्त्य ।

अवधत्, वि (स) नीच, निम्न, नत, नीचस्य २ पतित ३ न्यून ।

अवधति, स स्त्री (स) हास, मय, शानि (स्त्री) २ अयोग्यता (स्त्री) ३ नम्रता ।

अवनिनी, स स्त्री (स) पृथिवी, भूमि (स्त्री)

—इन्द्र, ईश, स पु (स) नृप ।

—तल, स ॥ (स न) मू, नृप तलम् ।

—पति, पाल, म पु (म) भूप ।

अवबोध, स पु (स) आगमन २ शानम् ।

अवमृष्ट, स पु (स) दशदशकर्मन् (न) २ दशान्तरनानम् ।

अवम, वि (स) अवयव, अल्प २ रसक, परिवर्त २ नीच, निम्न । स पु (स) पितृणां विदेश २ मलमास ।

अवमत्, वि (स) अवधीरित, तिरस्कृत ।

अवमति, स स्त्री (स) अपमान तिरस्कार ।

अवमर्दन, स पु (स न) शोभन, अर्दन, उपमर्द ।

अवमर्श, स पु (स) स्पर्श २, सपर्क ३ सन्निविष्टेय (सा०)

अवमर्ष, स पु (स) सम्, आलोचन-मा २ सन्निविष्टेय (सा०) ३ आक्रमणम् ।

अवमर्षण, म पु (स न) असहिष्णुता, दे, 'असदनशीलता' २ अपमानन, विरोधनम् ।

अवमान, स पु (स) दे 'अवमति' ।

अवमानना, म स्त्री (म) अवधीरण, तिरस्कार ।

अवयव, स पु (स) अङ्ग, भाग २ अङ्ग, भाग, दूरीरैकदेश ३ न्याये पञ्च दश वा

वाक्यांश (= प्रतिष्ठा, हेतु, उदाहरण, उपनयन, निगमन, जिज्ञासा, सशय, शनय प्राप्ति प्रयोजन, सशय-सुधास) ।

अवयवी, वि (स विन्) अङ्गिन्, सावयव ५ पूर्ण, समग्र । स पु, सावयव पदार्थ ३ देह ।

अवर, वि (स) अन्य, अपर २, अधम, नीच ।

अवराधक, वि (सं आराधक) पूजक ।

अवराधन, स पु (सं आराधन) पूजा, अर्घ्य ।

अवरुद्ध, वि (स) उप प्रति, रुद्ध, प्रतिहृत, प्रतिबाधित २ आच्छादित, गूढ ।

अवरुद्ध, वि (स) अवतीर्ण, अभोगन ।

अवरोध, स पु (स अव + रोध् >) वक्त्वा निर्वर्ण्य गति (स्त्री) २ वल्लस्य तिर्यक कर्तनम् ।

—दार, वि, तिर्यकरुत्त ।

अवरोध, स पु (स) विघ्न, व्याधान २ अवरोध ३ निरोध ४ अनुरोध ५ अन्त पुरम् ।

अवरोधम, स पु (स न) निवारण २ अन्त पुरम् ।

अवरोपण, स पु (स न) उन्मूलन, उपादनम् ।

अवरोह, स पु (स) अवतार, पतनम् २ अवनति (स्त्री) अलङ्कारभेद (सा) स्वरावतार (सगीत) ।

अवरोहण, स पु (स न) अवतरण, नीची गमनम् ।

अवर्ण, वि (स) रगरहित, वर्णविहीन २ कुवर्ण, कुरग ३ वर्णभ्रमशून्य । स पु, अष्टादशविधोपकार (व्या) ।

अवर्ण्य, वि (स) अवर्णनीय, अनिर्वाच्य, अकथनीय, वर्णनाविषय । स पु, उपमानम् ।

अवलम्ब, स पु (स) आश्रय, शरण, आधार, अवष्टम् ।

अवलम्बन, स पु (स न) दे 'अवलम्ब' । २ धारण, ग्रहणम् ।

अवलम्बित, वि (स) आश्रित, अधीन, आश्रय-विघ्न, -तत्र (समासा-त मे) ।

अवलम्बी, वि (स-विन्) दे 'अवलम्बित' २ आश्रय (अवलम्बिनी आश्रिता स्त्री) ।

अवलम्ब, ॥ (स) श्वेत-सित, -रज-वर्ण । स पु (स) श्वेत, -रज-वर्ण ।

अवलम्ब, वि (स) गविन, दस २ अक्त, दिग्ध ३ छीन ।

अवली, स स्त्री (स आवली लि स्त्री) पक्ति, तति, राजी-नि (सखी) २ समूह, राशि ।

अवलीढ, वि (स) आ-परि-स-होढ । २. भक्षित, भुक्त, गन्ध ।

अवलेप, स पु (स) दर्प, गर्व २ वि-प्र-अनु, -लेप ।

अवलेपन, स पु (स न) अभ्यजन, विलेपन २ उपवर्तन, गात्रानुलेपनी ३ अवकार ४ दूषणम् ।

अवलेह, सं पु (स) लेह्य पदार्थ २ लेह्य मोषधम् ।

अवलेहन, स पु (स न) जिह्वाग्रेण स्पर्शा-आदनम् ।

अवलोकन, स पु (स न) वि-ईक्षण, दर्शन, निरूपण २ निरीक्षण, अवेषणम् ।

—करता, कि स, अव-वि-आ, -लोक् (भ्वा आ से, चु) प्र-वि-अव, -ईध् (भ्वा आ से) ।

अवलोकनीय, वि (स) दर्शनीय, ईक्षणीय ।

अवलोकित, वि (सं) ईक्षित, दृष्ट, निरूपित ।

अवश वि (स) वि-पर, -वश, अवशक्त ।

अवशिष्ट, वि (स) अवशेष, उद्बृष्ट ।

अवशेष, वि (स) अवशिष्ट, उद्बृष्ट २ समाप्त । स पु (स) अवशिष्ट, शेषभाग २ अन्त, समाप्ति (स्त्री) ।

अवश्यभावी, वि (म-विन्) अपरिहार्य, अनिवार्य ।

अवश्य, कि वि (स अवश्यम्) नियत, भुव, अतस्य, नून, नाम, खलु (सप्त अवयव) ।

अवश्य, वि (स) उच्छृङ्खल, दुर्दमनीय, दुर्निग्रह, अविषय, दुर्निवार । (अवश्य = दुर्दमनीया स्त्री) ।

अवश्यमेव, कि वि, दे 'अवश्य' ।

अवश्याय, स पु (स) शुषार, प्रालेय, हिमच्छल २ अग्निमान, गर्व ।

अवष्टम्, स पु (स) आश्रय २ रतम् ३ धृष्टम् ।

अवसन्न, वि (स) विषण्ण, म्लान, शिन्न, शोकार्थ २. विनाशोन्मुख २ अरुत ।

अवसर, स पु (स) समय, काल २ अव
काश, छा ३ देव, देवगति (स्त्री) ।
अवसर्जन, स ॥ (स न) विवृत्-सर्जनम्
उद्गहन, त्यजनम् ।
अवसर्पण, म पु (स न) अवरोहण, अधो
गमनम् ।
अवसाद, स पु (स) नाश, क्षय २ विषाद
३ दैन्य ४ आग्नि (स्त्री) ५ निर्बलता ।
अवसान, स पु (स न) विराम, याननि
वृत्ति (स्त्री), विह्वल २ समाप्ति (स्त्री),
अन्त ३ मृत्यु ४ स्त्रीया ५ सायकाल ।
अवसाय, स पु (स) अन्त समाप्ति (स्त्री)
२ अदृष्टि ३ पूर्ति (स्त्री) ४ सवत्स
५ निर्णय ।
अवसित, वि (स) समाप्त २ ऋद्ध ३ परि-
पक्व ४ निश्चिन्त ५ सम्बद्ध ।
अवमृष्ट, वि (स) त्यक्त २ दण्ड ३ निष्का
सित ।
अवमेषन, स पु (स न) प्रोक्षण, जलेना
प्लावन २ प्र, स्वेदन ३ जलकादिभि रक्त
निष्कामनम् ।
अवरकन्द, स पु (स) सैन्यावास, शिविरम्
२ जनवास, वरपात्रावास ।
अवस्कर, स पु (स) विष्टा, गृह-घनम् । २
[गुच्छाङ्गम्, लिङ्गम्, योनि (क्रमश न स्त्री)
गुदम्] ३ उच्छिष्टम्, निस्तारवस्तुसमूह ।
अवस्था, स स्त्री (सं) दशा, गति (स्त्री)
२ समय ३ ववस्-आयुस् (न) ४ स्थिति
(स्त्री) ।
अवस्थान्तर, स पु (॥ न) अन्यावस्था,
दशापरिवर्तनम् ।
अवदित, वि (स) सावधान, एकाग्र, अन-य
वृत्ति ।
अवहिराया, स स्त्री (स) आकाशयुग्मि (स्त्री)
लज्जादिवशात् चानुर्येण हर्षादि बोधन, भाव
भेद (सा) ।
अवहलन, स पु (स न) द्वे 'अवहेलना' ।
अवहेलना, म स्त्री (स) अवज्ञा, अवमान
२ आशीर्लघन ३ उपेक्षा ।
—करना, कि स, निह, अव-अन, मन् (प्रे),
अवज्ञा (क ठ अ) २ आज्ञाम् अनिकम्
(म्वा प से) ३ उपेक्ष् (म्वा आ से) ।

अवहेलित, वि (म) तिरस्कृत, उपेक्षित ।
अवान्तर वि (सं) अन्तर्गत, मध्यवर्तिन् ।
स पु (स न) अन्तर, अभ्यन्तर, उदर, गर्भः ।
—दिक्षा, ॥ स्त्री, (सं) विदिक्षा, मध्यमदिक्षा ।
—मेह, स ॥ (स) भागस्य भाग, अन्त
र्गन्धेद ।
अवाक्, वि (स अवाक्) मौनिन्, तूष्णीक,
नि शब्द २ स्तब्ध, चकित ।
—रहना, —होना, कि अ, तूष्णी-ओष, —भास्
(म आ से), वाच यम् (म्वा प म) ।
अवाहमनसगोचर, वि (स अवाहमनो
गोचर) अवर्गणीय, अधिन्य (ईश्वर) ।
अवाहमुख, वि (स) अयो-नत, —मुख ।
(—स्त्री स्त्री) २ लज्जित ।
अवाची, स स्त्री (स) दक्षिणा, दक्षिणदिक्षा ।
अवाध्य, वि (स) विशुद्ध, निर्दोष २ निन्द्य,
गर्ह्य । स पु (स न) गाली, दुर्वचनम् ।
अवात, वि (सं) निर्वात, वायु-पवन, —रहित ।
अवास, वि (सं) प्राप्त, अधिगत, लब्ध ।
अवार, स पु (सं पु न) अवाक्, —तीर-
तटम् ।
—पार, सं पु (सं) सागर, अग्नि ।
अवारणीय, वि (स) अनिवार्य अपरिहार्य,
अवश्यमाभिन् ।
अवि, सं पु (सं) मेघ, पट्टक २ छाग ३
सूर्य ४ मन्दार ५ पर्वत ६ मूषिक । सं.
स्त्री, मेघी, पट्टका, उरणी ।
—पाल, स पु (स) मेघपालक ।
अविकल, वि (सं) अक्षीग, अनपचिन २.
समग्र, पूर्ण ३ निश्चल ।
अविरूप, वि (मं) निश्चिन्त २ असद्विषय ।
अविकारी, वि (स -रिन्) निर्विकार २ अप
रिणत ।
अविकृत, वि (सं) शुद्ध २ अपरिणत ।
अविगत, वि (स) अज्ञात २ अज्ञेय ३. विष
भान ।
अविचल, वि (सं) भुव, स्थिर ।
अविच्छिन्न, वि (स) निरन्तर, अविरत,
सतत ।
अवितथ, वि (सं) सत्य, यथार्थ, तथ्य । सं.
पु (स न) सत्य, ऋतम् ।

અવિષ્ણમાન, વિ (સ) અનુપરિચિત ૨ અસત્ય
૩ અસત્ય ।

અવિષ્ણ, વિ (સ) નિરક્ષર, અજ્ઞ ।

અવિષ્ણા, સ સ્ત્રી (સ) અજ્ઞાન, અવોષ ૨
માયા (કે) ૩ ચર્મવાણ ૪ પ્રથમ વ્લેષ
(યોગ) । -જ-ચ, વિ (સ) મોહજ,
અજ્ઞાનજનિત ।

અવિનાશી, વિ (સ) અનશ્વર, અશ્વ, અશ્વર,
અ રવ, ચિરરથાવિત્ ૨ સિ ય દ્વાશ્વત ।

અવિનીત, વિ (સ) શ્વસ ૨ દુર્દાન ૩ ધૃષ્ટ ।

અવિભાગ્ય, વિ (સ) અનશ્ચનીય, અનટનીય ।

અવિયુક્ત, વિ (સ) મયુષ્ઠ, સંલિષ્ટ ।

અવિરત, વિ (સ) સતત, વિરામરહિત ૨
આસક્ત, અનિવૃત્ત । ક્રિ વિ (સ ન) સતત,
અનવરતમ્ ।

અવિરલ, વિ (સ) સત્ત્વ ૨ નિવિલ, ઘન ।

અવિરામ, વિ (સ) સતત, અનવરત ૨ અવિ
માત ।

અવિચલિત, વિ (સ) અનભિમેષ, અનુદિષ્ટ
૨ વસ્તુમનિષ્ટ, અનિષ્ટવચન ।

અવિલાહિત, વિ (સ) અનૂહ, કુમાર, અકુત
-પાણિગ્રહ-ઉપયામ-ઉદાહ, અપરિણીત ।

અવિલેક, સ પુ (સ) સદસદિવેચનરાહિત્ય,
વિચારામાય ૨ અજ્ઞાન ૩ અ-વાચ ૪ મિથ્યા
જ્ઞાનમ્ (સા) ।

અવિલેકી, વિ (સ-કિન્) વિલેકશૂન્ય, અજ્ઞા
નિન્, અત-વજ ૨ વિચારશૂન્ય ૩ મૂર્ત ૪
અ-વાચકારિન્ ।

અવિશ્રાન્ત, વિ (સ) વિશ્રાન્તિશૂન્ય ૨ સતત,
અવિરામ ।

અવિરચસત્તીય } વિ (સં) વિસ્વાસાનર્હ,
અવિરચસ્ત }
પ્રત્યયાદોભ્ય ।

અવિરવાસ, સ પુ (સ) અપ્રસ્થ, વિદ્વા
સામાવ ।

અવિધાસી, વિ (સ-સિન્) શ્વા મન્થ, -
ગ્રીહ શુદ્ધિ આ-શ્વિન્ ૨ દે 'અવિશ્વરન' ।

અવેષ્ણ, સ પુ (મ મ) દર્શન, અવલોકન
૨ નિરીક્ષ, પરીક્ષણમ્ ।

અવેષ્ણીય, વિ (મ) દર્શનીય ૨ નિરીક્ષ
તત્ત્વ, પરીક્ષિતમ્ ।

અવેષ, વિ (સ) અવેષ ૨ અભ્ય ।

અવેષા, વિ સ્ત્રી (સ) અવોદબ્ધા, વિવાહાનર્હ ।
અવૈતનિક, વિ (સં) નિવૈતન, મૃતિત્યાગિન્,
આદરશ્રુતિ ।

અવૈદિક, વિ (સ) વેદવિરુદ્ધ, વેદાવિહિત ।

અવ્યક્ત, વિ (જ) પરીક્ષ અતોદ્રિય ચોચર,
અજ્ઞાન, અનિર્વચનીય । સ જ (સ) વિન્ધુ
૨ શિવ ૩ મંદન ૪ પ્રકૃતિ (સ્ત્રી),
૫ આ મન્ ૬ પરમેશ્વર ૭ માયોપાનિક
મદ્ધાન્ (ન) ।

અવ્યપદેશ્ય, વિ (સ) અવચનીય ૨ અનિર્દેશ્ય
૩ નિર્વિવસ્થ (ના) ।

અવ્યય, વિ (સ) નિર્વિવાર, અશ્વય, નિત્ય,
અવ્યશૂન્ય । સ જ (સ) પરમજ્ઞ (ન)
૨ વિન્ધુ ૩ શિવ । (સ ન) સર્વવિમક્તિ
જિગ્વચ્ચન્નૈપુ યકરુપ શબ્દ (૭૦ સદા, અપ
આદિ, -વા) ।

અવ્યયીમાય, સ પુ (સ) સમાસભેદ (૭૦
પ્રતિદિન વ્યા) ।

અવ્યયીક, વિ (સ) સત્ય, યથાર્થ ૨ પ્રિય
શૂન્ય ।

અવ્યયસ્થા સ સ્ત્રી (સ) અક્ષમ ક્રમર્ગ,
વ્યતિક્રમ વ્યસ્તતા, સંક્ષીપ્ત ૨ અવધિ ૩
દુર્નિર્ણદ, દુર્ણવ ।

અવ્યયસ્થિત, વિ (સ) અક્રમ, ક્રમશૂન્ય, ૨
નિર્નર્ણદ ૩ અનિવત્તવ ૪ વચન ।

—ચિત્ત, વિ (સ) વચક, ચિત્ત માનસ ।

અવ્યવહાર્ય, વિ (સ) અવહારાયોગ્ય, વપ
યોગ્યર્હ ૨ પતિત, પત્તિશૂન્ય ।

અવ્યવહિત, વિ (સ) સત્ત્વ, સસક્ત, -વ
વાનશૂન્ય ।

અવ્યવહૃત, વિ (સ) અપ્રયુક્ત, અપ્રચરિ
(લિ) ત ।

અવ્યાકૃત, વિ (સ) અસ્પષ્ટ, અવિકસિત સ
પુ (સ ન) આદિમ-તત્ત્વમ્ ।

અવ્યાસિ, સ સ્ત્રી (સ) અનભિન્યાપન, અ્યા
પ્યમાવ ૨ હ્રસ્વળત્ય દોષભેદ (-વા) ।

અવ્યાહત, વિ (સ) -વાપાતશૂન્ય, અપ્રતિ
કૃદ ૨ સત્ય ।

અવ્યુત્પન્ન, વિ (સ) અજ, મન્દમતિ ૨ અ્યા
વરણાનમિદ્ધ ૩, અ્યુત્પત્તિરહિત (શબ્દ) ।

અવ્યલ, વિ (અ) પ્રથમ, આદિમ ૨ ઉત્તમ,
મેઙ્ગ । સ પુ પ્રારમ્મ, વપ-મ-પ્ર-, કમ ।

अशोक, वि (सं.) निर्भय, निश्चिह्न । कि वि.
(सं. न.) निश्चिह्नम् ।

अशकुन, सं. पु (सं. पु. न.) अपशकुनः न.
अजग्य, अव अशुभ-दुर-लक्षणम् ।

अशक्त, वि (सं.) निर्बल, अवल, २ अशुभ ।

अशक्य, वि (सं.) असाध्य, अनिष्पाद्य, असंभव ।

अशान्त, सं. पु (सं. न.) मोक्षन, अग्न, २.
मङ्गल, ह्लादनम् ।

अशरण, वि (सं.) अनाथ, विरामय ।

अशरफ़ी, सं. स्त्री (फा.) स्वर्गमुद्रा २ पुष्प-
भेदः ।

अशराफ, सं. पु (फा. शरीफ का बहु०) सज्ज-
ना आर्या महानुभाव (सं. पु बहु०)

अशरीरी, वि. (सं.-रिन्) अकाय, अशरीर,
अदेह २. अपादिव । सं. पु देवः ।

अशांत, वि (सं.) व्याकुल, व्यग्र, विह्वल,
उद्विग्न, बरल, चंचल ।

अशांति, सं. स्त्री. (सं.) अशम, उद्वेगः, व्या-
कुलता, होमः, व्यग्रता, सन्तोषामात्रः ।

अशास्त्रीय, वि. (सं.) शास्त्रविरुद्ध २. शास्त्र
बाह्य ।

अशिक्षित, वि. (सं.) अनश्रर, निरक्षर, अविष-
मज्ञ, अश्रुतज्ञ ।

अशिर, सं. पु. (सं.) अग्निः २. सूर्यः ३.
बाहु. । (सं. न.) हीरा, वज्र-अश्रु ।

अशिरः, वि. (सं.-रस्) शीर्ष-मल्लक, -रहित
सं. पु कण्ठः, रुण्डः-डन् ।

अशिष्ट, वि. (सं.) असभ्य, अविनीत, अमद्र,
अनार्यः ।

अशिष्टता, सं. स्त्री (सं.) असभ्यता, धृष्टता
दुःशीलता, विनयामात्रः ।

अशुद्ध, वि (सं.) अशुचि, अशुचि २. अशु-
चिन्, असत्कृत २. भ्रान्त, वितथ ।

अशुद्धता, सं. स्त्री. (सं.) अपवित्रता, अशु-
चिन्ता, २. मलिनता ३. नुष्टि-आग्निः (स्त्री) ।

अशुद्धि, सं. स्त्री. (सं.) दे. 'अशुद्धता' ।

अशुभ, सं. पु (सं. न.) अमंगल, अहितं,
अशिवं २. पाप, अशरायः । वि. अमंगल,
अमद्र, अशिवः ।

—सूचक, वि. (सं.) दर्शान-अनिष्ट, दसिन् ।

अशोप, वि. (सं.) निशेष, सर्वे, समग्र, सकल,

संपूर्ण, २. अनन्त, असीम, अगणिता, बहु, ३.
समाप्त, अवसित ।

अशोक, वि. (सं.) दुःख-शोक, -रहित । सं. पु.
(सं.) विशोक, रक्तचक्रः (वृक्ष) २. पाररः
३. शोकामात्रः ४. नृपविशेषः ।

—वाटिका, सं. स्त्री. (सं.) विशोकवाट २.
राजस्य विशोकोद्यानम् ।

अशौच, सं. पु (सं. ४) अनैष्यता, अशुचि-
वृत्ता, अशुद्धता ।

अशक, सं. पु. (फा.) अशु (न.), क्षेत्रफलम् ।

अश्रद्धा, सं. स्त्री. (सं.) अविश्वास, अप्रत्ययः,
मल्लिनिष्ठा-ममात्रः ।

अश्रान्त, वि. (सं.) रक्त, अश्रान्तः । कि. वि.
(सं. न.) सततम् ।

अश्रु, सं. पु (सं. न.) अश्रु (न.) वार्षं,
नयनाश्रु (न.) ।

—पात, सं. पु. (सं.) रुदित, रोदनम् ।

—मुख, वि (सं.) साक्ष अश्रुलोचन, सशब्दः ।

अश्रुत, वि. (सं.) अनिश्चान्त, अनाकर्णित
२. अनुभवशून्यः ।

—पूर्व, वि. (सं.) अनाकर्णितपूर्व २. अश्रुतः ।

अश्रुत, वि. (सं.) अवैदिक, अवैदिक ।

अश्रिलष्ट, वि. (सं.) केवलरहित, एकार्पक २.
अमपुक्त ३. असंगतः ।

अश्लील, वि. (सं.) म्रीडावह, प्राम्थ, कृतिसव,
सोमत्त, अशाम्य, अशाम्य ।

अश्लीलता, सं. स्त्री. (सं.) प्राम्थता, अवा-
च्यता ।

अश्व, सं. पु. (सं.) शुरगः, घोटकः ।

—आरोहण, सं. पु. (सं. न.) अश्वेन विहरणं,
घोटेकारोद्दामः ।

—आरोही, वि (सं.-रिन्) सादिन्, शुरगिन्, ।

—गंधा, सं. स्त्री. (सं.) हृद-वाभि, गन्धा ।

—तर, सं. पु. (सं.) वेगसरः (सञ्चर) ।
(-नरी = वेगसरी स्त्री.)

—पति, सं. पु. (सं.) शुरगतरात्रः २. सादिन्
२. भरतमातुलः ३. नृपविशेषः ।

—पाल, सं. पु (सं.) घोटेकरक्षकः ।

—सेध, सं. पु. (सं.) बाधिवेधः, कतुभेदः ।

—शाला, सं. स्त्री (सं.) मन्दुरा, बाधिशाला ।

अश्वत्थ, सं. पु. (सं.) चलद्वकः पिप्पलः ।

अष्टाध्याया, सं पु (त मन्) द्वौणि, द्वौणा
यन, द्वौमुन, द्वौणाचार्यपुत्र ।

अश्वस्तन, वि (स) अश्वस्तनिक अश्वनन
अश्वननीय २ दरिद्र ।

अश्विनी, स स्त्री (म) अश्विनी, वज्रवा
२ प्रथमनक्षत्र, दाक्षायणी ।

—अमार, स ॥ (स रो द्वि०) अश्विनीसुनी
देवचित्रित्तपौ, दक्षी, स्वयैषी ।

अपाद्, सं पु, दे 'अपा' ।

अपाही, स स्त्री (स आपाही) आपाहामास्य
पूर्णमा ।

अष्ट, वि तथा स पु (स अष्टन्) दे 'अठ'

—अग, म पु (स न) आगस्याष्टांगानि
(= यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्या
हार, धारणा, ध्यान, समाधि) २ आयुर्वे
दस्य अष्टविभागा (अष्टय इ०) ३ शरीर
स्याष्टांगानि दे प्रणामो विहित (= ज्ञानपाद
इत्यष्टाङ्गशिरोवचनदृष्टिद्वय) ४ अष्टद्वय
वदितपूर्वोपकरणभेद । वि (स) अष्टावध
२ अष्ट, अग्न वासव ।

—अष्टाध्यायी, स स्त्री (स) पाणिनीय
व्याकरणम् ।

—अष्टौ, स पु (स) अष्टाक्ष, अष्टकोणा
कृति (स्त्री) २ कुण्डलभेद । वि अष्टाक्ष,
अष्टाक्षिप ।

—आतु, म स्त्री (स पु) आतवृक्म्
(= सीता, चाँगी, गौवा, रौगा, असत्रा,
सीसा, छोहा, फारा) ।

—पद्मी, स स्त्री (म) अष्टपदम्भू
२ छन्दोभेद ।

—पहर, स पु (स-प्रहरा) दिनस्याष्ट
धामा । क्रि वि, अहर्निश दिवानिहम् ।

—भुजा, स स्त्री (स) दुर्गा विष्णुवत्
वासिनी देवी ।

—मूर्ति, म पु (म) शिव २ शिवस्य
कृष्ट मूर्तय (= पृथिवी, जल, अग्नि, वायु,
आकाश, यन्मात, सूर्य, चन्द्र अपवा शर्व,
मव, रुद्र, उग्र, भीम, पद्भुपति, इशान,
महादेव) ।

—वर्ग, सं पु (म) औषधविदेवाष्टकम्
(= ऋषभ, जीवक, भेट, महादेव, ऋद्धि,
वृद्धि, बाकोली, खीरकाकोली) ।

अष्टक, म ॥ (स न) अष्टवस्तुसमुदाय
(८० द्विगुहक) २ अष्टपद्यात्मकवाच्यम्
३ ऋग्वेदस्याष्टमो भाग ४ अष्टाध्यायी ।

अष्टमी, स स्त्री (सं) तिथिभेद । वि स्त्री
(म) ।

अष्टादश, वि तथा म पु (म अष्ट्) अष्टा
सुरया तद्बोधकावकी (१८) च ।

अमकथ, वि (म) अमरदेश, अमरवात,
अगणित, सुरया-गणना, -अतीत, अगण्य ।

असरा, वि (स) यवा, पकादिन्
२ निर्लिप्त इ मित्र ।

असगत, वि (स) पूर्वोपरविहृत, असम्बद्ध,
अप्राप्तिक २ अन्वय, अनुचित, अनुक्त ।

असगति, स स्त्री (स) अनन्तय सगन्वा
भाव २ अनौचित्यम् ३ अलकारभेद,
(सा०) ।

अमनुष्ट, वि (स) मनेपरहित २ अनृत
३ मित्र ।

असतोष, स पु (स) अमनुष्टि (स्त्री),
सतोषामाव २ अनुष्टि (स्त्री) ३ छन्द,
म्यानि (स्त्री) ।

असबद्ध, वि (म) सवधरहित, अनवित
२ स्वतन्त्र ३ असगत, पूर्वोपरसम्बद्धरहित ।

असबाध, वि (स) विलीन, अन्वी २
शून्य, मित्र ३ सावकाश ४ निर्बाध ।

असमव, वि (स) अमाप्य, अष्टक्य, अवर
णीय । स पु, अष्टवारभेद (सा०) ।

असमावित, वि (स) आकस्मिक, अतृप्ति ।

असमाप्य, वि (म) अक्षयं अविचार्य,
२ दुष्ट ।

असमाप्य, वि (स) अक्षय्य अवाप्य
२, वार्तालापयोस्य (म न) पुत्रवनम् ।

असयत्, वि (म) अनर्ण, निरकुश,
उच्छृङ्खल २ निषमरहित, अनियम ३ अक्रम ।

असस्य, वि (स) निर्विकार, मादहन्त्य
रहित २ मत्स्य । क्रि वि (म न) निस्त
न्देहम् ।

असस्तृन्, वि (म) आदत्र, असम्य, अवि
नीत्र, अवरिहृत् ।

असगघ, म स्त्री (म अष्टाध्यायी) इय
दुरग-गघा, वन्द्या, प्रियकारी, रमायनी,
कुडपातिनी ।

असती, स स्त्री (स) कुलटा, पुश्चली ।

असत्, वि (स) मिथ्या (अन्व्य,), असत्य
२ अविद्यमान, सत्ता अस्तित्व, हीन
३ अमद, दुष्ट ।

असत्य, वि (स) अनृत, वितथ, अतथ्य,
अयनाथ, अलीक शृषा-, मिथ्या- ।

—वादी, वि (स-दिन्) मिथ्या-शृषा अनृत,
वादिन् मायिन् ।

असत्यता, स स्त्री (स) अनृतत्व, अनस्यत्व,
दिनयता ।

असन, म पु (म अशन दे०) ।

असयाव, स पु (अ) परिच्छद उपस्कर,
वस्तुनात यात्रासामग्री, वस्त्रपात्र, सम्भार ।

असम्य, वि (स) अशिक्ष, असत्कृत, प्रामीण
२ असमासद्, असदस्य ।

असम्यता म स्त्री (स) अशिक्षता, असत्कृति
(स्त्री) प्रामीणता ।

असमजस, स पु (स न) सन्देह, संशय,
द्वैधीभाव, निश्चयभाव २ विघ्न ३ (स
पु) सगरपुत्र । वि०, अमगन, अनुपयुक्त ।

—में पड़ना, कि अ, आशुक्त विश्व विच्छिन्न
(स्वा आ से), मशी (अ आ से),
मनसा बोलावत (ना वा) ।

असम, वि (स) अनुत्प, असदृश असदृश
२ अनुगम, विषम ३ उन्नतानत, असमरेख ।
(स ॥) अलंकार-भेद (सा०) ।

असमत, स स्त्री (अ) सतीत्वम्, पातिव्रत्यम्
—परोक्ष, वि कुलटा, व्यभिचारिणी ।

फरोशी, स स्त्री व्यभिचार, सगीत-विक्रय ।

असमय, स पु (स) अकाल, दुसमय,
विपत्काल । कि वि अकाले, अस्थाने, अथ
धाकालम् । वि अनवसर, अ (आ) कालिक,
असमयोचिन ।

असमर्थ, वि (स) बलशक्ति हीन, अशक्त,
दुर्बल, २ अक्षम अयोग्य ।

असमर्थता, स स्त्री (स) अशक्तता, अक्षमता ।

असम्मल, वि (म) विमल, विरुद्ध २ अस्वीकृत ।

असम्मति, स स्त्री (स) वैमत्य विमति
(स्त्री) मतभेद विरोध ।

असमान, वि (स) विभ्रान्तीय, अनुत्प ।

असमाप्त, वि (स) असंपन्न, अनवसित,
अ गी ।

असमाहित, वि (स) बलविच, लोहबुद्धि,
अधीर ।

असर, स पु (अ) प्रभाव, प्रताप, प्रतिष्ठा
२ फल, गुण, परिणाम ।

—करना कि स, प्रभाव जन् (प्रे०), फल
उत्पद् (प्रे०) ।

—होना, कि अ, परिणाम जन् (दि आ
से) फल निष्पद् (दि आ, अ)

असल, वि (अ) अकृतक, अकृत्रिम, निष्कपट
२ उत्कृष्ट ३ शुद्ध, अमिश्रित । स पु, मूल,
तरुण ४ मूल पत्र द्रव्यम् ।

असलह, स पु (अ० 'सिलाह' का बहु०)
शुक्लाक्षम् २ कवच-वन् ।

असलियत, स स्त्री (अ) सत्यता, बाल
विकृता २ मूल, तरुण, सार ।

असली, वि (अ) दे 'अमल' दि० ।

असह, वि (स असह दे०) ।

असहन, वि (स) दे 'असहनशील' ।

—शील, वि (स) अमर्षण, अक्षमिन्, अस
हिष्णु, असहन, अक्षम ।

—शीलता, स स्त्री (स) असहिष्णुता,
क्षमा मरण तितिक्षा, अभाव ।

असहनीय, वि (स) दे 'असह' ।

असहयोग, स पु (स) असहकारिता,
असाहाय्य, असहोयोग ।

—जोदोलन, स पु (स न) असहकारिता
व्यापार ।

असह्य, वि (स) असहनीय, असोढ्य, सह
नायोग्य, दुःसह, दुर्विषह ।

असहाय, वि (स) निराश्रय, निरावलम्ब,
अगतिक, अशरण ।

असहिष्णु, वि (स) ॥ 'असहनशील' ।

असहिष्णुता, स स्त्री (स) दे असहन
शीलता ।

असाप्रत, वि स (स) अशोभन, अनुचिन २
असामर्थ्य ३ वर्तमानासम्बद्ध ।

असाप्रदायिक, वि (स) अमतवादिन्, उदार
२ परम्पराविरुद्ध ।

असा, स पु (अ) दण्ड, लण्ड, यष्टि
(पु स्त्री) ।

असाढ़, स पु (स आषाढ) वर्षस्य चतुर्थमास ।

असादी, वि (हि असादी) आषाढसम्बन्धिन् ।
 स खी आषाढोत्तर शुक्ल २ आषाढपूर्णिमा ।
 असाधन, वि (स) साधन उपाय, -हीन-
 रहित, निरुपाय, निरसाधन ।
 असाधारण, वि (स) विशेष, विलक्षण,
 अद्भुत (—णी खी) ।
 असाध्य, वि (स) अशक्य, अनिष्पाद्य
 २ दुस्त्याय, दुष्कर ३ अचिकित्स्य, दुरुपचार,
 निरुपाय, अप्रतिकाय ।
 असामयिक, वि (स) अनवसर, असमयो-
 चित, अ(आ)कालिक (—की खी) अमास
 काल, अस्थान ।
 असामर्थ्य, सं खी (स न) दे 'असमर्थता' ।
 असामी, सं पु (अ आसामी) जन, पुरुष
 २ कृषक ३ प्रत्ययिन्, प्रतिवादिन्
 ४ अपराधिन्, दण्ड्य ५ मित्र सखि (पु) ।
 स खी, परकीया २ वैश्या ३ क्षात्रवृत्ति
 (खी) ४ रिक्तस्थानम् ।
 असा—, स पु, ऋणशोधक ।
 दुःखा—, स, पु, ऋणशोपाक्षम ।
 मोक्ष—, स पु, पनाह्य ।
 शौच—, स पु बद्धमुष्टि, अदिरुद्ध ।
 असाह, वि (स) निरसाह, फल्य, निष्फल
 २ रिक्त ३ दुष्कृत । स पु, धरुण्ड २ अण्ड ।
 असारता, स खी (स) निरसारता, तत्त्व
 राहित्यम् २ निर्व्याप्त ३ दुष्कृता ।
 असाकृत, स खी (अ) कुलीनता २ सत्त्वता ।
 असाकृतन्, कि वि (अ) स्वय, स्वय
 (दोनों अर्थ) ।
 असावधान, वि (स) प्रमाद, प्रमादिन्,
 अदाहर, अनवधान, अनवहित ।
 असावधानता, स खी (स) प्रमाद, मनो
 योगभावं अनवधान उपेक्षा ।
 असावधानी, स खी दे 'असावधानता' ।
 असावरी, स खी (स अ (अ) सावरी)
 रागिणीभेद ।
 असासा, स पु (अ) सम्पत्ति (खी),
 विभक्त ।
 असि, स खी (स पु) खड्ग २ नदीविशेष ।
 असिक, स पु (स न) विप्रकाशरसो
 मध्यमाण ।

असिद्धी, स खी (स) नदीविशेष (वना)
 २ अन्त पुरचारिणी अष्टदा दासी ।
 असित, वि (स) कृष्ण, नील, श्याम,
 मेचक २ दुष्ट ३ वक्र ।
 असितांग, स पु (स) शिव । वि, कृष्ण, =
 जग रूप देह ।
 असिता, स खी (स) दे 'यमुना' ।
 असिद्ध, वि (सं) अनिष्पन्न २ अवश
 ३ अपूर्ण ४ निष्फल ५ अप्रमाणित ।
 असिद्धि, स, खी (स) निष्फलता, विकल्पा
 २ अयुक्तता, अपक्वता ।
 असिस्टेंट, वि (अ) सहायक, सहाय, उप- ।
 —एडिटर, स पु, व्यवस्थापक ।
 असी, स खी (स असि पु अमी) काशी
 दक्षिणवर्तिनी नदी ।
 असीम, वि (स) निरसीम, निरवधि २ अमित
 ३ अपार ४ अगाध ।
 असील दि (अ अमल) दे 'असल' ।
 असीर, स पु (अ) ग्रहक, कारागृह ।
 असीरी, स खी (का) कारावास, आशेष,
 निरोध ।
 असीस, स खी (स आशिन् खी) आशीर-
 वाद वचन, मङ्गलशब्द ।
 असु, स पु (स) प्राणा असव (दोनों
 बहुवचन) ।
 असुविधा, स खी (स >) कठिनता,
 शोकबोधन २ विघ्न ।
 असुर, स पु (सं) दैत्य, राक्षस २ रात्रि,
 ३ दुर्जन ४ पृथिवी ५ सूर्य ६ नैव ७ राहु
 ८ उन्मादभेद ।
 —अग्नि, स पु (सं) विष्णु २ देवता ।
 —गुरु, स पु (स) शुक्राचार्य ।
 असुया, स खी (स) परगुणेषु दोषारोप
 २ संचारियावभेद (सा) ।
 असुख्यग्या, वि खी (सं) अवरोध-अन्त पुर-
 नतिनी, अवगुण्टनवती, अतिलज्जावती ।
 असूल, स पु, दे 'उसूल' २ द 'बसूल' ।
 असेसर, स पु (अ एसेसर) सम्भ,
 समासद् ।
 असोज, स पु (स अशयु > नृ) आश्विनग्राम ।
 असोसिवेशन, स खी (अ) समा, समाज ।

असौम्य, वि (स) कुरूप, कुदर्शन २ अभिष,
अरुचिर ।

असौष्टव, स पु (न) कुरूपता, सौन्दर्या
भाव । वि, कुरूप, अद्भुत ।

अस्त, वि (स) गुप्त, तिरोहित २ अदृष्ट,
उक्त २ नष्ट, ध्वस्त । स पु, तिरोधान, लोप,
अदर्शनम् ।

—गत, वि, (स अस्तगत) उक्त, अस्तमित,
अदर्शनगत ।

अस्तघल, स पु (अ) मन्दुरा, अश्व-वाजि-
घोटक-शाला ।

अस्तमम, स पु (स न) अदर्शन, तिरोधान
२ सूर्यादीनामस्तोस्तमयो वा ।

—वैला, साय, सायकाल, दिनावसान, प्रदीप ।
अस्तमित, वि (स) अस्तगत, अदृष्ट, तिरो
हित २ नष्ट, मृत ।

अस्तर, स पु (फा) अंतराच्छादन अन्तःपट ।

—कारी, स स्त्री (फा) सुपालेप २ (पल
स्तर) उपनाह उपवेह ।

अस्तव्यस्त, वि (स) स प्र-वि-आ-कीर्ण,
सकुल, अव्यवस्थित ।

अस्ताचल, स पु (स) अस्त-पश्चिम, -गिरि -
पर्वत ।

अस्ति-व, स पु (स न) भाव, सत्ता,
विद्यमानता ।

अस्तु, अव्य (स) यद् मवि नद् भवतु
२ वाद् भवतु भद्रम् (सब अव्य) ।

अस्तेष, स पु (स न) स्तेव मोष-चौर्य
स्तेष-स्वार्ण ।

अस्त, स पु (स न) प्रहरण, आयुध, क्षिपणी
णि (स्त्री) २ शस्त्रम् ।

—चिकित्सक, स पु (स) शल्यशास्त्रज्ञ,
द्रव्यवेद्य, शल्यतन्त्रविद् ।

—चिकित्सा, स स्त्री (स) शल्य, शल्यवैद्यक,
शल्यशास्त्रम् ।

—विषा, स स्त्री (स) शुद्धशास्त्र साम्रागिक,
आयुधरण विषा ।

—वेद, स पु (स) अनुवेद ।

—शाला, स स्त्री (स) अश्व आयुध, आगार,
शस्त्रगृहम् ।

अस्थि, स स्त्री (स न) कौकस, कुण्ड, मेदोजम् ।

—पजर, स पु (स) कंकाल, वरक,
देहास्थिसमूह ।

अस्थिर, वि (स) चपल, चञ्चल, तरल २ चल
चित्त, लोलयति ।

अस्थिरता, स स्त्री (स) चाञ्चल्य, तारल्य,
अस्थैर्यम् २ चञ्चलचित्तता, मनोलौभ्यम् ।

अस्पताल, स पु (अ इतिपठल) आतुरालय,
चिकित्सालय, रुग्णागार आरोग्यशाला
२ औषधालय ।

अस्पष्ट, वि (श) अप्रकट, अस्पृष्ट, अविशद
२ दुर्बोध, सदिग्ध ।

अस्पृश्य, वि (स) स्पर्शायोग्य २ अस्पर्श
नीय, अस्वय, हीनवर्ण, दुष्कुलीन ।

अस्पृह, वि (स) निस्स्पृह, लोभरहित, अलोभ्यः ।

अस्पृष्ट, वि (स) अस्पृष्ट, अस्पृक्त, गुप्त, परोक्ष ।

अस्थाव, स पु दे 'असथाव' ।

अस्मार्त, वि (स) स्मरणातीत २ अवैध,
भार्यशास्त्रविरुद्ध ।

अस्मिता, स स्त्री (स) बलेद्यमेद (यो)
२ अहकार ।

अस्म, स पु (स) कोण २ केश ।

अस्त्र, स पु (स न) रक्त, रुचिर २ अशु
(न), नयनजलम् ।

अस्त्र, दे 'मस्र' ।

अस्वस्थ, वि (स) रुग्ण, -वाधित, रोगिन्
२ स्वस्थित ।

अस्वाभाविक, वि (स) अनैसर्गिक, निसर्ग
प्रकृति सङ्कल्प, विरुद्ध २ कृत्रिम, कृतक ।

अस्वास्थ्य, स पु (स न) रोग, व्याधि,
गद, आमय ।

अस्ती, वि (स अस्तीति स्त्री) । स पु उक्ता
सत्त्वा, सत्त्वोपकारको (६०) च ।

अह, सर्व (स०) । स पु अह, -कार -कृति
(स्त्री) याव पूर्वका, आरम्भिमान ।

अहकार स ॥ (स) गर्व, दप मद, माद,
आदोष, मान, उत्तेज अह, -मान भाव -
कृति (स्त्री) २ अतःकरणस्य भेदविशेष
(वे) १ महत्तत्त्वज्ञानो द्रव्यविशेष (सा)
४ अस्मिता ५ ममत्वम् ।

अहकारी, वि (स रिन्) दृप्त गर्वित, अह
लिप्त, उद्वत, मत्त, उत्तेकिन्, अभिमानिन् ।

अहवाद, स पु (स) आत्मशाखा, अह्वा
रौकि (स्त्री), विकल्पनम् ।

अह, स पु (स, अहन् न) दिन, दिवस
२ सूर्य ३ विष्णु ।

अह, अय (म अह अय) आश्वयैतेदके
शास्त्रिबोधकमन्वयम् ।

अहद, स ॥ (अ) प्रतिष्ठा, स-प्रति, -अव-
५ सकृष्ट ३ शासनकाल ।

—नामा, म पु, प्रतिष्ठा समय, पत्र लेख्यम्
३ मन्त्रिपत्रम् ।

—शिकन, स पु, प्रतिष्ठाविन्, असत्यसन्ध ।

—शिकनी, स स्त्री, प्रतिष्ठाभग, असत्य
सन्धिवत् ।

अहन्, स पु (म न) दिन दिवस ।

अहनिशि, अव्य दे 'अहनिश' ।

अहवाच, स पु (अ, 'हवी' का बहु०)

अहम, वि (अ) महत्त्वपूर्ण, मातावश्यक ।

अहमक, वि (अ) अह, मूढ, मूर्ख ।

अहमहमिका, म स्त्री (स) अहमिका
प्रति, स्पष्टा ।

अहरमति, म स्त्री (स) अहवार २ अविद्या ।

अहर, स पु (स आहर >) जलाशय ।

अहरम, म स्त्री (स आ+परण <) शर्म,
शर्मा, शर्मिका, स्थूणा शर्मि (पु स्त्री) ।

अहरह, अव्य (स) प्रति अह दिन, प्रायह,
दिने दिने ।

अहरा, स पु (स आहर >) गोमयपिट्टराशि
२ गोमयाग्नि ३ पथिकाशम ४ प्रपा ।

अहरी, म स्त्री (हि अहरा) प्रपा २, जला
धार ।

अहर्निश, कि वि (स श) दिवानिश, रात्रि
दिवम् २ नित्यम् (सब अव्य) ।

अहलकार, स पु (फा) राज, -पुष्प -मृत्यु
२ प्रतिनिधि, प्रतिहस्त ।

अहलमद, म ॥ (फा) अधिकरणलेशक ।

अहल्या, वि (स) कर्षणायोग्या (भूमि) ।
स स्त्री गौतमपत्नी ।

अहगान, म पु (अ) उपवार, हित
२ कृपा ३ कृतज्ञता ।

—परामोदा, वि (फा) कृतज्ञ (-भी स्त्री),
अकृत, अ-वदिन् ।

—परामोदी, स स्त्री (फा) कृतज्ञता,
उपकारविस्मरण, अकृतवेदिता ।

—मद, वि (फा) कृतज्ञ, कृतवेदिन् ।

—मदी, स स्त्री (फा) कृतज्ञता उपकार
ज्ञता ।

अहह, अव्य (स) आश्चर्यसदके शोकादि
सूचकमन्वयम् ।

अहौ, अव्य (अनु) नर, मो, न ।

अहा, अव्य (स अहह) हर्षप्रशंसादिसूचक
मन्वयम् ।

अहाहा, स पु (अ) परितरभूमि (स्त्री),
प्रागण (-न) २ प्राकार, प्राचीरम् ।

अहार, स पु, दे 'आहार' ।

अहार्य, वि (छ) अचोरणीय, अमोघणीय ।
२ चक्रवर्त्यदिभि अवहर-अहम्प ।

अहाहा, अव्य (म अहह) हर्षसूचकमन्वयम् ।

अहिसक, वि (स) अहिंस, अघातुक (-की
स्त्री) २ अदुःखर ।

अहिसा, सं स्त्री (स) हिंसा-अपकार-द्रोह
वेद, -स्याग ।

अहिंस, वि (स) दे 'अहिंसिक' ।

अहि, स पु (म) सर्व २ वृषाक्षर ३ भूमि
(स्त्री) ४ सूर्य ५ राहु ६ स्रक् ।

अहित, वि (स) वैरिन्, द्रोहिन् २ शानिकर
(-री स्त्री) । स पु (म न) अमगल, अभद्रम् ।

अहिषेन, म पु (स पु न) सर्पविप,
सर्पशुलाला २ (अनीम) अफेन, अहिफेनम् ।

अहिम, वि (स) ठस, उष्ण ।

—कर, स पु (स) सूर्य ।

अहिवात, स पु (म अभिवाच >) नौमाग्य,
सधवात्, सार्त्तवात्, पतिमत्ता ।

अहिवातिन, -स्त्री, (हि अहिवात्) सौमाग्य
जनी सधवा, सधर्तृका ।

अहीर, म पु (स आवीर) गोप गोपाल,
गोपालक गोमख्य, बहव ।

अहीरिन, -स्त्री, स स्त्री (स आमीरी) गोपी,
गोपिका, दोहिनी, गोदोहिनी ।

अहीना, स पु (स) शेषनाग, सर्वनाग
२ शेषावतारा (अहमणवदरामादय) ।

अहुत, स पु (स) जप, मन्त्रपठ, वेदपाठ ।

अह, अव्य (स) हे, अयि, भो ।

अहेतु तुक, वि (स) अकारण, निष्कारण,
निनिमित्त, २ व्यर्थ, निष्फल ।

अहेर, स पु (स आसट) मृगया,
मृगयम् २ वयनवत्, (बहु०) ।

अहेरिया, अहेरी, म पु (हि अहेर) व्याप,
लुम्बक मृगयु आसटक ।

अहो, अव्य (म) हे, अर २ कर्णखदहर्ष
प्रशसामूचकमव्ययम् ।

अहोभाय, म पु (स न) सौभाग्य, पुण्यो
दय, मात्पापचय ।

अहोर बहोर, क्रि वि (हि बहुरना) भूषो
भूय, वार वार (दोनो अव्य०) ।

अहोरात्र, स पु (स पु न) दिवानिश
अहनिश दिवारात्र अक्तदिवम् (मब अव्य०) ।

आ

आ, देवनागरीवर्णमालाया द्वितीया स्वरवर्ण,
आकार ।

आ, अव्य (म) स्वीकृत्यनुवपाकोपशोकस्तु
रपादितूचकमव्ययम् ।

आँक, स पु (सं अक) चिह्न, अभिज्ञानम्
२ सरयाचिह्न, अक ३ वर्ण, अक्षरम्
४ सिद्धान्त ५ अक्ष, माग ६ वक्ष
७ वक्ष्य, क्रोडम् ८ रेखा ९ मूख्यसन्नेत ।

आँकडा, स पु (हि आँक) सरयाचिह्नम्
अक २ व्यावर्तनकौल (वेंच) ।

आँकडे, पु (हि आँक) अका ।

आँकना, क्रि म (स अकनम्) अक (तु,
(स्वा आ से), चिह्नयति मुद्रयति (ना आ)
छ छ (स्वा प से), २ ऊढ (स्वा आ
से), तक्' (तु) ।

आँकुम्, स पु, दे 'अकुम्' ।

आँख, स स्त्री (स अक्षि न) बहुस (न),
वि-मोचन नेत्र, जयन, इक्षुर्ग, दृश दृष्टि
(दोनो स्त्री) = नयनाकार चिह्नम् ३ सूची
दिद्रम् ४ कृपा ५ विवेक ६ निरीक्षणम् ।

—अजनी, म स्त्री (स अक्षि + वजनम् >)
पद्मपिटिका ।

—का गोला म पु, अग्निगोत्रम् ।

—का पदा, म पु अक्षिपटलम् ।

—मिचौली, स स्त्री, अक्षिमैत्री, बाल
क्रीडामेद ।

—छात्री, म स्त्री, उपपत्नी, मुनिपत्नी ।

—आना, मु, नेत्रपाक ।

—उठाकर नदस्तना, मु, आदगण्-अवपीर (तु) ।

—उठाना, मु, दन् (स्वा प अ) २ अप
वर्तु वट (स्वा आ से) ।

—का काजल चुराना, मु वीर्यपाटवम् ।

—का तारा, मु, ताराका, कनानिका २, स्नेह
भाजनम् २ एकल पुत्र ।

—की मैल, म स्त्री, दूषिका, अक्षिमलम् ।

और्वं चार करना, मु, परत्परावभोकनम् ।

—चुराना वा छिपाना, मु, निकी (दि आ अ)
२ परदर्शन परिहृ (स्वा प अ) ।

—छपकना, मु, निद्रावश (वि) भू २ निमिष
(तु प से), निमीक (स्वा प से) ।

—छटी करना, मु, दर्शनेन प्रसद् (स्वा प अ) ।

—छवढवाना, मु, साधनयन (वि) भू ।

—दिखाना, मु, सरोष वीक्ष (स्वा आ से)
= भी जम् (प्रे) ।

—नीची होना, मु, ऊर्ध्ववत् (स्वा आ स) ।

—नीली पीली करना, मु, अस्पष्ट कृप् (दि
प से) ।

—पर पदां पडना, मु, विमुद् (दि प से) ।

—पर बैठाना, मु, अत्यन्त समम् (प्रे) ।

—फटकना, मु, मेघ रज्जु (तु प से) ।

—फेर लेना, मु, अवमन् (दि आ से) २
प्रतिकूल (वि) जन् (दि आ स) ।

—बद् करलेना, मु, पृ (आ आ) ।

—बिछाना, मु, प्रेम्णा प्रविश (प्रे) २ सस्नेह
प्रतीक्ष (स्वा आ से) ।

—भर आना, मु, साक्षनेत्र (वि) जन् ।

—भटकाना, मु, सदाव वीक्ष (स्वा आ से) ।

—भारना, मु, नियेण सूच् (तु) ।

—मिच जाना, मु, पृ (तु आ अ) २ द्वे
'क्षपकना ।

—मिलाना, मु, सदाव दृश (स्वा प अ) ।

—मीचना, नत्र निमील् (स्वा प स) ।

—म घर करना, मु, इदये वस (स्वा प अ) ।

—मैं चरवी छाना, मु, दर्पांघ (वि) जन्
(दि आ से) ।

—म धूल झाँकना, मु, प्रतु (प्रे) ।

—लगाना, मु, स्वप् (अ प अ) २ रदभावा
(वि) भू ।

—सेंकना, सु, सोन्दवेदार्थनेन प्रसद् (भ्वा प अ) ।

—से गिरना, सु, अवगण् अवमन् (कर्म) ।

आंग, वि (स) शारीरिक, दैहिक २ अग्नि, अवयविन् ३ अगदेशन ।

आंगिन, स पु (स अगल णम्) अभिर, प्रागणम् ।

आंगिक, वि (स) शारीरिक दैहिक, कायिक (—की खी) स पु, अभिनयभेद ।

आँच, स खी (स अचिस खी, न०) ताप, दाह, उष्णता, कम्प २ अग्नि, ज्वाला शिक्षा शिक्षा ३ अग्नि अमल ४ हानि (खी) ५ विपत्ति (खी) ।

—आमा चा खाना चा पहुँचमा चा लगना, कि अ, तप (दि आ अ), उष्ण भू ।

—देना, कि स तप् (प्रे) ।

—न आने देना, ॥, कटाप मै (स्वा आ न) ।

आँछल, स पु (स अवल णम्) पटाट, बलप्रान्त २ प्रातभाग ।

—देना, सु स्तन्य दा (जु उ अ) ।

—में आँधना, सु, स्मरणार्थ पटप्रान्ते अपिदा नम् २ निरय पार्श्वे स्थापनम् ।

—आँजन, स पु, दे 'अजन' ।

आजनेय, स पु (स) इन्द्रमय, माकृति पवनपुत्र ।

आँट स खी (हि अटी) करतले अग्रुजनवै -योर्मध्यस्थानम् २ पण, गृह (दाँव) ३ विरोध ४ नीचो, वधनम् ५ पीठलिका ।

—सोट, स खी, सहकारिता २ सङ्घेय ३ कुमन्त्रण ।

आँटी, स खी (आँना) लवणुगपोटलिका २ सूत्र पत्नी पत्रिका ३ बालकीदोषयोगी वायस्य उभेद ४ शादीप्रपि (पु) ।

आँटी, स खी (स अछि खी) फल, रीज सम २ ग्रन्थि ३ त्र्येष्टाग्रज ।

आड, वि (स) अण्ड, ज-उदमव । स पु (स) हिरण्यगर्भ, ।

आँत, स खी (स अत्रम्) पुरीत (पु न) परित्र (पु न) ।

—उतरना, सु, अक्षस्त्रेन अत्रशृङ्घा वा पीड् (वर्म) ।

, धुमान्त्रम् ।

—बढ़ी, वृद्धन्त्रम् ।

आतर, वि (स) आभ्यन्तर, अन्तर्गत, अन्तरग ।

आतरिक, वि (स) अन्तर्गत, अन्त र्भ्य, आन्तर, आभ्यन्तर (—ही खी), अन्त (स अन्त वेदना) २ मानसिक, हार्दिक, आरिभक्त ।

आदोखन, स पु (॥ न) चेष्टा, प्रवृत्ति (खी) २ असकृत्कपनम् ३ क्षोभ, विप्लव, प्रकोप ।

आँधी, स खी (स अवम् >) वात्सा, चह महा-अति वात, प्रमथन, प्रकपन ।

आँध्र, स पु (स आंध्रा) दक्षिणापथे प्रात विशव २ आ भ्रवासिन् ।

आँध्र बाँध, स खी (अनु०) प्रलाप, जल्पितम् ।

आँव, स खी (स आम >) श्लेष्मन् (पु) ।

—गिरना, कि अ अमानिसारेण पीड् (कर्म) ।

आँवळ, स पु (स उव्वम्) कजल (पु न), जरायु (न) ।

आल, स खी, नाभि, नाल नाडी ।

आँवळगहा, स पु (हि आँवळा + गाँठ) शुष्कामलकम् ।

आँवळा, स ॥ (स आमलक-कर्म की) अमृता, शिवा, शाता, भात्री, भीकला ।

आँवी स पु (स आपाक) कुम्भकारपात्र पाकस्थानम् ।

आँशिक, वि (स) आंगिक, भांगिक, साण्डिक ।

आँसू, स पु (स अश्रु न) वाष्प, जल, नेत्र-मयन,—जल-बारि-उदकम् ।

—गिरना, कि स, रुद् (अ प से) ।

—धी जाना, सु, अश्रूणि अव ॥ मि, रुद् (उ उ अ) ।

—पोंछना, सु, आ समा-भस् (प्रे)

आँहाँ, अ (अनु) न, जो, मा (सव अव्य) ।

आहसकीम, स खी (अ) हिम्, सप्तानी शर ।

आहूँ, स खी (हि आना) धृ पु । कि अ आपत्ता ।

आहूँन, स पु (अ) विधि, विधानम्, निषम २ सविधानम् ।

आहूँना, स पु (फा) सुहृद, दर्शन ।

आहूँ, स पु (स अहूँ) मन्दाह, हीरदल, तृष्ण सूर्योद, सदापुष्प ।

—की बुद्धिया, सु, अन्तरपुष्प २ अतिशुद्धा नारी ।

आकर, सं ॥ (सं) ख(खा)निनि (खी)
वर्षत्स्थानम् २ निधि, भाण्डागारम् ३
प्रकार, भेद ।

—भाषा, म खी मूलप्राचीनभाषा (उ०)
हिन्दी की आकरभाषा संस्कृत, उर्दू की फारसी ।
आकर्षक, वि (स) आकर्षणकर २ मनोहर ।
आकर्षण, स पु (स न) आकर्ष, आवर्ज
नम्, अनुकर्ष अनुकर्ष अनुकर्षणम् ।

—करना, क्रि स, आ समा, कृष (स्वा प
आ), आहूज (चु) २ विमुर (प्रे०) ।

आकर्षित, वि (स) कृताकर्षण २ प्रलोभित ।
आकलन, स पु (स न) ग्रहणम् २ मंचय
३ गगनम् ४ अनुष्ठानम् ५ निरोक्षणम् ।

आकस्मिक, वि (स) अवाण्ड, अचिन्तितपूर्व,
हठाभान ।

आकांक्षा, स ली (म) इच्छा, अभिलाष,
स्पृहा, वाञ्छा २ अपेक्षा ३ अनुसंधानम् ४
बावये शब्दरस शब्दांतराश्रितत्वम् ।

आकांक्षी, वि (स क्षिन्) इच्छुक, अभिला
षिन्, ईप्सु, सत्पूह ।

आकार, स पु (स) आकृति मूर्ति (स्त्री),
रूपम् २ कायपरिमाणम् ३ अवयवसंस्थानम्
४ निहम् ५ चेष्टा ६ 'आ' इति वर्ण
७ आह्वानम् ।

—गुप्ति, स ली (स) अवहित्ता ।

आकारण, स पु (स न) आह्वानम्, आम
त्रणम् २ दे 'चुनौती' ।

आकारवान्, वि (स -वत्) साकार, मूर्तिमय
विग्रहिन् ।

आकालिक, वि (स) असांमयिक ।

आकालिकी, स ली (स) दे 'विमली' ।

आकाश, स पु (स पु न) गगन, नभस,
विवर, न्योमन् (स न), अवर, अंतरिक्ष,
ख, नाक, दिव्, सो (दोनों खी), विहायस
(पु न), विहायस, अन्न, पुष्कर, अन्नन्,
विष्णुपद, तारापथ ।

—कुसुम, स पु (स न) सुपुष्प, सुश,
विषाण-गृहम्, असम्भव वस्तु (न) ।

—गंगा, स ली (न) मन्दाकिनी, स्वर्णदी ।

—चारी, वि (स रिन्) धर, नभश्चर (-चरी
खी) । स पु सूर्यादिग्रहा २ वायु ३
खग ४ देव ५ राक्षस ।

—बेल, म खी (सरी-बही) अमरबही,
खवही, न्योमलतिका ।

—भाषित, सं ॥ (स न) गगनलपितम्,
नाट्ये भाषणभेद ।

—वाणी, स ली (स) देववाणी, अशरीरिणी
वाक (खी) ।

—वृत्ति, स ली (म) अनियतो घनागम ।

—धूमना, सु, अन्नलिह (स० व अ), गगन
धुम्ब (स्वा प से) ।

—पाताल एक करना, ॥, अत्यर्थ प्रयत्न (स्वा
आ से) ।

—पाताल का अन्तर, सु, महदन्तर, महान्
भेद ।

आकुञ्चन, स पु (स न), सकोचन, समा
वर्ष, सकोचन, प्रसूनस्य संक्षेपण, वक्रत्वसम्पा
दनम् ।

आकुचित, वि (स) सकोचित २ वक्र ।

आकुल, वि (स) व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, क्षुब्ध,
अशान्त, -यत्न, विह्वल, कानर २ समाकीर्ण,
सकुल ।

आकुलता, स ली (स) उद्वेग, क्षोभ, अशा
न्ति (खी) ।

आकृति, स ली (स) अभिप्राय, आशय
२ उत्साह ३ सदाचार ।

आकृति, स ली (स) आकार, रूप, मूर्ति
(खी) २ मुख, अन्ननम् ३ अवयवसंस्थान,
शरीररचना ४ मुद्रा, चेष्टा ५ जाति ।
(खी न्या) ।

आकृष्ट, वि (स) आकर्षित, कृताकर्षण ।

आक्रुद्ध, स पु (स) रोदन, रुदितम्,
चीत्कार २ युद्धोप ३ तुलुसुद्धम् ।

आक्रमण, सं ॥ (स न) आक्रम, अव
स्वन्द, अभिद्रव, अभिप्रयाण, आपात २
रोषन, अन-उप, -रोष ३ आक्षेपण, निन्दनम् ।

आक्रान्त, वि (स) अभिद्रुत, अभिप्रयाण, २
अभि-परा-वशी, -भूत ३ परिवेष्टित ४ व्याप्त,
आकीर्ण ।

आक्रामक, स पु (स) अभिद्रुत, अभिद्रा
यिन्, आक्रमणकारिन् ।

आक्रोश, स पु (स) शप, आक्षेप, गाढी
दानम् ।

आक्षेप, स पु (स) अपवाद, दोषारोप २
पातन, प्राप्तनम् ३ कटूक्ति (स्त्री) ४
अगकपुत्री वातरोगभेद ।

आक्साह्म, स पु (अ) आरेयम् ।

आक्सिजन, स पु (अ) आरक, ओषजनम् ।

आखडल, स पु (स) अक्ष ।

—सूत्र, स पु (स) अर्जुन ।

आखिल, स पु (स अक्षना) अखिलतन्त्रीद्वय ।
वि, अखिलित ।

आखर, स पु दे अक्षर ।

आखिर, वि (अ) अन्तिम अ-त्वं २ समाप्त ।

स पु अ-त्त, अवसानम् ३ परिणाम, फलम् ।

कि वि, अन्तत २ विवक्ष (वि) भूत्वा
३ अवश्यम् ४ कथंचिद् ।

—काह, कि वि, अ-त्ते, अन्तत ।

आखिरी, वि (पा) अन्तिम, अ-त्वं, चरम ।

आखेट, स पु (स) हृणवा, दे शिकार ।

आखेटक, स पु (स) व्याध, आखेटिन् ।

आख्या, स स्त्री (स) नामन् (न), सहा
२ यशस (न), कीर्ति (स्त्री) ३ विवरण,
व्याख्या ।

आख्यात, वि (स) विरवात, प्रसिद्ध २ कथित
३ तिष्ठ-तकिया ।

आख्यान, स पु (म न) कथा, आख्यायिका
२ वर्णन वृत्तान्त ।

आख्यायिका, स स्त्री (स) कथा, वृत्तान्त,
आख्यानम् २ आख्यानभेद ।

आगन्तुक, वि (स) आयात, आगत २
३ अतिथि, अगमागत ।

आग, स स्त्री (स अग्नि) अन्क, पावक,
दहन, अदहन, बहि वृत्तान्त, वृत्ताखन,
वृत्तवद्, वधर्तुव, ह्यवनाहन, चित्रमान, शुक्र,
शुचि २ ताप ३ कामाधि ४ वात्स
स्वम् ५ ईर्ष्या । वि, अत्युष्ण १ क्रुद्ध ।

—का पुतला मु बोधिन् २ चषक ३ निपुण ।

—खाना अगार हगना, मु, दुष्कृत्य फल
विपद् (स्त्री), यो यत् वपति बीजं हि सोपि
तत्कर्मते फलम् ।

—पानी (फूस) का बेर, मु, सहज बेरम्,
चापतिकी विरोध ।

—यगुला (यगुला) होना मु, निगरी कुप
(दि प से) ।

—मडकाना, मु, बैरोदीपन, कोषोदीपनम् ।

—हगना, मु, वक्त्रनम् २ कुप ३ ईर्ष्य
(भा प से) ४ वस्तुना इष्टमूल्या ।

—छगाना, मु, आवेशकर्षनम्, कोषोत्पादनम्
२ नाशनम् ।

—हगा कर पानी को दौड़ना, मु, कलिमुत्पाप
ज्ञातये प्रवृत्त ।

—हगने पर कूर्मी खोदना, मु, सदीर्घे भवने
कूपघननम् ।

—लगा कर समाशा देखाना, मु, कलिमुत्पाप
मनोविनोदनम् ।

—होना, मु, अर्थार्थ कुप ।

पानी में भाग लगाना मु, अशुच्यकरण,
खपुष्पघोटनम् । पेट की भाग, मु लुभा,
मुमुक्षा ।

आगत, वि (स) प्राप्त, उपस्थित २ अतिथि ।

—स्वागत, स पु (न) अतिथ्य, सत्कार ।

आगम, स पु (म) आगमन, प्राप्ति (स्त्री)
२ भावि-आवाधि, काल ३ माध्य, देवम्
४ संगम, समागम ५ आय ६ प्रकृतिप्रत्य
यानुपपादी आगत्यको वर्ण (व्या) ७ उपवृत्ति
(स्त्री) ८ शब्दप्रमाणम् (यो) ९ वेद,
शास्त्रम् १० सम्प्रदायम् ११ नीतिशास्त्रम् ।

—जानी, वि (म-जानिन्) पूर्ववादिन्,
अप्रतिरूपक, सिद्ध, आवे (वृ+ट+) =ट् ।

आगमन, स पु (स न) आगति (स्त्री),
आगम २ आय, लभ ।

आगमापायी, वि (स-यिन्) अनित्य, अनुप,
अमररक्षणशोभ ।

आगरे, स पु (स आकर) ख (खा) नी-
नि (स्त्री) २ सन्तु ३ निधि ४ लवणगत ।

आगरे, स पु (स अर्गल ला) द्वारविषम ।

आगार, स पु (स आगारम्) गृह सदनम्

आगार, वि (स आगार) श्रेष्ठ, उत्तम २ दध ।

आगारस्त्री, स स्त्री (स) दक्षिणदिशा दक्षिणा,
यामी ।

आगा, स पु (स अग्रम्) अग्र पुरो, भाग
२ उत्तर, वक्षत् (दानो न) ३ मुखम्
४ मस्तकम् ५ जननेन्द्रियम् ६ वज्रवादी
नामप्रमाण ७ सेवकम् ८ नौकाप्रमाण
९ गृहायवति अवनम् १० अवल लम्
११ आगाधिकार १२ परिणाम ।

—पीछा, म पु (पु अग्र + पश्च >) सश्व, विमर्श २ परिणाम ३ अग्रपक्षभागी ।

—पीछा करना, मु, दोहायते (ना व्या) ।

—पीछा सोचना, मु, परिणामचिन्तनम् ।

आगाज़, स पु (का) आरम्भ, उपक्रम, आदि ।

आगामी, वि (म - मिन्) माविन्, भविष्यत् ।

आगार, स पु (स न) अगार, गृह, गेहम् स्थानम् २ कोष ।

आगाह, वि (का) स्थाप, नोदय, अभिज्ञ ।

आगे, कि वि (स अगे) अग्र, पुरत, पुर स्वाय (नव अन्य) २ समग्र, अभिमुखम्, मुखम्, सम्मुखम् (सब अन्य) ३ जीवनकाले, उपरिपत्नी ४ आगामिसमये ५ अनन्तर, तदनुरूपं ६ पूर्व ७ क्रोडे ।

—आना, मु, प्रत्युद्यम् (भा प न) ।

—निकलना, मु, अतिशी (अ आ से) ।

—पीछे, मु, अनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश २ प्रत्यक्ष परोक्ष च (वा) ३ पूर्व पश्चाद् वा ४ यथा वक्ताशम् ५ अक्रमम् ।

आग्नेय, वि (स) अग्नि, -मय-सवधिन् २ अग्निदेवताक ३ दाहक । स पु, (स न) शुष्क २ स्थिर ३ घूर ४ दीपनोषधम् । स पु (स पु) कार्तिकेय २ अग्रस्थ ३ देशविशेष ४ अग्निपूजक ५ ब्राह्मण ६ अग्निकोण ७ ज्वालामुख ।

—अछ, स पु (स न) अग्निवर्षकोऽल भेद ।

आग्नेयी, स स्त्री (स) अग्ने पत्नी २ अग्नि दीपनोषधम् ३ दक्षिणपूर्वादिशा ।

आग्रह, स पु (स) अति, निर्बन्ध, अनि, -याचना-प्रार्थना २ तत्परता, पराधनता ३ बल, आदेश ।

आग्रहायण, स पु (स) मार्गशीर्षमास ।

आग्रहायणी, स स्त्री (स) आग्रहायन मार्गशीर्ष, -पुर्णिमा ।

आग्रही, वि (स - हिन्) अविनेय, निर्बन्धवत्, दुराग्रह, स्वैरिन् ।

आघर्षण, स पु (स न) आघर्ष, मर्दन, सघर्षण, चूर्णनम् ।

आघात, स पु (स) प्रहार, आक्रमणम् २ प्रसारण, प्रक्षेप ३ वधस्थानम् ।

आघ्राण, स पु (स न) गन्धग्रहणम् २ अतिवृत्ति (स्त्री), पूर्णकामना ।

आचमन, स पु (म न) उपरस्पर्श, आच (चा) म, अलपानम् ।

—करना, कि स, आचम् (स्वा प से,) आचामति ।

आचमनी, स स्त्री (म आचमनीय >) आचमनोपयोगी चमसभेद ।

आचरण, स पु (स न) अनुष्ठान २ आचार, व्यवहार ३ स्वच्छता ४ रथ ।

आचरणीय, वि (म) अनुष्ठानार्थ २ कर्तव्य ।

आचरित, वि (स) कृत, विहित, अनुष्ठित ।

आचार, स पु (स) व्यवहार २ चरित, चरित्र, चरित्र, वृत्त, शीलम् ३ शौच, शुद्धि (स्त्री) ४ स्नानम् ५ आचमनम् ।

—भष्ट, वि (स) दुर्लभ, चरित्रहीन, अनाचार ।

—विचार, स पु (स - री) चरित्र मनोभावश्च २ चारित्र्यम्, दे 'आचार' ।

आचार्य, स पु (स) उपनेष्टु गुरु २ वेदा व्यापक ३ बरो कर्मोपदेशक ४ पुरोहित ५ सपाध्याय, अध्यापक ६ ब्रह्मसूत्राणां चरवार प्रपानभाष्यकारा सर्वश्रीशकररामानुजमध्वरक्ष माचार्या ६ वेदसाध्यवृत्त ७ प्रकाण्डपण्डित ।

—कुल, स पु (स न) शुककुलम् ।

आचार्या, स स्त्री (स) मन्त्रोपदेष्टी, वेदसाध्य कर्त्री, वेदसाधिका ।

आचार्यानी, वि स्त्री (स नी) आचार्यपत्नी ।

आचार्या, वि स्त्री (स) आचार्यसवधिनी ।

आच्छाद, वि (स) आच्छादित, आवृत २ शुभ, तिराहित ।

आच्छादक, वि, (म) आवरक, पिचायक, वेष्टक ।

आच्छादन, स पु (स न) आवरण, पुन, वेष्टन, अवशुठन, पिधान २ प्रच्छदपट ३ २ आवरणक्रिया ।

आच्छादित, वि (स) आवृत, पिदित, तिराहित ।

आच्छोटन, स पु (स न) अगुली, मोटन स्फोटनम् ।

आज, कि वि (स अग्र अन्य) वर्तमाने दिने २ अद्यत्, अस्मिन् काले । स ॥, वर्तमानो दिवस २ सप्रति, साम्प्रतम् ।

—कल, कि, वि (स अवलम्बम्) एतेषु दिनेषु
२ अपत्ये, अप श्वे (कश्यप), वा ।

—सक, कि वि अप यावत् पर्यन्तम्, अधुना
इदानीं यावत् पर्यन्तम् ।

—कल करना, मु, -शक्षिप (तु उ अ) ।

—कल का मेहमान, मु मरणासन्न, आसन्न
निधन, शुभ्रम् ।

आजन्म, कि वि (स) यावज्जीवम् २ जन्मन
प्रभृति ।

आज्ञासाहस, स स्त्री (का) परोक्षा अनुयोग
२ परोक्षार्थे प्रयोग ।

आज्ञा, स पु (स आर्थ >) पितामह ।

आज्ञाद, वि (का) दे 'स्वतन्त्र' ।

आज्ञादी, स स्त्री (का) दे 'स्वतन्त्रता' ।

आज्ञानु, वि (स) जानु अर्धोत्पद पर्यन्तम् ।

—बाहु, वि (म) अनुस्थबाहु २ दीर्घबाहु
३ वीर, एत ।

आजीवन, कि वि (म न) दे 'आज य' ।

आजीविका, स स्त्री (स) आजीव, वृत्ति
(स्त्री), उप, जीविका ।

आज्ञा, स स्त्री (स) आनि, ईश, शासन,
नियोग २ स्वीकृति अनुमति (स्त्री) ।

—देना, कि स, आनि समा, दिक्ष (तु उ
■), आह (प्रे आह्वयति) ।

—मानना, कि स, आहो अनुवृत्त (भ्वा
आ से)-पा, (प्रे पालयति) ।

—कारी, वि (स रिन्) आह्वा वचन, अनु
वर्तिन् प्राहिन् सेविन् पालक ।

—पत्र, स पु (स न) निर्देश भावेश, पत्रम् ।
पालक, वि (स) दे 'आह्वकारी' ।

—पालन, स पु (स न) आह्वा, अनुवर्तन
कारिता ।

—भग, स पु (स) आह्वतिकम्, आह्वोह
यनम् ।

आज्य, स पु (स न) शृङ्गम् ।

आटविक, स पु (स) अरण्य-वन्-वासिन्,
आरण्यक २ मार्ग दर्शक ।

आटा, स पु (स अट्म् वा अट >) गोघ्नम्
चूर्ण, अन्न, चूर्ण, छोट, पिछात्र, उदिक ।

—गीटा होना, (गरीबी में), म, दारिद्र्ये
वृष्टावस्थापन ।

आटे माल की फिक, मु, आजीविकाविन्ता ।
आटे माल का भाव मालूम होना, मु
-व्यवहारज्ञानम् ।

आटोकैट, स पु (अ) निरकुश-नृप शासक
२ स्वेच्छाचारि-स्वैरि, मानव ३ अस्तीमा
विकारसम्पन्नो जन ।

आटोकैसी, स स्त्री (ता) निरकुश रूप शास
नम् २ निरकुशता, स्वेच्छाचारिता ।

आटोप, स पु (स) आच्छादनम् २ आह
वर ३ दर्प ४ उदरशुद्धिदाशब्द ।

आठ, वि (स अट्न्) । स पु, उक्ता सटपा,
तद्व्योपकोटक (ट) च ।

—आठ औंस रोना, मु, अक्षुभारापाननम् ।

आठों प्रहर, मु, अष्टनिश, दिवानिशम् (अभ्य)

आठवों, वि (हि आठ) अष्टम (मी स्त्री) ।

आठवर, स पु (स) गभीरशब्द २ तुर्यवर
३ गजगर्जनम् ४ कपटवेव, दम्, मिथ्याप्री
जनम् ५ आच्छादनम् ६ पटमकप ७ पटह ।

आठ, स स्त्री (स अल = रोकना >) -व्यवधान,
तिरस्करिणी, प्रतिहोरा, अ (य) वनिका
२ आलय, शरणम् ३ प्रतिवध, विघ्न
४ इष्टकालवृद्ध ५ स्थूणा, वरस्त्रम् ।

आढ़ा, स पु (स आली >) रेखायुतो दल
भेद २ (पीतस्य) स्थूल पुरद, काष्ठम् । वि,
अनुप्रस्थ, दिग उत्तम, समस्थ २ तिर्दन्, जिह्वा
आड़े आना, मु, बाध् (भ्वा आ से)
२ विपत्तौ साहाय्य दा (तु उ अ) ३ दिव्
(अ उ अ) ।

आढ़े हाथों लेना, मु, निमग्न (तु) ।

आढ़, स पु (स आढक-कम्) चतु प्रस्थ
परिमाणम्, द्रोणचतुर्षोडश ।

आढ़त, स स्त्री (हि आढ़ता = जमानत
देना) परार्थविवत्र २ परार्थविकयप्रवृत्ति
(स्त्री) ।

आढ़ती, स पु (हि आढ़त) परार्थविक्रेतृ ।

आढ्य, वि (स) सम्पन्न, वनिन् २ युक्त ।

आढ्यक, स पु (स) सूर्य, प्रातः २ प्रताप,
गौरवम् ३ रोग, -वर ४ मुरजध्वनि ।

आततायी, स पु (स पिद्) अग्निद २ गरद,
विषद ३ शम्भवाणि ४ बनापह ५ क्षेत्र
हारिन् ५ दारुणहारिन् । (-यिनी स्त्री) ।

आतप, स पु (स) दिनचर्यास (न),
सुदृष्ट क मारुत २ चण्डना ३ च्चर ।
आतप, स पु (स न) छत्र, आतपधर्म,
वारणम् ।
आतपोदक, म पु (स न) मरीचिका मृग,
बल नृणा ।
आतिश, स स्त्री (पा) अग्नि ।
—वाणी, स स्त्री (का) अग्निमीडनवाणि
(न बहु), अग्निमीडा ।
आतशक, स पु (का) उपश मेरोगे ।
आतशी, वि (पा) आग्निव आग्नेय, २ अग्निज
३ अग्निजनक ।
—शीशा, स पु अग्नि, काच रफटिक ।
आतिथ्य, वि (स) अतिथि-सेवक-पूजक ।
आतिथ्य, स पु (स न) अतिथिसत्वा २ अति
ध्यायस्तु (न) ।
आतिथ्यध, स पु (स न) अतिथ्यत्व,
आधिक्य, बहुत्वम् ।
आतुर, वि (म) आतुर, व्याकुल, व्यग्र,
उद्विग्न, शरीर २ उत्सुक, उत्कण्ठित ३ दुग्धित
४ रोगिन् ।
आतुरता, स स्त्री (स) व्याकुलता, व्यग्रता
२ स्वरा, सम्रम ।
आतुरालय, स पु (स) चिकित्सालय,
वे० 'अस्पताल' ।
आम, वि (स आमन्) २ स्व, निज, स्वीय
स्वीय ।
—अभिमान, स पु (स न) स्वप्रतिष्ठा
स्वगौरवम् ।
—अवलम्बि, वि (स विन्) आमविश्वासिन्,
स्वाश्रित ।
—उद्धार, स पु (स) मुक्ति (स्त्री) ग्राह ।
—उद्वृत्ति, स स्त्री (म) आत्मव्यवस्थाम्
२ रक्षाचर्या ।
—घात, स पु (स) आत्म स्व निज, इत्या
घात वध, प्राण नीवित, त्याग-हर्म्य ।
—घात करना, कि स, आ मान हन्
(अ प न) ।
—घाती, वि (स) आम, घातक यानिन्
नाशिन् इन् ।
—ज, स पु (स) पुत्र २ कामदेव
३ रुधिरम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) ज्ञान-जीव, ज्ञानम्
२ महासाक्षात्कार ।
—त्याग, स पु (स) परहिताय स्वार्थ-त्याग ।
—दर्शन, स पु (स न) समाधिना
जीवेश्वरदर्शनम् ।
—निवृत्त, स पु (स न) आत्मसमर्पण,
सर्वस्वापणम् २ स्वविषये वधनम् ३ भक्तिभेद ।
—प्रवसा, स स्त्री (स) आमक्षाया,
स्वस्तुति निजनुति (दोनों स्त्री) ।
—भू, वि (स) निजशरीर २ स्वभू ।
स पु पुत्र २ कामदेव ३ मदान् (पु)
४ विष्णु ५ शिव ।
—विश्वास, म पु (स) स्व निज, प्रत्यय
विश्रम्भ ।
—विद्या, स स्त्री (स) अद्विद्या अध्यात्म
विद्या, आत्मज्ञानम् २ मोहनविद्या (= मैम
मरिजत) ।
—हया, स स्त्री दे 'आत्मघात' ।
—आमक, वि (स) अवित, रूप, युक्त, मय
(३ गद्यरमक = गद्य-रूप-मय) ।
आत्मा, स स्त्री (स आत्मन् पु) जीव,
चेतन, जीवात्मन् २ चित्तम् ३ बुद्धि (स्त्री)
४ अहङ्कार ५ मनस (न) ६ मदान् (न)
परमात्मन् (पु) ७ दह ८ धृति (स्त्री)
९ स्वभाव, धर्म १० सूय ११ अग्नि
१२ वायु ।
आत्मिक, वि (स) अध्यात्म-(समास में)
आत्म, विषयक सम्बन्धिन् २ स्वीय ३ मानसिक ।
आत्मीय, वि (स) स्वीय, स्वकीय । स पु,
स्वजन, बहु, मित्रम् ।
आत्मीयता, स स्त्री (स) बहुजन सौहार्दम् ।
आत्म्यनिक, वि (स) अन त, असीन,
अत्यधिक ।
आत्रेय, वि (स) अत्रिगोत्र, अत्रिसम्बन्धिन् ।
स पु अत्रिपुत्र ।
आत्रेयी, स स्त्री (स) अत्रिपरनी २ अत्रिपुत्री
३ आत्रगोत्रजनारी ४ रजस्वला नारी ।
आथर्वण, स पु (स) अथर्ववेदो ब्राह्मण,
पुराहित २ अथर्वपुत्र ३ अथर्ववेदे विहित
कर्मन् (न) ।
आदत्त, स स्त्री (अ) शील स्वभाव,
प्रवृत्ति (स्त्री) २ अभ्यास, नित्यप्रवृत्ति (स्त्री) ।

आदम, स ॥ (अ) आदिम, प्रजापति
(इत्थान) २ मनुष्य ।

आदमियत्, स स्त्री (अ) मानवता, मनुष्यत्व
२ सभ्यता, शिष्टता ।

आदमी, स पु (अ) मनुष्य, मनुष्यजाति
(स्त्री) २ दास ।

—यनना, मु सभ्यता शिक्ष (स्वा आ से) ।
फी कि वि, प्रतिमनुष्यम्, प्रतिजनम् ।

आदर, स पु (स) सभान, सत्कार,
सत्क्रिया, प्रतिष्ठा, भर्षणा अर्था ।

—करना, कि स, आद (द+कृ) (तु भ' अ),
सत्कृ, पूज भव' (चु) समन्, मभू (मे) ।

—पाना, कि अ, सख पुरस, कृ (कर्म),
आदृ (द+कृ) पूज्नेव (कर्म) ।

—से, कि वि, सादर, सप्रश्रवम्, आदरेण ।
आदरणीय, वि (स) मान्य, माननीय पूज्य,
सत्कार्य, पूजनीय ।

आदर्श, स ॥ (स) सुकुर दर्पण, आरमदर्श
२ प्रतिरूप, प्रतिमा, प्रतिमानम् ३ टीका,
माध्य व्याख्या ४ अनुदय, अनुपम ।

आदात, स स्त्री (अ० 'आदत' का बहु०) दे
'आदत' ।

आदाता, वि (स-तृ) प्रदीत ग्राहक, प्रापक ।
आदात, स पु (स न) ग्रहण, स्वीकार,
स्वाकरणम् ।

—प्रदान, स पु (स न) ग्रहणविरण,
दानादान २ परस्परविरण, व्याख्याकरणम् ।

आदाय, स पु (फा 'अदय का बहु०) दे
'अदय' ।

आधि, वि (स) प्रथम अग्रिम, आदिम, आध ।
स पु, उपक्रम, आरंभ २ मूल, उत्पत्तिहेतु ।
अ य-प्रभृति, -आध (समासात्त में) ।

—वधि, स पु (स) बाल्मीकि ।

—कारण, स पु (स न) मूलकारणम्
(प्रकृति ईश्वरो वा) ।

—से अन्त तक, कि वि, आध नम्, आदिमे
अन्त यावत् ।

आदिक, अण्य (स वि)-आदि, -आध,
-प्रभृति (सह समासात्त में) ।

आदित्य, स पु (सं) अदितिपुत्र २ देव
३ सूर्य ४ इन्द्र ५ वायु ६ वसु ७ विश्वे
देवा ८ मन्दारवृक्ष ।

—वार, स पु (स) रवि भानु, वार वासर'
आदिम, वि (स) प्रथम, आध, आधि ।

—निवासी, स पु, (स सिन्) आदिवासिन् ।
आदिष्ट, वि (स) आहूत, आह्वयित, लम्बाय,
प्रासादेश ।

आदी, वि (अ) अभ्यस्त, अभ्यामिन् ।
आदत्त, वि (स) सत्कृत, समानित, पूजित ।
आदेय, वि (स) ग्रहणीय, परि-प्रति,
-प्राप्त ।

आदेश, स पु (स) आह्वान, निदेश, शासन,
नियोग, देशना २ उपदेश ३ भगाम
४ ग्रहफलम् ५ वर्णस्थ वर्णान्तरोत्पत्ति (स्त्री,
-या) ।

आदेशक, वि (स) आह्वयक, निदेशक,
नियोजक, शासक ।

आदेशी, वि (स-शिन्) दे० 'आदेशक'
२ देवस्य, ज्योतिर्विद ।

आधत, कि वि (स न) दे 'आदि से अन्त
तक' ।

आध, वि (स) प्रथम, आदिम, आधि
२ अग्रय, प्रधान ।

आधा, स स्त्री (स) दुर्गा २ प्रतिपदा ।

आधोपात, कि वि, दे 'आदि से अन्त तक' ।

आध, वि (स अर्द्ध) सामि- (अण्य उ
सामिगुक्) ।

—आना, सं पु, अर्द्धाण ।

आधा, वि (स अर्द्ध) सामि । स पु, अर्द्ध,
अर्द्धम्, अर्द्ध-भाग-अण ।

—आना, स पु, अर्द्धाण गक ।

—स्तीस्ती, स स्त्री, अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त,
अर्द्धशिरोवेदना ।

—स्तीतर आधा बटेर, मु विप्रविचित्र
कसगत ।

आधान, स पु (म न) स्थापन २ व्यवसनम् ।

आधार, स पु (स) आश्रय, अवलम्बनम्
२ आलम्बनम् ३ पात्रम् ४ गृहभित्ति मूल,
वेदमभू (स्त्री) ५ आश्रयदायक पात्रक ।

—आधेय सबध, स पु (स) आश्रयार्थि
सबध (उ धृत्पात्रयो) ।

—होना, मु, स्वीका वृत्ति (स्त्री) भू ।

आधि, स स्त्री (स पुं) मानसी व्याध, चिन्ता
२ वचक, -वास, निदेश ।

आधिकारिक, स पु (स न) मूलव्यावस्तु
(न) २ कर्मधारिन् । वि अधिकारयुक्त ।
आधिक्य, स पु (स न) बाहुल्य, प्राचुर्य,
अतिशय ।
आधिद्विक, वि (स) देवपरित देवताद्वय
(उ अतिद्विष्टि) ।
आधिपत्य, स पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व,
अधिकार, शासनम् ।
आधिभौतिक, वि (म) मनुष्यपदवाग्निप्रदित
(उ सर्वदण्डयुक्तम्) ।
आधीन, वि दे 'अधीन' ।
आधी रात, स छा (स अद्विज) मध्यरात्रि,
मिथीय, रात्रिमध्यम् ।
आधुनिक, वि (स) नूतन, नवीन अयुना
वन इदानींन, भवानीन, ह्यपविक ।
आष्टन, वि (३) आश्रित, अवलम्बित ।
आधेय, स पु (स न) आश्रयस्थ वस्तु (न),
आश्रित पदार्थे । वि स्थापनीय न्यसनीय ।
आधोरण, स पु (स) हस्तिक, हात्तिक ।
आध्मान वि (स) उच्छ्वसन, वायुपूरित २ हृष्ट,
गर्वित ३ हृष्ट ४ ध्वनिम् ।
आध्यात्मिक, वि (स) ब्रह्मजीवविषयक, देह
चित्तजीवसत्त्वविन् (उ ऊपरनोदशोकादय) ।
आनन्द, स पु (स) आह्लाद, मुदा, आ-प्र,
-मोद समद, हर्ष प्रमद, शान्ति (स्त्री),
सुखम्, प्रसन्नता । वि, आनन्दित, प्रसन्न ।
—करना, कि अ, नन्द (स्वा प से) मुद
(स्वा प से) ।
—देना, कि स, आह्लाद-नन्द-प्रमुद (प्र) ।
—बधाई, स स्त्री अभिनन्दनम् २ ममलो
मव ।
—भगल, स पु (स न) आनन्द, मोद,
कुशलम् ।
आनन्दित, वि (स) प्रसुदिन, शानन्द,
सुखिन् ।
आन स स्त्री (स आनि पु स्त्री) मोमा,
मर्दान २ शपथ, समव ३ विजयवीरणा
४ प्रतिष्ठा, स-प्रति, श्रव ।
—रखना, मु, प्रतिष्ठा पा (प्रे पालयति) ।
आन, स स्त्री (फा) हवि (स्त्री),
सौन्दर्यम् २ अभि-आन ३ लज्जा,
सकोच ।

—वान, स स्त्री, वैभव, शोभा, हावभावा ।
—वान बाला, वि, सुवचन, सुपम ।
आन, स स्त्री (अ) क्षण, पल, निमेष ।
—की जान में, मु सप, सति, आशु
(सब अन्धकार) ।
आनक, स पु (स) पण्ड, भेरी, मृदंग
२ स्तनपित्तुर्मेव ।
आनक, स पु (स न) आत्य, मुख, वदनम् ।
आनन-फानन, कि वि (अ) क्षणन, क्षणात् ।
आनदेख, वि (अ) मान्द ।
आनदेरी, वि (अ) अवैगनिक, आदरवृत्ति ।
—मैनिस्ट्रेट, स पु (अ) अवैगनिको दण्डाध्यक्ष ।
आना, स पु (म आणक) कन्दकस्य बोट-
होडा २ कन्दविद वस्तुन बोटहो भाग ।
आना, कि अ (स आगमनम्) आगम्
(स्वा प से) आया (अ प से) आगम्
(स्वा प से) स पु, आगम, उपस्थान,
आगमनम् ।
आई-गद, (वात) वि, अतीता, विस्तृता
(वाचा) ।
आप दिन, कि वि, अन्वह, प्रतिदिनम् ।
आ बमकना कि अ, अकस्मात् आगम ।
आनाकानी, स स्त्री, अप-पप, देह छेदन
परिहरणम् २ अनवधानम् ३ कर्म अवनम् ।
आनाकानी करना, कि अ, अप-पप, दिश
(पु उ अ), छेदन परिहृ (स्वा उ अ) ।
—जाना, स पु, गतागतम् २ पुनर्जन्मम् (न) ।
आनीत, वि (स) आशय दन, उपस्थापित,
उपनीत ।
आनुकूल्य, स पु, (स न) 'अनुकूलता' दे ।
आनुपूर्वी, स स्त्री (स) अनुक्रम, आनुपूर्वी,
परवरा ।
आनुमानिक, वि (स) अनुमान-तर्क, सिद्ध,
समा-व, काल्पनिक ।
आनुषंगिक, वि (स) भास्यगिक, गीण ।
आन्वीक्षिकी, स स्त्री (स) तर्कविद्या, न्याय
२ आभविद्या ।
आप, सब (स आत्मन् >) स्वयं स्वन
(अन्ध), २ भवत् (भवनी स्त्री) ।
—चीती, स स्त्री स्वानुमूल, प्रत्यक्षीकृत ।
आप, स पु (स आप स्त्री बह) पानीय,
जलम् ।

आपगा, स स्त्री (स) नदी, तटिनी ।
आपकाल, स पु (स) दुष्काल दुस्तमय
२ विपत्ति (स्त्री) ।

आपत्ति, स स्त्री (स) दुःख, क्लेश २ विपत्ति,
विपद, आपद (सब खा) ३ कुसमय
४ दोषारोपणम् ५ आक्षेप, अपवाद ।

आपद, स स्त्री (स) दे 'आपत्ति' ।

—ग्रस्त, वि, आ-वि, -पत्र आर्त्त दुर्गन् ।

—धर्म, स पु (स) विपन्नवर्तमान, कुसमय
व्रम ।

आपदा, स स्त्री, दे 'आपत्ति' ।

आपन्न, वि (स) आपदग्रस्त २ प्राप्त ।

आपस, स पु (हि आप+से) सम्बन्ध ।
आपुत्र बन्धुत्वम् ।

—का, वि, आत्मीयानां, वन्धुनाम् २ पर
स्वरस्य, अ योऽयस्य, मिथ (अन्व), इतरे
तरस्य ।

—मै, कि वि, परस्पर अन्यो य मिथ ।

आपसी, वि (हि आपस) पारस्परिक ।

आपा, स पु (हि आप) आत्मनः, स्वमत्ता
२ गर्व ३ चैनय चैनना ।

—भाषी, स स्त्री, स्वार्थवर्ता, स्वस्वहितचिन्ता
२ सपथ, अहमहमिका, अह, धुविका प्रथमिका ।

—पंथी, वि कुमागिन्, कुपयर्गामिन् ।

आपे मै आना, मु, चैतन्यलभ ।

आपे मै न रहन्, मु, क्रोधदिमि बुद्धि-
मति-नाश ।

आपात स पु (स) पतन, भवननि (स्त्री)
२ अकस्मात् उपागम ३ आरम्भ ४ अत ।

आपातन, कि वि (स) अवस्थान्, सहसा
अकाण्ठे २ अ ते, अ नन ।

आपाती, वि (स-निद्) पतन अवतरण
बन्धु २ आक्रामक ३ भाविन् ।

आपाद, स पु (स) प्राप्ति-अवाप्ति (स्त्री)
२ पुरस्कार ३ पारिणयिकम् । अन्य आन
रणम्, पादपयत्नम् ।

आपेक्षिक, वि (स) आवेश २ पराश्रित,
परावलम्बिन् ।

आप्त, वि (स) अधिगत प्राप्त, लब्ध २ शुश्रूष,
दय ३ साक्षात्पश्यन् । भागितृम् । स
पु-श्रुति २ श्रुत्यप्रमाणम् ।

—काम, वि (स) पूर्ववाम, सुप्त, सतुष्ट ।

आप्ति, म स्त्री (स) लाभ, प्राप्ति (स्त्री)
आप्नुत, वि (स) स्नान, वृत्तमान २ सिद्ध,
उत्तिन, आर्द्र २ स पु, स्नानम्, गृह्णिन् ।

आकृत, स स्त्री (अ) दे 'आपत्ति' (१-३) ।

—का परकाळा, स पु, लोकवदक, कुचेष्टन
२ क्षिप्रकारिन् ।

आफिस, स पु (अ) वार्दारूप ।

आच, स स्त्री (फा) वाति सुनि (स्त्री),
२ उत्सव ३ शोभा स्त्री (स्त्री) । स पु,
आच (स्त्री बहु) जलम् ।

—फारी, स स्त्री (फा) मधनिष्पन्नशाला,
शुद्ध, सधानी २ मादकद्रव्यनिरीक्षणी शासन
विभागविशेष ।

—ताव, स स्त्री (फा) शोभा, विभूति (स्त्री) ।

—दाना, स पु (फा) आ-उप, जीविका
२ जन्म न अन्नजलम् ।

—पाही, स स्त्री (फा) जलसक, प्लावनम् ।

—शार, स पु (फा) निशोर, जलप्रपात ।

आवेहवात स पु (फा) अमृत, शुद्ध ।

आवेहवा, स स्त्री (फा) जलवायु (न) ।

आवद्ध, वि (स) निगूहीत, निषधित ।

आवन्त, स पु (फा) कोविदार, गुणपन्न ।

—का कुम्दा, मु अतिकृपणी मनुष्य ।

आबाद, वि (फा) लोकाधुविन जनाकां
२ उर्वर, बहुशस्य ३ सपन्न ।

आबादी, स स्त्री (फा) जनाकोणस्थानम्
२ जनमर्या ३ शस्त्रवा भूमि (स्त्री) ।

आबाध, स पु (स) कष्ट, वदना २ क्षति-
हानि (स्त्री) ।

आधी, वि (फा) जलीय, जलमय ३ जल
वर्ण, श्वस्त्रील ।

आद्दिक, वि (स) वापिक सांस्मरिक
(की स्त्री) ।

आभरण, स पु (स न) अलङ्कार, मदन
मूल्यान् २ पोषण, मर्यादणम् ।

आभा म स्त्री (स) वाति दीप्ति (स्त्री)
२ प्रति विवच्छाया ।

आभाण्ड, स पु (स) लावाति (स्त्री) ।

आमार, स पु (स) उपचार २ गार्हस्थ्य
भार ३ मार, मर ।

आमारी, वि (स रिन्) वृत्तक, वृत्तवदिन् ।

आभाम, म पु (स) प्रति विवच्छाया
२ मकेन ३ मिथ्याज्ञानम् ।

आभिचारिक, वि (स) ऐन्द्रबालिक मायात्मक,
मायामय मायिक

आभीर, स पु (स) गोप ।

आभूषण, स पु (स न) ३ 'आभर' ।

आभ्यन्तर, वि (स) अन्तस्थ आन्तर,
गर्भस्थ, अन्तर्गत आभ्यन्तरिक ।

आभ्युदयिक, वि (स) मासार्थिक शकर शुभ ।

आमन्त्रण, म पु (म न) अज्ञानम्
० निमन्त्रणम् ।

आमन्त्रित, वि (स) आकारित आहूत
० निमात्रित ।

आम्र, स पु (स आम्र-म्र) १ (वृक्ष)
आम्र रमाल सहकार, आम्रार वन-तटून
बोविलो-सव ० (फल) आम्र आम्र रमाल
सहकार फलम् ।

—के आम, गुठली के आम, मु उमयलो
लाम ।

—राने से काम या पेड गिनने से, मु,
आम्रे पयोजन न मु दुसगनवा ।

आम्र, वि (स) अपह, ३ 'वच्चा' ।

आम्र, स पु (स न) अम्रश्लेष्मन् (पु)
२ अजीर्णरोगमेव ।

—अतिमार, स पु (स) अतिसारभे,
मपहणी ।

आम्र, वि (अ) सामाय, प्राकृत अवर,
२ विरयात, प्रसिद्ध ।

—कहम, वि (अ) सुशेष, सुविशेष ।

आम्र, स स्त्री (फा) आम्रमन २ आय ।

आम्रदनी, स स्त्री (फा) आय, अनाम ।

आम (मा) मरु, स पु (स न) शोक
रन् २ दुःख वृत्ता ।

आमना सामना, स पु (हि सामना)
समगम ।

आमने आमने, क्रि वि (हि सामना) ।
परस्परम् पुरत अयोऽवस्थ सम्मुखम् ।

आमय, स पु (स) रोग, व्याधि ।

आमयायी, वि (स विन्) रुग्ण, रोगिन् २
अजीर्ण भक्षण प्रत्य ।

आमरण, क्रि वि (स न) मृत्यु यावत्,
निधनावधि, आकृत्यो ।

आमलकी, स स्त्री (स) लघु-क्षुद्र, आमलक ।
आमला, म पु (स) दे 'आवला' ।

आमाशय, स पु (स) अमाशय, अठर रम् ।

आमिष, म पु (स पु न) मांस २ भोग्य
पदार्थ ३ लोभ ४ उत्कोच ।

आमी, स स्त्री (हि-आम) आभ्रकम् ।

आमुल, स पु (स न) रूपकप्रत्यावना ।

आमोद स पु (ता) आनन्द, मनोविनोद
२ सुगन्ध ।

—प्रमोद, स पु, आहाद, इयं २ हान्य
विजोनी अमाका ।

आम्र, म पु (स) दे 'आम' ।

आयँती पायँती, स स्त्री (अनु + फा पाय
ताना) खटवाया शीषपादभागो ।

आय, स स्त्री (म पु) धन अर्थ, आगम
लोक ।

—व्यय, स पु (स व्ययी) आगमोत्सर्गो ।

—व्ययिक, स पु (स न) व्याकरण
(-व्यट) ।

आयत, वि (स) विस्तृत, विशाल ।

आयत, स स्त्री (अ) इजीक कुरान, वाक्यम् ।

आयसु, स स्त्री (स आदेश) आशा ।

आया, क्रि अ (हि आना) आगत ।

—गया, स पु, अतिथि ।

आया, स स्त्री (पुन) नात्री, मातृका ।

आया, अन्य (फा) किम्, यत् ।

आयात, स पु (स न) विदेशादानयनम्
२ विदेशादानीत पण्यसमूहः ।

आयास, स पु (स) प्रयत्न ० प्रस ।

आयासक, वि (स) अम, अनक अनादक ।
कष्टकणेश प्रद ।

आयु, स स्त्री (स आयुस न) दयस (न),
बोवितकाक नित्यम्, विजोविनम् ।

आयुक्त, वि (स) नियुक्त २ सयुक्त ।

आयुध, स पु (स न) अस्त्र शस्त्र, प्रहरण,
हति (स्त्री) ।

आयुषागार, म पु (स न) शस्त्र अस्त्र,
आधार गृहम् ।

आयुर्वेद, स पु (स) वैद्यक, वैद्यशास्त्र,
चिकित्साशास्त्रम् ।

आयुष्मान्, वि (स) (स मर) चौर
दोष, जीविन् । (आयुष्मती स्त्री) ।

आयुष्य, वि (स) पथ्य । स पु नयस (न) ।

आयोजन, स ॥ (स न) द्रव्याभादन सामग्रीसंपादनम् २ नियुक्ति (स्त्री) ३ उद्योग ४ सामग्री ।

आयोद्धीन, स स्त्री (अ) जम्बुवी, नीलीनम् ।
आरभ, स ॥ (स) उपक्रम, प्रारम्भ, आदि २ शरपति (स्त्री) ।

—करना, कि स, आ प्रा रभ, प्र उप, क्रम् (सब भ्वा आ ॥)

आर, स पु (स न) मुट, छोड़ आयसम् २ दितकम् ३ तट दटीटा ४ कोण ५ अर अरम् ।

आर, स स्त्री (स अकम् = व) वृक्षिका दीना दश, दशचतु २ अकुश ३ कौल ।

आर, स स्त्री (स आरा) चर्मप्रभेदिका ।

आर, स पु (हि अर) आग्रह निर्वप ।

आर, स स्त्री (अ) संवोध, लज्जा ।

आरक्त, वि (स) ईश्वर २ लोहित ।

आरण्य, वि (स) वन, वनजग वनसन्निधिम् ।

आरण्यक, वि (स) ३ आरण्य । स पु (स न) प्रपण ।

आरती, स स्त्री (स आरात्मिकम्) नीराजना नम्, देवमूर्तिपरितो दीपचालनम् २ नीराजनापात्रम् ३ नीराजमारुचीयम् ।

आरवार, स पु (स आरवारम् >) तटद्वीप, पारवार रौ ३ । कि नि आवारवारम्, अवारार पार पावत् आधत्, समग्रम् ।

आरब्ध, वि (स) उपकांत, कुतारम्भ ।

आरभटी, स स्त्री (स) क्रोधाद्यप्रभावानां चेष्टा २ रूपके यमवबहुको वृत्तियेद

आरसी, स स्त्री (स आरसी) दण्ड, मुकुर २ दक्षिणहस्तशुभ्रभूषणम् ।

आरा, स पु (स आरा >) कृत्स्न चम् । करपत्र, पत्रदारण २ चर्मप्रभेदिका ३ वर, अरम् ।

—कदा, स पु (फा) कावचिक, द रदारण ।

—कदा, स स्त्री कवचैर्न काष्ठविपाटनम्

आरादृश, स स्त्री (फा) परिश्रुति (स्त्री), अरविद्या, परिश्रिया सख्या ।

आराधक, वि (स) उपासक, पूजक ।

आराधन, स पु (स न) नक्ति (स्त्री) सेवा, परिचर्या २ तर्पण, तोषण, प्रसादनम् ।

आराधना, स स्त्री (स) ३ आराधन ।

—करना, कि स, पूज (चु), उपास (अ वा से) अभि, अर्च (भ्वा प स), आराध (प्रे) ।

आराधनीय, वि (स) आराध्य सेवनीय, पूजनीय, अर्चनीय ।

आराम, स ॥ (स) उपवन उद्यान पुष्प वाटिका ।

आरामाधिपति, स प्र (स) उपवन उद्यान अधिकारिन् अधिकारिण ।

आराम, स पु (फा) छत्रम् २ विश्राम ३ स्वस्थम् ।

—करना, कि अ, १ कार्याद निवृत्त (भ्वा आ से) २ विश्राम (दि प से) ३ शी (अ आ से) ।

—कुरसी, स स्त्री, विश्रामासदी ।

—तलव, वि, अकस स्रुत-श्रुत ।

आरास्ता, वि (फा) अकटुण परिष्कृत सज्ज ।

आरी, स स्त्री (हि आरा) श्लोककव क्रकचक करपत्रकम् २ दद्यामकम्नो लोहवील ३ आरा चर्मप्रभेदिका ।

आरूढ, वि (स) अधिकृत अध्यासीन शृता रोहण २ दृढ, स्थिर ।

—होना, कि अ, आ अपि रह (भ्वा प अ), अध्यास (अ आ से) ।

—करना, कि स आ अपि रह (प्रे आरो पयति) ।

आरोग्य, वि (स आरोग्यम् >) नीरोग, स्वस्थ । स ॥ (स न) द 'अरोग्यता ।

आरोग्यता, स स्त्री (म आरोग्यम्) स्वास्थ्य नीरोगता, अनामयम् ।

आरोप, स पु (स) आरोपण संस्थापन स्थिरीकरणम् २ स्थाना तरे आरोपण स्थापन वा ३ अम ४ वस्तुनि वर वनरूपैक्यम् नम् ।

आरोपण, कि स (म आरोपणम्) (स्थाना तरे) आरूढ (प्रे आरोपयति) निविश (प्र) मग्ननि स्थ (प्र)

आरोपित, वि (स) रथ पित निहित, निवेशित ।

आरोह, स पु (स) उद्गम, उदय, अधिरोहणम् २ आक्रमणम् ३ वज्रादिपृष्ठेऽधिरोहणम् ४ उत्तमयोनिप्राप्ति (स्त्री) ५ कारणावकार्यप्रादुर्भाव ६ विकाश ७ स्वरोत्कर्ष ८ निगम ।

आरोहण, स पु (स न) उद्गमन अधिरोहणम् २ अंकुरप्ररोहणम् ३ सोपान, नि श्रेणी ।

आरोही, वि (स हिन्) आरोहक उद्गामी २ उन्नतिशील । स पु उत्कर्षोन्मुख स्वर २ आरूढ, अव्यदिपृष्ठत्वं ।

आर्जव, स पु (स न) अजुता सरलता निष्कपटता २ सुकरता ३ व्यवहारशुद्धि (स्त्री) ।

आर्जुनि, स पु (स) अजुनपुत्र अभिमन्यु । आर्ह, स पु (अ) कला, शिल्प २ कौशल, नैपुण्यम् ।

आर्दिष्ट, स पु (अ) निर्वध, छेद २ धारा नियम ।

आर्दिष्ट, स पु (अ) कलाकार, कलाविद २ चित्रकार ।

आर्हर, स पु (अ) आदेश, आज्ञा २ वस्तुनिर्माण पदार्थप्रेषण, आदेश ।

आर्दिर्नैस, स पु (अ) अघ्यादेश २ पुद्गलानि (न बहु) ।

आर्त्त, वि (स) व्यथित, पीडित २ दुर्गत ३ रुग्ण ।

—नाद, स पु, आर्त्तध्वनि, आर्त्तस्वर ।

आर्त्ति स स्त्री (स) पीडा, व्यथा २ आवद विपद (स्त्री) ।

आर्थिक, वि (स) धन-द्रव्य वित्त, विषयक भौतिक ।

आर्त्ते, वि (स) द्विज, उग्र, उष्ट, सित ।

आर्द्रता, स स्त्री (स) द्विगता, सरसता ।

आर्द्रा, स स्त्री (स) वधनक्षत्रम् २ आपा दारम्भ ३ आर्द्रकम् ।

आर्य, वि (स) अष्ट भट्ट २ माय, पूज्य ३ कुलीन सरज्जलज (आर्या स्त्री) । स पु (स) सज्जन, कुलीनमानव २ पूज्यमनुष्य ३ स्वामिन् ४ शत्रुर ५ जातिविशेष ६ आर्यजातीय ७ धुर ८ मित्रम् ।

—आवर्त स पु (सं) विध्यहिमाचलयोर्मध्यदेश २ भारतवर्षम् ।

—पुत्र, स पु (स) अष्टस्य पुत्र २ पति ।

—समा-र, स पु (स) महश्चिदयानन्द संस्थापित समानविशेष ।

आर्या, स स्त्री (स) पार्वती २ शत्रू (स्त्री) ३ पिनामही ४ छन्दोभेद ।

आर्य, वि (स) १ ३ अर्थि, सवधिन् प्रणीत सेवित ४ वैदिक ।

—प्रयोग स पु (स) प्राचीनप्रधानामर्वाचीनव्याकरणविरुद्धा प्रयोगा ।

आलकरिक, वि (स) अलंकारविषयक २ अलंकारपुत ३ अलंकारविद् ।

आलस्य, स पु (स) अवलस, आश्रय २ गति (स्त्री), शरणम् ।

आलस्य, स पु (स न) अवलस, आश्रय २ रसोत्पत्ती विभावभेद (सा) ३ कारण, साधनम् ।

आलन, स पु (इ) लेपनाय कर्ममभिनिवृत्तादिकम् २ शाकादिमिश्रित घणकादिभूषणम् ।

आलमारी स स्त्री, दे 'अलमारी' ।

आलय, स पु (स) गृहम् २ स्थानम् ।

आलयाल, स पु (स न) आवाल, आचार ।

आलस, स पु, दे 'आलस्य' ।

आलसी, वि (हि आलस) अलस, तद्दिल, तद्राज, शीतक, तुदपरिभूष, उद्योगविमुख ।

आलस्य, स पु (स न) माय, तद्विका, जाड्य, कार्यद्वेष ।

आला, स पु (स आलय >) भित्तिस्तमादिषु दीपकाद्यर्थ स्थानम् २ काष्ठफलक ।

आला, वि (अ) उत्तम, श्रेष्ठ ।

आलान, स पु (स न) गमनधन, स्तम्भ रज्जु (स्त्री) २ बधन, रज्जु ।

आलाप, स पु (स) सलाप, समापण, कथोपबधन, वार्त्तालाप २ तान, सतरवर साधनम् (संगीत) ।

आलापना, कि स (स आलापन >) गै (स्वा प अ) ।

आलिङ्गन, स पु (स न) परि (रो) रभ, परिष्कण, सन्देश, उपगृहण दिग्वा ।

—करना, कि स, आलिङ्ग (स्वा प से), आलप्य (दि प अ), उपगुद (स्वा उ से, उपगृहति) ।

आलि, स स्त्री (स) वयस्या, सखी
सदचरी २ पत्नि (स्त्री) ३ सेतु ४ रेखा ।

आलि, स ॥ (स) वृद्धि २ अम ।

आलित, वि (स) अलित २ अलित ३
विहित ।

आलित, वि (स) प्रवि लित, दिग्ध, भक्त ।

आलिम, वि (श्र) पठित, विदित, बहुश्रुत,
बहुधीन ।

आली, स स्त्री (त) सखी वयस्या २ पत्नि,
पति (स्त्री) ।

आलू, स पु (स मातु) सुकन्द शुभ्राङ्ग,
शुद्धकन्द इम् ।

—बुधारा, स पु, आलूक, आलूक, रत्नक
मन्त्रकम् ।

आलूचा, स पु (फा) १ आलूक वृणभेद
२ आलूकम्, फलभेद ।

आलेख, स पु (स) लेख, लेख्य, लिखितम्
२ लिपी लिपि (स्त्री) ।

आलेख्य, स पु (स न) विश्व प्रतिरूप ।
वि लेखार्थ ।

आलीक, स पु (स) मा, आभा प्रभा
प्रधान २ दिव्य दीप्ति कान्ति (मय स्त्री) ।

आलोचक, वि (स) समालोचन समीक्षक
२ दृष्टक ।

आलोचन, स पु (स न) शुभनेत्र परीक्षण
निरूपण परीक्षा, सम्, आलोचना २ दृष्टनम् ।

आलोचना, स स्त्री (स) २ 'आलोचन ।
आलोचनम्, स पु (स न) मथन मथ
२ प्रगाढविचार ।

आलोचित, वि (स) मथित २ सम्भोमित
३ विचारित ।

आलूक, स पु (देश) वीरकण्ठ दम (न)
२ महोपायानी प्राचीनो वीरविशेष ३ विस्तृत
वर्णनम् ।

आवभृशत, स स्त्री (हि आना + स भृश)
संभार, उपचार सेवा, पूजा ।

आवरण, स पु (स न) आच्छादनं पुत्रं
२ आच्छादनवस्त्र प्रच्छाद ३ निरस्तरिणी,
व्यवधान ४ कोश, बोध, वष्टनम् ५ भयम्
(न) पञ्चम् (हि दल) ।

—पत्र, स पु (स न) मुख पृष्ठ पत्रम् ।

आवत्त, स पु (स) अवत्तम्, अवत्तक

भृति (स्त्री) २ अवष्टजलो मेघ ३ राजा
वर्त्त रत्नभेद ।

आवर्तक, वि (म) आ परिवर्तमान,
पूर्णयमान ।

आवर्तन, स पु (स न) परि भ्रमण,
या परि वर्तनम् २ विलाडनम् ३ पुन पुन
याव आवृत्ति (सव स्त्री) ।

आवर्तनी, स स्त्री (स) युवा २ स्त्री युवा
३ चमत्त सम ।

आवर्त्ति, वि (म) १ अवर्त्तक वस्त्रीभूम् ।

आवली, स स्त्री (म) आवलि पत्ति तपि
(सद स्त्री) ।

आवरण, स पु (स न) अवयवयता २ ३
अनिवार्य काय-फलम् ।

आवरण्यक, वि (स) अवयवयता, शीघ्रकार्य,
गुरुर्य २ अनिवार्य ।

आवरण्यकता, स स्त्री (स) आवरण्यकर,
अपेक्षा ३ प्रयोजनम् ।

आवरण्यकीय, वि, दे 'आवरण्यक ।
आवा, स पु दे आना ।

आवागमन, स पु (हि आना + स गमनम्)
पुनरुत्पत्ति (स्त्री), पुनर्नम् (न०),
प्रेत्यभाव, देहा तरमाप्ति (स्त्री) ।

आवाह, स स्त्री (फा) शब्द, नाद स्वन,
स्वनि बोध २ गानस्वर ३ उच्चस्वर ।

—उठाना, सु, विपरीत वद (भ्वा प मे) ।

—रैठना, सु, स्वरमय अद् (दि भा से) ।

आवाह, वि स्त्री (फा) परिभ्रमक, अहर्मेय
२ अद्यागनिवास ३ दुष्ट जालम् ।

आवास, स पु (स) गृह गेह मन्त्रम् ।

आवाहन स पु (स न) मन्त्रैर्वचनश्रवणम्,
आवाहनम् २ निमन्त्रणम् ।

आविर्भाव, स पु (स) प्रकाशनं प्रवर्त्त,
विवृति (स्त्री) २ उत्पत्ति (स्त्री) ।

आविर्भूत, वि (स) प्रकटित प्रकाशित
२ उत्पन्न ।

आविष्कर्ता, वि (स कर्त्) आविष्कारक,
प्रवर्द्धित प्रकाशक वक्त्रक ।

आविष्कार, स पु (म) अद्यातलभप्रकृष्टनम्
२ अतुल्यवस्तुनिर्माणम् ३ प्रवृत्त, प्रावृत्त्यम् ।

आविष्कारक, वि (स) दे 'आविष्कर्ता ।

आविष्कृत, वि (स) प्रकटित, प्रकाशित
२ प्रथम निमित्त रश्मि ।

आविष्ट, वि (स) भूतप्रेतादिपीडित
२ अभिभूत ।

आवृत, वि (स) प्रसमा आ, च्छादित,
मवृत पिहित २ परिवृत, वल्लित ।

आवृत्ति, स स्त्री (स) अव्यास किया
ज्ञानत्य प्रवच २ अध्ययनम् ।

आवेग, स पु (स) आवेश चित्तोद्वेग,
उत्तेजन, वहीरणम् २ त्वरा ३ सपारिमाव
भेद (सा) ।

आवेज्ञा, स पु (फा) प्रालम्ब, लोचक ।
आवेदक, वि (स) निवेदक, प्रार्थिन् ।
(स पु) अभियोगिन् वादिन् ।

आवेदन, स पु (सं न) दे निवेदन ।

आवश, स पु (स) आवेग, आतुरता
२ अपाप्ति (स्त्री), संचार ३ प्रवश
४ भूतबाधा ५ अपरमारोग ।

आवेष्टन, स पु (सं न) गोपन, निगूहनम्
२ अवगुह्यन, पिथन पुट, कोश ।

आवेष्टित, वि (स) अवगुह्यन, आवृत्त ।

आशका, स स्त्री (स) सदेह, सशय
२ अनिष्टभावना ३ भय वास ।

आशान्ति, वि (स) गीत, वसन ३ सदे
हात्मक ।

आशसा, स स्त्री (स) अपेक्षा आशा
२ इच्छा, वाञ्छा ३ कथनम्, चर्चा ।

आशसित, वि (स) अपेक्षित, आकाङ्क्षित,
इष्ट २ कथित, वक्षित ।

आशसी, वि (स सिन्) आशसु
अपेक्षी, आशक्षक, प्रत्याशिन् ।

आशना, वि (पा) परिचित, अभिज्ञ ।
स पु जार, प्रणयिन् । स स्त्री प्रेयसी, काता ।

आशनाई, स स्त्री (फा) मैत्री सख्यम् ।
२ प्रणय, अनुराग ।

आशय, स ॥ (स) तात्पर्य, अभिप्राय,
अर्थ २ वामना ३ स्थान आधार ४ गर्न ।

आशा, स स्त्री (म) आशसा आकाङ्क्षा,
अपेक्षा २ स्मृदा, वाञ्छा, मनोरथ ३ दिक्षा
४ ऋषयणापते पुत्री ५ रामभेद ।

—करना, कि अ, आशम (भ्वा आ से)
रु २ प्रति अय, इय (भ्वा आ से), आशास
(भ्वा आ से) ।

—अतीत, वि (स) आशसाधिक ।

—वाद, स पु (स) सदाशावत्तासिद्धान्त ।

—चान्, वि (स) साध, आशान्वित ।

आशिरु, वि (अ) प्रणयिन्, अनुरागिन्,
आसक्त, अनुरक्त ।

आशिष, स स्त्री (स आशिम्) दे भाशोर्गर् ।

आशीर्वाद, स पु (स) आशिस (स्त्री) आशी
वचन, हितासन, मन्त्रप्रार्थना, आशान्वय,
शुभकामना ।

—देना, कि स आशिष दा (जु व भ),
दि प्रायः कोट व आशीर्वाद के रूपों से
(उ पुत्र आप्नुहि आप्त्वा वा) ।

आशु, कि वि (स) शीघ्र हुन, सत्वर
(सब अण्य) ।

—कवि, स पु (स) सभ वाच्यकार ।

—तोष, स पु (स) शिव ।

आशुग, वि (स) शीघ्र हुन तीव्र-नामिन् । स
पु (स) बाधु २ बाण ।

आश्चर्य, स पु (सं न) विस्मय, कौतुक,
चमत्कार, चित्र, अद्भुतम् ।

—करना, कि अ, विरिम (भ्वा आ अ) ।

—जनक, वि (स) विस्मापक, अद्भुत, विशिष्ट ।

आश्रम, स पु (स) उपवन मुनिवसति
(स्त्री) २ मठ, विहार ३ विश्रामशाला
४ मनुष्यायुष चत्वारो विभागा (मन्त्रवर्ष
गृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाश्रमा) ।

आश्रय, स पु (स) भव आ-लभ आभार
२ अवलम्ब, उपस ३ शरण, गति (स्त्री)
गृह, सदनम् ।

—दाता, वि (स रु) रक्षक, रक्षित्, वाद ।

आश्रित, वि (स) आभयप्राप्त, अवलम्बित
२ अधीन, शरणागत । स पु, सेवक, दास ।

आश्रासन, स ॥ (सं न) सात्त्विक, आश्रा-
प्रदान, समाश्रासन, प्रोत्साहन, उत्तेजनम् ।

आश्रित, स पु (स) आश्रयज शारद, इष ।

आषाढ, स पु (स) अषाढ, शुचि ।

आस, स स्त्री (स आशा) आशमा २ लाडला
३ आश्रय ४ दिक्षा ।

आसक्त, वि (स) उत्पर, लीन, मग्न, प्रमित
२ अनुरक्त बदराग प्रणयिन् ।

आसक्ति, स स्त्री (स) उत्परता, लीनता,
मग्नता २ अनुराग, प्रेमन्, काम ।

आसन, स पु (सं न) उपवेशनप्रकार

२ स्थिति (स्त्री) ३ अष्टौगयोगस्य तृतीयभागम्
४ उपदेशनाधार, पीठ ५ साधुवसति ६
नितम्ब ७ शत्रुदुर्गादीनवरूप्य स्थिति ।

—ढोलना, सु, चनो विक्र (कर्म) ।

आसल, वि (स) समीप, निकट, निकटस्थ ।

—प्रसवा, वि स्त्री (स) निकटप्रसूति (स्त्री) ।

—भूत, स पु, वर्तमानसमूहो भूतकाल ।

आस पास, कि वि (अनु आस+स पार्थ)
परित अभिन (दोनों द्वितीया के साथ),
समलन, समताए, विषयक, सर्वत (सब
अन्व) ।

आसमान, स पु (पा, स अश्मान >)
गगन, दे आकाश २ स्वर्ग ।

—के सारि तोड़ना, गु, असमवायिकायांशिकु ।

—को चूसना, गु गगनचुम्ब(श्वा प से),

—मे याते घरना भ्रम वष (श्वा प से) ।

आसमानी, वि (फा) आकाशीय २ ईश्वरी ।

आसरा, स पु (स आश्रय) अवलम्ब,
आधार २ मरणभोग्याद्या दे आश्रयद ४ शरण,
गति (स्त्री) ५ प्रतीक्षा ६ आद्या ।

—देना, कि स, रक्ष (श्वा प से) ।

—लेना, कि अ, आदि (श्वा उ से),
शरण गम् ।

आसब, स पु (स) सघभेद २ सुरा, मदिरा
३ औषधप्रकार ४ दे 'अरक' ।

आसा, न स्त्री दे० 'आश' ।

आसा, स पु (अ असा) सुवर्द्धक रजतवटि
(पु स्त्री) ।

आसाइश, स स्त्री (फा) सुख, सौन्दर्यम् ।

आपाइ, स पु दे 'आपड' ।

आसादन, स पु (स न) प्राप्ति उपलब्धि
(स्त्री) २ निधानम् ३ आक्रमणम् ४ पदवा-
दागम्य प्राप्तिम् ।

आसादित, वि (स) प्राप्त, लब्ध २ निहित,
स्थापित ३ आमान ४ पश्चादागम्य गृहीत ।

आसान, वि (फा) सुवर सुगम, सुसुताप्य ।

आसाने, स स्त्री (फा) सुचरता सुगमता ।

आसाम, स पु (स अमम >) कामरूपा,
अममप्राप्त मारुतस्य प्रातर्विशेष ।

आसामी वि (हि आसाम) अममप्रदेश,
विषयक सम्बन्धिन् । न ॥ अमम कामरूप,
वासिन्वास्त ५ । स स्त्री असमीया भाषा
असमी ।

आसावरी, स स्त्री (सं आशावरी) श्रीरागस्य
रागिणीभेद ।

आसीन, वि (स) निष्पन्न उपविष्ट ।

आसीस, स स्त्री, दे आशीर्वाद ।

आसुर, वि (स) राक्षस, पैशाच, असुरस-
न्धिन् । स पु (स) असुर ।

आसुरी, वि स्त्री (स) असुरमवधिनी,
राक्षसी, पैशाची ।

—चिक्रिस्ता, म स्त्री, शस्यचिक्रिस्ता ।

—माया, स स्त्री पैशाच छलम् ।

—संपत्, स स्त्री (सद्) पैशाची वृत्ति (स्त्री) ।

आसोज, स पु (स आधुज) दे 'आधिन' ।

आस्तरण, स पु (म न) कुश, गजपृष्ठथ
चित्रकवलम् २ शय्या, कुशासनम् ।

आस्तिक, वि (स) इश्वरपरलोकविधासिन् ।
२ ईश्वरसत्तावादिन् ३ मठाङ्ग ।

आस्तिकता, स स्त्री (स) ईश्वरपरलोकेषु
विधास २ ईश्वरप्रश्रय ।

आस्तनी, स स्त्री (फा) पिप्पल, कोशना
लिका, चोलादानां बाहुभाग ।

—का सौप, सु गृहशुद्धि, शुभप्रेरिन् ।

आस्था, स स्त्री (स) भ्रष्टा, भक्ति (स्त्री),
भर्तृणा, आदर २ समा आस्थानम् ३ आल
वन, अपेक्षा ।

आस्थान, स पु (स न) उपबशनस्थल,
समाम्बन २ समा ।

आस्थित, वि (स) स्थित, कृतवास्त २ आश्रित
३ लब्ध ४ देहित ।

आस्पद, स पु (स न) स्थानम् २ कार्यम्
३ प्रतिष्ठा ४ अश कुलम् ।

आस्य, स पु (स न) वदन, तुङ्गम्
२ सुमर्मस्थल, मुखम् ।

आस्वादन, स पु (स अ) स्वादनं, रसनम् ।

आह् अन्व (सं अह्) कट हा, हा, आ,
हा, अहो (सब अ य) ।

आह्, स स्त्री (फा) निधास, उछरास,
दीर्घास ।

—भरना कि अ, दीर्घ एव नि यम् (अ
प से) ।

आहट, मे स्त्री (हि आना+हट प्रत्य)
पाशब्द, चरणनिक्षेपध्वनि २ विपदानाश
सूचकध्वनि ।

आहत, वि (स) क्षत व्रणित, विद्ध, मित्रदेह
० गुण्यसूत्रया ३ परस्परविकृद्ध (वाक्य)
४ सद्यःशालित ५ जीर्ण ६ वपित । स पु,
पट् ।

आहरण, स पु (स न) आच्छेदन, सहसा
आवृत्तनम् २ अपनयनम् ३ आनयनम्
४ ग्रहणम् ।

आहरण, म पु (स आइननम् >) शर्मि
(स्त्री), शर्मा शृंग ।

आहर्षो, वाक्य (अनु) मा न नो, नहि
आहर्ष, अय (स अहर्ष) अहो, ही आ ।

आहार, म पु (स) मञ्ज, भोजन, चैमन,
आग्नि (स्त्री) ० द्वाघ मध्य, सामग्री ।

—विहार, म पु (-रौ) वषा, वर्णन वृत्त
आचारव्यवहारी ।

आहार्य, वि (स) मध्य, छाष ० ग्रहीत-य
३ आहरणीय ४ वृत्तिम् । स पु, अनुषोऽ
नुभाव (स्त्री) ।

अभिनय, म पु (स) वचनचैतारहिताऽ
मिनय (स्त्री) ।

आहिस्ता, कि वि (पा त) शनै, मन्दम् ।
—आहिस्ता, कि वि, शनै शनै, मन्द मन्दम् ।

आहुति, स स्त्री (स) इवन, देवयज्ञ होम,
होत्रम् २ इवनसामग्री ३ सामग्रा सङ्घ
होतव्या मात्रा ।

—देना, कि स, हु (जु ठ अ), धन् (स्वा
ठ अ) ।

आहु, स पु (फा) मृग, हरिण ।

आहुत, वि (स) आकारित, आनि, मन्त्रित ।

आहुति, स स्त्री (स) आकारण, आमन्त्रणम् ।

आहुतिक, वि (स) दैनिक, दैनदिन, प्रात्यहिक ।

कि वि अहरह, अनु प्रति दिनम् । स पु,
दिनस्य कार्यम् २ महाभाष्यसङ्घ ३ अध्या
पक ४ दैनिकी मृत्ति (स्त्री) ।

आह्लाद, म पु (स) आनन्द, हर्ष, मोद ।

आह्लादक, वि (स) आह्लादप्रद हर्षजनक,
आनन्ददायक ।

आह्लादित, वि (स) प्रसन्न, मुदित ।

आह्वान, स पु (स न) आहुति (स्त्री),
आकारण, आमन्त्रणम् २ आह्वनपत्रम्
(= सम्मन) ३ यथे देवताकारणम् ।

—करना, कि स, आह (स्वा ठ अ)
आहु (प्रे) २ देवता आवह (प्रे) ।

इ

इ, देवनागरीवर्णमात्राया तृतीय स्वर, इकार ।

इक, स स्त्री (अ) मशी, मषी, मसी ।

इगळा, म स्त्री (स इडा) मानवशरीरे वाम
पार्श्वस्था वक्त्रा नाडी ।

इगलिश, वि (अ) आङ्गदेशीय । स स्त्री
आङ्गमाषा ।

इगलिस्तान, स पु (अ इगलिश + पा स्तान)
आङ्गदेश ।

इगित, स पु (स न) इङ्ग, सवेत आकार,
दैहिकवेष्टा । कि नवेति ।

इगुर्दी, स स्त्री (स) तापसतरु, शूलारि ।

इध, स ॥ (अ) अग्न २ अत्यल्प रसामात्रम् ।

इमन, स पु (अ पत्रिन) यन्त्रम् २ वाष्प
शक्तीकर्तव्यम् ।

इनीनियर, स पु (० नीनियर) यन्त्रकार,
यन्त्रव्यापिष्ठ, वास्तुविद्याविशारद ।

इवेकशन, म पु (अ) मूर्चीभरणम् ।

इड्स, स पु (अ) (५८ स) द्वार २ प्रवेश
३ आन्तरिकलक्षण नवमदशमकक्षे (दि)

—परीक्षा, स स्त्री, प्रवेशिका परीक्षा ।

इहुवा, स पु (स येण्डुक >) घटाधाधार
भूत शीर्षस्थ बल्लुवक्षम् ।

इतजाम, स पु (अ) सविता, प्रवच ।

इविरा, स स्त्री (म) पद्मा, कमला
दे 'लक्ष्मी ।

इदीवर, स पु (स न) नील, कमल उ प
लम् २ कमलम् ।

इदु, स ॥ (स) चन्द्र २ कपूर रम् ।

इद्र, वि (स) सपथ २ अष्ट । स पु, देव
रात्र, पान्थासन, पुरदर, शक्र, वज्रिन्,
सुरपति, शचीपति, आसुरल, सद्भाध,
नाकनाथ वज्रपाणि २ सूर्य ३ विष्णु (स्त्री)
४ नृप ५ ज्येष्ठानश्वम् ६ चतुर्दशमस्या
७ व्याकरणस्य आदिम आचार्य ८ जीव,
प्राणा ।

—वा व्यसाहा, स पु ३ द्रसमा २ सगीतसमा ।

—जाल, स पु (स न) मायाकर्मन् (न),
कुदकम् ।

—जाली, वि (स लिन्) भावाविन्, कुटुक
व रिन् ।
—जीत स पु (स जिन्) मेघनाद ।
—जौ, स पु (स यव) कुटुज शक-बीजम् ।
—धनुष, स पु (स धनुस न) इक्ष्वाप
सुरधनुस ।
—नील, स पु (स) नील उपल मणि
(मोलम) ।
—नीरक, स पु (स) सरकन भवमवर्ध
हरि मणि (= जमुर्द) ।
—प्रस्थ, स पु (स न) पुषिष्ठिरिर्मपित
शिलीसमीपवति गगर्म् ।
—लोक, स पु (स) नाक स्वयं ।
—द्रा, स री (स) > इ द्राणी ।
—द्राणी, स स्त्री (स) शची ये द्री पीलोमो
म इ द्री पुलोमजा २ स्थूला ३ मूर्मेला
४ निजुण्डी ।
—द्राजुज, स पु (स) विष्णु ।
—द्राधम, स पु (स द्राणी) सुरमा
निजुण्डी सिद्धार ।
—का फल, सु, नही रग्योऽ गर्दुष्ट ।
—द्राधुध, स पु (स पु न) इक्ष्वाप
२ वज्र पवि ।
—द्रिद्य, स स्त्री (स न) करण भद्र ह्योक्त,
प्रश्न, विषयिन् (न) २ जननेन्द्रियम्
इ वीर्यम् ४ वक्' इति मर्यादा ।
—अर्थ, स पु (स) इन्द्रियविषय (रूप
रसादि) ।
—मित्र, वि (स) जितेन्द्रिय दुषीकेश ।
—निग्रह, स पु (स) इन्द्रिय दमन जय,
दय ।
—यज्ञ, वि (स) विषयिन्, विषयज्ञ ।
—धन, स पु (स न) इध्म धर्म ध्यस (न) ।
—इ (ण्) पायर, स पु (अ) स भ्राज्यम्,
आधिरान्यम् ।
—इपीरियन्त्रिमा स पु (अ) सामान्यवाद
२ सम्राट्शामनम् ।
—इपोट, स पु (अ) दे भावात् ।
—इगाट, स पु (अ) वाय धम २ निर्गव
विवेक ।
—इरिट्यूट, न स्त्री (ग) सखानम् ।
—इरिट्यूटान, स स्त्री (अ) शिक्षात्म्य
विद्यात्म्य २ धर्मशास्त्रा इ रीति (स्त्री)

इन्स्ट्रुमट, स प्र (अ) उपकरण यन्त्रम्
२ साधनम् ।
—इन्स्पेक्टर, स पु (अ) निरीक्षक, दृष्ट ।
—इक, वि, > एक ।
—इकट्टा, वि (स पक्व) पकीकृत, समवेत,
शीघ्रत ।
—करना, कि स, एकत्र ॥ भ नि, वि (स्व
स अ) ।
—इकट्टे, कि वि (हि इवट्टा) पकीभूय,
मधूय मिलित्वा ।
—इक्सार, मि वि (स एकसार >) सतत,
निरंतरम् ।
—इक्सार, स पु (स एकसार >) एक सार
तवीर वाद्यभेद ।
—इक्तीस, वि (स पक्वित्वा स्त्री एक)
स पु उक्ता मर्यादा, तद्बोधकावकी (६१) च ।
—इक्सार, स पु (अ) प्रतिष्ठा, सगर प्रति
स त्रय २ ज्योत्स्वी, कार ।
—नामा, स पु (फा) प्रतिष्ठा समय, पर्व
वेत्यम् ।
—इक्लोना, स पु (स एकल >) भगिनीभ्रातृ
हीन, पित्रो एकल पुत्र ।
—इक्वट, वि (स एकवटि स्त्री एक) स
पु उक्ता सख्या तद्बोधकावकी (६१) च ।
—इक्मार, वि (स एकमार >) समान, सङ्घ ।
—इक्दत्तर, वि (हि इक + सत्तर) एकसप्तति
(स्त्री एक) स पु उक्ता मर्यादा तद्बोध
कावकी (७१) च ।
—इक्हरा, वि (स एकतर) दे एकहरा ।
—इकाई, स स्त्री (हि इक) एका व्यक्ति
(स्त्री) २ एकैक ३ त्रैराशिकम् (= इकार्य
का नायगा) ।
—इकानवे, वि (हि इक + नवे) एतन्
वति (स्त्री एक) स पु उक्ता मर्यादा
तद्बोधकावकी (९१) च ।
—इकावन, वि (स एकवचाश्व स्त्री एक) न
पु उक्ता सख्या तद्बोधकावकी (५१) च ।
—इवासी, वि (हि इक + भरती) एकाश्रिति
(स्त्री एक) स पु उक्ता संख्या तद्बोधकाव
की (८१) च ।
—इकोर, वि (स एकोर) एकाधिक ।
—इष्टा, वि (स एक) एकाकिन्, एकम् ।

२ अतुल्य, असम । स पु, वाहन यान प्रव
हण भेद २ एकाकिन क्रीडापत्रम् ३, एवाको
योध ।

—दुष्टा वि विरल २ मार्गग्रह ३ वृषग्रह ।

इष्ट, स पु (स) मधुशुक्र, वृण, महारस,
रसाल, पयोधर ।

—रस, स पु (स) मधुवृण सार द्रव
निर्यास ।

—सार, म पु (स) शुक्र ।

इषबाहु, स पु (स) देवस्वन्मनो पुत्र
सूर्यः शीघ्र प्रथमनृप ।

—नवन, स पु (स) श्रीरामचन्द्र ।

इरितयार, स पु (अ) प्रभाव अधि
कार २ अधिचारक्षेत्रम् ३ नामय्यम्
४ स्वामिन्वम्

इष्टा, स स्त्री (स) इष्टा, आकांक्षा, ईंदा
वाञ्छा, अभिलाष, मनोरथ इष्ट, अमोष्ट,
इमित, कामना ।

—करना, कि म इष (पु प से), अभि
रूप, वांछ (दोनो न्या प से) कम् (न्या
आ से, नामयते), स्पष्ट (चु, चतुर्थी के
साथ), (सन्नत रूपों से भी, उ पढ़ने की
इच्छा करता है=पिपठिषति) ।

—अनुकूल, कि वि (स न) यथारुचि,
यथच्छ, यथेष्ट, यथाकामम् ।

—मेदी, स पु (स—दिन्) यथश्चिरत्नक
मौषधम् ।

इच्छित, वि (स) अमोष्ट वांछित, अभि
लषित ।

इच्छुक, वि (स) इच्छु अभिलाषिन्, आकां
क्षिन् । (दि सन्नत रूपों से भी उ० पढ़ने का
इच्छुक-पिपठिषु । तुमुन्नत रूप के बाद
'काम' वा 'मनस' लगाकर भी उ० आने का
इच्छुक-गच्छ-काम मना) ।

इजराय, स पु (अ) प्रचालन २ अनुष्ठानम् ।

—दिगरी, स पु (अ + अ दिगरी) राजा
शामपादनम् ।

इजलास, स पु (अ) अधिवेदनम् २ न्याया
लय ।

इजहार, स पु (अ) प्रकाशनम् २ साक्ष्यम् ।

इजाजत, स स्त्री (अ) अनुमति (स्त्री),
अनुज्ञा २ आज्ञा, आदेश ।

इजाफा, स पु (अ) वृद्धि (स्त्री), दे ।
इजार, स स्त्री (अ) दे 'पानामा' ।

—दद, स पु (अ + पा) दे 'नादा

इजारा, स ॥ (अ) पण, समय २ पट्ट,
पट्टोलिका ३ स्वस्वम् ।

इजारे (र) दार, म पु (अ + पा) पणकर्त,
नियमद्रव ।

इजत, स स्त्री (अ) म, मान, आदर ।

—उत्तरभा, सु, लघु भिन् ।

—रपना, ॥, अपमानाश्चर्य (भ्वा प स) ।

इज्या, स स्त्री (स) यज्ञ, याग, होम २ पूजा,
अर्चा ।

इटा (टै) लिक्कम्, स पु (अ) वक्रमुद्राश्च
राणि (न बहु) ।

इटालियन, स पु (अ) इटलीवासीन् २,
इटलीत, आगन बल्गेय ३ इटलीभाषा । वि
इटलीमन्त्रिन् ।

इटलाना, कि अ (हि ऐंठ) सगर्ब चह
(भ्वा आ से) २ हाव इष्ट (प्रे) ३ पर
बन्धेशाय अश्वत्थ आवर (भ्वा प से) ।

इटलहट, स स्त्री (हि इटलाना) आटोप,
गर्व २ हावभाव ।

इका, स स्त्री (स) भूमि (स्त्री) २ गी
(स्त्री) ३ वाणी ४ स्तुति (स्त्री) ५ यज्ञ
पात्रदेवता आहुति, विशेष ८ अन्न, इधिस (न)
९ नमोदेयता १० दुर्गा ११ पार्वती १२ कथप
पत्नी १३ वसुदेवपत्नी १४ शुषपत्नी
१५ स्वर्ग १६ जाहोभेद ।

इतना, वि [स एतावत् वा हि ईं (यह) +
तना (प्रत्य)] एतावत्, एतन्मान, इतए (स्त्री,
एतावती, इतनी) ।

इतने में, कि नि एतावत्मध्ये, भवान्तरे २ अ
स्मिन्नेव समये ।

इतमीनान, स पु (अ) तोष स शांति
(स्त्री) ।

इतमीनानी, वि (अ) विश्वसनीय, विश्वास्य ।

इतर, स पु (अ इत्) दे 'अतर' ।

इतर, वि (स) अथ, अपर, पर २ नीच
३ सामान्य, साधारण ।

—इतर, कि वि, परस्पर अन्यो य, मिथ
(सब अन्य) ।

इतराश्रय, स ॥ (सं) अन्योयाश्रय ।

इतराना, कि अ (अ उचरण) गव (भ्वा प से) प्रगवम (भ्वा आ से) ।

इतवार, स पु (म आदित्ववार) रवि आदि त्व भागु बार वासर ।

इति, अय (स) इति उम् इत्योम्, समाप्तिमूचकमन्वयम् । स स्त्री, अवसान, अन् समाप्ति (स्त्री) ।

—कर्तव्यता, स स्त्री (न) कर्मागुष्ठानविधि (पु) ।

—नृत्त, स पु (स न) पुरावृत्त, (पुरातनी) कथा ।

—श्री, स स्त्री (स) अत्त, समाप्ति (स्त्री)

इतिहास, स पु (स) पुरावृत्त, पूर्ववृत्तात्, पुराभूतम् ।

इत्तफाक, स पु (अ) सघटन ना, भवटन ना २ सोद्धारम्, साम्प्रत्यम् है अवसर, अव वागु ।

इत्तला, स स्त्री (अ) विद्यापन, द्वापन, सूचना बोधनम् ।

इत्त, कि वि (स) एव अनेन प्रकारेण ।

इत्थभूत, वि (स) ईदृश, एतादृश ।

इत्थादि, अभ्य (स) आदि, प्रश्रुति, आद्य (सप्त समासा त में, उ विककाकार्य) ।

इत्थादिक, वि (स) है 'इत्थादि' ।

इत्त, स पु (अ) है 'अत्तर' ।

इत्तर, कि वि (स अत्त) इत, एतत्स्थान प्रति २ अत्त, इत्त, अस्मिन् स्थाने ।

—उत्तर, कि वि, इतत्तन, अत्तत्तन अति यत्तत्तने २ उभयत्त, उभयत्त १ अभित, परित (दोनों के साथ द्वितीया), सर्वत्र, विधत्त, समन्त, समन्तात् ।

—उत्तर की बात, सु, अन्, प्रवाद इति (स्त्री) ।

—की उत्तर लगाना, सु, कल्ह उरो (प्रे) ।

—की दुनिया उत्तर होना, सु, असमय भवेत् चेत् ।

उर्न सर्व, (हि इस) एतद्, इदम् ।

—दिनी, कि वि, वर्तमाने, अद्यत्वे ।

उने, स पु (स) सूर्य २ स्वामिन् ।

इनकमन्वय, स पु (अ) आवक ।

स पु (अ) इत्तपरिवर्तन,

१ । २ राजविद्युत्, प्रजापति ।

इनकार, स पु (अ) प्रत्याख्यान, प्रति नि, वेध ।

—करना, कि स, प्रति नि विधु (भ्वा प वे) इनकिशाफ, स पु (अ०) आविर्भाव, प्राकाश्य, प्राकट्यम् ।

इनकिस्तार, स पु (अ०) विनय, तम्रत्तना ।

इनफलुण्जा, स पु (अ) दीनद्वर ।

इनसान, स पु (अ) मनुष्य ।

इनसानियत, स स्त्री (अ) मनुष्यत्वम् २ सज्जनता, शिष्टता ।

इन्दिस्तार, स पु (अ) अवलक, आसय ।

इनाम, स पु (अ इममाम) पुरस्कार, पारिणोषिकम् ।

इनायत, स स्त्री (अ) कृपा २ उपकार ।

इने गिने, वि (अनु० इन + हि गिनना) कठिचन, रत्नका २ अस्पष्टरसका ।

इबारत, स स्त्री (अ) लेख २ लेखशैली ।

इमरती, स स्त्री (स० अवृत्तम्) कदली, मिष्टान्नभेद ।

इमली, स स्त्री (स अम्लिका) आम्लि (लो) का, विषा, निषिदि (डी) का २ अम्लिका विषा, फलम् ।

इमाम, स पु (अ) पुरोहित २ नेतृ ।

—याबा, स पु (अ + हि) मुहम्मदवांनुछा नवाद ।

इमारत, स स्त्री (अ) भवन, गृहम् ।

इम्तहान, स पु (अ) परीक्षा ।

इगला, स स्त्री (अ) सुतलेख २ अक्षर वर्ण, विद्यास ।

इयत्ता, स स्त्री (अ) सीमा, परिमाणम् ।

इरादा, स पु (अ) सकल, निश्चय ।

इरादनी, स स्त्री (न) वरपयुता २ नदी विशिष्ट (= रावी) १ ओषधिभेद (= प परचट) ।

इर्द गिर्द, कि, वि (अनु० इर्द + का गिर्द) परित अभित, सर्वत्र २ उभयत, इतदन ।

इल्लाम, स पु (अ) अभियोग, दाव, आरोप ।

इल्लाम, स पु (अ) देवतागो ।

इला, स स्त्री (स) पृथिवी २ पार्वती २ वाणी ४ बुद्धिमती नारी ५ गी (स्त्री) ।

इलाका, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग । २ समय ।

इलान, स पु (अ) विक्रित्ता, उपचार ।
२ औषध, औषधि (स्त्री) ३ युक्ति
(स्त्री) प्रती (ति) नार ।

इलायची, स स्त्री (स एला) (बढी)
पला चढ़वाला बहुला, त्रिदिवा २ (छोटी)
कुति कुटि (स्त्री) नदिनी ।

—दाना, स पु, (दि+पा) पलाशोदम्
२ कनिशोदम् २ लक्ष्मीजुको मिष्टानमेद ।
इलाही, वि (अ) देव, ईश्वरीय । स पु,
ईश्वर ।

इलम, म पु (अ) विष, ज्ञानम् ।
इल्लत, स स्त्री (अ) रोग २ बाधा ३ अप
राध ४ व्यसनम् ।

इल, अव्य (स) यथा, तुल्य, सद्गुण,
समान-वद ।

इल्लारी, स पु (अ) सक्तेन शक्तिम्
२ साक्षतकथनम् ३ गुप्तप्रेरणा ।

इलक, स पु (अ) अनुराग, प्रणय ।

इलतहार, स पु (अ) विद्यापन, विज्ञप्ति
(स्त्री) २ घोषणा, व्यापनम् ।

इपु स पु (स) बाण, सायक ।

इपुधी, स पु (स धि) तूणीर, तूणी

इष्ट, वि (स) बाद्धित, अभिष्टित, आकाङ्क्षित
२ अभिप्रेत ३ पूजित । स पु, (स न)
धर्मकृत्य, अग्निहोत्रादिकर्माणि २ कुलदेव
३ मित्रम् ४ भरिब, ५ शृङ्गा ।

—देव, स पु (स) कुलदेवता ।

—इवना, स स्त्री (सं) आराध्यदेव ।

इष्टार्त, स पु (स न) यक्षसायादिकर्मन्(न) ।

इष्टि, स स्त्री (म) ४ भिलाष २ यश
३ पतञ्जलिना व्याकरणनियम ।

इस्त, सर्व (स एष) एतद्, एतम् ।

इस्तपत्र, स पु (अ स्तपत्र) सुधिरदेहनिष्ठ
२ पराश्रयम् ।

इस्तवगोल, स पु (वा यशवगोल) रुद्र
स्निग्ध, जीरक ।

इस्तरार, स पु (अ) आग्रह, दण्ड ।

इमलाम, स पु (अ) मोहम्मदोदधर्म ।
२ ईश्वरोच्छा स्वीकार ।

इसलामी, मोहम्मदोदधर्मसम्बन्धि ।

इसे, सर्व (इ इम) १ (इतको) एत
(पु), एता (स्त्री), एतद् (न) इम (पु),
इमा (स्त्री), इदम् (न) २ (इतके लिए)
एतस्मै (पु न), एतस्यै (स्त्री) अस्मै
(पु न), अस्यै (स्त्री) ।

इस्तरी, स स्त्री (स स्तरी >) स्तरणी,
रजकलोह इन् ।

इस्तिफवाल, स पु (अ) प्रत्युद्यमन, प्रत्यु
दयजनन् । स्वागन्, सरकार ।

इस्तिगासा, अभियोग, भाषापात्र ।

इस्तीफा, स पु (अ इस्तीफा) त्यागपत्रम् ।

इस्तेमाल, स पु (अ) उपयोग, व्यवहार,
प्रयोग ।

इह, किं वि (स) अत्र २ भूलोके । स पु,
भूलोक ।

—छीला, स स्त्री (स) जीवनम् ।

इहाता, स पु (अ) बाट-दी, प्राणा न, परि
सरभूमि (स्त्री) ।

ईधन, स पु, दे 'इधन' ।

ईसक, स पु (स) दर्शन बीसक
२ चिन्तक ।

ईछण, स पु (स न) अवलोकन, दर्शनम्
२ नेत्रम् ३ विवेचनम् ।

ईछा, स स्त्री (स) दर्शन वीक्षणम् । विवे
चन, पर्यालोचनम् ।

ईख, स स्त्री दे 'इख' ।

ईग्रा, स स्त्री (अ) कष्ट, क्लेश ।

ईजाद, स स्त्री, दे 'आविष्कार' ।

ईडि, स स्त्री (सं इष्टि) सरय, सौहार्दम्
२ प्रयत्न ।

ई, देवनागरीव मालाया चतुर्थ स्वरवा,
ईकार ।

ईगुर, म पु (स ईगुर-कम्) इगुलि,
ईगुल (पु न), सिन्दूरम् ।

ईट, स स्त्री (म इटका) इष्टिका । (पक्की)
सरका, पक्केका, भट्टेका २ इष्टकाकारो
पातखण्ड ।

—से ईट बजाना, मु, ध्वस्त्रमूल विनश
निपट (सब मे) ।

—पघर, मु, न किमपि, न किंचित् ।

देड बा डार्ई ई की मस्जिद अलग बनाना,
मु, असामाय आचर (आ प से) ।

ईति, स स्त्री (अ) कृषे षट् उपद्रवा (यथा
अनिवृष्टि, अनावृष्टि, शलभा, मृषिका, खगा,
शत्रोराक्रमणम्) २ विघ्न ३ दुःखम् ।
ईयर, स पु (अ) दधु (न), आधूम् ।
ईय, स स्त्री (अ) यवयोत्सवभेद ।
—का चोद, सु, दिवाप्रदोष, दुर्लभदर्शन ।
ईदश, किं वि (स न) इत्थं अनेन प्रकारेण ।
वि, दे 'ऐमा' ।
ईप्सा, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलष ।
ईप्सित, वि (स) अभिलषित, इष्ट ।
ईमान, स पु (अ) धर्म २ सत्यम् । ३
भास्तिवपुदि (स्त्री) ४ मन्त्रा ।
—इर, वि (अ + क्) धार्मिक, वायवर्त्तिन्
२ निष्पन्न ३ आश्रित ४ विधमनीय ।
ईरान, स पु (पा) पारसीक ।
ईरानी, वि पारस (—सो स्त्री) । स स्त्री,
पारसी, पारसीकभाषा । स पु, पारमोका,
पारसीकवासिन (बहु) ।
ईर्ष्या, स स्त्री (स) मात्सर, मात्सर्व, परो
त्कर्षासहिष्णुता, अमूया ।

ईर्ष्यालु, वि (सं) मात्सरिन्, अमूदक,
इर्षिन्, परोत्कर्षासहन ।
ईश, स पु (ईम) प्रभु, पति, स्वामिन्
२ परमेश्वर ३ नृप ४ शिव ५ 'एकादश'
इति सत्त्वा ।
ईशान, स पु (स) स्वामिन्, प्रभु २ महा
देव, ३ पूर्वोत्तरदिक्पति ।
ईश्वर, सं पु (स) परमेश्वर, परमात्मन्,
अमर्त्य, परमेश २ स्वामिन् ३ शिव ।
वि, आद्य ।
—प्रणिधान, सं पु (स न) ईश्वरे मन्त्रातिशय,
स्वकर्मणामोद्योगार्थम् ।
ईश्वरीय, वि (त) दिव्य, दैव, ईश्वरविन् ।
ईष्ट, अन्य (स) अल्प स्नोक, पूजन् ।
ईसवगोल, स पु, दे 'इसवगोल' ।
ईसवी, वि (फा) ख्रिस्तसन्निधि ।
—सन्, स पु (फा + अ) ख्रिस्ताम् ।
ईसा, स पु (अ) ख्रिस्त, जीव ।
ईसाई, वि (फा) ख्रिस्तानुयायिन् ।
ईहा, स स्त्री (स) वेष्ट २ लोभ ३ अति
लाभ ४ लोभ (हि) ।

उ

उ देवनागरीवर्णमालाया पञ्चम स्वरवर्ण,
उच्चार ।
उङ्गुण, स पु (स) मसुण, तक्षकौट
भोक्ता ।
उँगली, स स्त्री (स अगुली) अगुल, अगुरी,
कराला (उँगलियों के कमरा नाम—अगुल,
तर्जनी, मध्यमा अनामिका, कनिष्ठा) ।
—का पटाया, स पु, अगुलीमोदन, मुचुटी ।
उँगलियों पर नचाना, सु, यथेष्ट कृ (प्रे) ।
—उठाना, सु, निद्र (स्वा प से), अवशिष्ट
(तु प अ) २ मन्त्राणि अथ ।
बानी—, स स्त्री, कनिष्ठा ।
बानो में उगना देना, सु, औदासी येन पर
वचनानि स (स्वा प अ) ।
दौनों तरे उँगली दशाना, सु, अथर्व विधि
(स्वा मा अ), चरितचरित (वि) न् ।
पोंचो उँगलियों को में होना, सु, सर्वथा सम्यक्
(दि प से) ।
उँचन, स स्त्री (सं उँचनन् >) उद्यवा
पादभंगराधा रञ्जु (स्त्री) ।

उचास, वि, दे 'उल्लास' ।
उछ, सं स्त्री (स पु) उचासशब्दात् क्षेत्र
शेषादचयन्, उच्छन्नम् ।
—चुसि, सं स्त्री (सं) कण्ठेन जीवनि
वार् । वि, उच्छली ।
उँजियारी, उँज्यारी, स स्त्री (हि उजारा)
चन्द्रिका, उद्योतना । वि स्त्री, चन्द्रिका
प्रकाश, मुक्त ।
उँजिरा, उँजेरा, स पु, दे 'उजाला' ।
उँहेलना, किं स (स अर + हि दाक्षना ?)
म, लू (प्रे) निर्लू (प्रे), मरुत् (प्रे),
धुर (प्रे) ।
उदन, स पु (म) क्नेदन्, आर्द्राकरणम् ।
उदुर, स पु (स उदर) मूत्र (वि) न ।
उँह, अन्य (अनु) घृणे, देहानिषेधपीडादिभूत
कमप्ययम्, भिक्, न, भदि, भा, हा इ० ।
उच्छण, वि (स उच्छ + अण) अन्त, अन्तुल ।
उच्छ, स पु (स उच्छीर) उपवसन
प्रकारविशेष ।
—चैठना, वि अ, अवनतसन्निधि भाम् (अ
भा से) ।

उक्ताना, कि अ (सं उक्त >) सिद्—
निविद् (दि आ अ) उदिम् (तु आ अ) ।

उक्तताया हुभा, वि सिद्ध, निविण्ण ।

उक्तसना, कि अ (सं उक्तषण >) स-वि-
क्षुम् (दि प स) उष स, नष (दि आ
अ) २ उदगम्, उग्रम् (भ्वा प अ)
३ प्ररुह (भ्वा प अ) ४ विदिलष (दि
प अ) । स पु, सक्षोभ, सताप, उदगम्,
प्ररोह, विद्वेष ।

उक्तसाना, कि न (हि उवसना) उचिन्,
उदीप, प्रोत्सह स-वि-क्षुम्, प्रचुद् (सब
प्रे) २ उथा-उदगम् (प्रे) ३ अपस
(प्रे) । स पु, उत्तेजन, उदीपन उर्यापन,
अपमारणम् ।

उक्त, वि (स) कथित, उदित, भाषित, लपित,
व्याहृत, उदीरित ।

उक्ति, स स्त्री (म) कथन, वचनम् २ अद्भुत
वाक्यम् ३ समति (स्त्री) ।

उक्थ न पु (स न) सामवेद २ स्तोत्र
३ प्राण

उक्ता, स पु (म उक्त्) वृक्ष २ सूर्य ।

उक्खवना, कि अ (स उखननम्) उमूल,
उखन्, समूल उदह (सब कर्म) २ (इह
स्थित) पृथक् भू ३ सधे चल (भ्वा प
से) ना भुट (दि प से) ४ स्वर ताल-
च्युन (वि) भू (मगीत) ५ अपस (भ्वा
प अ), विद्रु (भ्वा प अ) ६ सीवन भुट
स पु, उमूलन, उखनन, सधेचलन, स्वर-
ताल-भग अपसरण, सीवनभोटनम् ।

वन—, सु, स्वरभग २ प्राणनिष्क्रमणम् ।

पैर—, सु, विद्रवण, पलायनम् ।

उक्खवना, कि प्रे (हि उखडना) अन्येन
उमूल—उपट—उखन्—व्यपसह—उच्छिद्
(सब प्रे) ।

उखली, स स्त्री (स उखलम्) उदूखलम् ।

उखा, स स्त्री, (स) खाली दे 'देन' ।

उखाड, स स्त्री (हि उखाडना) उमूलन,
उपादन, उखननम् ।

उखाडना, कि स (हि उखडना) उमूल-
उपट—उखन्—व्यपसह—उच्छिद् (सब प्रे)
२ सन्धि चल् (प्रे) ३ वि-परा, वि (भ्वा

आ अ) ४ अपस (प्रे) ५ विनश (प्रे)
गडे मुदें—सु विस्मृतकलहान् पुन उदीप् (प्रे) ।

उगना, कि अ (स उदगमनम्) उदगम्
(भ्वा प अ), उदि (= उव + इ अ प
अ), उदय (= उव + अय्, भ्वा आ से)
२ स्फुट् (तु प से), उद्भिद् (कर्म) प्ररुह
(भ्वा प अ) ३ उत्पद् (दि आ अ),
अन् (दि आ से) । स पु उद्रम, उदय,
उद्भेद, प्ररोह, प्र, स्फुटनम्, उत्पत्ति (स्त्री) ।
उगा हुआ, वि, उदगन, उदित, उद्भिन्न, प्ररुह,
प्र, स्फुटित, उत्पन्न ।

उगलना, कि स (स उद्गिरणम्) उद्गू (तु
प से), वम् (भ्वा प से), छद् (तु) ।
२ अन्यायप्राप्तयन प्रतिदा (जु उ अ)
३ गोपनीय प्रकाश (प्रे) ४ बहिष्कृ (त
उ अ) ।

अहर—, सु, अस्तुद् वचन वद् (भ्वा प से)

उगलवाना, कि प्रे (हि उगलना) वम्
उद्गू (प्रे) २ अपराध स्वीकृ (प्रे)
३ अन्यायभ धन प्रतिदा (प्र प्रतिदापयति) ।
उगाला, कि स, (इह उगना) प्ररुह (प्रे),
(अश्रादिक) उत्पद् (प्र) ३ प्रहाराय
शस्त्रादिक उग्रम् (प्रे) ।

उगार, स पु (सं उदगार >) निपीडित-
निर्मलिन-निर्गलित, अलम् ।

उगाल, स पु (स उदगार) मुत्तलाव,
लाला २ कफ, श्लेष्मन् (पु) ३ जीर्ण
वस्त्रम् ।

—दान, स पु, प्रतिग्राह, पतद्ग्रह ।

उगालना, कि स (हि उगलना) उद्गू (तु
प से) २ रोमथायते (ना धा) ।

उगाहना, कि स (स उद्ग्रहणम् >)
(कर ऋण वा) समाह (भ्वा उ अ), मष्ट
(जु उ अ), अव वि स नि, चि (स्वा
उ अ) ।

उगाही, स स्त्री (हि उगाहना) (धनस्य)
समाहार, समरण, समग्रहण, समुच्चयनम्
२ समृत धनम् ३ भूमिक् ४ ऋणादिकस्य
अग्रस्य समग्रहणम् ५ कुसीद, वार्द्ध्यवृत्ति
(स्त्री) ।

उग्र, वि (स) प्रचद, तीव्र, प्रबल, घोर,
रौद्र । स पु (स) शिव २ विष्णु ३ सूर्य ।

उभयता, स स्त्री (सं) प्रचण्डता, मयकरता, निर्दयता, उद्ध्वना ।

उभयसेन, सं पु (॥) कसजनक ।

उभ्रा, सं स्त्री (स) दुर्गा, महाकाली २ कर्कशा नारी ३ बचा ४ छिक्किपथम् ।

उधदना, कि अ (सं उधदतम्) उधद (कर्म) अपा वि, वृ (कर्म) २ नग्री विवस्वी भू ३ प्रकाश (भ्वा आ से) ४ रहस्य मिद (कर्म) ।

उधाडना, कि स (हि उधडना) उधट (प्रे) अपा वि, वृ (स्वा उ से) २ नग्री विवस्वा-कृ ३ प्रकट् (प्रे) ४ रहस्य मिद (प्र) ।

उधाडा, वि (हि उधाडना) विवस्, नग्न २ प्रत्यक्ष ३ प्रकाशित ।

उधकन, स पु (हि उधकना) आधार, अवलन, पात्रादिकस्थाधारभूत प्रत्यक्षम् ।

उधकना, कि अ (स उधकरण >) प्रपदेन सस्था (भ्वा प अ), पादाग्रेण काय उन्नम् (प्र) २ उल्लु (भ्वा आ अ) ।

उधराना, कि स (हि उधकना) उधकना के धातुओं के प्रेरणार्थक रूप ।

उधका, स पु (हि उधकना) वचक, प्रतारक, धूर्त २ अधि, छेदक-चौर ।

उधदना, कि अ (सं उधदनम् >) विशिल्प (दि प अ), निद (भ्वा आ से), विपुज् (कर्म) २ विरज् (कर्म), उपेक्ष् (भ्वा आ से) ।

उधरना, कि स, दे 'बोलना' ।

उधदाना, कि स (स उधदनम् >) विशिल्प विषट् विष्णिट् (प्रे) ।

उधाट, स ॥ (सं उधाट >) विरक्ति (स्त्री), वैराग्य, औदासीन्य, अव्यमनस्कता । वि, उदासीन, विरक्त ।

—होना, कि अ निविद् मिद् (दि आ अ) ।

उधट, वि (स) प्रकट, अत्युन्न २ क्रुद्ध, कुपित ३ अर्धार ।

उचित, वि (स), युक्त, समान, उपपन्न ।

उध, वि (स) उन्नत उच्छिन्न, उद्, तुंग, उद्गत २ उत्थम, श्रेष्ठ ।

उधय, स पु (स) निचय, निवर २ चयनम् ३ अभ्युदय ।

उधत, सं स्त्री (सं) उच्छ (च्छा) व, आरोह, उत्सेष, तुङ्गता २ श्रेष्ठत्व, महत्त्वम् ।

उधाटन, स ॥ (स अ) विरलेपण पृथक करणम् २ उपाटन, उन्मूलनम् ३ तात्रिका मिचारभेद ४ विरक्ति (स्त्री) ।

उधार, स पु (स) भाषन २ पुरीषम् ।

उधारण, सं ॥ (सं न) उदीरण, भाषणम् २ भाषणविधि ।

—करना, कि स, उधर-उदीर् (प्रे), व्याड (भ्वा प अ), गद-वद् (भ्वा प से) ।

उधारित, वि (स) उदीरित, उदित, भाषित, व्याहन ।

उधावय, वि (सं) उद्यमापन, उदृष्टापद, उत्तरापर, उन्नावनत ।

उधित, वि (स) समृद्धित, सचित ।

उधै श्रवा, सं पु (स-श्रवम्) सनुद्रमधनज श्वेतघोटक २ एट, ईश्वर-, बधिर ।

उधल्लन, स पु (स न) उद-पन्न-द्वन, बलानम् ।

उधिल्ल, वि (॥) खण्डित, लून २ उन्मूलित ३ नष्ट ।

उधिल्ल, वि (भ) मुक्तावशिष्ट, जुष्ट २ व्यसहनचर । सं पु मुक्तावशिष्टवस्तु (न), जुष्ट २ मधु (न) ।

उध्, स पु (अनु) जलादिरोधन कासभेद ।

उध्गल, वि (सं) निरकुश, स्वैरिन्, उदासि, उष्ट, अशिष्ट, अविनीत २ उन्मूल, विधि-क्रम नियम, विन्द ।

उध्घेद, स पु (स) उन्मूलन, उरपाटन, विरलेपण, दण्डनम् २ नाश, ध्वंस ।

—करना, कि स. उन्मूल-उत्पद् विशिल्प नश् (प्रे) ।

उध्घेदन, स पु (स न) दे 'उध्घेद' ।

उध्घाम्, स पु (सं) आहर, आन २ आस ३ ग्रन्थपरिच्छेद ।

उध्घा, सं ॥ (सं उध्घा) क्रोडम् २ हृदयम् ।

उध्घ-वृद्ध, सं स्त्री (हि उध्घना-वृद्धता) क्रोड, पन्न, विहार, कूर्जन, व्रीडावृद्धम् २ पाचन्य, अधीरता ।

उध्घलना, कि अ (स उध्घलनम्) उध्घल् वल् (भ्वा उ से) उल्लु (भ्वा आ अ), उत्पद् (भ्वा प से) २ अत्यन्त प्रसद

(भ्वा प अ) ३ नृ (भ्वा प से) । सं
पु, उच्छलन, उत्पत्तन, उद्, पुवन, वलिन,
ध्रुव, क्षप पा ।

उद्गाल, स स्त्री (सं पु) दे 'उच्छलना'
स पु । १ प्लवनावधि, प्लुतिसीमा
३ वननम् ।

उद्गालना, कि स (सं उच्छलनम्) उच्छल्
(प्रे), उरिक्षप् (तु प अ) २ प्रकट् (प्रे) ।

उद्गाह, स पु (स उत्साह) उत्सुवना,
व्यग्रता २ ह्य आनन्द ३ उत्सव
४ रथयात्रा ।

उज्ज्वना, कि अ (स अवनटनम् >) विन-
निर्जन (वि) भू २ नि-अव, पट् (भ्वा प
से), सप्त-अश (भ्वा आ से) १ क्षय या
(अ प अ) ।

उज्ज्व, वि (स उज्ज्वल >) जड, भूड,
अज्ञ २ असम्भ, अशिष्ट ३ उद्दड, निरवुश ।

उज्ज्वक, स पु (तु) नातिविशेष २ मूर्ख ।

उज्जरत, स स्त्री (अ) श्रुति (स्त्री),
वेगनम् २ गर्भण्या, निष्कय ।

उज्जलत, स स्त्री (अ) क्षीप्रता, त्वरा ।

उज्जला, वि (स उज्ज्वल) श्वेत, शुद्ध, शुभ्र,
धवल, सिन, धौत, गौर २ स्वच्छ, निर्मल ३
दीप्त, दिव्य, प्रकाशमान ।

उज्जागर, वि (भ्वा उज्ज्वल + नागरित >) प्रकाश
मान २ प्रसिद्ध ।

उज्जाह, स पु (हि उज्ज्वना) जीर्ण-क्षीर्ण,
स्थानम् २ निर्जन विनन, स्थानम् ३ वनम्,
अरण्यम् । वि, अजर, जीर्ण २ दल्प, विजन
३ प्थान्त, निभृत ।

उज्जाहना, कि स (हि उज्ज्वना) निर्जनी
शल्पी-कृ, अवसद (प्र) २ नि-अव, पट्
(प्रे) वि प्र, नय (प्रे), प्र वि, ध्वस् (प्रे),
उन्मूल-उत्पट् (जु) ।

उजाहू, वि (हि उजाहना) अतिव्यथिन्
२ मुत्तहस्त ।

उजाला, स पु (स उज्ज्वल) प्रकाश,
आलोक, युति-दीप्ति (स्त्री) । वि, उज्ज्वल,
प्रकाशमान ।

उजाली, सं स्त्री (हि उजाला) चन्द्रिका,
ज्योत्स्ना । वि उज्ज्वला, दीप्ता ।

उजाम, सं ॥ (हि उजाला) आलोक,
प्रकाश ।

उजियारी, सं स्त्री (हि उजारा) चन्द्रिका
२ प्रकाश ३ सती नारी ।

उज्जयिनी, सं स्त्री (सं) अवन्ती, विशाला,
मालवरानधानी ।

उज्ज्वल, वि (सं) देदीप्यमान, प्रदीप्त,
रुचिर, भासुर २ विराट, निर्मल ३ श्वेत,
सित ४ निष्कल, अकलुष ।

उज्ज्वलता, स स्त्री (सं) दीप्ति-कान्ति (स्त्री)
२ स्वच्छता ३ धवलता ४ निष्कलता ।

उटम, वि (स उत्तुग >) क्षुद्रपरिमाण (वक्ष) ।

उटज, सं पु (स पु न) पर्ण, शाला-कुटी,
कुटीर ।

उठना, कि अ (स उत्थानम्) उत्था-समुत्था
(भ्वा प अ) २ उदम् (भ्वा आ से),
उद्-इ (अ प अ), ३ उच्छल (भ्वा उ.
मे) ४ आगृ (अ प से) ५ उत्पद्
(दि आ अ) ६ सहसा आरम्भ (भ्वा आ
अ) ७ समीभू, उदयद् (भ्वा आ से)
८ परिस्फुट (वि) भू ९ पैनायते (ना
या) १० निष्पद्-समाप् (कर्म) ११ (रीति
आदि) विक्षुप् (दि प से) १२ व्यप्-
विनियुन् (कर्म) १३ विक्री (कर्म)
१४ भित्त्यादयः क्रमदा निर्मा (कर्म)
१५ गोमहिष्यादीनां गर्भधारणेच्छा । सं पु
उत्थान, उदय, उत्थात, उन्नम, ऊर्ध्वगमन,
अधिरोहण, उच्छलन, नागरण, सहसा आरम्भ,
सिद्धता, सज्जता, स्पृष्टन, उत्तेक, समाप्ति
(स्त्री), पिधान, विलोप, व्यय, विक्रय,
आटवेन नियोग ।

उठनी पवानी, स स्त्री, यौवनारम्भ ।

उठने-बैठने, कि वि, प्रतिक्षण, सर्वदा ।

उठना-बैठना, सु, आचार, व्यवहार,
शालम् ।

उठवाना, कि प्रे (हि उठना) अन्येन
उत्था-उद्गम्-उन्नम् (प्र) ।

उठाईगीरा, सं पु (हि उठाना + फा
गौर >) चौर, मोषक २ धूर्त, कितव ।

उठान, स स्त्री (स उत्थानम्) समुत्थान,
उद्गमनम् २ शुद्धि (स्त्री) ३ आरम्भ
४ व्यय ।

उठाना, क्रि स (हि उठना) उठाना के धातुओं के प्रेरणाभक्ति रूप बनाएँ ।

उठाव, स पु (हि उठाना) व्यय २ उन ताव ।

उठानी, स स्त्री (हि उठाना) उत्रयन, उत्क्षयणम् २ उत्थापनमूल्यम् ३ प्राग्दत्त मूल्यम् ४ वणिग्भि उद्धार ५ दैवपूजार्थ पूज्यभूत धनम् ६ मृतस्यास्थिचयनरीति (स्त्री) ६ मृत्योर्द्विंशत्ये तृतीये वा दिने सवधिपुरुषस्य उष्णीषपरिभाषनरीति (स्त्री) ।

उठकू, वि (हि उठना) गगनगामिन् २ चल ।

उठकू, स पु (स ऊठ >) दे 'उठकू' ।

उठकूमटोला, स पु (हि उठना + टोला) विमानम्, वायुयानम् ।

उठनछ, वि (हि उठना) छुप्त, अदृष्ट ।

उठना, क्रि अ (स उठयनम्) उठ्, डी (भ्वा तथा दि आ स), उत्पत्त (भ्वा प से), छे विसृप (भ्वा प अ) २ सत्वर गम् ३ तिरोभू, अतर्वा (कर्म) ४ (हुरु ज्वादि) नडाशब्देन विभिद् (कर्म) ५ वि प्र सप् (भ्वा प अ) ६ प्रचल् प्रचर् (भ्वा प से) ७ अभिसन् (दि आ अ) ८ उत् वि सन् (कर्म) ९ मलिनी भू १० बायी इतरत एतुर (तु प से) ११ सहसा विच्छिन् (कर्म) १२ वन् (तु) १३ वल् (भ्वा प से) । स पु, दे 'उठान' ।

उठती खबर, स्त्री (हि + अ) किन्दती ।

उठाऊ, १ अ (हि उठाना) दे, 'उठकू' २ अतिन्यायिन्, अतिमुच्यस्त ।

उठाना, वि (हि उठना) दे, उठकू २ वायुयानचालक ।

उठान, स स्त्री (स उठयनम्) डयन, उत्प तन, प विसर्पणम् २ प्लुति (स्त्री) ३ पला यनम् ४ प्रकोष्ठ ।

उठाना, क्रि स (हि उठना) 'उठना' के धातुओं के प्रे रूप । २ चुर् (चु) ३ अपस (प्रे) ४ अपच्य (चु) ५ तद्ध (चु) ६ वाक्छल कृ ७ धा (भ्वा प अ) ८ विभुम् (प्रे) ।

उठिया, वि (हि उठीसा) उठल २ उठल पान्तवासिन् ३ उठलमाथा ।

उठीसा, स पु (स ओठदेश) उठल, उठलप्रान्त ।

उठुवर, स पु (सं) दे 'गूलर' २ देहली, गृहावग्रहणी ३ डीव नपुसक ४ कुष्ठरो गमेद ।

उठ्, स पु (स स्त्री न) नक्षत्र, तारका २ तारासमूह, राशि ३ पश्चिन् ४ नाविक ५ जलम् ।

—गण, स पु (स) तारासमूह ।

—पति, —राज, सं पु (सं) चन्द्र, इन्दु ।

उठप, स्त्री (सं उठप पम्) प्लव, तरण, तारण, तारक २ नौका ३ चन्द्र ।

उठेठना, क्रि, स दे 'उठेठना' ।

उठुयन, स पु (स न) नमोगति (स्त्री), दे 'उठान' ।

उठुयमान, वि (स) उठुयनविशिष्ट, से वितर्पत (शतृ) ।

उठग, वि (स उठुग) उच्छिद्य २ अष्ट ।

उठना, वि (हि उठ >) तावत् (-ती स्त्री) । क्रि वि, तावत् (न), तावत्मात्रम् ।

—भी, तावदपि, तावत्मात्रमापि ।

उतरन, स स्त्री (स अवतरण >) जीर्ण अव तारित, वस्त्रम् ।

उतरना, क्रि अ (स अवतरणम्) अवतृ-अव पत् (भ्वा प से) अधोगम् अवर्ह (भ्वा प अ) २ परिधि (कर्म) ३ हस (भ्वा प से) ३ (नस आदि का) मध चल (भ्वा प से), दित्ता (कर्म) ४ (रग) विवर्णी भू, म्लै (भ्वा प अ) ५ (कोषादि) शन् (दि प से) स्वपगम् ६ (डित्ता वरना) वन्-स्था (भ्वा प अ) ७ (तत्वीर) आलो कलेग्य अक् (कर्म) ८ सहसा विदिलप् (दि प अ) ९ (वत्तादि) उमुच्-अवन् अपनी (कर्म) १० वन् (दि आ से), अवतार घृ (प्रे) ११ (पवना) पच् (कर्म) । क्रि स, (सं उत्तरणम्) स-उन्, तृ, उन्, लप् (स्वा आ से) । स पु, अवतार, अवतरण, अधोगमन, हास, विमोक्षण, विवर्णी भाव, ग्लानि (स्त्री), उपशम, आलोक लस्याकन, सहसा विदलेय अपनयनं देह धारण, पचन, सम्-उत्, तरणं वदधनम् ।

उतरकर, पु स्त्रीन खन ।

चित्त से—, सु विस्मृ (कर्म) २ अग्रिय
(वि) भू ।

वेदरा—, सु म्लानमुख (वि) भू ।

उत्तरा, वि (हि उत्तरना) अवनीषे २ म्लान
३ रिपु ४ धृत्यक्त (वक्ष) ।

उत्तराई, सं स्त्री (हि उत्तरना) अवतरण,
अधोगमन २ उत्तरणम् ३ आतार, तरण
ण्यम् ४ अवमर्षिणी भूमि (स्त्री) ५ गिरि
नितम्ब ।

उत्तराना, कि अ (स उत्तरणम्) १ भु (ष्वा
आ अ), नू (ष्वा ष से) २ ह्यन्-पृ पच
(वर्न) ३ निरन्तर अनुगम् ४ मास (ष्वा
आ से) ५ अन्येन-अवन आदि के प्रे रूप ।

उत्तरायल, वि (हि उत्तरना) अवतारित
त्यक्त, नीर्णे (वक्षदि) ।

उत्तान, वि (स उत्तान) ऊर्ध्वमुख (-स्त्री स्त्री),
अवपृष्टशायिभू, उत्तानशाय ।

उत्तार, सं पु (॥ अवतार) अवतरण नीचे
गमनम् २ प्रावण्य, अवसर्पिणी भू (स्त्री)
३ अवतरणोचित स्थानम् ४ क्रमशः क्षय
५ तीर्थम् ६ क्षीयमाना वेला ७ निकृष्ट
८ दान्तिकर उपहार ९ प्रतिविम्बम् ।

—चद्राय, स पु, आरोहावरोहो २ लाभालाभौ
३ पातोत्पानौ ४ अस्थैर्वम् ।

उत्तारत, स पु (हि उत्तरना) दे 'उत्तरायल'
२ निकृष्ट-नुच्छ-त्याज्य, -वस्तु-परायम् ।

उत्तारना, कि स (हि उत्तरना) उत्तरना'
के पातुओं के प्रे रूप ।

उत्तारा, सं पु (स अवतार) निवेश, समा
वास २ अव-स, स्थिति (स्त्री) ३ उद्,
स्वन ४ अवतरण-निवेश, स्थानम् ५ प्रेन
बाधमाशुय ज्वरारभेद, नद्वै उक्तुमान वा ।

उत्तार, वि (हि उत्तरना) सज्ज, सज्ज,
सिद्ध ।

उत्तावला, वि (सं, उत्तर) आशुकारिन्,
सत्वर, अविलविन्, २ अविमृश्यकारिन्
३ उत्सुक ।

उत्तावली, स स्त्री (मं उत्तरा) त्वरा, त्राण
(स्त्री), शीघ्रता, क्षिप्रता, वेग २ व्यग्रता,
चाचन्यम् । वि, स्त्री, सत्तरा, आशुकारिणी
२ असमीक्ष्यकारिणी ३ उत्सुका ।

उत्तण, वि, दे 'उच्छण' ।

उत्कटा, सं स्त्री (सं) उत्कलिता, हलसा,
तीव्रामिलाष २ मन्चारिभावभेद (सा) ।

उत्कटित, वि (सं) उत्क, उमनम, उत्सुक ।

उत्कटिता, सं स्त्री (स) प्रियमिलनोत्सुक
नायिका ।

उत्कधर, वि (सं) उत्कण्ठ, उद्ग्रीव ।

उत्कट, वि (सं) तीव्र, प्रचट, उग्र, दुःसह ।

उत्कर्ष, स पु (सं) महिमन् (पु), महत्त्वं,
२ श्रेष्ठता ३ समृद्धि (स्त्री) ४ व्याक्षेप-
विलम्ब, ५ अतिशय ।

उत्कल, सं ॥ (स) दे 'उदीता' २ व्याप ।
उत्कीर्ण, वि (स) उद्, लिखित २ छिन्न,
विद्ध ३ पाषाणकाष्ठादिपु लिखित ।

उत्कृष्ट, वि (स) प्रकृष्ट प्रशस्त, उत्तम, श्रेष्ठ ।

उत्कृष्टता, सं स्त्री (म) महत्त्व, श्रेष्ठता,
प्रशर्व ।

उत्कोच, स पु (सं) दे 'वृत्' ।

उत्तस, वि (सं) परि-प्रसन्न, अत्युष्णीकृत
२ शुक्ल, दुःखिन ३ कुद ।

उत्तम, वि (सं) श्रेष्ठ, विशिष्ट, वरेण्य, प्रवर
(टि इसी अर्थ में समानान्त में पुणव, ऋषभ,
व्याघ्र, सिंह, शार्दूल, इन्द्र आदि, जैसे—नरों
में उत्तम = नर, पुणव शार्दूल इ ।) ।

उत्तमना, सं स्त्री (मं) श्रेष्ठता उत्कृष्टता,
गुणानिशय, विशिष्टता ।

उत्तमर्ण, स पु (स) ऋणद, ऋणदाय ।

उत्तमा, वि स्त्री (स) मद्रा, साध्वी, श्रेष्ठा ।

सं स्त्री (स) १-२ नायिका-वृत्ती, -भेद ।

उत्तमाग, स पु (सं न) शिरस (न)
दे 'सिर' ।

उत्तमार्द, र्घ, स पु (स पु न) उत्कृष्ट,
अर्द्ध—अर्द्ध २ उत्तर, -अर्द्ध—अर्द्धम् ।

उत्तमोत्तम, वि (स) सर्वोत्तम, महत्तम ।

उत्तर, स पु (सं उत्तरा) उदीची, उत्तर,
दिशा-आशा, कौन्तेरी ।

—अयन, (-उत्तरायणम्) स पु (स न)
माषादिषष्मासात्मक भूयस्थोत्तरदिगमनकाल
२ वर्षमकान्ति (स्त्री) ।

—क्षी ओर, कि वि, उत्तराभिमुख, उत्तरेण,
उत्तरदिशि, उत्तरत (बड़ी के साथ), उत्तर
(पचमी के साथ) ।

—की ओर मुखवाला, नि, उदङ्मुख (-स्त्री स्त्री) ।

—पश्चिम, सं पु, उत्तरपश्चिम, वायवी (दिशा) ।

—पश्चिमी, वि, वायव, वायुदिक्स्थ ।

—पूर्व, ल पु, उत्तरपूर्वा, पूर्वोत्तरा, प्रागुत्तरा, प्रागुदरीचा, देशानी ।

—पूर्वी, वि पूर्वोत्तर, प्रागुत्तर, प्रागुदाचीन, पूर्वोत्तरस्थ ।

—संबन्धी, वि उदीच्य, उदीचीन, उत्तरस्थ ।

उत्तर, स पु (सं न) प्रतिबचन, प्रतिवाक्य, प्रत्युक्ति प्रतिवाच् (स्त्री) २ प्रत्युत्तरम् ३ प्रति (ती) कार ४ अल्कारभेद (सा) ।

—वाचिच, सं पु (सं न) प्रतिवाच्यता, प्रष्टव्यता, भार, अनुषोध्यता ।

—दायी, वि (सं यिन्) प्रष्टव्य, अभिबोक्तव्य अनुषोध्य, प्रतिवाच्य, उत्तरदात् ।

उत्तर, वि (सं सर्वे) पर, अपर, अवर, अन्य २ अन्तिम, चरम ३ उक्तरोक्त ४ ग्रा यस्त, ज्यायस् ।

—अधिकार, सं पु (सं) अशित्व, दायादत्व, रिक्थहरत्वम् ।

—अधिकारी, सं पु (सं रिन्) दावाद, रिक्थ, हर भागिन्, रिभिधन्, अशहर, अशिन् । (स्त्री दायादा, अशहरी) ।

—अर्द्ध, सं पु (सं ङु न) अपर-पर अवर, अर्द्ध-अर्द्धम् ।

—उत्तर, कि वि (सं न) आधकाधिक, २ अग्रेऽग्रे ३ अनुपूर्व, आनुपूर्व्येण ४ क्रमशः ५ निरन्तरम् ६ प्रतिदिनम् ।

—पक्ष, स पु (सं) सिद्धान्त, समाधि ।

—मीमांसा, सं स्त्री (स) वेदान्तदर्शनम् ।

उत्तरण, सं ङु (सं न) सतरणम्, उलघनम्, सनुत्तरणम्, पारायणम् ।

उत्तरा, सं स्त्री (सं) उत्तरा दिक् (स्त्री), बोदेरी, उदीची, २ अभिमन्युपत्ती ।

—रड, सं ङु (सं पु न) हिमालयसमीप वती भारतवर्षस्योत्तरभाग ।

उत्तराभास, स पु (ल) असत्योत्तर, मिथ्या प्रतिबचनम् । २ न्याय, मिथ, छलम् ।

उत्तरीय, स पु (स न) श्रद्धिका, सन्याय,

प्रावा(व)र । वि, उपरिस्थ, ऊर्ध्व, उपरितन २ दे 'उत्तरसन्धी' ।

उत्तान, वि (सं) दे 'उतान' २ गाभीर्यरहित ३ ऊर्ध्वतल ।

—पाद, सं पु (सं) भुवपितृ ।

उत्तीर्ण, वि (सं) पारगत २ मुक्त ३ परी-क्षाया सफल ।

उत्तुग, वि (सं) अत्युच्च, अतीवोज्जत, प्राशु, अत्युच्छिन्न ।

उत्तेजक, वि (सं) उदीपक, प्रोत्साहक, प्रव र्तक, प्रेरक २ विकारोत्पादक ३ सङ्क्षोभक ।

उत्तेजन, स पु (सं न) दे 'उत्तेजना' ।

उत्तेजना, सं स्त्री (स) प्रेरणा, प्रोत्साह, उदीपन २ सङ्क्षोभणम् ३ मनोवेगोत्पादनम् ।

उत्तोलन, सं पु (सं न) उत्पादन, उत्कर्ष णम् २ तोलन, कुल्या मारबोधनम् ।

उत्थान, सं पु (सं न) उद्गमन, उत्पन्नम् २ आरम्भ ३ उन्नति (स्त्री) ४ सैन्यम् ५ युद्धम् ६ पौरवम् ७ हर्ष ।

उत्थापन, सं पु (सं न) उत्थोलन, उन्नयनम् २ विधूननम्, वेहनम् ३ विप्र-बोधनम् ।

उत्थित, वि (सं) कुलोरधान, उद्गत २ उत्पन्न ३ प्रोषण ४ वृद्धिमत् ५ जागरित ।

उत्पत्ति, सं स्त्री (स) उद्गम, उद्भव, जन्म (न) २ सत्कार ३ आरम्भ ।

उत्पन्न, वि (सं) जात, उद्भूत ।

उत्पल, सं पु (सं न) कमलम् २ नील कमल, कुवलय, कुवल, कुबेल, रात्रिपुष्प ३ जलजपुष्पमात्रम् ४ पुष्पम् ।

उत्पलिनी, स स्त्री (सं) कमल-उत्पल, -निकर-समूह २ वमलिनी ।

उत्पादन, सं पु (सं न) उन्मूलनम् ।

उत्पाटित, वि (सं) उन्मूलित २ अपनीत ३ सिंहासनाद्य अवपातित ।

उत्पाप, सं पु (सं) अजन्य, उपद्रव, आपद् (स्त्री) २ कौलाहल, टमर ३ विप्लव ।

उत्पाती, सं पु (सं तिन्) उपान-उपद्रव मश्रोभ, कर-कारिन्, कुचेष्ट, लोकवण्टक ।

उत्पादक, वि (सं) जनक, उत्पादयितृ ।

उत्पादन, सं पु (सं न) जनन, प्रसव, प्रसूति (स्त्री) ।

उत्पीडन, सं पु (सं न) पीडन, अर्दन,
बाधन, निकार ।

उत्प्रेक्षा, सं स्त्री (सं) आरोप उद्भावना
२ अर्थात्करभेद (सा) ३ अनवधानम् ।
उत्प्लुप्त, वि (सं) विकसित २ प्रसन्न ।

उत्स, सं पु (सं) प्रसवण, दे 'हरना' ।
उत्सर्ग, सं पु (सं) अक, क्रोडम् २ मध्य
भाग ३ साधु ४ सौधादीनामुपरिभाग
५ विरक्त ।

उत्सर्ग, सं पु (सं) परि, त्याग, विसर्जनम्
२ दान, वितरणम् ३ समाप्ति (स्त्री) ४
व्यापकनियम ।

उत्सर्जन, सं पु (सं न) दे 'उत्सर्ग' ।

उत्सव, सं पु (सं) मह, झुण उद्धव यात्रा,
पर्वन् (न) ।

उत्साह सं पु (सं) वियदेतिका, औत्सुक्य,
व्यग्रता २ उद्यम, अध्यवसाय ३ साहस,
वीर्यम् ।

उत्साही, वि (सं, इन्) सोत्साह, उत्साहवत्,
अत्युत्सुक २ प्यमिन्, अध्यवसायिन् ३ शूर,
वीर ।

उत्सुक, वि (सं) उत्कृष्ट, मोत्कृष्ट, लालस,
सात्साह, विल्लासहिष्णु ।

उत्सुकता, सं स्त्री (सं) औत्सुक्य, कुतूहल,
व्यग्रता, लालसा, कौतुकम् ।

उत्सृष्ट, वि (सं) त्यक्त, समुत्सृष्ट ।

उत्पल-पुष्पल, सं स्त्री (हि उत्पलना) क्रम
भाग, व्यतिक्रम, न्यस्तता, विपर्यय, अन्य
वस्था । वि, क्रम-व्यवस्था, हीन, अव्यवस्थित,
विपर्यय ।

उत्पला, वि (सं उत्पल) गाध, उत्पान, अल्प
गाध, जल-नोय ।

उदत्त, सं पु (सं) समाधार, वृत्तान्त,
वार्ता २ समन ।

उदक, सं पु (सं न) जल, पानीयम् ।

—त्रिया, सं स्त्री (सं) तिलाजलि २ तर्ष
णम् ।

उद्गमन, सं पु (सं) तीर, तटम् ।

उदधि, सं पु (सं) समुद्र, सागर २ घट
३ मेघ ।

—सुत, सं पु (सं) कद्र २ अमृतम् ३
शस्त्र ४ कमलम् ५ सागरन (पदार्थ) ।

—सुता, सं स्त्री (सं) लक्ष्मी २ शुनिका ।
उदय, सं पु (सं) ऊर्ध्वगमन, उद्गम, उदय
नम्, उत्थानम् ।

—होना, कि अ, उदया-उद् इ (अ प अ),
उद अय (म्वा आ से), उदगम् ।

—अचल, सं पु (सं) उदय, गिरि-अद्रि,
पूर्व-पर्वत-अचल ।

उदयास्त, सं पु (सं स्त्री) अस्तोदयौ, उद-
यास्तमने । कि वि प्रातरारभ्य साय यावत्,
सर्व दिनम् ।

उदर, सं पु (सं न) गुन्द्र, कुक्षं कुक्षि,
पिबिड २ आमाशय, पत्राशय, ३ मध्य-
भाग देश, अन्नर, गर्भ ।

—ज्वाला, सं स्त्री (सं) जठर, अन्नर-अग्नि
२ क्षुधा, कुक्षी ।

उदात्त, वि (सं) उच्चैरुच्चारित (स्वर)
२ सदय, कृपाळु ३ दातृ, उदार ४ श्रेष्ठ
५ विशद, स्पष्ट ६ समर्थ । सं पु (सं)
वेदमन्त्रोच्चारणे उच्चस्वर २ अलकारभेद
(सा) ।

उदार, वि (सं) दान, शीलशौच, बहुप्रद,
बदान्य, त्यागशील २ श्रेष्ठ ३ महाशय
४ सरल ।

उदारता, सं स्त्री (सं) बदान्यता, त्यागिता,
औदार्य, त्याग २ भादाल्यम् ३ हृशील,
ऋजुता ।

उदास, वि (सं) पित्र, अवसन्न, स्थान,
विषण्ण २ उदासीन, विरक्त ३ तदर्थ,
निष्पक्ष ।

—होना, कि अ, विषद् (म्वा प अ), दुर्ग
नायते (ना था) ।

उदामी, सं स्त्री (सं उदास) अवसाद,
म्लानि-ज्वानि (स्त्री) रोद, दीर्घनस्यन्
२ विरग, वैराग्यम् ३ निष्पक्षता, तटस्थता ।
सं पु, सन्ध्यासिन्, विरक्त, साधुसंप्रदाय
भेद ।

उदासीन, वि (सं) विरक्त, निस्पृह, प्रपञ्च
रहित २ मध्यस्थ, तटस्थ, समभाव ३ रुद्ध,
निस्तेज ।

उदासीनता, सं स्त्री (सं) विरक्ति (स्त्री)
२ तटस्थता ३ रुद्ध, अवसाद ।

उदाहरण, सं पु (सं न) निदर्शन, दृष्टांत ।

उदाहृत, वि (सं) वर्णिन, कथित २ दत्त
दृष्टात ।

उदित, वि (स) उद्गन, उत्थित उदयित
२ प्रकृत स्वतः उद्गम, विशद ४ कथित
उक्त ।

उदीचण, स पु (स न) ऊर्ध्वलोकनम्,
२ दीपणम् ।

उदीची, स स्त्री (स) उत्तरदिश ।

उदीच्य, वि (स) उत्तरदिशसिन् २ दे
उत्तरसन्धिन् ।

उदीप, स पु (स) सप्रव, जलविप्रव ।

उदीयमान, वि (स) उद्गच्छन्, उन्नमन् ।

उदुंबर, स पु (स) क्षीरवृक्ष, सदाफल,
ननुफल इ 'गूलर' २ क्षीरवृक्षफलम् ३
द्वैली ४ नपुंसक ५ कुम्भेद ।

उद्गन, वि (स) उदित, उरिवत् २ प्रकृत
३ व्यास ४ वास ५ उन्म ।

उद्गम, स पु (स) उदय, उद्गम, उद्गम
मन आविर्भाव ऊर्ध्वगमन २ उद्गमस्थान
प्रभव योनि (स्त्री) ।

उद्गाता, स पु (स ट) सामवेदग, साम
गायक ३ सामवेदज्ञ ।

उद्गार, स पु (स) तरलपदार्थस्य सहसा
नित्तरण उद्गमन स्त्रावो वा । २ वमन,
प्रच्छेदना ३ सवेग नि सल तरलपदार्थ,
वाक्पुच्छ (न) ५ लाल मुखसाव ६ उद्
धम उक्षेप, ७ आविश्यम् ८ वीरनुमूल
शब्द ९ रुद्धमाशाना उष्ण प्रकाशनम्
१० इत्यप्रकाशिता भावा ।

उद्गीथ, स पु (स) सामगानविशेष
२ ओंकार ३ सामवेद ।

उद्घाटन स पु (स न) अवा वि-वरणम्,
उद्गम निरन्तरकरणम् २ प्रकाशन प्रकटा
करणम् ।

उद्दड, वि (स) उद्गम दु शल, अविनीत,
साहमिक, तीक्ष्णकर्मन् २ कलहप्रिय ।

उद्दाम, वि (स) वध-वधनपाश रहित २
निरङ्कुश, अनर्गल, उद्धृष्ट ३ स्वतन्त्र ।

उद्दालक, स पु (स) ऋषिविशेष २ व्रत
प्रसार ।

उद्दिष्ट, वि (स) निर्दिष्ट सहेतिन २ लक्ष्य
अभिप्रेत ।

उद्दीपक, वि (स) उत्तजक, प्रेरक सक्षोभक
२ दाहक, तापक, दीपन ।

उद्दीपन, स पु (स न) उत्तजन, प्रोत्सा
हन, प्रकोपन प्रेरणम् २ उत्तेजनपदार्थ
३ विभावनेद (सा) ४ तापन, दहनम् ।

उद्दीप्त, वि (सं) भावुर भास्वर २ प्रज्वलित ।
स पु शुशुब्ध, देवपूष ।

उद्देस, स पु (स) इच्छा, अभिप्राय
२ आशय, अभिप्राय ३ कारण हेतु
४ प्रतिज्ञा (न्या) ।

उद्देस्य, वि (स) लक्ष्य, कान्य, स्तुहणीय ।
स पु (स न) प्रयोजन अभिप्रेतोऽर्थ २
यदुद्दिश्य विधेयप्रवृत्ति भवति तत् (न्या) ।

उद्धत, वि (स) उग्र चट, दे उद्ध' ।
२ प्रकम्प, विक्षिप्त ।

उद्धरण, स पु (स न) उत्थान, उद्गमनम्
२ मुक्ति (स्त्री) ३ उत्थिति (स्त्री)
४ पाठस्यावृत्ति (स्त्री) ५ उद्धृतवाच्यम्
६ उन्मूलनम् ७ उत्थापनम् ८ वमनम् ।

उद्धय, स पु (स) दे 'उत्थय' २ श्रीरुण
मित्रम् ।

उद्धार, स पु (स) निर्वान, मुक्ति (स्त्री)
२ उ रनिवृत्ति (स्त्री) ३ उत्थिति (स्त्री)
४ ऋणमुक्ति ५ दादम्यादाविशेष (मनु)
६ ऋणम् ७ युद्धे उठितद्रव्यस्य राजप्राप्त
पक्षोऽय ८ चुली ।

—करना, कि स, उद्ध (भ्वा प अ),
गोष् (बु), निरु (प्रे) उन्नी (भ्वा
उ अ) ।

—होना, कि अ शुष् (कर्म) ।

उद्धृत, वि (स) अवतारित, उपन्यस्त,
उन्नीत, उदाहृत २ उद्धोत, उद्घापित
३ उदगीर्ण ।

—वरना, कि य उपन्यम् (दि प से)
उद्ध (भ्वा प अ) ।

उद्धुद्ध, वि (स) विकसित प्रपुष्ट
२ शानिन् ३ जागरित ।

उद्धोद्यन, स पु (स न) शपनम्
२ प्रकाशनम् ३ उत्तेजनम् ४ जागरणम् ।

उद्धट, वि (स) प्रवळ, उग्र २ श्रेष्ठ
३ महात्मन् ।

उद्भव, सं ॥ (सं) उत्पत्ति-सृष्टि (स्त्री)
उत्पन्न (न) २ वृद्धि-स्फूर्ति (स्त्री) ।

—स्थान, सं पु (सं. न) योनि (स्त्री),
प्रभव ।

उद्भाव, सं पु (सं) उद्भव २ कल्पना
३ औदार्यम् ।

उद्भावना, स स्त्री (सं) उद्भावन, कल्पन,
कल्पित, उद्भाविता, कल्पना २ उत्पत्ति
(स्त्री) ।

उद्भास, सं पु (सं) कान्ति-शक्ति (स्त्री)
२ प्रकाश, आलोक ।

उद्भिज्ज, सं पु (सं) तद्भिज्जनादि, उद्भिद
(पाँच प्रकार के उद्भिज्ज-नर, गुल्म, टना,
बहो, वृत्तम्) ।

उद्भिद्, (सं पु) अकुरा, प्ररोह २ ओषधि
५ (स्त्री), वृक्षक ३ जलप्रपात, निर्हार
४ नल्यन्तम् ।

उद्भूत, वि (सं) जात, उत्पन्न ।

उद्भेदन, स पु (सं. न) श्रोत्र, भजनम्
२ उद्भिष निर्माणम् ।

उद्यन, वि (सं) सज्ज, उद्युक्त, सिद्ध, उत्कृष्ट,
सज्ज २ उत्थापित ।

उद्यम, स पु (सं) उद्योग, उत्साह, अभ्य
वसाय, प्रयत्न, आयास २ आ उद्य, जीविका ।

—करना, कि स, चेष्टा प्रयत्न (स्त्री आ से)
उद्यम् (स्त्री आ से), व्यवम् (वि प अ) ।

उद्यमी, वि (सं-मिन्) उद्योगिन्, उद्युक्त,
व्यवसायिन् ।

उद्यान, स ॥ (सं. न) उपवन, आराम ।

उद्योग, स पु, (म) दे 'उद्यम' ।

उद्योगी, वि (सं गिन्) दे 'उद्यमी' ।

उद्योत, स पु (सं उद्योत) अलोक
२ युति (स्त्री) ।

उद्देक, स पु (सं) वृद्धि-उत्पत्ति (स्त्री)
२ आधिक्य, बहुत्वम् ३ अस्कारनेद (सं) ।

उद्दाह, ॥ पु (सं) विवाह ।

उद्दिम, वि (सं) आन्धा, कुल, सञ्ज्ञा,
अधार, व्यस्त-विश्लिष्ट, चित्त, व्यग्र, कातर ।

उद्देग, स पु (सं) उद्दिष्टता, व्याकुलता
२ मनोविष, आवेग ३ विरह-दुःखम् ।

उद्देवना, कि अ (सं उद्देवन्) सु-

(तु प से), मिद-विद् (कर्म) २ सत्त्वन
मिद (कर्म) ।

उद्देर, कि वि (सं अमुद) तव, तन्म्याने
२ तत्स्थान प्रति ।

उद्धार, स पु (सं उद्धार) क्रम, धनप्रयोग
२ आविहितकाम्य द्रव्यप्रयोग ३ मुक्ति
(स्त्री) ।

—सुकामा, कि स क्रम गुप (प्रे), आनन्द
गन् ।

—लेना, कि स, ऋण क भवता भ्रष्ट (क
२ मे) ।

उद्देवना, कि स, (हि उद्देवना) स्तर निर्दे
(स्त्री उ अ) २ मौवन मिद (र उ प)
२ विन्दु (तु प से) ।

उद्देव-भुन, स स्त्री (हि उद्देवना + भुनना)
चिन्ता, विमर्श, ऊहापोह २ उपायकल्पना ।

उन, सर्व (हि उम) तद्-अस्तु (सर्व) ।

उनचास, वि (सं ऊनचस्तरन् स्त्री एक)
एकोनचत्वारिंश-एकात्रिंश-नववत्वारिंश
(स्त्री एक) । सं पु, उक्ता सख्या तदको
कावको (४९) व ।

उनतालीस, वि (सं ऊनचत्वारिंश स्त्री
एक) एकोनचत्वारिंश-नवत्रिंश (स्त्री) ।
स पु, उक्ता सख्या तद्विंशको (३९) व ।

उनतीस, वि (सं ऊनत्रिंश स्त्री एक)
एकोनत्रिंश-नवत्रिंश (स्त्री) । स पु,
उक्ता सख्या तदको (२९) व ।

उनसठ, वि (सं ऊनचत्विं स्त्री एक) एको
नचत्विंश-नवचत्वारिंश (स्त्री एक) । स पु,
उक्ता सख्या तदको (५९) व ।

उनहत्तर, वि (सं ऊनसप्तत्विं स्त्री एक)
एकोनसप्तत्विंश-नवचत्विंश (स्त्री एक) ।
स पु, उक्ता सख्या तदको (६९) व ।

उनासी, वि दे 'जाता' ।

उनीदा, वि (सं उन्दिद) निद्रा, शङ्क-वश-
अभिभूत ।

उच्च, वि (सं) आर्द्र, दिन, अन्मिल
२ दद्याद्, दद्यात् ।

उच्चत, वि (सं) उद्देश्य, उच्च, उच्च, उच्च
२ समृद्ध ३ श्रेष्ठ ।

उच्चति, सं स्त्री (सं) उच्च, उच्च, उच्च
२ समृद्धि (स्त्री), अमुदय ।

उच्चार, सं ॥ (अ) कौल, कुवल, मौवीरम् ।
उच्चायक, वि (सं) उज्ज्व, उत्कर्षक २ वर्द्धक,
अभ्युदयकारक ।

उच्चासी, वि (सं) उच्चासीति स्त्री एक)
एवोनाश्रयति नवमसति (स्त्री एक) । सं पु,
उन्मा मरया, तदकौ (७९) च ।

उच्चिष्ट, वि (सं) निद्रारहित २ विकसित,
प्रकुट ।

उच्चीम, वि (सं) ऊनविशति स्त्री एक)
एवोनिविशति, नवदशन् (बहु) । सं पु,
उच्चा सख्या तदकौ (१९) च ।

—उत्सवे, सु, प्राय, प्रायश, प्रायेण (सव
अव्य) ।

उन्मज्जक, वि (सं) जलाद् बहिर्गमन्तु ।

उन्मज्जन, सं पु, (सं न) जलाद् बहि
भागमनम् ।

उन्मत्त, वि (सं) उन्मादिभू, वातुल, विक्षिप्त
चित्त २ क्षीव, मयोन्मत्त, मयोद्धन ३ रुद्धा
रहित, नष्टमह, विचेतन ।

—प्रलाप, सं पु, निरर्थकवचनानि (न बहु) ।

उन्मन, वि (सं) अन्यमनस् अन्यमनस्क,
अयमचित्त, अनवधान ।

उन्मथूय, वि (सं) प्रकाशमान, भासुर,
भास्वर ।

उन्माद, म पु (सं) मतिभ्रष्ट, चित्तविभ्रम,
मानमरोगभेद २ सत्कारिमावभेद (सा) ।

उन्मादी, वि (सं) दिन्) उन्मत्त, वातुल ।

उन्मार्ग, सं पु (सं) उन्माकाकु वि, पथ -
मार्ग ।

उन्मीलन, ॥ पु (सं न) उन्मील, उन्मीलन
२ विकसन, विराम ।

उन्मीलित, वि (सं) विष्टन, उन्मिषित,
उदागिन २ विकसित, प्रकुट ।

उन्मुक्त, वि (सं) उद्वृ-ऊर्ध्व, मुक्त २ उत्क
टित, उत्सुक ३ उदत ।

उन्मूलन, स पु (सं न) निर्मूलन, उत्पादन,
उत्वननम् २ विध्वसन, विनाशनम् ।

उन्मूलित, वि (सं) उत्पात, उत्पागिन
२ विनागिन ।

उन्मेष, सं ॥ (सं) उन्मीलनम् २ विकसन
३ अव्यप्रकाश ।

उप, उप (सं) अनुगत्याधिक्यन्यूनतासामी
प्यध्याप्त्यादिबोधक उपसर्ग ।

उपकठ, सं पु (सं ॥ न) सामीप्यम् । वि,
निवट । कि वि, निवटे ।

उपकरण, स पु (सं न) साधन, सामग्री,
परिच्छद, यत्र, साधकद्रव्यम् २ छत्रचामरा
दीनि राजनिहानि ।

उपकार, सं पु (सं) हित, दया, कृपा, परोप
कार, उपकृति (स्त्री) २ लाभ ।

—करना, कि स, उपकृ, अनुग्रह (क उ
से), दिन कृ ।

—मानना, कि स, उपकृत स्मृ (म्वा प
न) कृत विद् (अ व से) ।

उपकारी, वि (सं) रिन्) उपकारक, उपकर्तृ,
परोपकारपर, परहितेच्छुक, जगन्मित्रम्, दान
शील ।

उपकार्या, सं स्त्री (सं) (राजकीय) पट,
मटप-गृहम् २ रात्रि, भवनप्रासाद ।

उपकुश्या, सं स्त्री (सं) उप, सरणी प्रणाही,
२ परिखा, पात्रम् ।

उपकृष, सं ॥ (सं) कृषक, लघुकृष,
उपरात ।

उपकृत, वि, (सं) अनुगृहीत, कृतवेदिन् ।

उपक्रम, सं पु (सं) उपायशानपूर्वकारम्भ
२ प्रथमारम्भ ३ भूमिका ४ चिकित्सा ।

उपक्रमणिका, सं स्त्री (सं) भूमिका, प्रस्ता
वना, वाङ्मुख्यम् २ विषयसूची ।

उपगत, वि (सं) उपस्थित, पुर स्थित
२ विदित ३ स्वीकृत ।

उपग्रह, स पु (सं) ग्रहण, धरण, निरोध
२ वारा, वाम निरोध प्रवेश ३ मारागुप्त,
रुद्ध ४ लघुग्रह ।

उपघात, ॥ पु (सं) विध्वन, विनाश
२ रोग ३ इन्द्रियवेकन्यम् ४ पानकमूह
५ अपकार ।

उपचय, स पु (सं) वृद्धि-उन्नति (स्त्री)
२ सचय, सग्रह ।

उपचर्या, स स्त्री (सं) सेवा २ चिकित्सा ।

उपचार, सं पु (सं) रोगप्रतिहार,
चिकित्सा, उपचर्या २ रोगनिर्दिष्टचर्या
३ प्रयोग, विधानम् ४ धर्मानुष्ठानम् ।

५. धूपदीपादीनि पूजागानि (न न) ६ चाहू
क्ति (स्त्री) ७ उत्कोच ।

उपचारक, वि (स) चिकित्सक २ सेवक
३ विधायक ।

उपच, सं पु (हि उपजना) उत्पन्न फल
शस्य वा २ उद्भावनता, नववत्पना ३ कल्पित
कार्ता ।

उपजना, क्रि अ (सं उपजननम् >) उपजन्
(वि आ से) उपज (रि आ अ),
ग्रन्थ (म्वा प अ) २ मनसि स्फुर (तु
प मे) ।

उपजाऊ, वि (हि उपज) उर्वर, शस्यप्रद,
बुद्धप्रद ।

उपजाना, क्रि स (हि उपजाना) उपजन्
उपद ग्रन्थ (मे) ।

उपजीवी, वि (सं विन्) पराश्रित, अनु
पाविन्, पराधीनवृत्ति ।

उपताप, सं पु (स) रोग, व्याधि २ त्वरा,
मन्त्र ३ उत्ताप, उन्मत् (पु) ४ पीडा
५ दर्भायन् ।

उपयक्रा, स स्त्री (सं) पर्वतनिकटभूमि
(स्त्री) जलपानका भू (स्त्री) ।

उपदर्श, सं पु (स) भेदरोगभेद ।

उपदर्शक, स पु (स) पथ-मार्ग, दर्शक
२ दारपाल ३ साक्षिन् ।

उपदर्शन, स पु (स न) टीका, टिप्पणी-नी ।

उपद्रा, स स्त्री (स) उपायन, दे 'मेट' ।

उपविद्या, स स्त्री (स) उप, आद्या-काद्या-
कुम् (सव स्त्री) [टि चार उपदिशादे दे
है-देशानी, आग्नेयी, नैऋती, वायवी] ।

उपदिष्ट, वि (स) शिक्षित, अभ्याषित,
२ निर्देशित ३ दीक्षित ।

उपदेश, स पु (स) अनुशासन, बोधन,
मिक्षा २ दीक्षा, गुरुमन्त्र ३ धर्म-न्यायवानम् ।

—देना, क्रि म उपदिश (तु प अ) अनु
शास् (अ प से), शिक्ष-बुध्वा (मे),
२ दीप् (म्वा आ से) ।

उपदेशक, स पु (स) उपदेष्ट, धर्मप्रचारक,
प्रवक्तृ ।

उपद्रव, सं पु (सं) द 'उत्पान' (१३)
४ रोगजननरविकार ।

—करना, क्रि स, उत्पानम् उत्था (मे) ।

उपद्रवी, वि (सं किन्) दे 'उत्पानो' ।

उपघा, सं स्त्री (स) कपटम् २ उपानया
क्षरम् ३ उपाधि ।

उपधान, सं पु (सं न) शिरोधानम्, उप
बर्ह २ अलवनम् ।

उपनयन, स पु (सं न) यशोपवातसंस्कार
२ मनीषे नयनम् ३ शिष्यस्य गुरुनिकटे
नयनम् ।

उपनाम, स पु (सं मन् न) प्रचलित-अन्य
उपाधि, नामन् (न) २ उपाधि, मानपदम्,
पदवा ।

उपनिधि, स स्त्री (स) व्याम, उपन्यन्त
वस्तु (न) ।

उपनिवेश, सं पु (स) अधिनिवेश, वासित
प्रदेश ।

उपनिषद्, सं स्त्री (स) ब्रह्मविद्यानिरूपका
ग्रन्थ २ (गुरो) सन्धीषे उपदेशनम् ।

उपनीत, वि (मं) कृतोपनयन २ आमन्त्र,
उपागत ।

उपनेता, स पु (सं तु) उपनयनमस्कारकर्तृ,
आचार्य, गुरु २ निकटे प्रापक ।

उपन्यास, स पु (सं) कल्पित, कथा, कथा
प्रवच, प्रवचकल्पना २ वाक्पथोपक्रम
३ निक्षेप, न्यास ।

उपपत्ति, स पु (स) जार, दे 'वार' ।

उपपत्ति, सं स्त्री (स) इतुना वस्तुस्थिति
निश्चय २ सिद्धि (स्त्री), प्रतिपादनम्
३ मगति (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), हेतु ।

उपपत्नी, स स्त्री (सं) उप, भार्या-जाया
कल्त्रम् ।

उपपद, स पु (सं न) पूर्वोक्त पूर्वलिखित,
पद-शब्द २ समासस्य पूर्वशब्द ३ उपाधि
(पु), पदवी ।

उपपन्न, वि (सं) प्राप्त, उपागत ३, सरपागत
४ लब्ध, अधिगत ५ गुरु ६ उपयुक्त ।

उपपादन, स पु (सं न) साधन, प्रतिपादन
युक्तिभि समर्पनम् २ सपादन, निष्पादनम् ।

उपपुराण, स पु (सं न) लघुपुराण (ये
अठारह हैं) ।

उपप्लव, स पु (सं) जल, विद्रव्य प्रलय
२ उत्पान ३ भूकपादघटना ४ मयम्

५ विघ्न ६ राहु ७ शङ्खावात ।

उपभुक्त, वि (सं) प्रयुक्त २ उच्छिष्ट ।

उपभोग, सं पु (सं) सुख, आस्वाद, आरवा
दनम् २ प्रयोग, व्यवहार ३ सुखसाग्री ।

उपभोगी, स पु (स त्रिन्) उपलेखनसचिव
२ उपमात्य, अमात्यसहाय ।

उपमा, स स्त्री (सं) सादृश्य, साम्यम्
२ अर्थालंकारभेद (सा) ।

—इना, कि स उपमा (जु आ अ), समी
क ।

उपमाता, म स्त्री (सं मात्) धात्री, दे
धाय ।

उपमान, स पु (स न) सादृश्यज्ञानसाधन,
साम्यप्रतियोगिन्, अप्रस्तुत, उपवर्ण्यम्
२ प्रमाणभेद ।

उपमित, वि (स) समी-सदृशी, कृत ।

उपमिति, स स्त्री (स) उपमा २ सादृश्य
जनित ज्ञानम् ।

उपमैय, वि (स) वर्ण्य, वर्णनाय, उपमातन्त्र्य,
प्रस्तुत ।

—उपमा, स स्त्री (सं) अर्थालंकारभेद
(सा) ।

उपयुक्त, वि (स) उचिन्त, उपपन्न, संगत,
युक्त, योग्य, यथायोग्य, यथाई ।

उपयुक्तता, स स्त्री (स) औचित्य औचिनी,
युक्त न, योग्यता ।

उपयोग, स पु (स) प्रयोग, व्यवहार
२ लाभ, फलम् ३ प्रयोजन, आवश्यकता
४ योग्यता ।

उपयोगिता, सं स्त्री (सं) व्यवहार्यता,
लाभकारिता, उपकारकता ।

उपयोगी, वि (स त्रिन्) प्रयोजनीय, हित
साधन २ उपकारक, लाभदायक ३ अनुकूल ।

उपरत्न, वि (स) विपदग्रस्त, दुःखिन
२ ग्रहणयुक्त, उपपन्न (सूर्यादि) ३
विषयाम्बु ।

उपरत, वि (स) विरक्त, उदासीन २ मृत ।

उपरति, स स्त्री (स) विरति (स्त्री)
वैराग्य, औदासीन्यम् २ मृत्यु ।

उपरना, स पु (हि ऊपर) चेल, चेल्व
२ उत्तरीय, आच्छादनम् ।

उपरम, स पु (स) विरक्ति (स्त्री), वैरा
ग्यम् २ निवृत्ति विज्ञान (स्त्री) ३ मृत्यु ।

उपरात, कि वि (सं उपरि + अन्त >) पर,
तत् पर, तदनन्तर, तदनु ।

उपराग, स पु (सं) सूर्य-चन्द्र, ग्रहण, ग्रह
पीठन, २ आपत्ति (स्त्री) ३ वर्ण, रंग
४ प्रतिच्छाया ५ विषयानुराग ।

उपराज, स पु (स) राजप्रतिनिधि, उप,
भूप-भूप ।

उपराम, सं पु (सं) निवृत्ति विरति
(स्त्री), वैराग्यम् २ विश्राम, कार्यानिवृत्ति
(स्त्री) ३ मोक्ष ।

उपरि, कि वि (सं) दे 'ऊपर' ।

उपरूपक, सं पु (सं न) श्रौटकसदृकादयो
रूपकभेदा ।

उपरोक्त, वि (हि ऊपर + सं उक्त) दे
'उपर्युक्त' ।

उपर्युक्त, वि (सं) प्रायुक्त पूर्वोक्त, प्राक्-पूर्व,
वर्णित निर्दिष्ट ।

उपल, सं पु (सं) पापण, प्रस्तर २ रत्नम्
३ मेष ४ करका ५ बालका ६ सिता,
शर्करा ।

उपलक्षण, सं पु (स न) स्वस्वायत्य च
शेषक शब्द २ संकेत ३ शब्दशक्तिभेद
(सा) ।

उपलक्ष्य, सं पु (सं न) संकेत चिह्न,
अभिज्ञानम् २ दृष्टि (स्त्री) उपदेश्यम् ।

—मे, विचारेण, उद्दिश्य, निमित्तौक्य ।

उपलब्ध, वि (सं) अधिगत, प्राप्त, गृहीत
२ शार ।

उपलब्धि, सं स्त्री (स) प्राप्ति (स्त्री) अधि
गम २ ज्ञानम् ।

उपलभ्य, वि (सं) प्राप्य, प्राप्त्य
२ समाय, पुन्य ।

उपला, स पु (सं उपर >) गोमय, गोमय
पिण्डम् ।

उपलालिका, सं स्त्री (सं) वृषा पित्राता ।

उपला, स पु (हि ऊपर) उपरितन
स्तर, ऊर्ध्वभाग ।

उपधन, स पु (स न) आराम २ लघु
धनम् ।

उपवास, सं पु (सं) लघन, अनाहार उग्र
वर्ण, आश्रयण, अनशन, उपोषितम् ।

—करना, कि अ, उपवस् (म्वा प अ) ।

उपविप, सं ॥ (स न) चार, गर, फल विनन् ।

उपविष्ट, वि (स) आमीन, कृतोपवेदन ।

उपवीत, स पु (सं न) यक्ष्मूत्र, यक्षोपवीत २ उपनयनमस्कार ।

उपवेद, स पु (सं) प्रधानवेदानिरिक्षा चत्वारः गौवेदा (= धनुर्वेद, आनुर्वेद, गधर्व वेद, ग्यारत्यवेद) ।

उपवेदान्, स पु (सं न) निषेदन, आत्मन, स्थिति (स्त्री) ।

उपशम, सं पु (स) शम, शान्ति (स्त्री) २ एकाग्र्य ३ इन्द्रियनिग्रह ४ प्रतिकार, उपचार ।

उपशमन, सं पु (सं न) सान्त्वन २ प्रणि विधानन् ।

उपशाय, सं पु (सं) शिष्यस्य शिष्य ।

उपसंपादक, सं पु (सं) संपादकमहाय, सहायकसंपादक ।

उपसंहार, स पु (सं) परि, अवसान, समाप्ति (स्त्री) २ ग्रन्थादिकस्य अन्तिम प्रकरणम् ३ माराज ४ शुक्लादीना वारणम् ।

उपनर्ग, सं पु (स) क्रियायोगे प्रादय निपाता (प्र, परा, अप, सन्, इ०) । २ अन्तर्गन्तम् ३ आधिदैविक उत्पान ।

उपसागर, सं पु (स) एतुसमुद्र २ वक्, खान् ।

उपस्थ, स ॥ (सं) लिङ्, देश २ अग, योनि (स्त्री) (३४) अश्वी, मध्य, भाग ५ शोढम् ६ वक्षस् (न) । वि सनीषोपविष्ट ।

उपस्थान, स पु (स न) समीपामनन २ पूनै उपगमनम् ३ उत्थाय पूजनम् ४ पूनास्थानम् ५ समात्र ।

उपस्थापक, वि (स) उपनायक, उपनिधायक २ स्मारक ।

उपस्थापन, स पु (स न) समीपे-पुरतः-उपनिधानम्, उपनयनम् २ उपस्थिति (स्त्री) ३ परिवर्था ४ स्मारणम् ।

उपस्थित, वि (सं) निकटस्य, उपसृज, उपा ग्न, स्तिहित ।

—करना, कि स, पुरस्क, समस्त नी (स्वा उ अ) ।

—होना, कि अ, उपस्था (स्वा प अ), प्रविष्ट (तु प अ) ।

उपस्थिति, स स्त्री (सं) अनिधान मानि ध्य, वर्तमानता विद्यमानता ।

उपस्वेद, स पु (स) प्रस्वेद, धर्म, उदक-अलन् २ नाभ्य, पन् ३ आर्द्रता, उन्नता ।

उपहत, वि (स) नाशित घ्वस्त २ दूषित ३ पीडित ४ अपवित्र ।

उपहार, स पु (स) उपायन, उपदा ।

उपहास, सं ॥ (स) परि (री) हान, प्रहसन, नर्मन् (न), कीडाकौतुकम् २ निन्दा, आक्षेप ।

—आस्पद, वि (सं न) उपहास्य, उपहा सार्ह २ निन्दनीय ।

उपाग, स पु (सं न) अवयव, अगभाग २ आनुरक वस्तु (न) । (वेद के चार उपाग = पुराण, न्याय, नामासा, धर्मशास्त्र) ।

उपात, स पु (सं) अन्तस्समापभाग २ प्रान्त भाग ३ लघुतम् ।

उपास्य, वि (सं) अन्त्याद पूर्ववतिन् ।

उपाक्रम, स पु (स-अन् न) सरकारपूर्वको वेदग्रन्थयनारम्भ ।

उपाख्यान, स पु (सं न) प्राचीनकथा, आख्यानम् २ कथान्तर्गतकथा ३ वृत्तान्त, उदन्त ।

उपादान, सं पु (सं न) प्राप्ति-उपलब्धि (स्त्री) २ बोध ३ प्रत्याहार ४ समवायि कारणम् ।

उपादेय, वि (सं) ग्राह्य, ग्रहीतव्य, स्वाकार्य २ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उपाधि, सं स्त्री (सं ॥) छल, कपणम् २ स्वपदस्य-अपण्यतयावभासक वस्तु (न) ३ उपद्रव ४ कर्तव्यचिन्ता ५ प्रतिष्ठासूचन पदम् ।

उपाध्याय, स पु (स) वेदवेदान्त-अध्ययन-२ शिक्षक, अध्यापक ३ माहुरोपवादि (स्त्री) ।

उपाध्याया, सं स्त्री (सं) अध्यापिका, विद्यो पदेशिका ।

उपाध्यायानी, स स्त्री (सं) उपाध्याय-शिक्षक-गुरु, पत्नी ।

उपाध्यायी, सं स्त्री (सं) अप्यापिका
॥ उपाध्यायपत्नी ।

उपानदः, नह्, सं पु (सं उपानद् स्त्री)
पादत्राणम् २ पादुका ।

उपायः, सं पु (सं) साधन, उपकरण, करण,
सामग्री, युक्ति (स्त्री) २ शत्रुविनययुक्ति
(= साम, दान, भेद, दंड) ।

उपायनः, सं पु (सं न) उपदा, उपहार ।
उपाजनः, सं पु (सं न) धनादिकत्याहरणम्,
अर्जनम्, लाभ ।

—उरना, कि स, उप, अर्न् (चु), उपादा
(जु आ अ) ।

उपाजितः, वि (सं) सगृहीत, अजित ।

उपावर्तनः, सं पु (सं न) प्रत्या, -वर्तन-
व्रतन-गमनम् २ उपा-गमन-यानम्
३ भ्रामणम् ।

उपालभः, सं पु (सं) आ-अधि, शेष, अर्त्तन
ना, गहर्, परिवाद २ दुःखनिवेदनम् ।

उपासकः, वि पु (सं) पूजक, सेवक, आरा-
धक, अर्चक ।

उपासना, सं स्त्री (सं) समीपे उपवेदानम्
२ आराधना, अर्चा ।

—उरना, कि स, उपात् (अ आ से),
पूज् (चु) उपस्था (भ्वा आ अ) ।

उपास्यः, वि (सं) उपासनीय, आराध्य, पूज्य,
भजनीय ।

उपेन्द्रः, सं पु (सं) विष्णु, वामन, कृष्ण ।

उपेक्षणीयः, वि (सं) उपेक्ष्य, त्याग्य ३ गहर्
धृणाह ।

उपेक्षा, सं स्त्री (सं) औदासीन्य, निभृहता,
निभगता, विरक्ति (स्त्री) २ धृणा, गहर् ।

उपेक्षितः, वि (सं) अवगणित, अवनीरित,
त्यक्त तिरस्त्रित ।

उपोद्घातः, सं पु (सं) भूमिका, प्रस्तावना ।
उफ, अव्य (अ) हा, अहह, हत, कष्टम् ।

—ओह, अव्य, अहो, हो ।

उफनना, कि अ (स उफ् + फेन >) उफण्
(भ्वा प से), कथ् + तप् + च् (कर्म) २ फेना
यने महायन (ना घा) ३ उत्तिच् (कर्म),
अन धुम् (दि प से) ।

उफानः, सं पु (सं उफ् + फेन >) उत्तेक,
फनोत्तम, उत्तेक ।

उचकना, कि अ (अनु) दे 'कै करना' ।

उचकार्दः, सं स्त्री दे 'कै' ।

उचटनः, सं पु (स उचवर्तनम्) अभ्यग,
अभ्यजन, उत्सादन, अनु वि, लेप, समालभ ।

उचरना, कि अ (स उद्वारणम् >) मुच्
भोक्ष्-उद्वृ (कर्म) २ अव-परि-उत्, शिप्
(कर्म) ।

उचरना, कि अ (सं उद्वर्तनम् >) फना
यते (ना घा) ध्वन्त् (कर्म) ३ वेगान्
निस्तृ (भ्वा प अ) ।

उचारः, सं पु (हि उचरना) निस्तार, मोक्ष,
प्राण, रक्षा ।

उचारना, कि स, (हि उचरना) वि निर्द्,
मुच (पे) निस्तृ (भ्रे), रक्ष् (भ्वा प
से) ।

उवालः, सं पु (हि उचरना) दे 'उफान'
२ उद्वग, आवेश ।

—वाना, कि अ, दे 'उपनना' ।

—विन्दुः, सं पु, उद्वृदाक ।

उवालना, कि स (हि उचरना) उरम्
(भ्वा प से), आ (अ प अ) ।

उवासी, सं स्त्री (स उव् + आस >) जूम्,
जुम्मा ।

उमरना, कि अ (सं उद्वमरणम् >) धि
(भ्वा प से), स्थाप्-वृध् (भ्वा मा से)

आध्मा विस्तृ (कर्म) २ दे 'उठना' ३ परि
वह् (भ्वा उ अ) ४ गर्न् (भ्वा प से)

५ उत्पद् (दि आ अ) ६ अपा वि, वृ
(कर्म) ७ सवृध् (दि प से) ८ अपगम्

९ दौवन आप् (ररा उ अ) १० बहिल्लि
(भ्वा आ से) ११ भार मुक्त (वि) भू ।

उमरा, वि (हि उमरना) स्पीत, शून
२ भिन्नमार ।

उभारना, कि स (हि उमरना) उत्तेजन,
उत्तेजनम् २ उत्थापनम् ३ प्रोत्साहन,
प्रेरणम् ।

उमारः, सं पु (हि उमरना) उचना,
उच्छाय २ वृद्धि वृद्धि (स्त्री) ३ शोक,
शोच ४ स्पीति (स्त्री) पीनता ५ प्रत्येता ।

उभयः, सं स्त्री (हि उमरना) उहाम,
आनन्द २ चिन्तनार्थ, लहरी ३ आभिषेयम्
४ उत्साह, औत्सुक्यम् ।

उमगना, कि अ (सं उमगनम् >) दे
'उमरना', 'उमहना' २ उलस् (भ्वा प से),
प्री (कर्म) ।

उमहना, कि अ (सं उमहनम् >) परिवह्
(भ्वा उ अ), प्रवृष् (भ्वा आ से) २
वेगात् प्रवृत् (भ्वा आ से) ३ ननसबाध
(वि) भू ५ धुम् (दि प से) ।

—धुमहना, परिभ्रम्य तन् (कर्म) ।

उमदा, वि (अ) उत्तम श्रेष्ठ ।

उमर, स स्त्री (अ उन्न) वयस (न)
काल्पायनस्था २ औचितकाल, आयुन (न) ।

उमरा, स पु (अ०, 'अमीर' का बहु०)
धनिरा २ पुरोगा, नायका ३ सामन्ता
(सन बहु०) ।

उमस, स स्त्री (स उमन् पु) उष्म, निर्वा
तगा, धर्मे ।

उमा, स स्त्री (स) पार्वती २ दुर्गा ३ कौत्ति
(स्त्री) ४ कान्ति (स्त्री) ५ मङ्गविद्या ।

उमाहना, कि अ, दे 'उमहना' ।

उमेठना, कि स (सं उमेठनम् >) मुद-सुख
(तु), आवुच् (प्रे), पर्यावृण (प्रे), मणुटी
पिंडी-कृ ।

उमेठवौ, वि (हि उमेठना) कुञ्चित, अराल ।

उम्मेद, सं स्त्री (फा) आशा, आशाता २
प्रतीक्षा, उरीक्षा, ३ आश्रय, अवलंब ४
विश्वास, विश्रम ।

—वार, स पु (फा) आशान्वित, आशावत्
२ याचक, पदान्वेदिन्, प्रत्याशिर् ।

—होना, मु, प्रसव प्रतीक्ष (कर्म) ।

उन्न, स स्त्री (अ) दे 'उमर' ।

उर, स पु (स उरस न) हृदय, चित्तन्,
मनस (न) २ क्रोध, वक्षस (न), वक्ष
स्थलम् ।

—राना, मु, आलिङ् (भ्वा प से) २ विचर
(प्रे) ।

उरग, स पु (सं) सर्प ।

उरगारि, स पु (स) गरुड ।

उरज, उरजात, सं पु, दे 'उरोज' ।

उरद, स पु (स ऊरु >) माप, कुरुविंद,
मासल, धान्यवीर, वृषाकुर, बलाढ्य, पितृ
भोजन ।

उरहा, वि (सं अपर >) अपर, अवर २
पृष्ठस्थ, पश्चिम ३ उत्तर, अपरोक्त ।

उरखद्द, सं पु (सं) उरक्षाणम्, वक्षसा
णम् ।

उरसिज, सं पु (स) स्तन, उरोज ।

उरसिल, वि (स) विशाल-वपाट, वक्षम्
उरग ।

उरह, वि (सं) आयत, विस्तोर्ण, विहाल,
विपुल ।

उरह, सं पु (स ऊरु) सन्धि (न) ।

—भ्रम, वि (स) बलवत् २ द्रुतगति ।

सं पु, वामनावतार २ सूर्य ।

उरोज, स पु (स) कुच, स्तन ।

उर्दू, सं स्त्री (तु ओर्दू) अरबीपारसीतुल्य
भाषाशब्दै मिश्रिता पारसीलिप्यां लिखिता
हिंदीभाषा, उर्दू (स्त्री) २ शिविरदृष्ट ।

उर्फ, सं पु (अ) उपनामन् (न),
उपाख्या ।

उर्बैरा, सं स्त्री (सं) बहुफलदा भूमि (स्त्री)
२ पृथिवी । वि स्त्री, फलदा, शस्यप्रदा ।

उर्वी, सं स्त्री (सं) पृथिवी, धरणी ।

उलझन, स स्त्री (हि उलझना) विघ्न,
प्रतिबन्ध, बाधा २ समस्या, विता विवाद,
विषय ।

उलझना, कि अ (सं अवहृ >) सशिल्प
सम्रन् (कर्म), जटिली भू २ सम्बन्ध समिन्
(कर्म) ३ दे 'लियटना' ४ व्यावृत्त (वि)
भू ५ दिनह (दि प वे) ६ विवह (भ्वा
आ से), वैरायते-कलहायते (ना भा)
७ सज्जते पत् (भ्वा प से) ८ वकी-कुमिली,
भू ।

उलझाना, कि स (हि उलझना) सशिल्प
(प्रे), सम्रन् (तु) २ व्यावृत्त प्रयुज् विनियुष
(प्रे) ३ वकीकृ ।

उलटना, कि अ (स उलुठनम् >) परि
परा-वृत् (भ्वा आ से), विपर्यय न्यत्यस्
(कर्म) अधोमुखी भू २ परि भ्रम (भ्वा
दि प से), घूर्ण (तु प से) ३ दे
'उमहना' ४ सकरी-सकुली भू ५ विपरीत
विरुद्ध (वि) भू ६ कुप् (दि प अ) ७ मृ
(तु आ अ), मूर्त् (भ्वा प से) ८ पत्
(भ्वा प से) । कि स, परि परा-वृत्

(प्रे), अधोमुखी कृ २ निपत् (प्रे) ३ क्षिप्
(तु प अ) ४ सकरी-सबुली, कृ ५ विष
रीत कृ ६ उत्तरप्रत्युपर दा (जु उ अ)
॥ निमज् मूर्च्छित (वि) कृ ८ दे 'उल्टे
रना' ९ ध्वन-नश (प्रे) ।

उलट प (पु) लट, स खी (हि उलटना
पुलटना) विपर्यास, व्यत्यास, परिवर्तनम्
२ व्यतिहार, विनिमय ३ क्रमभंग, व्यति
क्रम । वि, विपर्यस्त, अव्यवस्थित, अक्रम,
अस्तव्यस्त ।

उलटफेर, स पु, दे 'उलट पुलट' स खी ।

उलटा, वि (हि उलटना) न्यायस्त, विप
र्यन्त, अपरोक्ष, अधोमुख २ क्रमरहित,
अव्यवस्थित ३ विरुद्ध, विपरीत ४ अनुचित,
अमर्याद । किं वि, व्यतिक्रमेण, विपर्ययेण,
अमर्यादम् २ अनुचित, अनुक्रमम् ।

—जमाना, मु, विपरीतकाल, न्यायरहित
समय ।

—सबा, मु, अति कृष्ण रङ्गम नील ।

उलटी खोपड़ी का, मु, मूढ जड़ ।

—गंगा बहाना, मु, असाध्य साध् (स्वा
प अ) ।

—पट्टी पदाना, मु, कुपथे प्रवृत्त (प्रे) ।

—साहा फेरना, मु, अमर्याद कम् (म्वा आ
से) ।

—साम चलना, मु, भ्रमणसत्र (वि) जन्
(दि आ से) ।

—सीधी सुनाना, मु, निर्भर्त्स (जु आ से) ।

—धोख फिरना, मु, झटिति प्रतिनिवृत्त (म्वा
आ से) ।

—छुरे से मूँदना, मु, अतिसूक्ष्म स्वप्रयोजन
साध् (स्वा प अ) ।

उलटाना, कि स (हि उलटना) दे 'उलटना'
कि स । २ प्रति श्र (प्रे प्रत्यर्पयति) ३
अव्यन्या ॥

उलटापुलटाही, वि, दे 'उलटपलट' ।

उलटी, स खी (हि उलटना) वम, वमन,
वमि (खी), छटिया ।

उलटे, वि वि (हि उलटना) विपरीततया,
विपर्ययेण ।

उलथा, सं पु (स उत्पलम् >) नृत्यभेद
२ विपर्यस्तप्लुतम् ।

उलथत, सं खी (अ) अनुराग, प्रमत्
(न) ।

उलार, वि (हि ओलरना = लेटना) पृष्ठ
भागे भारवत् (शकटादि) ।

उलाहना, स पु (सं उपालमनम्) उपालम्,
कुञ्जनिवेदनम्, मा-अधि, खेप, (सविलापा)
विज्ञापना ।

—देना, कि स, उपालम् (म्वा आ अ),
मिद (म्वा प से) ।

उलीचना, कि स (स उलुचनम्) उलुच्
(म्वा प से), हस्तादिभिः अल बहिः क्षिप्
(तु उ अ) ।

उल्लूक, स पु (सं) धूक, दे 'उल्लू' २ इद
३ कणाद ।

उल्लुल्ल, सं पु (सं न) उल्लुल्लम्
२ गुग्गुलु ।

उल्ला, स खी (सं) खोल्का, उत्पात, पत
जघन २ प्रकाश ३ अभिशिखा ४ अग्नि
५ दीपिका ६ म, दीप, दीपक ७ अग्नि
काष्ठ, अलातम् ।

—पात, स पु (स) तारा-तारका नक्षत्र
उडु, पात पतनम् ।

उल्ला, स पु (हि उलथना) अनुवाद, दे ।

उल्लुक, स पु (स) उल्लूकाङ्गम्, उल्का ।

उल्लघन, सं पु (सं न) व्यतिक्रम, अति,
क्रम-क्रमणम्, भग, अतिपात २ आकालघन,
प्रतीपाचरणम् ३ उल्लघद ।

उल्लिखित, वि (स) दे० 'खदा' ।

उल्लास, स पु (स) हर्ष, आनन्द २ प्रकाश
३ अलवारभेद (सा) ४ प्रत्यपरिच्छेद ।

उल्लिखित, वि (सं) उत्कीर्ण पाषाणादिषु
अभिलिखित २ चक्रेण तट्ट ३ लिखित ४ उप
लिखित, उपयुक्त ५ चित्रित, आलिखित ।

उल्लू, सं पु (सं उल्लू) देवक, काकारि,
कोशिक, दिवाभ, दिवाभीत, धूक, निद्रा
टन २ मूर्छ ।

—का पट्टा, स पु, जट, बलिश ।

—बनाना, मु, म्वागु (मे) ।

—बोटना, मु, निर्जनी भू ।

उल्लेख, स पु (स) एख, लिखितम्,
हेरयम् २ वर्णन, निरूपणम् ३ अलवारभेद
(सा) ।

उल्लेखनीय, वि (सं) रेखाई, उल, ऐरय
 २ वर्णनीय, निरूपणीय ३ अद्वय ।
 उल्ल, सं. पु (सं न) जरायु २ गर्भाशय ।
 उल्ल (ल्व) ण, वि (सं) स्पष्ट, विशद
 = प्रत्यक्ष, दृढ ३ अधिक, अनिशुय ।
 उल्लाना, सं पु (सं नल) शुकाचार्य ।
 उल्लारा, सं पु (अ) वृक्षभेद ।
 उल्लानर, सं पु (सं-रा) गाधारदेश
 = गाधारवासन् ३ शिविनन् ।
 उल्लारि, सं ॥ (सं पु न) बीरणमूल, अभय,
 नन्द, तेजस् ।
 उल्ला, सं स्त्री (सं) उपम (स्त्री न), प्रमात,
 अरुणोदय, दिभसुत, रानिदेश, माह्वेण ।
 = अरुणोदयलात्तम् (पु) ३ बाणाधुर
 कन्या, अनिरुद्धपत्नी ।
 उल्ल, सं पु (सं) क्रमेलक, दे 'ऊँट' ।
 उल्ल, वि (सं) स-उल्ल, तप्त = उन्मोघिन्,
 सोयोग, परिभ्रमिन्, क्षिप्रवारिन्, दक्ष
 ३ उल्लप्रवृत्ति ।
 रा पु, ग्रीष्म २ नरकविशेष ३ पराङ्मु ।
 —उल्लिख्य, सं पु (सं) भूमे उल्लतम
 मध्यप्रदेश ।

उल्लता, सं. स्त्री (सं.) सं-उल्ल परि, ताप, ताप,
 उ (ऊ) मन् (पु), उल्लत्वम् ।
 उल्लणीय, सं. पु (सं. पु न) शिरोवेष्टन
 २ मुकुट, विरोधम् ।
 उल्ल, सं पु (सं.) दे 'उल्लता' २ आतप,
 सूर्यालोच ३ ग्रीष्म ।
 उल्ला, सं स्त्री (सं भ्रमन् पु) दे 'उल्लाना'
 = आतप ३ क्रोध ।
 उल्ल, सर्व (हि वह) तद्, अदम ।
 उल्लोस, सं स्त्री (सं उल्लोकास) दीर्घदेवास,
 उल्लोकासितम् = आस, निवास ३ (दु रा
 दिमूचक) दीर्घनिवास ।
 उल्लार, सं पु (सं अवतार) विस्तार ।
 उल्लार, सं पु (अ) नियम, सिद्धान्त ।
 उल्लारा, सं पु (का उल्लारा) क्षुर, नापि
 ताकम् ।
 उल्लाद, सं पु (का) अध्यापक, गुरु ।
 वि, कपटिन् २ चतुर ।
 उल्लावी, सं स्त्री (का) अध्यापकत्वम्
 २ नैपुण्यम् ३ बञ्जन, विमलम् ।
 उल्लानी, सं स्त्री (का) अध्यापिका २ गुरु
 पत्नी ३ मायाविनी ।

ऊ

ऊ, वर्णमालाया पष्ठ स्वरवर्ण, उकार ।
 ऊ, अव्य (अनु) आ, हा, वृष्टम् ।
 ऊँ, सं. स्त्री (सं अवाङ् >) तद्रा, ईषत्
 स्वल्प, निद्रा ।
 ऊँघना, कि अ (हि ऊँघ) ईषत् स्वप्निद्रा
 (अ प अ), स्वप् के सञ्ज्ञत रूप (सप्तपक्षि
 आदि) ।
 ऊँघ, वि (सं उघ) उच्छ्रित २ श्रेष्ठ
 ३ कुलीन ।
 —नीच, वि, कुलीनासुनीन, उघातच । सं पु
 हानिलाभी, भद्राभद्रे (हि) ।
 ऊँचा, वि (सं उघ) सम, उच्छ्रित, उदगत,
 प्राशु, ऊर्ध्व, तुग, उदग्र, मोच्छाद्य २ श्रेष्ठ,
 मुरय, अग्रय, परम, महा, प्रधान, ३ प्रबल,
 तीव्र ।
 —नीचा, वि, विषम, असम, नतोन्नत । सं.
 पु., हानिलाभी २ भद्राभद्रे ।
 —घोळ घोला, मु, विकल्प (म्वा आ से) ।

—सुनना, मु, विचिद् बधिरत्वम् ।
 ऊँचाई ऊँचान, सं स्त्री (हि ऊँचा) उच्छ्र
 (उच्छा) य, आरोह, उत्सेध, उल्ल, तुगता,
 उघाता, उत्कर्ष, उन्नति (स्त्री) २ महत्त्व,
 गौरवम् ।
 ऊँचे, कि वि (हि ऊँचा) उच्चै, उपरि, ऊर्ध्व,
 उघम् ।
 ऊँट, सं. पु (सं उल्ल) क्रमेलक, मद्भाग,
 मय, दीर्घगात्र, दासेरक, धृतर, लवोष्ठ,
 दीर्घनख, दोर, मद्गण्ड, मद्गामी ।
 —कटा (टी) रा, सं पु (सं. उल्लकटा
 कम्) उल्लग्रिय कटाकिनो गुल्मभेद, कटालु,
 उत्कटक ।
 ऊँटनी, सं स्त्री (हि ऊँट) उच्छी, लवोष्ठी,
 महागा ।
 ऊँट्ट, अव्य (अनु) न, नो, नो नो, न वदापि ।
 ऊ, सं. पु (॥) शिव २ चन्द्र ३ रक्षक ।

अ०, अपि । सर्व० स, सा, तद् तत् (न) ।

ऊख, पु (स इक्षु) दे 'गन्ना' ।

ऊखल, स पु (स उखलम्) उदूखलम् ।

ऊखड, वि, दे 'ऊगाड' ।

ऊख नाटक, स पु (स उखट + नाटक >)
अनर्थक निरर्थक-कार्यम् ।

ऊखपटारा, वि (अनु अखपट + स अग) अस
बद्ध, असगत २ मोघ, निरर्थक ।

—धातु, स स्त्री, निरर्थक वचनम् ।

ऊख, वि (स) सपत्नीक, परिणीत, दे०
'विवाहित' ।

—ककट, वि (सं) सज्ज, कवचधारिन् ।

ऊखा, वि स्त्री (सं) परिणोता, उपयता,
सम्बन्धिका, सधवा, शुकासिनी, पतिव्रता २ पर
कीयानाधिकाभेद ।

ऊखि, स स्त्री (सं) वहनम्, जयनम्
२ विवाह, परिणय ।

ऊख, वि (स अपुत्र) निस्तप्तान, निरपत्य,
निरन्वय २ मूढ, निर्बुद्धि ।

॥ पु, मूर्ख २ पत्नीरहित ३ अपुत्र
४ प्रेतभेद ।

ऊख, सं पु (स उख) दे 'ऊखिलाव' ।

ऊखिलाव, स पु (स उखिलाव) उख,
अल, मार्जार विहार ।

ऊखा, वि (अ ऊख अथवा का ऊख) नील
लोहित, धूम्र, धूमल, धूमवर्ण ।

ऊखम, सं पु (सं उखम >) उपरुख, उत्पल
कोलाहल, वृमुल, कलह ।

—मचाना, कि स, उपद्रव उखा (भे)

ऊखमी, वि (हि ऊखम) उत्पातिन्, उप
द्रविन्, दुष्ट ।

ऊखो, स पु (सं उखव) शीकृणस्य मित्र
विशेष ।

—का लेना न माधव का देना, मु, विरक्तता,
उदासीनता गतमगता ।

ऊख, स स्त्री (स ऊर्णा) ऊर्ण, मेघादिरोमन्
(न) ।

ऊख, वि (सं) मूल, अल्प, शुद्ध-अल्प-स्नोह
सूक्ष्म तर २ शुद्ध, तुच्छ ।

ऊना, वि, दे 'ऊन' ।

ऊनी, वि (हि ऊन) लोमन, मेघलोमन,
ऊर्णामय (-यो स्त्री), और्ण (णो स्त्री) ।

ऊपर, कि वि (म उपरि अव्य) ऊर्ध्व उप
रिष्टात्, सप्तमी विभक्ति मे भी । २ अधिकम्
अतिरिक्तम् ३ बहिः, बहिर्भागे ४ तटे,
तीरे ५ प्रतिकूल, विरुद्धम् । स पु, आम,
शृणम् ।

—तस्ते, कि वि, उपर्यध ।

—से, कि वि उपरिष्टात्, बाह्यन ।

ऊपरी, वि (हि ऊपर) ऊर्ध्व, उत्तर, उप
रितन (-नी स्त्री) २ बाह्य, बहिर्वर्तिन् ३ अनि
यन ४ आपातरमणीय, साहपर ।

—आमद्वी, स स्त्री, वेतनातिरिक्त आय ।

ऊख-खाखड, वि (अनु) विषम, नसत्तत्र ।

ऊखना, कि अ (स उद्वेजनम्) उद्विन् (दु
आ से), निबिड रिड (दि आ अ) ।

ऊभासांसी, ॥ स्त्री (हि कमना + सांस)
आम प्राण-कण्ठम्, उदम, दुःआस ।

ऊमर, स पु, दे 'गूलर' ।

ऊमस, स स्त्री, दे 'उमस' ।

ऊर, सं पु (सं) सविध (न), जानूपरि
भाग ।

ऊर्ज, सं पु (सं ऊर्ज स्त्री) बल, शक्ति
(स्त्री) । २ रस ३ भोजन ४ जलम् ।

ऊर्जस्वी, वि (स-स्विन्) ऊर्जस्वल, ऊर्जित,
बलिन्, शक्तिमत् ।

ऊर्ण, स पु (सं न) ऊर्णा, दे, 'ऊन' ।

—नाभ, सं पु (स) ऊर्णनाभि, मर्न्दक,
दे 'मवडी' ।

ऊर्णा, स स्त्री (सं) ऊर्ण, दे 'ऊन' ।

ऊर्ध्व, कि वि (स ऊर्ध्वम्) उपरि, उप
रिष्टात् ।

—आरोहण, सं पु (सं न) देहान्त ।

—गामी, वि (सं-मिन्) उचात् २ मुक्त ।

—मूल, स ॥ (सं) ससार ।

—रेता, वि (सं-नास्) ब्रह्मचारिन्, वीर्य
रक्षक ।

सं पु, महादेव २ गीष्म ३ इनुमन् ।

—श्राम, स पु (म) उच्छ्वास २ वृच्छो
च्छ्वास ।

उर्मि, स स्त्री (स पु स्त्री) तरंग, कलोल
२ वेगना ३ बलमवोचरोता ।

—माटी, स पु (म स्त्रिन्) ससुद्र ।

ऊल-छल, वि (देश) अक्रम २ अश
३ असम्भ ।

ऊपर, स पु (स पु न) अनुर्वर-श्वार-अश
स्वप्रद भूमि (स्त्री), मरस्पर-स्त्री । वि भोव
निष्पन्न ।

ऊपा, स स्त्री (स) दे उपा ।

ऊष्म, स पु (स) उत्थान, धर्म २ वाष्प
३ ग्रीष्म । वि उत्थ, उत्थ ।

—वर्ण, स पु (स) दा, प्, म, इ वर्ण ।

ऊष्मा, स स्त्री (स उष्मन् पु) दे 'ऊष्म' ।

ऊपर, स पु दे ऊपर ।

ऊट, अय, (अनु) (पीडा) आ, हा,
२ (आश्रय) अश्रु, अहो ।

ऊट, स पु (स) अनुमान, वि, तर्क २ पुक्तिः
(स्त्री) हेतु ।

—अपोह, स पु (स स्त्री) तर्क-वतर्क, विमर्श,
विचारणा पक्षप्रतिपक्षचिन्तनम् ।

ऋ

ऋ, देवनागरीवर्णमाहाया सप्तम स्वरवर्ग,
ऋकार ।

ऋक्, स स्त्री (स ऋच्) वेदमन्त्रेद
२ ऋग्वेद ।

ऋक्ण, वि (स) आहत, वि, क्षण ।

ऋक्थ, स पु (स न) धनम् २ स्वर्णम्
३ दायधनम् ४ दायभाग ।

ऋच, म पु (स) भल्लुक २ नक्षत्र ३ मेघा
दिराजय ।

—पति, स पु (स) कण्ड २ जावत (पु) ।

ऋग्वेद, स पु (स) वैदावरोप ।

ऋग्वेदी, वि (स दिन्) ऋग्वेद, श-पाठक ।

ऋचा, स स्त्री (स ऋच् स्त्री) छन्दोमयो
मन्त्र २ वेदमन्त्र ३ स्तोत्रम् ।

ऋतु, वि (स) सरल, समरेख प्रसुप्त, अजस्र
२ झुकर, झुल-साध्य-सपाय ३ निर्व्याज,
निष्पट ४ प्रसन्न अनुवृत्त ।

ऋजुता, स स्त्री (स) सरलता, समरेखता
२ सुवस्त्व सन्साध्यता ३ निष्पटता ।

ऋण, स पु (स न) पशुदहन, उद्धार ।

—चुक्राना, क्रि स, ऋण गुण (प्र) ।

—लेता, क्रि स, ऋण कृ अथवा श्रद् (ऊ
उ से) ।

—प्रस्त, वि (ऋ) ऋणिन्, अधमर्ष, खातव,
धारक ।

—मृक्त, वि (स) ऋण-उद्धार पशुदहन,
विमुक्त ।

ऋणी, वि (स णिन्) द 'ऋणग्रस्त' २ अनु
गृहीत, उपहत ।

ऋत, स पु (स न) उच्छृति (स्त्री)
२ मोक्ष ३ गतन् ४ कमपलम् ५ यश
६ सत्यम् ।

वि, दीप्त २ पूजित ३ सत्य ।

ऋतु, स स्त्री (स पु) मासद्रव्यात्मक प्रकृति
परिवर्तनयुक्त काल (षट् ऋतव-वसन्त,
ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, श्रमन्त, शिशिर)
समय २ आर्तव पुष्प-रज, काल ।

—काल, स पु (स) रजोदर्शननन्तर गम
योग्यानि षोडशदिनानि ।

—गमन, स पु (स न) ऋतुकाले
मैथुनम् ।

—चर्या, स स्त्री (ऋ) ऋबनुदल आहार
विहार ।

—दान, स पु (स न) गर्माधानम्,
निषेक ।

—मती, वि स्त्री (स) रजस्वला, पु-पवती ।

—राज, स पु (स) वसन्त ।

ऋविज, स पु (स च) पुरोहित यात्रक ।

ऋद्ध, वि (स) सपन्न सशृद्ध ।

ऋद्धि, स स्त्री (स) सशृद्धि वृद्धि (स्त्री)
२ प्राणप्रिया, ओषधिभेद ।

—सिद्धि, स स्त्री (स) सशृद्धिसाधत्ये ।

ऋतु, स पु (स) देव अमर २ गणद्व
विशेष ३ देवानुचरवर्गवशेष ४ शिल्पिन ।

अपभ, सं पु (स) वृष, दे 'वैल'
२ संगीते द्वितीयस्वर ३ समासाते श्रेष्ठता
वाचक (उ नरपते) ।
—देव, स पु (सं) विष्णोरवतारो नामि
राजपुत्र २ प्रथम सीधर (जैन) ।

—ध्वज, स पु (स) शिव ।
अपि, स पु (सं) सत्यवचस्, शापात्र,
मन्त्रदृष्ट, मुनि, वेत्तविद्, सिद्ध, मन्त्रज्ञ ।
—अण, स पु (स न) मुमुक्षु (टि यद्
वेदों के पठनपाठन से उत्तरता है) ।

ए

ए, हिन्दीवर्णमालाया अष्टम स्वरवर्ण, एकार ।
एँच पेंच, स पु (अनु + पा पेच) वज्रपा,
कुटिलता ।
एही, म स्त्री, कौशिक-कौश, भेद २ तत्त्व कीट
३ कौशिकवस्त्रभेद ।
एपर, स पु (अ) सत्रात्, महाराज, राजा
धिराज, अधिराज ।
एपावर, स पु (अ) अ(जा)धिराज्यम्,
साम्राज्यम् ।
एमेस, स स्त्री (अ) सत्राशी, राजाधिराज
महाराज पत्नी, अधीश्वरी ।
एवुलेंस, स स्त्री (अ) चन्धिविरसाल्य
२ कृत गण, बाइन झण्टी ।
एकगा, वि (स ध्वाग) एक, पक्षीय देशीय
२ असमभार ।
एक, वि (स स) एक, एका, एकम्
२ अनुत्य, अनुपम ३ कश्चन, कश्चित्,
काचन, निचन ४ तुल्य, समान ।
स पु, उपा सख्या, तदन (१) न ।
—करना, कि स, सगम् (ने) ।
—होना, कि अ, सघट् (भ्वा आ से) ।
—तरफा, वि, एक, पक्षीय देशीय ।
—घार, कि वि, सङ्घ २ शब्दा ३ पूर्व,
पुरा, प्राक् ।
—घारगी, कि वि, युगपत्, समम् ३ साक
व्येन ।
—मत, वि, एक-सम, चित्त २ सधर्म ।
—मत होकर, कि वि, साम्यत्वेन ऐक्य
व्येन ।
—ओम् देवना, मु, सम दृष्ट् (भ्वा प अ) ।
—एक, मु, सबै, सबल २ वृष-युधक्
३ नमस् ।
—एक करके, मु, आनुपूर्वा, आनुपूर्व्येन ।

—और एक ग्यारह होना, मु, सधेन बढी
बलम् ।
—टक, मु, निर्निमेषम्, अनिमिषम् ।
—तो, मु प्रथम तावत् ।
—दम, मु, निरन्तरम् २ क्षाति, सपरि
३ सट्टेव ४ सर्वथा ।
—दूसरे को, मु, अयोज्य, परस्पर, इतरेत
रम् । वि मिथ (अन्य), परस्पर, इतरेतम् ।
—पेट के, मु, सोदर, सहोदर, सोदर्य ।
—घाल, मु, सत्य प्रतिज्ञा २ यथार्थवचनम् ।
—सा, मु, तुल्य, सङ्घ, सम ।
—स्वर से कहना, मु, ऐक्यव्येन वद् (भ्वा
प से) ।
केवल—, वि, असहाय, अद्वितीय ।
कोह—, कश्चित्, कश्चित्, किञ्चित् ।
दो में से—, वि, अन्यतर, एततर, अन्यतरा,
अन्यतरत् (न) ।
बहुतों में से—, अन्यतम, एकतम, एकतमा,
एकतमत् (न) ।
एकचित्त, वि (स) अवहित, स्थिरचित्त
२ अभिप्रहृदय ।
एकचित्ता, स स्त्री (स) अवधान, मनी
योग २ ऐक्यत्व, समति (स्त्री) ।
एकछुत्र, वि (स) एकशासकाधीन । कि वि
ऐकाधिपत्येन ।
एकद, स पु (अ) क्षेत्रफलमानभेद, एकदम्
(१६ बीघा—४८४० वर्गगज) ।
एकतरफा, वि (पा दक्तरफ) एतपक्षीय
२ सपणपान ३ एकपादवैभवधिन् ।
—दिगरी स स्त्री (पा + अ) एकपक्ष्यानि
देश ।
एकता, स स्त्री (सं) सघटन, ऐक्यम्,
संहति (स्त्री), सगम, समवाय २ साम्य,
तुल्यता ।

एकतान, वि (सं) एकाग्रचित्त, मग्न, लीन ।
एकतारा, स पु (हि एक + तार) एकतार ,
बाणभेद ।

एकत्र, कि वि (स) एक, स्थले-स्थाने ।

—करना, कि स, सप्रह (क उ से) ।

—होना, कि अ, समिल (म्वा प से) ।

एकत्रित, वि (स एकत्र >) सवीभूत सचित,
मग्नहोत ।

एकत्रय, स ॥ (स न) दे 'एकना' ।

एकदक्ष, स पु (स) गणेश, लघोदर ।

एकदा, अग्य (स) सत्त्व (अय) २ पूर्व,
पुरा प्राहु (सब अग्य) ।

एकद्वैतीय, वि (स) एकदेश्य एकस्थानीय ।

एकनिष्ठ, वि (स) एकोपासक ।

एकरस, वि (स) समान सवर्ग २ शुद्धा
रसम् ।

एकरस, वि (स) तुल्य, सदृश २ अव्यय,
अपरिणामिन्, परिवर्तनरहित ।

एकरूप, वि (म) स-सम-समान-रूप, तुल्य,
समान ।

एकवचन, स पु (स न) एकवाचक वचनम्
(व्या) ।

एकवाक्यता, स स्त्री (स) साम्य, एक
मत्यम् ।

एकसर, अ, आपन्नम्, आपादमूलकम् ।

२ सङ्घ (अग्य) वि एकाकिन्, असहाय ।

एकहारा, वि (स एकस्तर) एकास्तर, एक
फलक २ एक, सूत्र-गुण ३ तनु, सूक्ष्म ।

—घटन, स पु कृशदह ।

एकाङ्गी, स पु (स किन्) रूपकभेद
२ एकाग्रयुक्त रूपकम् ।

एकांगि, वि (स) एकावयव, एकभाग
२ विकल्पाङ्ग । स पु अगरक्ष्व २ निष्णु ३

बुधप्रह ४ चन्दन-जम् ५ शिरस् (न) ।

एकांगी, वि (स गिन्) एकपक्षीय २ दुर्दम् ।

एकान, वि (स) अत्यन्त २ एकाकिन्,
पृथक्स्थित । स पु (स) विजन, विविक्तम् ।

—वास, ॥ ॥ (स) ससर्गाभाव ।

—वासी, वि (स सिन्) निर्जन विज्ज,
वासिन् ।

एका, स ॥ (हि एक) सहति (स्त्री),
ऐक्यम्, सघटनम् ।

एकाएक, कि वि (सं एक + एव >) अक
स्मात् एकपदे, सहसा, अकांठे ।

एकाग्रर, सं पु (स) सारूप्य, साम्यम् वि,
सरूप, सम, समान ।

एकाङ्गी, वि (॥ किन्) एकल, दे 'अवेला' ।

एकाग्र, वि (स) काण, चन्द्रलोचन । सं
पु, काक. २ शुकाचार्य ।

एकाग्र, वि (म) एक-अक्षरिन् वर्ण । सं पु
(स न) ओंकार ।

एकाग्र, वि (स) स्थिरबुद्धि, धीर २ अनन्य
चित्त एकतान, एकाग्रवृत्ति ।

—चित्त, वि, दे 'एकाग्र' २ ।

एकाग्रता, स स्त्री (स) अनन्य चित्तता
मनस्कता, एकतानता ।

एकाग्रमता, स स्त्री (स) एकत्व, एकता,
एकस्यता, ऐक्य, भेदाभाव ।

एकादशी, स स्त्री (स) हरि, दिन दिनस
वासर ।

एकाधिक, वि (स) बहु, बहुल, अनेक,
बहुसंख्यक, भूरि ।

एकाधिकार, सं पु (सं) एक, व्यापार
व्यवसाय २ अनन्यसाधारणोऽधिकार ।

एकाधिपति, स पु (सं) अधीश्वर, अधि
राज, सम्राट् महाराज ।

एकाधिपत्य, स पु (सं न) एक, महत्त्व
स्वामित्वम्, पूर्णप्रभुत्वम् ।

एकार्धक, वि (स) सम समान-तुल्य,
अर्धक । स पु, पर्यायशब्द ।

एकाबली, स स्त्री (स) अलकारभेद (ता)
२ एकवृष्टिका, एकतारो हार ।

एकीकरण, स पु (स न) एकतासाधन,
एकत्वमपादनम् ।

एकीभाव, स पु (स) मघडन, मयोग,
मदलय ।

एकीभूत, वि (स) समुक्त, मिश्रित, सङ्गत ।

एका, वि (स एक >) एक विषयक-सवधिन्
२ एकाकिन्, एकल । स ॥ यथार्थ प्राणिन्

२ एकपशुवाक्यो द्विचक्रो वादनभेद ३ सैनिक
भद्र ४ एकचिह्नयुक्त कीडापत्रम् ।

एकावान, स पु (हि एका) सारथि, सूत,
हयकण ।

एकी, स स्त्री (हि एका) एकाग्रमवाह
शक्यम्, कृपवहनम् ।

एकजामिनर ॥ पु (अ) दे 'पराक्ष' ।

एकजामिनेशन, स पु (अ) दे 'पराक्षा' ।

एक्सरे, स स्त्री (अ) एक्सरेडिग ।

एजेंट, स पु (अ) प्रतिनिधि, प्रतिद्वस्त
२ दे अद्वितिया ३ वारक ।

एजेंसी, स स्त्री (अ) परद्रव्यनयविम्वरस्थानम्
२ प्रातिनिध्यम् ३ कावस्वम् ।

एटम, स पु (अ) अणु ।

—यम, स पु अणुवधम् ।

एटनी, स ॥ (अ) परमार्थ, साधक सपादक,
प्रति, पुन्य हस्त ।

एठ, स स्त्री [स एड्ड (ड) वम्] पाणि
(पु स्त्री) पाद, मूल तलम्, गोहिरम् ।

—एगाना, सु, घोटवादीन् पाप्मना प्रचुद्
(मे) २ उत्तम् (मे) ३ बाध (भ्वा आ से) ।

एडवोकेट, स पु (अ) दे 'अडवोकेट' तथा
'वकील' ।

एडिटर, स पु (अ) संपादक ।

एडिटरी, स स्त्री (अ एडिटर >) संपादकता ।

एडी, स स्त्री [स एड्ड (ड) क] दे 'एड' ।

—एगबना, सु, सुदीर्घकाल बह सद्
(भ्वा आ से) २ चिररीयेण पाद् (कर्म) ।

—से चोटी तक, सु, आपादशीर्षम्, आवतम् ।

एतवार, स पु (अ) निश्वास, प्रत्यय ।

एतराज, सं पु (अ) आपत्ति (स्त्री),
बाध, विरोध, व्यक्षेप, प्रत्यवाय ।

एरड, सं पु (स) चित्रक, पचागुल दीर्घ
पनक, गन्धनैहस्तक ।

एलची, स पु (तु) रान, दूत, सदेशहर ।

एला, स स्त्री (स) बालः हिमा, चद्रिका,
बहुलग्ना, पेद्री, द्राविटी ।

एलान, स पु (अ) घोषणा, निशानि (स्त्री) ।

एलेक्टरेट, स पु (अ) निर्वाचनसमूह
२ निर्वाचनक्षेत्रम् ।

एवं, कि वि (सं) इत्य, अनया रीत्या
२ अपि, च ।

एव, अव्य (सं) सेवस्वम्, मान २ अपि, च,
अपि च ।

एवञ्च, स पु (का) प्रति (ती) कार, प्रति,
क्रिया-अपकार २ हति निष्कृति (स्त्री)-
पूरणम् ३ प्रतिनिधि ।

एशिया, स पु (यू इव अणु = पूर्वदिशा >)
पचमहाद्वीपम् अ यन्म ।

एशियाई, वि (अ एशिया >) एशिय-सम्बन्धि ।

एषणा, स स्त्री (स) आकाक्षा, स्पृहा,
वाछा, इच्छा ।

एहतिथान, स स्त्री (अ) अवधान, अवस्था
२ अस्थाहार ।

एहमान, स पु (अ) कुरा, उपकार
२ कृतज्ञता ।

—मद्, वि, कृतज्ञ कृतवेदिन् ।

ऐ

ऐ, हिन्दीवर्णमालाया नवम स्वरवर्ण ऐकार ।
ऐ, अ य (अनु) कि वय, अनु २ अही,
अनुभूत, आश्चर्यम् ।

ऐग्लो, वि (अ समास के आरभ में) अग्ल ।

—इडियन, स (अ) आंग्लभारतीय ।

—बर्नाक्पुलर, वि (अ) आग्ल- (विचार्य)
स्वदेशीय ।

ऐच, स स्त्री (हि ऐचना) आसमा-वर्ष
वर्षणम्, प्रसार, आयाम, वितति (स्त्री) ।

ऐचना, कि स (हि ऐचना) वृष (भ्वा प
अ) २ विरान् (भ्वा), विनन् (त उ से)
३ अप-जव-वृष ।

ऐचाताना, वि (हि ऐचना + तानना) अवद्वष्टि,
वेकर, वेदर, बलिर ।

ऐचातानी, सं स्त्री (पूर्) उभयतः वर्षण
२ सपर्य, स्पृहा, अहमहमिका ।

ऐंट, स स्त्री (हि ऐटना) गर्त दर्प आगेप
२ समर्पणति ३ द्वेप, मा-सर्पण ४ दे
'ऐटना' ।

ऐटन, स स्त्री (पूर्) व्यावर्तन, आ, बुद्धन,
कनता २ चूण, कलभय ३ आसर्पणम्
४ गात्रोपधान, अद्वेष्टनम् ।

ऐन्सा, कि स (स अवेष्टनम्) या परि, नृप
(मे), मुद् मुद् (तु), आनु (भ्वा प से)
२ पीटवित्वा आदा (तु आ अ), बनेन
निष्कृत् (भ्वा प अ) ३ छान्न आना । कि
अ, आनु (कर्म) व्यापृष्ट (भ्वा आ
से) २ प्रकि, तन् (कर्म) ३ गर्त् (भ्वा

प से) ४ प्रलप् (स्वा प से) ५ दे
'मरना'।

पेठ, वि (दि पेटना) गर्वि, इष्ट।

पेट, स पु (दि पेट) दे 'पेट' (१)।

२ आवर्त भ्रम । वि. निर्गुण, अकिंचित्तर ।

—दार, वि (दि + फा) सगर्व, लहमाभिन्
२ उज्ज्वल ।

—पेटना, क्रि ७ (दि पेटना) व्यावृत्त
(स्वा आ से) कर्गनि आनन् (त व
से) ३ गव (स्वा प से) । क्रि स, दे
'पेटना क्रि स (१) ।

पेटाना, क्रि ७ (पेटना) अशानि आतन् (त
व से) २ सगर्व चल् (स्वा प से) ।

पेटव, वि (स) चाद्र चाद्रिक, चाद्रमस,
सौमिक । स पु चाद्रमास ।

पेट, वि (स) इद्रश्च विषयक, वीरदर ।
स पु, पेट्रि, इद्रपुन ।

पेट्रजालिक, स पु (स) मायिन्, मायिक,
कुतुहलीविन् ।

पेट्रि, स पु (स) इद्रपुनो गयत् २ अजुंन
३ बाणि ४ कान ।

पेट्रिय, वि (स) पेट्रियक, इद्रिय विषयक,
प्राक्तन्मयिन् ।

पे, अय (छ अयि) मो, दे, अरे ।

पेक, वि (स) एक विषयक-सम्बन्धिन् ।

—पय, स पु (स न) एकप्रज्ञासनम्
२ पूर्ण, प्रमुख-स्वामिन् ।

—भाव्य, स पु (स न) १ २ स्वभाव-उद्देश्य,
पेक्ष्यम् ।

—मय, स पु (स न) सतैक्ष्यम्, साम्प्र
त्यम् ।

—राज्य, स पु (स न) एकतन्त्र-सनम् ।

पेशातिष्ठ, वि (स) सिद्ध, सम्पन्न २ सपूर्ण
३ निर्दोष ४ अनन्त-सम्बद्ध ।

पेवट, स पु (अ) अधिनियम २ रूपक
नाटक, अव ३ वृत्ति (स्त्री) ।

—नरना, क्रि स, अमि नी (स्वा प अ),
नट् (दु) ।

पेनर, स पु (अ) न'क, नट, नैलम्,
कुलीन, अभिनेतृ ।

पेवट्रेम, स स्त्री (अ) नदी, नर्तकी, अभिनेत्री ।

पेक्ष्य, स पु (स न) शकता, एकत्वम् २ दे
'पेक्षा' ।

पेच्छिक, वि (स) वैकल्पिक (स्त्री स्त्री),
स्वेच्छातन्त्र, स्वव्ययीन, सविकल्प ।

पेटवोकेट, स पु (अ) एकसमर्थक, परार्थ
वक्तु ।

पेतिहासिक, वि (स) इतिहास, विषयक
मयिन् २ इतिहासज्ञ पुरावृत्तवेत् ।

पेतिहा, स पु (स न) पारपर्योपदेश, प्रमाण
भेद (स्वा) ।

पेन, स पु दे 'मयन' ।

पेन, वि (अ) न्याय्य लचिन् २ सपूर्ण ।
स स्त्री पेन, नयनम् ।

पेनक, स स्त्री (अ पेन >) वरनेत्र ने,
नेनकाची ।

पेव, स पु (अ) दोष, विकार २ व्यसन,
अवगुण ।

पेरी, वि (अ) दोषिन्, यस्तनिन् २ कुचेष्टक ।

पेयार, स पु (अ) मायाविन्, धूर्त, छल्किन् ।

पेयारी, स स्त्री (अ) कपटित्व, धूर्तता, माया
विता ।

पेयात्त, वि (अ) मीमिन्, विहासि
२ कायुक, लपट ।

पेयासी, स स्त्री (अ) विहासिता २ कायु
क्ता ।

पेरागौरा, स पु (अ गैर-अनु रैर) पर,
अपरिचित २ सुच्छजन ।

पेरावत, स पु (स) इद्रगण चतुर्दन्त,
सदाशन, अन्नमातृग २ विद्युच्छरी नैव
३ इद्रवाप ।

पेरावती, स स्त्री (स) पेरावतभाष्य
२ निदुत् (स्त्री) ३ पचनदप्रान्त नदीविष्टेष्ट
(= रावी) ।

पेश, स पु (अ) विलास, हसर, भोग
२ सुखसाधनम् ।

—च आराम, स पु, सुखभोगी, आमोद
प्रमोदी ।

पेथर्य, स पु (स न) धन, अर्थ द्रव्य, वित्त
विभव, संपत्ति (स्त्री) २ अणिमादयो
योगसङ्घ (स्त्री बहु) ३ प्रमुख, अधि
पत्यम् ।

ऐश्वर्यशाली, वि (सं लिन्) ऐश्वर्यवत्, धनिक, धनाढ्य, सम्पन्न ।

ऐसा, वि (स ईदृश) एवविध, एतत्तुल्य एतादृश । (स्त्री, ईदृशी, एतादृशी) ।

—वैसा, ॥, तुच्छ, साधारण ।

ऐसे, कि वि (हि ऐसा) इत्थ, एव, अनेन प्रकारेण ।

ऐहिक, वि (स) सप्तसारिक व्यावहारिक, लौकिक ।

ओ

ओ, द्वितीयमासाया दशन स्वरवर्ण, ओंकार ।

ओं, अन्य (स) आ, एव, एवमेव, बादम्, अप किं, तथा, तथास्तु, अस्तु ।

ओं, स पु (सं अन्य) प्रणव, ओंकार ।

ओंकार, स पु (स) ओम् इति शब्द, प्रणव ।

ओंठ, सं पु (ओष्ठ) दन्त-रदन-दशन रद,

छद पट । (ऊपर का) ऊध्वौष्ठ । (नीचे का) अधर ।

—छयाना सु, कुप् (दि प से) ।

ओंडा, वि, ग(ग) नीर, अगाध । सं पु गर्त, गर्तम्, अवट ।

ओ, अन्य (अनु) ओ, अयि, हे, अरे २ च, अपि च ३ अहो, ही ४ स्मरणानुक्रपादि सूचकमव्ययम् ।

ओक, स पु (स ओकस् न) गृह, आलय २ शरण, आश्रय ।

ओक, स स्त्री (अनु) वमनेच्छा, विवमिषा ।

ओकण, स पु (स) मल्लुण दे 'खटमल' ।

ओकना, कि अ (हि ओक) उद, वम् (भ्वा प से) २ महिषीव रैम (भ्वा आ से) ।

ओकाई, स स्त्री (हि ओकना) वमन २ वमनेच्छा ।

ओखल, स पु, ३ 'ओखली' ।

ओखली, स स्त्री (स उत्खलन्) बाहमय पाषाणमय वा उदू (छ) खलम् ।

ओघ, सं ॥ (स) समूह, राशि २ धनत्व, साद्रता ३ प्रवाद, धारा ।

ओछा, वि (स तुच्छ) शुद्ध, अशम, लघुचेतस्, वापुस् २ गाव, अक्षयल ३ ईदृ, सुसह ४ अपर्याप्तत्व ।

—पन, स पु, तुच्छता, शुद्धता, नीचता ।

ओज, सं पु (स ओजस् न) तेजस, प्रणय, सुखवाति (स्त्री) २ प्रकाश ३ तुच्छ (सा) ४ देहस्वरसानां सारांश ।

ओजस्विता, सं स्त्री (सं) कांति (स्त्री) । तेजस् (न) ।

ओजस्वी, वि (सं विन्) तेजस्विन्, कांति मत्, प्रभावशालिन्, शक्तिमत् ।

ओजोन, सं पु (अ) प्रणारक, दाहनम्, वातिभेद ।

ओझरी, स स्त्री (स जठरम्) कुक्षि, गुद, पङ्क २ आमाशय, अन्नाशय, जठरम् ।

ओझल, सं पु (स अवलम्बनम् >) आवरण, आच्छादनम् । वि, अदृश्य, अतिरिक्त ।

ओझा, स पु (सं उपाध्याय >) प्राधान्य वातिभेद २ भूतबाधाहर, कुक्षक ।

ओठ, सं स्त्री (॥ उठम् दास पूत >) व्यवधान, तिरस्करिणी, प्रतिहारा, जवनिफा २ सशय, आश्रय ।

ओटमा, कि स (स आवर्तनम् >) यथेन कार्पासबीजानि दृक् कु १ पुन पुन बद् (भ्वा प से) ।

ओटमी, स स्त्री (हि ओटना) कार्पास बीजपृथक्करणयन्त्र, भेलनी ।

ओठ, स पु, दे 'ओठ' ।

ओढ, स पु, गर्दभवाह्य, जातिभेद ।

ओढा, स पु (१) करट, बडोल २ दुर्भिक्ष, आहारोभाव ।

ओढ़, स पु (स) दे 'उडीता' २ ओढ़ उल्ल-वासिन् ।

ओड़ना, कि स (सं आ+उद >) परिधा (जु उ अ) प्रा-आ, वृ (स्वा उ से) । स पु, आवरण, प्रावार, बहन, पुत्रम्, २ उत्तरच्छद, प्रच्छद ।

ओड़नी, सं स्त्री (हि ओड़ना) नारीणां उत्तर, वेष्टन प्रावारक ।

—वड़ना, सु, सखीत्व भगिनीत्व वा रथा (मे) ।

ओढ़ाना, कि स (हि ओढ़ना) 'ओढ़ना'
के धातुओं के प्रे रूप ।

ओत, वि (स) सुम्भित, ग्रथित ।

—ओत, वि (स) सुम्भित, सुम्भृत् ससृष्ट,
परस्पर सुप्रथित । स पु, तत्रवाणी (दि),
तत्रप्रतिपत्ति (दि) ।

ओध, स स्त्री (अ) शपथ, दिव्य समय,
प्रत्यय ।

—अभिधानर, स पु (अ) शपथ दिव्य
आयुक्त ।

ओदन, स पु (स पु न) मत्त अन्न, पक्क
प्रीति ।

ओदा, वि (स रुदन् >) उन्न, उत्त, आर्द्र ।

ओप, स स्त्री (हि ओपना) वान्ति
धुति दीप्ति (स्त्री), शुभभा, सौन्दर्यम् ।

ओफ, अय (अनु) पीडाशोकाश्चर्यप्रसूचक
मन्वयन्, आ, हा, अद्भ, अद्भो ।

ओम्, स पु (स अव्य) प्रणव, ओंकार,
इशतशा २ इश्वर ।

ओर, स स्त्री (स अवार >) दिता दिश
(स्त्री) काष्ठा, आशा २ पक्ष, पार्थ । स पु,
अत, प्रात, तन्म् ९ आरभ, आदि ।

इत—, कि वि, इत, अन्या दिशि, अत्र ।

उत—, कि वि, तत, तत्र, तस्या दिशाम् ।

वारो—, कि वि सर्जत समतात्, समवत,
अमित, परित ।

ओरु, स पु (स) शरण, दे 'जिमीकन्द' ।

ओला, स पु (स उपठ) इन्द्रोपल पयोधन,

करका, घनवक्, वर्षशिला २ शर्करोपल ।
वि, उपलक्षितम् ।

सिर मुँटाने ही ओले पडे, मु, प्रथमे प्राप्ते
मक्षिकापात ।

ओवरकोट, स पु (अ) स्वयंचुक् ।

ओवरसिधर, स ॥ (अ) अधिदर्शक ।

ओपधि-धी, सं स्त्री (स) हरितक, शक्
क, शिष्ट २ अगद, ओपध, मेपनम्,
मैपनयम् ।

—ईश, स ॥ (स) चद्र, सोम ।

ओष्ठ, स पु (स) दे 'ओठ' ।

ओष्ठय, वि (स) ओष्ठतन्मयिन् २ ओष्ठो
कार्य (प, फ आदि वर्ण) ।

ओस, स स्त्री (स अवस्थाया) तुषार,
प्राण्य हिय रात्रि—ल, नलम्, नीदार,
मुहिनम् ।

—एव जाना, मु, ज्यै-ज्यै सद (भ्वा प अ)
२ लङ् (तु ङ से) ।

ओसार, स पु, विस्तार, प्रसार २ दे
'ओसारा' । वि विस्तृत विस्तीर्ण ।

ओसारा, सं पु, प्रच (घा) ण, अल्लिद ।

ओह, अव्य (अनु) (आश्चर्य) अद्भो, ही ।
(डुर) अद्भ, हा आ ।

ओहदा, स पु (अ) पर, पदवी, अधिकार ।

ओहदेदार, स पु (अ + फा) पदाधिकारिन्,
अधिकृत ।

ओहो, अव्य. (अनु) अद्भो, ही, हद्भो ।

औ

औ, हि-दीवर्णमालाया एकादश स्वरवर्ण
ओंकार ।

औधा, वि (स अधोमुख) अधोमुख, अधो
मुख, विपरीत, विलोम ।

औधी खोपटी का मु, मूर्ख, जट ।

औस, स पु (अ) (सपादतोलुग्यात्मन्)
तोलविशेष २ औसम् ।

औ, अय (हि और) च । दे 'और' ।

औकात स स्त्री एक (अ वक्त वा बहु)
शक्ति (स्त्री), सामर्थ्यम् । स पु, काला,
समया ।

औयुन, स पु, दे 'अवयुन' ।

औचद, स पु (स अपोर) अधोरमत्तात्
यावी पुरुष २ असमीक्ष्यकारी मनुष्य
२ अपश्रुत । वि, (स अय + हि घञना)
विवेकहीन २ असवद ।

औचक, कि वि, दे 'अचानक' ।

औचिय, स पु (स न) औचितो, उपयुक्तता,
नैयमकत्वम्, सामञ्जस्यम् ।

औजार स पु (अ वज्र का बहु) यत्राणि,
उपकरणानि, साधनानि (स न बहु) ।

औटना, कि अ, दे 'उबलना' ।

औठाना, कि स, 'उबलना' के धातुओं के
प्रे रूप ।

औत्सुक्य, स पु (सं न) उत्सुकता, दे० ।

औदरिक, वि (सं) उदर-जठर, विषयक
२ अत्याहारिन्, बहुभुज्, घस्मर ।

औदार्य, स ॥ (सं न) उदारता दे ।

औद्धत्य, स पु (सं न) उदतता, अशिष्टता,
ग्राम्यता २ अनापत्ता, घृष्टता ।

औद्योगिक, वि (सं) उद्योग-व्यवसाय,
संबन्धिन् ।

औद्वाहिक, वि (सं) वैवाहिक, उद्वाह
उपयम परिणय, विषयक ।

औना-पौना वि (सं) लनपादोन) न्यूना
विक्र, इष्टवद् । किं वि, न्यूनाविक्रतया ।

औने-पौने करना, मु, हाथा लाभेन वा यथा
कदाचन विक्रयणम् ।

औपचारिक, वि (सं) लाक्षणिक, गौण,
उपचारविषयक ।

औपनिवेशिक, वि (सं) आधिनिवेशिक
उपनिवेश-आधिनिवेश, -संबन्धिन् ।

—स्वराज्य, स पु (सं न) आधिनिवेशिक
स्यात्तन्म ।

औपन्यासिक, वि (सं) उपन्यास कल्पित
कथा, -संबन्धिन् २ उपन्यासे वर्णनीय इ अद्भुत,
विलक्षण । स पु उपन्यास, कार ऐश्वर्य ।

औपपत्तिक, वि (सं) तर्क-शुक्ति, साध्य ।

और, अन्य (सं अपर >) च अपि च, अन्यच्च,
चिच्च, अपर च । वि, अन्य, अपर, भिन्न
२ अधिक, भूयस ।

—का और, मु, विपरीत, विरुद्ध, असंगत ।

औरत, सं स्त्री (अ) नारी, रामा २ पत्नी,
भार्या ।

—की जात, सं स्त्री, स्त्री-नारी, नाति (स्त्री) ।

औरस, स पु (सं) धर्मपत्नीज पुत्र ।

औरेव, स पु (सं अव + रेव >) वक्र तिर्यग्,
गति (स्त्री) २ बहस्य तिर्यक्वर्तनम्
२ जटिलत्व, सडिल्लता ३ छल, वपटम् ।

—दार, वि, किन्तव, वचक ।

औलाद, सं स्त्री (अ) प्रजा, सप्तति प्रसूति
(स्त्री), सत्तान, लोक, अपत्यम् ।

औलिया, सं पुं (अ 'वली' का बहु) सिद्धा,
पुण्यजना ।

औल, वि (अ) प्रथम, आदिम २ प्रमुख,
प्रधान ३ सर्वोत्तम । स पु आरम्भ, उपक्रम ।

औपध, स पु (सं न) भेषज, भेषक्य, भण्ड
२ इरितक, शाक, ओषधि (स्त्री) ।

औपधालय, स पु (सं) भेषजालय,
औषधशाला ।

औसत, सं पु (अ) मध्यमा, मध्यप्रमाणम् ।
वि मध्यम, सामान्य ।

औसान, स पु (का) सेना, प्रेतन्य, सहा,
शोध ।

—तता होना, मु, मतिभ्रम, भ्रमनाश,
सन्नम ।

क

क, देवनागरीदर्भाभाषा प्रथमव्यञ्जनवर्ग,
ककार ।

कंक, स पु (सं) अग्निप्रिय, क्रूर, दीर्घ
पाद, सगर्भेद ।

ककड, सं पुं, दे 'ककर' ।

ककण, स पु (सं पु न) कटक -क, कण्ठ -
य, आवाप क, पारिहार्य -यम् ।

ककणी, पीसा, सं स्त्री (म विकणी)
विदिगी किचि(क)णीका २ धुद्रघाटका ।

ककत्त, स ॥ (सं पु न) ककतिका, ककनी ।

ककती, म स्त्री (सं) दे 'ककन' तथा 'कधी' ।

ककर, स ॥ (सं ककरम्) उपलब्ध, शर्करा
अदमशुक्ति, अष्टौला (बहु) ।

ककरीट, ॥ स्त्री (अ ककरीट) लोहलेप ।

ककरीला, वि (हि कपर) शर्करावृत,
ककरमय ।

ककाल, सं ॥ (सं पु न) अस्थिपजर,
वरन ।

ककान, स पु, दे 'ककण' ।

ककानी, सं स्त्री (सं ककुनी) प्रिययु, पीत
शट्ट, ककु-गु (स्त्री) ।

ककाला, वि (सं ककाल >) दरिद्र, अस्थिघ्न,
निर्धन, दीन ।

ककाल, वि, दे 'ककाल' ।

ककाली, सं स्त्री (हि ककाल) दरिद्रता,
निर्धनता, दरिद्रकम् ।

कँगूरा, स पु (फा कुँगरा) शिखर, शृङ्गम् ।

कधा, स पु (स वन) वनम् ।

कधी, स खी भ (म वक्त्री) वक्त्रिका,
वेद्यमान्नी, प्रसाधनी ।

कचन, स पु (स काचनम्) सुवर्गम्
२ सपत्ति (खी) ।

कचनी, स खी (हि कचन) वेद्या, नर्तकी ।

कचुक, स पु (स) रुक्, निचोल-प्रानारक
२ अगिका, कचुलिका ३ कचव-चम्
४ कचम् ५ दे कचली ।

कचुली, स पु (स, रिन्) अत पुरचारी
वृद्धाक्षग सौविदह सौविद २ द्वारपाल
३ सर्प ४ द कंचला स खी अगिका,
कचुलिका ।

कंचेरा, स पु (हि कंच) काच, कार धमक ।

कच, स पु (स) कचन् (पु) २ कच ।
(स न) कमलम् २ अग्रम् ।

कजई, वि (हि कजा) धूज, धूमल ।

कजह (र), स पु (दश या कालिन्)
जातिविशेष ।

कजन, स पु कामदेव, गदन २ एगमेद ।

कजा, स पु (स करज) कटकनीवृक्ष
२ तस्य बीजम् । वि, करजवर्ण धूमल २ धूज
नयन ।

कजूम, वि (स कण + हि चूसना) कृपण
कदप अमुक्तहस्त विपत्तान ।

कजुमी, स खी (हि कजूम) कार्पण्य,
कदर्वता, अमुक्तहस्तवम् ।

कटक, स पु (स पु न) शस्त्रम् २ विघ्न
३ विघ्नकर ४ सूच्यग्रम् ५ शत्रु ६ रोमाञ्च
७ कचव-चम् ।

—अदान, स पु (स) उग्र, क्रमेण्क ।

कटवित्त, वि (स) सभटक कचपूर्ण २ सविघ्न
३ रोमाञ्चित ।

कटिया, स खी (हि कौटी) कौल, शत्रु
२ प्रहरी, धरणी ३ भूषणम् ।

कटीला, वि (हि कौटा) कटवित्त २ सविघ्न ।

कठ, स पु (स) कट गर, निवरण २ स्वर
३ गुणदीना कठरेखा ४ दे 'कठा' ।

—अग्र, वि (स) दे 'कठस्थ' ।

—गत, वि (स) नर्मन्तोमुख (प्राण) ।

—माला, सं खी (सं) गण्डमाला, कठरोग
भेद ।

कठस्थ, वि (सं) कठाग्र, कठगत, सुराग्र,
मुखस्थ ।

कंठा, स पु (स कठ >) कठी, सुवर्गगुटिका
निमित्त कठालकार २ गुणादीना गळरेखा ।

कठी, स खी (स) कठ, गल २ अधरठ
रदिम (पु) ३ लघुगुटिका-कठी । ४ तुलसी
बीजमाला ।

कठ्य, वि (स) कठोच्चार्य २ कठजात
३ कठोपकारक ।

कडा, स पु (क स्वदन >) द 'उपला' ।

कडी, स खी (हि कडा) लघुगोमयम्
२ मलगुटिका ।

कडील, स खा (अ कदील) कर्गलादि
निमित्तो दीपकोष ।

कड्ड, कड्ड, स खी (स) कड्डति (खी),
दे 'उपली' ।

कत, स पु (सं कात) प्रिय, वल्लभ,
रमण २ पति, धव ३ इकर ।

कथा, स खी (स) भिक्षुकर्षद, दे 'गुदबी' ।

कथी, स पु (स कथा >) भिक्षु, कथा
भारिव ।

कंद, स पु (स पु न) गोलमूल, दाघ
मूलम् २ लघुनम् ३ मेघ ४ दारण ।

कद, स पु (फा) मितारह गदमौक्ष ।

कदर, स पु (स पु न) गहर, गुहा, दरी ।

कदरा, स खी (स) दे 'कदर' ।

कदप, स पु (स) गदन, कामदेव ।

कदा, वि (फा) वकीर्ण तट ।

कदुक, स पु (स) वेदु, वेण्डु २ उपधान,
गण्डु ३ पुष्पलम् ।

कधा, स पु (स स्वन्ध) अस, मुचमूल,
दोऽस्वर, क सवरम् ।

कधार, स पु (स गाधार) नगर प्रदेश,
विशेष ।

कप, स पु (स) दे 'कपकपी' ।

कपकपी, स खी (हि कपना) प्र, कप,
वेपन, वेपथु, पवन, कायकप ।

कपनी, स खी (अ) समवाय, समायवसायि
स्व २ सैवशुभ ३ गण ४ साश्चर्यम् ।

कपाउंडर, स पु (अ) *समिथक, योगविद्,
वैद्यसहाय ।

कपाउंडरी, स स्त्री, समिथक, व्यवसाय-धर्मन्
(न) ।

कॅपाना कि स (हि कापना) कप्, वेध,
वेह रूपद, पज के प्र रूप ।

कपायमान, वि (स कपमान) श्रजमान,
कपन कप्र रूपमान ।

कपास, स पु (अ) दिव्यसंकायत्रम् ।

कपिन, वि (स) वपमान, चचल २ भीत,
प्रतल ।

कपु, स पु (अ कैप) शिविर, स्त-वावार
२ सेना इ दे 'रोमा' ।

* कषल, वि (का कषल) आभ्यहान, दुर्दैव ।

कवल, स पु (स) रत्नक, आविक ऊर्णायु,
औरभ, नीधार ।

कडु, स पु (स) दे शस' ।

कस, स पु (स) कृष्णमातुल । (स न)
कास्थ, ताम्राक्षम् २ पानभाजन, वंशम् ।

—ताल, स पु दे 'होश' ।

क, स पु (स) अक्षर (पु) २ सूर्य इ
अग्नि ४ विष्णु ५ दम इ वायु ७ मदन ।

कई, वि (स कति) कतिपय एकाधिक, अनेक
बड, प्रभूत ।

—धार, कि वि बहुधा, पुन पुन, मुहुर्मुहुः,
भूयोभूय, बहुवारम् ।

ककडी-री, स स्त्री (स ककडी) रोमशा
स्पृष्टा तोयफला गन्धदतकला चिर्भेदी मूत्रला ।

ककहरी, स पु [क+क-ह+रा (प्रय)]
मायमिकथानम् २ वर्णमाला इ पूर्वकार्य
समूह ।

ककुद, स पु (स ककुद स्त्री) ककुद द,
असकृत् गडु स्थगु २ राजचिह्नम् (छत्रादि) ।

ककुभ, स पु (स) अर्जुनवृक्ष २ दे
'दिशा' ।

कक, स पु (स) काडुमूलम्, दे कग
२ दे 'लॉग' ३ कच्छ दे कछार' ४

लृणम् ५ दुष्क-वनम् ६ भूमि (स्त्री)
७ भित्ति (स्त्री) ८ कोष्ठ ९ दोष १० दे

कछराली' ११ शनी कथा १२ दे 'आंचल' ।

कच्चा, स स्त्री (स) परिधि, परिवेष्ट प
२ ग्रहमार्ग ३ सामान्य ४ वर्ग, श्रेणी

५ दे 'क्योडी' इ नाहुमूलम् ७ दे 'कछराली'
८ गृह, भित्ति (स्त्री)-पक्ष ९ दे 'लॉग'
१० इस्तिरञ्जु (स्त्री) ।

कगर, स पु [स क (क-कल)+अग्र>]
उच्छिन्न-तीर तटम् २ सोमा ३ प्राकार
शृणम् ।

कगार, स पु (हि कगर) उन्नताग्रम्
२ उच्छिन्न-कूल-तीरम् ।

कच, स पु (स) केग कुल्ला, कचा,
शिरसिज, शिरोरुहा (सत्र बहु) २ समूह ।

कचकच, स स्त्री (अनु) प्रलाप २ वाग्युद्धम् ।

कचनार, स पु (स काचनाल) कौविदार,
पाकारि, स्वस्ववेसर ।

कचपच, स पु (अनु) संवाध, सम
२ दे 'कचकच' ।

कचपचिया, कचपची, स स्त्री (हि कचपच)
कृत्तिकानक्षत्रम् २ मस्तकक्षारा भूषणमेव ।

कचर कचर, स स्त्री (अनु) आमफलचर्चण
ध्वनि २ दे 'कचकच' ।

कचरा, स पु (हि कचा) अपक खर्वल-
दशागुलम् २ अपकचित्रवह्नी इ चर्मट' दे
'कूडानरकट' ।

कचहरी, स स्त्री (हि कचकच) धर्म-न्याय-
सभा व्यवहारामटप, न्यायालय, धर्म-
अधिकरणम् २ राजसभा ।

कचाई, स स्त्री (हि कचा) आमता, अपवृत्ता,
२ पाटव-शास्त्र अनुभव हीनता ।

कचायेंध, स स्त्री (हि कचा+गध) आम-
अपक-गध ।

कचाळ, स पु (हि कचा+काळ) आशुषी,
कनु (स्त्री) कक्षी, तीक्ष्णकट, गजकर्ण ।

कचीची, स स्त्री (अनु कच) हनु (पु स्त्री),
हनु (स्त्री) ।

कचूर, स पु (हि कचलना) निषिष्ट
पदार्थ, चणितवस्तु २ मृदसार, मज्जा ।

कचूर, स पु (स कचूर) दुर्लभ, गधमूलक,
गधसार, जटाल ।

कचीरी, स स्त्री (हि कचरी) मायगर्भा,
सुषिष्टिका, कचैरिका ।

कच्चा, वि (स कच) अदक, हरितनीरस
(फलदि) २ अमृत, अश्राग, असिद (भोज

नादि) ३ अपरिणत, अपूर्णकाल, अप्राप्तकाल,

अपरिपुष्ट (आयु आदि) ४ विकारिन्, अस्थिर
५ निस्सार, अप्रामाणिक (वान ३०) ५ प्रच-
लितमाना न्यून ६ सत्कार-मञ्चोधन, -अपे-
क्षिन् (वही ३) ७ नियम विधि, -विरुद्ध
(हरनावेज ३) ८, पवननिर्मित (घर आदि)
९ अशुच्यपत्र (न्यक्ति) १० कुलितिन, अमस्कृत
(अक्षर ३) ।

—चिह्ना, सं पु सशोपनापेक्षिगन्वा ० सत्य-
व्यथार्थ, वृथान्त ३ शुभ गोप्य, -वाणी ४ गच्छे
पक्ष ५ वापसकला ।

—यक्षा, वि, अर्द्ध सामि, -पक्ष-मृत-श्राण ।

—यक्षा, स पु, शिशव (बहु) २ गर्भ ।

—माह, स पु, सामग्री ।

कच्ची, वि स्त्री (हि कच्चा) 'कच्चा' के शब्दों
के स्त्रीलिंग के रूप, जैसे-अपक्षा, अग्न्या ३ ।

—हूँट, सं स्त्री, अपक्ष-, इष्टका ।

—उमर, स स्त्री, अवयवका, अप्रामाण्यवहारता
२ बाल्यम् ३ शैशवम् ।

—रखोई, सं स्त्री, जल्पब्रमन्त्रम् ।

—सबक, सं स्त्री, मृगयों मार्ग ।

—मिराई, सं स्त्री, स्थूलवृत्ति (स्त्री) ।

कच्छ, सं पु (स पु न) अनूप-प, जल
मायदेश २ नया सरसो वा प्रतिभाग
३ प्रदेशविशेष ।

कच्छप, सं पु (सं) कूर्म, दे 'कछुआ'
२ अवतारविशेष ।

कच्छा, स पु (सं कच्छ >) नौकाभेद
२ दे 'कछनी' ।

कच्छी, वि (स कच्छ >) कच्छीय,
कच्छ, -विषयक-सम्बन्धिन । सं पु, कच्छ
वासिन् २ कच्छाक्ष ।

कच्छी, सं स्त्री, दे 'कछनी' ।

कच्छ, सं पु, दे 'कछुआ' ।

कछनी, सं स्त्री (हि काछना) जातुल्लि-
खितकनम् ।

कछरा(वा)ही, सं स्त्री (स कच्छ >) कछा ।

कछार, सं पु (सं कच्छ) दे 'कच्छ'
(१,०) ।

कछुआ, स पु (सं कच्छ) कमठ, कूर्म,
'वर्तुल' (पु), पचगूढ, सूपृष्ठ १ (स्त्री
कमटी, डुली, कूर्मी हुनी) ।

कछीय, सं पु (हि काछ) लघुशायिका
० दे 'कछनी' ।

कजरारा, वि (हि कजर) सांवन, अन्न
शुत, सक्जल २ काल, श्याम ।

कजली, स स्त्री (सं कजल >) कालिमन्,
काञ्च्य, कलक २ पर्वविशेष ३ कृष्णाक्षी गौ
(स्त्री) ४ वर्षासु गेयो गीतभेद ।

कजा, स स्त्री (अ) मृत्यु, निधनम् ।

कजाक, स पु (तु कजाक) दस्तु, तुण्ड ।

कजाकी, स स्त्री (तु कजाकी) तुठन, अपहरणम् ।

कजावा, पु (का) जटपर्याणम् ।

कजिया, स पु (अ) कलह, विग्रह ।

कजी, स स्त्री (का) वक्रता २ दोष ।

कजल, स पु (स न) अजन, नैनरजन,
लोचक २ बाहुन, सीवीर, दे 'सुरमा'
३ कालिमन् ।

कज्जक, स पु (तु) तुल्यजातिभेद ।
२ दम्बु, तुण्डक ।

कट, स पु (स) गजगढ २ कपोल ३ देव
स्थल, -वाल, वासभेद ४ देवनालनिर्मित-,
कट, कलिज, आस्तरणम् ५ पथोरनादादि
भासा ६ शव ७ शवयान, श्वा दी
८ दमशान ९ गच्छातिभेद १० बाढकलक
कम् ११ समय, अवसर १२ दे 'टट्टी'
वि श्व, मृत्यु २ उत्कट, उग्र ।

कटक, सं पु (सं पु न) शिवि (वि) २,
निवेश, सैन्यनिवास २ सेना २ ककण गम्
४ पर्यंतमध्यभाग ५ पादकटक ६ चक्रम्
७ नगरविशेष ८ समूह ।

कटकट, सं स्त्री (अनु) दत्तधर्षणशब्द, कट
कटावितम् २ कलह ।

कटकटानी, कि स (हि कटकट) वतान्
शृष्ट (स्वा प से) ।

कटना, कि अ (सं कर्न) अवधिद्वन्द्व
लक्षण (कर्म) २ व्यवथा (अ प अ)
३ छम्-मृष (कर्म) ४ लज्ज (तु आ से)
ही (जु प म) ५ उपरुध् (कर्म) ६ सुदे
हन् (कर्म) ७ श्वर् (स्वा प से) ८ मुह
(दि प से) ९ घृष्ट (कर्म) ।

कटनीस, सं पु (विश) दे 'नीलक' (पक्षी) ।

कटनी, स स्त्री (हि कटना) विक्रय
२ शव्यकर्तव्यम् ।

कटपीस, सं ॥ (अ) चपट ।

कटरा, सं पु (हि कटहरा) चतुष्कोण लघुवृद्ध २ महिष्या वत् ।

कटवाना, कि प्रे, 'काटना' के भातुओं के प्रे रूप ।

कटमरैया, स स्त्री (स कटसारिका) सैरय, सैरयक, श्वेतपुष्प । (पीली) कुरटक, पोतपुष्पक । (नीली) नीलपुष्पी, आर्च गन् । (लाल) कुरवक ।

कटहरा, स पु (हि काठ + धर) काष्ठ गृहम् । २ वृक्षजम् ।

कटहल, स पु [स कटक (कि) कल] (वृक्ष) पनस फणस, चपातु । २ (फल) पनस, पणस इ ।

कटाई, स स्त्री (हि काटना) कर्मन, छेदन, लवनम् २ शस्त्र, लवन समूह इ लवन छेदन, भृति (स्त्री) ।

कटारट, स स्त्री (हि अनु) कलह २ कट कटायितम् ।

कटारटी, स स्त्री (हि काटना) हत्या, वध युद्धम् २ वैदग्ध्य इ कटकटाटम् ।

कटाच, स पु (सं) नयनविनास, हावपूर्ण वृष्टि (स्त्री) २ आक्षेप, दोषप्रकाशनम् ।

कटार-री, स स्त्री (स कटार) अति-पुत्रिका, कृपाणिका ।

कटारा, स पु (स कटार) अति, कृपाण २ दे ऊँटकनारा ।

कटाव, सं पु (हि काटना) कर्मन छेदनम् २ नदीतट इ कटित्वा निर्मित पुनपत्रम् ।

कटि, स स्त्री (स) कटी ।

—यच, स पु (स) भूकण्ड, भूमे पचभागेषु शन्यतम २ दे कभरयट् ।

—चद्वि (स) सञ्च, सञ्चद्व उपन, चद्वि परिवर्, मिद ।

कटियाना, कि अ (हि कटी) कटवित्त पुनक्ति रोमाचिन् (वि) -भू ।

कटीला, वि (हि काटना) निश्चित, सीहणाम् २ मोहक, प्रभावशालिन् ।

कटु, वि (स) कटुक २ तिक्त, तीक्ष्ण इ अप्रिय, अनिष्ट ।

कटुता, स स्त्री (स्त्री) कटुत्व, कटुवता, काट वम् २ तिक्तता इ अप्रियत्वम् ।

कटोरा, स पु (सं स्त्री) कटोरम् ।

कटोरी, स स्त्री (हि कटोरा) कटोरिका, वचोल ।

कटीती, सं स्त्री (हि कटना) उदार, उद्वृत्तभाग ।

कटर, वि (हि काटना) धर्मान्ध, मतांध, अधविश्वासिन् ।

कट्टा, वि (हि काठ) वज्रदेह, वृद्धाग, मांसल, बीर्यवत् । स पु, हनु ।

कटधरा, सं पु (स काष्ठगृहम्) बाष्पावेष्टन, काष्ठसलाकावृत्ति (स्त्री) शकुन्तल २ वृहत्काष्ठपत्रम् ।

कटपुनरी, स स्त्री (स काष्ठपुनरिति) पुत्रिका, पुत्ररी, पाचारिका इ वृद्धगी दाला ।

कटकोटवा, सं पु (हि काठ + कोटना) काष्ठकूट, दारुनाट, शतच्छद्, शतपत्रक ।

कटमाप, स पु (हि काठ + माप) मातृ द्वितीय पति ।

कटला, स पु (स कठ >) कठभूषा ।

कटिका, स स्त्री (स) दे 'खडिमा' ।

कटिन, वि (स) दुष्कर, दुस्साध्य, कष्टसाध्य, गहन २ घन, कौस्त, कन्धत २ दुर्बोध, दुर्बोध, दुर्गमम् ।

कटिनता, स स्त्री (स) दुष्करता, दुस्साध्यता २ घनता, कौकसता इ दुर्बोधता, दुर्बोधत्वम् ।

कटिनाई, स स्त्री (स कटिन >) दे 'कटिनता' ।

कटोर, वि (सं) निर्दय, क्रूर, नृशस, निर्धृण, परुष २ घन, कौकस इ मर्पर, कन्धत ।

कटोरता, स स्त्री, (स) निर्दयता, क्रूरता, पारुष्य, निर्धृणता, नृशसत्वम् २ घनता, कौकसता ।

कटीता, स पु (स काष्ठ >) वृहत्काष्ठ भाजन, वृहत्कारुपात्रम् ।

कटीती, स स्त्री (हि कटीता) लघुकाष्ठ भाजन, दारुभाजनवम् ।

कटुर, स स्त्री (अनु) महा-शब्द -रव-निनाद २ मेघगर्जनम्, घनध्वनि, गजितम् इ वज्र-निर्घोष निर्घोषत्वम् ४ विराव, ध्वनि ५ उद्देगजनको निनाद ।

कटुकट, स पु (अनु) कटुकशब्द, कट-कटायित २ भग स्पृष्टव, -शब्द ।

कडकडाना, क्रि अ (हि कडकड) सदाब्द
भन् मिद-इ (कर्ष) , खुट् (तु प से)
२ छै ध्वन् (भ्वा प से) ३ डुन् (प्र) ,
चूर्न् (तु) ।

कडकडाहट, स स्त्री (हि कडकड) कड
कडान्कार, गति, दे 'कडक' ।

कडकना, क्रि अ (हि कडक) कडकड-इ
कृ गञ् (भ्वा प से) २ महारवेण भन्
(कर्त्त) ३ खुट् (तु प से) ४ छै कड
(भ्वा प से) ।

कडका, स पु (हि कडक) विनय-युद्ध,
गीतम् २ सौधमिनी ३ गतिनम् ।

कडखा, स पु (हि कडक) युद्धगीतम् ।

कडखैल, स पु (हि कडखा) युद्धगीत
गायक, चारण, वैतालिक ।

कडकडा, वि, (स कर्त्तु) दे 'चित्तकपरा' ।
स पु, कर्त्तुर्कृत् ।

कडका, वि, दे 'कड' ।

कडा, वि (स कडक >) धन, सान्द्र, कज्जल,
कीकस, दृढ, कर्कर, अनन्य २ निष्ठुर, निर्दय
३ दुर्गोष, दुर्द्वेष, कठिन ।

कडा, स पु (सं कडक) कडक, ककण-प,
२ केयूर-र, भगद-दन् ।

कडाई, स स्त्री (हि कडा) दृढता, कौक
सता २ निर्दयता ३ दृष्टता ।

कडाका, स पु (अनु कडाक) भग-भजन-
भेदन-भोदन, शब्द-नाद २ अनशन, अना
हार ।

कडाके वा, सु, मीमा, शोभ, तीव्र, बट ।

कडाहा, स पु (स कडाह) तैलादिपाक-
पात्रम् ।

कडाही, स स्त्री (हि कडाह) कडाही ।

कडी, स स्त्री (हि कडा) शृङ्खला, मधि-
ग्रन्थि २ गीनन्तरणम् ३ दीर्घ-स्थूपा-काष्ठ-
दार (न) । वि स्त्री, कठिना, कौकसा ।

कडवा, वि, दे 'कड' ।

—तैल, स पु, सर्पपतैलम् ।

कडाई, स स्त्री (हि, कडना) सूचीद्वयम्
२ सूचीद्वयस्य भृति (स्त्री) ३ दे
'कडाही' ।

कडी, सं स्त्री (हि कडना) कथिता, चाक
चूर्णनिमित्तव्यजनभेद ।

कण, स पु (सं) ख, लघ, अणु ।

कणाद्, स पु (सं) वैशेषिकदर्शनकार श्रुति ।

कतरन, स स्त्री (हि कतरना) शम्भानि,
वृत्तखानि (दोनों बटु) ।

कतरना, क्रि स (स कर्त्तनम्) कर्त्तरिवया
वृत्त (तु प से) ।

कतरनी, स स्त्री (हि कतरना) कर्त्तनी,
कविका, कर्त्तरिका, कर्त्तरी ।

कतर श्योत, स स्त्री (हि कतरना + श्योत)
अवच्छेद, अस्वीकरणम् २ परिघ, विनि
मय ३ चिन्ता, विमर्श ४ अपहरण, मीप
५ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

कतरा, स पु (हि कतरना) लघ, अणु,
इकल ।

कतरा, स पु (अ) कण, विंदु, लघ, द्रुप्त ।

कतराई, स स्त्री (हि कतरना) कर्त्तन,
धृत्या-भृति (स्त्री) २ कर्त्तन, कार्य-कर्त्तन
(न) ।

कतराना, क्रि प्रे, 'कतरना' के धातुओं के प्रे
रूप २ निभूत-सत्त्व-समय अपया (अ प
अ), नैपुण्येन परिट (भ्वा उ अ) ।

कतल, स पु (अ कतल) इत्या, कथ ।

कतला, स पु (अ कतल >) कटलम्, दे
'फौक' ।

कतलाम, सं पु (अ कतले आम) व्यापक,
नरस्हार-लोकहया ।

कतवार, सं पु-दे 'कडा' ।

कताई, स स्त्री (हि कानता) कर्त्तनम्
२ कर्त्तनभृति (स्त्री) ।

कताना, क्रि प्रे, 'कानता' के धातुओं के प्रे
रूप ।

कतार, स स्त्री (अ) पक्ति-नीति (स्त्री)
२ निवर, समूह ।

कतिपय, वि (स) दे 'कुट' ।

कतीरा, स पु (देव) युद्धशस्त्रियाँ ।

कनौनी, स स्त्री (हि कानता) तान्त्रिक,
सूत्रतननम् २ तान्त्रिक-सूत्रतनन, भृति
(स्त्री)-मृत्या । ३ कालक्षय, विलम्बनम्,
दीर्घोत्तरणम् ।

कत्तल, स पु (हि कतरना) शब्दकारण,
पापाशुक्ल ।

कथक, स पु (स कथक) संगीतव्यवसायिनी जाति (स्त्री) ।

कथा, स पु (स काथ >) खदिर, खदिर सार रग, रगद ।

कथक, स पु (स) कथावाचक कथोपजीवि ।

कथन, स पु (स न) वचन, उक्ति (स्त्री), निवेदन, निर्देश, उपभास ।

कथनीय, वि (स) वचनीय वर्णनीय, वक्तव्य उच्चार्य, रूपनीय ।

कथा, स स्त्री (स) उप भाख्यान, भाख्यायिका आख्यानकम् २ कुतात, उद्धत १ धर्मोपदेश ।

—वार्ता, स स्त्री (स) धर्मोपदेश, व्याख्यान ।

—वस्तु, स स्त्री (स न) कथासार, आख्या नस्य रूपरेखा ।

कथानक, स पु (स न) कथा २ उपारवा मन्, लघुकथा ।

कथित, वि (स) उक्त भाषित भणित उद्घोषित ।

कथोपकथन, स पु (स न) समापण, सवाद, सलाप, वार्तालाप ।

कैदघ, स पु (■) मृज्वरहम्, विपन्न, व्रण शारक, नीप, मदिरागम २ समूह ।

कद, स पु (अ) आकार, प्राञ्जना, देहोष्मता ।

कदन, स पु (स न) वध, हत्या २ छुरिका ।

कदम्ब, स पु (स न) तुच्छाश्रम ।

कदम्ब, स पु (अ) पाद पद, धरण न, क्रमण, अग्नि (पु) २ अल्पातर पदम् ।

कदर, स स्त्री (अ) आदर, समान २ मात्रा, परिमाणम् ।

—दान, वि (अ + पा) गुणधातुक ।

कदर्य, वि (स) वृषण मितपच ।

कदली, स स्त्री (स) दे 'वेला' ।

कदा, अय (स) कस्मिन् काले ।

कदाचित्, अय (स) स्यात्, सम्भवेत् २ कदापि ।

कदापि, अय (स) कदाचित् २ कदा, पुरा, प्राक् ।

कदद्, स पु (का कद्) हाड, अण्ड (पु स्त्री), हाडका शुम्भ, तुषी, तुदिना, पिड मद्दा, पन्ना ।

—कदा, सं पु, हाडक ।

—दाना, स पु, उदरकृमिभेद ।

कन, स पु (स कण) अणु, क्षुद्राण, कणिका, कणी, रेखा २ अन्नवर्णिका ३ जुष्ट, सच्छिद्रम् ५ गिह्याश्रम ५ अन्नवर्णलण्ड ।

कनक, स पु (स न) स्वर्ण, सुवर्ण वाचन, हाटकम् २ दे 'धनूरा' ३ दे टेम् ।

कनक, ■ स्त्री (म कणिक >) गोधूम, प्रगट सुमन, स्नेच्छभोज्य २ गोधूमचूर्णम् ।

कनकटा, वि (स कर्ण + हि कटमा) छिन्न कर्ण २ कर्णच्छेदक ।

कनकमा, वि (स कणकण >) मिदुर, भगुर २ कौपन कौपन ।

कनकीवा, स पु, दे 'यतन' ।

कनकज्वरा, स पु (स कर्णज्वर >) कर्णकीदी, शतपदी, कर्णज्वरना चित्राणी ।

कनकरी, स्त्री (हि कोना + औत्त) कणम अथागदर्शन, साचिवीक्षणम् २ नैनसमेत ।

कनकदन्त, स पु (■ कर्णच्छेदनम्) कर्णविध सस्वार ।

कनकोप, स पु (स कर्ण + हि कोपी) कर्ण शिरस्त्वम् ।

कनकपटी, स स्त्री (स कर्णपटु >) गड, गड, स्थल-ली ।

कनकोष्ठा, स पु (स कर्ण + हि वेष्टा) पाषाणगर्दभ ।

कनकपटा, स पु (स कर्ण + हि पट्टना) गोरक्षनाथानुयायी सशु २ विदेकर्ण ।

कनकुंका, वि (स कर्ण + हि कुंका) दीक्षादायक २ दीक्षित । स पु, आचार्य २ शिष्य ।

कनकमाना, क्रि अ (अनु) निद्राशामयानि धिप (तु प अ)-प्राप्त (दि प ते) २ शने विरोध प्रकटयति (ना धा) ।

कनरमिया, स पु (स कर्णरसिक) संगीत-अनुवागिन्-शृङ्गपु ।

कनकोत्ता, स पु, दीक्षिप्रपुत्र, पुत्रीपुत्र ।

कनकोक्शन, ■ स्त्री (अ) दीक्षातमहोत्सव, उपश्रितिविरणोत्सव २ समा ।

कनस्तर, स पु (अ केनस्तर) धामुमय समुद्रक ।

कनाई, सं स्त्री (हि कना) अनुसूक्ष्म,
शास्त्रा विद्वत् ।
कनागत, सं पु (सं कनागत >) पितृपक्ष,
आश्विनमासस्य कृष्णपक्ष २ आद्वम् ।
कनात, स स्त्री (तु) पद्मद्वयमिति (स्त्री) ।
कनियारी, स स्त्री (स कणिकार) परिव्याध,
हुमोयस २ कर्णिकारपुष्पम् ।
कनिष्ठ, वि (स) अल्पिष्ठ, लघिष्ठ, यविष्ठ
२ निष्ठ, तुच्छ, क्षुद्र ।
कनिष्ठा, स स्त्री (स) कानष्ठिका, कनीनी,
दुर्बलागुलि (स्त्री) २ यविष्ठा पत्नी ।
कनी, स स्त्री (सं कणी) हीरककुलदीना
सूक्ष्मखड्ग इम् २ विदु, द्रव्यम् ।
कनीमित्रा, सं स्त्री (सं) तारा, तारका
२ कनिष्ठा ।
कनेटी, स स्त्री (हि कान + षेठना) कर्ण,
कर्ण मोहनम् ।
कनेर, स पु (सं कनेर) करबीर, अथ
मारक, बीर, कुद, प्रच ।
कनीज, स पु (स कायकुब्जम्) कन्याकुब्ज,
गाधिपुर, कौशम् ।
कनीबा, वि (हि काना) कान, धकाष्ठ
२ हीनाग ३ अपमानित ४ क्षुद्र ५ उपद्रुत ।
कन्ना, सं पु (स कर्ण >) वड्डीनकीटनकरस्य
वैषकसूत्रम् २ अग्र, कोटि (स्त्री) ।
कक्षी, स स्त्री (हि कक्षा) वड्डीनकीटनक
पार्श्वे (हि व) २ अग्र, कोटि (स्त्री)
३ शाटिकादीनामबल ।
—काटना, सु, दर्शन परिदृ (भ्वा व अ) ।
कन्या, स स्त्री (सं) कन्यका, कुमारी, बाला,
बालिका, दारका २ दुहितृ, पुत्री, सुता,
कन्या, सनुता, आत्मजा २ रोगविशेष ।
—रासी, वि (सं -राशि >) कन्याराशिज
२ निर्वल ३ दुष्ट ।
कन्याट, वि (स) कन्या, बाधक-पीडक-
सन्तापक ।
कन्सरवेडित्व, वि (अ) प्राचीनतासमर्थक,
नवीनता विरोधिन् ।
कन्हाई, कन्हाया, सं पु (स कृष्ण) श्रीकृष्ण
२ सुदरपालक ३ प्रियपुरुष ।
कर्प, सं पु (स) वरुण २ दैत्यजातिप्रवार ।

कर्प, सं पु (अ) चक्रक-क, शराव २ पुर
स्कारचक्रक-कम् ।
कपट, सं पु (स न) छल, कैतव, वचना,
प्रतारणा, छद्मन् (न), दम, पापद, न्याय,
शाष्ट्यम् ।
कपटी, वि (स-टिन्) छटिन्, पापटिन्,
शठ, किम्व, दमिन्, प्रतारक, वचक ।
कपटछन्न, सं पु (हि कपटा + छानना)
पटपवनम् २ वसनपूतम् ।
कपट्टा, सं पु (स कपट) वसन, शल,
अवर, अशुक, पट, वासस् (न) २ परिधान,
वेश, -व, नेपथ्यम् ।
—पहिनना, कि स, वस्त्राणि परिधा (जु व
अ) -धृ (चु)-वम् (अ आ से) ।
—ऊनी, रोमन-ऊर्णामय, वस्त्रम् ।
—पुराना, कपट, बीर, जीर्णवस्त्रम् ।
—महीन वदिया, दुकूलम् ।
—रेशमी, कौशय, कौशावर, क्षीम, कौशम् ।
—सूती, तुलावर, पाल, कार्पास, बादरम् ।
कपर्द, सं पु (सं) शिवनटाजूट २ वराह ।
कपर्दिना, स स्त्री (स) दे 'कौबी' ।
कपाट, सं पु (स पु न) दे 'किवाड' ।
कपाल, सं पु (सं पु न) दे 'खौपडी' ।
—क्रिया, स स्त्री (स) ज्वलच्छवस्य वेगुना
कपालभेदनम् ।
कपाली, स पु (सं. कपालिन्) मौरव,
उमापति ।
कपास, स स्त्री (सं कार्पास) तूल ल, धरा,
पिन्नु, पिन्नुल । (पौदा) कर्पासवृक्ष,
कार्पासी, सूत्रपुष्पा, बदरी-रा पदक, छादना ।
कपि, सं पु (स) बानर, मर्कट २ गज
३ सूर्य ।
—ध्वज, सं पु (सं) अजुन ।
कपिल, स पु (स) मुनिविशेष २ अग्नि ।
वि, कपिश, पिंगल ३ भेत ।
कपिला, सं स्त्री (सं) मुंडा विनेया, गौ (स्त्री)
कपिश, वि (स) पाण्डुरवर्ण, विश्व, पिंगल,
कपिल ।
कपीश, सं पु (स) सुप्राव (२) इनुमव ।
कपून, स पु (स कुपुव) कुतनय, कुसुल ।
कपूर, स पु (स कपूर-रम्) धनसार,
सिताग, हिमवालुका, चद्र, सोम, सिताम्र ।

कपूरी, वि (सं कपूर) धनसार-कपूर, वर्ण-
रग ।

कपोत, सं पु (सं) दे 'कवूतर' ।

कपोल, स पु (सं) दे 'गाल' ।

—कल्पना, स स्त्री (सं) मिथ्या कथा,
कल्पित वृत्तान्त ।

कप्तान, सं पु (अ कैप्टेन) दलनायक, अग्रग
२ सैन्याधिपति, सेनानी ३ नौकाधिपति,
पोताध्यक्ष ।

कफ, सं पु (स) इलेभन् (पु), सटक,
बलास २ सि (सि) घाण, सिहाण-न ।
३ हृदयकठादिस्थो धातुभेद (वैद्यक) ।

कफ, सं पु (फा) फेन, डिंडीर २ छाला,
मुसलाव, द्राविका ।

कफ, स स्त्री (अ) कफ-हरत, तल तलन् ।

कफ, स पु (अ) पिप्पलाग्र, अन्न भाग ।

कफन, स पु (अ) शववसन, मृतकच्छ,
मैतपरिधानम् २ शव, -माजन-पेटक ।

कफनी, स स्त्री (अ कफन >) शवघ्रीवा
बन्ध २ साधूना घ्रीवावसनम् ।

कवच, स पु (सं) अमुण्ड शरीर, कण्ड -क,
छिन्नमस्तको देह २ राहु ३ मेघ
४ राक्षसविशेष ।

कव, कि, वि (सं वदा) करिम्न काल ।

—सक, कि वि, कियच्, -काल-चिर, वदा
पर्यन्तम् ।

—से, कि वि कदारन्व, वदामृति ।

कवड्डी, स स्त्री (देश) बालक्रीडाभेद ।

कवर, स स्त्री (अ कव) प्रेतावट, शवगत,
समाधि ।

कवर (रि) इतान, स पु (फा कविस्तान)
प्रेतभूमि (स्त्री), समाधिक्षेत्रम् ।

कवरा, वि (स कवर) चित्र, कल्पाव, शार ।

कवाड़, स पु (स कर्पट >) अवस्कर, तुच्छ
वस्तुमग्न २ व्यर्थकार्यम् ।

कवाड़िया, कवाड़ी, स पु (हि कवाड़)
अवस्वरविक्रयिन्, व्यर्थवस्तुविक्रि (पु) ।

कवाय, स पु (अ) मृष्टमास, शूलिक, शूल्य
मासम् ।

कवाधी, वि (अ कवाड >) मासमशक
२ मासविकेत् ।

कवाहत, स स्त्री (अ) अशुभ, कष्ट, विघ्न,
अनिष्टम् ।

कवित-त्त, सं पु (सं कविता >) हिन्दी
काव्यस्य छन्दोभेद २ काव्य, कविता ।

कवीला, सं पु (ला) पत्नी २ परिवार
३ वंश, गोत्रम् ।

कवूतर, स पु (फा) कपोत, कलरक,
पारावत, छेद्य, रज्जुचन ।

—खाना, स पु, कपोतविलम् २ (छपी)
कपोतपालिका, विटक ।

कव्ज, स स्त्री (अ) मलानरोध, विडम्भ,
बदकोष्ठ ।

—कुवा, वि, वि-, रचक, सारक । सं पु,
रचक, सारकम् ।

कवजा, स पु (अ) स्वामित्व, अधिकार
२ मुष्टि (स्त्री), वारग ३ द्वारसधि ।

कभी, कि वि (हि कव + डी) कदाचिद्,
कदापि, कस्मिंश्चित् काले, कश्चित् २ पुरा,
प्राक्, पक्वदा ।

—का, कि वि, चिरात्, चिरम् ।

—न कभी, कि वि, कदाचिन्, अथ शो वा ।

कमडल, स पु (स कमडल) बरक,
करक -क, कुडी ।

कमद, स स्त्री (फा) गुण-रञ्जु, -पाश -
वधनम् २ गुण-रञ्जु, -अधिरोहणी-निधयणी ।

कम, वि (फा) अल्प, दहर, दध्न, स्तोक,
लघु, हल २ ऊन, न्यून, अल्पतर, अल्पीयस्,
लघीयस, क्षोदीयस् । कि वि अल्प, स्तोक,
ईषद्, किंचिद्, मन्दाक् ।

—उन्न, वि, अल्पवयरक, बाल ।

—कौमत, वि अल्पमूल्य, सुलकेय ।

—सर्च, वि, अल्प-मित, व्यधिन् २ कृपण ।

—जोर, वि, अल्प, बल-शक्ति, दुर्बल ।

—खट्, वि, हत-मन्द, -भाग्य, दुर्दैव ।

—सर्च वाला मशीन, मु, अल्पव्ययेन गौरव
लाभ ।

—सुनवा, मु, उच्चं सु (भ्वा प अ) ।

कमची, स स्त्री (तु) वचिका, वेणुशाखा,
मुचिका २ नम्यतनुयष्टि (स्त्री) ।

कमठ, सं पु (स) कूर्म, कच्छप ।

कमनीय, वि (सं) सुन्दर, मनोहर, रम्य ।

कमनैत, सं पु (फा कमान >) धनुर्धारिन् ।

कमनैती, स खी (हि कमनैत) धनुर्विद्या ।
 कमर, स खी (फा) कटो-टि (खी),
 काचीपद, मध्य मध्य, मध्याह्न, वल्लभ-न ।
 —कस, स पु पलाशनिर्वास ।
 —यद्, स पु मेरुता रक्षना ।
 —कमना वा वीथिना, मु परिकर बध्
 (क प अ) ।
 —दूटना, मु, इतोत्साह (वि) भू ।
 —मीथी करना, मु विश्राम् (दि प से)
 तविश (तु र अ) ।
 कर्मर, स पु (स कर्मर) (वृत्त)
 कर्मर कर्मर, मुदगर । (फल) कर्म
 रग इ ।
 कर्मरा, स पु (ले हैमरा) प्रकोष्ठ शाला,
 कक्षा २ छायाचित्रारोपकयम आलोकनलय
 यन्त्रम् ।
 कर्मर का—, गमांगार, अतकोष्ठ ।
 कर्मर का—, शिरोरु, चद्रशाला ।
 कर्मरी-ली, स खी (स कर्मर >) वृत्त,
 कवल रत्नक-आविक, कवलकम् ।
 कर्मराल, वि (अ) धागिज, धागिज्य सम्म
 भिन् विपयक, नागिजिक ।
 कर्मल, स पु (स न) अज्ज अज्ज अमोज,
 अरवि, कज, नल नलिन, पकज, पकेरह,
 पद्म शत सहस्र पत्रम्, सरसिज सरोज
 सरोरह, मारसम् ।
 —का पीठा, स पु मृणालिनी, पथिनी,
 कमलिनी नलिनी ।
 —गङ्गा, स पु कमलाज वधवीजम् ।
 —डङ्ग, स पु, कमलनाल ।
 —नयन, वि पद्माव वज्रप (-खी खी) ।
 स पु विष्णु २ राम ३ कृष्ण ।
 —नाभ, स पु विष्णु ।
 —नाल, स पु, दे कमलन्द ।
 —नैनी, वि खी कमलाक्षी कजनयनी ।
 —योगि, स पु ब्रह्मन् (पु) ।
 कमला, स खी (स) पद्मा, लक्ष्मी श्री
 (खी) इन्दिरा मा रक्षा, इतिप्रिया
 २ धनम् ३ नारग ४ वरनारी ।
 —पवि, स पु, विष्णु ।
 कमलामन, स पु (स न) पद्मासनम्
 २ (स पु) ब्रह्मन् (पु) ।

कमलाकर, स पु (स) लज्ज, २ 'सरोवर' ।
 कमलासार, वि (स) पद्म जलज, आकार
 सद्गुरु-रूप ।
 कमलाच, वि (स) पद्म, नयन नेत्र ।
 कमलिनी, स खी (स) पद्माकर, पथिनी,
 सकमलो जलाशय २ लघुकर्मलम् ।
 कमाई, स खी (हि कमाना) उपजीविका,
 वृत्ति (खी) २ उपाजत आनयनम् ।
 कमाज, वि (हि कमाना) उप-, भर्त्तक,
 धनसमाहक, २ उद्योगिन्, उद्यमिन् ।
 कमान, स खी (फा) धनुम (न) शरा
 सनम्, चाप ।
 कमानिचा, स पु (फा कमान >) धविन्
 (पु) धनुष्क धनुर्धर ।
 कमाना, कि स (हि काम) उप-, अर्ज
 (चु, भ्वा प से) परिग्रमेण प्राप (स्वा
 उ अ) २ (चमडा इ) उपयोगार्ह विधा
 (जु उ अ) ।
 कमाना, स खी (फा कमान) रिधि-
 स्थापकत्वविशिष्टो यन्त्रायव ।
 कमाल, स पु (अ) नैपुण्य, दक्षत २ विल
 क्षणकृयम् । वि श्रेष्ठ ।
 कमिसनर, स पु (अ) आहुत ।
 कमिसनरी, स खी (अ कमिसनर >)
 प्रहलग ।
 कमी, स खी (फा कम >) कनहा, यूनता,
 अल्पता, अपूर्णता अपर्याप्ता ।
 कमीज, स खी (अ कमीज) चैल, चोल्न,
 उरोवस्त्रम् ।
 कमीना, वि (फा-न) अधम अधम क्षुद्र
 गुच्छ २ दुधुलीन हीन, -वर्ण-जाति ।
 कमीशन, स पु (अ) परार्थ विनय २ आयोग
 २ लघुनभाम ।
 कम्युनिज्म, स पु (अ) साम्यवाद समष्टिवाद ।
 कम्युनिस्ट, स पु (अ) साम्यवादिन्,
 समष्टिवादिन् ।
 कयाम, स पु (अ) निवेश अरविनि (खी),
 विशाग २ निवेशवानम् ।
 कयामत, स खी (अ) प्रलय २ विपत्ति (खी) ।
 करज, स पु (स) पद्मपत्र, रोजन ।
 करड, स पु (म) मधुकोष २ रत्न ३ का
 डव (पक्षी) ।

कर, स पु (सं) हस्त, शय, पचनास, पाणि २ शुट-डा, दुःडा ३ विरण, अशु ४ रानस्व, शुल्ब-क ।

कर, स स्त्री (हि कन्व) शीघ्रा वेदना ० मृगङ्गच्छम् ३ यताक, क्षतचिह्नम् ।

करकट, म ॥ (हि खर+सं कट >) अवस्वर, अवस्तर, अपस्वर, मल, लच्छिटम् ।

करकरा, म पु (स कर्करेडु) सारममेद । २ दे 'पुरदरा' ।

करका, स पु (सं स्त्री) दे 'ओला' ।

करघा, सं पु, दे 'कपा' ।

करछा, स ॥ (सं करछव >) 'करछी' के वाचक शब्दों के पूर्व 'वृहत्' लगाएँ ।

करछी, स स्त्री (हि करछा) कबी-वि (स्त्री), खजि (जा) का, खनायिका, दबी, शबिरा, छट्टे पूँ (स्त्री), पायिका, दाहस्तक ।

करज, स पु (स) १ नख २ अङ्गुली ३ करन ।

करट, म पु (स) बाह, वायस ० गनगण्ड ३ नाग्निक ४ निन्द्यजीवनम् ।

करटक, स पु (स) कायस, काव २ चौथे विज्ञानप्रदर्शनक आकाशविशेष ।

कररी, स पु (स-टिन्) द्विप, गज, हस्तिन् (पु) ।

करण, स पु (स न) ख, उपस्वर, साधनम् ० कारकभेद (म्वा) ३ अक्ष, शृङ्ग ४ इन्द्रियम् ५ देह ६ जिवा, कार्यम् ७ स्थानम् ।

करणीय, वि (स) कर्तव्य, अनुष्ठेय, निष्पाद्य, विधय, मत्पादनीय ।

करनय, स पु (स कर्तव्यम्) कर्मन् (न), वाय हयम् २ कला, कौशल, शिल्पम् ।

करनी, वि, (हि करनव) कुशल, दक्ष, सुक्तिम् ० कर्मट ३ ण्डनालिक ।

करनल, म पु (स पु न) दे 'हथली' ।

करनाल, म पु (स न) वायभेद, करतानी ० करतल्लनि (पु) ३ दे 'होश' ।

करनी, म स्त्री (म कृति >) सुवर्णकृत्रिम वस्त्र, मृत्पात्र ।

करनून, स स्त्री (स कर्तव्यम्) कृत्य, कर्मन् (न) ० गुण, कला ३ मुकर्मन् ।

करद, वि (स) कर-वलि-रानस्व-शुल्ब, द-प्रद-दायक-दानु २ अधान, परवश ३ शरणदायक ।

करधनी, स स्त्री (म कृतिधानी >) मेखला, रशना, काशी, सारसनम् ।

करनपुल, स पु (स कर्णपुलम् >) कर्णिका, तान्पन, उटम, कर्णावस ।

करना, स पु (म कर्ण) सुदर्शन, श्वेतपुको वृक्षभेद ।

करना, स पु (स कर्ण) बृहन्नवीरभेद, पञ्चवीर । (पञ्च) पर्वत वीरम् ।

करना, वि स (स करणम्) कृ (स उ अ), निषद्-निर्वह-निर्वह-साधु (प्र), विधा (तु उ अ), अनुष्ठान-प्रणी (म्वा प अ), आचर (म्वा प ॥) ।

स पु तथा भाव, करण, निष्पादन, मत्पादन निर्वर्तन, साधन, विधान, अनुष्ठान, आचरणम् । —योग्य, वि नि पाच, विवय, सपाच, कार्य कर्तव्य, आचरणीय ।

—बाला, स पु कर्त कारक, विधान, मत्पादक, निष्पादक अनुष्ठान ।

किया हुआ, वि, कृत्, अनुष्ठित, निष्पादित विहित ।

करमाश्री, म पु (हि करमाश्व) कर्ण टपानवास्तव्य २ ण्डनालिक ।

करनी, मे स्त्री (हि करना) कृति (स्त्री) कर्मन् (न), काय, कृत्यम् २ अन्वेषिका ।

करनल, स पु (= बालोनल) ब्यूहटल, पति अन्वेष ।

करम, स पु (स) मणिविधान कृतिपापघन करस्य बहिर्भाग २ गनशाव ३ लट्टशाव ४ वगी-दि (स्त्री) ।

करमोल, स पु (स) गनपुण्डो । वि, वामान (पु) वामान् (स्त्री) ।

करम, स पु (म कर्मन्) काय, देश २ भाग्य, देवम् ।

करमवज्ञा, स ॥ (अ करम+हि कला) दे 'दद मोमी' ।

करमाली, म पु (स-जिन्) सूर्य मानु । करवट, म स्त्री (स करवर्त) पाथे पादव, भाग्य, पञ्च ० वामपादनी दक्षिणपादनी वा शयनम् ।

करवट, स पु (स करपत्रम्) ककच, पत्र
दारक ।

—लेना, सु, मोक्षमाय ककचेन स्वर्गार्थं च
दनम् ।

करवाल, स का (स पु) खड्ग बसि ।

करमा, स पु (का) चन्कार, वैयुक्त,
अश्रय ।

करहट्ट-टक स पु (स) कनकनूटम् २ कन
लान्त्थ छत्रम् ३ मन्त्रम् ।

कराना, क प्र (हि करमा) 'करना' के
धातुर्भेदे प्र रूप ।

करामन, स का (अ करानम् का वटु)
दे करमा ।

करामानी, वि (अ करानम्) लोकोपर
चन्कारिन् कश्चिद् ।

करार, स पु (अ) शान्ति (की), दान
२ पैय सौदम् ।

करार, स पु (अ करार) दे 'प्रतिज्ञा' ।

करारा, स पु (अ करार) नपा नखं
पाकवा तम् २ उच्छ्रित्वीरम् ३ छिद्र
पथम् ।

करारा, वि (स करार) दृढ, घन, सख्य
२ मूर, बाण ३ सुक, सुक ४ तीक्ष्ण
शय ५ दृढता, वज्रह ६, मयूर, मित्र ।

कराल, वि (स) भाषा मदकर, घोर,
दारुण ।

कराला, स की (स) भीष्माकारा दुर्गा ।

कराह, स की (दे कराहना) आपि पीडा,
ध्वनि (पु) दुष्ट-स्वर ।

कराहत, स की (अ) दृष्टा दुष्टता ।

कराहना, कि अ (हि कराना + अह) अत्र
मह दुष्टत सत् (स्वा प से) ।

करिणी, स की (स) इतिनी ।

करी, स पु (स करिन्) गज इतिन् ।

करीना, स पु (अ) दुन्दुब्य, पञ्चत (की),
सौवर्ण ।

करीब, कि वि (अ) समीप, निकट २ प्रायः,
प्राये ।

करीर, स पु (स-र) तीक्ष्णकटक, ककर,
गूदक, ककच ।

करा, वि (स) दण्ड, कण्ट २ दुष्टानक ।

स पु रसविद्येय (मा) २ परनेष्ट
३ कला, अनुकला ।

करुणा, स की (स) अनुकला दया व्या,
२ द्विद्विद्येय दुःखम् ।

—निधान वि (स) कर्मान्न दानम्,
कृता-कर्म-दया, विधि-संग्रह ।

करेणु, स पु की (स पु का) इतिन्
२ इतिनी ।

करेला, स पु (स करवे) कटुर, कड
कटुक, कठिन्क ।

करैत, स इ (हि काला) नाशक,
मातृनाशि, कामनादि ।

करोड, वि (स की टि का) शतम् ।
स पु, वज्राकरा दण्ड (१०००००००) ।

करोली, स की (स करवाने) घुरा घुरिका,
आम्बुत्रिका ।

कर्क, स पु (स) ककट, कुलीर २ रादि
विशेष ३ अश्व ४ कुतुर ।

कर्कश, वि (स) कठोर, कष्ट । २, तात्र,
प्रबल ३ सक्त ।

कर्कशा, वि स (स) कर्क-विश्व-त्रिधा
(नारी) ।

कर्षा, स पु (अ कारणाह = कार्यत्वन) २
वन्द्यवापानार्थ २ पञ्चारा देन-वाप
दह-अवयव ३ पयिर्ना-रम् ।

कर्ष, स पु (अ) दे 'कर्' ।

कर्ष, स पु (अ) भव-न, भव, मोक्ष,
भवन (अ) मुक्त (की), शुद्धम् ।
२ अराज, वायुवेग, कानीन ३ दे
'कर्ष' ।

—कटु, वि (स) विस्तर, ककट, दुःशब्द ।

—धार, स पु (स) नाविक, शीतार्ह
२ कान्ति मुख्यनाविक ।

—परपर, स की (स) धुविरपर ।

—पु, स पु (स न) सुदिनकम् ।

—पुर, स पु (स न) बन्धनारी (मा-पुर) ।

—पूर, स पु (स) अ-स २ नालेयम् ।

—फूल, स पु (स-दृढम्) कान्ति,
उत्तम, सन्तत्र, कर्षम् ।

—पेष, स इ (स) संस्कारम् ।

कर्णाट, स पु (स) दक्षिणरते प्राग्विद्यम् ।

कणादी, स खी (सं) राशिणीभेद २ कणाट
देशस्य भाषा नारी वा ।

कर्णिका, ॥ खी (सं) तादक, दतपत्र, कर्णा
भूषणभेद २ शरमध्याख्यौ ३ लेखनी ।

कर्त्तन, स ॥ (सं न) (कर्त्त या) छेदन,
लवन, कृतनम् २ तन्तुसर्जनम् ।

कर्त्तनी, स खी (सं) दे 'कनरनी' ।

कर्त्तरी, स खी (सं) दे 'कनरनी' २ दे
'छुरा' ।

कर्त्तव्य, स पु (सं न) धर्म, विधेय, अनुष्ठे
यम् २ दे 'करणीय' ।

—विमूढ, वि (सं) कर्त्तव्यमभात ।

कर्त्ता, स पु (सं कर्त्त) विधातु, स्रष्टु, अनुष्ठान
२ प्रभु, ईश्वर ।

कर्त्तार, स पु (सं कर्त्तार >) परमेश्वर,
विधातु, विश्वसृज् ।

कर्त्तृत्व, स पु (सं न) कारकावन् १ कर्त्तृधर्म ।

कर्त्तृत्व, स पु (सं) चिकित्सा, पक २ पाप
१ छाया ।

कर्पट, स पु (सं पु न) चौर, पटखण्ड,
पटखर जीवत्वम् ।

कर्पूर, स पु (सं) दे 'कपूर' ।

कर्पूर, स पु (सं न) स्वर्णम् २ धुस्तरुवृक्ष
१ जलम् । (सं पु) राक्षस २ पाप
१ कपूर । वि नानावर्ण, चित्र, कन्माष,
शबल ।

कर्म, स ॥ (सं कर्मन् न) कार्य, कर्त्तव्य,
क्रिया, कृति (खी), प्रवृत्ति (खी) २ दैव
भाग्यम् ३ द्वितीय वारकम् (व्या) ।

—काष्ठ, स पु (सं न) धर्मकृत्य, वशादि
कार्यम् २ कर्मविधादक शास्त्रम् ।

—कार, स पु (सं) लोदकार २ स्वर्णकार
३ सेवक ।

—चारी, स पु (सं-रिन्) राज, -भृत्य -
पुरुष, अधिकारिन् २ कार्यकर्त्ता ।

—भोग, स ॥ (सं) कर्मकलम् २ पूर्वकर्मण
परिणाम ।

—योग, ॥ पु (सं) चित्तशुद्धिकर वैदिक
कर्मन् (न) २ निष्कामकर्मणाऽऽत्मज्ञानम् ।

—देव, स खी (सं-रेखा) भाग्यांका
२ भार्गव, देवम् ।

—विपाक, स पु (सं) पूर्वकर्मणां फल, कर्म
परिणाम ।

—शील, वि (सं) कर्मवत् २ उद्योगिन्,
उद्यमिन् ।

—सन्यास, स पु (सं) कर्मत्याग २ कर्म
फलत्याग ।

—हीन, वि (सं) मद-इत, -भाग्य, दुर्दैव
२ शास्त्रोक्तकर्मणाम् अकर्त्तृ ।

—जागना, सु, भाग्य-पुण्य, -उदय ।

—कूटना, सु कर्मदुर्विपाक, भाग्यविपर्यय ।

कर्मठ, वि (सं) कर्मण्य, कर्मशील, उद्यमिन् ।

कर्मण्य, वि (सं) दे 'कर्मठ' ।

कर्मधारय, स पु (सं) समानाधिकरण
सत्पुरुषसमास ।

कर्मिष्ठ, वि (सं) कार्यवशल २ क्रियावत् ।

कर्मि, वि (सं कर्मिन्) कार्यकर्त्ता २ फलेच्छया
कर्मसंपादक ।

कर्मिन्द्रिय, स खी (सं न) क्रियासाधक
करणम् । (हाथ, पाँव आदि) ।

कर्षक, स पु (सं) कर्षणकर २ क्षेपिन्,
क्षेत्राजीव ।

कर्षण, स पु (सं न) आकर्ष, आकर्षणम्
२ भूमिदारणम् ३ इषि (खी) ।

कर्षणी, दे 'क्षिती' ।

कर्षी, वि (सं) भा, -कर्षक-कापिन् । स पु,
हालिक, हल, बाह, हर, लागलिन् (पु) ।

कलक, स पु (सं) दोष, दूषण, छिद्रम्
२ लङ्घन, अपवाद ३ लक्षण, चिह्नम् ।

कलकित, वि (सं) दूषित, निदित, आक्षिप्त,
लाङ्घित ।

कलकी, वि (सं-विन्) दे 'कलकित' ।

कलकी, स पु (सं कल्कि) विष्णोर्वा
भावतार ।

कलहर, स पु (अ कल्लहर) पचाग, तिथिपत्रम् ।

कलहर, स पु (अ) ववनभिषुभेद २ वान
रादिनान्वित् ।

कल, स पु (सं) मधुराष्टुटध्वनि । वि,
मनोध, अभिराम २ मधुर, कोमल ।

कल, स खी (सं कल्य >) स्वारध्यम्
२ सुखम् ३ मतोष ।

कल, स खी (सं कल्य) उषाय, युति (खी)
२ यत्र, उपकरणम् ३ यत्रावयन ।

कल, कि वि (सं वल्यन्) अ (अन्व),
आतामिदिनम् । २ आतामिकाळे ३ छा
(अन्व), गतदिनम् ।

—का, वि अस्तन (-नी स्त्री), अस्त्य
(-या स्त्री) २ अस्तन, अस्त्य ।

कलई, स स्त्री (अ) रग, वग, वस्तीरम्
२ रग-वग, -लेप ३ स्वर्णादिधातुमिल्लेप
४ क्रांतिकरो लेप ५ सुधालेप ६ आह्वर ।

—शर, स पु (फा) पातु सुधा-लेपक ।

—मुलना, मु, गोप्य रहस्य वा आविर्भू ।

कलञ्ज, वि (स) प्रियवद, सुस्वर, मधुरभाषिन्
स पु कोकिल २ करोन ३ हस ।

कलत्र, स पु (अ) दुःख, शोच ।

कलकल, स पु (स) निपराधीना शब्द
२ कोलाहल ३ विवाद ।

कलगी, स स्त्री (हु) कम्, पिष्टम् २ चूकाल
कारभेद ३ सुकुन्त्या सुपक्षा ४ मवन
शृगम् ।

कलत्र, स पु (स न) पत्नी, भार्या ।

कलदार, स पु (हि कल) यत्ररचिग कल्पकम्
२ यत्रतुल ।

कलधौत, स पु (स न) सुवर्णम् २ रजतम् ।

कलन, स पु (स न) उपादन, रचन,
जननम् २ ग्रहणम् ३ धारण परिधानम्
४ आचरणम् ५ सन्ध ६ प्राप्त, ववल
७ गणिताक्रया ८ वेतस वैत्र ।

कल्प, स पु (स कल्प >) मड, मडम्
२ देश, राग-रग ३ दे 'कल्प' ।

कल्पना, कि अ (सं कल्पान् >) शुक्
(भ्वा ण से) धीर् छिद-तप-दु डिश
(कर्म) व्यथ-उत्कट् (भ्वा ला से), दुर्म
तापते (ना धा) उल्लुक् (वि) + भू ।

कल्पाना, कि प्र, 'कल्पना' के धातुओं के
प्रे रूप ।

कल्फ, स पु (स कल्प >) मड, मडम् ।

—लगाना, कि स, मटेनलिप (॥ प अ) ।

कलवल, स पु (स कल वल्न्) उपाय,
युक्ति (स्त्री) ।

कलवल, स पु (अनु) कोलाहल, कलकल ।

कलवृत्त, स पु (फा कालवृत्त) आवार
साधनम् २ आधार, उपष्टम्भ ।

कलभ, स पु (स) गजशायक, उष्ट्रायक ।

कलम, सं पु स्त्री (सं पु) लेखनी, अक्षर
तुलिका, वर्णिका, वर्णमातृ (स्त्री) २ अन्यत्रा
रोपणाय कृत्ता शाखा ३ अल्पवृक्षे निवेशिता
शाखा ४ गढरोमाणि (न बहु) ५ तुलिका,
वर्णिका ६ तक्षणसाधनम् ।

—धान, स पु, कलम-लेखनी, धानम् ।

—लगाना, मु, वृक्षान्तरे देहातरे वा निवेश
(प्रे) ।

कलमलाना, कि अ, दे० 'कुलकुलाना' ।

कलमा, स पु (अ) यवनधर्ममूलमत्र
२ वाक्यम् ३ शुब्द ।

—यदना, मु यवनी भू ।

कलमी, वि (फा) हन्त-लिखित २ वृक्षातरे
आरोपित ३ स्फटिकरूपेण घनीभूत ।

—जाम, स पु (वेब) राजाज, नृपवहम् ।
(फल) राजाजम् ।

—सौरा, स पु, घनीकृतो यवहार ।

कलमुहूर्त, वि (स कलमुस >) कृष्ण, -वदन-
भास्य २ ललित, कल्पित ।

कलरव, स पु (म) मधुरमदध्वनि, कल,-
स्वन-रतम् । २ करोत ३ कोकिल ।

कलल, स पु (स पु न) भ्रूण, गर्भ, पुत्रन,
गमस्थशिशो प्रयमावयव । २ गर्भाशय ।

कलवरिया, स स्त्री (हि कलवार) सुरालय,
मदिरालय, यजा ।

कलवार, स पु (स कल्पपाल) शौडिक,
सुराजीविन्, सुराकार २ सुराधिकारी उप
जाति (स्त्री) ।

कलविक, स पु (स) गृहनीड, चित्रपृष्ठ,
चटक २ चिह्नम् ।

कलश, स पु (॥) कलश शी, कलस-स्त्री-
सम्, घट, कुट, निप २ शिखा, शृगम् ।

कलसा, स पु, दे 'कलश' ।

कलहस, स पु (स) राजहस, वादव,
कलनाड, मराल २ मृगोरन ३ परमेश्वर ।
कलह, स पु (स) कलि, विवाद, द्वन्द,
नाम्पुडम्, विस्वाद ।

—प्रिय, वि (स) विवादप्रिय, कलहकारिन्,
कलहन् ।

कला, स स्त्री (स) अक्ष, भाग २ वादस्य
षोडशांश ३ सूर्यस्य द्वादशांश ४ अग्नि
मदलस्य दशांश ५ विशद्वगाष्टमक समय

विभाग ६ शिल्प, शिल्पविद्या ७ कौशल,
निपुणता ८ शरीरस्य षोडशाध्यात्मविभाग
(=५ शानेन्द्रियो, ६ कर्मेन्द्रिय, ५ प्राण, मन)
९ नृत्यभेद १० मात्रा (छन्द) ११ विभूति
(स्त्री) १२ शोभा, प्रभा १३ कौतुक, लोला
१४ छल, कपटम् १५ मिथ, न्याज
१६ युक्ति (स्त्री), उपाय १७ नटलोका
भेद १८ यन्त्रम् १९ प्रकृति (स्त्री, जैन),
२० वर्णवृत्तभेद ।

—कद, सं पु (फा) मिष्टान्नभेद ।

—कौशल, स पु (स न) कला, शिल्पम्
२ कलापाठवम् ।

—निधि, स पु (सं) कलाधर, चन्द्र ।

—बाजी, स स्त्री (सं + फा) विपर्यस्त
प्लुति (स्त्री) ।

—वत, सं पु (सं कलावत्) सगीतकुशल,
गायक २ रञ्जुनर्तक । वि, कलाकुशल ।

कलाई, स स्त्री (सं कलाची) कलाधिका,
प्रकोष्ठ, मणिवय ।

कलाप, सं पु (स) समूह, गण, निरुद्ध
१ जनसमूह, लोचनविह्व ३ इपुधि ४ चन्द्र
५ कटिबंध, मेढराला ६ गुच्छ ७ मयूर
पिच्छम् ८ आभूषणम् ।

कलापिनी, स स्त्री (सं) मयूरी २ राजि
(स्त्री) ।

कलापी, स पु (सं-पिन्) मयूर, वहिन्
२ कोकिल । वि, कूलमृड ।

कलावत्, सं पु (सु कलावत्) कीर्णवस्तु
व्यावर्तित सुवर्ण-रजत, -तार ।

कलाम, स पु (अ) वचन, उक्ति (स्त्री)
२ वार्तालाप ३ प्रतिष्ठा ४ आक्षेप ।

कलार-ल, सं पु, दे 'कलवार' ।

कलारिन, स स्त्री (दि कलार) शौण्डिकी,
मयविकत्री ।

कलावरी, वि (स) कला-शिल्प, -शा वेशी,
शिल्पिनी २ सुन्दरी ।

कलिंग, स पु (सं-गा) प्रान्तविशेष
(=उड़ीसा) १ हृदयव-कुटन, -वृक्ष ३ दे
'तरबूज' । वि चतुर, धूर्त ।

कलिंगदा, स पु रागभेद ।

~ सं पु (सं) पर्वतविशेष २ सूर्य ।

~ स स्त्री (सं) यमुना नालिदी ।

कलि, सं पु (सं) चतुर्थ-तुरीय-अत्य,
युगम् (यद् ४३२००० वर्षों का होता है)
२ कलह, विवाद ३ युद्धम् ४ शूरा ५ कलेश
६ पापम् ७ शिव ८ इपुधि ।

—कर्म, सं पु (सं-कर्मन् न) सधाम ।

—काल, सं पु (सं) कलियुगम् ।

कलिका, सं स्त्री (सं) दे 'कली' ।

कलित, वि (सं) क्षान्त, विदित २ प्रसिद्ध
३ प्राप्त ४ शोभित ५ सुन्दर ।

कलियाना, कि अ (सं कली >) न्युट् (तु प से)
विकल्-पुल् (भा प से) ।

कली, सं स्त्री (सं) कलिका, कोरक-क,
मुकुल-लं, कुहमल, कोर-व २ त्रिकोणी
वक्रपत्र ३ धूमपानयन्त्राधीभाग ।

दिल की कली खिलना, मु, मुद् (भा आ से) ।

कली, सं स्त्री (अ कलई) चूर्णजलम्
२ तप्तचूर्णम् ।

कलील, वि (अ) न्यून, स्तोक २ लघु, ह्रस्व ।

कलुप, सं पु (सं न) मल, मालिन्यम्
२ पाप, दोष ३ क्रोध ४ महिष ।

वि, मलिन, पकिल २ निदित ३ पापिन् ।

कलुपित, वि (सं) पकिल, मलीमस २ अप
विष, अमेध्य ३ आतुर ४ कृष्ण, काल ।

कल्टा, वि (दि काला) काल, कृष्ण, श्याम ।

काला—, वि अति, -कृष्ण-काल ।

कलेजा, सं पु (सं कालेयम्) यकृद् (न),
काण्डवृक्ष, कालकम् २ हृदय, हृद् (न),
३ वरस्, वधस्, कोष्ठ (सब न) ४ साहम,
उत्साह, वीर्यम् ।

—कौपना, मु, श्री (जु प अ), उद्दिष्ट
(तु आ से) स वि, वस्तु (दि प से) ।

—चलनी होना, मु, हृदय व्यथ (कर्म) ।

—टूक टूक होना, मु, हृदय खुट् (तु प से) ।

—घाम कर रह जाना, मु, सनाप स-नि,
शम् (भा प अ) ।

—घड़कना, मु, (अयादिभि) हृदय वद्
(भा आ से) ।

—फटना, मु, (शोकमात्सर्वादिभि) हृदय
विद् (कर्म) ।

—से छगाना, मु, आलिन् (भा प से) ।

कलेवर, स पु (सं-न) शरीर, देह ।

—बदलना, कि अ, पुन बन् (दि आ से)
 २ नववस्त्राणि परिधा (जु उ अ) ।
 कलेवा, सं पु (सं कल्पवर्त) प्रातराश ,
 प्रातर्भोजन, कल्पनम्बि (खी), जलपानम् ।
 कलोळ, सं खी (सं कलोण >) क्रीडा,
 खला, केलि (पु खी), लीला, विलास ।
 कलौजी, स खी (स कालाजानी) पृथुका,
 दिवा, काला ।
 कलरु, सं पु (सं ॥ न) घृततैलादिशेष
 २ दम ३ विद्या ४ किट्टम् ५ पापम्
 ६ वस्तुन चूर्णम् ७ अवलेह ।
 कल्कि, स पु (सं) किणोर्दरमावतार ।
 कल्प, स पु (स) धर्मोत्पत्तिविधायको वेदान्त-
 भेद २ ब्रह्मादिनम्, देवसहस्रयुगम् (=
 ४३००००००० वर्ष) ३ महाप्रलय, सृष्टि
 संहार ४ विधान, कृत्यम् ५ प्रातःकाल
 ६ रोगनिवृत्तिपुक्ति (खी) ७ प्रकरण,
 विभाग ८ विकल्प, पक्ष ९ सन्देश
 १० निश्चय ११ उद्देश । वि, तुल्य, सद्दृश ।
 —तल, स पु (स) कल्प, वृक्ष-पादप द्रुम ।
 कल्पना, सं खी (सं) उद्भाषना-न, कल्पन,
 मन कल्पना २ रचना, विधानम् ३ प्रसाधन,
 मदनम् ४ तर्ज, ऊहा ५ अध्यारोप ६ मन
 सजीकरण ।
 —करना, कि अ, उग्रप्रक्ष ऊह् (भ्वा आ
 से), तर्क (चु), मनसा कल्प (प्रे),
 सभू (प्रे) ।
 कल्पित, वि, (सं) रचित, विहित २ सुव्यव-
 स्थित ३ वि-म भावित ४ उद्भाषित,
 वासना भावना-सृष्ट, मानस, काल्पनिक
 ५ अस्तित्व, निर्मूल ६ वृत्तिम, कृतक ।
 कल्पप, स पु (सं न) अध, पापम् २ मल
 माहि-यम् ।
 कल्प, स पु (स न) प्रत्यूष, प्रभातम्
 २ मधु (न) ३ सुरा ४ ख (अव्य),
 आगामिदिनम् । वि, स्वस्थ, निरामय २ मूक
 बधिर ।
 कल्या, स खी (स) मद्यम्, सुरा २ कल्याण
 स्वस्ति, -वचन वच (न), अभिनन्दनम् ।
 कल्याण, सं पु (सं न) सुख, भगल, हित,
 शिव, कुशल, क्षेम, भद्र, सुस्थिति (खी)

२ सुवर्णम् ३ रागभेद । वि शिव, भगल,
 शकर ।
 —कारी, वि (सं रिन्) सुख भगल हित,
 कारक ।
 कल्याणी, वि खी (सं) भगलकारिणी,
 सुन्दरी । स खी (सं) मौ (खी)
 २ माषपर्णी ।
 कल्याश, सं पु (सं) प्रातराश, कल्पवर्त,
 जलपानम् ।
 कल्ल, वि (सं) बधिर, अकूर्ण ।
 कल्लर, सं पु (देश) ऊपर-र, वस्या
 भूमि (खी) ।
 कल्लोच्च, वि दुर्धृष्ट, दुराचारिन् २ क्षत्रि,
 निर्धन ।
 कल्ला, सं पु (स करीर-र >) प्रतौह,
 किमलय, उद्भिद् ।
 कल्लोल, सं पु (स) महातरंग, उल्लोल,
 महोर्मि २ दे 'कलोल' ।
 कल्लोहिनी, सं खी (सं) नदी, पटिनी ।
 कवच, सं पु (सं पु न) सक्ताइ, कचुक,
 वर्मन् (न), तनु-वार-व्राण-व्रन् २ मेरी,
 दुर्धुमि ३ रक्षाकरव ।
 —पत्र, सं पु (सं न) भूर्जपत्रम् ।
 कवर, सं पु (स पु खी न) देश, वध
 पाश २ प्राप्त, कवल, पिण्ड ।
 कवरी, सं खी (सं) देशविन्यास, बैनीणि
 (खी), धमिल्ल २ वनतुलसी ।
 कवर्ग, स पु (सं) वकारादिवर्णपञ्चकम् ।
 कवल, स पु (सं) प्राप्त, पिण्ड इन् ।
 कवलगद्दा, स पु (स कमलप्रधि >)
 कमलाक्ष, पञ्चवीनम् ।
 कवलित, वि (स) भक्षित, निगीर्ण, लुप्त
 २ गृहीत, आदत्त ।
 कवायद, सं ॥ (अ 'कायदा' का बहु)
 नियमा विषय (बहु) २ व्यायाम ३ सेना
 -व्यायाम ४ व्याकरणनियमा ।
 कवि, सं पु (सं) काव्यकर, मूरि, सत्तार
 २ ऋषि ३ सूर्य ४ ब्रह्मन् (पु) ।
 —राज, स पु (स) कवीन्द्र, महाकवि
 २ वैतालिक ३ वैद्योपाधि ।
 कविता, सं खी (सं) काव्य, काव्यप्रबन्ध,

काव्यबध २ काव्यरचना, कवित्व, कविता कला ।

कवित्त, स पु (सं कवित्वम् >) काव्य कविता २ हिंदीछन्दोभेद ।

कविच, स ॥ (॥ न) काव्यरचनाशक्ति (स्त्री) २ काव्यगुण ।

कर्कोदु, स पु (स) वाल्मीकि, प्राचिनस, कविज्येष्ठ ।

कर्वाड, वि (स) कविज्येष्ठ, ज्येष्ठकवि, कविराज ।

कशा, स पु, दे 'कशा' ।

कशमकश, स स्त्री (फा) सवर्ष, प्रतिस्पर्धा ० जनोप ३ सहाय ।

कशा, स स्त्री (स) कषा प्रतोट, प्रति स्पर्धा -व ।

कशिदा, स स्त्री (फा) दे 'आकर्षण' ।

कशीदा, स पु (फा) मूची, शिल्प-कर्मन् (न) ।

—काकुना, कि स सूच्या पुष्पादिक चिन् (जु) ।

करी, स स्त्री (फा) दे 'नीका' ।

कर्मल, स पु (स न) मोह, मूच्छा २ थाप अष्टम् । कि मलिन, आविल ।

कर्मनीर, स पु (स) कादमीरदेश शाख शिल्पिन् ।

कप, स ॥ (॥) कषपट्टिका, निकष निकष, कपल पाषाण २ द्वाण णी ३ परीक्षण, परीक्षा ।

कपण, स पु (स न) निकषेण स्वर्णादिकस्य परीक्षणम् ।

कपाय, वि (स) कुवर, कुवर २ सुवास सुगन्धि ३ रत्नित, रत्नवत् ४ गेरिकर्ण रक्तवाम । स पु गोव २ बाघ ३ कुवर, रत्नभेद ।

कष्ट, स पु (स न) दुःख, हेतु, पीडा व्याधा ३ आपद्, विपद्, आपत्ति, विपत्ति (सव स्त्री) ।

—साध्य, वि (स) दुःसाध्य, दुष्कर, कष्ट ।

कस, स पु (स वध) निकष कषपट्टिका २ परीक्षणम् २ खड्गचुचनीयता ।

न, स पु (हि वमना) बल, शक्ति (स्त्री) निग्रह, निरोध ३ विग्रह ।

कस, सं पु (फा) नर, जन व्यक्ति (स्त्री) ।

की—, कि वि, प्रतिपुरुष, प्रतिजनम् ।

के—, वि, असहाय, अनाथ ।

कसक, स स्त्री (स कष = हिंसा >) वेदना, पीडा, व्यथा २ चिर, वैर विरोध ३ अभि लाष ४ सद्दानुमति (स्त्री) ।

—निकालना, कि स, चिरवैर शुष् (पे) ।

कसरुना, कि अ (हि वमक) न्यथ (भवा आ से) पीट (कर्म) ।

कसरकुट, स पु दे 'काँसा' ।

कमना, कि स (स कर्मणम्) इदीठ नियम् (भवा प अ) द्रव्यपति (न धा) २ कप् (म् प अ) ३ पीट (जु) ४ परीक्षा (भवा आ से) ५ सज्जीठ ६ मूल्य वृष (मे) ।

कि अ इदीभू, नियम् (कर्म) २ वध, नियन् (कर्म) ३ पिदीभू ।

स पु, इदीकरण, नियमनम् २ वधनम् ३ पीडनम् ४ परीक्षणम् ५ सज्जीकरणम् ।

कसनी, स स्त्री (हि कसना) इदीकरण नियमन-रज्जु (स्त्री) २ भगिका ३ नियम ४ परीक्षा ५ दे 'हमौदी' ।

कमथ, स पु (अ) व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ गणिकावृत्ति (स्त्री) ।

कमथी, ॥ स्त्री (अ कसथ >) वेदया, गणिका २ कुलटा, पुशली ।

कसम, स स्त्री (अ) शपथ, प्रतिज्ञा, समर्थ ।

—दाना, कि अ, शप् (भवा दि व अ) ।

कसमसाना, कि अ, (अनु०) दे 'कुल दानाना' ।

कसमसाहट, स स्त्री, शने सर्वणम् २ द्वाजु लता ।

कसमि (मी) था, अ (अ०) सदापथ, सत्त मय शपथपूर्वम् ।

कसर, स स्त्री (अ) न्यूनता, क्षणता २ अभाव, होनता ३ दोष ४ वैरम् ५ हानि (स्त्री) ।

—निकालना, सु, शक्ति पूर (जु), प्रतिफल दा (जु व अ) ।

कसरत, स स्त्री (अ) बाहुल्य, प्रचुरता, अधिक्यम् २ बहुतरभाग, अधिकमरदा ।

—राय, सं स्त्री, बहुमत, यत्ताधिक्यम् ।
 कसरत, सं स्त्री (अ) व्यायाम, परिश्रम
 २ अभ्यास, कष्टति (स्त्री) ।
 कसरती, वि (अ कसरत) व्यायामिन्,
 दृढांग ।
 कसा, वि (हि कसता) गाढ, दृढ, सुसह्य
 २ दृढवद् ।
 कसाई, सं पु (क कसाव) स्त्री (स्त्री) निब-
 ० मासिक, धातु, विद्युत्किन् । वि, कर,
 निर्दय ।
 कसामा, कि अ (हि काँसा) कषाय-विद्वन्
 स्वाह (वि) भू ।
 कसाहा, सं पु (स कष-दीहा) दुग्ध,
 कष्ट २ कषाव, परि-क्रम ।
 कसाव, सं पु (स कषाव) कषायता,
 कष्टता ।
 कसी, सं स्त्री (स कष-न्) रनित्र,
 दाग-गन् ।
 कसीदा, सं पु, दे 'कसीदा' ।
 कसीस, सं पु (स कानीसन्) शोधन,
 शुद्ध, चातुदेखरन्, लघ्वन् ।
 कसूर, सं पु (अ) अपराध, दोष,
 स्थितिम् ।
 —का, वि, अपराधिन्, दोषिन् ।
 कमेरा, म पु (हि काँसा) करणकार,
 पात्रोद्धार ।
 कसेला, वि (हि कसाव) कषाय, तुल्य, कुवर ।
 कसेली, सं स्त्री (हि कसेला) दे 'मुपारी' ।
 वि स्त्री कषाया, कृष्ण ।
 कसोरा, सं पु (हि काँसा) (कसर-) कष-
 शरव-भाजन पात्रम् । २ मृन्मय मालिक,
 कष- ।
 कसौटी, सं स्त्री (सं कषपट्टी) नि, कष,
 कषपट्टिका, निषेधोद- २ परीक्षा, प्रमाणम् ।
 —पर कसना, सु, परीक्ष (स्वा आ से) ।
 कस्टम, सं पु (अ) रीति (स्त्री), व्यवहार,
 अभ्यास, नियम ।
 कस्टमर, सं पु (अ) ग्राहक, केतु (पु) ।
 कस्टमस, सं पु (अ) शुल्क-क, वर,
 राजस्वम् ।
 कस्तूरी, सं स्त्री (सं) कस्तुरिका, मृग-नाभि-
 मन्, अङ्गना, वातामोदा, कषपट्टि (स्त्री) ।

—कृग, सं पु (सं) कषपट्टम् ।
 कस्वा, सं पु (अ-व) बृहत्-महा-ग्राम,
 स्थु-नगर पुरम् ।
 कहकहा सं पु (अ अनु) कट्टहास, उद्ये
 हाँस, अति प्र-हान ।
 कहत, सं पु (अ) दुर्मित्र, नीचाव, आहा
 रामाव, अकाल ।
 कहना, कि स (सं कथनन्) कथ-वद् मन्
 (स्वा प से), कृ (अ उ), वच् (अ प
 अ) उच्यते-उदीर (प्रे), उर-न्वा, ह (स्वा
 प अ) २ कथ (जु), शस (स्वा प से),
 आचक्ष (अ आ), नि-आ, विद् (प्रे), आ,
 क्वा (अ प अ), कर्-निरूप (जु),
 कभिषा (जु उ अ) ३ आहा (प्रे आहा
 पयति) ४ कष (स्वा आ से) ५ प्रकाश
 (प्रे) ६ उदित (तु प अ) । सं पु,
 कचन, माषा, कथन, व्याहरण, उदीरन्
 २ आहा, आदेश ३ उपदेश, अनुशासनम्
 ४ दे 'कहावत' ।
 —योग्य, वि गदनीय, वदनीय, कथनीय,
 मतिन्य, वक्तव्य ।
 —चाला, म पु, वाचक, कष्ट, वादिन्,
 व्याहृत्य अभिवात् ।
 —हुआ, वि, पठित, उदित, मति, उच,
 कथित, उवाचित, उदीरित ।
 कहने स्त्री, सु, मानमात्रम् ।
 कहर, सं पु (अ) विपत्ति (स्त्री) ।
 कहरबा, सं पु (हि कहार) (१-३) ताल
 गीत-नृत्य-भेद ।
 कहरी, वि (अ० कह) क्रूर, निर्दय,
 अत्याचारिन् ।
 कहलाना, कि प्रे, 'कहना' के पाठों के
 प्रे रूप ।
 कहावा, सं पु (अ) कृष्ण- २ तस्य बीजानि
 (वड) ३ तेज पेयम् ।
 कहाँ, कि वि (सं ऊह) क, कुत्र, कस्मिन्
 स्थाने ।
 —का, वि, वाच्य, कुत्रत्य, विदेशीय ।
 —तक, कि वि, विरुद्ध-रे, कियत-देन,
 विपर्यन्तम् ।
 कहा, सं पु (हि कहना) कथन, वचन,
 उक्ति (स्त्री), आहा, उपदेश ।

कहानी, स स्त्री (स कथानिका) कथा, आ
उपा, व्यानम्, आर्यायिका, वृत्तात ।

कहार, स ॥ [सं क (= जल) + हार]
कहार, जल-उद नाह, दृतिहार ।
२ शिविका नरयान, वाह ३ पात्र, शालक
मार्जक ।

कहावत, स स्त्री (हि कहना) आभाण्,
लोकवाद जनप्रवाद जनोक्ति लोकोक्ति
(स्त्री) ।

कहासुनी, स स्त्री (हि कहना + सुमना)
कलह, विवाद, कायुस्म ।

कहीं, कि वि (हि कहीं) कश्चिद्,
कुत्रापि, कुत्रचित्, यत्रकुत्रचित् । २ न न
कदापि ३ यदि, चेद् ४ अद्यतम् ।

—कहीं, कि दि, कश्चित् कश्चित्, यत्र कुत्र
चिदेव ।

—न कहीं, कि वि, अत्र अन्यत्र वा ।

कौंइयों, वि (अनु कौं) घूर्त्त कितव ।

कौं कौं, सं स्त्री (अनु) काका, शब्द ध्वनि
२ काकरुतम् ।

कौंसा, स स्त्री (स) अभिलाष, कामना ।

कौंस, स स्त्री (स वक्ष) वक्षा, बाहुमुख,
मुजकोटर -र, दोर्मूलम् ।

कौंसभा, कि अ, (अनु) भारवद्भगमलस्था
गणदिकाले पार्जननाद कृ ।

कौंसाही, स स्त्री, * मूल इसनी-हसती, अगार
भानिका प्रकार ।

काग्रैस, स स्त्री (अ) महासभा, प्रतिनिधि
सभा, समाज ।

काचै, स स्त्री (स कश्च) कश्च -कष्ट, कच्छा,
टी टिका २ गुदावर्त, गुदचक्रम् ।

काचै, स ॥ (काच) स्पष्टिक ।

काचन, स पु (स न) स्वर्णम्, शुवर्ण
कनकम् २ धन, संपत्ति (स्त्री) । (स पु)
पुस्तक २ चपक ३ कोविदार ४ वाच
नाम् ।

—मय, वि शुवर्णमय, हेम (-गी स्त्री) ।

काची, स स्त्री (स) रसना, गेरान्ना
२ बाजिबरम् ।

कांजिव (या) रम्, स पुं, (सं बाची)
बांजी, घुरी नगरी ।

काँजी, स स्त्री (स) गृहाम्, रक्षोन, सुवी
राम्भ कावि(जी)वम् ।

काँजी हौद, सं पु (अ काइन हाउस) पत्र-
शाला शुक्ति (स्त्री), गोगृह, अवरोध ।

काँटा, स ॥ (स कटक -वम्) तर-दुम-
नक्ष, शिताय, शन्यम् २ पृष्ठवक्ष, वक्षोरका
३ नख रा, नक्षर -रम् ४ लघु तुला-धट
५ गूल लम् ६ मधुरकुङ्कुटादीना नक्ष ।
७ शुला, -जिहा सूची ८ बटिष्ठ, मत्स्यवेष
नम् ९ मत्स्यास्थि (न) १० पिण्डोद्भेद
११ शूल, शूलरम् १२ घटीसूची १३ कूप
कटव १४ रोमान् ।

—कटकना, सु, (हृदय) कटकमिव व्यम्
(दि प अ)

—होना, सु, अनिष्टा (वि) भू ।

काँट कोना सु पीट् (चु) ।

काँटों में बसीटना, सु, मिथ्यास्तु (अ प
अ) ।

रास्ते में काँटे बिछेरना, सु, विभ्रमयति
(ना था) ।

काँटी, सं स्त्री (हि काँटा) धुदक
२ लघु-शुद्ध, -परणी भावर्षणी ३ शुद्धशुद्ध
४ शुद्धकील ५ वापांसमलम् ।

काह, स पु (स पु न) अध्याय, उच्छ्वास,
प्रवरण, परिच्छेद, स्क्थ २ वि-, भाग,
खट -इम् ३ दण्ड, यष्टि (स्त्री) ४ बाण
५ शरदृष्ट ६ अवसर ७ घृणादिमुच्छ
८ तरस्क्थ ९ समूह १० वशादे पर्वन्
(न) ११ शारा १२ व्यापार घटना
१३ नालम् ।

काँडी, स स्त्री (स काह >) दीर्घ १धृणा-
काष्ठम्, गृहस्थूणा, तुला ।

कात, स पु (स) पति, भर्तृ २ अयस्-
लोह, कान जुवन् ३ वक्ष ४ वसत
५ शीघ्रम् । वि, सत्तोरम्, शोभन् ।

काता, स स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ दयिता,
प्रिया ३ सर्वायुष्टदरी नारी ।

कातार, स पुं (स पुं न) महावन, प्रहृ-
यन्त, अरण्यानी २ वेषु, ईश ३ विर्द,
छिद्रम् ।

कांति, स स्त्री (स) प्रति-दीप्ति -छवि
(स्त्री), भा, अभिस्य २ सौन्दर्य, लाज्यम् ।

कादव, सं पु (सं न) कटाहीमृष्ट-कुन्दमजित,
वन्तु (न) -पदार्थ ।

कादिशीक, वि (स) मय नास, पलायित
अपद्रुत धावित ।

कौप, स खी (स कपा) (१-२) गज
बराह, -दत्त २ वशकाशादीना शलाका
३ कर्णभूषणभेद ।

कौपना, क्रि अ (स सम्पन्नम्) कप् स्पच् वेष्
(स्वा भा से) स्फुर (तु प से) २ विचल्
वेल् (स्वा प से) ३ दे, 'हरना' ।

काबोज, वि (स) कम्बोजदेश, विषयक सम्ब
धिन् । सं पु कम्बोजवासिन । २ कम्बोजाश ।

कौय-कौय, स खी (अनु) द 'कौ कौ'
२ प्रत्यय, विप्रलाप ।

कौवर, स खी दे 'वईनी'

कौम, सं पु (सं काश) अमरपुष्पक, वन
हासन, काशा-शी २ कल्ह ।

कौसा, स पु (स कास्यम्) कस, कसास्त्रि
(न) तात्रार्थम्, दीप्ति पीन, -लोहम्, घोषम् ।

कास्यकार, सं पु (सं) कसकार दे 'कमेरा' ।

का, प्रथ (सं प्रत्य 'क') पष्ठी वा समास
द्वारा । (उ० राम की पुस्तक = रामस्य पुस्तक,
रामपुस्तकम्) ।

काई, स खी (स नावारम्) शैव (वा) ल,
शैव (वा) ल ल, जलनीली २ अयोमलम्
३ मलम् ।

काक, स ॥ (सं) कायस, ध्वञ्ज ।

—काळीय, वि (स) आकस्मिक-यादृच्छिक
(-कौ खी), अनाकत ।

—पक्ष, सं ॥ (स) शिप्य -बक, अलक,
चूर्णकुतरु वैशकल्प ।

—पद्, स पु (सं न) इस्तलेषु उज्जित
वर्णवोनकचिह्नम् (= ८) ।

—वन्ध्या, स खी (स) एकापत्यजननी ।

काक, सं पु (अ काक) पिधान, कृपा
छिद्रपिधानम् २ रोषनी, स्तम्भनी ।

काकली, सं खी (स) सूक्ष्मगधुरास्फुटध्वनि ।

काका, स पु (पा काका = वन भाग >)

पितृय, पितु आनृ २ (प) बाल, शिशु ।

काकी, स खी (फा काका >) पितृन्या,
पितृन्यापत्नी २ (प) कन्यका, बालिका ।

काकु, सं पु (स) मित्रकण्ठध्वनि २ आक्षेप,

व्यग्यवचन आ-अधि, -क्षेप ३ अलङ्कारभेद
(सा) ४ निहा ।

काकुस्थ, स पु (सं) श्रीरामचन्द्र ।

काकुल, सं पु (फा) काकपक्ष शिखडक ।

काग, सं पु दे 'काक' १, २

कागज, स पु (अ) कागद -द, पत्र, कर्णम् ।

—पत्र, स ॥ (अ + सं) लेख्यपत्राणि, पत्र
काणि, लेखयानि (सर्व वद्) ।

—की नाय, सु क्षणमगुर, दिनधर ।

कागजी, वि (अ कागज >) कागद-पत्र, -
मय २ मूहमत्वच् ३ प्रतनु । सं पु, पत्रवि
क्रयिन् २ श्वेतकपोत ।

—घोडे वीक्षाना, सु, पत्रे व्यवह (स्वा
प अ) ।

काच, स पु (सं) श्फटिक १ नेत्ररोगभेद
(सं न) काचलवणम् २ सिन्धकम् ।

काद, स खी (सं कदा >) कभी-जघन, -
वस्त्रम् ।

कादुना, कि सं (स कदा >) धौताप्रान्त पृष्ठे
निविश (त्रे) ।

कादुना, कि स (सं कवणम्) केन अपनी
(स्वा उ अ) ।

कादुनी, सं खी (हिं काठना) ऊरुवसन,
सन्धिवस्त्रम् ।

काद्या, स पु, दे 'काठनी' ।

काद्री, सं पु (स कच्छ >) शाक, उरपादक
विक्रेतु २ जातिभेद ।

काज, सं पु (स कार्यम्) कृत्य, कार्य, कर्मन्
(न), इति (खी) २ इति (खी),
आनीविका ३ उद्देश्य, प्रयोजनम् ४ विवाह ।

काज, स पु (अ कायना >) गण्डाभार,
कुमुदाभार (= बदन का छेद) ।

काजल, स पु (स कज्जलम्) लोचक, दीप
किट्ट, अननम् ।

—की कोठरी, सु, निचस्थानम् ।

काजी, स पु (अ) न्यायाधीश, धर्माध्यक्ष
(इस्लाम) ।

काट, स खी (हिं काटना) छेदन, कर्तन,
लवन, कुन्तन, व्रश्चनम् २ कर्तनरीति (खी)
३ व्रण, क्षतम् ४ स्रग्ध -द, लव प छल,
कपटम् ।

—छोट, स खी, संक्षेपण २ शोधनम् ।

काठन, स पु (अ) कार्पास, तूल-लम्
२ कार्पास, तूलाम्बरम्, बादरम् ।

काठना, कि स (स कर्तनम्) कृत् (तु प से) कृ (क उ से), छिद् (र प अ),
मथ (तु प वे) २ तुद् (तु प अ),
मग् (तु) ३ कन् (तु), सधिष (तु प अ) ४ हन् (अ प अ) व्यापद (प्रे) ५ दे 'कनरना' ६ सधिषुट् (प्रे) ७ विफ लीकृ ८ दश (म्वा प अ) ९ अल्पाश उदधृ (म्वा प अ) १० अतिकन् (म्वा प से) ।

स पु तथा भाव, दे 'का' ।

—योग्य, वि, कर्तनीय, छेदनीय, छेत्तय, लक्षनीय ।

—घाला, सं पु छेदय, लाक, कर्तनकर ।
काठा हुआ, वि, कृत्, छन, कृण, छिन्न ।
काठने दीठना, सु निर्जन (वि) कृष् (वर्मे) ।
काठो तो खून नही, सु, स-, लम्भ ।

काठ, सं पु (स काष्ठम्) क्षार (न) २ इक्ष्म, इषन ३ काष्ठनिगट-हम् ४ दे 'शहतीर' । वि कर २ मूर्त्त ।

—का उल्लू, सं ॥ अलपी, मूढ, अक्ष ।

—की हौडी, स, आपागरमणीय वस्तु ।

—मारना, सु, काष्ठनिगटिन वधू (क प अ) ।

काठवा, स पु, दे 'कठौता' ।

काठिन्य, स ॥ (स न) दे 'कठिनता' ।

काठी, अ स्त्री (हि काठ) पर्याण, पर्यवण, पर्ययनम् २ शरीर, -रचना-संस्थानम् ३ असिक्वीप ।

काठना, कि स (सं कर्षणम्) निप्-आ, कृष (म्वा प अ), निष-स, पीड् (तु), निर उद, -ह (म्वा प अ) २ सूच्या पुष्पादिव सिव (दि प से) ३ काष्ठवापाणादिषु पुष्पादिक अक्षिप्त-उत्प (तु प से) ४ पृथक् कृ, विपुत्र-विदित्य (प्रे) ५ वधू (म्वा आ से) ।

काठा, स पु (हि काठना) बाध, वपाय, लप्यास ।

काणेली, सं स्त्री (स) कुल्या, न्यभिचारिणी, पुदवणी २ अनूदा, अभिवाहिता ।

कानना, कि स (सं कर्तनम्) कन्-सम् (तु प अ), कृत् (र प से) ।

स पु तथा भाव, कर्तन, तन्तुनिर्माणम् ।

—योग्य, वि, कर्तनीय, कर्तनाई ।

—घाला, सं पु, कर्तव, तन्तुकार ।

काता हुआ, वि, कृत् ।

कातर, वि (स) व्याकुल, विह्वल २ भीड, व्रत ३ भीरु ४ आर्त्त ।

कातरता, सं स्त्री (स) व्याकुलता, धैर्यभाव २ अय, नास ३ भीरुता, कातर्यम् ४ अवसाद विपाद ।

कातिष, ॥ पु (अ) लेख २ अक्षरचतु ।

कातिल, सं पु (अ) घातक, हन् ।

कादम्ब, स पु (सं) (१-३) कदम्ब, -वृक्ष-पुष्प फल्म् ४ कदम्ब ५ इक्षु ६ बाण ७ कदम्बरा ।

कादम्बरी, स स्त्री (सं) कोकिला २ मदिरा ३ सरस्वती ४ बाणरचितो गद्यकाव्यविशेष ।

कादम्बिनी, सं स्त्री (सं) मेघमाला, जल दावरी ।

कान, स पु (सं कर्ण) श्रोत्र, धरण, छुति (स्त्री) भाव, शब्दमह ।

—में कहना, कि, स, कर्णे जप् (म्वा प से) ।

—का परदा, सं पु, कर्ण, -पट्ट -कुडुमि ।

—का बहना, स पु, कर्णक्षार ।

—का मैल, स पु, कर्ण, -मल-गूथ, पित्र ।

—की शाय-शाय, ॥ स्त्री, कर्णप्रणाह ।

—उमैठना, सु, ददरूपेण कर्णौ मुद् (तु) ।

—का कच्चा, सु, विश्रांतिम् ।

—काटना, सु, अतिशी (अ आ से), अति रिच् (वर्मे) ।

—खटे होना, सु, विधिष (म्वा आ अ) ।

—सा जाना, ॥, कोल्हाल कृ ।

—पकड़ना, सु, पश्चात्तरेण कर्णौ स्पृश् (तु प अ) ।

—पर जूँ न रेंगना, सु, निराल-यत्नविरुद्ध (वि) तथा (म्वा प अ) ।

—पूकना, सु, कलह उदीप् (प्रे) ।

—भरना, सु, वृष्टौ देय जन् (प्रे) ।

—में उँगली दिवें रहना, सु, दे 'कान पर जूँ न रेंगना' ।

कानन, स पु (स न) वनम् २ गृहम् ।

कानफरेंस, सं स्त्री (अ) सम्मेलनम् ।
 कानस्टेयिल, सं पु (अ) रक्षिन्, ज्ञान्ति
 रक्षक, रक्षापुष्प ।
 काना, वि पु (स काण) एकाक्ष, चन्द्रचक्षु ।
 कानाखानी, सं स्त्री, (सं वत्रे >) कर्णजपन,
 उपाधुवाद २ वाना, जनप्रवाद ।
 कानाफूमी, स स्त्री, (सं + अनु) दे
 'कानाकानी' ।
 कानि, सं स्त्री (देश) खोखलजा, मर्यादा ।
 कानी, वि स्त्री (सं) काणा, एकाक्षा, एकनेत्रा,
 कागेयी, कागेरी ।
 —डंगली, स स्त्री कनिष्ठा कनिष्ठिका, कनी
 निक्ता, दुर्बलाङ्गुली लि (स्त्री) ।
 —कौडी, सु, दे 'कौदी' के नोवे ।
 कानी हाउस, दे 'कौनी हौस' ।
 कानीन, सं पु (सं) कयापुत्र, कुमारी
 सनय ।
 कानून, स पु (अ) अभिनियम २ राज,
 नियम, विधि ३ आचार, व्यवहार ।
 —गो, स पु प्राप्तगणकाध्यक्ष ।
 —दो, स पु, व्यवहारनिपुण, विधिज्ञ ।
 कानूनी, वि (अ कानून >) वैध, राजनियम
 विषयक २ विधिज्ञ ३ भर्त्य, ज्ञानविद्वित्
 ४ कुतश्चिन् ।
 कान्द, स पु (सं कृष्ण) श्रीकृष्णचन्द्र
 २ पति ।
 कापालिक, सं पु (सं) शैवताधिकसाधु
 २ वर्णमकरजातिभेद ।
 कापुरय, स पु (सं) कु निप-कातर, जन ।
 काफिया, स पु (अ) अरथानुप्रास ।
 —तग करना, सु, अतीव सतप्-उद्दिन्-
 अद् (प्रे) ।
 काफिर, स पु (अ) अवयव (इस्लाम)
 २ नास्तिक, अनीश्वरवादिन् ३ क्रूर ४ दुष्ट ।
 काफिला, स पु (अ-ल) सार्थे, यात्रिक-
 समूह ।
 कासी, वि (अ) पर्याप्त, अम्युनाधिक, समर्थ,
 उचित, अलम् (अन्य चतुर्थी के साथ) ।
 काशी, स स्त्री (अ) दे 'वहवा' ।
 काहूर, स पु (फा) वर्षूर २, घनसार ।
 —होना, सु, त्रिगे भू ।

काबिज, वि (अ) अधिकारिन्, प्रभु
 २ मलयबोधक, गरिष्ठ ।
 काविल, वि (अ) योग्य, समर्थ ।
 कावू, सं पु (तु) अधिकार, प्रभुत्व, वरा ।
 —करना, कि स, वश नी (स्वा उ अ) ।
 काम, सं पु (सं) इच्छा, अभिलाष, मनो
 रथ, आकाशा २ शिव ३ मदन, काम
 देव ४ मैथुनेच्छा ५ इन्द्रियाणा विषयप्रवृत्ति
 (स्त्री) ६ चतुर्वर्ग-अत्यतम् ।
 —आतुर, वि (सं) कामार्त्त, अनगत,
 विधुर ।
 —केलि, स स्त्री (स पु स्त्री) कामक्रीडा,
 विहार, विलास ।
 —कर, सं पु (सं) वक्ष्यवृक्ष ।
 —देव, स पु (स) काम, मदन, स्मर,
 वदर्प, अनग, ममथ, मतसिज, ममोज,
 कुसुमबाण, पचक्षर, मार, मीनवैतन,
 मकरध्वज, पुष्पधन्वन्, आरम्भ ।
 —धेनु, स स्त्री (सं) कामदुषा, कामदा ।
 —रिपु, सं पु (सं) कामारि, शिव ।
 —रूप, स पु (सं) प्रान्तविशेष, असम
 प्रान्त । वि, स्वेच्छारूप २ स्वरूप ।
 —शास्त्र, स पु (स न) वास्त्यायनप्रणीतो
 ग्रन्थविशेष २ कामविज्ञानम् ।
 काम, सं पु (सं कर्मन् न) कार्य, कृत्य,
 क्रिया २ व्यापार, व्यवसाय ३ उपम,
 लोभो ४ प्रयोजनम्, लक्ष्यम् ५ उपयोग,
 व्यवहार ।
 —आना, कि अ, प्र उप, -पुञ् (कर्म),
 व्यवह-व्याप् (कर्म) । सु, वीरगति प्राप्
 (स्वा उ अ) ।
 —काज, स पु, कार्य, अर्थ, व्यवसाय ।
 —काजी, वि, उपमिन्, लोभोगिन् ।
 —चलाऊ, वि, उपपुङ्, उपयोगिन् ।
 —चोर, वि, अलस, कर्म-यविमुख ।
 —समाम करना, सु, सृ निवृद्ध-नश-व्यापद्
 (प्र), इन् (अ प अ) ।
 कामना, सं स्त्री (सं) इच्छा, आकाक्षा ।
 कामयाव, वि (फा) सफल, कृतकार्य ।
 कामयाबी, स स्त्री (फा) सफलता, कृत
 कार्यता ।
 कामरी, सं स्त्री, दे 'कवल' ।

कामला, स पु (सं कामल) पाण्डु, पाण्डु रोग ।

कामिनी, स स्त्री (सं) सुन्दरी, नारी २ मुरा ३ कामवदुला नारी ।

कामिल, वि (का) सं-पूर्ण २ दक्ष, योग्य ।

कामी, वि (स कामिन्) लपट, कामासक्त, कामाध, कामन, भगीक, कामातुर, कामुक २ अनुरक्त, आसक्त, समेह, सेविन् (समा सात में) ४ हृच्छुक, हृष्ट, सख्य ।

स पु, अभि (मी) व, क (का) मन, वस, कामुन २ चन्द्र ३ कपोत ४ चक्रवाक ५ चक्र ।

कामुक, वि (स) दे 'कामी' वि, 'कामी' स पु (१) ।

कामोदियन, सं पु (भ) हास्यरसमिश्रेण (पु), वैज्ञानिक ।

कामोदी, सं स्त्री (भ) सुखात्-सयोगात्, रूपक नाटकम्, प्रहसनम्, भाषिका, दुर्महिका ।

कामोद, स पु (स) रागभेद ।

कामोदीपक, वि (सं) बाजीकर, कामाग्नि दीपन ।

काम्य, वि (स) स्तुष्टीय, वाछनीय २ सुन्दर, मनोह ।

काम्या, स स्त्री (सं) हृच्छा, कामना, वाञ्छा ।

काय, सं स्त्री (सं पु) शरीर, देह २ समुदाय ।

नायका, सं पु (भ) नियम, व्यवस्था, रीति (स्त्री), शिष्टाचार ।

कायम, वि (भ) निश्चल, स्थिर, नेत्रेष्ट २ स्थापित ३ निर्धारित ।

—सुग्राम, स पु (भ) प्रतिनिधि, प्रतिपुरुष २ उत्तराधिकारिन् । वि, स्थानापन्न ।

कायर, वि, दे 'कायर' ।

कायल, वि (भ) छिन्नसङ्घ, जलप्रलय ।

कायस्थ, स पु (स) परमेश्वर २ जीव ३ नाभिभेद । हि, शरीरस्थ ।

काया, स स्त्री (स काय पु) शरीर, देह, विग्रह, वस्त्रम् ।

—वदप, स पु (स) पुनर्यौवनोत्पादनम् २ पुनर्यौवनोत्पादनविधित्वा ।

—पलट, सं पु, बृहत्परिवर्तन, महापरिवर्तन २ शरीररूपरेखापरिवर्तनम् ।

कायिक, वि (स) शारीर (-री स्त्री), शारीरिक-दैहिक (-की स्त्री) ।

कार, स पु (स) कार्य, क्रिया २ कर्तृ, अनुष्ठान ३ अधरवाचकप्रत्यय (उ च=चकार) ४ च्चनिवाचकप्रत्यय (उ फूरकार) ।

कार, स पु (का) कार्य, व्यवसाय ।

—करना, कि स, नियोग अनुस्था (भ्वा प न) ।

—राना, सं पु, शिल्प, -शान्-गृहम्, पण्य निर्माणस्थानम् ।

—वार, स पु, व्यवसाय, व्यापार ।

—खाई, स स्त्री, क्रिया, कार्यम् २ गुप्त चेष्टा-क्रिया ।

—सान, वि, दुःश्ल, दक्ष ।

कारक, वि (सं) कर्तृ, अनुष्ठान विधान २ क्रियया स्वयसूचक शब्दरूपभेद (उ कर्तृ कारक इ व्या) ।

कारचोच, स पु (का) सूचीकर्मापजीविन् २ सूचीकर्माधार ।

कारचोची, वि (का) सूचीकर्म श्रुत । (सं पु) सूचीकर्मन् (न), शिल्पम् ।

कारट्टन, स पु (भ) हासकरमालेयम्, हास्यजनक चित्र, उपहासचित्रम् ।

कारण, सं पु (स न) हेतु, निमित्त, मूल, बीज, योनि (स्त्री) निदानम् २ साधनम् ३ कर्मन् (न) ४ प्रमाणम् ५ विष्णु ६ शिव ७ पूजाते सधपानम् (ताविक) ।

कारवृत्त, स पु (पुर्न कारट्टम्) गुलि (स्त्री) गुलिका, आग्नेयचूर्णनाटी-दि (स्त्री) ।

कारनिस, स स्त्री (भ) भित्तिदन्तव, कुट्य श्रमम् ।

कारा, स स्त्री (स) निरोध निरोधनम्, नभन, आसेध, प्रग्रह २ क्लेश, पीडा ।

कारागार, स पु (स पु न) कारा, बन्दालय, बदि, -शान् गृहम्, कारागृह, चार, चारक, गुप्तिस्थानम् ।

कारावास, सं पु (स) दे 'कारागार' ।

कारिदा, स पु (का) कारवर, परकार्य साधक, प्रति, हस्त निधि २ कर्मचारिन्, राजपुरुष, अधिकारिन् ।

कारी, सं. पु. (मरिन्) नारक, कर्तृ ।

कारी, वि (का) धातु, प्रा. इ ।

कारीगर, सं. पु. (का.) शिल्पिन्, काल, शिल्पकार । वि., शिल्पपुराण ।

कारीगरी, सं. स्त्री (का) कान्ता, शिल्प कौशल, दक्षता २ मनोहररचना ।

कारणिक, वि (म) दे 'कृष्णामन' ।

कार्हे, सं. पु (क) मूमानकम्प सिद्धत्वं पनाह्यहपा दिव्यपुत्र । वि., कृष्ण, कदम्ब ।

—का प्रजाना, सं. पु., असीमपन, अग्नि-सपत् (की) ।

कारुता, सं. पु (क) मूत्रन् २ मूत्रावन् ।

कारोबार, सं. पु. दे 'कारवार' ।

कार्क, सं. पु (क) कृषी-पिधानम् ।

कार्कस्य, सं. पु (सं. न) कर्कशता, कठोरता २. दृढता, दृढत्वम् ३ निर्दयता, क्रूरता ।

कार्क, सं. पु (क) पत्रम् २ स्थूलकर्मम् ।

कार्तवीर्य, सं. पु (सं.) इन्द्रवीर्यपुत्र सत्त्ववातुः, अजुन ।

कार्तस्वर, सं. पु (सं. न) कनक, सुवर्ण, स्वर्ण, हिरण्यम् ।

कार्त्तिक, सं. पु. (सं.) बाहुल्य, कर्त्त, कौमुदः ।

कार्त्तिकेय, सं. पु (सं.) लब्ध, कुमारः, शिल्पिवाहन, दादरालोचनः ।

—प्रसू, सं. स्त्री. (सं.) पार्वती, गिरिजा ।

कार्वन्, सं. पु. (क.) प्रगारः, कार्यन् ।

कार्थोनिक, वि (क.) प्रगारिक, कार्वनिक ।

—दुमिड गैस, सं. स्त्री, कार्वनिकाम्पवातिः (क.) ।

कार्मुक, सं. पु (सं. न) चाप, दे 'चतुष' ।

कार्य, सं. पु (सं. न) कर्मन् (न) कृत्य, क्रिया २. व्यवसाय ३. परिणामः ४. प्रयोजनम् ।

—अग्रह, सं. पु. (सं.) अधिकारिन् २. कर्मविष्णु ।

—कर्ता, सं. पु (सं. —र्तु) कर्मकारिन् २. राजगृह्य ।

कार्तवाह, सं. स्त्री, दे 'कारतवाह' ।

काल, सं. पु. (सं.) समय, वेला, दिष्ट, अनेहम् (पु.) २. मृत्युः ३. दण्ड, समदूतः ४. अवसर, प्रसंग ५. दुर्मिष्ट, दुष्काळः

६ कृष्णमरुः ७. शनैश्चरः ८. शिव ९. लोहः १०. अनु ।

—कूट, सं. पु (सं. पु. न.) घोरविष, प्रा. इ. हरगलम् ।

—कोठरी, सं. स्त्री, कालकोष्ठः ।

—चेप, सं. पु (सं.) समपातिपान, व्यञ्जनः २. निर्वाह ।

—चक्र, सं. पु (सं. न.) समनगरिवर्तः २. भाग्यचक्रम् ३. अक्षमेदः ।

—क्ष, सं. पु. (सं.) कालविद्, २. दैवज्ञः ३. कुहम् ।

—यापन, सं. पु (सं. न.) दे 'कालझे' ।

—रात्रि, सं. स्त्री. (सं.) मीमा कृष्णा च निरा २. प्रहरात्रि ३. मृत्युनिशा ४. दीना-वलीनिशा ५. मनुष्यजीवने सतततन्निवर्त मत्तमससमदिनानन्तरमवा रात्रिः ।

—मर्ष, सं. पु (सं.) महाविष, अण्णरुः, कृष्णमरुविशेषः ।

काला, वि (सं. काल) कृष्ण, रत्नान, अस्तिव, नील २. अन्धकारनय, विमिराहृष्ट, ३. दूषित ४. बोर ५. भयकर ।

—आवार, सं. पु. कालावरः ।

—कल्टा, वि. अतिकृष्ण ।

—बोर, सं. पु. नाशकः २. अतिदुष्टपुरुषः ।

—जीरा, सं. पु. कृष्णजीरकः, काला, कृष्ण ।

—जनक, सं. पु. कृष्णजनः, सौवर्णम् ।

—जाग, सं. पु. कृष्ण-नाग-सरः २. प्रा. इ. कटुः ।

—पानी, सं. पु. दोरान्तरे निर्वाणनम् २. अजमानादयो दीरविशेषः ।

कालेकोसो, कि. वि. अतिदूरम् ।

—मुंह होना, मु. निद्राभिक्षिप् (कर्म०) ।

कालानीत, वि. (सं.) कनकसर, असमनोचित ।

कालापन, सं. पु. (हि. काण) कृष्ण, रत्नान, मेचकता ।

कालिंदी, सं. स्त्री. (सं.) यमुना, कलिन्दवनरा ।

कालिक, वि. (सं.) समनधिक, कालविषयक २. समनोचित, प्राप्तकाल ३. अनुकाल, नियतकाल ।

कालिका, सं. स्त्री. (सं.) दुर्गा, चण्डी

२. मत्ता-वी ३. कनीनिका ४. रत्नाननयता ।

कालिख, सं. स्त्री. (सं. कालिका) कलज, ८

मपि -सि (स्त्री) २ वल्क, लाछन, दोष ।
 कालिदास, सं पु (सं) सरस्तकविशिरोमणि,
 रघुकारः, विक्रमसभाया सप्तभरत्नम् ।
 कालिमा, सं स्त्री (सं) कालिमन् पु)
 कृष्णिमन् (॥), कालता, श्यामता २ मसी
 ३ लाछन, दोष ४ अशकार ।
 कालिय, सं पु (सं) यमुनावनिर्मुष्णमर्ष-
 विशेषः ।
 —मर्दन, सं ॥ (सं) मीरुष्ण ।
 काली, स स्त्री (सं) चण्डी, दुर्गा २ पार्वती,
 गिरिजा ३ मसी । सं पु दे 'कालि' ।
 वि स्त्री, कृष्णा, श्यामा ।
 —कालीसी, सं स्त्री, कालकास ।
 —घटा, सं. स्त्री, (स) कादचिनी, श्याम-
 पनप्रेणि (स्त्री) ।
 —दृष्ट, सं पु (सं. + हि) यमुनाया जलाव
 संविशेष्ट ।
 —मिर्च, सं. स्त्री (सं) कालमरि (री) चम् ।
 कृष्ण, कषण, कालव, वेलावम् ।
 —कालीन, वि (सं) समय बेला-काल, मव-
 धिन् २ सामयिक, प्रामाण्यिक । (टि यह
 शब्द समासागत में ही प्रयुक्त होगा है) ।
 कालाङ्ग, सं स्त्री (हि) काला) कृष्णा,
 श्यामता २. मसी ३ वज्जलम् ।
 कालपत्रिक, वि (सं.) सक्त्वज, मन वस्त्रित,
 उद्गाविन, वृत्रिम, वृत्तक ।
 काल्य, वि (सं) काल-ममय-अवमर, उच्चिन्-
 योग्य-अनुकूल, सामयिक । सं पु, प्रमात,
 विभाज, प्रत्युष्ट ।
 काश्या, स स्त्री (स) १-२ यमाधानाह्नी
 नारी वेनु (स्त्री) ।
 कावा, सं पु (फा) वृष्टे अश्वभ्रामणम्
 २ मण्डल, वृक्षम् ।
 कावेरी, सं स्त्री (सं) दक्षिणमारुतस्य प्रमिद
 नदी २ वेदया ३ हरिद्रा, पीतिका ।
 काव्य, सं. ॥ (सं. न) कवित्त, कवि-
 कृति (स्त्री), सरसप्रबन्ध २ रसात्मक
 वाक्यम् ३ कवितामयम् ।
 काश, अन्य (॥) अपि नाम, श्राव्ये,
 कामये ।
 काश, सं. पु (सं. पु न) काश, अमर-
 पुष्पक, वनहासक २. काश, क्षवधु ।

—घास, सं. पु, दे 'दमा' ।
 काशिका, वि (सं.) प्रकाशिका । स स्त्री (सं)
 काशी २ अष्टाध्यायीवृत्ति (स्त्री.) ।
 काशी, सं स्त्री (सं.) शिवपुरी, वाराणसी,
 ताप-स्थली ।
 —फल, सं. पु (सं. न) कृष्माड -टक्, पीत,
 पुष्पा-फला ।
 कारत, सं. स्त्री (फा) कृषि- (स्त्री), कर्षण,
 कृषिकर्मन् (न) ।
 —कार, सं. पु (फा) कर्षक, कृषाण ।
 कापाय, वि (सं.) गैरिक रक्तधातु, वर्ण । सं.
 पु, गैरिकरजितवस्त्रम् ।
 काष्ठ, सं. पु (सं. न) दे 'काठ' ।
 —कीट, सं पु (सं) पुण ।
 काष्ठा, सं. स्त्री (सं) दिशा, दिशू (स्त्री)
 २ सीमा ३ शिखर. -८ ४ चन्द्रकला
 ५ अष्टादशनिमेषात्मक काल ।
 काय, स-पु (सं.) क्षवधु २ काश, वनहासक ।
 कामनी, स स्त्री (फा) गुल्मभेद २. तस्य
 बीजम् ३ नील श्याम, वर्ण ।
 कामार, सं पु (सं.) सरोवर, महाजलाशय ।
 कामीस, सं. पु (सं. न) धातुदेखर, शोथनम् ।
 कास्टिक, वि (अ) दाहक ।
 —सोडा, सं पु (अ) दाहकविघ्नार ।
 कास्मिक रे, सं. स्त्री (अ) सुष्टिरदिम ।
 काहिल, वि (अ) अलस, भद्र ।
 किंकर, सं. पु (सं.) शूल, सैवक, प्रेम्ब,
 चेट २. क्रीनदाम ।
 किंकर्तव्यविमूढ, वि (सं.) सद्भ्रान्तमनस्,
 व्याकुलचित्त ।
 किंकिरी, सं स्त्री (सं) ध्रुव, पट्टी-पटिका
 २ कानी चि (स्त्री), रशना ।
 किंचित्, वि (सं) स्तोक, अल्प ।
 किञ्जल्क, सं पु (सं) पञ्च-अमर, केमर
 २ वज्ररत्नम्, जङ्गलरत्नम् (न) ३ नागदेमर ।
 किन्तु, अन्य (सं.) परन्तु, तु, पुन २ अपि
 तु, प्रत्युन, पुन, परन्तु ।
 किंनर, सं. पु (सं.) किंपुरुष, तुरगवदन,
 अश्वमुख ।
 किंपुरुष, सं पु (सं.) विक्रमः २ दुष्कृतीन
 ३ वर्णमकर ।

विचदती, स स्त्री (सं) जन प्रवाद श्रुति
(स्त्री) कर्णोपकणिना ।
विचा, अव्य (स) वा, अवा यदा, विमुत ।
किशुन, स पु (स) फलाग्र दे 'दाक' ।
कि, कि वि (स किम्) दध कन प्रकारेण ।
कि, अय (फा) यत् यथा, इति ।
किचन्चि, म स्त्री (अनु) प्रत्याप प्रनप
नम् २ बल्ह ।
किचकिचाना, कि अ (अनु) दगैर्दतान्
निधीन् (चु) घृष (स्वा प मे) ।
किह, स पु (म न) धातुमलम् २ तैलादीना
मलम् ३ कक मल शेषम् ।
किना वि (म मियन्) किपरिमाण विमात्र
२ अभिन बहु ।
किनै, वि पु (म कति) विमत्याका ।
किनय, म पु (स) दूतकार, अश्वदेविन्
२ वचन ३ दुष्ट ।
किताय, स स्त्री (अ) पुस्तक ग्रन्थ
२ पत्रिका, पाजरा ।
—का (किताबी) कीड़ा, स पु, ग्रन्थ पुस्तक,
कीट । २ सदापात्रिन् ।
कितायत, स स्त्री (अ) लेख लेखनम् ।
रत्न ह—, म स्त्री पत्रन्यवहार ।
किथर, कि वि, (स बुध) क वरिमन् स्व दे
२ का दिशा प्रति, कस्या दिशि ।
किन, सत्री (किम' वा बहु) के (पु), का
(स्त्री) कानि (न) ।
किनका, म पु (कणिना) कणी, कणा
क्षत तडुल धावम् ।
किनारा, स पु (फा) तीर, तटम् २ उपान,
मान ३ वस्त्रात, ज्वन ४ पार्श्व, पत्र
५ सीमा ६ जन्त ।
—रना, सु दूरे स्था (स्वा प अ) परि
त्यन (स्वा प अ) ।
किनारी, स स्त्री (फा किनारा) स्वर्ण-रत्न,
नालाभरणम् ।
किनारे, कि वि (फा किनारा) तारे, तट
२ सीमायाम् ३ पृथक्, दूरे ।
—किनारे, अनु, ब्रूत तौरम् २ सीमाम्
अनु ।
—लगाना, सु, समाप्तपद (प्र) ।
किन्नर, स पु (स) किपुरुष, देवयोनिभेद ।

किन्नरी, स स्त्री (स) किन्नरानेनारी ।
किफायत, स स्त्री (अ) प्रितन्यय, अमुक्त
हस्तत्वम् ।
किजला, म पु (म) प्रतीची २ मकानगरी
३ पूज्यनन ४ पितृ ।
—नुमा, स पु (अ + फा) दिग्दर्शकयन्त्रम्,
दिग्गो दिग्गटिका ।
किरिन्नि, वि (स कर्करम् >) शार्करिल,
सिफतिल ।
किरिन्नी, स स्त्री (स कर्करम् >) नेत्रपतितो
घृत्यादिकण २ नसरेण अगुण ।
किरिच, स स्त्री (स कृति >) अपिद्वयग,
अन्यसमसका छुरिका २ वाष्पवाचादीना
तीक्ष्णाग्र शकम् ।
किरण, स स्त्री (स पु) रश्मि मरोचि,
दीपिनि, मयूष, कर, अशु अभीष्ट ।
—माली, स पु (स -न्नि) सूय
किरमिच, म पु (अ कैन्वस) शाग, शणपट,
स्यूल्नसभेद ।
किराची, स स्त्री (अ कैरेण >) वहन
शकट -टम् ।
किरात, स पु (स) अशिष्ट असम्य, -जन
२ वन्यजातिभेद ।
—पति, म पु (स) शिव ।
किराताशुनीय, स पु (स न) भारविप्रणीत
महाकाव्यम् ।
किराना, म पु (स क्रयणम् अथवा कीर्ण >)
वाणिज्य, वणिक्कट्टेन् (न) २ गणद्वयाणि ।
किराया, स पु (अ) वहनमूल्य, तारी, आन
(ता) र २ आन, मायकम् ३ भुनि (स्त्री),
शृया ।
—नामा, स पु, मायकात्रम् ।
किराये का टट्ट, स पु, वैतनिक, सवेतनो
दामेर ।
किरायेदार, स पु (फा -यादार) मायकातिन् ।
किरीट, स पु (स) दे मुकुट ।
किलक, म स्त्री (हि किल्लना) हर्ष-
धनि नाद-स्वन, किलकिला २ कलम,
नट नट ।
किलकना, कि अ (स किलकिला >) किन्
किला-राव क, हर्षध्वनि क ।

विलकारना, कि अ, दे 'किल्वना' ।
 किलमिलाना, कि अ (स किलविला >)
 १ दे 'किल्वना' २ बोलाहल कृ ३ बाक्
 मल्ह कृ ।
 मिलनी, स खी (हि कीडा) । कुकुर,
 यूक यूका ।
 किला, स पु (अ) दुर्ग, कोट ।
 —दार, स पु दुर्गाध्वक्ष, कोटपाल ।
 —बदी, स खी, दुर्गनिर्माणम् २ न्यूहरचना ।
 किलकारी, म खी (हि किल्वना) किल
 विला, हर्षनाश २ कलकल ३ चोत्कार ।
 किल्लत, स खी (अ) न्यूनता ।
 किल्ला, स ॥ (स कील >) बृहत्-स्थूल,
 कील शत्रु २ बृहत्, शूल-स्थूणा शलाका ।
 किल्ली, स खी (हि किला) अंगल, अंगलावध
 २ कील, कीलम् ३ शूल स्थूणा ।
 किल्विष, स पु (स न) पापम् २ अपराध
 ३ रोग ।
 किवाड, ॥ पु (स कपाट) कपाट टी, अर
 न् २ द्वार, द्वार (खी) ।
 —खटखटाता, कि स, कपाटम् अभिहत्
 (अ प अ) ।
 किशमिषा, स खी (फा) शुष्क, दासा
 गोलनी ।
 किशलय, म पु (स पु न) किसलय-य,
 पल्लव न, अकुर, प्ररोह ० मजरी ।
 किशोर, म पु (स) एकादशावधिपञ्चदशवर्ष
 पर्यंतवयस्को बाल २ बाल्य ३ पुत्र ।
 किशोरी, स खी (स) तरुणी, बाला,
 बालिका, कन्या, युवतीति (खी) ।
 किशती, स खी (पा) नौका २ दीर्घचतुर
 सपात्रम् ३ मखा, धुतकोष ।
 किम्, सव (सं कस्य >) किम् के रूपों से ।
 —तरह, मि वि, कथ, केन प्रकारेण, कथा
 रीत्या ।
 किस्लय, स पु-दे 'किल्लव' ।
 किस्सान, स पु (सं कृषाण) कर्षक, कृषिक,
 कृषाण, क्षत्रिक, क्षत्राजीव, क्षत्रिन् ।
 किस्मानी, स खी (हि किस्सान) कृषि (खी),
 कृषिकर्मन् (न) ।
 किस्ती, सर्व (हि किस्) 'विष्' के रूपों के

साथ चित्, चन वा अपि लगावर । [उ०
 विस्ती ने —कश्चित्, कोऽपि, कश्चन (पु),
 काश्चित् (खी), किंचित् (न) इ ।]
 —तरह, कि वि केन केन प्रकारेण, कथंचित् ।
 किसे, सर्व (हि विस्) क वा किम्
 (द्वितीया), कस्मै, कस्यै, कस्मे (चतुर्थी) ।
 किस्त, स खी (अ) देयभाग, अणारा,
 खण्डिका ।
 —करना, कि स, अज्ञातत मृण परिशुष्
 (प्र) ।
 —बार, कि वि, अशश, अशरात ।
 किस्म, स खी (अ) प्रकार, भेद, जाति
 (खी) २ प्रवृत्ति (खी), स्वभाव ।
 किस्मत, स खी (अ) भाग्य, भागधर, दिष्ट,
 दैवम् २ प्रान्त, भाग खण्ड ।
 सुसु—, वि, धन्य, पुण्यवत् ।
 बद—, वि, अधन्य, दैवहतक ।
 —आजमाना, सु, भाग्य परीक्ष (ध्वा आ
 से) ।
 किस्मा, स पु (अ) कथा २ वृत्तांत
 ३ वल्ह ।
 की, प्रत्ये ('का' वा खा) दे 'का' ।
 कीक, स खी (अनु) चोत्कार, ठगोश ।
 कीकट, स पु (स कीकटा) मगधप्रदेश
 २ तत्रत्यानार्यजाति (खी) वि०, निर्धन
 २ कृपण ।
 कीकर, ॥ पु (सं किंकिरात्) दीर्घवण्टक ।
 कीकम्, स पु (स न) अस्थि (न),
 हड्डम् २ कीटभेद । वि, इट, कठिन ।
 —मुरा, स पु (सं) स्त्री, पक्षिन् ।
 कीचक, स पु (सं) सरभो वध, सन्धिद्रो
 वेणु । ० किराग्राजस्य दशाल ।
 कीचद, स पु (स चिबिन्) पक-क, जवान
 ल, अवकील, कदम, शाद, निपदर ।
 कीट, स पु (स) कीटक, कृमि, त्रिभि,
 जीन्गु ।
 कीट, स खी (स किट्) घृणैलादीनां
 मलम् ।
 कीड़ा, स ॥ (स कीट) दे 'कीट' ।
 २ सार्धशील, सरोवृष ३ सर्प, अदि
 (पु) ४ रक्षक, जलीक ।
 —लगाना, कि अ, कीट मश् (कर्म) ।

कीदी, स स्त्री (हिं रोडा) धुदकी
२ पिपील्का ३ चटका ।

कीना, स पु (फा) द्वेष वैर, द्रोह ।

कीप, स स्त्री (अ कीफ) निवाप ।

कीमत, स स्त्री (य) मूल्य अर्थ ।

कीमती, वि (अ) महार्थ बहुमूल्य ।

कीमा, स पु (अ) कृत्तनासम् ।

कीमिया, स स्त्री (फा) रसायनम्, रस,
विद्या शास्त्र तन्त्रम् ।

कीर, स पु (स) शुक्र दे 'तोना' ।

कीर्तन, स पु (स न) गुणकथनम् २ इश
गुणानम् ।

कीर्ति, स स्त्री (स) यशम् (न), विख्याति
विश्रुति (स्त्री) अभिलषा समाख्या ।

—मान्, वि (स-मन्) यशस्विन्, विभूत,
विरयान् ।

कील, स स्त्री (स पु) कीलक, शकु, लोह,
कील शकु २ सङ्गनामक नासिकाभूषणम्
३ सुखरसौक्य ।

कीलक, ॥ पु (स) कील, कीला २ नाग
दान, भारवाटि (स्त्री) ३ महाकील, शूल
४ स्थाणु, स्थूपा ५ अन्वयमयप्रभावनाशकी
मय ।

कीलना, कि स (स कोलनम्) कोल् (पु)
कोलै क्प् (क् प अ) २ अधिकारप्रभाव
नाश (प्र) ३ (सर्पादेव) वशीकृ ।

कीला, स पु (स) दे 'कला' ।

कीलाल, स पु (॥ न) अमृतम् २ जलम्
३ रक्तम् ४ मधु (न) ।

कीलित, वि (स) (काले) बद्ध, इकीकृत,
पिन्ड ।

कीली, स स्त्री (स कोल >) कर्षणी, व्या
वर्तनकील, दलनकीलक २ कुक्षिका, जड़
घातकम् ३ विवर्तनकील ४ कील ५ अक्ष
रत्ना, अक्ष ।

कीश, स पु (स) कपि २ खल ३ सूर्य ।

कुभर, स पु (स कुमार) पुत्र, भूय (पु)
२ बलक ३ राजकुमार ४ सुवराज ।

कुभारा, वि पु (स कुमार) अहङ्गविवाह ।

[-री (स्त्री) -अरिणीना, अनूरा कुमारो ।]

कुइ, स स्त्री, दे 'कुलिनी' ।

कुकुम्, स पु (स न) काश्मीरज, दे 'देसर'
२ दे 'रोनी' ।

कुचन, स पु (स न) सकोच, सकोचनम्,
सङ्घेपणम् ।

कुचिका, स स्त्री (स) ताला, तालिका,
साधारणी ।

कुचित, वि (स) दे आकुचि ।

कुज, स ॥ (स पु न) मित्रज-ज, हना,
गृह मण्डप ।

—कुटीर, स स्त्री (न पु) लघाट्ट ५
इला, कुम्भगृहम् ।

—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीकृष्ण ।

कुजडा, स पु (स कुज >) हरितकविकट
आतिविशेष २ शकविकटिन् ।

कुजर, स पु (स) गज, द्विप २ कश ।
(रि समासान्ते में 'कुजर' श्रेष्ठनावचक है—
नरकुजर-श्रेष्ठपुरुष) ।

कुजी, स स्त्री (॥ कुचिका) ताली, उदपा
दका-क, अजुट, साधारणी । २ दाका,
व्याख्या ।

कुठ, वि (स) कुठित, धाराहीन, तीक्ष्ण
रहित २ मूर्ध्नि ।

कुठिन, वि (सं) कुठीकृत, द्रवतैर्दृश्य २ निम्न
भोक्तृ ३ अनुपयोग्य ।

कुड, स पु (स कुण्ड-ह-की) पल्लव-ल,
अलसरस (न), वेशन, धुद्रजलाशय २
अग्नि-पद्म-हवन-कुण्डम् ३ स्थाली ४ विशा
लमुलनतिगमोत्प्रासम् (हि मद्रका) ५ सप्त
नाथा ज्ञानपुत्र ६ लौहशिरस्त्र ७ मानमेद ।

कुडल, स पु (स पु न) का-अर्वा वेष्टन,
कर्णभूषणोद्दे २ बण्ड ३ परिवेष्ट ४,
तेजोमण्डलम् ५ आवेष्टनम्, व्यावर्तनम् ।

—करना वा मारना, कि स, यत्नी पुत्रा, क,
व्यावृत्त परिवेष्ट (प्रे) ।

कुंडलिया, स स्त्री (स कुण्डलिका) मात्रिक
छन्दोभेद ।

कुडली, स स्त्री (स) मिष्टान्नभेद (इ
जली) २ कुडल, चूर्णकुण्डल ३ चम्प-
दन, पत्रिका ४ सर्पस्य वट्टलाकारस्थिति (स्त्री) ।

कुडा, सं पु (सं कुण्ड) जीवति मर्तरि
जान् ।

कुडा, म पु (सं कुण्डलम् >) लोह, ग्रहणी
धरणी २ अमल-छला-ली ।

कुडा, म पु (सं कुण्ड-लम्) विशालमुख
नतिगम्भीरपात्रम् (हि मटका) ।

कुट्टिन, म पु (सं न) विदमरानधानी ।

कुटी, स का (म) कुण्डी, खम् ।

—कुटी, म पु, कुण्डीदण्ड-हो ।

कुटी, स का (हि कुण्ड) दार-लखणा
२ अमल-छला-ली ३ मूला मधि-प्रवि ।

कुत, स पु (सं) प्राप्त, तोमर ।

कुतल, म पु (म) वेष्ट गिरोरह ।

कुतिमान्, स पु (सं) भागप्रदेशशामक,
काया पाण्डपितृ (पु) ।

कुत्ती, स का (सं) पूषा, पाण्डुपसा, सुधितिर
ननली ।

कुट, स पु (सं पु न) मदापुत्र, वन
क्षान २ कमलम् ।

कुट, वि (पा) कुण्ड, तीक्ष्णगारहि
२ मन्द, ण्ड ।

—जहन, वि (पा) मन्दमणि, मूल ।

कुटन, म पु (सं कुन्द >) वज्रक सुवर्गम्
वि भास्वर २ पवित्र ३ नीरोग ।

कुदा, स पु (पा) कृत्स्न-सूत्र, वाष्पम् २
अन्वेषण्य काष्ठमयो-रमाण ३ काष्ठनिगद
४ मुष्टि (की), वारण ।

कुंदी, म का (पा कुन्दा >) मुद्रैर्दलना
वनम् २ ताडनम् ।

कुम्भ, स पु (सं) घट, धर्मी, कल्पश
शम् २ गण्डम्, इतिगिरिस पिण्डद्वयम्
३ कुम्भकप्राणायाम ४ शिदधवाक्कि वनं
विशेष ५ रात्रिदिष्टेय (वयो) ।

—कुम्भ, स पु (सं) रात्रिगणुव ।

—योनि, म पु (सं) अगस्त्यो मुनि ।

कुम्भक, स पु (सं) कुम्भ, प्राणायामे वायु
संगमनम् ।

कुम्भी, स का (सं) कुट्ट-ल्लु-कुम्भ-वट ।

—पाक, स पु (म) नरपवित्र ।

कुम्भी, स पु (सं कुम्भिन्) गज २ नक्र
३ विपरीतमेद ।

कुवर, स पु, दे 'कुम्भ' ।

कु, अव्य (सं) पात्रकुम्भाज्यत्वादियोगक
मध्ययन् (अ कुम्भे=पात्रयमे ३) ।

कुञ्जी, म पु (सं कृप) ३, प्रहि, अवट,
सात अवत, कच ।

—खोदना, मु, परान् पीठ (जु) ।

कुञ्जार, स पु (म कुमार >) आश्विन,
रष, आश्विन ।

कुङ्करी, स का (हि कुञ्जी) कृपा, कृप, २
मानक, अशुक्र ।

कुङ्क, म का, ३ 'कुम्भिनी' ।

कुङ्क, स पु (अ) पाचर, मूढ, कच,
रचक ।

कुङ्करी स का (सं कुङ्करी) तात्रचूनी
२ शम्भु ३ मूरगनी, ननुगुण्ड ।

कुङ्कर, स पु (अ) पचन पाक दन्तमेद,
कुङ्करन् ।

कुङ्कर्म, स पु (सं न) कु, कार्य-कृत्य-कृति
(का) दुराचार, पाप दुष्टता ।

कुङ्कर्म, वि (म-मिन्) कुङ्क, पापिन्, पार,
दुरात्मन् ।

कुङ्कमुत्ता, स पु (म कुङ्कमुत्तम् >) कुङ्कनक ।

कुङ्कु, म पु (सं) तात्रचूड चरणानुप,
बाल्य, व्याकर, शिखण्डिक ।

कुङ्कु, स पु (म) मन्, दे 'कुत्ता' ।

कुङ्कि, स का (म पु) उदर, अठर, तुदम्
२ गर्भाग्नय, स्थानम् ३ पदार्थतर्माण
४ गुहा ।

कुङ्गति, स का (सं) कुङ्गति, कुङ्गे (की) ।

कुच, स पु (सं) स्तन, उरोन २ चतुर्क-
क स्तनाग्रम् ।

कुचकुचाना, नि स (अनु कुचकुच) म्भ
(नि प अ) निद्रा ३ ।

कुचक, म पु (म न) कूट-वपद, व्याप,
उपचार, कच-कचक प्रयोग ।

कुचक्री, वि (सं-मिन्) उपचारक, कच
प्रयोग्योक्त ।

कुचलना, नि स (अनु) कुच (त प से)
२ कुच (क व मे) विद्र (म प अ)

३ भूरि त्त् (जु) ४ पादननेन आहन्
(अ प अ) ।

कुचला, म पु (सं कचीर) विषाह, विप
निद्र, रम्भक, म्भीरु, बाण्डूट ।

कुचाल, स पु (म कुच-हि चाल) दुराचार,
कुचार्थो कदाचरणम् ।

कुचाली, वि (हि कुचाल) दुराचारिन्, दुष्टं च ।
 कुचेष्टा, स स्त्री (स) दुष्टता, हानिकरोपस ।
 कुचैला, वि (स कुचेल) मलिनवेष्ट, कुवसन ।
 कुष्ट, वि (स किंचित्) (मात्रा) अल्प, स्वल्प,
 स्त्रीक, शब्द, २ (सरया) कतिचित्, कति
 पय, ३ किमान, यत्किंचन, ४ 'किन्' के
 तीनों लिंगों के रूपों के साथ चित्, चन,
 अपि लगाने हैं, ७ केचित्, काश्चित्, कानि
 चित् ८ ।

—कर देना, मु, २ वै बदीक ।

कुच, स पु (म) मगमग २ वृष ।

कुचाति, स स्त्री (म) हीन-नोच-निष्ठ आति
 वत् । स पु, दुष्कृतान्, अत्यन्त, नाव ।

कुट, स पु (स कुष्ठम्) गदा, बौवेरन् ।

कुट, स पु (स) दुर्ग, को २ टहन
 ३ पर्वत ४ कलश ।

कुटनी, स स्त्री (स कुटनी) दण्ड, मण्डक,
 माषिका, वनमक्षिका ।

कुटनपत्र, स पु (स कुटनी >) दूरीष्टि
 (स्त्री) २ उपहार, भेदबर्तनम् ।

कुटना, स पु (हि कुटना) मगमगक,
 सचारक, दुष्टादिन् २ विगुन ।

कुटनी, स स्त्री (स कुटनी) कुटिनी, दूरी,
 दूरिका, सचारिका गमली, रतगाली ।

कुटिया, स स्त्री (स कुटी) वृद्ध, २, पत्नी
 राजा, पत्नीकुटी टि (स्त्री) कुटीर ।

कुटिल, वि (स) वक्र, निम्न, अराल, भुग्न,
 मृग्य २ वक्रक, प्रभारक, कपटिन्, छलिन् ।

कुटिलता, स स्त्री (स) कैटिल्य, वक्रता,
 निम्नता २ छल, कपट, प्रभारता ।

कुटी, स स्त्री (स) । सुदृग्हन,
 कुटीर, म ॥ (स) । द 'कुटिया' ।

कुटुम्ब, स पु (स पु न) गृहान्, पुत्र
 कन्वादयः, दानि (स्त्री), वाषवा, सतीति
 (स्त्री) २ कुल, वंश, जाति (स्त्री) ।

कुटुबी, स पु (स-विन्) गृहस्थ, गृहपति,
 गृहन् २ जाति (स्त्री), वपुः, वाषवा ।

कुटुम्बिनी, स स्त्री (म) गृहिणी, गृहिनी,
 आर्या, सुतिनी, पुरभी ।

कुटव, स स्त्री (स कु+हि टव) कुपवृत्ति
 (स्त्री), व्यसन, दुग्ता ।

कुटनी, स स्त्री (स) दे 'कुटनी' ।

कुट्टी, सं स्त्री (हि काटना) दन्तसल्ला
 २ बालकेषु मैत्रीविच्छेदः ।

कुठला, स पु (स कोष्ठ >) क्षुद्रधान्यकोष्ठ,
 शून्य लघुधान्यागारम् ।

कुठार, स पु (॥) परपु, दुष्प, वृष्टदनी,
 वृष्टनेतिन्, परम्प ।

कुठाराघात, स पु (स) परपुमहार २ ताम्र
 प्रहार ।

कुठाली, स स्त्री (स कु+स्थाली >) तैजमा
 वननी मु (पूमा नी) ।

कुटीर, स पु (स कु+हि ठीर) कुस्थानम्
 २ अनवसर, असन्ध ।

कुडकुडी, स स्त्री (अनु) दे 'कुडकुडाना' ।
 कुडकुडाना, कि अ दे 'कुटना' ।

कुडल, स पु, (रक्षावपरा) आ, व्यावर्तन
 आनुचनम् ।

कुडुक, स स्त्री (पा कुक) कुकुगीरतम्
 २ अनवरा कुडुटी, वि, व्यर्थ, निरर्थक ।

कुडौल, वि (स कु+हि डौल) दुर्दशन,
 नराकार, कुरूप ।

कुडगा, वि पु (स कु+हि टग) अरिष्ट,
 असम्प, दुशील ।

कुडन, स स्त्री (हि कुडना) मन्त्रतार,
 चिसव्यथा ।

कुडना, कि अ (॥ कुड >) दुर्जन वते (ना
 था), सुभ् (दि प से), अन्त परितप्
 (दि आ अ) ।

कुडव, वि (स कु+हि डव) कुरूप, दुर्द
 शन २ आरष्ट ३ कठिन ।

कुडाना, कि स (हि कुडना) सन्-वदिञ्
 (मे) २ प्रदुप्-कुष (मे) ।

कुतरना, कि स (स कर्तनम्) चर्वेति कृत्
 (तु प से), दन्तै खण्ड् (तु) ।

कुतक, स पु (स) हत्वाभास, मिथ्याहेतु,
 विन्हा, प्रवत्य, विवाद ।

कुतकी, वि (स किन्) विगणवादिन्,
 मिथ्याहेतुवादिन् २ वाचाल, वाषदकः ।

कुतिया, ॥ स्त्री (हि कुती) सरमा, कुहुरी,
 शुनी, सारमेयी, मयी ।

कुतुब, स पु (अ) भव, ध्रुवगारा ।

—जुमा, स पु दे 'किन्तालुमा' ।

कुतूहल, स पु (स न) उत्कण्ठा कौतूहल,
 कुतुक, कौतुक, जिज्ञासा २ अपूर्व दुर्लभ-
 अदृष्ट, -वरतु (न) ३ विनोद ४ आश्चर्यम् ।
 कुत्ता, स पु (दश) कुक्कुर, श्व, शुनक,
 कौलक, मषक, सारमय, भृगुदशक, भषण,
 वकलागूल वृकारि, शयाह ।
 कुत्त वी हल(ल)क, स स्त्री आल्क, जल
 सत्रास, अलकाभिभव ।
 कुत्ती, स स्त्री (हि कुत्ता) दे 'कृतिवा ।
 कुत्तिसत्, वि (स) अपम, अवम, गर्हा
 निन्दित ।
 कुदरत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री) माया,
 इश्वरशक्ति (स्त्री) २ अधिकार, प्रमुचय
 ३ संसार जगत् (न) ४ रचना ।
 कुदरती, वि (अ) नैसागक प्राकृतिक
 मायामय २ स्वाभाविक सृष्टि ३ दिव्य
 देश (स्त्री) ।
 कुदीब, स पु (स कु + हि दीब) छल,
 विश्वासघात २ कुरिषति (स्त्री) ३ कुरथानम् ।
 कुदान, स पु (स न) गर्भदानम् २ कुपा
 प्राय दानम् ।
 कुदान, स स्त्री (हि कुदना) कूर्दन, शप
 पा २ कूर्दनम् (स्त्री) शपातरालम् ।
 कुदामा, कि स, कुदना' के धातुओं के
 मे रूप ।
 कुदाल, स पु (स कुदाल) कुहार, अव
 दारण, सम्वन्ध, खनित्रम् २ टक, पाषा
 पदारण ।
 कुदिन, स पु (स न) आषाढकाल, विपत्ति
 समय २ दुर्दिनम्, ऋतुविपरिणत दिनम् ।
 कुदृष्टि, स स्त्री (स) पापदृष्टि (स्त्री)
 २ अमंगलदृष्टि ।
 कुधर, स ॥ (स) पर्वत २ क्षेपनाग ।
 कुनकुमा, वि (॥ कटुणा) इषदुष्ण, क्षोण
 कक्षोण मन्त्रोष्ण ।
 कुनया, स पु, दे 'कुटुम्ब ।
 कुनाम, म पु (स -मन् न) अप, रयाति
 धीति (स्त्री) ।
 कुपय, स ॥ (स कुपय) वापय, कुमार्ग
 २ निषिद्धाचरणम् ३ कुम्भितप्रदाय ।
 कुपय्मी, वि (हि कुपय) कुपयिन्, कुमा
 गिन्, वदाचारिन् ।

कुपय, स पु (स) दे 'कुपय' ।
 --गामी, वि (स मिन्) दे 'वपय' ।
 कुपय्य, स पु (स न) रोगजनको आहार
 बिहारी ।
 कुपात्र, वि (स न) अयोग्य अनर्ह, निर्गुण
 जनधिकारिन् ।
 कुपित, वि (स) क्रुद्ध, रुष्ट ।
 कुपुत्र, स पु (स) दे 'वपूत' ।
 कुप्या, स पु (म कुपुप) कूपक कुप
 (स्त्री) चममय स्नेहपात्रम् ।
 --होना, सु आप्ताम् स्वयम् (भ्या आ मे)
 पीनोभू० ।
 कुप्यी, स स्त्री (हि कुप्या) चर्मदृपी लघु
 कुपुप -कुत्त (स्त्री) ।
 कुप्पर, स पु (अ कुप्प) यवनेतरसप्रदाय
 २ यवनमतविरोधिकायम् ।
 कुफल, स पु (अ) फाल, शारवणम् ।
 कुय, स पु (स कुम्भ >) ककुद द, कुद
 (स्त्री) ।
 कुयदा, वि (स कुयन) कुञ्जक, ग्युवन, वक्र
 पृष्ठ गडुलर, गडु। स पु कुञ्ज इ ।
 कुयदी, स स्त्री (हि कुयदा) ननशीर्षा
 यष्टि (स्त्री) २ दे 'कुञ्जा' ।
 कुयानि, म स्त्री, दे 'कुदव' ।
 कुबुद्धि, वि (स) मूर्ख, मन्दमति । स स्त्री,
 मोक्ष्य मूढता ।
 कुवेर, स पु (म कुवेर) धनद, यक्षराज,
 वैश्वण, रात्रराज इष्टावसु नरवाहन
 निषीधर ।
 कुवेला, स स्त्री (स कुवन्) कु, -समय बाल
 २ अवसर, अवोयकाल ।
 कुवन्, वि (स) दे 'कुवदा' ।
 कुञ्जा, स स्त्री (स) कमदासी २ मषरा
 नाम्नी वैवेयीदासी । वि वक्ष्ण, कुञ्जा ।
 कुमा, स स्त्री (स) काबुलनदी
 २ भूमिच्छाया ।
 कुमर, स स्त्री (तु) मैय, सहायता ।
 कुमरुम, स पु (स कुमरम्) वैसर रम्,
 वाग्मीरजम् ।
 कुसुक्कमा, म पु (कुं म) लाशा, -गोल -
 वर्तुल २ अलङ्करणोपपुत्र वाच्यो
 ३ संकीर्णमुखा-कमल-कर ।

कुमाच, सं पु (अ कुमाच) कौशेयवस्त्रभेद ।
कुमार, सं पु (सं) बाल, बाल्य २ पुत्र
३ राजपुत्र ४ युवराज ५ कात्तिकेय
६ अप्राप्तयौवन ७ मनसाद्य ऋषय
७, भारतवर्ष-पंम् । वि, दे 'कुआरा' ।

कुमारबाज, सं पु (अ + फा) चनकार,
कितव ।

कुमारी, सं स्त्री (स) बाला, बालिका, कन्या
२ पुत्री, ३ राजपुत्री ४ द्वादशवर्षा कन्या
५ महा, घृतकुमारी ६ सीता ॥ पार्वती ।
वि दे 'हुँआरी' ।

कुमारी, सं पु (स) दे 'कुपथ' ।

कुमुद, सं पु (सं न) कैरव, चन्द्रकान्त,
कन्दार, शीतलक, इन्दुसमल, चन्द्रिकाजल,
गन्धसौम, कुबलयम् २ कर्पूर-र ३ रूप्यम् ।

—वधु, स पु (सं) चन्द्र २ कर्पूर-रम् ।

कुमुदिनी, सं स्त्री (स) दे 'कुमुद'
२ कुमुदवत् सरस् (न) ।

—पति, सं पु (स) चन्द्र ।

कुमेरु, सं पु (मं) दक्षिणध्रुव ।

कुमोदिनी, सं स्त्री, दे 'कुमुदिनी' ।

कुम्भैत, स पु (तु) पिंग, वर्ण-रंग
२ पिंगार ।

कुम्भबा, सं पु (स कुम्भा) दे 'नाशीफल' ।

कुम्भलाना, कि अ (स कुम्भलान) म्लै-म्लै
(भ्वा प अ), विशू (कर्म), विवर्णी भू ।

कुम्हार, स पु (म कुम्भकार) कुलाल, चक्रिन् ।

कुम्हारिन, सं स्त्री (हि कुम्हार) कुलाली,
कुम्भारी, चक्रिणी ।

कुरग, स ॥ (स) हरिण, मृग २ कृष्णमार ।

कुरग, वि कुर्ग, निम्बराग ।

कुरगी, स स्त्री (स) कुर्गा, हरिणी ।

कुरड, स पु (म कुरुविंदम्) काचलवणम्
२ माणिक्यम् ।

कुरकुरा, वि (वतु कुरकुर) भुरुर, गिदुर ।

कुरवान, वि (अ) इष्ट, हुन, बलित्वेन दत्त ।

कुरवानी, सं स्त्री (अ) वधू, याग २ बलि,
वत्सर्ग, आलम् ३ रागर्पण, परित्याग ।

कुरमी, स स्त्री (अ) आमदी, पीठ,
आमनम् २ ४ स्तम्भ प्राकार मवन, मूलम्

५ वशपरपरा ।

—नामा, सं पु (अ + फा) वश, वृश्च -
परपरा ।

आराम—, सं स्त्री (फा + अ) विश्रामासदी ।

कुरा, सं पु (अ) दे 'पौमा' ।

कुरान, स ॥ (अ) यवनधर्मपुस्तकम् ।

कुराह, सं स्त्री (स कु + फा राह) दे 'दुपथ' ।

कुरीति, सं स्त्री (स) कप्रया, कदाचार,
कुन्यवहार ।

कुरु, सं पु (सं) नृपविशेष २ प्रान्तविशेष
३ कुरुवंशज ।

—चेत्र, स पु (स न) महाभारततन्त्राम
भूमि (स्त्री) ।

कुरुप, वि (सं) विरूप, कदाकार, दुर्दर्शन ।

स पु (सं न) वैरूप्य, कदाकार ।

कुरुपता, सं स्त्री (सं) दे 'कुरुप' सं पु ।

कुरेद (ल) ना, कि स (सं कर्तनम्)

वत् वि, लिख् (तु प से), तद् (भ्वा प

से), गुर् (तु प मे), घृप् (भ्वा प से)

त्वञ् (भ्वा प वे) वस्त्रन् (भ्वा प से) ।

कुर्व, वि (तु) ऋणहेतो अपह्न ।

—करमा, कि स ऋणहेतो अपह्न (भ्वा
उ अ) ।

—अमीन, स पु (तु + फा) ऋणाग्निहेतो
द्रव्यापहर्ता, राजकर्मचारिन् ।

कर्षी, स स्त्री (तु कर्क >) (रानादरा)
सम्पत्तिहरणम् ।

कुर्ता, स पु (तु) चोल, उरोवकम् ।

कुर्ती, स स्त्री (तु, कुर्ता >) आगिष् क,

कूर्पासक-रम् ।

कुरप, स पु [रा कु (क) पंर] जागु (न)

चक्रिका २ कफोति (पु स्त्री) कपणी ।

कुर्बानी, दे 'कुरबानी' ।

कर्री, स स्त्री (देश) कोमलास्थि (न) ।

कुर्स, स पु (अ), श्रावक, गुल्फिका, वटिका ।

कुर्सी, दे 'कुरसी' ।

कुलग, स ॥ (अ) रक्तशीर्षो घूसर खगभेद ।

२ कुक्कुट ३ दार्य-घो यनुष्य ।

कुलंजन, सं ॥ (सं) कुलन, कुर्णन, गध

मूल २ गावला नागलता, मूलम् ।

कुल, सं पु (सं न) वश, अन्वय, वशावली

लि (स्त्री) २, जाति (स्त्री) ३ समूह

४ गृहम् ५ वाममार्गः ।

- कलक, स ॥ (सं) कुलाभार, कुलपासल ।
 —कानि, स खी (स + हि) कुल, गौरव
 मर्यादा ।
 —कारण, स ॥ (स) वशीकारक ।
 —पति, सं पु (स) गृहस्वामिन् २ दत्त
 सहस्रच्छान्ताणा पोषकोऽध्यापकश्च ३ विश्वविद्या
 लयस्य उपप्रधानाधिकारिन् (अ० वाइस
 चांसलर) ।
 —वती, म खी (स कुलवती) कुलीना,
 सङ्गता, भार्या ।
 कुल, वि (अ) मकल समस्त निगिर ।
 कुलकुलाना, कि अ (अनु) कुलकुलध्वनि क ।
 नीति—, सु अनीव क्षुध (दि प अ) ।
 कुलक्षण, स पु (स न) अपराज्य, दुश्चिह्न
 २ कदाचार, राक्षसचरणम् । वि दुराचारिन् ।
 कुलचा, स पु (फा वलीचा) सविष्णोऽयूष
 २ दे 'पूजी' ।
 कुलटा, स खी (म) ० यमिचारिणी, पुशली,
 वधनी जडा, स्त्रीरिणी निशाचरी, नपारण्डा ।
 कुलध, स पु (स कुलधा) वधुध्या,
 लोचनहिता, दुष्प्रमादा ।
 कुलधी, स खी (म कुलध) बालवृत्त
 (शस्त्रमेद) ।
 कुल्फ, स पु (अ वपल) दे 'ताला' ।
 कुल्फी, स पु (फा रुफे) दहडोगी, बोलिका,
 शाकमेद । २ दे 'कुल्फी' ।
 कुल्फी, स खी (दि कुल्फ) भूमिपान
 यन्त्रस्य भुग्ननाली २ हिमसन्तानीनिर्माण
 पात्रम् ३ हिमसन्तानी, पनमपुरदुग्धम् ।
 कुलकुलाना, कि अ (अनु कुलकुल)
 दुःखाद् अगानि आहूय (स्वा प अ)
 २ अत्राणि गभीर स्वन् (स्वा प से)
 ३ वि-सप्र, सप् (स्वा प अ) ४ व्याकुल
 (वि) भू ५ दे सुखानां ।
 कुलकुलदह, स खी (पूर्व) दानै सर्वत्र,
 वृमिसदृशी चेष्टा २ कटुता कञ्चुरता ।
 कुलहा, स पु (फा कुलाह) शकाकार
 शिरस्कम् ।
 कुलदी, म खी (दि कुलहा) शिञ्जिर
 स्त्रम्, दे 'वनटोप' ।
 ~ कुलौच, स खी (वु कुलाच) दे 'छात्रे' ।

- कुलावा, स पु (अ) लोहपुट २ वरिष्ठ,
 मत्स्यवेधनम् ३ द्वारसधि (पु) ४ शृङ्गलाग,
 अद् द (खी) ५ अर्गल लम् ६ नलमार्ग,
 नाली ।
 कुलाल, सं पु (अ) कुम्भकार २ वन-
 कुण्ट ३ उलूक ।
 कुलिक, स ॥ (स) कलाविद (पु)
 २ शिल्पिन् ३ कुलीन ४ कुलपति ।
 कुलिश, स ॥ (स) वज्र-अ, पवि
 २ विद्युत् (खी) ३ कुठार ।
 कुली, स पु (वु) भार, वाह हर, भारिक
 २ कर्मक (का) र धर्मजीविन् ।
 कुलीम, वि (स) महाकुल, अभिमान भार्य,
 सम्भ्य, सत्कुलम् ।
 कुलीनता, म खी (स) अभिजात्य आर्दता ।
 कुलेल, स खी (सं कल्लोल ~) क्रीडा, ग्ला,
 विहार केलि (पु खी), विलास, लीला ।
 कुल्या, स खी (स) भुद्रहनिमनर्दा
 २ भुद्रनदी ३ पय प्रणाली ४ कुलक्षी ।
 कुल्ला, स पु (स ववर >) वल्लु, वलुक,
 लुलुक ।
 कुल्हड़, स पु (स कुल्हरिया) करण, भुद्र
 मृत्पात्रम् ।
 कुल्हाड़ा, स पु (स कुठार, दे) ।
 कुल्हिया, स खी (दि कुल्हड़) धुद्रकरण,
 अतिभुद्रहृत्पात्रम् ।
 कुबलय, स पु (म न) नील, कुमुद कैरव-
 शशिनातम् २ नील, कमल-उपलम् ३ भू
 भण्डलम् ।
 कुबाच्य, वि (स) अदलील, अशिष्ट, अवाच्य ।
 स पु (स न) गाली, कुबचन अपशब्द ।
 कुवेणी, स खी (स) मत्स्यकरणी
 २ कुम्भितवेणी ।
 कुवेर, स पु (स) कुवेर, दे ।
 कुभ, स ॥ (स) कुप, दर्म परिग्रम्
 २ जलम् ३ रामपुत्र ४ काल ।
 कुषान, स पु (अ) उपधान, उपवर्द्ध,
 उपवर्द्धनम् ।
 कुशाल, वि (स) दक्ष, चतुर, प्रवीण, निपुण,
 निशारद, विचक्षण २ श्रेष्ठ, भद्र ।
 स पु (स न) सुगं क्षेम, मण्यम्, भद्र,
 शिवम् २ कुशमादिन् ३ शिर ।

—संम, स पु (सं न) सुख, संम। ममलन् ।
सुशब्दता, सं का (स) पाठव, चातुर्य,
निपुणा ।

सुशा, म स्त्री (सं न) दर्म, बुध,
पवित्र, साधक हस्वगर्भ, दौर्धम (पु न) ।

सुशाग्र, वि (स) तीक्ष्ण, सूक्ष्म, तीव्र प्रतर ।

—सुद्धि, वि (सं) तीक्ष्णमणि। सं स्त्री,
तीव्र, नति (का) ।

सुशादगी, स का (पा) विशालता
२ विस्तार, विस्तृति (स्त्री) ।

सुशादा, म पु (पा) विस्तृत आवरण
रहित ।

सुशामन, स पु (म कुश + कामन) कुश
विहार, दर्भासनम् ।

सुशासन, म पु (म कुश + शासनम्) कुशा
सनम्, सुसिन्धुसाम्यवस्था ।

सुशील, वि (सं) कुशल, दुर्लभ, दुस्वभाव ।

सुशता, म पु (पा-न) पातुभक्तम् (न) ।

सुशती, सं स्त्री (पा) निपुण, मल्ल-बाहु-
पुङ्गव ।

सुष्ट, स पु (सं न) शिष्ट, श्रेष्ठ, नटलक,
दुश्चनेत् (न) २ दे 'कुश' ।

—शारान, स पु (सं) वाराहीकन्द २ गौर
मर्दप ३ क्षारीयवृक्ष ।

शुष्ठी, वि (म दुष्ति) शिष्टि ।

कुष्माण्ड, स पु (स) द 'कुश' ।

कुमग, स पु (स) कुम, मगति (का) ।

कुममय, सं पु (म) कुम्भ, अनुमममय
२ अनवसर, अममय ३ विपत्काल ।

कुमाहृत, स का (स कु + अ मादन)
अनुममुहूर्त, अनवसर, कुममय ।

कुर्माद, म पु (सं न) कर्तुर्धन्य, बुद्धि
(स्त्री) ।

—जीवी, दे 'सूरजोर' ।

—पय, दे 'सूरजोर' ।

कुमुग्म, स पु (स न) वल्लभवन, महा-
रत्नम् २ दे 'केमर' ।

कुमुग्मा, स पु (स कुमुग्मन्) कुमुग्म
रा २ अहिषेनमानिनिमिमादकद्रव्यम् ।

कुमुम, सं ॥ (स न) पुष्प, प्रमूल, सुम,
सून, मनीष, तुमनग (स्त्री, केवल बहु)
२ लघुवाक्यनय गन् ३ कौरवम् (न) ।

—पुर, सं पु (सं न) पागलिपुत्रम् ।

—वाण, सं पु (सं) वानदेव ।

कुसुमाचलि, स स्त्री (स पु) पुष्पाचलि ।

कुसुमित, वि (स) पुष्पित, लघु, पुष्पित ।

कुसुर, सं पु (अ) अपराध, स्तुतितम् ।

—घार, वि अपराधिन, दोषिन् ।

कुहक, स ॥ (सं न) मगदा, अभिचार,
इन्द्राजित् २ इन्द्राजित् ३ वचक ।

कुहकना, कि अ (अनु कुह) कुहरव ह,
दृज (स्वा प मे) ।

कुहनी, म स्त्री (स कपोति पु) कपोति
(पु स्त्री), कपोति, कु (कु) पति ।

कुहर, म पु (स न) छिन्, विषर, बिल,
राम्भ ।

कुहरा, स पु (स कुहरी) तुषार, खवाप,
भूमिका, कुहिका, कुम्भिका ।

कुहराम, स पु (अ कुहर + आम) विलाप,
अभ्युदय, परिवेदना २ मनु सनुम् ।

कुही, स स्त्री (स कुषि) द्यौ, दान्तक,
शरादन, कपोतारि ।

कुहुक, पु, दे कुह (२) ।

कुहुकना, कि अ, दे 'कुहकना' ।

कुह, म स्त्री (स) अनावस्था २ कौक्कि-
मनूर, भाग्य ।

कुँचा, सं पु (सं कुचम्) शोभनी, समार्द्धनी,
कुचम् ।

कुँची, म स्त्री (हि कुँचा) लघु-मुद्र,
शोभनी-कुचम् २ लोमनयी मार्गनी

३ तुलिका, बर्ग, तुली-तुलिका ।

कुँच, स पु (स कुच-चा) कुच-चा,
कलिक, कालिक ।

कुँड, सं ॥ (सं कुडम्) सेवन नी २ सीता,
हलस्ता ३ 'खोद' ।

कुँडा, स पु (सं कुडम्) (जलाशय) वृह
नृपावन् २ द्रोणी-नि (स्त्री) ३ कुमुन
पात्रम् ।

कुँडी, सं स्त्री (हि कुँडा) लघुपात्रा-द्रोणी-नि
(स्त्री) २ पात्रा-चक्र-वन् ।

कूक, स स्त्री (अनु) कोकिल-वृजितम्
२ वेवा, मयूरध्वनि ३ दीर्घमयूरध्वनि ।

कूकना, कि अ (हि कूक) कून् (स्वा प
से), कुहरव ह, केका क ।

कूर, स पु (सं कुकुर दे) ।
 कूच, सं पु (तु) प्रत्यान, प्रवाण, अपक्रम
 २ कटन्याग ३ यात्रा ।
 —करना, कि अ, प्रस्था (भ्वा या अ)
 प्रया (अ प अ) ।
 कूचा, स पु (फा च) बीबी, दे 'गर्नी' ।
 कूजन, स पु (स न) कूजिन, कूरव,
 रोगध्वनि, विरत, गुंनम् ।
 कूजना, कि अ (सं कूजन्) कूच् (भ्वा
 प से) क (अ प अ), वि-ह (अ प
 से) २ गुज (भ्वा प से), हुक ।
 कूजा, स पु (फा) सनालीक करव ।
 —मिसरी, स स्त्री, अर्द्धगोलाकारा घनीकृता
 सिता ।
 कूजित, वि (स) ध्वनित, स्वमित, गुञ्जित
 झङ्गल, कठरवपूर्ण ।
 कूट, सं पु (स न) छल, कषट-ट, माया,
 वञ्चना, प्रतारणा २ अमरव ३ शृंग विषाणम्
 ४ लक्षितारम् ५ राशि ६ गूढार्थवार्ता,
 सनिद उपालम्भ ७ प्रहलिका, गूढप्रश्न
 ८ लोहमुद्रा ९ हरिणालम् १० प्रच्छ-
 भवेरम् ११ नगरद्वारम् १२ भग्नशृंगो
 वृषम् ।
 वि, अमरवरादिन् २ प्रवञ्च ३ कृषिम्
 ४ श्रेष्ठ ५ निश्चल ।
 —नीति, स स्त्री (सं) दौत्यमर्म् (न)
 —युद्ध, सं ॥ (सं न) कषटमग्राम ।
 —योजना, स स्त्री (स) वृचनम् ।
 —माची, ॥ पु (म -क्षिन्) मिथ्यासाक्षिन् ।
 कूट, स स्त्री (हि वाटना वा कृत्वा) कर्तन,
 कृतनम् २ ताडन, कुट्टनम् ।
 कूर, स पु (म न) छल, कषटम्
 २ उमेर, उत्तुंगता ३ काल-र, कुक्षिकम् ।
 कूटना, वि ॥ (स कुट्टनम्) कुट्ट-पूण्-
 गट (सु), विष् (उ प अ) २ उच्छ-
 तट (उ) ।
 स पु तथा भस्व, कुट्टन, कूर्जन, गण्डनम्,
 वेपगम् २ ताडन, प्रहरणम् ।
 —योग्य, वि, कुट्टनीय, कूर्जितव्य ।
 —वाला, सं पु कुट्टव, वेपव, ताडयिन् ।
 कूटा दुभा, वि, कुट्टिन, विट, ताडित ।

कूरस्य, वि (सं) मिगूरस्य २ निश्चल
 ३ नित्य ४ गूढ ।
 कूराच, स पु (सं) कूर कषट-अश्व-
 देवन-सार ।
 कूरात्यान, स ॥ (स न) गुप्तार्थ-गूढार्थ-
 वधा-उपाख्यानम् ।
 कूरा, स पु (स कूर = राशि >) अवसर,
 लच्छिष्ट, मल, निरसारस्तुसम् ।
 —करन्ट, स पु, दे 'टूटा' ।
 कूद, म स्त्री (हि 'कूदना') लव, लु,
 लुति (स्त्री) लवन क्षप-पा, कम्पन,
 उत्प्लव ।
 —कौद, स स्त्री कूर्दनल्लन, क्षववलितम् ।
 कूदना, कि अ (सं कूर्दनम्) कूर्द (भ्वा
 आ से), उत्प्ल (भ्वा आ अ), लव
 (भ्वा प से) २ प्रमुद (भ्वा आ से) ।
 स पु, दे 'कूद' ।
 —कौदना, वि अ, क्षरतत वक्षः । २ व्या
 याम कृ ।
 कूप, सं पु (स) द 'कूर्वा' २ छिद्र, रभम् ।
 —मडूक, म पु (सं) व्यवहागनभिः,
 अपकृष्टि, अत्यदक्षिन् । २ अधुमेक ।
 कूपन, स पु (अ) पल्लिषा, कूपनम् ।
 कूपी, स स्त्री (सं) कूपव, क्षान्त १ दे
 'कूपी' ३ नाभि (पु स्त्री), नामी,
 गुदिका ।
 कूरव, स पु (॥ कूर >) कूद-दम् ।
 कूर, वि (स कूर) निर्दव, निर्वृण, नृजस
 २ अवसर ३ कुप ४ अलम् ५ मूर्त
 ६ कुलक्षण ।
 कूर्म, स पु (स) क-छप, दे 'कूडा'
 २ विष्णो कच्छपावतार ३ पृथिवी ४ ७
 ऋषि प्राणनाडी-आसन, विशेष ।
 कूर्, स पु (स न) तट दीट, तीरम्
 २ समीप, निगट ३ कूया ४ सरम् (न) ।
 कूरहा, स पु (सं मोटम् >) निगहास्थि
 (न) ।
 कूर्माड, म पु (स) द 'कूर्मा' ।
 कूर्च्छ, सं पु (स न) दुग, कषट् २ पापम्
 ३ मूत्रकृच्छ्रोण ४ व्रतभेद । वि, दुष्कर,
 दुस्साध्य ।

कृत, वि (स) विहित अनुष्ठित रचित
संपादित, निर्मित । स पु सययुगम् २ चतुर
शति सखा ।

—कार्य, वि (स) सफल सिद्धार्थ ।

—कृत्य, आप्तकाम सफलमनोरथ ।

—युग, स पु (स न) सययुगम् ।

—विद्य, वि (स) विद्वन्, पण्डित, बहुश्रुत ।

कृतक, वि (स) कृत्रिम, अनैसर्गिक अस्वा
भावक २ अनित्य (न्याय०) ।

—पुत्र, स पु (म) दत्तक, दत्तम सुत ।

कृतग्र, वि (स) कृतशतारहित अकुनबोदम् ।

कृतग्रता, स स्त्री (स) अकृतवेदिता उपकार
विस्मरणम्, कृतशताराहित्यम् ।

कृतज्ञ, वि (म) उपकारण कृतविद्,
कृतबोदम् ।

कृतज्ञता, स स्त्री (म) उपकारज्ञता, उप
कारस्मरण, कृतबोदत्वम् ।

कृतार्ज, वि (स) सचिह्न चिह्नित, अक्लि,
भाक् ।

कृतार्जलि, वि (स) बद्धानलि, बद्धकर ।

कृतांत, स ॥ (स) कृत्य २ यम ३ पापम्
४ देवता ५ पूर्वनाममफलम् ६ सिद्धांत
७, शनैश्चरन्तारः ।

कृतार्थ, वि (म) पूणकाम, द 'कृतकार्य'
२ सत्तुष्ट ३ निपुण ४ सुख ।

कृताख, वि (म) सदाख साख सन्नद्ध
२ अकृविद्, शखानपुण ।

कृति, स स्त्री (स) चेष्टा, क्रिया २ कमन्
(न) कायम् ३ इन्द्रजालम्, माया ४ रचना,
ग्रन्थ ७ प्रहर ८ क्षति (स्त्री) ।

कृती, वि (स) कृतिन् दुष्टाल, दक्ष पटु
२ पुण्यामन्, सुचित्र ।

कृतोदक, वि (स) ज्ञान, कृतज्ञान, कृतमिषक

कृत्ति, स स्त्री (स) शूचर्मन् (म) २ त्वन्
(स्त्री) ३ भूने ४ द 'कृत्तिका' ।

—वासा, स ॥ (स-वासन) शिव ।

कृत्तिका, स स्त्री (स) बहुला, आश्रयदा,
नक्षत्रविशेष ।

कृत्य, स पु (स न) अनुष्ठेय, कर्तव्य,
विधेय धर्म, आवश्यक कायम् २ कर्मन्
(न) ।

कृत्रिम, वि (स) कृतक, अनैसर्गिक ।

कृतन्त, स पु (स) कृतप्रत्ययान्तशब्द (ल
पाचक, योक्तु इ) २ कृतप्रत्ययविधायक व्या
करणप्रकरणम् ।

कृपण, वि (स) कदर्थ, द 'कजूस' २ क्षुद्र ।

कृपणता, स स्त्री (म) कदर्थता, द 'वजूसी' ।

कृपया, क्रि वि (स) सदाय, सरूप, सानु
कप, सानुग्रहम् ।

कृपा, स स्त्री (स) करुणा दया, अनुग्रह,
प्रमाण उपकार, अनुकपा २ क्षमा, मर्षणम् ।

—निधान, स पु (स न) दयानिधि ।
वि अत्यन्तकृपानु ।

—पात्र, स पु (स न) प्रसादमानन, अनु
ग्राह्य दयाई ।

—मिथु, स पु (स) दयासागर अति
दयालु ।

कृपाण, म पु (स) सङ्ग अस्ति २ दै
कटार' ३ दबकवृक्षमैत्र (छन्द) ।

कृपालु, वि (स) दयालु काराणक, कृपामय ।

कृपालुता, स स्त्री (स) दयालुता, कार
णिकता ।

कृमि, स पु (स) कीट, नीलाग, क्रिमि
(पु) २ लाक्षा ।

—कोश, स पु (स) पट्टकीट, कोप-गृह ।

—नाशक, वि (स) कृमिघ्न, कृमिहर ।

कृमिक, स पु (स) कीटक, लघु, कृमि-
क्रिमि ।

कृमिज, स ॥ (स न) अपुर (न) राजाई
२ कीशेष ३ दै 'हिरमिजी' ।

कृमिजा, स स्त्री (स) कीन्जा, लाक्षा ।

कृमिल, वि (स) कृमिजल चित्त-पूर्ण, कृमिमय ।

कृमिला, स स्त्री (स) बहुप्रमू (स्त्री),
बहुप्रजा ।

कृश, वि (स) क्षीण, क्षाम, तत्रय-कृशाग
(गी स्त्री) प्रजानु, दुर्बल २ अल्प, स्तोक,
क्षुद्र, सूक्ष्म, अणु लघु ।

कृशता, स स्त्री (स) क्षीणता, क्षामता,
दुर्बलता २ अल्पता, सूक्ष्मता ।

कृशागी, स स्त्री (स) तत्रगी, क्षीणागी,
तन्वी ।

कृशानु, स ॥ (स) अनल, अग्नि (पु)
२ चित्रक ।

कृशोदरी, वि स्त्री (स) तनु-क्षीण, मध्या मध्यमा ।

कृपक, स पु (स) कृषीविल, कृषिक, कृषाण ।
कृषि, स स्त्री (स) कर्षण, हलश्रुति (स्त्री) ।

कृष्ण, स पु (स) वासुदेव, केशव, चक्र पाणि (पु) धकिन् (पु), नन्दाजन, पीतांबर, माधव, मधुसूदन, हृषीकेश, गोपाल, गोवर्धनधारिन् (पु) गोविंद, दामोदर, मुरारि (पु), राधारमण । २ कोकिल ३ बाक ४ कृष्णपक्ष । वि, बाल, असिन, २ नील मेचक, स्वाम ३ तिमिर, निष्प्रम ।

—जटा, स स्त्री (स) जटामासी, मुण्डगन्धिन मूलभेद ।

—जीरक, स पु (स) कृष्णा, काला, बहुगन्धा ।

—द्वेपायन, स पु (सं) वेदम्यास, महा भारतकार ।

—पद्म, स पु (स) असिनपद्म, प्रतिपदा समावस्थाताति पद्मदश दिनानि ।

—लक्ष्मण, स पु (स न) रचक, अभ, सौवर्चल ।

—लोह, स पु (स न) अयस्कान, जुह्व ।

—शार, —सारग, —सार, स पु (स) मृगभेद ।

कृष्णसा, स स्त्री (सं) कृष्णिमन् (पु), कालिमन् (पु), नीलत्व, श्यामत्व ।

कृष्णा, स स्त्री (स) शीपदी, पाचाली २ कालीदेवी ३ दक्षिणदेशे नदीविशेष ४ कृष्णजीरक ५ कृष्णद्राक्षा ६ नयनतारा ।

कृष्णाष्टमी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णजन्मदिवस, जन्माष्टमी, भाद्रमासस्य कृष्णपक्षस्याष्टमौ तिथि ।

कृष्णी, स स्त्री (स) कृष्ण, रजनी रात्रि (स्त्री) ।

कृष्य, वि (स) वर्षणीय, कृषियोग्य ।

कैचुजा, स पु (स किंचुलक) महीलता, मृदूपट्ट, मिथिलिक ।

कैचुल, सं स्त्री (स कचुल) निर्मोक, अदि भुजगसर्प, त्वच् (स्त्री) ।

कैचुली, वि (दि कैचुल) वचुक, सारग-वृक्ष । स स्त्री दे 'कैचुल' ।

कैद, स पु (स न) मध्य पच, मध्यभाग २ उदर, गर्भ ३ मुख्य प्रमुख, नयानम् ।

कैट्टी, वि (स कैट्ट >) मध्यम, मध्यस्थ, मध्य, गत वतिन्, मध्य, कैट्टीय ।

—करण, स पु (स न) मध्यवर्तिन क, एकतंत्री क ।

कैसर, स पु (अ) कर्कट कर्कटिका, रोग, कर्करफोट ।

कै, प्रत्य (हि का) दे 'का' ।

कैकदा, स पु (स कर्कट) कर्कटक, कुलोत् ।

कैकय, स पु (स) १ वर्तमानकादमीराज मनप्रदेशविशेष २ दशरथपुत्र ।

कैकयी, स स्त्री (स कैकेयी) ।

कैका, स स्त्री (स) मयूरवाणी ।

कैकी, स पु (स किन्) मयूर, सिद्धिन् ।

केत, स पु (स) मवन, गृह २ स्थान ३ ध्वज, केतव ४ बुद्धि (स्त्री) ५ मन्त्र ६ मन्त्रणा ७ अक्षम् ।

केतव, स पु (स) केतवीकृष्ण २ तत्पुष्प ।

केतक, वि (स कति + एक) दे 'कितने', 'कितना', बहुत ।

केतकी, स स्त्री (स) सूचीपुष्प, केतक, कवचच्छट्ट, बिकला, ककचा, गणपुष्पा ।

केतन, स पु (स न) मवन, गृहम् २ स्थान ३ चिह्न ४ ध्वज ५ निमन्त्रण, आह्वानम् ।

केतली, स स्त्री (अ केटल) उल्ला, स्फापी, लोहा लोहम् (स्त्री) ।

केतित, वि (स) अमन्त्रित, आहूत, भावा रित २ जनाकोर्ण लोकाभ्युषित ।

केतु, स पु (स) ग्रहविशेष २ उल्का, उल्का २ शान ४ दीप्ति (स्त्री) ५ ध्वज ६ चिह्नम् ७ राक्षसविशेषस्य करण ।

—तारा, स पु (स स्त्री) धूमकेतु (पु), उल्का ।

—मान्, वि (स मन्) तेजस्विन् २ ध्वजिन् ३ पुत्र ।

—पाल, सं पु (सं न) जम्बूद्वीपस्य नवार्ध दानर्गलखविशेष ।

—रत्न, स पु (सं न) वेदवेमणि (पु) ।

केयीरद, स पु (अ) मृदुराला ।

केलमियम, सं पु (अ) चूर्णित (न), सटिकम् ।

केदार, सं पु (सं) श्रीविश्वे २ हिमालये

तीर्थयात्रा ३ आलवाल ४ मेररागपुत्र
५ मनुष्य क्षत्रभाग ।

केन, स पु (स, 'कि' का तृतीया एकवचन)
उपनिषदविशेष ।

केमरा, स पु (अ) छायाचित्रपेठिका ।

केमिस्ट्री, स स्त्री (अ) रसायनम् ।

केयूर, स पु (स पु न) अणुद, बलय व ।

केराना, स पु दे 'किराना' ।

केराना, स पु (अ किथियन >) भारो
पाय २ लखल, कायस्थ, लिपिकार ।

केराया, स पु (कराया) ।

किराने की गाथा, स स्त्री पण्य माधारण
वाहन-रथ ।

केला, स पु (स बदल), (वृक्ष) कदली,
रभा, मौवा, कादीना, सहकला, गुच्छफल,
निमरा, कलमा, मो (री लो) पत्र,
वारणवामा । (फल) बदलीफल, मोल ६ ।

केलि, स स्त्री (स) क्रीडा, सत्ता २ रति
(स्त्री), मैथुन ३ नर्मन् (न), परि (री)
हाम ४ शुभवा ।

—कला, स स्त्री शारदाजीना २ रतिविशाल ।

केलोरी, स स्त्री (अ) उपन् ।

केवट, स पु (स केवट) नाविक, पोत
वाह औटपिन्त २ धीवर, केवर्न जगिक,
मत्स्यजीव ।

केवनी, स स्त्री (हि केवट) मिश्रविदल,
बैतकमकर ।

केवडा, स पु (स केविका) केवी, कविका,
झारि (पु), गहागभा नृपवज्रमा २ कवी
पुप ॥ ३ मङ्गलगासव ।

केवल, वि (स) एक, अद्वितीय २ विशुद्ध
३ श्रेष्ठ । कि वि, पत्र, केवल-मात्र (समा
सात में) २ सामन्त्येन, संपूर्णतया ।

केवलात्मा, स पु (स-रन्) परमेश्वर, जग
दीश २ पुण्यसत्त्वमनुष्य, पूतात्मन् ।

केवली, स पु (स लिन्) मौखिकापिकारी साधु
२ तीर्थकार (जेन) ।

केवौच, स स्त्री (स कञ्चु >), (लता)
कपिकञ्चू (स्त्री) स्व-आत्म गुप्ता, कटूरा,
मर्कटी २ (कली) कपिकञ्चू-बीजकोश शिबी ।

केवाड़, स पु, दे 'विवाह' ।

केदा, स पु (स) बाल, कच, कुन्त,
चिहुर गिरोह, शिरमिन मूर्द्धन ध्वनि
२ किरण ३ वक्रण ४ त्रिगु ५ मूर्ध
६ विद्व (४८) अष्ट-मिह, स्कंधदेश ।

—कर्म स पु, वेदकर्मन् (न), वस,
वियस प्रमाणम् ।

—कलाप-पाश, स पु (स) प्रमाणितकेला,
अलक, करल ।

—ग्रमघनी, स स्त्री } ककनिका दे कदी ।
—मार्तक, स पु

—विन्यास, स पु (म) दे 'वेदकर्म' ।

वेदक, वि (म) वेदकर्म-वेदविद्याम कुम्भ,
वेदप्रमाणक ।

केदारी, स पु (म-रिन्) मिह मृग
२ घोटक (३-४) पुत्राय नागवेश्वर वृम ।

केदारेश्वरी, स स्त्री [म-शि(न)] अयोध्या
वेदग्रन्थपूर्वकप्रवृत्तमुद्र ।

केसिनी, स स्त्री (स) सनेगी गा झुक्की-
वा ।

केसी, स पु (स वेसिन्) मिह २ घोटक
२ सुदेश (पुरुष) ३ राजनस्थिप ।

केसू, स पु दे 'वेस' ।

केसू, स पु (अ) व्यवहारपद, काय
२ दुर्गन्धा ३ कोप, पु ।

केसर, स पु (स पु न) कादमीर्ष, कादमी
रज, कुसुम अश्विनिम, वर, बाहि (ही) क,
पीतल, गार, रक्त, लाहितचन्दन, कर्पूर, सवोच,
भीर, वस, पुमृग, घोरम् २ नागवेश्वरहस्त
३ अष्ट-मिह, स्कंधवाला ४ मृग ।

केमराचल, स पु (स) मेरु, सुमेरु, इमादि ।

केमरिया, वि (म केमर >) घनपीत, दुक्त
मवर्ण ।

—बाला, स पु, कुसुमवर्ण घनपीत, वेद-
वेष ।

केसरी, स पु (म-रिन्) दे 'केदारी' ।

केसू, स पु (स विशु) पटाश, रक्त
पुष्पक ।

केहा स पु (स केका >) मयूर, दे 'मोर' ।

केहरी, स पु (स केरिन्) मिह २ अष्ट ।

केंची, स स्त्री (तु) दे 'कतरनी' ।

—करना, पु, अष्टाणि निहृय (तु प से)
छ (क व से) अवच्छिद्य (व प अ) ।

—सौ जवान चलना, सु, शीम-सत्वर-वेगेन
नद् (स्वा प से) भाप (स्वा वा से) ।

कैचुली, स स्त्री, दे 'कैचुली' ।

कै, वि (स कति) दे 'विजने', 'कितनी' ।

अव्य, वा, अपवा, ददा २ मन्वतर ।

—दफा, चार, चेर, कतिवृत्त्व (अव्य),
मतिवार ।

कैप, स पु (अ) दे 'कपू' ।

कै, स स्त्री (अ) कात, वमनोद्धार २ वमन,
वम, वनि (स्त्री), प्रच्छदिका, वमपु (पु) ।

—आना, कि अ, वमनेच्छया पीह (वर्मे),
विबनिवति (सन्मन्त) ।

—करना, कि स उद्, वम् (स्वा प से)
छद् (चु), उच्छिप् (तु प अ), उद्ग
(तु प से) ।

कैतव, स पु (सं न) छल, कपट, वचन
२ दून ३ वैदूर्यमणि (पु) ४ धुल्लू ।

वि, छलिन्, कापदिक २ शठ, धूर्त ३ अश्रु
देदिन्, किन्द, (-वी स्त्री) ।

कैथ-या, स पु (स कथित्य) दधित्य,
ममथ, दधि-पुण्य-कुच-गन्ध-दन्त, -फल ।

कैद, स स्त्री (अ) बचन, निग्रह, निरोध
२ कारा, निरोध-बचन-प्रवेश-वाम, बदी
करण, प्रमह, आमेष ३ नियम, समय,
प्रतिष्ठा, मकेत ।

—करमा, कि स, कारागृहे निक्षिप् (तु प
अ) बधू (प अ) निरुध (र उ अ),
बदीमाह मद् (रु प से), बदीक ।

—होना, कि अ, कराया निक्षिप् बधू निरु
बदीक (सब कर्म) ।

—प्राणा, स पु (पा) कारा, कारागार २,
कारावाम, दन्दि, -शाला-गृह, कथनालय,
चार, चारक, गुस्तिमान ।

—तनहाई, स स्त्री (अ + हा) धकात-
विजन-निधन-आमेष ।

—महज, स स्त्री (अ) सरल सुगम, प्रमह-
आमेष ।

—सखत, स स्त्री (अ + पा) विषम-कुसह,
आसेध, इ ।

कैदी, स पु (अ) बदी दि (स्त्री), बन्दिन्
(पु), कारागृह, प्रमह, प्रमह, इद ।

कैप, स पु (अ) दे 'दोषी' ।

कैपिटल, पु (अ) मूल-धनद्रव्यम्, २ धन,
पुअ-राशि, पुजि (स्त्री) ३ राजधानी ।

कैपिटलिस्ट, स पु (अ) धनिक, बोदीधर,
पुजिपति ।

कैबिनेट, स पु (अ) मन्त्रिमण्डलम् २ बोर्डर
३ मन्त्रागृहम् ।

कैकियत, स स्त्री (अ) अवस्था, रिपति
(स्त्री), दशा २, विवरण, वर्णन ३ आश्चर्य
रपादकघटना ।

कैरव, स पु (स न) कुमुद २ सितोत्त,
मेनकमल । (स पु) बिभ्र २ शत्रु ।

कैरी, स स्त्री (देस) दे 'अविषा' ।

—आम्व, स स्त्री, कपिल पिम्व, नयन-नेत्र ।

कैलास, स पु (स) पर्यवशिष्ट, शिवकुनेर,
निरास ।

—नाय, पति, मं पु (स) शिव ।

—वास, स पु (स) मृत्यु ।

कैवर्त, स पु (सं) दे 'कैवट' ।

कैवल्य, स पु (स न) एकरस, अमलाना
२ अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री) ३ उपनिषद्दिश ।

कैसर, स पु (दे० सी०) समान, राजधि
राज, अधिराज, अधीश्वर ।

कैसा, वि (स बीहरी) बीहरी, विरूप,
किविध, विमाकार ।

कैसी, वि स्त्री (सं बीहरी) बीहरी, विरुपा,
किमाकार, विविधा ।

कैसे, कि वि (हि कैसा) कथ, केन प्रकारेण,
कया रीत्या ।

कौकण, स पु (म) दक्षिणदिशि मानविशेष ।

कौपल, सं स्त्री (स बोमल) पद-
अक्षर, प्ररोह, कित (स) लघु द, उद्भिद
(पु), उद्भिज ।

—निकलना या घूटना, कि अ, प्रह (स्वा
प अ), रघुट (तु प से) उद्भिद (वर्मे)
पुल्लु विकम् (स्वा प से) ।

को, प्रत्य (यह कर्म और समझाने बारक का
प्रत्यय है, इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया और
चतुर्थी के रूपों से होता है । (राम को बर =
उ, राम मूहि, मादण को दे = विप्राय देहि) ।

कोष्ठा, स पु (स बोश-क), (पट्टनीट-)
बोश-क २ दे 'कोषा' ३ पनसर-क-
४ दे 'पकुष्ठा' (पल) ।

कोई, सर्व (स कोऽपि) कथन, कश्चित् (पु), का, अपि-चन चित्र (स्त्री) कि, अपि-चन चित्र (न)।

—कोई, वि स्तोका, वृत्तिपथा, परिमिता।

—चीज, सं स्त्री किमपि (वस्तु)।

—दम मे, कि वि, सपथेव, तत्काले, ह्ययिति, श्राक् (सर्व अव्यय)।

—दम का मेहमान, स पु, मुमुर्षु, आसन्न, मरण-च्युत्सु, मरणाभिमुख, मरणोमुख।

—न कोई, एष ना परो वा, य कश्चिदपि, कश्चित्।

—नहीं, न कोपि-कापि किंचिदपि इ।

कोक, सं पु (स) चक्रवाक, द्रुमचक्र, रथा, चक्र २ नट्टक ३ विष्णु (पु) ४ वृक्ष ५ खजुरीवृक्ष ६ [कोकी (स्त्री), चक्रवाकी, रथायी इ]।

कोक, स पु (अ) न्यहार।

—शाख, स पु (सं न) कोकपटितरचितो रतिविहानग्रन्थ।

साफ, स पु, वृद्धन्याहार।

हाई, सं पु इत्यन्याहार।

कोकनद, स पु (स न) रकोरपल २ रक्त कुमुदम्।

कोरनी, वि (दश) क्षुद्र, लघु।

कोका, स पु (अ) वृक्षभेद।

कोका, स स्त्री (पु) पात्री-रूपमातृ, पुत्र-पुत्री, धात्रेय दी।

—बेली, घैरी, स स्त्री (सं कोकनद + हि बेल) नीरुमुद।

कोकाह, सं पु (स) कर्क, बेनभोजक।

कोकिल, स स्त्री (सं पु) पिक, पर, श्रुत-पुष्प, काल, गंधर्व, मधुगादन, बलकठ, कुहूरव, कावलीरव, वसन्तवृत्त, वनप्रिय, ताम्राक्ष ६ दे 'कोकिला'।

—चैनी, वि स्त्री (स + हि) शुकठी, मधुर भाषिणी।

कोकिला, स स्त्री (स) मदनशलाका, पर, श्रुता पुष्टा, वनप्रिया, बलकठी, ताम्राक्षी, वसंत दूती।

कोकिलावास, सं पु (स) कोकिलोत्सव, आश्र, रसाल।

कोकी, सं स्त्री (सं) चक्रवाकी, चक्री, रथां घनाम्नी।

कोकीन, सं स्त्री (अ कोकेन) कोवापत्र निर्मितमादववदाई * कोकीनम्।

कोको, स्त्री (अनु) काव, वायस २ कालनिकमयइतु (पु)।

कोर, स स्त्री (सं कुश्चि) गर्भाशय, गर्भ कोश प।

—जली, वन्द, वि, वध्या, सन्तानहोना।

—की औंच, स स्त्री, अपत्यप्रेमन् (पु), बाराख्य, मतठिकेह।

—मारी जाना, स्त्री, च्युतगर्भा भू, गर्भ पद (स्वा प से) च्यु (स्वा आ अ)।

—सुलना, मु सन्तान उत्पद (दि आ अ)।

कोचना, कि स, दे 'चुमाना', 'धैमाना'।

कोचवक्त्र, स पु (अ कोचवाक्त्र) सूतासन।

कोचवान, सं पु (अ कोच >) सारथि (पु), सूत, वाहक।

कोजागर, सं पु (सं) आश्विनी द्यूत, पूर्णिमा, कौमुदी, शारदी, शरत्पर्वन् (न)।

कोट, स पु (सं) दुर्ग २ प्राचीर ३ राज प्रासाद।

—बाल, स पु, कोरपाल, दुर्गाभ्यक्ष।

कोट, सं पु (अ) प्रावार रक्ष, कचुक।

कोटर, स पु (स पु न) निष्कुह, तह विवर, प्रानार २ कोटरावन, रक्षार्थ इति भवन।

कोटि, सं स्त्री (सं) शतलक्षस्तस्या, दे 'करोड' ० धनुरम ३ अक्षांश को ४ वर्ष, श्रेणी।

कोटिक, वि (स कोटि स्त्री) कोटी टि (स्त्री) लक्षशतक २ अमरय, अगणित। स स्त्री, सका सरथा तदकाश।

कोटिदा, कि वि (स) बहुधा, बहुधा २ अनेक-कोटिवार। वि, बहुसरवाक, अनेक।

कोटीधर, सं पु (सं) कोट्यधीश, अति घनाट्य।

कोठरी-की, सं स्त्री (हि कोठा) लघु क्षुद्र, कोष्ठ शान्ता, अन्त कोष्ठ, गर्भागार।

कोठा, स पु (सं कोष्ठ) गृह, सदन, आनि, वास, वेदमन् सदन (न) २ प्र, कोष्ठ, शाखा ३ पण्यगार, पण्यवान ४ धान्यागार, कुशल

५ चन्द्रशाला, अश्लुम्बिका ६ पटल, छदिस
(स्त्री) ७ उदर ८ आमशय ९ अत्राणि
(न बहु) १० निभृतागार ११ पत्रभाग
१२ गर्भाशय ।

—विगडना, सु अजीर्णरोमेण पीट (कर्म) ।

कोठार, स पु (हिं कोठा) दे 'भटार' ।

कोठरी, स पु (हिं कोठा) दे 'भटारी' ।

कोटी, स स्त्री (हिं कोठा) भवन, गृह,

हर्म्य २ एकभूमिक हर्म्य ३ पण्य-आगार-

आधान ४ धायागार ५ माहार, कोष

६ वणिज्जनसमुदाय ७ बृहदापण, महती

विक्रयशाला ८ गर्भाशय ९ गुलिकाक्षपण्या

मानेयचूर्णाधान १० मृगमय बृहदायवान

११ लोहमय तावमय वा बृहज्जलपान ।

—बाल, स पु, भेडिन् (पु) वाणिज्येष्ट ।

कोङ्कना, कि स, दे 'कोदना' ।

कोङ्का, स पु (स कवर >) प्रतोद, कवा-

द्या, प्रतिक्व-द्या, ताडनरञ्जु (स्त्री) ।

—मारना, कि स, कदाश प्रतोदेन वा भ्रष्ट

(भा प अ)-तद् जुद-दड (सब चु)-

आरन (अ प अ) ।

कोड़ी, स स्त्री (अ स्कोर) विंशति (स्त्री),

विंशतिवस्तुसमुदाय ।

कोड़, स पु, दे 'कुष्ठ' ।

—में खाज निरुलना, सु, रन्धोपनिपातिनोड

नर्था, छिद्रेष्वनर्था बहुलीभवति, गण्टे स्को

टकसजननम् ।

कोड़ी, वि, दे 'कुष्ठी' ।

कोण, स पु (स) दे 'कोना' ।

कोणि, वि (ङ) वक्तु आमुप-कर इत्य ।

कोतल, स पु (फा) दर्शनीयघोटक

२ राजान् ।

कोतवाल, स पु (ङ कोटपाल) पुररक्षक ।

कोतवाली, स स्त्री (हिं कोतवाल) कोट

पाल पुररक्षक, न्यायालय ।

कोताह, वि (फा) न्यून, अल्प, २. लघु,

ह्रस्व ३ सकीर्ण, समुचित ।

—हिम्मत, वि, अल्प साहस विक्रम ।

कोताही, स स्त्री (फा) बुटि (स्त्री),

न्यूनता २ प्रमाद ।

कोपला, स पु (हिं गूयल) बृहत्, पुट कोष

प्रसेद २ आमशय ।

—भरना, ॥ उदरपूर् (चु) ।

कोदड, स पु (सं न) धनुस् (न) ।

(स पु) भू (स्त्री) २ देशविशेष ।

कोदो दो, स पु (स कोदव) कोदूप,

कुद्रव, कुदाल ।

कोन, सं पु, दे 'कोना' ।

कोना, सं पु (सं कोण) अक्ष २ कोटि-

अधि पालि (स्त्री) ३ निभृतागार ४

चतुर्भुजा ।

—दार, वि, अक्षोपेत, कोणविशिष्ट, अक्षिन् ।

—कवोना, सं पु, प्रत्यक्ष सर्वे कोणा ।

कोप, स पु (स) कोप, रोष ।

कोपन, वि (स) समन्यु, सरोप, कोपिन् ।

कोपिनी, वि स्त्री (स) दे 'कोपिनी' ।

कोपी, वि पु (स पिन्) दे 'कोपी' ।

कोपीन, स पु, दे 'कोपीन' ।

कोमल, वि (स) मृदु, मृदुक, रिमन्ध,

रुहण, मसृण, सुपुष्पार्थ २ मृदुल, पेलव,

सुकुमार, सौम्य ३ अपरिपक्व, अम्रीष्ट

४ मनोहर, अभिराम । (स पु) स्वरभेद

(सगीत०) ।

कोमलता, स स्त्री (स) मृदुता, शिन्धता, सुकु

मारता, पेलवता, अपरिपक्वत्व, मनोहारिता इ ।

कोयल, स स्त्री दे 'काकिल' २ लताभेद ।

कोयला, स पु (स कोकिल) कोकिल,

दम्भकाष्ठ, अक्षर ।

—लवड़ी का, स पु काष्ठ, कांकिल अक्षर ।

—पथर का, स पु, प्रस्तर-अश्म, कोकिल ।

कोषा, स पु (स कोण >) अपाग-यक,

चक्षु वाण, नयनोपात ।

कोर, स स्त्री (स कोण) उपात प्रांग,

परिसर, उपकण्ठ २ कोण अक्ष ३ द्वेष्ट

४ दोष, अवगुण ५ अस्त्रादीना धारा ।

६ पक्ति (स्त्री), श्रेणीणि (स्त्री) ।

—कसर, ॥ स्त्री (हिं + फा वसर) वैश्वर्य,

दोष, छिद्र, न्यूनता २ न्यूनाधिकता ।

कोरक, स पु (स) बलिका, दे 'बली

२ मृणाल ३ चरनामवगधद्रव्यम् ।

कोरा, वि (स केवल) अभि, नव, नवीन,

नूतन, अन्यवद्भन, अप्रयुक्त २ अधीन,

अधारित ३ अरजित ४ अचित्रित ५ अलि

रिज ६ बचिन, रहित, विहीन ७ निष्कलक
८ मूर्ख ९ निर्धन १० केवल ।

—ज्वार, सं पु, एकान्त्र अयत, निराकरण
प्रत्यारथान निषेध ।

—वचना, सु० अत्यन्त निर्गन्त मुञ्च विमुच
(र्म) ।

—रहना, सु भग्नाश-भङ्गार्थं मनोहत (वि)
स्था (स्वा प अ) ।

—कोरा सुनामा, सु, १५४ ५६ (अ प से),
२ भस् (तु आ से), आ-अधि, क्षिप
(तु प अ) ।

कोरि, वि, दे 'कोटि' ।

कोरी, सं पु (सं कोर >) आर्य, पटकार
कुविद ।

कोर्ट, सं पु (अ) न्यायालय, धर्माधिकरणम्
२ दान-रूप समा ३ व्याख्यासनम् ।

—आर्च् बाईस, सं पु, बालकक्षिपवादि
सपत्तिप्रवर्धक विभाग ।

—फीस, सं स्त्री, न्यायशुल्क-शब्दम् ।

—मार्शल, सैनिकन्यायालय २ सैनिक
न्यायेन दण्डनम् ।

—क्षिप, सं स्त्री, विवाद, अनुनय-न्यायना ।

कोल् सं पु (सं) श् (सू) वर, निरि-
(पु) २ उपगृह, आर्लिन ३ क्रोट, अक
४ नव्यपातिविशेष ५ कृष्णमरिच ६ दे
'तोला' ७ बदरीपत्रभेद ८ दक्षिणदिशि
देशविशेष ।

कोल्, सं पु (अ) अगार, कोकिल ।

—रैस, सं स्त्री (सं) अन्नारवाति (स्त्री) ।

—टार, सं पु (सं) कोलतार, तारकोल्म् ।

चार—, सं पु, काष्ठद्वार ।

स्लीम—, सं पु, वाष्पाद्वार ।

कोलाहल, सं पु (सं) कलबल, काण्कोल,
तुमुल, अकोश, निछाद, विराव ।

—मचापा, कि सं, कोलाहल-कलकल, कू,
आ वि, कुश (स्वा प अ) ।

कोली, सं पु (सं कोल् >) उलुवाप,
पटवार ।

कोरह, सं पु (हि कूल्हा ?) १ चक्र, तैलपे-
पणी, तिलपेपणद्व २ श्पु-रसाक, पेपणी ।

—काट कर मुंगरी बनाना, सु, अल्पलाभाय
बहुशक्ति क ।

—का वैल, सु परम, उपमिन्-उद्योगिन् ।

—में पिरवा देना, सु अत्यत पीड (चु) ।

कोविद, सं पु (ता) विदस् (पु), पटित ।

कोश, सं पु (सं कोश प), अभिधान,

शब्दसमूह २ सङ्ख्यादि वेष्टन पुट कोष

कोश ३ आवरण, पुट, पिधान, आच्छादन

४ अल, पेन्नी डि (स्त्री) ५ मज्जर, सपुट

टक ६ कल्पा, मुकुल ७ मपपान, पात्र

चपक ८ पुट ट, स्तूत ९ सवित्रपन

१० समूह ११ भटकोष १२ योनि

(स्त्री) १३ पट्टकीगृहम् १४ भाग्यन

पञ्चावेष्टनानि (विदान) १५ आकरोथ अभिनव

सुवर्ण रजत वा १६ निधि (पु), निधान ।

—काश, सं पु (सं) अभिधान शब्दसमूह,

कार सपारक २ पट्टकोट ।

—पाल, सं पु (सं) कोशा (पा) प्यञ्च,

कोशापीथ ।

कोशक, सं पु (सं) अण्ड, पेन्नी

२ अण्डकोष ।

कोशल, सं पु (सं) देशविशेष २ अयोध्या ।

कोशलिक, सं पु (सं न) दे 'कौशलिक' ।

कोशामार, सं पु (ता पु न) कोशगृह,

भाटावार २ ।

कोशिका, सं स्त्री (सं) चपक, शराव ।

२ वस, गल्क ।

कोशिश, सं स्त्री (का) यत्न, उद्योग,

परिश्रम ।

कोप, सं पु (सं) दे 'कोश' ।

—अध्यक्ष, सं पु (सं) दे कोप पाल-अधीश ।

कोष्ट, सं पु (सं) तद्वरमध्य २ गमांशयद्वय

आवरणविशिष्ट अरयवा ३ गृहमध्य

४ प्राकार ५ धान्यागार रम् ६ परिवेष्टित

स्थानम् ।

—वदता, सं स्त्री दे 'वन्त' ।

कोष्टक, सं पु (सं) परिवेषकपदार्थ

(दीवार, रेखादि) २ सारणी, अनेकगृह्युत

चक्र अत्र अम्भ, जाल ३ अर्द्धचन्द्र [ल (),

[], { }, }] ४ सारणीयम् ।

कोस, सं पु (सं कोश) सहस्रधनुस्

(न), चतु सहस्र (अष्टसहस्र) इत्यपरिमाण,

दिसहस्रदह, गन्धूत, मौल-द्वय-सुगम् ।

कोसों दूर, कि वि, अति, दूर-दूरे-दूर, सुदूर ।

कोसों दूर रहना, सु, सुदूर-युक् स्था (भ्वा प अ) ।

कोसना, कि स, (सं कोशन >) आकुश (भ्वा प अ), गृह्ण (भ्वा आ अ), अभिशस (भ्वा प से), उप (भ्वा उ अ) ।

पानी पी पी कर कोसना, सु, अत्यन् आकुश ।

कोह, सं पु (फा) पर्वत, गिरि ।

—नूर, स पु (फा + अ) हीरकविशेष ।

कोहनी, स स्त्री, दे 'कुहनी' ।

कोहरा, सं पु, दे 'कुहरा' ।

कोहाम, स पु (फा) उष्ट्र जमेक, ककुद् ककुद्म् ।

कोहिस्ताम, सं पु (फा) पर्वतीयप्रदेश, शैली स्थली ।

कोहिस्तानी, वि (फा) पर्वतीय, शैल (ली स्त्री), पर्वतमय (यी स्त्री), नगप्राय, सपर्वत । सं पु, पर्वत गिरि-अद्रि, वासिन्, शैलाट ।

कौष, सं स्त्री [स कन्धु (स्त्री) >] रोमबही, शूलशिबी, वृश्चा, २ तस्या बीनकौष ।

कौषी, सं स्त्री (भं कचिका) वेणुशाखा, कुम्बिका ।

कौषि, सं स्त्री (हि कौषना >) विपुद्विषास, तडिद्विषास, (स्त्री) चचलारपुरण ।

कौषना, कि अ (स वनन = वनकना + अथ >) विषुव (भ्वा आ से) विषुव विहस (भ्वा प से), सहसा प्रकाश (भ्वा आ से)-रुर (तु व से) ।

कौषा, सं पु, दे 'कौष' ।

कौसिल, स स्त्री (अ) मन्त्रा, मन्त्र, सरस् (सर स्त्री) ।

कौला, सं पु दे 'कौल' ।

कौल, सं पु (अ) खाटिका, सदी, निषया, पेचक ।

कौटिल्य, सं पु (सं) पालन्य, चन्द्रगुप्तमौर्यस्य महात्रिन् । (सं न) वक्रता, कुटिलता २ दुष्टता, छल, कपटम् ।

कौटुम्बिक, वि (सं) कुटुम्ब-गृहजन परिवार, मन्त्रिन् विषयक, मौल, पारिवारिक, गृह्य ।

कौडा, स पु (सं कपर्दक) वराट, बाल कौटव ।

कौडी, सं स्त्री (सं कपर्दिका) वराटिका, काकिनी णी । २ द्रव्य, धन ३ अक्षि नयन, गोल-गोल ४ मासप्रति (पु) ५ कृपाणाम् ६ जयीननृपतिभ्यो प्राह्य कर ७ करोडस्थि (न) ।

(दो)—वा,—काम वा नहीं, सु अल्पमूल्य, तुणप्राय, निरर्थक, असार ।

—भर, सु, अत्यल्प, विचिद्, स्वल्प ।

—को मुहताज या लग होना, सु, अक्षि नयन, अत्यतदारिद्र्य, नितातनिर्धनता ।

—कुकाना, सु, ज्ञान नि शेष परिशुध् (प्रे)-अपाक ।

—जोड़ना, सु, धन सचि (स्वा प अ)-सम्यक् (क्, प से) ।

कानी या फूटी कौडी, सु अत्यल्प-विषं द्रव्यम् । कौडियों के मोल, सु, अत्यल्पमूल्येन ।

कौतुक, स पु (स न) कु(कौ)तूहल, कुतुक, जिज्ञासा २ आश्चर्य ३ विनोद, नर्मन् (न) ४ हर्ष ५ खला, कौडा ।

कौतुकी, वि (सं-विन्) सलील, सोहास, कीडाप्रिय, विनोदप्रिय, नर्मगर्भ ।

कौतूहल, सं पु, दे 'कुतूहल' ।

कौन, सर्व (स को नु) 'कि' के तानों लिंगों के रूप (फ, वा, कि इ) ।

—कौन, व क अ । दो में से—, कतर, कतरा (पु सं न) बहनों में से—, कतम, कतमा, कनमय (पु स्त्री न) ।

कौप, वि (सं) कूप-अवद, विषय सम्बन्धिन् ।

कौपीन, सं पु (सं न) मलमलन, धरी, धटिका, कच्छा, कच्छटिका, २ गुदालिङ्ग, गुहागानि ३ पाप ४ अकार्यम् ।

कौवेरी, स स्त्री (सं) उत्तरदिशा, उदीची ।

कौम, सं स्त्री (अ) वर्ण, जाति (स्त्री) २ कुल, वंश ३ देश, राष्ट्र, विषय ।

कौमार, सं पु (सं न) कुमारारथा (५ अथवा १६ वर्ष पर्यन्त), बालत्वम् ।

कौमारिक, वि (सं) कुमार, विषयक-सम्बन्धिन् । सं पु, कन्यानामेव जनक ।

कौमारिकेय, स पु (स) अनूदा-कुमारी
क्या पुत्र-तनय ।

कौमियत, स स्त्री (अ) राष्ट्रियता, जातीयता ।
कौमी, वि (अ) राष्ट्रि छी । य, देशीय
जातीय ।

—हुकुमत, स स्त्री, राष्ट्रियशासन, स्वराज्य ।
कौमुदी, स स्त्री (स) ज्योत्स्ना, दे 'चौदनी' ।
कौर, स पु (स कवल) आस, शुद्धक,
पिंड ।

कौरव, स पु (स) कुरुराजसंतान ।

—पति, स पु, दुर्बोधन ।

कौल, वि (स) दे 'कुलीन' ।

कौल, स पु, दे 'कौर' ।

कौल, स पु (अ) प्रतिष्ठा, समय
२ उक्ति (स्त्री) ।

कौवा, स पु (स काक) बावस, च्वांस,
मौकुलि (पु), एकाक्ष छलकारि (पु),
कट कुण, प्रोग २ अलिङ्गिहा, झुडिका,
लविका ३ धूर्त ४ वचक ।

—परी, स स्त्री, अतिकुरुपिणी नारी ।

—उठाना, मु बालशुद्धिका उत्स्था (प्रे) ।

कौशल, स पु (सं न) चातुर्य, दादय, नैपुण्य
२ कुशल, मंगलम् ।

कौशलिक, सं पु (स न) उत्कोच, दौकन
लम्बा ।

कौशलिक, स पु (स) हृद २ गाधिनृप
३ विश्वामित्र ४ कोषाध्यक्ष ५ कोशकार
६ उल्लूक ७ नकुल ८ कौशेयवध ९ मञ्जा
१० लपपुराणविशेष ।

कौशे(पे)य, वि (स) कौश(प), कौशि(वि)क ।
स पु (स न) क्षीम, चीनाशुक पट्ट रु,
पट्टाशुक, दुडूळ, चीनवासम् (न) ।

कौस्तुभ, स ॥ (स) विष्णुवत् स्थो मणि
(पु) ।

कया, सर्व (स किम्) ।

वि, कियत्, २ अत्यधिक ३ कौश विचित्र
४ अत्युत्तम ।

अव्य किम् ।

—कहना है या—घात है, मु, साधु साधु
साधु सुद्ध, उत्तम (सब अव्य) ।

—पूव, शु, साधु, सुद्ध ।

कयारी, स स्त्री (स वेदार) राजिका ।

क्यों, कि वि (सं किम्) किं, केन हेतुना—
कारणन, किन्निमित्त, विमर्श, कुत, कस्मात्
२ कया रीत्या, कयम् ।

—कर, कथ, केन प्रकारेण २ किमर्थ, किम् ।

—कि,—यत्, यत्, यस्मात् ।

—नहीं, नि मदेह, नि सशय, अवश्य, ध्रुवम् ।

क्रदन, स पु (सं न) रोदन, रुदित, अश्रु
पात २ परिदेवना न, आवि, क्रोश ।

क्रन्तु, स पु (स) यत्, याग २ सक्लप
३ अभिलाष ४ विवेक ५ हृद्दय ६ जीव
७ विष्णु ८ आषाढ ९ श्रीकृष्णपुत्र ।

क्रम, स पु (स) अनुक्रम, आनुपूर्वी—०र्थ,
पारपर्यं, परपरा, वियास, व्यवस्था, सवि
धान, विरचन २ प्रकार, विधि (पु) रीति
(स्त्री) ३ पादविन्यास ४ काव्यालंकारभेद ।

—करके या से, कि वि, अनुक्रम, यथाक्रम,
अनुपूर्वश आनुपूर्व्येण २ शनै शनै, अन्वा
रुपश, उत्तरोत्तरम् ।

क्रमण, स पु (स) पाद, चरण २ अवन,
घोट । (स न) गमन चलनम् २ उल्लघनम्,
अतिक्रमणम् ।

क्रमश कि वि (स) दे 'क्रम क्रम करके' ।

क्रमाक, स पु (स) क्रम, सख्या-गणना ।

क्रमागत, वि (स) क्रम आनुपूर्व्येण, आगत
प्राप्त २ आनुवधिक, परपरा प्राप्त ।

क्रमानुसार, कि वि (स-रम्) क्रमश,
यथाक्रम आनुपूर्व्येण, अनुपूर्वश (सब अव्य) ।

क्रमिक, वि (स) क्रम परम्परा, आगत
आयाग, अनुपूर्व, क्रमवद्ध, आनुक्रमिक—(कौ
स्त्री) २ परम्परीयण पैतृक—(कौ स्त्री),
पिय ।

क्रमुक, स पु (स) दे 'सुपारी' ।

क्रय, स पु (स) दे 'खरीद' ।

—विक्रय, स पु, दे 'खरीद फरोख्त' ।

क्रव्य, स पु (स न) दे 'मास' ।

क्रव्याद, स पु (स) राक्षस, पिशाच
२ सिंह ३ इयेन ४ मासाशिव् (पु) ।

क्रान्ति स स्त्री (स) महत्परिवर्तन, परिवर्त,
२ चरणयसन ३ सूर्यभ्रमणमार्ग ४ रात्र,
द्रोह विरोध, राज्यविप्लव प्रनाशोम ।

क्रिकेट, सं ॥ (अ) पट्टगेन्दुकम् ।

क्रिया, स स्त्री (सं) कर्मन् (न), कार्यं,
व्यापार २ चेष्टा ३ आरम्भ ४ व्यापार
निर्देशक शब्द (व्या) ५ नित्यकर्मन् (न)
६ आदादिकर्मन् ७ चिकित्सा ।

—कर्म, स पु (सं न) कर्त्तव्येष्टि मृत्क-
क्रिया कर्मन् ।

—विशेषण, स पु (सं न) क्रियाया भाव
बालरीत्यादिद्योतक शब्द (व्या) ।

—इन्द्रिय, सं स्त्री (सं न) दे 'कर्मिन्द्रिय'
क्रिस्टल, सं पु (अ) स्फटिक ।

निस्ता(स्ता)न, स पु (अ) क्रियन् (न),
विस्तानुयायिन् ।

ग्रीवा, सं स्त्री (सं) रंला, लीला, कूर्दन,
खेत्तन, विहार २ कौतुक, विलो- विस्तार ।

ग्रीत, वि (सं) कृतकप, मृत्येन लब्ध ।

ग्रीतक, सं पु (सं) कृतपुत्र ।

ग्रीह, वि (सं) कुपित, रुष्ट, कोपिन्, सामर्थ्य,
सकोप, सरोप, समन्तु, कोप-कोप-युक्त ।

ग्रीह, वि (सं) निर्दय, कठोर, नृशस, पापण
कठिन, हृदय, निपृण, क्रूरकर्मन्, निष्करुण
२ परपीठक ३ कठिन ४ लोहण ५ उष्ण
६ नीच ७ घोर ।

—कर्मा, वि (सं मन्) घोर, निर्दय, दारुण ।

ग्रीवता, स स्त्री (सं) निर्दयता, कठोरता,
नृशसता ३ २ रौद्रता, लोक्षता ३ दुष्टता ।

ग्रीव, स पु (सं न) बाहोर्मध्य, भुजातर,
उपस्थ, उदमग, भोग, भव २ वरसू-वक्षस्
(न), उत्तम ।

—पत्र, स पु (सं न) परिशिष्ट, अवपत्र,
पूर्वपत्रम् ।

ग्रीध, स पु (सं) कोप, रोप, भ्रमर्च,
मन्तु (पु), प्रतिष, भीम, कुधा, रथा,
रूप-कुध् (स्त्री) दे 'गुरसा' ।

—वरना, कि अ, कुध् (दि थ अ), कुध्
(दि थ से) ।

ग्रीधित, वि (सं) दे 'क्रुद्ध' ।

ग्रीधी, वि (सं-धिन्) कोपिन्, रोपिन्,
भ्रमपिन्, दे 'क्रुद्ध' ।

ग्रीश, स पु (सं) दे कोश' ।

ग्रीच, सं पु (पु) कृच चा, क्रीचा, क्रुच्
(पु), कलिक, कालि(ली)क ।

ग्रीध, स पु (अ) ग्रीधीगृहम् ।

ग्रीध, स पु (पु) लिपि पञ्जी, कार, लेखक,
कावस्थ, बोर(ल)क ।

ग्रीह, वि (सं) स्थान, रित्र, परि, श्रान्त,
जातरुद्ध, आवस्त ।

—मना, वि (सं-तम) दुर्मनस्क, विमनस्क,
सित्र ।

ग्रीति, स स्त्री (सं) भ्रम कृम, आयास,
भ्रान्ति (स्त्री), खद अवसाद' ।

ग्रीह, सं पु (अ) कुह्य-भित्ति, -घटी ।

—टावर, स पु, घटा, आलय -गृहम् ।

ग्रीष्ट, वि (सं) दुःखित, क्लेशित, आर्त,
पीडित २ दुष्कर, कठिन, दुस्तथा ।

ग्रीव, स पु (सं) व (श) व, सव, शव,
नपुंसक, पुरुष-वहीन २ दे 'ग्रावर' ।

ग्रीवता, स स्त्री (सं) श(व)वता, नपुंसकता
२ कातरता ।

ग्रीह, स पु (सं) आर्द्रता, स्तैम, तैम' ।
२ प्रवेद ।

ग्रीश, सं पु (सं) दुःख, कष्ट, पीडा, व्यवथा,
वेदना, चिन्ता, आश्रय, आदीनव ।

क्लेशित, पु (सं) दे 'ग्रीष्ट' (१) ।

क्लेश्य, सं पु (सं न) दे 'ग्रीवता' ।

क्लोम, स पु (सं न) वीम, क्लोमन् (न),
तिलव, पुष्पुम, दे 'पिपडा' ।

क्लोरीन, स स्त्री (अ) नीरजी, हरिमन् ।

क्लोरीकर्म, स पु (अ) मूर्च्छकम्, सशलो
पक्व (औषधभेद) ।

क्लित, वि (सं) ध्वनित, मरव, सशम् ।
स पु (सं न) शब्द, स्वन ।

क्लित, वि (सं) आप, मृत, अपित ।

क्लाय, सं पु (सं) दे 'क्लादा' ।

क्लाटादन, स पु (अ) निषिद्धसर्गागृह,
२ ससर्गाप्रतिबन्ध, ३ भगनाभयनिषध ।

क्लारा, वि (सं कुमार) दे 'द्वारा' ।

क्लार्टर, सं पु (अ) (राज्यसत्त्वादिनिमित्त)
गृह, मेह, सदन, भवनम् । २ पाद, चतुर्पाद
३ विभासम्, वर्षपाद ।

क्लीन, स स्त्री (अ) राशी, राजपत्नी ।

क्लतव्य, वि (सं) क्षमाई, मर्षणीय, सोदव्य ।

क्लण, स पु (पु) अरयस्वसमय, मुहूर्त,
निमेष, पञ्च, प्रिशाकलापरिमितकाल
२ समय ३ अवसर ४ उत्तरव ।

—ग्रभा, स खी, विपुन (खी), चचला ।
 —भगुर, वि, विनश्वर, क्षणिक, अस्थिर ।
 —भर, कि वि, क्षणमान, सुहृत्पल, मानम् ।
 चणिक, वि (सं) क्षयस्थायिन्, अनित्य,
 अस्थिर, वि नश्वर, निम्भार, अस्थायिन् ।
 चान, वि (सं) व्रणित, मित्रदेह, ताडित,
 क्षतिपुक्त, शङ्कित ।
 सं पु (सं न) व्रण, क्षति (खी), अरुस
 (न), आघात, ईर्ष्य २ स्फोट, पित्तक ।
 —योनि, वि खी (सं) समुक्ता, कृतसहवासा ।
 —विहृत, वि (सं) अतीव व्रणित विद आह्वन ।
 क्षति, स खी (सं) क्षय, नाश २ अपचय,
 क्षति (खी) ३ व्रण, ईर्षम् ।
 क्षत्र, सं पु (सं न) कल, शक्ति (खी)
 २ राष्ट्र ३ धन ४ शरीर ५ जल ६ तगर
 वृक्ष । (सं पु) क्षत्रिय ।
 —पति, सं पु, नृप ।
 क्षत्राणी, सं खी (सं क्षत्रियाणी) (क्षत्रिय
 नानि की खी) क्षत्रिया, क्षत्रिय(यि)का, क्षत्रि
 याणी २ (क्षत्रिय की पत्नी) क्षत्रियाणी, क्षत्रियो ।
 क्षत्रिय, स पु (सं) वर्णविशेष २ राजन्य,
 बाहुन, मूर्धामिषिक, क्षत्र ३ योष, मट,
 धीर ।
 क्षत्री, स पु दे 'क्षत्रिय' ।
 क्षपणक, न पु (सं) दिगम्बरयति २ बौद्ध
 भिक्षु ३ क्षत्रियविशेष । वि, निर्लज्ज ।
 क्षपा, नै खी (सं) राज्ञि (खी), निशा,
 यामिनी ।
 —कर, —नाथ, सं ॥ (सं) चण्ड, सोम ।
 क्षम, वि (सं) शक्त, समर्थ, उपयुक्त, योग्य ।
 क्षमता, सं खी (सं) योग्यता, सामर्थ्य,
 शक्ति (खी) ।
 क्षमा, सं खी (सं) क्षति (खी) तितिक्षा,
 सहिष्णुता, मर्षण, सहनशीलता २ पृथिवी
 ३ सदिरवृक्ष, ४ दक्षकन्या ५ दुर्गा ६ वेत्र
 वती नदी ७ राधिकासखी ८ वर्णवृक्षभेद ।
 —करना, कि स, क्षम् (स्वा आ वे, दि प
 वे), सद् (स्वा आ से), मृष् (दि व से) ।
 —शील, वि (सं) क्षमिन्, क्षमावत, क्षमित,
 सहिष्णु, सहन, क्षत्, तितिक्षु, क्षमायुक्त ।
 क्षमावान, वि (सं वत्) दे 'क्षमाशील' ।

क्षम्य, वि (सं) क्षन्त्य, क्षमाई, क्षमोचित,
 मर्षणीय, सोढव्य ।
 क्षय, सं ॥ (सं) अपचय, हास २ क्षपात
 प्रलय ३ नाश, प्रध्वंस ४ गृह ५ यक्ष्म,
 यक्ष्मन् (॥), राज्यक्ष्मन् (पु) ६ रोग,
 ७ अत, अवसान, क्षयरोग, शोष, रोगराज,
 गदाग्रणी (पु), अतिरोग, रोगाधीन
 नृपामय ।
 —कास, स पु (सं) क्षयश्च, यक्ष्मकास (पु) ।
 —मास, सं पु (सं) मल्लिस्तुच, मल
 अधिक, मास ।
 —रोग, सं पु, दे 'क्षय' (५) ।
 —रोगी, सं पु (सं गिन्) क्षयिन्,
 यक्ष्मिन्, रोगराज शोष, ग्रस्त ।
 क्षयी, वि (सं यिन्) अपचयिन्, हासिन्
 २ शोषिन्, यक्ष्मिन् रोगराजपीडित ।
 —रोग, सं पु, दे, 'क्षय' (५) ।
 क्षर, वि (सं) नश्वर, अनित्य ।
 क्षरण, सं पु (सं न) शनै शनै विदुश
 विपुत्क्रमेण गन्तव्यस्थानं क्षरणम् ।
 क्षात, वि (सं) क्षमाशील, क्षमावत्, क्षमिन्
 २ सहिष्णु, सहनशील ।
 क्षाति, सं खी (सं) दे 'क्षमा' (१) ।
 क्षार, सं पु (सं) सज्जिका, विद्वलवण २ लवण
 ३ दे 'शोरा' ४ दे 'क्षुद्रागा' ५ मरुतम्
 (न) ।
 क्षिति, सं खी (सं) भूमि (खी), पृथिवी
 २ क्षय, हास, नाश ।
 —पाल, सं ॥ (सं) नृप ।
 क्षितिज, सं पु (सं न) दिक्चक्र तट,
 दिगत, दिग्मण्डल, अवरात, आकाशकक्षा ।
 २ मंगलग्रह, बुध ३ वृक्ष ४ दे 'क्षेत्र' ।
 क्षिप्त, वि (सं) त्यक्त, विसृष्ट, प्रास्त २ विदीर्ण
 ३ अवज्ञात ४ पतित ५ वातरोगग्रस्त ।
 क्षिप्र, कि वि (सं न) द्रुत, सपदि, द्राक,
 दे 'क्षीप्र' ।
 वि, त्वरित, सत्वर, ज्वन, वेगवत्, क्षीप्र ।
 —हस्त, वि (सं) क्षीप्रकारिन्, आशुकर्तृ ।
 क्षीण, वि (सं) सूक्ष्म, प्र, तनु, श्लक्ष्ण
 २ वृक्षांग, वृक्ष, क्षाम, क्षीण शुष्क, मास
 ३ नष्ट, ध्वस्त, क्षयगत ।

चीनता, स स्त्री (स) दुर्बलता, निशकता
२ सूक्ष्मता, तनुता ३ कृशता क्षामता
४ हाम, अपचय नाश ।

चीर, स पु (स न) दुग्ध पयस् (न)
२ नल ३ पायस स ।

—निधि, स पु (स) सागर ।

—नीर, स पु आन्तिग्न २ मिश्रणम् ।

—नागर, स पु (म) क्षीराब्धि (पु)
दुग्ध, सागर समुद्र, क्षीरोन् ।

—सार, स पु, दे 'मन्थन' ।

क्षीरज, स पु (स) चद्र २ सार ३ कमल
४ दधि (न) ।

क्षीरजा, स स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी' ।

क्षीरधि, स पु (स) सागर, समुद्र ।

क्षीरोद, स पु (स) दे 'क्षीरसागर' ।

क्षीव, वि (स) समद, समद, मन्दोन्मत्त ।

क्षुण्ण, वि (स) प्रक्षत, चूर्णोद्धत, खड्डो मित ।

क्षुद्र, वि (स) अपम, निवृष्ट, नीच २ अवय,
स्तोक ३ कृपण ४ कुटिल ५ दरिद्र ।

क्षुद्रता, स स्त्री (स) कुच्छला, निवृष्टता
२ कुटिलता ३ दरिद्रता ।

क्षुधा, स स्त्री (स) दे 'भूख' ।

क्षुधानुर
क्षुधास
क्षुधित } वि (स) दे 'भूखा' ।

क्षुप, स पु (स) क्षुपक, क्षुद्रश्छ शुक्ल-भ ।

क्षुब्ध, वि (स) व्याकुल, विह्वल आतुर,
उद्भिन्न २ चञ्चल ३ मोद, जल ४ क्रुद्ध ।

क्षुद्र, स पु (स) नापितस्य लोमष्टेऽकसल क्षौरी,
क्षौरी सुरः २ शकप, गवादीनां पादाग्रम् ।

क्षुरी, स पु (स रिन्) नापित, क्षौरिक
मुष्ट, मुष्टिन् ।

क्षुल्लक, वि (स) खलप, स्तोक २ दुष्ट, दुर्बल
३ निर्धन, दरिद्र । स पु, बाल, बालक ।

क्षेत्र, स पु (स न) वेद (दा) २, भूमि
(स्त्री) वन प्र २ समभूमि ३ उपति
स्थान, उद्भव, उद्गम ४ प्रदेश ५ तीर्थस्थान

ख, खेतागरीवर्गमानाया द्वितीयव्यजनवर्ण,
सगर ।

खं, स पु (स न) शयस्थानं २ छिद्र
३ आवास ४ इन्द्रिय ५ विडु (पु), खय
६ खर्ग ७ खय ८ खान् (न) ।

ख राशि (पु, मेवादि) ७ पक्षी ८ क्षीर
९ अत करण १० रेखावेष्टित स्थानम् ।

—गणित, स पु (स) गणितशास्त्राभेद ।

—फल, स पु (स न) वर्गपरिमाणम् ।

खेत्रन, स पु (स) निवोगत्रयुक्त (धर्मशास्त्र) ।

खेत्रज्ञ, स पु (स) जीव २ ईश्वर
३ कृपा । वि छातृ दक्ष, निपुण ।

खेप, स पु (स) क्षपण, प्रण, प्रसन्न विस
र्जन २ निन्दा ३ यापन ४ दूरता ।

खेपक, वि (स) क्षेप्, प्रासक, प्रेरक ७ मिथित
१ निन्दनीय । स पु, नाविक २ प्रक्षिप्त
निवेशित, लेख ।

खेपण, स पु (स न) दे 'क्षेप' (१३) ।

खेपणी, स स्त्री (स) अस्वविशेष २ नौका
दृष्ट, क्षेपिणी (स्त्री) ।

खेम, स पु (स पु न) लम्बरक्षण
प्रातरक्षा २ मण्ड, कुशल ३ अभ्युदय
४ आनन्द ५ मुक्ति (स्त्री) ।

खोणि, स स्त्री (स) क्षोणी पृथिवी ।

—पति, —पाल, स पु (स) नृप, भूप ।

खोद, स पु (स) चूर्ण, पिष्ट २ खेपण ३ जल ।

खोभ, स पु (स) अशानि अनिष्टति (स्त्री),
चित्तचाचक्य-व्यग्रता, उद्भव, व्याकुलता २ भय
३ शोक ४ कौष ।

खोभित, वि (स) दे 'क्षुब्ध' ।

खोणी, स स्त्री (स) क्षोणि (स्त्री) पृथिवी ।

खीद्र, स पु (स न) मधु (न) २ जल
३ क्षुद्रता । (स पु) चपकवृक्ष ४ वर्ण
नकरविशेष ।

खीम, स पु (स पु न) अद्भु, अद्भुश्लिषा
(२४) पट्ट अतसी शण्ड, वस्त्र ।

खीर, स पु (स न)

—वर्म, स पु (स र्जन्) दे 'हनामत' ।

खौरिक, स पु (स) दे 'माई' ।

ख्मा, स पु (स) पृथिवी, अपनो ।

खवेद, स पु (स) ध्वनि, शब्द २ विष
३ वर्णरोगभेद ।

ख

खंख, वि (स) शिक्त शय्य २ निर्जन, वय ।

खंखरा, वि, दे 'खोतर' ।

खंखार, स पु, दे 'सखार' ।

खगर, स पु (देव) स्वोभूतोऽतिपक्वेष्ट
नावय । वि, अनिशुष्क ।

संगालना, कि स, (सं शालन) ईषत् भाव
(भ्वा, चु उ से) - प्रशल् (चु) ।

सत्न, सं पु (सं) सोर, सोर, सोद,
सोत्, विकल्पति २ पादरोगभेद ।

सत्तन, सं पु (सं) सत्तरी, सत्तन,
मुनिपुत्रक, रत्ननिधि (पु), तुनीड ।

सत्तरी, स पु (फा) दे 'कगर' ।

सत्तरी, स स्त्री (सं सत्तरी = एक ताल >)
रघु, डमरु विहिम ।

सत्तरीड, सं पु (सं) दे 'सत्तन' ।

सत्त, स पु (सं सत्तम्) दे 'सोड' ।

सत्त, स पु (सं पु न) लव, शकल ल,
वश, विभाग वि, दल, मित्र २ देश
१ नवमल्या ४ रत्नदोषभेद ५ अघ्याय
१ पाक्य, कुण्डलवग ७ दिशा । वि, अल्प,
रघु, कर्पू ।

—करना, कि सं सत्त लवश छिद्र
(व प अ) ल (क उ से) कृत्
(तु प से) ।

—काव्य, सं पु (सं न) लघुप्रबन्धकाव्यम् ।

—प्रलय, स पु (सं) ब्रह्मादस्य एकदेशीय
आशिक, नाश विध्वंस क्षय ।

सत्तन, स पु (सं न) भजन, भेदन, छेदन,
कर्तन, शोभनम् २ प्रत्याप्त्यान, निराकरण,
निरसतनम् ।

सत्तनीय, वि (भ) भेदव्य, छेदव्य २ प्रत्या
रपेय, निरसनीय ।

सत्त, सं पु (स सत् + हि मर) ध्वसान
क्षय, अर्नद-जीर्ण-शीर्ण-गृह नगरम् ।

सत्तरिच, सं पु, दे 'सत्तन' ।

सत्तदा, अ (स) विभागात्, अक्षय, अव
यवश (सव अव्य) ।

सत्तहर, सं पु, दे 'सत्त' ।

सत्तित, वि (सं) मय, वृद्धित, लुन, छिन्न
२ असमग्र, कर्पू ।

सत्तक, सं स्त्री (अ) परिखा, खय, रानधा
न्यादिवेष्टनमात्र, २ बृहत्, अग्र-गर्भ-अवत् ।

सत्त, वि (फा) सहास, हासक । स पु,
हाम, हास्यम् ।

—देशानी, वि स्मेरानन, हास्यसुख

सत्त, सत्त, सत्त, सं पु (मं सत्तन)
अप, स्तम्, अवष्टम्, स्थापु (पु), स्थाप ।

सत्, सं पु (स न) गर्त-र्ता, अवष्ट २ रिक्त
स्थान २ निर्गम ४ विन्, निवर = इन्द्रिय
६ कृप ७ इषुषा ८ शक्यचक्रनामिन्द्र
९ आताश १० स्वर्ग ११ विटु (पु),
शून्य १२ ब्रह्मन् (न) १३ शम्भु
१४ कण्ठस्थ प्रागनाडी १५ सुख १६ क्षेत्र
१७ पुर । (सं पु) सूर्य ।

सत्त, स पु (अनु) भट्टास, उज्जैस,
प्र-अनि, हास ।

सत्त, सं पु (हि सत्ती का 'स') पाचनद
क्षयि २ अनुभवो पुरुष ३ महागज ।

सत्तार, स पु (अनु) कफ, श्लेष्मन् (पु),
सपात्र, सौम्यभातु (पु), वन ।

सत्तारना, कि अ (अनु) कफ नि-स (प्रे)-
उद्गृ (तु प से), निष्ठिद् (भ्वा दि प से) ।

सत्तार, स पु (स सत् + कोर >) तरकोर
स्य स्य खगनीड - २ लघुक, निलय-कुल्या ।

सत्त, सं पु (स) पक्षिन् (पु), अक्षय,
नीडन २ शर्व १ दीव ४ वाग ५ ग्रह
६ मेर ७ सुख ८ चद्र ९ बाहु (पु) ।

—पति, सं पु (सं) एगेश, वैततेय, गहन,
सगकेतु (पु), खपरात ।

सत्तोल, स पु (सं) आकाश-गान, मल्ल,
गगनाभोग ।

—विद्या, स स्त्री (सं) ज्योति-शास्त्र, ज्योतिष ।

सत्तयत्त, स स्त्री (अनु) एके वल्लभ-वनि (पु) ।

सत्तन, कि अ (स सत्तन) सत्त-निवेष्ट
प्रतिष्प (कर्म) ३ अफित-चित्रित (वि) + भू ।

सत्त, स पु (स) सूर्य २ देन ३ ग्रह
४ नक्षत्र ५ बाहु ६ पक्षिन् (पु) ७ वाग
८ राज्ञम् । वि नमश्चर, गयनचारिन् ।

सत्त, वि (हि सत्त) वर्णमकर, मिश्रण
२ दुष्ट, सुष्ठ ।

सत्तसत्त, कि वि (अनु) निविट, गान,
अविरल, निरतर । वि चनादोर्ण, जयसकुल ।

—भरना, कि अ, स आन् (कर्म), परिपृ
(कर्म), सत्त समानुल (वि) + भू ।

सत्तित, वि (सं) निवेष्टित, प्रत्युप्त
२ लिखित, चित्रित ।

रक्षर, स पु (देश) वेगसर, वेस (श) र,
अक्षर (स्त्री अक्षरती) ।

रक्ष, स पु (स) रक्षक, रक्षक, तक्ष
० रक्षक, रक्ष ३ युद्ध, रक्षाम ४ कवी रि
(स्त्री) ।

रक्षानची, स पु (का) कोष घन, अक्ष
अक्षिण अक्षिणारिन् ।

रक्षाना, स पु (अ) कोष प, निधान,
निधि (पु), रक्ष्य, राशि (पु)-मय
२ रक्ष, रक्षिण ३ कोषाधार, मांसाधार,
कोष (प) गृहम् ।

रक्षित, वि (पा) रक्षित, प्रीति, रक्षिण ।

रक्षुटी, स स्त्री (स रक्षुं स्त्री) दे
'रक्षुणी' ।

रक्षुर, स पु स्त्री (स रक्षुर) (रक्ष)
रक्षुरी, रक्षुप्रभा, दुरारिहा, रक्षुनेष्टा, हरिप्रिया
२ (पञ्च) रक्षुरी, रक्षुरीपञ्चम् । ३ मिष्टान्न
भेद, रक्षुरिका ।

रक्षुरी, वि (हि रक्षुर) रक्षुर, विषयक-मव
धिन्, रक्षुर २ वैगिरूपेणमाधत, -पावसित ।

रक्षक, स स्त्री (अनु) मय, प्राप्त २ चित्ता ।

रक्ष' वि (स रक्ष्) दे 'छ' ।

रक्ष', स पु (अनु) सप्तद्विजो धनि (पु),
रक्षितशब्द, रक्षारक्षशब्द ।

—से, किं वि, सपदि, क्षति, क्षण ।

रक्षणा, कि अ (अनु) रक्षणायन (ना
धा), रक्षणा शब्द छ २ मुद्र मुद्र पीठ
(वर्न)-वृत्ति (दि आ से) ३ अयुक्त-
असमीचीन अनुचित (वि) + प्रति ३ (कर्म)
४ भी (जु प अ), त्रम् (दि प से)
५ रक्षायने-कल्यायने (ना धा), विवद
(स्वा आ से) ६ अग्निष्ट-अपवार आशुक्
(स्वा आ म) ।

रक्ष्मा, स पु (हि रक्ष्मा) रक्ष्मा,
शब्द-नाद धनि २ मय, ग्राम, माशका
३ रिता ४ कील-र ५ अग्नौ, तीव्र
६ पादशुद्ध ।

—उमाना, कि अ, त्रम् (दि प से),
चिन्तित-यय (वि) + भू ।

रक्ष्मना, कि स, दे 'रक्ष्मना' ।

रक्ष्मी, स पु (स रक्ष्मी) दे 'रक्ष्म' ।

रक्ष्मन्, स स्त्री (अनु) रक्ष्मा, शब्द धनि
(पु) नाद ० वृद्ध, विवाद ३ दे 'रक्ष्म' ।
रक्ष्मना, कि स (अनु) तीव्र अभिज्ञ
(ज प अ)-तद् (जु) प्रह (स्वा प अ)
रक्ष्मनाशब्द छ २ रक्ष् (मे) ।

रक्ष्मी, स पु, दे 'रक्ष्म' ।

रक्ष्मपद, स पु, दे 'मसहरी' ।

रक्ष्मा, कि स, दे 'कमाना' ।

रक्ष्मपद, स स्त्री (अनु) वृद्ध, विवाद
२ रक्ष्मनाशब्द, शब्द, घोष क्षितिम् ।

रक्ष्मना, स पु (हि रक्ष्मा + पुनना) रक्ष्मा,
वाय-वाय, मय-पर्यक, -वाय-नाय ।

रक्ष्मल, स पु (स रक्ष्मलम्) उदरा,
मक्षुण, ओक्कण, ओकोदनी ।

रक्ष्मीटा, वि (हि रक्ष्मा + मीटा) अम्ल
मधुर, शुचमिष्ट ।

रक्ष्मा, स पु (स रक्ष्मा) मेघदीपकादय
पक्ष्मा २ वृद्ध ३ विस्वरता, विमशाय
३ व्यर्थवन्तुनातम् ।

रक्ष्मा, स स्त्री (हि रक्ष्मा) अम्लता,
शुचता २ अम्ल, दावक ३ अम्ल-शुक्त,
-प्राये ।

—यक्ष्मा, स पु, अम्लरोग (अक्षिणभेद) ।

—मै पक्ष्मा, सु, धिरायते मदायते (ना
धा), व्याधिप् (वर्न), अग्निर्णीत (वि)
स्था (स्वा प अ) ।

रक्ष्मा, स पु (अनु) रक्ष्मा, रक्षित
शब्द, महा, शब्द-रव ।

रक्ष्मा, स पु (अनु) द 'रक्ष्मा'
३ क्षिति, क्षिति । कि वि, सारक्ष्माशब्द
२ अनवरत, सपदि ।

रक्ष्मापदी, स स्त्री दे 'रक्ष्मा' २ ।

रक्ष्मा, स पु (दिक्ष) लोकावधनकील-रम् ।

रक्ष्मा, स पु, दे 'निर्वाह' ।

रक्ष्मा, स पु (स रक्ष्मा-ज) गधमाजोर,
बनेवमन ।

रक्ष्मा, स स्त्री (हि रक्ष्मा) अम्लता,
शुचना ।

रक्ष्मि, स पु, पञ्चाक्षरविकृतप्रतिभेद,
*रक्षि ।

रक्ष्मि, स स्त्री (हि रक्ष्मा) रक्ष्मा
पर्यक-मय, रक्षित्वी, रक्ष्मा ।

प्रतना, सं पु (अ) शिदन्त्वष्टेद (इत्याम) ।
 प्रतम, वि (अ खत्त) समाप्त, पू० ।
 —करना मु, मृ (प्र), हन् (अ प अ) ।
 —होना, मु, मृ (तु आ अ) ।
 प्रतर, म पु (अ) दे मय, वास ।
 —नाक, वि मयानक, मयङ्कर ।
 प्रतरा, स पु (अ) मय, योति (खी),
 दे 'भय' २ सद्य, मदेह ।
 प्रतरानी, स खी, दे 'क्षत्राणी' ।
 प्रता, स खी (अ) अपराध, दोष २ दण्ड
 वचना १ प्रमाद, स्थलितम् ।
 —घार, वि (अ + फा) अपराधिन्, दोषिन् ।
 प्रनिधाना, कि. स (हि खाना) आयन्य
 पत्रिकाया यथास्थान लिख (तु प से) ।
 प्रतियौनी, स खी (हि प्रतियाना) (बृहत्)
 आयम्ययस्रिका २ तत्र यथास्थान लेख
 १ क्षेत्रपतित्त्वोपपन्नम् ।
 प्रता, स पु (सं खान) अवट, गर्त
 २ धान्यागार २ मिथि (पु) ४ राशि
 (पु) ।
 प्रता, वि, दे 'खतम्' ।
 प्रती, स पु (स क्षत्रिय) पञ्चनक्षत्राणि
 आर्यागुरुगणविशेष २ ३ 'क्षत्रिय' ।
 प्रवृद्धाणा, कि. अ (अनु) पुत्रपुत्रायते
 (ना धा) मन्द कृ (कर्म) दे 'वृत्तना' ।
 प्रवृद्धा, स पु (अ) मय, भाटका ।
 प्रदान, स खी, दे 'खान' ।
 प्रदिर, म पु (म) सारदुम, कुष्ठारि (पु),
 गायत्री, दत्तवावन, बाल, ननय पत्र, वस्त्राग,
 सुगन्ध, वक्रक १ २ दे 'कथा' ३ बद्ध
 ४ इन्द्र ।
 प्रदेह, स खी (हि प्रदना) अनुधावन,
 सन्न आन्धोदन्तम् ।
 प्रदेह(र)ना, कि. स (हि प्रदना) नि
 अप-स (मे), बहिष्क, निष्कम्-निर्वन (मे)
 ० अनुगन्, अनुधाव (म्या प से), मृग
 (तु आ से) ।
 प्रहर, दे० 'पट्टी' ।
 प्रघोत, स पु (सं) प्रमाचीट, दे 'गुण्ण'
 २ मूर्ध ।
 प्रनक, स पु (स) वटुर (पु), मूषणिव
 २ मथित्वर ३ अवधारक, सातक

४ भाकर, ख(खानि नो (खी) ५ भूत
 त्वेषु (पु) । सं खी (अनु) क्षीण,
 क्षिणितम् ।
 खनकना, कि. अ (अनु) शिब् (अ, आ
 से, तु), कण् (म्या प से) १ शिखरयते
 खनयन्नायते (ना धा) ।
 खनकान्न, कि. स, 'मनकना' के प्रे रूप ।
 खनखनामा, कि. अ तथा कि. से, दे 'खन
 कना' तथा 'खनकाना' ।
 खनना, दे 'खोदना' ।
 खनिज, वि (सं) धातु (पु), भाकरज
 पदार्थ ।
 खनित्र, सं पु (सं न) अवधारणम् ।
 खपची, सं खी, दे 'खपाच' ।
 खपका(रा), सं पु (स खपर) १ कर्पर
 २ मृत्पाटिका ३ मिश्रापात्रम् ।
 खपकी(री), सं खी (सं खपर) धातुमर्जनार्थ
 मृत्पात्रम् ।
 खपत, खपती, सं खी (हि खपना) समा
 वेष्ट, व्याप्ति (खी) २ विकष, पगन
 ३ व्यय, विनियोग ।
 खपना, कि. अ (सं क्षपण) प्र-उप-पुम्
 (कर्म), व्यपह-व्याप (कर्म) ० क्षि परिहा
 (कर्म), नश् (दि प से) १ हिन्-सग
 पीट् (कर्म) ।
 खपरै (है)ल, सं खी (हि खपना) मृत्प
 ट्टिकाणि खपरै वा भाट्यादित पटल
 ३ तादृशपटलपुत्र गृहम् ।
 खपाच, सं खी (तु खपची) (काठ-)
 खट-ट, वस्तु शकल-ल, २ भण्डार
 पुरष ।
 खपाना, कि. स (हि खपना) प्र-उप-पुम्
 (र आ अ, तु), उपपुज्य-उपपुज्य निर
 वशीकृ, व्यपह-व्याप (मे) २ व्यप-विनि
 पुन् (तु) ३ नि-नश् (मे) ४ सग-पीट्
 (मे) ।
 खपुर, स पु (स न) गगत्थो देशनगर-
 विदेश २ गगन्स्था हरिश्चन्द्रनारी ।
 खपु-प, सं पु (स न) गगन्गुप्त, अमभव
 असाध्य वस्तु (न), शृङ्ग, विशाल-गगन् ।
 रूपर(६), सं पु (सं खपर) मृत्पात्रमेद-

२ काल्या भविरपानपात्र ३ भिक्षामात्र
४ कपाल-लम् ।

खचनान, सं पु (अ) हृत्कम्पन २ (हिंसी
रिया) गर्माशयोमाद, वातोमाद, हर्षमोद ।
खचरी, सं स्त्री (अ) प्रमाद प्रीति, अभाव
२ कोप, क्रोध ।

खपा, वि (अ) रष्ट, दुषित, कुन्द
२ विपण्ण ।

खफीफ, वि (अ) अल्प, न्यून २ रुचु ३ सुद्र
४ लजित ।

खफीफा, म स्त्री (फा) रुचु, न्यायालय
धर्माधिकरणम् २ कुलटा, व्यवसायिणी ।

खयर, सं स्त्री (अ) ममाचार, उदत्त,
वृत्तान वृत्त, वार्ता, प्रवृत्ति (स्त्री) २ शान,
शोध ३ सदेश ४ सखा, चैनय ५ अनप्र
वाद ।

—करना, देना या पहुँचाना, कि मं, विज्ञा
(प्रे), नि-आ विद् (प्रे), सदिश (तु प
अ), बुध्-अवाम् (प्रे) ।

—लगाना, कि स, दे 'दूदना' ।

—देने चाला, स पु, विज्ञापक, आवेदक,
सूचक ।

—दे जाने चाला, सं पु दूत, वार्ता-मदेश,
हर ।

खयरगरीरी, सं स्त्री (अ + फा) अवेशा,
रसग, विना २ सहानुभूति (स्त्री),
सहायता ।

खयरदार, वि (अ + फा) दे सावधान ।

खयरदारी, स स्त्री (अ + फा) दे 'साव
धानता' ।

खचीस, स पु (अ) मयपर, ग्ल ।

खन्त, सं पु (अ) उमाद, विच, विण्णव
अम २ असूनना, सामान्यविरोध ।

खन्ती, वि (अ) उमादिन् २ असून,
लोकवाग् ।

खन्वा, वि (प, स खर्व) वाम, सन्य,
दक्षिणतर २ वामहस्त, सन्यसाचिन् ।

ग्रम, म पु (फा) वरुता, जिह्वाता, आमुखा
कुटिलता ।

—दम, सं पु, शीर्ष, विक्रम ।

—दार, वि, आनमित, आमुष, कुञ्चिन ।

ग्रमसा, वि (अ) पच, विषयक सम्बन्धिन् ।

सं पु, पचकम् २ पचभेद ३ अगुणी
पचकम् ।

ग्रमियाज्ञा, सं पु (फा) प्रतिफल २ दण्ड
३ कष्टम् ४ हानि (स्त्री) ।

ग्रमीदा, वि (फा) वरु, निह्न, अराट ।

ग्रमीर, सं पु (अ) निण्व, जगल, मासर,
भेदक, कारोत्तर, नग्नह (पु) ।

—उदना, कि स किण्वेन ममिअ (नु) ।
स पु किण्वन, किण्वीकरण ।

ग्रमीरा, वि (अ) किण्व-जगल, मिमिन
२ घनमधुकाय ३ तमासुभेद ।

ग्रपानत, स स्त्री (अ) सकपटाहरण,
कुर्विनियोग २ चर्य, वचना ।

—करना, कि स कपटेन आरमसाद् कृ भववा
विनियुज (र आ अ) ।

ग्रपाल, म पु दे 'ख्याल' ।

ग्रपाली, वि, दे 'ख्याली' ।

खर, स पु (सं) गर्दभ, रासभ २ अश्व
तर, बेसर ३ वक ४ काक ५ रावगज्राट
(पु) ६ तुण, वास ।

वि, कठोर, वरुष्ट, कीरन २ ग्रीष्म ३ स्थूल
४ अमगल, अमागलिक ५ निशिन ६ प्रवण,
तिर्यच ।

खर, म पु (फा) गर्दभ, रासभ ।

—दिमाण, वि, जळ, अच, सरमणि ।

खरखर, स स्त्री (अनु) बर्पर, बर्पर, रव-
शब्द ।

—करना, कि स, बर्परावते (ना वा),
बर्परव्यति कृ ।

खरखरा, वि दे 'खुरखुरा' ।

खरगोश, स पु (फा) रास, रासव, शूलिक
शुद्रोमन् (पु), रोमकण ।

खरच, स पु, दे 'खर्च' ।

खरचना, कि स (फा खर्व) व्यय् (नु),
अवि, सञ (तु प अ), विनियुज (र
आ अ, नु), व्यय-व्यय, कृ ।

खरचा, स पु दे 'खर्चा' ।

खरज, सं पु दे 'खदज' ।

खरज, वि (सं खर्वन्) स पु, अवसतनम्
(१०००००००००००) २ अवसतनम्
(१०००००००००००) ।

खरबूजा, सं पु (सं खर्वूज) दशाक्षुल, बद्ध,
भुजा मुन रेखा मुता, वृत्तकर्त्री ।

खरमस्ती, स स्त्री (का) दुष्टता, कुवेष्टा ।

खरमास, स पु, दे 'खरबोस' ।

खरल, स पु (स खल्ल) उट्टू (क) खल,
औपधर्मनमाननम् ।

—करना, कि स खूर् (चु), खूर्णीक, पिप्
(रु प अ), छुद (रु उ अ) ।

खरबोस, स पु (स खरमास >) पौषचैत्री ।
(इनमें मांगलिक कार्य वर्णित हैं) ।

खरसान, स स्त्री (स खरमाण) शाण-
ज्ञानी, भेद ।

खरहरा, सं पु (हिं खर = तिनका + हरना)
अधमार्जनी ।

—करना, कि स, अथ खूर्ज (अ प वे) ।

खरहा, स पु, दे 'खरगोहा' ।

खरही, स स्त्री (हिं खर = पास) (पासार्दे)
राशि (पु) २ पासभेद ।

खरा, वि (स खर = तीक्ष्ण) विष्म, नीहण
९ अभियुत, अविकृत, स्वच्छ, विशुद्ध,
पवित्र, उत्तम १ भगुर, भिदुर ४ निष्कपट,
निश्छल ५ स्पष्ट वधार्य, वादिन् वक्तृ ६ भूरि,
बहु १ कठिन, कीकस । खरी (स्त्री),
विशुद्धा ३ ।

—खेल, सं पु निष्कपट व्यवहार, सरलाचरण ।

—पन, पु विशुद्धता, पवित्रता, उत्तमता,
अजुता, निष्कपटता ३ ।

खराई, स स्त्री दे 'खरान' ।

खराद, स पु (अ खरात से का खराद)
अमय, कुद-द, अम, अमि (स्त्री), चक
चक्रकम् ।

खरादना, कि स कु-देन सख् ।

खरादी, स पु (का खराद) कुदिम्,
चकिन् ।

खराव, वि (अ) निवृत्त, शर्द स्त्रिय, दीन
२ दीन, दुर्गत ३ पतित, व्युत ४ दुष्ट,
पापिन् ।

—करना, कि स मलिनी-वनुषी आविली, क
२ स पथात् भक्ष् (प्रे) उमार्गे भक्ष् (प्रे) ।

खरायात, स पु (अ) मदिराव्य
२ प्लगुहम् ३ वेष्टावीची ।

खरावाती, सं पु (अ) भय २ घृत्कार,
कितव ४ वेष्टावागमिन् ।

खराबी, स स्त्री (अ) दोष, अवयुग
२ दुष्टता, नीचता ३ दुर्दशा, दुर्गति (स्त्री) ।

खरारि(री), सं पु (स रि र्) रामचद्र
२ धीवृष्ण ३ विष्णु ।

खराश, स स्त्री (का) दे 'खरोच' ।

खरिया, सं स्त्री, दे 'खडिया' ।

खरिहान, सं पु दे 'खलियान' ।

खरी, सं स्त्री (सं) गर्दभी, रासभी ।

खरीद, सं स्त्री (का) कद, मूल्येन ग्रहण
२ कीतवदार्थ ।

—व फरोह्त, सं स्त्री (का) कपदिक्रयो
(कि) ।

खरीदना, कि स (का खरीदन) स्त्री (क्
उ अ) मूल्येन अधिगम् अथवा लभ् (भ्वा
आ अ) ।

खरीदार, स पु (का) कथिक, कैटु (पु),
ग्राहक २ इच्छुक, अभिलाषिन् (पु) ।

खरीदारी, स स्त्री (का) क्रय, मूल्येनादान ।

खरीफ, स स्त्री (अ) शारद शारदीय शर
कालीन शस्य ।

खरोच, स स्त्री (सं खुर = खुरचना >)
इष्टत, व्यग्रण ।

खरोचना, कि स (पूर्व) खुरखुर (तु प
से) वि-अभृ (प्रे), (खरोच) खर् (त
उ से) अर् (चु)-खिर् (तु प से) ।

खरोट, स स्त्री, दे 'खरोच' ।

खरोटमा, कि, स दे 'खरोचना' ।

खर्च, स पु (अ खर्च) व्यय, धन, त्याग
व्यय-उत्सर्ग, विनियोग २ मूह्य, अर्थ,
अर्हा ।

—करना, कि, स दे 'खुरचना' ।

—होना, कि, अ, व्यय विसृज् विनियुन् (सब
कर्म) छय-व्ययया (अ प अ) ।

खर्चना, कि स दे 'खरचना' ।

खर्चा, स पु (अ खर्च) दे 'खर्च' २ अभि
योग कार्य-व्यवहारपद, व्यय ।

खर्चीला, वि (हिं खर्च)-व्ययशील, ३ ति
व्ययिन्, अभितव्यव ।

खजूर, स पु (स) दे 'खजूर' २ वृथिय,
दोष । (स न) रजन २ दे 'हरताल' ।

खपरं, सं पु (सं) दे 'खपर' ।

गर्भ, सं पु, दे 'खर २ दे 'गर्भ' ।

खर्बूजा, सं पु, दे 'गुरबूजा' ।

गर्वादा, सं ॥ (अनु) वर्षर ।

—मरना, मरना या लेना, क्रि अ, वर्ष
रायने, वर्षसब्दक, प्रमाद स्वप् (अ प अ) ।

खल, वि, (स) क्रूर, नृसस २ अधम,
नीच ३ दुष्ट, दुर्ज्ञेय ४ पिशुन ५ निर्लज्ज
६ छलिन ।

सं पु, दुर्जन २ मूर्ख ३ तमानवृष्ट
४ पृथिवी ५ स्थान ६ बल (दू) मन्त्र
७ ८ दे 'खलियान' तथा 'तलछट' ।

खलक, सं पु (अ) जीवा प्राणिन (बहु)
२ अणु (न), ससार ।

खलकत, सं स्त्री (अ) सृष्टि (स्त्री), ससार
२ जनौष, जनममर्द ।

खलकी, सं स्त्री (हि खल) त्वच् (स्त्री),
त्वचा, त्वच, त्वचस् (न), छदिम (स्त्री),
मछादनी, अक्षुधरा २ (पशुओं की) चर्मन्
(न) ३ (मरे पशुओं की) अजिन, इति,
कृत्ति (स्त्री) ४ शिष्टनामचर्मन् (न) ।

खलता, सं स्त्री (सं) कुचेष्टा, दुष्टता,
दुर्ज्ञाना, खलत्वम् ।

खलना, क्रि अ (सं मर = तीक्ष्ण >) अनु
चिन्त-अपुक्त-अयोग्य-अनुपपन्न (वि) प्रतिभा
(अ प अ)-दृग् (कर्म) ।

खलबल, सं स्त्री (अनु) क्षोभ, विप्लव,
अशांति-अनिर्वृति (स्त्री), प्रकोप, कलह,
२ कोलाहल, उक्रोध ३ दे 'कुल्लुकाद' ।

खलबलाना, क्रि अ (हि खलबल) बुदबुदायते
(ना वा), दे 'बलना' २ क्षुभ (दि प
से, क् प से), क्षुब्ध विह्वल (वि) + भू
३ दे 'कुल्लुगाना' ।

खलबली, सं स्त्री, दे 'खलबल' ।

खलल, सं ॥ (अ) विघ्न, अ-वराय, बाधा ।

खलाम्, सं पु (अ) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री)
उद्धार । वि, मुक्त, उद्धृत, निस्तीर्ण २ अव
सित, समाप्त ।

खलासी, सं स्त्री (अ) उद्धार, निस्तार,
मोक्ष । सं पु, पटमडपरोपक २ मारनाह
३ पोतभृत्य ।

खलियान, सं पु (सं खल + स्थान)
गन्धान खल ॥ २ धा-यागार, कुशल
३ राशि (पु) चय ।

खलियाना, क्रि स (हि, गल) निस्त्र
चयति (ना वा) निस्त्रचीकृ, चर्न् (न)
अपनी निह (दोनों स्वा उ अ) ।

खलियाना, क्रि स (हि गली) शयी
रिती, -कृ, रिच (इ उ अ) ।

खलिश, सं स्त्री (पा) वेदना पीडा २ बैर,
द्वेष ।

खलिहान, सं पु, दे 'खलियान' ।

खली-खी, सं स्त्री (सं खली) तैलकिट्ट,
तिलकस्क पिण्याक, खलि (पु) ।

खलीज, सं स्त्री (अ) दे 'खादी' ।

खलीफा, सं पु (अ) अध्यक्ष, अधिकारिन्
२ यन्त्रनृपवशविशेष ३ वृद्धन्त ४ सूद,
पाचक ५ सौचिक सूचि ६ नापित ।

खलु, अन्य (स) निश्चयनिषेधजिज्ञासा-नुन
यादिवोधकसम्बन्धन् ।

खलेल, सं पु (सं खलितैल) हृगन्धनैल
किट्टम् ।

खलक, सं स्त्री, दे 'खलक' ।

खल-मल्ल, दे 'गडबड' ।

खल, सं पु (सं) दे 'खरल' २ चर्मन् (न)
३ गर्त ४ चानक ५ इति (स्त्री) ।

खल्ल, सं पु (सं) चर्मन् (न) २ अजिन
जलमन्त्रा ३ वृद्ध, जरठ, स्वविर ।

खल्ला, सं ॥ (सं खल = चमडा >) जीर्णो
पानह (स्त्री), पुराणपानम् ।

खल्लि (स्त्री) छ, -खल्लवाट, वि (सं) दे 'गजा' ।
स पु, दे 'गजापन' ।

खवा, सं पु, दे 'कषा' ।

खवैया, सं ॥ (हि खाना) भक्षक,
खादक भोक्तृ (पु) ।

खस, सं पु, दे, खस' ।

खसखस (खस) ख, सं पु, दे 'खसखस' ।

खस, सं स्त्री (का खस) व्योहर २, नन्द,
अलवाम, वीरणमूल, सेव्य, शीत सुगन्धि, मूलक
वीर, वीरमद्र, हरिम्रियम् ।

खसकना, क्रि अ (अनु) दे 'खसकना' ।

खसकाना, क्रि स, दे 'खसकाना' ।

खसखस, स खी (सं खसखस) खसखिल,
सूक्ष्म, गजुल-बीज, श्वबीज ।

—रस, स पु (स) दे 'अजीम' ।

खसखसा, वि (अनु) श्लेष्मचूर्णरूप, सिक
निल, शरिरि ।

खसखास, स खी, दे 'खसखस' ।

खसम, स पु (अ) पति (पु) मर्त (पु)
२ स्वामिन (पु) सेव्य, नाथ ।

खसरा, स पु (अ) क्षेत्रसूची, केदार
छेरयम् ।

खसरा, स पु (का खारिख) रोमान्तिका,
त्वग्रोगभेद २ खर्जूर-वृद्धि भेद ।

खसखल, स खी (अ) मृदति (खी),
स्वभाव, २ दे आदत्त' ।

खसारा, स पु (अ) हानि क्षति (खी),
दे 'घाटा' ।

खसिया, वि (अ खस्सी) कुसवृण छिन्न
शुक् । स पु, क्लीब, पठ २ अज ।

खसोट, स खी (हि खसोटना) बलात्
अकरनात् सहास ग्रहण-अपहरण-आच्छेदन
२ बलात् उपरादन कर्मूलनम् ।

खसोटना, कि, स (स खट >) असम्यक्
कर्मूलत्पट् (तु)-कृष् (भ्वा प अ)
२ बलात् सहास अवह (भ्वा उ अ)-
आच्छिद् (क प अ) ग्रह् (क उ से) ।

खसोटी, स खी, दे 'खसोट' ।

खस्ता, वि (का खस्त) मिदुर, भगुर, मिदे
डिम २ क्षत, बुडित ।

—खचीड़ी, स खी, मिदुर रितम्भ, सुपिष्टिका
शङ्कुली ।

—दिल, वि भग्न, विच हृदय ।

—हाल, वि, दुर्गत, दरिद्र, दु गित ।

खरसी, स पु (अ) छिन्नमुष्क अज-छाग
२ पठ, क्लीब । वि, कुसवृण, छिन्नमुष्क ।

—करना, कि स, कृष्णी छिद् (क प अ)
त्पट् (तु) ।

खौं, स पु (तातारी, नाठ सरदार) स्वामिन्
(पु), गधीश २ पठानगाने कपाधि (पु) ।

—साहब, खेदादुर, स पु, व्याधिभेदी ।

खाम्पर, वि (सं ख-छिद् >) सच्छिद्र,
सरभ २ रिक्त भूय-गर्भ, अन शुन्य ।

खामड-डा, वि (स खड्ग >) शृग्नि,
विषाग्नि २ सशस्त्र ३ सबल ४ उदण्ड ।

खौंखा, स पु (स कर्षणम् >) महा, पेटक
करक बडोल २ वृद्ध, ३ पजरम् ।

खाइ, स खी (स खण्डम्) अशोधित
असंस्तुत, सिता-शर्करा ।

खाडव, स पु (स न) कुक्षेत्रप्रदेशे वन
विशेष ।

—ग्रस्थ, स पु (स) प्राचीननगरविशेष ।

खौंका, स पु (स खड्ग >) दिभार,
खड्ग मसि निर्लिप्त कृपाण ।

खाडौ, स पु (स खड-ड) भाग, अश ।

खौंसना, कि अ (स कासन) काम् (भ्वा
प से), छु (अ प से) ।

खौंसी, सं खी (स कास) काश, उरकाम,
खयु (पु) ।

खाई, स खी (स खानि >) परिखा, खाह,
खानकम् ।

खाऊ, वि (हि खाभा) अयाहारिन्, भ्रू
भोगिन्, भग्न, वस्त्र ।

—उडाऊ, वि मुक्तहस्त अर्थनाशिन् ।

खाक, स खी (का) धूलि (पु खी),
धूली, पांशु सु, खजस् (न), रेणु २ भस्मम्
(न) भस्ति भूति (खी) ।

—खेय, स पु, खलू (पु), समार्जक ।

—खार, वि, नम्र, विनीत ।

—खारी, सं खी, नम्रता, विनय ।

खाका, स पु (का) बाघरे (ले) दा, बाघा
कार २ अपरिभृतलेख, पाटलेख ३ प्रति
रूप, प्रतिमान ४ सकलन, सन्धानम् ।

—खडाना, मु उप-अव-इत् (भ्वा प से) ।

खान्नी, वि (का) मादिक, मृण्मय २ धूलि
खजो-वर्ज ख ३ स खी, जलहीन-अनासिक,
भूमि (खी) ।

खाख, सं खी [स खजुं (पु)] खर्जु
(खी), खड्ग-वृद्धि (खी), खस, पामा,
विचचिका ।

—खोना, कि अ, कट्टि नि पस अनुभू ।

खोट बी खाज, मु, खने धार, गडे स्तोत्र ।

खाजा, स पु (स खाव) मध्य मोज्य खाद्य
वस्तु (न)-पदार्थ २ भोजन ३ मिष्टान्नभेद ।

खाट, स खी (खाट >) खाट्वा, उपवनम् ।

- खटोला, सं पु गृह, खटकर-परिवहन, । खान, सं. स्त्री. [सं खनिः (स्त्री)] आकर,
 पारि-इन् । ख (खा) मोनिः (खा) २ वपस्त्वान्
 २ कोनः । खान, सं. पु, दे 'खो' ।
 खानक, सं. ॥ (सं) खानकः, खनकः, खनिवृ
 (पु), आत्मिक २ दुष्काकार ३ गृह,
 कारक-मवेक, पलाय, लेनकार ।
 खानकाह, सं खा (अ) दवनमिष्टविहार ।
 खानगी, वि (खा) गृह, कोटुम्बिक ।
 खानदान, सं पु (जा) वध, कन्द, कुलम् ।
 खानशानी, वि (जा) मन्त्र-उद्देश, अभिन्
 २ रिन्ध, पैरु ।
 खानपान, सं ॥ (सं न) कश्च, मध्य
 देय २ खादनपान दुष्टिनीति (न) ३ दुष्टि
 दोषिविधि (पु) ३ परस्परमोजन, सविध
 (क) ।
 खानसामा, सं पु (जा) (दवनादीना)
- खटोला, सं पु गृह, खटकर-परिवहन, । खान, सं. स्त्री. [सं खनिः (स्त्री)] आकर,
 पारि-इन् । ख (खा) मोनिः (खा) २ वपस्त्वान्
 २ कोनः । खान, सं. पु, दे 'खो' ।
 खानक, सं. ॥ (सं) खानकः, खनकः, खनिवृ
 (पु), आत्मिक २ दुष्काकार ३ गृह,
 कारक-मवेक, पलाय, लेनकार ।
 खानकाह, सं खा (अ) दवनमिष्टविहार ।
 खानगी, वि (खा) गृह, कोटुम्बिक ।
 खानदान, सं पु (जा) वध, कन्द, कुलम् ।
 खानशानी, वि (जा) मन्त्र-उद्देश, अभिन्
 २ रिन्ध, पैरु ।
 खानपान, सं ॥ (सं न) कश्च, मध्य
 देय २ खादनपान दुष्टिनीति (न) ३ दुष्टि
 दोषिविधि (पु) ३ परस्परमोजन, सविध
 (क) ।
 खानसामा, सं पु (जा) (दवनादीना)
- खाना, सं पु (सं खान >) मनुष्य, वक्त्र,
 मन्त्रा-मन् ।
 खात, सं पु (सं. न) खनन, अवधारण
 २ परिष्ठा, खात, खातक ३ गर्त ४ कूप
 ५ कासार ६ पुरीषादिगर्भ ।
 खानना, सं पु (जा) म्नाहि (स्त्री)
 २ वस्तु ।
 खाता, सं पु (अ खन >) खाना-मत्स्वान,
 पण्डित २ विषय, विभाग ।
 खाना, सं पु (सं खान >) कुल (मू) र.
 दान्यकोष कहोत् ।
 खानिर, सं खा (अ) मनान, अहर ।
 कि वि, ह्ये, अर्थे, हेयो ।
 —खड, कि वि (अ + पा) यथोचित,
 यथ-यथम् ।
 —खमा, सं स्त्री (अ) मलोद, मत्स्वन् ।
 —खारी, सं स्त्री (अ + पा) अहर,

खाया पिपा निकालना, मु, तीव्र परप तद्ध
(जु) प्रह (भा प अ) अभिहन् (अ प अ)।

मुँह को खाना, मु, पूर्णतया पराभि परिभू
(कर्म)।

खाना, स पु (फा) गृह, सक्न् (न),
आलय २ (मेन आदि का) सपुट, निष्क
र्षणी, चरसमुद्रक ३ कोष पुट ट ४ बोझक,
सारणी चक्र, विभाग।

—खराब, वि (फा) विनाशक, अनिष्टोपादक,
क्षयकर (रो ली)।

—जखी, स ली (फा) शारस्परिकविग्रह,
गृहयुद्धम्।

—नकारही, स ली (फा) गृहाम्बेक्षणम्।

—खारी, स ली (फा) गार्हस्थ्यम्।

—पुरी, स ली (फा + हि पूरना) बोझक
पूर्णम्।

—खदोश, वि (फा) अस्थिर अनियत-वाम,
य (या) यावर। स पु लक्ष्यानिन्,
नित्यविहारिन्।

—खमारी, स ली (फा) जनसरयानम्।
खानि, स ली (स) दे 'खान' २ प्राचुर्य
३ राशि (पु) ४ कोष ५ प्रकार
६ दिशा।

खानिक, स ली, दे 'खान'।

खायक—खुरक, वि (अनु०) विषम, नवीजन।
खामि वि (फा) अपक, आम २ अपुष्ट
भइव ३ अनुभूतशय।

खामखाह, कि वि (फा) खाह मरवाह)
बलाह, इठाव २ अवश्य, भुक्त्वा।

खामी, स ली (फा) भाषणा, अवकता
२ अनुभवहीनता ३ न्यूनता।

खामोदा, वि (फा) नि शब्द, नीरव।

खामोदी, स ली (फा) नीरवता मौनम्।

खार, स पु (स खार) १ दे 'खार'
२ दे 'खानी' ३ दे 'खार' ४ मूलि (ली)
५ गुल्ममेत।

खार, स ॥ (फा) दे 'खार' २ ईर्ष्या,
अमूया, डेप।

—खार, वि, कटकिन्, सक्कट।

—खाना, मु, ईर्ष्य-ईर्ष्य (भा प से)
अमूय (ना था), रपर (भा या से)।

खारा, वि पु (स खार) खार, विशिष्ट-युक्त
२ ईर्ष्यलक्षण, ३ लवण, लवणयुगविशिष्ट
४ कंड अरचिकर (—री ली)।

खारा, सं पु (स खारक) बरह, कटोल,
पटक २ धासादिबधनजाल ३ विवाह
सत्कारोपयुक्तसमवेद।

खारि, स स्त्री (स) दे 'खारी'।

खारिज, वि (अ) बाह्यकूल, अपास्त २ निरा
कृत प्रत्याख्यान।

—करना, कि स, बहिष्कृत, अपास्त (दि प
से) २ निराहृत, प्रत्याख्या (अ प अ)।

—होना, कि अ, बहिष्कृत-अपास्त (कर्म)
प्रतिषिष्ट प्रत्याख्या (कर्म)।

खारिजा नि (अ) बाह्य, शहीद बहिस्थ,
विदेशीय।

खारिश, खारिशत, स ली (फा) दे
सुचली'।

खारी, ॥ ली (स) चोटल-चतर, द्रोण
परिमाणम्।

खारी, स ली (हि खारा) उपरज,
उपरलवण, क्षारलवण। वि ली, दे 'खारा'
दे ली रूप।

—पाखी, स पु, खार, पानीय पलम्।

खाल, स ली (स खाल >) दे 'खाली'
(१३) २ आवरण ३ शव ४ भस्मा ली।

—उखाना, मु०, निर्दय परप-चट निष्टुर दम्
(जु) प्रह (भा प अ)।

—उखेदना या खींचना, मु लव्य अपनी
(भा प अ) निर्ह निष्कृत (भा प अ),
नित्यवचनि (वा था)।

खाल, स ली (स खाल) निम्नभू (ली)
२ रिक्तस्थान अवकाश ३ दे 'खाडी'
४ साम्प्रदीयम्।

खाल, स पु (अ) तिल, निष्क तिल,
कालक जुद्ध।

खालसा, वि (अ खालिस) एसाधित,
एकाधिकित २ राजनीय। स पु, शिष्य
(सिख) जातिविशेष।

खाला, वि (हि खाली) निम्न, अवनत,
अवच।

—खेवा, वि उखावक, नवीजन, विषम।

बाला, सं स्त्री (अ) मातृत्व (अ) स
(स्त्री), मातृभगिनी ।
—ज्ञाद, वि पु, मातृत्वसौय, मातृत्वसेय
(स्त्री, -सौया, -सेयी) ।
—जी का घर, मु, सुकर कर्मन् (न) ।
बालिक, सं पु (अ) अष्ट विधा सुष्टि
कर्तृ (पु) ।
बालिस, वि, (अ) दे 'क्षरा' (२) ।
बाली, वि (अ) रिक्त, शय २ अनविधित
३ रहित, हीन ४ अव्यापृत, निष्क्रिय
५ अधिक, उद्वृष्ट ६ निष्फल, न्यर्थ । कि
वि, वेदलम् ।
—करना, कि स, रिच् (र प अ), परि
त्यज (भ्वा प अ), उत्सृज (तु प अ) ।
—होना, कि अ रिच परित्यज्-उत्सृज (कर्म) ।
—हाथ, मु, अकिंचन, दरिद्र २ निश्चल ।
बालू, स पु (अ) मातृत्वसुध ।
बाल्विन्द, स पु (अ) पति, मर्त्य २ स्वामिन्
प्रभु (पु) ।
—करना, मु, अथर पति विद् (तु प वे)
वृ (रवा व से), द्वितीय विवाह कृ ।
बालस, वि (अ) स, विरच, विशिष्ट, विलक्षण,
असाधारण २ रहस्य, मवरणीय, गोप्य ३
स्वकीय आत्मीय ४ पवित्र ५ प्रधान, मुख्य ।
—कर, कि वि, विशेषत, विशेषण ।
—ब आत्म, सं पु, जनता, लोक ।
बाला, वि (अ) दास उत्तम, उत्कृष्ट २ स्वस्थ
३ मध्यवर्गीय ४ सुदूर ५ परिपूर्ण ।
बाला, स पु (अ) श्रमभोजन, भूपाहार
२ राज्ञो गजोऽथो वा । ३ श्वेतवस्त्रभेद
४ पुरिकाभेद ।
बालि(स्त्री)वत, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री),
स्वभाव २ गुण, धर्म ।
बालसा, स पु (अ) दे 'बालसिधत्' ।
बालिचना, कि अ (स कर्मन्) आत्म, कृष्
(कर्म), २ दृढीकृत नियम् (कर्म) ३ नद
नी (कर्म) ४ (चित्रादि) नृण-आलिख
(कर्म) ५ उद गुप् (दि प अ) नि-आ
पा (कर्म) ६ सु (भ्वा प अ), क्षर
(भ्वा प से) ।
बालिचवाना, कि प्रे ३ 'बालिचना' के प्रे
बालिचना, कि प्रे ३ रूढ ।

बालिचाई, सं स्त्री,
बालिचाव, स पु, } १ आकषण,
बालिचावट, बालिचाहट, सं स्त्री } २ आकर्ष
३ दृढीकरण,
४ नियमन ५ घनता, सुमसक्ति (स्त्री) भा,
तति (स्त्री) ६ ।
बालिहना, कि अ, दे 'बालिहना' ।
बालिचकी, सं स्त्री (सं कृसर) कृशर,
मिश्रीदन न, कृसरा, वेदलोदन न, ऐचरात्र ।
२ मिथितद्रव्य, प्रकीर्णक विविधवस्तुमिश्रणम् ।
—करना, मु, एकीकृत, सं, मिथ (तु) ।
—होना, मु, मसृज-सृष्ट् (कर्म), एकीभू ।
बालिजना, कि अ (स सिद्) दे 'बालिहना' ।
बालिज्जर, बालिज्ज, स पु (अ) देवदूत विशेष
(इस्लाम), २ पर्यप्रदेशक, मार्ग-दर्शक ।
बालिजल्लना, कि स तथा कि अ, दे
'बालिहना' तथा 'बालिहना' ।
बालिजो, स स्त्री (का) शिशिर, दे 'पतझड़'
२ अवनतिकाल ।
बालिजाव, स पु (अ) केश-बाल-भूषण,
लेप रंग-रंग वर्ण ।
—करना या लगाना, कि स, केशान् रम्
वर्ण (तु) ।
बालिजालसा, स स्त्री (अ) लम्बा प्रपा, मीठा ।
बालिजाना, कि अ (स सिद्) दे 'बालिहना' ।
बालिजाना, कि स, दे 'बालिहना' ।
बालिचकी, स स्त्री (म खट्ठ) क्लिका । वाता
वन, लघुदार, गवाक्ष । २ अररी, कपाट
द्वम् ।
बालिताय, स पु (अ) उपाधि (पु), मानपदम् ।
बालिता, स पु (अ) प्रदेश, भूभाग ।
बालिदमत, स स्त्री (अ) सेवा, परिचर्या ।
—गार, सं पु (अ + फा) सेवक, परिचारक ।
—गारी, -गुजारी, स स्त्री (अ + फा)
सेवा, परिचर्या ।
बालिन्, स पु, दे 'बाल' ।
बालिन्, वि (स) दुस्वित, पीडित २ संचित,
चित्तित ३ विपण्ण, शोकमग्न, ३. दीन निरा
शय । ४ श्रात, क्लान्त ।
बालियानत, स स्त्री, दे 'बालियानत' ।
बालिनी, स स्त्री (स क्षीरिणी) रीनी, हिमजा,
हिमदुग्धा (वृक्षभेद) २ तत्फलम् ।
बालिनाज, स पु (अ) दे 'कर' (टैस) ।

खिल, सं. पु. (सं. पु. न) ऊपर - २ २
रिक्त, स्थान-स्थलम् ३ परिशिष्ट ४ शेषांश
५ विष्णु ६ ब्रह्मन् (पु.) ।

खिलभत, सं. स्त्री (अ) समानवेश ४ ।

खिलकत, सं. स्त्री, दे. 'खलकत' ।

खिलखिल, स. स्त्री (अनु०) हास, हसित
हसनम् ।

खिलखिलाना, कि. अ (अनु०) उच्चैः सशब्द
हस् (भ्वा. प. से) २, अट्टहास ३ ।

खिलना, कि. ॥ (सं. स्तल्लन अथवा किरण ?)
विकस प्रफुल्ल (भ्वा. प. से), स्फुट (तु.
(प. से), मिद् (कर्म) २ प्रसद् (भ्वा. प.
अ) ३ शुभ् (भ्वा. आ. से) ४ पृथक् भू ।
सं. पु., विकसन, फुल्लन, प्रस्फुटन ३० ।

खिला हुआ, वि., विवसित, उज्ज्वल, प्रस्फुटित ।

खिलवत, स. स्त्री (अ) निज्जन विपन, स्थानम् ।

खिलवाह, सं. पु. (हि. खलना) खेला, लीला,
क्रीडा, मनोविनोद, विहार ।

खिलवाही, वि. दे. 'खिलवाही' ।

खिलवाना, कि. प्रे, अन्वेन + 'खाना' धातुओं
के प्रे रूप ।

खिला, सं. स्त्री (अ) शयकम् ।

खिलाई, स. स्त्री (हि. खिलाना) अन्नदान,
पोषण २ भक्षण, खादनम् ।

—खिलाई, ॥ स्त्री, भुक्तपीत, खादनपान,
खानपान २ अन्नपानदान, पोषण २ पोषणार्थ ।

खिलाई, स. स्त्री (हि. खलाना) अकपाली,
शिष्टपालिका ।

खिलाह, खिलाही, वि. (हि. खेलना) क्रीडा
मैला मीला, परशील । स. पु., क्रीडक,
खेल्क २ वेदनात्मिक मायाविन् (पु.)
३ ध्वं ।

खिलाना, कि. प्र. खलना' के प्रे रूप ।

खिलाना, कि. प्रे, खाना के प्रे रूप ।

खिलाना, कि. प्रे, 'खिलना' के प्रे रूप ।

खिलाफ, वि. (अ) विरुद्ध विपरीत ।

खिलाफत, स. स्त्री (अ) देवदूत-नृप प्रति
निर्वाह-काराधिकारित्वम् ।

खिलौना, स. पु. (हि. खेल्ना) क्रीडाद्रव्य,
क्रीडनक, क्रीडनीयक २ धुआलकार ।

खिलप, वि. (सं) परिशिष्टे वर्जित लिखित ।

खिल्ली, सं. स्त्री (हि. खिलना) श्वेता, नर्मत्
(न), विनोद ।

—चाज, वि., विनोदशील, नर्मप्रिय ।

—चाजी, सं. स्त्री, विनोदशीलता, नर्मप्रियता ।

खिरत, स. स्त्री, (पा) दे. 'ईट' ।

खिसकना, कि. अ (अनु०) शनैः सप (भ्वा.
प. अ) चल (भ्वा. प. से) २ प्र. सल्ल
(भ्वा. प. से) ३ सत्वर-अलक्षित निभृत
अपया (अ. प. अ) अपस (भ्वा. प. अ)
गम् । सं. पु., शनैः-मृदु, सर्पण, स्तलन,
अलक्षित गमन अपसरण ३० ।

खिसकाना, कि. स, 'खिसकना' के प्रे० रूप ।

खिसलना, कि. अ, दे. फिसलना ।

खिसलाव, सं. पु. दे. 'फिसलाव' तथा
खिसलाहट, ॥ स्त्री 'फिसलाहट' ।

खिसारा, सं. पु. (अ) क्षान्ति क्षति (स्त्री) ।

खिमिआ(या)ना, कि. अ (हि. खीस=
हानि) लज्ज (तु. आ. से), अप (भ्वा.
आ. वे) ग्रीह (दि. प. से) २ कुप (दि.
प. अ), कुप् (दि. प. से) । वि., लज्जित,
हीन, हीन ।

खींच, स. स्त्री (हि. खानना) कर्ष, कर्षणम् ।

—तान, स. स्त्री, प्रतिस्पर्द्धा, विनिर्गोपा
२ अर्थान्तरस्थाना ।

खिसियाहट, स. स्त्री, दे. 'सीस' ।

खींचना, कि. स (स. कर्षण) आ-स, कृप्
(भ्वा. प. अ), बलात् दिशाविशेषे प्रेर (प्रे)-
नी (भ्वा. उ. अ) प्रवृत्त (प्रे) ३ ह (भ्वा.
उ. अ) दे. 'घसीढ़ना' ३ निष्कृत (प्रे),
बहिर अप, नी । ४ उद्भव (भ्वा. उ. से),
पर्युद्धव । ५ श्रुप (प्रे) ६ कृत्स्न (प्रे)
७ वर्ण (तु), आ-अभि लिख (तु. प. से) ८
रुप् (रु. उ. ॥) । स. पु., आकर्ष, आकर्षण,
नयन, हरण, निष्कासन, उद्घन, शोषण
सावण, आन्वयन, रोष ।

खींचने योग्य, वि. आ, कर्षणीय, नेय, इतंज्य,
३ ।

खींचाखींची, } स. स्त्री, दे. 'खींचाना' ।
खींचातान, }

खींचातानी, }

खीज, खीझ, स. स्त्री (हि. खीजना) दे. 'चिद' ।

खीज(स)ना, कि. अ (स. खिद्) दे. 'चिदना' ।

खीमा, सं ॥ (अ) दे 'खेमा' ।

खीर, स खी (स क्षीर रा >) पायसं, परमात्र, क्षीरिका २ दुग्ध, पयस (न), क्षीर, स्तन्यम् ।

—खटाई, सं खा अन्नप्राशनसंस्कार (धर्म) ।

खीरा, स पु (स क्षीरक) (लता) पीतपुष्पा, त्रपुक्कंदी, बहु-कोष-सुदिह, फणा, बटविलता । (फल) त्रपुष, कर्कषफल, सुशीतल, सुधावासम् ।

—कन्दो, सु, तुच्छवस्तु (न) ।

खीरी, स खी (स क्षीर-र >) उवस्-ऊधम ओषस (न) आपीनम् ।

खील, सं खी (हि खिलना) घना (खी, बहु) लाजा (पु, खी, बहु) ।

खीली, स खी (हि खील) बीरीटि (खी), बीटिका, तांदूलम् ।

खीस, सं खी (हि खीब) प्रीति प्रसाद, अभाव २ क्रोध, रोष ३ छाजा, त्रपा । ४ कुस्मित, कुहस ।

खीस्ता, सं पु (का कीस्ता) पुट ट, प्रतेव, लघुमपु २ शुति, कोष इ ।

खुकट, खुज, वि (सं शुक् >) रिकइस्त, अकिंचन ।

खुजडी, सं खी (देश) सूज-ऊर्जा, पिंड पिंड (२) अस्ति-खडग, धेनुका पुत्रिका ।

खुगीर, स पु (फा) दे 'जीव' ।

खुच (खु) र, स खी (स कुजर >) दोष, न्यूनता २ छिद्रावेषता, भुरोमायि(ग)ता ।

खुजधाना, कि स (सं खर्जन >) नरै-त्ववेष्टुष (म्वा प से) । कि अ, कण्डूखस खर्ज अनुभू । कण्डूयति ते (ना था) ।

खुजलाहट, सं खी (हि खुजलाना) दे 'खुजली' ।

खुजली, स खी (हि खुजलाना) (सरसरी) कडु (पु, खी) कडु-कटुति (खी), कटु यन, कण्डूया, खर्जु-जू (खी) २ (रोष) कच्छु-च्छु (खी), पामा, पामन् (पु), विचक्षिका ।

—उठना या चलना, कि अ, दे 'खुजलाना' (कि अ) ।

खुजाना, कि स, कि अ, दे 'खुजलाना' ।

खुटका, स पु, दे 'खटका' ।

खुटपन-ना, स पु (हि खोटा) दोष, अवग्रह, ध्रुता, दुष्टता ।

खुटाई, सं खी, दे 'खुटपन' ।

खुट्टी, स खी (अनु) दे 'खेडी' २ (प = बटन का मूलाख) मट-कुडुप, आधार ।

खुट्टी, सं खी, दे 'खुरण्ड' ।

खुडला, स पु (देश) कुन्दुटालय २ चट कालय ।

खुड्डी, खुड्डी, स खी (स खुड >) शीघ्र कृपण २ शीघ्रकृपे पादाधानम् ।

खुतबा, स पु (अ) प्रशस्ता, खुति (खी), प्रशस्ति (खी) ।

खुद, अन्य (फा) स्वय, स्वत, स्वच्छया (समास के आदि में 'स्व' तथा 'आत्मन्' भी प्रयुक्त होते हैं । उ स्वार्थ, आत्महत्या) ।

—कुडी, स खी (फा) आरम-स्व-निज, घात हत्या वष ।

—गर्ज, वि (फा) स्वार्थ, पर परायण ।

—गर्जी, स खी (फा) स्वार्थ, परता परायणता ।

—मुद्रितार, वि (फ) स्वतंत्र, स्वच्छन्द ।

—मुद्रितारी, स खी फा) स्वान्वय, स्वारी नता ।

खुदना, कि अ (हि खोदना) खन्-उत्कृ-तक्ष् (कर्म), खवद् मिद् (कर्म) ।

खुदरा, स पु (सं क्षुद्र >) क्षुद्र-साधारण, -वस्तु (न) । वि, दे 'खुदरा' ।

खुदवाई, सं खी (हि खुदवाना) अन्य कृत, खनन-खाति (खी) २ खनन, धृत्पा-यति (खी) ।

खुदवाना, खुशाना, कि प्रे, 'खोदना' के प्रे रूप ।

खुदा, स पु (फा) स्वयम् (पु), दे 'ईश्वर' ।

—न ख्यास्ता, सु, शशो न कुर्यात् ।

—परस्त, वि, ईश्वरपूजक, आस्तिक ।

—खुदा कर के, सु, येन येन प्रकारेण, अति, कष्टेन कृच्छ्रेण, ययाकथञ्चिद् ।

—की मार, गु, ईश्वर दैव, प्रकोप ।

खुदाई, ॥ खी (फा) ईश्वरत्व २ सृष्टि (खी) ।

खुदाई, स खी (हि खोदना) खाति (खी) २ खननक्रिया १ खननश्रुति (खी) ।

खुदाताला, सं पु (अ) परमेश्वर, परमेश ।

सुधावन्द, सं पु (फा) ईश्वर २. स्वागिन् (पु)
३ भगवत् प्रीयत् (॥), आर्य, मित्र (सप्त
सम्मानमूचक शब्द) ।

सुदी, सं स्त्री (फा) महिमा, महिम्ना
२ अभिमान, दर्प ।

सुदी, सं स्त्री (स ध्रुव >) वैदलतण्डुला
दीना कण ।

सुनक, वि (फा) शीत, शीतल, हिम ।

सुनकी, सं स्त्री (फा) शैत्यम् ।

सुनसुना, सं पु (अनु) क्षणक्षण, सगरण,
कोटनवनेद ।

सुनस, सं स्त्री (सं चित्रमनस् >) कोप,
क्रोध ।

सुनसाना, कि अ, दे 'कोप करना' ।

सुनसी, वि, (हि सुनस) कोपन, क्रोधन,
रोषण ।

सुनाक, सं पु दे 'क्षिपीरिवा' ।

सुफिया, वि (फा) गूढ, गुप्त, निश्चल ।

—सुलिस, सं स्त्री (फा + अ) प्रच्छन्न गुप्त
गूढ, रक्षिण (बहु), अपसर्पा, चरा, स्पना ।

सुश(भ)ना, वि अ (अनु) आप्रविश (पु
प अ), व्यध् (दि प अ) छिद् (व प
अ), छिद्र प्रवेश कृ ।

सुमार, सं पु (अ) म(सा)त्र, क्षीयता,
क्षीयता २ तन्द्रा, निद्राशुभ ३ निशानामरंज
शैविचम् ।

सुमारी, सं स्त्री, दे 'सुमार' ।

सुरंद, सं पु (स सुर = सुरचना >) शुष्क
जगतवत् (स्त्री), रमंक्षिणी २ किलास,
सिधम् ।

सुर, सं पु (सं) शफ-फ, विल, निष्ठव,
शूर १ सदादीना पावकम् ।

—सुर, वि, सुरिन्, शयिन् ।

सुरसुर, स स्त्री (अनु) सुरसुर परधर,
शब्द नाद ।

सुरसुरा, वि (सं सुर=सुरचना >) ५ स्वर्ग,
असम, विषम, इच्छताशून्य ।

सुरचन, सं स्त्री (हि सुरचना >) सुरित,
पय पात्रसुरित २ सुरित, मिष्टान्न-वदिक, भेद ।

सुरचना, कि स (॥ सुरण) सुरधर (पु
प से), लृप्ति, निष् (पु प से) २ अय
भ्या-भ्यम् (अ प से), विभुप् (प्रे) ।

सुरचनी, सं स्त्री (हि सुरचना) वहेसनी,
निर्वर्षणी २ काष्ठकुटार, सनित्र ३ दुग्धपात्र
सुरितम् ।

सुरजी, सं स्त्री (फा) दे. 'धैर्य' ।

सुरदरा, वि नतोन्नत २ असम, विषम, पिण्ड
काष्ठन, इच्छता मिश्रता परिहार, शून्य ।

सुरपा, सं ॥ (सं शूरप) घासदेनराज,
लघु, टग टग-रानित्र २ चर्मकारोपकरणम् ।

सुरमा, सं पु (फा) सुरा, सुराही वल्गु
२ दे 'सुराहा' ३ मिष्टान्नभेद ।

सुरली, स स्त्री (सं) शस्त्राभ्यास २ शस्त्राभ्यास
स्थलम् ।

सुराई, वि, दे 'सुरा' ।

सुराह, सं स्त्री (फा) भोज्य, मह्य, लाघ,
आहार, भोजन २ (औषध) मात्रा, भाग ।

सुराही, वि (फा) औदरिक, गदमर,
पस्तर । स स्त्री, (दैनिक) भोजन-य ।

सुराफात, स स्त्री (अ) अस्त्रील ग्राम्य-
अशिष्ट, वचनानि (बहु) २ गत्य दुर्नचनानि
(बहु) ३ वल्गु ।

सुरी, सं स्त्री (सं सुर >) शफ विल, चिह्न
२ दे 'धैर्य' ।

—करना, सु, अतिक्षिप्र चल (भ्या प से) ।

सुर्व, वि (पा) लघु, अल्प, सूक्ष्म ।

—चीन, स स्त्री (पा) सूक्ष्मदर्शकचक्र,
अण्वीक्षणयन्त्रम् ।

—सुर्व, वि, (पा) नहभट्ट २ समाप्त ।

सुराई, वि (देश) धूर्त, कुटिल, शठ २ बृद्ध
३ अनुसन्दिग्ध ।

सुलना, कि अ (सं सुद तोरना >)
(द्वारादि) वि अपाह (कर्म), निरर्गली भू,
असमस्त-उदाटित (वि) + भू २ (कष्ट आदि)
विकसु-रुल पुच्छ (भ्या प से), भिद् (कर्म)
३ (औष) उन्मिर् (पु प से), उन्मील
(भ्या प से) ४ (हाव) प्रस (भ्या प
अ), विनन् (कर्म) ५ (मुख) व्यादा
(कर्म), विजम् (भ्या भा से) ६ (रह
स्यादि) प्रकटीभ्यची-आभिर + भू, प्रकाश
(भ्या भा से) ७ प्रारम् प्रारु (कर्म) ८
वदभ्य (कर्म), विपरीत, उन्मुत् (कर्म)
९ (भूमि आदि विद-भिर (कर्म) ।

सुख खलना, सु, व्यक्त प्रकाश-अनिमृत निर्मय
(किंचिद् कार्य) कृ अववा विपयासक्त
(वि) + भू ।

सुखवाना, कि प्रे, 'खोलना' के प्रे रूप ।

सुखा, वि (हि सुखना) उद्दाम, उद्ग्रथित,
उत्सृज्य सुक्त, वन्यनशीन २ शिथिल, प्रदग्ध,
विगलित ३ शिथिलसन्धि, विरल ४ स्पष्ट
प्रकर, व्यक्त ५ अग्रावृत्त व्यावृत्त, असङ्गत
६ विमृष्ट, विस्तार्य, विशाल । सुखना के
धातुओं के कृत रूप ।

सुखे आम } कि वि, प्रत्यक्ष, प्रका
सुखे गजाने } प्रकाश व्यक्त निर्मय,
सुखे मैदान } निःशङ्कम् ।
सुखम सुखा

सुखना, कि प्रे, 'खोलना' के प्रे रूप ।

सुखामा, म पु (फा) सप्रश, मक्षेप ।

सुखा, वि (फा) प्रसन्न, प्रमुदित, प्रहृष्ट ।

—होना, कि अ, आनन्द (स्वा प से), मुद
(स्वा आ से), हृष्ट (दि प से) परि-
मन्तुष्ट (दि प अ), दे 'प्रसन्न होना' ।

—किस्मत, वि (फा) सौभाग्यशालिन् ।

—किस्मती, स स्त्री (फा) सौभाग्यम् ।

—प्रत, वि (फा) लिपित, सुलेखक ।

—वती, स स्त्री (फा) सुखान-वैशाल
नैपुण्य विद्या ।

—ववरी, स स्त्री (फा) शुभ-शु मयाचार
बार्ग वृत्त-उदन् ।

—गवार, वि (फा) रुचिर, रुपाद, आ नद्रक ।

—दिल, वि (फा) प्रसन्नमनस, सनोधिन् ।

—नसीब, वि (फा) सौभाग्यवत्, धन्य ।

—नसीबी, स स्त्री (फा) सौभाग्यवती ।

—मुमा, वि (फा) सुदर्शन, मनोहर, सुन्दर ।

—मू, स स्त्री (फा) दे 'सुगण', सुवास ।

—चूदार, वि (फा) सुगन्धित, सुगंधि ।

—रग, वि (फा) सुगन्ध, सुगंध ।

—हाल, वि (फा) समृद्ध, संपन्न ।

—हाली, स स्त्री (फा) अमृदय, समृद्धि
(स्त्री) ।

सुखामद, स स्त्री (फा) चाट (पु न),
चाटूक्ति (स्त्री) अनिमित्वा-स्तुति (स्त्री),
प्रशंसा, चाटुवाद ।

—करना, कि स, मिथ्या-अतिमात्र अतीव
प्रशंस (स्वा प से)-स्तु (अ प अ)-मु
(अ प से), अमि परि-सस्तु, चाटूक्तिमि-
सात्व-उपलब्ध-उपलब्ध (चु), चाटुनि वद
(स्वा प से) ।

सुखामदी, वि (फा सुखामद) मिथ्या
प्रशंसक, चाटुकार, प्रियवद, चाटुवादिन् (पु) ।

—टट्ट, स पु, अत्यनुरोधिन् चाटुपट ।

सुखी, स स्त्री (फा) हर्ष, प्रमगता, मोद,
आनन्द प्रमोद, आह्लाद, सन्ताप उल्लान,
चित्तप्रसाद, प्रीति सुष्टि (स्त्री) ।

—मनाना, कि अ दे 'सुख होना' ।

सुखक, वि (फा, स सुख), सुख, अचल,
अचल, यान, नीरस २ रुद्ध, रनेहशून्य, अशिष्ट
३ ग्लान, ग्लान विशीर्ण ।

—साली, स स्त्री (फा) अनाशुष्टि (स्त्री),
२ दुर्मिष्ट ।

सुखका, स पु (फा) अलपट्टौदन तम् ।

सुखकी, स स्त्री (फा) सुखता, निर्मलता,
२ रुद्धता ३ स्थल ४ दे 'पल्लव' ।

सुसरकुसर, स स्त्री (अनु) दे 'कानाकूसा' ।

सुसिया, म पु (अ) सुष्क, वृषण, शुक्र
ग्रथि ।

—वरदार, वि चाटु कार-वादिन् ।

सुसूमियत, स स्त्री (अ) विदग्धता,
विशिष्टता, विलक्षणता ।

खूतार, वि (फा) रक्त रुधिर, प्रिय, जिघासु,
द्विष्ट । २ वीषण ३ निर्दय ।

खूट, स पु (म खूट-ड) अश, माग ।
२ अस्त्र, कोण ३ अन्त ४ पार्श्व द्वे
५ कर्णमूलम् ।

खूटा, म पु (स खूट) शकु, कील कीलक
पुष्पल २ नागदन्त भारपाष्टि (स्त्री)
३ काष्ठस्थान ।

खूटी, स स्त्री (हि खूटा) लघु, कील-कीलक,
२ नागदन्त-तक ३ तनुहृद्-लोम, मूल
४ शर्यत्वनानंतर क्षेत्रस्थ काष्ठमूलम् ।

खूद, स स्त्री (हि खूदना) अथादीना
सुरेण मूमिलेखनम् ।

खूदना, कि म (सुण् लोटना >) (अथा
दय) सुरेण पृथिव्य आहन् (अ प अ)-घृप्
(स्वा प से)-लिख् (तु प से) ।

सुद, सुदह, सुदर, स खी (स सुद >)
दे 'कूडा' ।

सुन, स पु (फा) रुधिर, रक्त, लोहित
शोणित, असृज् (न), अस्र २ वय, इत्या ।

—करना, कि स, वधवाण इत्या कृ, इन् (अ
प अ), मृ-न्यापद (प्रे) = प्रमादेन नश्व
भवसद् (प्रे) ।

—होना, कि अ, देवत्वं इन् मार-न्यापद
(कर्म) ।

—परावा, स पु, (फा) नृ-नर, वध इत्या,
रक्त, पात जाव ।

—छाबार, वि दे 'खूबार' ।

—थूकना, स पु, रक्तहीनत्वम् ।

—औखों में उत्तर आना, सु, कोपरणनयन
(वि) + भू ।

—उचलना या गौलना, सु, अतीव ऊर्ध्व
(दि प से) ।

—का प्यासा, सु, जिवाश्च, वधोपत ।

सवार होना या चढ़ना, सु, वषाव इत्याये
सज्ज-उपन (वि) + भू ।

खुमी, स पु (फा) घातक, हत (पु) । वि,
हताकाम, वधेयिन्, जिपासु ।

खूब, वि (फा) अच्छ, भद्र, उत्तम, श्रेष्ठ ।
कि वि, सन्धक, साधु, शोभनम् ।

—रू, वि (फा) सुन्दर (समुखी खी) ।

—सुरत, वि (फा) सुन्दर, मुरूप ।

—सुरती, स खी (फा) सुदरता, मुरूपना ।

खूरी, स खी (फा) अच्छता, उत्तमता
२ गुण, विशेष, विलक्षणता ।

खूसट, स पु (स कीशिक) दे 'उल्ल'
२ जरठ, स्थित । वि, रसिकताशब्द, छुष्क
हृदय २ जड ३ कुदर्शन ।

खेचर, स पु (स) गगनविहारिन्, स्थोमग
२ ग्रह, नक्षत्र ३ वायु (पु) ४ देव
५ विमान न ६ खग ७ मेष ८ भूतमेता
९ इक्ष्म १० क्रिष्णश्च ११ शिख
१२ १३ दे 'पारा' तथा 'कसीस' ।

खेचराश्च, स पु (स न) दे 'खिचटी' ।

खेटक, स पु (स) मृगया, आरुत २ वर्षव
ग्राम ३ नक्षत्र ४ बन्धदेववशा ५ वटि (खी)
६ दाह, पलकम् ।

खेटकी, स पु, दे 'शिकारी' ।

खेदा, स पु (स खेट) लघुग्राम, ग्रामटिका ।
—पति, स ३ ग्रामणी (पु) ।

खेदा, स पु (देश) विविधापयोग ।

खेत, स पु (स क्षेत्र) वेदार, भूमि (खी),
वप्र प्रे, बलज, निधुट, राजिका, पाटीर
२ शस्य, कृषिकल ३ रण-युद्ध-समर, भूमि
४ खड्ग, पलकम् । ५ उत्पत्तिस्थान
६ (पशुना) जाति (खी) ।

—आना या रहना, सु, वीरगति, आप् (स्वा
उ अ), युद्धे इन् (कर्म) ।

—खोदना, सु, युद्धाव पलाय् (स्वा आ से)

खेतिहर, स पु, दे 'किसान' ।

खेती, सं खी (हि खेत) दे 'कृषि' २ शस्य,
कृषिकलम् ।

—थारी, सं खी, दे 'इषि' ।

खेद, सं पु (सं) अनुशोक, अनुपात, २ दुःख,
शोक, आधि (पु), आ (अ) ति (खी),
कलेश ३ स्थानि ज्ञानि अंति (खी) ।

—जनक, वि (स) अनुशोकप्रद, दुःखदायक,
कलेशकर, आतिजनक ।

खेदना, कि सं स (खट >) दे 'खेदेरना' ।

खेदा, स पु (हि खदना) गजादिबधनपरम् ।
२ दे 'शिकार' ।

खेदित, वि (सं) खिा, अनुगत २ मान, हात ।

खेना, कि स, (सं क्षेत्रण >) नौद्वेन सचन्
प्रेर प्रनुर प्रणुद (प्रे) २ नीका वर प्रेर
(प्रे) ३ दे 'विताना' ।

खेप, सं खी (सं क्षेत्र >) सहृदायो भार
२ पोतस्थ इव्य ३ नौकादीनां सट्टय यात्रा ।

खेपना, कि स (स क्षेत्रण) दे 'विताना' ।

खेम, स पु, दे 'क्षेम' ।

खेमा, स पु (अ) पट-बल, नक्षत्र-गृह
वेधम् (न), दण्य इवम् ।

—गाइना, कि स, दूख रव् (जु) उप
कल्प् (प्रे) ।

खेल, स पु (३ खला) कीडा, खेलि (खी),
सन्धन, लीला २ वृत्त, वदत ३ सुकर धुद,
नार्य ४ कामत्रोहा, समोग ५ अभिनय,
नाटक ६ कौतुक, विचित्रकार्य ७ (पशुभो
के लिष्ट) जलद्रीणि (खी) -णी ।

—समस्या, सु, सुखर मन् (दि आ अ) ।

खेलना, कि अ (स खण्) खेल विलम् ।
 कीड (स्वा प से), विह (स्वा प अ) ।
 २ ममो-रतिक्रिया ३ विचर चल् (स्वा
 प से) ४ भूताद्य भाषाणि चल् (प्र)
 कि स नृ-रूप (जु) अमिनी (स्वा प
 अ) । (जूआदि) दिव (दि प से)
 खलु (जु उ से) ।

खेलनी, स स्त्री (अ) चातुरग्रीवाय
 २ शार शार (पु) ।

खेलवाह, स पु, दे 'खिलवाह' ।

खेलवाही, वि, दे 'खिलवाही' ।

खेलवाना, कि प्र, खेलना के प्रे रूप ।

खेला, स स्त्री (स) कीडा लीला ।

खेलाही, वि, दे 'खिलाही' ।

खेलाना, कि प्रे, 'खेलना' के प्रे रूप ।

खेलि, स स्त्री (स) कीडा लीला । स पु
 पद्म २ खग ३ सूर्य ४ शार ५ गोवत् ।

खेवक, स पु } (हि खना) के 'केवट' ।
 खेवट, सं पु }

खेवट, सं पु (हि खल + वट प्रात्य) क्षेत्र
 पतिलेख ।

खेलना, कि स, दे 'लना' ।

खेवा, स पु (हि खना) तार्य, तरण्य,
 आतर तारिक २ नैक्या नदीत्थन ३ वार,
 अवसर, पर्याय ४ भाराक्राना नौ (स्त्री) ।

खेयैया, स पु (हि खेय्या) दे 'खेय' ।

खेस, स पु (देश) अवसर, आस्तरपट ।

खेसारी, स स्त्री (स खार) बलायभेद ।

खेह (र) स स्त्री (स खार) रवस (न),
 धूलि (स्त्री) २ भरन (न) असिपन् ।

खेचना, कि स, दे 'खीचना' ।

खेचवाना, कि प्रे, 'खीचना' के प्रे रूप ।

खेचाखेचखी } स स्त्री, दे 'खीचाना' ।
 खेचाखेचनी }

खैर, स पु (स खदिर) सारद्वय, यद्याय
 कुषारि (पु), दत्तधावन २ (हि कत्या)
 रादिर, जादरसार ३ खणभेद ।

खैर, कि वि (अ) अस्तु, एव, साधु मद्र,
 सुपु (सव अन्य) २ का चिन्ता ।

स स्त्री, कुशल, मगलम् ।

—आफियत, स स्त्री (अ) कुशलमम् ।

—खाह, वि (अ + फा) शुभचिन्तक,
 हिनैपिन् ।

—खाही, स स्त्री (अ + फा) शुभचिन्तकता,
 हिनैपिना ।

खैरा, वि (हि खैर) खदरवा । स पु,
 खाहिरवा कयेनो अश्वो बको वा २ नल
 तल-मीन ।

खैरात, स स्त्री (अ) दान, त्याग ।

खैराती, वि (अ) धनार्थ, पुण्यार्थ २ वदान्य,
 उदार ।

खैरियत, स स्त्री (अ) मगलम्, कुदरम् ।

खौ (स) गाह, स पु (स खगह तथा
 खोकाह) श्वेतपिगलाथ ।

खौ खौ, स स्त्री (अनु) काम-अनयु शब्द ।

खौच, स स्त्री (स कुच-लकीर डालना) >
 कोलादिभि बस विदर विदल-अभ्रम् २ दे
 'खरौच' ।

—आना या लगाना, कि अ, कोलादिभि दू
 (कर्म, दीर्घे) ।

खौचना, कि स, दे 'खरौचना' ।

खौचा, स पु (स कुच-जोडना) एत
 नवनवर २ दे खौच ३ दे 'खरौच'
 ४ आधान, प्रहार ५ पूरणम् ।

—खौची, स स्त्री, परस्परकलह, मिथ
 प्रहार ।

खौची, स स्त्री (स कुच) पूरा २ पदा
 भान्तरनिवेशितवस्तु (न) ३ भुद्रवस्तुकप ।

खौटना, कि स (स सुट तोडना) >
 अपुलाभि पत्रपुप कु (प्रे), उद्ग-उत्कृ
 (स्वा प अ) ।

खौटा, वि, दे 'खोटा' ।

खौडर, स पु (स कोट-र) निम्बुद ।

खौडा, वि (स खाह) विवला, विकल,
 खज, पय २ दतनेन ।

खौता, खौथा, स पु दे 'खोसला' ।

खौपा, स पु दे 'खोपा' ।

खौसना, कि स (स कोट >) पूरा, नि
 वा, वेगन, निषानम् ।

खोआ, स पु, दे 'खोया' ।

खोखला, वि (हि खुख) शय रिक्त,
 गर्भ-उदर-मध्य ।

खोखा, स पु (हिं खुख) भनार्पणादेशपत्र ।

(व) बाल [खोखी (खी) = बालिका] ।

खोज, स खी (हिं खोजना) अन्वेषणणा, गन्वेषणणा, मार्गणणा, अनुसन्धान, शोध २ चिह्न, लक्षण ३ चक्रपाद, चिह्नम् ।

—करता, कि स दे 'खोजना' ।

—राज, स खी, पृच्छा, अनुयोग २ अनुसन्धान, विचार रणरण ३ अन्वेषणम् ।

खोजना, कि स (म सुज=चुराना >) अन्विष (दि प से), निरूपमाण (चु०), दृग (चु आ से) अनुसन्धान (जु उ अ) भिचि (स्वा उ अ), अव निर ईश्व (आ आ से) ।

खोजाना, खोजाना, कि प्रे 'खोजना' के प्र रूप ।

खोजा, स पु (का क्वाज) सेविद, सेविदल, कचुकिन्, २ सेवक ३ आर्य, महान्य, मिश्र, नायक ।

खो जाना, कि अ, दे 'खोना' (कि अ) ।

खोजी, खोजिया, म पु (हिं खोजना) अन्वेषक, निरूपक, निराश्रक, अनुसन्धायाक, २ घर, चार, अपसप ।

खोट, मं मी (स खोट >) दोष, वैकल्य, हेतुग्य, दूषण २ मिथन, ३ मिथपातु (पु), दुष्प, अपद्रव्यम् ।

—मिथाना, कि स, अपद्रव्येण मिश्र (चु) । खोटा, वि (म खोट >) दूषित, सद्दोष, दोषिन्, विकृत २ (अपद्रवेण) मिथित, दूट, हनिन् ३ दुष्ट, दल ४ छलिन्, अधार्मिक ।

खोटा खरी मुनाना, मु, निर्मलं नई (चु), अविशिष्ट (तु प अ), निद (आ प से) ।

खोटार्ई, स खी, दे 'खोटापन' ।

खोटापन, सं पु (हिं खोटा) दुष्टता, क्षुद्रत्व २ छल, कपट ३ दोष, वैगुण्य ४ अपद्रव्यमिथणम् ।

खोह, वि (स) विकलाग, अगहीन, विकलेन्द्रिय, योगह ।

खोह, स खी (हिं खोट) देवभूत प्रेत, दोष २ रोग ३ कुमुद्रनैर्त ४ दोष, विरजता ५ चन्दनवाद्यलव हम् ।

खोहरा, म पु, दे 'खोट' ।

खोखा, सं पु दे 'द्वयवडी' ।

खोद, सं पु (का खोद) खोल्क, लोह, धातुमय, शिरस्त्राण शीर्षण्य शिरस्त्वम् ।

खोद, सं पु (हिं खोदना) पृच्छा २ निरीक्षणम् ।

—विनोद, सं पु, अनिव अनुयोग अन्वेषण विचारणम् ।

—कर पूढ़ना, मु, निभृत रहस्यगूढ प्रष्ट (तु प अ) अनुयन् (क आ अ) ।

खोदना, कि स (सं खुद-खोदना >) दम् (आ उ से), (भूमि) अवदू (प्रे), भिद (क प अ) । २ उत्पट-उमूल (चु) ३ उत्पू (तु प से), तम्बू (आ प से), सुद्र (चु) ४ उत्पन्, निभिद (क प अ) ५ यष्ट्यादिभि स आ पीद (चु) ६ उत्प-उत्तिज (प्रे) । स पु, खनन, खाति (खी), अवदारण, भेदन, उत्पाटन, उन्मूलन, उत्तिरण, तक्षण इ ।

—योग्य, वि, खननीय, लेय, अवदारयितव्य, उत्पाटनीय, उन्मूलयितव्य ।

—खाल, सं पु खनक (—की खी), अवदारक, उन्मूलक उत्पाटक ।

खोदा हुआ, वि, खात, अवदोर्ण, उन्मूलित, उत्पाटित इ ।

खोदनी, स खी, (हिं खोदना) एतु मनित्र वः ।

कन—स खी, भवणशाधना, कर्तव्यदूषनी ।

दत—स खी, रदमशोभनी दतोन्मेषनी ।

खोदवाना, कि प्रे, 'खोदना' के प्र रूप ।

खोदार्ई, स खी, दे 'खोदना' ।

खोदवा, सं पु (का खोदवा) भागवाह भाजन, क्षुद्रवस्तुधिकतु पात्रम् ।

खोना, कि स (स खेपण >) हा (जु प अ) रयन् (आ प अ) २ अपन्यद् (चु) कृवा खेडम् (प्रे) । ३ विप्रक, नश (प्रे) । कि अ, मार्गान् भद्रा भ्रम (आ आ से) सधम् (दि प से) २ नश (दि प से), खु (आ आ अ) ।

खोपड़ा, खोपरा, स पु (सं खपर) कपाण छ, कर्पर २ शीर्ष, शिरस् (न) ३ शफन्, नाटिदेर-ख, शीष्टिलपत्र ४ अण्ण नाटि वेर, शीर्षगर्भ ५ मिश्रपात्रम् ।

खोपड़ी, सं स्त्री (हिं खोपडा) दे
'खोपडा' (१, २) ।

अधी या औधी-का, मु जड, अण्ड, मदमति ।

—खाना या खाट जाना, मु, वाचान्तया
उद्धित-सतप्-अर्द्ध (प्रे) ।

—गली करना, मु अत्यधिक तड (प्रे) ।

खोपा, सं पु (स खपर) नारिकेल, बीज
— २ दुग्धप्रकोप ३ मार्गभिमुत्तो गृह
को ४ अक्षरधर्म, विक्रोग वेशविदास ।
५ वेणी-कटरी-कष वष जू-जकम् ।

खोया, स पु (स खोव) बगी-व्यानी
सत्रा-कृत दुग्ध किला २ इह शेष देव
हतरस इधु ३ इहकालेप ।

खोया, वि (हिं खोना) नञ, भट, ममान ।

खौर, वि (सं) पगु खन, शीत, खोह
खोल ।

खोरा, सं पु (म खोर-या फा अबखोर)
वषक-का, पात्रम् । दे 'करोरा' ।

खोरी, स स्त्री, दे 'कृचा' ।

खोल, म पु (स खोल >) कोष रन्, वेष्टन,
आवरण २ कीर्तवच (स्त्री) ३ पुग्-
४ उचरीय, वेन् ।

खोलक, स पु, (स) शिरकागम् २ कपाल
र ३ ककुब्-भूतन्वच (स्त्री) ४ वल्नीक
क ५ सर्वविलम् ।

खोलना, कि स, (स खुड=भेदन >)
(दारादि) उद्धृत (प्रे), वि-अपा वृ (स्वा
उ से), निरन्-लीह । (ओलें) उन्मील,
उन्मिष-वकल (प्रे) । (मुख) स्वादा (जु
प अ), उद्धृति । उन्म (प्रे), (रहत्यादि)
आविष्-व्यली प्रवर्गी, कृ । २ शिथिलवति
(ना धा), मोभ (जु), उन्मुच् (प्र)
३ विलु विलु (प्रे) ४ अपा वि वृ, उच्छिद्
(प्रे) ५ विवस्त्र कृ ६ व्याकृ, व्याख्या
(म प ब) । स पु, उद्घाटन, विवरण,
उन्मीलन, विक्राम, खुटन, विजृम्भा, आवि
श्ररण, उन्मोचन इ ।

खोलने योग्य, वि, उद्घाटनीय, उन्मीलनव्य,
उज्ज्वलनीय इ ।

खोचा, म पु, दे 'खोश' ।

खोशा, स पु (फा) गुच्छ, गुत्त, सवक ।

खोसना, कि स, दे 'डीनना' ।

खोह, सं स्त्री (सं खोह) बदर-रा, गुहा,
गहर, दरी = विवर-र, बिल, कुहरम् ।

खों, सं स्त्री (सं खन् >) गर्त, अवत, विन्न्
= कुशल, धान्यकोष्ठ ।

खौचा, स पु (स खन् + च) माद्वन्-मि
गुणनतालिका ।

खौसदा, स पु (प० सुमना ~) नीर्,
उपानह (स्त्री)-पादवम् ।

खौफ, स पु (अ) भय मोति (स्त्री), वाम ।

—नाक, वि (म + फा) भयकर, मोतिजनक ।

खौर, स स्त्री (स खुर=लवोर बालना >)
अर्द्धचद्राकार नदनादेस्तिक २ स्त्रीभक्त
भूषणभेद ।

खौरहा, वि (हिं खौरा) (पगु) पामा
सिध्म, पीडित, पामन ।

खौरा, (पशुओं का लुजली-रोग) स पु
(स खौर या फा बालखौर >) पानम्
सिध्मन् (पु), पामा । वि दे खौरहा ।

खौर, स पु (देश) वृषभ, नर्तना निनाद
२ कल्ह ।

खौलना, कि अ, दे 'उबलना' २ बुद्धिदायते
पेनायन (ना धा) ३ प्रदुप (दि प मे),
म-विभुम् (स्वा आ से) ।

खौलाना, कि प्रे, 'खौलना' के प्रे रूप ।

खौहा, वि (हिं खाना) औदरिक, अन्तर,
धरम, बुद्धिम् ।

ख्यात, वि (स) प्रसिद्ध, विदुष ।

ख्याति, स स्त्री (सं) प्रसिद्धि-कारि (स्त्री) ।

ख्यापन, स पु (स न) प्रकाशन, घोषा,
प्रचारणम् ।

ख्याल, सं पु (अ) विचार-रणा मन, म,
मति (स्त्री) २ स-सृष्टि (स्त्री), स्तरण,
धारणा ३ अनुमान, वि, तर्क, अभ्यूह इन
४ आदर, समान ५ गीतिभेद ।

—से उत्तरना, मु, विस्मृ (कर्म), सृष्टिपथाद
अध (स्वा आ से) ।

ख्याली, वि (अ ख्याल) कल्पनिक, कल्पित,
कल्पनात्मक, अवास्तविक, वितथ ।

—पुलाव पकाना, मु, गन्धबुद्धिमानि तपु
ष्पाणि वाचि (स्वा उ अ) ।

खिष्टान, स पु (हिं खोष्ट) दे 'ईसाई' ।

खीष्ट, स पु (अ क्राइस्ट) दे 'इसामसीह' ।
 ख्वाजा, स पु (फा) ख्वायिन्, प्रभु
 २ अख्यक्ष, नायक ३ खोविद-रुह ४ श्रेष्ठ
 यवनभिक्षु (■) ५ आर्य, मित्र ।
 ख्वाच, स पु (फा) निदा २ स्वप्न ।
 खवार, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त, क्षीण २ अना-
 दृत, अपमानित ।
 ख्वारी, स खी (फा) विध्वंस, विनाश
 २ अनादर, तिरस्कार ।

ख्वाह, अव्य, (फा) वा, अथवा, आहारित्व
 (सब अव्य) ।
 —मख्वाह, कि वि, मताग्रहेण, मताभिमानेन
 २ अवश्य, निर्विकल्पम् ।
 ख्वाहिश, सं खी (फा) अभिलाष, आकांक्षा,
 इच्छा ।
 —सद, वि (फा) आकांक्षिन्, इच्छुक ।
 —करना या रखना, कि स, इष् (पु प से),
 बाछ् आकास् अभिलष् (स्वा प से) ।

ग

ग, देवनागरीवर्णमालायां तृतीयम्व्यजनवर्ण,
 गकार ।
 गगाम्बु स पु (सं न) जाह्नवी, गंगा, जल
 वारि (न), २ वृष्टे स्वच्छजलम् ।
 गग, गगा, स खी (स गगा) जाह्नवी, त्रिष-
 थगा, भागीरथी, अदाकिनी, सुरसरि (खी),
 विष्णुपत्नी, ज्ञापगा, हरदेश्वरा ।
 —जमनी, वि (स गगा + हि जमुना >)
 मिश्रित, सफर, द्विवर्ण २ स्वर्णरजतमय ३ शुद्ध
 ज्ञान, सिदासिन ।
 —जल, स पु (म न) भागीरथीतोय २ श्वेत
 मूढमवलम्भेद ।
 —जली, स खी (स गगाजल >) गगाजल
 पात्रम् ।
 —जली उठाना, मु गगोदकेन स्पर् (म्वा
 उ अ) ।
 —जुग, स पु (स) भीष्म, गणेश २ प्रेत
 बाहो जातिविशेष ३ तीर्थवासी विप्रभेद ।
 —मागर, स पु (सं) गगामुख २ कलश,
 उदकपात्रभेद ३ वनेषु तीर्थविशेष ।
 गगाल, सं पु (स गगाल्य >) वृद्धजलपात्र ।
 गगोदक, स पु (सं न) गगाभागीरथी,
 जल तोयम् ।
 ज, स पु (फा, स) कोश ५ २ राशि
 (पु) ३ नियमा वाणिज्यस्थान ४ समूह ।
 जात्र, म पु (म न न-वेश >) खान्दत्य,
 खवाटना, विदेशता ।
 गंजन, स पु (स न) अवज्ञा, तिरस्कार
 २ नाश, ध्वंस ३ पीडा, व्यथा ।

गजा, वि (सं कञ = केश >) खत्वाट, विवेश
 (शी, खी), खलत, खलोट ।
 गजी, स खी (स गज), राशि (पु),
 निकर, समूह २ दे 'शकरजद' ३ दे
 'बनिदायन' ।
 गजीफा, स पु (फा) पत्रखेलामेद ।
 २ क्रीडापत्रचय ।
 गजेकी, गजल, वि (हि गाजा) गजापायिन्,
 गवाप ।
 गैठकटा, स पु (हि गौठ + काटना) ग्रथि
 भेदक, चौर ।
 गैठजोडा, स पु (हि गौठ + जोडना) दे
 'गठबंधन' ।
 गैठबंधन, सं पु (■ ग्रथिवधन) ग्रथि-ग्रथिका,
 बंधन बंधन-संश्लेषण । (वैवाहिकरीतिभेद) ।
 गड, स पु (स) गल्ल, कपोल २ इस्ति
 कपोल, कट, करट ३ दे 'कनपटी'
 ४ स्फोटक, पिटक ५ रेखा, चिह्न ६ ग्रथि
 (पु) ७ शस्त्रिन्, गल्लक ८ रक्षाकरट
 ९ गड (पु) ।
 —गाला, स खी (स) गल्ल, कठमाला,
 गल्लरोगभेद ।
 —गल, सं पु (सं न) दे 'कनपटी' ।
 गलक, स पु (स) कठधार्यो रत्नाकरट
 २ ग्रथि (पु) ३ स्फोटकरोगभेद ४ शस्त्रिन्
 (पु) ५ चिह्न ६ देशविशेष ।
 गंठकी, सं खी (स) गदीविशेष
 २ खड्गिणी, खड्गमुनी, गुंगमुली ।

गङ्गा, सं पु (सं गङ्क=गाठ) १ कठघायो
रक्षाकरड २ चतुष्क, चतुष्टय ३ कपदिका
पङ्क, चतुष्टय ४ वलय, चक्र ५ ह्यकठमूषण
६ इक्षु (पु) ।

—तावीज सं पु, मन्त्रयन्त्र ।

—तावीज करना, कि म, रक्षाकरडै भूतप्रेतान्
निष्कम (प्रे) दूरी कृ ।

गँडा(हा)सा, सं पु (हि गेडी+स असि >)
यवस-यास-सेदनी २ लघु, परशु (पु)
परम्प ।

गङ्गप, सं पु (सं) गङ्गा, चुलुक चुलुक ।
२ शुभाग्र, शुभारम्भ ।

गँडेरी स स्त्री (हि गङ्गा) इत्,
खण्डक-कम् ।

गदगी, सं स्त्री (फा) मल ल, अव (प) स्कार,
कल्क-कक, किट्ट, कर्दम २ मालिन्य कालुष्य
३ अपवित्रता, अशुचिना ।

गँदला, वि, दे 'गदा' ।

गदा, वि (फा) मलिन, मलीमस, समल,
कलुष, आविल २ अष्टाष्ट, अपवित्र ३ कुत्सित,
'र्य', अश्लील ।

—करना, कि स, कलुषयति मलिनयति
(ना धा), दुप (प्रे दूषयति), कलुषी
आविली, कृ । [गदी (स्त्री)=मलिना इ]

गदी बालें, अश्लील, ग्राम्य-अवाच्य-वचनानि ।

गदा बिरोजा, स पु (सं गध+दे विरोजा)
कुन्ड-कुन्ड, कुटुर-र, पालकी, बहु-तीक्ष्ण-गध,
भीवांस सक, सरल, द्रव निर्यास ।

गदुम, म पु (फा, सं गोधूम), सुमन,
स्नेहभोग्य, प्रवट ।

गदुमी, वि (फा गदुम) गोधूम (सपास में),
गोधूम-सुमन-वर्ण, प्रवटमय ।

गध, स स्त्री (स पु) आमोद, धाम
२ ग्राम्यास शृङ्खिलिगु (गे) ३ सुगध,
सुवास ।

—खिलाव, स पु (स गधविडाल) गध
मार्जार, खट्वास ।

—रात्र, —सार, स पु (सं) चदनम् ।

गधक, स स्त्री (स पु) गधि (घ) क,
गधामन्, सीगधिक ।

—का तेगध, स पु, गधकाम् ।

गंधकी, वि (सं गधक >) गधक, गार्म-युक्त
२ ईषत्पीत ।

गधन, स पु (सं न) गन्धप्रसारणम्
२ ग्रीहिभेद ३ अध्ववसाय ४ आघात
प्रहार ५-दोषप्रदर्शनम् ६ समूचनम् ।

गधर्व, सं पु (स) स्वर्गमावक, दिव्यगायन,
गातु (पु), देवभेद २ गायक । [नौं स्त्री]

—नगर, स पु (सं न) स स्थले वा ग्राम
नगरादीना मिथ्याभास, गातु-गधर्व, पुर
२ माया, प्रपञ्च, इन्द्रजालम् ।

—विद्या, सं स्त्री (स) सगीत, सगीत बाध,
विद्या शास्त्रम् ।

—विवाह, स पु (स) विवाहभेद (धर्म)
पित्रोरनुमति विना स्वेच्छातो विवाह ।

गधवती, स स्त्री (स) पृथिवी धरणी ।
२ व्यास जननी, सत्यवती ३ सुरा
४ जातभेद ।

गधार, म पु (स गधार) भारतवर्षस्थो
धरत्या दिशि देशविशेष २ एतौयत्वर
(सगीत) ।

गधी, स पु (स गधिन् >) गधिक, गध,
विक्रयिन् उपजीविन् वणिज् २ ३ धास-कीट,
भेद ।

गधारी, स स्त्री, दे 'गधारी' ।

गभीर, वि (स) ग (घ) भीर, रक्, अगाध,
निम्न २ गहन, निविड ३ दुर्बोध, निगूढार्थ
४ मद्र, घन (शब्द) ५ शान्त, सौम्य ।

गभीरता, स स्त्री (स) गामीर्, गौरव, भीरता,
निम्नता, गहनता, दुर्बोधता, सौम्यता इ ।

गँवाऊ, वि (हि गँवाना) अपव्ययिन्,
विशुषिन्, दे 'गनाडू' ।

गँयाना, कि स (स गमन >) अपव्यय (जु)
वृथा सौ हम् (प्रे) २ हा (जु प अ),
त्यज् (स्वा प अ) ३ (समय) या
अतिवह (प्रे) ।

गँवार, वि (हि गँव) ग्रामीण, ग्रामिक,
ग्रामिन् (पु), ग्राम्य २ मूर्ख, जड ३ अनार्य,
असभ्य ।

—पन, स पु, ग्रामीणता, मूर्खता, अस
भ्यता इ ।

गँवारू, वि (हि गँवार) ग्रामीय, असस्कृत,
प्राकृत २ अक्षिष्ट, असभ्य ।

गॅसीला, वि (हिं गौसी) ग्रथिल, ग्रथि पर्व, मय
२ वेधक, छेदक ।

गळ, स स्त्री, दे 'गौ' ।

गगन, स पु (स न) आकाश-शब्द ।

—भेदी, वि (सं दिन्) आकाश व्योम,
वेधक वेधिन् भेदिन् (शब्दादि) २ (भवनादि)
गगन व्योम, स्थानु बिन्, अभ्रलिह्, नभोलिह् ।

गगरा, स पु (स गर्गर-दधिमयनपात्र >)
धातु कुभ कञ्श घट, गर्गर ।

गगरी, स स्त्री (स गर्गरी-दधिमयनपात्र >)
धातुमयल्लु कलश घट कुभ, गर्गरी ।

गघ, स पु (अनु) पके चरनज, शब्द
२ खडगादिवेधमोक्ष शब्द ३ लेप, सुधा,
४ गृहभूमि भू (स्त्री) ५ सुधालिप्तल,
कुट्टिम मम् ।

—कारी, स स्त्री (हिं गच + का कारी >)
सुधा लप, कार्य कर्मन् (न) ।

गघपच, वि दे 'गिचपिच' ।

गघ्, स पु (फा) आवाण, प्रहर
२ हानि क्षति (स्त्री) ३ कष्टम्, मलेष्ट ।

गज, स पु (स) इस्तिर्, कुमिन्, करिन्,
कुपिन्, दतिन्, रदिन्, दृष्टिन् (सब पुं),
दे हाथी ।

—गजनन, स पु (स) गजमुख, गणेश,
गजवदन ।

—कुभ, स पु (स) करिकुभ, गजशिर पिंड ।

—गति, स स्त्री (स) गज कुजर, गमन गति ।

—गामिनी, वि स्त्री (स) शम वारण,
गामिनी-चारिणी (सुंदरी) ।

—दत्त, स पु (सं) इस्ति करि, दत्त रत्न
रदन २ गौश ।

—दान, स पु (स न) गजमद २ वरि
वितरणम् ।

—पति, स पु (सं) करीद्र (यूथनाथ,
यूथप) ।

—पाल, स पु (सं) इस्तिप पक्, आपोरण,
निपादिन् (पुं) महामात्र ।

—मोनी, स पु (सं) गजमौक्तिक गनमुक्ता,
गजमणि (पुं) ।

—मुक्ता, स पु (सं) दे 'गजानन' ।

—राज, स पु (सं) दे 'गजपति' ।

—वदन, स पु (सं) दे 'गजनन' ।

—वान, स पु (सं गज >) दे 'गजपाल' ।

—शाला, स स्त्री (सं) द्विप इस्ति, शाला
गुरम् ।

गज्ज, स पु (फा) गज (माप) २, आग्नेय
चूर्ण प्रणोदनी यष्टि (स्त्री) ३ सारगवादन
यष्टि, वादन वाच वादित्र, वण्ड ४ इष्टुमेद ।

गज्जक, स स्त्री (फा कजक) व्यजन, उपस्कर,
उप अव, दद्या २ तिलशर्करा (मिठ्ठाई)
३ जपाहर ४ प्रातराद्या ।

गज्जट, स पु (अ) राजपत्रम् ।

गजनी, स स्त्री (सं गज >) मृत्तिका-मृद, भेद ।

गज्जच, स पु (अ) रोप, क्रोध २ विपद्
विपत्ति (स्त्री) ३ अयाय, अयाचार
४ विलक्षणकृत्तात् ।

—करना, कि स, अयायेन अधिष्ठा (स्वा
प अ) शास् (अ व से) २ विरमयजन् (प्रे) ।

—का, वि अद्युक्त, आश्रय ।

—नाक, वि, रष्ट, मुद्र, वृद्धि ।

गजर, स पु (स गर्ज, हिं गरज) चतुरष्ट
द्वादशवादनसमयेष्वनाद २ प्रात पदानाद ।
स स्त्री, श्वेतरक्तगोधूममिश्रणम् ।

—हम, कि वि, प्रात, प्रभाते, मंक्षति प्ररूपे ।

—घजर, स पु (अनु) अनुचिन्मिश्रणम् ।
२ खायाखाप, अक्षवामक्षम् ।

गजरा, स पु (सं गज-देर >) माला,
माल्य, सज् (स्त्री) २ बलय, घटक-क,
करभूषण ३ कौशेयवस्त्रभेद ।

गजरी, स स्त्री (हिं गजरा) कलाची मणि
बध, भूषण आभरणम् ।

गजरी, स स्त्री (हिं गजर) लघु छद्, गजर
गजेरम् ।

गजल, स स्त्री (फा) गृहारकविता ।

गज्जी, स स्त्री (फा) स्थूलसीश्वस्त्रभेद ।

गज्जी, स स्त्री (स) इस्तिनी, करिणी ।

गजेन्द्र, स पु (सं) दे 'गजपति' ।

गटवना, कि स (अनु गट) रण्ड
(स्वा प से) २ निगू (गु प से),
ग्रस् (जु) ३ अम्बायेन अपट (स्वा प अ) ।

गटपट, स पु (अनु) गटगटा, शब्द-वचन
(पु) गटगटाचितम् । वि वि, सगटगटा
शब्दम् ।

गटपट, स स्त्री (अनु) रति (स्त्री) मैथुनं,
सङ्कास २ घनमेत्री । (वि) मैथुनासक्त ।

गटरगू, स स्त्री (अनु) कपोत, शब्द-स्त
कृतित, धृत्कार ।

गट्ट, स पु (अनु) निगरणवनि (पु) ।

गट्टा, स पु (सं ग्रह >) मणिवध धन, पाणि
मूल २ गुल्फ धुट ३ जानु (पु न), नल
कोल ४ रोचना, अवधम = ग्रथि (पु)
ग्रन्थिका ६ सधि (पु) पर्वन् (न), अस्थि
सधि (पु) ७ बीज ८ मिष्टान्नभेद ।

गट्टी, सं स्त्री (हि गट्टा) भावावन, तनुकील ।
गट्टु, स पु (हि गौठ) पोर्टलिका, भार,
कुर्व, सधान, शुद्ध ।

गट्टा, स ॥ (हि गौठ) काष्ठादीनां भार
२ दे 'गट्टर' (३-४) पलाडु लघुन, ग्रथि (पु) ।

गट्टी, स स्त्री (हि गट्टा) ३ 'गठरी' ।

गठ, सं स्त्री (हि गौठ, दे) ।

—कटा, वि पु, दे 'गैठकटा' ।

—जोडा, स पु, दे 'गैठकपन' ।

गठन, स स्त्री (स ग्रथन) घटना, रचना,
विधान, निर्माणम् ।

गठना, कि अ (स ग्रथन) सग्रथ-गुफ
(कर्म), गुणै-ननुमि ४ ध (कर्म) २ सम्यक्
रच-निर्मा (कर्म) ३ स्नेहातजयो विद्
(दि आ अ) ४ पद्यन ससृज (कर्म) ।

गठरा, स पु, दे 'गट्टर' ।

गठरी, स स्त्री (हि गठरा) लघु पोर्टलिका
भार-कुर्व २ मचिनधनम् ।

—जोडा, स ॥, कृपण, वदये ।

गठवाना, } कि प्रे, 'गौठना' के प्रे रूप ।
गठाना, }

गठाव, स पु (हि गठना) सवध, सश्लेष
२ दे 'गठन' ।

गठिन, वि [स प्र(अ)थिन] शुक्ति, वद
२ रचित, निर्मित ।

गठिया, स स्त्री (हि गौठ) दे 'गठरी'
२ बात, रक्त शोणित, ग्रथिवात, दे 'वातरोग' ।

—घात,—वाध, स स्त्री (हि + स वात
तया वाधु) सधि, वात वातु २ वात, वातु,
वातरोग ।

गठील्य, वि (हि गौठ) ग्रन्थि पर्व-सधि -
मय (मया स्त्री) ग्रन्थिल, पर्ववत् ग्रन्थिमत्
(तो स्त्री) ।

गठील्य, वि (हि गठना) वज्र दृढ, देह-
ग, स्फूर्तिमत् (तो स्त्री) २ दृढ ३ सवल
स्त्री (स्त्री) = दृढांगी, सवला ३ ।

गठौत-स्त्री, सं स्त्री (हि गठना) मैत्री,
सौहार्द २ कुमत्रणा, उपनाप, कूट दन् ।

गडत, सं स्त्री (हि गडना) अभिचाराय
निखल निहित, वस्तु (न), निखलानम् ।

गडकना, कि अ (अनु) गडगटायते (ना धा),
गडगटा, शब्द नाद राव कृ ।

गडगज, ॥ पु, दे 'गरगज' ।

गडगड, सं स्त्री (अनु) गजित, स्तनित,
गटगटापित २ बर्दन, आत्रशब्द गून्शब्द
३ धूपानवत्रशब्द ।

गडगडा, स पु (अनु) धूपानवत्रभेद,
आहगड ।

गडगडाना, कि अ (अनु) गन-गन-स्तन्
(स्वा प से) गडगडापते (ना धा)
२ नदरस (स्वा प से) ।

गडगडाहट, स स्त्री, (हि गडगडाना)
दे गटगड' ।

गडगुद, स पु (अनु गड + हि गूधन >)
जीर्ण जीर्ण जर्जरित, वस्त्र पट, चीर, कपट ।
० असार मलम् ।

गडना, कि अ (स गतं >) वा प्रविश
(तु प अ), विष् (तु प से), निर-
भिद् (रु प अ) २ (भूमौ) निधा-निक्षिप्
(कर्म) ३ पीड (कर्म), व्यथ (स्वा आ
से) ४ नि, मस्ज (तु प अ), अव नि
सद (स्वा प अ) ।

गड जाना, सु, लज्ज (तु आ से), उप
(स्वा आ वे) ।

गडप, सं स्त्री (अनु) निगरण, प्रसनम् ।

गडपना, कि स, (अनु गटप >) सत्वर
निगू (तु प से) पा (स्वा प अ)
२ अन्यायेन कारयमाव कृ ।

गडप्या, स पु (अनु) बहद, गर्त-गर्त-
अन्त ।

गडवट, वि (हि गड = गडडा + वट-जैचा)
अमम, विषम्, नतोन्न २ अस्तव्यस्त, अक्रम ।
स पु अयवत्या, कममग २ विप्लव,
सक्षोभ, कोलाहल ३ रोग, कामद ।

—अध्याय, स पु } दे 'गडवट' स पु ।
—छाला, स पु }

गडवडाना, कि अ (हि गडवट) आकुली
पू, मुष्ट (दि प वे), भात्या मन् (दि

आ ॥) । कि स, वि-सं, भ्रम्-सुम (प्रे),
मुह् (प्रे), आकुली कृ ।

गङ्गवाहट, गङ्गवाही, स स्त्री, दे 'गङ्गवाह'
स पु ।

गङ्गवाह्या, वि (हि गङ्गवाह) मोहक, मोहन
२ क्रम-व्यवस्था भङ्गक-नाशक, उपद्रवित ।

गङ्गमद, वि (अनु) सकुल, सर्वोर्ण, व्यत्यस्त,
अव्यवस्थित ।

—करना, कि स, मकरी मकुली कृ, क्रम मय
(क प अ) ।

गङ्गरिया, स ॥ (स गङ्गरिका >) अवि गङ्गर
मेष पाल ।

गङ्गवा, स पु (स गङ्गुक) गङ्गु (पु),
गङ्गुक, गङ्गुक २ पु-पञ्चभेद ।

गङ्गवाना, कि प्रे, 'गङ्गना' के प्रे रूप ।

गङ्गहा, स पु (स गङ्गं तं) गङ्गा, अवट,
बिल, विवर, द्योत, पत्तर ।

गङ्गाना, कि स 'गङ्गना' के प्रे रूप ।

गङ्गारी, ॥ स्त्री (अनु) उच्छ्रायणचक्र, २ मटल,
वृत्त, चक्रम् २ मङ्गलाकार गोल, रैला ।

गङ्गि (रि) दार, वि (हि गङ्गना) धृष्ट,
कुदात २ मयर ।

गङ्गु, वि (स) कुम्भ, वक्रपृष्ठ । स पु (स)
गङ्गुद, वक्रुदम् २ गङ्गुन नल्पानभेद
३ किनुक्तक, गङ्गुपद ।

गङ्गुआ, स पु (स गङ्गु) सनालीक लघु
पानपात्रम् ।

गङ्गेरिया, न पु, दे 'गङ्गरिया' ।

गङ्गु, स पु (स गण) गि स, चय, भिक्कर,
स्त्रीम ओष ।

गङ्गुवड्डु, गङ्गुमड्डु, स ॥ (अनु) लकर,
अक्रम, क्रमभग । वि, विपर्यस्त, व्यवस्थित,
भङ्गक्रम ।

गङ्गु, स पु (स शङ्कट) शङ्कट टिका, वाहन,
प्रवक्ष्यम् ।

गङ्गुम, वि (अ गङ्ग + ग्याम) नीच, अधम,
अपय ।

गङ्गुी, स स्त्री (हि गङ्गु) (एक ही वस्तु का)
स नि, चय, संपात २ राशि, समूह ।

गङ्गु, स पु दे 'गङ्गहा' ।

गङ्गुत, वि (हि गङ्गना) कृत्रिम, कल्पित
२ दे 'गङ्गन' ।

गङ्ग—, वि कपोल मन, कल्पित, मानसोद्
भावित, काल्पनिक, कल्पनात्मक ।

गङ्ग, सं ॥ (सं गङ्ग) परिमृष्ट, म्यात, गङ्गं नां
२ दुर्ग, कोट ।

—पति, स पु (स) दुर्गपान ।

गङ्गन, ॥ स्त्री (हि गङ्गना) दे 'गङ्गन' ।

गङ्गना, कि स (म गङ्गन) घट् (चु) घट्ट
रच् (चु) निर्मा (अ ष अ, जु भा अ),
कल्पसाध सप्तद्वि (वे), २ तट् (चु) ३ मिथ्या
वक्ष् (प्रे), ममसा खन् (तु प अ) ।

गङ्गा, स पु, दे 'गङ्गहा' ।

गङ्गाई, स स्त्री (हि गङ्गना) घटन, निर्माण,
रचनम् २ घटन-रचन, मुख्य भूति (स्त्री)
निर्वेश ।

गङ्गाना, कि प्रे 'गङ्गना' के प्रे रूप ।

गङ्गी, स स्त्री (हि गङ्ग) लघु दुर्ग कोट
२ कोटाकार वृद्धमवनम् ।

गङ्ग, स पु (स) समूह, वर्ग, समुदाय, १ इन्द्र
२ अग्नी, कोटि (स्त्री) ३ त्रिगुणमात्मक सेना
विभाग (= २७ हाथी, २७ रथ ८१ घोड़े,
१३५ पैदल) ४ परिचारक परिजन ५ पक्ष
पाति अनुयायि वग ६ सभा, समाज
७ गणशाधिष्ठिता शिवमेवका ८ मगण
व्यग्रादय वर्णमानसमूहा (छद) ९ १० धातु
शब्द समूह (व्या) ११ नक्षत्रसमूहविष्टेषा
(ज्यो) ।

—अधिप—नाथ,—नायक,—पति, स पु
दे 'गङ्गा' ।

—द्रव्य, स पु (स न) सर्वजनीन पदार्थ
२ द्रव्यसमूह ।

गङ्गक, स ॥ (स) दैवज्ञ, ज्योतिर्विद्
२ गणितज्ञ

गङ्गकी, स स्त्री (न) १ २ गणितज्ञ दैवज्ञ,
पत्नी ।

गङ्गन, ॥ पु (स न) सख्यान्, गणना ।

गङ्गना, ॥ स्त्री (स) गणन, सख्यान् २ सरथा
३ अलंकारभेद (सा) ।

—करना, कि स, दे 'गिनना' ।

गङ्गनीय, वि (स) सख्येय गण्य २ द
'प्रसिद्ध' ।

गङ्गिका, स स्त्री (स्त्री) वेद्या, भोग्या पण्यस्त्री ।

गङ्गित, स पु (स न) गणित, शास्त्र विद्या
गणना याज्ञा-संख्या परिमाण, विद्या शास्त्रम् २

अक, विद्या गणित शास्त्रम् । वि, सम्बन्ध, सक
लित ३ चिंतित, निरूपित ।

—कार, स पु (स) गणितज्ञ २ ज्योतिर्विद् (पु) ।

—विद्या, म स्त्री (स) दे 'गणित' (१२) ।

अक—, स पु (स न) अक, विद्या-शास्त्रम् ।

दीन—, स पु (स न) गणितविद्याभेद ।

रेखा—, स पु (स न) रेखागणना, भू-ज्या,
मिति (स्त्री) ।

शगेश, स पु (म) गज, आग्न्य मुख-यदन
आनन, लबोदर, गंगाधप, विनायक,
आहुतय शूर्पकर्ण, विनेश, परशुपाणि (पु) ।

गोबर—, स पु, नट मूढ ।

गण्य, वि (न) मरुवेय गणनाई, गणनीय
२ प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य ।

—मान्य, वि (स) दे 'गण्य' ।

गत, वि (स) अतीत, अतिक्रान्त, व्यतीत,

० हन ३ हीन, रहित ४ लब्ध, प्राप्त ।

स स्त्री (स गति स्त्री) दशा, अवस्था

० रूप, आकृति (स्त्री) ३ उपयोग व्यवहार

४ दुर्दशा, नाश ५ नृत्यभेद ६ प्रेतक्रिया ।

गतात्मा, स पु (स गदा) चर्मावृणपटि
(स्त्री) ० कौडा-खला, भेद ।

गताक, स पु (स) पत्रपत्रिकापीनान् हताक
अनीताक अव्यवहितपूर्वाक ।

गताद्य, वि (सं) अध, अनयन, अनेत्र ।

गतागत, स पु (स न) गमनागमनम्
२ पुनर्नगमन (न), अगमरणम् ।

गतानुगतिक, वि (स) अथानुयायिन्,
अभविषासिन् ।

गति, स स्त्री (सं) गमन, चलन, प्रव्रजन,
अपन, यान, सरण २ स्फुरण, ० पन, स्पन्दन
३ चेष्टा, व्यापार ४ दशा, अवस्था ५ प्रवेश
६ प्रयत्नसौमा ७ अवलंब ८ माया, लीला
९ रीति (स्त्री), विधि (पु) १० देशान्तर
प्राप्ति (स्त्री) ११ मुक्ति (स्त्री) १२ ताल
स्वरानुसारमगचालन (सतीत) १३ प्रेग
कर्मन् ।

—वनाना, मु, निर्दय तद् (तु) प्रह
(स्वा प अ) ।

—होना, मु, प्ररूप-मुन (कर्म) ० निर्दय
ताड (कर्म) २ मुक्त लभ (स्वा आ अ) ।

गता, स पु (देश) मल्लपत्र, गुरुपत्रम् ।

गद, सं पु (सं) रोम, आमय २ श्रीकृष्ण
नुज ३ ४ वानर असुर, विशेष । (स न)
विष प, गरलम् ।

गदका, स पु, दे 'गतका' ।

गद्गद्, वि, दे 'गद्गद्' ।

गद्गद्, स पु (अ) प्रजा प्रकृति, कोप-क्षोभ,
२ सैन्य सेना, द्रोह क्षोभ प्रकोप ३ विप्लव,
सफल, समर्थ ।

—करना या मचाना कि अ (राजे) हुद्
(दि प ने), राजशासन लघ (स्वा आ
ते) ३ ।

गद्गद्, वि (का गद्गद्) सपक, सकर्म,
समल, पकिल, मलिन ।

—करना, कि स, कतुपयति पमित्यति-आविल
यति (ना भा), मलिनो क ।

—पन, स पु, मालिन्, पकिरव आविलना ।

गद्गद्पचीसी, म स्त्री (हि गद्गद् + पचीस)
आघोदशाद आपचविशते आयुषो मास ।
२ अनुभवहीनता, माध, सौर्यम् ।

गद्गद्, स पु (स गर्दम) रासभ, खर,
कालेय, भारग, घुसर, घाम्पाश २ मूख,
अथ [गद्गद् (स्त्री) = रामसा, खरी, गर्दमी] ।

—पन, स पु, सौर्य, जडता ।

गद्गद्, स स्त्री (स) लोहमयशस्त्रभेद ।

—धर, सं पु (स) कृष्ण २ विष्णु । वि,
गद्गद्धारिन् ।

गद्गद्, स पु, दे 'गद्गद्' ।

गद्गद्, वि (स) प्रहट, आनन्दपुलकित, परम
मुदित, मुप्रसन्न २ अस्पष्ट, अमरुड, अस्पष्ट
(अक्षरस्वरदि) ।

गद्गद्, स पु (हि गद्गद् से अनु) तूलस्तन, तूला ।

गद्गद्, स स्त्री (हि गद्गद्) (तूल) आसन,
तूलिका २ पिचुलविष्टर ३ उपधान, उपबर्ह
४ पर्याण, पस्थान ५ मिहासन, नृपासन
५ अधिकारपद ६ ७ कर-चरण, नलम् ।

—पर बैठना, कि ■, सिंहासन आरुह् (स्वा
प न), राज्येभिषिचि (कर्म) ।

—पर बैठना, कि स, अभिषिच् (तु प अ),
सिंहासने उपविच् (प्र) ।

—से उतारना, कि स, सिंहासनाद् च्यु अव
रुद् भृश अवपत (प्रे) ।

- नशीन, वि (हि + ण) सिंहासन, आसीन आरुढ = उत्तराधिकारिन् ।
- नशीनी, सं स्त्री, अभिषेक, राज्याभिषेक ।
- गद्य, सं पु (सं न) छन्दोहीनरचना, अपाद पदसन्तान ।
- गद्या, स पु, दे 'गदहा' ।
- गधी, } न स्त्री, दे 'गदही, ('गदहा' गधैया, } के नीचे ।
- गनीम सं पु (अ) शत्रु, रिपु २ दल्लु (पु), छठक ।
- गनीमत, सं स्त्री (अ) लोभ, लोप्स, अप हृतधन २ अयतनलम्बधन ३ सतोषविषय, धन्यत्वम् ।
- गन्ना, स पु (सं काठ < >) रसाल, रसु, काठ इड, दे 'ईख' ।
- गप, सं स्त्री (सं कल्प अथवा अनु) किव दती, लोकजन, श्रुति (स्त्री) प्रवाद वाचा २ जल्प, प्रलाप ३ मिथ्या-असत्य, वृत्तान्त वृत् समाचार ४ विकलधन, गर्वोक्ति (स्त्री) ।
- गारना, —होम्ना, कि अ, प्रल्प जल्प (म्वा प से) ।
- शप, स स्त्री, वृथा, कथा सलाप ।
- गप, स पु (अनु) निगरण-प्रसन, ध्वनि (पु) ।
- गपागप, कि वि, सत्वर, झटिति, शीघ्रम् ।
- गपकना, कि सं, दे 'निगलना' ।
- गपद्वचौष, सं स्त्री (हि गपोडा + चौषा) वृथा निरर्थक, सलाप-आलाप-सबाद = दे 'गदवही' ।
- गपद्वशपद, सं स्त्री, दे 'गपद्वचौष' ।
- गपागप, अन्त्य (अनु) सत्वर, शीघ्र, आशु झटिति (मव अन्त्य) ।
- गपोडा, सं पु दे 'गप' ।
- गप्प, स स्त्री, दे 'गप' ।
- गप्पी, स पु (हि गप) वावदूक, जल्प (पा) २ मिथ्याभाषिन्, अनृतवादिन् (पु) ३ आत्मश्लाघिन् (पु) ।
- गप्पा, सं पु (अनु गप >) बृहत्-कवट प्राप्त पिड २ छाप ।
- गफ, वि (सं प्रप्स = गुच्छ अथवा गुफ = गुना >), अविश्ल, धन, सौद, सून ।
- गफल्ल, सं स्त्री (अ) अन्वधानता, प्रमाद २ स्खलित, अपराध ।
- गवन, सं पु (॥) कपटेन आत्मसात्करण अपहरण-उपयोग ।
- वरना, कि स, कपटेन आत्मसात्कृ ।
- गवरु, सं पु (फा खुवरु) (नव) युवक, युवन् (पु), तरुण २ पति (पु), वर । वि, सरल, अमाय ।
- गमस्ति, सं पु । (सं) विरग, रक्षि (पु) २ सूर्य ३ बाहु (पु) ४ हस्त ।
- पाणि—मान्—हरण, सं पु (सं) सूर्य ।
- गभीर, वि (सं) दे 'गम्भीर' ।
- गम, सं पु (अ) शोक, विषाद, दुःख २ चिन्ता, रणरणक कम् ।
- गीन, वि (अ + णा) विषण्ण, सन्वित ।
- छाना, सु, क्षम, (म्वा भा वे), क्षम (दि प वे, क्षाम्यति) ।
- गमक, वि (सं) गद्य, पाद्य, २ सूक्ष्म, बोधक ।
- गमक, सं स्त्री (अनु) पढनेरी, नाव = सुगन्ध ।
- गमन, स पु (सं न) दान, व्रतन, चलन, प्रस्थान २ मैत्रुणम् ।
- आगमन, स पु (सं न) दानादान, वानादान, गतागलम् ।
- गमला, स पु (पुनै गैमेलो) प्रमून पुष्प, पात्र भाजन २ पुरीष, उच्चार, पात्रम् ।
- गमी, सं स्त्री (अ गम) शोक, विलाप २ शृत्तु ।
- गम्य, वि (सं) प्राप्य, लप्स = दानम्य, अवनीय ३ साप्य, शक्य ४ सम्भोगार्ह ।
- गयद, सं पु (सं गयेन्द्र) गज, पति (पु) —राज ।
- गय, सं पु (सं गज) विरद, द्विप, बरिन्, कुम्भिन् ।
- गया, स स्त्री (न) गगनपु गयरापिपुत्री, नीरविशेष ।
- गया, वि (सं गय) यात, प्रस्थित ।
- गुजरा, —वीता, वि, नष्ट, मृत, २. निवृष्ट, तुणप्राय ।
- गर, स पु (सं) विष, उपविष २ रोग ।
- गरक, वि, दे गर्क ।
- गरहाव, वि, दे 'गर्हाव' ।

शरणी, सं स्त्री, दे 'शरणी'।

शरगज, सं पु (हि गज + सं गज्) दुर्ग
प्राचोत्थग । २ उद्वन्धनयत्र, घातशिला ।

शरगारा, सं पु, दे 'शराडी' ।

शरज, सं स्त्री (सं गज्) गर्जन-ना, गर्जित
स्नानिन, महा-दीर्घ-गम्भीर, शब्द नाद ।

शरज्ज, सं स्त्री (अ) आशय, प्रयोजन, अर्थ,
स्वार्थ २ आवश्यकता ३ कमिलाध ।

किं वि, अतो, अतत, अन्ततो गत्वा २ अम्मु,
प्रथ (अय्य) ।

—सम्भू, वि (अ + फा) स्वार्थलिप्ता, स्वला
भावेष्ट । २ इच्छुक, ईच्छु ।

—सम्भू, सं स्त्री, स्वार्थलिप्ता, स्वला, अपेक्षा ।

४— वि (फा + अ) निष्काम, निरुद्ध,
नित्यग ।

शरजना, किं अ (सं गर्जन), गज्, गर्ज-
विस्फूर्ज नद् नद् स्तम्भ-रम्भ (स्वा प से),
महा-दीर्घ-गम्भीर, नाद कृ ।

स पु दे 'गर्ज' ।

शरजी, वि (अ गरज) दे 'गरगमन्द' ।

शर—स स्त्री (फा + अ) स्वार्थपरता, रय
हितनिष्ठा ।

शरण, सं पु (सं न) निगरण, निगलनम्,
प्रसन २ अवमेचन, प्रोक्षण ३ विषम् ।

शरवन्, दे 'गर्जन' ।

शरदनिया, सं पु (हि गरदन) प्रीति-वृष्टि,
प्रवण, प्रह, अव्यचष्ट ।

शरदा, सं पु, दे 'गर्ज' ।

शरदान, सं पु (फा) शब्द धातु, रूपसाधन
(व्या) ।

—करमा किं स शब्दरूपाणि वद (स्वा
प से) ।

शरनाल, सं स्त्री (हि गर + सं नाल) एक
वदनी गीतगोत्री ।

शरम, वि, (फा गर्म, सं गर्म) उष्ण, तप्त,
स-उद्, आतपाक्रास, सोष्ण । २ उग्र, प्रचट,
क्रोधिन् ३ तीक्ष्ण, तीव्र ४ उत्साहिन्,
सोसाह ।

—करमा, किं सं, परि प्रस, तप् (प्रे), उद्,
दीप् (प्रे), उष्णीकृ । सु, वृत्तिन् (प्रे) ।

—होना, किं अ, उष्णीकृ, तप् (स्वा प
अ, दि वा अ) २ कुप (दि प अ) ।

—कषडा, सं पु, और्ण-ऊर्णमय, वस्त्रम् ।

—जयर, सं स्त्री अभिनव-हरानीतन समा
चार ।

—मिज्ञाज, वि, सरभिन्, क्रोधिन् ।

—सर्द, वि, कोष्ण, क्वोष्ण, नदुष्ण ।

शरमाशरम, वि (हि गरम + गरम) अत्युष्ण,
सुतप्त, २ अभिनव, प्रत्यग्र ।

शरमाना, किं अ किं स (हि गरम)
दे 'गरम होना' तथा 'गरम करना' ।

शरमी, सं स्त्री (फा, सं गर्म) स-उद् परि,
ताप, उष्णता, दाह, क (क) अम्मु (पु),
उष्ण । २ उग्रता, चण्डता ३ क्रोध
४ उत्साह ५ प्रीति, प्रीति समय-काल,
मिदाम ६ उपदेश ।

—वाना, सं पु, दे 'पिद' (प) ।

शरल्, सं पु (सं न) गर, विष २ सर्पविष
३ दुःखकम् ।

शरी, वि (फा) शरिक, मारवद्, शुद्ध
२ बहुमुख, महाई ।

शराही (री), सं स्त्री (अनु गरर) दे 'गहारी' ।

शराहा, सं पु (अनु अथवा अ शराहा)
चत, च (च) लक । २ बुद्धकौषधम् ।

—करना, किं स जलेन कठ (गज) धाम्
(स्वा प ली) मृन् (अ प वे) ।

शरिमा, सं स्त्री (सं मन् पु) शुक्ल, भार
वत् २ महिषन् (पु), गौरव, महत्त्व
३ अहकार ४ आत्मरक्षण ५ सिद्धिविशेष
(योग) ।

शरिष्ठ, वि (सं) शुद्धतम, भारवत्तन,
अविभारवत् २ मलावरोधक, मलावष्टम्भक ।

शरी, सं स्त्री (सं = शुल्का >) नारिकेल
(र), सार गोल ।

शरीय, वि (अ) अकिंचन, दरिद्र, निर्धन
२ नम्र, विनत ।

—खाना, सं पु (अ + फा) कुटी, कुटीर
२ दरिद्र-अनाथ, आलस्य-गृहम् ।

—नि(ने)वाज } वि (अ + फा) दीन, वधु

—परवर } दयलु-वत्सल नाथ शलक
पोषक ।

गरीबी, सं स्त्री (अ गरीब) दारिद्र्य,
निर्धनत्व, अकिंचनता २ नम्रता ।

गरुड, स पु (स) वैचित्र्य, रमेश्वर,
सुपर्ण, विश्वरथ, नागानक ।

—आसन, —केतु, —ध्वज, म पु (म) दिव्य ।

—पुराण, स पु (म न) पुराणविशेष ।

गरूर, स पु (अ) अभिमान, दर्प, गर्व ।

गरेवान, स ॥ (फा) निचोल्गल ।

गरोह, स पु (पा) समुदाय, समूह ।

गर्क, वि (अ) चक्रमय स परि, प्लुत, चले
तिरोहित २ नष्ट, भ्रष्ट ३ कार्ये व्यावृत्त
लीन मय ।

गर्काय, वि (अ + फा आव) चक्रमय,
आ स परि, प्लुत २ अति, लीन निरत
—वापत आसक्त ।

गर्की, सं स्त्री (अ) मृज्जव, आप्लाव ।
२ निमज्जन, जले तिरोधान ३ दे 'लॅगोटी' ।

गर्ग, स पु (स) ऋषिविशेष २ वृषभ ।

गर्गर, स पु (स) दे 'गगरा' २ ३ बाघ
मत्स्य, मेढ ।

गर्गरी, स स्त्री (स) मयनी, मयनपात्रम्
२ दे 'गगरी' ।

गर्ज, स स्त्री, दे 'गरज' ।

गर्ज, स स्त्री, दे 'गरज' ।

गर्जन, स पु (स न) दे 'गरज' ।

गर्ज, स पु (स) दे 'गदहा' २ दे 'दरार'
३ जलाशय ४ मरकविशेष ।

गर्द, स स्त्री (फा) धूली लि (स्त्री), रणु,
पास, पाशु, क्षाद, रजस् (न) ।

गर्दन, म स्त्री (फा) ग्रीवा, कंधर हा, शिरो
धरा शिरोभि, कवि (पु) २ पात्रकठ ।

—की अकञ्चन, स स्त्री, ग्रीवावात ।

—सोढ खुमार, स पु शीर्षावरणप्रदाह,
मलिनपक्षेणवर्धर ।

—हिलाना, कि स, शिर मत्स्य चल्-न्-प
(मे) ।

—उठाना, मु, अभिद्रुह (दि प अ, द्वितीया
दे साथ) न्युत्था (स्वा आ अ) द्रुह
(चतुर्थी के साथ) ।

—उठाना या काटना, मु, शिर द्रुह (पु
प से) द्रुह (क प अ) ।

—छुकाना, मु, वध याह (दोनों अ प अ) ।

—घर सचार होना, मु, दे 'विवश करना' ।

—मरोटना, मु गलहस्तयति (ना था),
गलनिष्पीडनेन व्यापद् (प्रे) गल निष्पीड
(चु) ।

—मारना, मु, दे 'उठाना या काटना' ।

—में हाथ देना या डालना, मु, अर्धवद
दत्ता निष्कम् (प) ।

गर्दभ, स ॥ (म) दे 'गदहा' (स न)
द्वेतकुमुदम् ।

गर्दभी, म स्त्री (स) दे 'गदही' ।

गर्दी, स पु, दे 'गर्द' ।

गर्दिश, स स्त्री (फा) परिवर्तन, घूर्णन,
परिभ्रमण, चक्र २ आपद् विपद् (स्त्री) ।

—करना, कि अ परिद्रुह (स्वा आ से),
दे 'घुमना' ।

गर्म, स पु (स) भ्रूण, पिंड कलन ल,
उदरस्थशिशु (पु) २ दे 'गर्भाशय'
३ अभ्यन्तर, अंतर्भाग ।

—गिरना, कि अ, गर्म स्तु (स्वा प अ)
पत् (स्वा प ॥) ।

—रहना या होना, कि स, गर्म धृ (चु)
आधा (जु ल अ) गर्मवती अतर्वाती भू ।

—पास, —छाव, स पु (स) गर्म भ्रूण, कुनि
(स्त्री) —पतनम् ।

—दास, सं पु (स) दासी बैगी मुनिभ्या
पुत्र ।

गर्मवती, स स्त्री (सं), गर्मिणी, सगर्मा,
सत्तत्त्वा ।

गर्मस्थ, वि (स) गर्भाशयस्थ, उदरस्थ ।

गर्भाक, म पु (स) अकल्पाक (सा),
दृश्यम् ।

गर्भागार, स पु (स न) गर्म-आशय कोष
२ प्रसूतिगृहम् ३ गर्भगृहम्, ४ शयनाग्रा
रम् ।

गर्भाधान, स पु (स न) सत्कारभोज, निषे
कसंस्कार २ सेव, निषेक ३ गर्मधारणम् ।

गर्भाशय, स पु (ल) गर्मकोश य, योनि
(पु स्त्री) ।

गर्मिणी, स स्त्री (स) गर्मवती, अतर्वाती,
सगर्मा, सत्तत्त्वा, धृन-रुद्र गृहीत, गर्मा ।

गर्मित, वि (स) सगर्म, गर्मयुक्त २ पूर्ण,
पूरित, व्याप्त ।

गर्म, दे 'गरम' ।

गर्माहट, स स्त्री, दे 'गरमी' ।

गर्व, स पु (स) (उचित) अभिमान
० (अनुचित) अहंकार, दुर्प, मद, माद,
आगेप, अड, मान ओढ़त्य, अवलेप, उसेक,
रमय ।

—करना, कि अ गर्व (स्वा प से),
प्रगम् (स्वा आ से), दुप (दि प वे) ।
२ अनिमन् (वि आ अ) ।

गर्वित, वि (स) (उचित) अभिमानिन्
० (अनुचित) दूत सदप, मार्व, अवलिप्त,
उत्तिक, उद्वन, उरतेकिन्, साटोप, साहकार ।

गर्वी, वि (स गर्विन्) दे
गर्वीला, वि (॥ गव >) 'गर्विन्' ।

गर्हणीय, वि (स) गर्ह निष्ठ अयन ।

गर्हा, स स्त्री (स) निद्रा, गर्हण, आक्षेप,
निर्मर्तना ।

गर्हित, वि (स) निद्रित, आक्षित, उगालम्ब ।

गर्ह्य, वि (स) दे 'गर्हणीय' ।

गल, स स (स) कठ, रुक, निगरण
२ दे 'ग्रीवा' ३४ मत्स्य वाघ, भेद ।

—गड, स पु (स) कंठपिंड, अयथु-शोष ।
० गडु (पु) ।

—वाही, स स्त्री (स गल् + हि वाह)
आलिन, परिभ, परिष्वग ।

—माल, स स्त्री (स) माला, माल्य,
देखर, हार, सञ् (स्त्री) ।

—गुडी, स स्त्री (स) गलगुडिका, दटिका,
गलरोगमेव ।

गलतक्रिया, स पु (स गल् + क्रा) वनो
पथान, कपोलापवर्ह ।

गलपङ्का, स पु (॥ गल् + हि पङ्का)
अलजन्तूना आसेद्रियम् ।

गलफूला, वि (स गल् + हि फूला)
रथूलाय, पीनवदन ।

गलमुच्छे, स स्त्री [स गल् + मञ्जु (न
बहु)] गदलोमानि (न बहु) ।

गलगल, स स्त्री (देश) शुद्ध, ज्वी(मी)र
जमपन्म् । २, ३ पश्चि-चूर्णलेप, भेद ।

गलत, वि (अ) अगुद, आत, सदोष,
वितथ । २ असत्य, अनृत, मिथ्या ।

—फहमी, स स्त्री (अ + फा) अम,
आति (स्त्री), मिथ्यावोध ।

गलतस, स पु (स गलितवत्) सनान
अपय-दैन-रहित, निस्मनान, निरपत्य ।

गलती, वि (० फा) वि, आकुल, ध्वम,
उद्विग्न ।

गलती, स स्त्री (अ) रखलित, दोष,
प्रमाद, अपराध २ अम, भ्रति (स्त्री),
न्या, मोह ।

—करना, कि अ, अपराध (दि स्वा प अ),
विअम् (स्वा दि प से) स्खल् (स्वा प
से), प्रमद् (दि प से) ।

गलतुलभाम, स ॥ (अ) अगुदोपि प्रचलित
प्रयोग (न्या) ।

गलना, कि अ (स गलन्) वि, दु (स्वा
प अ), विली (क प अ, दि आ अ)

गलहर (स्वा प से) दवी आद्री भू ।
२ पच (कर्म), सिध (दि प अ)

३ पूनीभू, विगल, ४ परिधि परिहर अपचि
(कर्म) । स पु, गल विद्रव-वण, विलयन,

हरण पचन परिक्षय इ ।

गलने योग्य, गलितव्य, विद्रवणीय पचनीय इ ।

गलने बाला, वि, द्रान्य, विलेय, विलाप्य द्रवार्ह ।

गला दुआ, वि, वि द्रुत, गलित, द्रवीभूत इ ।

गलबा, स पु (अ) वि, अय २ प्राबल्यम्,
प्रनुत्तम् ।

गला, स पु (स गल्) कठ, रुक, निगरण
२ ग्रीवा, कपरा, शिरोधि, कधि ।

—की सोजिश, ॥ स्त्री कण्ठ, प्रदाह-शोष ।

—काटना, मु, कपरा ह्य (दु प से)
२ अनीव पीद् (नु) ।

—घोटना, मु, गल् निपीद् (नु), गलहस्तपति
(ना था) ।

दवाना, मु, कठ निपीक्य अथवा आस निरुध्य
श्रु (पे) ।

—चैटना, मु, कठ रुद्ध अथवा कर्कश भू ।

गले पटना, मु अपरिहार्य (वि) भू ।

गले लगाना, मु, आलिय (स्वा प से),
आलिप् (दि प अ), परिष्वग् (स्वा
आ अ), उपगुद् (स्वा उ वे) ।

गलाऊ, वि (हि गलना) वि, दान्य,
विलाप्य ।

गलाना, कि स, 'गलना' के प्रे रूप ।
 गलाव, स ॥ (हि गलना) दे 'गलना' ।
 गलावट, स पु स पु २ द्रावक द्रावण ।
 गलिन, वि (स) द्रवीभूत, वि हन, २ पीन,
 शीन ३ नष्ट, अष्ट, ४ परि, पत्र पुष्ट ५ पतित,
 च्युत ।

—कुष्ठ म पु (स न) गलकुष्ठम् ।

—यौवना, स स्त्री (स) क्षीण विगत यौवना ।

गली, स स्त्री (स गल >) वीथी वि (स्त्री),
 सकट मन्थ, पथ मार्ग ।

—कृचा, स पु, (हि + फा) सकीर्णमार्ग ।

—गली मारे मारे किरना, सु व्यर्थमितस्तत
 परिभ्रम् (भ्वा दि प ॥) २ आजीविका
 भेषणाय सर्वत्र पर्यट् (भ्वा प से) ३ सर्वत्र
 उपलब्ध (कर्म) ।

गलीचा, स पु (फा गलीचा, सु कालीन से)
 तीरस्क, कुप-आस्तरणम् ।

गलीज, वि (भ) मलिन, आविल २ अपवित्र ।

गल्प, स स्त्री (स कल्प >) आख्यायिका,
 उपारवान, उपकथा ।

गल्ल, स पु (स) कपोल, गड ।

गल्ला, स पु (फा) जल, निवह, बूध, वृद्ध,
 पाशवन् । (यह शब्द पशुओं के लिए ही
 प्रयुक्त होता है) ।

—वान, स पु (फा) अवि, मेघ, पाल
 गोपाल ।

गल्ला, स पु (अ) अज, शब्द २ शरवन् ।

—फरोश, स पु (अ + फा) अज भान्य,
 विक्रेतृ (पु) ।

गलप, स पु (स) गवात्क, बलमत्र,
 महागध, वनगौ (पु) ।

गलपी, स स्त्री (स) वनपेनु (स्त्री)
 मिष्ठगवी ।

गलनमेंट, स स्त्री (अ) शासन, पद्धति
 (स्त्री) प्राणाली २ शासक, मण्डक-वर्ग ।

गलनर, स पु (अ) भोगपति (पु) प्राता
 पक्ष, राज्यपाल २ शासक, शासितृ ।

—जनरल, स पु (अं) राष्ट्राध्यक्ष ।

गलनरी, स स्त्री (अ गलनर >) प्राताध्यक्षा,
 राज्यपालवन् । वि राज्यपाल प्राताध्यक्ष,
 सम्बन्धिन् ।

गलाव, स पु (ल) वातायन, जाट रकम् ।

गवाना, कि स, 'गाना' के प्रे रूप ।

गवारा, वि (फा) अनुकूल, अभीष्ट ।

—करना, कि स, सह (भ्वा आ से) ।

गवाह, स पु (फा) सागिन् (पु) ।

चन्द्रदीप—, स ॥ (फा) प्रत्यक्ष साक्षिन्
 दर्शन दर्शिन्, देख्य । प्रत्यक्षिन् ।

गवाही, स स्त्री (फा गवाह) साक्ष्य,
 प्रमाण, प्रामाण्य, निदर्शनम् ।

—देना, कि स, साक्षी भू, साक्ष्य दा
 २ क्रियापाद (धर्म) ।

गवीश, स पु (स) गो, पति इयामिन् ।
 २ गोप, पाल पालक, आनीर ३ वृषभ
 वृषन् ।

गवेषणा, स स्त्री (स) दे 'गोत्र' ।

गवैया, स पु (पू हि गावना) गायक,
 गायन, गातृ (पु), गायक, गेष्णु गय ।

गव्य, वि (स) गायकविन् (दुग्धगोमयादि) ।

गव्युति, स स्त्री (स) क्रोधयुगल, दिसहस्र
 धनुस (न) ।

गवा, स पु (अ गवाही) मूच्छा, मोह ।

—आना, कि अ, मूर्च्छा (भ्वा प से) मुह
 (दि प से) प्रविश्या ।

गवाही, स स्त्री (अ) दे 'गव' ।

गवत्, स पु (फा) भ्रमण, पर्यटनम् ।

—रगाना, कि अ, रक्षाये परिभ्रम् (भ्वा
 दि प से) ।

गवत्ती, वि (फा) पर्यटन-परिभ्रमण-शील ।
 स स्त्री, कुलटा व्यभिचारिणी, स्त्रीरिणी ।

गहगाहाना, कि अ (अनु गहगह) प्रसद
 (भ्वा प अ), प्रहृष्ट (दि प से) २ दे
 लहलहाना ।

गहना, वि (स) ग (ग) मीर, अगाध, दे
 'गहरा २ दुर्गम, दुर्मेघ ३ दुर्बोध, कठिन
 ४ घन, निवि (वि) ङ । स पु (स न)
 गानीर्व २ दुर्गमस्थान ३ वन ४ गहर
 ५ दुःख ६ जम्ब ।

गहना, स पु (स गहण) आदान २ उपराग,
 ग्राहीटन ३ कलक ४ विपत्ति (स्त्री)
 ५ व्यास, नषक ।

गहना, स पु (स गहण >) अलकार, वि
 आ, भूषण, आभरण, र्भटनम् २ व्यास,
 निक्षेप । कि स, दे 'पकड़ना' ।

गहरा, वि (स गमीर) गमीर, निम्न, अगाध,
अतन्मपदा २ अत्यधिक, घोर (नींदादि)
३ दृढ कठिन ४ गाढ, घन ।

—अमामी, म पु (हिं+अ) सपन्न,
धनिन् (पु) ।

गहरे लोन् म पु (बहु) विनष्टता तदम्भा
गहराई म स्त्री । (दि गहरा) गभीर,
गहराव म पु निम्नत्व, अगाधता ।

गह्वारा, स पु (फा) (शिष्ट) प्रेक्षा-भोला ।

गह्वर, न पु (स न) गुहा, (अकृत्रिम)
विलम्बितान (कृत्रिम) दरी कदर रा
० तन पूग शून्म्यान ३ छिद्र पिपत
४ दुर्मन्त्रावपम-स्थान ५ शुक्ल म शुष
६ वन ७ दम् ८ दोहन ९ अनेकार्थ वाच्य
१० जटिलविषय ११ जल । (स पु) लगागृह
निकुन वि दुर्गम २ शुभ ।

गारा, वि (म) गगा, सम्मन्विन्-विषयक ।
म पु भीष्म २ कार्णिकेय ३ सुवर्ण,
हिरण्यम् ४ पत्तर, शिवप्रिय ।

गारीय, स पु (स) भीष्म ।

गौजा, गौसा, स पु (सं गजा) गादिनी,
मोहिनी हर्षिणी ।

गाढ, म स्त्री (स अवि पु) अयिका वष
धन गड २ सधि (पु) पवन् (म),
आस्थ अर्थ-अधि ३ घोटिका, भार
४ मार्दक खड-क ५ विघ्न ६ आति (स्त्री)
७ रूपरूपवर्णन ।

—खोलना, कि स अर्थ-वध वसुच (प्र)
मोम (जु), उदग्रय (क प से) । (मु)
धन कोष मज्जिका द्विधिलबनि (ना धा)
द्वेप दूराक ।

—ढैना, बँधना या टगाना, क स, अवि
दा अधवा वष (क प अ) । (मु) रम्
(म्हा प अ) ।

—पढना, कि अ, मज्जिल (दि प अ) अथ
(कम ग्रन्थते) । (मु) विद्वेप उत्पद् (कर्म) ।

—कट, स पु, अविछेदक, चौर ।

—गोभी, स स्त्री, दे 'गोभी के नीचे ।

—दार, वि अघिल, अवि पव अय (मयी स्त्री) ।

—बाटना, मु, अवि छिन्ना अपह (म्हा प
अ), अवि छिद् (क प अ) ।

—का पूरा, मु, सपन्न, घनाट्ट ।

—जोबना, मु, वैवाहिक-औदाहिक अर्थ वध
(क प अ) ।

—से, ३, स्वीय स्वकीय, घनाट्ट ।

गौठना, कि स (स अयन) अय (क प से),
अर्थ वध (क प अ) दा २ सज्ज (क उ
अ जु), सभा समाया (जु उ अ) सखिल
(प्र) ३ ससिच (दि प से) ४ अनुसृत
यात (ना धा) स्वपक्षपातिन विधा (जु
उ अ) ५ आत्मसातक, वशीनी (म्हा उ अ) ।
गादीव, स पु (स पु न) गादि (दी) व व,
अनुनयनुस (न) ।

गादीवी, स पु (स विन् पु) अजुन,
गादीवपर २ अजुनवृक्ष ।

गाधर्व, वि (स) गधर्व, विषयक-अवधिन्
जातीय । स पु (स न) गान । (स पु)
दे गधर्व ।

—वेद, स पु (स) सामवेदस्योपवेद
२ सगीतम् ।

गाधार, स पु (स) भारतवर्षस्योत्तरादिशि
दशविशेष २ तृतीयस्वर (मगीत) । (स न)
गधरस ।

गाधारि, स पु (स) दुर्घोषगमागुल शब्दजि,
सौवल्क ।

गाधारि, स स्त्री (स) दुर्घोषतजननी ।

गाधारिय, स पु (स) दुर्घोषन, धृतराष्ट्र
ज्येष्ठपुत्र ।

गाधी, स पु (स गाधिन्) गधवणिज गध विक्र
यिन्-उपवाधिन्-वणिज-आजीव २ शुभ्रप्रानै
वैश्वीपजातिवर्णन ३ महात्मा गाधिन् ।

गाभीर्य, स पु (स न) दे 'गभीरता' ।

गौव, स पु (स ग्राय) नि स, वसप, इडादि
शयनसति (स्त्री) ।

गास, स स्त्री (दि गौसना) नियन्त्रण,
बधन, प्रतिरोध २ दूष, मनोमालिन्य ३
रहस्य, गुप्तवार्ता ४ ग्रन्थि (पु) ५ शस्त्राय
६ अवेक्षा, पयवेक्षणम् ।

गौसना, कि स (स अयन > ?) व्यथ (दि
प अ), निर्मिद (क प अ) २ सनि यम्
(म्हा प अ), दम्, (मे दमयति) ३
वशीकृ ४ कतिशयेन-अत्यधिक पूर (मे) ।

गाइड, स ३ (अ) पथ मार्ग-अथ, प्रदर्शक

प्रदर्शन् (पु) उपदेशक २ नायक, नेत्र (पु)
२ निर्देशकग्रन्थ ।

गाउन, स पु (अ) कञ्चुक ।

गागर, स स्त्री (सं गर्गर >) दे 'गगरा' ।

गागरी, स स्त्री (स गर्गरी >) दे गगरी ।

गाज, स स्त्री (स गर्ज) दे 'गरज' २ कज्र
पानध्वनि (पु), कजनिर्घोष ३ कज्र-अ,
अशानि (पु स्त्री), छादिनी ।

—मारा, वि, वज्राहत, अजनितादित ।

गाजर, स स्त्री (स न) गजर, पीतकद,
पीनमूलक सुपीत, सुमूलकम् ।

—मूली, स स्त्री, गानरमूलक, तुच्छवस्तु
(न) ।

गाजी, स पु (अ) धर्मवीर (इस्लाम),
वीर, योध ।

गाङ्गना, कि स (हि गाढ = गढहा)
निखन् (भ्वा प से), (इमशाने = वृत्तिया)
निधा (जु उ अ), निगूह (भ्वा ङ वे)
२ गङ् (प्रे रोपयति) - स्था (प्र स्थापयति)
निविश (प्रे) ३ गुप् (भ्वा प वे गोपय
यति), तिरोधा-अन्तर्धा (जु उ अ) ।

स पु, निखनन, इमशाने स्थापन, रोपण,
निवेशन गोपनम् ।

गौड, स पु (अ) इस्वर, परमात्मन् २ देव,
सुर ।

गाडर, स स्त्री (स गट्टरी) मेची, पटका ।

गाडी, स स्त्री (स गार्डे = गय) शकट-ट,
शाकटिका, यान, वाहन, प्रवहण, रथ २ वाण
शकटी, लोहाध्वगत्री ।

—जातना, कि स, गडदे अर्थ वृषभं युन् (प्रे) ।

—वान, स पु (हि गादी) सारथि (पु),
सूत, यत् (पु), शाकटिक ।

गाढ, वि (अ) अधिक, प्रचुर, बहु २ दृढ,
प्रबल ३ गम्भीर, अगाध ४ दुर्मि, विकट ।

स पु, (स न) आपत्ति (स्त्री) ।

गाढा, वि (स गाढ) बठिन, स्थूल, सघात
बद्ध, सु, महत् २ घन ३ (मिश्रादि) अशिश
दृढय, दृढ ४ सुबल ५ बठिन ।

स पु, स्थूलवस्त्रभेद ।

गाढ वा वमार्ड, सु, घोरपरिश्मोषान्न धनम् ।

गाढादन सु, दुर्दिनप्रति, कुसमय ।

गाणपत्य, स पु (स) गणपति-गणेश, पूबक

भक्त २ गणेश पूजा मक्ति (स्त्री) ३ गणना
यकत्वम् ।

गाणेश, स पु (सं) गणेश, भक्त पूजक ।

गान, स पु, दे 'गात्र' ।

गातव्य, वि (सं) गय, गानार्ह ।

गाता, स पु (स-तु) गायक, गायन,
गण्ण ।

गात्री, स स्त्री (स गात्र >) गायत्री, गल
वस्त्रभेद ।

गात्र, स पु (स न), तनु नू (स्त्री),
देह, काय, दे 'शरीर' २ अंग, अवयव ।

गायक, स ॥ (स) गाय (पुं), गायक
२ पुराणकथक । (गायिका स्त्री) ।

गाद्या, स स्त्री (स) स्तुति-स्तुति (स्त्री)
२ श्लोक, पद्य २ पारिमिश्रितसस्त्रनभाषा
४ गीत ५ कथा, वृत्तान्त ६ पारसीकधर्म
ग्रन्थभेद ।

गाद्, स स्त्री (सं गाध >) दे 'तलछट' ।

गाध, वि (स) सुयोत्तरणीय, गामोर्वरहित,
उत्तान २ मूल, अल्प ।

म पु (स न) स्थान, २ गामोर्वरही
जलप्रदेश ३ लिप्ता, लोभ ४ दूर ५ नल,
अधीभाग ।

गान, स पु (स न) गीत, गीतिका, गेय
२ सस्वर, पठन-उच्चारण, वीर्तनम् ।

—गिरा, स स्त्री (स) सगीत, सगीत-वाद्य,
शास्त्र विद्या ।

गाना, कि अ (स गान) गी (भ्वा प अ),
सस्वर उच्चार (प्रे), समग्र आलप् (भ्वा प
से) २ (पक्षियों का) कृत् (भ्वा प से)
३ वर्ण (जु) ४ स्तु (अ प अ), तु
(अ प से) ।

स पुं, गीत, गीति-तिका (स्त्री) गान २
सस्वर, आलपन-उच्चारणम् ।

गाने गाला अ पु, गण्ण-गु, गायक, गायन,
गात् (पुं) । (-बाली-गायिका गायी,
गायनी) ।

—उजाना, स पु, गानवादन, सगीत, सगीत
विद्या, शास्त्रम् ।

गाविल, वि (अ) अनवधान, अनवहित,
प्रमादिन्, उपेक्षक ।

गाभ, स स्त्री (सं गर्भ) पशुगर्भ २ अङ्गुर,
प्ररोह ।

गामा, स पु (स गर्भ >) विस(ञ)ल्य
५, पलव-न्, प्ररोह २ शस्यम् ।

गाभिन, स स्त्री (स गभिणी) गभनता,
(केवल पशुगर्भ के लिये) ।

गामिनी, वि स्त्री (स) चलित्री, यत्री ।

गामी, वि (स गामिन्) गए थाए ।

गाय, स स्त्री (स गौ स्त्री) धनु (स्त्री),
माए (स्त्री), श्रुतिणी, अध्या-दोग्धी, मद्रा,
अनहुहा, अनहवाही, कल्याणी, पावनी, गौरी,
हुरमि (स्त्री) २, सरल ऋजु मनुष्य ।

गायक, स पु (स) दे 'गाने वाला' ।

गायत्री, स स्त्री (स) वैदिकछन्दोभेद २ वैदिक
मन्त्रविशेष (तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धामहि ।
धियो यो न प्रचोदयात् । ऋग १।६।१।१०)
सावित्री ३ गणा ४ कुर्गा ।

गायन, स पु (स) दे 'गानेवाला' २ गान,
सम्पराएपन २ गीत गीतिका ।

गायव, वि (अ) लुप्त, अन्तरितो, हित,
२ अदृष्ट, भाविन्, भविष्य ।

—करमा, कि म, चुर (चु), तिरो धा
(जु उ अ) ।

—होमा, कि अ, तिरोभू, अदृश्य (वि) + भू,
अन्तर तिरो, धा (कर्म) ।

गायिका, स स्त्री (स) गायनी, गात्री ।

गार, स पु (अ) गुहा, कदरा २ विवरम् ।

गारत, वि (अ) नष्ट, ध्वस्त ।

गारद्, स स्त्री (अ गार्ड) रक्षक रक्षि, वर्ग
गण २ अगारक्षक ३ रक्षा, गुप्ति (स्त्री) ।

गारना, कि स, (स गारन >) दे 'निचोडना' ।

गारा, स पु (हि गारना) कर्दम, पङ्क,
रुत-उन्न, मृद (स्त्री)-मृत्तिका, लेप ।

गारव, स पु (स न) विषमन्त्र २ सुवर्ण
३ गरुडपुराणम् ।

गारुही, स ॥ (स टिन्) विषवैद्य, गारुडिक
आगुलिक २ मोहिन् (पु), कुहकवार
३ प्रतिविषविक्रेतु (पु) ।

गार्गी, स स्त्री (स) काचिच्च ब्रह्मवादिनी
विदुषी नारी (उपनिषद्) ।

गार्ड, स पु (अ) रक्षक, रक्षिन् (पु)
२ वाष्पशकटया रक्षक ।

गाढी—, स पु (अ) शरीर अग, रक्षक ।

गार्डेन, स पु (अ) उद्यान, आराम ।

—पार्टी, स स्त्री (अ) उद्यान-आराम, भोज ।

गार्हपत्य, स पु (स न) गृहपति, पद
प्रतिष्ठा ।

—अग्नि, स ॥ (सं) यज्ञाग्निभेद ।

गार्हमेध, स पु (स) पंचमहायज्ञ (ब्रह्मयज्ञ,
देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, भूतयज्ञ) ।

गार्हस्थ्य, स पु (स न) गृहस्थाश्रम २ गृह
स्वहृत्यानि ३ पञ्चमहायज्ञ ।

गाल, स पु (स गल) कपोल गड
२ मुखम् ।

—पर गाल चढ़ना, सु, पनीभू, आच्छे (स्वा
आ से) ।

—पिचकना, सु कृशीभू, विशुक्ति (कर्म) ।

—कुलाना, सु, कुप (दि प से), कुप्
(दि प अ) ।

—बजाना या मारना, सु, आत्मान श्लाप्
विकल्प (स्वा आ से) ।

गालव, स पु (स) गन्धमुनिपुत्र (विश्वा
मिनशिष्यविशेष) २ लोप, लोभ ३ पाणि
निपूर्ववर्ती वैयाकरणविशेष ।

गाला, स पु (हि गाल) घृतकर्पासपिष्ट
ह, २ हिमनूलम्, हिम-मुपार-पिण्डम्
३ चक्रीक्षित मुष्टिमात्रमन्त्र ४ घ्रास,
कवल ।

गालिबन, कि वि (अ) समवन, प्राय,
प्रायेण, प्रायश्च, स्यात्, किल, नाम (सव
अव्य) ।

गाली, स स्त्री (स गालि स्त्री) आश्लोश,
अपवाद, अपमाषण, अधिक्षप, परबोक्ति
(स्त्री) ।

—खाना, कि, अ, आ-अधि क्षिप (कर्म), अप
भाष अभिशप-अपवद् (कर्म) ।

—देना, कि स, अधि आ क्षिप (तु प अ),
अभिशाप् (स्वा उ अ), अभिशप-अपवद्
(स्वा प से) ।

—गलीज, स स्त्री, परस्पर, अधिक्षेप-अपमा
षण गालिदानम् ।

गालीचा, स पु, दे 'गलीचा' ।

गाव, सं पु (गौ, पु स्त्री, फा गाव) दे
'गाय' २ दे 'गैल' ।

—कुशी, स स्त्री (का) गो, घात वष हत्या ।
—घष, स स्त्री, छलेन अपहार उपयोग,
प्रसनम् ।

—घष करीना, कि स, कपटेन आ ममात् ऊ ।

—जवान, म स्त्री (फा) गोजिहा, अध
सुपरी, खरपत्री ।

—भरिया, स पु (फा) महोपवर्ह, बृद्ध
पधानम् ।

—धी, म पु (फा + मं धी >) जह, मूर्ख ।

—धुम, वि (फा) गोपुच्छाकार, झुझाहति ।
मूचाकार, आराहति ।

गाहक, म पु (स ग्राहक) केतु, क्रियन्
२ गुणप्रदीष्ट (पु), गुण्य ।

गाहरी, स स्त्री (हि गाहक) ग्राहकत्व,
कतृत्व २ गुण्यता ।

गाहन, म पु (स न) नि-अव-माहनम्,
निमग्नन, स्नान २ विलोडनम् ।

गाहना, कि स (स गाहन) अव विगाह
(स्वा आ से), निमस् (तु प अ) २ मध्,
मध् (स्वा प से), विलोड् (मे) २ निस्तु
पीठ, पू (कृ उ से) २ पादभ्यां पीठ
(चु) -ईव् (क प से) ४ दे 'खोचना' ।
म पु (स न) अव विगाहन विलोडन,
मदन, निस्तुपीकटण अवेषणम् ।

गिहरी, स स्त्री, दे 'इहरी' ।

गिचविच, गिचिरविचिर, वि (अनु)
अवाच्य, अयत्ताकार २ अस्पष्ट, अविवक्षित
२ अज्ञप्त, अज्ञ-पक्ष ।

गिजा, स स्त्री (अ) राय, भय, अज्ञ,
भाजनम् ।

गिटपिट, स स्त्री (अनु) अपार्थक निर्वक
भ्यर्थ, वचन-शब्द ।

—करना, कि स, आगमापायी वद् (स्वा
प से) ।

गिदगिदना, कि अ (अनु) अतिनप्रतया
अभि प्र भर्थ (चु आ से), कण्ठवा झुद
तया राय (स्वा उ से) ।

गिदगिदाहट, म स्त्री (हि गिटगिदना)
अतिनप्रार्थना, दीनकत वाचनम् ।

गिद्ध, म पु (स गृध) दूरदर्शन, वज्रगृह,
दाधाय ।

गिनती, स स्त्री (हि गिनता) गणन, सरयान
२ मर्या, गणना ३ अकमाला ।

—के, ॥, पतिविच, स्तोका ।

गिनना, कि स (स गणन) गण-मकल् (चु),
परि, मर्या (अ प अ) २ मन् (दि
आ अ), गण ३ स पु, गणन सरयान,
सकलनम् ।

गिननेयोग्य, वि, गणनीय, सख्येय ।

गिने बाबा, वि, गणक, सरयात् ।

गिना हुआ, वि, गणित, सरयान ।

दिन—, मु, यथाकथञ्चित् काल या (प्रे वाप
यति) ।

गिनवाना, कि प्रे, व 'गिनना' के धातुओं
गिनाना, कि प्रे रूप ।

गिमी, ॥ स्त्री (अ) आरुदेशीया स्वर्णमुद्रा,
गिमी ।

गिरगिट, स पु (देश अथवा स गल
यति > ?) सरद ड, कुक (कु) लार, म,
प्रतिसूर्य रंक ।

—की सरह रथ बदलना, मु, सरवर स्व-
सिद्धातात् परिचय (प्र) ।

गिरजा, स पु (पुर्न इमिजिया) शिरदधर्म
मंदिरम् ।

गिरना, कि अ (स गरुन) नि अव पद
(स्वा प से) स्फल्-गल् (स्वा प से), लत्
(स्वा आ से), च्यु (स्वा आ अ) २ हि
द् (कर्म), हस (स्वा प से) हसल्य, ह
या (अ प अ) ३ अधिकाराय अपहृ
(कर्म), अवहृ (स्वा प अ), लघूभू ।
४ युदे हन् (कर्म) ५ अफरमात् वद्-छया
वद् (स्वा आ से) अववा आ-न पद ।
स पु, पतन, व्यवन, गलन, अवरोहण, पद,
अत च्युति (स्त्री) ।

—वाला, वि, पतयानु, पतन पान, उमुत्त,
पातिन्, पातुक, पिपतिपु ।

गिरा हुआ, वि, पतित, च्युत, सरत, गरित ।

गिरते पढी, मु, यथाकथञ्चित्, येन येन
प्रकारेण ।

गिरप्रत, स स्त्री (फा) दे 'पकट' ।

गिरप्रतार, वि (फा) गृहीत, धृत्, बद्ध,
निरुद्ध ।

—करना, कि सं, निरुध् (रु उ अ),
आसिध (म्वा प से), ग्रह् (क् प से) ।

—होना, कि अ निग्रह्-वध् निरुध् (कर्म) ।

गिरफ्तारी, सं स्त्री (फा) आनेष, बधन,
निग्रहण, धरण, निरोध ।

गिरमिट, सं पु (अ एग्रिमेट), दे 'इकरार
नामा' ।

गिरमिटिया, स पु (अ एग्रिमेट >) प्रतिज्ञा
वद अनुवद, कर्मकर म मक ।

गिरखाना, कि प्रे, व 'गिरना' के प्रे रूप ।

गिरवी, वि (फा) आधो-न्यासी, कल, निक्षिप्त,
आहित ।

—रखना, कि स, -रख (दि प से), निक्षिप
(तु प अ), न्यासा आधी, -क ।

—धार, म पु (फा) आधि यास-वधक,
प्राहिन् (पु)-ग्राहक ।

—रखने वाला, स पु, निक्षेपु, आपातु ।

गिरह, स स्त्री (फा) दे 'गौठ' (१-१)
२ दे 'जैव' ३ दे 'उल्टबाजी' ४ गजारय
मानस्य षोडशाश्र ।

—बँधना, कि स, दे 'गौठ देना' ।

—कट, स पु, दे 'गौठकट' ।

—वार, वि, दे 'गाठवार' ।

गिरा, स स्त्री (स) वाक्यक्ति गिर वाच
(स्त्री), बाणी २ सररवणी, मारता, वाग्देवी
३ जिह्वा, रसना ४ वचन, उक्ति. (स्त्री) ।

गिराना, कि स, व 'गिरना' के प्रे रूप ।

गिरानी, स स्त्री (फा) महापता, बहुमुख्यता
२ दुमिष्ट, दुष्काल ३ गुरुत्व, भारवत्त्व
४ अजीर्णम् ।

गिरावट, स स्त्री (हि गिरना) पतन, व्यवन
अवरोहण, अवनति (स्त्री) ।

गिरि, सं ॥ (स) पर्वत, शैल, अचल, नग
२ परित्रागकोपाधि (पु) ।

—धर, सं पु (स) } श्रीकृष्णचन्द्र ।

—धारी, स पु (स धारिन्) }

—नन्दिनी, स स्त्री (स) पार्वती, उमा ।

—नाथ, सं पु (सं) शिव, शङ्कर ।

—राज, स पु (स) हिमालय २ गोवर्धन
पर्वत ।

—सुता, स स्त्री (स) पार्वती ।

गिरिजा, स स्त्री (स) पार्वती, गौरी ।

गिरिन्द्र, स पु (सं) महापर्वत २ हिमालय
३ शिव ।

गिरी, स स्त्री (हि गरी) अग्नि (स्त्री),
अष्टोत्ता, वीन, गर्भ, फल-बीज, गर्भ । (२-३)
दे 'गिरि' तथा 'गिरी' ।

गिरीश, स पु (स) शिव, महेश २ हिमालय
३ कैलाश ४ महापर्वत ।

गिरी, वि (फा) दे 'गिरवी' ।

गिर्द, अय (फा) अभित, परित, सर्वत,
समन्तत, सम-तात् (सब अय्य) ।

गिर्द—
गिर्दागिर्द, अय्य (फा) दे 'गिर्द' ।

गिर्दावर, स पु (फा) पर्यटक, परित्रामक ।

गिल, स स्त्री (फा) वृत्ति (स्त्री), वृत्तिका,
वृदा, वृव (स्त्री) २ उत्त-उन्न, वृत्ति ।

—कार, स पु, वृत्तपक, लेपकर, सुधा
जीविन् ।

—कारी, स स्त्री वृत्तेष ।

गिलगिला, वि (फा गिल = गारा) पकिल,
स्थान ।

गिलट, सं पु (अ गिल्ड) सुवर्णरजन, हेम
च्छ २ गिलदारयो धातुविशेष ।

—करना, कि स, सुवर्णयति (ना धा),
हम, रसेन द्रवेण लिप (तु प अ) ।

गिलटी, स स्त्री (स ग्रन्थि पु) नास, पिट,
अभिमास २ वि, स्कोट टक, शोष, अयधु,
अय थ, मासाईदम् ।

गिलना, कि स (स गिरण) दे 'निगलना' ।

गिलथिलाना, कि स (अनु) अल्पगद्गद
वाचा वद (म्वा प से) ।

गिलहरी, स स्त्री (स गिरि (स्त्री) =
बुद्धिया) काष्ठ-विहाल मार्जार, चरमपुच्छ,
वृक्षश्रुतिका ।

गिला ह्वा, स पु (फा) दे 'उपालम्भ' ।

गिलाई, गिलाय, स स्त्री, दे 'गिलहरी' ।

गिलाफ, ॥ पु (अ) उपधान-उपबर्ह, कोष श
२ तुला-तुलिका, कोष ३ कोष, पुट, आवेष्टन
४ असिकोष ।

गिलास, स पु (अ ग्लास) कस, कुन्तल,
गल्वक, पानपात्रम् । २ बदराकार आहृल
फलम् ।

गिल्ली-ड़ी, स स्त्री, दे 'गुल्ली' ।

गिलो, गिलोय, स स्त्री (फा) गुह(ड)वी, अमृता, अमृत सोम, बहो रत्ता बहरी, रसा यनी ।

गिलोला, स पु (फा गुल्ला) शृङ्, -वटिका गुदिलिजा ।

गिलौरी, स स्त्री (देश) दे 'पान का बोडा' । गिल्टो, स स्त्री दे 'गिल्टो' ।

गिल्लद, स पु (स गल >) गल्लगद, गण्डु ।

गीत, स पु (स न) गीति (स्त्री), गीतिका, गान, गेय = यशस (न), महिमन् (पु) ।

—गाना, सु, प्रसस (भा प ले) स्तु (अ प अ) ।

गीता, स स्त्री (स) श्रीमद्भगवद्गीता २ ज्ञान मयोपदेश २ बुधान् १ छन्दोभेद ।

गीती, स स्त्री (स) } दे 'गीत' २ छन्दो गीतिका, स स्त्री (स) } भेद ।

गीदक, स पु (स गृध्र-लालची अथवा फा गादो भीरु) कोटा, फेर, शिवाल, गोमायु (पु) श्र (स) माल, जम्बु (द) क घेरव, शृगधूरक, भूरिमाष, चच (चु) क । वि, कानर, भीरु ।

—भयभी, स स्त्री, विभीषिका ।

—घोलना, सु अपसक्त न भू ० निर्मनीम् ।

गीदकी, स स्त्री (हि गीदक) शिवा, श्याली, कोट्टी ।

गीध, स पु, दे 'गिध' ।

गीला, वि (फा गिल = गारा) आर्द्र उप्त, उन्न डिन्न स्तिमित, अलसिक । (गीली (स्त्री) = आर्द्रा इ) ।

—कदना, कि स, दद (न प से), हिद (प्र), आर्द्रा इ ।

—पन, स पु (हि गीला) आर्द्रता, उन्नता ।

गुधा, स पु (अ) गुकुल-ल, कोरक-च, बलिका २ विहार, ३ मगीतम् ।

गुन, स स्त्री (स गुज) गुजन, गुजिन, गुनगुन-धनि (पु) शकार, कलरव । 'आन दधनि (पु) ३ दे 'गुजा' ४ दे 'गुज' ।

गुंजन, स पु (स न), दे 'गुज' (१) ।

गुजना, कि अ (स गुजन), गुज, मधुर धन, अस्पष्ट निस्वन (सब स्वा प छे) ।

गुजरना, कि अ, दे 'गुजना' २ दे 'गदजना' ।

गुजा, स स्त्री (स) रसिका, रत्ना, बन्धा, २ गुजागीज इ ।

गुजादृश, स स्त्री (फा) अवकाश, स्थान, धारण ग्रहण, शक्ति (स्त्री) सामर्थ्य २ लाभ ३ योग्यता ।

गुजान, वि (फा) घन निविद, गाढ ।

गुजायमान, वि (स गुज >) गुनत्, मधुर धनत् (शश्वत्) ।

गुजार, स ॥ दे 'गुज' (१) ।

गुजारना, कि अ, दे 'गुजना' ।

गुडा, वि (स गुण्डक = देला >) दुईल, दुराचारिन् (पु), व्यसनिन्, लपट २ रूप गवित, छेक, वेशाभिमानिन् । (गुडी स्त्री) ।

—पन, ॥ पु, दुराचार, स्वेरिता, लपन्ता ।

गुंधना, कि अ (हि गुंधना) ग्रन्थ-सूत्रम् सूत्र गु (गु) फ (कर्म) ।

गुंधवाना, कि प्रे, ४ 'गुंधना' के प्रे रूप ।

गुंधन, कि अ (स गुप् = झोडा करना >) (हस्तान्धा) मृद सपीद् (कर्म) ० दे 'गुंधना' ।

गुंधवाना, कि प्रे, ४ 'गुंधना' के प्रे रूप ।

गुंघाई, गुंधावद, स स्त्री (हि गुंधना) १ कराम्या मदन २ मर्दनवेतन ३ प्रथन ४ प्रथन, भृति (स्त्री) भृत्या ।

गुंफ, स पु (स) सकुलता, व्यनिकर, मकर २ गु-छ च्छक ३ रमष्ट (न), ओष्ठलोमन् (न) ४ कुंभम् ।

गुफन, स पु (स न) समथनम्, सदभंगम्, ससूत्रनम् ।

गुफित, वि (स) स परि आ दिल्ष्ट, स-आ सक २ प्रवित, सूत्रित ३ उत, उत ।

गुवज, स पु दे 'गुवद' ।

गुवद, स पु (फा) गोल, पटल छदि (स्त्री) ।

गुह्या, स पु तथा स्त्री (हि गोहन साय >) । २ सहचर, सगिन् (पु), सति (पु) २ सहचरी, सपी ।

गुग्गुल, स (स) गुग्गुलु, कालनिर्वाण, देवधूप, रसग्रन्थक ।

गुष्ठी, स स्त्री (अनु) गुली-क-कीटार्थ भूविवर, भ्रानि (स्त्री) ।

गुच्छ गुच्छक, स पु (स) मय, रनरकः शरस सक २ मयूरगुच्छ ३ द्राक्षिगद यद्विहार ।

गुच्छा, स पु (स गुच्छ दे) २ आभूषण भेद ।

गुच्छेदार, वि (ह + फा) गुच्छिन्, सगुच्छ ।

गुच्छी, स स्त्री (सं गुच्छ >) गरिष्ठ, माल्य, गुच्छफल २ व्यजनोपकुपुष्पभेद, *गुच्छी ।

गुञ्जर, सं पु (फा) उप अभि-गम, उपसर्पण प्रवेश २ निर्गम, गति (स्त्री) ३ निर्वाह, जीवनम् ।

—आना, मु, दे 'मरना' ।

गुञ्जरना, क्रि अ (फा गुजर) इ या (अ प ज), गम् २ अति-व्यति, इ अति क्रन् (भ्वा प से) ३ भू, घट (भ्वा आ से) ४ घृ (तु आ अ), प्राणम् मुप (तु उ अ) ।

गुजरात, स पु (स गुजरात्) भारत वर्षस्य प्राग्विशेष, गुजरात्प्रान्त ।

गुजराती, वि (हि गुजरात) गुजरातीय, गुजराती, वासिन्-सवधिन् २ गुजरातीय भाषा ।

गुजरात, स पु (फा गुजर) निर्वाह, कालक्षप ।

गुजरता, वि (फा) -व्यतीत, गत, अतिक्रान्त ।

गुजरातना, क्रि स (हि गुजरना) गम् या (प्र) ।

गुजारा, स पु (फा) निर्वाह, कालक्षेप २ जीवन, प्राणधारण ३ कृति-श्रुति (स्त्री) ४ तार्य, तरपण्यम् ।

गुजारिषा, स स्त्री (फा) निवेदन, प्रार्थना ।

गुडकना, क्रि अ (अनु) कपोतवत् कूज (भ्वा प से) २ दे 'निगलना' ।

गुटिका, स पु (म गुटिका >) ऋधु, गम्य पुस्तकम् २ दे 'गुटिका' ।

गुटरम्, स स्त्री (अनु) कपोतकूजित, पारावनशनम् ।

गुटिका, स स्त्री (स) गुटिका, वटिका, वटि (स्त्री) ।

गुट्ट, स पु (स गोष्ठ >) समूह, दलम् ।

गुट्टा, स प (देश) खर्च, नामन २ दे 'गोटी' ।

गुट्टल, वि (हि गुट्टली) शूलधि, सुत यत् ० नदमति, जड २ अष्टौलाकार । स पु ग्रभि (पु) २ मासपिंड-रुम् ।

गुट्टली, सं स्त्री (स गुट्टिका >) अष्ठि (स्त्री), अष्टौला, फलबीजम् ।

गुड्या, स पु (स गुडाप्र) ।

गुड, स पु (स) दक्षुसार, रसज, मडज, मधुर, मोदक, मिशुप्रिय, गुल, स्वादु ।

गुडगुड, स स्त्री (अनु) गुडगुड, शब्द ध्वनि (पु) धूमपानयनशब्द ।

गुडगुडाना, क्रि अ (अनु) गुडगुडायते (ना वा) गुडगुड, ध्वनि शब्द कृ ।

गुडगुडी, स स्त्री (हि गुडगुडाना) लघु धूमपानयनम् ।

गुडच, स स्त्री (स गुडची) दे 'गिलो' ।

गुडधनिया, गुडधानी, (स गुडधाना स्त्री बहु) ।

गुडाक-म्, स पु (स गुड + तमास् >) गुडतमासु ।

गुडाकश, स पु (स) शिव २ अर्जुन ।

गुडिया, स स्त्री (स गुडिका) पुत्रिका, पुत्रिका, कुन्दी, पानालिका ।

गुडियो का खेल, मु, मुकर कार्यम् ।

गुडच, ॥ स्त्री, दे 'गिलो' ।

गुडची, स स्त्री (स) दे 'गिलो' ।

गुड्डा, स पु (स गुड) गुडक पुत्रक, पुत्रक ।

गुड्डी, स स्त्री (गुडिका >) विहासदृश पत्रक्रीडनक, चित्रामाम २ दे 'गुडिया' ।

गुण, ॥ पु (स) धर्म, स्वभाव, विशेष ० सत्त्व, रजस (न), तमस् (न), गुण त्रयी ३ रूपरसगंधस्पर्शादिव द्रव्यधर्मो (वै) ४ चातुर्य, दक्षता ५ प्रभाव, फल ६ शील, सत्स्वभाव ७ कृष्ण, विशेषता ८ जि' इति सरया ९ सधिविग्रहयानासनसम्पद्वैधीभावा (राजनीति) १० प्रवृत्ति (स्त्री) (छान्दोग्य) ११ 'अ, ए, ओ' -वर्णा (-या) १२ सूत्र, रज्जु (स्त्री) १३ ज्या, मीर्षा १४ माधु यौन प्रसादा (काव्य) १५ आशुतिसूचक प्रत्यय (उ द्विगुण इ) ।

—कर, वि (स) हितकर, उपयोगिन् (गुण करो स्त्री) ।

—कारक, वि (॥) हित, उपकर्तृ । (कारिका स्त्री) ।

—कारी, वि (स, रिन्) उपयुक्त, उपकारिन्
(-कारिणी स्त्री) ।

—ग्वान, वि, (स खानी) बहुगुण, उपेत
अन्वित सपञ्च ।

—गान, स पु (स ज) स्तुति नृति (स्त्री)
प्रशंसा ।

—गौरी, स स्त्री (सं) प्रतिग्रता, सती,
एकपत्नी = सधवा, समर्पिका ।

—ग्राहक, वि (स) गुणवेधिन्, गुणग्राहिन्
= दे 'गुणस्' ।

—दायक, वि (स) दे 'गुणक' ।

—दोष, स पु (स) गुणावगुणौ दानि
रामौ (द्वि) ।

—निधान, वि (स) गुण, राशि निधि

—सगर, वि (स) (पु) ।

—हीन, वि (स) अगुण, निर्गुण, सामान्य,
साधारण ।

गुणक, म पु (स) गुणकाक ।

गुणञ्ज, वि (स) गुण ग्राहिन् ग्राहक, मर्मज्ञ ।

गुणज्ञता, स स्त्री (म) गुणग्राहकत्व, मर्मज्ञता ।

गुणन, स पु (स न) आधान, हनन,
अभ्यास २ गणन, मत्स्यानम् ।

गुणमय, वि (स) दे० 'गुणी'

गुणवत्, वि (स वत्) गुण, मयी वती स्त्री ।

गुणवान्, वि (स वत्) गुण, मयी वती स्त्री ।

गुणाक, स पु (ङ) गुण्य गुणाक ।

गुणा, स पु (स गुण) (समासात् त मे,
व दो गुणा द्विगुण इ) दे 'गुणन्' ।

—करना, गुणयति (ना धा), आनि, हन्
(अ प अ अथवा मे पातयति), पूर (चु) ।

गुणातीत, वि (स) सत्त्वादिगुणप्रमावेष्टय,
निर्लक्ष, शुद्ध । स पु, ईश्वर ।

गुणानुवाद, म पु (स) प्रशंसा, स्तुति (स्त्री) ।

गुणित, वि (स) गुणीकृत, आहत, पूरित ।

गुणी, वि (स गुणिन्) गुणवत्, गुण, सपञ्च
उपत-आद्य-युक्त निधि सागर । २ दक्ष, कुशल
३ पुण्य, शील आत्मन् ।

गुणीभूत, वि (स) मुख्यार्थरहित २ गौणी
भूत ।

—व्याप्य, ङ पु (स न) अप्रधानव्याप्यार्थ
व्याप्यभेद ।

गुणेश्वर, सं ङ (सं) परमेश्वर २ विश्वकृत
पर्वत ।

गुण्य, स पु (स) गुण्याक, गुणाक ।

गुण्यमगुण्या, स पु (हि गुयना) सन्निधना,
मनुकता २ बाहुबाह्वि, सुद, ददम् ।

गुण्यी, स स्त्री (हि गुयना) दे 'उल्लङ्घन' ।

गुयना, कि अ, (स गुप्=परिवेष्टन अथवा
ग्रथ्) (वैनीरूपेण=) ग्रथ् (धर्म), वैनीकृ
(कर्म) । २ गुणं पृ सप्तम् (कर्म)=स
ग्रथ (कर्म) ३ बाहुबाह्वि गुप (दि आ अ) ।

गुयवाना, कि प्रे, व 'गुयना' के प्रे रूप ।

गुय(गु)र्था, वि (हि गुयना >) (वैनी
रूपेण) प्रापिन युक्ति ।

गुय, स स्त्री (स न) अपान, पायु
(पु) गुह्यम् ।

—अकुर, —कील, स पु (स) दे 'दधानीर' ।

—ग्रह, स पु (स) दे 'कम्ब' ।

गुदगुदा, वि (हि गुदा) मानल, मैश्वरिन्
३ गुद, सुखस्पर्श, कोमल ।

गुदगुदाना, कि स (हि गुदगुदा) कुत
कृतयति कङ्कयति (ना धा), कङ्कन् (मे),
मनोविनोदाय क्षुम् (प्रे) ।

गुदगुदाह, गुदगुदी, स स्त्री (हि गुद
गुदाना) कुतकृत कङ्कयति (स्त्री) ।

गुदकी, म स्त्री (हि गुयना) वया,
स्थूतकपट, ३ जीर्णशीर्ण वस्त्रम् ।

—मै लाल, सु, चोरे रत्न (सु) ।

—का लाल, सु, चोररत्न (सु) ।

गुदा, स स्त्री दे 'गुद' ।

गुदाज्ञ वि (का) गुद, कोमल, सुखस्पर्शी ।

—दिल, वि हृदयदायक, मासिक मर्म
स्पर्शिन ।

गुनगुना, वि (अनु) कोष्ण, बहुष्ण ककोष्ण
२ नासनादिन् ।

गुनगुनाभा, कि, अ (अनु) गुणगुणावते
(ना धा) २ नासिकया वर (भ्वा प से)

३ अत्युद मै (भ्वा प अ) ४ असतोपाद
परिदेव् (लु आ से) ५ दे 'गुजना' ।

गुन(ना)हमार, वि (का) प्रापिन्, पातकिन
२ अपराधिन्, सोपिन् ।

गुना, स पु दे 'गुण' ।

गुनाह, स पु (का) पाप २ अपराध ।

गुनिया, सं पु (सं कोण >) कौणिक, साधन, लक्षकोपकरणभेद (१)।

गुपचुप, कि वि (स गुप्त+चुप>) निमृत्, सुगुह, रहसि, मौन (सर्व अन्य)। ॥ स्त्री, (१-३) मिष्टान्न-वाल्क्यौद्य-क्रौञ्चक, भेद।

गुप्त, वि (स) गूढ, निमृत्, निलीन, प्रच्छन्न, अव्यक्त, अप्रकट २ दुर्बोध ३ रक्षित ४ अदृश्य। स पु, बेद्योपाधि २ प्राचीन राजवशाविशेष।

—होना, कि अ, अतर्धानी (कर्म)।

—घट, ता पु (स) अपसरं, च(वा)र, प्रणिधि।

—दान, सं पु (स न) दातृनामनिर्देश विना दान।

गुप्ता, स स्त्री (स) परकीयाभेद २ उप-पत्नी-भार्या ३ वर्णाश्रमकोपाधि (पु), गुप्त।

गुप्ति, स स्त्री (स) गूहन, कोपन, मवरण, प्रच्छादन २ रक्षण ३ कारामार ४ गुहा ५ यमा (योग)।

गुप्ती, स स्त्री (स गुप्त>) गुप्तसि (पु), खनयति (स्त्री), *गुप्ति (स्त्री)।

गुफा, स स्त्री (स गुहा) कदर-रस, गहर, ग्री, विवरम्।

गुफ्तगू, स स्त्री (फा) वानांलाप, आलाप, सलाप।

गुधरैला, ॥ पु (दि गोबर) गोमयल, गोमयकीर्ण।

गुवार, स पु (अ) भूति (स्त्री), २ प्रच्छन्न बैरागिन्।

गुम्बारा, स पु (दि गुप्ता) विमान, ख व्योम-मान २ विमानाकार, अधिकौटनकम्।

गुप्त, वि (फा) गुप्त, अष्ट, नष्ट, व्युत्त २ गुप्त, छत्र ३ अविरूप।

—करना, कि स, विद्युतविद्या परिहा (कर्म), तृतीया ने साय २ दे 'छिपाना'।

—होना, कि अ, नष्ट (दि प वे), प्रपञ्च (म्वा ग से दि प से)।

—नाम, वि (फा) अप्रसिद्ध, अविरित।

—राह, वि (फा) प्रपञ्च नष्ट, प्रप, विपय उन्मार्ग, गामिन्, पथभ्रष्ट, भ्रान्त।

—राही, स स्त्री (फा) भ्रान्ति (स्त्री), भ्रम २ कुमार्ग।

गुमटी, सं स्त्री (फा गुब्द) (सोपानादीनां) लच्छदि (स्त्री)।

गुमहा, सं पु (फा गुब्द) गढ शोय, शोफ।

गुमरी, सं स्त्री, दे 'गुमरी'।

गुमान, सं पु (फा) अनुमान २ दर्प।

गुमान्नी, वि (फा) दृष्ट, गदित, सदर्प।

गुमारता, सं पु (फा) प्रतिनिधि (पु) प्रतिहस्त रक्त, नियोगिन् (पु), निपुण, प्रतिपुरुष।

—गीरी, स स्त्री (फा) नियोगि प्रतिनिधि, पदकार्य २ प्रतिनिध्य, निपुणत्वम्।

गुम्मत, स पु (फा गुब्द दे)।

गुर, स पु (से गुस्मन् >) सूत्र, मूलमन्त्र, मार, सक्षिप्तविधि (पु)।

गुरगा, स पु (स उरग) शिष्य २ सेवक ३ गुप्त, घर।

गुरगाधी, दे 'गुर्याधी'।

गुरिया, स स्त्री (स गुरिका) गुली, गुटका।

गुरु, स पु (स) दृष्टरपति, देवगुरु २ बृह रपतिग्रह ३ पुण्यनक्षत्र ४ मन्त्रोपदेशक ५ आचार्य ६ अध्यापक, शिक्षक ७ पुरोहित ८ दिमात्रिकवर्ण (छन्द) ९ बन् विपादिपु स्वतोऽधिक।

वि, बृहत्, महत्, विद्वान्, विपुल विस्तीर्ण, २ भारवद ३ दुर्जर, दुष्पक्ष, गरिष्ठ ४ पूज्य, मान्य।

—आई, स स्त्री, गुरुता, गुरुधर्म २ गुरुकृप, मन्त्रोपदेश ३ पूर्तता।

—कुल, स पु (स ग) आचार्यकुल, विद्यालय, शिक्षालय।

—घटाल, ॥ पु, पूर्ण वषट् शठ किनव, राज।

—जन, स पु (स) पूज्य बृह, जन।

—दक्षिणा, स स्त्री (स) आचार्योपायनम्।

—द्वारा, स पु (स गुरुद्वार >) दिव्यमत मन्दिर, उरुद्वारम्।

—भाई, स पु (—+दि भार्द) सनोर्ध्व, मगुरन्, सह, पाठिन्-अप्यायिन्।

—मुख, वि (स >) दीक्षित।

—मुखी, स स्त्री लिपिविशेष, शुक्मुखी।

—वार, सं पु (सं) गुरु-बृहत्पति, वार-वासर।

गुरुच, स स्त्री, दे 'गिलो' ।

गुरतर, वि (स) महत्तर, आवश्यक्तर
२ भारवत्तर, गरीयस ३ पूज्यतर ।

गुरुता, म स्त्री (स) भार
गुरुच, स पु (स न) तोल, मान २ महत्ता,
गौरव, गरिमन (पु) ।

—आकर्षण स पु (म न) भारवत्त्व, आकृष्टि
पातुवत्त्वम् ।

गुरुवाहन, स स्त्री (म गुरु) गुरु, आचार्य
पत्नी आचार्यानी, शुर्वी २ सपाध्यायानी,
उपाध्यायी ३ उपदेशिका, अध्यापिका,
शिक्षिनी ।

गुरु, स पु, दे 'गुरु' ।

गुर्गी, स पु (स गुरुग) शिष्य, अनुगामिन्
२ सेवक, भन्तुग ३ गुप्तचर ।

गुर्गीवी, स स्त्री (फा) पादू (की),
पादुका ।

गुर्ज, स पु (फा) गदा, शस्त्रभेद ।

गुर्जर, सं पु (स) गुर्जराष्ट्र, गुर्जरप्रात
२ गुर्जरवासिन् ३ जातिविशेष ।

गुर्दा, स पु (फा) बुद्ध का क, बुद्ध का क
गुद्ध, गुद, वृक्ष । २ शौर्य, साहसम् ।

—का वर्ध, स पु बुद्धशूलम्

—की पथरी, स स्त्री बुद्धात्मरी ।

गुर्दाना, कि अ (अनु) गुर्धुरायते (वा भा),
गुर्धुरध्वनि कृ २ गुर्ज (भवा प से) ।

गुर्भिणी, स स्त्री (स) दे 'गर्भिणी' ।

गुर्वी, म स्त्री (स) दे 'गर्भिणी' २ गुरुपत्नी,
आचार्यानी ३ गौरवयुक्ता ४ गायत्री ।

गुल, स पु (फा) ओट्ट-जपा जवा, शुष्क
२ पुष्प ३ दग्धवर्ती ति (स्त्री) ४ शुक्ल,
नेत्ररोगभेद ५ तप्तलोहाङ्क ।

—अभ्यास, स पु, कृष्ण करि (स्त्री) —
देहि (स्त्री) ।

—कंद, स पु (फा) पुष्प-जपा, सुख ।

—कारी, स स्त्री (फा) पुच्छ कार्य, कर्मन् ।

—गुरी, म पु सिद्ध, आरुह्य नाम श्वर ।

—दास्ता, स पु (फा) फुलशुस, नुयुम
पुष्प, गुच्छ स्तवक ।

—दान, स पु (फा) फुल, धानधानी ।

—दुपहरिया, स पु, सूर्यमत्तव, अव्यवहार,
माध्याह्निक, बधुजीवक ।

—परी, म स्त्री मुष्पा, श्लोदरी, बर्हपुष्पा ।

—बदन, स पु (फा) कौशेयवस्त्रभेद ।

—चूटा, स पु, दे 'गुलकारी' ।

—मखमल, म पु, स्थूलपुष्पा, झण्डक ।

—करना, गु, दे 'गुलाना' ।

—होना, मु, दे 'गुलाना' ।

—पिलना, मु, अतर्कित अद्भुत घट् (भवा
आ से) अथवा आ-स पत् (भवा प से)
२ उपद्रव उत्पद (दि आ अ) ।

—खिलाना, मु, व 'गुलखिलाना' के प्रे रूप ।

गुल, स पु (फा) कोलाहल, कलकल
ध्वनि (पु) ।

—गपाका, म पु, दे 'गुल' ।

गुलगुला, वि (हि गुदगुदा) कोमल,
मृदुल ।

गुलगुला, स पु (हि गोल+गोल) गोल
गोल मिष्टान्न पक्वान्न भेद २ गड, कणपट्टी ।

गुलचला, स पु (हि गोला+चलाना)
दे 'तोपची' ।

गुलक्षरी, स पु (फा गुल+अनु) आनन्द,
मोद, २ विलास, मोग ।

—(रं) उद्याना, मु, स्वच्छन्द रम्
(भवा आ अ) ।

गुलझार, स पु (फा) उद्यान, वाटिका ।
वि, शोभन, अभिराम ।

गुलझट्टी की, म स्त्री (म गोल+झट्ट =
उलझना) सूत्रसंश्लेष, भोलझट्टम् । २ वशी
कि (स्त्री) ।

गुलसन, म पु (फा) उद्यान, वाटिका ।

गुलाब, स (फा) चारकैमरा, लाडुपुष्पा,
तकणी, प्रतपत्री, भुञ्जेशा, गन्धाद्र्या, जपा,
जवा २ जपाजलम् ।

—जल, म पु, जपा-जवा, जलम् ।

—जामुन, स पु, बिलाद, जडु (न) —जावव ।
२ कृशभेद । ३ तत्फलम् ।

—दान, स स्त्री, जपाधानी ।

गुलाची, वि (फा) घाटल, जपावर्ण २ लघु,
अत्यल्प ३ कौश्वक, आङ् । स स्त्री, (१-३)
पानपात्र पय मिष्टान्न, भेद । ४ जपादम् ।

गुलाम, स पु (म) कौन, दास २ सेवक
३ दासकारयुक्त कोषापत्र, दास ।

गुलामी, सं स्त्री (अ गुलाम) दासत्व
२ सेवा ३ परतन्त्रा ।

गुलाल, स पु (फा गुलाल) दे 'अबीर' ।
गुलाली, वि

गुलिस्तौ, स पु (फा) उद्यान, उपवनम् ।

गुल्लवद, स पु (फा) गल्लवध २ प्रवेय-यवम् ।

गुले(लै)ल, स स्त्री (फा गिल्ल) बटिका
क्षेत्री, गुलिकास ।

गुलेला, स पु (फा गुल्ला) गुल्लिवा, बटिका
२ दे 'गुल्ल' ।

गुल्फ, स पु (स) घुटि, घुट घुट, चरणप्रथि (पु) ।

गुल्म, स पु (स) उदररोगभेद २ सेना
विभागभेद (- २ हत्ती २ रथ, २७ घोडा
४५ पैदल) ३ व्रीहा ४ नारी धमनी शेष,
४ रथ, क्षुप गुल्म-मन् ।

गुल्मी वि (स मिन्) गुल्मरोगपीडित ।

गुल्ला, स पु (म गोल >, दे 'गुलेला' ।

गुल्लाहा, स पु (फा गुलेल) रक्तपुष्प
भेद, लालपुष्पम् ।

गुल्ली, स स्त्री (स गुली >) फल, गर्मनीज,
२ गुलाबकीड़ाया लघुकाष्ठलण्ड, गुली,
बीज ३ शाग बी ४ सारिकापक्षिभेद,
५ इक्षुलण्ड ६ अश्व, पादाङ्क ।

गुल्ल, स पु, दे 'गुल्ल' ।

गुल्लाई, स पु दे 'गोस्वामा' ।

गुल्लाज, वि (फा) धृष्ट, विद्यान अक्षिष्ट ।

गुल्लाजी, स स्त्री (फा) भाण्ड, वैचार्य,
अक्षिष्टता ।

—करना, क्रि अ, पाठ्यै इष्ट (प्रे) अक्षिष्ट
वत् व्यवहृ (स्वा उ अ) ।

गुल्ल, स पु (अ) खान, अवगाहनम् ।

—करना, क्रि अ, खा (अ य अ) ।

—ज्ञाना, स पु (अ + फा) खानागार,
अवगाहनस्थानम् ।

गुल्ला, स पु (अ) कोष रोष, द 'कोष' ।

—आना, करना चढ़ना या होना, क्रि अ,
रु-रूप (दि प से), क्रु- (दि प अ) ।

—उत्तरना, मु, कोष शम् (दि प से,
शाम्यति) ।

गुल्लासीला, गुल्लैल, वि (अ गुल्ला) कोषन,
कोषन, रोषण, अमर्षण ।

गुह^१, स पु (सं) कार्तिकेय २ अश्व
३ गुहा ४ रामसुहृद् (पु) ५ हृदयम् ।

गुह^२, स पु (स गुह) दे 'गूह' ।

गुहोजनी, स स्त्री (स गुह + अजन >) पद्म,
पिटिका-चक्रिका ।

गुहा, स स्त्री (स) दे 'गुफा' ।

गुहार, स स्त्री, दे 'गोहार' ।

गुहिन, सं पु (स न) वन, काननम्,
अरण्यम् ।

गुह, वि (स) गुप्त, अतर्हित २ गोपनीय,
सवरणीय ३ दुर्बोध गूढ ।

स पु, छल २ कर्म ३ गुहाग ४ विष्णु
५ शिव ।

गुहक, स पु (स) यक्षभेद ।

—पति, स पु (स) कुवेर ।

गूगा, वि (फा गुग) मूक, बाग् रहित हीन,
अवाच ।

गूग का गुह मु, अवर्ण्यवार्ता ।

गूज, स स्त्री (स गुज) दे 'गुज' (१) २ प्रति,
नाद ध्वनि (पु) -शब्द -रव गर्जन छुति
(स्त्री) ३ अनु रसित-नाद ।

गूजना, क्रि अ (स गुजन) दे 'गुजना'
२ प्रति, नद ध्वन् स्वन् रस (स्व स्वा प से)
३ अनु, नद-रम, प्रतिध्वन् कृद् ।

गूयना, क्रि स (स ग्रयन) वेणारूपेण ग्रय
(क प से) वेणी कृ २ समग्र, सद्गम्
(जु उ से), गु(गु/न्-दम् (जु प से),
सूत्र (जु) ३ सिव (दि प से), (सूत्र्या)
सन्धि (प्रे) ।

गूयना, क्रि स (स गोपन क्रीडा करना >) (अप्यन मिथ्यारिवा हस्ताभ्या) मृद (क प से)
अथवा प्रे-सम्पीड (जु) २ ३ दे 'गूयना' (१, २) ।

गूग(गु)ल, स पु, दे 'गुगुल' ।

गूजर, स पु (स गुजर) गोप, गोपाल,
आभीर २ जानिविदेश ।

गूजरी, स स्त्री (स गुजरी) १ पी, गोपनी
२ चरणाभरणभेद ३ रागिणीविशेष ।

गूड, वि (स) दुर्बोध, कठिन २ गुप्त, प्रच्छन्न
३ गभीर, सारगमित ।

—पुरुष, स पु (स) दे 'गुसवर'

गूढता, नं खा (सं) दुर्बोधता, गम्भीरता,
प्रच्छन्ना ।

गूढाग, स पु (सं) कच्छप, कमठ, कुर्म ।

गूढाग्रि, स पु (स) अहि, सर्प, जरा,
पन्नग ।

गूथ स पु (म पु न) दे 'गूह' ।

गूथना, कि स, दे 'गूथना' ।

गूढ स पु (हि गूथना) कर्पट, चीनं
वसन = अवस्तर मल ३ तुला, तुलिका ।

गूढी, न स्त्री (हि गूढ) (मिथुकस्य)
तूला २ पोद्दली लिका ।

गूढा, स ॥ (स गौर्दे) मस्तिष्क, गोर्द,
मन्त्रकस्तेह २ फल, सार मन्त्रा वसा २ बीज,
सार-गम ४ सारनाग ।

गूथना, कि स दे 'गूथना' ।

गूढ, स स्त्री १ स गुण) नौकर्मकरकु
(स्त्री) ।

गूमडा, म पु (स गुम्भ म >) दि, स्फोट,
पिन्व २ शाय शोफ ।

गूमडी स स्त्री (हि गूमडा) पिडिका धुह
जग रक्तवटी ।

गूढ, स पु, उदुम्बर, यनाग, जगुफल,
हैमडुधक पुपशय ।

—का कीडा, सु कूपमद्व अनुभवहीन ।

—का फूल, सु, दुर्लभवतु (न) ।

गूह, न ॥ (म गूथ य) पुरीष, मल उधार,
विष्ठा, अप(व)स्तर, विष् (स्त्री) ।

गूथ स पु (स) दे 'गूढ' ।

गूह, स पु (स न) गूहा (पु बटु) गह,
ह, वेदमन् सद्गम (न) निवेत तन, सदन
भवन अ(आ)भार, मंदिर, निम्ब, आर्य,
शाला, स-आ ति अधि, वास, आवमव,
उद्वसित, निकाल्य २ परिवार, कुटुम्ब,
गृह ।

—पति, स ॥ (स) गूहिन्, गेहिन्, वुड्मिन्
२ कुन्दुर ३ अधि ।

—पत्नी, स स्त्री (न) शालिना, गूहिणी,
गहिनी, वुड्मिनी ।

—पुद्ग, स ॥ (स न) जनप्रकोप, प्रवृत्ति
शोभ, २ मोट्टविकवन्द ।

—लपनी, स स्त्री (म) सगूहिणी, सुशील
गूढपती ।

गूहस्थ, स पु (स) गूहमेधिन्, ज्येष्ठा
अभिन्, दे 'गूहपति' ।

—आश्रम, स ॥ (सं) वैवाहिकनीवने
२ दीनीयाश्रम ।

गूहस्थी, स स्त्री (स गूहस्थ >) गूहस्थ,
आश्रम कर्तव्यानि (न वडु) २ गूहस्थवस्था
३ कुटुम्ब, परिहार ४ गूह, उपरकार सामग्री
५ गूहकार्यशुलता ।

गूहिणी, स स्त्री (स) शालिनी, दे 'गूह
पती ।

गूही, स पु (स गूहिन्) गूहस्थ, दे
'गूढपति' ।

गेंडली, स स्त्री (स कुडली >) मटल आवेहन
व्यावतनम् ।

—मारना, कि स, मडली पुटी वल्ली, ह
व्यावृ (प्रे) ।

गेंडुरी, स स्त्री, दे 'इडुरी' ।

गेंद स पु (स गेंदुर) कडुक, गेण्डु (ह) क,
गान्क, गोल लाल २ मडल, वगुल, गोल
लम् ।

—बछा, स पु, गेंदुकपट्ट, पट्टेन्दुगम्,
आरुलीयकीशभेद ।

गेंदुना, म पु (स गेंदुक >) (गोल)
उपवह उपपत्तिम् ।

गेंदा, स पु (स गेंदुक) इहद, बडुक गोलक
२ पुष्पभेद ।

गेरना, कि स, दे 'गिराना' दगा 'उडलना' ।

गेरु, स स्त्री (स गवेरु) गैरिक रक्तपिदि,
भातु (पु) रक्तोपल, गिरिन, गिरि-लोहित,
शुतिना, वनालकम् ।

गेरना, वि (हि गह) गवेरुगमिन्
२ गिरिवर्ग ।

गेह, स ॥ (स पु न) दे 'गूह' ।

गेहुअन, स पु (हि गह) गोधूम,
पणिभेद ।

गेहूँ, म पु (स गोधूम) सुमनम (पु),
बहुद्वय, वसन, ३३-छभोवन, सिताशि
विक, निस्तुष, क्षीरिन्, अपूप, रसान
२ नागराग ।

गेहुँना, वि (हि गह) गोधूम, वर्णरग,
२ गोधूममय, गोधूम (समास में) २ घाम
भेद ।

गौडा, स पु (स गढ) गढक, खड्गिन्,
वत्रचर्मन् (पु), तुगकोटी, तुख, वार्धो
(धी) गस, खड्गमृग ।

गैन-त्ती, स स्त्री (देश) दे 'कुदाल' ।

गैज़, स पु (अ) कति कोर मोष-रोष ।

गैद, स पु (अ) परोक्ष तिरोहेन, पदार्थ ।
वि गुप्त, तिरोहित ।

—गै, वि, परोक्षविद, सर्वथ

गैपर, स पु (स गन्वर भग्नोत्तम, तन्त्र
करोद्र ।

गैपी, वि (अ गैद) गुप्त, प्रच्छन्न, अज्ञान ।

गैया म स्त्री दे 'गाय' ।

गैर, वि (अ) अद्य इतर, पर, अपर
२ भिन्न, अतिरिक्त । स पु आगतुक
अभ्यागत ।

—गगाव, वि, निर्गन्, नमतिपुत्र्य ।

—मनकुला, वि, स्थिर स्थावर, अचरक

—मामूली, वि विशिष्ट, आसाधारण विशेष ।

—मुनासिब, चाजिय, वि, अनुचित, अयोग्य ।

—मुमकिन, वि, असम्भव अशक्य ।

—शास, स पु पर, अनामीय ।

—हाज़िर, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान ।

—हाज़िरी, वि, अनुपस्थिति (स्त्री) अविद्य
मानता ।

गैरत, स स्त्री (अ) लज्जा श्रया ।

गैरिक, स पु (स न) दे 'गरु' ।

गैरीयत, म स्त्री (अ) अन्यता, परता
इतरता, अपरता ।

गल, स स्त्री, दे 'गली' ।

गैलन, स पु (अ) गोलनम्, द्रवद्रव्यपरिमाण
भेद, अङ्क प्रस्थ ।

गैस स स्त्री (अ) वाति (स्त्री), वायु ।

गौडा, स पु (म गोष्ठ) मय, अकरो-

शाण २ ग्राम ३ किन्तोगमा ४ अजिरन्

गौद, स पु (म गोष्ठ), अपवा हि गूढा)
नियाम ।

—दानी, स स्त्री निर्यासधानी ।

गौदीला, वि (हि गैद) निर्याम, मय
तुल्य, मद्र, दयान ।

गो^१, स स्त्री (स) दे 'गाय' २ किरण ३ इन्द्रिय
४ वाच् (स्त्री) ५ सरस्वती ६ नेत्र ७ विदुस्
(स्त्री) ८ पद्या ९ दिशा १० जवनी

११ जिहा । स पु (म) वृषभ २ नदीगण
३ योगका ४ सूर्य ५ चद्र ६ बाण ७ गायक
८ आकाश ९ स्वर्ग १० नल ११ लोमन्
(न) १२ शब्द १३ जवान ।

—कर्ण, स पु (स) धेनुध्रवण २ शैवतीर्थ
विशेष । ३ अक्षर ४ सप्रेम ५ किङ्क
वितस्ति (पु स्त्री) (हि बिष्ठा) ५ मृ
भेद । वि, लवकर्ण ।

—कुल, स पु (स न) गोतनुदाय २ गोष्ठ
३ ग्रामविशेष ।

—भास, स पु (स) गो, बदल (-ल)
पिंड ।

—घात, स पु (स) गो हया-वध-मारणम् ।

—घातक, स पु (स) गोघातिन्, गोघ्न ।

—चर, वि (स इन्द्रियमाद्य, इन्द्रियाद्य)
स पु रुपादिविषया २ शास्त्र, वृत्ताद्य
भूमि (स्त्री) ३ प्राप्ति देश ।

—चरी, स स्त्री (स चर >) मिश्रवृत्ति
(स्त्री) ।

—जनीत वि, अगोचर अतीन्द्रिय इन्द्रियनीत,
इन्द्रियागोचर ।

—दान, स पु (स न) धनु-गो, विमर्जन
त्याग ।

—धू(ली)लि, स स्त्री (स) सध्या-साय
का समय-वेला ।

—धेनु स स्त्री (स) दुग्धवती गौ (स्त्री) ।

—पाल, स पु (स) गोप, गोपालक ।
२ शोकृष्ण ।

—मय, स पु (स न) गो, स पुरीष विष्टा ।

—मुल, स पु (म न) धेनुवदन २ शरभेद ।
३ दे भरसिहा ४ गोमुनी, पद्मालाकोष ।
५ चरकृन् दुग्धमन् ।

—मूत्र स पु (स न) गो-मूत्र प्रस्ता-द्रव
निष्पद ।

—मेद-मेदक, स पु (स) राहुरल, पुष्करा,
पोतामन् (पु) ।

—मेघ, स पु (म) यक्षभेद ।

—रम, स पु (स) दुग्ध २ दधि (न)
३ एक ४ इन्द्रियसुखम् ।

—रोचन, स पु (स चना) शुभा, शोभा,
शोभना, रोचनी, शिवा, मण्डा, पोता,
रोचना ।

—लोह, सं पु (सं) श्रीकृष्णस्य नित्यव्यामन् (न) ।

—वर्द्धन, सं पु (सं) वृद्धमूमी पर्वतविशेष ।

—वर्द्धनधर, सं पु (सं) गोवर्द्धनधारिन् श्रीकृष्ण ।

—विद्ध, सं पु (सं) श्रीकृष्ण ।

—शाला, सं स्त्री (सं) गोष्ठ, गोमृह, वन ।

—साई, सं पु, दे 'गोरवामी' ।

—स्वामी, सं पु (सं) गोपति २ प्रभु ।

—हत्या, सं स्त्री (सं) दे 'गोघात' ।

गो, गो कि, अन्व (का) अपि, यद्यपि ।

गोका, सं स्त्री (सं) रज्जु, गो धेनु (दोनों स्त्रा) २ वनधेनु (स्त्री), सिंहगवी ।

गोरह, सं पु (सं) गोधर (त्रिकट टक, गोज २६ (६५विशेष) २ नम्य वृक्ष-क ३ वटक वल्ग, प्रवर ।

गोचना, गोचनी, सं पु म स्त्री (हिं गोहृ + चना) गोधूमचण पम्, गोचण गणी ।

गोज, सं पु (का) अपानवायु, पर्द ।

गोजर, सं पु दे 'कनयनूहा' ।

गोजरा, सं पु (हिं गेहृ + जव) गोधूमवसा ।

गोहा, सं पु (सं) शुष्क १ पक्वभेद । २ वृक्षकाष्ठ, बीज ३ दे 'नेत्र' ४ घामभेद ।

गोह, सं स्त्री (गोष्ठ > ?) वरगव-दशा (स्त्री वृद्ध), वसनप्रान्त ।

गोह, सं स्त्री (सं) गुटिका) शार, शारि (पु), खलनी ।

गोहा, सं पु (हिं गोह) सुवर्णरजत, जाला भरण-वस्त्राभरणम् ।

गोटी, सं स्त्री (गुटिका) बावाणसट ८, शर्करा २ दे 'गो' ३ मसूरीरिका, शीतग्रीव ।

गोह, सं स्त्री (म गोष्ठ) गोशाला २ पर्यटन, भ्रमण ३ श्राद्धभेद ।

गोचना, कि सं दे 'गोदना' ।

गोहा, सं पु दे 'गुहा' ।

गोणी, सं स्त्री (सं) शाल, गोप पुट, रज्जु (स्यो) १, प्रमेव २ द्रोणीपरिमाणम् ।

गोत, सं पु (सं) गोत्र) दे 'गोत्र' २ गण, समूह ।

गोत, सं पु (अ) निमज्जन, अवगह ।

—देना, कि. म., व 'गोता मारना' के प्रेरक ।

—मारना, कि अ वि-अन-गाह् (स्वा वा दे) निमज्ज् (तु प अ) ।

—जोर, सं पु (अ + का) अवगाहक, निमज्ज् (पु) ।

गोज, सं पु (सं न) कुल, वंश, अन्वय २ समूह ३ सपत्ति (स्त्री) ४ वन्धु ५ जातिविभाग ।

—भिद्ध, सं पु (सं) इन्द्र, देवराज ।

गोदत, सं पु (सं न) हरिसालम् ।

गोह, सं स्त्री (सं) कोष्ठ) अण, उत्तम ।

—लेना, सु, पुत्रीक, (पुत्रावेन) परिग्रह (रूप से) ।

गोदना, कि सं (हिं) गोदना) सूच्यत्वन रज्ज् (प्रे), स्वचमनुविध्य पत्ररेखा निविद्ध (प्रे) २ गोदीव निविद्ध (प्रे) ३ सूच्यमेण व्यर्थ (दि प अ) ४ असदृश प्रभु प्रचुद (प्रे) । सं पु, स्वचि सूचीपालनम् कृष्णचिह्नम् ।

गोदनी, सं स्त्री (हिं) गोदन) वेपनी, सूचि-व्री (स्त्री) ।

गोदाम, सं पु (अ गोटावन) पण्य-भगार आधान, भाण्डागारम् ।

गोदाघरी, सं स्त्री (सं) गोदा, गौतमी ।

गोदी, सं स्त्री, दे 'गोह' ।

गोधा, सं स्त्री (सं) वला, तल, वदाघातवारणा २ गोधिका, निहारा ।

गोधुम, गोधूम, सं पु (सं) दे 'गोह' २ नागरय ।

गोन, सं स्त्री, दे 'गोणी' ।

गोनिवा, सं पु, दे 'गुनिवा' ।

गोप, सं पु (सं) अन्तोर, गोदाल, २ नृप ३ उपचारक ।

गोपन, सं पु (सं न) गूढन, गोहन, प्रच्छादन, सवरणम् ।

गोपनीय, वि (सं) गुह्य, मवरणीय, रहस्य, गोप्य ।

गोपिका, सं स्त्री (सं) दे गोपी ।

गोपी, सं स्त्री (सं) गोधिका, गोपपत्नी, आप्यीरी, गोपालिका ।

गोपन-ना, सं पु (सं) गोपना) स्रग, मिश्रि(द)पात्र ।

गोघर, स पुं (स गोमय) दे 'गोमय' ।

—गणे(ने)रा, वि, कुदशन, कुरूप । स पु, मूर्त, जड ।

गोघरी, स स्त्री (हि गोघर) गोमयलेन ।

—रुता, कि स, गोमयेन लिप् (तु प य) ।

गोघरैला, स पु (हि गोघर) दे

गोघरौदा, 'उरैला' ।

गोभी, स स्त्री (स गोभी = घासविशेष >) गोभी ।

गोठ—, ग्रथिगोभी ।

पान—, } सुकुल पत्र, गोभी ।
बद—, }

फूल—, मध्यपुष्पा बृहद्दला पुष्पगोभी ।

गोघा, कि वि (फा) हव, यथा, मन्वे (दि आ अ) ।

गोरखघषा, स पु (हि गोरख + घषा) गहन जटिल-कार्य २ कूट, प्रहेलिका ३ अशक्यनिर्गम प्रदेश ।

गोरखा, स पु (स गोरख) नयपालदेशे प्रातर्विदेश २ तत्प्रान्तवासिन् ।

गोरखाली, स स्त्री (स हि गोरखा) नयपालदेशस्य जातिविशेष, *गोरखाली २ गोरखानीजातेर्भाषा, *गोरखाली ।

गोरा, वि (स गौर) शुद्ध, श्वेत, सित, विशुद्ध । स पुं, गौर, गुहा, श्वेत, सित, २ पुरोपादिसिन्, गौर ।

गोराई, स स्त्री (हि गोरा) गौरता, शुद्धता, श्वेतता, सितता ।

गोरिहा, स पु (गञ्जी) शानभेद, बनमानुषप्रकार ।

गोरी, स स्त्री (स गेरी) गोरा, गुहा, श्वेता, सुस्वर्णी, सुन्दरी ।

गोलदाज, स पुं (फा) शनज्जीवालक, गोलझेनक ।

गोल, वि (स) वर्तुल, निस्तल, वृत्त, वृत्तमंडल चक्र-वलय अकार-आकृति रूप २ अस्पष्ट, सादृश्य, अनिश्चित । स पुं, घट २ मूर्त ।

—गप्पा, स पु (+ गप्पु गण) *गोलगप्प ।

—मटोल, वि, दीनवामन, सर्वस्थूल ।

—मिर्ध, स स्त्री [स गोलमरि(री)च] मरिच कोल, कोलकम् ।

—माल, मु, अस्तव्यमनसा, कमर्षण ।

—माल करना, मु, छलेन आत्मसाद क २ व्यवस्था नश (मे) ।

गोल, स पुं (अ) गा, समुदाय ।

गोलक, सं ॥ (स) पिम्ब-सपुत्र-गङ्गा, प्रनारभेद २ निष्कर्षणी (हि दरान) ३ पक्षौ मृते अग्नयुष ४ बटुक ५ ग्रह-उत्पाद ६ कनीनिका ७ नेपगोल ८ निधि, राशि ९ टक्केटिका ।

गोला, स पु (स गोल) गोला-रु, वर्तुल-रु २ चक्र, मण्डल, वृत्त ३ भाग्यरु, गोल, बबल ४ नारिकेल ५ बागुगोल उदर रोभेद ६ धान्य, हट्ट विपणो ७ पशुधन ८ सेतुवध ९ धान्यकुम्भ ।

—मारना, वि स गोलै बदै धस (प्र) चू (चु) ।

गोलाई, स स्त्री (स गोल >) वृत्तता, वर्तुलता, गोलत्व, मङ्गलत्वम् ।

गोलाकार, वि (स) दे 'गोल' ।

गोलाई, स पुं (स ग) अर्द्धगोल ।

गोली, स स्त्री (हि गोला) लघुगोल, गोलक २ सीसकणिका ३ गुटिका, बटिका, गुलिका ४ काच-मर्मरोपल, गुलिका ।

—मारना, कि स, गुलिकाश्वेन हन् (अ प अ)-क्षण (स व से) ।

गोल्द, स पु (अ) सुवर्ण, स्वर्ण, कनकम् ।

गोल्डन, वि (अ) दे 'सुनहला' ।

गोल्द, स पु (स) मोहण ।

गोशा, स पु (फा) कोश २ दिशा ३ रह स्थान, विविकम् ।

गोश्त, स पुं (फा) मांस, आमिषम् ।

—खोर, स पुं, मांस-आमिष, अश्विन् आश-भक्षक ।

गोष्ट, स पु (स पुं न) गो, स्थान शाला गृह, जव २ वृद्ध, समूह ३ विमर्श, मन्त्रा ।

गोही, स स्त्री (स) गोष्ठि समिति (स्त्री), सभा, समाज, २ वार्तालाप ३ विमर्श ।

गोस्तना-नी, (स) दाक्षा, मृदोका ।

गोह, स स्त्री (स गोधा) गोधिका, निदाका २ (गोह का वद्धा) गोघार, गोघेर, गोघेय ।

गोहरा, सं पुं (स गोहल >) दे 'उपला' ।

गोह्, स पुं, दे 'गोह' ।

गोघुर, सं पुं दे 'गोघरु' ।

गौ, स स्त्री (स गम >) प्रयोजन, कार्य,
कार्य २ अवसर, कार्यकाल, अवकाश ।

गौ, स स्त्री, दे गाव' तथा 'गो' ।

गौगा, स पु (अ) कोलहल २ जनमुक्ति
(स्त्री) ।

गौड, स पु (स) वगप्रानस्य भागविशेष
२ ३ ब्राह्म-कायस्थ, भेद ४ गौडवासिन् ।

गौण, वि (स) अप्रधान, द्वितीय, अवर
२ सहायक । (गौणी स्त्री) ।

गौतम, स पु (म) ऋषिविशेष २ बुद्ध ।

गौतमी, स स्त्री (स) अद्वया २ कृपाचार्य
पत्नी ३ गौदावारी ४ दुर्गा ।

गौनहार, स स्त्री (हि गोन) नवोदासहृद्य
मित्री ।

गौनहारी, स स्त्री (हि गाना) गान्त्री,
गायत्री, गायिका, गायत्री ।

गौता, स पु (स गमन >) द्विरागमन
वर्त्ता पतित्यूहे गमनम् ।

गौर, वि (न) दे 'गौरा' (वि) । स पु
१ २ रक्तपीत रंग ३ चद्र ४ सुवर्ण
५ कुकुमम् ।

गौर, स पु (अ) विचार, चिन्तन, ध्यानम् ।

—करना, कि स विचार (ग्रे) चिन्त (तु)

गौरव, स पु (स न) महत्त्वं महिमम् (पु)
२ गुरुता, भारवत् ३ आदर, सम्मान
४ अभ्युत्थानम् ।

गौरवायित, वि (ङ) गौरवित, सगौरव
सम्मानित आदृत ।

गौराग, स पु (स) विष्णु २ कृष्ण ३
चैतन्यदेव । वि सित, श्वेत गुह्य २ यूरोपीय ।

—महाप्रभु, स पु (स) चैतन्यदेव ।

गौरी, स स्त्री (स) पार्वती, गौरा, गिरिजा
२ ३ शुभ (नारी अथवा गौ) ।

—नगर, स पु (स) शिव २ हिमालयस्य
उच्चतम शिखरम् ।

गौहर, स पु (फा) दे 'मोती' ।

ग्यान, स पु, दे ज्ञान' ।

ग्यारह, वि (स ष्वादेशश्च) । स पु, उक्ता
सप्त्या सदस्यी (११) च ।

ग्यारहवा, वि, ष्वात् (पु), ष्वादेशश्च (न)
(वीं स्त्री) = एकादशी ।

ग्रथ, स पु (स) पुस्तक, शास्त्र २ ग्रन्थ
३ धनम् ।

—चुवन, स पु (स न) क्षिप्रव्रित्त,
पठनव्ययन, शीघ्रपाठ ।

—सधि, स स्त्री (स पु) अध्याय
परिच्छेद ।

—साहय, स पु, शिष्यमनुधर्मस्य ।

—कार, स पु (स) पुस्तकग्रन्थ लेखक
संपादक वर्तुण्येन ।

ग्रथन, स पु (स न) ग्रन्थन पुनन
२ प्रणयन, निबन्धनम् ।

ग्रथि, स स्त्री (स पु) दे 'गौठ' ।

—यथन, स पु (स न) दे 'गौठ चोडना'

ग्रथित, वि (स) ग्रथित शु (शु) क्त
२ ग्रथिमत्, ग्रथिल ।

ग्रसन, स पु (स न) मक्षुण, निगलन,
२ ग्रहण, धरण ३ सूर्यदे प्रहण, उपराग ।

ग्रस्तता, कि स (स ग्रसन) (हस्तेन) धृ
(स्वा उ अ, लु) ग्रम्-अवलब्ध (स्वा
आ से) ग्रह (क् प ॥) ।

ग्रसित, } वि (स ग्रस्त) धृत गृहीत क्पात्
ग्रस्त, } २ पीडित ३ मक्षित, निगीण ।

ग्रह, स पु (स) नक्षत्रभेद ।

ग्रहण, स पु (स न) उपराग, ग्रह, ग्राम,
ग्रहणीन् २ आदान, अंगीकरणम् ।

ग्राफ, स पु (थ) विदुरेयाचित्रम् ।

ग्राम, स पु (स) दे 'गाव' ।

ग्रामीण, स पु (स) ग्रामिय ग्रामिन्,
ग्रामवासिन् ।

ग्रामोक्तो, स पु (अ) ध्वनिलेखनवाचम् ।

ग्राम्य, वि (स) ग्रामीण, ग्रामिक ग्रामीय
२ असभ्य अग्रिष्ठ ।

ग्रास, स पु (स) कवल विह ।

ग्राह, स पु (स) अवहार, जल्दस्तिन् ।

ग्राहक, स पु (स) कर्त (पु) मयिन्,
कथिक ।

ग्राह्य, वि (स) उपादेय, स्वीकार्य, २ देय ।

ग्रीवा, स स्त्री (स) दे गर्जन' ।

ग्रीम, स पु (स) ग्रीष्म समय-काल,
निदाघ, उष्ण णव तप, तारुण, उष्णा, उप
गम आगम-काल ।

ग्रीस स पु (अं) यवनदेश ।

प्रेतविटेन, सं पु (अ) आम्बदीपसम् ।
प्रेविटी, सं स्त्री (अ) स्वावृष्टि (स्त्री) ।
स्पेसिकिड—, आपेक्षिकमार ।
प्रेविटेनन, सं पु (अ) गुम्फाकपणम् ।
प्रेवुपट, सं ॥ (अ) स्नातक ।
प्रेवुटेनन, सं पु (अ) दार्वराजनम् ।
प्रेलिन, सं स्त्री (सं) विषाद, आवसाद,

प्रेलिन (स्त्री) सेद ।
प्रेलोज्ज सं पु (अ) द्राक्षीजम् ।
प्रेलव, सं पु (अ) मोलम् ।
प्रेवाट्, सं पु (सं) गोपाल (गोप, आमीर ।
प्रेवालिन, सं स्त्री (हि) ग्वाला) गोपी, गोपिका, आमीरी ।

घ

घ, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्था न्यूनवर्ण, वकार ।
घगोलना, घघोरना, घघोरना, कि म, (हि) घना + घोलना) चिली (मे) बिलाप यति ने, विदु (मे) २ आबिली कतुषी, रु ।
घट, सं पु (सं घ) कुम्भ ।
घट, घटा, सं पु (सं घटा) काष्ठनिर्मित वाद्यवेद २ घटा, शब्द-रय ३ होरा, नादिका, अहोरात्रस्व कतुर्विंशतिमो भाग ४ मशायी ।
—घर, सं पु, घटालय, घटागृहम् ।
घटिका सं स्त्री (सं) क्षुद्रवर्ण २ किंकि(क)णी ।
घटी, सं स्त्री (हि) घटा) घर्षा, घर्षिका, दुष्टना, घटिका, २ घटिकाशब्द ३ किंकिणी गीता ४ नूपुर ५ कृष्ण, स्वरयन्त्रम् ६ अलिङ्गिता, लम्बिका ।
घट्ट, सं पु (सं) ताप, दण्ड, २ प्रकाश, आनोक, ३ गन्धना ।
घघरा, सं पु (अनु) घृष्टवचनान्व कम् ।
घनर, सं स्त्री (हि) घघरा) चलनी, धृष्ट, चान्तर-क, घर्षरी ।
घचाघच, सं स्त्री (अनु) घचनच, श-द घनि (पु) । वि, स्थूल, पीन ।
घट, सं ॥ (सं) कुल, कलश श (सं स्त्री), पुत्र्योव, पगी, कलशी, कुट्ट, नेप २ शरीर ३ हृदयम् ।
घट, सं स्त्री (हि) घटना) न्यूनता, अल्पता ।
—घट, सं स्त्री, न्यूनताधिकता ।
घटक, सं पु (सं) मध्यस्थ, माध्यमिक, मध्यवर्तिन् २ कुलाचार्य २ योजक ४ घट ५ परविवाहसाधक ।
घट्टा, सं पु (अनु) मरणेन्मुदास्य कृच्छ्र, श्वास-पसित श्वासप्रश्वासम् ।

घटती, सं स्त्री (हि) घटना) न्यूनता, अवनति (स्त्री), क्षीयता २ अनादर, मानहानि (स्त्री) ।
घटन, सं पु (सं न) उपस्थिति (स्त्री), उपाम २ रचन, निर्माणम् ।
घटना, कि अ (सं घटन) घट्ट घृष्ट (स्वा भा से), उपस्था (स्वा उ अ), समापद (दि भा अ), उपनम् (स्वा प ॥) २ पुञ् (वरु), उपपद (दि भा अ) । सं स्त्री (सं) प्रसंग, वृत्त, वृत्तात्, व्यति कर । ३ दुर्घटना ।
घटना, कि अ (हि) कटना) परिशि अपचि (वरु) हम् (स्वा प से), न्यूनी अल्पी, भू ।
घटनावली, सं स्त्री (सं) वृत्तावली, घटना समूह ।
घटवद, सं स्त्री (हि) घटना + वटना) न्यूनत चिकते, अपचयोपचया, हानितामौ (सं दि) । वि न्यूनाधिक, हीनातिरिक्त ।
घटवार ल, सं पु (हि) घाटवाला) तरपण्य तारं, प्राहिन् २ नायिक, औपुषिन्, घट्ट जीविन् ।
घटा, सं स्त्री (सं >) कादम्बिनी, मेघमाला, घण्टाली २ समूह, वृद्धम् ।
घटाटोप, सं पु (सं >) दे 'घटा' (१) २ शिविकाच्छादन ३ शकटावरणम् ।
घटाना, कि स, (हि) घटना) न्यूनी अल्पी, क, ऊन् (जु), हम् (मे), लघुक, अपचि (स्वा उ अ) २ विपुञ् विधुञ्-व्यदकल् (जु) ३ गर्व ह- (स्वा प अ), अपकृ (स्वा प अ) ।
घटाव, सं पु (हि) घटना) न्यूनता, अल्पता, हीनता ३ अवनति (स्त्री), अपचय ।

घटवाना, कि प्र (हि घटना) व घटना
के प्रे रूप ।

घटिका, स स्त्री (स) शुद्ध-कुम्भ १ ।
२ कालमानयन, यामनाली घटी ३ चतुर्वि
शतिवन्धः अत्र काल, मुद्रादिम् ।

घटित, वि (स) निमित्त, रचित, मयादित ।

घटिया, वि (हि घटना) अवर अवर नि
अव इष्ट नष्ट २ सुख अल्पमूल्य ।

घटी, स स्त्री (स) दे घटिका १३ ।

घटन, स स्त्री दे 'गठन' ।

घटना, कि स, दे गठना

घटा, स पु (स घट) दे 'घ' (१) ।

घटाई, स स्त्री दे गटाई ।

घटाना, कि प्रे दे 'गठाना' ।

घटिया, (स घटिया >) नैजमावर्तनी, मू
(मु) वापी २ मधुकोश कर ३ गर्भा
शय ४ घृष्टाक्षक ।

घटियाल, स पु, दे 'पटा' (१) ।

घटियाल, स पु, दे 'ग्राह' ।

घड़ी, स स्त्री (स घरी) घटिकायामनाली
कालमानयन २ दे 'घटिका' (१) ३ दे
'घटिका' (२) ४ समय ।

—घड़ी, कि वि मुद्राई, पुन पुन असह्य
(सव मय) ।

—दिआ स पु (हि घनी + दिआ) अघो
शोष, घृणन रातिविशेष ।

—भर, कि वि, मुद्राई अग, लण मुद्राई, मादम् ।

—साज, स पु (हि + का) घरी घटिका,
वार ।

घटिया, म पु (स घात >) दे 'घानी' ।

घन, स पु (स) मेघ, अद्, खोद
२ होदमुद्रा, अयोधन, ३ दे 'घटा' (१)
४ सनायीयाकत्रयस्य पूरण (गणि, उ
२ ४ २ ४ २ - ८ घन) ५ समूह ६ शरीरम् ।
वि माद्र, निविह २ वठिन, सह्य, रघूळ,
३ अधिक, प्रचुर ।

—गरज, स स्त्री (+ हि) गमित, स्तनित
२ श्रवणांशोष, मेद ।

—घार, वि (सं) अति, माद्र निविह
२ शीघ्र, अयावह । स पु शीघ्र, रघु-रघुनि
२ स्तनित, गमितम् ।

—घोर घटा, सं स्त्री (स) अविरल नन्दावली,
नीर भवाद्भिवनी ।

—चक्रर, स पु (स घनचक्र >) नचल
अस्थिर, मति-मुद्रि २ मूर्त ३ परिभ्रमिन्,
यथेच्छविहारिन् ४ कूट समन्त ।

—नाद, स पु (स) दे घनगर १ ।

—फल, स पु (स न) दे 'घन' (४) ।

—मूल, स पु (स न) पूरितसनायीयाक
त्रययांशाङ्क, घनपद (उ आठ का घन
मूल हो) ।

—रपास, वि (स) अद्दनी, मेघमेचक ।
स पु, श्रीकृष्ण ।

—मार, स पु (म) कर्पूर २ पार १ ।

घनता, स स्त्री (स) साद्रता निमित्तता ।

घनद, म पु (म न) रघूना सहति (स्त्री)
२ पदार्थस्य आधामविरतारघूनावानि (बहु) ।

घना, वि (स घन) साद्र, निविह, मह्य,
नीर २ गाढ, निवृत्तवर्ति ३ अत्यधिक,
अतिशय ।

घनाचरी, स स्त्री (स) द्रवकवृत्त दक्षिणात्
छद (छद) ।

घनिष्ट, वि (स) अत्यन्त मति, साद्र
तिविह घन २ प्रगाढ, अतिनिवृत्त ३ अत्य
धिक, अतिशय ।

घनेरा, वि (हि घना) अत्यधिक अतिशय
(बहु, घनेरे = अमराय, अनेक) ।

घनोदय, स पु (स) मेघागम, वर्षा
कालारम्भ ।

घनोपल, दे 'जोला' ।

घपला, स पु (अनु) छत्र, कपट २ (मन्थान)
रत्नलित, भ्रान्ति (स्त्री) ३ क्रमभा ४ मनुज,
प्रम, कीर्तकम् ।

घवरा(दा)ना, कि अ तथा कि ॥ दे
'गठवाना' ।

घराहाट, स स्त्री (हि घवराना) व्या
आ, कुत्ता, अज्ञानि (स्त्री), उद्वेग
२ व्यामोह, विवर्तन्यमूढता, विषयविशेष
३ स्वरा, तुर्गि (स्त्री) सरम(न) सभ्रम ।

घमट, स पु (स गर्व १) अहवार, गर्व,
दप, आदोष, मद, अवलम्ब ।

—हरना, कि अ, गर्व (ध्वा प से), प्रगल्भ
(म्वा आ से) दृष्टि (दि व से) ।

घमडी, वि (हि घमट) अग्रलिप्त, दृप्त, गविन,
अङ्मानिन्, अङ्कारिन्, अस्तिक् ।

घमघमाना, कि अ (अनु) घमघमायते
(ना घ) , गभार स्वन् (भ्वा प से) ।
कि म (मुष्टिभि) षट (चु०) ।

घमम, म का } (म घर्न् >) दे 'उमम' ।
घममा, म ॥

घममान, म पु (अनु) घोर-दाह-कृत्,
दुष्ट मप्राम-र-समर ।

घमाणा, स पु (अनु घम) घमिति-कृत्
ध्वनि (पु) प्रहारज शब्द ।

घमाघम, म पु (अनु) घमघमध्वनि (पु),
घम-म-धित, घमघमाशब्द ० छेदुद्गर वन,
शब्द १ अङ्कर, की (की), शोना ।

घमासान, स पु द 'घमसान' ।

घर, स पु (स गृह) द 'गृह' ० कम,
भूमि (की)-स्थान ० कुल, ५५ ४ कायाय-
५ कोष्ठ, आहार १ काष, आवेष्टन ७ मूल,
करा ८ गृहगरी-उद ९ छिद्र, विलम् ।

—आवाद करना, मु, वि-उद-वह् (भ्वा व अ),
परिणी (भ्वा प अ) ।

—करना, मु, वन् (भ्वा प अ) २ स्थिरीभू ।

—का आदमी, मु, विष्मन्नीयमनुष्य
२ सध्विन् ।

—का न था का, मु, निशुं, निरर्थक,
कुत्तिन्, अधम २ अस्थिरवास ।

—कूक तमाशा देखना, मु, अभोदप्रमादपु
स्वधन अपन्दस् (चु०) ।

—कोड़ना, मु, गृहकृद्-न् (प्र) ।

—बमाना, मु, दे 'आवद करना' ।

—घारी, मु, गृहस्थ, गृहिन् ।

—में डाङना, मु, उपपदत्वेन पाठ्यन्
(र उ से) ।

—में पढना, मु, उपपत्नीभू ।

—घाटा, मु, पति २ गृहिन् ।

—वाली, मु, पत्नी २ गृहिणी ।

—सिर पर उठाना, मु, कोणाहल कृ ।

जैव—, मु, उच्च मु-कुल, सध्विन् ।

बहा—, मु, सध्विन्-सध्विन् आन्, कुन् ० कारा
गन् ।

घरह, स पु (स) घरहृक् २ पेशी चक्री ।

घरणी, नी, स की (सं गृहिणी) गृहपत्नी,
माया, कान्धन् ।

घरफोरी, सं की (हि, घर + फोड़ना)
गृहभेदिनी वदविनाशिना ।

घराट, स पु, द 'घरहृ' ।

घराती, स पु (हि घर) 'घराती' का
अनुकरा (विनाह) वधू-बन्धा पक्षीय
मन्ध्विन् ।

घराना, म ॥ (हि घर) वर कुल,
कान्धन् ।

घरेलू, वि (हि घर) गृह गृह, निर्दिष्ट
मध्विन् २ नैज, कान्धीय ० दे 'पाठ्य' ।

घर्घर, (स पु) गृहाद घर्घर, शब्द स्वन् ।

घर्घराना, कि अ (स घर्घर >) घर्घरव
हृ, गृह-व नर (भ्वा प से), घर्घरायने
(ना घा) ।

घर्घराहट, स का (हि घर्घराना) दे 'घघर' ।

घर्म म पु (स) सूर्य, आश्रय आलोक्
२ कान्ता, दाह, ताप १ धौम्य ४ प्रवेद ।
वि, तप्त, उन् ।

घर्घांय, स पु (अनु) घर्घर, घर्घरव ।

घर्षण, स पु (स न), अभ्यवन, मध्वन्
२ सगृह, समानात् ।

घसना, कि अ तथा कि स, दे 'घिम्ना' ।

घसिपारा, स पु (स दास >) दास
हार-गिन्, घामधिकेष्ट (पु) १ दास वृ,
छेदक-लावक । (रिन् (की) - दाहारी
रिणी इ) ।

घसीट, स का (हि घसीना) शीन हुव
दरिद्र, ल (लि) स्तन १ हुव शीन-दरिद्र
लेट लेटन ० (भूमो) कर्धन् ।

घसीटना, कि स (स घृष्ट) आविकृष्ट
(भ्वा प अ) दगाष्ट ह (भ्वा व अ)
० शीघ्र-सख्य, रिन् (तु प से) ६ दगाष्ट
समाविद (द्वे) ।

घस्मा, म पु, दे 'घिम्ना' ।

घहर(रा)ना, कि अ (अनु) दे 'गरन्ना' ।

घाई, स का (स गमस्ति >) अगुनी
माध, गमस्ति-को २ काव्यशामवि ।

घाई ॥ का (हि वाव) कापाव, प्रहार
० छन्, कपटन् ।

घाऊचप, वि (हि साऊ+अनु) औदरिक,
घम्मर, गृध्नु = गृध्विच, गुप्तभाव ।

घाघ, घाघ, वि (एक प्रसिद्ध अनुमयी पुरुष
या) बहुदशिन अत्यनुमविन् (नो स्त्री), बहु
दृशन (वरी स्त्री) २ माधाविन्, मापटिक
(नो स्त्री) सं पु, जरट, बृट ।

घाघरा, म पु, (म घर्ग) १ सत्यूनदी
२ इ 'यरा' ।

घाट, म पु (सं घाट) घट्ट, पट्टी, नर,
नर नर, स्वात = नीर, अवतार ४ पर्वत
५ विद्या ६ विधि (पु) प्रकार ७ असिपारा ।

—घाट का घाटी पीना, मु गणीविकार्य हा
मन क्रम (स्वा प से) ६ अनुमवाति
हर प्राप् (स्वा प अ) ।

—मारना, मु, प्रतिविडनाशानि आ, नीट
(स्वा उ अ) ।

घाना, म पु (हि घटना) हानि हति
(स्वा), क्षय, अपचय, अत्यय ।

—उठाना या पड़ना, मु, विद्युन्विद्य
परिहा (कर्म) ।

—भरना, हानि सम प्रथिममा, धा (जु उ अ),
हानि ॥ वि परिपुष् (प्रे) ।

घाटिया, स पु (हि घाट) ग्वापुन, तीर्थ
पुगेदिन ।

घाटी, म स्त्री (हि घाट) मकद मधाय,
पथमा = वरी, द्रोण, उपायरा ।

घात, म पु (म) आ अभि निर, गत,
प्रहार = वध, हत्या ३ भक्ति, भद्रवत्
४ पुनःफल (गणित) । स स्त्री, सुवीर,
सहवसर, सुवेला २ निष्ठुतावस्थिति
(स्वा) ३ छल वृत्ताय ।

—मैं घैटना, मु, (कथाय छटनाय या) मार्ये
निष्ठु प्रतीक (स्वा आ से), पथि अव
स्वट (स्वा प अ) ।

घातर, सं पु (सं) उकारिन्, नारव,
मारयिन् इन् (पु) = दातु, जरि, ३ वषक,
ददप्राधिक । वि, प्राणहर, अनकर ।

घातिनी, स स्त्री (मं) हवी, घातिवा,
मारयिनी ।

घाती, सं पु (म घातिन्) दे 'घातर' ।

घाटी, वि (हि घात) विधामानिन्,
अमदमप = मधायिन् ।

घातुक, वि (मं) नाशक, हिसक, मारक ।
(घातुकी स्त्री) ।

घाय, वि (सं) इजनीय, इज्जद, मारणीय,
वधार्थ ।

घान, } सं ॥ (सं घन) ।
घानी, } सं स्त्री (म्हालीन-यादिपु सट्ट के
पणीया माना ।

घाम, सं पु (सं घर्ग) सूर्य, आप-आनोक
= सूर्य, तप दाह ।

घामद, वि (हि घाम) मूर्त, अण, मूढ,
२ अन्त, कर्मनिष्ठ ३ धर्म आनप, पीडित
(पणु) ।

घाण्ड, वि (सं घान >) क्षन, जणित,
निक, भिन्नदेह, आहत, प्रकृत ।

—करना, क्रि सं, जण् (पु०), आ-अभि
हन् (अ प अ), छन् (त उ से), हुय
(तु उ अ) ।

—होना, क्रि अ, व उपपुंस् घातुओं के कर्म
रूप ।

घार, सं पु (सं) अनेक प्रोक्षणम्, वण
निरणम् ।

घाल, स पु (म घार >) धार, प्रादकाय
मूल्य विना दत्त वस्तु (न) ।

घालक, म पु (हि घालना) घातर,
मारक, = नाशक, ध्वंसक ।

घात, स पु (सं घात) क्षणित (की),
वण, आराग, प्रहार, ईर्ष, अहस् (न) ।

—करना, क्रि म, दे 'घात करना' ।

—गाना, क्रि अ, दे 'घात होना' ।

—भरना, क्रि अ, वण, वड् (स्वा प अ) ।

घास, सं स्त्री (मं पु) य(च)वस, यव (वा)-
स, शब्द, वृणम् ।

—घात, स पु (सं घातवत्) वृणवत् २ दे
'वृडा-करवट' ।

—घूस, स पु, वल्गु-ऊ २ दे 'वृडा-करवट' ।

—कटना या खोदना, मु, -वर्ष सुद दुच्छ,
वार्थक ।

धिग्वी, सं स्त्री (अनु) हिप्ता, हिप्ता
२ मग्गदवान् (स्त्री), रत्नदवान्य, स्वरभग ।

—वध जाना, क्रि अ, (अयश्रीवाग्मि)
दिकू (स्वा उ से), सगदगद वद (स्वा
प से) ।

धिधियाना, क्रि अ (हि धिग्नी) करण

प्राप् (चु आ से), सवाप निविद् (प्रे),
दे 'गिहपिडाना' ।

विचपिच, स स्त्री (स घृणपिठ अववा
अनु०) स्थानमशीनता, अवकाशाल्पताम् ।
वि०, सकुल, वैशद्यम्, अस्पष्ट ।

घिन, म स्त्री, (स घृणा दे) ।

घिनाना, कि अ, दे 'घृणा करना' ।

घिनावना, घिनौना, वि (हिं घिन)
घृणाद्, गहिंन, गहनीय, नीमरम, अरुचिकर,
कुत्सित, उद्देगस्तर (-री स्त्री) ।

घिया, स पु दे 'बद्ध' ।

—कश, स पु दे 'बद्धकश' ।

—तोरी, स स्त्री, महाकोशातवी, इति-वोषा
महापना, बोधक, इतिपणा ।

घिरना, कि अ (स ग्रहण >) परि, इक्षिप्
गम् वैष्त् (कर्म) २ एकत्र मिल् (तु प
से), सनिपत् (स्वा प से) ।

घिरनी, सं स्त्री (न घूर्णि) १ घूर्णि (स्त्री),
घूर्णन, अ-आमर २ परिभ्रमना, परिवर्तन
३ रञ्जुष्यावर्तनरक्त ४ दे 'गढ़ारी' ।

घिसनिस, स स्त्री (हिं घिसना) माय,
दीर्घनूनता, कार्यचटता, कालक्षेप ।

घिसना, कि अ (म घर्षण) चर्चरीभू, जु (दि
प से), (सघर्षणेन) अरुचि क्षि (कर्म), सघृष्
(स्वा प से), सघट (स्वा आ से) ।
जि स, घृ (प्रे), गृह (क प से वा प्र)
अभि, अत् (र प से), छिप् (तु प अ) ।
स पु, घर्षण, मर्दन, अभ्यर्जनम् ।

घिमवाना, घिसाना, कि प्र व 'घिसना'
(कि म) के प्रे रूप ।

घिसाद्, स स्त्री (हिं घिसना) घर्षण,
मर्दन २ घर्षणमर्दन, मृत्वाभृति (स्त्री) ।

घिसाव, स पु (हिं घिसना) मघर्ष, पर
घिसावट, स स्त्री (सघर्षणमर्दन, ममर्द,
सघट्ट) ।

घिससा, सं पु (हिं घिसना) घर्ष, मघट्ट,
ममर्द २ प्रसारण, प्रचोदना ३ बालक्रीडा
भेद ।

घी, सं पु (स घृत त) आज्य, आ, आनुस्
सपिस् (न), पवित्र, अमृत, अभिघार,
होम्य, तेजस, नवनीतकम् ।

—के चिराग या दिवे जलना, मु, मफलमनो
रु पूर्णकाम-कृत्य, (वि) + भू ।

—स्त्रिचढ़ी होना, मु, प्रगाढ धनिष्ठ, मैत्री
अनुराग भू ।

पोंचों उगलियों घी में होना, मु, उतमव
धृत् (स्वा आ से), स 'या समृद्ध (वि)
अग (अ प) ।

घीऊँवर, स पु (स घृणकुमारी) कुमारी,
तरुणी, गृह, कथा वन्यका, अनरा, अमरा ।

घुँहर्गो, स स्त्री (देश) दे 'कचाल' ।

घुँघ(ग)ची, स स्त्री, (स गुजा) गुजिका,
रक्षिका, रक्ता, कुण्डला, काक, विचित्रा गजा
निका २ गुणारत्ना, वान इ ।

घुँचरी, स स्त्री (अनु) मज्जिनाद्रचणकादि ।

घुँघरारे छे, वि, दे 'बूँधरवाल' ।

घुँघरु, स पु (अनु घुन) घर्षरा रिका,
धुप्र, घटा घटिका, धुद्रिका, नवणी, नीका,
किविगी २ मजीर २, पुनुर २ ३ मरणा
सन्नत्य कठे घर्षरश्म्यद् ।

घुड़ी, सं स्त्री (स ग्रथि पु) १ दे 'गाठ' ।
२ बलमय, गह-कुडुप ।

घुग्घी, स स्त्री (देश) दे 'पडुक' २ त्रिकोण
रूपेण व्यावर्तित कवच ।

घुधू, घुधुआ, स पु (सं घूक) दे 'उल्लू' ।
घुधुआना, कि अ (अनु) घृष्ट शब्द कृ ।
उल्लूकवत् घूकयद् रु (अ प से)-कृश (स्वा
प अ) ।

घुटना, कि स (अनु) अव्यय पा
(स्वा प अ) २ द निगलना ।

घुटना, स पु (स घुट-टटना >) घातु
(न) ऊह, परन् (न) सधि (पु), अष्टौवद्
(पु न), चक्रिका ।

घुटना, कि अ (हिं घुटना) कठ-आस
रूप (कर्म) ।

घुटना, कि अ (हिं घटना) चूर्ण पिप्
(कर्म) २ सम्भव पच (कर्म) ३ श्दशी भू
४ सरय जम् (दि आ से) ५ लिम्बालापे
व्याष्ट (तु आ अ) ६ वेदा मूलन मु
हुर (कर्म) ७ अभ्यस (कर्म) ।

घुटा हुआ, मु घूट, दक्ष, विचयण ।

घुटना, सं पु (स घुट >) घुगनाह,
पादाग्राम ।

घुटाई, स स्त्री (हिं घोटना) चूर्णन, पेषण, मर्दन = २२ शोणकरण ३ चूर्णन ४ शोणकरण, भूत्या ४ शोर, मुटन ५ आवर्तन, अम्यास ।

घुट्टी, स स्त्री, दे धूट्टी ।

घुट्ट, म पु (स घोट) घोटक ।

—चदा, स पु, दे 'घुटसवार' ।

—चढ़ी, स स्त्री, अथाकटा (बारी) २ अथा रोहण वैवाहिकरीतिभेद ३ शतभोभेद ।

—दीब स स्त्री, अथ घोटक चर्वा धावन २ जपाथ जवन, धावन, घतभेद ३ चर्वाभूमि (स्त्री) ।

—यद्वल, स पु, घोष रव स्वदन ।

—सवार, स पु सादिन्, गुरगिन्, इय गुरग-अथ आरु रथ ।

—सवारी, म स्त्री, अथ रोहण-कौशल विद्या ।

—माल, स स्त्री (स घोटना) भट्टरा, बाजि अथ शाला ।

घुटकना, कि स (स घुट्) मत्सं (जु आ से) वाचा दट (जु), अथ अधि क्षिप् (जु उ अ) ।

घुटकी, स स्त्री (हिं घुटकना) अधिभव, क्षप, वादण्ड, मर्दन ना ।

घुणाचर, म पु (सं) घुणलिपि (स्त्री), घुणवल्मीकादिभिः पत्रनाछादिषु कृता रेखा ।

घुन, स पु (स घुण) काष्ठ, वैधक वीट लेगक ।

—लगाना, कि अ, घुनै मद (कर्म) ।

घुनघुना, स पु (अनु) दे 'घुनघुना' ।

घुना, वि (अनु घुनघुनाना) लूणोक, गूढ सचन, मान (घुनी स्त्री) ।

घुप, वि (स रूप >) निविट सूचीभेद (अथकार) ।

घुमइना, कि अ (हिं घूमन-स अटन >) मेरा आकाश आच्छ (जु) ।

घुमरी, स स्त्री (हिं घूमना) अ (आ) मर, अमि धूमि, (स्त्री) ।

घुमाना, कि स (हिं घूमना) व 'घूमना' के प्रेर रूप ।

घुमाव, स पु (हिं (घूमना) परि, प्रम, धूमि (स्त्री), वा-परि आ-वर्न ।

घुसघुराना, कि अ (अनु) घुसघुरावने (ना आ), घुस् (जु प से) ।

घुलना, कि अ (सं घूर्णन >) विप्र, स्त्री (दि आ व), द्रवीभू, क्षरू गल् (भ्वा प से), विट् (भ्वा प अ) २ प्लोभू, दुर्गंध (वि) भू, विगल् ३ कृश क्षीणमांस (वि) भू अमे परिहा (कर्म) । स पु, विलयन, द्रवीभाव, प्लोभवन, क्षय इ ।

घुलने योग्य, वि, विलेय, क्षरण विलयन, शील, विद्रव्य ।

घुलवाना, कि प्र } व 'घुलना' के प्रेर रूप ।
घुलाना, कि स }

घुलाव, स पु } दे 'घुलना' स पु ।
घुलावट, स स्त्री }

घुपित, घुष्ट, वि (स) प्रकाशित, प्रकटीकृत, आ-उ-वि, घोषित, प्रत्यापित ।

घुसडना, कि अ, दे 'घुसना' ।

घुसना, कि अ (स कोसन वा धर्षण > ?) (बलात्) अथ प्र, विश् (जु प अ), (अत) पद कृ अथवा निषा (जु उ अ), आगम् २ निद, मिद (व प अ), अथ (दि प अ) । स पु, प्रवेश, आगमन, निर्मोदन इ ।

घुसना, } कि स, व 'घुसना' के प्रेर रूप ।
घुमेइना, }

घुषट, स पु (स घुठन >) अथ घुठन ठिका, मुलावरक-कर्म ।

—काइना, या मारना, कि स, अथ घुट् (जु) मुलमाच्छट् (जु) ।

—वाली, स स्त्री, अथ घुठनवती ।

घुंघर, स पु (हिं घुमरना) अलक, कुरल, चूर्णकुल ।

—वाले, वि आकुचिन जिह्वा वक्त्री, भूत, कुलालीर्ण, कुरलिन् (प्राय वेशी के लिए) ।

घुंठ, स पु (अनु घुट घुट) गह्वरमात्रं पेष, चतु, ज (जु) कुक ।

—लेना या पीना, कि स, भावन् (भ्वा प से) उपरस्थ (जु, प अ), अथ शो इषव पा (भ्वा प अ) ।

घुंटना, कि स, दे 'घुंठ लेना' ।

घुंटी, स स्त्री (हिं घुंठ) शिशुभेदन, वालीषधम् ।

धूस, स स्त्री, दे 'धूस' ।

धूसमधूसा, सं पु (हिं धूसा) मुद्युमुटि (अव्य), मुटियुट, गह्वरवि (अव्य) ।

घूसा, स पु (हि धिरसा) मुष्टि (पु ली),
मुष्ठी, बद्धमुष्टि २ मुष्टि, धान प्रहार ।

—एगाना या मारना, कि स, मुष्टिना प्रह
(भ्वा उ अ)-तट (जु) ।

घूभा, स पु (देश) कायशरकाण्डादीना
पुष्पम् २ कर्दमस्थकीर्णभेद ३ खन्वाद्यिद्रम् ।

घूक, स पु (स) दे 'उल्लू' । (घूकी ली)

घूध, स पु, दे 'रोद्र' ।

घूधू, स पु (स घूक) दे 'उल्लू' २ जम्,
मदमति ।

घूम, स ली, दे 'धुमाव' ।

घूमना, कि भ (स घूर्न) परि भ्रम्-अ

(भ्वा प से), स वि-चर (भ्वा प से)

० वि-या आ परि वृत् (भ्वा आ से),

चक्रवत् भ्रम्, वि परि घूर्ण (तु प से)

३ नि प्रतिनि प्रत्या वृत्, पुनर्, या इ

(अ प अ) । स पु, परि भ्रम-अग्नि,

परिवर्तन, घूर्णन, प्रतिनिवर्तन, चक्र, आवर्त

गति (ली) ।

घूमने वाला, वि, पर्यन्त भ्रम शील, चक्रा

वर्तिन्, चक्रगति, परिवर्तिन्, परिभ्रमिन् ।

घूमघुमेला, वि (हि घूम घूम) दे

'घूमनेवाला' ।

घूर्ना, कि स (स घूर्न >) बटक्षेत्र तिर्यक

सावि ईभ (भ्वा आ से)-इग (भ्वा प अ)

२ सरोपनिमित्तेषु अवलोक (भ्वा आ

से जु) ।

घूराघारी, स ली (हि घूरना) कटाक्ष,

कटाप, भवेक्षा, दर्शनम्, अपाग, बीक्षणम्

अवलोकनम् ।

घूस, स ली (हि घुसना या घूसा) उ-लोच,

उपायनम् ।

—खोर, स पु (हि + का) उरकोवप्राहिन् ।

घुगा, स ली (स) अरुचि, कुत्सा, गर्हा,

जुष्टता, वि, देश निर्वेद ।

घृणित, वि (स) अरुचिकर-उद्वेग (—बरी

ली) २ दुस्तिष्ठ, गद्ग, नीमत्स ।

घृत, स पु (स न) दे 'घो' ।

घेरना, कि स (ग्रह >) परिवेष्ट (भ्वा

आ से, प्रे), परिवृ (स्वा उ से प्र),

घेरने वाला, स पु, परिवेष्टक, उपरोधक ।

घेरा, स पु (हि घेरना) परिधि (पु),

परि, वेश वेश-आह, मण्डल २ प्राचीर,

प्राकार, वेष्टन, वरण ३ परिवृत्तस्थान

४ मण्डल ५ अव उर, रोध ।

—ढालना, मु, परिवेष्ट (प्रे , दे ।

'घेरना' (२) ।

घेवर, स पु (स घृगवर) घृतदूर, धार्मिक ।

घैया, स ली (हि घी) स्नाननिर्गन्धुधधारता

२ प्रत्यप्र-दुग्धमवनीनम् ।

घोंघा, स पु (देश) शङ्ख (वृ क, कोप

कवच-स्थ, कीर्णभेद ० शुक्ति (ली) ।

वि, चट, स्थूलशुद्धि ।

घोंटना, कि स, दे 'घोटना' ।

घोंपना, कि स (अनु घुप) प्रमि विद्

(प्र) निर्भिद-न्यष (प्रे) ।

घोंसला, स पु (न कुशालप अथवा हि

घुसना) कुलाप, नीट-ट, सगलप,

प्रमिगृहम् ।

घोख(क)ना, कि न (घुघा >) कठस्थ

(वि) कृ, स्मृतिपथ नी (भ्वा उ अ),

अभ्यस (दि उ से) ।

घोट, घोटक, स पु (स) दे 'घोडा' ।

घोटना, कि स (स घोटन >) क्षुद्रभिष

(रु प अ), चूर्-खण्ड (जु), खट् (क

प से) २ मुट (जु), क्षुट् (तु प से)

३ घर्षण स्त्रीकृ ४ गलहस्तयति (ना

धा), गल निष्पीड्य व्यापद् (प्रे), कठ

निष्पीड (जु) ५ दे 'घोटना' ।

स पु पेधा, मदन, मुष्टन, स्त्रीकरण इ ।

२ मुम (स) ल रु, (पेधा) दट ।

घोटनी, स ली (हि घोन्ता) मर्दनी,

मुसरकम् ।

घोटवाना, कि प्र, व, 'घोन्ता' के प्र रूप ।

घोटा, स पु (हि घोन्ता) मार्जक, पर्यक

२ मन्त्रितवस्त्र ३ घर्षण ४ मुस्तल, दट

५ पेधा ६ खौर, केशवपनम् ।

घोटाला, स पु (देश) दे 'गडवड' स ॥ ।

घोड़साल, स पु (स घोड़ाला) दे

'घुड के नीचे 'घुडमाल' ।

घोडा, स पु (स घोन्) घोन्क, घुरा, घुरग,

गम, अथ, वाइ, ह्य, वजिन्, अर्धन् (पु),

संभव, सति (पु), १५१, जवन ।
चतुरंग शार शारि (पु) ३ अश्वत्थरी ।
—गाड़ी, स खा, अश्वत्थ, रय शक ।
घोट वेच कर सोना, मु गाढ निद्रा स्वप् (अ
प अ)-शी (अ खा, से,)-मविश (तु
प अ) ।

घोडिया, स खी (हि घोडा) घोष, अश्व, लु अश्व घो २ नागदन्त, नव ।

घोडी, स खी (स घोगी) अषा, वरवा, गुरी वापिनी वापिना, घोडिका २ बडवा रोहण देवादिहरोनिभेद ३ विवाहमूर्तिका ।

—चंद्रता, मु, बरो चटवामागस ववुगुह गम् ।

—टप्पा, स पु गाल्-टप्पेद, घोनीलपनम् ।

घोणा, स गी (स) नामा, नासिका, गण बहा । २ शकर अश्व प्रलवमुत्त-लाम्बास्वम् । ३ छिका धुन-आवह बालनरुभेद ।

घोणी, म पु (म गिन्) शूर, बराह, रोमश ।

घोर, वि (स) मयूर, भीषण, भीम २ दुर्गम, गरन निरिद ३ पन्थ, वरंश, ४ गाढ, हृद ५ निवृष्ट, अधम ६ आचन, आचविक ।

—निद्रा, सं खी (सं) गाढनिद्रा, सुनिद्रा ।
घोलपुमाव, सं पु, दे 'टाल्मटोल' ।

घोलना, कि सं (हि घुलना) विद्रु विलो गन् (प्रे) ।

घोलमेल, सं पु (हि घुलना + स मेल >) मिश्रण, ससर्ग, सम्पर्क ।

घोष, सं ॥ (सं) शब्द, नाद, रव, स्वन, ध्वनि (पु) २ गजित, स्तनित ३, आमीर वसति (खी) ४ आमीर, गोप ५ गौड, गोशाला ६ तट ट-डी ७ वाद्यप्रपतभेद (न्या) ।

घोषणा, म खी (स) प्रत्यादन्, शापन, प्रकाशन २ घोष, वण, उल्ही 'न ३ नाद, ध्वनि, शब्द ।

—पत्र, स पु (स व) विवृति (खी), सूचनापत्रम् ।

घोसी, म पु (स घोप >) यन्न, गोप आमीर ।

घ्राण, स पु (सं न) नासिका, नासा, नसा २ आघ्राण, गणग्रहण ३ आघ्राणशक्ति (खी) ।

—दुन्द्रिय, सं खी (म न) दे, 'घ्राण' (१ ३)

ट

ढ, देवनागरीवर्णमात्राया पञ्चमो व्यञ्जनश्च ।

द्वार ।

च

च देवनागरीवर्णमात्राया षष्ठा व्यञ्जनवर्ण, चरार ।

चक्रमण, म पु (स न) चक्रम-आ, परि, त्रमण जगन्म, विहरणम्, विचरणम् । शनै शनै मन्दगत्यावागमनम् ।

चगा, म खी (च) दिष्टिमाप्रकार, चग २ मण रय अक्षर ३ श गीता कीर्तना रगभेद ।

चगा, स खी (स च चैद + गम् >) दे 'चु' (१) ।

—पर चढ़ाना, मु, अनुकूलवृत्ति (ना धा) २ अभिमानिन क्रिया (चु उ अ) ।

चगा वि (स चग) सुभ्य, स्वरय, नीरोम, विरामय २ शोभन, सुदर ३ निर्मल, शुद्ध ।

—करमा, कि स, व्यापे मुच् (प्रे), चम् (प्रे) शमयति ।

मल वि, कुशलित्, नीमजन् २ भद्र, अष्ट ।

चगुल, स पु (हि चो = चार + भगुल)

नल रय नक्षर-र, २ धरण, ग्रहण, हरतग्राह ।

चगोर शी, म खी (स चारिका) स्थानकार करण्ड २ पुट्टकण्डो, पुष्पकर ३ आचन, आवार ४ चमपु, इति (पु) ५ हिटो, होल ।

चगोली, स खी, दे 'चगरी' ।

चंचरीक, सं पु (स) भ्रमर, पृथ्व ।

चचल, वि (स) च, चलाचल, चाल, तरल, लो, प (पा) रिच्य, चाल, २ व्याप्या समा, कु, अद्यान्, अनिर्तित ३ अधीर, अक्षर, चञ्चित, लोलवृद्धि ४ किनोदिन्, छीनापर ।

स पु, वायु २ कामुक ।

चचलता, स खी (स) चापत्य, चाचत्य,

लील्य, चटुलता, तरुणा २ कुचेष्टा छिन,
मलोल्लस, लीलापरता ।

चचला, स स्त्री (सं) लक्ष्मी (स्त्री),
श्रद्धा २ विद्युत् (स्त्री), सौदामिनी । वि,
स्त्री, अशाना, चञ्चिता ।

चचलाहट, सं स्त्री, दे चचलता ।

चंचु, सं स्त्री (सं) चञ्चुका, चञ्चु (स्त्री),
श्रोत ।

चट, वि (सं चण्ड >) चतुर, दक्ष २ धूर्त,
मायाविन् ।

चड, वि (स) कुर, रौद्र (-द्री स्त्री), दारण,
भैरव, (-त्री स्त्री), मोषण, उग्र २ कोपिन्
क्रोधिन्, सरभिन्, अमाभिन् ३ परव प्रसर,
नेत्र, लोचन, घोर ४. कण्ठ, दुर्दमनीय
॥ कठिन, कठोर ।

—चर, सं पु (सं) मूर्ख, चण्डायु ।

—कौशिक, स पु (सं) (१३) मुनि-
नाटकमय, विशेष ।

चटता, सं स्त्री (सं) डटता, भीषणता,
क्रूरता २ तीक्ष्णता, प्रसरता, तीव्रता ।

चडा, सं स्त्री (सं) कद्राणी, चडा, दुर्गा,
२ नायिकाभेद ३ शनपुष्पा, मधुरा । वि
स्त्री (म) निधुरा, कर्कशा, उद्या, कठोरा ।

चडार, सं पु (स) चाटार, मान्य,
दिव्यशक्ति (पु) निषाद, श्वपच च (पु),
पुष्क-श प । वि कट-पाप, कर्मन्
२ दुष्कुलैर्न, क्षीन, जाति वर्ण ।

—चौकडी, सं स्त्री, चण्डलचतुष्प दुष्ट
चतुष्टयम् ।

चडालिन, चडालिनी, चडाणी, स स्त्री
(स चडाली) चाणाली, मानगी, निषादी
२ पादेनी, दुष्टा ।

चडिका, स स्त्री (स) दुर्गा २ विनादशीला
नारी ३ गयनीदेवी ।

चंडी, चडा, स स्त्री (सं) पारंगी २ क्रोधिनी
नारी ३ कलहप्रिया कामिनी ।

चट्ट, स पु (स चट तीक्ष्ण >) अहिपेन
निमित्तमादकद्रव्यभेद, चट्ट (पु) ।

—छाना, सं पु (हि + फा) चट्ट, गृह-शाला ।

—चाज़, सं पु (हि + फा) चट्टप,
चट्ट, पायिन्-सेविन् ।

चट्टल, सं पु (देश) अ(भा)रुद्राज, मारय,
व्यापार ।

चद्र, सं पु (सं चद्र) दे 'चद्र' । २
हिंदीरविविशेष ।

—सुगी, सं स्त्री (सं चद्रमुखी) शशिवदनी,
चद्रानना ।

चद्रै, वि (फा) दे 'कुध' ।

चद्रन, स पु (स पु न) मलयन, श्रीनन्,
गणसार, सुगण, सप्रीति, शीतल, शान्त,
शीतगण । २ चद्रनकाष्ठ ३ चद्रनलेप ।

—राष्ट, रच-नु, चद्रन, रचन पत्रागन् ।

—सफेद, नैऋतिरि, श्वेतचद्रनम् ।

चद्रला, वि पु (हि चाद्र = लोपडी)
रज्ज्वाट, विशेष (-शी स्त्री) ।

चंद्रवा, स पु (हि चद्र) लोच,
वितान आच्छादन, पिधानम् ।

चद्रवा, सं पु (सं चद्रक) कठिन मेवक
२ वज्रवल्गु ३ चद्र मस्त्यभेद ।

चद्रा म पु (फा चद्र) धनमहायना,
आग्निमाहाय २ धनमाग अर्कश ।
२ स्वाश, उदार ।

—चरवा, कि म, अर्कश मग्रह (म् प से) ।

—देना, स्वप्नाश वा (जु उ अ) ।

चंद्रिया, सं स्त्री (हि चांद्र) शार्पशिरो
मग्नक, भय, मुट २ कपाल ल, शिरो स्थि
(न) ३ (अ-य-) रोटिक ।

चदिर, सं पु (स) चद्र सुवास २ तन
द्रिप ३ कर्पूर २, धनसार ।

चद्र, स पु (म) साम, शशाक, शशिन्,
विशु रज्ज्वा निशा शरीरी क्षपा, कर नाव
पति, मृगक, कलानिधि (पु), लौ (पु),
हिम शीत पुत्र सुग, अशु दीप्ति (पु),
इड (पु), चद्रमम् (पु), शृंगर ।
२ तल ३ सुवर्ण ४ कर्पूर ५ 'लक' इति
मर्याद चद्रम्, बहनेयम् ।

वि, आह्लात्, आनन्दप्रद २ सुख ।

—आनन, वि (स) दे 'चद्रमुख' ।

—कला, सं स्त्री (सं) चद्र, रेखा लला ।

—काल, सं पु (सं) चद्र, मणि (पु)-
रत्नचपल ।

—किरण, सं पु (सं) चद्रपाद, शशिकर ।

- ग्रहण, सं पु (सं न), विधु इन्दु-चक्र, ग्रहण ग्रह ग्राम-उपराग ।
 —ग्रहा, स स्त्री (स) दे 'चद्रिका' ।
 —विदु, स पु (स) अनुनासिकचिह्नम् (~) ।
 —भागा, पु स्त्री (स) चद्रभागी, चद्रिका, पवनदधाने नदीविशेष ।
 —मुख, रि (स) चद्रानन, विधु शशि, वदन । (मुखी स्त्री) = चद्रमुखा, चद्र शशि विधु वदना वदनी आनना आननी) ।
 —रे(छे)ला, स स्त्री (स) दे 'चद्रकला' ।
 —रहा, स पु (स) सोमकुलम् ।
 —हाला, स स्त्री, शिरोमूढ, वधनी ।
 —होतर, स पु (स) चद्र, मोलि (पु)-भूषण धर, शिव ।
 —हार, स पु (स) वर्तुलस्वर्णपरुहार ।
 चद्रक, म पु (सं) ३ 'चद्र' २ चद्रिका, कौमुदी ३ कर्पूर २ ४ बहनेन, चद्रिका ५ मय-जम् ।
 चद्रमा, सं पु [स चद्रमम् (पु)] दे 'चद्र' ।
 चद्रहास, स पु (स) अमि, सङ्ग २ रावणलङ्का ।
 चद्रातप, स पु (सं) चन्द्रिका, ज्योत्स्ना कौमुदी २ दे 'चैदवा' ।
 चद्रिका, स स्त्री (स) अयोला, शशि चद्र, प्रभा-काति (स्त्री) कौमुदी, चद्र-आलोक प्रकाश २ चद्रक, बहनेन (३ ४) स्थूल सूक्ष्म, पला ।
 —उत्सव, स पु (स) शरत्पूर्णिमोत्सव ।
 चद्रोदय, म पु (स) चद्र सोम, उदय वक्रम-उद्रमनम् ।
 चपद्, वि (हि चपा) चपक पीत, वर्ण-रग ।
 चपक, स पु (स) (पीषा) चापेय, दीप स्वर्ण दिधर पीत, पुष्प पुष्पक, शीतल, सुमग, मुद्रमोहिन् वनदीप । (फूल) हेमपुष्प, चपन ३ । (म न) कदलीफलभेद ।
 चपा, स पु (म 'चपक' दे) ।
 —चली, स स्त्री, म चपककालिका, चपक कोरक २ बटामणभेद, चपकवन्ती ।
 चपत, वि (स चप्) तिरो अन्तर्, हित, उग्र, गूढ अपमृग ।
 चप्, स पु (म स्त्री) गवपवमय काव्यम् ।
 चनेली, स स्त्री, दे 'चनेली' ।

- चमच, स पु, दे 'चमचा' ।
 चैवर, सं पु (सं चमर) चामरम् ।
 चक्र, सं पु (म चक्र) बृहत्क्षेत्र, महाभूखण्ड ८ २ ग्रामटिका, लघुग्राम ३ रथाग, मण्डल, चक्र ४ पट्ट, पट्टोरिका, भूमिकरग्रहणव्यवस्थापक पत्रभेद ।
 चक्रई, स स्त्री, दे 'चकती' ।
 चक्रई, स स्त्री (हि, चक्र) चक्रको, क्रीटनकभेद । वि, पोल, वतुल ।
 चक्रचौध, स स्त्री, दे 'चक्राचौध' ।
 चक्रचौधना, कि अ, दे 'चुंभियाना' ।
 चक्रछेदी, स स्त्री, दे 'छरूंदर' ।
 चक्रती, सं स्त्री (स चक्रती >) बल-चर्म, खड-खड शक-शकलम् ।
 चक्रल में-लगाना मु, असमय साध् (स्ता प अ) ।
 चक्रता, स पु (स चक्रवर्त >) त्रिकलक क, चर्म, छाट्टी चिह्न । २ दत्तकनम् ।
 —भरना या मारना, मु, दध् (भ्वा प अ) ।
 चक्रनाचूर, वि, (हि चिक्ता + स चूर्ण ली <) सुचूर्णित, शकली चूर्णी, वृत्त भूत, सूक्ष्मलदश कुन २ अस्थित, अति, छात आयुम् ।
 —करना, कि स, चूर्ण (चु) छदश मज (व प, अ)-कुट् (चु आ से) ।
 —होना, कि, अ, अणुश सुट-चूर्ण-मज् (कर्म) ।
 चक्रपरु, वि (चक्र >) चकित, विस्मित २ सभ्रान्त, न्यामूढ ।
 चक्रपकाना, कि अ (हि चक्रपक) दे 'चीकना' ।
 चक्रम(मा)रु, स पु (तु) अग्निप्रावरण (पु) पावकप्रस्तार ।
 चक्रमा, स पु, दे 'भोला' ।
 चक्रराना, कि अ, (म चक्र >) (शीर्ष) अम् (म्ना दि प से), पूर्ण (भ्वा आ से तु प से) २ न्यामूढ (दि प य), आकुली म् ३ चविन (वि) + भू । कि स, चविन (वि) + कृ ।
 चक्रशानी, स स्त्री (फा चावर) सेविका, परिचारिका ।
 चकरी, स स्त्री (स चरी) देवगो, देवण, यत्र चक्र २ चक्री, पट्ट-पट्ट ३ दे 'चक्रई' ।
 चक्रला, स पु (स चर्म >) चर्म

वेद्यावीधी, गणिकादृष्ट ३ दे 'विला' । वि,
विस्तीर्ण, परिणाद्वन् ।

चकलाना, कि-स प्रष्ट विस्तृ (मे०), प्रथ (चु) ।

चकली, सं स्त्री (हि चकला) चक्री दे
'गराडो' २ चक्री, चक्रिका, गोलपट्टिका,
पर्यणो ।

चकलस, सं स्त्री (अनु० चक) कलह,
विवाद २ परिहाम, विनोद, कौतुकम् ।

चकवा, स पु (स चकवाफ) कोक, चक्र,
रथाग-आश्रय नामक, द्वाद्वारिन्, कामिन्,
कामुक ।

चकवी, स स्त्री (हि चकवा) चकवाकी,
कोकी, चक्री, रथागनाम्नी ३ ।

चकाचक, स स्त्री (अनु) दे 'चचाचच' वि,
(स चक् = एति) सम्पक तिष्ठ, परिपूर्ण ।
कि वि, भृश, भूरि प्रचुर (सब गन्ध) ।

चकाचौघ, स स्त्री (स चक् = चमकना,
चौ = चारों तरफ, अथ >) चाकचक्येन
नैत्रंतेज प्रतिपाद्य, अतिशयदीप्त्वाद्दृष्टेरस्यैवम् ।

चकिन्, वि (स) विरिमत, आश्रयान्वित,
विस्मयाकुल, साक्षर्य, विस्मय, उपहत-अन्वित ।
२ सभात, व्यामूढ, व्याकुल, ३ सर्वाङ्क, वस्त ।

चकोटना, कि स, (हि चिकोटी) अद्भुत
प्रण पीड (चु) ।

चकोतरा-त्रा, स पु (स चक >) (वृक्ष)
मधुकर्कटी, मातुलङ्ग, सुगन्धा, सदाफल,
महाजमीर । (फल) मधुकर्कटिक,
मातुलुगम् ३ ।

चकोर, स पु (स) कौमुदीवीचन,
चद्रिकापायिन् ।

चकोरी, स स्त्री (स) चद्रिकापायिनी ।

चक्कर, स पु (स चक) रथाग, प्रष्ट
२ गोल ल वृत्त कलय य ३ वात-अ वृत्त
भ्रम, चारया ४ जल आवर्त्त, अलसुत्तम् ।
५ उभयसमव, विवन्ध ६ समग्र, व्यामोह
७ कृच्छ, सकट ८ कौटिल्य, वक्रव ९
पर्यन्त, वि-आ वर्त्त १० अग्नि घूर्णि (स्त्री),
भ्रामरन् ।

—ताना, मु, परिभ्रम् (स्वा दि प से),
घूर्ण (तु प से) ।

—मारना, मु, विचर-पर्यट (स्वा प से) ।

—में आना, मु, कुच्छे पय (स्वा प से),
सकटे मस्त्र (तु प अ) ।

—में सालना, मु, कुच्छे-सकटे, पद मस्त्र (मे) ।

चक्का, स पु (स चक्र) दे 'चकर' (१, २) ।

३ बृहद्वर्तुलखट-ठ ४ इष्टक प्रस्तर,
राशि (पु) ।

चक्की, स स्त्री (स चकी) यन्त्रपेवणी, दे
'चकरी' (१-२) ३ ज्ञानफलकम् ।

—पीसना, कि स, चक्या पिन् (ह प अ)-
भुद (ह उ अ) घूर्ण (चु) । मु, घोर
अत्यधिक परिभ्रम् (दि प से)-उद्यम्
(स्वा प अ) ।

चक्क, स पु दे 'चाकू' ।

चक्र, स पु (स ग) दे 'चक्कर' (१-४) ।

५ तैलपेवणी ६ कुलाल-कुम्भकार, चक्र पट्ट
७ अक्षभेद ८ गण, समूह ।

—घर, स पु (स)

—घारी स पु (स रिन्) } विष्णु, चक्रभृत् ।

—पाणि, स पु (स)

—वर्ती,—स पु (स रिन्) रामाधिराज,
महलेश्वर, सम्राट् (पु), अधि, राज ईश्वर ।

—वाक, सं पु (स) दे 'चकवा' ।

—वृद्धि, स स्त्री (म) चक्रवाद्भवम् ।

—ग्युह, स स (स) महलाकार सैन्य
सन्निवेश ।

—इस्त, स पु (स) विष्णु ।

चक्राक स पु (स) (मुजादिपु) चक्र,
चिह्न-लक्षणम्-अभिधानम् ।

चक्राकित, वि (स) चक्रचिह्नयुक्त, सचक्र
पिद्ध । स पु वैष्णवसम्प्रदायभेद ।

चक्राकार, स पु (स) गोल, महलाकृति ।

चक्री, स पु (स किन्) चक्र, घर धारिन्
२ विष्णु ३ कुलाल ४ गुप्तचर ५ तैलिक,
तैलिन् ६ सर्प ७ चक्रवाक ८ चक्रवर्तिन् ।

चच्च, स पु [सं चच्चस् (न)] जेज,
नयनम् ।

चलना, कि स (स चवण) आ, स्वाद
(स्वा आ से) चप् (स्वा उ से), रस्
(चु) रस परीम (स्वा आ से), रसनया
स्यस् (तु प अ) ।

स पु, आस्वादनं, चवण, रसन, रंषदशनम् ।

चखाना, कि प्रे, व 'चखना' के प्रे रूप ।

चगलना, कि स (अनु चग > अथवा चवंग
+ गिलन >) धुवा बिना मध् (चु) ।

चचा, सं पु दे 'चाचा' ।

चची, स स्त्री, दे 'चाची' ।

चचेरा, वि (हि चचा) पितृव्यसवधिन् ।

—भाई, स पु, पितृव्यपुत्र, पितृव्यज ।

चचेरी बदिन, स स्त्री, पितृव्यपुत्री, पितृव्यजा ।

चचोड़ना, कि स (अनु) दत्त निपीड्य
आ, चूब (म्वा प से), बलवत् स्नय धे
(म्वा प अ) ।

चट, कि वि (स शदिनि) क्षणन, क्षण
चटपट, ,, निमेष, मात्रेण, सपदि, द्रक्,
चटसे ,, भजसा, क्षणात् सव, एव,
तत्क्षण-गणन ।

—करना, मु, अशेष निगल् (म्वा प से)
२ परद्रव्यमात्मसात् कृ ।

—पट करना, कि अ, त्वर् (म्वा प से),
आशु कृ ।

चटक, स स्त्री (स चटुल >) शोभा, श्री
काति धुति-शोति (स्त्री) ।

—मटक, स स्त्री, प्रसाधन, भलकरण, भजन
२ भावभावना, विलसित, विलास ।

चटक(ल)ना, कि अ (अनु चट) खुद्
(हु प से), दू भज् विद् (कर्म)
वि, दल् (म्वा प से) । स पु, चपेट टिका ।

चटकनी, स स्त्री (अनु चट) कील ल,
भर्ल, तौलकम् ।

चटकाना, कि स (हि चटकना) व
'चटकना' के ॥ रूप २ अगुली खुद् (प्रे) ।

जुतिषा—मु, स्वर्ध दारिद्र्येण वा भ्रम्
(म्वा दि प से) ।

चटकरा वि दे 'चटकीला' २ चपल, चचल ।

चटकीला, वि (हि चटक) मासुर, उज्ज्वल
प्रभावत् २ चित्र, नानावर्ण २ दे 'चटपना' ।

चटनी, स स्त्री (हि चदेना) अक्रेह,
उप-अव, दश, व्यजन, उपस्कर ।

चटपटा, वि (हि चाट) स्वादु, शरत्,
सोत्त, रुच्य, रुचिकर २ तीक्ष्ण तिक्त ।

चट(टो)पटी, स स्त्री (हि चटपट) त्वरा,
तृप्ति (स्त्री), शीघ्रता, शिघ्रता । २ उमुकना
आकुलता ।

चटरनी, स पु (व) चट्टोप्राध्याय, वग्रा
तीयनाक्षणभेद ।

चटवाना, कि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप ।

चटशाल, चटसार-ल, स स्त्री, (हि चट्टा =
चेता + स शाल) शाठशाला, विचालय ।

चटाई, स स्त्री (स कट १) किलिजक,
फिलज, तुण्पूली, पादपाशी, आस्तर ।

चटाक, चटाका-स्ता, स पु (अनु) विरान,
सशब्द, मग स्फोटन, वरुषस्वन, चटाक,
शब्द धनि (पु) ।

चटाचट, स स्त्री (अनु) चटपटा, शब्द
नाद, चञ्चदायित, चटपटाद्, कार-हृति
(स्त्री) कृन्तम् ।

चदना, कि प्रे, व 'चाटना' के प्रे रूप ।

चटुल, वि (स) चचल, चपल, लोल
२ मुरर ।

चटोर रा, वि (हि चाटना) अन्नर, वस्तर,
अत्याहारिन्, बहुभोजिन् २ स्वादरस मित्र
लोतुप, जिह्वालोल ।

चटोरपन, स पु (हि चटोर) वस्मरता,
औदरिकता २ स्वादलोतुपता, जिह्वालौत्वम् ।

चट्टा, स पु (स चट >) छात्र, शिष्य ।

—चट्टा, स पु (हि चट्ट + चट्टा) कीट
नवसमूह ।

एक ही घेरी के चट्ट बड़े, मु समस्वभावा
गुणशीला मानवा ।

चट्टान, स स्त्री (हि चट्टा = चक्का)
शिलेख, स्तूलशिला, शैल, महामस्तर ।

चट्टी, स स्त्री (अनु चटचट) पादत्र,
पादुका, पाद (स्त्री) ।

चट्टी, स स्त्री (हि चौटा) हानि-हृति
(स्त्री) २ दह, अपकार-गुहि हृतिनिष्कृति
(स्त्री) ।

चट्टट्ट, स पु (हि अनु चट) पाषाणमय
वृहद्दू (ल)स्तम् ।

चट्टा, स पु (देश) जयामूल कर्मधि
(पु) विदूषक । वि मरुद्वि, मूर्त ।

चदना, कि, अ (स उत्तन्न) उदि-उषा
(अ प अ), उपरि उद्, गम्, अधि आ रह,
(म्वा प अ), अधिकम् (म्वा प से,
म्वा आ ॥) २ उत्था (म्वा प अ),
समुत्था (म्वा आ ॥) ३ सं, चध् (दि

प से), उप प्रची (कर्म) ४ आक्रम, अभिद्रु-अवस्कद (भ्वा प ज) ५ उत्पल (भ्वा प से), उट्टी (भ्वा आ से) ६ उपहारी-उपायनी, कृ (कर्म), उपहृ निवप् (कर्म) ७ प्रवृत् (भ्वा आ से) । सं पु उदयन, उद्गमन, अधिरोहण, उत्थान, आक्रमण, उद्दयन इ ।

चदने योग्य, वि उदैतल्य, आरोहणीय आक्रमणीय ।

चदने वाला, सं पु उदैत्-अधिरोहृ-अभिद्रावक । चडा हुआ, वि, उदित, उद्गत, अधिरुद्ध, आक्रान्त ।

चड़वाना, कि प्रे, व 'चदना' के प्रे रूप ।

चड़ाई, स स्त्री (हि चदना) उद्गमन, आरोहण २ उद्गम, उदय ३ आरोह ४ आक्रम, अवस्कद ।

चड़ाउतरी, स स्त्री (हि चदना + उतरना) असह्य आरोहणावरोहण ।

चड़ाउपरी, स स्त्री (हि चदना + ऊपर) प्रतिपक्षा, अहपूर्विका ।

चड़ा चढ़ी, स स्त्री (हि चदना) दे 'चडा उपरी' ।

चड़ाना, कि स, व 'चदना' के प्रे रूप ।

चड़ाव, स पु (हि चदना) आरोह, उद्गम, उत्थान २ रुद्धि (स्त्री), उपचय ।

—उतार, स पु आरोहावरोही, उद्गमावगमौ ।

चडावा, स पु (हि चदना) उपहार, उपायन, उत्सर्ग, बल (पु) २ दे 'चडावा' ।

चदैत, स ॥ (हि चदना) आ अधि रोहिर् रोहक-रोहृ ।

चैता, स पु, (हि चदना) ह्य-अथ-आरोह आरोहिन्, मादिन्, गुरगिन् ।

चणक, स पु (म) दे 'चना' ।

चतु शाय, स पु (स न) शरीर, देह, काय, तनु नू (स्त्री)

चतुरग, स पु (स न) अश्वकीणभेद २ चत्वारि सेनागणि (हस्त्यश्वरथपदानय) इति ३ चतुरभिगी सेना । वि, अगचतुष्टयवत् ।

चतुरभिगी, स स्त्री (स) हस्त्यश्वरथपदादि रुषिणी सेना । वि स्त्री, अगचतुष्टयवती ।

चतुर, वि (सं) निपुण, दक्ष, प्रवीण, कुशल, विचक्षण, निशारद २ धीमत्, बुद्धिमत्, प्रष्ट, प्राष्ठ ३ कापटिक-छात्रिक [को (स्त्री)] कितव, धूर्त ।

चतुरता, सं स्त्री (सं) नेपुण्य, दाक्ष्य, कौशल, प्रावीण्य २ बुद्धिमत्त्व, माहता ३ कैतव, कापट्य इ० ।

चतुराई, सं स्त्री, दे 'चतुरता' ।

चतुरानन, स पु (सं) चतुर्मुख, मग्न (पु) ।

चतुर्थ, वि (स) तुर्य, तुरीय ।

चतुर्थी, वि स्त्री (सं) तुर्या, तुरीया २ पक्षस्य तुरीया तिथि ३ दे 'चौथ' ।

चतुर्दिक, स पु, दे 'चतुर्दिश' ।

चतुर्दिश, सं पु (स न) दिक्चतुष्टयम्, चतुर्दिकसमूह । कि वि, चतुर्दिक्षु, सर्वत, समस्त, विश्व, समस्त, सर्वत्र (सप्त मध्य) ।

चतुर्भुज, वि (स) चतुर्बाहु, चतुर्हस्त २ चतुष्कोण, चतुरस्र । स पु (सं) विष्णु २ चतुष्कोण, चतुरस्र-स ३ चतुर्भुज, वर्ग, सम, चतुर्भुज चतुरस्र ।

चतुर्मुख, स ॥ (स) दे 'चतुरानन' । कि वि, सर्वत, परित, समस्त (सप्त मध्य) ।

चतुर्गुण, स पु (स न) युग, चतुष्क चतुष्टयम् ।

चतुर्गुणी, स स्त्री (सं) दे 'चतुर्गुण' ।

चतुर्वर्ग, स पु (सं) चतुर्वर्गकामनोक्षा ।

चतुर्वर्ण, सं पु (स) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्रा, चतुर्वर्ण्य, वर्ण, चतुष्टय चतुष्टयम् ।

चतुष्कोण, वि (स) चतुरस्र, चतुरस्र, चतुर्भुज २ सम, चतुर्भुज-चतुरस्र । स पु (मम-) चतुर्भुज-चतुरस्र ।

चतुष्टय, स पु (स न) चतु सख्या, चतुष्क, चतुर्वस्तुसमूह, चतुष्कम् ।

चतुष्पथ, स पु (॥ पु न) दे 'चराहा' ।

चतुष्पद, स पु तथा वि (सं) दे 'चौपादा' ।

चहर, स स्त्री (का चाहर) शयनाग्निरण शय्याच्छादन, प्रच्छद, पट वस्त्र प्रच्छद उत्तरच्छद २ (धातकां) फलक क, पत्रम् ।

चना, स पु (स चग) हरि, मध मधक मयज, सुमध, दान्मोन्ध, दानिमाध्य, कनुकिन्, वृणचतुक् ।

नार्चो चने चनवाना, सु, अत्यन्त परि-तप्त (प्रे) ।

लाइ का चना, सु, दुष्कर कर्मन् (न) ।

चनाव, स स्त्री (सं चन्द्रभागा) चान्द्र चन्द्र भागा भागी ।

चपस्त्र, स पु (हि चिपकना) कनुक उत्तरीय, भेद ।

चपकना, दे 'चिपकना' ।

चपकलश, स स्त्री (तु) खड्ग अति-कृपण, युद्धम् २ बल्ह, उपद्रव ।

चपटा, वि, दे 'चिपटा' ।

चपडचपड, सं स्त्री (अनु) चपडचपट ध्वनि (पु) ।

चपडा, स पु (हि चपटा) अलक-कक, रा(ला)छा २ लाछा-अलक, पत्र ३ रस्कोट भेद ।

चपट, स पु (स चपट) चपेट टिका, चपट करतल, आयात प्रहार २ क्षति हानि (स्त्री) ।

चपनी, स स्त्री (स चपन = दवाना >) पुट टट्टी, छद, छदन, पिपान २ शराव, वर्धमानक ३ जानुकलवम् ।

चपरास, स स्त्री (फा चप = बाधो + रास = बाधो) • प्रेम्ब, पङ्क पङ्क ।

चपरासी, स पु (हि चपरास) प्रेम्ब, शूय, नियोज्य, विकर, खोलविन् ।

चपल, वि (स) दे 'चचल' (१-४) ५ क्षणिक, अचिररथाविन् ६ शीघ्र आशु कारिन्, अधि लविन् ७ शीघ्र, तुण, क्षिप्र, द्रुत ८ मायाविन्, समाय ९ अनुर, अवसर १० धृष्ट, निर्लज्ज ।

चपलता, स स्त्री (स) दे 'चचलता' (१-२) ३ धृष्टता, पादर्व, वैयायम् ।

चपला, स स्त्री (ल) लक्ष्मी (स्त्री), कमला २ विपुल (स्त्री), चचला ३ जिह्वा ४ पुँक्षली, कुल्ला । वि स्त्री, चचला २ शीघ्रकारिणी ।

चपली, स स्त्री (हि० चपरी) पत्रडा, पत्रात्री ।

चपानी, स स्त्री (स चर्पटी) पाली, पोलिका, रोजी (■) जा ।

चपेट, स स्त्री (स चपेट) दे 'चपन' (१ २) ३ आयात, प्रहार ।

चप्पन, स पु दे 'चपनी' (१) ।

चप्पल, स पु (हि चपटा) वाडू (स्त्री), पाडुका कोशीशी ।

चप्पा, स पु (स चतुष्पाद्-द >) चतुर्षीय तुरंग् तुरीय, प्राग, २ अगुलीचतुष्टयपरिमाण ३ विष्णु (पु स्त्री), वितरिन् (पु) ४ अस्ताय ।

चप्पी, स स्त्री (स चप = दवाना >) स, वाह वाहन वाहना, चरणमेवा ।

चप्पू, सं पु (हि चोपना) नौका नौ, दह, क्षेपणीणि (स्त्री) ।

—मारना, कि स, क्षेपण्या चन्-चह (प्रे) ।

चपवाना, कि प्रे व 'चवाना' के प्रे रूप ।

चवाना, कि स (स चर्वण) चर्वू (भ्वा प से), सदन् (भ्वा प अ), टर्न निधिप् (र प अ) । स पु, चर्वण, दर्न निधिवेण सदश्चनम् ।

चवा चवा कर वान करना, ■, नद सस्वर च वद् (भ्वा प से) ।

चवे को चवाना, पु, पिष्टवेण, चविचर्वणम् ।

चवुतरा, स पु (स चस्वरम् >) वेति (स्त्री)-दिक्का, वितदि (स्त्री) दीं दिक्का, उत्तर स्थली २ दे 'कोतवाली' ।

चवेना, स पु (हि चवाना), भृगु भ्रष्ट, अत्र धान्य, चर्वणम् ।

चवेनी, स स्त्री (हि० चवेना) भृष्टात्रोपहार २ जलपानसामग्री ।

चभक, स पु (अनु) निमज्जन ध्वनि शब्द ।

चमक, स स्त्री (हि चमकना) काति दीप्ति-भुति रुचि (स्त्री), आमा, प्रमा २ आलोक, प्रकाश ३ कदि शोणी, पीडा ।

—दमक, स स्त्री, अतिशय, शोभा शी-कानि दीप्ति-भुति विभूति (स्त्री) ।

—दार, वि उज्ज्वल, भास्वर, भास्वर, अनि महा, तेजस शोभन-दीप्तिमत् प्रभ ।

चमकना, कि अ (स चमकारण) प्रकाश विपुल भाग शुभ्र भाग्य भाग्य ग्लाश (भ्वा आ से), प्र, भा (अ प अ) चरास (अ प से) दीप् (दि आ से), विलम् (भ्वा प से) २ समृद्धि-वाड या (■ प ■), स, च्च (दि तथा र्वा प से) ३ अक रमात् कप्-स्फट् (भ्वा आ मे) सत्रस्त-मश्चकिन् (वि) भू ।

स पु, प्रकाशन, विपोतन, विलसनं, समृद्धि (स्त्री), प्र-उप-चय, सहसा रसदन-कानम् ।

चमकाना, वि प्रे, व 'चमकना' के प्रे रूप ।

चमकारा, सं पु (हि चमक) कानि-दीप्ति

द्युति (स्त्री) २ चाकचक्य, तीव्र, शालोक प्रकाश ।

चमकी, ॥ स्त्री (हि चमक) आपातरमणीय वस्तु (न) ।

चमकीला, वि (हि चमक) दे 'चमकदार' ।

चमकी, स स्त्री (हि चमकना) कुल्या, पुश्लो २ कण्टकलिकारी-कारिणी प्रिया ।

चमचिड़ी, स स्त्री	(स चर्मचर्मा) चर्मचट्टिका, चतुर्त्तिका, ननु नी चर्मपत्रा, म जिनपत्रिका चा मि (स्त्री) ।
चमगा(मी)दह, स पु	
चमगिद्धी, स स्त्री	

चमचम, स स्त्री (देश) चमचमारय मिष्टा जमेद । वि, दे 'चमकदार' ।

चमचमना, कि अ, दे 'चमकना' (१) ।

चमचमाहट, स स्त्री, दे 'चमक' (१-२) ।

चमाच, स पु (स चमस-स) कशवि (स्त्री), खज, खजाका । (एकही का) दाह इत्ताक, तर्तु तर्तु (स्त्री) ।

—भर, कि वि, चमस मात्र परिमाणम् ।

चमचिचट्ट, वि (हि चाम + चिचट्टी) अत्या प्रदिन्, प्रतिनिविष्ट, अभ्याप्रहशील ।

चमका, स पु (स चर्मन् (न)) चन्-रोमभूमि (स्त्री) चच-चा, असुग, परा वरा, छली छी । (मृत प्राणी का) अजिन, इति-द्विति (स्त्री) ।

—उधेदना, कि स, निरसवचीक, त्वच-चर्म अपनी निर्द्व (भ्वा प अ) ।

चमडी, स स्त्री (हि चमडा) दे 'चमडा' ।

चमकार, स पु (स) विरमय, आश्चर्य, अद्भुत चमत्कृति (स्त्री) २ अलौकिक-अति शान्तिप्रदायक-वर्णम् (न) ।

चमकारक, वि (स) आश्चर्य विरमय, अनक उत्पादक, अतिमानुष (बी स्त्री), दिव्य विलक्षण अद्भुत, आश्चर्य, चमत्करित् ।

चमकृत, वि (स) आश्चर्य विरमय, अविश आपन-उपश्रुति विरिमत ।

चमन, स पु (फा) कुसुमावर, पुष्प जन वाट मारिका ।

चमर, स पु (स) चमरगौ (पु) चेतुग, शालिप्रिय, गन्ध, व्यवनिन् च(चा)मरम् ।

चमरस, स पु (॥ चर्मरस >) चर्मपादुका अनिन चरणव्रण, चर्मरस ।

चमरी, स स्त्री (स) चमरगौ, गिरिप्रिया, दीर्घवाला २ च(चा)मर ३ मजरी ।

चमरीट, स पु (हि चमार) शस्ये चर्म कारमाण ।

चमस, स पु (सं पु न) दे 'चमचा' ।

चमार, स पु (स चर्मकार) चर्मकृत्, चर्मर (पु) २ पाद पादुका-वृद्धकार ३ पादुकासवात् (॥) । [चमारी रिन (स्त्री) = चर्मकारी ६]

चमेली, स स्त्री [स चम्पकवेष्टि (स्त्री)] (पौधा) मनोहरा, मनोहा, जाती, मालती, सुकुमार, सुरभि दण, गंधा २ (फूल) जाती मालती, पुष्पम् ।

चमोटा, स पु (हि चाम) धुरतेवनी, चमोटी, स स्त्री चर्मपट्टी ।

चय, स पु (सं) समूह गण, राशि (पु) २ सूरिकाचर, शुद्धपर्वत ॥ दुर्ग ४ प्रसार, यत्र प्र ५ वेदी दिका ६ चरण पाद, पीठ पीठ ७ गृह-मिति, मूल, पीठ ।

चयन, स पु (॥ न) समग्रण, समाहरण, राशी-एकत्र, करणम् ।

चर, स पु (सं) चार, स्पश, प्रविधि (पु) गूढपुरुष २ मंगलमह, कुज ३ खपन ४ कपर्दक ।

वि अस्थिर, जगम, चल २ प्राणिन्, चेतन, सजीव ।

—अचर, वि, चलाचल, अजगम, स्थावरजगम २ अचचेतन, सजीवनिर्जीव, सप्राणिनिप्राण ।

चर, स पु (अनु) वस्त्रादिविदरणध्वनि (पु) चरितिशब्द ।

चरक, स पु (स) पुमिषिदेव २ तत्कृत वैद्यग्रन्थ ३ दे 'चर' (१) । ४ भवग, यात्रिन् ५ मिथुक ।

चरकटा, स ॥ (हि चारा + कारना) दवस पास-कर्तक-छेदक । २ धुद्र, नीच, आत्म ।

चरका, स ॥ (फा चरक) इषावृत्त धुद्र, व्रण व्रण २ हानि (स्त्री) ३ छलम् ।

चरित्रा, स पु (फा चरित्र) तातवचक, चक्र २ आवापनम् ।

—कातना, कि स, सतुन् कृत् (क प से)-
सन् (तु प ज), तानवचक्रचल् भ्रम् (प्रे) ।
चरद्वी, स स्त्री (हि चरदा) द्युचक्र,
चक्री, चक्रिका ३४ दे 'गन्तरी' तथा 'बेलन' ।
चरचर, स (स्त्री) चरचराशब्द,
चरचरायिन २ व्यर्थ अनर्थक, आलाप,
प्रजल्प पत्रम् ।
चरचराहट, स स्त्री, दे 'चरचर' ।
चरट, दे 'खनन' ।
चरण, स पु (स पु न) पाद, पद-द,
'पद् पाद (पु), वि-क्रम, क्रमण, चलन,
अग्नि (पु) । २ चरण, पद (छन्द)
३ चतुर्थी ४ गमन, चलन ५ आधार
६ (घृण-) मक्षण ७ अनुष्ठान ८ विहरण
स्थल ९ सूर्यदि किरण १० क्रम ।
—चिह्न, स पु (स न) पाद पद, मुद्रा
चिह्न लक्षणम् ।
—दासी, स स्त्री (स) भार्या, पत्नी २ उपा
नह (स्त्री), पादुका ।
—सेवा, स स्त्री (सं) परि-उप, चर्वा, शुश्रूषा ।
—छाना, मु, पादयो पद् (भ्वा प से)
चरणौ स्वरू (तु प ज) ।
चरणाभूत, स पु (स न) चरणोदक, पक्षी
दकम् ।
—छेना, मु, चरणाभूत भावम् [भ्वा प से,
आच (वा) मति] ।
चरना, कि स (स चरण) बलतृण दाह
(भ्वा प से)-मक्ष (तु)-मुक् (क
धा ॥), चर् (भ्वा प से) । २ पर्यट्
भ्रम् (भ्वा प से) ।
चरनी, स स्त्री (हि चरना) दे 'नौदि' (१)
२ गो-चर प्रचार ।
चरपट, स पु दे 'चपट' ।
चरपरा, वि (अनु) निक, उष्ण, तीव्र, तीक्ष्ण ।
चरवी, स स्त्री (वा) मास, सार-स्नेह,
वशा, वशा सा, मेदस (न) ।
—की शिष्टी, स स्त्री, (१२) गर्भ-अत्र,
आवेष्टनम् ।
—चड़ना, मु, दे 'मोटा होना' ।

—छाना, मु, मदाप अतिगविन (वि) भू ।
चरम, वि (स) अन्तिम, अन्त्य, परिचय,
अवयव ।
—काल, सं पु (सं) निधन मृत्यु, समय
काल ।
—सोमा, सं स्त्री (स) परिनिष्ठा, परमा
वधि (पु) ।
चरवाई, सं स्त्री (हि चरवाना) पशुचारण
वृत्त्या वेतन २ पशुचारण, गोदायनम् ।
चरवाना, कि प्रे, व 'चरना' के प्रे रूप ।
चरवाहा, सं पु (हि चरना) पशु-गो
चारक पालक पाल रखक ।
चरस, स पु (स चर्मन् >) २ चर्म, द्रोणी
तेचनी २ चर्ममय महा, पुन-कोष ३ गजा
निर्वास, मादकद्रव्यभेद ।
चरसा, स पु (हि चरस) गोमहिषादे चर्मन्
(न), २३ दे 'चरस' (१२) ।
चरसी, स पु (हि चरस) चरस प
पायिन् २ चर्म, सेक सेक (पु) ।
चराई, स स्त्री (हि चरना) चरण, बल
तृण, मक्षण २३ दे 'चरवाई' (१२) ।
चराग, दे 'चिराग' ।
चरागान, स पु (का) दीपौरसव ।
चरमाह, स स्त्री (का) गोमच(चार) पद
संश्लेष, शादल, तृणावृत्तभूमि (स्त्री) ।
चराचर, वि (स) दे 'चर' के नीचे ।
चराना, कि, प्रे (हि चरना) व 'चरना'
के प्रे रूप २ मुह्वच् (प्रे), भिन्नुम् (प्रे) ।
चरिदा, स पु (का) तृणमक्षक यवताद, पशु ।
चरित, स पु (स न) दे 'चरित्र' ।
चरितार्थ, वि (स) कृतार्थ, कृतकृत्य, पूर्ण
मनोरथ, सफल २ उच्यत, योग्य, अनुरूप ।
चरित्र, स पु (स न) आचार, भावरण,
चरित, वृत्त, वृत्ति (स्त्री) चारित्र्य, शील,
सौमन्य २ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री)
३ कार्य, कर्मन् (न), वेदित ॥ जीवन-
चरित चरित्र, जीवनी ।
—नायक, सं पु (स) प्रधानपुरुष, चरित
नायक ।

चरित्रवान्, वि (सं , वत्) सदानार, रिन् ,
आचारवत् ।

चरी, स स्त्री (हिं चरना) वास, गवस,
स, जवस-स, तुगादिकम् ।

चर्च, स पु (अ) दे 'गिरजा' २ सप्रदाय ।

चर्चरी, स स्त्री (स) गीति भेद २ होलि
कोमव ३ करतलध्वनि (पु) ४ आमोद
प्रमोदा ५ वाद्यभेद ।

चर्चा, स स्त्री (स) चर्च, अभिधान,
आगम्यन्, कथन, कीर्तन, निर्यन्, वर्णन
२ वार्ता, आलाप, स, भाषण कथा, कथाप्रसंग
३ किंवदन्ती, जनप्रवाद, ४ लेपन,
अन्यजनम् ।

—करना, क्रि स, समाध (भ्वा अ से),
सवद् (भ्वा प से)

चर्चित, वि (स) अभ्यक्त, लिप्त २ विचारित ।

चर्म, स पु (स चर्मन्) दे 'चमडा' ।

—कार, स पु (स) दे 'चमार' ।

—दड पु पु (स) दे 'चाडुङ्' ।

चर्मी, वि (स चर्मिन्) चर्म, मय निर्मित
मन्थिन्, चर्मण्ड । स पु चर्मधारि फलकभृद्
योष ।

चर्च, वि (स) गमनीय, गन्तव्य (स्थानादि)
२ आचरणीय, करणीय ।

चर्च्य, स स्त्री (स) कुर्यानुष्ठान, कर्त्त-यपालन
२ चलन, गमन, ३ आचार, आचरण
४ सेवा ५ आजीविका, वृत्ति (स्त्री) ।

चर्चाना, क्रि अ (भ्रु) चरचरायते (ना भा)
चरचरशब्द कृ २ तप (कर्म), व्यध् (भ्वा
आ ङि) ३ अत्यन्त अभिलष् (भ्वा उ से) ।

चर्वण, सं पु (स अ) सदशन, दत्त निधे
यण २ चयपदार्थ ३ दे 'चर्वेना' ।

चर्वणा, स स्त्री (स) चर्वण, दन्त निषेधण,
सदशनम् २ रसास्वादन, रमानुभूति (स्त्री)
३ चर्वण दत्त-रद ।

चर्वित, वि (स) दन्तनिषिष्ट, सदृष्ट ।

चर्व्य, वि (स) चर्वणीय, दन्त निषेधणीय ।

ल पु (स न) गृह, अन्न धायम् ।

चर्स, स पु, दे 'चरस' ।

चल, वि (स) चर, चरिष्णु, जगम, गमन
शील २ चंचल, अस्थिर, अवीर । स पु,
शिव २ विष्णु ३ पारद, रस ।

—चलाव, स पु, यात्रा, प्रस्थान, २ महा
प्रस्थान, मृत्यु (पु) ।

—चिच, वि (स) लोल-अस्थिर चंचल,
गति-बुद्धि विच ।

—विचल, वि (स) अन्यवस्थित, अक्रम ।

चलता, वि (हिं चलना) चलद्-गच्छद्
चरत् (श्रवत) गतिमत् २ प्रचलित, सर्व
समत ३ समर्थ, शक्तिमत् ४ व्यवहारकुशल,
कार्यषड् । [चलती (स्त्री) = चलती, प्र-
चलित इ] ।

चलती, स स्त्री (हिं चलना) प्रभाव,
अधिकार ।

चलन, स पु (स चलन) गति (स्त्री),
गमन, यान, प्रस्थान २ रीति (स्त्री), क्रम,
अनुसार ३ व्यवहार, उपयोग, प्रचार ।

—सार, वि निर, स्थायिन्, दीर्घ चिर, काल
स्थायिन् २ प्रचलित (रि) त ।

चलना, क्रि अ (सं चलन्) चल-चर् ब्रज
(भ्वा प से), याह (भ्वा प अ), गम्,
२ सक्रिय-सचेष्ट-संगतिक (वि) भू, स्फु
(तु प से), कप् (भ्वा आ से)
३ सुसप् (भ्वा प अ) ४ (पदभ्यां
पादाभ्यां) चल-चर्-गम् या, परि क्तम् (भ्वा
प से, भ्वा आ अ) ५ प्र, वह् (भ्वा
उ अ), प्र, लु (भ्वा प अ) ६ वा (अ
प अ) वह ७ प्रवृत् (भ्वा आ से),
स्था (भ्वा प अ) ८ उपयुन्-व्यवह
(कर्म) ९ लुङ्हायते (ना भा), दिवद्
(भ्वा आ ङि) १० सकलोभू, कृतार्थ
कृतकृत्य (वि) भू । सं प, चलन, चरण,
गमन, प्रस्थान, स्फुरण वहन इ ।

चलने वाला, स पु, चलित्-गत् यात् (पु) इ ।
चल पन्ना, मु, प्र, स्था (भ्वा आ अ),
चल-या ।

चल बसना, मु, गृ (तु आ अ), पचव या ।

चले चलना, मु चल-गम् ।

चलमी, ङ स्त्री, दे 'छलनी' ।

चलवाना, क्रि प्रे, व 'चलना' के प्रे रूप ।

चला, स स्त्री (स) पृथिवी २ दामिनी
३ लक्ष्मी (स्त्री) ।

चलाङ्, वि (हिं चलना) दीर्घ चिर,
कालस्थायिन्, दृढ, स्थिर ।

चलाचल, वि (सं) चपल, चंचल, लोच
२ जडचेतन ३ स्थावरजगम ।

चलाचली, स स्त्री (हि, चलना) प्रस्थान
प्रयाण-त्वा-सभ्रम २ प्रस्थान, प्रयाण, भ्रम,
दान गम ३ प्रस्थान, काल समय ४ प्रया
णोपकरणम् ।

च(चा)लान, सं स्त्री पु (हि चलना)
प्रचलन, प्रस्थान, प्रयाण, भ्रम, दान गम
गमन २ प्रचालन, प्रस्थापन, प्रवणणा, प्रया
ण ३ अभियोजन, अभियुक्त अभिप्रेत
प्रवणम् ।

चलाना, कि स, व 'चलना' के प्रे रूप ।
१ (गोली आदि) लोह, गोलान् गुलिका प्रक्षिप्
विसृज् (तु प अ) ३ प्रारम्भ (भ्वा आ
अ), प्रवृत्ति (प्रे) ।

चलायमान, वि (हि चलना) चलत्
गच्छत्-सर्पत् (शतृत्) २ चल, भ्रमिषत् ।

चलाय, स पु (हि चलना) प्रस्थान, प्रयाण
२ यात्रा ३ रीति (स्त्री), क्रम ।

चलित, वि (सं) दे 'चलायमान' (१-२)
३ प्रचलित ।

चवर्णी, सं स्त्री [हि चौ (= चार) + भाजा]
चतुर्भागी, दृश्य ।

चवर्ग, सं पु (सं) चकारादय एचवर्णा ।

चवाई, स पु (हि औ + वाई = ह्वा)
निदक, भ्रम परि, वादक २ पिशुन, कर्ण
जप ।

चवालीस, वि (स चतुश्चत्वारिंशत्) । स पु
वक्ता सख्या, तदङ्की (४४) च ।

चवालीसवा, वि, (हि चवालीस) चतुश्च
त्वारिंशत्तम (मी मन्) ।

चम्म, स्त्री (फा) नेत्र, नयनम् ।

—दीद, वि (फा) दृष्ट, अवलोकित, प्रवक्ष्य ।

—दीद गवाह, स पु (फा) प्रत्यक्ष-साक्षिन्
दक्षिन् प्रयक्षिन् देव्य ।

चइभा, सं पु (फा) दे 'चैनक' २ उत्त,
निर्ग, प्रसवण, सोनस् (न) ३ कुष्ठद,
नदी सरित् (स्त्री) ।

चपक, सं स्त्री (सं पु न) मध्यपानपात्रम्,
अनुत्प्रेण, सरव, गन्धर्व २ मधु (न) ।

चपण, स पु (सं न) मद्यण, सोदनम्
२ इतर्न, मारणम् ।

चसक, स स्त्री (देश) दे 'कमक' ।

चसकना, कि अ दे 'कसकना' ।

चसका, स पु (सं चषक >) भा, स्वाद,
रस, प्रवृत्ति (स्त्री) अभि, रुचि (स्त्री) ।
बुरा—, व्यसनम् ।

चरणी, वि (फा) लग्न, सखिष्ट ।

चहक, स्त्री (हि चहकना) दूजन,
धूषित, कलरव, चुकार, रग, विरक्त विराव ।

चहकना, कि अ (अनु) कुञ् (भ्वा प
से), विह (अ प से) ।

चहचहा, सं पु, दे 'चहक' ।

चहचहाना, कि अ (अनु) दे 'चहकना' ।

चहचहाहट, सं स्त्री दे 'चहक' ।

चहचहा, स पु (फा चाह = कृप + हि
वधा) कृपक, जल, कुट भाशय ।

चहल, स स्त्री (अनु चहल) आनन्दोत्सव ।

चहलकदमी, सं स्त्री (हि चहल + फा
कदम) विचरण, विहार, परि, क्रमण भ्रमण
भटनम् ।

चहल पहल, सं स्त्री (अनु) आनन्द,
उत्सव, उल्लास, प्र मोद हर्ष ।

चहारदीवारी, सं स्त्री दे 'चारदीवारी' ।

चौई, वि (देश चई = चक्र नाति) अपह
रणाश्ल, चौर्यवृत्ति । धूर्त, छलिन ।

चौचक्य, स पु (सं न) दे 'चचकता' ।

चौटा, सं पु (अनु चट) दे 'चपत' ।

चौडाल, स्त्री पु (स) दे 'चडाल' ।

चौडाली, स स्त्री (स) दे 'चडाली' ।

चौद, स पु (स्त्री चद) दे 'चद' २ चन्द्र
कलाकार आभूषणभेद, •चद्र ३ मास
४ दृश्य छा, दूर-य । स्त्री, शिरोर्म,
कपालक्षिप्त २ शिरोस्थि (न),
कपाल लम् ।

—मारी, स पु, दृश्यवेध, उर-वर्णभेद ।

चौदना, स पु (हि चौद) आभोक, प्रकाश
२ दे 'चदिका' ।

—चाय, स पु पूर्वैश्च गुदसित, पद्य ।

चौदनी, स्त्री (हि चौदना) दे
'चदिका' २ श्वेतसित, प्रच्छद । ३ गुदो
द्योव ४ तगरान्य पुष्पम् ।

—चौक, स पु (हि + स चतुष्क) मुख्य
मार्ग, प्रधानद्वार, २ दिल्लीनगरस्य प्रधान
द्वार, • चदिकाचतुष्कम् ।

—रात, स स्त्री, ज्योतिष्मती, ज्योत्स्नी ।

चौदी, स स्त्री, (हि चौद) रजत, रूप्य, दुवर्ण, श्वेत, कलधौतम् । २ घन, वित्त ३ आधिक्यम् ४ दे 'चौद', (स स्त्री) ।

—का, वि, रात्र-रौप्य [स्त्री, ज्यो (स्त्री)] रजत-रूप्य, निर्मित-रचित, रजन ।

—सा, वि, रूप्योपम, रजतवर्ण, अतिधवल ।

—का जूता, सु, दे 'पूस' ।

चौद, वि (स) चौदमस [स्त्री (स्त्री)] देव [स्त्री (स्त्री)] चद्र, सोम ।

—मास, स पु (स) चद्र सोम-विषु, मास ।

—वसर, स पु (स) सोम्य चाद्रिक चाद्र मस, वर्ष अन्ध-हापन ।

चाद्रमस, वि (स) चाद्र, चाद्रिक सौम्य, सौमिक (स्त्री चाद्री, चाद्रिकी, सौम्या, सौमिकी) ।

चाद्रायण, स पु (स न) जनभेद, इदमन् ।

चौप, स स्त्री (हि चपना) नि, पोउन, निर्वास, अतिमार २ प्ररण-गा, प्रवोदना ३ लोदनादी-आयस, लालक ४ चरण पाद, शब्द ।

चौपना, कि स दे 'दशाना' ।

चौप्य चाप्य चौप्य चौप्य, स स्त्री (अनु) प्रलाप, प्रलपित, प्रवत्य पित, बाल, आलाप माणम् ।

चाक, स पु (फा) विदर, रश्म, भेद ।

—करना, कि स. विदू (प्रे), छिद्र (र प अ) ।

चाक, स पु (अ) खरी, खटिका, कठिनी ।

चाक, वि (तु) सबल, स्वस्थ, दृढतनु ।

—चौवद, वि, दृष्टपुत्र, पुष्टाग [स्त्री (स्त्री)] २ अतद्र, क्षिप्रकारिन्, लघु ।

चाक स पु (स चक्र) कुलल-कुम्भकार चक्रि-चक्र २ रयाग, मडल इ दे 'गडारी ४ पशुचक्र, पेशणीपाषाण ५ शाग-नी ।

चाकचक्र, वि (तु चाक) सुदृढ, सुरक्षित, दुग्म ।

चाकचक्र, स स्त्री (स न) आमा, प्रमा, दृति कान्ति (स्त्री) २ सौन्दर्य, शोभा ।

चाकना, कि स (हि चाक) रेखाभिः परिवृ परिवेष्ट (प्रे)

चाकर, स पु (फा) किकर, दास, सेवक ।

चाकरानी, सं स्त्री (फा चाकर) दासी, सेविका ।

चाकरी, स स्त्री (फा चाकर) सेवा, परिचर्या ।

चाकसू, स पु (स चक्षुष्या) कुलाली, (अरण्य) कुलत्थिका, लोचनहिता, दूक प्रसादा । २ चक्षुष्यादीमन् ।

चाक्री, स स्त्री (हि चाक) दे 'चक्री' ।

चाकू, स पु (फा) छुरिका, कृपाणिका अस्ति, पुत्रिका, धेनुका, शस्त्री, शलिका ।

चाक्षुप, वि (स) नेत्र, सवधिन् विषयक २ चक्षुर-नेत्र, ग्राह्य ।

चाचर, स पु (स चर्चरी) चर्चरिका, चाचरि, स स्त्री (राग-गीति, भेद २ होलि कोत्सव ३ आमोदप्रमोदा ४ उपद्रव, शोभ, कल्ह ।

चाचा, स पु (स तात >) पितृय, पितृ सोदर २ (छोटा) सुनतान ।

चाची, स स्त्री (हि चाचा) पितृया, पितृन्यपरनी ।

चाट, स स्त्री (हि चाटना) स्वादलोपना, रसलालसा २ दे 'वसका' ३ लास्ता, वस्त्राभिलाष ४ दे 'आदत' ५ अव-उप, दश, व्यवनम् ।

—लेना, दे 'चाटना' ।

चाटना, कि स (अनु चण्ट) अव-आ परि-स, लिह् (अ उ अ) २ प्रस-ल्लत् (श्वा आ से) ।

चागी, स स्त्री (देश) मयनी, गारी, दधि मयनपावम् ।

चाटु, स पु (सं पु न,) चाटुकि (स्त्री), चाटुवाह, प्रिय मधुर-वचन, मिथ्या, प्रशसा संस्तवा-स्तव-स्तुति (स्त्री), उपलालम् ।

—कार, स पु (स) मिथ्याप्रशंसक, चाटु वादिन् ।

—कारी, स स्त्री (स चाटकार >) चाटु वादिन्, सात्ववादित्व, दे 'चाटु' ।

चाणक्य, स पु (स) कौटिल्य, विष्णुपुत्र, द्रोणि, अनुल, चद्रगुप्तनौर्यरामात्म्य, चणकात्मज ।

चातक, स पु (स) मैथनोदन, गोपक, स्तोकक, सा(श)रग ।

चानकानन्दन, स ॥ (स) मेघ, जलद,
वारिद २ प्रावृष (स्त्री) मेघायम,
वर्णकाल ।

चातुरी, स स्त्री (स) दे 'चतुरता' ।

चातुर्य, स ॥ (म न) दे 'चतुरता' ।

चादर, स स्त्री (फा) दे 'चदर' ।

चाप, स पु (स) धनुष् (न), इषास
२ अर्द्धवृत्तम् (गणित) ।

चाप, स स्त्री दे 'चाप' (१, ४) ।

चापट, स स्त्री (स चर्पट >) कठिन
कोकस भूमि (स्त्री) । वि, समतल सपाट ।

चापना, कि स, दे 'दवाना' ।

चापलम्, स पु (फा) दे 'चाडुकार' ।

चापलूसी, स स्त्री (फा) दे 'चाडुकारी' ।

चाबाना, कि स, दे 'चवाना' ।

चाबी भी, स स्त्री (हि चाप - दबाव)
मःपारणी, कुचिका, तालिका, ताछी, कुचिका,
भकुट, उझाटक ।

—चैना, कि स, कुचिका आ परि वृत् (प्रे)
कुचकुच (भा प से) ।

चाबुक, स पु (फा) अश्वनाटनी कशा पा,
प्रतिष्कश २, प्रतौद ।

—मारना, कि स कशपा तड जुद दड (जु) ।

—सवार, स पु, वागिबिजेत (पु), अश्व
शिक्षक ।

चाम, स पु [स चर्मन् (न)] दे 'चमदा' ।

चामर, स पु (स पु न) चमर, चामरा री ।

चामीकर, स पु (स न) सुवर्ण २ धुलार ।

चाय, स स्त्री (चीनी चा), चा, चविका ।

—पानी, पु स्त्री जलपान, च्वादान, अरुण
लोक आहार कश्यवर्त ।

चाद, न (स चतुर) [सदा बहु चत्वार
(पु) चत्स (स्त्री) चत्वारि (न)] ।
२ अनेक बहु ३ कतिपय । स पु, उक्ता
मरया तदुपको अड (४) च ।

—रा समूह, चतुष्टय यी, चतुष्चम् ।

—कोना, वि चतुष्कोण, चतुरस्र म ।

—खाना, वि चित्र, वसित । स पु, चित्र
चित्रित वस्त्रम् ।

—गुना, वि, चतुर्गुण पित ।

—दीवारी, स स्त्री, नष्ट प्र, वरण, प्राकार ।

—प्रकार से, कि वि, चतुर्धा, प्रकारचतुष्टयेन ।

—बार, कि वि, चतु (अन्य), चतुर्वारम् ।

—औंस, मु समागम, समिलनम् ।

—आदमी, मु, जन ना, लोक का ।

—दिन की चौदनी, मु क्षणिकमुसम्, नभरा
नन्द ।

चारज, स ॥ (अ चार्ज) कार्यभार, उत्तर
दायित्व, २ रक्षण, अवेशा ।

चारजामा, स पु (फा) दे 'जोन' ।

चारण, स पु (स) च (व) दिन्, मागध,
वैतालिक, स्तुतिपाठक, सस्तावक ।

चारपाई, स स्त्री (स चतुष्पाद >) छटना,
मचिका, पर्यटिका ।

—पर पड़ना, मु, व्याधित-रोगग्रस्त (वि)
भू ।

चारवाक, स पु (स चार्वाक) अनीश्वर
वादी भाचार्यविशेष ।

चारा, सं पु (हि चरना) दे 'चरी' ।

चारा, स पु (फा) उपचार उपाय, प्रति
(ती) कार ।

—जोई, स स्त्री (फा) अभियोग, व्यवहार ।

—जोई करना, कि स, राजकुले निविद
(जे), अभियुज (ह आ अ जु) ।

चारित्र, स पु (स न) चारित्र्यम्, चरित्रम्,
वृत्त, चरितम्, दे 'चरित्र' ।

चाक, वि (स) सुदर, मनो-हर रम, रुचिकर ।

चारों तरफ, कि वि, चतुर्दिश, समताद,
समतत, परित, सर्वत्र ।

चाल, स स्त्री (स चाल >) गमन, चलन,
स्पन्दन, स्फुरण, सरण २ प्र, गति (स्त्री),
चार, गमनप्रकार ३ भाषार, व्यवहार
४ उपाय, युक्ति (स्त्री) ५ छल, कपट
६ विधि (पु), प्रकार ७ रीति (स्त्री),
संप्रदाय ८ पर्वार, वार, परिश्रुति (स्त्री) ।

—चलन, स पु, चरित्र, आचरण, वृत्त,
आचार ।

—ढाल, स स्त्री, आचार, चरितम् ।

—चाज़, वि (हि + फा) मायाविन्, वाप
टिक ।

—चाज़ी, स स्त्री, कपट, माया, बचन ना ।

—चलना, मु, वच् (जु), च्यामुद् (प्रे) ।

—में खाना, मु, वच्-व्यामुद्-विप्रम् (कर्म) ।

चालना, कि स, दे 'छानना' ।

चालनी, स स्त्री (स) दे 'छलनी' ।

चाला, स ॥ (स चाल >) प्रस्थान, गमन
२ यात्रानुहर्तृ नवोदाया प्रथमवार पतिगृहे
तत पितृगृहे वा गमनम् ।

चालाक, वि (फा) धूर्त, मायिक २ निपुण,
दक्ष ।

चालाकी, स स्त्री (फा) धूर्तता, कापट्य
२ नैपुण्य, चातुर्यम् ।

चालान, स पु दे, 'चरन' ।

चालीस, वि (स चत्वारिंशत्) । स पु-
उत्ता सरदा, तद्वेषोपावसौ (४०) च ।

चालीसवी, वि (हिं चालीस) चत्वारिंश
[शी (स्त्री)] चत्वारिंशत्तम [वी (स्त्री)] ।

चालीसा, सं पु (हिं चालीस) चत्वारिं
शत्तमवर्षसमूह २ चत्वारिंशद् दिवसा
वर्षाणि वा ३ चत्वारिंशत्पद्यात्मवग्रन्थ ।

चाव, स पु (हिं चाव) अभिलाष, लालसा,
उन्नेच्छा २ अनुराग, प्रेमन् (पु न)
३ अभिरुचि (स्त्री) ४ उासाह ५ लालनम् ।

—चोचला, स पु, उप, लालन, परिष्कार ।

—निकालना, मु, अभिलाष इच्छा पूर- (जु)-
निर्हृत् (प्रे)

चावही, स स्त्री दे 'पटाव' ।

चावल, स पु (स तडुल) धान्यास्थि (न),
धान्य शालि, सार दे 'धान', 'मात' २
शुभादा अष्टमभागमित तोन ।

—का धोवन, स पु, तण्डुलोदकम्, तण्डु
लोदकम् ।

चाशानी, स स्त्री (फा) शुद्ध-सिता शर्करा,
रस २ दे 'चतका' ।

चाह, स स्त्री (स इच्छा) दे 'चाव' (१२) ।
३ भादर, प्रतिष्ठा ४ आवश्यकता, प्रयो
जनम् ।

चाहता, वि (हिं चाह) दयित, प्रिय, कात ।

चाहना, क्रि स (हिं चाह) अभिलष (भ्वा
दि प से), इप् (जु प से), इच्छ्-कम्
(भ्वा आ से, कामयने), (सञ्चत या
'-काम' से मी अनुवाद करते हैं, उ नह जाना
चाहता है - स गतुकाम अथवा विगमिषति)
२ लिह (दि प से), अनुरज् (कर्म),
अनुरागवद्-मोहित (वि) भू ३ प्र-यत्
(भ्वा आ से), ४ दे 'हूदना' ।

स स्त्री, अभिलाष, इच्छा, अनुराग, स्नेह,
आवश्यकता इ ।

चाहनेयोग्य, वि, अभिलषितव्य, स्वर्णीय,
दयित, प्रिय इ ।

चाहनेवाला, वि, इच्छु-च्छुक, अभिलाषिन्,
अनुरागिन्, स्नेहिन् ।

चाहिष्, अव्य (हिं-चाहना) उचिन,
उपयुक्त, न्याय्य । (त-य, अनीय, पयत् आदि
से मी इसका अनुवाद करते हैं, उ करना
चाहिष्-कर्तव्य करणीय, कार्य इ) ।

चाही, वि (फा चाह) कूप, सिक सखिन् ।

चाहे, अव्य (इह चाहना) यथाकाम, यथा
भिलाष, स्वैर, स्वच्छद २ वा, अपवा, यद्वा ।

चिउँटा, स पु (हिं चिमटना) पिपीलक,
पीलक ।

चिउँटी, स स्त्री (हिं चिउँटा) (पु) पिपील,
पीलक, पिपीलिक । [पिपीली, पिपीलका
(स्त्री)] ।

—की चाल, मु, मद-मपर, गति (स्त्री) ।

—के पर निकलना, मु, आसन्नमृत्यु, निधनी
मृत्यु ।

चिंघाड, सं स्त्री (स चीत्कार) वृद्धित
२ महानाद, दुमुलध्वनि (पु) ।

चिंघाडना, क्रि अ (हिं चिंघाड) वृह-
(भ्वा प से), २ उच्चै नद् (भ्वा प से) ।

चिंघा, स स्त्री (स) अभिलका, चित्तिपि(धी)-
का २ अभिलका चिंघा, फलम् ३ रक्ता, शुजा ।

चिंतक, वि (स) विचारक, विवेचक, ध्यातु ।
स पु (स) तत्त्वज्ञ, दार्शनिक ।

चिंतन, स पु (स न) चिन्ता, ध्यान,
स्मरण २ विचारण, विवेचनम् ।

चिन्तनीय, वि (हिं) चिन्ताग्रह, उद्देगकर
(-री स्त्री), २ ध्येय, भावनीय ३ विचार्य,
विवेचनीय ।

चिन्ता, स स्त्री (स) उद्देग, औत्सुक्य,
व्यग्रता, रणरणक, आकुलता, उत्तर्लिका,
मनस्ताप २ आ, ध्यान चिन्तनम् ।

—आतुर, वि (स) सञ्चिन्, चिन्तित, चिन्ता
मग्न, उद्विग्न, व्याकुल ।

—जनक, वि, चिन्ता-आकुलता, प्रद-उद्भावक ।

—मणि, स पु (स) स्वर्गमणि ।

चितित, वि (स) दे 'चितातुर' २ चिच
रित, ध्यात ।

चिरय, वि (स) दे 'चिनीय' (२३)

चिद्दी, स स्त्री (देश) खट, लव ।

चिपात्री, सं पु (अ) अफीकामहाद्वीपरय
वनमानुषभेद ।

चिक, स स्त्री (तु चिक) तिरस्कारिणी,
प्रतिस्तीरा, व्यवधा, व्यवधान, आवरण,
मासिक, विशसिष्ट, शो (सो) निक ।

चिक, स पु (अ चेक) देवादेश ।

चिक, स स्त्री (अनु) आकरिमकी कटि
व्याध ।

चिकन, स पु (फा) वामिकवस्त्रभेद,
चिकणम् ।

चिकना, वि (स चिकण) तैलमय (-यो
स्त्री), तैलाक, तैल, युक्त वस्त्र २ शिख,
मसण, शृण ३ परिष्कृत, सस्कृत ४ विष्टिल,
मेहुर ५ तम, सपाट । [चिकनी (स्त्री)
चिकणा ३] ।

—घडा, स पु, निर्लज्ज अपत्रप, मनुष्य ।

—मिटी, स स्त्री, श्रुतिका, मृद (स्त्री) ।

—नुपदी धातें करना, मु, चाडुवादै वच्
(नु)-प्रतृ (मे) ।

चिकनाई, स स्त्री (हि चिकना) चिकणता,
स्निग्धता, शृणगा २ समता, सपाटता
३ घृतादय स्निग्धपदार्था ।

चिकनापन, सं पु } (हि चिकना) दे
चिकनाहट म स्त्री } चिकनाह (१२) ।

चिकिरसक, सं पु (स) वैष, पक, रोग,
हृष्टहारिन् (पु), अगदवार, मिषत् (पु) ।

चिकिरसा, स स्त्री (स) औषध, उपचार,
उपक्रम, रोगप्रतीकार २ वैषक ३ औषध,
भेषजम् ।

चिकित्सालय, स पु (स) आनुरालय ।

चिकुटी, स स्त्री, दे 'चुटकी' ।

चिचुर, स पु (स) वैज्ञ, मूर्ख, शिरसिज
२ पर्वत ३ बाह्यमार्जार, दे 'गिल्हरी' ।

चिच्छण, वि (स) दे 'चिकना' ।

चिचुरी, स स्त्री (स चिकुर >), 'गिल्हरी' ।

चिचड़ी, स स्त्री (देश) पशुयुक्ता, वीटभेद ।

चिचिदा, स स्त्री (स चिचिद) अक्षिपटा,
दीपकला, मुदीर्ष, गृहदूतक ।

चिट, स स्त्री (स चित्र >) पत्रखट्ट २
वस्त्रकल सम् ।

—मचीस, स पु (हि + फा) लेपक, काय
स्थ, लिपिकर ।

चिटकना, कि अ (अनु) स्फुट (तु प
सु) दृग्मज्जिद् (कर्म) २ सचिदचिटशब्द
ज्वल् (भवा प से) ३ दे 'लोसना' ।

चिटकाना, कि स, व 'चिटकना' के प्रेर रूप ।

चिट्टा, वि (स सित) इवेत, शुद्ध, धवल
२ दे 'रुपया' ।

चिट्टा, सं पु (हि चिन्) आयस्य देवा
देय, पजि (स्त्री)-पजी पजिका, दे 'बही
खाना' २ व्यवसूची ३ सूची ४ लाभालाभ
ज्ञानिनाभ, पत्रम् ।

बच्चा—, स पु, शुद्ध युक्त, वृत्तात् ।

चिट्टी, स स्त्री (हि चिट्टा), (तदेश-)
पत्र, लख रय २ लिखित पत्रखट्ट ३ प्रमा
णपत्र ४ ५ आद्या निमज्ज, पत्रम् ।

—पत्री, स स्त्री, पत्रव्यहार, पत्र, विनिमय
सहाय ।

—रसो, स पु (हि + फा) पत्रवाह इक,
लेखहार रक ।

चिद्, स स्त्री दे 'चिद' ।

चिदचिद्, वि (हि चिदचिदाना) शीघ्र
कोपिन्, सुलभकोप, कोपन, कोपन ।

चिदचिदाना, कि अ (अनु) शब्द कुप्
रूप (दि प से) -कृष (दि प अ),
सतपृष्टिश् (कर्म) ।

चिदचिदाहट, स स्त्री (हि चिदचिदाना)
सुलभकोपता, दुर्मेनायित, कोपनता ।

चिदवा, स पु (स चिपिद) चिपन्, वृथुक,
चिपि (पु) ट्ट रक ।

चिदा, स पु (स चटक) कल्बिक प,
गृहनीट, चित्रपृष्ठ, कामुक ।

चिदिपा, स स्त्री (हि चिदा) पक्षिन्, रण,
२ वीलापपरभेद ३ दे 'चिदी' ।

—घर, स पु, क्त्वाणार, माणिद्याला २ पक्षि
शाला, पञ्जरम् ।

चिदी, स स्त्री (हि चिदा) चट(टि)त्रा,
चटवक्त्रा, कल्बिकी-नी २ ३ दे 'चिदिपा'
(१२) ।

—वा बच्चा, सं पु, चाटवैर ।

—की यन्त्रो, सं स्त्री, नयका ।
 —मार, स पुं, जालिक, शाकुनिक, लुब्धक,
 पक्षिप्रादिक ।
 चिद, स स्त्री (हि चिदचिदाना) घृणा,
 अरुचि (स्त्री), जुगुप्सा, विद्वेष ।
 चिदना, कि अ, दे 'चिदचिदाना' ।
 चिदाना, कि स, च 'चिदचिदाना' के प्रे रूप ।
 चिन्, स पुं (स चित्त) मानसम् ।
 —चोर, स पु, मनोहर चित्ताकर्षक
 ० प्रिय, दयित, वाग ।
 —जना या लगाना, सु, क्वदित (वि) भू,
 अवधा (जु उ अ) ।
 —स उत्तरना, सु, चिन् (कर्म) द 'भूजना' ।
 चिन्, वि (स चिन् >) उत्थान, उत्थान
 अववृद्ध, दाय दायिन् ।
 —करना, सु, (शब्द मत्तनुद) अववृद्धादिनि
 कृ विजि (स्वा आ अ) ।
 —होना, सु, दृष्टि (स्वा प से) ।
 चिन्, वि (स >) उत्थान, ऊर्ध्वास्यदशयित ।
 चित्तस्तरा, रि (स चित्त + कर्तुर >) चित्र,
 कर्तुर, चित्रविचित्र, कर्तुरित, चित्रित, शबल,
 चित्रांग (नी स्त्री) ।
 चित्तना, रि दे 'चित्तस्तरा' ।
 चित्तयन, स स्त्री (हि चेतना) दृक् नयन
 दृष्टि, पात, भावोचित, वीक्षित, २ वटापु,
 अपांगदृष्टि (स्त्री), नयनापांग सावि, विला
 कितम् ।
 चित्ता, स स्त्री (स) चित्ता, चित्ति (स्त्री),
 चित्त, चेत्य, चित्ताचूर्क, वाद्यमठी ।
 —भूमि, स स्त्री (स) चित्तज्ञान, चित् चन
 काननम् ।
 —साधन, स पु (स न) चित्तज्ञाने
 मयानुष्ठानम् ।
 चित्ताना, कि स (हि चेतना) (पूर्व प्राप्)
 प्रवृत्ति (प्रे) अनुष्ठानम् (अ प स), उप
 दिष्ट (तु प अ) ० अनु, स्मृ (प्रे), उद्
 अनु-वृत्ति (प्रे) ।
 चित्तावनी, स स्त्री, दे 'चेतावनी' ।
 चित्तेरा, स पुं [स चित्रक(कार)] चित्रक,
 रक्तनीलक, रंजक, सासार, चित्र, नयक
 कुर (पुं), भाष्टक, तौलिक ।

चित्तेरी रिन्, स स्त्री (हि चित्तेरा) चित्र,
 करो-नयिका, तौलिकी २ चित्रकारपत्नी ।
 चित्त, स पुं (स न) अत-करण, चेतन
 मनस् इद (न), हृदय, मानस २ भी
 बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा, ज्ञेयुषी ३ अवधान,
 मनोयोग, अवस्था ४ स्मृति (स्त्री),
 धारणा ।
 —उद्रेक, स पुं (स) गर्व, दर्प, मद, अह
 कार, अहमान ।
 —चिन्तेष, स पुं (स) मनश्चांचस्य, मन होम ।
 —विधम, स पुं (स) चित्तग्यामोह,
 मनोभ्रान्ति (स्त्री) २ उन्माद ।
 —वृत्ति, स स्त्री (स) मनो-गति वृत्ति
 (स्त्री), चित्तावस्था ।
 —करना, सु, अभिलप् (स्वा प से), इष्ट
 (तु प से) ।
 चित्ति, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) प्रज्ञा
 २ चित्तनम् ३ स्मृति (स्त्री) ४ कर्मान्
 (न) ५ मति (स्त्री) ६ प्रयोजनम्
 चित्ती, स स्त्री (स चित्ते <) विदु (पुं),
 अह, चिद २ चित्रा, चित्रसर्व ३ शब्द,
 चिद-अह ।
 —कार, वि (हि + ना) विदुचिहित, चित्र ।
 चित्र, स पुं (स न) प्रति-वृत्ति (स्त्री)
 उदर-छाया-रूप, आलम्ब्य, प्रतिमा । वि,
 कर्तुर, शबल, विविधवर्ण ।
 —कला, स स्त्री दे 'चित्रकारी' ।
 —कार, स पुं (स) दे 'चित्तेरा' ।
 —कारी, स स्त्री (स चित्रकार <) चित्र,
 कला क्रिया कर्मन् (न) चित्रा २ आचित्र,
 रचनम् ।
 —मय, वि (स) सचित्र, चित्रचतुर्ल,
 चित्रविन ।
 —यन, वि (स) चित्र आलम्ब्य, तुल्य सम
 सदृश २ नियन्त्र, स्तम्भ, स्थिर ।
 —विचित्र, रि (स) शब्द, कर्तुर, चित्रांग ।
 —ज्ञान, स स्त्री (स) आलम्ब्य, ज्ञान
 भवनम् ।
 चित्रक, स पुं (स) चित्र, वाय, व्याज,
 मृगान्त, शुद्धादूर्क, उपस्थाप, २ दे
 'चित्तेरा' ।
 चित्ररूप, स पुं (स) पर्वतविशेष ।

चित्रशुस, स ॥ (स) यमनेयक ।

चित्रा, स स्त्री (स) चतुर्दशनक्षत्र । वि, कर्तुं, शरत् ।

चिथडा, स पु (हि चीथना) धीर, नीवर करंट, नक्तक ।

चिनक, ॥ स्त्री (हि चिनयी) सदाहा पीडा २ मूत्रनाड्या पीडा ।

चिनगारी, स स्त्री (स चूर्ण-अगार >) भुद्रागार २ २ अग्नि उवलन, कण-अगिका, वि, स्फुलिंग-गया ।

चिनगरी, स स्त्री (हि चिनगारी) दे 'चिनगारी' चपलबाल ।

चिनाई, स स्त्री (हि चिनना) इष्टका चपन । २ ३ भित्ति गृह, निर्माणम् ।

चिन्मय, वि (स) ज्ञानमय । स ॥ परमे श्वर ।

चिन्ह, स ॥ दे 'चिह्न' ।

चिह्नित, वि, दे 'चिह्नित' ।

चिपकना, कि अ (अनु चिपचिप) सखिल (दि प ॥), सलग् (भ्वा प से) अनु आ म-सज (कर्म) ।

चिपकना, कि स, व, 'चिपकना' के प्रे रूप ।

चिपचिप, स स्त्री (अनु) चिपचिपशब्द ।

चिपचिपा, वि (अनु) श्पान, सद्रि, मल्ल शील ।

चिपचिपाना, कि अ (अनु चिपचिप) सल्लशील सद्रि(वि)भू २ दे 'चिपकना' ।

चिपचिपाहट, स स्त्री (हि चिपचिपाना) मल्लशीलता, श्पानता सद्रिता ।

चिपटना, कि ॥ (स चिपिट) दे, 'चिपटना' २ आलिंग (भ्वा प से) परि स्वन (भ्वा आ अ) ।

चिपटा, वि (स चिपिट <) अनुग्रह, समरोध, सम समस्थ, सपत् ।

चिपटना वि स, व 'चिपटना' के प्र रूप ।

चिचुर, स पु (स चिउ(चु)न) दे 'ठोदी' ।

चिमटना, कि अ (हि चिमटना) दे 'चिमटना' (१२) ।

चिमटा, स पु (हि चिमटना) सद्यशक, वक मुद्र वदनम् ।

चिमटाना, कि स, व 'चिमटना' के प्र रूप ।

चिमरी, स स्त्री (हि चिमटा) सदाशिका, लघु, ककमुख खम् ।

चिमड़ा, वि, दे 'लचीला' ।

चिमनी, स स्त्री (अं) धूम, नाली-रध २ अग्निकुण्ड, चुहो डिल (स्त्री) ।

चिरजीव, वि (स) दीर्घ-चिर, जीविन् आयुम् २ दीर्घायु मव ।

चिरत्तन, वि (स) चिरत्तन [-नी (स्त्री)], पुरातन [-नी (स्त्री)] प्राचीन, प्राक्तन [-नी (स्त्री)] ।

चिर, वि (स) दीर्घ-चिर, कालिक-कालीन २ चिरकाल-दीर्घकाल, स्थायिन् ३ दे 'चिरत्तन' ।

—काल, स पु (स) दीर्घसमय, महान् काल ।

—कालिक, —कालीन, वि (स) दे 'चिरत्तन' । (रोग) अविसर्गिन्, कालिक, दीर्घस्थायिन् ।

—जीवी, वि (स-विन्) दे 'चिरजीव' ।

—स्थायी, वि (स-विन्) दीर्घकाल, भुव, स्थिर, अशीघ्रनाशिन् ।

चिरकना, कि अ (अनु०) अवप-स्तोक इष्ट (भ्वा आ अ) २ असकृत् अनुपमल लम्पुन् (तु प अ) ।

चिरकुट, (स नीरम्) दे 'चिथडा' ।

चिरचिरा, वि, दे 'चिह्नचिवा' ।

चिरख, वि (स) पुराण, पुरातन, प्रान, प्रत ।

चिरना, कि अ (स चीर्ण >) स्फुट (तु प से), विद् विभिद् मम् (कर्म) ।

चिरवाई, स स्त्री (हि चिरवाना) विदलन, विदारण, विषाग्न, २ विचारण वेतन वृद्धा ।

चिरवाना, कि प्र, व 'चिरना' के प्रे रूप ।

चिराहता, स पु, दे 'चिरायता' ।

चिराई, स स्त्री (हि चिराना) दे 'चिरवाई' ।

चिराग, स पु (का-रयस) दीप, दीपक ।

—दान, ॥ पुं, दीप आधार वृष्ट ।

चिराना वि प्रे, व 'चिरना' के प्रे रूप ।

चिरायँष, स स्त्री (स चयं ष) चर्मसंसादि-उपलक्षण, दुर पुनि-नाथ ।

चिरायता, स पु (स चिरयित्) भूनिष, सु, निषक, चिरायक ।

चिरायु, वि (सं चिरायुस्) दे 'चिरजीव'
(१) ।

चिरौंजी, सं खी (सं चारौंज >) (वृष्ट)
चार, चारक, खरस्कष, बहुवन्कल, प्रियाल
२ तस्य फल ३ तद्बीजगर्भ ।

चिरक, स खी, दे १ 'चमक' २ 'टीस' ।

चिरकना, कि आ, दे 'चमकना' २ दे
'टीस मारना' ।

चिलगोजा, स पु (फा) जलगोजक, निको
चक, चारफल, सकोचम् ।

चिलम, स खी (फा) धूमपानचक्र ।

चिलमची, स खी (फा) हस्तधानी कर
छालनी ।

चिलमन, स खी (फा) दे 'चिक' (१) ।

चिल्लपों, स खी (हि चिल्लाना + अनु)
कोलाहल, हक्कोश, वि राव, कलकल ।

चिल्ला, स पु (फा) चत्वारिंशदिनसारक
कार २ चत्वारिंशदिनव्रतम् ।

चिल्लौ, स पु (देश) ज्या, मौर्वी, प्रथवा,
धनुर्गुण ।

—चिदाना, कि म, चाप अभिजय कृ, धनुषि
मौर्वी आरह (मे आरोपयति) ।

चिल्लाना, कि अ (अनु चिलचिल) कल
कल मोनाहल कृ, वि, क (अ प से),
उत्क्रुश (स्वा प से) २ गौत्वार कृ, उच्चै
आक्रुद (स्वा आ से) ३ दे 'रोना' ।

चिल्लाहट, स खी (हि चिल्लाना) दे
'चिल्लपों' ।

चिल्लिका, स खी (स) चिल्ली, चिल्ली,
भुङ्गारी २ शाकरान, रावशाक ३ विषुव
तर्हि (खी) ।

चिल्ल स पु (स न,) लक्षण, लाञ्छन,
लिंग अभिधान, अक ।

चिह्नित, वि (स) अकित, स, चिह्न लक्षण
लाञ्छन ।

चींग, स पु, दे 'चिउटा' ।

चीटी, स खी, दे 'चिउटी' ।

चीकट, स खी (हि कीचट) तैलमल, दे
'तलछट' । वि, तैलमय [यो (खी)] ।

चीर, स खी (स चीकार) उक्कोश,
आकटित, उच्च-कटश, रव-राव ।

चीखना, कि स (सं चषण) दे 'चसना' ।

चीखना, कि अ (सं ची करण) दे 'चिलाना' ।

(२) उच्चै बदलप (स्वा प से) ।

चीज़, स खी (फा) वस्तु (न), द्रव्य,
पदार्थ ।

—वस्तु, स खी (फा + सं) वस्तुनात,
सामग्री २ गृहोपस्कर २ आभूषणादिकम् ।

चीङ्क, स पु (स चीडा) दारुधा,
महुस्या, मृत्मारी, मयद्रव्यभेद २ चौरपण
शाल, सज, दीर्घशास (वृष्ट) ।

चीत्तल, वि, (स निवल) दे 'नितकबरा' ।

स पु, चित्रमृग २ चित्रसर्प, भजगरभेद ।

चीता, स पु (स चित्रक) दे 'चित्रक' ।

चीता, वि (हि चेतना) विचारित, चिंतित ।

चीत्कार, स पु (स) दे 'चीत' २ दे
'चित्रपों' ।

चीषदा, स पु, दे 'चिषदा' ।

चीथना, कि स (स चांग >) दे 'काटना'
तथा 'पीसना' ।

चीन, स पु (स) देशविशेष २ भुङ्गभेद
३ मृगभेद ।

चीनी, वि (स चीन) चीन, वामिन्
सवधिन्, चैन । स खी, मिना, गुहा ।

चीपक, स पु (अनु चिप) दूषो वि (खी),
दूषिका, पिचोडक, पिज(जे)र नेत्रमलम् ।

चीफ, स पु (अ) पुरोग, प्रधानपुत्रप,
नायक, अभ्यष्ट । वि, प्रधान, मुरय, अष्ट,
विशिष्ट ।

—एदितर, स पु (अ) मुरय प्रधान,
सम्पादक ।

—कमिरनर, स ॥ (अ) मुरयायुक्त ।

—कोर्ट, स पु (अ) मुरय-यायालय ।

—जज, स पु (अ) मुरय-यायाधीश ।

—जस्टिस, स पु (अ) मुरय-यायाधिपति ।

चीमद, वि (हि चमडा) दे 'लचीला' ।

चीर, स ॥ (स न) जीर्णवस्त्रल टै,
कर्पट, नचन, चीवर २ बसन, बख ३ धृष
त्वन् (खी) ४ मुनि, भिक्षु वस्त्रम् ।

चीर, स पु (हि चीरना) दीर्घ, छद भेद
स्फोट मिदा ।

—फाद, स खी, अगच्छेद, अवच्छेद ।

चीरना, कि स (स चीर्ण) ककचेन छिद्
(र प अ)-द् (क प से, प्र)-पट (जु)
२ विद् (क प से) रद् (जु), भिद्
(र प अ)। स पुं, विदारण, छेदन,
भेदन, स्फोटनम्।

चीरने वाला, छ पु, विदारक, छेदक इ।
चीरा हुआ, वि, विदारित, छेदित, भेदित,
चोर्ण विदीर्ण।

—काश्ना, स पु, भगच्छेदन, व्यवच्छेदनम्।

चीरा, स पु (हिं चीरना) शब्द, उप
चार-उपाय कर्मन् (न)-किया २ ण, णम्।

—देमा, कि स, शब्देण उपचर (भा प
से)-साध (मे)।

चीरा, स पु (स चीर >) चित्रोभीष प,
चोरम्।

चीर्ण, वि (स) विदारित, छेदित, दीर्ण
२ अनुष्ठित-कृण, सम्पादित।

—पर्ण, स पु (स) खजूर, डारोहा,
यवनेष्टा २ निम्ब, अरिष्ट, तिक्तक।

चीट, स स्त्री (स चिट) चिल्ला, मातृपिन्,
शकुनि (पुं), कंठनीडक, चिरमण,
सकाण्ड।

—का मूल, सु, दुर्लभ-अप्राप्य, वस्तु (न)।

चीघर, स पु (स न) दे 'चीर' (१, २ ४)।

चीस, स स्त्री, दे 'टीस'।

चुगल, स पु दे 'चगुल'।

चुगी, स स्त्री (हिं चुगल) नगर, नर
शुष्क प २ विचित्राश्र-अवपपरिमाण वस्तु
(न)।

—खाना, छ पु, शुबखाना।

चुचुना, स पुं, दे 'चुनचुना'।

चुधला, स पु (हिं चुधलना) निमेषक,
निमीलक।

चुधलाना, कि अ (हिं चो चार+स अथ >)
नापचक्षेन अस्पष्ट मद् ईषद दृष्ट (भा प
अ), श्र (भा आ से), नेत्रेण प्रतिदृष्ट
(कर्म)।

चुधा, वि (हिं चो+स अथ >) ईषदथ, मद्
दृष्टि २ चिह्न, पित्र ३ दे 'चुधला' ४ शुद्ध
मयन।

चुधियाना, कि अ, दे 'चुधलाना'।

चुंषक, स पुं (स) निसक, चुबित निसित्
[—त्री (स्त्री)] २ कामुक, लपट ३ धूर्त
४ चुबक, प्रस्तर मणि (पु) लोह, कांत
चुम्बक, अवस्कांत, अदोमणि।

चुंषन, स पुं (स न) चुम्बना २ निसम,
अधरपानम्।

चुंषा, स स्त्री (स) दे 'चुम्बन'।

चुम्बित, वि (स) निसिन, ओष्ठस्थ २ ललित
३ स्पष्ट।

चुंवी, वि (स चुबित्) चुम्बक, निसक
२ स्पर्शक, स्पर्शित्। (प्राय समाप्तां मे,
व गगनचुम्बी इ)।

चुकदर, स पुं (फा) क दमेद।

चुकता, वि (हिं चुकना) समाप्त, मिश्रण।

चुकती, स स्त्री (हिं चुकना) समाप्ति अव
सिति (स्त्री)।

चुकना, कि अ (स च्युत+क >) पूरा समाप्
अवसो (कर्म अवसोयते), अर्त-समाप्ति गम्,
निष्पद (दि आ अ)। २ दे 'चूकना'।

चुकाना, कि स (हिं चुकना) ऋण ॥
शुष् (मे) २ (विवाद) म शम् (मे, दम
बति), स समाधा (हु व अ) ३ स
निष्पद (मे), सपूर (जु) अवसो (मे,
अवसाययति)।

चुकौता, स पु (हिं चुकना) ऋण परि
शोध शुद्धि (स्त्री) २ सं समा धान
३ निर्धारण, शा, निश्चय।

चुक, स पु (स न) नितडीक, पृष्ठान्द,
महाम्ल, चुकक २ दे 'काजो' ३ अम्लता।

चुगना, कि स (स चदन) चन्वा भारा
(हु आ अ)-मद् (भा प से) मध (जु)
२ चन्वा मद् (भा प अ)-अमिहन् (अ
प अ)। स पुं, चन्वा आदान मद्दण
जुदेन प्रहरणम्।

चुगलखोर, छ पु (फा) पिनुन, पृष्ठमासान्,
परोष्ठे निदक परिवारपर, कर्णोष्ठ।

चुगलखोरी, स स्त्री (फा) चुगलखोर पैशाय,
पिनुनना, परोष्ठ, निदा परिवार, उपजाव।

चुगली, छ स्त्री (फा) दे 'चुगलखोरी'।
करना या खाना, कि स, परोष्ठे पृष्ठत
निद अववा अप-परि-वर (दोनों भा प
से)-अदि-आ शिप् (हु प अ)।

सुगवाना, कि प्रे, व 'सुगना' के प्रे रूप ।

सुगा, सुगा, स पु (हि सुगना) सग,
पक्षि मय्य-सपन् ।

सुगार, स की (हि सुगाना) चच्चा
आदापन-आप्राह २ तस्य भृत्या वेतन वा ।

सुगाना, कि स, व 'सुगना' के प्रे रूप ।
पक्षिभ्य अन्नकणान् विकृ (॥ प से) ।

सुचाना, कि अ दे 'टपकना' ।

सुटकला, स पु दे 'सुटकला' ।

सुटकी, स की (अनु सुट सुट) छोटिका,

मु(द)सुरी २ अगुणोपीदन २ चरणगुलीयकम् ।

—बजाना, सु, छोटिका क अथवा दा ।

—बजाते, सु, आगु, द्राक, सपदि, सध
(सव मय) ।

—भर, सु, अयस्य किचिस्मात्रम् ।

—भरना, सु, छोटिकया पीठ (चु) ।

सुटकियों में उधाना, सु, सुकर-माधारण
परिहाममिव मन् (दि आ अ) ।

—लेना, सु, अद-उप इस (म्वा प से) ।

सुटकुला, न पु (हि सुटकी) नर्मन् (न),
परिहाम-नर्म-वात्य-उक्ति (की) आला-
भाषण २ अमोघ विरुद्ध योग-वत्य ।

सुगिया, स की, दे 'सोरी' ।

सुटीला, } वि (हि चोट) आहन, प्रणि,
सुटीला, } इत ।

सुडिहारा, स पु (हि सूडी) चूडाहार,
बल्यविकापम् २ चूडा-वहन कार ।

सुडैल ॥ की (स चूडा >) पिशाची चिका,
शकिनी, शकिनी, भूतमाया, प्रेवपत्नी,
२ कुरुपिणी, अरती, स्वविरा ३ चडी,
बोपनी करा (नारी) ।

सुनसुगा, स पु । (हि सुनसुगाना) विट

सुनसुगी, स की । उदर-कृमि सुन्कोटक ।

सुनसुगाना, कि अ (अनु) तीक्ष्णव्या
अनुभू व्यप (म्वा आ से), तप (कर्म) ।

सुनट-त, } की (स चू >) वल, मा पुट,
सुनग, } मगी मि (की), कर्म (की) ।

सुनना, कि स (स चुन् तथा चि) (फ्लादि)
चुन् (दु प से), वि (स्वा उ अ), आदा
(जु आ अ), उदध समाह (म्वा प
अ), छिद् (रु प अ) २ पृथक् ह, उदध

(क प से) उदध । ३ वृ (स्वा उ से),
नियुज् (रु आ अ चु), निरूप (चु),
निष्ट ४ यथाक्रम रच (चु)-स्था (चु स्थाप
यति) ५ अलक, मड (चु) ६ (दीवारादि)
निर्मा (जु आ अ, प्रे निर्मापयति),
विरच (जु) । स पु, चयन, उदधरण, पृथक्
करण, वरण, यथास्थान स्थापन, अलकरण,
निर्मा ६ । दे 'सुगाह' ।

सुनने योग्य, वि, चैय, ममाहार्य, उदधराद्य वर-
णीय स्वाप्य, अलकार्य, निर्मेय ६ ।

सुनने बाला, स पु, चैव, समाहर्त, वरित्,
पृथक्कर्तृ ६ (सव पु) ।

सुना कुशा, वि, चित, समाहृत, इत, रचित
२ मड उत्तम ।

सुनरी, स की (स चुन >) चित्र-शवल
कट्ट-वत्यम् ।

सुनवी, वि (हि चुनना) इत, अमोघ चित
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

सुनवाना, सुनाना, कि प्रे, व 'सुनना' के
प्रे रूप ।

सुनाई, स की (हि चुनना) दे 'सुनना'
स पु २ कुल्ल-मिच्छि, निर्मा ३ चयन,
वेतन-भृत्या ।

सुनाह, स पु (हि चुनना) चिति-समाहृति
(की), उदधराह, उदधर (२) इति-वृथक्
इति (की), निर्धारणम् ।

सुनावट, ॥ की, दे 'सुनट' ।

सुनिदा, वि (फा सुनीदा) दे 'सुनवी' ।

सुनौटी, स की (हि चूना) चूर्णपुम् ।

सुनौटी, स की (हि चुनना) समर,
आहान, अमिग्रह २ उच्छेदन वशीपन,
उत्थापनम् ।

सुसट-स न, स की, दे 'सुन' ।

सुडी, स की (स चूर्ण >) सुद्र, माग्निय
पमराग २ रत्न, रत्न-रत्न, रत्न ३ अन्न,
कण-व्युत्पिका ४ काष्ठचूर्णम् ।

सुडी, स की, दे 'सुनरी' ।

सुप, वि (स सुप् निश्चन्द रमन >)
अवाक, निश्चन्द, नीरव, मौनिम्, तूणीक,
कनालापिन् । स की, नीरवता, दे 'सुप्पी'
२ निलम्बता ।

—करना या होना, कि अ, वाचयन् (भ्वा प अ) निरूप (क स अ) मौन आकल् (चु) मज (भ्वा उ अ) ।

—रहना, कि अ, मौनतूष्णीं जोष आस् (अ वा से) र्वा (भ्वा प अ) ।

—चाप, कि, वि, जोष, तूष्णीं, निशब्द, मौन २ गुप्त गूढ, निश्चत, प्रच्छन्नम् ।

सुपका, वि (हिं चुप) दे 'चुप' (वि) ।

सुपके से, कि वि, दे 'चुपचाप' ।

सुपकी, स स्त्री (हिं चुप) दे 'चुप्पी' ।

सुपवना, कि स (अनु चिपचिप) अज (क प से), उप, दिह (ज प अ) लिप (तु प अ), अनु आ वि २ दोष गूह (भ्वा उ से)-प्रच्छद (चु) ३ दे 'सुशामद करना' । स पु, अजन, उपदेहन, लेपनम् ।

सुपदा, वि (हिं सुपहना) (घृतादिभि) उपरित, अभ्यक्त, दिग्घ ।

सुप्पा, वि (हिं चुप) वाचयन्, अव्यमित, भाषित वाचयत ।

सुप्पी, स स्त्री (हिं चुप) निश्चयता, नीरयता, मौन, तूष्णींभाव २ निश्चयता, निश्चलता, निश्चयेष्टता ।

सुभकी, स स्त्री दे 'डुबकी' ।

सुभना, कि अ (भुजु) सलङ् (भ्वा प से), सज् (कर्म), अनु आ स, सलङ्गी-ससत्वीभू, व्यभिनिमित् (कर्म) ।

सुभना, सुभोना, कि स (हिं चुभना) बध् (दि प अ), निमित् (क प अ), तुद (तु प अ) निप्रविश (प्रे) । स पु, वेध धन, छेद-दन, निर्भेद दनम् ।

सुभानेवाला, स पु, वेधक, छेदक, निर्मेदक ।

सुभकार, स स्त्री (हिं चुभना-सं कार >) चुचुत्कार, चुभनघ्वनि (पु) ।

सुभनारना, कि स (हिं चुभकार) सचु चुत्कार उपलब्ध-उपच्छद (चु) ।

सुचुरा, वि दे 'सुरसुरा' ।

सुर(९)८, सं पु, दे 'सिगार' ।

सुरसुर, सं पु (भुजु) सुरसुराशब्द ।

सुरसुरा, वि (हिं सुरसुर) मशुर, भिडुर, भिदेलिम ।

सुरवाना, कि प्र, (१-२) व 'सुराना' तथा 'पकाना' के प्रे रूप ।

सुराना, कि स (स चोरण) सुरस्वर (चु), अपह (भ्वा प अ), मुप (क प से) २ गूह (भ्वा उ से), प्रच्छद (चु) ।

॥ पु, चोरण, मोषण, अपहरण गूहन, प्रच्छदन, दे 'चोरी' ।

सुराने योग्य, वि, चोरयितव्य, मोषणीय ।

सुराने वाला, स पु, दे 'चोर' ।

चिप सुराना, मु, मनो ह (भ्वा प अ), वि परि मुह (प्रे) ।

सुरि, सुरी, स स्त्री (स) रूपन, पातक, लघु, रूप-अवद ।

सुल, स स्त्री, दे 'सुलली' ।

सुलसुल, स स्त्री (अनु) दे 'चचलता' ।

सुलसुला, वि (पूर्व) दे 'चचल' तथा 'नटवट' ।

सुलसुलाना, कि अ (पूर्व) अपर-अचल (वि) भू ।

सुलसुलापन, सं पु { दे 'चचलता' ।
सुलसुलाहट, स स्त्री }

सुलाना, कि स, व 'उपकाना' के प्र रूप ।

सुलाव, स पु, अमास निर्मास, -ओदन-नष्ट ।

सुही, स स्त्री (स) दे 'चुवहा' २ चिता ।

सुल्ल, स पु (स चुल्लक) सुहक, अजलि (पु), चुल्लक, गह्वर वा ।

—भर, वि चुल्लक-चुल्लक, मान, अजलि गह्वर, मात्र (बन्नादि) ।

—भर पानी में डूब भरना, पु, अत्यत डूब (तु आ से)-प्रप (भ्वा आ वे) ।

सुवाना, कि, स, व 'उपकाना' के प्रे रूप ।

सुसवी, स स्त्री (हिं सुसना) गह्वर, चुल्लक, चुल्लक २ ईश्वर शनै शनै, पान ३ तमागुपमनय ।

सुसनी, ॥ स्त्री, दे 'सुसनी' ।

सुसवाना, कि प्र, { व 'सुसना' के प्रे रूप ।
सुसना, कि प्रे }

सुस्त, वि (पा) उपनिम्, उपोगिन्, शिप्रका रिन्, स्फुर्निमद २ आगस्त, दक्ष ३ आनन्द शैल्य, शून्य, सुसह ३ इडांग, सखल ।

—चायक, वि, दशानकस, चतुरानन्द ।

सुस्ता, सं पु (फा) अजमेवशावकानां आमा शय २ मलाशय ३ दे 'सिलवट' ।

चुस्ती, सं स्त्री (का चुस्) क्षिप्रकारिता,
स्फूर्ति (स्त्री), उषम, उद्योग ३ शैथिल्या
भाव, मुष्टावृत्ति (स्त्री) ३ दृढता, सख्यता ।

चुहचुहाना, कि अ (अनु) दे 'चहचहाना'
२ रगवत् शब्द (दि आ से)-प्रकाश
(स्वा आ से) ।

चुहचुही, स स्त्री (अनु) फुलचुही, 'चुहचुही',
कृष्णचटकाभेदः पुस्तकशिथिली ।

चुहल, स स्त्री (अनु चुहल >) हास्य,
परिहास, विनोद, कौतुक, प्रमोद, विनास,
मनोरंजनम् ।

चुहिया, स स्त्री (हि चुहा) गरिका,
बालमूषिका, ध्रुव मूषक आस्तु (पु)
२ दे 'चूही' ।

चुहुटना, कि. अ, तथा वि दे 'चिपकना' तथा
'चिपचिदा' ।

चूँ, स पु (अनु) चुकार, चुकृति (स्त्री) ।

—चा, सं पु दे 'चूँचरा' ।

—करना, सु, किमपि वद् (स्वा प से)
२ विरुद्ध वद् अथवा प्रतिवद् ।

चूँकी, अन्य (का) यत्, यत्, यत्माय, हि ।

चूँसी, स स्त्री, दे 'चुगी' ।

चूँचरा, स पु (का) प्रतिवादः प्रत्याख्यान,
विरोध २ आपत्ति (स्त्री), अपवाद
३ व्याज, निषण् ।

चूँचूँ, सं स्त्री, (अनु) चुकार, चुकृति (स्त्री),
'चाटकेरशब्द' २ कलरव, विरुद्ध ३ चूँचूँ
शब्द ४ क्रीडनक्रमेदः ।

चूक, सं स्त्री (हि चुकना) अपराध,
स्खलित, दोष, प्रमाद २ शार्पभ्रष्ट, अति
क्रम ।

चूक, स पु (स चुक) अम्ल २ अम्ल
द्रव्यभेदः ३ चुकक चुकिका, अम्लशाकभेदः ।
वि, अत्यम्ल, अतिशुक्त ।

चूकना, कि अ (स चुक >) अपराध
(दि, स्व प अ), स्खल (स्वा प से),
प्रमाद (दि प से, प्रमादति) २ लक्ष्म्यात्
सत्पत्यात् भ्रष्ट (स्वा आ से)-भ्रष्ट (दि प से)
३ सदवसर या (प्रे दापयति)-अतिवह (प्रे) ।

चूका, सं पु, दे 'चूक' (३) ।

चूचो, सं स्त्री (सं चुचुक) चुचुक, चुचूक,

कुचाय, कुचानन, स्तनवृत्त २ स्तन, कुच,
पयोधर ।

—पीना, सु स्तन स्तन्य या (स्वा प से) ।

चूजा, स पु (का) कुंकुटशाव वक ।
वि, अल्पवयस्क ।

चूडात, सं पु (सं) चरम, सोमा-अवधि-
(पु) अ, अत्यधिक, अत्यन्त वि, परम,
यत्न, उत्कट ।

चूडा, स स्त्री (सं) शिखा, जु (जू) टिका,
केशपाशी २ मधुरशिखा ३ शिखर, अग्र
४ कूप, ५ चूडाकरणसंस्कार । सं पु (सं स्त्री)
बलय य, कंकण २ बलबादली, चूडाबली ।

—करण, स पु (स न) चूडाकर्म मुढन,
मस्कार ।

—मणि, सं पु (सं) शिरोरत्न, शीर्षपुष्पम् ।
२ प्रधान, अग्रगण्य ३ गुणा ।

चूडी, स स्त्री (स चूडा) बलय य, कस-
भूषण, कौशुकम् ।

—दार, वि, (हि + दा) पुटीकृत, बलीयुत,
मकुचिन ।

चूडिया पहनना, पु, शीवण आचर (स्वा
प से) ।

चूत, स पु (स) रसास्, आम्र, कोकिलो
त्सव २ (स न) अपान न, शुद्ध, च्युति
कुलि (स्त्री) । (हि) योनि (स्त्री)
अग्र, नारीयुग्मम् ।

चूतब, स पु (सं चूत >) नितब, कटि(टी)-
शोथ, स्फिक् च्वा (स्त्री), पूल, पूलक, स्थिक ।

चून, स पु (स चूर्ण) दे 'आटा' तथा 'चूना' ।

चूनर सी, स स्त्री, दे 'चुनरी' ।

चूना, स पु (स चूर्ण) चूर्णकम् ।

चूने का पानी, सं पु चूर्णकण, चूर्णोदकम् ।

—दानी, स स्त्री, चूर्णावानी, चूर्णपुटक ।

अनचूना—, अशान्तचूर्णकम् ।

कुदा—, शान्तचूर्णकम् ।

चूने की मट्टी, स स्त्री, चूर्ण, आपाक पाकपुटी ।

चूना, कि अ (स च्यवन) दे 'टपकना' ।

वि, सच्छिद्र, स्फुटित, सरप्र ।

चूनी, स स्त्री (स चूर्णिका) धान्य-अन्न,

कण पीणिका २ रत्न मणि, कण-कणिका ।

चूमना, कि स (सं चुबन) (मुख) चुब्
(स्वा प से), निस् (अ आ से) २ ओष्ठा-

म्यां ख्वा (जु प अ) ३ (ओठ) अपर
अपररसं पा (भ्वा प अ) ४ (सिर) शिर
आ-उपा समा घ्रा (भ्वा प अ) । सं पु,
चुवन, निसन, अपरपात्र, शीर्षाघ्राणम् ।

चूमने योग्य, वि, चुवनीय, निसितव्य ।

चूमने चाळा, सं पु, चुवक, चुबिन्, निसक,
निसित (पु) ।

चूमा हुआ, वि दे 'चुम्बिन' ।

—चाटना, ॥, उप, लल् (जु) चुव ।

चूमा, सं पु, चुवन, चुव-वा ।

—चाटी, स स्त्री, विलास, विहार, क्रीडा ।

चूर, स पु (स चूर्णं र्णं) क्षोद, पिष्ट, रज्ज्व
(न), कणा-कणिका अणव ल्वा (बहु) ।
वि, मत्त, लीन, परायण, अभिनि नि, विष्ट
२ मत्त, क्षीब, मरोन्मत्त ३ आत, सिन्न,
क्षान ।

—चूर, दि, चूर्णित, पिष्ट, क्षुण्ण ।

चूरन, स पु (स चूर्णं र्णं) दे 'चूर्ण' २ चूर्ण,
अभिवर्द्धक पाचक, चूर्णम् ।

चूरमा, स पु (स चूर्णं र्णं) मिष्टान्नभेद,
मिष्टचूर्ण ।

चूरा, सं पु (स चूर्णं र्णं) क्षोद, पिष्ट । दे
'चूर' (स पु) ।

—फरना, कि सं, चूर्ण (जु), चूर्णीक, पिष्ट
क्षुद (स प अ) ।

चूर्ण, सं पु (स पु न) क्षोद, पिष्ट २ दे
'चूरन' ३ रजस् (न), पूष्टि- (स्त्री) ।

—कुंतल, सं ॥ (सं) अलक, कुरल ।

चूर्णक, सं पु (स) शृष्टपिष्टान्नम् २ सक्तुक,
शृष्टयवचूर्णम् । (स न) क्षुण्ण-क्षुण्णित,
चूर्णम् २ कटुवर्णरहितम् अल्पसमासयुक्त
गणम् ।

—चूर्णन स पु (स न) वेषण, मर्दन,
सवनम् ।

चूर्णित, वि (सं) पिष्ट, क्षुण्ण, चूर्णीभूत ।

चूल्, सं पु (स चूल) वेश, शिखा ।

चूल्, म स्त्री (दिव) दिवर्जनकोल २ बाह्याग्रम् ।

चूल्हीली होना, मु, अत्यत दृग्-आद्यम्
(भ्वा दि प से)-सिद्ध (दि आ अ)-
शब्द (दि प से) ।

चूल्हा, सं पु [स-चुल्ही छि (स्त्री)]
अति (दि) का, अधिग्रणी,
चूल्ही, स स्त्री उद्धान, उष्मान, अदमन,
अदम्यतक-कम् ।

चूसना, कि स (स चूषण) आ, चूष (भ्वा
प से), पा (भ्वा प अ) २ सच्छुष (प्रे),
आ-चो पा (भ्वा प अ) । स पु, चोषण,
चोष, उच्छोषणम् ।

चूसने योग्य, वि, चूष्य, चोष्य, उच्छोष्य ।
चूसनी, सं स्त्री (हि चूसना) चोषणी,
कोटनकभेद २ चूचुकवती काचकूपी २ चोष
णयष्टि (स्त्री) ।

चूल्हा, स पु, दे 'भगी' ।

चूल्ही, स स्त्री, दे 'भगन' ।

चूहा, स पु (अनु चू) भातु लव(ड)व
(पु), रानक, विलेशय, मूष (वि, वी) कि,
मूष, मूषिकार ।

—दुस्ती, सं स्त्री, ककणभेद, मूषदती ।

—वान, —वानी, सं पु, सं स्त्री, मूषपित्र,
मूषकपत्र रम् ।

—मार, स पु, मूषमार ५ श्वेन, खगानक ।
चूही, सं स्त्री (हि चूहा) मूषा, मूषिका ।
२ दे 'चुरिया' ।

चेंचला, स पु (अनु चेंचें) पक्षिशाव-वक ।
चेंचें, स स्त्री, दे (अनु) चुकार, चुष्टि
(स्त्री) २ प्र, जल्प बलिपतम् ।

चेंवर, स पु (अ) कोष्ठ, कक्षा, शाला
२ समायुहम् २ परिषद (स्त्री) ।

चेंवर, स स्त्री (अ) दे 'कुसी' ।

—मेन मैम, स ॥ (अं) प्रधान, सभा,
पति अल्पस ।

चेक, ॥ पु (अ) देवादेश २ दे 'चारखाना' ।
चेचक, ॥ स्त्री (का) मसूरी रिका, वसंतरोग,
शीतला स्त्री ।

चेट, सं पु (स) दास, सेवक २, एति, भट्ट ।
२ भट्ट विदूषक ।

चेटक, सं स (स) चेट, दास २ जार,
जपति ३ इन्द्रनाल, माया २ सदेहर,
दूत ५ दे 'चत्तका' ।

चेटी, सं स्त्री (सं) दासी, सेविना, परिवारिका ।

चेत, स पु [सं चेतम् (न)] चेतना, चेतन,
सञ्ज्ञावेदन २ ध्यान, बोध ३ अवधान, साध
धानता ४ स्मरण, स्मृति (स्त्री) ५ विचार ।

चेतन, सं पु (स) आत्मन् (॥), जीव
२ मनुष्य ३ प्राणिन्, जीवधारिन् ४ परमे-
श्वर ५ मनस् (न), चित्त्तन् । वि, चेतनावत्,
चेनोमत्, प्राण, धारिन् शृत्, जीविन्, सजीव ।

चेतनता, स स्त्री, (स) सजीवता, चेतोमत्ता,
दे 'चेतना' ।

चेतना, स स्त्री (स) मया, चैतन्य २ ज्ञान,
बोध ३ स्मृति (स्त्री) ४ मनोवृत्ति (स्त्री) ।
क्रि अ, सदा-चेतना लभ् (स्वा आ अ)
आ प्रति पठ् (दि आ अ), प्रकृति आपठ्,
प्रकृतित्व (वि) भू २ सावधान अवहित
(वि) भू ।

चेतावनी, स स्त्री (हि चेतना) प्राक्-पूर्व,
मूचना प्रतिरोध उपदेश ।

चेप, स पु (अनु चिपचिप) निर्यास, रस
२ श्यान सार, चरु (न) ३ दूष्य, पूष-य,
पूरक, कुम्पन् ।

—दार, वि (हि + क्रा) निर्यासमय [-यी
(स्त्री)] २ श्यान, सार ३ सपूय ।

चेला, स पु (सं चेलक >) शिष्य, अन्ते
वाप्तिन्, छात्र, विद्यार्थिन् २ अनुयायिन् ।

—चैलना, मु, वपनी (स्वा प अ), दीक्ष
(स्वा आ से) दीक्षा दा (जु उ अ) ।

चेलिन्, चेरी, स स्त्री (हि चेला) शिष्या,
अन्तेवाप्तिनी, छात्रा, विद्यार्थिनी २ अनु-
यायिनी ।

चेष्टा, स स्त्री (॥) कायिकम्यापार, चेष्टिन्,
ह्लादिवाचन, शक्ति, अगविक्षेप २ उद्योग,
प्रयत्न ३ कार्य, कर्मन् (न) ४ परिश्रम ।

चेस, स पु (अ) दे 'शिरज' ।

चेहरा, स पु (फा) आनन, मुख, वदन
२ पुरो-अग्र, भाग ३ कष्ट छद्म, मुख-वदनम् ।

—माहरा, स पु, आकार, आकृति (स्त्री),
रूपन् ।

—उतरना, मु, मुख-वदन, मलानि (स्त्री) -
म्लानता-कान्तिक्षय-विवर्णा ।

—विगादना, मु, अत्यधिक तट (चु)-प्रद
(स्वा प अ) ।

—(रे) पर हवाह्वयो उदना, मु मयादिभि
वेदण्य विवर्णता ।

चैक, स पु, दे 'चैक' ।

चैन, सं पु (सं चैत्र) चैत्र (वि) क्र, चैत्रि
(पु) चैत्रिन्, मधु (पु) २ चैत्रशस्यन् ।
चैतन्य, स पु (स न) आत्मन् (पु),
जीवात्मन् २ ज्ञान, बोध ३ परमेश्वर
४ प्रकृति (स्त्री) । वि, चेतनावत्, सजीव
५ सावधान, अवहित ।

चैत्य, स पु (स न) गृह, भवन, सभन्
(न) २ मंदिर ३ यशशाला । (सं पु)
कुट २ कुटमूर्ति (स्त्री) ३ अश्वत्थवृक्ष
४ बौद्धमिथु (पु) ५ मिथुविहार ।

चैत्र, न पु (स) दे 'चैत' २ बौद्धमिथुक
३ यशभूमि (स्त्री) ४ मंदिरम् । वि, चित्रा,
सवधिन् विषयक

चैन, स पु (स ग्रयन >) सुख, सौख्य,
सुस्थता, आनन्द, मोद, विभ्रम, निर्वृति
(स्त्री) ।

—उदना या करना, मु, सानद-सुख जीव
(स्वा प से), मु (स्वा आ से), नद
(स्वा प से) ।

—पदना, मु, सुख निर्वृति लभ् (स्वा आ-
अ) ।

चौच, स स्त्री [स चयु-चु (स्त्री)] जोटी टि-
(स्त्री), बुद, चयुका, सपाटिका । २ मुखन् ।
चौचला, स पु, दे 'चौचल' ।

चोआ, सं पु (हि चुआना) गघ, गांधिक,
गघद्रव्यन् ।

चोखर, स पु (हि चून् = आटा + करार =
छिलका) कढगर, तुष, धान्यत्वच् (स्त्री),
कुम्पन् ।

चोखा, वि (स चोख) बुद, केवल, पवित्र
२ शुचि शुद्धात्मन् ३ तीक्ष्ण, निश्चित ४ दे-
'भरता' ५ उत्कृष्ट, उत्तम ।

चोगा, स पु (हि चुगना) खगलाव,
पश्चिमव्य, विहगाशनन् ।

चोगा, स पु (जु) चयुक्, प्रकार-रक ।

चौचला, स पु (हि चौच) विभ्रम,
विदास, रस्तितामिनय, लोटा, हाव ।

चोज, स पु (हि चौच) सुमापिन,
वेदगध्य, नमालाप २ हास्य, परिहास ।

चोट, स स्त्री (स चुट् = काटना >) अमि आ
निर्-भात, प्रहार, आहति (स्त्री), ताडन
पान । २ मण प, छन ३ क्षान्ति-क्षतिः

(स्त्री) ४ वेदना, मनोव्यथा ५ निग्रम
विषम-चात यग ६ सम्बन्धो विवाद ।

—करना, कि स, प्रह (भ्वा प अ), धि
(स्वा प अ), तुद् (शु प अ) आहन्
(अ प अ) ।

—खाना, कि अ, आहन् प्रह तुद् (कर्म) ।

—पर चोट, मु, सततापाता, प्रहारपरपरा,
२ अत्र विपत्, परपरा ।

चोटा, स पु (हि चोआ) मत्स्यजीरस ।

चोटी, स स्त्री (स चूडा) जु(ज्)टिका,
शिखा, शिखर-क २ शिखर, शृंग, सानु
(पु, न) अत्र शिखा मूर्धन् (पु)
३ शिखर, शिखर ४ वेणीबधनसूत्र ५ वेणी,
रज्जु (स्त्री) ।

—का मु, अग्रम, अग्रगण्य, उत्तम श्रेष्ठ ।

चोटीदार, वि (हि + फा) शिखावत्, सानुमत्
२ सूच्याकार, शकाकृति ।

चोहा, स पु, दे 'चोर' ।

चोव, स स्त्री (फा) षटमवप स्वाणु स्थूणा
२ शटि (स्त्री) दट ।

—चीनी, स स्त्री, काष्ठोषधेद ।

—वार, स पु (फा) चैत्र-दट शटि भर
पाणि (पु)-हस्त २ दावारिष, दटपात्रुल
३ रक्ष-दट, पुरुष ।

चोया, स पु, दे 'चोला' ।

चोर, स पु (स) चौर, कुभीर (ल) क,
कुभीर, पैकागारिक, दस्कर, दस्तु, प(पा)-
दस्कर, परास्कदि (पु), मोषक, स्तेन ।

—खिडकी, स स्त्री, पक्षदार, पक्षकम् ।

—चकार, स पु, दे 'चोर' ।

दरवाजा, स पु, प्रच्छन्न-अनर शुभ-शुभ द्वारम् ।

—सीड़ी, स स्त्री, उप प्रच्छन्न-गूढ सोपानम् ।

चोरटा, स पु, दे 'चोर' (चोरटी, स्त्री) ।

चोरी, स स्त्री (हि चोर), मोषण, अपह-
रण २ चौर्य, चो(चो)टिका, चोरण स्तेय
स्त्री, मोष ।

—करना, कि स, दे 'चुराना' ।

—का माल, स पु, चोरित अपहृत-मुठित,
द्रव्यम् ।

—चोरी, कि वि, अग्रवाञ्छ, निवृत्त, रहसि
(सर अन्य) ।

—यारी, स स्त्री, निदितकर्मन् (न), पापम् ।

—से, कि वि, अलक्षित, प्रच्छन्नम् ।

चोल, स पु (स) दक्षिणपथे प्रातिविशष
चोला २ वनस्थ जन ३ ४ दे 'चोला
चोली' ५ कवच ६ बल्कलम् ।

चोला, स पु (स चोल) लव, कुर्पासक
युतक २ दे 'चोली' ३ कचुक, प्रावार
रक ४ नावूलकरक ५ शरीरम् ।

—छोड़ना, मु, वतु त्यन् (भ्वा प ॥) ।

—चदलना, मु, देहान्तर प्राप (स्वा उ अ)
प्रेत्य भू ।

चोली, स स्त्री (स) चोल्क, चोद-की
व(कु)जुनी लिना, कपूक, कुर्पासक कम् ।
२ दे 'चोला' (१) ।

—दामन का साथ, मु, प्रगाढ, सत्य सौहार्द
मित्रता प्रणय ।

चोषण, स पु (स न) चूषण, चूषा, चोर
२ स्तन स्तन्य क्षीर, पानम् ।

चोष्य, वि (स) चूषणीय, चूष्य ।

चौक, स स्त्री (हि चौ + स कप), (आभस्मिक)
कप पन, साध्वसात्त्रिप, सहसा स्फुरणम् ।

—उठना या पड़ना, कि अ, सहसा कप
स्पद् (भ्वा आ से)-स्फुर (वृ प से) ।

चौकना, कि अ (हि चौक) दे 'चौक
उठना' २ सहसा अवबुध् (दि आ अ)-
जागृ (अ प से) ३ विविध (भ्वा आ
अ)-आश्चर्यचकित (वि) भू ।

चौकाना, वि स, व 'चौकना' के प्रे रूप ।

चौतरा, स पु, दे 'चहूतरा' ।

चौतीस, वि (स चतुर्विंशद) ॥ पु, उक्ता
सरया, तदोषवाकी (१४) च ।

चौती(वि)सठौ, वि, (हि चौतीस) चतुर्विं
शत्तम भौम, चतुर्विंश शी शम् ।

चौध, स स्त्री, दे 'चकावीध' ।

चौधवाणा, कि अ, दे 'चुंभलाना' ।

चौर, स पु (ल नामर) चमरम् ।

चौरि, स स्त्री (हि चोर) अवचूल्क न
रोमशुच्छ २ दे 'चमरी' ।

चौसठ, वि (स चतुर्विंश स्त्री) स पु,
उक्ता सरया, तदोषवाकी (१४) च ।

चौसठवाँ, वि (हि चौसठ) चतुर्विंशतम
भौम, चतुषष्ट क्षीट (पु स्त्री न) ।

चौ—, वि (स चतुर) केवल समास के बाद में ।

—कोना—कोर, वि, दे 'चारकोना' ।

—खैट, य पु, चतुर्दिश, दिक्चतुष्टय यो २ भूमण्ड, पृथिवी । कि वि, दे 'चारों तरफ' ।

—खैरा, वि, दे 'चारकोना' ।

—गिर, कि वि, दे 'चारों तरफ' ।

—गुना, वि चतुर्गुण पाण, चतुर्गुणित-ता तम् ।

—पत, वि चतुष्टय, चतुर आहूय आवर्तिन ।

—पहल, वि, चतुर्भुज चतुष्पाद चतुर्बाहु ।

—पहियार वि, चतुष्पद । स स्त्री, चतुष्पद वाहनम् ।

—नासा, स पु, चतुर्मास, वर्षा (स्त्री षष्ठ) प्राण्य (स्त्री) ।

—सुरा, वि, चतुर्मुख, चतुरानन । स पु, प्रहन् (पु) ।

—राहा स पु, चतुष्पद य, चतुष्कम् ।

—हरी, स स्त्री, सीमाचतुष्टय-यो ।

चौक, स पु (स चतुष्क) प्रवण, चतुष्पथ-य, आगत्य, सस्थान । २ मुख्य प्रधान, आपण निगम इष्ट ३ अधिक, अगण य, चारक २ ५ चतुरस्रवेदि (स्त्री) ५ पुरोवर्तिदत्तचतुष्टयम् ।

चौकड़ी, स स्त्री (हि चौ = चार + स कला = अग >) प्लुत नि (स्त्री) बलनम् । २ नरचतुष्टय यो ३ चतुरद्वय वाहनम् ।

—भरना, कि अ, बल् (स्था प से), बल्यु (स्था आ अ) ।

चाल—, स स्त्री, चाल-दुष्ट, चतुष्टयी, पूर्व, मङ्गल मङ्गली ।

मूलना, पु, विवर्तयपिमूढ (वि), नन् (णि आ से), आनुलीम् ।

चौकना, वि (हि चौ-चार + स कर्ण >) अवहित, सावधान, जागृन्, प्रमादशून्य ।

—रहना, कि अ, अवहित-जागृन् (वि) स्या (स्था प अ) ।

चौकस, वि (हि चौ-चार + कस-कसा हुआ >) दे 'चौकना' २ उपविन्, उद्योगिन् ३ ययार्थ, ययानय ।

—रहना, कि अ, सावधान-अप्रमत्त (वि) स्या (स्था प अ) ।

चौकसी, स स्त्री (हि चौकस) जागृकता, सावधानता, दक्षता ।

चौका, स पु (स चतुष्क) चतुष्टय, वस्तु चतुष्टयी २ पाक, शाला गूर, महानम, रसनी ३ भोजन, शाला-गूह-अगार ४ अग्रय दत्तचतुष्टय ५ अगण य ६ चतुरस्रशिला ७ शिखरकुल (गहना) ।

चौकी, स स्त्री (स चतुर्वी ~) आसन, चरण पाद, पीठ पीठ, *चतुष्टयी २ दे 'कुसी' ३ निवेशस्थान, दे 'पकाव' ४ हविर्ग (न) ५ रश्मिनिवास, प्रहरिशाला ६ शैवेयक, कठामूषणभेद ७ जागृकत्व, सावधानता ।

—देना, कि अ, आमना क्षयिष् (प्रे) २ रक्ष (स्था प से) ।

—दार, स पु (हि + का) गृह, ५ पाल, प्रहरिन्, रसक २ वैदालिक, वैद्यविक ।

—दारी, स स्त्री, रक्षा, श्रुति (स्त्री), अवेक्षण, प्रहरित्व २ रक्षा प्रहरित्व, चेतन शुक्लम् ।

चौखट, स स्त्री (हि चौ-चार + काठ >), *चपाणवन, चतुष्काष्ठ २ देहली-हि (स्त्री), दाराविही, गृहावग्रहणी ३ दारम् ।

चौखटा, स पु (हि चौखट) *चतुष्काष्ठक, *चित्र-दर्शन, परिवेष्टन-चलनम् ।

चौगान, स पु (फ) पतन्यामक पलमेष्ट २ सारिदण्डकीशोधनम् ।

चौहा, वि (हि चौ + पाट) वर, परिणाह वर (स्त्री (स्त्री)), प्रयु, विमाल, विस्तृत, विगन, विस्तीर्ण ।

—करना, कि स, प्र वि, तन् (त व से), प्रस (प्रे), विस्तृ (क् उ से पा प्रे), प्रय (चु) ।

चौहाई, चौहान, स स्त्री (हि चौहा) तयकत्व, विस्तार, विशालता, वृद्धता, पार्थक्य, परिणष्ट, विस्तीर्णता ।

चौतरा, स पु, दे 'चतुतरा' ।

चौताल, वि, (हि चौ + ताल >) चतुस्ताल । स पु, होलिकागीति (स्त्री) २ चतुस्ताल ।

चौथ, स स्त्री (स चतुर्थी) शुद्धा चतुर्थी २ कृष्णा चतुर्थी ३ चतुर्थीश ४ करभेद ।

चौथा, वि (स चतुर्थ) तुर्थ, तुरीय । स पु, चतुर्थक, मृतकरोनिभेद ।

चौथाई स स्त्री (हि चौथा) चतुर्थतुर्थ तुरीया अष्ट भाग, पाद, तुर्थ, तुरीय, चतुर्थम् ।

चौथिया, (हि चौथ) चतुर्थकन्वर २ चतुर्थी शाधिकारिन् ।

चौथी, वि स्त्री (स चतुर्थी) तुर्थी, तुरीया । स स्त्री, वैवाहिकरातिभेद, *चतुर्थी ।

चौथे, कि वि (हि चौथा) चतुर्थस्थाने ।

चौदस, स स्त्री (स चतुर्दशी) १ २ शुद्ध-कृष्ण-चतुर्दशी ।

चौदह, वि (स चतुर्दशन्) स पु, उक्ता सुख्या, तद्बोधकाकौ (१८) च ।

चौदहवीं, वि (हि चौदह) चतुर्दश शी शम् ।

चौधराई, स स्त्री (हि चौधरी) मुख्यतः नेतृत्व प्रधानत्वम् ।

चौधरानी, स स्त्री (हि चौधरी) मुख्या, प्रधाना, नेत्री ।

चौधरी, स पु (स चतुर्धरोण > अपवा स चतुर = तकिश + धारिन् >) अग्रणी (पु), नायक, पुरोण, धुरीण ।

चौपई, स स्त्री (स चतुष्पदी) छन्दोभेद ।

चौपट, वि (हि चौ = चार + पट किशदा) अरक्षित, आवरण-आच्छादन, हीन, प्रकट, अपावृत्त ।

चौपट, वि (हि चौ = चार + स पाट चौदार्) नष्ट वि, ध्वस्त, क्षाण अन्ध्र, नाशित ।

—करना, कि स, उच्छिद् (३ प अ) विध्वंस नाश (प्रे), वसद् (प्रे) ।

चौपड़, स स्त्री (स चतुष्पट ३ >) चतुष्पट, अणक्तीहामेद २ तस्य पट अक्षा च ।

चौपाई, स स्त्री (स चतुष्पादी >) छन्दोभेद ।

चौपाड़, स पु, दे 'चौपाल' ।

चौपाया, स ॥ (स चतुष्पाद) चतुष्पद, चतुष्पाद (पु) २ पञ्च (पु) ।

चौपार ल, स पु (हि चौपार ल) गोष्ठी समा, गृह, आशान नी ।

चौबच्चा, स पु, दे 'चहबच्चा' ।

चौवा, स पु (स चतुर्वेद) आक्षेपवाति भेद २ मधुरावासी पुरोहित ।

चौवाहन, स स्त्री (हि चौवा) चतुर्वेद, मार्गा पत्नी ।

चौवारा, स पु (हि चौ + वार = वार) अट्ट, अट्टाल, चद्रशाला, शिरोगृह, चूला । २ दे 'चौपार' ।

चौधारा, कि वि (हि चौ + वार - वार) चतुर्थवारम् ।

चौबीस, वि [सं चतुर्विंशति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सरया तदकौ (२४) च ।

चौबीसवीं, वि (हि चौबीस) चतुर्विंशति सम-भीम, चतुर्विंश-शी शम् ।

चौबे, स पु दे 'चौना' ।

चौबोला, स पु (हि चौ + बोल) मात्रिक छन्दोभेद ।

चौमड़, स पु, (हि चौ-दाद) सर्वण-दन्त, दण्डा, दादा ।

चौमजिला, वि (हि चौ-फा मजिल) चतुर्भूमिक ।

चौमुहानी, स स्त्री, दे 'चौक' (?) ।

चौर, स पु (स) दे 'चोर' ।

चौरस, वि (हि चौ + एक) रस तुल्य) सम, समस्थ, समरेख, सपाट २ चतुर्भुज, वर्गाकार ।

चौरा, स पु, दे 'चतुरा' ।

चौरानवे, वि [सं चतुनवति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता सरया तदकौ (१४) च ।

चौरासी, वि [सं चतुरशीति (नित्य स्त्री)] स पु, उक्ता मरुया, तदकौ (८४) च । स स्त्री, चतुरशीतिलक्षयोनय (बहु) ।

चौरैठा, स पु इ (हि चार + पीठा) पिष्ट शृणिन-नटुल धान्यास्थि (म) ।

चौर्य, स पु (स न) स्तय, स्तैन्य, चोरिका, चोरणम् ।

—रत, ॥ पुं (स न) गुप्त, निधुन रति (स्त्री) ।

चौटकर्म, स पु (स-र्मन् न) चौड, चौट, मुण्डन चूडाकरण, सरवाट ।

चौलड़ा, वि (हि चौ + लट) चत मूत्र, चतुर्भुज (हार इ) ।

चौला, स पु, दे 'लोबिया' ।

चौला(रा)ई, सं स्त्री, तदुत्पीय, शुष्क शक, चतुर्वीर्य, मेघनाद ।

चौवन, वि [स चतुःपञ्चाशत् (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सरया, तदकौ (५४) च ।
 चौसठ, वि [स चतुःषष्टि (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता सरया, तदकौ (६४) च ।
 चौसर, ॥ पु (स चतुस्सारि) दे 'चैपद' ।
 चौहट्टा, स पु (हि चौ + स इट्ट) दे
 'चेक' (१२) ।
 चौहत्तर, वि [स चतुःसप्तति (नित्य स्त्री)] ।
 ॥ पु, उक्ता सरया, तदकौ (७४) च ।

चौहरा, वि (हि चौ) चतुर्गुण-पित २ चतु
 ग्यु, चतुराष्टु, चतुरावर्तित ।
 च्यवन, स पु (स) ऋषिविशेष । (स न)
 क्षरप, स्रवणम् ।
 —प्राप्त, स पु (स) अवलेहभेद (आयुर्वेद) ।
 च्युत, वि (स) स्तुत, क्षरित २ पतित, भ्रष्ट
 ३ विमुख, पराङ्मुख ४ पदभ्रष्ट, अधिकारभ्रष्ट ।
 च्युति, स स्त्री (स) पतन, स्तरण २ अपि
 कारभ्रष्ट, पदहानि (स्त्री) ३ दोष,
 स्खलनम् ।

छ

छ, देवनागरीवर्णमालाया सप्तमी व्यञ्जनवर्ण,
 चकार ।

छगा, छगुरा, वि (हि छ + भगुरी) पद
 गु, पञ्चगुरि ।

छँगुलिया, छँगुली, स स्त्री, दे 'छिगुनी' ।

छटना, क्रि अ (हि छटना) कृ-उद्भू वि
 उद्ग्रह (कम), २ चट्छिद् (कर्म)
 ३ अप-४ (अ प अ), प्रवृत्त ४ छि-विशृ
 (कम), कृषी भू ।

छटा हुआ, सु, चूँच, चतुर, दक्ष, निपुण ।

छँटना, क्रि प्रे, व 'छँटना' के प्रे रूप ।

छँटाई, स स्त्री (हि छँटना) वरण,
 उद्ग्रहण, घटन २ अवच्छेद, निवृत्तन
 ३ प्रयत्नकरण ४ अवच्छेदन प्रयत्नकरण, चेतन
 मृत्ति (स्त्री) ।

छन्द, स पु [स छन्दस (न)] कृत् २ वेद,
 छनि (स्त्री) ३ छन्दशास्त्र ४ अमिलाव,
 कामना ५ स्वच्छन्दता, स्वैरिता ६ कपट,
 छ ७ सुखि (स्त्री), उपाय ८ अमिप्राय
 ९ पथ, श्लोक ।

—शास्त्र, स पु, छन्दशास्त्र, कृत्तविज्ञानम् ।

छ, छ, वि [स छट् (वि)] । स पु- उक्ता
 मर्या, तदकौ (६) च ।

छई, स स्त्री, दे 'क्षयी' ।

छक्रहा, स पु (स छक्र + ट) प्रवहण, घान,
 वाहन, शक्तिश २ वृषभवाहन, बलीवर्द्धकट,
 यत्रा ।

छकना, क्रि अ (स चकन) चक् (म्वा उ
 से), छप् (दि प अ), परि-स-छप् (दि प

अ) २ क्षीव् (म्वा दि प से), मद्
 (दि प से, माघनि) ।

छकना, क्रि अ (स चक >) विस्मि (म्वा
 आ अ), चकित विस्मित (वि) भू २ वच्
 प्रसार (कर्म) ।

छकालूक, वि (हि छकना) तुल, तुष्ट २ परि
 पूर्ण ३ क्षीर, मद्य ।

छकाना, क्रि, स, व 'छकना' (१, २) ॥
 प्र रूप ।

छक्का, स पु (स चक्) विदुषट्कृत्युन क्षीडा
 पत्र २ वटवस्तुसमूह ३४. अक्ष कपट,
 भेद ५ दूत, अक्षकीडा, देवन ६ रक्षा,
 चैतन्यम् ।

—पञ्जा, सु, कृतोपाया, कपटप्रवधा ।

—पञ्जा करना, सु प्रतृ (प्रे), वच् (जु) ।

छक्के छटना, सु, पैर्य छप् (पु छ अ),
 अधीर मग्नीत्साह (वि) भू ।

छगड़ा, स पु (स छागळ) अज, घुन ।

छगन, स पु (म छग >) शिशु, स्तनपथ ।

—मगन, स पु (वङ्ग) स्तनपथा, शिशव
 (दोनों वङ्ग) ।

छगुनी, स स्त्री, दे 'छिगुनी' ।

छछुन्दर, सं स्त्री (स छछुन्दर-री) ग्ध
 सुखी, दिवाधिका, दीर्घतुदी २ अधिक्रीडनक
 भेद ।

छजना, क्रि अ, दे 'पचना' ।

छज्जा, स पु (हि छाजन) नीम, पटलप्रात
 पट, चाल, नीम, बलीक ४ २ प्रमीव, वरह,
 विजदी दि (स्त्री) ।

छटपटाना, कि अ (अनु) दे 'तटफटाना'
२ अनिर्वृत भशात् 'याकुल' (वि) भू ३ अत्यन्त
अभिलष (भ्वा ङ से) ।

छटपटी, स स्त्री (हिं छटपटाना) अभी
रता, आकुलता २ लालसा, तीव्रोत्साह ।

छट्यौक, स स्त्री (■ षट्क) सेटक-सेर
चौदशांश ।

छटा, स स्त्री (स) कालि-श्रीति छुनि (स्त्री)
प्रभा २ चारुता शोभा सौन्दर्य रूप
२ दामिनी, विद्युत् (स्त्री) ।

छटा, वि दे छटा ।

छटा, वि (म षष्ठ ष्ठी छम्) ।

छटी, स स्त्री (स षष्ठी) नमस्त षष्ठे दिवसे
षष्ठौबीपूर्णा ।

—का दूध याव दिलाया, सु, अनुशास्त्र
(अ प से) दह (जु) ।

छह, स स्त्री पु (स छर >) (१२) धातु
काष्ठ दह १ लक्ष, याष्टि (स्त्री) लघुद ।

छहा, स पु (हिं छह) पद्मभूषणभेद ।

छहा, वि (हिं छहना) एक, एककिन्,
असहाय, अद्वितीय एवम् ।

छहिया, स पु (हिं छही) क्षारपाल,
दीवारिक ।

छही स स्त्री (हिं छह) याष्टि (स्त्री)
षष्ठ २ क्षेत्र वनयाष्टि ।

छह, स स्त्री (स छर >) छदिस (न),
छदि (स्त्री) पटल २ अनपटल, अनहटा
दन्, पटल १ विज्ञान उलोच ।

छहरी, स स्त्री (स छर) शनशलाका,
आतपत्र, आतपवारण, छायामित्र, पटोदज
२ मध्य प ३ वपोताना जेनुच्छत्रम् ।

छहीसा, वि (हिं छहीस) पूर्ण मायिक
मायिन्, छटिन्, वापरिक ।

छहीसी वि स्त्री (हिं छहीसा) छलिनी,
मायिन्, वापरिकी, २ कुलटा, पुरचली ।

छहा, स पु (स छर) करह, मधुकोश,
चषा, छत्रव २ गण, समूह १ छत्र,
आतपत्रम् ।

छहीस, वि [स षट्विंशत् (नित्य स्त्री)]
स पु उक्ता सख्या, लक्षौ (१६) च ।

छहीसवी, वि (हिं छहीस) षट्विंशत्तम
मी २ षट्विंशतीत्यम्

छह, स पु (स न) दे 'छहरी' २ राजच्छत्र
३ वृहच्छत्र ४ (सुमी) छत्रम्-कम् ।

—छौह, स स्त्री, छत्रच्छाया, शरण, आश्रय ।

—घारी,—पति, स पु, नृप, भूप ।

छही, स पु, दे, 'क्षत्रिय', २ दे 'छहरी' ।

छहाम, स पु (हिं छह+दाम) पणचतुर्थ,
दे दमही ।

छह, स पु [स छयन् (न)] छल, कपट
२ गापन गूहन २ न्याय, मिषम् ।

छन, स पु (अनु) छगिति, शब्द ध्वनि
(पु) सौत्कार २ क्षणित, शिञितम् ।

छन, स पु, दे 'क्षण' ।

छनक, स स्त्री (अनु) छणछण वणक्षण
शब्द निनद, छणछणायित, क्षणक्षणायित,
दे 'छन्' (१२) ।

छनकना, कि अ (अनु छनछन) छण
छणायते क्षणक्षणायते (ना धा), छणछण
शब्द कृ, वण (भ्वा प से), शिञ (अ
भा से) २ सौत्कार कृ ।

छनकमनक, स स्त्री (अनु) शिञित, रणित
२ दे 'सायबाव' ।

छनकाना, कि स, व 'छनकना' के प्र रूप ।

छनछनाना, कि अ स, दे 'छनकना',
छनकाना ।

छनना, कि अ (स छरण) तितउना छुप्
(वि प अ), निर्गल्क्षार् (भ्वा प से)
२ क्षतविक्षत (वि) भू ।

छनवाना, छनाना, कि मे, व 'छानना' के
प्रे रूप ।

छनाक-का, स पु (अनु) दे 'छनक' ।

छन्न, वि (स) आ प्र-समा, छन्न आ प्र म,
वृत्, निगूढ, विहित २ छन्न, तिरोदित, अदृष्ट ।

छप, स स्त्री (अनु) आरफालन, ध्वनि (पु)-
शब्द २ आम्फालन, विशेष ।

छपका, स पु (अनु) जल-आरफाल विशेष
२ पिटवपिधानम् ।

छपछपाना, कि अ (अनु) छपछपायते
(ना धा), छपछपशब्द कृ २ श्वत् नृ
(भ्वा प से) ।

छपना, कि अ (हिं चपना = दबना)
अर्लछ (कर्म), मुद्रावित चिह्नित (वि)
अ २ छप (कर्म) २ छपना (कर्म) २ छपना (कर्म) ।

छपरस(खा)ट, स खी (हि छपर+खाट)
•महाद्वीसखा ।

छपवाना, कि प्रे, व 'छापना' के प्रे रूप ।

छपाई, स खी (हि छापना) (मुद्राखर)
अकन, मुद्रण २ अकन-मुद्रण, प्रकार ।

छपाका, स पु (अनु) जलारफालनशब्द
२ तोयारफाल ।

छप्पन, वि [स षट्पचाशत् (नित्य खी)]
स पु उक्ता सरया, तदकौ (५६) च ।

छप्पय, स पु (सै षट्पद) हिंयां छन्दोभे ।

छप्पर स पु (हि छोपना) तुण, छदि
(खी) पटल २ उटअ ज, कुटीर ।

—राट, स खी दे 'छपरखाट' ।

—छाना वा डालना, कि स, तुणादिभि
आ छट (जु) ।

छबचा, बी स पु खी (देश) दे 'टोकरा-नी' ।

छबजि, स खी, दे 'छवि' ।

छबीला, वि (हि छब) सुदर [-नी (खी)]
शोमन [-नी (खी)] रूपवत्-वातिमत्
[-नी (खी)] ।

छबीस, वि [स षट्विंशति (नित्य खी)] ।
स पु, उक्ता सरया, तदकौ (२९) च ।

छबीसघाँ, वि (हि छबीस) षट्विंशति
तम मीमम्, षट्विंश शीशम् ।

छमड, स पु (स) मातृपितृ-जनक, हीन
बालक, अनाथ ।

छमक, स खी (अनु) दे 'छसक' ।

छमकना, कि अ, (अनु० छम) दे छम
छमाना ।

छमछम, स खी (अनु) चारासार चारासपात,
शब्द २ छमछम, रणित निनद, छमछमा
पित, छगरकार, क्षणत्कार । कि वि, सछण
(म) कारम् ।

छमछमाना, कि अ (अनु) छमछमायते
(ना था) छमछमनिनद ॥ २ दे 'चमचमाना' ।

छमा, दे 'क्षमा' ।

छमाछम, स खी (अनु) दे 'छमछम' ।

छरवना, कि अ (अनु छर) सछरछरशब्द
विक्षिप् विकृ (कर्म), छरछरायते (ना था) ।

छरना, कि अ (स छरण) दे 'छपवना' ।

छरहरा, वि (हि छट) कृश, तनु, कुशाग
[-नी (खी)] २ उषमिन्, उषोगिन् ।

छर्दन, स पु (स न) प्र, छर्दि(दी) का,
वम मि (खी), वमन, वमयु (पु), वाति
(खी), उद्गार, उल्कासिका ।

छर्ना, स पु (अनु छर) लोह-सीसक,
गुलिका २ दे 'वक्की' ३ वेगक्षिप्त जलकण
समूह ।

छल, स पु (ल पु न) कूट, कपट, कैतव,
छन् (न), प्रतारणा, प्र, वचना अतिसपान
२ न्याय, मिथ ३ चतुदश पदार्थ (न्या) ।

—बल, स पु, कूट, उपाय कल्पना प्रवथ ।

—कपट, स पु, दे 'छल' (१२) ।

—छिद्र, स पु, दे छल (१) ।

छलक, स खी (हि छलकना) परिवाह,
उपरिस्त्राव ।

छलकना, कि अ (अनु छल) उपरि क्षु
परिवह (भ्वा प अ), छरित्च (कर्म),
प्रवृ (भ्वा आ से), स्वीत-वृद्ध, अल (वि)
मू ।

छलकाना, कि स, व 'छलकना' के प्रे रूप ।

छलछलाना, कि अ (अनु) छलछलायते,
(ना था), सछलछलशब्द क्षु (भ्वा
प अ) ।

छलना, कि स (स छलन) छलयति (ना था),
अति अभि, सथा (जु उ अ), प्रवृ कृद् (मे),
वक् (जु) । स खी, दे 'छल' १ ।

छलनी, स खी (खी चालनी) नितव ।

—करना, सु, अनेकवृष्टि निर्भिद् (क प अ)-
वथ (दि प अ) ।

छलौंग, स खी (हि उछल+स अग) प्लव,
प्लवङ्ग, प्लुत ति (खी), हाप शपा, वलितम् ।

जैची—, स खी, उट, प्लव प्लुति (खी)-
पतन इ ।

जैची—, स खी, प्र, प्लव प्लुति इ ।

—भारना, कि स, (जैची) उपत् (भ्वा प स),
उत्प्लु (भ्वा आ अ) । आगे (आगे) वल् (भ्वा
प से), प्लु । (नीचे) अवप्लु ।

छलावा, स पु (स छल >) मिथ्या, अनल
अग्नि (पु)-दीप्ति (खी), दीप्याभास,
२ मायादृश्य, इदजालम् ।

छलित, वि (स) विप्रलम्भ, वचित,
प्रतारित ।

छलिया, वि दे 'छली' ।

द्विचुला, वि, (हि चुला) आत्व-गाथ, नर,
गा(गा)भीरंशय, वतान, गाथ ।

द्विचुलाई, सं स्त्री (हि द्विचुला) गाथना,
गभीरताभाव ।

द्विचुली, सं स्त्री (हि द्विचुला) घटशक
लनारण, बालक्रीडाभेद ।

द्विचोरा, वि (हि द्विचुला) क्षुद्र, अधम,
अधम, तुच्छ, गभीरंशय ।

द्विचोर(रा)पन, स पु (हि द्विचोरा)
क्षुद्रता, गभीरताभाव, अधमता, तुच्छता ।

द्विटकना, कि अ, (सं क्षिप्त >) अवा-आ प्र
वि-वृ (कर्म), विक्षिप्त (कर्म), प्र-सृ
(स्वा, प अ) २ प्रकाश विपुत (स्वा
आ से) ।

चौदनी वा—, न पु कौमुदीप्रसार, ज्योत्स्ना
विस्तार ।

द्विटकाना, कि स, व 'द्विटकना' के सकर्मक
रूप ।

द्विटकना, कि स (हि द्विटकना)
२ अवा भानि, सिच (तु प अ) अभि
प्रसृ-उत्थ (स्वा प से), विट्-वृ-वृणा
विक्षिप् (तु प अ)-विकृ (तु प से) ।

द्विटकवाना, द्विटकामा, व 'द्विटकना' के
प्र रूप ।

द्विटकाव, सं पु (हि द्विटकना) अवा आ,
सेक, प्रोक्षणम् ।

द्विटना, कि अ (हि द्विटना) आ प्ररम्
(कर्म), उप प्र क्रम् (कर्म) ।

द्वितरना, कि अ, दे 'वितरना' ।

द्विति, स स्त्री (स) द्वेदन, लवन, कृन्तन,
अधनम् ।

द्विटना, कि अ, व 'द्विटना' के कर्म रूप ।

द्विटरा, वि (स द्विट >) विरल, सच्छिद्र
पेलव, तनु २ जीर्ण शीर्ण ।

द्विटाना, कि प्र व 'द्विटना' के प्रे रूप ।

द्विटि, स स्त्री (स) कुठार, परशु ।
२ वज्र-ज, कुलिश, पवि ।

द्विट, स पु (स न) विवर, सुधिर, रघ,
भिल २ दोष, वैकस्य, न्यूनता ।

द्विद्वान्वेषण, सं पु (सं न) पुरोभागित्व,
दोषमाहित्व, निदकत्वम् ।

द्विद्वान्वेषी, वि (सं विन्) पुरोभागिन्,
दोषवैकस्य (पु), दोषमाहित्व निदक ।

द्विद्वित, वि (सं) सच्छिद्र, सरध, सविदर,
२ विद्र ।

द्विन, स पुं दे 'क्षण' ।

द्विनना, कि अ, व 'द्वीनना' के कर्म रूप ।

द्विनरा, वि पु, (हि द्विनरी) व्यभिचारिन्,
परदारगामिन् ।

द्विनरी, वि स्त्री (स द्वित्र + नारी >)
कुलटा, व्यभिचारिणी ।

द्विनवाना, द्विनाना, कि प्रे, व 'द्वीनना' के
प्रे रूप ।

द्विनाल, न स्त्री, दे 'कुलटा' ।

द्विष, वि (स) कृत्, खल, दात, दित, छात,
द्विष, वृषण ।

—भिष, वि (सं) अवा आ प्र वि-कीर्ण,
मिरल २ खल, कृत्, गदित इ इ अस्त
व्यस्त ।

द्विषकरी, द्विषकी, सं स्त्री (हि द्विषयना)
गृहगोधा धिका, व्येष्टा छो, मुक्ली, गृहालिका,
कुल्यमन्स्य २ तक्षी (नारी) इ वर्णभूषण
भेद ।

द्विषटी, स स्त्री (स चिषिट >) तट एव
शकलम् ।

द्वि(छु)पना, कि अ, [स द्विपू (परदा
आदि) डालना] तिरोम्, अतर्-इ (अ, प
अ) ली (दि आ अ), अतर्-तिरो, भा
(कर्म) अदृश्य प्रच्छन्न-अपवारित (वि) भू ।

द्विषा, वि (हि द्विपना) अतर्हित, तिरो,
हित भूत ।

द्विषा हस्तम्, वि पु, अज्ञान अप्रसिद्ध-अवि
ख्यात-गुणिन् ।

द्विषे द्विषे, कि वि गुरुं, शुभ, निभृत, प्रच्छन्नम् ।

द्विषाना, कि स, हि (द्विपना) अतर्-
तिरो, भा (जु उ अ), अपवृ (प्रे),
गुह (स्वा उ से), प्रच्छद् (प्रे) ।
स पु, अनर्थान्, तिरोषान, गू (गो) हनं,
गोपन, मवरणम् ।

द्विषाव, स पु (हि द्विषाना) दे 'द्विषाना'
सं पु ।

द्वियानवे, वि तथा स पुं, दे, 'द्वानवे' ।

द्विपारिस, वि [स षट्चत्वारिंशत् (नित्य स्त्री)] । स पु, उक्ता सरया, तदकौ (४६) च ।

द्विपारिष्ठ, वि [स षट्पठि (नित्य स्त्री)] । स पु उक्ता सरया, तदकौ (६६) च ।

द्विपारिप्ती, वि, [स षट्पठि (नित्य स्त्री)] । स पु उक्ता सरया, तदकौ (८६) च ।

द्विपारिष्ठा, स ॥ (स शक्त) (फलादिका) त्वच (स्त्री) २ वस्त्व-स्त्व, वस्त्वल ल ३ सुप, वृष, वृषम् ।

—उत्तारना, कि स, दे 'छाल उत्तारना' ।

द्विपारिष्ठा, कि अ, व 'छालना' के कर्म रूप ।

द्विपारिष्ठा, द्विपारिष्ठा, कि प्र, व 'छालना' के प्र रूप ।

द्विपारिष्ठा, वि [स षट्सप्तति (नित्य स्त्री)] । स पु, उक्ता सरया, तदकौ (७६) च ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (स द्विपारिष्ठा) क्षुण्णना, क्षय, क्षयधु (पु) क्षयति (स्त्री) ।

द्विपारिष्ठा, कि अ (हि द्विपारिष्ठा) क्षु (अ प से), क्षुण्णक्षय द्विपारिष्ठा ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (स द्विपारिष्ठा) (जलादिका) क्षण गिका, विदु (पु), क्षीवर, पृथक् २ वक्षमेद, चित्रवल्गुम् ।

द्विपारिष्ठा, स पु (हि द्विपारिष्ठा) दे 'छीट' २ क्षीवरवर्ष, पृथक्पाल २ जल, भास्फाल विशेष ४ अक, लाछन ५ लम्बाक्षेप ।

—देना या मारना, कि स, पुत्रै क्षीकरी किल्द (प्रे) आर्द्रयति (ना था) ।

द्वि, अय, दे 'छि' ।

—छी करना, सु, पुष् (पञ्चमी के साथ सन्नत रूप, जुगुप्सते), कुम्भ, (चु आ से), गद (चु उ से) ।

द्विपारिष्ठा, स ॥ (स द्विपारिष्ठा) क्षिप्त्वम् ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (अनु छी छी) बुद्धि, बुद्धि (स्त्री) ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (स क्षय) अपचय, हास ।

द्विपारिष्ठा, कि अ (स क्षयणम्) क्षि विवृ (कर्म), वृत् (भ्वा प से) ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री दे 'छीट' ।

द्विपारिष्ठा, कि स, (स द्विपारिष्ठा) आन्दिद (क् प अ), द्यति कि क् (भ्वा प अ),

आन्दिप्य ग्रह (क् प से)-द (भ्वा प अ) आन्दिद-नलाय अपह ग्रह ।

द्विपारिष्ठा, स पु (हि छापना) पत्तनमुद्रण वन्मचिचक ।

द्विपारिष्ठा, स पु दे 'छीर' ।

द्विपारिष्ठा, कि स (हि छाल) दे 'छाल उत्तारना' २ तनु क, त्वक्ष-तम (भ्वा प से)

३ अप-व्या-मृज (भ्वा प से) वितुप् (प्रे)

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (हि छुना) भस्त्रय स्पष्ट अनुचिमसर्ग २ स्पृष्टास्पृष्टविचार ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री दे 'द्विपारिष्ठा' ।

द्विपारिष्ठा, स पु, दे 'छुद्र' ।

द्विपारिष्ठा, (हि छुना) (छुनादि से) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) मोचन २ वज्रत, रहितत्व ३ निश्चितता निर्गुति (स्त्री) ।

—पाना, कि अ, विमिर-मुच (कर्म), मोक्ष उद्भू विमुच (कर्म) ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (हि छुना) दे 'छुटकारा' २ भवकाश, क्षण, कार्पण्यमृति (स्त्री)

३ अनप्याय अनप्यायदिवस, विश्रामदिवस ४ विश्राम, काल समय ।

द्विपारिष्ठा, द्विपारिष्ठा, कि प्रे, व 'छोटना' के प्रे रूप ।

द्विपारिष्ठा, वि, दे 'छुद्र' ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री, दे 'छुषा' ।

द्विपारिष्ठा, द्विपारिष्ठा, कर्म कि अ तथा कि स, दे 'द्विपारिष्ठा' तथा 'द्विपारिष्ठा' ।

द्विपारिष्ठा, स पु (स छुर) कृपाण, वृद्ध-छुरी रिका ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (स) छुरी, छुरिका, कृपाणी गिवा, गति पलुका पुत्रिका ।

—मारना, कि स, छुरिकया व्यथ (दि प अ), छुर (तु प से), क्षण (त प से) ।

द्विपारिष्ठा, कि प्रे, व 'छुना' के प्रे रूप ।

द्विपारिष्ठा, स पु (स छुष + हार >) सज्ज मेद, छोहारा २ विद्वज्जुफक, गोस्नानाकार पिठ, सज्जरी, सज्जरी ।

द्विपारिष्ठा, स स्त्री (अनु) मज्जपाठान्तर-द्विपारिष्ठा फुत्कार ।

—भतर होना, न, द्यति तिरोम् ।

छुडा, वि (स तुच्छ) नि सार, असार
२ रिक्त शून्य, शून्यगर्भ ३ निर्धन ।

छुट, सं खी (हि छूटना) दे 'छुटकारा'
(१, २) ३ अवकाश, क्षण ४ ऋणगोष्ठ
५ स्वातन्त्र्य स्वच्छदत्ता ६ प्रमाद, स्खलितम् ।
छुटना, कि अ (स छोटन = काटना >)
वि, मुच (कर्म), येरक्ष (कर्म), दे 'छुट
कारा पाना' २ (पदाव) च्यु (स्वा आ
अ)-अपास् (कर्म) ३ विपुञ्ज (कर्म),
विहिप् (दि प अ) । ४ प्रचल (स्वा ५
से), प्रस्था (स्वा आ अ) ५ (प्रमादाव)
न धनुषा विधा (कर्म) ।

छरीर—, मु, दे 'मरना' ।

छूत, सं खी (हि छूना) अ, स्पर्श, सस्पर्श,
सपर्क २ असदृश्य, स्पर्श सस्पर्श ३ मालिन्य,
दूषण, अशीचन् ।

—का रोग, स पु, सस्पर्शज-सासर्गिक सका-
मक, रोग ।

छूना, कि, स (छोपन) छुप्-स्वृश पराश्रय
(पु, प अ), हस्तेन आलम् (स्वा आ अ),
स स, सपर्क, सस्पर्श, स, स्पर्श, स्थिति
(खी), परामर्श, आलमनम् ।

छूने योग्य, वि, स्वदय, छोपनीय, परामर्शार्ह ।
छूनेवाला सं पु, स, स्पर्शक, स्पर्ष्ट रस्पर्ष्ट (पु) ।
छुआ छुआ, वि, स्पृह, सस्पृह, आलम्ब, छुछि,
परानृष्ट ।

आकाश—, मु, गगन लुब् (स्वा प से) नक्ष
स्पृष्ट, अत्युच्च (वि) वृत् (स्वा आ से) ।

छूँक, छूँकाव, स पु, दे 'जम्ती' ।

छूँकना, कि स (स छी = काटना >) निश्च
(क उ अ), निवार (धु) २ आच्छि
(लु), व्याप् (स्वा उ अ) ३ निश्च
(वि) वृ, सर्वस्व दह (लु)-आच्छि
(ह प अ) ४ परिष्ट (प्रे), परि, बेष्ट (प्रे) ।
५ अव-वि-लुप् (प्रे) निर् अस्त (दि प से),

छूँक, सं पु (स छेक >) विवर, विवर, छिद्र
२ छेद, भेद ३ वि, माण ।

—धनुप्रस, स पु (स) अनुप्रासात्कारभेद,
वर्णना सट्टदावृत्ति (खी) (उ० पावन
पवन)

छेद, स खी (हि छेटना) क्रोधोदीपन,
प्रभोपन २ परिहृत व्ययौक्ति (खी)

३ लीला, विलास, हाव ४ बल्ह, कलि
(पु) ।

—छाव, सं खी, दे 'छेद' (१, ४) ।

छेदना, कि स (हि छेदना) कुप् कुप् रूप
(प्र) २ दे 'छूना' ३ आप्र-रम् (स्वा
आ अ), उपप्र-रम् (स्वा आ अ) ४ अर्-
आयस् (प्रे), उपरम् (क उ अ) ५ अव
परिहृत (स्वा प से) ६ बल्ह छ । सं
पु, 'छेद' ।

छेत्ता, वि (स-चृ) छेदक, लावक, छेदकर,
छिद् । सं पु, वनच्छिद्, काष्ठच्छिद् ।

छेत्र, सं पु, दे 'क्षेत्र' ।

छेद, सं पु (श) छिद्र, विल, विवर, रम्भ,
सुखि (वि) रं, कुहर, रोक, निर्व्यथन, वपा,
सुखि (खी) २ वि, नाश, वि, प्लव
३ दोष, न्यूनता ४ वि, भावक (शणित) ।
छेदक, वि (सं) वैषक, भेदक, छेत्, भेत्,
वैधिन् २ नाशक, प्लवकार ३ विमाजक ।
स पु, वैषनी ।

छेदन, स पु (सं न) वैष, वैषन छिद्रकरण
२ वि, नाशन प्लवसन, वि, नाश ३ कर्तन,
भेदन, लवनम् ।

छेदना, कि स (श छेदन >) व्यध् (दि प
अ), छिद्र विधा (जु उ अ)-क, छिद्रवृत्ति
(ना भा), निभिद् (श प अ), उन्
समुत्-कृ (पु प से) । स पु, दे 'छेदन' ।

छेदने योग्य, वि, छेत्तव्य, छेदनीय, वैष्य ।

छेदनेवाला, दे 'छेदक' ।

छेदा छुआ, वि, छिद्रित, छिद्र, विद्र, निभिन्न ।

छेदा, सं पु (हि छेदना) पुण काष्ठरीद
२ छिद्र, रन्ध्रम् ३ पुण अन्नच्छेद ।

छेदी, वि (सं रिन्) दे 'छेदक' ।

छेना, सं पु (स छेदन >) मिष्टान्नभेद-
च्छिन्ना ।

छेनी, स खी (स छेदनी) तक्षणी, टंक,
मथन २ शिलाभेद ।

छेम, स पु, दे 'क्षेम' ।

छेरी, सं खी, दे 'क्वरी' ।

छेव, स पु (श छेद) आपात, प्रहार
२ मण-न ३ आपातिविपद् (खी) ४ काष्ठ-
सङ्घ ।

छेल ला, स पु (त छवि >) शुभममन्य,
रेन, रूपगदित, सुदेशमानिन्, वेवाभि
मानिन् ।

—चिह्ननिया, त पु, दे 'छेल' ।

छोकरा-चा, स पु (स शाक >) कुमार
रक्ष, दारव बाल लक्ष, मणव वव ।

छोकरापन, स पु (हि छोकरा) वात्य,
कीमर २ यचलता, मोस्येम् ।

छोकरी-दी, स स्त्री (हि छोकरा) कुमारी रिवा,
बाला लिका, बन्धा, दारिका, माणविका ।

छोटा, वि (स धुद्र) अनु, तनु, लघु महत्तर
गौरव, रहित २ अल्प धुद्र, तनु शरीर ३ अनु
गमन्, कनीयस् यवीयम् ४ अवरपद
मान, अरर ।

—यदा, वि, विविध, बहुविध २ उद्यावच,
लघुगुण, अनुमहत् ३ वनिष्ठज्येष्ठ ।

छोटाई, स स्त्री (हि छोटा) अगुना, लघुना
लायन, अगिमन् लयिमन् (पु), २ धुद्रता,
नीचता ।

छोटापन, स पु, दे 'छोटाई' ।

छोड़ना, कि स (स छोरण) उत्पि, सञ्
निर्मुक् (पु व अ), उग्न (पु व से), रपन्
(भ्वा प अ), हा (जु प अ), परिहृ
(भ्वा प अ), रह् (भ्वा (जु) २ धम्
सह् (भ्वा आ से), धम् गृप् (दि प
से), धाम्यति), तिञ् (सन्नत = तित्तथते)
३ छिप् (पु व अ), अत् (दि प से)

४ प्रमादार् न कृ अथवा अनु रथा (भ्वा प
अ) ५ मोक्ष मुच (प्रे) । सं पु, वि उत्
सर्जन, स्वजन, उग्नान, परिहरण, उत्तम
स्वाम, परिहार इ ।

छोड़ने योग्य, वि, त्याज्य, उत्तष्टम्य, परिहार्य ।
छोड़नेवाला, स पु, विहृत्पत् परिहृ
(पु) ।

छोड़ा हुआ, वि, उत्पि-सृष्ट, त्यक्त इ ।

छो(छु)ड़ाना, छोड़वाना, कि प्रे, व 'छोड़ना'
के प्र रूप ।

छोत, स स्त्री, दे 'छुन' ।

छोप, स पु, दे 'छेप' ।

छोभ, स पु, दे 'छोम' ।

छोह, स पु (हि ओह वा अनु) उपात,
प्रात, पर्वत, समत, परिसर, सीमन् (पु),
सीमा २ तट टीटम् ।

छोहदारी, स स्त्री (देश) धुद्रपदवात्, लघु
दृश्यव्य, पटगृहकम् ।

छोला, स पु (हि छोला = छीलना) हरित,
चण-चणक ।

छोह, सं पु (सं छोभ >) स्नेह, प्रेमम
(पु), २ दया, कृपा ।

छौक, छौकन, सं स्त्री (अनु) दे 'बपार' ।

छौकना, कि स, दे 'बपारना' ।

छौना, स पु (स शाव) शाव, शावक,
दिम, पोत, अर्भव ।

छौर, स पु, दे 'शौर' ।

ज

ज, देवनगरीवर्णमात्राया अष्टमौ व्यंजनवर्ण,
जकार ।

जकडा, स पु (अ) संयोजन, लोदपथ
मगम ।

जग, स स्त्री (का) युद्ध, समाम ।

जग, स पु (का) अयोमन् ल, अयोरस,
महूर, विष्ट, सिदाणम् ।

—रगना, कि अ, सविद्ध समहूर (वि)
भू । मण्डूरेण दुप् (दि प अ) ।

जगम, वि (स) चर, चल, चरिष्णु, चलन
गमन, शील २ जेगन, प्राणिम्, सजीव ।

जगल, स पु (स न) अटवी वि (स्त्री),
अरण्य, कानन, वन, विपिन, पत्तार २,
गहन २ गहस्थल, मरु (पु) ।

जौगला, स पु (पुर्न जौगला) काष्ठ लोह
उत्पाकवृत्ति (स्त्री), काष्ठ-लोह मोधोलि
(पु), काष्ठ अयो, जाल २ गवाय, जालम् ।

जंगली, वि (स जयल) आरण्यक, अरण्यज,
वय, वनोद्भव, जंगल [स्त्री (स्त्री)], अरण्य,
वन २ जंग, हिम ३ असभ्य, अशिष्ट,
दु शील । स पु, वनवासिन्, वनेचर, वनोवम्
(पु), आटविक, आरण्यक ।

जगार ल, स पु (फा र) ताम्र विट्ट मलम् ।
जगी, वि (फा) साग्रामिक सामरिक [वी
(छी)] युद्ध रण-सवधिन् २ क्षात्र (वी छी)
आनुषिक (की छी)

—जहाज, स पु रणयते ।

—जुहार, स पु समरज्वर ।

जघा, स का (स) प्रसूता टकिका टका क
२ ऊह (पु) सन्धि (न)

जघाल, वि (स) शीघ्र द्रुत-गामिन् वाधिन्
चालक । स पु (स) दूत, सन्देशवाहक
२ भृग ।

जघिल, वि (स) प्रचविन्, प्रधावक द्रुत
गामिन् ।

जघना, कि अ (ह जौचना) निरोक्ष परोक्ष
(कर्म) १ कृश (कर्म) २ उचिन् (वि)
प्रति ३ (कर्म) ।

जघघैषा, स पु (हि जौचना) दे आकिटर

जंजाल, स पु (ज जगत् + जाल >) वृच्छ
कष्ट सवट दुःख बाधाध २ यामोह
चित्तविक्षेप सन्नम ३ भावन जलमुख्य
४ वृहज्जालम् ।

जजाली, वि (हि जजाल) उपद्रविन्
कलहप्रिय ।

जजौर, स का (फा) शृङ्खला ल, निगद
पाश बधन २ अर्गल ललाटी ।

जतर, स पु, दे 'यत्र' ।

जंतु, स पु (स) प्राणिन्, जीव जन्तु, मृत
२ पशु, चरि, मोक ।

जघ्न, स पु, दे 'यत्र' ।

जंजीर, स का (हि जज) *यन्त्री *तारकर्षणी
२ पचांग, तिथिपत्रम् ।

जद, स पु (फा जद स छदस >) पारसी
काना धर्मग्रन्थविशेष २ तरय माथा ।

जधीर, जंघीरीनीयू, स पु (स जम्बीर) जम्भ
जमल, जम्बीर दत्त कपव हृषव हृषण ।

जनु, स पु (स का) (छु) जन्-नु (की) ।
(पल) जनु (वृ) कल जन्मम् ।

जनुक, स पु (स) शृगाल > 'शील्ड'
२ नीच अपसद, जायम् ।

जनुदीप, स पु (स) भूमे सप्तदोषध्वयतम ।

जयू, स का (सं) दे 'जु' २ कामीरदेशे
नगरविशेष ।

जम, स पु (स) दनु (पु की) २ राक्षस
विशेष ३ दे 'जमाइ' ।

जमारि, स पु (स) इद्र, सुरपति २ इन्द्र
वज्र ज, ३ अग्नि ।

जमाई, स का (हि जमाना) जमा, जमका
नृमण जम्भिका जम्भ भा, जम्भित
शक्तिका ।

जमाना, कि अ (ज जमन) ज (ज) भू
(भ्वा आ से) वि जम्भ (भ्वा आ से) ।

जई, स का (हि नी) यवसदृसदृशोन्मेषद,
*यवी २ यवाकुर ।

जईक, वि (अ) दे नूदा ।

जईकी, स का (अ) दे नूदापा' ।

जक, स का (फा) परावय २ हामि (की)
३ रज्जवा ।

जङ्घना, कि स, (स युक्त + करण >)
गाढ दृढ बध (क् प अ) द्रव्यपति (ना
था) इदीकुर ।

जकात, स का (अ) दान त्याग, २ कर,
शुल्क-कम् ।

जलीरा, स पु (ज) कीष निधि, भाँडार
२ समग्र सचय समार ३ वृक्षमवर्धन
स्थानम् ।

जम्मि, स पु (फा) दे धव ।

—ताज्ञा या हरा होमा, पु, अतीत कर्म पुन
आवृत् (भ्वा आ से) रभृ (कर्म) ।

जग्मी, वि, दे बायल' ।

जग, स पु [स जगत् (न)] जगती
संसार २ लोका जना ।

जग, स पु, (स यव) याग, मय कतु ।

जगण, स पु (स) छन्द शारत्रे गणमेद
शुरुगन्धर्व गण (७० मन्त्रे) ।

जगत, स पु [स जगत् (न)] भुवन,
जगत् चराचरं विष जगती, संसार सृष्टि
(की) त्रिविष्टप, लोक २ वायु (पु)
३ शिव ।

जगती, पु का (स) जगत् विरव २ पृथिवी
२ वैष्णवछन्दमेद ।

—तल, स पु (स न) भूतल पृथिवी ।

जगद्वायिका, स का (स) दुर्गा उमा,
पार्वती ।

जगदाधार, स पु (स) ईश्वर २ पवन ।

जगदीश, स पु (म) परमेश्वर, जगन्नाथ,
जगन्पति (पु) २ विष्णु ।

जगदीश्वर, स पु (म) दे 'जगदीश' (१) ।

जगद्गुरु स पु (म) ईश्वर २ शिव
३ नारद ४ सृष्ट्यपुरुष ५ उपाधिभेद ।

जगद्दीप, म पु (म) परमेश्वर परमात्मन्
२ सूर्य रवि ।

जगन्ना, कि अ (हि जगन्ना) दे 'जगन्ना'
२ अवहिन सावधान (वि) भू ३ सवेग
उदभू ४ ३ 'चमकना' ।

जगन्नाथ, स पु (स) जगदीश २ विष्णु
३ पुष्य विष्णुमूर्ति (स्त्री) ४ पुरोनामक
तीर्थम् ।

जगन्मगना, वि (अनु) प्रकाशिन २ दोषि
मद ।

जगन्मगाना, कि अ (अनु) दे 'जग
कना' (१) ।

जगन्मगाहट, स स्त्री, दे 'जगक' (१२) ।

जगद्, स स्त्री (फा) जगगाह स्थान, स्थल,
प्रदेश २ अवकाश प्रसर, अगर ३ अवसर,
समय ४ पद, रदवी वि (स्त्री) ।

जगाना, कि रा, व 'जगना' के रे रूप ।

जघन, स पु (स म) लोकाव्या पुरोमाग
२ सितव ।

—जूपक, स पु (स) कुकुदर, ककुदरम् ।

जघन्य, वि (स) अन्त्य, अन्तिम, चरव
२ गर्ह, स्वाक्ष्य ३ क्षुद्र, निक्षुद्र, अपम ।

जघना, कि अ, दे 'जचना' ।

जज्ञा, स स्त्री (फा) प्रमृता-तिका प्राता
पर्या, प्रगता ।

—जज्ञा, स पु (फा) अरिष्ट, सृति-सृष्टिका,
गृहम् ।

जज्ञमान, स पु, दे 'जज्ञमान' ।

जज, म पु (अ) न्यायाधीश, धर्मन्याय,
अध्यक्ष अ (भा) धनवरिष्ठ, धर्मधिकारिन्,
निर्णेतु २ परीक्षक, विवेचिन् ।

जजिया, स पु (अ) कर-राजस्व-भेद
(इस्लाम) ।

जज्जीरा, स ॥ (अ) दे 'दीप' ।

जजा, स स्त्री (स) जटा-ज, जटी-टि (स्त्री),
जूट, चूक २ जटाभासी, जटिला, लोमशा,
जटाला (सुगन्धद्रव्यम्) ।

—जूट, सं पु (सं) जगत्समूह २ शिवजटा ।

—जारी, वि (स रिन्) जगधर, सजूट
२ स्निग्ध ३ गुल्मभेद ।

—मासी, सं स्त्री, दे 'जटा' (२) ।

जजानु, स ॥ (सं) दशरथसख, जटानुस
(पु) ।

जटाल, वि (स) जटा, धर धारिन् ।

जटित, वि (सं) अनुविद्ध, संचित, प्रसृत,
प्रणिहित ।

जटिल, वि (स) जटारक, जटिक, जटाधर,
जटिन् २ अस्पष्टार्थ, दुर्बोध, गहन, गूढ,
कठिन, डिष्ट ३ क्रूर, हिंस्र । (स पु) सिंह
२ भव, छाष ३ शिव ४ ब्रह्मचारिन्
५ परित्राजक ।

जटिलता, स स्त्री (स) दुर्बोधता, गहनता,
गूढता, कठिनता ।

जटी, वि (स टिन्) दे 'जटिल १' । सं पु,
शिव २ पूछ ।

जठर, स पु (सं पु न) उदर, कुक्षि
(पु), गुद २ अन्न-आम पक्व, आशय, कौष्ठ,
पिच्छ २ उदररोगभेद ३ शरीरम् । वि,
बृद्ध २ कठिन ।

—अग्नि, स पु (स) जठरानल ।

—आमय, स पु (सं) जलोदररोग
२ अतीति साररोग ।

जङ, वि (सं) अवि, चेतन, निर्जीव, भ्रान्त-
हीन निष्प्राण २ स्वप्न, निद्रा, इतैन्द्रिय
२ मदबुद्धि, मूर्ते ३ हिनम्रस्त ४ शीतल
५ मूक ६ बधिर ७ अनभिष्ट, अवोष ८ मूढ,
मोहमस्त । स पु (स न) जल २ सौप्त-
कम् ।

जङ्, स स्त्री (स जग) मूल, अग्नि (पु),
गुप्त, गङ्गा २ आधार, उपष्टम् मूल
३ कारण, हेतु (पु) ।

—उच्चाङ्गना, जल ८ नमूल (जु), उरान् ।
(स्वा प से), व्यपहृष्ट (जे) समूल उद्द
(स्वा प अ) उच्छिद् (ह प अ) ।

—जमना, कि अ, इष्टमूल-वृद्धमूल (वि) भू,
मूल कृष् (रु प अ) ।

जद्धता, स स्त्री (स) अचेतनता, निर्जीवता,
जडत्व, स पु (स न) निष्प्राणता २ मूर्खता,

अशता ३ अचलता, सन्धता, ४ हिमग्रस्तता, शीतलता ।

जडना, कि स (सं जटन) जट् (प्रे), अनुव्यथ् (दि प अ), उत्सथ् (जु), प्रणिधा (जु ष अ), प्रथिवध् (क ष अ) २ आनिधा, अवरोह निविश (प्रे) ३ प्रह (श्वा प अ), आहन् (अ प अ) ३ परोक्षे आ-अधि क्षिप (तु प अ) । स पु, जटन, उत्सन्धन, अवरोपण प्रहरण इ । जडने योग्य, वि जाटयितव्य, उत्सन्ननीय इ । जडनेवाला, स पु, रक्ष अनुबोधक, मणि, प्रणिधायक, जाटयितृ ।

जडवाना, जडाना, कि प्रे, व 'जटना' के प्रे रूप ।

जडाई, स स्त्री (हि जडना) जटन, वेतन वृत्ति (स्त्री) २ दे 'जडना' सं पु ।

जडाऊ, वि (हि जडना) रक्ष, राक्षि-अटिष्ठ अनुविद्ध ।

जडावर, सं पु (हि जाडा) उष्ण कर्णमय और्ज, वस्त्राणि-वाससि (न बहु) ।

जदिमा, सं स्त्री (सं मज् पु) दे 'जडता' ।

जडिया, सं ॥ (हि जडना) २ रक्ष मणि, कार १ रत्न, वादक-खडक । दे 'जडने वाला' ।

जडी, सं स्त्री (हि जड >) ओषधी-औषध, मूल, काष्ठोपधम् ।

—जूटी, सं स्त्री, ओषधी धि (स्त्री), रोगहर हरितक, आरण्योपधम् ।

जनन, स ॥, दे 'जन' ।

जनछाना, जताना, कि स (स ज्ञात >) वि, शा (प्रे शापयति), बुध-अवगम् (प्रे) २ (पूर्व) अनु प्रबुध (प्रे), उपदिश (तु प अ) ।

जती, स पु (स यतिन्) यति, जितेन्द्रिय, मन्द्यासिन् ।

जतु, म पु (स न) जनुक-ना रात्राष्टा ।

जया, म पु (म मूष) गण, मध, समृद्ध ।

जतु, स पु (स न) जनुक, ग्रीवारिथि (न) ।

जदीद, वि (अ) नय, नवीन ।

जन, ॥ पु (सं) मानव, मनुष्य २ लोका, जना ३ प्रजा ४ सेवक ५ समूह ६ भवन ७ ८ लोक-न्याहृति, विशेष ।

जनक, सं पु (स) जन्मद, जनयितृ, उत्पादक २ पितृ जनितृ, (पु), तान, बीजितृ, वधू (॥) ३ मिथिलाराजवशोपाधि (पु) ४ सीरध्वजो जनक ।

—पुर, स पु (स न) मिथिलावा राजधानी ।

—नदिनी, स स्त्री (स) सीता, नैदेही ।

जनता, सं स्त्री (स) जन ना, लोक का, प्रजा-जा, प्रजलप (बहु) ।

—बाद, सं पु (॥) किंवदन्ती जन, प्रमाण ।

—बासा, म पु (स स) वरपायाष्टकम् ।

—द्युति, स स्त्री (स) दे 'जनवाद' ।

—सरया, स स्त्री (॥) मनुष्य प्रजा लोक, सरया ।

जनना, कि स (म जनन) प्रसू (अ आ से), वरपद् (प्रे), वन् (प्र जनयति) ।

जननी, स स्त्री (स) दे 'माता' २ उत्पादिका ।

जननेन्द्रिय, स स्त्री (स न) लिंग, मेद २ योनि (स्त्री), मग ।

जनपद, स पु (सं) देश २ लोका ।

जनम, स पु, दे 'जन्म' ।

जनमना, कि, अ, दे 'जन्म लेना' ।

जनयिता, वि (सं तु) जन्मद, उत्पादक । स पु (सं) तान, पितृ, बीजितृ, जनक ।

जनयित्री, स स्त्री (स) जननी, मातृ (स्त्री), दे 'माता' ।

जनरत्न, स पु (अ) मेनानायक । वि, सामाय, साधारण ।

जनवरी, स स्त्री (अ जेनुवरी) पौषमास, आश्विनवर्षस्य प्रथममास ।

जनातिक, अव, (स वम्) रगमये अभिनेतृ रयस्य वण वधनम् (मा०) अपवार्य (अन्य) ।

जनाई, स स्त्री (हि जनाना) मायिका, दे दाह २ यन्मयोचनवृत्ति (स्त्री) ।

जनाज्ञा, स ॥ (अ) दे 'अरधी' २ शुद्ध ।

जनानप्राना, स पु (फा) अत पुर, अवरोध ।

जनाना, कि म (हि जनना) दे 'जतजना' ।

जनाना, कि प्रे (हि जनना) व 'जना' के प्रे रूप ।

जनाना, वि (फा) खैण, खीमातीय। सं पु,
अत पुर २ नारी ३ पत्नी।

जनानी, वि खी (फा) खैणी, खीमादूरी।
म खी, नारी २ पत्नी।

जनाय, म पु (अ) महाशय, महोदय,
श्रीमत् पु।

—जाटी, स पु (अ) मायवर, महाशय
महोदय।

—जान, स पु अ+फा+ प्रियमहाशय।

जनित, वि स उत्पादित २ जान, उत्पन्न।

जनिता स पु स जनितु जनयितु जनक,
पितृ पु

जमिनी, स खी म जनयित्री, जननी।

जनीनि, स खी म नारी २ मातृ (खी)
३ पुत्रवधू खी ४ जननम्।

जनी, स खी (स जन दासी, सेविका
२ पुत्री। वि खी, जनिता उत्पादिता।

जनेउ, म पु, दे 'यद्योपवीत'।

जनेस, म खी (स जन) बरबादा।

जन्म, स पु (स जन्मन् (न)) उद् समय,
जनि (खी), जनी, जमिका, उत्पत्ति प्रभृति
(खी), जन्तु (खी)। २ जीवन्तम्।

—जतर, स पु (स न) अन्य अपर पुनर्,
जन्मन् (न)।

—जय, वि (म) जायय, जनुषाय।

—जष्टमी, स खी (स) श्रीकृष्णजन्मदिवस,
भाद्रपदमासस्य कृष्णष्टमी तिथि (खी)।

—दाता, सं पु (स दातृ) पितृ (पु)
२ इतर।

—दिन, स पु (स न) जन्म जनि जनु,
दिवस।

—पत्र, स पु (स न) जन्म, पत्रिका-योगपत्रम्।

—पत्री, म खी (स) जन्म, पत्रिका-योगपत्रम्।

—भूमि, स खी (स) जन्मदेश, स्व-देश
राष्ट्र-भूय।

—संगी, वि, (स भिन्) सदस्योपनि।

—स्थान, स पु (स न) जन्म-जनि, भूमि
(खा)।

जमी, स पु (म भिन्) प्राणिन्, जीव।

जन्मी, वि (म जन्मन्) सहज, स्वभावज,
स्वाभाविक नैसर्गिक [वी (खी)]।

जन्मेजय, सं पु (सं जन्मेजय) विष्णु
२ ३ नृप-नाय, विशेष।

जन्मोत्सव, सं पु (सं) जनि जनु, जन्म
(न) क्षण।

जन्म, स पु (सं) पितृ (पु), जनक
२ वरपक्षीय ३ साधारणो जन ४ किव
दती। (स न) जन्मन् (न) २ उत्पन्न
वस्तु (न) ३ देह ४ इष्ट ५ सुख
६ निद्रा ७ राष्ट्र ८ जाति (खी) ९ ठोका,
प्रता। वि, जान, उद्भूत, उत्पन्न २ जन
विषयक लौकिक ४ देशीय, राष्ट्रीय,
जातीय ४ जनविषयमाण।

जन्मा, स खी (स) जननीमखी २ बहुसखी
३ आनन्द, मोद ४ प्रीति (खी), स्नेह।

जप, स पु (न) मुहुर्मुहुर्नमोच्चारणम्।

—तप, स पु [स तपतप् (न)] धर्मक्रिया,
उपासन-जा, सध्यादिकम्।

जपना, कि स (स तपन) जप् (स्वा प
से), आप कृ, मुहुर्मुहुर्नमोच्चार (मे)।

जपनी, सं खी (हि तपना) जपमाला,
तपनी २ तपनीकोष, गौमुखी।

जपी, स पु (स जपिन्) जापक, जपितृ
(पु)।

—तपी, स पु (स जपतपस) उपासक,
भक्त, पूजक।

जपा, स खी (फा) दे 'अत्याचार'।

—कदा, वि (फा) सदृष्टि, सहनशील
२ परिग्रामिन्।

जद, कि वि (सं यावत्) ददा, यस्मिन्
काले।

—कमी, यदाकदाचित्, यदापि।

—कि, यदा, यावत्।

—जव, यदा यदा।

—तक, —तलक, यावत्, यदापर्यन्तम्।

—तक तय तक, यावत् तावत्।

—तव, यदा नदा, काले काले, कदापि,
कदाचित्।

—देसो तव, सदा, सर्वदा।

—से, यदा प्रभृति, यस्मात् कालात्।

—होता है तव, प्राय, प्रायश, प्रायेण।

जव(म)डा, स पु (स जव) हनु (पु,
खी), हनु (खी)।

निचला—, कुज, चिबु (पु) पीचम् ।
 जवर, वि (पा) बहिन्, शक्तिमत् २ दृढ ।
 —दस्त, वि (फा) दे 'नवर' ।
 —दस्ती, स स्त्री (फा) अत्याचार, अन्ध्याय । किं वि, बलात्, हठात्, प्रमत्त, प्रसक्त ।
 —दस्ती करना, किं स, पीड (जु), अर्द्ध (प्रे) बाध् (स्वा आ से) ।
 जवरम्, किं वि (अ जवर) दे 'जवरदस्तो' किं वि ।
 जघह, स पु (अ) हिंसा, हत्या, घात ।
 —करना, किं स, विहस (स्वा प से), इन् (अ प अ), व्यापद् (प्रे) ।
 जवान, स स्त्री (फा) जिहा, रसज्ञ, रसना २ शब्द, वाक्य ३ प्रतिज्ञा ४ आपा ।
 —दराज, वि, जल्प (पा) क, वाक्पू ।
 —दराजी, स स्त्री, जल्पकता, वाक्पूकता ।
 —घदी, स स्त्री, मौन, वाग्धम २ भाषण निरोध ३ जिहासम् (रोगभेद) ।
 —का मीठा, सु, मधुरभाषिन्, मधुकिह ।
 —को मुँह में रखना, सु, जोष-तूष्णीं स्वा (स्वा प अ), मौन भञ्ज (स्वा उ अ) ।
 —वेना या हारना, सु, दे 'प्रतिष्ठा करना' ।
 —पकड़ना, सु भाषणात् निवृत्त (प्रे) नि धिनि-व (प्रे) ।
 —बद करना, सु, ओज लम् (प्रे), लभयति) २ निरुपरी कृ ।
 —बद होना, वक्तु न पात् (जु), तूष्णीं स्वा ।
 जवान्नी, वि (फा नवान) शब्द [य्दी (स्त्री)], शाब्दिक [य्दी (स्त्री)], वाचिक वाचनिक मौखिक [य्दी (स्त्री)] । किं वि, स्मृत्या-वाचा (जु प अ) शब्दन, अधिक स्तितम् ।
 —पदना, किं स, स्मृत्या पठ् (स्वा प से) वक्ष् (प्रे) ।
 —जमा खर्च, सु, प्र, जल्प-यन, निरर्थक वचनानि (बहु) ।
 जवून, वि (फा) निवृत्त, गद्ग, निच २ अवल, निवृत्त ।
 जन्त, स पु (अ) निग्रह, निरोध, सयम २ दृढरूपेण अपहर्ष ३ राजसात्करणम् ।

—करना, किं स, राजसात् कृ, दृढरूपेण अपहर्ष (स्वा प अ) ।
 —होना, किं अ, राजसात् भू, दृढरूपेण अपहर्ष (कर्म) ।
 जव्ती, स स्त्री (अ वज्ज) सर्वस्व, अपहार-दृढ, दे 'वज्ज' (२) ।
 जज, स ॥ (अ) क्रौर्य, नैष्ठुर्य, अत्याचार ।
 —करना, किं स, अर्द्ध (प्रे), पीड (जु) ।
 जमन, जमिया, किं वि, दे 'नवरम्' ।
 जमी, वि (अ) बलात् कारित, अनिकार्थ ।
 जम, स पु, दे 'यम' ।
 जमघट, स पु (हिं जमना + घट्) पनेष, जनसमर्थ, संकुल, लोकमय ।
 जम-जम, अन्ध (न जमम् >) मदा, सर्वदा, नित्यम् ।
 जम-जम, स पु (अ) कावासमीपस्थ पुर दिशेप ।
 जमना, किं अ [स जमन् (न) >] प्रहृ (स्वा प अ), शक्तिद् (कम) २ वृत् (दि आ से), उत्पद् (दि आ अ) ।
 जमना, किं अ (स यमन पकड़ना >) धनी पिंडी दीर्घी, भू, सहन् (कर्म) इयै (स्वा आ अ) २ समिल् (तु प से), समायम् (स्वा प अ) ३ अनुधत्त समर्थ (वि) भू, सलम् (स्वा प से) ४ स्थरम्, निवास स्थिरीकृत ५ प्रतिष्ठित बद्ध मूल- (वि) भू ६ उपपद्-युग् (कर्म) सुमगत वि) भू ७ निर्दिष्ट बद्ध (स्वा प से) । स पु, धनी-दीर्घी पिंडी, भाव सम्प्रेषण सत्ति (स्त्री) स्थिरीभाव ६ ।
 जमना, स स्त्री (स यमुना) बहिन्दी ।
 जमराज, स पु, दे 'बमराज' ।
 जमा, वि (अ) संपृक्षित, सविज समग्र २ निष्ठित, न्यस्त, निहित । स स्त्री, मूल, मूल, द्रव्य घन २ घन, सपद् (स्त्री) ३ भूमि-वर ४ योग, पिठ, सक्-नन (गणित) ५ बहुवचन (व्या) ।
 —करना, किं स, सचि (स्वा, व अ), सग्रह (क् प से) २ निधा (जु उ अ), निग्रह (तु प अ) ३ दे 'नोदना' (२) ।
 —होना, किं अ, मच्चि-मग्र (कर्म) २ निधा निष्ठिप-न्यस्त (कर्म) ।
 —खर्च, स पु (फा) आव ययौ २ आव व्ययतेष ।

—जया, सं स्त्री, सचिन, धन द्रव्यम् ।

—जमाई, स पु [स जामात (पु)] इदिव पुत्री, पति ।

जमात, ॥ स्त्री (अ जमाअन) कथा, श्रेणी २ जनौष, जनसमर्द्ध ३ गण स्य ।

जमादार, स पु (फा) नायक, रक्षिमुख्य ।

जमानत, स स्त्री (अ) (द्रव्य) आधि (पु) निक्षेप, न्यास, प्रातिमान्य । (पुरुष) प्रतिभू (पु) बंधक, लग्नक ।

—वेना, कि स, निक्षेप लग्नक दा अथवा दत्ता मुच (प्र) ।

—नामा, स पु (अ + फा) प्रातिमान्यपत्रम् । जमानती, वि (अ जमानत >) निक्षेपाद्, प्रातिमादाह २ प्रतभू (पु) लग्नक बंधक ।

जमाना, स पु (फा न) समय, काल २ विरकाल, क्षुण्णसमय ३ तपण (न) ।

—साज़, वि (फा) कालानुवर्तिन्, समया नुरोधिन् ।

—साज़ी, स स्त्री (फा) कालानुवर्तन, स्वार्थपरता ।

जमाना, कि स, व 'जमना' के प्रे रूप ।

जमाल, स पु (अ) सौभ्यं, सुधमा मनो रणा लावण्यम् ।

जमालगोदा, स पु (स जयपाल + गोगा >) (१५) जयपाल सारक, रेशक २ (बीज) जयपाल-कमो-दग गोथनी, बीज, बीजरेचनम् ।

जमाब, स पु (हि जमना) जनौष जनस मर्द्ध २ दे 'जमना' स पु ।

जमीदार, स पु (फा) क्षत्रपति (पु), भूस्वामिन् ।

जमीदारी, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री), भूमिरिच्छा क्षुब्ध २ क्षेत्रपत्तिन् भूस्वामिन् ।

जमींदोज, वि (फा) आत्मौय (मी स्त्री), भूगर्भनिन्, भूगू ।

जमीन, स स्त्री (फा) भूमि (स्त्री), पृथिवी स्त्री २ भू-पृथ्वी-तल ३ वस्तुपत्रादे तल २ क्षेत्र भूमिन् ।

—आसमान एक करना, मु, अत्यधिक परिश्रम (दि प से) ।

—आसमान का फर्क, मु महदतर, महदवै रग्य सम्भेद ।

—आसमान के कुलाबे मिलाना, मु, अत्यु क्त्या वर्त् (जु) प्रतिपद (प्रे) ।

जमुना, स स्त्री, दे 'यमुना' ।

जमीमा, स पु (अ) अतिरिक्त-कोड, पत्रम् ।

जमुर्द, स पु (फा) दे 'पन्ना' ।

जमैयत, स स्त्री (अ) जन, समुदाय समूह २ परिपद (स्त्री) समा ।

जयत, स ॥ (स) इदपत्र २ कार्तिवैय ।

वि [स जयत (शत्रुत)] विजयिन् जैत्र (श्रीस) निम्न, जैष्ठ जिवर [श्रीस्त्री] २ दे 'बहुधिया' ।

जयती, स स्त्री (स) जेतन, केदु (पु), ध्वज २ दुर्गा ३ तमो-सब ४ स्थापना दिवसोत्सव ।

जय, स स्त्री (स पु) वि, जय, विजिति (स्त्री) ।

जय (जय जय) कार, स पु (स) जय, ध्वनि (पु) नाद-स्वन शब्द ।

जयजयकार करना, कि स जयध्वनि कृ, जयजयेति नद् (म्वा प से) ।

—पत्र, ॥ पु (स न) विजय, पत्र-लेख २ आधिकारिकस्य मुद्रितनिर्णयपत्रम् (धर्म) ।

—माल, स स्त्री (स-ला) जय विजय, माला शब्द (स्त्री) भास्वर ।

—स्तभ, ॥ पु (स) विजयस्थूणा ।

जयमा (धा) न, जयचत, जयी, वि, दे 'जयन' वि ।

ज़र, स पु (झा) सुवर्ण, काचन, २ धन, विचन् ।

—खरीद, वि (झा) विचक्रीत ।

—खेज़, वि (फा) खर, शब्द, फलप्रद ।

—खेज़ी, स स्त्री (फा) खरता, फलप्रदता ।

—दूर, वि (झा) धूलिक, धूलान्तर ।

—दोज़, स पु (फा) कामिकवस्तु (पु), सूचीकर्मोपनीविन् ।

—दोज़ी, स स्त्री (फा) लिप सूचीकमन (न) ।

जरनेल, स पु (अ) दैनिक वृत्तपत्र-समाचार पत्रम् २ पत्रिका ३ आयव्यय पत्रोपनि (स्त्री) ।

जननलिख, ॥ पु (अ) पत्रकारिता पत्रकार न्दवसाव ।

जरनलिस्ट, स पु (अ) पत्रकार ।

जरनेल, स पु, दे 'जरनेल स पु ।

जरव, सं स्त्री (अ) आघात, प्रहार, २ व्रण ७
३ अभ्यास, अध्ययन, गुणन, इनन ४ अक,
सुदधिहम् ।

—देना, कि स, गुणयति (ना धा), आ
नि, इन् (अ प अ, या प्रे, पातयति),
पुर (जु) । अ, प्रह (म्ना प अ) तद् (जु) ।

जरर, स पु (अ) क्षति हानि (स्त्री)
० प्रहार ३ आपत्ति (स्त्री) ।

जरस, स पु (अ) पटा, वनम् ।

जरा, वि (अ जरं) अल्प, न्यून । कि वि,
विचिद्र, ईषद् ।

जरा, स स्त्री (स) दे वादेव-ज्यम् ।

—प्रस्त, जीर्ण, वि (॥), इड, जरठ ।

जराभत, स स्त्री (अ) कृषि (स्त्री) कर्पण,
हलचुति (स्त्री) ।

—वेशा, वि, कर्षक, कृषिचौविन्, क्षत्रिक ।

जरातुर, वि (स) इड, जरठ, स्थविर,
पलित, जीर्ण ।

जराधु, स पु (स) उच्च कल्ल, २ गर्भाशय ।

जराधुज, वि (स) गर्भाशयजोत (मनुष्य,
गो आदि) ।

जरागध, स पु (स) चदवशीयनपविशेष,
कसश्चुर ।

जरिया, स ॥ (अ) दे 'साधन' ।

जरी, स स्त्री (फ) साधारण वस्त्र ० सौन्दर्य
कार्मिकवन्मन् ।

जरीक वि (अ) विलोद परिहाम, झील, प्रिय ।

जरीष, स स्त्री (फा) पचपवाशदगवात्मक
क्षेत्रमानभेद, जरीष २ यष्टि (स्त्री) ।

—कश, स पु (फा) भू क्षेत्र, मापक ।

—कशी, ॥ स्त्री भू क्षेत्र मापनम् ।

जरूर, कि वि (अ) अवश्य, अपरिहार्यता,
निश्चयेन, नि सदेह, नि सशयम् ।

जरूरत, स स्त्री (अ) आरम्भकता, प्रयो
जनम् ।

जरूरी, वि (फा) अपेक्षित, आवश्यक
२ आवश्यक [-जी (स्त्री)], अपरिहार्य
अनिवार्य, अवश्यकरणीय ।

जर्क वर्क, वि (फा) उज्ज्वल, मासुर, भास
मान ।

जर्जर, जर्जरित, वि (स) चीर्ण क्षेर्ण,
सच्छिद्र २ भग्न, रजित ३ इड ।

जर्द, वि (फा) पीत, दे 'पीला' ।

जर्दी, सं स्त्री (फा) रीतिमन् (पु) दे
'पीलाई' २ अटपीतिमन् (पु) ।

जर्म, सं पु (अ) जीवाणु, रोगकीटानु ।

जर्मा, स पु (अ) अणु, परमाणु ० अणुक,
'यणुक ३, कण गौणिका, लव ।

जर्माह, स पु (अ) दात्वविक्रित्तक,
शुश्रूष ।

जर्माही, स स्त्री (अ) शक्य, शारत्र चिकित्सा ।

जलधर, स पु, दे 'जलोदर' ।

जल, स पु (स न) पानीय, आप (स्त्री),
नित्य बहु) । पयस अमल-अधु वारि (न),
सलिल, अमृत, जीरन, उदक, तोय, नीर,
घनरस ।

—कूपी, स स्त्री (स) कूपगतं, पुष्करिणी ।

—जोडा, स स्त्री (स) वर, पान, पत्रिका,
व्यात्युक्षी, नलविहार ।

—चर, वि (सं) वारिचर, नलधारिन् ।

—जलु, स पु (स) वादम् (न) जलनीव ।

—जात, स पु (॥ न) कमल, पद्मम् ।

—सरग, ॥ पु (स) वाद्यभेद २, लहरी ।

—धर, स पु (स) मेघ, जलद २ समुद्र ।

—धारा, स स्त्री (स) वारिप्रवाह ।

—पक्षी, स पु (स छिन्) जलशृङ्खल ।

—पान, स पु (स न) उपाहार, लघु
भोजनम् ।

—प्रपात, स पु (स) निर्जल ।

—प्लावन, स पु, (॥ न) जलोपगन्ध,
तोयविप्लव ।

—माजारी, स पु (स) उद, नलनकुल,
जलविहाल ।

—यान, ॥ पु (म न) नौका, पोत,
वाष्पपोत ।

—शायी, ॥ पु (स विन्) वरण ।

—सना, ॥ स्त्री (स) भी समुद्र, सेना मैद्यम् ।

जलज, स पु (॥ न) कमल, वारिजन् ।

जलजला, स पु (फा) भूक्ष्म, भूचाल ।

जलडमस्मध्य, स पु (स न) समुद्रधुनी ।

जलद, स पु (स) मेघ, वारिद ।

जलधि, स पु (स) मग्धि (पु), सागर ।

जलन, स स्त्री (स जलनं) ताप, दाह,
२ पाक (चिकित्सा, उ नेत्रपाप), ३ वर्ण

ध्या, सापत्न्य, मात्सर्य ५ गात्रदाह (रोग भेद) ।

जलना, कि ॥ (सं जलन) जल (स्वा प से) तप दह (कर्म) दीप (दि आ से) २ असूयति (ना धा) ईष्य (स्वा प से) परोत्कर्षे न सद् (स्वा आ से) नृप (दि प से चु) । ॥ पु, ताप, ज्वलन, दहन, दाह, प्लोष इ ।

जले पर नोन छिद्वना, मु खने आर क्षिप (तु प अ) ।

जलरह, स पु (सं न) जलरह (पु), इमन्म् ।

जलवा, स पु (फा श्री (ली) ममा शोभा ।

जलमा, म पु (अ) उत्सव, महोत्सव ममेन्न धृष्टधिवेदान २ भगीनोत्सव २ समीजनम् ।

जलाजलि, म स्त्री (सं पु) अजलि-करपु-मात्र जलम् २, तर्पणम्, प्रेततर्पणजलम् ।

जलाकर, स पु (मं) समुद्र, सागर २ जल तोय-राशि इ कूप ५ निक्षर, उत्स ।

जलाखु, सं पु (सं) दे 'जदविलाख' ।

जलातंक, स पु (स) अलकाभिभव, आलकै, जलप्रासारयो रोग (हि इलक) ।

जलायय, स पु (स) शरद्वस्तु, वर्षा वसान, मेघात ।

जलाना, कि स (हि जलना) उप (स्वा प से), ज्वल (प्रे ज्वलयति), तप (स्वा प अ, प्रे) । दह (स्वा प अ), दीप (प्रे), प्लप् (स्वा प से) २ ईष्या-अमूया मात्सर्य जन् (प्रे), इ पीठ (प्रे) तुद (तु प अ) । स पु, दहन तापन, प्लोषण, दीपन इ ।

जलाने योग्य, वि, ज्वलयितव्य, दग्धव्य, शोष नीय, तपनीय ।

जलानेवात्ता स पु, तापक, दाहक इ ।

जलाया हुआ, दग्ध, ज्वलित, दीपित ।

जला भुना वि, कुपित, क्रुद्ध, क्रुद्ध, शील, दुःप्रवृत्ति ।

जलाद्रि, वि (स) टिप्प, उत्त, उत्त ।

जलाग्रतन, वि (अ) निर्वासित, निवासित ।

जलावतनी, सं स्त्री (अ) निर्-वि, वासनम् ।

जलाशय, से पु (सं) जल तोय, आधार, तटाग-ग, बापी ।

जलील, वि (अ) नीच, क्षुद्र, जघन्य । (२) अयमानित, तिरस्कृत ।

—करना, कि स, अपकृष (स्वा, प अ), श्यूक ।

जलम्, सं ॥ (अ) उत्सव, यात्रा, उत्सव चलनम् ।

जलेरी, स स्त्री (दिश) कुण्डली, मिष्टान्नभेद ।

जलोका, सं स्त्री (सं) दे 'जौक' ।

जलोद्गर, स पु (सं न) जठरामय ।

जलद, कि वि (अ) अचिरात्, अचिरण, क्षिति, द्राक, अविलंब, आशु, शीघ्र २ जवेन, बेनेन, सत्वरम् ।

—वाज, वि (अ + फा) अविमृदय असनीष्य-भिप्र-कारिन्, साहसिन् ।

—वाशी, सं स्त्री, अविमृदय-असनीय, कारिता-कारित्व, साहसम् ।

जलदी, स स्त्री (अ) शीघ्रता, त्वरा, क्षिप्रता ।

—करना, कि अ. त्वर (स्वा आ से), आशु शीघ्र स्वरित कृ अथवा चल् (स्वा प मे) ।

जलप, स पु (सं) कथन, वदन २ प्रवचन, प्र, उत्पिन, वृथा, आढाप-कथा, व्यर्थवाणी ३ वादभेद (न्या०) ।

जलपक, वि (म) जलाक, वाचाट, वाचाल, वावद्व ।

जलाद, स पु (अ) वातक, दृढपाशिक, मातंग, वधाधिकृत । वि, क्रूर, निर्दय ।

जलसा, स पु, दे 'जलसा' ।

जल, म पु (स) वेग, त्वरा रहम् (न) ।

जवन, स पु, दे 'यवन' ।

जवनिका, म स्त्री, दे 'यवनिवा' ।

जर्वोमर्द, वि (फा) वीर, शूर, पराक्रमिन् ।

जर्वोमर्दी, स स्त्री (फा) वीरता, शूरता ।

जवापार, म ॥ (स यवशार) यवाह, यवनालम् ।

जवान, वि (फा) युवन्, तरुण, अभिनव वयस्क, कुमार २ वीर, शूर । स पु, पुग्ध, मनुष्य सैनिक ३ वीर ।

जवानी, स खी (जा) बीमार, तारुण्य, यौवन, अभिनव-पूर्व प्रथम वयस (न) ।

जवाब, स पु (अ) उत्तर, प्रति, वचन वाच (खी), प्रत्युक्ति (खी) प्रत्युत्तर २ प्रति क्रिया, प्रतीकार, ३ कारभारादेश, ४ पद च्युति (खी), अधिकारभक्ष ।

—दावा, स पु (अ) उत्तरम्, उत्तर, पक्ष पाद ।

—देह, वि (अ + फा) उत्तर, दातृ दायिन्, अनुयोज्य प्रष्टव्य ।

—देही, स खी (अ + फा) उत्तरादायित्व, प्रष्टव्यता, भार ।

—सबाह, स पु प्रदोत्तराणि (बहु), बाह बिदाहो (दि) ।

—देना, सु, पदाद अवस्कृष्ट च्यु (जे) । कि स, दे उत्तर देना ।

—मिलना, सु, अधिकारात् च्यु (भ्वा का अ), पदभ्रष्ट (वि) भू ।

जवाबी, वि (अ) उत्तरापेक्षिन् ।

—काह, स पु, उत्तरापेक्षि-उत्तरणीय, पञ्चम् ।

—तार, स पु, उत्तरापेक्षी तद्विस्तार ।

जवार, स पु, दे 'जवार' ।

जवारा, स पु (हि जव) यव, अकुर प्ररोह ।

जवाल, स पु (अ) ज्वल, कास २ विषद (खी) ।

जवाम-सा, स पु (स यवात) वास, दु स्पर्श, रोदनो, दुरालम्बा ।

जवाह(हि)र, स पु (अ) रत्न, मणि ।

जवाह(हि)रात, स पु (अ, बहु) रत्नानि मणय (बहु) ।

जवान, स पु (फा) वार्मिकोत्सव २ उत्सव, स्रग ३ आनन्द, र्वर्ष ४ सगीतोत्सव ।

जसामत, स खी (अ) स्थूलता पीनता, पीवरता ।

जमीम, वि (म) पीन, पीवर, स्थूल ।

जस्तिम, स पु (अ) उच्च-वाचाल्यस्य धर्म अधिकारिन्-अध्यक्ष, २ म्याय, दहयोय ।

जस्त, जस्ता, स पु (म वस्त) वृषातु (न) ।

जहन्नुम, स पु (अ) मरव, निरय २ तीव्रपीडास्थानम् ।

जहमत, स खी (अ) वष्ट, अपाद (खी), २ ध्यामोह, चिच्छिन्नेय ।

जहर, स पु (फा जह) मारु, विष पम् । वि, घातक, प्राणहर २ अतिहानिकर [री (खी)] ।

जहरदाह, वि (फा) विषाक्त, मारुदग्ध ।

जहरवाह, स पु (फा) विसर्प ।

जहरमोहरा, स पु (फा जहरमुहरा) विषघ्न प्रस्तरभेद ।

जहरीला, वि (फा जहर) दे 'जहरकार' ।

जहाँ, कि वि (स यत्) यरिमन् देशे स्थाने ।

—कहीं, कि वि, यत्रकुत्र चित् अपि, यत्र यत्र ।

—का तहाँ, कि वि, तत्रैव, पूर्वदिग्भवेव स्थले ।

—तक, कि वि, यावत् ।

—तहाँ, कि वि, इतस्त्वन, अत्र तत्र २ सर्वत्र ।

—से, कि वि, यत्, यस्मात् स्थानात् ।

जहाँ, स पु (फा) जगत्, ससार ।

—दीद, —दीदा, वि (फा) अनुमविन् ।

—पनाह, स पु (फा) जगत्प्रक्षक, प्रभु २ प्रभुचरणा, देवपादा ।

जहाज, स पु (अ) तराशु (ल) दृष्टजोवा, पोत य, बोट ।

जहाजी, वि (अ जहाज) । स पु, नाविक, नौ पोत, वाह, समुद्रय ।

—बाहू, स पु, सागरतस्कर, समुद्रदस्यु (पु) ।

—बेहा, स पु (रण) पोतगण ।

जहान, स पु (फा) जगत् (न), सृष्टि (खी) ।

जहालत, स खी (अ) अज्ञानम्, मूर्खता ।

जह्नीन, वि (अ) कुशाम्बुद्धि २ भेषादिन् ।

जहूर, स पु (अ) आविर्भाव प्रकाश ।

जहेज़, स पु (अ) श्रुतक, योक्त, वाहिनिक, स्त्रीपनम् ।

जहूँ, स पु (स) मृगविशेष, सुशोभपुत्र ।

—कन्या—तनया, स खी (स) गता ।

जागलू ली, वि (स जागल) आरण्यक, वय, २ अशिश, कूर ।

जौध, स खी (स जधा) कूर (पु), सतिथ (न) ।

जौधिया, स पु (हि जौध) ज्ञापिक, ० ऊरुच्छद दे 'काछी' ।

जौच, म स्त्री (हिं जौचवा) परीक्षण द्या,
विचरण गा २ अनुसन्धान, गवेषणा ।

जौचना, क्रि स (स याचन >) परीक्ष
(स्वा आ से), विमृश (तु प अ),
॥ पर्यालोच (चु), अनुसंधान (जु उ अ),
निरूप (चु) विचर (प्र) ।

जायुनद, स ॥ (स न) सुवर्ण, काञ्चन,
हिरण्यम् ।

जा, स स्त्री (फा) स्थान प्रदेश दि,
उचिन, योग्य संगत

—यजा, क्रि दि, मत्त

—वेचा, वि उचिनामुचिन तथ्यान्वय ।

जाई, स स्त्री (स जा = जाता) पुत्री इहिव
(स्त्री) ।

जाग, स ॥ (स यङ) मल, क्लृ ।

जाग, स स्त्री (हिं जागना) जागरण प्ररात्रि
जागर ।

जागना क्रि अ (स जागरण) जागृ (अ
प से) प्रवि-बुध (दि आ अ) स पु,
दे 'जागरण' ।

जागनेवाला, स पु, जागरक, 'जागरित् (पु) ।
अवहित जागरक ।

जागरण, स पु (स न) प्र जागर, य,
कोष धन निद्रास्वप्न भ्रमाव २ अवधान
दक्षता ।

जागरित, वि (स) उग्रिद, विनिद, प्रबुद ।
२ जागरक सावधान । स पु, (स न)
दे 'जागरण' ।

जागरक, वि (स) 'जागरित्' जागरक
जागरित् २ अवहित, दक्ष, सावधान ।

जागति, स स्त्री (स) जागर्ता, जागिवा,
निद्राभाव प्रकोष २ दक्षता ।

जागीर, स स्त्री (फा) अग्रहार २ भूमिपद
(स्त्री) ।

—दार, स पु (फा) अग्रहारिन्
२ भूस्वामिन् ।

जाग्रत, वि (स जाग्रत) दे 'जागरक' ।

जाग्रति, जाग्रति, स स्त्री, दे 'जागति' ।

जागरर, स पु (फा जा-न-य) दे
'जागना' ।

जागिम, स स्त्री (तु जागिम) चित्रितास्तरण,
तलाच्छादनम् ।

जागिवद्यमान, वि (स) प्रज्वलत्, दहमान
२ तेजस्विन्, कातिमय ।

जाट, स पु (स जट) आर्येषु जातिविशेष
२ जठ, मूढ २ ग्रामीण, ग्रामीय,
ग्रामिन् ।

जठ, स पु [स यष्टि (स्त्री)] तैल इधु,
पेषणीयहि

जठर, वि (स) जठर-उदर, सम्बन्धिन् विश
यक, औदर, चठर, चस्थि-वर्तिन् । स पु,
जठराग्नि २ बाल ।

—अग्नि, म पु (स) जठरान्तर, जठराग्नि ।

जादा, स पु (स जाद्व) शीतता, शीतलता,
शैत्य २ शशिर, शीतकाल, हिमामग्न,
शीतर्तु (पु) ।

जाड्य, स पु (स न) जटता मूलना,
मूढता २ मदनता, मधुरता ।

जात, वि (॥) उत्पन्न, प्रसूत, मभूत
२ प्रकट, न्यक्त १ अष्ट, प्रसन्न ४ नव-
जात

जात, स स्त्री, दे 'जाति' ।

जात, स स्त्री (अ) प्रकृति (स्त्री), स्वभाव
२ देह ३ व्यक्ति (स्त्री) ।

जातक, स पु (स) वस्त्र, बाल २ शिशु
नवजात (पु) ३ मिश्र (पु) याचक
४ बुद्धस्य पूर्वज-मकथा (स्त्री बहु) ।

जातकर्म, स पु (स भोग् न) जातक्रिया,
सत्कारभेद (भर्मे) ।

जातर्षीत, स स्त्री, दे 'जातिर्षाति' ।

जाता, स स्त्री (॥) बाका, क-या, कुमारी
२ पुत्री, सना तनुजा ।

जाति, स स्त्री (स) वर्ण २ कुल, वंश
३ वंशावली, गोत्र ४ भेद, प्रकार ५ वर्ष,
श्री ६ ७ समाज, जनसमूह ८ सामा-य
९ जातिफल १० मास्ती ।

—स पारिव करवा, क्रि स, जाते समाजाद
वहिष्कृत्य या प्यु अर् (मे) ।

—च्युत, वि (स) जातिहीन, अपाक्त्य,
वहिष्कृत ।

—पाति, स स्त्री, जात्युपपन्नो (स्त्री दि) ।

—स्वभाव, स पु (॥) सङ्घ, प्रकृति
(स्त्री)-स्वभाव ।

जाती, वि (अ जात) वैयक्तिक २ स्वीय, नैज ।

जाती, स स्त्री (स) सुरमिगधा, सुरमिया, चेतकी, मालती ।

—पत्री, स स्त्री (स) जातिकोपी, मालनी पत्रिका ।

—फल स पु (सं न) जाति(सी)कोश श ४ १५ ।

—रस, स पु (स न) बोल ।

जातीय, वि (स) जातिभब, जातिमवधिन् २ राष्ट्रीय, देशीय ३ सामाजिक ।

जातीयता, स स्त्री (स) जाति, प्रेमन् (पु) अनुराग २ राष्ट्रीयता ३ सामाजिकता ।

जातुधान, स पु (स) निशाचार, राक्षस ।

जादू, स पु (फा) अभिचार, इन्द्रनाल कार्मण, कुसुति (स्त्री) कुहक-क मावा, मोह, मन्त्रयोग ।

—करना, कि स, अभिचर (प्रे), मन्त्र बशीरु वा मुह (प्रे), मायां कृ ।

जादूगर, स पु (मा) कौसुतिक सौमिक, दे (इ) द्रजालिक, कुहकानीविन्, मायाकार ।

जादूगरी, स स्त्री (फा) ऐन्द्रनालिकता, दे 'जादू' ।

ज्ञान, स स्त्री (स ज्ञान) बोध, उपलब्धि (स्त्री), विचार १ अनुमान, ऊह, तर्क ।

—कार, वि, ज्ञान, ज्ञानिन्, वेत्तृ क, अभिज्ञ (समासां न) २ दक्ष, कुशल ।

—कारी, स स्त्री, परिचय, अभिज्ञा २ नैपुण्य, दाह्यम् ।

—युक्त कर, कि वि, ज्ञात, ज्ञान बुद्धि विचार, पूर्वकम् ।

—परिचान, स स्त्री, परिचय परिचिति (स्त्री) ।

ज्ञान, स स्त्री (फा) प्राण, जीव वन यास २ वन, सामर्थ्य ३ मार, उत्तमांश ४ प्रिय, प्रिया ।

—जोर्षी, स स्त्री, प्राण, मकट मञ्जव भवम् ।

—दार, वि (फा) प्राणिन, सप्राण ।

—विद्वानी, स स्त्री (फा) परमोयोग, धीरपरिमम ।

—किस्सी पर दना, मु आरबन रिन्द (पि ४ से, सप्तमी के योग में) ।

—गाना, मु, ड (स्वा प अ), दाध (म्हा आ मे) ।

—छुडाना, मु, अपसु अपसुप् (म्हा प अ) ।

—मे जान आना, मु, वय समा-थत् (अ प से), सुस्थ निर्वृत्त (वि) भू ।

जानकी, स्त्री स्त्री (स) सीता, वैदेही, जनकतनया ।

जानना, कि स (स ज्ञान) दा (कृ उ अ), अवह (अ प से) अवगन्, दुष् (म्हा उ से), विद् (अ प से) २ मन् (दि आ अ), ऊह (म्हा आ से) विनक (जु) । स पु, दे 'ज्ञान' ।

जानने योग्य, वि, दे 'ज्ञान-य' ।

जाननेवाला, स पु दे 'ज्ञान' ।

जानपद, स पु (स) ग्रामवासिन्, ग्रामिन ग्रामीण, ग्राम्यजन २ जनपदप्राप्तकर वि जनपदग्राम सम्बन्धिन् ।

जानवर, स पु (फा) जीव प्राणिन्, वर, वेगन २ पशु, जंतु (पु) । वि, नव, मूर्ख ।

जानशीन, स पु (फा) उत्तराधिकारिन् ।

जाना कि अ (स बात) याह (अ प अ), गन् (म्हा प अ), चर चल हन् (म्हा प से) पद् (दि आ अ), अ (म्हा जु प अ) २ प्रस्था (म्हा आ अ) प्रवा, प्रचल, निर्गम् । स पु, गमन, गान, मजन, प्रस्थान, प्रचलन ॥

जाने योग्य, वि, गन्म्य, ज्ञान-य ।

जानेवाला स पु, गन् याद, चलित् (पु) ३ ।

गया हुआ, वि, गत, यात, हत, चलित ३ ।

जाने देना, मु, दे 'क्षमा करना' ।

जानी, वि (फा जान) प्राणमवधिन् । स स्त्री, प्रिया, दयिता ।

—दोस्त, स पु, अभिज्ञहृदय मुद९ (पु) ।

—दुरमन, स पु अनवर प्राणहर शत्रु (पु) ।

जामु, स पु (स न) जनपद (न), अजीवद (पु न), जामुमधि (पु), चक्रिका ।

जाने भनजाने, कि वि (दि जानना) ज्ञानयो-ज्ञाननो वा, काययो कामनो वा, रुदि पूर्वमनुद्विपूर्वा ।

जानो, अव्य, दे, 'मानो' ।

जाप, स पु (सं) दे 'अप' ।

जापक, सं पु (सं) दे 'जपी' ।

जापत, सं स्त्री (अ) नियामन) सह-म,
मोचनम् ।

जापरान, सं पु (॥) दे 'केसर' ।

जापरानी, वि (अ) दे 'वेसरिया' ।

जॉव, सं पु (अ) कर्मन् (न), कार्यम्
२ वैतनिक-कार्यम् कर्मन् ।

जाडना, म पु (अ) नियम, व्यवस्था, विधि
(पु) ।

—दीधानी, स पु, व्यवहारसहिता ।

—पौजधारी, म पु, दण्डसहिता ।

देजाभा, वि नियम विधि, विरुद्ध, अवैध ।

दजावगी, सं स्त्री, अनिमव, उरसूत्रवा ।

जाम्, स पु (स काम) दे 'पहर' ।

जाम, स पु (फा) चपक कम् ।

जामदग्न्य, म पु (स) गमदग्निपुत्र परशु
राम ।

जामन, सं पु (हि जमाना) द्र(द्रा)वत्,
न(द्र)व्यम् ।

जामन, म पु दे 'जामुन' ।

जामा, स पु (फा) वसन, वस्त्र २ कनक,
प्रावारक ।

जामे से बाहर होना, मु, अत्यन्त क्रुध् (दि
प अ) ।

जामे में फूला नृसमाना, मु, शृङ्ग हृष् (दि
प से) ।

जामाता, सं ॥ दे 'जमात' ।

जामिन, सं पु (अ) प्रतिभू (पु) बधक,
रक्षक ।

जामिनी, ॥ स्त्री, दे 'जमान' (द्रव्य) ।

जामिनी, सं स्त्री, (सं जामिनी) दे रात्री
त्रि (स्त्री), निशा ।

जामुन, स ॥ (सं. अम्बु) (वृक्ष) जम्बू
॥ (स्त्री) । (फल) जम्बू (न), जम्बू
जम्बू (स्त्री), जवुफल, जाम्बवम् ।

जायका, सं पु (अ) आ, स्वाद, रस ।

जायनेदार, वि (अ + फा) स्वादु, सरस,
रसवत् ।

जायज, वि (अ) उचिन, युक्त, सगन ।

जायदाद, सं स्त्री (फा) रिक्थ, दाय, भूमि
मपत्ति (स्त्री) ।

जायफल, सं ॥ [सं जाति(ती) फल]
जाति-कोष सार-शस्य, कोश(प)म्, पपुदम् ।

जाया, सं स्त्री (सं) परनी, भार्या, पाणि-
गृहीणी ।

—पती, सं ॥ (सं) दम्पती जम्पती,
(पु दि) ।

जाया, सं पु (स जात) पुत्र, सुत । वि,
उत्पन्न, जान ।

जाया, वि (फा) नष्ट, निरर्थक ।

जार, म पु (सं) उपपत्ति, परदारलपट ।

—ज, स पु (सं) उपपत्तिसमान ।

जारिणी, सं स्त्री (सं) कुलग पुश्चली,
अधमचपला ।

जारी, वि (अ) प्रवहत्, प्रवाहित २ वर्त
मान, प्रचलत्, प्रचलित ।

जालजर, स ॥ (स) (१४) नगर नृप
मुनि दैत्य, विशेष ।

जाल, सं पु (सं न) जालक, पाश,
आनाय, बाजुरा २ समूह, निकर ३ लता
लुटिका, आलम् ।

जाल, सं पु (अ जगल) छल, कपट,
माया ।

—साज, सं पु (अ + फा) धूर्त, शठ,
मायिक ।

—साजी, सं स्त्री, धूर्तता, कापट्य, शठ्यम् ।

जाला, स ॥ (सं जाल) लता लुटिका, जाल
२ जालदुष्टि (स्त्री) नेत्ररोगभेद ३ वासा
दिवन्मनार्थ जालम् ।

जालिक, स पु (सं) धावर केवल २ देन्द्र
जालिक, कुहककार ३ उर्ण तत्तु, नाम ।

जालिम, वि (अ) मोर, क्रूरकर्मन्, आन
तायिन्, पापिष्ठ ।

जालिया, दे 'जालसान' ।

जाली, सं स्त्री (सं जाल >) छिद्रप्राय
वस्त्र, जालिका २ काष्ठादिपट्टेषु छिद्रसमूह
३ सूचीकर्मभेद जालिकाकर्मन् ।

जाली, वि (अ जगल) कृत्रिम, कृतक ।

जावा, सं पु (सं यवद्वीप प) द्वीपविशेष ।

जिह्वत, स स्त्री (अ) अपमान अवस्था,
निरस्कार, अनादर २ दुर्गति (स्त्री)
दुर्दशा ।

जिस, सर्व (स य >) यत् ।

जिस्म, स पु (फा) शरीर, देह ।

जिह्न स पु (अ) बुद्धि-मति (स्त्री) ।

जिहाद् ॥ पु (अ) धर्मयुद्धम् ।

जिह्वा, स स्त्री (स) रसना, रसज्ञा दे
'जीम'

जी, स पु (म जीव >) चित्त मानस
चैनम-मनस (न) २ माहस, पौष
३ मकर विचार ।

—आना (किसी पर), अनुराग बन्ध (क
प अ) लिह् (दि प से सप्तमो के साथ) ।

—करना मु ह् (तु प से) ।

—का बुझार निकलना, मु रोदननल्पना
दिभि मनोवेगा शब् (दि प से) ।

—खट्टा होना, मु, निर्विद् (दि आ अ
तृतीया के साथ) विरक्त (वि) भू ।

—छोल कर, मु, निस्मकोच > यथेच्छम् ।

—चुराना, मु, परिह् (भ्वा प अ, द्वितीया
के योग में) ।

—छोटा करना, मु, विषद् (भ्वा प अ)
२ औदार्य हा (जु प अ) ।

—बहलना, मु, मनोविनोद जन् (दि आ
से) ।

—बिगडना, ॥, नम् (सम्मत्, विवमिपति),
वमनेष्टा नन् ।

—भरना, मु, रुन् (दि प अ) ।

—भर कर, मु, यथेच्छ, यथाकामम् ।

—मचलाना या—भतलाना, मु, दे 'नी
बिगडना' ।

—मैं आना, मु बाष्छ (भ्वा प से) ।

—लगाना, मु, दे 'नी आना' ।

जीजा, स ॥ (हि जीजी) भगिनीपति,
आहुत ।

जीजी, स स्त्री (अनु) जीजी (ज्यायसी)
भगिनी, स्वस्र (स्त्री) ।

जीत, स स्त्री (स जितम्) नय, विनय
२ लाम ३ साफस्य, कृतकार्यता ।

—हार, स स्त्री, नयानयौ, जयपरानयौ ।

जीतना, कि स (हि जीत) नि (भ्वा
प अ), वि परा नि (भ्वा आ अ) अभि
पराभू २ बशीक, दम् (मे) ३ स्वायत्ती-
आत्मसाय क । स पु, दे 'जीत' स स्त्री ।

—योग्य, वि, वि, जेय, जेन्य, नयनीय,
अभि परा-भवनीय दमनीय बशीकार्य ३ ।

—चाला, स पु, वि, नेतु अभिभाविन्, अभि
भाव (तु) क ।

जीना, वि (हि जीना) जीवित, सजीव,
जीवोपेत सप्राण ।

जीतेजी मु यावज्जीव, जीवनपर्यन्त, जीवना
वधि (न) ।

जीन स पु (फा) पश्ययन, पर्याणम् ।

जीनत, स स्त्री (फा) शोभा छवि (स्त्री),
आभा ।

जीमा, कि अ (स जीवन) जीव् (भ्वा प
से) प्र भन् (अ प से), खस (अ प
से) । स पु जीवन, प्राणधारणम् ।

जीना, स पु (फा) सोपान, आरोहण,
अधिरौहि (ह) णी ।

जीम, स स्त्री (स जिह्वा) रसा, लोला,
रसला, सुषारसवा, रसिका, रसाका, रसना ।

—चाटना, मु, गृष् (दि प से), अमिलव्
(भ्वा प से), लुम् (दि प से) ।

जीमी, स स्त्री (हि जीम) जिह्वा रसना,
मार्जनी शोषनी २ जिह्वा रसना मार्जन
शोषनम् ३ लज्ज जिह्वा रसा-रसला ४ कल
मात्रम्, लेखनीचक्षु (स्त्री) ५ पशुरोगभेद ।

जीमना, कि स (स जेमन) जद् (अ प
अ), खाद् (भ्वा प से) ।

जीमूत, स ॥ (स) मेघ, बारिबाह, अभ्र
२ पर्वत, नय ।

—चाहन, स पु (स) इद्र, वज्रिन् (पु) ।

जीरा, सं पु (स जीर) दीपक, दीप्य,
जीरक, नरण ।

जीर्ण, वि (स) शीर्ण, गलित २ परिपक्व,
परिणमिग ।

—जीर्ण, वि (स) बुद्धा, स्थविरा, पलिता,
पालकी ।

जीर्णोद्धार, सं पु (स) नवीकरण, सधान,
वद्धार ।

जीवित, वि (स जीवत्) सप्राण, जीवित,
सजीव, जीवोपेत ।

जीव, स पु (स) । जीव, आत्मन् (पु),
शरारिन्, देहिन् ।

—दान, स पु (स न) प्राणदान, जीवन्
रक्षणम् ।

—दण्ड, स पु (स) प्राणदण्ड, मृत्युदण्ड
० वर मारण हननम् ।

जीवक, स पु (स) प्राणिन् जीवधारिन्
२ मेवक दाम ३ अ(आ) हितुडिक्
कालमाहिन् ४ कुसीद-यक वासुदेविक,
जुमीदिन् ।

जीवन, स पु (स न) प्राणधारण, चैव य
मप्राणता ।

—चरित, स पु (स न) जीवन, धर्मा
वृत्तान्त-चरित्रम् ।

जीवनवृत्त, वृत्तान्त, स पु (स) दे 'जीवध
चरित' ।

जीवनवृत्ति, स स्त्री (स) भागीनिका
व्यसाय, उपजीविका, जीवनीयाय, जीवन
साधनम् ।

जीवाम्ना, स पु (स धन्) दे 'जीव' ।

जीविका, स स्त्री (स) दे 'जीवनवृत्ति' ।

जीवित, वि (स) दे 'जीव' ।

जुभा, स पु (स धन) पण पणन-देवन मा,
धन जङ्ग, क्रीडा ।

—खेलना, कि अ, दिव् (दि प से) (अक्षे)
क्रीड (भ्वा प से) ।

जुभारी, स ॥ (हि, जुभा) धनवार,
धनव, अश्वदेविन्, देविन् ।

जुक्काम, स पु (अ) प्रतिदयाय, इन्धन
जाव ।

जुग, स पु (स युग) कालमानभेद २ युगल,
द्वन्द्वम् ।

जुगन्, स पु (हि जुगजुगाना) सञ्चोत,
व्योतिरिक्ता, दृष्टि-यु प्रमाक्रीट, उप
सूर्यक, तमोमणि ।

जुगल, स पु (स युगल) दे 'युगल' वा
'युग (२)' ।

जुगालना, कि अ (स अङ्गिणम् >) रोमय
ह, रोम-यावते (ना धा) ।

जुगाली, स स्त्री (हि जुगालना) रोमय
पुनश्चर्चनम् ।

जुगप्मा, स स्त्री (स) बोमत्स, घृणा गद्दी,
वरुचि (स्त्री) ।

जुटना, जुटना, कि, अ (स युक्त) स, युन
(वर्म) सखिल (दि प अ) समिल (तु
प से) ।

जुटाना, जुटाना, कि प्रे, व 'जुटना' के
प्र रूप ।

जुतना, वि अ (स युक्त >) युग योक्त्र वह्
(भ्वा उ अ) ।

जुदा, वि (फा) पृथक्, भिन्न ।

—करमा, वि स वियुन (कथ उ अ)
पृथक्-क ।

—होना, कि अ, पृथग्, विद्विलम् (वि
प अ) ।

जुदार्द, स स्त्री (फा) वियोग पार्थक्यम् ।

जुद, स पु (स जुद) सप्राप्त ।

जुमा, स पु (अ) शुक्र-भूय, वार-वासर ।

जुरमत, स स्त्री (का) माहसिय, साहम,
वसाह ।

जुरमाना, स पु (फा) दम, अर्धदण्ड ।

जुम, स पु (अ) शरारि, दोष ।

जुर्माना, स पु (फा) दे 'जुरमाना' ।

—करना, कि अ, दण्ड (जु द्विकर्मक) ।

—देना, कि ॥, दण्ड-दम दद् (भ्वा उ अ) ।

—मुआफ करना, कि स, दण्ड-दम क्षम्
(भ्वा आ से) ।

जुलाय, स पु (अ जुलाय) रेचन, विरचन
उदरसोपन ० रेचक, विरचक-कम् ।

—दना, कि स, विरिक् (प्रे) ।

—लेना, कि अ (उदर) विरिक् (उ प अ) ।

जुलाहा, स पु (फा 'जीलाह') तन्तुशाय,
वय, बुविन्द, तन्त्राश, पटकार ।

जुलम्, स पु (अ) दे 'जुलम' ।

जुल्फ, स स्त्री (फा) बुटिल-चूर्ण-कुतल
अलव २ दिफान्तवदा चितुरा ।

जुल्म, स पु (अ) अत्यचार, क्रूरधीर,
वर्मान् (न) ।

जुल्मन, स स्त्री (अ) अथकार निमिर,
तमस् (न) २ विरिक्-अ-पकार, कालिमन्
(पु)-इतिमन् (पु)-दयामना ।

जुहमी, वि (अ जुस्म >) पापिष्ठ, आतता
पिन, अस्थानारिन, कर ।

जुवा, म पु (हि जुआ) दे 'जुवा' ।

जुवारी, वि (हि जुवारी) दे० 'जुवारी' ।

जुष्ट, वि (स) मुत्तशिष्ट, वच्छिष्ट २ प्रिय
इष्ट प्रीत प्रेष्ट ३ युक्त, अन्विन युग
४ सेवित ।

जुस्तजू, म स्त्री (फा) अवैष्णा गवेषणा
माता ।

जुही, स स्त्री (स यूही) (नफेद) यूधिका,
बाणपुष्पी, वामनी, (पीली) पीत मुक्ता
यूथी ह्रमयूधिका, वनवप्रभा, ह्रमपुष्पिका

जू, म स्त्री (स यूका) देश्यः देशकीट,
स्वेदसमवा यूक-का, ५० पद-यी ।

जूभा, स पु (स युभा) योक्त्र युवाँ, प्रासग
इयानभन, धुर (का) ।

जूषा, स पु, दे 'जूषा' ।

जू-जून, स स्त्री (हि जूठा) मुक्तशय,
वच्छिष्ट, अवशिष्टम् ।

जूठा, वि (स जुष्ट) वच्छिष्ट, मुक्तशय ।

जूषा, स पु (स जूट) यूक देशवय,
अगमन्वि ।

जूत-जूता, स पु (स युक्त >) पादत्राण,
उपानह (स्त्री) ।

—मारना, मु, पात्राणेन तड (जु)
२ तिरस्कृत ।

—खाना, मु, तिरस्कार लम् (स्वा आ अ) ।

जूती, स स्त्री, दे 'जूता' ।

जूय, ॥ पु, दे 'यूय' ।

जूनियर, वि (१) अवर, अधर, अवरपदमान् ।

जूही, म स्त्री, दे 'जूही' ।

जूमना, स स्त्री (स) जूम, जूमन, जूमिका,
जमा, जमका ।

जैठ, स पु, दे 'ज्यैष्ठ' ।

जैठा, स पु (स ज्यैष्ठ) प्रथमज, अग्रज ।

जैठानी, स स्त्री, दे 'जैठानी' ।

जैव, स पु (फा) (जोलककुकादीना) मोक्ष ५ ।

—कतरा, स पु, चिहाम, ग्रथिच्छेदक ।

जेर, स स्त्री (स 'गरा') उल्ल, कल्ल ।

जेल, स पु (अ) कारा, गृह-आगार, बन्दि,
गृह-शाला ।

—प्राणा, सं पु (अ जा) दे 'जैल' ।

१६ आ०

जेवर, स पु (फा) वि-आ, भूषण, आभरण,
अलङ्कार, अलङ्करणम् ।

जेहन, स पु (अ) दे 'जिहन' ।

जैन, स पु (स) जैनमतान्तरिन् २ जैन,
मन-सम्प्रदाय ।

जैनी, स पु (स जैन) दे 'जैन' (१) ।

जैसा, वि (स याइश) याइश (श), यत्प्रकारक
[जैसी (स्त्री) = याइशी] ।

—का तैसा, ॥, पूर्ववत्, यथापूर्वम् ।

—चाहिण्, मु, ययोचिन, यथाई, यथायोग्यम् ।

जो, सर्व (स य) य (पु) या (स्त्री),
यत् (न) ।

—जुछ, यरिकछिद् ।

—कोई, य कश्चित्-वश्चन कोप्रिपि ।

जोक, लौक, स स्त्री (स जलौका) जलुका,
रफ, पा पायनी, पलाका, जलजन्तुका ।

जोखों, स स्त्री, मकट, विपद् (स्त्री) ।

जोग, स पु (स योगक्षेम ?) दे 'योग' ।

जोगिया, वि (हि जोगी) परित्राणक,
योगिसम्बन्धिन्, २ गैरिकरागयुक्त, गैरकाष्ठ,
गैरिकवर्ण ।

जोगी, स पु (स योगिन्) दे 'योगी' ।

जोगिन, स स्त्री, दे 'योगिनी' ।

जोजन, स पु (स योगन) दे 'योजन' ।

जोड़, स पु (स जोड) बचन, मेलन
२ योग, सकल, परिसख्या, पिंड । १ अग
सन्धि, अगमन्धि ।

जोड़ना, कि स (स जोडन) एकत्र कृ,
ममिल् (प्रे) जुड (स्वा ॥ प से) युज्
(रुष व अ), सरिल् (प्रे) १ सकल
(जु), परिसरया (अ प अ) ।

जोडा, स पु (हि जोडना) युगल, युग्म
२ द्वन्द्व, मयुज ३ उपानदयुगल ४ वेष श् ।

जोडी, स स्त्री (हि जोडा) दे 'जोडा' (१ २) ।

जोत, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश,
आमा, वृत्ति ।

जोत, स स्त्री (हि जोतना) चर्मपट्ट,
वरदा, वधी ।

जोतना, कि स (स युक्त >) योक्त्रयति
(ना वा), युज् (जु) २ कृप् (स्वा प अ),
हल् (स्वा प से) ।

जोतिष, सं पु, दे 'ज्योतिष' ।

जोतिषी, स पु, दे 'ज्योतिषी' ।

जोधा, स पु (स योद्ध) बोध, मट ।

जोफ, स पु (झ) दुर्बलता निबलता ।

जोवन, स पु (स यौवन) तारुण्यम् ।

जोम, स पु (झ) गव, दर्प अहमान, अहकार ।

जोर, स पु (फा) बल, शक्ति २ वश, अधिकार ३ वृद्धि-समृद्धि (स्त्री)

४ वेग, आवेश ५ आश्रय ६ परिग्रह ७ व्यायाम ।

जोरावर, वि (फा) बलिष्ठ शक्तिशालिन् ।

जोरदार, वि (फा) प्रबल, बलवान् २ अवाट्य, अलण्ड्य ।

जोराजोरी, अव (फा जोर >) बलात्, हठात्, प्रसभ, प्रसन्न (सव अ य) ।

जोरू, स स्त्री (हि जोडा) माया, पत्नी, गेहिनी ।

जोराहा, स पु, दे 'जुलाहा' ।

जोश, स पु (फा) उत्तनना उत्साह, व्यग्रता, चण्डता, मनोवेग, आवेश ।

—देना, कि स, प्रोत्साह (प्रे), उत्तिव (प्रे) २ पच (भ्वा प अ), बध् (भ्वा प से) ।

जोशदा, स पु (फा) काय, कषाय, निपात ।

जोशीला, वि, व्यग्र ह्य उत्साहिन्, उत्साहवान्, प्रचण्ड ।

जोहक, स पु (देश) जलाशय छदः, पत्तलम् ।

जो, स पु (स यव) प्रवेष्ट शीर्षं सिन, शूक, अश्वप्रिय, महादुस ।

जोहर, स पु (अ) रत्न, मणि (पु, कभी स्त्री) २ सार, तत्त्वम् ।

जोहरी, स पु (फा) यणिकार, रत्नकार २ रत्नपरीक्षक ।

ज्ञातव्य, वि (स) ज्ञेय, अवगत य, बोद्धव्य ।

ज्ञाता, वि (स ज्ञात्) वेत्तु शानिन्, बोद्ध ।

ज्ञति, स पु (झ) समीक्षा, वधु, बाधन २ व, स्वजन, सङ्ग, अशक, दायद ।

ज्ञान, स पु (स न) बोध, प्रतीति (स्त्री) ।

ज्या, स स्त्री (स) मौर्वी, शिञ्जनी, गुण ।

ज्यादती, स स्त्री (फा) आधिक्य, प्राचुर्य, अधिकता २, अत्याचार ।

ज्यादा, वि (फा) अधिक, महत्, बटु ।

—तर, वि बहुसरयाक, अधिकतर, भूयस ।

ज्येष्ठ स पु (स) अग्र्य, प्रथमज २ भर्तु व्यायान् भाव ३ ज्येष्ठ (मास) । वि, वृद्ध २ श्रेष्ठ ।

ज्यों, कि वि (स य + इव यथा), येन प्रकारेण ।

—का त्यों, सु, यथापूर्वम् ।

—त्यों, सु, यथा तथा ।

ज्योनि, स स्त्री [स ज्योतिस् (न)] प्रकाश, प्रभा, पुति (स्त्री) ।

ज्योतिष, स पु (स न) ज्योतिर्विद्या, ज्योति शास्त्र, नक्षत्रविद्या ।

ज्योतिषी, स पु (स ज्योतिषिन्) देवद, ज्योतिर्विद, ज्योतिषिक ।

ज्योस्त्ना, स स्त्री (स) चंद्रिका, कौमुदी ।

ज्वर, स पु (स) ज्वरि, ज्वरा ज्वति (स्त्री), महामर, तापक ।

भोडी भोटी देर बाद होनेवाला—, स्वस्वरिता मग्नर ।

होरेवाला—, घन पुनिकज्वर ।

प्रतिदिन होनेवाला—, अन्येषु ज्वर ।

रक रककर होनेवाला—, सविरामग्नर ।

सडा—, रक्तदुष्टि (स्त्री) ।

हर तीसरे दिन होनेवाला—, तृतीयज्वर ।

हर चौथे दिन होनेवाला—, चतुर्थज्वर ।

ज्वलत्, वि (स ज्वलत्) उदीत, प्रकाशित ।

ज्वलन, स पु (स न) दाह, ताप २, अग्नि ३ ज्वाला ।

ज्वार, स स्त्री (स यावनाल) अन्नविशेष, वृक्षतण्डुल, क्षेत्रेणु ।

ज्वार, स पु (देश) वेलाशुद्धि (स्त्री) ।

—भाटा, स पु, वेलाया वृद्धिदो (दि) ।

ज्वाला, स स्त्री (स) शिखा, अग्नि (न) ।

—मुखी, स पु (स) अग्निपर्यन्त ।

श

अ, देवनागरीवर्णमानाया नवमी व्यञ्जनवर्ण,
झरार ।

श, शकृन्, स पु स्त्री (अनु) छणत्तर,
वर्णणध्वनि शिक्षितम् ।

शराव, स पु (हि 'शान्' का अनु) वट
मुख्य स कर्मण्यम् ।

शशन्, स स्त्री, (अनु) कृष्टम्, आवास
व्येष्ट वैषम्यम् ।

शक्षनाता, कि अ (अनु) शणक्षणावते (ना
धा) शणक्षणध्वनि वरप (प्रे) ।

शक्षनाहट, स स्त्री (अनु) दे 'शवार' ।

शक्षा, स स्त्री (स) शशावान्, सङ्घिको वात ।

शक्षोचना कि स (स शानम्) धुम (प्र),
सरभम रूप (प्र) ।

शङ, स पु (हि शङ्गा) शिरो अमुहिता
मैशा, सहज-जन्मन, नैशा कवा (पु वट) ।

शङा, स पु (हि शङ्गी) ध्वज, केतु,
केतनम् ।

—शरदार, स पु पताभिन्, ध्वजिन्, वैजय
तिर, श्वजपताका पारिन् वाहिन् ।

—शाङ्गना, सु, स्वादली आरसाम् कृ, अभि
परा, भू ।

शङ्गी, स स्त्री (स जयती) वैजयन्ती, पताका,
दे 'जङ्गा' ।

शङ्गुला, वि (हि शङ्ग) अमुहित, अनुस-अकृत
अधिष्ठ, वैम मूर्द्धज ।

शप, स पु स) सपा प्लुन-ति (स्त्री)
२ अश्वगलभूषणम् ।

शप, स स्त्री (अनु) आवेश, अग्निनिवेश,
आग्रह, निर्वेष २ प्रलाप अमवदभाषण,
प्रवक्ष्य ।

—मारना, कि स, प्रलप् प्रनत्म् (स्वा प से),
निर्विवेक माद (स्वा आ से) ।

शकृशक, स स्त्री (अनु) दे 'शक' ।

शकना, कि अ, प्रलप् प्रनत्म् (स्वा प से),
विवत् (स्वा आ से) ।

शकरी, स पु (हि शक) वावदूक, प्र,
नक्षत्र, वाचा २ इन्द्रादिन् ।

शस, स स्त्री (अनु) दे 'शक' ।

शगङ्गा, कि अ (हि शकृशक) विवद
(स्वा आ से) विप्रलप् (स्वा प से),
कलह कृ, कलहायते (ना धा) ।

शगडा, स पु (हि शगङ्गा) वाग्दुह,
कठि, कलह, विवाद ।

शगडालुह, वि (हि शगडा) विवादिन्,
कलहप्रिव ।

शट, कि वि (स सदिति) तक्षण, अनुपद,
जीघम् ।

—पट, कि वि, तत्कालमेव, सत्वरम् ।

शटकना, कि स (हि शट) (सहसा)
वेप-कप (प्रे) २ छलेन बटेन वा अपह
(स्वा प अ) ।

शटका, स पु (हि शटकना) हस्तादिकेन
प्रचालन प्रेरण प्रणोदन, श्वट-आघात प्रहार
२ सहसा वध हननम् ।

शव, स स्त्री (हि शवना) दे 'शवी' ।

शवशवना, कि स (अनु) दे 'शक्षोचना' ।

शवना, कि अ (स शरणम्) पट शट्
(स्वा प से) शू (कर्म) २ पाव् निर्णिज्
(कर्म) ।

शवप, स स्त्री (अनु) कलह २ क्रोध
२ आवेश ।

शवयेरी, स स्त्री (हि शाव + वेरी), (पल)
वन्धवदरम् (वृष) भूवदरी, वन्धवदर,
श्वराहार ।

शवी, स स्त्री (हि शवना) सतत शरण
पतन २ सततवृष्टि (स्त्री) ।

शङ्गाना, कि स (शाङ्गा) शुभ-वृन्
(प्रे) २ अपवह (प्र) न 'शाङ्गा' के
(प्रे) रूप ।

शङ्गाना, कि स (शाङ्गा) दे 'शङ्गाना' ।

शपक, स स्त्री (हि शपकना) नेत्रनिमीलन,
पद्ममकोच, निमेष, त-रा, रीतिज्ञा २ पल,
धुण-गम् ।

शपकना, कि स (अनु शप्) निमील (स्वा
प से) नेत्र सकुच (स्वा प से), निमिप्
(दु प से) । कि अ, निमील्, निमिप्

२ अल्प निद्रा (अ प अ)-स्वप् (अ प अ) ।

शपकाना, कि स, दे 'शपकना' कि स ।

शपट, सं स्त्री (हि शपटना) आच्छेद आवस्मिकप्रद्वण २ सहसाक्रमण, आवस्मिक प्रहार ।

शपटना, कि स अ (स शप >) आच्छिद्र (र प अ), सहसा आक्रुष (स्वा प अ) २ आक्रम (दि प से) ।

शपट्टा, स पु, } दे 'शपट' ।
शपेट, स स्त्री, }

शपरा, वि (अनु) सघनकेश, लोमश दीर्घलोमम् ।

शपरीला, वि, दे 'शपरा' ।

शमक, स स्त्री (हि चमक) द्युति (स्त्री) आभा, कान्ति (स्त्री) ।

शमस्तम, } स स्त्री (अनु) धारासार,
शमास्तम, }

धारापात, शस्त्रा २ क्षणकार, क्षणमणशब्द ।

शमेला, स पु (अनु शव) दे 'कृपट' ।

शरना, कि अ (स शरण >) क्षर (स्वा प से), क्षु (स्वा प अ), प्रपट (स्वा प से) ।
श पु, प्रपान, क्षोत्स (न) निशर, क्षस ।

शरीला, सं पु (अनु शरशर + हि गोला) गवाक्ष, वातायनम् ।

शरक, स स्त्री (स शलिका) आभा, द्युति (स्त्री), प्रकाश २ प्रतिबिम्ब २, प्रतिच्छाया, प्रतिफलम् ।

शरकना, कि सं (हि शरक) प्रकाश विधुत् (स्वा आ से) २ प्रतिफल (स्वा प से) सकान्त प्रतिबिम्बित प्रतिफलित (वि) भू, प्रतिमा (अ प अ) ।

शरकाना, कि स, व 'शरकाना' के प्र रूप ।
शरकालाना, कि अ, दे 'चमकाना' कि स, दे 'चमकाना' ।

शरकालाहट, स स्त्री, दे 'चमक' ।

शरलना, कि स (हि शरलल) बीज (चु), व्यञ्जन पूर्ण (प्रे) ।

शरलमलाना, कि अ (अनु शरलमल) सवम्प प्रकाश (स्वा आ से) ।

शरलवाना, कि प्रे, व 'शरलना' के प्रे रूप ।

शरलवाना, कि अ (हि शल = कोष) प्रकुप् (दि प से), क्रुष (दि प अ) । कि स, व उक्त चातुर्भो के प्रे रूप ।

शप, स पु (स) मत्स्य, मीन ।

—केतु, स सं (स) काम, मार, रति पनि, मनोज ।

शार्ङ्ग, स स्त्री (स छाया) प्रतिबिम्ब-य, प्रति-च्छाया फल-रूप २ अश्वार २ छलम् ।

शोकना, कि अ (स शव अश्व अश्वश) आलमार्गेण दृष्ट (स्वा प अ) २ जगत् निरूप (चु) ।

शोकी, स स्त्री (हि शोकना) ईषद अति-व्यक्ति (स्त्री) २ ईक्षण, निरूपण २ दृश्य ४ गवाक्ष ।

शोस, स स्त्री (अनु शनशन) शहन, शहरी, काश्यकरतालकम् ।

शोशन, स स्त्री (अनु) नूपुर-रत्न ।

शोशरी, स स्त्री दे शोष तथा 'शोषन' ।

शोवा, स पु (स शामकम्) दग्धेका २ कोष ३ कुचेष्टा ।

शोसा, स पु (स अध्यास >) छल कपट, प्रतारणा ।

—देना, शासना, कि स, वच (चु), प्रहृ (प्रे), छलयति (ना भा) ।

शोड, स पु (स शोड) पिबुत्, शोड क्षुपभेद ।

शोमा स पु (हि शोम) केन, हिंहीर ।
अभ्युक्त, मड डम् ।

शोड, स पु (स शोड >) वटगुल्म म, वटस्तम्भ । (बाडी स्त्री) ।

—क्षमाद, सं पु, मोक्षर, शुभगुल्म ।

शोड, स पु, गुल्मगहन, निर्विस्तम्भ ।

—शोड, स स्त्री, मानन, शोषनम् ।

—फानूस, सं सं, वाचदीपिका ।

—शूक, सं स्त्री यथमप्रम्, मययोग

शोडन, स पु (हि शोडना) नक्तक, मार्जनपट ।

शोडना, कि स (हि शोडना) रेणु अपमृज् (अ प वे), निर्धूलक ।

—शोडना, कि स, शोष्ठ (स्वा प से) ।

शोड, सं पु (हि शोडना) वस्त्र-वसन, अन्वेष्टना-निरीक्षा २ गृह-थ, मल, पुरीषम् ।

शब्द, स की (हि शब्दना) समार्थी,
शोधना ।
—देना कि स, समूह (अ प वे) गुण (प) ।
शामा, स पु (स शानक) दम्पत्यका ।
शालर, स की (स शालरी) दशा
(सो बडु), वस्त्र (सो पु बडु) वस्त्रप्रान्त ।
—दार, वि, शालरीजुल प्रान्तोदेव ।
शितक, स की (हि शितकना) आरुका,
विषय सन्देह ।
शितकना कि अ (अनु) आक-विक्रम
(स्वा प से), दोलादने-चिरापते (ना पा)
संगे (अ आ से) ।
शिवक स की (हि शिवकना) मर्त्य
आक्रोश अधिमप ।
शिवकना कि स (अनु) आकुष् (स्वा
प अ) अधिमिप् (तु प अ) निर्मल
(तु आ से) ।
शिवकी, स की (हि शिवकना) दे
शिवक ।
शिमिल, स की (अनु) प्रक-प्रमान-
प्रमाण ।
शिही, स की (स) चिनी, किरौ, शिरिका,
शिरिका, शूहारी ।
मिही, स की (स वैर >) सूक्ष्म त्व (की)-
अमन् (न) २ अरातु, उत्पन् ।
शीकना, शीखना, कि अ (हि शीकना)
अनुगुच (स्वा प से), अनुगु (दि आ अ),
परागप क । स पु, पश्चात्प, विप्रतीछार,
अनुगुच, अनुगुच ।
शीगुर, स पु (अनु-ली-वी) दे ५म-११ ।
शीना, वि (स शीना >) सूक्ष्म, विरल, तनु ।
शील, स की (स शील >) शरीर, तन्
एव सगती सरस (न) ।
शीवर, स पु (स शीवर) नाविक, अशुद्धिक
= शैवर्न, मत्स्याधोव ।
शुभलाना, कि अ (अनु) कुप (दि प से),
कुप (दि प अ) ।
शुभलाहट, स की (हि शुभलाना) कोप,
कोप, रोष, अमर्ष ।
शुट, स पु (स) अस्त्वयश्च, अस्त्वयश्च ।
शुट, स पु (स शुट >) सनुदाय, सनुद,
गम, वन्द, अस्त्वयश्च ।

शुक्रना, कि अ (स शुक् >) अर, नम्
(स्वा प अ), नक्षीम् २ वक्षीम् ।
शुक्रना, कि स (हि शुक्रना) नम् (प्रे),
वक्षी क ।
शुक्रवावा, कि प्रे (हि शुक्रना) दे 'शुक्रना' ।
शुक्राव, स पु (हि शुक्रना) प्रकाश, नति
(की) २ वक्षी ३ प्रवृत्ति (की) ।
शुक्रावट, स की (हि शुक्रना) दे 'शुक्राव' ।
शुटपुग, स प (अनु शुटपुट) मपेकाट,
अक्षीराप्रयोगसमय सपदा ।
शुटलाना, कि स (हि शुट) मिष्या
शुटलाना, यदिष्ट प्रमा-पति (ना पा),
शुटलाना, निराम, प्रत्यापदा (अ प अ) ।
शुटार्, स की (हि शुट) मत्तवठा, अमृतव,
अलीकता, मिष्यात्वन् ।
शुनशुन, स की (अनु) छात्कार, पात्कार,
पाप-पनि (पु) ।
शुनशुना, स पु (अनु) शुनशुनक ।
शुनशुनी, स की (अनु) शुनशुनी, अशु
वाक्यानुवृत्ति (की) ।
शुनका, स पु (हि शुनना) कालवन् ।
शुनमट, स पु (स शुट >) सनुदाय,
शुनमुट, सनु २ सन्म, शुनम् ।
शुर्, (हि शुर्ना) वली-कि (की), वमंसकोच
२ पुट, मय ।
शुलसना, कि अ (स अलन) ईश्व दद्
शुर् (कर्म) ।
शुलसाना, कि स, ईश्व दद् (स्वा प अ),
शुव (स्वा प से) ।
शुलाना, कि स (हि शुलना) प्रैल (प्रे)
इतस्त चल (प्रे) ।
शु, स पु (स शुलक) अस्त्य, अमृत,
शु, अलीक मिष्यावचन, अस्त्यमात्र । वि,
शु, मिष्या-मृत् (समासके आदिने) अस्त्य,
अस्त्य, विउष ।
शु, वि (हि शुलक) मिष्या अस्त्य,
शु, अस्त्यवादिन् मिष्यामात्रिन् ।
शुम, स की (हि शुमना) तन्त्रा, अमृत
२ आन्दोलन, प्रेक्षन् ।
शुमना, कि अ (स शुम) अमृत 'शुम'का
(अनु) इतस्त चल (स्वा प से) ।
शुल, स की (हि शुलना) कुप-प-पा,
प्रवेणी-कि (की), परिस्तेन, सधना ।

शुद्धता, कि अ (सं होलने) दोलायते (ना था),
प्रेक्ष् (भ्वा प से) ।

शुद्धा, सं पु (स होला-ए लिका) प्रेक्षा,
हिंदोल, आन्दोल ।

शेखना, कि स (स शेखन >) सह् (भ्वा
आ से), हृष् (दि उ से) ।

शौकना, कि स (हि चुकना) अक्षौ क्षिप
(तु उ अ) २ प्रेर (चु) प्रणुद (प्रे) ।

शौक देना, कि स, दे 'शौकना' (२) ।

शौका, सं पु (हि शौकना,) वायुवेग,
पवनप्रहार, वातगुस्म ।

शोषका, स पु (हि शोषना ?) उष्ण अ,
कुटीर र कुटी, कुटीरक; पर्णशाला ।

शोष्ट, स ॥ (हि शूलना) दैधित्य, सकोष
२ सवरण, व्यवधान ३ रजनं, लेपनम् ।

—फेरना, लिप् (तु उ अ), रज (प्रे) ।

शोला, स पु (हि शूलना) पुष्प-ट, प्रमेव
कोष (शोली ली = लघुपुष्प इ) ।

अ

अ, देवनागरीवर्णमात्राया दसमो व्यञ्जनवर्ण, । नकार ।

ट

ट, देवनागरीवर्णमात्राया एकादशो व्यञ्जनवर्ण,
टकार ।

टक, स पु (स) प्राबदारण, पाषाणभेदन
२ अक्षन, तक्षणी ३ परच्छ, कुठार
४ खड्ग ५ चतुर्मास्यकालक चतुर्विंशतिरक्षि-
कालको ना तोलभेद ६ कोष ७ अभिमान
८ जघा ९ अग्नि १० कोष, निधि
११ मुद्रा, नाणकम् ।

टैकना, कि अ (स टकण) व 'टैकना' के
कर्म के रूप ।

टकवाई, सं ली (हि टकवाना) १-३
टकन-सीवन-लेखन, भूत्या-मृति (ली) ।

टकवाना, कि प्रे, व 'टैकना' के प्रे रूप ।

टका, सं ली (सं) जघा, प्रसृता ।

टैकाई, स ली (हि टैकना) दे 'टकवाई' ।

टैकाना, कि प्रे, दे 'टकवाना' ।

टकार, स ली (सं पुं) व्या-भौवी, शोष-
शब्द, शिजिनोऽजित २ टणत्कार, रणिति
३ शण शण, रणित-निन्द ।

टकारना, कि स (स टंकार >) क्वां पुष्
(चु), भौवी आस्फु (प्रे) टकारदति
(ना था) ।

टकी, सं ली (अं टैक) सोदाधार, वापिका
० द्रोणे-णि (ली) ।

टग, स पुं (सं पुं न) प्राबदारण, पाषाण
भेदन २ परच्छ ३ चतुर्मास्यकाल तोलभेद
४ दे 'रांग' ।

टंगना, कि अ, दे 'टकटना' ।

टटा, सं पु (अनु टन टन) उपद्रव, कलङ्क
२ प्रपञ्च, आदर ।

टक, स ली (स टक - शोधना >) अनिमेव
वद-स्थिर, दृष्टि (ली) ।

—बोधना, ॥, अनिमित्ते) वनपन (वि) दृग्
(भ्वा प अ) ।

—लगाना, मु प्रतीक्ष् (भ्वा आ ॥) ।

टकटकी, स ली, दे 'टक' ।

—बोधना, मु, वद-स्थिर, दृष्ट्या अवलोक
(चु) ।

टकराना, कि अ (हि टकर) सयह् (भ्वा
आ से), अभि-आ प्रणि, हन् (अ प अ),
अभि-स-वत् (भ्वा प से) कि स उक्त
धातुओं के प्रे रूप ।

टकसार, ॥ ली (स टकसार), मुद्रावण
शाला ।

टकसाली लिया, स पुं (हि टकमान) टक
अध्यस एणि (पु), नैमिक । वि, टक
शालासबन्धिन् २ सुद, निर्दोष ३ सर्वमन्मत
४ प्रायाणिक, परीक्षित ।

टका, स पु (स टक >) अटी-गे पण्युल्लं
२ रूप्य प्यर्न, वाषिक, टक ३ घनम् ।

—सा जघाव देना, मु, पठिति नि प्रणि-विध्
(भ्वा प से) प्रव्याख्या (अ प अ) ।

—सा मुँह लेकर बह जाना, मु, वत् (भ्वा
आ से), लम् (पु आ ॥) ।

टकोर, सं ली (स टकार) दे 'टहार' (२),
२ आधान, प्रहार ३ पट्टप्रहार ४ दुग्धि-

पटह, ध्वनि (पु) ५ ॥ स्वेदन, (उष्ण-जलादिना) सेव ।

टकोरना, कि स (हि टकोर) धेरीं आइन् (अ प अ) २ प्रट (स्वा प अ) ३ (उष्णजलादिभि) मिच (तु प अ), लिप् (तु प अ), प्र, खिद (प्रे) ।

टकर, सं स्त्री (अनु टक) मयद, समद, ममा प्रति, पाग २ विग्रह, सग्राम, सप्रहार ३ हानि (स्त्री) ४ मस्तक शीर्ष, आघात ।

—का, सु, सम, ममान, तुल्य ।

—राना, सु, दे 'टकराना' कि अ ।

—भारना, सु, व 'टकराना' के प्रे रूप २ विरप (ह उ अ) ३ यत् (स्वा आ मे) ।

टखना, सं पु (सं टक = दाग >) गुल्क, घुटिक, घुगी, घुष्ट, सुरुक ।

टडोल, सं स्त्री (हि टडोलना) स्पर्श, सम्पर्क, परामर्श, स्पर्श-तो बोध ।

टडोलना, कि स (स त्वक् + तोलन >) स्पर्शनं परोक्ष (स्वा आ से) निरूप (जु), स्पृश परामृश (तु प अ) २ अवकारे अभिवृ (दि प से) निरूप परामृश ।

टट्टी, सं स्त्री (सं स्थात्री ?) (वडावणादि रचिन) कपा (वा) ट टटी, २ प्रतिस्तीरा, तिरस्करिणी ३ सूक्ष्ममिष्टि (स्त्री) ४ शीघ्र रूप, मलालय ५ मल, उच्चार ।

—जाना, ॥, पुरीषोत्सर्गाय गम् ।

—की भाव (या ओट) से शिकार खेलना, सु, प्रच्छन्न प्रह (स्वा प अ), निम्न पाप माचर (स्वा प से) ।

टट्ट, सं पु (अनु) धुदपोटक अश्यावक ।

टन, सं पु (अनु) घटाध्वनि (पु), टण स्कार, टणिति ।

—टन, सं पु, टण्टण, निनद रणित, टण्टण त्कार कृति (स्त्री) ।

टन, स पु (अ) अष्टाविंशतिमणकल्प, तोल भेद, ०२नम् ।

टनकना, कि अ (अनु) टण्टणायते (ना पा), टणकार कृ २ वर्णेण शिर पीड (कर्म) ।

टनटनाना, कि स (अनु) घटा नद-वद (प्रे) । कि अ, दे 'टनकना' ।

टनाटन, सं स्त्री (अनु) निरन्तर टण्टण त्कार ।

टप, सं पु (हि तोपना = टांकना) प्रवहणा दीनाम् आच्छादन-आवरण-शत्रुम् ।

टप, सं पु (अ टव) द्रोणी णि (स्त्री) ।

टप, सं स्त्री (अनु) बिंदुपातध्वनि (पु), टप् इति शब्द ।

—से, सु श्रुति, आशु, शीघ्रम् ।

टपर, स स्त्री, दे 'टपकाव' ।

टपकना, कि अ (अनु टप) कणश बिंदु क्लेश क्षर्गल् (स्वा प से)-स्तु (स्वा प अ)-स्यद् (स्वा आ ॥) २ (फलादि) श्रुति नि-अव पद (स्वा प से) ३ परिशु, क्षर् ४ दे 'टीसना' ।

टपका, स पु (हि टपकना) स्वय पतित पक्कलम् ।

—टपकी, स स्त्री, शीकर, वर्ष पात २ सतत फलपात ।

टपकाना, कि स, व 'टपकना' के प्रे रूप ।

टपकाव, स पु (हि टपकना), (कणश) क्षरण-गन्त-स्यन्दन-साव ।

टपना, कि, अ, दे 'कूदना' ।

टपाटप, कि वि (अनु) सतत, निरन्तर, अतिरन्तम् ।

टप्पा, सं पु (अनु) प्लव, प्लवन, प्लुत ति (स्त्री), शप पा २ गीतिकाभेद ।

—खाना, कि अ, उदपद (स्वा प से), उदप्लु (स्वा आ अ) ।

टव, सं पु (अ) दे 'टप' ।

टववर, स पु, दे 'कुटुम्ब' ।

टमकी, सं स्त्री (अनु ० टमक) डिडिम, लुपुपटह ।

टमटम, सं स्त्री (अ टैडम) अश्वदानभेद, ० टमटमम् ।

टमाटर, सं पु (अ टमैटो) आग्लोयन्तक, वृन्ताकम् ।

टर, स स्त्री (अनु) टरशब्द, अग्रिय-कर्कश कर्णकटु, शब्द २ भेकरव ३ दपोक्ति (स्त्री) ४ दुराग्रह, प्रतीपता ५ तुच्छवचनम् ।

—टर, सं स्त्री, वृथालाप, प्र-जल्प पित २ भेकरवम् ।

—टर करना, कि अ, दे 'टराराना' ।

टरकना, कि अ, दे 'टलना' तथा 'टरटराना'।
टरकाना, कि स, दे 'टलना'।

टरटराना, कि अ (अनु टरटर) प्रलप्
प्रजल्प (स्वा प म) २ अविनयेन मू (अ
उ से) टरटराने (ना था)।

टरा, वि (अनु टरटर) वावदूक, वाचान् ३
२ धृष्ट, निर्वीढ।

टराना, कि अ (अनु टर) सामिमान
वद् (स्वा प से) धाष्टेयन मू (अ उ से),
कट्ट वद्।

टलना, कि अ (स टलन >) विचल (स्वा
प से), अपसृ (स्वा प अ) २ स्थाना
न्तर या (अ प अ) प्रस्था (स्वा आ
अ) ३ दि, नसृ (दि प से), लुप् (दि
प अ) ४ व्याक्षिप् (कर्म), विलव (स्वा
आ से) ५ अन्यथा भू ३ (समय) व्यति
३ (अ प अ), गम्।

टस, म की (अनु) शुक्रव्यसरणशब्द,
टसृ इति शब्द।

—से मस न होमा, मू, ईश्वरि न विचल।
टसक, सं की (हि टसकना) दे 'टीस'।
टसकना, कि अ (हि टस) अप, गम् स
(स्वा प अ), अपया (अ प अ) २ दे
'टीसना'।

टसकाना, कि स, व 'टसकना' के प्रे रूप।

टसर, स पु (स तसर >) क्षीमेद,
भटसरम्।

टसर-भसर, स पु (हि टस+मस) विल्व,
व्याक्षेप।

टमुआ, स पु (हि अँमुआ) मिथ्यासृ (न),
वितयवाप्य।

टहना, स पु (स तनु >) विटप, शाखा।

टहनी, सं की (हि टहना) तनु-सूक्ष्म,
विटप-शाखा।

टहल, स की, दे 'सेवा'।

टहलना, कि अ (सं तत+चलन ?) परि,
भट् भम् (स्वा प से), विह (स्वा प अ),
रतस्तत चर् (स्वा प से), परिकम्
(स्वा प से, स्वा अ, अ)।

टहलनी, सं की, दे 'नौकरानी'।

टहलाना, कि स, व 'टहलना' के प्रे रूप।

टहलुआ-वा, स पु, दे 'नौकर'।

टहलुई, स की, दे 'नौकरानी'।

टौक, सं की (स टक) चतुर्माषका-क
शोभेद २ अर्धगणना, मूल्यनिष्पणम्।

टौक, स की (हि टौकना) लेप, लिखन,
लिपि (की) २ दे 'निव'।

टौकना, कि स (स टन) टैक् (स्वा प
से, चु), कीलादिभि सथा (जु उ अ)-
सयुज् (व उ अ) २ सिव (दि प से),
वे (स्वा उ अ) ३ पादुका सथा ४ मरिष
(प्रे) सयुज् ५ पणिकादिषु लिख (हु प से)
६ शिलादीनि दहुरयति (ना था)।

टौका, स पु (हि टौकना) सभायक-मयो
जक, कील शकु २ सी (से) वन, अंश
भाग ३ सी (से) वन, स्मृति (की)
४ पट वस्त्र, लड ५ टकव, सभायक, पादु
६ व्रणसेवनम्।

टौकी, सं की (सं टक) मङ्गणी, ब्रक्षन
२ खर्गगादिषु कृत छिद्र ३ दे 'टौका'।

टाग, स की (स टग) टक क-वा जवा,
प्रसता, पाद।

—अकाना, मू, परकार्याणि चंच (हु प से,
चु आ से)-निरूप (चु)।

—तले से निकलना, मू, स्वपराजय स्वीकृ।

—पसार कर सोना, मू, नि शक निर्भय स्वप्
(अ प अ)-से (अ आ से) २ मानन्द
जीवन या (प्र)।

टौगना, कि स, दे, 'लटकाना'।

टागा, स पु (हि टैगना) अश्ववारुभेद।

टांगी, स की, दे 'जुहदादी'।

टौच, सं की (हि टौची) कार्यवापक, उक्ति,
(की)-व्ययम्।

टौचना, कि स, दे 'टौकना'।

टौह, स की [स स्वाणु (पु) >] मच
२ दे 'परछपी'।

टौयटौय, स की (अनु) कर्कश कट्ट, शब्द
ध्वनि (हु) २ प्रहाप, प्र, जल्प।

—फिर, मू, निष्कल भाटवर, व्यर्थ
प्रयास।

टाइप, सं पु (अं) मुद्राखर २ टंकणयन्त्रम्।

टाइफस बुधवार, स पु (अ + अ) मोहज्वर, *यूकाज्वर ।

टाट, स पु (स नतु >) शाप पट वस शाप वराशि सि (पु) ।

टाप ॥ क (अनु) अथ-सुरा सुर शफ इषन् २ अथपादशब्द ।

टापना, कि अ (हि टाप) सुरेण अमिहन् (अ प अ) -विलिख (तु प से) २ अथोर व्यग्र (वि) भू ३ व्यथ परिभ्रम् (स्वा प से) ४ दे कुदना ।

टापू, स पु, दे 'हीप' ।

टारना, कि म, दे 'टारना' ।

टारपीडो, स पु (अ) अन्तर्जालाग्निनालिका अक्षमेदः, *टारपीडु ।

टाचै, स स्त्री (अ) विद्युज्जिपत्रिनी ।

टाल, स स्त्री (स अटाल >) चय, राजि (पु), वलिर, चिति (स्त्री) २ (काठा बीना) इहय-आपण विपणि (स्त्री) ।

टाल, स स्त्री (हि टालना) अप-व्यय, देश, छलैन परिहरण, निहव ।

—टाल, } स स्त्री, अपनि, हव
—मटा(टु टो)ल, } अप-व्यय-देश, विलय, व्याप्तेय ।

—करना, कि अ, अगिपय (प्र) विल्व (तु प अ) व्याप्ति (तु प अ) ।

टालना, कि स (हि टालना) वकोकथा शाठ्येन परिहृ (स्वा प अ), अप-व्यय दिग (तु प अ), अपनि हु (अ आ अ) २ व 'टालना' (१६) के प्र रूप ।

टायर, स पु (अ) (चक—) बलय यम् ।

टिखर, स पु (अ टिखर) कषाय, निर्वास, फा ।

टिका, स पु (स टिडिग) रोमशफल, निदिग, डिदिग ।

टिकट, स पु (अ) अनुशा निर्देश प्रवेश, पत्रकम् ।

टिकटिकी, स स्त्री, दे 'टकटकी' ।

टिकटिकी, स स्त्री, दे 'टिकटी' ।

टिकटी, स स्त्री (हि तीन + काठ) त्रिकाष्टी, २ त्रिषादी ।

टिकना, कि अ (सं स्थित + कृ >) वसू स्वा (स्वा प अ), वृण (स्वा आ. से) ।

२ विरन् (स्वा प अ) अवस्था (स्वा आ अ) ।

टिकली, स स्त्री (हि टीका) धातुनारा चक्रकम् ।

टिकस, स पु (अ टिकस) वर रानत्व, गुल्क-क बलि (पु) ।

टिकस, स पु, दे 'टिकट' ।

टिकाऊ, वि (हि टिकना) चिर स्थायिन्, दृढ, मृद, स्थिर, अक्षय ।

टिकाना, कि स व टिकना के प्रे रूप ।

टिकाव, स पु (हि टिकना) स्थिरता, चिरस्थापिता २ स्थिति (स्त्री) विराम ३ दे 'पडाव' ।

टिकिया, स स्त्री (स वटिका) चक्रिका बटो, २ अपूप, पप, पिहक ।

टिकुली, स स्त्री, दे 'टिकली' ।

टिकेत, स पु (हि टीका) दे 'धुवरान' ।

टिकिय, स पु (हि टिकिया) स्मूल इहय, पुप ।

टिका, स पु (देश) दे 'टीका' ।

टिकी, स स्त्री, दे 'टिकिया' ।

टिपलना, कि अ, दे 'पिपलना' ।

टिचन, वि (अ अटेचन) सज्ज, सत्रज, वयुक २ सिद्ध, उपलब्ध, आयोजित ।

टिडकारना, कि स (अनु) (अथादीन्) सटिकटिक्शब्द प्रोत्सङ्ग प्रणुद (प्रे) ।

टिटिह, हा, हरा, स पु (स टिट्टिम)

टिट्टिमक, रोडिमक, रडिम ।

टिटिहरी, स स्त्री (हि टिटिहरी) गिटिट्टि-भी, टिट्टिमकी ।

टिट्टा, स पु (स टिट्टिम >) शरा(ज)भा, पतन ।

टिट्टी, स स्त्री (हि टिट्टा) शरि (पु), शरा(ल)म ।

—दल, मु, विपुलवृद्ध, असंख्यसमूह ।

टिपटिप, स स्त्री (अनु) विदुषानध्वनि (पु) टिपटिपशब्द ।

टिप्पणी भी, स स्त्री (स) टीका, भाष्य, वृष्टि (स्त्री), व्याख्या ।

टिप्पस, स स्त्री (देश) वषाय, बुक्ति (स्त्री) ।

टिब्बा, स पु, दे 'टीला' ।

टिमटिमाना, कि अ (स निम्-ठला होना >) स्फुर (तु प से) तरलमदसवप दीप् (दि आ से) द्रुवप्रकाश (म्वा आ से) प्रमा (अ प अ) २ आसन्नमृत्यु (नि) धृत् (म्वा आ से) ।

टिमटिमाहट, स खी (हिं टिमटिमाना) तरल प्रमा, ज्योतिम (न), स्फुरण रितम् ।

टीका, स पु (स तिलक-क) चित्रक, विद्ये वक-क, पुण्ड-टक, तमालपत्र २ तिलक, औद्वाहिकरीतिविशेष ३ अन्त, सावण प्रदे शन ४ (रोगनिवारणाय) रोगद्र-वनिवेशन ५ गन्धद्र-वसकामण ६ प्रधान, मुख्य, ७ सुवरात्र ८ राजन्व, चिह्न लक्षण ९ राज्य, अभिवेक १० बिंदु (पु), ला-छन, चिह्नम् ११ ललाटिका, मस्तकभूषणभेद ।

—करना, कि स, (रोगनिवारणार्थ) रोगद्रव्य निविश सकम् (मे) २ गन्धद्रव्य निविश सकम् (प्र) ।

—करनेवाला, स पु, गन्ध रोग द्रव्य निवेष्टक ।

—भोजना, कि स, औद्वाहिकोपहारान् प्रेष (मे) ।

—लगाना, कि स तिलक क अववा विधा (जु उ अ) ।

टीका, स खी (स) व्याख्या, वृत्ति (खी), माध्य, निष्पणी नी ।

—कार, स पु (स) टीका भाष्य व्याख्या वृत्ति, कार कृत् (पु) ।

टीन, स पु (अ दिन) रग, वग, कस्तोर, त्रपु (न) रगलिप्त लौहतनुफलकम् ।

टीप, स खी (हिं टीपना), (हस्तेन) आपी टन २ शनै प्रहरण ३ दृढकासधिपु सुधापूर्ति रेखा ४ (समय-) लेख पत्र ५ जन्म, पत्र पत्रिका ।

—करना, कि म, दृढकादिसधिपु सुधा भूट (जु) ।

—टाप, स खी, काटकर वैमन २ सरस्कार, परिष्कार, भूषा, अलकरणम् ।

—टाप करना, कि स, अप परिष्, क, सद् (जु) ।

टीपना, कि स (सं टेपन = फेंकना) आपीह (जु), सकोष् (म्वा प से) २ छिन्न (तु

प से) ३ शनै प्रह (म्वा प अ) ४ उच्चै गै (म्वा प अ) ।

टीम, म खी (अ) औद्वाहिकमण २ गण, गां ।

टीमटाम, स खी (देश) दे 'टीपटाप' ।

टीरा, स पु (स टेर) टेरेक केकर, वेदर, खर, वरिह ।

टीला, स पु (स अष्टीला >) उन्नतभूभाग २ क्षुद्रपर्वत ३ मृत्तिकाचय बलमीक कम ।

टीस, स खी (अनु) विध्यद् स्फुरद, भ्यथा वेदना वातना ।

टीसमा, कि अ, (हिं टीस) सुकुसुंद् ज्वष (म्वा आ से), सगपद पीद् (कर्म) ।

टुच, वि, दे 'टुषा' ।

टुह, स पु (सं तुट >) छिन्नो हस्त २ छिन्न शालि तर, स्थानु (पु न), ध्रुव, शकु (पु) ।

टुहा, वि (हिं टुह) अहस्त, छिन्नहस्त २ शाखाहीन ३ एकग्रव ।

टुही, स खी [स तुहि (खी)], मानि (खी) ।

टुक, कि वि (सं स्तोक) क्षण, कवित्कालम् । वि, किचिद्, अस्प, सुद्र ।

टुकडा, मं पु (हिं टुक) खड द, शकल ल, लव, वि, माग, अश, वि, दल २ ग्राम, कवल, पिट ।

टुकडे करना, कि स, मन् (व द अ), खट् (जु), शकली ३ २ विच्छिद् विभिद् (व प अ), विभज् (म्वा उ अ) ।

टुकडे टुकडे करना, सु, पूर्ण (जु) खट्श मन्, मृद् (क् प से) ।

टुकडे पीगना, सु, मिश्र (म्वा आ से), मिश्री याष् (म्वा आ से) ।

टुकड़ी, स खी (हिं टुकडा) दे 'टुकडा (१) २ समूह, गण ३ सैयदल, गुल्म मम् ।

टुषा, वि (स तुच्छ) सुद्र, नीच हीनजाति ।

टुटपुंजिया, वि (हिं टुटी + पूजी) परि क्षीण, निर्धन, अल्प, धन मूल, दरिद्र ।

टूही, स खी, दे 'टुही' ।

टुकटा, स पु, दे 'टुकडा' ।

टटना, कि अ (सं तुट्) दृ मज्-मिद् (कर्म), तुट् (दि तथा पु प से), दल् (म्वा प से), स्फुट् (तु प से)

२ विरन् (स्वा प अ), निच्छिद् (कर्म),
निवृत् (स्वा आ से) ३ विलुत् (कर्म),
पृथक् भू ४ निरली भू ५ दरिद्र (वि)
जन् (दि आ मे) ६ आक्रन् (स्वा
प से), अभिद्रु (स्वा प अ)। सं पु,
मग्न, भग, विराम, विच्छेद, निवृत्ति
(स्त्री)।

दृष्टनेवाला, सं पु, भिद्र, भगुर, भुमग।

दृष्टा, वि, भग्न, दीर्घ, भुटित, स्फुरित, विच्छिन्न,
निवृत्त इ।

—पूटा, वि, इकली रड्ड, कृत, रक्षित,
विदीर्घ।

दूर्तमेद, सं स्त्री (अ) पुरावाराजिना
कीटा देला, कीटाप्रतिषेधिता।

दृल, स पु (अ) उपकरण, साधनम्।

देंद टी, स स्त्री (देश) शारीर्य-रुग्नाटिका
स्थापति (स्त्री) २ दे 'करील' (वृक्ष
नथा फल)।

देंदुआ, स पु (देश) आसनाटिका, कठ, गल।

देंदें, स स्त्री (अनु) शुकशब्द, कीराव,
देंदें इति ध्वनि (पु) २ प्रलाप, अर्थ
वचनम्।

—करना, निर्विवेक माप (स्वा आ से),
लक्ष्य (स्वा प से)।

टोप्रेषर, सं पु (अ) ताप, कम्पन् (पु)।

टेक, स स्त्री (हि टिकना) स्थूणा, उपरतम,
उत्तम, अवष्टम, उपग्र २ आश्रय, अव
लम्ब ३ वेदी ४ आग्रह, अभिनिवेश
॥ शुद्धपत्र ६ प्रतिष्ठा ७ स्थायिन् (सगीत)
८ अम्बास, नियन्त्रणवहार।

टेकन, म पु, दे 'टेक' १ २।

टेकना, कि स (हि टेक) अव-आ, लम् (स्वा
आ से), अवष्टम् (क् प से), भू (स्वा
प अ, लु)।

माथा—, कि स, प्रणम् (स्वा प अ), पादयो
पद (स्वा प ॥), वद (स्वा आ से)।

टेकी, वि (हि टेक) सत्यसन्ध, दृढप्रतिज्ञ
२ आग्रहिन्, अभिनिवेशिन्।

टेनेस, स ॥ (अ) अनुवर्त, प्रतान (भय
कररोग)।

टेदा, कि (स तिरस्) अराल, कुटिल,
जिघ्र, वक्र, आ, न (ना) मित, आमुग्र, न्युब्ज,

आकुञ्चिन, विषम, तिर्यक् २ कठिन, दुष्कर
३ उद्धत, अश्लिष्ट, दुःशील।

—करना, कि स, आवृन् (लु), वदी-कुटिली
कृ, अव-आ, नम् [प्रे न (ना भयति),
आ वि, भुन् (लु प से)।

—मेढा, वि, वक्र, वदाकार, कुटिल।

—होना, मु, कुद रूढ (वि) भू।

देदापन, स पु (हि देदा) कुटिला,
जिघ्राना, वक्रता, अरालता इ।

देदी, वि स्त्री (हि देदा) वक्रा, कुटिला,
जिघ्रा इ।

—खीर, ॥, दुष्कर कार्यम्।

—चितवन्, मु, वटाक्ष, साचिविलोकिन,
अपागृष्टि (स्त्री)।

देदे, कि वि (हि देदा) तिर, तिर्यक्,
वक्र साचि (सब अर्थ)।

देना, कि स (देश), दे 'सान देना २ दे
'मूल पर ताव देना'।

देनिस, सं स (अ) बहुककीडाभेद।

देव(वु)ल, सं पु (अ) पादफलक वम्।

—झाप, स पु (अ) पादफलक, वसन, आ
च्छादनम्।

टेर, स स्त्री (सं तार) तारध्वनि, उच्च
स्वर २ आह्वान, सरोधन, आह्वानशब्द।

टेरना, कि स (हि टेर) उच्चै गै (स्वा
प अ) २ आकृ (प्रे), आले (स्वा
प अ)।

टेराकोटा, स पु (अ) पञ्चगुण्युति (स्त्री),
तप्तमृत्प्रतिमा २ पक्व तप्त, मृत्तिका मृद
(स्त्री)।

टेलीग्राम, स ॥ (अ) तद्विद्विष्ट, नदेश।

टेलीपैथी, सं स्त्री (अ) अभ्यविष्ट शानम्,
आव विचार, लक्ष्यमिति (स्त्री)।

टेलीप्रिटर, सं पु (अ) दूरमुद्रकम्।

टेलीफोटोग्राफी, स स्त्री (अ) दूरच्छाया
चित्रणम्।

टेलीफोन, पु पुं (अ) दूर, माध ध्वनम्।

टेलीविज़न, सं पुं (अ) दूरदर्शनम्।

टेलीस्कोप, स पु (अ) दे 'दूरबीन'।

टेव, सं स्त्री (हि टेक) दे 'आदत'।

टेवा, सं पु (सं टिप्पन) २ अन्मपत्रिका।

टैसू, सं पु (हि वेसू) किशुक, पलाश, रक्तपुष्पक, रश्मि २ किशुककुसुमम् ।

टेस्टट्यूब, स स्त्री (अ) परीक्षणनालिका ।

टोंटी, स स्त्री (सं तुह >) नाग्यी, नालिका ।

टोक, स स्त्री (हि 'रोक' का अनु) अनुराग उपरोध विना, वचन बाध २ कुदृष्टि (स्त्री) ३ कुदृष्टिप्रभाव ।

—टाक या टोका टाक्री, स स्त्री, निषेध पूर्ण व्याधात, वचनानि (न बहु) ।

टोक्ता, कि स (हि टोक), नि-विनि, वृ (प्रे) अव नि प्रणि, क्य (क प अ), (प्रदी) वाधू (स्वा आ से, निविध (स्वा प से) ।

टोकनेवाला, स पु, विघ्नकर, निवारक, प्रतिवधक ।

टोकरा, स पु () बडोल, कर ।

टोकरी, स स्त्री (हि टोकरा) बरही, बडोलक ।

टोडका स पु (स जोडक >) गामक, मग २ रसाक्षरक ।

टोटल, स पु (अ) योग, पिढ, मकल, परिसरया ।

टोटा, स पु (हि टूटना) हानि छति (स्त्री) २ अभाव, म्यूनता ३ सट-ह, झकलम् ।

टोटी, सं स्त्री (स जोटकी) रागिणीभेद ।

टोटी, सं पु (अ) शब्दति, चाटपट, प्रभा स्वदश, सनु द्रोहिन ।

टोना, स पु (स तत्र) अमिचार, मत्र, अमिचार, कुदक, वशकिया, मोह, योग २ मीनिभेद ।

टोनेवाज़, स पु, कुदक, अमिचारिन्, कौसुतिक ।

टोप, स पु (हि तापना = ढोवना) *टोप, आग्न्य गुरुक, शिरस्क २ शिरछाग । ३ कोश प, बैठनम् ।

टोपी, सं स्त्री (हि टोप) शीर्षण्य, शिरस्क *टोपी ।

टोटा, सं पु (सं प्रत्येकिका) बरा पुर, विभाग २ बर्ग, गण ।

टोली, स स्त्री (हि टोला) गण, सब, बर्ग, समूह ।

टोह, स स्त्री, दे 'सोज' ।

टोहना, कि स, दे 'खोजना' तथा 'टोहना' ।

टूक, स पु (अ) लौह आयस, पिटक पेटिका समुदगक ।

टूम, स स्त्री (अ) विपुच्छकटिका, दामात्य यानम् ।

टूढमार्क, स पु (अ) पञ्चमुद्रा ।

ट्रेन, स स्त्री (अ) वाष्पशक्ती ।

ठ

ठ, देवनागरीशर्णमालायाः द्वादशो व्यञ्जनवर्ण, टकार ।

ठठ, वि, दे 'टूठ' ।

ठठक, स स्त्री (हि ठठा) शीत, शीतला, शैत्य हिम, हिमता, शीतलता ।

ठठ(ठ)क, सं स्त्री (हि ठठा) दे 'ठठ' ॥ छुति (स्त्री), सतोष ३ उपद्रव-योग, शाति (स्त्री) ।

ठठा, वि (स लम्ब) शीत, शीतल, उष्णता रहित, आर्द्र, हिम, शिशिर २ शीत, प्रशान्त ३ छु, सनुष्ट ४ मृत्, दिवगत ५ निर्वाण, निर्वाणित ।

—करना, कि स, आर्द्र-शीतो, क, आर्द्रवति (ना था), तापह (स्वा प अ) । मु-

मु प्रसद प्रसम् (प्रे), सासू (तु) २ निर्वा (प्रे निर्वापवति) ।

—होना, कि अ, शीतो शीतशी भू, शीतना यते (ना था) । मु, दे 'मरना' ।

ठ्ठी सात, स स्त्री, दीर्घ, आस निधाय, नि(नि)वास, उच्छ्वास ।

—पडना, मु, वर प्रशम् (दि प से), इस् (स्वा प से), छि (कर्म) ।

बलेवा—होना, मु, बेर, निर्वातन-साधन छुति (स्त्री) जन (दि आ से) २ प्रसद (स्वा प अ) ।

ठठा (ठा) ई, सं स्त्री (हि ठठा) शीतवेद्य, तापहरपात्र २ भगवदेवम् ।

ठडे-उडे, अय० (हिं ठडा) प्रातः सायं वा, भातपामावे २ समुत्तम्, मानन्दम् ३ शान्त, समौनम् (दोभो अव्य०) ।

ठक, स स्त्री (अनु) अभिधान पात प्रहार, शब्द, ठक इति ध्वनि (पु) ।

—ठक, स स्त्री (अनु) ठकठकायिन, ठक ठकायनि २ कलह, कलि । वि स्तब्ध कतिन, निश्रेय ।

ठकठकाना, कि स (अनु) ठकठकायणे (ना पा), रुद अभि आहन् (अ प अ) अगवा प्रह (भ्वा प अ) २ लघु प्रह दा तट (चु) ।

ठकठकिया, वि (अनु ठकठक) विवादिन्, कलह कलि प्रिय ।

ठकुरमुहाती, स स्त्री (हिं ठाकुर + मुहाता) दे 'मुहागद' ।

ठाकुराह(य)न, स स्त्री (हिं ठाकुर) ठकुरो, ठकुरमार्या (२) नापिती, धुरिणी २ स्वा मिनी, ईश्वरी ।

ठाकुराई, स स्त्री (हिं ठाकुर) प्रभुत्व, अधिकार, स्वाभित् २ अधिकार, शासन ३ महत्त्वम् ।

ठकुरापत, स स्त्री (हिं ठाकुर) दे 'ठाकुराई' ।

ठाग, स पु (स स्थान) कितव, दामिक, धूर्त, प्रतारक, वधक ।

—ठाग्री, स स्त्री, केवक, कपट, दम्, प्रतारक, स्थान अति-अभि, सधान, वचनम् ।

ठगना, कि स (स स्थान) अति-अभि, तथा (जु उ अ), प्रभु-मुह (प्रे), वच्-रठ (चु), विप्रलम् (भ्वा आ अ) । स पु, दे 'ठगवानी' ।

ठाग(नि)नी, स स्त्री (हिं ठग) अधिकार, प्रतारिका, दामिनी कपटिनी ।

ठागी, स स्त्री, दे 'ठागवानी' ।

ठगाना, कि प्रे, व 'ठगना' के प्रे रूप ।

ठट, स पु, दे 'ठठ' ।

ठट(ठ)री, स स्त्री (हिं ठाट) श्रवणान, धा-टी २ ककाल, अस्तिपञ्जर ३ घास पत्ताल, जाल ४ इशमनुष्य ।

ठडा, स पु (पु अट्टहास या अनु) हास्य, परि(री)हास, ह्वेला-लिका प्रहसन, नर्मन्

(न) नर्मन्विनोद परिहास, आलाप-वृत्ति (स्त्री) वचन २ अपहास ।

—करना, कि स, परिहम् (भ्वा प स) विनोदवचन उदीर (प्रे) २ अव-उप वि, हम, उपहासास्पदी क, अवशा (क उ अ) ।

ठट्टेबाज, स पु, (हिं + फा) विनोदरोल, हास्यप्रिय, वैहासिक, यठ ।

ठट्टेबाजी, स स्त्री विनोद, वारिता शोला, वैहासिकता ।

ठठ, स पु (स स्थान >) समूह, समुदाय, जन, जनर् भोग

ठठेरा री, स पु (अनु ठन ठन) कान्य तात्र, कार ।

ठठेरिन, स स्त्री (हिं ठठेरा) कान्य-नात्र, कारी ।

ठठेल, स पु (हिं ठठा) दे 'ठट्टेबाज' ।

ठठोली, स स्त्री (हिं ठठोल) दे 'ठठठवानी' ।

ठनक, स स्त्री (हिं ठनकना) ठगिनि, ठा स्वार, शिवा, कान, सात्कार, मृदनादीना ध्वनि (पु) २ दे 'गैम' ।

ठनकना, कि अ (अनु ठन ठन) कण (भ्वा प स), गिज (अ आ से) । ठगठगयते (ना पा), ठगिति क ।

ठनकाना, कि म, व 'ठनकना' के प्रे रूप ।

ठनठन, स स्त्री (अनु) दे 'ठनक' ।

—गोपाल, स पु, बरिद्र, निर्जन २ निरस्तार वस्तु ।

ठाना, कि अ, (हिं ठानना) निम्न निश्च अत्यवसो (नर्मन्) ।

ठनाठा, स पु, दे 'ठनक' ।

ठनाठन, कि वि (अनु ठनठन) सठगाकार, सत्गाकारम् ।

ठप्पा, स पु (स स्थापन) मुद्रा, मुद्रायन, २ आकर-नत्कार, साधन ३ अक, चिह्न, मुद्रा, न्वाम ।

—लगाना, कि स, मुद्रपति चिह्नपति (ना पा), ठक (चु०), छाट् (भ्वा प से) ।

ठरना, कि अ, दे 'ठिठुरना' ।

ठर्रा, स पु (देश) निरुद्धरा २ स्थूलनृ ३ अर्द्धवेष्टका ।

ठस, वि (स स्थास्तु >) धन, इदसधि, कुड्ड, कठिन, स्थूल, क्षुमास्त २ दे 'गक' ३ गुरु,

भारवत् ४ अलस, मथर १ (सिका) कूट
कपट इतिमि- समासारम में) ६ चनाञ्च
७ कृण ८ अन्वायहिन् ९ ठसिनि
शब्द, वस्तुभगध्वनि (पु) ।

ठसक स खी (हि ठस) द्वाव, माव,
विभ्रम २ दर्प, गर्व ।

ठसका, स पु (अनु ठस) शुष्क अवक,
कास क्षब्ध २ आघात, समर्द्ध ३ पाश,
बाधुरा ।

ठसनी, स खी (हि ठस) अयोधन,
मुद्गर ।

ठसास, वि (हि ठस) परिम पूर्ण, आ
कीर्ण, भाङ्गल, सङ्कुल, समाकुल ।

ठरमा, स पु (विद्य) अङ्कार, दर्प २ हाव
भावा ३ आङ्कर ।

ठहरना, कि अ (स स्थिर) द्वा (स्वा प
अ), अवस्था (स्वा आ अ), निश्चल
स्थितिस्थिर स्तम्भ (वि) भू २ वम
(स्वा प अ) ३ निविष्ट (पु प अ),
प्रयाणभा। कृ ४ विश्रम् (दि प से),
विरम् (स्वा प अ) ५ निधिनिर्णी
(कर्म) ६ प्रनीम् (स्वा आ से) ।
स पु अव स्थिति (खी) स्थान, निष्कृता,
स्तम्भता नास, विग्राम ३ ।

ठहरनेवाला, स पु, अवस्था (पु) ।

ठहराना, कि, स, व 'ठहरना' के प्रे रूप ।

ठहराव, स पु (हि ठहरना) अव स्थिति
(खी), निवेश २ निर्धारण, निश्चय ।

ठहरीनी, स खी (हि ठहराना) विवाहे
सुतकादिनिश्चय ।

ठहाका, स पु (अनु) सञ्चन्द, स्फोटन भग
२ अति प्र-अट्ट-उल्लेख, हाम ।

ठीय, स पु (स स्थान) स्थल, प्रदेश
२ निवास, वसति (खी) ।

ठीसना, कि स, दे 'ठीसना' ।

ठाकुर, स पु (म ठकुर) परमेश्वर, जगदाश
२ पूज्य, मान्य (मानव) ३ नायर,
अधिष्ठातृ (पु) ४ ग्रामेश, भूस्वामिन्
५ क्षत्रिवोराधि (पु) ६ प्रभु, स्वामिन्
७ नापित ८ देव, देवता ९ देवप्रतिमा ।

—द्वारा, सं पु । देव, मन्दिर-स्थान आलय,
—वाही, स खी । मन्दिरम् ।

ठाकुरी, स खी, दे 'ठाकुराई' ।

ठाट, स पु (स रथात्) तुग, पटल छदि
(खी) २ दे 'ढाँचा' ३ अलकिया, बेश
४ आङ्कर, शोभा, वैभव ५ सुरा, मोद
६ रीति (खी), शैली ७ आवोजन
समारम्भ ८ सामग्री, परिच्छेद ९ युक्ति
(खी), उपाय १० आधिष्ठ, प्राचुर्य
११ समूह, वृन्द ।

—चाट, सं पु, आङ्कर, शी (खी), शोभा,
ऐश्वर्य, वैभव, प्रताप ।

—बटलमा, पु, आकार भा परिचय (प्र) ।

ठाठ, स पु, दे 'ठाट' ।

ठाढ़ा, वि (स रथात्) उच्चित, उन्नत, उत्तर्द्ध,
दृढवत् उरिधत, उत्थान २ जात, चरपत्र
३ समस्त, समग्र, अपिष्ट ।

ठावना, कि स (स अनुष्ठान) अद्यव प्यव
सो (दि प अ, अध्यवस्यति), निधि (स्वा
उ अ), सकल्प (प्रे), निर्णी (स्वा प
अ) २ साग्र प्रारम्भ (स्वा आ अ),
अध्यवसायेन अनुस्था (स्वा प अ) ।

ठाव, स पु (स) हिम, दुहिन, धुवार
२ अतिशीत, शैत्यातिशय ।

ठाळा, स पु (हि निठला) कार्य-जीविना
व्यवसाय, अभाव ।

ठाळी, वि, दे 'निठला' ।

ठिंगना, वि (हि हंठन-अग) खर्व, उत्तव,
पामन, हस्तकाय ।

ठिकाना, स पु (हि ठिकार) स्थल-ली,
स्थान, प्रदेश, भू-भूमि (खी) २ आ
नि, वास, आनि, लय ३ आश्रय निर्वाह,
स्थान ४ यायावर्त्य, प्रामाण्य ५ आवोजन,
मरिथा, प्रवच ६ अत, सीमा ७ नामधाम
परिचय ८ निदिष्ट-मन्द, स्थानम् ।

ठिकाने लगना, मु, इन् हिम् (कर्म) २ समाप्
(कर्म) ।

ठिकाने लगाना, मु, इन् (अ उ अ), हिस्
(र प से) २ निदिष्टस्थान नी (स्वा प
अ) ३ सम्यक् उपयुक्त (अ उ अ)
४ कार्य समाप् (स्वा उ अ) ५ सङ्कीर्ण ।

टिठकाना, कि अ (सं स्थित-करण) ।
अकरमाप-अकटि विरम् (स्वा प अ) २-रुप्
(कर्म) स्तम्भ निश्चेष्ट रुद्राणि (वि) भू ।

टिठ(टु)रना, कि अ (स ठार >) शीती
जडी भू, स्तम (वर्म) २ शीतेन वष
(भ्वा आ ॥) ।

टि(टु)नर, स खी (अनु) गदगद, पु
(पू)कार ।

टि(टु)नकना, कि अ (अनु) सगदगद
क्रद् (भ्वा प से) रुद् (॥ प से) ।
शिशुवर वद् ।

टिरना, कि अ, दे 'टिठरना' ।

टीक, वि (हि ठिकाना) अवितथ, तथ्य,
सत्य यथार्थ २ उचिन, न्याय्य, धर्म्य, समजस
३ शुद्ध, निर्मोत, निर्दोष ४ सुस्थ, अविकृत
५ यथार्थ, यथायोग्य, अनुरूप ६ नम्र,
विनीत ७ आधुनाधिक, निर्दिष्ट ८ नियत
९ पूर्ण, समाप्त । कि वि, यथावत्, यथातथ,
सम्यक्, साधु तत्त्वतः, पूर्णतया ।

—भाना, कि अ, उपपद-युज्जिह्व (कर्म),
सुश्लिष्ट सुसगत (वि) भू २ तुल्य-अनुरूप
(वि) भू ।

—करना, कि स, निर्दोषी-कृ, परि वि-स
शुध् (प्रे) २ सुश्लिष्ट सुसगत कृ ।

—ठाक, वि, सिद्ध, सज्ज, उपस्थित, उपकृत ।

—टीक, कि वि, दे 'ठाक' कि वि ।

ठीकरा, स पु (हि ठुकरा) पट, शबल खट,
निम्नमृत्पात्र, क(स)पौर, २ भिक्षा, भावन
पात्र ३ जीर्णपात्रम् ।

ठीकरी, स खी (हि ठीकरा) शुद्धवत्सल
२ तुच्छ निरर्थक वस्तु (न) ।

ठीका, स पु (हि ठीक) अभ्युपगम, नियम,
पण, समय, सविद् (खी) २ वट्टोलिका ।

—देना, कि स, पण सविद् कृ, प्रतिपद
(दोनों प्रे) ।

—लेना, कि स, पण सविद् समय कृ, प्रतिपद
(दि आ अ), सविद् (अ आ से) ।

ठीकेदार, स पु पणकर्तृ, कृतसमय, नियम
इत् (पु) ।

ठीठी, स खी (अनु) हास्यध्वनि (पु),
अट्टहास ।

ठीहा, स पु (सं स्थित >) भूमिप्रातःकाध-
राट् दम् २ उच्छ्वसनम् ३ वेदिका-वेदि
(खी) ४ आसनम् ५ सीमा ।

टुठ, स पु, दे 'टूठ' ।

टुकना, कि अ (अनु टुक टुक) आहन्-
ताड् प्रह (कर्म) २ अयोधनेन विधनेन
आहन् ताड (वर्म) ३ परा, भूजि (कर्म)

टुकराना, कि स (हि ठोकर) पादेन प्रह
(भ्वा प अ) नड (नु) आहन् (अ प
अ) २ प्रत्याख्या (अ प अ), अवमन्
(दि आ अ) धिकठ ।

टुकवाना, कि प्रे, व 'ठोकना' के प्रे रूप ।

टुडी, स खी, दे 'ठोडी' ।

टुगकाना, कि ॥ (अनु) अगुत्वा इत्येन वा
मन्द मन्द आहन् (अ प अ) ।

टुन टुन, स खी (अनु) टुणटुणकार,
टुणटुणावित, पातुपात्रवर्णित २ शिशुकदन
ध्वनि (पु), टुणटुणशब्द ।

टुमक, स खी (अनु) खेल विलास गति
(खी) ।

—टुमक, कि वि, खेल विलास, गत्या सरल
सविलास (शिशु चलनम्) ।

टुमकना, कि अ, (हि, टुमक) सरल सवि
लास चल (ह्वा प से) ।

टुमका, वि (हि टुमक) वामन, पद, हत्व ।

टुमरी, स खी (देश) गीतक तिका ।

टुसकना, कि अ (अनु) दे 'ठिनकना' ।

टुसना, कि अ (टूसना) अत्यंत पूर
(सर्द), २, बलाद् निविश (तु प अ) ।

टुसयाना, टुसाना, कि प्रे, व 'टूसना' के प्रे
रूप ।

टूंग, स खी । (स तुल) चनु च् [दोनों]

टूंगा, स ॥ (खी)] २ चनुप्रहार ।

—मारना, कि स, चच्चा प्रह (भ्वा प अ) ।
सु, नून तुल् (नु) ।

टूँ, स पु (स स्याणु) शुष्कवृक्ष, पत्र विटप,
हीनतरु (पु) २ छिन्नो हस्त, निवृत्त कर ।

टूँठा, वि (हि टूँठ) अपत्र, अक्षार, शुष्क
(वृक्ष) २ छिन्नहस्त, निवृत्तकर ।

टूँ(टूँ)सना, कि स (हि टस) अत्यधिक
पूर (नु), मृश पु (प्रे) २ बलाद् नि प्र
विश (प्र) ३ अतिमात्र खाद् (भ्वा प से) ।

टूंगना, वि, दे 'ठिपना' ।

टूंगा, स पु (हि अंगूठा) अंगुष्ठ २ दह,
गष्टि (खी), कण्ठ ३ मेढ्रम् ।

टेका, स पु, दे 'ठीका' ।

टेका, स पु (हिं टेक) अवका, लव
लदन, अवष्टम, लपछन २ निवेदस्वान,
विश्रामद्वय ३ पटद्वादनप्रकारभेद ४ कौवा
लोनामवस्तालभेद ५ स्खलन ६ वाममृदय
७ दे 'टीका' ।

टेठ, वि (दे) विशुद्ध, मिश्रणरहित, स्वच्छ
२ केवल, मात्र (समासात् में) ।

टलना, कि स, दे 'बदेखना' ।

टला, स पु (हिं टेलना) दे 'बका' ।
२ जनौष, जनसमर्प ३ हसन, दाकट झकटम् ।
टस, स की (हिं, टस), प्रहार आ-अभि,
घात, ताडन, पात, आहति (की) ।

टसना, कि स दे 'टूसना' ।

ठोकना, कि स (अनु ठक ठक) अघोषनेन
मुद्वरण तड (चु)-प्रह (भ्वा प अ)
२ बलन ताडनेन प्रविश (प्रे) ३ अभि
आहन् (अ प अ), तड (चु), प्रह ।
४ अभियुक्त (क आ अ) राजकुले निविद्
(प्रे) ५ हरनेन लघुप्रह आहन्, करेण स्पृश
परावृष्ट (पु प अ) ।

ठोक बजाकर, मु, मिपुण परोक्ष्य, सम्यक
पर्यालोच्य निरूप्य ।

ठोंग, स की (स तुटम्) चचू-चु (की)
२ चचु प्रहार ३ अगुलीप्रहार ।

ठोंसना, कि स (स तुट >) तुडेन, चचुपुटेन
अभिहन् (अ प अ)-प्रह (भ्वा प अ),
चचुप्रहार ॥ ।

ठोंगा, स पु (हिं ठोंग) पत्र पुट्टिका
कोष ।

ठोंसना, कि स, दे 'टूसना' ।

ठोऊना, कि स, दे 'ठोकना' ।

ठोकर, ॥ की (हिं ठोकना) स्खलन, ग्ल
लित, आघात, आहति (की) २ पाद
लत्ता, आघात, प्रहार ३ कट्वनुभव ।

—खाना, कि अ, प्र, स्खल (भ्वा प स),
पद विषयी भू । मु, दानि शति-कष्ट सह
(भ्वा वा से) ३ वच् प्रतार (क)
४ जीविकार्थमितस्तत भ्रम् (भ्वा प से) ।

—भारना, कि स, लक्षया पादेन प्रह (भ्वा
प अ)-आहन् (अ प अ)-तड (चु),
पादप्रहार ॥ ।

—हगना, कि अ, दे 'ठोकर खाना' ।

ठोड़ी ई, स की (स तुट >) चिबुक, हनु
(पु की) ।

ठोर, स पु (देश) पञ्चभेद, ठोर ।
२ चचु, चू (की) ।

ठोरा स पु (देश) लगाहारसारा
२ अगुलि, सवि-अधि पर्वन् (न) ।

—भारना, कि स, अगुलिपर्वणा प्रह (भ्वा
प अ) ।

—खलना, मु, हन् (अ प अ), ह
(प्र) ।

ठोस, वि (हिं ठस) साद्र, सु, सहित, कठिन,
मघातवत्, घन २ पूर्णगर्भ, छिद्ररहित, सगर्भ ।

ठोसाई, स की (हिं ठोस) घमत्ता, काटिम्य,
निश्छिद्रता ।

ठौर, स ॥ (हिं ठौर) स्थान, स्थली, प्रदेश
२ अदमर, सुयोग, योग्यफल ।

ठुटीर, मु, दुत्तर-अनिष्ट, स्थाने स्थले ।

ठिकाना, स पु, वास्तव्य, आनि-वास ।

ड

ड, देवनागरवर्णमालावाचक्योन्मो व्यञ्जनवर्ण,
द्वार ।

डक, ॥ ॥ (स दस) कटव, दशचचू
(की), शकु (पु), (विष्कू वा) अल
२ दशवर्ण न ३ दे, 'जिव' ।

—भारना, कि स, दश् (भ्वा प अ)
२ मर्माणि निद (क प अ) ।

—वाला, वि सदश, दशिनू-दशक ।

डंका, स पु (सं डका) बड पटह, विनव
मदल, डुन्दुभि, दिदिमि ।

—धजाना, मु, प्र, जाम् (अ प से),
तश् (चु) ।

—धजाना, मु, विभ्रत विरपात (वि) भू ।
डके की चेटे कहना, मु, प्रकाश जड्ड (चु) ।

डगर, सं पु (स ददग(क)रीय) पशु,
मृग, चतुष्पद, चतुष्पाद (पु) ।

डठल, स ॥ (॥ दड) कटि, ई, नाल्-ली
उ २ हन, प्रसन्न-वचनम् ।

डह, स पु (सं दह) लघुद, यष्टि (की)
२ बाड़ा (पु), मुज-बा ३ अर्धघन, दह

४ निग्रह शमन ५ हानि क्षति (स्त्री)
 ६ -वायामप्रकार साष्टाङ्ग दण्ड, -वायाम ।
 —देना, कि स, दण्ड (जु)-शास (अ प से, दोनों द्विकर्मक), दम् (प्रे दमयति), निग्रह (क प से) ।
 —पेलना, कि अ, (दंडवत्) -वायाम् (स्वा प अ) -वायाम क ।
 —भरना, कि अ, अर्धदण्ड परि, शुभ (प्रे) ।
 —लेना, कि स, अर्धदण्ड दा (प्रे दापयति) ।
 —पेल, स पु मल, मलयोद्धृ (पु), व्यायामिन्, दृढांग, वज्रदेह ।
 दंडवत्, स स्त्री दे 'दंडवत्' ।
 दंडा, स पु (सं दण्ड) काष्ठ, काष्ठखण्ड, लघुद, पट्टि (स्त्री, वेत्र वेत्रयाष्ट । २ प्राचीर, प्राकार, वरण ।
 दडिया, स पु (हि दण्ड) वरोदग्राहक, शुष्कमग्राहक ।
 दडी, स स्त्री (हि दण्डा) सूक्ष्म तनु, दण्ड पट्टि (स्त्री) २ तुलापट्टी ३ मुष्टि (स्त्री), वारण ४ काष्ठ द, नाल ल ५ पर्वतीय बाइनभेद । स पु, दण्डधारिन्, सन्ध्यासिन् ।
 पग—, स स्त्री, वरणपाद, पग, पदनि (स्त्री), पगा, पदवी ।
 दंडीत, स पु स्त्री, दे 'दंडवत्' ।
 दकरना, कि अ (अनु) हमारव कृ, रेम (स्वा आ से), नि, नद (स्वा प से) ।
 दकराना, कि अ, दे 'दकरना' ।
 दकार, स पु (सं दकार) उद्गिरण, उदम, उदमन २ गर्जन, गर्जित, निनाद ।
 —लेना, कि अ, दे 'दकारना' ।
 —जाना या—घटना, मु, छलेन आरमसाद कृ, प्रम (स्वा आ से) ।
 दकारना, कि अ (हि दकार) उद्गृ (जु प से), उदम् (स्वा प से) २ द 'दकारना' ३ दे 'दकार जाना' ।
 दकैत, स पु, दे 'दका' ।
 दकैती, स स्त्री, दे 'दका' ।
 दकीत—तिपा, स ॥ (देश) मिथ्यामौहूर्तिक, ज्योतिर्विदामास २ जातिविशेष ।
 दग, स पु (हि दौवना) दीर्घ, विक्रम, पाद-यास ।

—भरना, कि अ, विक्रम् (स्वा प से, स्वा आ अ) दीर्घपादान् वियम (दि प णि) निक्षिप (तु प अ) ।
 दगमग, वि (हि दग-मग) प्रस्फुल्ल, विचल्ल कपमान, वेपमान । अयं, सकम्पम्, सवेपथु ।
 दगमगाना, कि अ (हि दग-मग) प्र, वपु वेप (स्वा आ से) वेह (स्वा प से) २ प्रस्फुल्ल विचल्ल (स्वा प से) ३ विशक विकल्प (स्वा आ से), चित्त दोलायते (ना वा) ।
 दगमगाहट, सं स्त्री (हि दगमगाना) प्रकप, वेपथु २ प्रस्फुल्लन, विचल्लन ३ विक्षोभ, चित्तवैकल्य, धृतिनाश ।
 दगार, सं स्त्री (हि दग) दे 'मार्ग' ।
 दटना, कि अ (हि ठाटा) दृढ स्थिर निश्चल रथा (स्वा प अ), अवस्था (स्वा आ अ), वृष्ट (स्वा आ से) ।
 दटा, सं पु (हि डाटना) दृषोद्धिद्र पिषान, अवष्टम, रोष ।
 —लगाना, कि स, रोषेन अवष्टमेन अपि पि, धा (जु ठ अ)-स आ ह (स्वा ठ से) ।
 दडियल, वि (हि दाडी) कूर्चभर, लवकूर्च, इमन्तुल, ससमहु ।
 दपट, सं स्त्री (सं दपं) निर्भर्मना, वाग्दण्ड ।
 दपटना, कि स (हि दपट) तर्ज (स्वा प से जु आ से), वाचा दह (जु), निर्भर्तस् (जु आ से) ।
 दपोरसंख, स पु (अनु दपोर=वटान-सं शख) आरमसाधिन्, पिकत्पनशील २ बालवुडि (॥) ।
 दफ, दफला, स पु (अ दफ) डिडिमभेद षट्फम् ।
 दफली, स स्त्री (हि दफला) लघु, डिडिम दफम् ।
 दफाली, स पु (हि दफला) दफ डिडिम, नादक ।
 दवदवाना, कि अ (अनु) सास्त्र सवाप्य सञ्चलनयन साधु (वि) भू ।
 दवदवाई आँखों से, कि वि, सास्त्र, साधु, सवाप्य, पर्युध ।

डवोना, कि ॥, दे 'डुवोना'

डब्बा, स पु (स डिव >) सपुट, सपुटक,
करटक, समुदगक । २ (रेल्गाटी का)
शक-रम् ।

डमरू, स पु (स रु) क्षीणमध्यो गुटिका
द्रव्यको वायवेद ।

—मध्य, स पु (स न) विशालभूभागद्वय
योजक सवाभभूखड ।

जलदमरूमध्य, स पु (म न) सामुद्रधुनी ।

डर, स पु (स दर र) स, त्रास, भी मोति
(क्षी), मय, साधस २ शास्त्र, विना ।

डरना, कि अ (हि डर) भी (जु प अ),
विसवत् (म्वा दि प से) अदिज् (जु
प अ), मयात्तजन (वि) भू २ आवि,
शक (म्वा आ से) ।

डरपोक, वि (हि डरना + पोचना) भीन,
भीर, समय, ससाधस २ साशक, शकिल ।

डराना, कि स, व 'डरना' के प्र रूप ।

डरावना, वि (हि डर) भीम, भीषण, भयकर ।

डल, स क्षी (स तल) तगक क (ग ग),
सरोवर ।

डलना, कि अ (हि डालना) म्वात्तिखिप्
(कर्म २ नि, सिक् (कर्म) सु (म्वा व अ)) ।

डलवाना, कि मे, व 'डालना' के प्र रूप ।

डला, स ॥ (स दल ल) सब ड, स्थूल,
भक्ष भाग २ रिड क धन, गड, शुभ ।

डला, ॥ पु [स डल (ल) क] दे 'टोकरा' ।

डलिया, स क्षी (हि डला) दे 'टोकरा' ।

डली, स क्षी (हि डला) पिठक-क,
शुद्रगड २ शकल लखट उ ३ दे 'सुपारी' ।

डसन, स पु (स दशनम्) दश २ दश
दशन रीति (क्षी) ।

डसना, कि स (स दशन) दश (म्वा प
अ), कटवेन व्यथ (दि प अ) २
मर्माणि मिद् (रु प अ) ।

डसनेवाला, म पु, दशक २ अकतुर,
ममस्थ ।

डहडहा, वि (अनु) हरित, रसवत्, सरस,
विकसित, विकच २ अभिनव, प्रस्थ
२ प्रसन्न, आनन्दित ।

डहडहाना, कि अ (हि डहडह) प्रफुल्ल

विक्रम (म्वा व से), हरिती भू २ सन् क्रध
(दि प से) सत्रिष्टु (म्वा आ से)
३ मुत् (म्वा आ से) ।

डौकना, कि स, दे 'लापना' कि अ, दे
'कौवरना' ।

डोम, स क्षी (स दटक) लगुट र ल,
स्थूल वृद्ध दड ।

डोट, स क्षी (॥ दादि >) तर्जन, तनित,
निर-, अ समना, वाग्दह ।

—दपट, ॥ क्षी भ्रूमगेन तर्जन, आक्रोश,
विभीषिका यवदर्शन, अवारगिर (क्षी) ।

डोटना कि स (हि डोट) विद् भरत्
(जु आ से), भव दृष्ट (मे), भी (प्र),
तज (म्वा से, जु आ से) ।

डोटने योग्य, वि, तजनीव, निभमनीय
वाग्दहाई ।

डोटनेवाला, स पु, तर्जन निर्भर्त्तर ।

डौक, स पु (स दड) पटि (क्षी),
लगुट २ क्षीणी, नीवड ३ वृद्धश केशका
४ चवथ दड निमह, शासन, दड
५ सम सरल, रेखा ७ सीमा ।

डौकना, कि स (स डडन) अर्थ धन दद्
(जु) ।

डौका, स पु (हि डौड) दे 'मैंह' ।

डौकी, स क्षी (हि डौड) दे 'डौ' (१४) ।

डौडौडोल, वि (हि डोलना) भस्तिर,
चवल, तरल, लोल, कम्पमान । (मनुष्य)
अस्तिरनुडि, चलखिच, चवलमानम ।

डौस, स पु (म दस) दशक, अरन्ध
गो वन, मझिका, पांगुर, धुद्रिका ।

डौस, स पु (अ) नृपम्, दे 'नाब' ।

डाइन, स क्षी, (स डाकिनी) दे 'डा
विन' ।

डाइनमाइट, सं पु (अ) विधमवम्, *
विस्फोटकम् ।

डाक, म क्षी (हि डकिना-फादना) ।
प्रेष्य पत्राणि-पत्रिका (बहु) २ पत्राइन,
व्यवस्था सरथा ।

—गाना, स पु (हि + गा) (प्रेष्य)
पत्र, स्थान गृह-कार्यालय ।

—गाड़ी, स क्षी, पत्रवादी ।

—घर, सं पु, दे. 'दाखाना' ।

—वैगला, सं पु (हि + ल) विद्याम
विप्राप्ति, गृहम् ।

—महसुल, स पु (हि + ल) पत्रवाहन

—व्यय, स पु (हि + ल) शुल्कम् ।

ढाका, सं पु (हि ङकना) प्रमदा चौर्यम्,
लुठि (ली) टी, लुठनम् ।

—जनी, सं ली (हि + ङ) दे 'ढाका' ।

—ढालना, या मारना, कि स, लु-लुठ्
(स्वा प से, लु), प्रसदा अपहृ (स्वा
प अ) ।

—पढ़ना, कि अ, लुठकै अवसद-आक्रम
(कने) ।

ढाकिन, नी, सं ली (सं नी) कुश्किनी,
अभिचारिणी, योगिनी, मायाविनी, बालीगण
भेद । २ स्वधिरा, वृद्धा इ कुल्या भारी ।

ढाकिया, सं पु (हि ङक) पत्रवाहक ।

ढाकू, सं पु (हि ङकना धूदना) दस्तू,
महासाहसिक, लुठक, लुठा (ङ) क,
माचल, प्रसदाचौर, चिन्ताम ।

ढाट, स ली (सं दाति >) तोरण णं २ दे
'ढा' इ दे 'ढाँ' ।

—लगाना, कि स, वृत्तखण्डकरवा तोरण
रूपेण निर्मा (लु आ अ) ।

ढाटना, कि स (हि ङट) आचन्त
पूर (लु) २ अत्यधिक मक्ष (लु)
३ सावधैव वस्त्रादिक परिधा (लु उ अ)
४ दे 'ढाँटना' ।

ढाढ़, सं ली (सं दाढा) चक्रेदत, —अ,
दष्टा ।

ढाड़ी, स ली दे 'दाडी' ।

ढाध, स ली, दे 'ढाम' ।

ढाबर, सं पु (सं दम =साग >) अन्न
पच, भू (ली) देश २ पत्तल ल इ
आविलनल ४ दे 'सिलगनी' ।

ढाम, स पु (दम) कुश २ आग
मन्त्री इ अपवनादिबेल २ ।

ढामर, वि (स) मोषण, भयावह २ उपद्र
विन, कलि-कलह, प्रिय इ सत्स्य, अनुरूप,
सदस । स पु (स) उपद्रव, कलह २
वल्गाम, प्रमोद ।

ढामल, स पु (अ० दायमुल हभस) थावजी

बिक कारावास, आभरणान्तिक रोध निरोध
आसेध प्रग्रह ।

ढायन, सं ली (दे ङकिनी) ।

ढायचामो, सं पु (अ) विद्युज्जनक लघुयनम् ।

ढायरी, सं ली (अ) दैनदिनी दैनिकी ।

ढायरेकट स्पीच, सं ली (अ) प्रत्यक्षवर्णनम् ।

ढायर्की, सं ली (अ) दे० 'दुराज' ।

ढायल, सं पु (अ) घटीमुख २ सुयघटी ।

ढायल, स पु (अ) उच्चासन, मच ।

ढार, स ली [सं दाह (न)] विटप, शाखा,
२ पकि-तति (ली), मेणी ।

ढाल, स ली [सं दाह (न)] विटप, शाखा
२ असि, धारा पत्र कल्म ।

ढालना, कि स (स तलन) प्र, अस (दि प
से), प्र, क्षिप (तु प अ), पद (प्रे)
२ प्र, सु (प्रे), नि, सिच् (तु प अ)
३ परिधा (लु उ अ), वस् (अ आ
अ), धृ (लु) ४ नि प्र निश (प्रे), निधा
(लु उ अ) ५ विसृष्टपरित्यज (स्वा प
अ) ६ मिश्र (लु), समिल् (प्र) ७ उप
पत्नीत्वेन अवबध् (रु उ अ) ।

ढालर, स पु (अ) रौप्यमुद्राभेद, डालरम् ।

ढाली, सं ली (हि. ङाल) शाखा, विटप ।

ढाली, स ली (हि ङाल) दे 'ढोकारी'
२ उपहार, उपायनम् ।

ढाह, स पु (सं दाह) ईर्ष्या, अभि,
असूया, मत्सर, मात्सर्य, परोत्कर्षदेव,
२ देव, द्रोह ।

ढिगल, वि (सं ढिगर) दुष्ट, दुर्वृत्त २ धुद्र,
नीच । स ली, राजस्थानस्य भाषाविशेष ।

ढिदिम, सं पु (स) लघु, पट्ट-मुद्रा (पु) ।

ढिभ, सं पु (सं) द्वि, शिशु, दृष्टक,
कलम, पीठ-भक, श्राव-भक, अभक,
अपत्य, दृष्टक २ भूर्त्त जट ।

ढिक्टेटर, स पु (अ) एक—अधिपति —
सर्वविकारसम्पन्न, शासक —शासितृ ।

ढिक्टेशन, स ली (अ) दे 'रन्दा' ।

ढिक्शनरी, सं ली (अ) (शब्द)-कोश प,
अभिधानम् ।

ढिगना, कि अ (हि ङग) अप, सृग्म
(स्वा प अ), प्र वि सृप् (स्वा प अ)
२. विचल् (स्वा प से), पराङ्मुखी-विमुखी

भू, अति व्यनि-इ (अ प अ), अति व्योम
चर (स्वा प से) इ दे 'गिरना' ।

डिगरी, स स्त्री [अ उपधि (पु)], उपपद
२ अक्ष, बला, मात्रा, समवोणय नवतो
(हेर नाग) ।

डिगरी, स स्त्री (अ टिकी) स्वत्वप्रापक,
आधिकरणविनिर्णय, राजाशा, व्यवस्था ।

—देना, कि स, स्वत्वप्रापणात्मक निर्णय इ,
व्यवस्था (प्रे) ।

डिगरी, स पु (हि डीठ) कुडिष्टनिवारक
वज्रलोलकम् ।

डिपनी, स पु (अ डिपुटि) प्रति, निधि
पुरुष हस्त हस्तक, निधोगिन्, नियुक्त ।

—कमिशनर, स पु (अ) उपयुक्त ।

डिपार्टमेंट, स पु (अ) विभाग, शाखा ।

डिपो, स पु (अ) सोडागार, अलय, शाला ।

डिप्लोमा, स पु (अ) प्रमाणपत्र, अधिकारपत्रम् ।

डिफथीरिया, स पु (अ) रोहिणी ।

डिथिया, स स्त्री (हि डिथ्या) कोषक, सपुटक ।

डिथ्या, स पु, दे 'ड-वा' ।

डिमिसि, वि (अ) अधिकारभ्युत, अष्टाधिकार ।

—करना, कि स, अधिकारानु पश्चाद् भ्यु भर्त्
भवत् (प्रे) ।

डिमिनपेक्टेंट, वि (अ) रोगानुनाशक ।

डिरिटलेसन, स पु (अ) आसवनम् ।

डींग, स स्त्री (सं डीन <) आत्मश्लाघा, स्व
प्रशमा, विकथनम् ।

—मारना या डीङ्गना, आत्मान श्लाप् विकथ
(स्वा आ से) ।

डींगिया, वि (हि डींग) आत्मश्लाघिन्,
विकथनशील, पिंडीशूर ।

डीठ, स स्त्री, दे 'डिठ' ।

डील, स पु (देड) (देड) प्रपरि, माण,
आकार, आकृति (स्त्री), कायमानम् ।

—डील, स पु, मूर्ति (स्त्री), सखान,
आकारमानम् ।

डुगडुगी म स्त्री (अनु) डिडिम, लघुपट्ट ।

—पीटगा, मु, (सुडिडिमनाद) उद् वि धुष्
(चु), प्ररपा प्ररपापयति) ।

डुगी, स स्त्री, दे 'डुगडुगी' ।

डुधकी, सं स्त्री (इ टुवना) अदगाह,
आपुत्र निमज्जपु (पु) ।

—डुगारा, कि अ, दाद-अवगाह (भवा, आ
से), आपुत्र (स्वा आ अ), निमरज
(तु प अ) ।

डुवाना, कि म, व 'डुवना' के प्रे रूप ।

डुवाव ता पु (हि टुवना) अगाधता, गामोर्थम् ।

डुवोना, कि स, व 'डुवना' के प्रे रूप ।

डुलाना, कि स, व 'डो-ना' के प्रे रूप ।

डुंगर, स पु, (स तुग >) पर्वतक, धुद्रपर्वत
२ उष्णभू (स्त्री) मृत्प ।

डुंगरी, स स्त्री (हि डुंगर) अनिष्टपर्वत
२ धुद्रमृत्प ।

डुंडा, वि (देश०) एक-२२ विभाग कृणिक ।
स पु एक-२२ विभाग, मृत्प भूपम ।

डुयना, कि अ, (हि डुडना का विपर्यय,
अथवा अनु डुवडुव) निमरज (तु प अ),

निमज्जेन मृ (तु आ अ) म्यापद (दि
आ अ) २ अस्त इ-या (अ प अ),

अस्ताचल अस्तशिखर अवल (स्वा आ से),
प्राप् (स्वा प अ) ३ नह ध्वस्त निर्मूल (वि)

भू, नम (दि प दे), ध्वस् (स्वा आ से),
परिक्षि (कर्म), प्र वि जी (दि अ अ) ४ निध्वै

(स्वा प अ), सतत आलोच चिद् (चु),
चिताकुल (वि) भू ५ निमम निरत आसक्त

म्यापत (वि) भू । स पु, निमज्जन, आग्राव,
प्लावन, निमज्जेन मरण, अस्त, अस्तमन,

नाश, भवत, सततचित्तन, कार्यासति (स्त्री) ।

डुडा, स पु (अ) योनिशालनम् ।

डुगू सुखार, स पु (अ + अ) दण्डक अरिष
मनन, ज्वर ।

डेड, वि (सं अथर्ज) सार्द्धक ।

—डैट की असजिद जुदी धनाना, मु (दपां
दित) कार्यमसभूयैव कृ ।

डेपुटेशन, स पु (अ) प्रतिनिधित्व, शिष्ट
महत्, नियुक्तनम् ।

डेरा, स पु (हि ठहरना) पटवल, गृह
कुटी मध्य वेदम् (न), दृश्यदय २, गृह,

आलय, आवास इ विश्राम, अस्थिरवास
४ डिविर, निवेश ।

—ढालना, मु, सौ थ निविष् (तु प अ)
समावन् (म्वा प अ) ।

ढेङ्गा, स पु (यू अ) नदीमुखपुलिन-नम् ।
ढेलिगे, स पु (अ) निवोगिन् प्रतिनिधि (पु) ।
ढेनडा, वि (हि डेड) अन्वदंशुण । स पु
अन्वदंशुणसूची ।

ढेयडी, स स्त्री, दे 'ढयोडी' ।

ढेसिमल, स ॥ (अ) दशमलव २
दशसंयक ।

ढेक्क, स पु (अ) लेयन पीठिका कलकम् ।

ढोंगा, स पु (स श्रोण <) वेडा, वारिरव
नौ (स्त्री), तरो ।

ढोंगी, स स्त्री (स श्रोणी) वडुप, नौका,
वेटी, वेडा, तारिका ।

ढोंची-ची, स स्त्री, दे 'ढोंची' ।

ढोडी, स स्त्री (स तुड) बोजकोष, पुट-टम् ।

ढोबा, स पु (हि, इन्वा) निमज्जयु (पु),
निमज्जन अवगाह इन आप्लव ।

—देना, कि स, (रणे) नि, मिस्त्र (प्र
मज्जवणि), अवगाह (म) १ किन्द् (मे),
भारी क ।

ढोम, स पु (म) टोंक, अरदृश्यजातिभेद
१ दे 'ढोरासी' ।

ढोर, स स्त्री (स पु व) शुक्क-स्व, शुल्वा
स्त्री, वराट टक, रज्जु (स्त्री), गुण, वट
ट दी ।

ढोरा, स पु (स ओर २) डोरक-क, सूत्र
तट (पु), गुण २ रखावा, लेखा ३ अग्नि,
धारा ४ चमसभेद ५ स्नेहसूत्र, प्रेमवधन
६ कज्जलेखा ७ नृपये ग्रीवागतिभेद ।

—ढालना, मु अनुरज्-मुद् (मे) ।

ढोरिया म पु (हि डोरा) •ढोरीय, सरैलों
ऽगुक्रभेद ।

ढोरी, स स्त्री, दे, 'ढोर' ।

ढोल, स पु (स दोल <) •ढोल, लोहसेवनम् ।
वि, अरिपर, लोल ।

ढोलची, म स्त्री (हि डोल) •ढोलक
ऋषुमेवनी ।

ढोलना, कि अ (स दोलन) स-सुप (म्वा
प अ) चल (म्वा प स) २ अम्पर्यट्
(म्वा प से) ३ अप, इवा (अ प अ)
४ (चित) विचल्, चचल भू ५ दोलायने

(ना पा), प्रेक्ष (म्वा प से) । स पु,
दोलन, प्रेक्षण इ ।

ढोलनेवाला, सं पु, सर्वगशील पर्यंक*,
अपयान् (पु), चलचिच, प्रेक्षक ।

ढोला, स पु (स दोला) द्यनं, दोलिका,
शिविवा ।

—देना, मु, नृपदिभ्य स्वक-यामुपह (म्वा
प अ)

ढोली, स स्त्री (हि डोला) दे 'डोला' ।

ढोही-ही, स स्त्री (स डिडिम) पट्ट,
डुडभि २ (सडिडिमनाद) पीप वणा
३ रथापन, व कीर्तनम् ।

—देना या पीठना, कि स, दे 'डुगडुगी
पीठना' ।

ढौल, स पु (हि डौल) आकार, संस्थान,
आकृति (स्त्री), रूप २ प्रकार, विधा
(समासांन में) ३ युक्ति (स्त्री) वपाय
४ लक्षण, विदम् ।

ढाल, स पु, उपाय, युक्ति (स्त्री) ।

—दार, वि, सुन्दर, रम्य २ पुष्ट, स्वस्थ ।

ढयूटी, स स्त्री (अ) कर्तव्य, कार्य कृत्यम्,
•याय्य स्व, कर्मन् वार्यम् ।

डयोदा, वि तथा स पु, दे 'डेवडा' ।

डयोदी, स स्त्री (स देहली) गृहवमहम,
द्वार, पिंडी पिठिका २ उपशाला, द्वाारागण,
द्वारकीड ।

—दार, } स पु, दीपारिक, द्वारपाल ।
—दान, }

डूइड्ड, स स्त्री (अ) •रेखाचित्रगम् ।

—रूम, दर्शन उपवेशन, कोठ शाला कश्च, चि
त्रशाला ।

डूइवर, स पु (अ) वाहक, चालक ।

डूापर, स पु (अ) विदुपातकम् ।

डूाफ्ट स पु (अ) प्रारूपम् २ भगवत्पणा
देश, डाफ्टम् ।

—टेवल, स पु (अ) गृहारपलकम् ।

डूाफ्टसमनं, स पु (अ) आलेख्य चित्र,
कार-कार कृत ।

डूाम, स पु (ण) डूाममान, भावप्रदात्म
कस्तोक्रोधे ।

डूामा, स पु (अ) रूपक, नाटकम् ।

द्वाभर, सं पु (अ) चल, कोष्ठ सपुट ।
 द्वेस, स स्त्री (अ) देश ष, परिधानम् ।
 द्वेसिग, स स्त्री लेप, उप, नाह देह । अ
 २ शृगार, मण्डनम् ।

द्विल, स स्त्री (अ) -वायाम, मल शल,
 शिक्षा अभ्यास ।
 -मास्टर, स पु (अ) -वायाम, शल,
 शिक्षक ।

द

द, देवनागरीवर्णमालायाश्चतुर्दशो व्यञ्जनवर्ण,
 दकार ।

दग, स पु (स तम् = गति > १) शैली, रीति
 पद्धति (स्त्री) प्रणाली २ प्रकार, आवृत्ति
 (स्त्री), भेद, विधा (समाप्तांत में) ३
 रचना, घटन, निर्माण ४ युक्ति (स्त्री),
 उपाय ५ व्यवहार, आचरण ६ व्याज,
 निप ७ लक्षण, विद्व ८ रियति (स्त्री),
 दशा ।

दगी, वि (हि दग) चतुर्द, विदग्ध, धूर्त ।
 दंडोरा, स पु (अनु दड) दे 'दंडो' ।
 दंडोरिया, सं पु (हि दंडोरा) वद् घोषक,
 प्रत्यवापक ।

दई, स स्त्री (हि दहना) दे 'धरना' सं पु ।
 दकना, स पु, दे 'दकन' । कि स, दे
 'दकना' । कि अ, आ-छाद् भाषु पिधा
 (कर्म) ।

दकनी, सं स्त्री, दे 'दकन' ।
 दकवाना, कि प्रे, व 'दकना' के प्रे रूप ।
 दकैल, स पु दे 'धकैल' ।
 दकैलना, कि स, दे 'धकैलना' ।

दकोसला, सं पु (हि दग + स कोशलम्)
 दम, भाइवर, पापट द, कापट्य, छात्रिकता ।
 दक्कन, सं पु (स दक = छिपना)
 पिधान, पुं म दी, छद्, छदन, आवरणम् ।
 दधर, स पु (हि दौचा) परि-छद्, उप
 करणसामग्री २ भाषा, उपपद्य ३ कलह,
 विवाद ४ व्यवसाय, वृत्ति (स्त्री) ५ आ
 दम्बर ६ जरठ ।

दप, स पु, दे 'दक' ।
 दपना, स पु (हि दपिना) दे 'दहन' ।
 कि अ, दे 'दपना' कि अ ।
 दय, स पु, दे 'दङ्ग' ।

दमदम, सं पु (अनु) पटह मेरी, नाद,
 दमदमधनि (पु), दमदमाधिनम् ।
 दरका, स पु [हि दर(ल वना) नि(च)लना,

विहता, नेत्रसाव, अभिरय(स्थ द २ पशुना
 मौषधपाननल ।

दरकी, सं स्त्री [हि दर(ल वना) त(त्र सर,
 मलिक ।

दर्रा, सं पु (हि दरना) मार्ग, पथिन्
 २ शैली, पद्धति (स्त्री) ३ उपाय, युक्ति
 (स्त्री) ४ आचार, आचरणम् ।

दलकना, कि अ (हि डाल) प्र परि, लु
 (भ्वा ष अ), पद (भ्वा ष से) प्रत्यय
 क्यपुद (भ्वा आ से) २ 'लुदवना' ।
 सं पु, स(स्त्रा) व, श्वोत्, अवपान ।

दलका, स पु, दे 'दरका' (१) ।
 दलवाना, कि स, व 'दलकना' के प्रे रूप ।
 दलना, कि अ (हि डाल) विलाप्य सथा
 घट्ट रन् वल्ल (कर्म) २ दे 'दलकना' ।
 ३ स्वति भति, द (अ ष अ), स्वतिम्
 (भ्वा ष से) ४ दे 'लुदकना ५ प्री
 (हि आ अ), अनुकूलि भू ५ अस्त गम् ।
 सौचे में दला, मु, भनि, सु-दर सुभग
 शोभन ।

दलमल, वि, दे 'दलील' ।
 दलर्ची, वि (हि डालना) विलाप्य पटिन
 रथित वस्त २ अवसथिन, प्रवण ।
 दलवाना, कि प्रे, व 'दालना' के प्रे रूप ।
 दलाई, सं स्त्री (हि डालना) विलाप्य घटन
 रचन वस्तन २ द्वावण विलापन, वृत्ति (स्त्री) ।
 दहना, कि अ (म ध्वसन) ध्वत अवस्थ
 (भ्वा आ से), अवपद (भ्वा ष से)
 २ वि लम् (दि ष वे) ।

दहवाना, कि प्रे, व 'दहना' के प्रे रूप ।
 दहाना, कि स (स ध्वसन) अवस्थम् ध्वत्
 अवपद उमूल उपपट्ट उच्छिद उासर (प्र)
 २ विनन् (प्रे) । स पु, प्र वि ध्वस,
 जथाघटन, उमूलन, उसादन ३ ।

दहाने योग्य, रि, विध्वसनीय, उमूल
 यिनव्य ३ ।

उद्धानेपाला, स पु, विध्वंसक, उत्पाक ।
 डौंकना, कि स (स डक = टिपाना) आ
 प्र समाच्छद् (चु), आ प्र सवृ (स्वा उ
 ति), यदपि, धा (जु उ अ), अवगुठ
 (जु), निगुठ (म्वा उ से, निगुठित्ते)
 २ आ, नृ (स्वा उ अ) स्त (क उ से) ।
 स पु, आ प्र-समा-च्छादन आ गन्तरण,
 विपान अवगुठन, वेष्टन आस्तरण इ
 डौंकनेपाला, स पु, आच्छादक, आवरक,
 पिपास्य ।
 डौंका हुआ, वि, आच्छादित आवृत्त,
 पिहित इ ।
 डौंका, स पु (स स्थाता >) आकार, आधार,
 उपष्टम, सस्थान, प्रारम्भिक रूप-आधार ।
 डौंपना, कि स, दे 'डौंकना' ।
 डाई, वि (म अर्द्धिनीय >) सार्द्धि ।
 टाक, म पु (स आधारक) पलाय, किङ्क,
 पर्व यक्षिप, रक्तपुष्पक, वातहर, समि
 हर ।
 —कै तीन पात, मु, सदाशिरिद्रना निरंतर
 निर्वनना ।
 दाड, म की (अनु) चीत्कार, आक्रम्य,
 उक्रोश २ गणित, गर्जन-ना, महा-धीर,
 नाद ।
 —मारना, मु, सचीत्कार सावद रक् (अ
 प से) ।
 डाढस, स पु (स डूढ >) धोरता, धैर्य, चित्त
 रक्ष्य, दात (की) २ सन्, आधाता सन,
 सात्वन ना ३ साह्य, चित्तदान् ।
 —देना या बँधाना, मु, आ समा-चम (प्रे)
 शां (सां) व (चु), विनुद (प्रे) २ प्रोत्साह
 (प्रे) ।
 टाना, कि स, दे 'उद्धाना' ।
 दावा, स पु (देश) भोजन, गृह शान्ता
 २ दे 'परच्छी' । ३ कुङ्कुट, चक्षुष करद
 ३ बालन्, पादा ।
 डारस, स पु, दे 'दादस' ।
 डाल', स की (स न) चर्मज (न), फल्क
 क, पन् ।
 टाल', स की (स धार >) क्रमश निम्नता
 प्राय २ प्रवर्त्तन-व २ निम्न, प्रवा, प्रवा
 अवसर्पि, भूमि (की) ३ पर्वत, उत्तम,

कटक का, नितव ४ प्रकार, विधि (पु),
 गति (की) ।
 डालना, कि म (हि डाल) विहाय्य रच्
 घट् क्प (प्रे) निर्मा (जु आ अ)
 २ (मघ) पा (म्वा प अ) ३ दे
 'उडेलना' ।
 डालर्चा, वि (हि टाल) दे 'डाल्वा' (१२) ।
 डालिया, स पु (हि टाल्ना) पात्रकार २
 सुवर्णकार ।
 डाली, म पु (स लिन्) डाल चर्म फलक, धा
 रिन् २ सैनिक, योध ।
 दासना, स पु (म पा-धारण + आमत >)
 पृष्ठासन (पृष्ठ-) अवष्टम अवलम्बन आधार
 २ उपधान, उपवर्ह ।
 टिडोरा, स पु (अनु टप + स डोल >) दे
 'डौंढी' (१२) ।
 दिग, कि वि (स दिश >) समीप पे ।
 स की, समीप्य, नैक्य २ अत, प्रात ।
 डिठाई, स की (हि डीठ) धाट्टेय, प्राग
 स्य, वैवात्य, अविनय, गण्डहना, धृष्टना ।
 टिचरी, स की (हि दिव्या) मृत्तलदीप-पिका ।
 टिबरी, स की (हि टपना) अव्ययी
 करोधनी ।
 दिमका, सर्व (हि अमका का अनु) अनुक ।
 दिलदिला, वि (सं दिधिल) कीमल, सिग्ध
 मेदुर, अकठिन ।
 डिह्वक, वि (हि डीला) मद, मधर, अलस ।
 डीठ, वि (स धृष्ट) अशिष्ट, प्रत्यम, विवात,
 कुङ्कु, शील, विनयविहीन ।
 डील, स की (हि डीला) काल, अतिपात
 क्षण यापन-हरण, विलम्ब, व्याधुप २ कालस्य,
 मथरता ३ सिधिलता, दैधिन्य, दल्लता ।
 —करना, कि अ, काल क्षिप् (पु प अ),
 विलम्ब (म्वा आ से) ।
 —देना, मु, यष्टेष्टमाचरितु अनुमन् (दि आ
 अ) अनुज्ञा (क उ अ) २ सिधिली क,
 इत्य् (चु) ।
 डीला, वि (स दिधिल) प्र, रत्न, विगणित,
 सत्न, अद्भुत, अत्यमक, २ अत्य, तद्विल,
 उदात्त, मद, मथर ३ काल, अतिपातिन्
 क्षेयक ।
 डीलापन, सं पु-दे, 'डील' ।

दीह, स पु, दे दीह ।

हुँदवाना, कि प्रे, व 'हुँदना' के प्रे रूप ।

हुडि, पु (स) गणश, गणपति ।

हुँदो, स स्त्री, (स हुँदो) १ हुँद दि (स्त्री)

नाभि (पु स्त्री) २ बाहु, मुज जी

हुकना, कि अ (देश) प्रविश (तु प अ)

२ सदस्या अभिदु (भ्वा प अ) आक्रम

(भ्वा प से, भ्वा आ अ) ।

हुलकना, कि अ, दे लुहकना ।

हुलशाना, कि स, दे 'हुलकाना' ।

हुलना, कि अ, दे 'हुलकना' २ दे 'हुलकना'

३ प्री (दि आ अ) अनुग्रह (क प से),

व्य अनुकप (भ्वा आ से) ।

हुलवाई, हुलाई, स स्त्री (हि हुलवाना)

वाहन, नयन, हरण, भरण २ वाहनवेगन,

प्रापणनिर्देश ।

हुलवाना, कि प्रे, व 'दोना तथा 'हुलना' के

प्रे रूप ।

हुलाना, कि प्रे, व हुलना तथा 'दोना' के

प्रे रूप ।

हुँड, स स्त्री (हि हुँदना) दे 'सोज' ।

हुँदना, कि क (स हुँदना) दे 'सोजना' ।

हुँद-हुँद, स पु (स स्तुप) राशि (पु)

चय २ वामलर, क्षुद्रपर्वत ।

हुँकली, स स्त्री (हि हुँक) जलकर्मणयन

२ भापकुहनी ३ वक्तुहयत्र (अर्क उतारने

का यत्र) ४ दे 'कलनाजी' ।

हैर, स पु (हि भग्ना > ?) राशि (पु),

निबर, चिति (स्त्री), नि स, चय, स्तोम,

पुत्र, समार । वि, प्रचुर प्रभूत, बहुल, भूरि,

विपुल, पर्याप्त ।

—लुगाना, कि स, राशी क, सवि (स्वा व अ) ।

—करना, मु, व्यापदृष्ट (प्र) ।

हेरी, स स्त्री (हि हेर) क्षुद्रादि (पु),

दे 'हेर' ।

हेला, स पु (हि टला) लोग, मृद, सड

रिट, लोट ट, दरिणि (पु स्त्री) लोष्ट,

२ पिष्ट, सड-ट ३ धान्यभेद ।

हैया, स पु (हि दार्द) साहसिकैकारमक

लोल २ साहसिगुणनसूची ।

होय, स पु (हि टग) भाइवर, दम,

पाप-ह, कपट, छयन् (स), वचना, प्रतारणा ।

होंगी-गिवा, वि (हि होंग) दामिक, वचक,

प्रतारक, कापटिक छाधिक, पापविन् ।

होटा, स पु (हि होटी) पुत्र २ बाकक ।

होडा, स स्त्री (स हुहिद) पुत्री १ बालिका ।

होना, कि स (स होद वा ऊद, विपर्वसे

दोव) वह-नी (भ्वा व अ) (तथाभ्य) ह

(भ्वा व अ) । स पु, वहन, नयन, हरणम् ।

होनेवाला, सं पु भार, वाहक द्वार ।

होर, स पु, दे, 'पहु' ।

होल, स पु (॥) भानक, पट्ट ह, नका

२ कर्णदुग्धि (पु) ।

होलक-ही, स स्त्री (स होलक) नेरी रि

(स्त्री), दुग्धि (पु) ।

होलकिया, स पु (स होलक >) होलक

वाचक, पट्टावाक ।

होचा, स पु (स अर्ध+हि चार) सार्धचतु

गुणनसूची ।

ण

ण देवनागरीवर्णमालया पञ्चदशो व्यञ्जनवर्ण, ।

त

त, देवनागरीवर्णमालया षोडशो व्यञ्जनवर्ण, ।

तकार ।

तक, स पु (स) भय नीति (स्त्री) प्राप्त

२ वटभय डेहभय, नोवनम् ३ विवोगदु खम्

४ टक, तमूणी ।

तग, वि (फा) दृष्ट, शैविल्यशून्य, ससक,

णकार ।

समस्त गाढ २ अर्द्धित, उद्भिन्न, संतप्त, पीडित,

विकल ३ विस्तारविरहित, सनाथ, मरुट, सकु

(को) धिन, सकीर्ण । त पु वदया, गभी,

वरत्रा ।

—दस्त, वि (फा) निर्धन, दरिद्र ।

—दस्ती, स खी (फा) अकिचनता, दारिद्र्यम् ।

—दिल, वि (फा) कदयं, कृपण, मितपच ।

—आना, या होना, सु, खिद (दि रु आ अ), सनप (कर्म) ।

—करना, सु, खिद—यथ सतप (मे) ।

हाय लग होना, सु, दरिद्रा (अ प से) निर्धन (वि) भू ।

तगी, स खी (फा) मकोच, सवीणता, विस्तारामात्र, सवाधना २ इडता, सहति शुनमक्ति (खी), गाडता ३ छद, डख ४ निधनता, दरिद्रता ५ न्यूनता ।

तकल, स पु (ख) दे 'चावल' ।

तति, स खी (स) रज्जु (खी), गुग, धनी रशना २ पक्ति (खी), श्रेणी नि (खी) ।

—पाल, स पु, गोरक्षक (२) अष्टावक्राते सहदेवस्य सहा (महा०) ।

तन, स पु (स) सूत्र, तन, गुग २ सतान ।

—'य, स पु, दे 'जुलाहा' ।

तत्र, स पु (स न) तनु (पु), सूत्र २ तनु, नाय-वाय, कुविद, पटकार ३ पट निर्माणपरिच्छद ४ सपत्ति (खी) ५ अधीनता, पराधय ६ शासन, शासनपद्धति (खी) ७ कारण ८ काय ९ परिवार १० सेना ११ गारुड, मत्र १२ औषध १३ राज्य १४ शास्त्रभेद ।

तज्जी, स खी (स) तनि (खी), बीणादीनां गुग २ गुग, रज्जु (खी) ३ बीणा, सत्त्रीन वाय ४ देहशिरा । स पु (स तत्रिन्) बीणावादक २ गायक ३ सैनिक ।

तदुरस्त, वि (फा) स्वस्थ, नीराग ।

तदुरस्ती, स खी (फा) स्वास्थ्य, नीरोगता ।

तदूर, स पु (फा) तनूर) आपाक, उरवा, वडु (पु खी) ।

तदेही, स खी (फा) तदिही) परिधम, प्रयल ।

तदा, स खी (स) निद्रा, आनस्थ, निद्रा उग, शयाजना, तद्राजना ।

तद्राहु, वि (स) तदिल, निद्राहु, निद्रा, पर-वश, सुपुष्ट, उपाहु ।

तवाफू, स पु, दे 'तमाफू' ।

तवीह, सं खी (अ) शिक्षा, अनुशासन, उपदेश ।

तवू, स पु (हि तनना) पट, कुगी मडप गृह, इदयभ्य, वेणिका, मलन, स्थूलम् ।

शाही—, स पु, चपकार्या ।

तवूर, स पु (फा) पटह, पणव, मुरन ।

तवूरा, स पु (स तुरर) •तानपूरक, बीणाभेद ।

तवोल्, स पु (स तावल् >) •नावल्, •वर शुल्क क (पनाब) २ •वरयान्त्रियय •नावल् (मुदेलखड) ।

तवोली, स पु (हि तवोल) तावूलिक, तावूलिकर (पु) ।

तअज्जुव, स पु (अ) आश्चर्य, विस्मय ।

तअम्मूल, स पु (अ) भेद, शाति (खी) ।

तअक्लुक, स पु (अ) भूमि (खी), क्षत्र २ प्रदेश, प्रानमाय, मडलम् ।

—दार, स पु, भू-क्षेत्र, स्वामिन्, क्षत्रपति ।

तअक्लुक, स पु (अ) सवध, ससर्ग ।

तअम्मुव, स पु (अ) धार्मिक जातीय, पमपात ।

तहू, प्रत्य (प्रा हुनो) प्रति, अर्थम् ।

(इसका अनुवाद प्रायः द्वितीया या चतुर्थी कि रूपों से करते हैं) ।

तक, अव्य (सं अत + हि क) यावत्, पर्यंत आ (समास में या पचमीयुक्त) । आभरण, आभरणात्, मरण यावत्, मरणपर्यंतम् इ ।

तकडा, वि (हि तन + कडा) बलवत्, सबल, पुष्ट [तकडी (खी) बलवती, सबला] ।

तकडी, स खा (देश) गुला, मापन, धट, तीलम् ।

सकदीर, स खी, (अ) माग्य, दैवम् ।

तकरार स खी (■) कान्ह, विवाद ।

तकरीर, स खी, (अ) माध्या, व्याख्यानम् ।

तलका, स पु [स तर्कु (पु खी)] तर्कुट, कर्पासनासिका ।

तकली, स खी (हि तवला) तर्कुटी शुद्धतर्कु (पु खी) २ आवापन, तनुकील ।

तकलीफ, स खी (■) बट, बलश, आपद (खी) ।

तकल्लुफ, स पु (अ) शिष्टाचार, नैयमित्यता ।

—करना, शिष्टवत् आचर (स्वा प से), शिष्टाचार इश (प्र) ।

वेनवल्लुफ, वि, सरल, ऋजु ।
 तवधीयत, H खी (अ०) पुष्टि शक्ति
 (खी) वल्गु । २ सान्त्वनना, आश्रय, आश्रमनम् ।
 तवसीन, स खी (अ) अशन, विभाग, विभागपरिक्लपन २ वटन, सप्रविभाग ।
 —करना, कि स, भन्विभम् (स्वा उ अ) २ वट्प्यश (जु) ।
 तवसीर, H खी (अ) अपराध, दोष ।
 तवजा, स पु (अ) (ऋणशोधनार्थं) अनुरोध, प्रेरणा ।
 —करना, ऋणशोधनार्थं सनिर्गन्ध प्रार्थ (जु आ से) २ अनुरूप (क प अ) ।
 तवधी, स खी (अ) वृषदेभ्यो बीजाद्यर्थं वक्ष्यन्म् ।
 तकिया, स पु (फा) उपपान, उपपन्न २ आश्रय, अवलम्ब ३ यवनमिश्रककुटी ।
 —कलाम, स पु (फा + अ) आवागम्य, आसृज्यवाक्यम् ।
 तकुआ, स पु. दे 'तकला' ।
 तक्र, स पु (स न) वादाकुसुप्तदधि (न), मथितम् ।
 तचक, स पु (स न) रवक्षण, सनूकरण, काष्ठस्य समीकरण २ उद्विग्न, उत्कीर्ण मूर्तिनिर्माणम् ।
 तचण, स पु (सँ) वातावरणो नामविशेष २ सप, अहि (पु) ।
 तक्षमीना स पु (अ) अनुमान २ मूल्य निरूपणम् ।
 तरेत, सँ पु (फा) नृपासन, सिंहासन, मद्रासन २ फलक क, मय ।
 —नक्षीत, वि (फा) सिंहासन, आसन-आरुह ।
 —पोश, H पु (फा) मचाच्छादन, फलक प्रच्छद २ फलक क, मय ३ दे 'चौकी' ।
 तस्ता, स पु (फा) काष्ठ-दारु, फलक फलक २ पट्ट ट इ पीट, मय ४ शव, फलक यान ५ दे 'चौरी' ।
 तथ्यी, H खी (फा तस्ता) शुद्धफलक, पीटिका २ (काष्ठ) पट्टी पट्टिका ।
 तयदा, वि, दे 'तयदा' ।
 तयण, स H (स) छन्द शाले गणभेद, अन्तरपुण्य । (उ० तूपान, तैत्तिरीय)

तयार, स H (सँ न) वक्र, कुटिल, जिह्न, दीपनम् ।
 तयाङ्, सँ पु (सँ तदाग गम् >) शुभाकर्द भादिमिश्रणार्थं नुटम्, नटाग ।
 तयादा, सँ पु, दे 'तकाजा' ।
 तयज, सँ पु (H रवच) बहुगण, सुखलोचन, उत्कट, रघवत्वं, सिद्धम् ।
 तयजिरा, स पु (अ) वर्णन, वर्णा २ जीव नचरितम् ।
 तयजर(रु)वा, सँ पु (अ) सपरीक्षा, प्रयोग, परीक्षा क्षण, २ अनुमन, परीक्षास्थ-अनुमन जनित, ज्ञान, बुद्धिपरिपाव ।
 —चार, सँ पु (फा) अनुमति, बुद्धिर्दक्षिण ।
 —करना, कि स, अनुभू २ परीक्षा (आ आ से), प्रयुज् (जु) ।
 तयथोज, स खी (अ) सत्, मति (खी), तवं २ निर्णय ३ उपाय, पुष्टि (खी) ।
 तट, स पु (स तट ट) तटीटा, कूल, तीर, रोधम् (न) । कि वि, समीपये ।
 तटस्थ, वि (स) तीरस्थ, कूलस्थ २ निष्प क्षपात, उदासीन, उभयसामान्य, सम, भाव दृष्टि ।
 तट्, स H (सँ तट >) पक्ष, दल हम् ।
 तट्, स पु (अनु) प्रहारन शब्द, तटत्कार ।
 तट्कना, कि अ (अनु तट) वि, दल (स्वा प से), रपुट (तु प से) दू भूभिद (कर्म) २ कुप (दि प अ) ।
 तट्का, सँ पु (हि तट्कना) प्रभात, विभाग, वषस (खी न), प्रत्युष, अहर्मुखम् ।
 तट्के, कि वि, प्रत्युषे, प्रमाने ।
 तटप, स खी (हि तटपना) वप, रपद, स्फुरित २ सक्षीम, वपस्त्व, आकुलत्वम् ।
 तटपना, कि आ (अनु) क्षुम् (दि, क प से, स्वा आ से) आकुली क्षुब्धो विह्वलो भू २ अत्यधिक अमिल्य (स्वा उ से) ।
 तटपाना, वि स, उदिज् (प्रे) प्रवितं क्षुम् (प्रे), आकुली कृ ।
 तटपना, } कि अ, दे 'तटपना' ।
 तटफना, }
 तटकाका, सँ पु (अनु) ताहनध्वनि (पु) २ श्रोतन भग, शब्द विराव ।
 तटाक, स पु (सँ पु न) दे 'तालाव' ।

तदातद, किं वि, (अनु) सतदतदशब्दम् ।
सहित, सं स्त्री (स) विचर (स्त्री) चपला,
चचला, शपा ।

—पति, स पु (स) मेघ, नीरद ।

तद्दी, स स्त्री (अनु०) चपेट, चपेटिका,
चपेट-करतल, प्रहार ।

सति, स स्त्री (म) पकि श्रेणी (स्त्री),
२ समूह ३ विस्तार ।

सतैया, स स्त्री (स तस्य) बरट गटो
इडाचिका गणोली, बरल बरोल विष,
शुक्र-मृगी ।

सत्काल, किं वि (स न) तदशणात् अचि
रादेन, समय ए, आनु द्राक, हाविति, तरकाले ।

सत्कालीन, वि (स) तात्कालिक [नौ
(स्त्री)] तदानागन [नौ (स्त्री)] ।

सत्क्षण, किं वि (स तक्षण) दे 'तरकाल' ।

साव, स पु (स न) तस्य, याथावर्थ,
सत्य, मयाता वास्तविकता २ पचभूतानि
३ मूलकारण ४ सार, सार-अश-वरु (न)
५ मद्यन् (न) ।

—अवधान, स पु (स न) निरीक्षण
अवेधनम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) परमार्थ-मदा-ज्ञानम् ।

—ज्ञानी, स पु (स निन्) । तत्त्वज्ञ २

—धूर्ति, स पु (स क्षिन्) । दार्शनिक ।

—बादी, स पु (स दिन्) तत्त्ववक्तृ (पु)
२ यथार्थ-स्पष्ट वादिन् ।

वित्, स पु (स विद्) दे 'तत्त्वज्ञानी' ।

—विद्या, स स्त्री (स) दर्शनशास्त्रम् ।

—वेत्ता, स पु (स वेत्) दे 'तत्त्वज्ञानी' ।

सत्पर, वि (स) आसक्त, निरत, व्याप्त
समाहित, अभिनि नि, विष्ट, व्यव २ एकाग्र,
सुसमाहित, सावधान ३ सचब्द, सच्च, सज्जी
भूत, उपकल्प ।

सत्परता, स स्त्री (स) अभिनिवेश आसक्ति
(स्त्री), मनोयोग, एकाग्रता, एकनिष्ठता,
अन्यवर्षिता ।

तत्पुरुष, स पु (स) परमेश्वर २ समा
सभेद (व्या) ।

तत्र, अय (स) तस्मिन् स्थल-स्थाने ।

तथा, अव्य (स) च, (इन्द्र समास से मी,

उ राम तथा श्याम = रामश्यामी इ) २
तादृश, तत्सम, तत्सुव्य ।

तथापि, अव्य (स) तदपि, तथापि, एव
गत्वपि ।

तथास्तु, अव्य (स) एव अस्तु भवतु ।

तस्य, स पु (स न) यथार्थता, सत्य,
सत्यता ।

तदन्तर } किं वि (॥ तदनन्तर) तन्तु,
तदनन्तर } तत्पश्चात्, तन, अथ, अनन्तरम् ।

तन्तुरूप, वि (स) तत्सदृश, तत्सुव्य,
तदाकार ।

तदनुसार, वि (स) तदनुकूल, तन्तुरूप ।

तदधीर, स स्त्री (अ) साधन, उपाय-युक्ति
(स्त्री) ।

तदा, किं वि (स) तस्मिन् काले समये ।

तदाकार, वि (स) तद्रूप २ तन्मय ।

सदीय, सर्व (स) तन्मयिन्, तस्य ।

सदुपरात, किं वि, दे 'तदनन्तर' ।

तद्वित, स पु (स) प्रत्ययभेद (व्या)
२ तद्विततशब्द ।

तद्रूप, वि (स) सदृश [स्त्री स्त्री (स्त्री)],
तदाकार ।

तद्वत्, अव्य (स) तत्सदृश, तत्सुव्यम् ।

तन, स पु [फा । मि, स तनु (स्त्री)]

देह, शरीर, वपुन (न), गात्रम् ।

—मन, स पु, तनुमनसी देहदेहिनी (दि) ।

—मन मारना, मु, कामान् अवनिम्न रध्
(रु उ अ) ।

—मन से, मु, सावधान, अनयवृत्त्या सर्वां
त्मना एकाग्रचित्तेन (रु एक) ।

तनरवाह, स स्त्री (फा) दे 'वैन' ।

तनना, किं अ (स तनन) प्र-वि-तन्

(कर्म), प्र, लब् (व्या आ से), प्रस

(व्या प अ) विस्तृ (कर्म) २ लच्छिन्न

उत्थान उत्थन (वि) स्था (व्या प अ)

३ रूप (दि प से तु) ।

तनय, स पु (स) पुत्र, सून (पु),

आत्मज ।

तनया, स स्त्री (स) पुत्री, दुहितृ (स्त्री),

आत्म्या ।

तनहा, वि (फ) प्वल, एकाकिन्, अस्-

हाय । किं वि, एव, केवलम् ।

तनहाई श्रृं ली (पा) विननना, विविक्तता
२ विनन विविक्त ३ एकाकिता, अमहायता ।

तनाजा, स पु (अ) कन्ह कलि (पु)
२ वेमनस्य शत्रुता ।

तनिक वि (स तनुक) अन्त, स्तोक, अणु ।
कि वि विविच्, स्तोक, ईषत्, भनाक्
(सव अ द) ।

तनी, स ली (हि तानना) बध, बधन,
बधनी ।

तनु, स ली (स) तनु (ली) देह
काय, वपुः (न) २ स्वच (ली) ३ नारी ।
वि, कृश दुर्ल, छाणकाय २ अल्प, दम्भ
३ कोमल पेल्व ४ सुन्दर उकृष्ट ।

—छूप, स पु (स) रो (ली) म, वृष रघ्नम् ।

—धारी, वि (स रिन्) हेदिन्, धारीन्,
प्राणिन् ।

तनुज, स पु (स) पुत्र आत्मज, मृत ।

तनुना, स ली (स) पुत्री, आत्मजा, तनवा ।

तनु स पु (स ली) देह, काय ।

—उद्भय, स पु (स) पुत्र, तनुज ।

—उद्भवा, स ली (स) पुत्री, तनुना ।

तनु, दे 'तदूर' ।

तन्मनस्क, वि (स) तल्लीन, तन्मय ।

तन्मात्रा, स ली (स प्रम्) सूक्ष्ममूलतत्त्वम्

(उ शब्द, रूप, रस, गंध) ।

तन्मय, वि (स) नि, मग्न, दत्तचित्त, अव

हित आसक्त, लीन, निरत, पर परायण ।

तन्वी, स ली (स) तन्वी, कोमलांगी,

वृहती ।

तप, स पु [स तपस (न)] तपस्या,

तप, ब्रह्मादान नियमस्थिति (ली), परि

मत्या प्रतर्क्या ।

—करना, कि अ, तपस्यति (ना था), तप

तप् (दि आ आ) या आनर (भ्वा प से) ।

तप, स पु (स) ताप, दाह, उष्ण,

कामन् (पु) २ ग्रीष्म ३ अर ।

तपक, स ली (हि तपकना) आकस्मिक,

प्रक्ष-स्फुरण-आशय ।

तपकना, कि अ (हि तपकना) स्फुर (तु

प अ), अकस्मात् स्फुर (भ्वा आ से) ।

तपन, स पु (स न) ताप, उष्णन् (पु),

दाह, तप २ सूर्य ३ सूर्यकान्तरन
४ ग्रीष्म ।

तपना, कि अ (स तपन) तप (भ्वा प
अ), दीप् (दि आ से), उष्णी भू
२ सप्तजिह्वापीह (कम) यप् (भ्वा
आ से) ।

तपश्चर्या, } स ली (स) दे 'तप' ।

तपस्या, }

तपस्विनी, न ली (स) तावती, तपोधता

२ प्रतिव्रता ३ दीना ।

तपस्वी, स पु (स रिन्) तापस, तपोधन,

पारि (र) काश्चिन्, पारिकाशक, पारि (पु)

२ दीन, दरिद्र ।

तपाक, स पु (का) आवेश आवेग,

२ शीघ्रता ।

तपात्, कि स, व 'तपना' के प्र रूप ।

तपी, स पु (हि तप) दे तपस्वी ।

तपेदिक, स पु (फा तप + अ दिक)

क्षययोग, राजवह्मन् (पु) ।

तपोधन, स पु (स) तपो निष्ठ मिथि राशि

(पु), तपरिन् ।

तपोबल, स पु (स न) तपस्याशक्ति (ली) ।

तपोभूमि, न ली (स) तपस्यास्थानम् ।

तपोवन, स पु (स न) तपस्यारण्यम् ।

तप्त, वि (स) उष्ण, तापिन, दे 'गदम'

२ दुखित, पीडित, क्लेशित ।

तफरीक, स ली (अ) व्यवकलन विरर्जन,

उद्धार ।

—करना कि स, व्यवल् विष्मन्-कन् (लु),

उद्धृ (भ्वा प अ) ।

तफरीह, स ली (अ) प्रसन्नता, मोद २

विनोद, परिहास ३ भ्रमणम् ।

तफसील स ली (अ) विवरण विस्तार

२ विस्तृतवर्णन ३ टीका, व्याख्या ४ सूची ।

तथ, कि वि (स तदा) तदानी, तस्मिन्

वाले २ तथ तत्त्वज्ञान, तदनु, तदन तर्क,

तत पर ३ अत, अनेन कारणेन इति हेतु ।

—तक कि वि, तावत्, तावत् पाल पदं तम् ।

—भी, वि वि, तदापि २ तथापि, तदपि, एव

सत्यपि ।

—से, कि वि, तत नदा, प्रवृत्ति आरम्भ ।

—ही, कि वि, तदैव, सत्काल, तच्छर्मा, द्राक् ।

तयदील वि (अ) परिवर्तित, अ यथावृत्त ।

—वरणा, कि स परिश्रुत (प्रे) ।

तयदीली, स स्त्री (अ) परिवर्तन, परिश्रुति (स्त्री), विषय २ विचार, विवृति (स्त्री) ।

तयलची ॥ पु (अ तयल) तयलकवादक ।

तयला, स पु (अ तयल + तयलकी (द्वि) वाधमे ।

तयाशी(री)र, म पु (स तयशीर) ययन ययनोद्भव, ययशीर, गोभूमज २ वयरोचना, तयशीरा री, वशी, वैषयी ।

तयाह, वि (पा) ध्वस्त, नष्ट उलसज ।

तयाही, स स्त्री (पा) प्रवि, ध्वरा, वि, नास

तवि(वी)धत स स्त्री (अ) चित्त मानस, चेतस मनस् (न) + तकरण, हृदय, स्वात २ प्रवृत्ति (स्त्री), स्वभाव ।

—आना, सु लिङ् (दि प से) अनुरज् (कर्म) ।

—विगडना, सु, रण (वि) भू विवमिपति (सन्नत) ।

तवीय, स पु (अ) वैध चिकित्सक, भिषज(पु) ।

तवेला, स पु (अ) मदुरा, अथ वाजि, शाला ।

तभी, कि वि (हि तय + ही) तल्लण तकाल, तदैव २ तेनैव कारणन, इति हेतो ।

—मे, कि वि, तदारभ्य तत प्रवृत्ति ।

तमचा, स पु (पा) दे 'पिलौक' ।

तम, स पु [स तमम (न)] अचकार, तिमिर, ध्वात, तमिल छा २ प्रकृतेरतृतीयो गुण (सारय) ३ क्रोध ४ अज्ञान, अविद्या ५ कालिन् (पु), इयामता ३ मोह ७ पाप ८ नरक कर्म ।

तमभ, स्त्री (भ) इच्छा २ लोभ ।

तमक, स स्त्री (हि तमकना) आवेश, उद्वेग २ क्षिप्रता, ध्वरा ३ क्रोध, बोध ४ दर्प, अभिमान ५ (कोपादिभ्य) अरणा ननता ।

तमकना, कि अ (अनु) (कोपादिभ्य) अरणानन लोहितवदन (वि) भू २ अत्यन्त कुप् (दि प से) ।

तमगा, स पु (तु) पदक, नीति प्रतिष्ठा मुद्रा ।

तमघर, पु (स तमीचर) राश्रस, निशा घर, पिशाच २ सल्लू, धूक, कौशिक ।

तमचुर, चूरचोर, सं पु (स तामचूह) कुट्ट कालश, चरणाश्रु ।

तमतमाना, कि अ (स तम्र >) (क्रोधान पादिभ्यो मुरा) अरणी रक्षी भू, अरणानन लोहितमुख (त्रि) जन् (दि आ से) ।

तमतमाहट ॥ स्त्री (हि तमतमाना) (क्रोधादिभ्यो) अरुणवदनता लोहिताननता ।

तमचा, स स्त्री (पा) अभिलाष, आकाङ्क्षा ।

तमस, स पु दे तम' ।

तमरसुक, स पु (अ) ऋणपण समदलेख, आधिक्यविकपत्रम् ।

तमा, स स्त्री (अ तमभ) लोभ वित्तदा ।

तमाकू-पू, स पु (पुर्न टवैको) ताम्रकूट, तमाशु वचभुगी, कुमित्री, ५ प्रपत्रिका क्षार पत्र, शूरती ।

—पीना, कि स, धूम पा (भ्वा प अ), धूमपान कृ ।

तमाचा, स पु (का) दे 'वपत' ।

तमाम, वि (अ) समरत, समग्र, सम्पूर्ण २ समाप्त, अवसित ।

काम तमाम करना, सु, व्यापकृ (प्रे) ।

तमाल, स पु (स) कालत्वन्य, काल-नील, शाल, महाबल ।

तमाशवीन, स पु (अ तमाश + का वीन) दर्शक, प्रेक्षक २ पार्श्व समीप, रथ ३ सामाजिक, पारिवर्ष ४ वेदवागामिन् ।

तमाशवीनी, स स्त्री (अ + का) वेद्या गामित्वम् ।

तमाशा, स पु (अ) नाटक २ रूपक कौतुक चमत्कार, इदम् ३ अदभुत विलक्षण, व्यापार ।

—करना, कि स, नट निरूप प्रयुज (चु), अभिनी (भ्वा प अ) ।

—करनेवाला, स पु, नट, अभिनेतृ (पु) ।

—शाह, स स्त्री, रथ, शाला भूमि (स्त्री), नाटकगृहम् ।

तमाशाई, दे 'तमाशवीन' ।

तमीज, स स्त्री (अ) विवेक, परिच्छेद, विवेचनशक्ति (स्त्री) २ ज्ञान, बोध ३ सभ्यता, शिष्टाचार, विनय ।

तमोगुण, स पु (स) प्रकृतेरतृतीय (अधम) गुण ।

तमोगुणी, वि (सं) गिन्) अथमवृत्तिक, तमो
गुणप्रधान ।

तमोली, स पु दे 'तम्बोली' ।

तय, वि (अ) मयाप्त, अवसित २ निश्चित,
नियत २ निर्गोत ।

तरग, स स्त्री (सं पु) मय, मयो गि (स्त्री)
बोची वि (स्त्री), कर्मो मि (स्त्री) रङ्गरो
रि (स्त्री) कण्ठो, जन्तुता, उत्पत्तिका
२ स्वराज्यहरी ३ मानसहरी, चित्तनरग,
छन्द, छन्दस (न) ।

तरगित, वि (सं) कतोन्मय [यो (स्त्री)],
नतोन्मय भगिम् [ली (स्त्री)] ।

तरगी, वि स — गिन्) समय, कर्मिम्,
बलोत्पत् २ स्वैर, स्वैरिन्, कामचारिन्,
स्वच्छन्द ।

तर, वि (फा) आर्द्र, छिन्न २ शीतल ३
हरित, तरस ४ तिम्र, चिह्न ५ ससृज,
धनाद्य ।

तरश्च, स पु (फा) श्रुति (पु), निषग,
तूनीर-रम् ।

तरकारी, स स्त्री (फा तर-शक) शक क,
शिमु (पु), हरिक २ पञ्चाङ्ग क, व्यजन
३ मांसम् (पञ्चाङ्ग) ।

तरकी, स स्त्री [स टाट(ठ)क] कर्ण, दर्पण
मुकुट, कर्णिका, कर्णभूषणभेद ।

तरकीव, सं स्त्री (अ) युक्ति (स्त्री),
उपाय, प्रयोग २ रचनाप्रणाली, निर्माण-
विधि (पु) ।

तरखी, स स्त्री (अ) उत्पत्ति वृद्धि (स्त्री) ।

तरखान, स पु (स तखन्) कईदिन किन्
तखान, स्वष्ट, छाद ।

तरापी, स स्त्री (अ) प्रेरणा, उत्तथना,
प्रोत्साहनम् ।

—देना, कि स, प्रेर प्रोत्साह उत्तिज प्रवृत्त (प्रे) ।

तरवाह, स्त्री (अ) अधिमान, अधिब, रुचि
(स्त्री) अनुराग मान, कृति (स्त्री) बरता ।

तरनुमा, स पु (अ) दे 'अनुवाद' ।

तरनुमान, स पु (अ) अनुवादक, भाषा-
नरवार ।

तरण, स पु (स न) पारगमन, प्लवनपूर्वक
देशांतरगमन, स तरणम् ।

तरणि, सं स्त्री (सं) तरणी, नौका । स पु,
सूयं २ क्षिरण ।

—सनुजा, सं स्त्री (सं) यमुना ।

तरणी, स स्त्री (सं) दे 'नाव' ।

तरतीय, स स्त्री (अ) अनु, कम, विपास,
व्यवस्था, यथास्थान स्थिति (स्त्री) ।

—वार, कि वि, यथाक्रम, क्रमशः, क्रमेण ।

तरदीद, स स्त्री (अ) प्रपारवान, खण्डन,
निरास, निराकरणम् ।

तरना, कि त (सं तरण) दे 'तैरना' (२),
मोक्ष मुक्तिनि श्रेयस अधिगम् ।

तरफ, स स्त्री (अ) दिश (स्त्री), दिशा,
आशा काष्ठा, ककुम् हरिद (स्त्री) २ पारर्ष
ईर्ष, पक्ष । कि वि, अभि, प्रति, अभिमुख,
उद्दिष्ट, दिशि, दिशावान् ।

—दार, स पु, पक्षपातिन्, पक्ष, पक्षीय,
पार्श्व (दिव) ष ।

—दारी, स स्त्री, पक्ष, पान अवलम्बन-ग्रहणम् ।

—दारी करना, कि स, पक्ष अवलम्ब (स्वा
आ से) ग्रह (क प से) ।

दोनों—कि वि, उभयतः, उभयतः ।

सब—या चारों—, कि, वि, समन्तात्,
समन्ततः, चतुर्दिश, सर्वतः, विश्वतः, परितः,
अधित ।

तरकैत, स ॥ (अ) उमी पक्षी, अधिप्रत्यक्षिनी ।

तरबूज, स पु (स तरबुज) मि झा तरबूज)
कार्त्तिक गोडुन, सेडु, (न), मांसफलम् ।

तरमीम, स स्त्री (अ) सशोषनं, विगुदि
(स्त्री) ।

तरल, वि (सं) चकन्, कम्प, कपन २
अनिरत्य, क्षणिक ३ द्रव, प्रवाहिन् ४ भावुर,
भास्वर ।

तरला, स स्त्री (सं) यवागू, भाणा, कणिका
२ दूरा ३ मधुमक्षिका ।

तरघन, स पु, दे, 'तरको' २ दे 'कर्णभूज' ।

तरवर, स पु (सं तरवार) महावृक्ष २
पादप ।

तरस, सं ॥ (सं तस >) कृपा, अनुकम्पा,
वक्ष्य ।

—दाना, कि स, दत् (स्वा आ से, पक्षी के
साथ), अनुकम्प (स्वा आ से), दवां क
(सप्तमी के साथ) ।

तरसना, कि अ (सं तर्पण) तृप् (दि प

से), अत्यन्त अभिलष (म्वा दि प से)
 स्पृह (नु , चतुर्थी के साथ)-काक्ष-वाङ् (दोनों
 म्वा प से), लब्ध आकुलीभू ।
 तरसना, कि स , व 'तरसना' के प्रेरक रूप ।
 तरसों, कि वि (स तृतीय + इवम्) तृतीयो
 गत आगामी वा दिवस , अंतराव (अन्य) ।
 तरह, ल खी (अ) नाति (खी), प्रकार ,
 भेद विधा (समासान् में) २ रचनाप्रकार ,
 घटन ३ रैली, रीति (खी) प्रणाली ४
 युक्ति (खी), उपाय ५ बत इव तुल्य, उपम ।
 अच्छी—, कि वि , सम्यक , साधु, सुदु (सव
 -य), सु (समासादि में) ।
 इम—, कि तव , इय एव, अनया रीत्या ।
 उस—, कि वि , तथा, तथा रीत्या ।
 किम—, कि वि , यथ, येन प्रकारेण ।
 जिस—, कि वि , यथा, येन प्रकारेण ।
 हुरी—, कि वि , कु, डुर, असम्यक् इ ।
 हर—, कि वि सर्वथा, सर्वप्रकारेण ।
 —देना, सु अपेक्ष क्षम् (म्वा आ से) ।
 तराई, स खी (स तल >) उपत्यका, पर्व
 तासन्नभू (खी) ।
 तराज, सं पु खी (फा) तुला, मापन,
 घट, तुलायंत्र, तौलन ।
 —की रस्मी, स खी, शिक्का ।
 तराबोर, वि (फा तर + हि बोरना) अति,
 सिद्ध विलक्षण ।
 तरावट, स खी (फा तर) आर्द्रता,
 क्लिन्नता २ शीतलता ३ क्लान्तिहर पदार्थ
 ४ सिन्धुभोजनम् ।
 तराशना, कि स (फा) दे 'काटना',
 'कतरना' ।
 तरी, स खी (स) तरि (खी), लौका ।
 तरी, स खी (फा) आर्द्रता, क्लिन्नता
 २ शीतलता ३ उपत्यका ४ कच्छ चटन ।
 तरीका, सं पु (अ) रीति (खी), प्रकार ,
 रैली २ आचार , व्यवहार , अनुसार
 ३ उपाय , युक्ति (खी) ।
 तर, स पु (स) पादप , द्रुम , दे 'वृक्ष' ।
 तरुण, वि तथा स पु (स) युवक , दे
 'जवान' ।
 तरगाई, स खी (स तरुण >) वीवनम्,
 दे 'बवानी'

तरणी, वि स्त्री तथा स खी (सं) युवति
 (खी) दे 'युवनी' ।
 तरेरना, कि स , (सं तिर्यक + हि हेरना)
 तिर्यक् वक्र साचि (सव अन्य) इश (म्वा
 प अ) २ तर्पणवर्तनार्थ वक्र ईश (म्वा
 आ से)
 तरौई, स खी, दे 'तुरइ' ।
 तरौना, स पु , दे 'तरकी' २ दे 'कर्णकूल'
 तर्क, स पु (त) हेतु (तु), युक्ति
 उपपत्ति (खी) २ आन्वयिकी, न्याय ,
 कहापोह ३ विदग्धोक्ति (खी) ४ -व्ययन् ।
 —विनर्क, सं पु (स) वादविवाद , वाद
 प्रतिवाद , हेतुवाद २ सशय , सदेह ,
 विकल्प , आपरि वि शका ।
 —विद्या, स खी (स) तर्क-न्याय, शास्त्र
 विद्या तर्क , न्याय ।
 तर्क, स पु (अ) त्याग , विसर्जनम् ।
 तर्कश, स पु , दे 'तरकश' ।
 तर्ज, सं खी (अ) रीति (खी), शैली,
 प्रकार २ रचनाप्रकार , घटनम् ।
 तर्जन, स पु (स न) तर्जना, भयप्रदर्शन,
 अत्मनम् , दे 'डॉन्डपट' ।
 तर्चना, कि स (स तर्जन) दे 'डॉन्गा' ।
 तर्जनी, स खी (सं) प्रदेशिनी, अग्र
 समीपांगुली ।
 तर्पण, सं पु (स न) वृत्ति (खी),
 प्रीणन, सन्नापण २ पित्रादिभ्यो जलदान
 (धर्म) ।
 तल, सं पु (सं तु न) मूल, अधोभाग ,
 २ बुध्न , उपहम्म ३ पाद-चरण, तर्ज
 ४ करतल ल, प्रहस्त ५ चपेट , चपेट
 नरक पागल, विशेष ।
 तलक, अन्य , दे 'तक' ।
 तलछ, वि (फा) कटु कटुक २ अप्रिय,
 अनिष्ट ।
 तलछट, स खी (सं तल + हि छटना)
 तलमल, भिन्न, बिट्ट, खल, मल ल, शेष प,
 छिछट, अवस, कर, असर ।
 तलना, कि स (सं तलन), (घृत्नैनादिषु)
 भ्रस्ज् (तु व अ भ्रजति, नु भजयति)-
 पच (म्वा प अ)-मृन् (म्वा आ से ,
 मज्जते), तल् (म्वा, प से , पाकराजेश्वर) ।

सं पु, (घृतादिपु) गर्जन पचनम् ।
 तला हुआ वि, अष्ट, भजिन, घृतपत्र इ ।
 तलफना, कि अ, दे 'तलपना' ।
 तलफी, स स्त्री (फा) कस, विनाश २
 क्षति हानि (स्त्री) ।
 तलफफुज, स ॥ (अ) उच्चारणम्, भाषण
 विधि (पु) ।
 तलघ, स स्त्री (अ) बेतन, मृति (स्त्री)
 २ अकारण, आदान इ लिप्ता ।
 तलघवार, वि (वा) इच्छुक २ प्रार्थित ।
 तलबाना, स पु (फा) आकारण आधान,
 शुल्क ४ २ सादयशुल्क कम् ।
 तलबी, स स्त्री (अ) आकारण ना, आह्वानम् ।
 तलघा, स पु (पु तल ह) चरण पाद, तलम् ।
 —चाटना,
 —तले हाथ रखना, सु, दे 'खुशामद करना'
 —सहलाना,
 —तलचार, स स्त्री [स तरवारि (पुं)]
 खट्ग अस्ति निस्त्रिश, अद्वाप्त, कौशेयक,
 कुरावा(पा)ल, रूपण भी, ऋ(रि)ष्टि (पु),
 श्रीमन्, विनय, दुरामद, भर्मपाळ ।
 —खींचना, कि स, अस्ति कोशात् उद्धृत
 निष्कृ (स्वा प अ) ।
 —चलाना, कि स, खरम चल (जे),
 अस्तिमा प्रह (स्वा प अ) ।
 —चलनेवाला, स पु, आसिक, खट्गपर,
 खट्गिन् ।
 तला, ॥ पु (स तल ल) अधोभाग, कुचन
 २ उपानचलम् ।
 तलाक, स पु (अ) विवाह दापरय उच्छेद -
 निराकरण, श्याम ।
 तलाश, स स्त्री (तु) अवेक्षण, मार्गणम् ।
 तलासी, स स्त्री (फा) देह गेह परिच्छेद,
 अन्वेष्टना निरीक्षा ।
 —लेना, कि स, देह गेह परिच्छेद अन्विष्ट
 (दि प से) निरूप (तु) निरीक्ष (स्वा
 आ से) ।
 तली, स स्त्री, दे 'तल' तथा 'तला' ।
 तलुआ, स पु, दे 'तलवा' ।
 तले, कि वि (स तल >) अथ, अवस्तात्,
 नीचे (सव अन्य) ।
 —ऊपर या ऊपर तले, कि वि, अन्योऽवस्

अथ, अवस्तात्, उपरि, उपरिष्ठात् वा
 २ अक्रम, विपर्ययन, सकीर्ण, अव्यवस्थितम् ।
 तलैया, स स्त्री (हि ताल) छुद्र लघु, तडाम
 कासार मरम (न),
 तल्ल, स पु (म पु न) आस्तर, आस्त
 रणम् अवस्तर २ पत्नी, भार्या ।
 —कीट, ॥ पु (स) ओक्कण, मत्तुण,
 लक्ष्य ।
 —ज, स पु (स) नियोगन पुत्र सुत,
 क्षेत्रज ।
 तल्ला, स पु (स तल लम्) उपानचलम् ।
 २ दे 'मणिल' ।
 तलर्ग, स पु (स) तकारादिदर्शनचक्रम् ।
 तला, स पु (हि तलना) तलकम् ।
 तलाजा, स स्त्री (अ) सल, कार-कुनि
 (स्त्री) किया, अतिथि, सेवा सत्कार, आतिथ्य
 २ निमन्त्रणम् ।
 तलारीख, स स्त्री (अ, तारीख का बहु) दे,
 'इतिहास' ।
 तली, स स्त्री (हि तला) लची(जी)बन् ।
 तलाझीस, स स्त्री (अ) रोग, निर्णय निदानम् ।
 तलारीफ, स स्त्री (अ) महत्त्व, गुरुत्व, प्रतिष्ठा ।
 —रजिना, सु उपविष्ट (तु प अ), विरान्
 (स्वा आ से)
 —लाना, सु, आगम्, आया (अ प अ) ।
 —ले जाना, सु, प्रस्था (स्वा. आ अ), प्रया
 (एक दोनो सुहावरों में आदरार्थ बहुवचन का
 प्रयोग करना चाहिए । त आप तलरीक
 रसिफ = उपविष्ट तु श्रीमत इ) ।
 तलतरी, स स्त्री (फा) शराविहा, अस्वाल्कम् ।
 तसकीन, स स्त्री (अ) आसमा, आस
 आसन, धैर्यम् ।
 तसदीक, स स्त्री (अ) सत्वापन्न, सत्याकार ।
 —करना, कि स, सत्यापयति (ना था),
 प्रमाणी कृ ।
 तसवीह, स स्त्री (अ) जपमाला, माला ।
 तसमा, स पु (फा) चर्म, पट्ट ५५, वस्त्री,
 जप्ती २ उपानद्वय ।
 तमला, स पु (फा तदन) लचीबन् ।
 तसलीम, स स्त्री (अ) नमस्ते, नमस्कार,
 प्राम्ण २ अम्युपगम, अमी स्वीकार ।

तसल्ली, स स्त्री (अ) मावना, आधामन
२ शानि (स्त्री), धैयम् ।

तसवीर, स स्त्री (अ) चित्र आन्तरयम् ।

तस्कर, स पु (स) चौर २ चोरु ।

तस्मू, स पु (स विभक्त >) पञ्चाङ्गुलानम् ।

तह, म स्त्री (का) तल, अपस्तम् अधीन -
मूल २ गुह्य, उपग्रह ३ तल पृष्ठ पृष्ठभाग
४ स्तर ५ व्यावृत्ति (स्त्री) व्यापन
पु ६ भय ६ तस्व, सार ।

—करना, कि स, पुटयति (मा ध
व्याहृ (प्रे) पुगी पुगी क ।

—सक पहुँचना, मु, तच्च अवगम् रहस्य
विद (अ प से) ।

तहजीवात, स स्त्री (अ तहजीव का वतु)
अनुसधान, अन्वेषण, गवेषण ।

तहज्जाना, म पु (फा) भूमिगृह नल्लुह
उत्ति (स्त्री), आपमामोष्ठ ।

तहजीब, म स्त्री (अ) सम्यगा, सिद्धान्त ।

तहमन, म स्त्री (का तहवद) ॥ पुत्रवध,
॥ धौनिका ।

तहरीर, स स्त्री (अ) लेख, लिपि
२ लेखनी ३ निद्र, बंध ४ प्रमाणपत्रम् ।

तहलका, म पु (अ) दे 'साल्व' ।

तहस-तहस, वि (दिश) वि, नष्ट प्रवि, घुसल ।

तहसील, स स्त्री (अ) बराधरा, राज
स्वसग्रह, समाहरण २ रानम्, अय
आगम, उदय ३ उपमन्त्र ४ उपमन्त्रे
श्रकापाल्य ।

—हार, स पु, उपमन्त्रेष्टार ।

—हारी, स स्त्री उपमन्त्रेश्वर, रावैपदम् ।

नायक तहमीलहार, स पु (फा + अ + ह))
उपमन्त्रेश्वरमहायुक्त ।

तहाँ, कि वि (स त् >) तत्र तस्मिन्
स्थाने, तत्स्थाने ।

तौगा, म पु, दे 'थागा' ।

ताटव, म पु (म न) पुरुषनृत्य २ उडन
नृत्य ३ शिवनृत्य ४ नृपभेद ।

ताँत, म स्त्री (म नतु) आप-मृदयुग
२ मौवा प्रत्यम्भा, पनुयुग ३ मृद, पुग
४ वीणावली ।

ताँता, म पु [म नति (स्त्री)] एति
(स्त्री), धेनीति (स्त्री) ।

ताँती, म स्त्री (हि ताता) भावलीलि (स्त्री)
५ कि (स्त्री) २ मन्त्रि (स्त्री) ।

ताँती, स पु (हि तात) तनुवाय प,
पम्भार ।

तात्रिक म पु (म) नयशास्त्रविद् (पु),
२ मोहिन् कुक्कय । वि तत्रमबधिन् ।

ताँवा, स पु (म तात्र) तत्रक म्भेच्छमुख,
रवि-मोहप्रिय मुनिपित्तल लाहिनायमम् ।

तावूल, म पु (म न) पर्वा नावल्लीदल,
दे गान २ पणवानी निहाति (स्त्री) ३
पूग पूगपन् ।

ताई, म स्त्री (हि तावा) ज्येष्ठपितृव्या ।

ताई, स स्त्री दे तवी ।

ताईद स स्त्री (अ) समथन अनुमोदर्व,
पुष्टि (स्त्री) द्वा-करण-वार उपोद्भूतम् ।

ताऊ, स पु दे तया ।

बटिया के ताऊ, मु बलवद २ मूल ।

ताऊन, स पु (अ) दे प्ले ।

साऊम, म पु (अ) मयूर शिखन् २
मयूराकारो वायभेद ।

तरन ताऊम म पु मयूरामन २ शाहजहा
नम्ब मयूरमिहमनम् ।

ताऊ, म पु (अ) कुन्वविवर भित्तिगत
त आल्य २ कुन्व, फलक ३ अमम

विषम, गस्या-भक्त । वि अनुपम, अद्वितीय,
निपुण ।

—उपुत, म पु (आ + का) ममविषमकाठा,
वृन्भेद ।

—पर रखना, मु, परित्यज (म्भा प अ)
उन्ध (तु प मे) ।

ताऊ, म स्त्री (हि तावगा) अवलोचना,
म्भा दशनम् २ अनिमिपट्टि (स्त्री)

३ अवसरग्रन्थि ४ अन्वेषणम् ।

—चोऊ, म स्त्री, अमन्त्रवलाज २ निभृत
वीणा ३ निरापण ४ अन्वेषणम् ।

ताऊन, म स्त्री (अ) बल शक्ति, (स्त्री) ।

—वर, वि (अ + फा) बलवद, शक्तिम् ।

ताऊना, कि म (म त् >) अनिमि(मि)
पट्ट (म्भा प अ) अवलोका (तु) २

निभृत (चिद्रेण) उभ (म्भा आ मे) ३
अवनिर, म् ४ हतु निभृत स्था (म्भा-
प अ) ।

ताकि, अभ्य (का) तथा यथा, यथा ।
 ताकीद, सं स्त्री (अ) प्रवृत्त्युत्प्रेष, दृढा
 देश, पुन रमारणम् ।
 —करना, कि म, मानुरोष आदिश (तु प
 अ) पुन दृढ मृ (प्रे) ।
 ताग ता, म पु (अ ताव >) ततु (पु),
 बोर, शुण, शुल्मम् ।
 तागदी, म स्त्री, दे 'वरपत्नी' ।
 ताज, म पु (अ) राज म (मु) रुट,
 किराज् ।
 —योही, म स्त्री (अ + प्रा) राज्याभिषेक,
 मुकुटपरिधानम् ।
 ताजरी, म स्त्री (का) हरितत्व ० प्रउन्नता
 ३ नवीनता ।
 ताजा, वि (का) हरित, सरस, ० नव,
 नूनन, प्रत्यय ३ आनिश्रुत्य, मज्ज ।
 मोता—, वि, दृढात, बलिष्ठ, मल्ल ।
 ताजियाना, म पु (का) अश्वगन्नी, कशा
 पा, प्रपाद ।
 ताजी, स पु (का) ० अरवाध २ युगदा
 कुक्कुर, विषकट (पु) । वि, अरवेद्योय ।
 ताजीम, म स्त्री (अ) मत्तार ममानता ।
 ताजीर, स स्त्री (अ) दट, अर्धदट, निग्रह ।
 ताजीराते हिद्, स स्त्री, भारतीयदण्डमहिता ।
 ताजुय, म पु, (अ तमनुव) आश्वय
 विम्ब ।
 ताङ, म पु (म ताण) दीनन्त्य, ध्वज
 द्रुम, तरुण, महात्रय, लवचरी २
 ताटन, प्रहार ३ मह, रव ध्वनि (पु) ।
 ताङ्का, म स्त्री (म) राष्ट्रमीविगय, मुके
 तुक्या ।
 ताङन, म पु (म न) प्रहरण, आहनन,
 आणन, प्रहार ० तान ३ दण, शायन
 ४ गुणम् ।
 ताङ्ना, कि म (म ताटन) तट् (चु),
 अमिहृ (अ प अ), आदन् (अ ड अ),
 तुट् (तु उ अ), अट्ट (भ्वा प अ),
 २ दट (चु), गाम (अ प मे) ३ नन्
 निमन् (चु आ मे) । म स्त्री, ६
 'ताटन' (२३) ।
 ताङ्ने योग्य, वि, ताङ्नीय, अटन्त्य, दण,
 भवेनीय ३ ।

ताटनेवाला, म स्त्री, ताटक, दन्तिनृतनक ।
 ताटा हुआ, वि, ताटित, अमिहृ, दन्ति, नन्ति ।
 ताङ्ना, कि म (म तवण) तट् (चु),
 अनुमा (चु आ अ), कट् (भ्वा आ मे) ।
 ताङ्नी, म स्त्री (स ताणी) ताङ्नी, ताट,
 रस भ्रामक मय, तारिका ।
 तात, म पु (म) शिन् (पु), नन ०
 पूज्य, शुक् (पु) ३ (पल पार्श्व के नि
 मवोरन में) क्षम, प्रिय, अम ।
 तातार, म पु (ता) दे 'तुरान' ।
 तातील, सं स्त्री (अ) अश्वाश, अन पाय
 विश्राम, दिवस ।
 तात्कालिक, वि (म) तत्कालम् ० सम
 कालीन, यौगपदिन ।
 तात्त्रिक, वि (म) बाल्मविक, यथाथ,
 परमार्थ ।
 तापर्य, म पु (म न) अथ, आशय
 अभिप्राय, भाव ० तत्परता तत्परायणता ।
 ताडाम्ब, म पु (म न) अमेद, अभिन्नता,
 मायुस्वय, तद्रूपता ।
 तादाद, म स्त्री (अ तमदाद) मन्दा, गणना ।
 तादृश, वि (म) तादृश, नद, मट्टा-तु
 ममान, तथाविध ।
 तान, स स्त्री (म) गानागविशय, आलाप,
 हयविस्तार ० विस्तृति-सति (स्त्री),
 विस्तार ।
 —पूरा, म पु (म सुवरी) गानपूर, वीणाम् ।
 तानना, कि म (म तनने) प्रविन्त (न
 उ म), आवय (भ्वा प अ) दार्ता ट
 विम्बु विम्बु (प्रे) लब्ध प्रम् (प्रे) ।
 तानवर, मु कन्त, पूणात्तरा ।
 तानवर माना, मु, निश्चित स्वर (म प म) ।
 ताना, म पु (हि तानना) तानवम्, गन्ना
 नाहनन (पु वटु) ।
 —ताना, अन्वानाहनियकर्तव्य (पु वटु),
 तानवीर (३ डि) ।
 ताना, म पु (अ) व्यंग्य-वक्त्र-देह-भङ्गि,
 वचन-वाक्य-रति (स्त्री), वक्ताभाव ।
 ताना, कि म (म तानने) दे 'ताना' ।
 —मारना, कि म, मय-व्ययन आश्रय
 (तु प अ), वक्ता-वक्ताश्रय उप-यम
 (दि प म)-व्याह (भ्वा प अ) ।

तानाशाह, स ॥ (हि + का) एक अधिपति
शामक, अधिनायक ।

तानाशाही, म स्त्री अधिनायकत्वं देखाभि
पत्यम् ।

ताप, सं पु (ता) उ(ऊ)भन् (पु) उष्णता,
उष्म, उदपरिमं, तप, दाह २ ज्वर ३
दुःख, कष्ट ४ वेदना, मानसकलेश ।

—तिल्ली, सं स्त्री, प्लीहाभिवृद्धि (स्त्री)
प्लीहोदरम् ।

तापना, कि अ (मं तापनं) पावकसूर्यागतं
आनिसेव (भ्वा आ से) । कि म दे
'तपाना' ।

तापमान, सं पु (सं न) कल्पमानम् ।

—घत्र, स पु (सं न) १-२ तापञ्जर
मापकम् ।

तापस, सं पु (सं) दे तपस्वी ।

ताव, सं स्त्री (पा । मि सं ताप) कम्प,
उष्णता २ दीप्ति (स्त्री), आभा ३ मामर्ध्य,
माहमम् ।

तावत्तोड़, कि वि (अनु) अनवरतं,
अविश्रान्त, सततं, अजबच्छिन्नम् ।

तावून, सं पु (अ) शब्द चेटक सपुट ।

ताव्रे, वि (अ) अधीन, वशवर्तिनः ।

तावैदार, वि (अ + का) आह्ला, पालक
कारिन् ।

ताम्रज्ञान, सं पु (हि ताम्रज्ञान + मं ज्ञान)
शिविकाभेद ।

ताम्ररस, सं पु (सं न) रक्तोपलं, कौकनद,
२ सुवर्ण ३ ताम्रम् ।

ताम्रस, वि (सं) तमोगुणिन्, तमोगुणवृत्त
० काल, कृष्ण ३ अश्व ४ दुष्ट । स पु, सर्प
२ उलूक ३ क्रोध ४ अंधकार ।

ताम्रमृक्, वि दे 'ताम्रम्' वि ।

तामिल, सं स्त्री (देश) द्रविडभाषाभेद
२ भाषाविशेष ।

तामिस, सं पु (सं) नरकविशेष ० कृष्ण
पद्म ३ क्रोध ४ द्वेष ।

तामील, सं स्त्री (अ) अष्टापालनं ० निष्प
त्ति मिद्धि (स्त्री) ।

ताम्र, सं पु (सं न) ताम्रक, मुनिपितृकम् ।

—कार, सं पु (सं) ताम्र-कुट्ट उपनाविनः ।

—चूड, सं पु (सं) कुक्कुट ।

—पत्र, स पु (सं न) ताम्रपट्ट-द्व २
ताम्रपत्रक कम् ।

ताया, सं पु (सं तत >) ज्येष्ठ तत, ज्येष्ठ
पितृव्य पितुरग्रज ।

तार, सं पु (सं न) रूप्य, रजतं ० तार,
धातु, तनु- (पु) मूत्र ३ तडित्वविद्युत्,
संदिश-वार्त्ता ४ मूर्ध, गुण, तनु (पु)
१ सततकम् परम्परा ६ नक्षत्रं, तारा, घट
७ सप्तऋभेद (संगीत) । वि, उच्च, महत्
(ध्वनि आदि) २ भातुर ३ निर्मल, स्वच्छ ।

—देना, कि स विद्युत्प्रदेश श्रेष (प्रे)-प्रहि
(स्वा प अ) ।

—कश, सं पु (हि + का) तारकर्ष पंक ।

—घर, स पु, तारगृहम् ।

—तार, वि जीर्ण, विदीर्ण ।

—बर्की, म स्त्री, तारि विद्युत्-तार ।

—तार करना, मु, (वस्त्रादिक) तानुश विद्ध
(प्रे)-घट (चु) ।

—टूटना, मु, कम् परम्परा भ्रष्ट (दि प से) ।

—बांधना, मु, निरन्तर विधा (जु उ अ)-कृ ।
तारक, स पु (सं) तार रत्ना, म, नक्षत्र
२ नेत्रं ३ कनीनिका, नयनतारा ४ मोचक,
मुक्तिद ५ कणधार ।

तारका, सं स्त्री (सं) नक्षत्र, उज्जु २ कनी
निका, विविनी ३ बालिपानी ।

तारकेश्वर, सं पु (सं) शिष, महेश ।

तारकोल, सं पु (ता कोलदा दे)

तारण, म पु (सं न) पारनयन, उत्तारणं,
मत्तारण ० मोचनं, उद्धारण, निस्तारणम् । स
पु, तारक उद्धारक, भवभयमोचक २ विष्णु ।
तारतम्य, स पु (सं न) म्यूनाधिक्या,
उत्तरापर्यायी २ अन्तर, भेद ।

तारना, कि ॥ (हि तरना) पार नी (भ्वा,
प अ), उत्तम, तू (प्रे) उत्त, लप (प्रे)
० मोच (चु), निरतू (प्रे), उद्द ह-द्व
(भ्वा प अ) (पारिभ्य, भवभयान्)
मुच (प्रे) ।

तारनेवाला, म पु, मोक्षक, मोचक, निम्ना
रक, उद्धारक, मुक्तिद ।

तारपीन, सं पु (अं टरपैटाइन) सरल
चीरपर्ण, तीक्ष्णरस, द्रव रस न्यन्द, शीतल,
श्री, वास वैष्ट ।

तारल्य, सं पु (सं न) तरल्य, तरलता, द्रवत्व, प्रवाहिता २ कामुकता, लपटना, कामान्धता ।

तारा, स पु (सं स्त्री) तार २, तारका उडु (पुं) नक्षत्र, क्रक्ष भ, ज्योतिस (न) २ कनीनिका विविनी ३ भाग्य, नियति (स्त्री) । स स्त्री, वलिपत्नी २ बृहस्पति भार्या ।

—टटना, कि भ, नक्षत्रज्ज्वा पद् (स्वा प से) ।

—अधिप, म पु (सं) चट २ बालि (पु) ।

—मंडल, म पु (सं न) उडु म नक्षत्र, गण ।

—होना, सु नभ जुव (स्वा प से), गगन वृक्ष (हु प अ) ।

तारीक, वि (का) काल, कृष्ण २ मर्ममि, निष्प्रभ ।

तारीकी, स स्त्री (पृ) कृष्णा २ अधकार, तिमिरम् ।

तारीख, स स्त्री (का) तिथि (पुं स्त्री), दिवस २ नियततिथि ।

तारीफ, सं स्त्री (अ) लक्षण परिभाषा २ स्तुति नुति (स्त्री) ३ वचन ४ गुण, विमिष्टता ।

तारुण्य, स पु (सं न) बौवन, बौमारम् ।

तारुश, स पु (सं) विधु, शुभाशु, चद्र ।

तार्किक, म पु (सं) तन्त्रशास्त्रविद् (पु) २ तत्त्वज्ञ, दार्शनिक ।

तारुण्य, स पु (सं) गरुड, वैतनय, विष्णु रथ २ अरुण ३ अथ ४ सप्त ५ पद्म ।

ताल, सं पु (सं तल्ल) दे तालाव । २ करण ३, प्रहस्त ३ ताली, करनलध्वनि (पु), करताल लक ४ तालीन बालकिया, मार्ग ५ मङ्गलुके वरतल्ल बाहुव्ययोगात्फा लन ६ दे 'ताली' ।

ताल, सं प (सं) गुगुरान, मधुरम आमवटु (पु) ।

—से वेताल होना, सु, तिताल (वि) भू । तालमायाना, सं पु (हि ताल + मायन) कोटिमाय, रात्रेशु वाटेशु, इशुर ।

तालव्य, वि (सं) काकुदनाल, मर्दधिव ।

—वर्ण, सं पु (सं) तालव्यवर्णा । (इ इ चवर्ग, म, श) ।

ताला, स पु (सं ताल) ताल, तालार यंत्रम् ।

—लगाना, कि स, तालकेन निरुध (क उ अ) पिधा (जु उ अ)-वध (वृ प अ) ।

तालाव, सं पु (हि ताल + का आव) तटा (टा) ग न, कासार रं, सरस (न), पुष्करिणी ।

तालिका, स स्त्री (सं) दे 'ताली' २ ताली चि (स्त्री), अनुक्रमणी गिरा, नामावली लि (स्त्री) ।

तालिख, स पु (अ) अम्बेपद्, अनुसंधान (पु) २ इच्छुक, अभिलाषिन् ।

—इलम, स पु (अ) विद्याधिव, पात्र ।

ताली, स स्त्री (सं) तालिका, कुनिका, रुबिरा, अकुट, उद्घातनी, माधारणी ।

ताली, स स्त्री (सं तालिका) करताल लकं, करतल, शुद्ध ध्वनि (पु) ।

—ब्रजाना, कि स, करताल वर (प्रे)-रा, करनलध्वनि वर (प्रे) ।

तालीम, स स्त्री (अ) शिक्षा विद्या ।

तालाशपद्, म पु (सं न) तालीश नील, धानीपद्म् ।

तालु, म पु [म ताल (न)] बाहुद, ताडुकम् ।

—मूल, सं पु (सं ताडुमूलम्) काकुदमूलम् २ गल्लमन्थ ।

ताल्लुक, स पु (अ तमल्लुक) सम्बन्ध, संसर्ग ।

तान, म पु (सं तप) दाह, उ (क) म ध्वन (पु), उष्ण ३ २ अ तर्जंग, आवश ३ त्वरा ४ व्यावर्तन मोहन, आवृत्तनम् ।

ताना, म पु (का) दण्ड, अरान, दण्ड, निष्कृति (स्त्री), निम्नार ।

—देना, कि म, नि कृति दा, निगू (प्रे) ।

तावीज, सं प (अ तमवाज) थर, ववन, हार २ वनस्पत ।

ताश, म पु (अ ताम्) जीवाप धाणि (न बहु), जीवापवाली २ पद्, जीवापवा ३ दे 'तरवल' ।

तामीर, म स्त्री (अ) गुण, प्रभाव ।

तात्सुव, स पु (अ तअत्सुव) धामिक
 नार्ताय, पशुपात, २ पशुपात ३ मनान्धता ।
 ताहम, अव्य (फा) दे 'तथापि' ।
 तिको, म पु (त्रिकोण) त्रिभुज, 'यक्ष्म' ।
 तिकोना निया, वि (हि निनीन) त्रिकोण,
 'यम्, त्रिकोण त्रिभुज, आधार ।
 तिफ, म पु (म) रमभेद । वि, तिच
 रमस्वा, ताश्च, तीक्ष्ण ।
 तिल्लेद, म स्त्री (हि नीन + ह्लृ) दे 'तिरोन' ।
 —नाप, म स्त्री त्रिकोणमिति (स्त्री) ।
 तिख्वा वि, द 'तिकोना ।
 तिगुना, वि (म त्रिगुण) त्रिगुणित त्रिरावृत्त
 त्रिगुणीकृत ।
 —करना, वि स, त्रिगुणीकृत, वि आहू(प्रे) ।
 तिजारत, म स्त्री (अ) वाणिज्य, व्यववि
 मयी (दि) ।
 तिचारी, म स्त्री (म वि + ज्वर) वृत्तवक
 ज्वर ।
 तितरवितर, वि (हि तिचर + अनु) ।
 आ प्रवि, गौण विक्षिप्त २ अव्यवस्थित,
 अनन्य, अरनव्यतर ।
 नितली, म स्त्री (हि तीतर अथवा म तिल)
 विरपग, *विचिरी ।
 तितित्ता, म स्त्री (म) महिष्णुता, महन
 २ क्षमा, क्षान्ति (स्त्री) ।
 नित्तित्तु, वि (म) सहनशान, महिष्णु
 २ क्षान, क्षमाशील ।
 तिथि, स स्त्री (स पु खा) मिति (स्त्री),
 माम रक्ष, दिन दिवस, चाद्रदिवस ।
 तिनकना, कि अ, दे 'निचिडाना' ।
 तिनका, स पु (सं तुण), नाल-रु, धन,
 पलाल-रु, त्रिण, रंग, रंगट, हरित, ताडव,
 अनुनेन ।
 —दातो में दयाना या लेना, मु, दे 'गिड
 गिणता' ।
 तिनके का महारा, मु, इत माहाय्यम् ।
 तिनक को पहाड समझना, मु, निळे ताल
 पश्यति ।
 तिपाई, म स्त्री (म विपादिका) त्रिपदिका,
 त्रिपदम् ।
 तिरारा, कि वि (स त्रिचार) त्रि (अव्य) ।
 तिच्य, स्त्री (थ) अत्रि, माविद्यानम्, २ यवन
 विस्तिमाश्रयम् ।

तिच्यत, स पु (म त्रिवि (पि) द्य >) ।
 त्रिविष्टपम् ।
 तिच्यनी, वि त्रैविष्टप, त्रिविष्टप, सम्बन्धि
 विषयक । स पु, त्रिविष्टपीय, त्रिविष्टप,
 वाछिन्-नास्तव्य । म स्त्री त्रिविष्टपभाषा,
 *त्रिविष्टपी ।
 तिमजिल्ला, वि (स त्रि + अ मजिल) ।
 त्रिभूमिक ।
 तिमिर, स पु (म न) अधकार, तमम् (न) ।
 तिरछा, वि (म त्रिच्यन्) अतसपिन्, प्रवण,
 निरक्षीन, वक्र, कुण्डिल, २ बेधामिमानिन् ।
 —देखना, वि अ त्रिच्यन्-वक्र वीक्ष
 (म्वा आ से) ।
 तिरछी चितवन या नज़र, मु, त्रियग-वक्र,
 दृष्टि (स्त्री) २ कटाक्ष-अपाग-नयनोपगत,
 वीक्षण-वीक्षित, कटाक्ष, भविलाम ।
 तिरछापन, म पु (कि तिरछा) प्रवणता,
 त्रिच्यनीता, वक्रता, कुण्डिलता ।
 तिरछे कि वि (हि तिरछा) तिर, माचि,
 त्रिध (सब अव्य) ।
 तिरपन, वि [स त्रिच्यन्शब्द (नित्य स्त्री)] ।
 म पु, उक्ता मर्यादा, तदकी (२३) च ।
 तिरपाई, म स्त्री (स त्रिपादिका) त्रिपदिका,
 त्रिपदम् ।
 तिरपाल, म पु (अ त्रिपादिक) त्रिपदिकपद ।
 तिरसठ, वि [स त्रिपष्टि (नित्य स्त्री)] ।
 स पु, उक्ता मर्यादा, तदकी (२३) च ।
 तिरस्कार, स पु (रु) अनादर, अपमान,
 निहुति (स्त्री), न्यक्कार, अवश, अवना
 नना, तिरस्त्रिया, मानभग २ भर्त्सना, तर्जन
 ३ मापमान त्याग ।
 तिरस्त्र्य, वि (स) न्यक्कृत, अनहुत, अप
 अय, अय-मानिन, अवशान इ २ मापमान
 त्यक्त ३ आन्तरित ।
 तिरहुत, स पु (म तीरभुक्ति >) मिथिला
 प्रदेश ।
 तिरहुतिया, वि (हि तिरहुत) मैथिल,
 मिथिला सम्बन्धिन् । स पु, मैथिल, मिथिला
 वामिन । स स्त्री, मिथिलाभाषा, मैथिली ।
 तिरानवे, वि [स त्रिणवति (नित्य स्त्री)] ।
 त्रयोणवति । स पु, उक्ता मर्यादा, तदकी
 (२३) च ।

तिरासी, वि [स त्र्यसीति (नित्य स्त्री)] ।

स पु, उक्ता सख्या, तदन्तौ (८३) च ।

तिराहा, म पु (सं त्रि + फा राह) त्रिपथम् ।

तिरिथा, स स्त्री (म स्त्री) नारी, रामा ।

—चरित्तर, स पु (स स्त्रीचरित्र) रामार
हस्य, वामावेदग्य, नारीचरितम् ।

तिरोधान, स पु (स न) अदर्शन, अतर्पान,
गोपन, गूहन, मवरणम् ।

तिरोभाव, स पु (स) दे 'तिरोधान' ।

तिरोभूत, वि (म) अदृष्ट, अतर्हित, गुप्त ।

तिरोहित, वि (म) गूढ, निहीन, आप्छादित,
सङ्गत, निभूत, गुप्त ।

तिर्यङ्गी, स स्त्री (स) तिरङ्गी, पञ्च-यन्त्र,
योपा अग्न-वधू (स्त्री) ।

तिर्यङ्ग, अन्त (स) वक्र, कुण्डल, तिरस्,
जिह्व, असरलम् (सद अन्य) ।

तिलंगाना, स पु (म तैलग) प्रदेशविशेष ।

तिलगी, वि (म तिलंगाना) तैलग
देशीय ।

तिल, स पु (स) पवित्र पितृपूजन,
पूत होम, धान्य, पापघ्न, स्नेहफल । २ ति
लक, कालक, जड़ (डु), ल, पिण्ड (पु) ।
३ क्षण ण, पल ४ तारा रक, कनौजिका ।

—का तेल, स पु, तिल, तैल रस स्नेह ।

—किट्ट, स पु (स न) तिल, खली चूर्णम् ।

—कुट्ट, स स्त्री, तिलकुट्टम् ।

—चट्टा, स पु, रक्तवर्णकीटभेद ।

—भुग्गा, स पु, तिलमुक्तम् ।

—पपड़ी शकरी, स स्त्री, तिलपट्टी, तिल
शकरी । तिल की ओट पहाड़, ■, * विन्दी
सिन्धु, * तिले गिरि ।

तिल वा ताड़ करना, मु, तिले साल पदार्थ ।

तिल तिल, मु, अल्पाल्प, निर्निर्विचित्र ।

तिल भरने की जगहन होना, मु, रथानाभाव ।

तिलभर, मु, रंजित, निर्निर्विचित्र ।

तिलक, म पु (म पुं न) दे 'टीका'
(१ २ ६ ८ ९ ११) ।

—लगाना, क्रि स, दे 'टीका' लगाना ।

तिलवा, म पु (सं त्रि + हि लङ्) त्रिपुत्रो
निलङ्गी, म स्त्री (सं त्रि + हि लङ्) हार ।

तिलवा, म पु (सं त्रि + हि लङ्) * तिलमोदक ।

तिलहन, (हि तेल + धान्य) म पु तेल
स्नेह, तीन बीज रोहि ।

तिला, स पु (का । मि स तेल) मर्दनीय
= क्लियलेप ।

तिलक, म पु, दे 'तलक' ।

तिलि (ल) स्म, स पु (यू टेलिमा) दे
'१ द्रताल' ।

तिल्ली, म स्त्री (स तिलक) प्लीहन (पु),
प्लीहा, गुल्म २ दे 'तिल' १ ।

ताप—, स स्त्री, दे 'ताप' के नीचे ।

तिवारी, स पु (स त्रिपाठी), दे 'त्रिवेदी' ।

तिस, सर्व, दे, 'उस' ।

तिहत्तर, वि [स त्रिमस्रति (नित्य स्त्री)] ।

स पु, उक्ता सख्या, तदन्तौ (७१) च ।

तिहरा, वि दे 'तेहरा' ।

तिहराना, क्रि म (हि तिहरा) त्रि क,
तृतीय वार विधा (जु ल अ) ।

तिहवार, स पु (म तिथिवार) । पर्वन् (न),
उत्तर, उद्घर्ष, उद्भव, क्षण, मह ।

तिहाई, म स्त्री (स त्रिभाग) तृतीय, अश
भाग ।

तिहारा, सर्व, दे 'गुम्हारा' ।

तीक्ष्ण, वि (स) नि, ज्ञात शित, तीव्र, प्र,
खर, सूक्ष्म, तीक्ष्ण शित, धार २ (कुडि)
कुगाय, सूक्ष्म शीघ्र, माहित, सूक्ष्म, तीव्र ३
उग्र, प्रचट ४ दे 'चरपरा' ५ (शब्द) कर्ण
कड़, अप्रिय ६ उच्चमित्र, आग्र, शिप्रमन्त्र
७ अमहा, दु मह ।

तीक्ष्णता, स स्त्री (स) तीव्रता, प्रसरता,
प्रचटता १ ।

तीखा, वि, दे 'तीक्ष्ण' ।

तीसुर, स पु, दे 'तनाशीर' ।

तीज, म स्त्री (स तृतीया) कृष्णा शुक्ला वा
तृतीया तिथि (स्त्री) २ श्रावण मास, शुक्ल
तृतीया ।

तीत ता, वि (म तित) दे 'नित' २ बटु ।

तीतर, म पु (म तितर) त्रि (ति) रि
(पु) तैतिर, बाजुपोतर ।

तीन, वि [सं त्रीणि (न बटु)] त्रय
(पु), तिस (स्त्री), त्रीणि (न) । म
पु, उक्ता सख्या, तदन्तौ (३) च ।

—तेरह करना, मु, बिहु (प्रे), अवा-आप्र
वि-ह (हु प से)।

—पाँच करना, मु, वल्दाफने (ना था)
वि-ह (स्वा आ म)।

न तीन में न तेरह में, मु, सामान्य, साधारण।

तीमार, स पु (का) मवा, परिचर्या।

—दार, स पु, शयि-रुग्ण-अवेन-परि
चारक।

—दारी, म स्त्री, रोषि-रुग्ण-परिचर्यामेवा।
तीय, म स्त्री दे 'स्त्री'।

तीर, म पु (म न) तर-टटी।

तीर, स पु (का) बाण, 'गर', इपु (पु)
सायक।

—कदा, म पु (का) इगुनि (पु), दे
'तरकदा'।

—कलना या मारना, वि म, इपु प्र, मुन
वि-ह (हु प म)।

तीरदात्र, म पु [+ भदात्र (का)] इपु
धनुर, धर, विविह (पु) धानुष्क।

तीरहानी, म स्त्री, धनुर, विधावेद,
शरास्त्राम।

तीर्थ, म पु (स तीर्थ) पुष्पभक्ति, रुक्म
० पट ३ पट्टमापानपथ, अरुणार ४ उपा
ध्याय दुह (पु) ५ प्राप्ति ६ परित्रात

कोषारि (पु) ७ तारक, मोक्षक ८ इधर
९ जननीप्रसूती १० अनिवि (पु)।

—यात्रा, स स्त्री (म) तीर्थयात्रा।

—राज, म पु (स) प्रवाण।

तीर्थिक, म पु (स) तीर्थपूरोहित १
तीर्थवर २ तीर्थयात्रिन्।

तीला, म पु (का तीर) दे 'तिन्का'।

तीला, म स्त्री (हि तीला) लघुतृणम्
० पशुपाद दृग्मृक्षमत्तार।

तील्य, वि (म) अत्यधिक, अत्यन्त, अतिशय
० दे 'तील्य (१)। ३ मुनत्र, अत्युष्ण

४ अग्नि, अग्नि ५ बड ६ दुग्ध
७ प्र-८ तिल ९ वेगवद, ग्रीम १० तार,
उच्च (स्वर)।

तीमता, म स्त्री (म) अत्यधिकता, बाहुल्य,
अत्युष्णता, अमर्याद, प्रकृता, निरुता १।

तीम, वि [म तिम्ह (तिन्ह स्त्री)]। म
पु, उच्चा मर्यादा, तदानी (३०) च।

—मार सौ, मु, वीरायणी (पु), शरसिरी
मणि (पु) (व्यव्य)।

तीमो निन, मु, मदा, सन्दा।

तीमरा, वि पु (हि तीम) वृत्तीय [या
(स्त्री)]। म पु, मयस्थ, तटस्थ।

—पहर, स पु, वृत्तीयपहर अपराह, पराह,
निवाह।

तीसरे, कि वि (हि तीमरा) वृत्तीयस्थाने,
वृत्तीय, वृत्तीयन (अव्य)।

तीमर्वा, वि (हि तीम) विशालन मनी,
विशालनी (पु न स्त्री)।

तुय, वि (म) दे 'ऊँका' ० बड, उग्र।

तुह, म पु (म न) मुव, आम्ब, वरन
० च-च-च (स्त्री)।

तुडि, म स्त्री (स पु) दे 'हुट' (१२)।
(स स्त्री) नामि।

तुद, म पु (म न) उदर, तुन्नि (न),
तुन्नि (स्त्री)।

तुवा, म पु (स) अलात (पु स्त्री) नू
(स्त्री) २ अलात (न), अलातपात्रम्।

तुविषा, स स्त्री (स तुविषा) ० शुद्राणां
(न), शुद्राणां तुपात्रम्।

तुवी, म स्त्री (म) तुवि (स्त्री) अन्तु
(पु स्त्री) ० दे 'तुवा' (२)।

तुभर, स पु (म तुवरी) भावकी, दे 'अरहर'।

तुक, स स्त्री (हि टुक) अत्यातुष्टाम,
अधरमेनी २ पलाय ३ पादातवर्ण।

वेतुरी, वि, अमृतक, अमृतम्।

—ओहना, मु, कुपविना क अथवा रच् (पु)।
तुम्ह, म पु (अ) दे 'ओम्ह'।

तुच्छ, वि (स) नीच, दीन, अधम, क्षुद्र,
दीन, निष्ठ ० अमार, अर्थक, अनर्थक।

तुदधाना, तुदधाना, वि प्रे, व 'तोदना' के
प्रे रूप।

तुतला (रा) ना, वि अ (अन) अमृत
निष्ठुत्तर माप (स्वा गा से)।

तुपक, स स्त्री (हु तीप) अशान्तिरा
२ नानाशम्।

तुफम, म स्त्री (हु तीप) वाप्य नालाशम्।

तुम, मर्व (म त्वम्) त्व (एक), म्व (बहु)
(तुम को) अदि के लिङ् 'तुम' की द्वितीया
आदि व रूप बर्नने)।

तुमडी, म स्त्री (म तुम्ही) शुक्लतुलनात्
(पु स्त्री) २ दे तुमा(२)।

तुमाई, म स्त्री (हि तुमाना) वाषामादि
प्रसाधनभूति (स्त्री)।

तुमाना, कि प्रे, व 'तुमना' के प्रे रूप।

तुमुल, वि (स) घोररव मल्ल-कोलाहल
मय-पूर्ण-युत। स पु (स पु न) भीषण-
घोर-शुद्ध-संग्राम २ बोलाहल, कल्लल।

तुम्हारा, मव (हि तुम) शुभाक्त तव (निर्दिष्ट)
युष्मदीय, त्वीय, तत्त्वक, योष्माक्त शीघ्र।

तुम्हीं, सर्व० (हि तुम + ही) स्वमव युवाभेन,
युवमेव।

तुम्ह, तव (रि तुम) (कर्म) त्वाम् त्वा
यवम, वाम युत्तान् व (सम्प्रदान) तुभ्य,
ते, तुमाभ्या, वा, युष्मन्-भ्यम्, व।

तु ग, तुरगम, म पु (म) अश्व, घोटा।

तुरत, कि वि (म) शक्ति, आहु, मय
सपदि, तत्त्वगणे।

तुरई, म स्त्री (म तूर >) मृदगी, रात्र,
बोझानरी, जालिनी, कुत्रेधना, सु पीत पुषा
राजिमत्कला (विषा तुरई, देखो 'नेनुआ')।

तुरक, स पु (स तुरक) तुरक ० यवन
१ सैनिक ४५ टर्की तुाररतान, वामिन्।

तुरकी, वि (हि तुरव) तुम्हदेशीय
२ तुम्हभाषा।

तुरग, म पु (स) अश्व, वालिन् (पु)।

तुरत, कि वि, दे 'तुरत'।

तुरही, तुरी, स स्त्री (स तुर) त्व-ई
काहल-हा, श्रगवाद्यम्।

तुरीय, वि (म) तुर्य, चतुर्थ।

—भवस्था, म स्त्री (म) न श्रेयस, मुक्ति
(स्त्री)।

तुरक, स पु (स) दे 'तुरक'।

तुर्य, वि दे 'तुरीय'।

तुरी, म पु (अ) उणाप आरव डेरर
० चू। मोर्लि (पु), शिखा, डेरर
२ अरव, चूर्णकुनल, अमरन्, कुरल।
४ वि, विवित्र, अदभुत।

तुर्या, वि (फा) दे 'सडा'।

तुलना, म स्त्री (स) उपमा, समता, साम्य
मादृश्य ० नारतम्य, न्यूनाधिरता।

तुलना, वि अ, (हि बोझना) तुलनात्

(कर्म, तोल्यने, तुल्यते), तुलया मा (कर्म
मीथने)।

विही वाम पर तुला हुआ, ॥, कार्यविशेष कर्तु
उचत हतनिश्चय विहितमकल्प।

तुलनात्मक, वि (म) तुलनातुक्त, अग्या
पेक्षक, अन्यमापेक्ष, सापेक्ष, साम्यवैषम्य, सूत्र
दर्शक।

तुलवाना, कि प्रे, व 'तोलना' के प्रे रूप।

तुलसी, स स्त्री (स) सुभागा, पावनी, मृताजी,
विष्णुबलभद्र, वृन्दा, पुष्पा, वैष्णवी।

—दल, म पु (म न) वृंदापत्रम्।

—दास, स पु (स) भक्तविशेष, रामचरित
मानमात्रिरचरित (पु)।

तुला, म स्त्री (म) दे 'तुलडी' २ तुलना,
सादृश्य २ राशिविशेष (ज्यो)।

—दान, म पु (स न) देहभारसम
सुवणादिदानश्च। वि, तोलित, तुलित।

तुल्य, वि (म) समम, तोल भार परिमाण
२ सम, समान, सदृश, सदृक्ष।

तुल्यता, स स्त्री (म) सम, तोलता परिमाणता
२ मादृश्य, साम्य, समत्वम्।

तुप, म पु (स) तुम, तुपस, बङ्गार,
धान्यत्वच् (स्त्री)।

तुपानल, ॥ पु (म) तुकूल, तुषाग्नि (पु)।

तुपार, म पु (म) तुहिन, हिम, प्रालेय,
म(मि)हिवा, अवस्थाप, मोहार। वि,
हिम तुपार, तुपार हिम, नद।

तुष्ट, वि (म) तुष्ट, तपित, पूर्णकाम २ प्रमत्त,
तुष्टित।

तुष्टि, म स्त्री (स) तुष्टता, तृप्ति (स्त्री),
मतीप २ हृष, प्रसन्नता।

तुहमक, म स्त्री, दे 'तोहमत'।

तुहिन, स पु (स म) दे 'तुपार' २ चंद्रिका,
बौमुदी ३ शीतलता, हिमता।

तुंबा, म पु दे 'तुंबा'।

तुंबी, म स्त्री, दे 'तुंबी'।

तु, सब (म ल)।

—तडाक, तुकार वा-तु-तु मैं म करना, मु,
अधिष्ठायाया नरहायते (ना था)।

तुणचि, स पु (स)

तुणी, म स्त्री (म) } दे 'तरनदा'।
तुणीर, म पु (स पु न)

तूत, सं पु (का) मि स तूद) ब्रह्म, बाह
दाह (न), सूर्य, सपुत्रम् ।

तूतिया, म पु, दे 'नीलायोधा' ।

तूती, स स्त्री (का) शुक्लमेद २ कनेरो
चटका ३ चक्रामेद ४ मुखवाचो वाचमेद,
दे 'तुरही' ।

—बोलना, सु, प्रभू, अभिधा (स्वा प अ) ।
नकारस्थाने मे-की आवाज, सु, अरण्यकदितम् ।

तूदा, स पु (का) चय, राशि (पु)
२ सीमाविह्वम् ।

तून, स पु (म शुभ्र) नदीवृक्ष, तृति
(णी) क ।

तूफान, स पु (अ) झझावान अनि चट
महा, वात, बात्या, प्रमजन प्ररुचन
२ तोय-जल, मोष वृद्धि (स्त्री) उपप्लव
विप्लव प्रणय, मप्लव ३ उपद्रव, मदीम
विप्लव ४ आपद्-आपत्ति (स्त्री) ५ दे
'तोहमन' ।

—उठाना या मचाना, पु, तुमुल क, सक्षोम
जपद् (प्रे) ।

तूफानी, वि (का) उपद्रविन्, कलहोत्पादक
१ जय, प्रपव ३ विभुन, अभ्यसूयक ।

तूमबी, म स्त्री (हिं तूवा) दे 'तुवी'
२ तुम्बोनिर्मित आहितिगुणिकाना वचमेद ।

तूमना, क्रि स. (म स्त्रीम >) उर्णातूल
मृत्त (अ प वे, तु) घृत् (स्वा प मे)
विदिध्व (प्रे) ।

तूरान, म पु (का) तातार-तूरान, देश ।

तूरानी, वि (का) तानार-तूरान, देशीय
सम्बन्धिन् । स पु, तातार-तूरान-वासिन
(पु) ।

तूल, स पु (म पु न) दे 'हृद्' २ दे
'तूल' ।

तूल, स पु (प) दे 'लबाइ' ।

तूलका, म स्त्री (स) इ (ई) धीका, तुलि
(स्त्री), तूली, ईषिका ।

तूली, स स्त्री (स) दे 'तूलिका' २ नाली
३ वलि (स्त्री) ।

तूण, म पु (म न) दे 'तिनका' ।

तूणप्रत्, वि (म) तूण, तुल्य-मम, तुच्छ,
धृत् २ अग्राह्य, त्याज्य ।

तूतीय, वि (स) दे 'तीमरा' ।

तूस, वि (स) तूष्ट, पूर्णकाम २ प्रहृष्ट,
प्रसुदित ।

तूसि, स स्त्री (म) मनोर, सौन्दर्य, तर्पण,
प्रीणनम् २ आनन्द, हर्ष ।

तूपा, म स्त्री (स) पिपासा, तूष्णा, उदन्या
२ लोम ३ इच्छा ।

तूपित, वि (म.) पिपासित, तर्पित सनृप
२ इच्छुर् ३ लुम्भ ।

तूष्णा, म स्त्री (म) दे 'तूपा' (११) ।

तै, प्रत्य [म तम (प्रत्य)] दे 'तै' ।

तैतालीस, वि [स त्रित्वारिंशत् (नित्य स्त्री)]
त्रयश्चत्वारिंशत् । स पु, उक्ता सरया, तदस्त्री
(४३) च ।

तैतालीसवौ, वि (हिं तैतालीस) त्रि
(त्रयश्च) चत्वारिंशत्तम मीम, वि (त्रयश्च)
चत्वारिंश शीश (पु स्त्री न) ।

तैतीस, वि (त्रयस्त्रिंशत् (नित्य स्त्री)]
म पु, उक्ता सरया, तदस्त्री (३३) च ।

तैतीसवौ, वि (हिं तैतीस) त्रयस्त्रिंशत्तम
मीम, त्रयस्त्रिंश शीश (पु स्त्री न) ।

तैतुआ, स पु (देश) विभ्रम चितकव्याघ्र,
भेद ।

तैदू, म पु (म त्रिदुर्) गालम्बन्ध, त्रिदुल
२ त्रिदुल, त्रिदुलफलम् ।

ते, सर्व (म पु तद् का बहु) दे 'दे' ।

तेईस, वि [म त्रयोविंशति (नित्य स्त्री)]
म पु, उक्ता सरया, तदस्त्री (२३) च ।

तेईसवौ, वि (हिं तेईस) त्रयोविंशतितम
मीम त्रयोविंश शीश (पु स्त्री न) ।

तेग, स स्त्री (का) दे 'तलवार' ।

तेज, स पु [स तेजम् (म)] कानि-श्रोति
(स्त्री), आभा, प्रभा २ पराक्रम, वीर्य, बल
३ प्रताप, अनुभाव, अभिरथा ४ ताप
ऊष्मन् (पु) ५ उग्रता, प्रचटता ६ अग्नि
(पु) ।

तेज, वि (का) दे 'तीक्ष्ण' (१) २ आशु
शीघ्रगामिन्, जवन, महावग ३ क्षिप्र, वर्मन्
वरिन् ४ दे 'चरपरा ५ उग्र प्रचट
६ महाहर्ष, बहु-महा, मूल्य ७ वृक्षा
अशुद्धि ८ अनिचचल ९ (विपादि) घोर,
पातक ।

तेजपत्र, स पु (म न.) पत्र पत्रक, गद्य जातम् ।

तेजपात, ॥ पु, दे 'तेजपत्र' ।

तेजबल, स पु (मं तेजोवती) तेजनी, तेजवती ।

तेजस्वी, वि (॥ विन्) तेजोवन्, तेजस्वत् ओजस्विन्, वचस्विन्, सुप्रभ, कानिमत २ प्रनापिन् प्रतपवन् ३ वीर्यवत् बलवन् ।

तेजाव, स पु (का) जम्, द्रावकम् ।

तेज्री म स्त्री (का), निशित्व, तीक्ष्णधारता, प्रखरता २ उग्रता, चञ्चलता ३ क्षीप्रता, त्वरा ४ महाधैर्य, बहुमूल्यत्व ५ ।

तेता, वि, दे 'उतना' ।

तेरस, स स्त्री (म त्रयोदशी) शुक्लकृष्ण पक्षयो त्रयोदशी तिथि (स्त्री) ।

तेरह, वि (स त्रयोदश) । म पु, उक्तः सख्या, तदकी (१३) च ।

तेरहवाँ, वि (हि तेरह) त्रयोदश शी श (पु स्त्री न) ।

तेरा, सर्व (स तव) तावक, [-की (स्त्री)], तावकी, त्वत्, त्वदीय, त्वम् ।

तेल, स पु (स तैल) रनेह, ब्रक्षण, अन्य स्जनम् ।

—मलना या लगाना, कि स, तैलेन अन् (ह प से)—दिह (अ उ अ)—न्धि (तु प अ) ।

—निकालना, कि म, स्नेह निःकृत (भ्वा प अ) ।

—चढ़ाना, मु, विवाहात्म १ वरवधो तैलाभ्युपगमम् ।

बहती पर—डालना, ॥, बलह वृष (प्रे) ।

तेलगू, स स्त्री (॥ तैलग् >) तैलग्पात आन्ध्रप्रान्त, माया, तैलग् (स्त्री) ।

तेलहन, सं स्त्री, दे 'तिलहन' ।

तेलिन, स स्त्री (हि तेली) तैलिनी तैलिनी, तैल, वरी-वारिणी, चारिणी ।

तेलिया, वि (हि तेन) तैल, गिणकृष्ण भासुर । म पु, कृष्ण, राग राग-वर्ण ।

२ कृष्णश्च ३ वस्त्रनाम, धरल (विपभेद) ।

तेली, स पु (स तैलन्) तैलवार तैलिन, चारित्र, धूमर ।

तेवर, स पु (हि तेह=कोष) मवीर मवीर, ह इति (स्त्री) २ धू (स्त्री), धूलता ।

—बदलना, मु, भ्रमण क, भ्रुकुटि बन्ध (क प अ)—रच् (जु) ।

तेवरी दी, म स्त्री, 'त्योरी' ।

तेव(त्यो)हार, स पु, दे 'निहवार' ।

तेहरा, वि (हि तीन) विगुणगुणित, त्रिरावृत्त, त्रिरावर्तित ।

तैयार, वि (का) (मनुष्य) उद्यत, उद्युत, सज्ज सिद्ध, मनन २ (वस्तु) सज्जी, कृत भूत, जायोजित, उपस्थित, उप-बलुप्त-स्थित, सज्ज, सिद्ध ३ पीन, दृढपुष्ट ।

—तरना, वि स, सज्जीकृ, मज्जह (प्रे), उपपरि-कृष्ट (प्रे), उपस्था (प्रे) ।

—होना, कि अ, सज्जीभू, मज्जह (दि उ अ) उद्यत-सज्जह (वि) भू ।

तैयारी, म स्त्री (का तैयार) सज्जता, मज्जदना, उद्यतता २ सिद्धि-उपस्थिति (स्त्री) ३ आचम्य, श्री, शोभा ।

तेरना, कि स (म तरण) पार गम् (भ्वा प अ), म, तू (भ्वा प से, द्वितीया के साथ) । कि अ, तू, तू (भ्वा आ अ) ।

तैराक, स पु (हि तैरना) तारक, तरित, तरण प्लवन, हृत् (पु) ।

तैराकी, स पु (हि तैराक) तर, तरण, प्लव, प्लवनम् ।

तैल, म पु (स न) दे 'तेल' ।

तैश, स पु (अ) कोष, कोष ।

तैसा, वि (स ताइश) दे 'बैसा' ।

तौद, म स्त्री (म तुद) पिनिष्ठ, लम्बोदरम् ।

—निकलना, म पु, तुदप्रसार, तुदिमता, तुन्दिलता ।

तौद(दं)ल, वि (हि तौद) तुदिन, तुदित, तुदिभ तुदिह, तुदिन, विविटिल, लम्बोदर ।

तोदी, म स्त्री [स तुदिह (स्त्री)] तुद-दी, दे 'नाभि' ।

तो, तौ, अन्य (म तद् >) तस्या दशा-भिवन्ती (सप्तमी), तदि, तदा, तगनीम् ।

—भी, अन्य, दे 'तथापि' ।

तोटना, वि स (सं जोटन) तुट (प्रे) खट् (जु), भन् (र प अ) २ भिट्टिह (ह प अ), दूट्ट (क प से) ३ अवर्म्म, नि (रवा उ अ), जाटा (जु आ अ), ग्रह (क प म) ४ जटाध्वम (प्रे) ५ स्वपथ ग्रह (प्रे) स्वपक्षपातिन विधा (जु उ अ)

६ नागमनि परिष्क (प्रे) श्च (प्रे) ।
स पु, शोचन, भजन, भेदन, अव-न, चवन,
नाग, ध्वम इ ।

तोडनेवाला, म पु, शोचन, भञ्ज, भेदन,
अवचायक, नाशक इ ।

ट्या ट्या, वि, वृत्ति, भग्न, मित्र, ध्वस्त इ ।

तोडा, स पु (हि शो-ना) नापकमुद्रा,
कोश-कोष २ धन, कोष ग्रन्थि (पु)

३ सुवर्ण-रत्न, अन्तु-अन्तु (दोतीं स्त्री)

४ त-ट्टी ५ हानि (स्त्री), अपचद

६ रज्जु-खण्ड-ट्टम् ।

तोतलाना, कि अ, दे 'तुतलाना' ।

तोता, स पु (का) कौर, चुच, बक, तुण्ड
चंचु (पु) किंकिरान । (स्त्री, कौरी
शुकोर) ।

—चइम, स पु (का) विश्रामपातक, अग्र
स्पदिन, अविवामिन् ।

—चइमी, स स्त्री (का) अविश्राम,
अग्रत्यय ।

तोने स्त्री सी नौस केरना, सु, निगान जेस
(भ्वा आ से)-उडास (भ आ से) ।

हाथी के तोने उडा जाला, सु, अत्याहुती मदी
नू, स-ब्यासुह (दि प वे) ।

तोप, स स्त्री (तु) शतजी, अग्न्यस्त्र,
शोयन् ।

—खाना, म स्त्री (तु + क्य) शतजीताला
२ अग्न्यस्त्र शतजी, समूह ।

तोपची, स पु (तु तोप) दे 'शोन्दाज' ।

तोदडा, स पु [का लो (तु) बरा] अभ्यास
भवा ।

तोदा, स स्त्री (अ तोद) पशुनाशुतिप्रतिष्ठा,
पथाचार ।

तोम, म पु (म तोम) चय, निरर,
पुत्र, ममर ।

तोमर, म पु (म पु न) अल्लतट्टर
प्राचीनात्मन् २२ दादराभावा-नववा-
चन्द्रम (न)-शृङ्ग ४ रागपुक्कसविशेष ।

तोय, स पु (स न) जन्, शनीयम् ।

—ट्टम, म पु (म-मं न) तर्पणम् दे० ।

—ट्टीडा, म स्त्री (म) जलजीन ।

—ट्ट, म पु (म) जल, नौरट्ट, जगोद ।

—चि, चिपि, स पु (स) बलपि, वारिपि,
ममुद्र ।

तोरेई, म स्त्री, दे 'तुरई' ।

तोरेण, स पु (स पु न) बहिर्गार २
बदनमल २ ग्रीवा ।

तोल्, स पु (स) भार, गुरुत्व २ भार
मान, मो-न, मात्र, परिमाण ३ तोन्न, भार
मान, मस्ति (स्त्री) ।

तोलन, म पु (स न) तुल्या भार, गान
मन्त्र २ उत्थापनम् ।

तोल्ना, कि म (म तोन्न) तुल् (तु),
तूल (भ्वा प से), तुलाया पु (तु) ।

स पु, ३ 'तोल' ।

तोलनेवाला, म पु, तोल्, भारमाव (पु) ।

तोलवाना, कि प्रे, व 'तोल्ना' के प्रे रूप ।

तोला, म प (स तोल्-क) तोल्क क, पण,
परिफिनिमाण, कोण, दण्ड, वशाईन् ।

तोसक, म स्त्री (तु) तूल, तुलिका ।

तोप, स प (स) वृत्ति-वृद्धि (स्त्री), मनीष
२ प्रसन्नता, आनन्द ।

तोडका, स पु (अ) उपहार, उपायन, उपश,
उपग्रहन् । वि, उत्कृष्ट, उत्तम ।

तोहमत, स स्त्री (अ) मिथ्या-मिथील, मृष
दोषादोर ।

—त्याना, कि स मिथ्या दुद (प्रे वृषयनि),
मृषा-मिथुज (न आ न तु) ।

तौर, स पु (अ) आचार, व्यवहार २ दशा,
अवस्था ३ प्रकार विधा (समानान में) ।

—तरीका, स पु (अ) शिष्टाचार २
आचरणम् ।

तील्, म पु, दे 'तोल' ।

तौलना, कि स, दे 'तोल्ना' ।

तौलिया, स पु (अ दादेल्) मात्रनवस्त्र,
वरवन् ।

तौहीन, म स्त्री (अ) अपमान, निरादर,
अवमानना, अवज्ञा ।

त्यक्त, वि (म) विसृष्ट, उन्मिश्र, अग्रस्त ।

त्याग, म पु (म) उत्सर्ग, मोचन, अपमान,
उच्छेदन, हान २ विरक्ति (स्त्री), वीर्यम्,
मन्याम ३ दे 'तत्त्व' ।

—पट्ट, स पु (म न) उत्सर्गः ।

त्यागना, कि स (स त्याग) त्यज् (भ्वा

वैकल्य २ स्त्रलिङ्, आनि (स्त्री) ३ सदेह मराय ।

श्रेता, स पु (म) श्रेता द्वितीय, युगम् ।

त्वचा, स स्त्री (म) त्वर् (स्त्री), चर्मन् (न) त्विम् (स्त्री), संगदनी, असम्भरा

२ कल्-क्, कल्-ल् ल, ३ त्विगिन्द्रिय ४ (माप वा) अनुक्, निर्मोः ।

त्वरा, स स्त्री (स) जीप्रता, दे 'नन्दी' ।

त्वरित, वि (म) जीप्र, दे 'तेज' ।

थ

थ, देवनागरीवर्णमालायः सप्तदशी व्यन्तवर्ण प्रकार ।

थंभ, स पु, दे 'थम्भ' ।

थह्, स स्त्री (म स्थान) स्थल् ० रति (पु), चय ।

थकना, क्रि अ (स्थग >) परि भन् (दि प से), कल् (भ्वा दि प से) आयस् (भ्वा दि प से) ० निवद् (दि आ अ) ।

थकान, स स्त्री (हि थरना) आयाम, कलम, वेद, थम, क्वाति (स्त्री), दीधिल्यम् ।

थकाना, क्रि रा, व 'थकना' के मे रूप ।

थकामोदा, वि, परि, श्रान्त, बलान्, पित्र, म्लान ।

थकावट, स स्त्री, दे 'थरान' ।

थकित, वि, दे 'थकामोदा' ।

थडा, स पु (म स्थल) वदिका, विनदी दि (स्त्री) ० आपणिकामन, पण्णापीव पीठ ठम् ।

थन, स पु (स स्तन) कुच, पवाधर ।

थनेली, स स्त्री (हि थन) म्लन-कुच, गण्ट पित्र ।

थपकना, क्रि म (अनु थपथप) वरततेन पर मृदा-मृद् (तु प अ), स्नेहन आहन् (अ प अ) लु प्रह (भ्वा प अ) तड (तु) ।

थपकी, स स्त्री (हि थपकना) करमल् परामर्ग, मृदु-पु प्रेम, आपान प्रहार चपे ।

थपड़ी, स स्त्री (अनु ०) दे० 'ताप' ।

थपेडा, स पु (अनु थप) नमक-लो-आम बोधी मपट् मगर्ज अभिप ० दे 'थपड' ।

थप्पद्, स पु (अनु थप) चपे म्का, तल चप-आपान प्रहार ।

—मारना, क्रि स, चपे दा, चपकिरा तम् (तु) प्रह (भ्वा प अ) आहन् (अ प अ) ।

थम, स पु दे 'सुभ' ।

थमना, क्रि ज (स स्तभन) विरम् (भ्वा प अ), उप-गम् (दि प से), रुद्रगति (वि) म् २ विभ्रन, (दि प से), निवृद् (भ्वा आ से) । स पु, उप-प्र, शम, विराम विरति (स्त्री) २ निवृत्ति विभ्रति (स्त्री), विच्छेद ।

थरथराना, क्रि ज (अनु) (भवेन) कप् वेप (भ्वा आ से) २ म्पुर (तु प से), स्पद् (भ्वा आ से) ।

थरथराहट, } स स्त्री (हि थरथराना)

थरथरी, } वेपन, वेपथु (पु), प्र, कप रपन ० म्पुरण, स्पदनम् ।

थर्ममीटर, स पु (अ) दे 'तापमानयत्र' ।

थरना, क्रि ज (अनु) दे 'थरथराना' ।

थल, स पु, दे 'स्थल' ।

थलथलाना, क्रि अ (अनु स्ल-ल >) अभी-ग विचल् (भ्वा प से), थलथलावते (ना था) ।

थवई, स पु (म स्थपति) पलगाट, मुधा जीविन्, लैपट, गृह-कारक स्वदेश ।

थाडरायडग्लेड, स पु (अं) लुविगाम्नि ।

थाक, स पु (म स्था >) ग्रामसीमा ० राक्षि (पु), चय ।

थाती, स स्त्री (म स्थान् >) दे 'अमानत' ० दे 'पूजा' ।

थान, स पु (म स्थान) स्थन्, प्रदेश ० आलव, गृह ३ देवालय, मग्नि ४ पशु, आला स्थान ५ (पगदीना) ० वातर्त ।

थानक, स पु (म स्थानकम्) स्थन, स्थल् ० नगरम् ३ पन ४ आलवालम् ।

थाना, स पु (म स्थान >) गुम, रमाग्नि, स्थानम् ।

थानेदार, स पु (दि-का) रक्षास्थाना ध्वश, *गुल्बानिरीक्ष, स्त्रोपदर्श ।

याप, म स्त्री (म स्थापन) > गृहगदिरायो
ध्वनि (पु) वा २ चय टिका ३ अव,
चिह्न ४ प्रतिष्ठा, भग्नान ५ उपपन्न ६ अनु
गृह्य गृह्य अग्नान ७ स्थिति (स्त्री)।

यापदा, किं स (म स्थापन) रवा (प्रे स्था
पयति), आनिधा (लु उ अ), न्यम
(दि प मे), अवहृ निविश (प्रे) इ।

म स्त्री, स्थापनना, आनि, ज्ञान, वाचना,
रोपना, > मूर्त्त्यादीनां स्थापना प्रतिष्ठापना।

यापा, मं पु (किं यपना) कराव, पचागुणी
विहन्।

यापी, स स्त्री (हिं थापना) १ > मृत्तिका
बुद्धि, नाग्ननुदगर ३ दे 'थापी'।

याम, म स्त्री (हिं थामना) आ अव,
लम्बनम्, धरणी, उपम, स्थापनम् २ अपार,
आम्ब, अवगम्भ, आश्रय।

यामना, किं स (मं स्थापन) अव उप-उप
मंस्त्री (रूप से याप्रे), अवगम्भ-अव
दा, अवगम्भ (स्वा आ स) > अव, स्था
(प्रे), वि, स्तम्भ, रथ (क उ अ), विरम्
(प्रे) ३ माहाव्य दा ४ निरुद्ध।

थाल, म पु (१ स्थाल) धनुमदमावनमेद।

थाला, म पु (हिं थाल) आ (अ) लवा,
अवा, अवार।

थाली, म स्त्री (हिं थाल) स्थालक, लु
स्थानम्।

थाह, म स्त्री (म स्था) > (जघदीना) नन्-
अधामान २ गाव ३ गामीयानुमान ४ अंग,
मीमा।

—लेना, किं म (नन्-अव) पराग (स्वा आ
मे) निरूप (च) मा (लु आ अ)।

धिण्टर, म पु (अ) नाग्नग्ननाक,
गाल्गभृद् मन्दिर मुमि (स्त्री)।

धिगली, म स्त्री (हिं गिनी) वर, नष्ट
शक।

धन्य मे—अगाना, मु, अमयव विहीपति
(मन्त्र)।

धियोमोक्षी, म स्त्री (अ) वक्रविना >
मन्त्रदायविशेष।

धिर, वि, दे 'धिर'।

धिरकना, किं अ (अनु धिर) नृप्य चरणी
निरुद्ध-अन्वे (स्वा आ मे)।

धिरता, म स्त्री, दे 'धिरता'।

धुही, म स्त्री (अनु) धिक, शान्तिम्,
अवना-नुत्माना अवहृता, शब्द।

—धुही करना, मु०, अव शा (वया प स),
दे 'धिरता'।

—धुही होना, मु० व० 'धिरता' व कर्म०
व रूप।

धुयनी, म स्त्री, दे 'धुयनी'।

यूक, म स्त्री (हिं यूकना) मुलवा, जाला,
छोवन, नि, प्रयुक्त।

—ही मिलनी, म स्त्री, लालाप्रधि (पु)।

—ऊर चटिना, मु, प्रतिष्ठा मन् (रूप प अ),
वचन व्यतिरिक्त (स्वा प स)।

यूकना, किं त (अनु यू) नि, धिव (स्वा
दि प स), छोवति, छोवति, लाला नि वृ
(प्रे), म पु, नि, शाव-वन, निष्ठयति (स्त्री)।

यूयनी, म स्त्री (देश यूवन) प्रत्ययमुक्त,
लालाप्रधि।

यूनी, स स्त्री (म यूना) स्थापु (पु),
स्थान, अवगम्भ।

यूहर, स पु (म यूगा) > नेत्रारि (पु),
निष्पिण्डविका, न्युदा-हि (स्त्री), वक्रिन,
वक्र, उ-द्रम-वक्र, मिहनुष्ट, माहुष्ट।

येवा, म पु (देश) दे 'नगीना'।

यैला, म पु (म स्थान) > प्रसक्त, स्थान-
पु-ट, स्थान न, धीनकट।

यैली, म स्त्री (हिं येना) प्रसेवक, न्यु(म्यो)-
तव, पुत्रक।

योक, म पु (म स्थान) राशि (पु),
चय > मव, मय।

—त्रिरोश, दार, म पु (हिं + का) चव
म्यु, विरक्तिवृत्त।

योदा, वि (म स्थाक) न्यून, अल्प, मय,
अनुक्त-अ-मुट-न्यु, परिमाण-मात्र, शब्द।

—करना, किं म, लयति (ता वा) अना
न्यूनी इ, रूप (प्रे)।

—होना, किं अ, अनी-न्यूनी न्यु भू, डि
अवधि (कर्म)। डि वि, स्थान, मनन,
रंज्य, यद्-विनिष्प।

—योदा, किं वि, अयय, अयय, अयय।

—युद्ध, वि, न्यूनाधिक।

—या, डि वि, दे 'योदा' डि वि।

थोडे से, वि, वनिचित, कतिपया, स्वीका ।
 थोधा, वि (देश) रिक्त शून्य, गर्भ मध्य-उदर,
 सुपिर २ कुठित, अनिशित ३ नि मार, निर्गुण
 ४ निरर्थक, निष्प्रयोजन ।

थोपना, वि म (स स्थापन) अनु प्र वि लिप्
 (तु प अ), दिह् (अ उ अ) २ राशी
 पिंडी कू, समाक्षिप (तु प अ) ३ दुष्
 (प्रे), दोष आरूह (प्रे आरोपयति) क्षिप् ।

द

द, देवनागरीवर्णमात्राया अष्टादशो व्यन्तवर्ण,
 दकार ।

दग वि (का) चकित, विस्मित, स्तब्ध ।

दगाई, वि (हि दगा) उपद्रविन्, कल्हप्रिय
 २ उग्र प्रचंड ।

दगल, म पु (का) मल्लभाडु हस्ताहस्मि,
 बुद्ध मल्लकीटा २ मल्ल भू भूमि (दोनों स्त्री)
 ३ जनीय, लोकसमूह ।

दगा, स पु (का दगल) कलह, उपद्रव
 २ कल्हकल, कोलाहल ।

दड, स पु (स) दे 'डड' ।

दडधर, स पु (म) यमराज, दटपाणि
 २ नृप, शासक ३ परित्राजक, सन्न्यामिन् ।

दडनीय, वि (म) दटय, दडयितव्य,
 दमनीय ।

दडवन्, स पु स्त्री (म अव्य) साष्टांग,
 प्रणाम समस्कार ।

दडी, म पु (स टिन्) दडधर परित्राजक
 २ यम ३ नृप ४ दौवारिक ५ दडधारी
 मनुष्य ६ सस्कृतकविविशेष ।

दत्, स पु (स) दशन, रद, रदन,
 दे 'दात' ।

—कथा, म स्त्री (रा) लोक पारपरीय, कथा,
 पारपर्य्य, लोक जन, धुनि (स्त्री) ।

—रुद्ध, न पु (स) ओष्ठ, रदनच्छद ।

—धावन, म पु (म न) दत्, काष्ठ भार्जनम् ।

दंती, म स्त्री (स) ण्वस्त्वपिका, रेखनी,
 विशोषनी ।

दंती, म पु (म निन्) गज, द्विप ।

दंतुला, वि (म) दतुल दतुर, दतुरित,
 उत्तनदत् ।

दंतोष्ठ्य, वि (म) दन्तोष्ठेरुच्चार्यवर्ण
 (उ, व) ।

दंत्य, वि (म) रदनविषयक २ दंतोच्चार्य
 (तवगादि) ।

दंदनाता, क्रि अ (अनु) दनदनायते (ना घा),
 रम् (भ्वा आ अ), नद् (भ्वा ए से) ।

ददान, स पु (फा) दन्त, दशन, रदन ।
 —साज्ञ, स पु, दन्तकार, दन्तचिकित्सक ।

ददाना, स पु (फा) दत्, छेद ।

ददानेदार, वि (फा) दतुर, दतुरित,
 अनुक्रकच ।

दपसी-ति, स पु (स रपनी पु दि) अ
 जाया भार्या, पती (पु दि) ।

दप्प, स पु (स) कपट ट, कापटन, आर्ष
 रूपता, लिंगशुचि (स्त्री), आडवर, वक्रव्रत,
 धर्मोपधा दाभिकता, छाधिकता २ अभि
 मान, दर्प ।

दभी, वि (स भिन्) कपटिन्, कापटिक
 छाधिक दाभिक [स्त्री (स्त्री)], कपट, छद्म
 २ अभिमानिन्, साडवर ।

दभोलि, म पु (ए) इन्द्रवज्र जम् २
 होर रम् ।

दश, स पु (स) दे 'डाम' २ दे
 'डक' (१२) ३ दत्, रदन ।

दई, म पु (स दैव) ईश्वर २ अदृष्ट, भाग्यम् ।

—मारा, वि, मद हत, भाग्य ।

दकीका, स पु (अ) युक्ति (स्त्री), उपाय ।
 कीद—बाकी न रखना, मु सर्वोपायान् ममस्त
 युक्ती प्रयुज (रु आ अ, चु) ।

दक्खिन्न, म पु, दे 'दक्षिण' ।

दक्ष, वि (स) कुशल, निपुण, चतुर, प्रवीण,
 विदग्ध, विशेषज्ञ । म पु, मक्षपुन, शिष्य
 शशुर, सनीषित् ।

दक्षता, म स्त्री (म) कौशल, नैपुण्य, चातुर्य,
 प्रावीण्य, वैदग्ध्य, पाटवम् ।

दक्षिण, वि (म) अपमन्य, सन्वेतर, वामेतर
 २ दक्ष निपुण । म पु, दक्षिणं प्राशा
 दिशा दिश (स्त्री), दक्षिणा, वैवस्वनी, यामी,
 अवाची २ दक्षिणापथ, दक्षिण ण ३ दक्षिण,
 पार्श्व-र्ष ४ नायकमेद ।

—पूर्व, स पु, आग्नेयी, दक्षिणपूर्व । वि,
 आग्नेय, दक्षिणपूर्व ।

—पश्चिम, स पु, नैऋती, दक्षिणपश्चिम ।
वि नैऋत, दक्षिणपश्चिम ।

दक्षिणा, स स्त्री (स) यथादिविधिदान
गोरोत्पिथशुल्क ऋ० दान, त्याग उत्सर्ग ।

दक्षिणावन, स पु (स न) आनोक्षिणा
गनि (स्त्री) ।

—सूर्य, स प (स) गकरसक्रान्ति (स्त्री) ।
दक्षिणी, वि (स दक्षिण >) द (दा) क्षिण,
द्राक्षिणात्य अवाचीन, अवाच्य, चाम्य,
अगम्य ।

दक्षल स पु (अ) अधिकार, स्वामित्व २
हस्तक्षेत्र परकार्यचर्चा ३ प्रवेश, उपगम ।

—देना, कि स, परकायाणि निरूप (जु)
चर्च (जु आ से), परकर्मक्ष व्याप (जु
आ अ) मध्ये पत्र (स्था प से) ।

दगना, कि प, व 'दागना' के कर्म के रूप ।
दगा, स स्त्री (अ) छल, वपट, वचन,
प्रतारणा २ विश्रामघात ।

—करना या देना, कि स, प्रभू प्रभुभू भ्रम
सुह (प्रे), वच (जु) ।

—दार, बाज़, वि (अ + फा) क्लेश,
प्रतारक वचक शठ, विश्रामघातिन
रुद्धि, कापटिक ।

—घाज़ी, स स्त्री (फा) वचकता, वैतक
० विश्रामघातकता ।

दग्ध, वि (स) ज्वलित, अग्नीभूत, भस्ममात्र
रूप २ दुःखित, व्यथित ।

ददियल, वि, दे 'न्दियल' ।

दत्तवन, दत्तान, स स्त्री, दे 'दातुन' ।

दत्त, वि (स) विमष्ट, विश्राणित, आपत ।

दत्तक स पु (स) ऊपर पुत्र, दास
सुत, दत्तकपुत्र ।

दत्तचित्त, वि (स) अर्वाहृत, समाहित
अभिनिर्दिष्ट प्रकार अनन्यवृत्ति ।

ददिताल, स पु (हि दादान + म आलय)
पितामहालय २ पितामह, कुलवश ।

ददु, स पु (स) ददु-दु, ददु, ददुगी,
मन्त्रदुष्टम् ।

दधि, स पु (स न) दे, 'दही' ।

—दात, स प (स) चद्र, सोम ।

दधीचि, स पु (स) मुनिविशेष ।

दनदनाना, कि अ (अनु) दे 'ददनाना' ।

दनादन, कि वि (अनु) सदनदनशब्द
२ अनुक्रमेण, वधाक्रमम् ।

दनुन, स पु (स) अमुर, राक्षस ।

दफती, स स्त्री (अ दफतीन) दे 'गता' ।

दफन, स पु (अ) निसनन ० दमशाने
स्थापनम् ।

—करना, कि स, दमशाने प्रेतभूमौ निधा
(जु उ अ) स्था (प्रे) निक्षिप (जु प
अ) २ निसन (स्था प मे), निगुह
(स्था उ से) ।

डफा, स स्त्री (अ दफभ) दे 'बार'
२ विधान, धारा । वि, अपसारित, दूरीकृत,
निष्कासित, वि, चालित ।

दफतर, स पु (फा) कार्यालय २ दृष्टपत्र
३ सविस्तरवृत्तात ।

दफ्तरी, स पु (फा) पत्रसंयोजक २ दे
'जिदफ्तान' । वि, कार्यालयसंबन्धित ।

दबग, वि (हि दवाना) प्रभाव, वद शालिन,
अनुभाववद, प्रतापिन, प्रबल ।

द्वकना, कि अ (हि दवाना) (धदेन)
गुप्तगुह (कर्म), गुप्तनिलीन (वि) भू
निली (दि आ अ) २ पतावस्तुदनादे
निभूत स्था (स्था प अ) ३ देह नष्ट
(प्रे), नशीभू ।

दबकाना, कि स व 'दबकना' के प्रे रूप
२ दे 'टाटाना' ।

द्वदबा, स ■ (अ) आतक प्रताप,
अनुभाव, प्रभाव, वैशस (न), प्रीति
(स्त्री) ।

द्वना, कि अ (स दमन >) [म (भा) ऐण]
अनआनम् (स्था प अ) अववा नक्षो-
वक्त्री, भू २ सकुच-सर्पिर्दंभ (कर्म) ३
सीङ्किलश (कर्म) ४ निरन्त्र निगुह (कर्म)
५ प्रच्छन्नगुप्तनिलीन (वि) भू ६ वश
हथा (अ प अ), वशीभू ७ आत्मनिर्निष्
मष्ट (कर्म) ८ ओ (जु प अ), वग
(दि प से) ।

दवे पाव (चलना), मु, अपादशब्द नीरव
निभूत चल् (स्था प मे) ।

द्वाना, कि स, व 'दवना' के प्रे रूप ।
दवा लेना, मु, अन्यायेन प्रहृ (म् प मे)
आत्ममाहृ ।

दबाव, स पु (हि दबाना) अनिभार ,
निर्बन्ध, पीडन २ अनुभव, प्रताप ।

दबैल, वि (हि दबना) कातर, भीरु, समा
ध्वम वस्त ।

दबोचना, कि म (हि दबाना) बलेन सदसा
अभिद्र (भ्वा प अ) अक्रम (भ्वा प
से आ अ)-ग्रथ (व्र प से)-इ (चु) ।
स पु महमा ग्रथ धरण-अक्रम ३ ।

दबैनी, स स्त्री (हि दबाना) १ प्रदमनी
२ कात्त्यकराणामुपकरणभेद ।

दध, वि (म) स्वल्प, स्तोक २ सूक्ष्म कृश ।
स पु समुद्र ।

दम, स पु (म) अहममयम, इन्द्रिय-अय
निग्रह, दानि (स्त्री), दमथ धु (पु)
२ दब धामन, निग्रह ३ गृह ४ कर्मन ।

दम, स पु (फा), प्र-वि, श्वास, उच्छ्वास,
उच्छ्वसित २ अमव प्राण (पु बड़)
जीवन, जीविन ३ फुल्लार, फुल्लन, भूमाकर्ष
४ पल्ल, क्षण (निनि (सि) प ५ व्यनित्व ६
अभिमान, दर्प ७ छल, कपट ८ वापेन
पाचनम् ।

—दिलासा, स पु, मोरासा, मालन,
आधामनम् ।

—बदम, कि वि अनुप्रति, क्षण-पल-निमिषं,
क्षणे क्षणे, पले पले ।

—बड़ना, मु, कहेन-सत्वर श्वम (अ प से)
कृच्छ्रेण-दीर्घ निश्चम ।

—निक्कलना, ॥, दे 'गरना' ।

—भर म, मु, क्षणेन, क्षण-निमेष-मात्रेण, शप्ति
नि, सध एव ।

—मे दम भाना, मु, चेतना-सहा लभ (भ्वा
आ अ) ।

—लगाना, मु तमाश्रुभूम पा (भ्वा प अ) ।

—लेना, ॥, विभम् (दि प से), उद्योगान्
विरम् (भ्वा प अ) ।

—साधना, मु, प्राप्ति एव (रु प अ) ।

—नाक में भाना, शयन तत्र-क्लिश्वीट
(वर्म)-विद् (दि आ अ) ।

दमक, म स्त्री (हि चमक ना अनु) दे
'चमक' ।

दमरना, कि अ, दे 'चमरना' ।

दमकल, म स्त्री (हि दम+कल) १ धामयत्रम्
२ अग्नियत्र (कयर इषन) ३ तलोत्तोलन
यत्रम् ।

दमकला, स पु (हि दमकल) १ अपासेचनी ।

दमडी, म स्त्री (स दम्भम् >) बाकिनी पी,
ककिणिका बोधी पण-याद-अष्टमभा ।

दमदमा स पु (फा) निरनिलप्रसेवगुति
(स्त्री) (हि मोरवा) ।

दमन, म पु (म न) अभिभव, वि, तय
नितोषन नियमन, वशा-स्वायत्ती-करण, (२१)
दे 'दम' (१-२) ।

दमनीय वि (स) वदय इया-इयम्,
निग्रहणीय-या-यम् सयमनीय-या-यम् ।

दमयती, स स्त्री (स) भैमी, वैदमी,
नन्धनी ।

दमा, रु पु (फा) श्वाभरोग, कृच्छ्रोच्छ्वास,
तनक तनकधाम ।

दमादम, कि वि (अनु०) मदम-दमशब्दम्
२ निरन्तर, सततम् ।

दमाभा, स पु (फा) दे 'नक्कारा' ।

दमित, वि (स०) सपमित-ना-तम्,
नियमित-ना-तम्, शमित-ना-तम्, निरुद्ध
का-तम् ।

दया, स स्त्री (सं) अनुकरा, अनुग्रह, कृपा,
प्रमत्त, करुणा, हितेच्छा ।

—निधान } वि, परमदयालु, परमकृपालु,
—निधि } परमकारुणिक, स पु, ईश्वर ।
—मय

—पात्र, वि (सं न) दयनीय, अनुकम्प्य,
करुणार्ह ।

दयानतदार, वि (अ दयानत+फा दार)
शुचि, सरल, कञ्ज शुक्लतन्म, निष्कप,
अर्धशुचि ।

दयानतदारी, म स्त्री (अ+फा) शुचिता,
अर्धशून, आर्जव, मत्तना, निष्कप्यता ।

दयालु, वि (सं) दयितु, दयाशील, दयार्ह,
कृपालु कारुणिक, अनुकम्पक, सदय, दयावत् ।

दयालुता, म स्त्री (म) दयालुता दया
शीलता, दे 'दया' ।

दर, स स्त्री पु, दे 'नित' ।

दर, स पु (फा) द्वार, द्वार (स्त्री), प्रति
(ती) द्वार ।

—बदर, कि वि, गृहाद् गृह, दारे दारे, अनुद्वारम् ।

—बदर फिरना, मु०, दारिद्र्येण परिभ्रम (भ्वा प से) ।

दरकना, कि अ (स दर >) मज्ज विट् निभिद् (कर्म), स्फुट (तु प से) निद्रल (भ्वा प से) ।

दरकाना, कि स, व 'दरकना' के प्रे रूप ।

दरकार, वि (फा) अपेक्षित, आकाक्षित, आवश्यक ।

दरकिचार, कि वि, (फा) दुरे आप्तात्मा पृथक् निष्ठानु, का कथा ।

दरस्त, स पु (फा) वृक्ष, तल ।

दरवास्त, स स्त्री (फा) निवेदन ७ निवे दनपत्रम् ।

दरगाह, स स्त्री (फा) देशली ७ न्याया 'व

३ (गृह्य) समाधि (पु) ४ मदिर, देशालय ।

दरज, स स्त्री, दे 'दगर' ।

दरद, स पु, दे 'दर्द' ।

दरदरा, वि (म दरण >) अर्द्धचूणिन, सामिपिठ ।

दरदा, स पु (फा दर) विट्क, कपोत पालिका २ कपोतबिन्दुम् ।

दरदान, स पु (फा । मि स, दारवान्) दारपाल, दौवारिक ।

दरदानी, स स्त्री (फा) दौवारिकता, दारपयन ।

दरदार, स पु (फा) रात, सभाकुल, आश्वान वी २ अधिकरण, न्यायधर्म, सभा, व्यवहारमन्त्र ।

दरयारी, स पु (फा) रात्रमभायम् (पु), मध्य, मेधन, रात्रवृत्तम्, अश्वानचर ।

दरमियान, स पु तथा कि वि, दे 'मध्य' ।

दरमियानी, वि (फा) दे 'मध्य' ।

दरयाप्रत, वि, दे 'दरियाप्रत' ।

दरवाजा, स पु (फा) दे 'दर' २ दे 'विवाज' ।

दरवेश, स पु (फा) साधु (पु), मन्त्रा मित्र, मित्र (पु) ।

दरय, स पु (म दर्ज) दर्शन, वीक्षण ७ स, आगम मिलन ३ सौन्दर्यम् ।

दरौती, स स्त्री (म दार) लवित, शयन कर्तनी, गडगीरम् ।

दराज, स स्त्री (अ द्वाजर) चलमपुट, निष्कर्षणी ।

दराज, वि (फा) दीर्घ, लम्ब ।

दराह, स स्त्री (स दर र) छेद, भेद, स्पर्श, भिदा, भय ।

दरिद्रा, स पु (फा) द्वापद, हित गानुर्क पिशिताश, पशु (पु) जीव ।

दरिद्रि दी, वि (म दरिद्र) अधन, निर्धन जर्जिनन, नि र्व, अर्धधन द्रव्य विभव, हीन, दीन, दुर्गत ।

दरिद्रता, स स्त्री (म) दारिद्र्य, निधनता, अक्रान्ता, दुर्गति (स्त्री) इ ।

दरिया, स पु (फा) नदी, सरित् (स्त्री) २ सागर ।

—दिल, वि (फा) उदार, दानशील, बदान्य २ महानुभाव, उदारोत्तम् ।

दरियाई घोडा, स पु (फा + हि) करिया दम (न), नदीघोष टक ।

दरियाफ्त, वि (फा) ज्ञान, विदित । ■ स्त्री, जाकिफार ।

दरी, स स्त्री (म) दे 'गुका' ।

दरी, स स्त्री (म स्वर >) कुप धा, आरु रण, परिभ्रम ।

दरीचा, स पु (फा) बानायन २ दारकम् ।

दरीबा, स पु (फा) ताम्बूलपत्र, ताम्बूल पत्रद्वय, ७ द्वय, विरणी गि (स्त्री) ।

दरेग, स पु (फा) अलवि (स्त्री), विमुक्तता ।

दर्ज, वि (फा) नितिन, लेख्ये निवेशित ।

—करना, कि स, लिख (तु प से), लेख्ये निदिश (द्वे) ।

दर्जन, स पु (अ टनज) द्वादशक, द्वादश समूह ।

दर्जा, स पु (अ) श्रेणी गि (स्त्री), वर्ग, छात्रगण २ कोटि (स्त्री), काष्टा ३ पत्र, पदवी वि (स्त्री) ४ क्रम, परम्परा ५ भूमि (स्त्री) (मकान की मजिद) । कि वि, पुण, नार, गुणितम् ।

—य दर्जा, कि वि, जमरा, जमण, राने श ।

दर्जिन, स स्त्री (फा दर्जा) तुत्रवापी, (मी) निरी, मुनिकमोपनीविनी ।

दर्जी, स पु (फा) तुत्रवापि, नू (मी) रिक, वयमेव, मुधिरमोपनीविन ।

ददं, म पु (का) पीना, व्यथा, दुःखा, वेदना,
अ (आ) ति (स्त्री) यानना, क्लेश, जट
कृच्छ्र २ वरणा, दया, महादुःखी (स्त्री)
३ हानिनाश-दुःखम् ।

—गुदां, म पु (का) वृक्ष (का) वेदना, गुद
शूल मयः ।

—नाक, वि (का) दुःखद कष्टप्रद, क्लेश
वर [स्त्री (स्त्री)] मत्पाक ।

—मर, म पु (का) शीघ्र, शूल पीना-व्यथा
शिरोंवेदना ।

दर्दमद, वि (का) पीणित, व्यथित, दुःखित
२ दयालु दयावान् ।

दर्दवी, म स्त्री दिशः शुभली (उन्मेषमेव)

दर्दी, वि (का दर्द) दे 'दर्दमद' ।

दर्प, म पु (म) अभिमान, मान, स्वयं
विलोचन (स्त्री), गर्व, अहङ्कार, अत्येष
२ उन्मत्ता, उद्धतः ।

दर्पक, म पु (म) इप्त, अहङ्कारित, गर्वित,
अवन्ति, उद्धतः ।

दर्पण, म पु (म पु न) सुदूर, आदश,
आमदश, वक्र, कर्कर, दर्शनम् ।

दर्पित, वि (म) गर्वित नात, इप्त नात,
अवन्ति नातम् ।

दर्म, न पु (म) कुशभेद २ कुश ३ लल
पन्न, काशः ।

दर्, म पु (का) भ्रष्ट-मवाध, पथ मार्ग,
दुर्गमचर, गिरिदासम् ।

दर्शक, म पु (म) दृष्ट (पु), प्रेक्षक,
वीक्षक, दर्शित् २ (मभा आदि के) पार्षद,
पारिषद, मार्गाधिक ३ प्रसादक, प्रदर्शक ।

दर्शन, म पु (म न) वि-आ भव, लोभ,
वि, रक्षण, सांस्कृत्य, चायुषदान, निर्धन,
निमान्न २ भ, मित्र, ममागम, मया
(स्त्री) ३ लक्ष, विद्या-आन्व-ज्ञान ४ नेत्र
५ दर्पण ।

दर्शनीय, वि (स) भव-आवि, लोकनीय,
शुणीय, निभास्नीय २ मनोहर, अमिराम ।

दर्शनी हुडी, म स्त्री, सप्त गोप्य घनार्ण
देशपथम् ।

दल, स पु (स पु न) सेना, सैन्य २ मय,
गण, समूह ३ पक्ष, पलाय, एव, छट, छटन
४ अर्द्धाण्य-स ५ चक्र, मण्डली ।

—पति, स पु (स) सेना, नी (पु) नायक,
अभूषित (पु) २ अग्रगण्य (पु), अध्यक्ष,
प्रमुख, नायक ।

दलकना, कि अ दे 'दरवना' २ दे 'दराना' ।

दलदल, स स्त्री (स दलदल) कर्म, पक्ष
व जवाल् २ २ अनूप, कच्छ, भू भूमि
(स्त्री), वच्छ ।

दलदली, वि (हि दलदल) पक्षपित्त, पक्षित,
मरुदप, कर्ममय [स्त्री (स्त्री)] २ अनूप,
[स्त्री (स्त्री)], नल आङ्ग पूर्ण-मय ।

दलन, म पु (म न) पेषण, दलन, चूर्जन,
निगम, मदन २ वि, नश ध्वस, संहार ।

दलना, कि स (स दलन) स्थूलस्थूल पिष्ट
सूद (र प अ) सूद (क् प से) चूर्ण-
गुण्ट (सु), निर्दल (भवा प से) २
सपीड (सु), पादतलेन सूद ३ पेषण्यादिभिः,
दिवा सण्ट (सु) नक्षत्रीक ४ जगत् ध्वम (दे) ।
स पु दे 'दलन' ।

दलनेवाला, म पु, स्थूल, पेषण मर्दक-चूर्णक ।

दलनदल, स पु (स दल + हि दल) मेरुमाला, कदम्बिनी, वनपत्नी २ मङ्गी चमू
(स्त्री) ३ दुहल्यमय ।

दलनाना, कि प्रे, व 'दलना' के प्रे रूप ।

दलहन, स पु (हि दल) दाली दिदल-
वैदल, मूलान्त-उपयुक्तम् ।

दलहरी, म पु (हि दल) दाली वैदल,
विकेद विकृतिविक्रम ।

दलादली, म स्त्री (स दल-ल >) दल
गण मय-वर्ण, स्पर्श विविधता प्रतियोगिता ।

दलाळ, स पु (अ) परार्थे क्रयविक्रययो
नक, क्रयविक्रयमहायक, मध्यस्थ ।

दलाली, म स्त्री (अ दलाल) क्रयविक्रय
महायकत्व २ क्रयविक्रयमहायकत्वेनम् ।

दलित, वि (मं) राहित, चूर्णित, मर्दित,
अकलीकृत २ अवन (ना) मित, अवशीष्ट
३ अशुद्ध, अत्यन्त ४ नाशित, ध्वसित ।
म पु, अशुद्ध, नीच, अत्यन्त, ५ हरित ।

—उद्धार, म पु (स) अशुद्ध अत्यन्त हरि-
तन, उज्ज्वल (स्त्री) उज्ज्वल-उद्धार ।

—धर्मा, म पु (स) अशुद्ध अत्यन्त नीच,
कर्मा अनुदाय ।

दलिया, स पु (हि दलना) ४८लित्,
 दलित सलित मलित, अत्रम् ।

दलील, स स्त्री (ल) तक, दुक्ति (स्त्री),
 हेतु (पु) २ वाद, बाद, मवाद विवाद,
 शास्त्रार्थ ।

दल, स पु (म) दे 'दावानल' ।

दवा, स स्त्री (का) ओषधि (स्त्री),
 ओषध भेषज २ उपचार, (त्रिकित्वा ३ प्रति
 (ती) हार, प्रतिविधानम् ।

—दावा, स पु (का) औषधालय, भेष
 जालय ।

—दारु, स स्त्री (का + भ) उपक्रम,
 उपचार त्रिकित्वा ।

दवाग्न, स स्त्री } स पु, दे 'दावानल' ।

दवानल, स पु }
 दवात, स स्त्री (अ दावात) ममी, कूपी
 धानी धान पात्र भाजन, मेला, नद-जडा
 अधुन ।

दवामी बहोरहन, स पु (का) भूमिपरम्य
 स्वादिप्रभ ।

दश, वि दे 'दस' ।

—भानन, —भास्य, —कठ, —कषर,
 —घोष, —मुष्, स पु, (म) रावण ।

दशन, स पु (म पु न) दे 'दश' ।

दशम, वि (म) दे 'दशम' ।

दशमलव, स पु (म) दशमविन्दु (बीन
 गणित) ।

दशमी, स स्त्री (म) चात्रमामस्य शुक्ला
 कृष्णा वा दशमी तिथि (पु, स्त्री) २ मरणा
 बन्धा ३ विमुक्तवस्था ।

दशमूल, स पु (म न) पात्रभेद (वैचक्र) ।

दशरथ, स पु (म) अववेशो नृपतिशेष,
 श्रीरामचन्द्रस्य पिता ।

दशहरा, स पु (म स्त्री) गगा, गामीरथी
 २ गगाया अवतरणतिथि, ज्येष्ठशुक्लदशमी
 ३ उत्तमिथी गगावतरणोत्सव ४ विजया
 दशमी, रावणवधतिथि (पु, स्त्री), आश्विन
 शुक्लदशमी ।

दशोश, स पु (म दशाश >) दशम, अंश
 भाग ।

दशा, स स्त्री (म) अवस्था, स्थिति वृत्ति
 गति (स्त्री), भाव ।

दस, वि (म दशम्) । स पु, उक्ता सख्या,
 तन्की (१०) च ।

—गुना, वि, दस, गुणगुणित ।

—प्रकार से, कि वि, दशपा (अन्य) ।

—चार, कि वि, दशवृत्त (अन्य) ।

दसवाँ, वि (म, दशम मी मम्) ।

दसन्दोजी, स स्त्री (का) हस्तशेष, पर
 कार्यचर्चा ।

दस, स पु (का) अनि(ती)मार, द्रवमन्
 २ हस्त, कर ।

आब-जह् वाले—, स पु, आमरक्तानिमार ।

आबवाले—, स पु, आमरक्तानिमार ।

लहवाले—, स पु, रक्तानिमार ।

—कार, स पु (का) शिल्पिन्, शिल्पकार ।

—कारी, स स्त्री (का) शिल्प, शिल्पविद्या,
 हस्त, शिल्प कमल (न) क्रिया ।

—दात, स पु (का) नाम हस्त, अक्षरम् ।

—द्वत करन, कि म, स्वनामन् (न)
 लिप् (तु प से), हस्तक्षर कृ ।

—यस्त, कि वि (का) साक्षरि, अक्षरलि
 बद्ध्या ।

दस्तक, स स्त्री (का) द्वार, आयात-ताम्न
 प्रहार ।

दस्तरदास, स पु (का) मन्त्रवन्ध, पल
 वप ।

दस्ता, स पु (का दस्त) मुष्टि (स्त्री),
 वारण । (राट्ग का) मल-स्मर (पु)
 २ मुमल-ल ३ पत्रवृत्तिदिशि (स्त्री)
 ४ मैत्रिकमध ५ दे 'गुल्दस्ता' ।

दस्ताना, स पु (का) ॥ दस्तान, बरकत ।

दस्तावर, वि (का) वि, रेवकदेवन,
 घोषन, मारक ।

दस्तावेज, स स्त्री (का) व्यवहार-ममय,
 पत्र लेख ।

दस्ती, वि (का दस्त) हस्त, वर, हस्त
 २ वाग्यक, त्पुमुष्टि (स्त्री) ।

दस्तर, स पु (का) प्रथा, रीति, (स्त्री)
 २ नियम, विधि (पु) ।

दस्तूरी, स स्त्री, (का दस्तूर >) (वणि
 मिधर्षनिकदामेभ्यो देव) प्रथाशुल्कम् ।

दस्यु, स पु (म) चौर, लुट्ट, २ अनाथ,
 ३ स्त्री ।

दह, म पु (म ह्र >) *महिर्गर्भ ० अट
३ जगत्वन ।

दहक, म स्त्री दे 'धक्क' ।

दहकना, कि अ (स दह्) दे 'धक्कना' ।

दहकान, स पु (का) कृषाण, कृष (पि)-
क, कृषावन । वि, अश, मूढ, अशिष्ट ।

दहकाना, कि म (हि दहकना) दे
'धक्काना' ।

दहन, म पु (म न) ज्वलन, दाह, प्लोष
० (म पु) अग्नि (पु) ।

दहलाना, कि अ (म दर डर >) भयेन कप्
बेप् (भ्वा आ से), वि, वम् (भ्वा दि
प से) ।

दहलाना, कि प्रे, व 'दहलाना' के प्रे रूप ।
दहलीज, म स्त्री (का) देहलो, गृहाव
भ्रष्टणी ।

दहनात, स स्त्री (का) ज्वाम, आतक,
भीति (स्त्री) ।

दहसेरी, म स्त्री (म दशमेरी) दशमेरी ।

दहाई, स स्त्री (का दह) दशरथ ० दगक,
दशनि (स्त्री) ३ अकगगनाया द्वितीयस्थान
४ दशमाश ।

दहाड, स स्त्री (अनु) गर्जित, गर्जन-ना,
महत्-दीर्गगभीर, नाद शब्द ० आवि,
क्रोश आर्तनाद ।

दहाडना, कि अ (हि दहाड) गन्-रस्-नद्
नर्द् (भ्वा प से) ० आ-उद् विभ्या,
क्रुश (भ्वा प अ), सचीत्कार रुद्
(अ प से) ।

दहाना, स पु (का) विस्तीर्णमुख ० द्वार
३ गन्धामुग ३ नदीमुखम् ।

दहिना, वि (म दक्षिण) अपसम्भ, वामेनर,
सन्धेनर २ तुष्ट, कृपातु ।

दहिने, कि वि (हि दहिना) दक्षिणेन,
दक्षिण, दक्षिण *प्र-ग्यादि ।

दही, म पु [स दधि (न)] क्षीरन,
विरल, मगन्ध, पयस्य, द्रव्य-स, शीघ्रम् ।

दहेज, म पु (अ जहेज) शुक्क, यौतुक,
भीषन, शुक्क, वाहनिकम् ।

दाँ, म पु, (स-दा) बार, कृत्व (दोनों
अव्य) । (का) वि, (समाप्तान् मे)-अ,
(हिस-वर्दा=गणित ३) ।

दाँपू चाँपू, कि वि (स दक्षिण+वाम >)
दक्षिणतो वामतश्च, दक्षिणवामपार्श्वयो, इत
रान, अत्र तत्र ।

दाँत, स पु (म दत) दशन, रदन,
सादन, रद, दिन, सरु (पु), दश ।
(नामने के आठ=छेदक-कनक, दन्ता, माध
के चार=भेदक-रदनर, दन्ता, उनमें पिठले
आठ=अग्रचवणर-दन्ता, पिठले चार=चर्व
णर-दन्ता) ।

—उगना, कि अ, दता उद्गाम् (भ्वा प
अ) अ-उद् (कम्) । स पु, दतोद्गम ।

—किचरि चाना, } कि अ, (कोरेन) दतैर्दतान्
—किचरि चाना, } वृष (भ्वा प से) निष्पिप्

—चबाना, } (ह प अ) विषद् (प्रे) ।

—रीसना, } म पु, दत, ध्वंग-निष्पेप ।

—का दर्, स पु, दत, पीडा शुल्म ।

—का पेस्ट, स पु, *दतपे ।

—का बुरदा, स पु, दतकूर्चक, कम् ।

—का सज्जन, म पु, निक्षुक्कणम्, दनमा
जंत, रदक्षीद ।

—खोदनी, म स्त्री, दतोन्नेरानी, दतक्षोपनी ।

—बनानेवाला, स पु, दत, वैष विरिस्मक ।

—खट्टे करना या तोड़ना, मु, वि प पा जि
(भ्वा आ अ), अभि पराभू (भ्वा प से) ।

—तले उँगली दबाना, मु, अत्यर्थ विस्मि
(भ्वा आ अ), विस्मिन् चकित (वि) भू ।

—निकालना, मु, हम (भ्वा प मे)
२ स्वायाग्यता प्रकाश (प्रे) ।

—रखना, लगाना या होना, मु, अत्यंत
अभिन्नात् (भ्वा प मे) ।

दाँता, म पु (हि दाँत) दे 'ददाना' ।

—किचकिट, } स स्त्री, कल्ह, वाग्बुद्ध

—किचकिट, } २ दे 'गालीगलीन' ।

दाँती, स स्त्री, दे 'दरानी' ।

दापत्य, वि (म) यतिपत्नी जायापति विषयक,
वैवाहिक, जापत्य । स पु (म त) दाम्पत्य,
मवध व्यवहार, जास्त्यम् ।

दामिक, वि (म) दे 'दभा' ।

दाइल-ना, स पु, दे 'दहेज' ।

दाई, वि स्त्री, दे 'दहिनी' ।

दाई, म स्त्री, (स भावी, का दाप) मातृना,

उपमातृ (स्त्री), अकपाली २ माविका,
प्रसवशरिणी ।

—गीरी, म स्त्री, गर्भगोचनविद्या, प्रमत्त मृति,
कार्य-यमन (न) ।

—से पेट छिपाना, मु, रहस्यविदो रहस्य
गुह (भ्वा उ वे) ।

दाऊ, म पु, (म देव >) अग्रज, ज्येष्ठभ्रातृ
२ वल देव गम, श्रीकृष्णाय ।

दासायण म पु (म) दक्षप्रनाथनिकुलपक्ष
० सुवर्गम् ३ आभूषणम् । वि दक्षगोत्रीय ।

दासायणी, म स्त्री (म) अश्विन दिनश्रावम्
२ मती ३ हुगो ४ अदिनि (स्त्री)
५ दक्षगोत्रन्या ।

—पति, सं पु (स) शिव २ चन्द्र ।

दाक्षिणात्य, म पु (स) दक्षिणप्रदेश, निवा
मिन्-वाहन्य २ नारिकेल अर्ध-शिरः,
फलम् । वि दक्षिण-मर्मा पञ्च प्रदेशीय ।

दास्य, म स्त्री (स दाक्षा) गोमन्त्री, स्वर्दा,
मृदीरा, रसावा, गुच्छफला २ शुद्धदाक्षा
३ दे 'मुनका' ।

दाक्षिण, वि (फा) प्रविष्ट, निविष्ट ० समि
क्षित, समाविष्ट ३ न्यस्त, निक्षिप्त ।

—प्राजिज, स पु (फा) भवत्वन्वामित्व,
परिवत ।

—दक्षतर, वि (फा) लेख्यगारे निक्षिप्त ।

दाक्षिणा, स पु (फा) प्रवेष्टा प्रनम् ।

दाग, म पु (फा) अग, निष्ठ २ कल्प,
लान, दोष ३ तप्तगोदमुद्राया ४ रिदु
(पु), तिल ५ म् ।

—दार, वि (फा) अग्नित, विहित ० मर्नि
लक, विदुमन् बहुर ३ दपित, कल्पित ।

—लगना, वि अ, कल्पित-दृष्टित-लपित
(वि) भू २ तप्तगोदमुद्राया (वि) भू ।

—लगना, वि स, दुप (प्रे), वलनयति
(ना धा) ० (तप्तगोदमुद्रया) अवयति
विहयति (ना धा) ।

दागना, वि म (फा दाग) दे 'दागलगना'
२ लाहदिगोत्र प्रक्षिप (तु व अ)-प्राप्त
(वि प म) ।

दागी, वि (फा दाग) दे 'दागदार' ।

दाघ म पु (म) ताप, दाह, उ मन् (पु) ।

दादिभ, म पु (स) दे 'अनाद' ।

दाद्वि, स स्त्री, (स दादा) दद्या, जम,
चर्वणदत्त ।

दाद्वि, स स्त्री (अनु) गर्भित, गर्भन ना
२ नीत्वार ।

दाद्वी, स स्त्री (दाद्विका) कुच चै, श्मश्रु
(न), व्यजन, कोट ।

—ज्वर, म पु, दग्ध, कुचैश्मश्रु (गालीमेद) ।

—चनवाना या मुझना, कि प्रे, कूर्च मुह
(चु)-भाषण (प्रे) ।

दाता, स पु (म दातृ) दानकर्तृ (पु)
वदान्व, दानशील, दातृ (पु), मुनिर ।

[दात्री (स्त्री) = दानस्त्री] ।

दानु(सौ)न, म स्त्री (हि दातृ) दान-वाष्ट
धावनम् ।

दाद्वि, म स्त्री, दे 'दद्वि' ।

दातृ, म स्त्री, (फा) न्याय, न्यायता ।

—वेगा, वि म, गुणावगुणान् विविच्य प्रशान
(भ्वा ष ने) ।

दादा, म पु (म तात >) पितामह, विदु
जन ० अग्रज ।

दाद्वी, म स्त्री (हि दादा) पितामही विदु
जननी ।

दादुर, म पु, (स दद्वि) मद्वि, मेव ।

दान, म पु (म न) त्याग, उद्वि, मर्ननं
सग, विश्रान्त, विनय, मिश्रादान ० प्रदान
ददन, दक्षि (स्त्री), अतिमान ३ गजमद ।

—करना या देना, वि म, मत्कार्येषु पुण्यार्थे
वित्त विसृ (तु व अ)-व्यय (चु, भ्वा
उ म) ।

—यम, स पु (म) भिक्षा, दान, (पुण्यार्थे)
त्याग ।

—यत्र, म पु (म न) दानलेय ।

—पात्र, म पु (म न) दान, भाजन मन्त्रा
२ दानग्रहणाभिरारित ।

—पुण्य, म पु (म न) दे 'दानयम' ।

—दाल, वि (म) उदार, त्यगिन्, वदाय,
त्यागशील, दानशील ।

दानय, म पु (म) राक्षस, रक्षन् (न) ।

—दन्ध, म (पु) वणि ।

दानयी, वि (म) दानवीय, दानव, उचित
मन्त्रिणम् । म स्त्री (म) दानव, पत्नी भाया ।

दाना, म पु (फा दानद्व) अग्रज पिता

० भञ्ज, भान्य ३ गुम्बिका ४ पिक्वि, रक्तव्री, स्फोक्क ।

—पानी, स पु (का + हि) अन्नजल, जलाजम्, मद्यपेयम् ।

—पानी उठना, मु. न्यवसाय-आगोषिका, समाप्ति (स्था) अवसानम् ।

—(नि) दाने को तरसना, मु. क्षुषया दुःश्रुत्या श्रु (तु आ अ) ।

दाना, वि (का) प्राप्त, बुद्धिमत् ।

दानाई, ॥ स्त्री (का) बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता ।

दानी, वि (म-निन्) दे 'दानशील' तथा 'दाना' ।

दानेदार, वि, कण शिका, मय [-यी (स्त्री)] ।

दाब, स स्त्री, दे 'दवान' ।

दावना, कि स, दे 'दवाना' ।

दाम, स पु (म दाम् न स्त्री) रज्जु (स्त्री), शुण, सदान २ माला, हार ३ समूह ४ समार ।

दाम, स पु (का) मि म 'दाम' पाश, जाल, बागुला ।

दाम, स पु (हि दमही) पञ्चचतुर्विंशभाग २ मूल्य, भर्ष, परन ३ धन ४ दाननीति (स्त्री, राजनीति) ।

दामन, स पु (का) चोलादीना निम्नभाग, बत्ताचल, वमनात् २ उपत्यका ।

—पकड़ना, मु, दारण प्रपद (दि आ अ), आ उपास, भ्रि (भ्वा उ मे) ।

—फैलाना, मु, पाच् (भ्वा उ से) ।

दामाद, स पु (का) जामाद (पु), पुत्री पति (पु), बन्धावेदिन, दुहितृष्व ।

दामिनी, स स्त्री (॥) तटि-विचुद (स्त्री), चञ्चला ।

दामोदर, स पु (म) श्रीकृष्णचन्द्र २ विष्णु ।

दाय, स पु (स) पैतृक, पैतृक, रिक्थ धन, गौत्रधन २ यौतुर्कादेयधनम् ।

—भाग, स पु (स) दाय-रिक्थ, विभाग वटन-व्यसनम् ।

दायक, स पु (स) दे 'दाना' [दानिका (स्त्री)] ।

दायजा, स पु (स दाय >) दे 'दहेज' ।

दायर, वि (का) चरत् (शत्रव), बतमान ।

दावा—वरना, कि स, अभियुक् (र आ अ,

तु), राजकुले निविद (मे), अभियोग प्रवृत्त (प्रे) ।

दायरा, स पु (अ) चक्र, मडल, वृत्तम् ।

दायाँ, वि (स दक्षिण) दे 'दहिना' ।

दायित्व, स पु (स न) उत्तरदायित्व २ दानुत्पन्न ।

दायें, कि वि (हि दाया) दे 'दहिने' ।

दार, स स्त्री [म दात (नित्य पु बहु)] कलष पत्नी, माया ।

—कर्म, स पु [म-मर (न)] विवाह, पाणि ग्रहणम् ।

दारक, स पु (म) शिशु (पु), बाल, बालक २ पुत्र तनय ।

दार(ल)चानी, स स्त्री (स दारु + नीन = देशविशेष >) दे 'तन' ।

दारु, स स्त्री, दे 'दार' ।

दारिद्र, द्र, द्रव्य, स पु (स दारिद्र्य) निर्धनता, अकिंचनता, दरिद्रता ।

दारु, स पु (म न, कहीं-कहीं पु) काष्ठ २ देवदारु (पु न) ।

दारण, वि (स) घोर, विषम, विवद, दुःमह, बडोर, २ भीष्म, भयङ्कर ।

दारुहलारी, स स्त्री (स दारुहारीश) दावों, पीना, पीनिका ।

दारु, स स्त्री (का) औषध, भेषज २ मय, सुरा ३ दे 'वारुद' ।

—दरपन, } स स्त्री, निमित्ता, उपकार ।

—दवा, } स स्त्री, निमित्ता, उपकार ।

दारोगा, स पु (का) अध्यक्ष, अधिष्ठान (पु) निरीक्षक २ दे 'धानेदार' ।

दार्शनिक, स पु (स) तत्त्व, विद्-वेत्तृ (स व पु), दर्शनशास्त्रविद्वत् ।

दाल, स स्त्री (स दाल = बोरी >) दाली, द्विरलान्, वैदल, शिवा-विका, हरेणु (प), हरेणु, शमी-शम्बी, भान्यम् ।

—इलिया, मु, स्नाभोपनम् ।

—ज गलना, मु, अममय-अशक्त (जि) स्था (भ्वा प अ) ।

—जै काला, मु, सार्वभौमता ० कुरहस्य ३ बुल्डगम् ।

—रोटी, स स्त्री, मामान्याहार ।

दालचीनी, स स्त्री, दे 'तज' ।

दालन, स पु (म दलन >) दन्तरोगमेद,
दतक्षय ।

दालमोठ, स स्त्री (हि दाल + मोठ) स्नेह
भञ्जितदाली, मन्वण ।

दालान, स पु (फा) दे 'बरामदा' ।

दालिम, स पु (स दालि (डि) म भा)
(वृक्ष) कुचफल, शुश्रुवलम्भ । (फल)
कुचफल, रक्तबीज, दालि (डि) मम् ।

दावे, स पु (स प्रत्य दा >, उ एकदा)
पयाय, परिश्रुति (स्त्री), वार २ अवसर,
बेला, कायबाल प्रमग ३ उपाय, युक्ति
(स्त्री) ४ छल, उपट ५ मल्लयुद्धयुक्ति
(स्त्री) ६ निभृतावस्थिति (स्त्री) ।

—पर लगाना, सु, पण् (भ्वा आ से, पठ्ठी
के साथ, उ 'रूपयन्त्य पणने') ।

—लगाना, सु, अवसर लभ (कर्म) ।

दाव, स पु (म) वन २ दावानल ३ अग्नि
(पु) ४ दाह ताप ।

दावत, स स्त्री (अ) भोजन, निमग्न २
विशिष्टभोजनम् ।

दावा, स पु (अ) स्वत्वप्रतिपादन, स्वा
मित्वप्रकाशन २ स्वत्व, अभिवार ३ अभि
योग भाषा, पत्र ४ अभिवोग, पूर्वपक्ष, भाषा,
भाषावाद ५ प्रताप, प्रशुत्य ६ दृढोक्ति
(स्त्री) ७ प्रतिका पक्ष, पूर्वपक्ष ।

पूर्वपक्ष स्मृत पादो, दिपादश्चोत्तर स्मृत ।
त्रिपादादल्पा चान्य चतुर्थो निगय स्मृत ॥

—करना, क्रि स, अभियुज (ह आ अ,
चु) दे 'दायर' के नीचे २ स्वत्व प्रतिपाद
(प्रे) ।

—प्रारिज करना, क्रि स, अभिवोग अपाम्
(दि प से) निराकृत ।

—गौर, स पु (अ + फा) अभिवोगम्

—दार, स पु (अ), अधिन, वार्दिन, अभिवो
गिन, मूनक, वायाभिन २ स्वत्वप्रतिपादन,
स्वामित्वप्रकाशक ।

दावानल, स पु (म) दा(द)वाग्नि (पु),
वनवह्नि (पु), द(दा)व ।

दास, स पु (स) भिन्न, मृत्य, भुविष्य,
दामिय, दामिर, दे 'नौर' ।

दामता, स स्त्री (म) दामतर, दाम, भाव
वृत्ति (स्त्री) ।

दासानुदास, स पु (स) अनिघ्न मित्र,
सुचलमेवम् ।

दासी, स स्त्री (स) बेगी, भुविष्या, दे
'नौरानी' ।

दासेय, स पु (म), दामीपुत्र २ दास ।
दास्तान, स स्त्री (फा) कथा २ वृत्तान्त
३ वर्णनम् ।

दाम्ब, स पु (स न) दे 'दास्ता' ।

दाह, स पु (म) दाहन, ज्वालन, भस्मी
करण २ शब्दाह, अन्वेष्टि मृतर, सम्भार
जिवा ३ साप, प्लोप, शोर, मन्ताप ४
ईर्ष्या ।

—कर्म, स पु [म मन्द (न)] दे 'दाह' (२) ।

दाहक, क्रि (म) तापन, दीपन, प्लोपन ।

दाहना, क्रि म दे 'नाना' ।

दाहिना, क्रि, दे, 'दहिना' ।

दाहिने, क्रि वि, दे 'दहिने' ।

दिक्, स स्त्री [स दिश (स्त्री)] दिशा ।

—पाल, स पु (म) आशापाना, इन्द्रादयो
दश देवा ।

दिक्, स पु (अ) क्षयरोग । वि, व्यादित,
मनपित २ अन्वस्व, रुग्ण ।

—करना, क्रि म, नप्-व्यध् (प्रे), पीट् (सु),
वाप (भ्वा आ से) ।

औतों का—, स पु, अ-प्रश्रय ।

दिक्कत, स स्त्री (अ) काठिन्य, वाधा, कष्टम् ।

दिखलाना, क्रि स, व 'देयना' के प्रे रूप ।

दिखलाना, स पु, दे 'दिग्गावा' ।

दिखाई, स स्त्री (हि दिग्गाना) प्रदर्शन,
व्यञ्जन, निर्देशन, प्रकाशन, प्ररटी-व्यक्तो-
करण २ प्रदर्शन-अर्थ-मूल्यम् । (हि देयना)
अव-आवि, लोकन, वि, इवण, निमालन
२ अवलोचन, शुचन-कर्म ।

—देना, क्रि अ, लृट्-दृश (कर्म), अवगाम्
(भ्वा आ से) प्रतिभा (अ प अ) ।

दिग्गाना, क्रि प्रे, व 'देयना' के प्रे रूप ।

दिग्गावट, स स्त्री (हि दिग्गाना) दे 'दिग्गाव'
अ 'प्रदर्शन' ३ २ आन्तर, वाद्य शोभा श्री
(स्त्री) ।

दिग्गावटी, क्रि (हि दिग्गाव) दृष्टिगारित,
सुभगालोचन, शृंगर, रश्मि, अनुपयोगिन,
मानवर ।

दिखावा, म पु (हि दिखाना) अठवर,
दम, आपानरमणोयना, बाह्यशोभा ।

दिगंत, म पु (स) दिशान्, दिक्प्रीमा २
श्चित्र, दिक्-तट चक्र-मण्डल ३ चतस्रो
दश वा दिश ।

दिगातर, म पु (म न) अन्या दिशा २
दिग्मध्य दिक्कोश ३ आनाश द्य, अन्तरिक्ष
४ विदेश ।

दिगांबर, स स्त्री (म पु) जैनमप्रदायविशेष २
शिव । वि, नयन, अवसन ।

दिग्मात्र, म पु (म) दिग्गतिन् २ दैता
वतादयोऽत्र दिग्गच्छका गमा ।

दिग्दर्शक यन्त्र, स पु (म न) दिङ्निरूपक
यन्त्रम्, दिग्दर्शनम् ।

दिग्दर्शन, म पु (म न) मामान्द भाधारण,
परिचय प्राप्तम् २ दिग्भाषन, दिशामिर्देश
३ दिग्दर्शकयन्त्रम् ।

दिग्विजय, स स्त्री (म पु) विजया युद्धेन
वा जगज्जय ।

विहीना, स पु (हि दाढ) *कुट्टिनिवारण
(कचनलविडु) ।

दिति, स स्त्री (म) कश्यपपत्नी, दैत्यनगनी ।

दिन, म पु (म न) अहन् (न) दिवम्,
वार, वामर गत्त, अशक, दिव (स्त्री),
पु (न) २ समय, अण्ड ।

—चङ्गना या निकलना, कि अ, रजनी प्रभा
(अ प अ), अरुण-भूय उद्ग (अ प अ),
प्रभात विभात अरुणोदय जन् (दि आ से) ।

—उलना, कि अ, दिन दिवस परिणम्
अथवा आ-अव-नम् (भ्वा प अ), अपराधो
हुत् (भ्वा आ से) ।

—दुबना, कि अ, सप्त दिवस अस्त, नाम
(भ्वा प अ) अवच्छ (भ्वा आ से) ।

—कर,
—नाय,
—पति,
—मणि,
—राज, } म पु (स) दिनेश, दे 'मूर्त्य' ।

—चटे, कि वि, उदिते सूर्ये, प्रात (अन्य) ।
—चरयां, म स्त्री (स) आदिक २ नित्य
वर्मन् (न) ।

—उले, वि वि, (अ) पराङ्गे, दिवस्य
तृतीययामे ।

—दिन, वि वि, दिने दिने, अनुसति, दिन
दिवसम् ।

—दहाडे, कि वि, दिन, काले समये एव,
दिवेव ।

—वर्दिन, कि वि, अन्वह, प्रत्यह, प्रतिदिनम् ।

—भर, कि वि, सर्व दिनम् ।

—मे, कि वि, दिवा, दिवसे ।

—रात्त, कि वि, अहानश, दिवानिश, अमोरात्र,
रात्रि नक्त, दिवन् ।

अगले—, कि वि, परेषु, परस्मिन् दिने ।

दूसरे—, कि वि, अन्येद्यु, पराहे ।

पहले या पिउले—, कि वि, पूर्वेषु, पूर्वस्मिन्
दिने ।

—काटना, मु, यथाऽपचितकृच्छ्रेण जीवन
या (प्रे) आपयति ।

—नूना रात चांयुना होना, मु, अहनिश
समृध (दि प से) भ-उप, वि (वर्म) ।

—फिरना, मु, भाग्य उद्ग (अ प अ) ।

दिनेश, म पु (म) सूर्य, भानु (पु) ।

दिनोधी, स्त्री (स दिनाथ >) दिनाथता,
दिवापता, नेत्ररोगभेद ।

दिमाग, स पु (अ) मस्तकर्तृहे, मस्तिष्क,
मस्तु, जुा पुद्गक (—म, गकी, गोर २ मति
धी-बुद्धि (स्त्री) ३ दर्प, अभिमान ।

—चट, म पु, बाचाल, बाचाट, बहुभाषिन् ।

—दार, वि (अ न-का) भीमत्, बुद्धिमत्
२ दृप्त, अभिमानिन् ।

—आस्मान पर होना या चङ्गना, मु, अति
शयेन दृप्त अवलिप्ति (वि) इत् (भ्वा आ से) ।

—में खसल होना, मु, विक्षिप्त-बाहुल प्रात
विष्ट (वि) विद (दि आ अ) ।

—सातवें आस्मान पर होना, मु, अति,
दृप्त-दक्षिण-गर्विन् भू ।

दिमागी, वि (अ) मानसिक, बौद्धिक,
मस्तिष्कसम्बन्धित २३ दे 'दिमागदार' (२२) ।

दिया, म पु (म दीप) दीपक, प्रदीप,
स्नेहाश, वज्जलध्वज, गृहमणि (पु) दोषा
स्य, दीपविलम्ब, नयनोत्तम ।

—सलाई, स स्त्री, दीपशाला ।

दिये का बाचल, म पु, दीप, वज्जल किट्ट-
ध्वज ।

दिये की ज्वाला, म स्त्री, दीप, वलिका-शिसा ।

दिये की बत्ती, स स्त्री, दीप बर्तन (स्त्री)
खोरी-शुषी, विदाहिवा ।

दियानतदार, वि, दे, 'दयानन्दार' ।

दिल, स पु (का) हृदय, हृद (न), अग्र
माम बुका बुकाग्रमास । १ मध्यम चेतन
(न) मानम चित्त, अत करण हृदय,
स्वात आत्मन् अतरात्मन् (पु) ३ माहम,
शार्थ ४ प्रवृत्ति (स्त्री), इच्छा ।

—गीग, वि (क) सिग, विवण्ण, दु गिन ।

—चस्प, वि (का) रोचय, रञ्जय, मनोहर ।

—चस्पी, स स्त्री (का) रचि (स्त्री)
२ मनोरजनम् ।

—घोर, वि (का + हि) वायर्वात्
२ रमघोर ।

—जमई, स स्त्री (का + अ जम +) मनोप
निर्भयत्व, शकाभय ।

—दरिया, वि, दे 'दरिया दिल' ।

—दार, स पु (का) दयित, वल्लभ, प्रिय
प्रेम स्नेह प्रीति, भाजनम् ।

—पसद, वि (का) चित्तावर्षक, रञ्जय, इष्ट ।

—बह, स पु (का) दे 'दिलदार' २ वाप
भेद (हि दिल के बहुत से मुहबिरे 'जलेना'
और 'जी' के नीचे मिले, कुं चर्ता दिखे
जाते हैं) ।

—रवा, (स पु (का) दे 'दिलदार' ।)

—का कमल (या वली) गिलना, सु,
आनद (भ्वा प से), प्रसद (भ्वा प अ),
मुद (भ्वा आ से) ।

—सोहना, सु, उत्साह भञ् (रु प अ) हन्
अ प अ), माहम धैर्य ध्वम (मे), अत
वि-सद (मे) ।

—मे रखना, सु, गोप्य रहस्य शुद् (भ्वा
व से)-उद् (तु) ।

—रखना, सु प्री (क प अ, तु प्रीणयति),
लुप प्रसद अनुरत् (मे) ।

—ही दिल मे, सु तूणी, नि शब्, गीन,
नोपम् ।

दिलवाना, दिलाना, वि प्रे, व 'देना' व
प्रे रूप ।

दिलानर, वि (का) शूर, वीर २ माहमिन् ।

दिलखरी, स स्त्री (का) शौर्य, वीरता,
परक्रम, विरम ।

दिलामा, स पु (का दिल) धैर्य, आत्मा,
श्रामनम् ।

दिली, वि (का दिल) हार्दिक, मानसिक
२ अभिन्नहृदय, हृदयमम् ।

दिलेर, वि (का) दे 'दिलवर' ।

दिलेरी, स स्त्री (का) शौर्य, वीरता,
साहसम् ।

दिल्लगी, स स्त्री (का दिल + हि लगना)
परि (री) हास, हास्य, नर्माण्य, परिहा
सोति (स्त्री) ।

—बाज़, स पु, बिनोद परिहास, शीर्ष,
वैहामिन् ।

दिल्ली, स स्त्री (हि दिल्ली) इन्द्रप्रस्थ,
आरन राजधानी, दिल्ली ।

—गल, वि, इन्द्रप्रस्थ—दिल्ली, न्यामिन्
सम्बन्धिन् ।

दिवगत, वि (म) प्रेन, घृन, स्वयान, स्वगत,
स्वगीर् ।

दिवम्, स पु (स) दे 'दिन' ।

दिवाध, वि (स) दिनाध । स पु, उल्लूक
२ दिनाधता ।

दिवाकर, स पु (स) दे 'दिनकर' ।

दिवाळा, स पु (हि दीया + बालना) कण
शोधनासामर्थ्य, कणदानाक्षमता ।

—निकलना कि अ, परिशि (कम), कण
शोधनाक्षमत्व ख्या (मे) ।

दिवालिषा, वि (हि दिवाला) कणशोधना
समर्थ, कणदानाक्षम, क्षीणमवस्था, परिक्षीण ।

दिवाली, स स्त्री, दे 'दीवाली' ।

दिव्य, वि (श) देव (-ओ स्त्री), अमानुष
(पी स्त्री), ऐश्वर (री स्त्री), अपाधव
(-ओ स्त्री), अलौकिक (-ओ स्त्री), रक्षगीर्
२ भास्वर, प्रकाशमान ३ अनि, स्वच्छ-मुदर
मनोदर ।

—चलु, स पु [स धुम (न)] भरीरूपेण
अलौकिक-दृष्टि (स्त्री) २ अथ ३ उपनेत्रम् ।

—ज्ञान, स पु (स न) अभिमानुष भवीर्
धैर्य, मानुषानि, ज्ञानम् ।

दिशा, स स्त्री (सं) आशा, वाडा, पट्टभ
हर्षरदिन् (स्त्री), उडुभा ।

—शूल, स पु (स न) दिग्बिदोऽगमने
निषिद्धवारा (पु) ।

—जाना या फिरना, मु, पुरोपमुत्सङ्ग वा
(अ प अ) मशोत्सङ्ग गम् ।

दिसावर, ग पु (म देशान्तर) विषयदेश,
देशान्तरम् ।

दिसावरी, वि (दि दिसावर) वैदेशिक, वि
परदेशीय, दे विदेशी ।

दिहात, स स्त्री दे 'देहात' ।

दीक्षक, म ग (म) मशोपदेशक गुण
(पु), आचार्य

दीक्षात, स पु (म) अवभृथयज्ञः ।

दीक्षा, ग त्वा (म) गुरुमुखात् यथाविधि
मन्त्रग्रहण २ यान् पूजन ३ प्रथम-उपदेश
शिक्षा, उपनय, विद्याप्रवेश ।

दीक्षित, वि (म) उपनीत, यथाविधि उपदिष्ट,
मन्त्रारान्तर प्रवेशितः ।

दीप्यता, वि अ दे 'दीप्यते' ।

दीड, म स्त्री (म दृष्टि, दे) ।

दीदा, म पु (का) दृष्टि (स्त्री) २ अव
लोकन ३ नेत्र ४ धृष्टता ।

—दानिस्ता, कि वि, दान-मुक्ति मनि, पूबक,
कामर (अव्य) ।

दीदार, म पु (का) दशन, मासालार ।

दीदी, म स्त्री (कि ददा) अग्रजा, ज्ञायमा,
भगिनी ।

दीधिति, म स्त्री (स पु) विरण, मयूत,
अशु मरीचि ।

दीन, वि (म) दरिद्र, निधन २ पित्र, विषण्ण
३ अनि नम्र विनीत ४ मग्न, दुःखित ।

—दयाल, वि (म लु) दरिद्रवत्सलः । म
पु, ईश्वर ।

—दधु, वि (म) दरिद्रमित्र, दीनानुगमिन् ।
म पु, परमेश्वर ।

—दीन, म पु (अ) धर्म ।

दार, वि (अ + का) धामर, पुण्यात्मान् ।

—दुनिया, म पु (अ) लोपरलोनी (दि) ।

दीनता, म स्त्री (म) दरिद्रता, निधनता,
अर्चनता २ आसता, कलरता ३ मोद,
विवाद ४ अनि, नम्रत्व विनय ।

दीनानाथ, म पु (म दीन + नाथ) दीन-
दयालु-वत्सल-पु, परमेश्वर ।

दीनार, म पु (म) मन्त्रमुद्रा २ स्वर्णमुद्रा
३ निष्क, तोल भार ।

दीप, स पु (स) दीप्य, दे 'दिया' ।

—माला, म स्त्री (स) दीप, आलि (स्त्री)
आली आबली-उत्पन्न मालिका २ दीपप्रति
(स्त्री) ।

—शिखा, स स्त्री (म) दीप-कलिका
ज्वाला ।

दीपक, स पु (स) म, दीप, दे 'दिया'
२ ४ अर्थात्कार राग ताल, भेद ५ अर्गन
कीटनकभेद । वि, प्रकाशक, दीप्तिर
२ पादक, मग्नितक ३ उत्तेजक ।

दीपन, म पु (म न) प्रकाशन, ज्वालन
२ जठराग्निवहन, क्षुधोत्पादन ३ उत्तेजन ना,
आवेगजननम् ।

दीपावलि-स्त्री, स स्त्री (म) दे 'दीपमाला' ।

दीस, वि (म) प्रकाशित, प्रकाशमान २ प्र
ज्वलित, प्रज्वलत् (गन्त) ।

दीप्ति, म स्त्री (स) आभोर, प्रकाश
२ आभा, प्रभा, द्युति (स्त्री) ३ कानि (स्त्री),
शोभा ।

दीमक, म स्त्री (का) उप, दीका-देहिका ।

—लगता, कि अ, उपदेष्टाभि मक्षु निष्कुष
(कर्म) ।

दीया, दे 'दिया' ।

दीर्घ, वि (म) लव, बापन, आयामवत् ।

—काल, स पु (स) समहान् नमय ।

—जघ, स पु (स) उष्ट्र २ ष्व । वि,
लवय ।

—जीवी, वि (स विन्) दीर्घविर, आयु
आयुस् आयुष्य जीविन्, आयुधम् ।

—दक्षिण, स स्त्री (स) दे 'दूरदक्षिण' ।

—दर्शा, वि (स शिन्) दे, 'दूरदर्शी' ।

—निद्रा, म स्त्री (म) लवस्वाप २ मृत्यु
(पु) ।

—सूत्री, वि (स त्रिन्) दीर्घवृत्त, विरक्तिय,
वि-त्रिन् ।

दीपयु, म स्त्री (स न) विर-दीर्घ जीवन
आयुम् (न) । वि, दे 'दीर्घजीवी' ।

दीर्घायुध, म पु (ता न) भल्ल —लम्,
कुन्त, प्राग २ शूकर, वराह, कोल
३ शल्क, खेदार । वि दीर्घ-लम् वृहद्,—
अस्-आयुध ।

दीवट, म स्त्री (दि दीवा) दीप-दीपक,
ध्वज-वृक्ष आधार, शिखार ।

दीवान, म पु (अ) राजनभा, आम्हाननी,
राजकुल २ अमात्य, मखि ३ कविनामग्रह ।

—आम, म पु (अ) *सामान्यस्थानम् ।

—झाम, म पु (अ) *विरोधास्थानम् ।

दीवाना, वि (का) उमादिन, विभिन्न दे
'पाल' ।

दीवार, म स्त्री (का) कुट्य, भित्ति (स्त्री) ।

—दीर, म स्त्री (का) भित्तिदोष ० भित्ति
स्त्री दीराधार ।

दीबाली, म स्त्री (म दीपाली) दे 'दीपमाला' ।

दुदुम, म पु } म पु दे 'नहरा'

दुदुभि म स्त्री }

दुबा, स पु (का दुबाण) गोणपुटो
मेव-मेद ।

दुख, म पु (स न) वष्ट, क्लेश, पीन,
बाधा, व्यथा, अ (आ) ति (स्त्री), दुष्ट,
वेदना, परि-स, ताप २ आपदविपद (स्त्री),
सकट ३ रोग, व्याधि (पु) ।

—उठाना या पाना, कि अ, दुसयवि
(ना धा), दुख सह (भवा आ से) -
अनुभू-उपभुन (ह आ अ) प्राप (स्वा
उ अ) ।

—देना या पहुँचाना, वि स, दुसयवि
(ना धा), तप-वध अर्ध (प्रे), पीड
(जु), क्लिष्ट (कृ प से) ।

—दाई, वि (स-दोयिन्) दुय-वष्ट-वैश
कर-द-दाद-दायक प्रद जनक-उत्पादक ।

—मय, वि (स) क्लेशमय, दुःखपूर्ण ।

—हर्ता, वि (म-र्तु) दुःख-क्लेश-वष्ट-नाशक
निवारक-हरिन् ।

दुःखित, वि (म) क्लेशित, पीणित, व्यथित,
खमान, दून, तापित, ८ परि-नाश, दुःख,
आर्त्त, दुःखान्, सन्ध्य, दुःखिन् ।

दुःखिनी, वि स्त्री (रु) विपन्ना, पीणिता,
व्याथिता, म परि-नाश, अन्ना ।

दुःखी, वि (म-खिन्) दे 'दुःखिन' (दुःखिनी
स्त्री) ।

दुःशासन, वि (म) उच्छृङ्खल, उदाम, दुःनिग्रह ।
म पु, धनराष्ट्रस्य पुत्रविरोध २ दुःशासनम् ।

दुःशील, वि (म) दुःस्वभाव, दुःशील,
दुःस्वभाव, दुःप्रवृत्ति, दुष्ट ० भृष्ट, उदर ।

दुःध्रव, वि (म) कर्म-धृति, कष्ट । म पु,
दुःस्वत्व-धृति-वृत्त, दोष (स्त्री) ।

दुःसग, म पु (म) कुमा, दुःसम, सगति
(स्त्री) ।

दुःसाध्य, वि (म) कठिन, दुष्कर, वष्टसाध्य
२ असध्य, दुःस्वचार, अशमनीय, अविशि
ल्य, निष्पाय ।

दुआ, म स्त्री (अ) प्रार्थना २ आशीर्वाद ।

दुआवा, म पु (का) दे 'दोआवा' ।

दुकडा, स पु (स द्विक) द्वय, द्वितय, दुः,
गुल, २ दे 'दुदाम' ।

दुकान, म स्त्री (का) पण्य, शाल-अगार,
आपण, विपणि (स्त्री), निपणा, कष्टी ।

—द्वार, म पु (का) आगमिक, पण्यद्वार,
विपणि, कर्मविविध, वणिज (प) ।

—द्वाना, म, पण्यशाला (अ) विधा
(जु उ अ) ।

दुखडा, स पु (म दुख) दुखदृष्टान,
वष्टकथा २ वष्ट, विपद (स्त्री) ।

दुखना, कि अ (म दुख-) पीड-विल्ला
तप (कर्म)-वध (भवा आ से) ।

दुखाना, कि स (हि दुखना) पीड-अर्ध
(जु), व्यर्थ (प्रे), दु (स्वा प अ),

क्लिष्ट (कृ प से), उप-परिम, तप (प्रे) ।

दुखिया-यारा, वि (स दुख-) दे 'दुखिन' ।

दुगता, वि (स दिगुण) दिगुणित ।

दुग्ध, म पु (स न) क्षीर, पयस (न) ।

—केन, स पु (म) क्षीर-मिटि (दो) र,
शार्कर ।

दुचित्ता, वि (स द्विवित्त) दोण्यमान,
मज्जयान, मदेहिन, सरिग्ग, दुद्धि-मति ।

दुचित्ती, म स्त्री (हि दुचित्ता) दोणावृत्ति
(स्त्री), द्वेधोभव, निश्चयाभाव, सशय ।

दुत, जण्य (अनु) अपमर अपेहि (लो) ।

—कार, स स्त्री (अनु + स कार) धिक्कार,
निरस्वार, भ्रमना, वाग्दण्ड २ अपमारणम् ।

दुतकारना, वि म (हि दुत्कार) धिक्-निरम
ह, निर, अन्त (नु भा से) २ मापमान
निम्न-अप-मु (प्रे) ।

दुतरा, वि (का दो + अ तत्फ) द्वि (द्वे) -
पय, द्वि (द्वे) पार्थ, द्वि, पश्य पनीय ।

दुधार, वि (हि दुध) क्षीरिणी, दुग्धवती,
पदमवती, पीनाध्वी (गौ इ) ।

दुधारा, वि (म द्विधा) उगमन तीक्ष्ण
निशिन । स पु, मृदगमेद, मृद्विधा ।

दुनिया, म स्त्री (अ-या) चाल (न),
ममारा २ लोक, जनना ३ नगप्रपञ्च ।

—द्वार, म पु (अ + का) गृहस्थ, गृहिन,
समारिन, २ व्यवहार, कुशल पद ।

—द्वारी, म स्त्री (अ + का) ऐकिकत्व,
प्रधानुराग, समारामक्ति (स्त्री) २ लोक,
आचार माग, रुदि (स्त्री) ३ व्यवहार
बौद्धम् ।

दुनियादी, वि (अ) नीतिर मामारिक
ऐहिक ।

दुपट्टा, म पु (हिं दो + म पट्ट >) रिपट्ट,
द्विपट्ट २ उगीष पम् ।

दुपहर, म स्त्री, दे 'दोहर' ।

दुपहरिया, म स्त्री (हिं दुपहर) बधु (धू)
क, रत्नक, बधुनीवक २ दे 'दोहर' ।

दुय(वि)धा, म स्त्री (स द्विविधा >) सदाय,
मदेह २ निर्णय निश्चय, भभाव ३ सकौच
४ आचक्षा, विविकित्वा ।

दुयला, वि (म दुर्लभ दे) ।

दुयलापन, म पु, दे 'दुर्लभता' ।

दुधारा, क्रि वि, दे 'देतारा' ।

दुधे, म पु (म द्विवेदिन) द्विवेद, ब्रह्मण्यमेद ।

दुभाषिया, म पु (स द्विभाषिन्) भाषा
यन्त्र, द्विभाषाविद् (पु) २ व्याख्या,
अर्थबोधक ।

दुमजिला, वि (का) दि, भूमभूमिक
(प्रामाद इ) ।

दुम, स स्त्री (का) पुष्ट ष्ट, नागु (नू)
ल, नून २ अनुयायिन्, अनुग ३ अग्नि
भाग ।

—द्वार, वि (का) मपुष्प, लागुज्जि ।

—द्वार मितारा, म पु, उत्ता, धूमकेतु (पु),
उत्ताप, वेतु (पु) । वि, मपुष्प लागुज्जि ।

—द्वाराकर भागना, मु, कापुष्पक-मकानर्ष
पलाय (भ्वा भा मे) विद (भ्वा प अ)
अवधान (भ्वा प मे), कादिजीक (वि) भू ।

दुमान, वि (म दुमन्म) स्निग्ध, विषण्ण,
म्लान, अवमन्न ।

दुरगा, वि, दे दो के 'नीचे' ।

दुरव, वि (स) दुष्परिणाम, कुफल, दुष्फल,

दुग्गमान २ दुर्गम, दुरतिक्रम ३ प्रनष्ट, उग्र
४ दुर्गम, दुर्बोध ।

दुर, अव्य (हिं दुर) अपसर-अपेहि (लोट) ।

—दुर करना, मु, मन्वक्तार अपस (प्रे) ।

दुराग्रह, स पु (स) दे 'हठ' ।

दुराग्रही, वि (म-हिन) दे 'हठी' ।

दुराचार, म पु (स न) दे 'दुराचार' ।

दुराचार, म पु (म) कद-आचार आचरण,
दुर, कृत-व्यवहार आचरण, दुम, अरित
केचित् नारिय शील, अनायत्वम् ।

दुराचारी, वि (स-रिन्) दुष्ट, दुरात्मन्,
पापात्मन्, पापकर्मन्, दुष्टत, दुष्चरित्र, अधा
मिक पाप, मल, शठ, लपट, विषयामक्त ।

दुराज, स पु (स द्विराज्य) द्विराजन्,
द्विराजन्ता ।

दुरात्मा, वि (म-स्पन्) दुष्ट, पापात्मन्,
दे 'दुराचारी' ।

दुस्स, वि (का) दे 'ठीक' ।

दुस्स, वि (ग) दुर्बोध, दुर्बेद, गूढार्थ, गहन,
क्लिष्ट ।

दुर्बोध, म पु (स) पूति (स्त्री), पूतिगण,
कुदुर्बाम ।

—युक्त, वि (स) दुरपूति-गभि, दुरकुत्तिन,
पूति, गण ।

दुर्ग, म पु (म न) कोटि (स्त्री), दे
'किला' । वि दे 'दुग्ग' (१) ।

अगम्य, गहन, विशमन्ध, दुर्ग २ दुर्बोध
३ निकट ।

—अधिपति, म पु (म) दुर्ग, पति पाल ईश
अध्यक्ष ।

दुर्गति, म स्त्री (स) दुर्दशा, दुर्दस्था,
२ नर-जात भोग ।

दुर्गम, वि (म) दुष्प्राप, दुरासद, दुरारोह ।

दुर्गा, म स्त्री (म) रुद्राणी, चटो, दे 'पार्वती' ।

दुर्गुण, म पु (म) अकृण, दोष, व्यमन,
दुलक्षण, कुलक्षणम् ।

दुर्घट, वि (म) दुष्कर, दुष्माध्य ।

दुर्घटना, म स्त्री (म) अनुभ-अमगल, यन्त्रा
आपात ममारपत्ति (स्त्री) २ विशद्-आपत् (स्त्री) ।

दुर्जन, म पु (म) शूल, पाप, शठ, २
'दुराचारी' के धर्मायो के पु रूप ।

दुर्जनता, स स्त्री (म) दुष्टता, खलता, शठता ।

दुर्जय, वि (स) अधृष्य अजय्य, अदृष्य,
दुरासद, अदुर् जय ।

दुर्जेय, वि (स) दे 'दुर्हृ' ।

दुर्दमनीय, वि (स) दुर्दम्य, दुर्दान्त, उदय,
दे 'दुर्जय' ।

दुर्दशा, स स्त्री (स) दुर्दि (श्री), दुर्दृष्ट्या ।

दुर्दिन, स पु (स न) मेरुचक्रो दिनम्
२ कुरिपत् काल, कृमय ममय ।

दुर्देव, स पु (स न) दे 'दुर्भाग्य' ।

दुर्धन, वि (स) दे दुर्जय २ उध, प्रचट ।

दुर्नीति, स स्त्री (स) दुर्नीति (स्त्री)
अन्ध्राय, अनाचार ।

दुर्धल, वि (स) अन्न निर्वल, अदत्त, क्षीण
अल्प, दल शक्ति, निम्, नेत्रम् सत्त्व २ हृदा,
क्षाम, क्षीण, अमान, छात, दान ।

दुर्बलता, स स्त्री (स) निबलता, अशक्तता,
अबलता २ हृशता, क्षामता ।

दुर्बुद्धि, स स्त्री (स) कुमति मदधी (स्त्री) ।
वि, अह, मूर्ख, मदमति ।

दुर्बोध, वि (स) दे 'दुर्हृ' ।

दुर्भाग्य, स पु (स न) दुर्देव, दौर्भद, भाग्य,
दुर्जात, दुर्गति (स्त्री), देव, दुर्वैराग्य विषय
विषयान् ।

दुर्भचना, स स्त्री (स) दुर्भाव, दुष्ट, बुद्धि
भाव, अम्या, मोह, द्वेष, दीरात्म्यम् ।

दुर्भिक्ष, स पु (स न) अकाल, दुष्काल,
अनदान, प्रयाम, आहाराभाव, नीवार ।

दुर्मद, स पु (स दुर् + मृद = कृत्वा) *भूवृद्ध,
*दुर्भृत् ।

दुर्मति, स स्त्री तथा वि (स) दे 'दुर्बुद्धि' ।

दुर्मुख, वि (स) *दुर्भाषिन् २ दुर्जन, कुरूप ।

दुर्योध, वि (स) अनेय, अपथ्य, जल्य,
अदम्य ।

दुर्योधन, स पु (स) भूतराष्ट्रस्य ज्येष्ठपुत्र ।

दुर्यानि, वि (स) हीन-नीच, -जानि-वण-
कुल ।

दुरि, स पु (अ०), दे० 'मोरी' ।

दुर्लभ्य, वि (स) दुस्तर, दुस्कार्य, दुर्लभ
नीय, दुर्निम्न ।

दुर्लभ, वि (स) अप्राप्य, दुःप्राप्य, विरल,
दुर्लभम् २ अत्युत्तम, अत्युत्कृष्ट ।

दुर्धन, स पु (स) दे 'गाली' ।

दुर्विनीत, वि (स) अविनय, अविनीत, उद्धत,
भृष्ट, अशिष्ट, असम्य, विद्यात ।

दुर्वैपाक, स पु (स) कुपरिणाम, कुफलम् ।

दुर्ज्ञ, वि (स) दे 'दुराचारी' ।

दुर्व्यवस्था, स स्त्री (स) दुर्व्यवस्था, कुनीति
(स्त्री), दुर्णय, कुप्रणयन, कुप्रबंध, दुर्निर्वाह ।

दुर्व्यवहार, स पु (स) दुर्वृत्ति (स्त्री),
अमरव्यवहार, अप, कार क्रिया, कुचेष्टित,
कुचरितम् ।

दुर्व्यसन, स पु (स न) दुर्गुण, दोष,
*रक्षाम्ति (स्त्री) ।

दुर्व्यसनी, वि (स निन्) दुर्गुण, दोषिन,
दुराचारिन्, पाप ।

दुर्लक्षी, स स्त्री (हि दलकता) धी (धौ)-
रितवकम् ।

—चलना, कि अ, धोरितेन गम् ।

दुर्लक्षी, स स्त्री (हि दो + सं च्छा >) (पशूना)
दिल्लता द्विपुर द्विवाद, आशान प्रहार श्लेष ।

—मारना, कि स, लक्ष्म्या प्रह (भा प अ)
आहन् (अ प अ) ।

दुर्लह (हि) न, स स्त्री (हि दुर्लहा) नव
वधू (स्त्री), वधूटी, नवीदा, नवपरिणता ।

दुर्लहा, स पु, दे 'दुर्लहा' ।

दुर्लह, स स्त्री (हि तुलार) दे 'रुनाई' ।

दुर्लार, स पु (हि दुर्लारना) उप, लानन,
चुवन, आलिगनम् ।

दुर्लारना, कि स (स दुर्लारन >) उप, लन्
(चु), आलिम् (भा प से), स्नेहेन
पराभृश (दु प अ) ।

दुश्चरित श्र, स पु (स न) दे 'दुराचार' ।
वि, दे 'दुराचारी' ।

दुलारा, वि (हि दुलार) दे 'लक्ष्मी' ।

दुशाला, स पु (का) दिशट ।

दुस्मन, स पु (का) शत्रु, मरि (पु) ।

दुस्मनी, स स्त्री (का) शत्रुता, वैरम् ।

दुष्कर, वि (स) दुस्माय, वठिन, विकर,
वष्टमाध्य ।

दुष्कर्म, स पु [स मन् (न)] कु, नार्थ
कृत्य, पाप, अपम, दुःकृति (स्त्री) ।

दुष्काल, स पु (स) कु, काल ममय २ दे
'दुर्भिक्ष' ।

दुष्कल, म पु (म न) नीच हीन-कु, कुल वश ।
 दुष्कृत, म पु (म न) दे 'दुष्कर्म' ।
 दुष्ट, वि (स) खल, शठ, पाप, दुःखान् अभद्र,
 नीच, दुष्ट, दे 'दुराचारी' ।
 दुष्टता, म स्त्री (म) दौर्ब्य दौर्लभ्य,
 कुपेष्टा पाप, दुष्टता दे 'दुरागार' ।
 दुष्प्रकृति, म स्त्री (म) दुस्स्वभाव दुःशील्य ।
 वि, दुःशील दुष्टस्वभाव ।
 दुष्प्राप्य वि (म) दे 'दुष्म' ।
 दुष्ट्यन्, म पु (म) पुण्यशीघ्रमृषिजेष
 शत्रुत्वमपि ।
 दुस्तर, वि (म) दुःपतनं दुर्गमनीयं कठिन
 दुष्कर विरक्त ।
 दुस्मह, वि (म) दुःपह अमय अमहनीय ।
 दुस्माध्य वि (स), दे 'दुमाध्य' ।
 दुहता, कि स (म दोहन) दे 'दोहना' ।
 दुहरा, वि, दे 'दोहरा' ।
 दुहाई, स स्त्री (हिं दुहन) दोहन, मृति
 (स्त्री) -भूषा ।
 दुहाई, स स्त्री (स हिं + आह्वय >) दे
 'दोही' २ आत्मनागार्थ आह्वान-आकारण
 संबोधन ३ शपथ ।
 —देना, मु, स्वार्थार्थ आह्वे (भ्वा प अ)
 आ-कृ (प्रे) ।
 दुहाना, कि प्रे, व 'दोहना' के प्रे रूप ।
 दुहिता, स स्त्री [स दुहिण (स्त्री)] दे
 'पुत्री' ।
 दुकान, म स्त्री, दे 'दुकान' ।
 दुज, म स्त्री (म द्वितीया) शुक्ला कृष्णा वा
 द्वितीया निवि (स्त्री) ।
 —का चौद, मु, दिवाप्रदीप, दुर्लभदर्शन ।
 दूत, स पु (स) वार्ता मदेश, हर, सट्टि
 स्पर्श, राज-दूत प्रतिलिपि २ प्रणिति,
 च (चा) र, गृहदूत ।
 दूती, म स्त्री (म) संचारिका, दूति (नी) का,
 शमली, दुष्ट (ट्टि) नी, सारिका २ वार्ता
 सदेश, हरी ।
 दूध, स पु (म दुग्ध) क्षीर, पयम
 (न), सान्य, ऊषम्य, उषन्य, वातनीवन
 २ कृष-क्षीर-रस ३ (गौ का) गो-दुग्ध
 रस, गव्यम् ।

—का पानी, स पु, आमिक्षामस्तु (न),
 मोरट ।
 —की जाम, स स्त्री, दुग्धप्रेत, शार्कर,
 शार्कर ।
 —पिलाई, म स्त्री, दे 'दाई' ।
 —पूत, स पु, सपत्न्यानी धनमतानी (दि) ।
 —रतन, म स्त्री, सस्तन्या, पानीपुत्री,
 धारिणी स्ननधयी ।
 —भाई, म पु सस्तन्य, पानीपुत्र, धारिण्य ।
 —मुहा, वि पु स्ननधय, शिशु ।
 स्नन-शार, ययिन्व [—मुँही (स्त्री)] ।
 —उगलना वा डालना, मु, (शिशु) दुग्ध
 उगल (तु प मे) -उगल (भ्वा प से) ।
 —का दूध, पानी का पानी, मु, न्याय,
 नव भम ।
 —की मसुरी की तरह निकाल फेंकना, मु,
 दुग्धमज्जिकावय निरस (प्रे), अविमृश्यैव
 निष्कम् (प्रे) ।
 —क दोत न दूटना, मु, दौघवे वतमान ।
 —दुडाना वा बडाना, दु, स्त-य हा (प्रे,
 हापयति) -त्यन् (प्रे) ।
 दूधो नहाना गूहो फलना, मु, धनमतानी बर्ध,
 (भ्वा आ से) ।
 —पिलाना, मु, स्नन-स्तन्य पा धे (प्रे, पाप
 यति, धापयति) दा ।
 —फटना, मु, (अम्लादियोगेन) दुग्ध विकृ
 (वर्म) जघवा नीरक्षीरे वि श्लिष (दि प अ) ।
 दूधिया, वि (हिं दूध) शुक्ल, श्वेत,
 दुग्धवर्ग ।
 —पत्यर, म पु (स) सौम्यप्रस्तर, श्वेत
 गन्तारभेद ।
 दूना, वि (स द्विगुण) द्विगुणित ।
 दूज, म स्त्री (म दूर्वा) भागनी, हरिता,
 अनता ।
 दूवदू, कि वि, (नि दो वा का रूपरु)
 सुवसुति (अन्व), समुत्पन्न ।
 दूने, म पु, दे 'डूने' ।
 दूमर, वि (स दुभर >) कठिन, दुस्माध्य ।
 दूरदेश, वि (का) दे 'दूरदेश' ।
 दूरदिशी, म स्त्री (का) 'दूरदाशना' ।
 दूर, कि वि (म दूर) दूरे, आराध (अव्य),

वि, दूरत । वि, दूर दूरस्थ, विप्रकृष्ट, अंतर
वर्तिन, दवीयस् ।

—दुराज, वि (फा) सु-अति दूर दूरस्थ ।

—दुरांक, वि (स) दे 'दूरदर्शी' ।

—दुरांन, स पु (सं) षण्डित, भीमव,
बुद्धिमत्, प्राज्ञ २ गृध, वज्रतुण्ड इ दूरवी
क्षण, दूर-दशन-यन्त्रम् ।

—दूरक्षिता, म स्त्री (सं) दूर-दीर्घ, दृष्टि (स्त्री)
दक्षित्व, बुद्धिमत्ता, अग्रनिष्पन्न, दूरदर्शनम् ।

—दुराँ, वि (स शिन्) दूर दोष-अश, दृष्टि
दक्षिण-दशक, बुद्धिमत् ।

—दृष्टि, म स्त्री (स) दे 'दूरदक्षिता' ।

—दूरान, स स्त्री (फा) दूरवीक्षण, दूरदर्शन
कथनम् ।

—दूरान्, वि (म निन्) दे 'दूर' वि ।

—दूरानी, वि (म निन्) दूरदेशीय २ निर्दे
शीय ।

—दूरान्, म पु (म न) दे 'दूरान' ।

—दूर, वि (स) दे 'दूर' वि ।

—करना, सु, दूरी-शृङ्खल २ पदात्-अधिका
रात् अवर्ण्यन्तु अन् (मे) ।

—भागना या रहना, सु, दूरे-शृङ्खला (भ्वा
प अ), सगति परिहृ (भ्वा प अ) ।

—हो, अव्य अपेहि-अपगच्छ (लोट्) ।

—होना, सु, दूरी-शृङ्खल २ नश (द्वि प वे) ।

दूरी, म स्त्री (म दूर >) दूरता-स्व, विप्रकर्ष,
दूर २ (स्थान) अंतर, अनराल, अप्पन्
(पु) भूमि (स्त्री) ।

दूरी, सं स्त्री, दे 'दूर' ।

दूरदा, म, पु (स दुर्लभ >) वर, परिणेतृ,
पाणिग्रहक, परिग्रहोत् (पु) ।

—दूरहन, म पु, वधूवरी (द्वि) ।

दूरक, म पु (रु) अपवादक, प्रतिवादक,
अभियोगिन, अभियोगन्, शेषागणक २ दृष्ट,
दुर्लभ । वि दोष-पाप-जनक २ अपराधिन,
दोषिन् इ निष्, कुल्लित ।

दूरण, म पु (म न) दोष, अवगुण, दुर्लभ
मन (म पु) रावणभ्रान्तिवोध ।

दूरित, वि (म) मरुदोष, दोषिन्, कलत्रवन्
२ (मिथ्या) निदित-वर्लित-अभिवृत्त ।

दूररा, वि (हि दा) द्वितीय [-या (स्त्री)]
२ अन्य, पर, अपर, अपरिचित ।

दमरे दिन, मि वि, पराहे, परेषु अन्येषु
(अव्य) ।

दूसरी माँ, सं स्त्री, विमातृ (स्त्री) ।

दृक्, दृग, सं स्त्री (स दृश) दे 'आँ' २
दृष्टि (स्त्री) ।

दृग्निष्, म पु (सं) विषाक्त, नैत्र नयन,
मर्मभेद ।

दृग्भूत, म पु (म न) क्षिप्रित, दिग्गन् ।

दृष्ट, वि (म) प्रगल्भ, दैविक्यवान् २ कर्कर,
वीर्यम, वक्ता ३ मबल, बलवान् ४ स्थानिन,
द्विर ५ प्रवृ, अविवल ६ आग्रहिन्, सनिर्वध ।

—प्रतिज्ञ, वि (म) प्रतिज्ञापालक, द्विरप्रतिज्ञ,
मत्य, मध अभिस्तमगर ।

—मुष्टि, वि (स) कृपण, मितपन्न ।

दृढता, सं स्त्री (सं) प्रगाढता, दैविक्यभावा
२ नैर्वै, अवलम्ब, स्थिरता इ आग्रह
निर्वध ।

दृढाग, वि (सं) बलवान्, शक्तिमन्, दुर्दरेह,
दृढपुष्ट । [-नी (स्त्री) =शक्तिमती] ।

दृश्य, वि (सं) दृग्गोर, नेत्र-दृष्टि, विषय
मात्र २ दर्शनीय, अवलोकनीय, सुंदर । स
पु (म न) दृष्टि, गावर पथ दिपय
२ रूपक, नाटक इ दे 'तमाशा' ।

दृश्यमान, वि (म) दृश्यमाण अवलोक्यमान ।

दृष्ट, वि (ङ) वि-अव, लोभित, वि, ईक्षित,
निरूपित, लक्षित २ ज्ञान, प्रकट ।

दृष्टान्, म पु (सं) उदाहरण, निदर्शन २
अर्थान्तरभेद ।

दृष्टि, म स्त्री (म) दृक्शक्ति (स्त्री), नेत्र,
नयन, ज्योतिम् (न) २ दृक्पात, अवलो
कन इ आशा ४ विचार ॥ आशय, अभि
प्राय ।

—दृष्ट, म पु (म दृष्टदृष्ट) प्रक्षिप्ता
२ गृहायवविना ।

देषना, कि मं (म दृग) दृग
(भ्वा प अ) वि-प्र, इन् (भ्वा आ
मे), अव आ वि लोके (भ्वा आ म, पु),
आलोच (भ्वा आ स, तु), निरूप
निवर्ण-लभ (तु), भन् (तु आ मे),
२ अवनिर्मुक्ति इ इन्विप (द्वि प म),
४ रक्ष (भ्वा प मे), रक्षा कृ ५ विचर्
(प्रे) ६ अनुम् ७ पठ (भ्वा प मे)

८ मनुष्य (प्रे) । सं पु, दर्शन, विज्ञेय, वीक्षण, निरूपण इ ।

—भालना, सु, निरीक्षण, परीक्षण, निभालन निर्वर्णनम् ।

—सूचना, सु, बोधन, वेदन परि विज्ञानम् । देखते देखते, सु, सम्मुखे २ सर्पाश्वादिनि ।

देखने में, मु, आपादन, बहान, प्रत्यक्षत २ आकृत्या, आवारेण ।

देखने योग्य, वि, दे० 'दर्शनीय' ।

देखनेवाला, सं पु, दर्शन, द्रष्ट (पु), वीक्षण निरूपक इ ।

देखभाल, देखाभासी, सं स्त्री (हि देखन + भालना) कार्यदर्शन, अवेक्षण निरीक्षण पयवेक्षण २ दर्शन, साक्षरकार ।

देखरेख, सं स्त्री (हि देखना + स प्रेक्षण >) दे 'देखभाल' (१) ।

देखादेखी, म स्त्री (हि देखना) दर्शन, विलोकनम् । कि वि, अनुकृत्या, अनुसृत्या, गतानुगतिकतया (मङ्गलतीका प्रकवचन) ।

देखा हुआ, वि, दृष्ट, निरूपित, निर्वाणत, निभालित ।

देख, सं स्त्री (फा) पिठर २, बृहत्स्थानी ।

देखावा, म पु (फा) म्हाली, पिठरक ५म् ।

देगची, म स्त्री (फा देगचा) वरपा, पिठरी, लघुस्थाली ।

देदीप्यमान, वि (स) अत्यत मत्तत भ्राममान-भ्रममान-घोतमान, अति, -तेजस्विन्-भासुर ।

देन, म स्त्री (हि देना) दान, वितरण २ प्रीति, दान, उपहार, उपायन, प्रदत्तवस्तु (न) ।

—द्वार, सं पु (हि + फा) दे 'द्वारा' ।

—लेन, सं पु, कुशीर, वीचीध, वृद्धिजीवन २ दानादान ने (दि) ।

देना, वि म (म दान) दा (जु उ अ), दा (म्हा प अ, वञ्जि), उदयि-सुद (जु प अ) विश्रण (जु), दद (म्हा आ मे) ऋ (प्रे, अयंति) २ (यण अदि) प्रह (म्हा प अ), वाहन् (अ प अ) ३ (किवाड आदि) (अ) पिधा (जु उ अ) । सं पु, अर्थ, प्रतिपादन, विद्या जन, ददन, उद वि मर्जन, दे 'दान' (१०) ।

देने योग्य, वि, देव, दानीय, दातव्य, विश्राणनीय, अर्पणीय, दानार्ह ।

देनेवाला, सं पु, दाव (पु), द्यायिन्, द, प्रद-दायन-दायिन् (उ मुप, द-दायन इ) २ दे 'दाना' ।

दिया हुआ, वि, दत्त, अर्पित, विसृष्ट, विश्राणित ।

दे मारना, मु, दे 'पटकना' ।

देय, वि (म) दे 'देने योग्य' ।

देर, म स्त्री (फा) विलम्ब, अनिकाल, काल-अतिपात-क्षेप-यापन-व्याक्षेप २ समय, काल ।

—करना या लगाना, वि अ, विलम्ब (भ्वा आ मे), काल अतिपात (प्रे)-व्याक्षिप् (जु प अ) ।

—तक, कि वि, चिराय, चिर यावत्, चिर कालान्तम् ।

—से, कि वि, चिराय, चिरण, विलम्बेन, विलम्बात्, चिर, कालेन-कालात् ।

—होना, कि अ, विलम्ब-व्याक्षिप् (कर्म) बेला अनिकम् (भ्वा प से), विलंबो जन् (दि आ मे) ।

देरी, सं स्त्री, दे 'देर' (१-२) ।

देव^१, सं पु (फा) दैत्य, दानव, राक्षस ।

देव^२, सं पु (स) देवता, दैवत, अमर^१, अमर्त्य, सुर, अस्वप्न, दिविषद् दिवीकम् (पु) निर्वर, विपुष, वृन्दारक, सुमनम् (पु) २ ईश्वर ३ मिथ, आर्य, पूज्यपुरुष ४ मेघ ५ शान्तिद्रिय ६ ब्राह्मण ।

—गिरि, सं पु (स) रैवतकपर्वत २ नगर विशेष ।

—दारु, सं पु, (म पु न) दे 'दियार' ।

—दाम्नी, म स्त्री (स) बेश्या, वेशवनिता २ मन्दिर-देव, नर्तरी ।

—देव, सं पु (म) ईश्वर २ इन्द्र ।

—नागरी, म स्त्री (मे) लिपिविशेष ('अ' मे 'ह' तक अक्षर) ।

—पूजा, म स्त्री (म) प्रतिमापूजन २ ईश्वरार्चनम् ।

—भूमि, सं स्त्री (म) स्वर्ग, नाक ।

—मन्दिर, सं पु (म न) देव, गृह भवन-स्थान आलय ।

—लोक, स पु (स) स्वयं ।

—बाणी, स स्त्री (स) देवभाषा, मस्कृतम् ।

देवकी, स स्त्री (स) श्रीकृष्णनन्दनननी,
देवकात्मजा ।

—नन्दन, स पु (स) श्रीकृष्ण ।

देवता, स पु (स स्त्री) दे देव (१३, ५, ६) ।

देवत्व, स पु (स) सुरत्व, अमरत्व ।

देवन, स पु (स) जक्ष सार, शार,
पाशक । (स न) वाप्ति दीप्ति (स्त्री)
२ अक्षयत क्रीडा ३ क्रीडा, विनोद ४
प्रमोदवादिनी ।

देवना, स स्त्री (स) द्यून् २ क्रीडा ३
शौर ।

देवर, स पु (स) देव (पु), देवल, देवार,
देवान, तुलागाव, पत्युरनुज २ पतिभ्रान्त
(पु छोटा या बटा) ।

देवरात्री, स स्त्री (स देवर >) वाट (स्त्री),
देवरपत्नी, जा ।

देवल, स पु (स) देवाचीव, देवपुत्रोप
जीविन् २ नारक ३ स्मृतिभारमुक्तिशेष ।
हि, देवालय मन्दिरम् ।

देवागना, स स्त्री (स) दे 'अमरागना' ।

देवालय, स पु (स) स्वर्ग २ मन्दिरम् ।

देवी, स स्त्री (स) देवपत्नी सुरागना
२ दुर्गा, पार्वती ३ मातागौ ४ पतिव्रता
५ पट्ट, महिषी राक्षी ।

देश, स पु (स) जनपद, विषय, भूभाग,
नीहृन्, उपवर्गन, प्रदेश २ राष्ट्र ३ स्थान,
स्थल ४ रागभेद ।

—निशाला, स पु, (स्वदेशान्) प्रनिर वि,
वामनैवानि, प्रज्ञानम् ।

—भाषा, स स्त्री (स) उपप्राप्त्य प्रादेशिन,
भाषा ।

देशान्तर, स पु (स न) अन्यविपर, देश
२ पन्थाय, देशान्तर (तुलकन्द) ।

देशाचार, स पु (स) देश, धर्म व्यवहार -
रीति (स्त्री) ।

देशाटन, स पु (स न) भू-यात्रा भ्रमण-
पर्यटनम् ।

देशी, स स्त्री (स) देशीय) देव, देवि
स्वर्ग २ उत्तरम् ।

देस, देसी स पु तथा वि, दे 'देस' तथा
देशी ।

देसावर, स पु, दे 'दिमावर' ।

देह, स पु (स) काय, दे 'शरीर' २ अव
यव, जग ३ जीवनम् ।

—पात, स पु (स) मृत्यु (पु) ।

देहरा, स पु (स) देव + हि घर) देवालय,
मन्दिरम् ।

देहली, स स्त्री (स) दे 'दहली' २ दह
प्रस्थ, देहली, दिल्ली ।

देहयत, देहवान्, वि (स) देहवन्) दे 'देही' ।

देहात, स पु (स) मृत्यु (पु) निधन,
मरणम् ।

देहात, स पु (का) दे 'ग्राम' ।

देहाती, वि (का) देहात) दे 'ग्रामीण' ।

देही, वि (स) देहिन्) प्राणिन्, देहवन्,
शरीरिन्, तनु धारिन् भूत । स पु, (स)
जीव, आत्मन् (पु), जीव, प्रसयात्मन् (पु) ।
देह्य, स पु (स) राक्षस, गानव, निशान्वर ।

—गुरु, स पु (स) शुक्राचार्य ।

—पति, स पु (स) विरप्यकनिपु ।

—माता, स पु (स न) दिनि (स्त्री) ।

दैव्यारि, स पु (स) विष्णु २ देव ।

दैनिक, वि (स) प्रात्यक्षिक आक्षि [—नी
(स्त्री)], दैनदिन [—नी (स्त्री)]
२ नैत्यक नैत्यिक [—नी (स्त्री)] । स पु,
दे 'दैनीकी' ।

दैनीकी, स स्त्री (स) दिन-नैतन भूति
(स्त्री) ।

दैव, स पु (स न) भाग्य, अदृष्ट, नियति
(स्त्री), भाग्येय, भविष्यत्वा, दिष्ट, प्रवृत्त,
विधि (पु), प्रारब्ध २ ईश्वर ३ आकाश
उम् । वि, दिव्य, सौर, अमानुष, अपौरुष,
प्यर, अलौकिक (स्त्री, दे 'दैवी') ।

—गति, स स्त्री (स) दैवपटना, भाग्यार्क
२ > 'दैव' (१) ।

—दुर्निष्ठाक, स पु (स) देवतो, नीमा
श्वोदय ।

—योग, स पु (स) यदृच्छा, देव, गति
(स्त्री) -युग्मा ।

—वश, वि वि (स न) देवान्, देववशान्
देववागात्, वशमान्, यदृच्छया ।

- देवी, वि स्त्री (म) आरम्भिकी, वष्टु-की
अन्वेषिणी भ्रमलुपी, नन्धरी अपाधिबी ।
देहिक, वि (म) शारीरिक क्रायिक-वैद्यहिक
[-नी (स्त्री)] ।
दो, वि (म द्वि) द्वौ (पु) द्वे (स्त्री, न)
द्वय, द्वितय-युग्म (उ दो मांम मामद्वय इ) ।
—अद्वी, म स्त्री, इनामी ।
—अर्थो, वि द्वयथ द्वयथक शिष्ट २ सन्निध ।
—आष मं पु (का) *इवापम् ।
—गला, म पु (का) मकरज मिश्रण,
विनात सारगिक, वणमर ।
—चद, वि (का) द्विगुण द्विगुणित ।
—चित्ता, वि दे 'दुचित्ता' ।
—नल्ला, वि दे 'दुमनिला' ।
—नारा, मं पु *दितार बणभे ।
—धारा, वि दे 'दुधारा' ।
—नाली, वि, दिनाली (मुमुनी आदि) ।
—पहर, न स्त्री मध्याह्न मध्याह्नकात्र,
मध्य (ध्य) दिन, उदिन ।
—पत, वि, दिराहल, दिरावर्तित, द्विगुण,
द्विगुणित ।
—पहर का, वि, माध्याह्निक [-की (स्त्री)]
माध्यदिन [-नी (स्त्री)] ।
—पहर पहिले, कि वि, अर्वाह मध्याह्न
(अ म = A M) प्राप्ते, पूजाप्ते ।
—पहर डले, कि, वि, पश्चान्म-याह्न (प म
= P M), अपराह्णे, विहले ।
—पाया, वि, द्विप(पा)द, द्विपाद(पु) (मनुष्य) ।
—बारा, कि वि (का) दि, दिवार, पुन
(सत्र अव्य) ।
—भापिया, म पु, दे 'दुभापिया' ।
—महाला, मज्जिला, वि, दे 'दुमजिला' ।
—मानी पि, दे 'दोमयी' ।
—मुहा, वि, द्विमुहा, द्विदल, २ छलिन,
दाभक । म पु, द्विमुप मर्प, मधमेद ।
—रगा, वि, द्विरग, द्विवर्ण २ दासिक ।
—रगी, म स्त्री दग्म, द्वैध, प्रताग्णा ।
—राहा, म पु, द्विपथ, चारुपथ ।
—रडा, म पु, *द्विगुणक ।
—साला, वि, द्विवापिक द्वैवापिक (-को स्त्री)
द्विपथी, द्विपथ ।
—सूती, म स्त्री, *द्विसूती ।

- सेरी, म स्त्री, द्विमेका द्विसेरी ।
—हृत्थड, म प, करयुगलापाल, द्विहस्तप्रहार ।
—हृत्था, कि वि कराभ्या हस्तद्वयेन (लृ) ।
—पुरु, -चार, मु, वीपथ, वनि, वित वन ।
—करना, मु, दिवा द्विगुणी कू समाग्रद्वयेन
वि वन (स्वा प अ) ।
—कौडी को चीज, ॥, तुच्छ शुद्र अल्पमूल्य
पदार्थ ।
—उडी मु, वशिन् बाल गमय अल्पममय
यावत् ।
दोजपुत्र, म पु (का) न(ना)यक निरय ।
दोजखी, वि (क) नारयिन्, नारकीन,
नारकिर-नारक [की (स्त्री)] ।
दोना, म पु (म दोग) *दोग, पत्र पर्ण,
पुट पुटक ।
दोनों, वि (हि दो) उभौ (पु) उभे (स्त्री
न), उभय (प्राय एक या बहु में,
कभी द्विवचन में भी), द्वौ अपि (पु), द्वे
अपि (स्त्री न) ।
दोला, म स्त्री (म) दोली, हिंदोला, प्रैल
छन्दा ।
—यत्र, म पु (म न) दे 'दोला' २ वक्र
मथान, यन्त्रम् ।
—युद्ध, म पु, (स न) सन्निध परिणाम
युद्धम् ।
दोलायमान, वि (स) इत्यन्त विचल्य
(शत्रुन), प्रैयत् (शत्रुन्त) ।
दोष, स पु (॥) न्यूनता, विकलता, त्रि,
विकार २ पाप, पानक २ लाटन, कलक,
अभिवोग ४ अपराध, दोष ५ रमदोषादय
कान्धोपा (सा) ६ प्रदोष, रचनीमुपम् ।
—लगाना, कि स दुष (प्रे, दूषयति),
अभिवुज (क आ अ, चु), कलकयति
(ना पा), दोष क्षिप (लु प अ) आरुह
(प्रे, आरोपयति), निव (भ्वा प मे) ।
—कर, वि (म) अनिष्ट अहित हानि, कर
कारिन्-कार ।
—ग्राही, वि (म भिन्) दुष्ट, पाक, दुचन ।
—ग्न, म पु (म न) वातपित्तक नाशक
ग्रीवधम् ।
—ज्ञ, वि (म) प्राज्ञ, विद्वन् ।
—त्रय, स पु (स न) वातपित्तक दोषा,
दाघ, त्रि त्रयी ।

—दृष्टि, वि (स) दोषीकृत, निरुक्त, पुरो भागिन, उद्गमोपि ।

दोषी, वि (स दोषिन) सप्तोप, दोषवत्, अपराधिन, प्रमादित् २ पाप, धाविन् ३ जमि युक्त, दण्ड कृतपराध ४ व्यसनित् कुतार्गं गामिन ।

दोस्त, म पु (फा) मसि (प), दे मित्र ।

दोस्ताना, स पु (फा) मसि, दे

दोस्ती, म स्त्री ('मित्रता') ।

दोहता, म पु, दे 'दोहनी' ।

दोहती, स स्त्री, दे 'दोहिली' ।

दोहद, स पु (म पु न) गाभण्यमिण्य, लास्ता, श्रद्धा, दोहदम् ।

—दोही, स स्त्री, शास्त्रिकी गायत्री, गद्गाल (स्त्री) ।

दोहन, म पु (म न) स्तन्य-उद्यस्य उधन्य नि स्त्राय निष्पन्न निम्मारण ० द 'दोहनी' ।

दोहना, कि स (स दोहन) दुद (अ प अ, द्विरमन) स्तन्य निस्सृ-सु (मे) । म पु, दे 'दोहन' ।

दोहनी, स स्त्री (स) दोहन-दुग्ध, पात्र, दोहन, दोह, पाटी, छेपनम् ।

दोहने योग्य, वि दोष्य, दोन ।

दोहनेवाला, म पु, दोह (पु), दोहक ।

दोहर, म स्त्री (हि दो) द्विरनरी ।

दोहरा, वि पु (हि दो) द्विराहुत, द्विरागत २ द्विगुण, द्विगुणित ।

—करना, वि स, द्विपुटी कृति व्यावृत्त (मे), द्विपुट्यति (ना धा) २ द्विगुणी कृ, द्विगुणयति (ना धा) ।

दोहराना, वि स (हि दोहरा) पुन द्वि कृ (चु)-गन्वत् (आ प से)-आ (आ प अ) २ पुन द्वि कृ वा गन्वत् (आ प अ) आउर (आ प म), गन्वत् (दि प से) ३ पुन द्वि कृ (आ आ से) क्विक् (मे), क्विक् (मे) ।

दोहराव, म पु (हि दोहराना) पुनरीक्षण, मशान ० पुनरुक्ति (स्त्री), पुनरुक्त्य, पुनरु, नवनवाद ।

दोहा, म पु (हि दो) हिदी-नोमेद ।

दोह, म स्त्री (हि दो-ना) धननपन्थन, दण, विद्व, उक्त, गमन-गी (स्त्री), ० आक्रमण (३०) गति उद्योग-मुक्ति, गीमा ।

—धूप, स स्त्री, धोर कठोर, प्रथम परिश्रम उद्योग-उद्यम ।

—धूप करना, म पु, अत्यत आयम परिश्रम (दि प से) प्रयत् (आ मा से) ।

दोहना, कि अ (स धोरण) धोर (आ प से) दु (आ प अ) धाव् (आ प से) दूत मवेग शीघ्र गम् २ मतन-आयिक प्रवत् (आ आ से)-परि-यत् (दि प से) ३ महना प्रवत् (आ आ से) ४ पत्ताय (आ आ से) । स पु, दे 'दोह' ।

दोहनेवाला, म पु, धावक, धोरण, गीत गामिन ।

दोहाना, वि स, व 'दोहना' के द्वे रूप ।

दोहर दोहा, स पु (अ+हि) आधिपत्य, शासन, प्रमुख, स्वामित्व, दधत्त्व वश शम् ।

दोहरा, म पु (अ दोर) पयन्त, परिधमण २ शस्त्रन शब्द अमण-यमन ३ अधिका रिणो निरीक्षणार्थ भ्रमण ४ रोगादे आकृति आरजन सामयिकारुमणम् ।

—करना, कि अ परिश्रम-पयत् (आ प से), स्वमन् निरीक्षितु परिश्रम ।

—सुपुं करना, म पु, अभियोग दृढाधिकारिण वात्त द्वे (मे) ।

दोहान्य, म पु (सं न) दुहता, गन्त्वम् ।

दोहन्य, म पु (म न) दुहनता, दुहता ।

दोहक्य, म पु (म न) दुहकता, धामना ।

दोहं अय, म पु (म न) दे 'दुहं अय' ।

दोहल, म स्त्री (अ) धन, मपद (स्त्री) ।

—गाना, म पु (अ+फा) गृह आ नि-याम ।

—मद, वि (अ+फा) गनि, मपद ।

—मदी, म स्त्री (अ+फा) धनाशना, मसुक्ति (स्त्री) ।

दोहान्ति, म पु (म) दे 'दोहान' ।

दोहकृत्, वि (म) धीन नीन मुद्र, वृत्त कृत्-नीन ।

दोह्य, म पु (म न) दुहता गन्ता, दुहनता ।

दोहयति, म पु (म) दायमपुत्रा भरत ।

दोहिल, म पु (म) दुहिल, पुत्र-ननय ।

दोहिली, म स्त्री (म) ददित्, पुत्री ननया

द्यु, स पु (म न) दिन २ आकाश स
३ स्पर्श । स पु, अभिनि ।

—स्योरु, स पु (म) स्पर्श ।

द्युति, स म्वा (स) वानि-शीषि (स्त्री),
आभा, प्रभा ३ लावण्य, सौन्दर्य, शोभा
गवे (स्त्री) ३ किरण, रश्मि (पु) ।

द्युतिमन्त, वि (म-मन्) वातिमन् दीप्तिमन्,
भासुर, भास्वर ।

द्युत, स पु (म पु न) अक्षयती, वैनव, पण ।

—द्वर, स पु (म) कितव, घृत दुरादर
अश्वेतिन, द्युतकुम् ।

—द्वार, स पु (स) मभि (स्त्री) २ २ दे
'द्युतद्वर' ।

द्योतक, वि (म) प्रकाशय द्योतगर, उद्भा
मन् २ जप्य, व्यापक ।

द्रव, स पु (स) द्रवण, खवण, क्षरण, गन्त,
बहन, अभिनि, स्थ (ध्व) दन २ स (स्त्री)

व, प्रवाह, प्रन्व, धार रा ३ धावन,
पलायन ४ वेग, त्व ५ आमव ६ रम

७. परिवास ८ द्रवत्व ९ द्रव, द्रव्य पदार्थ ।
वि, सरल, द्रव, प्रवाहिन्, २ आर्द्र, विच्छ,

जल, ३ विलीन, विद्रुत, द्रवीकृत ।

द्रवीभूत, वि (स) दयादिभि आर्द्रभूत
अभिपदित, दपातु, कृपातु । २ विलीन,
विद्रुत ।

द्रवव, स पु (म न) द्रवता, द्रवभाव,
प्रवाहधर्म, रमता, तरलत्वम् ।

द्रव्य, स. पु (स न) पदार्थ, वस्तु (न)
२ भूत्यादयो नव पदार्था ३ उपादानकारण,
ज्ञानधर्म ४ धन, वित्तम् ।

—संचर, स पु (म) धनमपह ।

द्रव्यार्जन, स पु (स) धनोपार्जन, वित्तार्जनम् ।

द्राक्षा, स स्त्री (स) रमाणा, प्रियाणा,
गुच्छपला, दे 'दाम्प' ।

द्रुत, वि (म) विलीन, विद्रुत, द्रवी कृत
भूत, अवधारण २ शीघ्र, मित्र, त्वरित, सत्वर
३ पलायन । क्रि वि, आशु, क्षणिक ।

—गासी, वि (स मित्) आशुव, शीघ्रया
मिन, द्रुतगति ।

द्रुम, स पु (म) पादप, तर (पु), वृक्ष ।

द्रोण, स पु (म पु न) प्राचीनपरिमाण
मेर (४ सेर, १६ सेर वा ३२ सेर) घट ।

कलश, उन्मान, अमर्ग, उल्लङ्घन । स पु
द्रोणानाय २ बाष्पकलश ३ द्रुममयो रथ
४ कान्तर, कृष्णद्रोणवृक्ष, काक ५ दे
द्रोणा' ६ जीरा ।

द्रोह, स पु (म) अहित-अनिष्ट, रित्तन
वेर, वि, द्वेष, अवयित्रीषा निधामा, द्रष्ट
वर, अहित-अनर्थ, इच्छा ।

द्रोही, वि (म द्रोहिन्) अहित अनिष्ट-अनर्थ,
नितक चिन्तायक, मत्सरिन्, अभ्यसुयक ।

द्रु, स पु. (म न) मिथुनम् ।

द्रुं, द्रुं, स पु (स द्रु) दय, द्रितय, युगल,
रुम, युग, यगन, युग २ मिथुन, जाया

पत्नी, दपनी ३ परस्परविरोधिपदार्थौ (उ.
द्यौ-उष्ण, सुप्त-दुग्ध) ४ रहस्य ५ कलह,

उपद्रव ६ द्रुतद्रुत ७ सशय ८ सश्रम,
ममोह ९ वष्ट । स पु, समानमेव (व्या) ।

—चारी, स पु (स चारिन्) दे 'चकधा' ।

—युद्ध, स पु (म न) मल्ल-द्वयोर,
युद्धम् ।

द्राक्षी, स स्त्री (म) शुक्ला कृष्णा ता
दाक्षी निनि (स्त्री.) ।

द्रापर, स पु (स पु न) दृतायुग
(८६४००० वर्ष) २ मदेव ।

द्रार, स पु (स न) दार (स्त्री) मनि
(स्त्री) दार २ उपाय, साधनम् ।

—द्वार, स पु (म द्वारानार) वधूगृहद्वारे
करणीया विशिष्टरीति (स्त्री) ।

—द्वार, स पु (म) द्वा (स्त्री), द्वारस्व,
द्वारिक, दीवारिक, प्रति (स्त्री) द्वार (स्त्री स्त्री) ।

द्वार (रि) का, स स्त्री (म) द्वारा (र) वनी,
तापविशेष ।

द्वारा, अव्य (स) द्वारेण, माधनेन, कारणेन,
हेतुना । (हि प्राय दमका अनुवाद दृतीया
मे करते हे) ।

द्वि, वि (म) दे 'दो' ।

—द्वार, स पु (स) काव, वायस
२ वीज, चक्र ।

—गुण, वि (म) द्विगुणित ।

—पद, वि (म) द्विपद, द्विवर्ण ।

द्विज, वि (म) द्विजान, द्विरुत्पन्न, द्विजन्मन् ।

म पु, बाष्पकलशविशेष २ रण, अट्टन
३ दत्त ४ मात्रण ५ चद्र ।

—नाम, म पु (म) दृढ ० ।

—पनि, म प (म) नाक्षत्र २ गगट
३ चद्र ।

—प्रिया, म स्त्री (म) मोप्रान्ता ।

—यपु, स पु (स) धर्महीनो द्विज ।

—रात्र, म पु (म) नाक्षत्र २ चद्र ।

द्वितीय, वि (स) द्वितीय यथा (पु न
स्त्री) २ गौण अवत ।

द्वितीया, स स्त्री (म) शुक्ला कृष्णा वा
द्वितीया त्रिवि (स्त्री) ।

द्विधा, अव्य (म) प्रसारद्वयेन, द्विप्रसार
२ द्विभागश (अव्य), द्विप्राप्त्यो (सप्तमी) ।

द्विविध, वि (२) द्विप्रमाण्य । वि वि दे
'विधा' ।

द्वीप, म पु (म पु न) अलङ्घितभूमि
(स्त्री) ।

द्वेष, म पु (स) वैर, शत्रुता मापन्य,
विरोध, द्वेषभाव ।

द्वेषी, वि (म विन) विरोधिन्, वैरि
अस्ति, विषय । म पु, अरि, शत्रु, रिपु
देष्ट ।

द्वैत, म पु (म न) द्वित्वं, द्विता, द्वैत, द्वैध
२ द्वैतवाद (दर्शन) ३ नेदभाष ।

—वाद, स पु (म) नीवमक्षय्यतात्ववाद
२ देहदेहिपृथक्त्वमिद्वान ।

—वादी, स पु (म दिन्) द्वैतिन् ।

द्वैधभाष, म पु (म) मशय निश्चय
मय २ दम ३ उपायविशेष (राननीति) ।

द्विपाषण, म पु (गै) श्रोत्रेद्वयाम् ।

द्वयणुक, म पु (न) परमाणुद्वयामर
द्रव्यम् ।

घ

घ, देवतागरीर्णमालया ण्योर्जिहो व्यजनार्ण
धकार ।

घघला, म पु (हिं घग) दम, कपट, माया ।

घंघा, म पु (स घनधाम्य) आनीव,
आउप नीविना, जीवभावन, वृत्ति (स्त्री)
२ उद्यम, व्यवसाय ।

घाम—, म पु, दे 'धधा' ।

गौरव—, म पु, मोहक श्रानिजनन,
न्यापार ।

धैर्यना, वि अ (म दशन) आग्र विन्
(तु प अ) निविश (तु आ अ), निर,
भिद (त प अ), व्यध् (दि प अ),
दे 'गन्ता' ।

धैर्यना, वि स, व 'धैर्यना' दे प्रे रूप ।

धैर्याव, म पु (हिं धैर्यना) निप्रवेज
वेशन, वेव धनम् ।

धक, म स्त्री (अनु) इदमिदमप,
स्पर्ध स्फुरण २ हस्तधम्य ।

धक, म स्त्री (देश) इदमिदम लुप्युका ।

धक्कसाना, वि अ (अनु) द 'धक्कना' ।

धक्कलना, वि म (हिं धका) (वरादिभि)
प्रणुदप्रेरप्रण प्रणु (प्रे) प्रचु (तु) ।

धक्कल, म पु (हिं धक्कना) प्रणोत्तर,
प्रसादक, प्रेरक, प्रचालक, अपप्र, मारक ।

धक्कप्रका, म पु (हिं धका) अन्योन्यपर
स्पर्ध, मर्म, समानान्तरपण, अभिप्राय ।

धक्का, म पु (अनु धक्क अन्वता धक्कनाज
करता) अपमारणा, प्रचालनना,
प्रेरणा, प्रचोत्ता, मर्ष, आपात, मर्म
२ मताप, क्लेश ३ आपन् विपद (स्त्री) ।

—गता, वि अ, अपमार् प्रेर प्रचाल् प्रगैर
(उर्म) ।

—देना, वि त दे 'धक्कना' ।

—लगा, पु, विपदा अभिउपहृद (वर्म) ।

धक्का, म पु (अनु) लुप प्रहा आघात,
दे 'धका' ।

धज, म स्त्री (स धज) अग्रिया,
मया, भूषा २ आहार, आरति (स्त्री),
हृदि (स्त्री) ३ हासभावी (दि) ४ वनर्ष,
शीर्ष्म् ।

धजीला, वि (हिं धज) दे 'मनीग' ।

धज्जी, म स्त्री (म धजी) पञ्चम्य, गन् पट्टी
२ पट्टबर्द, चीरम् ।

—धज्जियाँ उहाना, मु हि (प्र), मन्
(तु) २ निर्दय निष्ठुर तीक्ष्ण प्र (भ्या प
अ) हन् (अ प अ) ।

धजग, वि (हिं धज-जी) जगन्, दे 'जग' ।

धड, स पु (म धर >) कवध, अपमूर्ध
बल्बर, अशीषशरीर २ आक्त्रिग्रोव शरीरम् ।
घडक-कन, स स्त्री (अनु धड) हृदय हृत्,
स्वदन-स्फुरणकपन २ हृत्पदध्वनि (पु)
३ अदका, भयम् ।

—वेरडक, क्रि. वि, निरक, निर्भय, निरुम
कोचम् ।

घडकना, क्रि. अ (हिं धडक) कपूर्वैपु-स्वद
(भ्वा आ मे) स्फुर (तु प से) ।

घडका, स पु, दे 'धडकन' ।

घडकाना, क्रि. म व 'धडकना' क प्रे रूप ।

घडकड, म स्त्री (अनु) घटधन्व कर
हृत्ति हृत् । क्रि. वि, मधडधटशब्द
२ निमकीनम् ।

—जलना, क्रि. अ, अत्युग्रप्रवण ज्वल
(भ्वा प मे)-दह् (वर्म ष्ठीप (दि आ से)) ।

घडधडाना, क्रि. अ (अनु घडधड) गटधडा
यते (ना धा) धन्धन्शब्द अनु (प्रे) ।

घडहला, स पु (अनु धड) बडधडालार
२ पनमनम् ।

घडहलेदार, वि (अनु + का) निमय,
निमकीच ।

घडहले से, मु, निमय, निरुमकोचम् ।

घडवाई, स पु (हिं धडा) तोल्क, धधधर ।

घडा, म पु (स धर) तुला २ तोल्क, अर
३ पञ्च, दलम् ।

घडाका, स पु (अनु०) घडाक् इति शब्द -
ख - ध्वनि (पु) गुरद्रव्यपतनध्वनि ।

घडाधड, क्रि. वि (अनु धड) सगत, निरतर,
अविच्छिन्न, अनवर्धितम् २ निरतर मधट
धन्धन्ध न ।

घडाम से, स पु (अनु) सधन्वम् ।

घडी, म स्त्री (म धर >) घरी, चतु
मेरी-मन्की, पन, मेरी-मेन्की ।

घडेवदी, म स्त्री (हिं का) दलबध, पञ्च,
पन-ग्रहण-अवबन्धनम् ।

घट, स स्त्री, दे 'लट' ।

घटकारना, क्रि. स (अनु घट) दे 'दुतकारना' ।

घटा, म पु (अनु घट) निस्सारित, अपगत ।

—घटाना, मु, एतेन अप-निम्-स (प्रे),
संयान परिहृ (भ्वा प अ) ।

धट्टिया, म पु (हिं धूरा) धट्टर-मोहन,
प्रान्तकीवचम् ।

धत् (तु) रा, म पु (स. धत्तूर) धुम्तूर,
रिवप्रिन, मोहन, वनक ।

धधक, स स्त्री (अनु) ज्वाला, डालका,
अचम् (न) ।

धधकना, क्रि. अ, (हिं धधक) उद्ग्रम-
दाप (दि आ अ) उद्ग्रमन्वन् (भ्वा प
से), प्रचट दह (कम) ।

धधकाना, क्रि. म, व 'धधकना' के प्रे रूप ।

धनय म पु (म) अर्जुन २ अग्नि ।

धन, म पु (म न) वित्त, द्रव्य धृति/कथ,
वनु (न) अथ, धिरण्य, द्रविण, विभव,
आ-लक्ष्मी (स्त्री), भाग्य, मन्मन्-सम्पत्ति
(स्त्री) वाचन, १ (पु, रा, रायौ, राय)
२ रोषन ३ प्रेमपत्र ४ योविह (+, गति)
५ मूलद्रव्यम् ।

—कुवेर, स पु (म) लक्षपति (पु),
बोगीदा, सुममृदपन ।

—धान्य, म पु (म न) धनधान्ये, अर्थान्त्र-ने ।

—पति, म पु (स) कुवेर, दे ।

—हीन, वि (स) दरिद्र, अकिंचन ।

धनक, म पु (स) धनापा, धनैपा ।

धनद, वि (म) दानशील, बहान्य । स पु
(म), कुवेर ।

धनान्य, वि (स) अर्थधन वित्त-द्रव्य, वत् ।
धनिन्, धनिक, सन्तु-महा, धन, वित्त-विभव
धन, शान्ति, सपञ्च, मधुद, श्रीमन्,
लक्ष्माश्च, धनेधर ।

धनार्चन, स पु (म न) वित्तोपार्जन, धन
समृद्धि ।

धनिक, वि (स) दे 'धनान्य' ।

धनिया, म पु (स धनिका) धन्या, वित्तुप्रक,
सुगधि (न) कुस्तुम्बरी ।

धनिष्ठा, स स्त्री (म) अविष्ठा, नक्षत्रविशेष ।

धनी वि (म-निन्) दे 'धनान्य' २ दसु,
दुशाल । म पु, स्वमिन्, अधिपति २ पति
(पु) धनान्य ।

—मानी, वि (स धनिमानिन्) धनमान,
वत्तुल ।

धन क—, वि, प्रतिपादक, स्थिर-दृढ,
प्रतिष्ठ, मत्स्य-मार-मधजन ।

धनु, म पु (स) दे धनुष' ।
 धनुआ, स पु [स धन्व (वेर म)] दे
 'धनुष' २ दे 'धुनरी' ।
 धनुक, स पु (स धनुस् न) धनु, धन्
 (स्त्री), धनु (न) इन्द्र-चाप-नायुध-
 धनस (न) ।
 धनुकी, स स्त्री, दे 'धुनरी' ।
 धनुधारी, स पु (स रिन्) धनुर्दार, धविन्,
 इषुधर, धनुष्य, निपगिन्, धनुर्भूत धनुष्मन्
 (पु), तुगिन् ।
 धनुर्विद्या, स स्त्री (म) शराभ्यास, इषु
 शिक्षा (स्त्री) ।
 धनुर्वेद, स पु (म) धनुर्विद्यानिरूपणशास्त्रम् ।
 धनुष, म पु [स धनुस् (न)] चाप प
 द्वास, आस, वामुक, कोदण्ड, शरासन
 शरय, धनु (स्त्री) ।
 धनेश्वर, म पु (म) धनपति २ कुबेर
 ३ रत्नमेद ।
 धनेपणा, स स्त्री (म) वित्तोपणा, धनाया ।
 धनेयी, वि (स-पिन्) धनेच्छुष, विष्ठा
 धिन् (पु) ।
 धन्या, स पु दे 'धरता' स पु ६ ।
 धन्य, वि (स) सौ, भाग्यवत्, पुण्य, वग
 भाज, सु, कृतिन्, सु भग भाग्य, महाभाग २
 इलाय, स्तुत्य । वि वि साधु मुप्र, सम्पन्न ।
 —वाद, स पु (स) ऊनज्ञता, दशन प्रकाशन,
 उपकारप्रदाना २ सधुवाद, प्रशनावचनानि
 (बहु), इलाया ।
 धन्वन्तरि, स पु (स) सुरचरित्रत्मक,
 सुश्रुतसार ।
 धन्व, स पु (म धन्वन्) धनुस् (न)
 चाप २ मरु ३ रथजम् ।
 धन्वी, स पु (म विन्) दे 'धनुधारी' ।
 धप्पा, स पु (अनु धप) जपे दिवा
 २ क्षति-हानि (स्त्री) ।
 धवा, स पु (देह) दे 'दाग' ।
 धम, स स्त्री (अनु) पतनशब्द, धमिति
 ध्वनि (पु) ।
 —मे, वि रि धमितिशब्देन मह २ अस्मात् ।
 धमर, म स्त्री (अनु) अवपतन आसन,
 शब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पञ्चयाम
 शब्द ३ भाषा, प्रहार ४ वध ।

धमकता, कि अ (हि धमर) धमिति शब्देन
 मह पत्र (भ्वा प मे) २ पथ (भ्वा आ मे) ।
 धम, सु, अस्मात् महमा आया (म
 प अ) ।
 धमकाना, कि म (हि धमरता) भी (प्रे
 भायर्था, भायते, भीषते), धस (प्रे)
 २ निर, भर्त्ता (तु आ से), तर्, (भ्वा
 प मे, तु आ से) ।
 धमकी, म स्त्री (हि धमर) विभीषिता
 नयदर्शन २ तर्चना, भर्त्सना, अपकारी
 (स्त्री) ।
 —मे आता, सु, विभीषिताप्रभावेण कार्ये क ।
 धमधमाना, कि अ (अनु) धमधमायने
 (ना धा), धमधमशब्द पत् (प्रे) ।
 धमनी, स स्त्री (स) धमनि (स्त्री), रक्ष
 व हिन्ती नाटी ।
 धमार, म पु (अनु) धुंश्रुत्यादिशब्द,
 मदाशब्द, धमिति ध्वनि (पु) २ पतन
 कृडन, शब्द ।
 धमार्याहरी, म स्त्री (अनु धम+हि चीरङी)
 कन्धर, कीलाहल, तुमुल-ल, डमर,
 श्लोक, विष्णव ।
 धमाधम, कि वि (अनु धम) सधमधम
 शब्दम् ।
 स स्त्री, धमधमध्वनि (पु) २ आवा
 प्रश्रिता, उपद्रव, उन्मत्त ।
 धर, वि (म) धारक धारिन्, धर्तृ, प्रदीप ।
 (प्राय ममाप्त मे, उ चक्रपर ६) ।
 धरणिणी, स स्त्री (म) धरा, भूमि (स्त्री)
 दे 'धृविनी' ।
 —धर, स पु (म) पवन २ वज्रप ३
 जेयनाथ ४ विष्णु (पु) ५ शिव ।
 —सुता, म स्त्री (स) सीता, जलरो ।
 धरतो, स स्त्री (स धरित्री) दे 'धरणि' ।
 धरता, कि, स (स धरण) आनिधा (तु
 उ ज), स्था (प्रे), न्यम् (रि प म),
 मित्रिष् (तु प अ), आ-रुह (प्रे आरोपयति),
 धृ (पु) २ गृह (क प म) (इस्तन)
 अव-रुह (भ्वा आ म) धृ उ परिधा (तु
 उ अ), वम् (अ आ म) । म पु,
 धरणा, आनि, रान् धमन २ ग्रहण ३ परि
 धान ४ नामह उपवेश स्थाना वा ।

—टेना, सु, (उद्देश्यमिदमे) माग्रह स्वा
(भ्वा ष अ) ।

धरवाना, वि ये, व 'धरना' के प्रे रूप ।

धरहरा, स पु (हि धुर+पर) गसोपान
गृहशिपर २ अत सोपान स्तम्भ ।

धरा, म स्त्री (स) भू भूमि (स्त्री) ।

—तल, स पु (म न) भूतल, पृथिवीतल
२ भूमि (स्त्री) ।

—धर, स पु (म) दे 'धरणीपर' ।

धराज, वि (१६ धरना) महार्थ, बहुमूल्य २
विशिष्ट, उत्कृष्ट ।

धरात्मज, स पु (स) मंगलग्रह २
नरकासुर ।

धराधिप, स पु (म) धरा, अधिपति जमीन,
नृप ।

धरामर, स पु (स) विप्र, ब्राह्मण, भूसुर ।

धरित्री, स स्त्री (स) पृथिवी, दे ।

धरोहर, स स्त्री (हि धरना) निक्षेप, न्याम,
दे 'अमानत' ।

धर्ता, स पु (भृ धर्तुं) धारक, धारयितृ २
ग्राहक ।

धर्म, स पु (स) अभ्युदयनि श्रेयससाधनो
गुणरसमूह (अहिमा, मत्स्य, अग्निहोत्रादि)
२ हथर, निष्ठा-सेवा भक्ति (स्त्री), भास्तिक्य
बुद्धि (स्त्री) ३ पुण्य, परोपकार ४ सदा
चार, साधुता, मुकुट, सत्त्वमन् (न) ५ नय,
न्याय, नीति (स्त्री), न्यायिता, ऋजुता
६ पक्षपातराहित्य, समदर्शित्व ७ अद्वा,
भक्ति, निष्ठा ८ मत, सम्प्रदाय, पवित्र (पु)
९ शास्त्रविहित, कर्तव्य-कृत्य १० आचार,
व्यवहार ११ रीति-रूढि (स्त्री) १२
प्रवृत्ति (स्त्री), स्वभाव, नित्यगुण १३
विधि (पु), व्यवस्था, राजाज्ञा, कायकार्य
नियम ।

—अप्यस, स पु (स) प्रा-विवाक, अज्ञ
दर्शक, धर्माधिकारिण, न्यायाधीश, धर्माधि
कारिन् ।

—अनुसार, कि वि (म र) यथाधर्म, धर्मो
त्तरात्वा, धर्मपूर्वकम् ।

—अर्थ, कि वि, (स र्थ) धर्माय, पुण्याय ।

—अप्रतार, स पु (म) धर्ममूर्त (पु),
अतिधर्मात्मन् (पु), धामष्ठ, पुण्यात्मन् (पु) ।

—आत्मा, वि (म-त्मन्) धार्मिक, धर्मशील,
धर्मवत्, पुण्यात्मन्, धर्म पर परायण ।

—उपदेश, स पु (स) धर्म, शिक्षा अनु
ज्ञामन् ।

—उपदेशक, स पु (म) धर्म, शिक्षक -
अनुज्ञामक ।

—कर्म, स पु [स र्मन् (न)] शस्त्रोप-
कृषम् ।

—दोत्र, स पु (म न) कुक्षेन २ भारतकर्पण ।

—ध्वजो, स पु (स भिन्) धमध्वज, पावण,
लिंगव-वृत्ति (पु, स्त्री), वरु-बैटाल, -
जन, आय-रूप-निनिन्, दम्भधार्मिक,
मिथ्याचार ।

—करना, कि स, धर्म कर (भ्वा ष मे),
पुण्य कृ ।

—निष्ठा, वि (म) धार्मिक, धर्म, पर-परायण ।

—पत्नी, स स्त्री (म) यथशान्त्र विवाहिता
नारी २ भार्या, नारी, दारा (पु बहु),
कल्त्रम् ।

—पुत्र, स पु (स) सुविधिर २ धर्मत
कृत पुत्र ३ नरनारायणमुनी (हि) ।

—अष्ट करना, कि स, धर्म अष्ट नन् (म) -
हन् (अ ष अ) २ सनीत्व ह (भ्वा ष अ) ।

—राज, स पु (र) धर्मात्मा नृप, २ सुधि
धिर ३ यम ४ जित ।

—दास्य, स स्त्री (म) *यात्रिगृह, *नीर्थ
सेविनिवास ३ गुरुद्वार, शिष्यसम्प्रदाय
देवालय ।

—दास्य, स पु (म न) धर्मसहिता,
स्मृति (स्त्री) ।

—शील, वि (म) धार्मिक, धर्मात्मन् ।

—समा, स स्त्री (स) व्यवहारमण्डप,
न्यायमण्डप ।

धर्मिष्ठ, वि (रु) दे 'धर्मात्मान' ।

धर्मी, वि (स भिन्) पुण्यात्मन् २ मतानु
यायिन् ।

धन्, स पु (स) परि, भर्तृ २ पुत्र, नर
३ पित्राचकृत् ।

धवल, वि (म) श्वेत, शुक्ल २ भासुर ३
मुन्दर ।

धवल, स स्त्री (स) १-२ श्वेत शुक्ल
गौर, नारी-गौ (स्त्री) । वि स्त्री (स)

शुक्ल, गौरी, मिता । वि पु (हि) स्वेन,
गौर, शुक्ल । स पु, गौर इवत, नृप-नृपस ।

धसकना, } क्रि अ, दे 'धंसना' ।
धसना, }

धस्सर, स स्त्री, दे 'स्कारलपिना' ।

धौधल, स स्त्री (देश धाधना) क्षीम,
विप्लव, उपद्रव २ वपट, माया ३ धरा,
सम्भ्रम ।

धौधली, वि (हि धाधल) उपद्रविन्, उत्सा
निन्, कुपेष्टाप्रिय २ मायिन्, वपटिन् ।
स स्त्री, दे 'धाधल' ।

धौध धौध, स स्त्री (अनु) शतानी, शब्द -
ध्वनि (पु) २ प्रवर्णनध्वनि ।

धाक, स स्त्री (सं धन >) प्रभाव, आगर,
प्रताप, शामल २ रूपाणि प्रसिद्धि (स्त्री) ।

—धैधना, सु, आगर प्रताप प्रभु (स्था प
अ) २ प्रख्यात (वि) भू ।

धागा, स पु (हि तागा) गत, शुण, त-वृ (पु) ।

धाइ, स स्त्री (सं धात्री >) लुठनम्, लुठि
(स्त्री), लुठवाकमणम् २ त्रिआप, मन्दन,
रोदनम् ३ दल, गण ।

—मारना, सु, उच्चे रद् (अ प से),
आम्रन्द, (स्था प से) ।

धाइस, सं पु, दे 'दाइस' ।

धात, सं स्त्री, दे 'धातु' ।

धाता, स पु (सं धातु) प्रवृत्त, चतुर्भुज,
सहृ (पु), ० विष्णु (पु) ३ शिव ।
वि, धात्व २ रक्षण ३ धारक ।

धातु, न स्त्री (सं पु) अदमविहार (गैरि
वादि) २ रदिग्रन्थ (मुक्तादि) ३
शरीरभारक पदार्थ (रसरक्तमासादि) ४
शुभ्र, बीर्यम् । सं पु (म) भूत, तत्त्व
(पृथिव्यादि) २ शब्दमूल (भू, ई, आदि)
३ आत्मन् ४ परमात्मन् (पु) ।

धात्री, सं स्त्री (सं) अशाली, निरा, उपमातृ
मातृरा, धात्रियो, प्रतिपात्रिका ० जननी ३
पृथ्वी ।

—विद्या, स स्त्री (म) त्रिदुषापानविद्या
२ भूतिरमन् (न) शर्मो ननिष्ठा ।

धान, स पु (सं धान्) ब्रीहि शक्ति स्मृत्
वरि (पु) ० (वीदा) वृत्तम्, जीवार ।

धाना, स स्त्री [म धाना (स्त्री वहु)]

भृष्टवा २ भृष्टतण्डुला, लाजा (पु वहु)
३ दे 'धनिवा' ।

धानी, वि (हि धान) रूपादहरितवर्ण ।

धानी, स स्त्री (सं धाना >) भृष्ट, यवा -
गोष्मा-तण्डुला २ ब्रीहिभेद ।

धान्य, स पु (म न) अन्न, अद्य, भोग्य,
भोगार्ह, जीवसाधन २ ब्रीहि शक्ति स्मृ
वरि (पु) ३ चतुर्दश परिमाण ४ धन्यार,
वितुन्नरम् ।

—उत्तम, स पु (सं) तण्डुल ।

—राज, स पु (सं) यव ।

धाभाई, स पु (हि धाय + भाई) धात्रेय,
धानीपुत्र ।

धाम, स पु [सं धामन् (न)] गृह,
गृह, त्रि(आ)गार ० शरीर ३ स्वान् ४ पुण्य
देव, स्वयम् ।

धायन्त्री, स स्त्री (सं धात्री, दे) ।

धार, सं पु (सं) वेतनात् वर्ष, धारा,
भासार मयान ० प्रवर्ण ३ प्रदेश ।

धार, स स्त्री, (म धारा) प्रवाह, ओर,
मदार, वीतम् (न), प्रवाह, रूप, वेला,
वेग ० उत्स, निर्गर् ३ अग्नि, वीटि,
पालीलि, मणीगि (मय स्त्री), अग्रम् ।
४ दिशाश (स्त्री) ५ देखापा ।

—दार, वि (हि + का) तीक्ष्ण, निरिप्त,
शितधार ।

—मारन, सु, मूर् (तु), मिह (स्था प अ) ।

धारक, सं पु (सं) धारयित्, धर्तृ ३ धणित्,
अभरण ।

धारण, सं पु (सं, न) धरण, ग्रह-हण,
अवलम्बन, वरेण ग्रहणधरण २ परिधान
वसन ३ स्त्री अंगी, वरण ४ पालन, वीरण,
भरणम् ।

—वरना, वि म, दे 'धारना' ।

धारणक, स पु (सं) धणित्, अभरण ।

धारणा, सं स्त्री (सं) धृति-धरणशक्ति
(स्त्री) २ धारणाशक्ति, मेधा, धारणाशनी
धी (स्त्री), ग्रहणसामर्थ्य ३ धारण, ग्रहण
४ निधय, निणय, दृढमन ४ बुद्धि
(स्त्री) ५ मर्यादा, स्थिति (स्त्री) ६ योगाग
शिवाय, प्यवे निधय स्थिरवचन ७ मति
(स्त्री), मनम् ।

धारना, वि म (सं धारण) धृ (भ्वा उ अ, चु), मह (क् प से), आदा (जु आ अ), अवल्ब (भ्वा आ मे) २ परिधा (जु उ अ) वम् (अ आ मे) धृ (चु) ४ अव-उन्-उप-म-स्तभ (क् प से) अव लव-आलवत् ।

धारा, सं स्त्री (म) दे धार' सं स्त्री (१-५) । ६ परिच्छेद, विभाग, अधि करणम् ।

—यत्र, म प (म न) दे 'धुहारा' ।

धारी सं स्त्री (म धारण) रेखा, रेखा रेखा ।

—धार, वि (हि + का) रे(ले)साकिन, मरेण ।

—धारी, वि (रिन्) धर, धारक (उ दधर ३) [-धरिणी (स्त्री)] ।

धार्मिक, वि (म) दे धर्मात्मा' ।

धावन, स पु (म न) धोरण, द्रुतगमन

० शोधन, मार्जन ३ शोधनसाधनम् ।

धावा, सं पु (मं धावन) आक्रमण, अभि द्रव, अवहन, आपान, उपचलन ।

—करना या मारना या बोलना, प्रि स आक्रम (भ्वा दि प मे), अभिद्रु (भ्वा प अ) अवल्ब (भ्वा प अ) ।

धाह, म स्त्री (अनु) दे 'डाह' ।

धिक, अव्य (स धिक्) (प्राय द्वितीया परन्तु कभी पक्षा वे माध) निदा ० निभत्तना ।

धिहार, स पु (म) न्यकनिनी, कार, निरस्कार, भस्मना, गहा, निद्रा, परि(री)वाद, अधिशेष ।

धिहारना, प्रि स (सं धिहरण) तिरम् पिर ठ, अप परि-वद (भ्वा प मे) (तीव्र) निद (भ्वा प से), अधि आक्षिप (हु प अ) ।

धिम्दड, स पु (स) दे 'धिकार' ।

धिपणा, सं स्त्री (मं) बुद्धि, धी (दोनों स्त्री), प्रज्ञा २ स्तुति-नुति (स्त्री) ३ वाणी ४ पृथिवी ५ दे 'ध्यानी' ।

धीगा, म पु (म डिगर) दुष्ट मल शठ, पाप ।

धींगी, म स्त्री, शठता, शठ्य, दीव्य, उपद्रव ३ बन्धकार, अन्याय ।

—मुसती, म स्त्री, कुदेहा, उपद्रव, मन्ता २. बाह्वाहनि-मुष्टीमुष्टि (अव्य)

धी', सं स्त्री (स दुहित) पुत्री ।

धी, म स्त्री (सं) बुद्धि मति (स्त्री), प्रज्ञा ।

धीमा, वि (म मध्यम) मधर, मद, गति गामिन, २ लघु, तीव्रता-उग्रता-चण्डता, शून्य ।

—पठना, क्रि अ, -यूनी भू, हस (भ्वा प से), क्षि (कर्म), उप प्रशम् (दि प से) ।

धीमान्, वि (स-मन्) बुद्धिमत्, प्राज्ञ [धीमती (स्त्री) = बुद्धिमती] ।

धीमे धीमे, क्रि वि, मद मद, शनै शनै २ अचट, वतीव ३ मृदु, यथामुजम् ।

धीर, वि (म) धृतिमत्, शान, धैर्यावित, महन-क्षमा, शील, सहिष्णु, क्षमिन् २ नम्र, विनीत ३ ग(म)भीर चापल्यशून्य ।

धीरज, स पु (स धैर्य) } दे 'धैर्य' ।

धीरता, म पु (स) }

धीवर, स पु (॥) कैवत, जालिक, मत्स्य आजीव-उपन विन, माल्यिक, दाश-स, [धीवरी (स्त्री) = कैवरी] ।

धुध, सं स्त्री (स धूमाध) धूमदृष्टि (स्त्री) २ कुम्भटिका, धूमिका, कुम्भटिका ।

धुधका, स पु (हि धुध) धूम-अग्निवाह, शिद्र-विवरम् ।

धुंधला, वि (हि धुध) अस्पष्ट, अव्यक्त, मद, सुति प्रभ, दुरालोक २ धूम, ईषत्कृण, धूमवर्ण ।

—धन, स पु, अस्पष्टता, दुरालोकता, अव्य कता, भद्रप्रभता ।

धुओं, सं पु (स धूम) अग्नि-महद, वाह, सतमाल, शिविध्वज, तरी ।

—कश, स पु (हि + का) अग्निपोत ।

—धार, वि धूममय, मधूम २ धूम, धूमवर्ण ३ धोर, प्रचट । क्रि वि, सवेग, अत्यधिक, प्रबलम् ।

धुओंसा, म पु (हि धुओं) कज्जल, ममी मि (स्त्री) ।

धुकधुकी, म स्त्री (अनु धुकधुक) हृदय, हृद (न), अग्रमान २ हत-नप-स्पर्द २ त्रास, मय ४ उरोभूषणभेद ।

धुन, म स्त्री (हि धुनना) अभिनिवेश, दृढाग्रह, आमक्ति-अनिवार्यप्रवृत्ति (स्त्री)

उत्पट्टेच्छा लालसा २ चिता, विचार
३ वाक्प्रचार, लहरी ।

धुन, स स्त्री [स ध्वनि (पु)] स्वर,
गानप्रकार २ रागभेद ।

धुनकना, क्रि स, दे 'धुनना' ।

धुनकी, स स्त्री [धनुम (न) >] पिना
नी, विहनन दलतरोजवायुवक, धुनरी ।

धुनना, क्रि स (हि धुनवी) (पिबनेन)
तुल्य शुभ (प्रे) धु (स्वा ज अ) २ मृश
सट (नृ) ३ अमकृत् कथ् (जु) ४ सत
स ह ।

धुनि, स स्त्री (म) नदी, धुनी ।

धुनि, स स्त्री [म ध्वनि (पु)] शब्द,
रव ।

धुनिया, स पु (हि धुनना >) पिताशोधन,
*विनय, *तुल्यवाक्य ।

धुरधर, वि (स) धूर्त, धुर्य २ भारवाह
३ श्रेष्ठ, प्रधान, प्रकाट, मुख्य ।

धुर, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, ध्रुव
२ भार ३ आरम्भ ४ युग-य (जूना) ।
अव्य, सपूर्णतया, अशेषतया, साधन्येन ।

धुरपद, स पु (स ध्रुवपद) गीतभेद ।

धुरा, स पु [स धुर (स्त्री)] अक्ष, ध्रुव ।

धुरी, स स्त्री (हि धुरा) अक्षक, ध्रुव ।

धुलवाना, क्रि प्रे, व 'धोना' के प्रे रूप ।

धुलाई, स स्त्री (हि धुना) धावन, प्र
क्षालन २ धावन, प्रक्षालन, मृत्ति (स्त्री)

धुर्वा, स पु, दे 'धुआ' ।

धुर्बारा, स पु (हि धुर्वा) बटल-दि
धूमच्छिद्रम् ।

धुमस्स, स ॥ (स ध्वस >) मृत्तिका
चय, मृदराशि (पु), धुम्रपर्वत, २ वज्र,
चय ।

धुस्सा, स पु (म डिशाट >) प्रावेण्य
णि (स्त्री) ।

धुआँ, स पु, दे 'धुआ' ।

धूत, वि (म धूर्त) वक्त्र वपन्नि, रज्जि
पापन्नि ।

धूत, वि (स) नाभित, वपित २ त्यक्त,
उत्सृष्ट, भात्मन, निरहृत ।

धूता, स स्त्री (म) पत्नी, माता ।

धूनी, स स्त्री (म धूम >) धूप, सुगन्धि
धूम २ मिथुनानल, तपोरहि (पु) ।

—देना, सु, धूप (जु), धूप मा (प्रे प्रापयति) ।

—रमाना या लगाना, सु, पट्टिज (भ्वा प
से), मिष्ठुको भू २ तप तप (दि आ
अ), तपस्यति (ना धा) ३ तपोरहि
ज्वल् (प्रे) ।

धूप, स स्त्री (म धूप-उमकना >) आतप,
मृदु, आनोर प्रकाश ।

—ठाँह, स स्त्री, * धूपच्छाया, दिवर्णो
वस्त्रभेद ।

—दिगाना, सु, आतप प्रस (पे) ।

—संक्रमा, सु, आतप मेव (भ्वा आ से) ।

धूप, स पु स्त्री (स पु) पावन, यावन,
तुल्य पिटव, सिंह, नृण, मेरुक, २ गण
विशानिका, धूप, धूपधूम २ धूपवर्ति (स्त्री) ।

—दान, म पु, }

—दानी, स स्त्री, } धूपधाननी, धूपपात्रम् ।

धूम, स पु (स) मत्तमाल, मित्रिध्वन, दे
'धुआँ' २ वा (व)-प धम् ।

—धेनु, स पु (स) उक्ता, सोन्या
२ अग्नि (पु) ।

—धान, स पु (स न) तमाधुधूमपानम् ।

—धोत, स पु (स) अग्नि वाण धात ।

धूम, स स्त्री (म धूम >) ख्याति प्रमिष्टि-
(स्त्री) २ वीणाहल, कलकल ३ समारोह
आटवर, शोभा ४ उपद्रव, शोभ, किल्लव ।

—धाम, स स्त्री, आटवर, शोभा, श्री
(स्त्री) बृहदायोजन, वैभवम् ।

धूमर, धूमला, धूमिल, वि (स धूमन्)
धूष, धूषवर्ण, कृष्णलोहित ।

धूरति, स स्त्री, दे 'धूल' ।

धूर्त, वि (स) वक्त्र, मादित, वपन्नि,
वापन्नि, विप्रलभ्य वक्त्रदीप्त, प्रतापव ।
म पु, धूतद्वार (पु) अरदेविद रितव
२ वक्त्र, प्रतापव इ ।

धूर्तता, स स्त्री (स) वक्त्रता, माया,
प्रतापणा, वपन्, रितवम् ।

धूल, स स्त्री [म धूति (पु स्त्री)] धूनी,
रजम (न), पांसु धु (पु), रेणु, मित्रि
वण, महीद्व, बाल नभ, वेणु (पु), चूर्ण,
धोद २ तुल्यवस्तु (न) ।

—आइना, कि म, धुलि-लीं धु (स्वा उ अ) ।
 —उड़ना, मु, (रथन की) ध्वम् (स्वा आ से) धुलीमन् भू । (मनुष्य को) निद्र अधिशिष दप् (कर्म) ।
 —उड़ाना, मु, दुष (प्रे दृषयति) अधिशिष (तु प य) २ उपहस (स्वा प मे) ।
 —चाटना, मु, पदयो पतित्वा पाच (स्वा आ से) अभ्यध (तु पा से) ।
 —ऊतना, मु मोय भ्रम (स्वा प से) ।
 —मै मिलना, मु, धुलीमान् भू नश (दि प व) ।
 —समझना, मु मृन् मृणय मन् (दि आ अ) अवगण (तु) ।
 धूलि, म स्त्री (म पु स्त्री) दे धूल' ।
 धूमर, वि (स) अरुण, पादु, पादु धूलि वर्ण २ पादु (शु) ल, धूलिधूमर, रेणु दधित ल् ।
 धूमरित, वि (म) दे 'धूमर' ।
 धूहा, म पु (हि दूह) रगविभीषिका ।
 धृत, वि (म) धारित, अवलम्बित, २ आदत्त, गृहीत ३ स्थिरीकृत, निश्चित ।
 धृतराष्ट्र, म पु (म) दुर्वोधनजनम्, नृप विशेष ।
 धृति, म स्त्री (म) दे 'धैर्य' ।
 धृष्ट, वि (म) निर्लज्ज विवात, प्रगल्भ, दे 'दीठ' ।
 धृष्टता, म स्त्री (म) प्रागल्भ्य, वैवात्य, दे 'डिठा' ।
 धेनु, म स्त्री (म) नवम् (प्रम्) निका (गी) २ गौ (स्त्री), दे ।
 धेला, म पु दे 'अधेला' ।
 धेली, म स्त्री, दे 'अधेली' ।
 धैर्य, म पु (म न) धीमत्, धीरता, धृति (स्त्री), मन स्थैर्य, मत्त, द्रष्टिम् (पु), दृढता, शीमराहित्यम् ।
 धवत, म पु (म) पष्ठ स्वर (मगीन०) ।
 धोना का, म पु (म धूक) छल, वप, धुकता, पतारणा, वस्त्रम्, २ मोट, भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री) अमन् मिथ्या प्रतीति (स्त्री) ३ मया, उटपाल, विवर्त ४ अज्ञान, अवीध ५ मदाय, मदेह ६ प्रमाद, भुति (स्त्री) ।
 —गाना, म, बच् बिप्रम्-अभिमान प्रता (म) ।

—देना, मु, प्रतृ (प्रे) वच् ल (तु), अनि अभिसंधा (तु उ अ), मुह (प्रे) ।
 —गोखे की टट्टी, मु मोहनक मायामय, वस्त (न) ।
 धोखेवाज, वि, (हि + का) कापटिक, छात्रिक, मायाविन् ।
 धोखेवाजी, म स्त्री (हि धोखेवाज) कापटिकता, वप, ग्राहिकता ।
 धोनी, म स्त्री । (म धीन >) शाटिका, धीनावर धोना ।
 —ढीली होना, मु भयत् पलाय (स्वा पा मे) ।
 धोना, कि म (स धावन) धाव् (स्वा प मे) प्र शृत् (तु) निर निज (तु उ अ), प्रमृन् (अ प वे) २ दूरी क, अपत् (प्रे) ।
 स पु धावन, प्र, क्षालन, निर्णेक, माजनम् ।
 धोने योग्य, वि, धावनीय, प्र, क्षालयितव्य, निर्णेकव्य ।
 धोनेवाला, स पु, धावर, प्र, क्षालक, क्षारक ।
 धोबिन, म स्त्री (हि धोबी) रत्नकीका २ रत्नपत्नी, धावरुभार्या ।
 धोरी, म प (हि धोना) धावर, रत्न, निर्णेकर, क्षारक, रजोन्तर ।
 —घाट, म पु धावरुष्ट ।
 —का कुत्ता, मु अभिचिन्तक, गुण मार हीन (जन) ।
 —का टला, मु, परपदार्थ, परवन्त, दृष्ट गर्बित ।
 धोया हुआ, वि धीन, धावित, माजित, प्रक्षिप्त निर्णेक २ ।
 धोवन, म स्त्री (हि धोना) धावन, प्र, क्षालन २ धवनावशिष्ट जलम् ।
 धौकना, कि म (म धा >) भक्त्या ध्मा (स्वा प अ, धमनि), इत्या वति प्रज्वल (प्रे) ।
 धौकनी, म स्त्री (हि धौकना) भक्ता, भक्ता, भक्तिका, इति (स्त्री) चर्म, प्रसेविका प्रमेवरु ।
 धौम, म स्त्री (म ध्वम >) तर्जना, विभीषिका, भयदर्शन २ प्रमुत्त, अधिकार ३ छल, वपम् ।
 —पट्टी, स स्त्री मिथ्याज्ञा, मिथ्या मात्वना ।

- धौसा, म पु (अनु) दे 'टका' ।
 धौसिया, म पु (१६ धौसा) टिंटीम-डका,
 बादर गाढर ।
 धौसिया, म पु (हि धाम) भयदगंक,
 रिमिपक २ नन्तर, कपटिन् ।
 धौत, वि (स) दे 'धोया हुआ' २ खञ्ज
 ३ रनात ।
 धौति ती, म स्त्री (म) योगिनत्रिभाभेद ।
 धौरा-ला, वि (म भवत्) ड्वेन, झुनल
 सित । म प भवत् खपभवर ।
 धौरेय, वि (म) भार बाहर-बाहिन । म
 पु (म) शरन्वाहदृष्ट २ अघ ३ सुट्य,
 नायक ।
 धौल, म स्त्री (अनु) चपेट टिका, करतना
 घात २ क्षति हानि (स्त्री) ।
 —धप्पा, म पु, दुष्टीमुष्टि गद्गुवाहवि (न) ।
 ध्यान, स पु (स न) ऐकाग्र्य, समाधि
 (पु) अन्तर्ध्यान, चित्तस्थैर्य २ रम्यति (स्त्री),
 धारणा ३ धी बुद्धि (स्त्री) ४ अवधान,
 मनोयोग ५ चित्त, मनस (न) ६ चित्ता,
 मनन ७ भावना, मति (स्त्री) ८ मानस
 प्रत्यक्षम् ।
 —आना, मु, रम्य (भ्वा प अ), अनुचित
 (चु) ।
 —दिलाना, ॥, भद्र-रम्य (मे) ।
 —देना, मु, अवधा (जु उ अ) मन
 चुन (चु) ।
 —बटाना, मु, चित्त ध्यान अपकृष (भ्वा
 प अ) ।
 —म म लाना, मु, अवगण अवधीर (चु) ।
 —मै मग्न होना या डुबना, मु, विनार ध्यान,
 मग्न (वि) रथा (भ्वा प अ) ।

न देवतागरीव मित्राया विनो व्यजनवर्ण,
 नकार ।

नंग, म पु (हि नंगा), नग्नतास्व दिग्म
 रतास्व २ गंधात्र, शुधम् ।

—धवद्ग, वि } दे नगा (१) ।

—सुनंगा, वि }
 नंगा, वि (म नग्न) अनिरुवि, नन्व-नग्न

- ररना, मु, न विस्मृ (भ्वा प अ) मनसि कृ ।
 —लगाता, मु नि ध्वे (भ्वा प अ), समाधा
 (जु उ अ), विविन् (चु) ।
 —से उतरना, मु विस्मृ (वर्म) ।
 ध्यानस्थ, वि (स) ध्यान गितन विनार,
 मग्न लीन ।
 ध्यानी, वि (स निन्) ध्यान विनन, क्षीन
 पराथण पर, विनारयत् ।
 ध्येय, वि (स) ध्यान्य विननीय । ॥ पु
 (म न) लक्ष्य, लक्ष्य, उद्देश इयम् ।
 ध्रुपद, स पु, दे 'धुरपद' ।
 ध्रुय, वि (स) अवल, अविलल, निक्षल,
 स्थिर २ नित्य, निर्विकार, अव्यय ३ निक्षल,
 नियत, अमर्दिग्ध । स पु (स) ध्रुवतारा,
 नक्षत्रनेमि (पु), उत्तानपादज, ज्योतीरथ ।
 ध्वस्, म पु (स) प्रवि, ध्वस, वि, नाश,
 अवसाद उच्छेद, क्षय, निपात, सहार ।
 ध्वजा, म स्त्री (म ध्वज) पताका, वैजयन्ती,
 वेनु (पु) वृत्तदम् ।
 ध्वजी, स पु (म मिन्) पनाकिन्, ध्वज,
 वाहक धारिन् ।
 ध्वनि, स स्त्री (म पु) नि, नाद, शब्द,
 र(त)व, स्वर, घोष, ध्वान, निम्, स्व(स्वा)
 न, निहाद ३ शब्दस्फोट ३ ध्वन्यार्थ
 प्रधान काम्य ४ गूढाव, गुप्ताशय ।
 ध्वनित, वि (म) स्वनित ववणित, नादित,
 शब्दित, रसित २ भग्या सुविन, द्योविन,
 उपलक्षित, व्यञ्जित, विवक्षित ३ धारित ।
 ध्वस्त, वि (म) प्रवि, ध्वस्त, वि, नष्ट, अव
 सन्न, उच्छिन्न, क्षीण, निपातित, स्रष्टित, भग्न
 २ पराजित ।
 ध्वाक्ष, म पु (म) वाक् ।
 ध्वान, म पु (म) शब्द, दे 'ध्वनि' ।

न

न देवतागरीव मित्राया विनो व्यजनवर्ण,
 नकार ।

नंग, म पु (हि नंगा), नग्नतास्व दिग्म
 रतास्व २ गंधात्र, शुधम् ।

—धवद्ग, वि } दे नगा (१) ।

—सुनंगा, वि }
 नंगा, वि (म नग्न) अनिरुवि, नन्व-नग्न

नामम, दिग्, अम्बर-नाम २ अनाहृत, ना
 वरण आच्छादन, रदिन ३ निम्बर, रि ७ ।

—करना, वि म, मग्नी विवर्ण विवर्ण ॥ कृ ।

—हुवा वा वृवा, वि, रग्नि, आरिग ।

—मादरगाद, वि (ग) दिग्बर, दिग्मग्न ।

—लुवा, वि, दुह, मर, दुह्य ।

नगे पौव, वि, नग्नपात्र, पादलीन ।

नगे सिर, वि, नग्नशिरस्क निष्णीष ।

नंदी, म पु (स) आनन्द, मोद २ पुत्र
३ श्रीकृष्णस्य धर्मनात प्रतिपालक ४ मन्त्रे
श्वरविशेष ।

—किशोर, कुमार, नन्दन, स पु (म) श्री
कृष्ण वासुदेव ।

नद, म स्त्री दे ननद' ।

नदक, वि (स) हर्ष प्रद ननक आनन्द
दायक । म पु श्रीकृष्णराग्य ।

नदन, म पु (स न) 'इदवनम्' स पु
पुत्र २ मेर । वि हर्षक मोरक ।

—वन म पु (म न) गच्छोपनम् ।

नदना, म स्त्री (म) पुत्री तनया ।

नदनी, म स्त्री दे नदिनी' ।

नदि, म पु (म) आनन्द हर्ष २ शिव
शैवसिद्धि ध्वज, नन्दिकेश्वर ।

नदिकेश्वर, म पु (म) नदिदेश, शिव
ध्वज २ शिव ३ उपपुराणविशेष ।

नदिनी, म स्त्री (म) पुत्री दुहितृ (स्त्री),
तनया २ ननाइ-ननइ (स्त्री) ३ पत्नी, भार्या
४ दुगा ।

नदी, स पु (म नन्दिन) शिवगणभेद
२ शिवशरपाल ध्वज ।

—इश्वर, स पु (म) शिव ।

नवोई, नवोमी, म पु (हि नन्व) ननाइ
पति, कौतूहल ।

नवर, म पु (अ) सरदा, गयना, अक
२ विह, लग्न ३ पयाय, परिवृत्ति (स्त्री),
वार ।

—शर, म पु (अ + का) भूरो-ग्राहक ।

—शर, कि वि (अ + का) यथाक्रम,
क्रमशः ण्वैक्य (सव अन्व) एवविण
क्रमेण (नृ) ।

नचरिग मशीन, म स्त्री (अ) अकनयनम् ।

नचरी, वि (अ नवर) अकिन, अकयुन, माक
२ विद्यान, निधुन ।

—सेर, म पु, आग्नी-मेरु-मेर ।

न, अन्य (न) न, नदि, नो २ (मन) मा,
मा मा अन् (नृ-न्या अवदा क्त्वा (या ल्यप)
के योग में) ।

—न, मा मैव, मा तावत् ।

न, नच नवा, न नवा नच न
च, न न (उ नरानो गतो नवा कृष्ण) ।

नक, म स्त्री, (म नका) नासा, नासिका ।

—कण, वि छिन्न-नाम-न सिक २ विख्य,
विग्र अविगत, नामिक ३ निर्मल, अपवप ।

—कनी, म स्त्री, नामावेद २ अवमानना,
मानह नि (स्त्री) ।

—धिमनी, स स्त्री भूमौ नामिकापर्यण
२ दैव विदाय ।

—चण, वि दुष्प्रकृति कु-दु शील ।

—छिकनी, म स्त्री छिकनी, गिका, उमा,
जिता ।

—मूल, म प लवग प्रणभूषाभेद ।

—वेसर, म पु नाथक ।

नकड, म पु (अ) टङ्क नाणक, मुद्रा,
मुद्राधनन । वि, प्रस्तुन (धनादि) ।

नकडी, स स्त्री दे नकड' स पु ।

नकपुडी, म स्त्री, दे 'नधना' ।

नकष स स्त्री (अ) दे मैष' ।

नकल, म स्त्री (अ) अनुप्रति-लिपि (स्त्री)-
ला २ अनुकृति अनुवृत्ति (स्त्री) ३ अनु,
करण-मरण ३ सोपहाम अनुकरण विश्वनम् ।

—करना, कि स, अनुप्रति, लिपि कृपा लिख
(तु प मे) २ अनुक ३ विन्व (नु) ।

—नवीस, म पु (अ + का) अनुप्रति, जेखक,
प्रतिप्रिपि (का) र ।

नकली, वि (अ) कृतक, कृत्रिम २ कापटिक,
छात्रिक, कण, कृ, छत्र ।

नकमीर, म स्त्री (हि नर + स क्षीर = बल)
नामारक्तवाव ।

—कूना, कि अ, नासाया रक्तलु (भ्वा
प अ) ।

नकाव, म स्त्री पु (अ) वणक, बर्गिका
२ अवगुठन, आवरक-कम् ।

—रोश, वि बर्गिका-टारिन, अवगुठनवप ।

नकार, स पु (म) निषधकवाक्य २ प्रत्या
ख्यान, निप्रतिपेध ३ 'न' इत्यस्यरम् ।

नकारना, कि अ (स नकार >) प्रनिनि,
निध (भ्वा प वे) ।

नकीच, म पु (अ०) चारण, वन्दिन ।

नकुल, म पु (म) मपारि, वधु २ पादु
रान्मय गुरुपुत्र २ पुत्र ।

नकेल, म स्त्री (हि नाक) नामिकारज्जु
(स्त्री) ।

नकारप्रदाना, म पु (फा) चिडिमालय,
ददमिगृहम् ।

—नकारप्रदाने म दूती की आज्ञा, मु,
अरण्यानदिनम् ।

नकारची, म पु (फा) दुदुभिवादक, पट्ट
हाउस ।

नकारा, स पु (फा) आनक टिटिम,
दुदमि (पु), पट्ट, मेरी ।

नकारल, स पु (अ) अनुवारिन्, विज्जन्दर,
विटवक २ भट, विद्वक, वैदामिक ३ नट,
दुशीलव, रगाजीव ।

नकारादा, म पु (अ) उत्तरक ।

नकारशी, म स्त्री (अ) उत्तिरणम् ।

नकी, म स्त्री (स नका) अक्षे कीर्णपणे वा
प्यविन्दुविहम् ।

—दुआ, म पु, अक्षकीर्णभेद ।

—मूठ, म स्त्री, धूमभेद ।

नकट, वि (हि नाक) कुन्यानिमम्, कुपमिह,
दुनीमम् ।

नक्तचर, म पु (म) राक्षस, निशाचर
२ उन्म, घृष्ट ३ नीर, स्तेज ।

नक्तदिन, अन्य (स नक्तदिनम्) नक्तदिन,
अदौरात्र, अर्हानक्षम् । दिवात्रात्रम् (सब अन्य)

नक्त, म पु (सं न) रात्रीति (स्त्री),
निशा ।

नक्त, म पु (म) दे 'मगरमच्छम्' ।

नक्षत्रा, म पु (अ) आनेत्र्य, विज, प्रतिहृति
(स्त्री) २ मुद्रा, अंक, विह ३ अक्षुर्ण,
आज्ञति (स्त्री) ।

—करना, क्रि म, अरुमद्रविह (न)
२ निविज (मै) न्यम (दि प से) ।

नक्षत्रा, म पु (अ) मान प्रदं, विज, प्रेशा
त्रात्र २ आत्रा प्रति मानं रूप ३ रूप
देगान्तरम् ।

नक्षत्र, म पु (मं न) नक्षत्र, नक्षत्र, नक्षु
(पु) २ रात्रि (पु), रात्रिनक्षत्र ३ भगण,
तागामम् ।

—नाथ, —पति, —रज, म पु (मं) नक्ष ।

नक्ष, म पु (मं पुं न) दे 'नाथम्' ।

—दिग्ग, सं प (मं न) मवाणि अगात्रि,
मवावयवा, गात्राणि (मव बहु) २ सर्वा
नक्षत्रम् ।

—शिरसे, मु, आपादशीर्षी, पूर्णतया, साम
स्तेन ।

नक्षरा, सं पु (फा) विभ्रम, विलास, लीला
द्वय, २ चाप य ३ व्यान, कपम् ।

नक्षरेवाज्ञ, वि (फा) मविभ्रम, लीलामय
(स्त्री लीलामयी, विलामिनी) ।

नक्षरेवाजी, म स्त्री (फा) ललिताभिनय,
लीला ।

—करना या खबरना, क्रि स, विलम (स्वा
प मै), ललिताभिनय ३ २ कपट न
व्याज ३ ।

नक्षी, म पु (स नक्षिन्) सिंह २ चित्र ।
वि, सनय, नगवत् ।

नक्ष, म पु (सं) पवन, गिरि (पु)
२ वृष्ट ३ 'सप्तन्' इति सप्त्या ४ सर्व
५ मय । वि, अबल, स्थिर ।

—पति, म पु (स) शिव २ हिमालय ।

नक्ष, म पु, (फा नक्षिन्) दे 'नक्षिनी'
२, मस्या ।

नक्ष, म पु (स) विलक्षण, छन्द शास्त्रे
गणभेद (३० नमन, नमन ३०) ।

नक्ष, वि (स अगण) क्षुद्र, कुष्ठ, साधा
रण, मामान्य ।

नक्ष, म पु, दे 'नक्ष' ।

नक्षिनी, म स्त्री (सं नक्षिनी) नक्षिनी, निवन्धा,
विदग्धा २ अपुष्पा, रजोरहिता कन्या
३ निलम्बा, स्त्रीरणी ।

नक्षिनी, म पु (अ) सुमधुर, स्वर न्वन
२ गीत, कीर्तिता ३ राग ।

नक्षिनी, म पु (म न) पुर (स्त्री), पुर,
पुरी, नक्षिनी, पत्तन, पट्टनी, पट्ट, विपक्ष ।

—कीर्तन म पु (म न) वात्राभगानम् ।

—नक्षिनी, म स्त्री (म) नक्षिनीयिनी, नक्षिनी ।

—नक्षिनी, म पु (म निन्) वीर, वीर, व्रत
लोच ।

नक्षिनी, म स्त्री (सं) दे 'नक्ष' ।

नक्षिनी, —रा, म पु दे 'नक्षिनी' ।

नक्षिनी, म पु (फा) रत्न, मणि (न)
२ देवीयवभेद ।

नक्षिनी, वि (म) २ 'नक्ष' ।

नक्षिनी, म स्त्री (म) दे 'नक्ष' ।

नचवाना, नचाना, कि प्रे, व 'नाचना' के प्रे रूप ।

नजदीक, वि (का) सज्जिहित, समीप, निवट ।
नजदीकी, स स्त्री (का) मात्रिप्य, सामीप्य ।
नज्जम, स स्त्री (अ नज्जम) कविता पद्य,
छंदम (न) ।

नजर, स स्त्री (अ) दृस्, दृक्शक्ति, दृष्टि
(मव स्त्री) २ दयादृष्टि (स्त्री) परि,
अवेक्षण अवेक्षा ३ निरीक्षण ४ दे 'नउराना'
५ कु-दुर, दृष्टि ।

—अदाज, वि (अ + का) अवधीरित,
निराकृत, उपेक्षित ।

—आना या पहना, कि अ, इस् इस्-अव
लोक् (कम) ।

—डालना, कि स, इरा (स्वा प अ), इस्
(स्वा आ से) ।

—बद, वि (अ + फा) निरुद्ध ।

—बदी, स स्त्री (अ + का) (निश्चिनस्थाने)
निरोध ।

—बाज, स पु (अ + का) बटाक्षवीक्षक,
भ्रविलासक, *पापदृष्टि ।

—सानी, स स्त्री (अ) पुनरीक्षण, सशोधनम् ।

—छाना, मु, दुष्टप्रापीड् (कम) ।

—से गिरना, मु, अप-अव-मग्न (प्रे), कल्क
यति (ना धा) ।

मज्जराना, स पु (अ) उपहार, उपायनम् ।

नज्जला, स पु (अ) बध, इत्थम् (पु)
२ आभ्युद, प्रतिदयाय, नामास्त्राय ।

नज्जाकृत, स स्त्री (का) लालित्य, सुकुमारता,
कोमलता ।

नज्जाव, स स्त्री (अ) मुक्ति (स्त्री), अपवग ।

नजारा, स पु (अ) इदय, दृग्गोचरस्थान
२ दृष्टि (स्त्री) ३ कटक्ष ।

नजोर, स स्त्री (अ) उदाहरण, दृष्टात ।

नजूस, स पु (अ) ज्योतिष, नक्षत्रविद्या ।

नजूसी, स पु (अ) ज्योतिषिक, ज्योति
षि (पु) ।

ननुल्, पु (अ) राज-नृप शासक भूमि
(स्त्री) ।

नट, स पु (स) दैत्य, जायाजीन, भरत,
अभिनेट, भरतपुत्रक, रग, शोच-अवतारक,
सर्वेश्वरिण, नट, नाट्य २ रज्जुनतक
३ व्यायामिन् ४ वातिविशेष ।

—चर, स पु (स) श्रीकृष्ण ।

नटखट, वि (म नट + अनु ट) चपल,
चंचल, कुचटक २ धूत, मायाविन ।

नटखणी, स स्त्री (हि नटख) चपलता
२ धूतता ।

नटनी, स स्त्री, दे 'नगी' ।

नटी, स स्त्री (म) दैत्यपित्री, अभिनेत्री,
सर्वेश्विनी २ नटकी ३ नटपत्नी ४ वेद्या
५ नट-पातेनारी ।

नटीजा, स पु (अ) परिणाम, फल २ अध,
पाक ।

नस्थी, स स्त्री (हि नाथना) नहन, मग्नधन
२ नहनमूत्र ३ लेख्यश्रेणी ।

नथ, स स्त्री (म नाथ = नाथ की रस्मी)
नाथ, नासावलय ।

नथना, स पु (स नथ = नाथ) । नामा
नासिका, रज्जु रथ-विवर २ नासापुत्र पुत्रम् ।

कि अ, व्यर्थ-इद (कम) २ मग्नधननह
(कम) ।

—चदाना या फुलाना मु, क्रुध (दि प अ) ।

मथनी, स स्त्री (हि नथ) *नाथक ।

नद, ॥ पु (म) उष भिष, मरस्व (पु) ।

—राज, स पु (स) समुद्र ।

नदारद, वि (फा) अनुपस्थित, लुप्त, अदृष्ट ।

नदीश, स पु (स) समुद्र, गन्धि (पु) ।

नदिया, ॥ स्त्री (म नदिचा) धुत्र-सरित्-नदी ।

नदी, स स्त्री (म) सटिनी, तरंगिणी, दैवलिनी,

सोनस्वनी, बाहिनी सरित् (स्त्री) ह (भा)

दिनी, धुनी, निम्नता, आ (अ) पगा, मिथु

(पु), रोषो, सौमस्वती, कुलवती, लवनी ।

—कात, स पु (म) मातर, पलधि (पु) ।

—तीर, स पु (म न) सरित्-नदी, कूल

तटम् ।

नदीन, स पु (म) समुद्र, मातर २

वरण ।

नदीश, स पु (स) अर्ध-जलधि (पु) ।

नद्ध, वि (स) बद्ध, योनिन, मशनेपिन ।

नद्धी, स स्त्री (स) चन, रज्जु (स्त्री)

कह्या ।

नधना, कि अ (स नद्ध) नि, बध (कम)

स्युन (कर्म) २ दे 'जुतना' ३ प्रारम्भ

(कम) ।

ननद, ननद-श्री, स स्त्री [स ननद (स्त्री)] ।

ननाट (स्त्री), मर्तृमणिनी, नदिनी, नदा,
पतिम्बसु (स्त्री) ।
ननिहाल, स पु (हिं नानी + म आलय)
मानामहालय, मानकुलम् ।
नन्हा, वि (म न्यन् + ह) अनिलसु, सुद्र,
अल्पशुद्र, ननु, प्रननु । स पु, शिशु, स्तन
धय ।
ननुमरु, स पु (म) क्लीब, तृतीय प्रकृति
(पु) पट, पोगट, झ (प) ङङ (म
न), क्लीबलिंग (स्त्री) । वि, मीरु, कातर ।
ननुसकता, स स्त्री (म) क्लीबता, पटता,
शठता २ भीकता, कानरता ।
नफरत, स स्त्री (अ) दे 'धृणा' ।
नफा, स पु (अ) लाभ, आय, उदय,
फल, वृद्धि (स्त्री) ।
नफीस, वि (अ) उत्कृष्ट, उत्तम, विशिष्ट
२ चारु, शौभन, सुंदर ३ उज्ज्वल, विमल ।
नवी, स पु (अ) मित्र, वैशुद्ध, आधिक्यक ।
नवेडना, कि स, (म निवृत्ता >) दे
'निपटाना' ।
नवेडा, स पु (हिं नवेडनी) न्याय, निर्णय ।
नज्ज, स स्त्री (ङ) नाटीनि (स्त्री) ।
—देखना, कि म, नार्डि 'परीभ्र (भ्रा आ से) ।
नभ, स पु [म नभम् (न)] दे 'आकाश' ।
—चर, स पु (म नभश्चर) राग, ऐश्वर्य ।
नभ, अव्य (म) प्रगति (स्त्री), प्रणाम,
अभिवाद-दन, नमस्कार, नमस्क्रिया ।
नभ, वि (का) जाट, उग्र ।
नभक, स पु (का) लवण २ लवण्य,
विशिष्ट-मौन्दर्य ३ पिण्ड । (नभ के भेद,
दे 'नीन') ।
—नवार, स पु (का) पराश्रित, परायण,
सेवक ।
—दान, स पु (का) लवणधानी ।
—नसेजाय, स पु, उदनीरियम्, लवणम् ।
—हराम, वि (का + म) कृपणालस्य,
अहंकारिन्, हान, (नी स्त्री) ।
—हरामा, स स्त्री गृहपति, हानता ।
—हलाल, वि (का + ल) अनुरक्त, भक्त,
सन्तुष्ट ।
—हलाली, स स्त्री, अरि-अनुरजि (स्त्री)
हलान्ता ।

—खाना, सु, परायण भुत् (ह आ अ),
पराश्रय मेव (भ्रा आ से) ।
—मिर्च लगाणा, सु, अत्युत्था वण् (तु) ।
कटे पर—लगाणा अववा धाव पर—टिक्वना,
सु धते शार शिप् (तु प अ) ।
नमकीन, वि (फा) लवण, लवण शार, युक्त
मय-गुणविशिष्ट धर्मक २ लवणित, मलवण,
लवणमसृष्ट ३ अमिराम, मनोप । स पु,
लवणपक्वान्न (ममोमा आदि) ।
नमदा, स पु (का) नमत्तम् ।
नमन, स पु (म न) नमस्कार, प्रणति
(स्त्री) २ अवगमन, नति (स्त्री) ।
नमनीय, वि (म) पूज्य, वन्दनीय ।
नमस्कार, स पु (स) दे 'नम' ।
नमस्ते, वाक्य, (म) नमस्तुभ्य, नमामि
त्वाम् । स स्त्री, प्रणाम, प्रणति (स्त्री),
नमस्कार ।
नमाज़, स स्त्री (का) ईश, प्राधना-वन्दना
(इस्लाम) ।
नमित, वि (म) जाभुन्न, नमित, प्रवण, प्रह ।
नमी, स स्त्री (का) नदीना, किल्लना ।
नमूदार, वि० (का) उदित, प्रवट, दृग्गोचर ।
नमूना, स पु (का) आदर्श, प्रतिमा, प्रति
रूप २ उपमान, प्रतिमानम् ।
नम्र, वि (म) निर, अभिमान अहंकार,
विनत, विनीत, विनयित, विनयशील, अभि
मान शय-दर्प, रहित-गुण्य-हीन, नम्रचैतन् २
नत, प्रवण ।
नम्रता, स स्त्री (म) प्रथय-यण, विनय,
विनयिता, निरभिमानता, सोप्यता ।
नय, स पु (म) नय, नीति (स्त्री) ।
—नागर, वि (मं) नय नीति, निपुण-विविद्ध
विद्विषारद-ज्ञान ।
नयन, स पु (म न) नेत्र, दे 'भोत्त' २
अपनयन, अपनहन ।
—गोचर, वि (म) दृग्गोचर, दृष्टिगोचर ।
—नद, स पु (म) नेत्र नयन-पद
पद ।
—उल, स पु (न) नयन, परि (न)
मलिन-नयम् ।
नया, वि (म नय) आनन्दन-दाननीन
[—नी (स्त्री)] आनुमिक [—नी (स्त्री)],

अर्वांगत = अभिनव, नवीन, नूतन, प्रत्यय
 ३ अभूत-अदृष्ट, पूर्व-अनभ्यस्त, अपरिचित।
 —पन, स पु, नवीनता, नूतनता, अपूर्वता।
 नये सिरे से, कि वि, पुन, पुनरपि अपि
 नवम्।
 नर, स पु (स) पु (पू) रूप, नृपुम (पु),
 १ भनुन, मनुष्य, मानुष, मानव, मत्स्य।
 वि, पुनातीय, नर, पु, पुरुष-उ, पुन्याय।
 —नव, स पु (म) नृप २ ब्राह्मण।
 —नाथ, स पु (स) नरपति, भूप।
 —नारायण, स पु [म नौ (दि)] अधि
 निवेशी।
 —पिशाच, स पु (स) महादुष्ट, महाक्रूर।
 —भक्षी, स पु (स-क्षिन्) राक्षस, पिशाच।
 —लोक, स पु (म) पृथिवी, मत्स्यलोक।
 —मिथ, स पु, दे 'नृमिह'।
 —मिह, स प (म) दे 'नृमिह'।
 नरक, स पु (म पु न) दुर्गति (स्त्री),
 नारक, निर- अस्मिन्निस्थान ३ दुःख
 पृथक्स्थानम्।
 —कुट, स पु (म न) निरप नरक, कूप
 कुण्डम्।
 नरकट, स पु (म नल) धमन, न,
 नाभ, बीजन, कुक्षिप्र।
 नरक(कु)ल, नरकम्, स पु, दे 'नरकट'।
 नरकेष्ट(म, ह)री, स पु, दे 'नृमिह'।
 नरहरि, स स्त्री (दिश) कठ, २ पाण
 नरहरा, स पु । श्रम, माग-नाशिका।
 नरगिरि, स पु (का) पुष्पमेद, *नरगिरिम्।
 नरु, स स्त्री (का नरु) शारि (पु),
 शारिका, शरिपलम्।
 नरभो, स स्त्री, दे 'नरा'।
 नरमिथा, स पु (ग नर (=वर्ण) + मृत् >)
 वापमेद, *नरमृत्, कटल-मृत्म्।
 नरमो, वि वि, दे 'अनरमो'।
 नराच, स पु (स नराच) वा, दर।
 नराचम स प (म) न, पप, पापिष्ठ,
 नीच।
 नराधिर, स पु (म) नृप, भूप।
 नरेन्द्र, नरेत्, नरेन्द्र, स पु (म) नृप,
 रुद्र, राजन् (पु)।
 नरैक, स पु (म) एवात्म्य, नृत्य, नर

वारिन् २ दे 'नट' (१) ३ वरिन्, वैतालिक
 ४ दे 'नरकट'।
 नरैकी, स स्त्री (स) ल्यपुत्री, नृत्य, वरी
 कारिणी, लासिका २ दे 'नटी' (१)।
 नरैन्, स पु (म न) नृत्यम्। (पुरषो
 वा-) ताण्डव-नम्। (स्त्रियो का-) लात्यम्।
 नरैदा, स स्त्री (म नरैदा) रेवा, मेरुल
 वन्या, मोमसुता।
 नरै, स पु [स नरैन् (न)] परि(री)-
 हाम, विनोद।
 नरै, वि (का) (स्वभाव) कोमल, मृदुल,
 सुकुमार, सौम्य, २ (पदार्थ) मसृण, स्निग्ध,
 दृढण, सुतरपक्ष, ३ (ध्वनि) मधुर, मञ्जुल।
 नरैना, कि अ (का नरै) मृदू भू २ दयाशी
 भू प्र शम् (दि प से)। कि स, मृदू क
 २ दयाशी क, प्र, शम् (प्रे शमपति)।
 नरै, स स्त्री (का नर) कोमलता, मृदुता,
 सौम्यता २ मसृणता, दृढणता।
 नरै, स पु (स) नृपविशेष, दमयन्ती
 पति (पु)।
 नरै, स पु (स) दे 'नरकट'।
 नरै, स पु (स न) पद्म, कमलम्।
 नरै, स पु (स नाल) नावी-लो, नाटि-
 लि (स्त्री) प्रणाल-स्त्री।
 नारी का नर, स पु प्रणालिका, मारगि
 (न), नन्नाली।
 नरै, स पु (दि नर) मृदू, मार्ग-नाली।
 नरैन्, स पु (म न) कमल, सरोजम्।
 नरैनी, स स्त्री (म) अञ्ज, कमल २ पद्म
 मृदू ३ पद्मकर, पुष्करिणी ४ (लता)
 धमिलिनी पथिनी, शृणालिनी ५ नदी।
 नरै, स स्त्री (दि नर) मृदू-मृदु, नाली
 नरै दे 'नर' (१) २ दे 'नरहरा' ३ अ
 ग्न्यस्वनाली-स्त्री ४ अनुयायि (न)
 ५ सरवेण, व्रमर।
 नरै, वि (म) नवीन, नूतन, दे 'नरा'।
 —युवक, स पु, नव-युवन् (पु), न,
 यन्त्र किशोर।
 —युवता, स स्त्री (म) नवयुवति (स्त्री)-
 वा नवयुती, नली, यन्त्रो वृद्धे।
 —यव, स स्त्री (स) नवीना, बहू (स्त्री),
 नवरागिप्रणा, नवविका।

नव^२, वि तथा सं पु (स नवन्) दे 'नौ' ।
—ग्रह, स पु [स हा (नङ्)] सूर्यादय
नव ग्रहा ।

—द्वार, वि (स) नवद्वारयुक्त २ नवच्छिद्र
(शरीरम्) ।

—निधि, म स्त्री (स पु) नवरत्नयुत कुबेरकोष ।

—रत्न, स पु (म न) नवप्रकारमण्य
(मोती, माणिक्य आदि) २ विक्रमादित्यस्य
राजसभायाः कालिदासदासो नन्न पठिता
३ नवविभरत्नयुत हार केयूर वा ।

—रात्र, स पु (स न) आश्विनयुज्यप्रतिप
द्वादिवनरीपर्यंतसप्तत्यंशदुर्गामृतविशेष ।

—सप्त क्षाजना, मु, षोडशम्यारे अणुठ ।

नवक, स पु (स न) नववस्तुसमूह ।

नवधा, अव्य (न) नवप्रकारे, नव
खण्डेषु ।

—भक्ति, सं स्त्री (स) नवप्रकारा भक्ति
(श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन,
वन्दन, दास्य, सस्य, आत्मनिवेदनम्) ।

नवनी, नवनीत, स स्त्री, स पु, (म) दे
'नवजन' ।

नवम, वि (स) नवम मंमी (पु न स्त्री) ।

नवमी, स स्त्री (स) चतुर्दशमस्य कृत्वा
शुक्ला वा नवमी तिथि (स्त्री) ।

नवल, वि (स) नवीन, नव्य, नूतन ० सुदर
३ सुवन् (पु) ४ उज्ज्वल, स्वच्छ ।

नवला, स स्त्री (स) तक्षी, सुवती वि (स्त्री) ।

नवौ, रि, दे 'नौवा' ।

नवाना, रि स, दे 'शुक्राना' ।

नवाध, स पु (म न) नूतना ० आह्वये
३ सप्तपञ्चमशब्द ।

नवाव, म पु (न नवान्) रात्रप्रतिनिधि
(पु) २ उपनिषद् ३ प्रातःकाल । वि,
अतिव्ययिन्, अर्थनाशिन् २ आशयन, नामक ।

—जादा, स पु (का) राजप्रतिनिधि राजा
पक्ष पुन २ विनामिन्, सम्बरायण ।

नवाजी, म स्त्री (अ नवान्) राज, प्रतिनि
धित्वा प्रतिनिध्य २ अविहार, शासन, स्वाम्य
३ सुयोग्यभोग, निवासितम् ।

नवासा, म पु (का) दीक्षित, पुत्री-दुहितृ,
पुन । नवामी (स्त्री = दीक्षिणी) ।

नवामी, वि [सं नवासीति (नित्य स्त्री)] ।

सं पु, उक्ता मख्या, तद्वती (८९) २ ।

नवीन, रि (स) दे 'नया' ।

नवीनता, स स्त्री (म) दे 'नयापन' ।

नव्य, वि (म) दे 'नया' ।

नव्य, वि [स नवति (नित्य स्त्री)] स
पु, उक्ता मख्या, तद्वती (९०) २ ।

नदा, स पु (का) क्षीयता, मरुता, मद,
माद, शोडता २ मादकद्रव्य ३ धनविघादीना
अवलेप गर्व दप ।

—उतर्हना, मु, मदी व्यपगम् ।

—उतारना, मु, दर्पे ह (भ्वा प अ),
अभिमान घूर्ण (चु) ।

—जोर, म पु (का) मधप मधुप,
पान, रत शोड ।

—चक्रना, मु भव (भ्वा आ मे) क्षीय मत्त.
(वि) भू ।

—पानी, स पु, मादकमाममी ।

नशीला, रि (का नशा) मादक, उन्मादक,
मद्योत्पादक २ मदमत्त ।

नशोवाज, म पु (का) दे 'नशावोर' ।

नस्तर, म पु (का) वेदछुरित ।

—लमाना, मु छुरिकया म्कोटक उड् (न प.
अ), शस्त्रेण उपवर् (भ्वा प से) ।

नश्वर, वि (म) क्षयिन्, क्षयिणु, भण्ड,
अनित्य, अस्थिर, वि, व्यमिन् ।

नश्वरता, स स्त्री (स) क्षय नाश, क्षीयता,
अनित्यता, अस्थिरता, भण्डरता ।

नष्ट, वि (स) अहण, हृत, श्रुत अण
० ध्वस्त, क्षीण प्र वि, जीन, उच्छिन्न, उत्पन्न ।

नय, स स्त्री (म नयमा) स्नायु (स्त्री)
वहनमा २ धमनी, नाडी ।

नसर, स स्त्री (अ) गव, छदीहीनप्रवध ।

नसल, म स्त्री (अ) वस, पुत्र, पति (स्त्री) ।

मयजार, स स्त्री दे 'नाम' ।

नया, म स्त्री (म) नमिरी, जर्णोद्विषम् ।

नयीव वा, म पु (अ) दे 'भगव' ।

—जगना, ॥, पुण्य उद्भू (अ प अ) ।

नयीहृत, म स्त्री (अ) उपरं, (गता) ।

—देना, रि म, उपदिष्ट (तु प अ),
अनुशाय (अ प मे), ० निभत्तम्
(चु गो मे) ।

नस्य, म पु (म न) नस्त, लवण
० नमिक्व, नमाम्यपि ।

नस्या, म स्त्री (म) नामा नासिका, नका
२ नासिकारज्जु (स्त्री) ।

नहट्ट, म पु (म नहट्टौर >) वैवहिरिणि
भेद ।

नहर, म स्त्री (फा) कुल्या प्राप्ती, महो-
रणा भूति (स्त्री) ।

नहरनी, नहर्नी, म स्त्री म नहरणा)
रूप निरुत्तनागरा ।

नहला, म पु (हि ना) नवारदुत जीन
पदम् ।

नहलाहि म स्त्री (नहलना) स्तनन
प्रथम २ स्तन-शूलन प्रथम
भति (स्त्री) भयान्तिभिमन् ।

नहलना क्रि म व नहलना के प्र रूप ।

नहलना क्रि अ (म स्तन न्ना (अ प य)
अविति (स्त्री) आ मे दिनया दे
यामे) मन् (व प अ मन्मो के यो
न) शुभ (स्त्री प मे) पुव (दि उ मे) ।
म पु > ' स्तान' ।

नहान योग्य, वि, स्तनीय अवाहनाय ।

नहनेवाला, म पु, स्तन अवाहक ।

नहाया हुआ, वि, स्तन अनित्य, कृष्णन ।

नहार वि (फा) निराहार, अकृतप्रानराग ।

—है, उ, स्त्री, निराहार ।

नहारी म स्त्री (फ नहार) प्रताप, कल्प
न २ अथना पुत्रम् ।

नहीं अथ (म नहि) न ना म दे ' न' ।

—नो, अथ अन्यथा, इतरथा २ इतिना,
न (नो) वैद ३ वा, अथवा ।

नहुप म पु (म) मोनवशादनुपविनेय
२ वैदिकविशेष ३ नाविरोध ४ कुशिक
वरीयो विप्रनृप ।

नहसल, म स्त्री (म) अनुज, अनाल
२ दैत्य, विष्णु ।

नौद, म स्त्री (म नौदिक वा >) मृद
मृत्तिका त्रीणि त्रीणि (स्त्री) ।

नादी, म स्त्री (स) मगलावरण, नन्तरमे
त्रेदिकान्नादवाक २ अभ्युदय मृद्वि
(स्त्री) ३ अनन्द ।

ना, अथ (म फा) न, नो, मा ।

—इतिहासी, स स्त्री (फा) विरोध,
विनवद, वैमल्यम् ।

—उम्मेद, वि (फा) निराश, अन्नाश ।

—उम्मेदो, स स्त्री (फा) निराश, आशा
अप ।

—जाविल, वि (फा + अ) अयोय, अममर्थ ।

—कारा, वि (फा) निप्रयोजन, अनुपयो
नि, निरपेक्ष ।

—खुश, वि (फा) तित विरग ।

—गवार, वि (फ) अलस २ अप्रिय ।

—चाज, वि (फा) कुट, धुत । स स्त्री,
निरयवस्तु ।

—नायज, वि (फ) अनुविन, निदयविरुद्ध ।

—सचकार, वि (फा) अनुभवहीन, अप
गिनबुद्धि ।

—पस, वि (फा) अप्रिय अविचर ।

—पाक, वि (फा) अनुद, अपवित्र २ मलिन ।

—बालि, वि (फा) अत्रतवयस्क, अप्राप्त
व्यनार ।

—माकूल, वि (फा + अ) निर्दोष, निर्विद्वेक
२ अमान अनुचित ।

—मालूम, वि (फा + अ) अनुज, अविदित ।

—मुनांसव, वि (फा) अनुचित, अनुक्त ।

—मुमकिन, वि (फा + अ) असम्भव, अशक्य ।

—मुपायिक, वि (फा + अ) अपय्य, अहि
तकर ।

—याव, वि (फा) अत्राय, दुष्प्राप, दुर्लभ ।

—रायज, (फा + अ) अयोग्य, मूर्ख ।

—वाशिक, वि (फा + अ) अनभिज्ञ,
अपरिचित ।

—शायस्ता, वि (फ) अमध्य, अशिष्ट ।

—ममस, वि (म + ति) निवृद्धि, मूर्ख,
अवोध ।

—समामी, स स्त्री (ति नमसस) अकृता,
मूलना ।

—माज, वि (फा) अवस्थ, रण ।

नाडरोवन, स स्त्री (म) भूवादि (स्त्री),
नवन्म ।

नाई, (न न्याय) मइरा, मनान, तुल्य ।

नाई, } स पु (स नरिन) धुरिन्,

नाउन, } सुनिन्, प्रतादन्, अनावसा-

निन्, दिवकीति (पु), धीरिक, चडित,

नरकुट्ट, मुट ।

नाक, म स्त्री (स नका) नामा, नामिका,
घ्रां, घाग, गणवरा, मिर्गणी, नस्या, नासि

क्य, तथालो २ (नाक का मल) शिपाय

- णक, शिष्या, मित्रान् ३ प्रधानमुग्ध, वस्तु (न) ४ प्रतिष्ठा, मान ।
 —वटी, स स्त्री मानहानि (स्त्री), प्रतिष्ठान्त्र ।
 —का बाल, स पु प्रिय प्रीतिमान्, सहचर ।
 —का फिसी, स स्त्री नासापिटिका ।
 —की रसोली, स स्त्री नामासुर दम् ।
 —घिमनी, स स्त्री, वाप्य, दैन्येन वाचनम् ।
 —बहना, क्रि अ, नामा बह् (स्वा इ अ) अपवा प्र, सु (भ्वा प अ) ।
 —सिन्धना, क्रि स, नामा दुष् (जे) या निर्मले कृ ।
 —कटना, सु, अपमन् अवष्टा (कर्म), अनादृत (वि) भू ।
 —घिसना या रगटना, सु, पादयो पनिष्ठा अभि प्र-अर्ध (लु), दैन्येन याच् (भ्वा उ मे) ।
 —घटाना, सु, क्रोध घृणा वा प्रवृत्तयनि (ना धा) ।
 —पर मकर्दा न छठने देना, सु, दोषलक्षणापि न सह (भ्वा आ से) २ विमल-स्वच्छ (वि) स्था (भ्वा प ज) ।
 —घोलना, सु, नाम (भ्वा आ मे) घर्षं रायते (ना धा), यधरव कृ ।
 —भी घटाना वा सिकोड़ना, सु, अरुचि अप्रीति वा प्रकटी ॥ ।
 —मे दम करना, सु, अत्यर्थे क्लिष्ट (क प से) बाध (भ्वा आ मे) ।
 —रचना, सु, समान रक्ष (भ्वा प ने), अपमानार्त्र जे (भ्वा आ अ) ।
 —सिकोड़ना, सु, अरुचि घृणा वा इष्ट (जे) ।
 नाको चने घनवाना, सु, अर्द्धव्यय (जे), परिस्मृता (जे) ।
 नाक^२, स पु (स) स्वर्ग २ आकाश दान् ।
 नाकशा, स पु (हि नाक) नामापात्र २ दीर्घनामिका ।
 नाका^३, स पु (हि नाकना = लंगना) रघ्यान्, मागावधि (पु) २ वीथी, मार्ग ३ नगरादीना प्रवेशद्वार ४ नगरपाल्पुर रक्षक-स्थान ५ सूची-त्रयम् ।
 —वटी, स स्त्री, (पुररक्षक) मागावरोध वीथीप्रतिबन्ध ।
 नाका^४, स पु (स नक) कुशीर ।

- नाकिस, वि (अ) सरोप, विकल ।
 नाकेवा, स पु (स) इन्द्र, देवराज ।
 नाखुडा, स पु (फा) पोल नौरा, अभ्यप्र, वणधार ।
 नाखुता, स पु (फा) अर्धं र्मन्, नेत्ररोगभेद ।
 नाखून, स पु (फा) नागुन) नख-स्व, नखर २, वर, न अग्रतः अरक्ष-कर्म कइ, पुनर, नव नव ।
 नखुता, स पु (फा) दे 'मौतियाविर्' ३ अधनेनेपु रक्तरेखा (स्त्री) ३ मूल कौशपट ।
 नाग, स पुं (म) सर्प, पक्षग २ गन्, हस्तिव ३ निर्दय, क्रूरचारि ४ देवभेद ५ नागेश्वर ६ पुत्राज ।
 —बैस(स)र, स पु (म) नागर्नि-ल्य, नागीय, पञ्च-फणि, बैस(स)र ।
 —पचमी, स स्त्री (म) आवगन्तुक-पचमी, पचभेद ।
 —कनी, स स्त्री (॥ नमपण- ॥) कन्दारी, दुर्धर्मा, दुःप्रवेसा, तीक्ष्णचट्टा ।
 —फौस, स स्त्री (म) नागपाश) वरणासुध २ साङ्गदयावर्तनात्मक पाशभेद ३ ५ धन प्रकार ।
 —बेल, स स्त्री (स नागवल्ली) तादृसी, तादृज बल्ली, नागलता, पुरी ।
 नागर, वि (स) दक्षिण, चतुर विदग्ध, सम्य २ पौर, नागरिक । स पु, नगर पौर, पत्र, पौर, नागरिक ।
 नागरक, स पु (म) शिल्पिन्, शिल्परार २ नगर प्रबन्धन ३ पौर । वि, दे 'नागर' ।
 नागरमोथा, स पुं (स नागरमुक्ता) चनाना, चूला, कच्छरुहा, नारैयी ।
 नागरिक, वि तथा स पु, दे० 'नागर' (१२) ।
 नागरिकता, स स्त्री (म) नागरता, पौरता २ दाक्षिण्य, विदग्धता, मन्थता ।
 नागरी, स स्त्री (म) पुर नगर-वामिनी २ चतुरा, प्रवीणा (नारी) ३ देवनागरा लिपि (स्त्री) ।
 नागाहानी, वि स्त्री (फा) आनन्दिनी । यादृच्छिनी ।
 नागा, स पुं (म) नग्न) नग्नभिधु ।

नागा, स पु (अ) अनुपस्थिति (स्त्री),
अनतिवि (पु), कायपरपरामर्श, अवज्ञाश ।
नागिन, स्त्री, स स्त्री (स नागी) सांपणी,
उत्तमां युक्ती, युक्तायी ।
नागोद(स)र, स पु, दे 'नगोदसर' ।
नागोद(स)री, वि (दि नगोद(स)र) पीन,
दे 'नोद' ।
नागोद, स पु (स नागोद) उरम्
वक्षम्-वाग, आयमा, उरद ।
नागोदरिका, स स्त्री (स) वरहस्तवाणि
प्रागम् ।
नाथ, स पु [स नृत्थ, नृत्ति (स्त्री)]
मनन, नृत्त, २ (शोभन्) नाम नात्यन्तक
इ (उदत्त) तद्वत् ४ नटन, नाट, नाट्यम् ।
—धर, } स पु, नृत्य, शागन्धानम् ।
—महल, }
—रत्न, स पु, आमोदप्रमोदा, उल्लास,
विनाद, वीतुकम् ।
—नवाना, सु, अर्द्ध-धुम (प्रे), उ (स्वा
प अ) ।
नाचना, क्रि अ (स नर्तन) नृत्त (दि प
से) नट (स्वा प मे), नृत्य कृ। स पु,
दे 'नाच' ।
नाचनेवाला, स पु, दे 'नचन' ।
नाङ्ग, स पु (का) दे 'नक्का' ।
—अदा, —नाचरा, स पु, हावभावौ, विभ्रम,
विहास ।
—बदर, स पु, चाटुकार, मिथ्याप्रशमक ।
नाङ्गनी, स स्त्री (का) सुन्दरी, वक्ता ।
नाजिर, स पु (अ) निरोधक २ आमेरध
(पु) प्रहक ।
नाजुक, वि (का) शीघ्र, सुकुमार, सुदुल
२ प्रतन, सूक्ष्म ३ अगुर, भिदुर ४ मयवर,
भयविह ।
—बदन, वि (श) नोमलागन्मल्य (—गी,
तन्वा स्त्री) ।
—मिज्ञाज, वि (का+अ) शोचलप्रवृत्ति,
सुदुर्गमत्व ।
नाटक, स पु (स न) दृश्यगद्य, अभिनय
ग्रन्थ, महाकृष्ण २ अभिनय, नाट्यम् ।
—कार, स पु (सं) नाट्यरूपक, नार
प्रवेष्ट (पु) ।

—शाला, स स्त्री (स) राशाला ।
नाटकीय, वि (स) नाटक, विपरम्पन्नविधे ।
नाटना, अ अ, दे 'ननकार करना' ।
नाट्य, वि (स नन) राव, वामन, रत्न,
हस्तकाय ।
नाट्य, स पु (स न) तीव्रगति नृत्यगत
वाक् २ अभिनय ३ विम्बन, अनुकम् ।
—शाला, स स्त्री (स) रग नृत्य मन्दि
शाला ।
नाडा, स पु (स नाट) नाडा वि (स्त्री),
वर्गवत्त्वध ज्ञाना ।
नाडी, स स्त्री [स नाडी (स्त्री)] दे
'नड' २ नाड नालिका प्रणाल स्त्री
३ धमनी रक्तवाहिनी ४ शि(मि)रा, रक्त
वाहिनी ५ (रक्त की अति सूक्ष्म नाडी Cap
illary) कैपिलरी ६ चालकनाडी
(Motor nerve) ७ मानेदानपना
(Sensory nerve)
—चलना, क्रि अ, नन्ती खुा (तु प मे)
स्पर् (स्वा आ से) ।
—मडर, स पु (अ) नाडी-नाट, सम्भानम् ।
—रुना, सु, दे 'भरना' तथा 'मृच्छन होना' ।
भाणक, स पु (स न) टक-क, सुद्रा ।
भाला, स पु (स ज्ञानि) मवप, बहुता,
संगोचना, सदाविता, मयिदना ।
नातिन, स स्त्री (दि नाना) क्षीणिनी २
पौत्री ।
नासी, स पु [स नष्ट (पु)] क्षीणिनी २
पौर ।
नाते, क्रि वि (दि नाना) त्वधिन (तु) ।
—दार, स पु, ज्ञानि वस्तु-वापव, गण-वग
जन ।
—दारी, स स्त्री, दे 'नाना' ।
नाथ, स पु (स) अधिपति (पु), प्रहृ
स्वामिन् २ पति, अर्द्ध ३ नात्य, पशुनाम्ना
रज्जु (स्त्री) ४ नोमिनामुपाधिभेद ५ अ
(आ)हितुम्, व्याख्यातुम् ।
नाथना, क्रि स (स नाथन) नाथ
(स्वा प मे), वशी कृ, अभिम् (स्वा प मे)
२ नामाज्यध (दि प अ) नामाया निद्रा ।
नाद, स पु (सं) शब्द, ध्वनि (पु), रव
२ गीत, गीतिका ३ गन्धन, गानन ४ प्ररतन
भेद (व्या) ५ अर्द्धवद, नर्द्ध (पु) (व्या)

—विद्या, म स्त्री (म) मनीषाशस्त्रम् ।
 नादान, वि (फा) अज्ञ, भ्रम, भट ।
 नादानी, स, स्त्री, (फा) अज्ञान, मौख्य,
 'नादयम् ।
 नादित, वि (स) वादित, ध्यान, क्वणित,
 ज्वनित ।
 नाटिम, वि (अ) लज्जित, हाण ।
 नादिर, वि (फा) अभ्युन, विचित्र ।
 नादिरसाही, स स्त्री (फा नादिरसाह)
 त्रिपुरशायन नृसत्ता, क्रूरवृत्त्यम् । वि,
 घोर वृत्त्यम् ।
 नायमा, क्रि म (म नङ=वङ) योषित्र
 यति (ना धा) पुन जु) २ आरम्भ
 (स्वा आ अ) ।
 नात, म स्त्री (फा) *वृत्तराटिना ।
 नातयनाई, म स्त्री (फा) मिश्रणभेद,
 *नातयमायी ।
 नातयाई, म पु (फा नातया) आपूषिक,
 वादयित ।
 नाना^१, म पु (देश) आनामह, मातु पितृ
 (पु), जननीजनक ।
 नाना, वि (म) विविध, बहुविध २ अनेक,
 बहु ।
 —भोति, वि, अनेकप्रकार, नानाजातीय ।
 —रूप, वि, (म) अनेकबहु, रूप ।
 —वर्ण, वि (म) अनेकबहु, वर्ण रङ्ग ।
 —विध्य, क्रि वि (म ध) अनेकधा, बहुधा ।
 नानार्थ, वि (म) अनेकाधर, बहुर्थ २
 अनेक वहुन, उपपुक्त ।
 नानिहाल, म पु दे 'ननिहाल' ।
 नानी, म स्त्री (देश) मातामही, मातृ
 मातृ (स्त्री), जननीजननी ।
 * नर जाना, मु, इतोन्माह गनमाहम (वि)
 भू ।
 नाप, म स्त्री (म मावन) प्रथरि, मार्गमिति
 (स्त्री) मान २ मानदण्ड, मापनमापन,
 मानम् ।
 —ताँल, म स्त्री, मापन-जोखन ने (न अ) ।
 नापना, क्रि म (म मापन) मा (दि आ
 अ, नु आ अ, अ प अ), मान निरूप
 (चु), ३ 'मापना' ।
 नापित, म पु (म) दे 'नाप' ।

नाफा, म पु (फा) कस्तूरी मृगमद, कोर
 कोष ।
 नाभि, स स्त्री (सं पु स्त्री) नाभी, तुन्द
 कृपी, उदरावर्त्त, तुन्द-दी दि (स्त्री), तुदिका
 २ चक्रमध्य ३ कन्तूरी ।
 नाम, म पु [म नामन (न)] अभिधा,
 अभिधानं, अभिषेय, आह्वा, आह्वय, आख्या,
 मन्त्रा २ वक्षस (न) रयाति (स्त्री) ।
 —रखना या घरना, वि म, नाम-सहा क,
 अभिधा (जु उ अ) ।
 —करण, सं पु (म न) सस्कारभेद
 (वर्म) २ नामदानम् ।
 —कमाना, —करना, —पाना य—होना,
 मु, विव्यान विश्रुत-महायज्ञस्क (वि) भू ।
 —हुयोना, मु, यज्ञ मसिनी क, ख्याति नञ्
 (मे), कीर्ति वल्लकयति (ना भा) ।
 —पर ध-वा लयाना, मु, दे 'नाम हुयोना' ।
 नामक, वि (म) नामधरित्, आख्य-मञ्जक ।
 नामर्त, वि (फा) नपुंसक २ भीह ।
 नामी, वि (म नामन्) नामक, नामधेय
 २ विरवान, विभुत ।
 —गिरामी, वि (फा, मि म नाममागिर)
 यशस्विन् प्रसिद्ध ।
 नायक, म पु (सं) नेतृ-अग्रणी (पु),
 मुख्य, प्रमुख २ स्वामिन्, प्रभु, अधिपति
 ३ नरव्याघ्र, जननायक ४ कथापुरण
 (सा०) ५ मर्गतकुसल ६ सेनापति ।
 नायका, म स्त्री (सं भायिना) ३
 'नायिका' २ वेदयाजन्तनी ३ दूता, कुडिनी,
 शुभम्नी ।
 नाय(ड)न, स स्त्री (हि नाई) नायिनी,
 क्षुरिणी, मुण्डनी, क्षौरिकी ।
 नायक, सं पु (अ) प्रति, -निधि (पु)
 हस्तक पुरुष २ सहाय-यक, महकारिन्
 उप- (उ उभयविध) ।
 —तहसीलदार, सं पु, उपमण्डलेश-भर ।
 नायिक, म स्त्री (सं) गृहाररमालम्बन
 मृग नारी २ सुदरी स्त्रियिणी ३ कामता,
 दक्षिणा ।
 नारंगी, स स्त्री (स नारग) (वृक्ष) नाग
 रग, नारंग, नागर, पेशवन, त्वगन्ध,
 (फल) नारंग, नारगर्क, नारगफल्म् ३ । वि,

विच्छिन्न, कौमुद [-भी (स्त्री)], धीन
लोहित ।

नार-रि, म स्त्री, दे 'नारी' तथा 'नाल' ।

नारकी, वि (रु मित्र) नारकिन्, नारकीय,
पाणिन् ।

नारद, म पु (म) देवर्षिविशेष ।

नारमल, वि (अ) सामान्य, माधारण, यथाह ।

नारा, म पु, दे 'नाडा' ।

नाराज, वि (फा) अप्रसन्न रह ।

—होना, क्रि अ, कृष (दि प मे), ऋ
(वि) भू ।

नारायण, स पु (म) विष्णु, चक्रिन्, इषर ।

नारायणी, म स्त्री (स) लक्ष्मी २ दुर्गा
३ सुशालमुने पत्नी ३ दुर्योधनाय दत्ता
कृष्णमेना ।

नारियल, स पु (म नारियेल स्त्री) (ह्रस्व)
मदानमन्दस्पर्श, फल, तुण्ड, उच्च, मगल्य
(फल) ऊष्ण, कौशिकफल, नारिकर क ।

नारियली, स स्त्री (हि नारियल) नारियेल
२ अफक-नारियेल-रस ३ नारियेलमार ।

नारी, म स्त्री (म स्त्री, सीमनिनी, यो(नो)
या, यो(नो)वि (स्त्री), अवला, बासा,
बलिता, महिला, गमा, प्रिया, ननी नि (स्त्री),
सुधू-वधू (स्त्री), यो(नो)विता ।

—दूषण, म पु, (म न) सुरापानदुर्जन
ममगाद्व छौदीपा ।

—रत्न, म पु, (म न) श्रेष्ठ-उत्तम रूपगुण
शील्यनी, नारी ।

नाल^१, म स्त्री (म नाल) नाल-स्त्री निवा,
ममलादीना दृष्ट २ दे 'नाल' ३ अग्न्यल
नाली-स्त्री ४ मृत्रवेष्टन, वमर ५ दे 'आल-
नाल' ।

नाल^२, स पु (अ) मुरज, सुरजण २, लोह
बलय-वम् ।

—वद, ग पु (अ + फा) सुरज, वधक
योग्य ।

—पदी, म स्त्री (अ + फा) सुरजवधनम् ।

—लगाना, क्रि म, सुरज वध् (क् प अ),
सुरज मनाशी क ।

नालकी, म स्त्री (स नाल) शिविकाभेद,
*नालकी ।

नाला, स पु (स नाल) अल्प-मु-शुद्ध-नदी
सरि (स्त्री) २ दे 'नाडा' ।

नालिश, म स्त्री (पा) अभियोग, भाषा,
मापापाठ ।

—करना या दासना, क्रि म, अभिपुत्र
(रु आ अ च) रात्रुल निविद (प्रे) ।

नाली, म स्त्री (म) नाल, नालि (स्त्री),
प्रणाल स्त्री जलमार्ग, परि(री)वाह २ नाडी,
धमनी, शिरा ३ धात्वदिनालोटी ।

नाव, म स्त्री [स नी (स्त्री)] तरणी नि
(स्त्री), तरो नि (स्त्री), तरिका, तरह ।
(लोने) नौका, उडुप, कोल . प्लव ।

—चलाना, क्रि स, नौका प्रे-वह चल् (प्रे) ।

नावरू, म पु (फा) सुद्रवाणभेद २ मधु
मयिन्द्रज ।

नाविक, म प (म) ओडुपिन्, नौ-तरणी
वह २ वणधार, सुरयन्त्रिक ।

नाश, म प (म) प्रणाश, विनाश, प्रवि
ध्वम च्छेद, क्षय, संहार ३ अद्वान,
लेश, शिरोधान ३ शब्द (पु) ।

—करना, क्रि म, प्रवि, नश ध्वम् (प्रे)
उप-अव मद् (प्रे), क्षै विच्छु (प्रे), उच्छिद
(रु प अ) २ दे 'मारना' ।

—होना, क्रि अ, प्रवि, नश (दि प मे)
प्राव, ध्वस् (स्वा आ मे), प्रविनी
(दि आ अ), क्षय-इया (अ प अ) ।

नाशक, म पु (म) प्रवि, ध्वसन्, क्षयकर
[री (स्त्री)], च्छेदक संहारक २ घातुक,
अनवर [री (स्त्री)], नाशकारिन् ।

नाशपाती, स स्त्री (क्षु) अमृत रत्न, फल,
अमृताढ्यम् ।

नाशवान्, वि (स-वत्) क्षयित, क्षयिष्णु,
क्षय नाश, शील, वि, नश्वर [री (स्त्री)]
अनित्य, अग्रव ।

नाशी, वि (स-शिव्) दे 'नाशक' २ दे
'नाशवान्' ।

नास्ता, म पु (फा) कत्यवर्त, माराश,
उप-पु, आहार, नलधानम् ।

नास, म स्त्री (स नस्य) शुक्ली, नासाचूर्णम् ।

—दान, म पु, नस्यपातनी ।

नासपाण, म पु (फा) अपक्वदाडिमत्वव
(स्त्री) २ अपक्वदाडिमम् ।

नासा, म स्त्री (म-दे 'नाक' (१) तथा जघना) ।

नामिका, म स्त्री (म-) दे 'नाक' (१-२) ।

नासूर, स पु (अ) नाडीवण, शब्द ।

नास्तिक, स पु (स) अनीश्वरवादिन्, निरीश्वर, इश्वराविश्वामिन् ।

नास्तिकता, म स्त्री (म) अनीश्वरवाद, इश्वराविश्वाम, नास्तिक्यम् ।

नाह, म पु, दे 'नाह' ।

नाहक, त्रि वि (का) वृथा, व्यर्थं मुखा, निरर्थक, निरर्थकम् ।

नाहर (र), म पु (स नरहरि >) सिंह र म्या ।

निद्रक, स पु (म) अभिप्राय, अभ्यमुख्य, अपपरिचारक जाक्षेपन पिशुन ।

निदनीय, वि (म) निच, उपान्वय, गहणीय, वाच्य गह्य > अभद्र, अनुभ, कुस्मिन ।

निदा, म स्त्री (म) अपपरिचार, आ अभि, क्षेप, अव अप-उप, मोक्ष, कुस्मा गह्य, गहण, कुस्मन, भस्मन ना ।

—कदना, त्रि म, निद्र (भ्वा ष म) गह्य (तु भ्वा ञ म) जधि-आ क्षिप (तु ष ज), अपपरिचार (भ्वा ष से) आमुञ्च (भ्वा ष अ), निभस् (तु आ से) ।

—होना, क्रि अ, उक्त पातुजों के कम रूप । निवाम्ना, वि (दि नीद) निद्राउ तदिल, निद्रान्म ।

निदित, वि (स) अधिआ, शित, गहिन, आक्रुष्ट, निभास्मन् > कुस्मिन, गह्या ।

निच, वि (म) दे निदनीय ।

निच, म पु (म) अरिष्ट, सबतोमद्र, नित्तन, शीत ।

निचरीरी, म स्त्री (म निच >) दे 'निचरीरी' ।

निद्र, म पु [म निद्र(ब्र)व] (बृक्ष) जम्बवीर, दत्तात्रय, राजन, शोधन, त्रु मारिन्, निद्र (स्त्री) । (क) त्वीर, त्वीरक ३ ।

निद्रक, वि (म) असव, निमय, ज्ञान, निर्भीक र निमकोच, निमदह । त्रि वि, निमय, निमकोचम् ।

निद्रक, वि (म) नीरव, विरव, मूत्र, मौनिन् । निद्रोप, वि (म) अद्रोष, अगिन्, समग्र, समग्र > समग्र, अवमिन्, सपूर्ण ।

निद्रोप, म पु (म न) अपवर्ग, मुनि (स्त्री), मोक्ष, २ ववाण, भगन्म् ।

निद्राव, म पु (म) बहिर्मुखता, नन,

अपान, पान > उच्छ्वास, उच्छ्वमित, दीर्घ (नि) शाम ३ ।

निमकोच, क्रि वि (म न) निर्वैज्य, निमशय, निशय र निमय, निष्कामम् ।

निमग, वि (म) अभग, गत-वीन, मग > नित्त ३ निस्वाध ।

निमतान, वि (म) अनपत्य, निरपत्य, निरन्वय, निर्वैज, अपुन । (स्त्री = वधा, ज्ञातिवरी, अनपत्या) ।

निमदह, त्रि वि (म ह) निद्रक, निमशय, अनशय, शरा मदेह, विना । वि, निवि कल्प, निमशय, असशय निद्रक ।

निमशय, वि तथा क्रि वि, द निमदेह । निसार, वि (स) नीरम विरम, निमस्व र तुच्छ, क्षुद्र ३ ज्वार, तत्त्वहीन ।

निस्सीम, वि (म) अनन, अभिन, अपरिमित, निरवधि ।

निस्म, वि (म) निगन, नियात, निष्क्रान्त । निस्म, वि (म) निष्काम, अराम, निरिच्छ र निर्मोह, सत्तु ।

निस्मार्थ, वि (म) स्वाध-स्वहित स्वगम हीन विमुक्त, परोपकारिन् ।

निष्कामत, म स्त्री (अ नेअमन) अलभ्य दुलभ-वस्तु (न) > स्वाधुदन्तु ३ धनम् ।

निस्म, वि (स) आम्र, ममीप, मन्निष्ठ सन्निहित, दे 'समीप' ।

—वर्ती, वि (स तित्) निस्मन्, समीपरव ।

निस्मृता, म स्त्री (स) समीपता' दे ।

निस्मृता, वि (म निष्कामन्) वृत्तिहीन, निष्कारण र अन्त, आन्त्यशोक, निरुधम ३ निरभ्य, मोक्ष, अनुपयोगिन् ।

निस्म, म पु (स) गय, समूह र राशि (पु) ३ निधि (पु) ।

निस्म, वि (म निष्काम) निर्मोह, निष्कारण, अनन, दोषभाष, रहित, शुद्ध, पवित्र । निस्मकी, म पु (म वकि) विष्णा दशमावतार । वि (दि निस्म दे०) ।

निस्म, म स्त्री (अ) धातुभेद, निर्मिन्म् ।

निस्मना, वि अ (दि निस्मना) निगम, निया तथा अपवर्ग (दातों अ ष अ), निम् (भ्वा ष अ), निम् (भ्वा ष म), प्रयत्न मू २ अनिकम्, उन्म, त् (भ्वा ष मे), अनि ३, उन्म (भ्वा आ से)

३ सफली-उत्तीर्ण भू ४ गम, या, व्रत्
(भ्वा प मे) ५ उद्, उद्गम, उद्ग
(भ्वा आ मे) ६ नन् (दि आ म)
प्रदुर्भू, उत्पद् (दि आ अ) ७ निष्
मयद्, निष् (दि प अ) ८ (मबाल
आदि) उत्तर लभ प्राप् (कर्म) ९ प्रवृत्
(भ्वा आ मे) प्रत्वरच् (भ्वा प मे)
१० विनिर्, सुत् (कर्म) ११ आविष्क
(कर्म) १२ स्थापित प्रमर्ति (वि) भू,
निष् १३ अप-मृ-मृष (भ्वा प अ),
पचाय (भ्वा आ न) १४ आप, लभ
(कर्म) १५ (समवादि) व्यतिष्ठ, अतिक्रम्य
त् । स पु दे 'निगम' ।

निकलनेवाला, म पु निर्नृ निर्नृद् ६ ।
निकलमाना, क्रि प्रे, व 'निवर्तना' के प्रे रूप ।
निकप, म पु (म) दे 'कमौगी' ।

निकपा, स स्त्री (म) रावणदिराक्षमन्ना
माद् (स्त्री) । अन्व०, समीप पे, अन्तिके,
दे० 'कमौगी' ।

निकपोपल, म पु (म) दे 'कमौगी' १ ।
निकाई, स स्त्री (म निक = स्वच्छ)
भ्रता, प्रशङ्गा २ सुदरता, मनोगता ।

निकाम, वि (म) पयात्, अल् (चतुर्थी के
माथ), आवश्यकतानुरूप । २ अभीष्ट, स्पष्ट
३ विपुल, बहुल ४ इच्छुक, अभिलाषिन्,
आकांक्षिन् ।

अन्व० अत्यन्त, अत्यधिक, बटु, भूश, भूरी
(मव अन्व०) ।

निकाय, म पु (म) कण, सघ २ चय,
राशि (पु) ३ गृह, समन् (न)
४ ईश्वर ।

निकाल, स पु (हि निकलना) दे 'निकाम' ।
निकालना, क्रि म (स निष्कालन) व
'निवर्तना' के प्रे रूप ।

निकाला, म पु (हि निगलना) निर्वि,
वामन, अपमारण, निगमन, प्रवचनम् ।

निकाम, म पु (म निष्काम) अप-निर,
गम, अप-निष्, क्रम क्रमण, २ निष्कामन,
निष्कालन ३ द्वार, द्वार् (स्त्री) ४ क्षेत्र,
मनभूनि (स्त्री) ५ उद्गम, प्रभव ६ रक्षो
पाय ७ आयोराय ८ आय, अर्थलभ ।

निकामी, स स्त्री (हि निगम) प्रस्थान,

निगम २ आय अर्थलभ ३ विक्रय,
विनियोग, निर्गमशुल्क-कर्म ।

निकाह, म पु (अ-विवाह इत्याम) ।

निकुन, म पु (म पु न) कुन-अ, लना
मटप, पर्णशाला ।

निकृति, स स्त्री (म) निरस्कार, अपमान
२ दहना, नीचना ।

निकृष्ट, वि (म) अधम, अवर, अपकृष्ट, धुङ्,
गद्य, निच, नीच, होन, उधम्य ।

निकृष्टता, स स्त्री (म) अधमता, छुद्रता,
होना, गद्यता, उधम्यता, नीचता ३ ।

निजेत, म पु (म) निजेतर, निजेतन, गृह,
स्थान, स्थानम् ।

निक्षित, वि (म) प्र, अस्त शित, जब नि
पति २ त्यक्त, दिसष्ट ३ अधिष्ट, न्यस्त ।

निक्षेप, म प (स) नि प्र क्षेप-क्षेपण,
प्राप्त, प्रेरण निपात २ त्याग, विमर्ग,
उद्वि, मग, विस्तान ३ आधि-उपनिधि
(पु), व्याम ।

निखण, स पु, दे 'वरक' ।

निखट्ट, वि (हि नि = नदी + छटना =
कमाना) उपम-उद्यो-व्यवसाय, विमुक्त, अन्त ।

निखरना, क्रि अ (स निखरण) निर्मली
स्वच्छी भू, शुष् (दि प अ) प्रम-मृत्
(कर्म) २ सुदरतर (वि) जन् (दि आ से) ।

निखरवाना, निखराना, क्रि प्रे, व 'निखरना'
के प्रे रूप ।

निखरी, स स्त्री (हि निखरना) पक्व घृतवत्,
भोजनम् ।

निखर्व, स पु (स निखर्व = वै) दशलवमस्या
दशसहस्रवीन्यो वा, तदर्थी । वि, वामन,
हन्वराय ।

निखार, म पु (हि निखरना) निमलता,
स्वच्छता २ शृङ्गार ।

निखारना, क्रि म, व 'निखरना' के प्रे रूप ।

निखिल, वि (म) अखिल, समस्त, मपूर्ण ।

निखोट, वि (हि नि + खो) निर्दोष, शुद्ध ।

निगदना, क्रि म (का निगद = नीवन)
तूला मित्र (दि प ने) ।

निगड, स स्त्री (म पु न) भद्रक, अधु ।
२ श्वत्स-ल-ल, वधनम् ।

निगम, म पु (स) वेद, श्रुति (स्त्री)

० मार्ग ३ आपण, विषणीणि (स्त्री)

४ मेला, मेलक ५ बाणिज्यम् ।

निगमन, म पु (म न) प्रत्यागन्नाय (भ्या) ।

निगरण, म पु (म न) नक्षण, खादन

० कठ, गल ।

निगरानी, म स्त्री (का) निरीक्षण, पयवेक्षणम् ।

निगलना, क्रि म (स निगलन) निगल्

(भ्या प से) निम् (तु प से), ग्रम्

(भ्या जा मे) = दे 'खाना' ।

निगाह, स स्त्री दे निगाह ।

—रात, म पु (का) रक्षक, परिचाता ।

—बानी, म स्त्री, रक्षा, धाणम् ।

निगाली, म स्त्री (देश निगाल = बाम का प्रहार) धूमपानयन्ताली ।

निगाह, म स्त्री (का) दृष्टि (स्त्री) इक्

शक्ति (स्त्री) २ दशन, वाक्षण, विलोकन

३ रुपादया, दृष्टि ४ निचार, भति (स्त्री)

५ विवेक ।

—लडाना, सु, कलाक्षेप अबलोर (तु) -नाम् (भ्या आ से) ।

निगूढ, वि (म) निगूढ, प्रच्छन्न, निभूत ।

निगोडा, वि (हि निगुडा) दुष्ट, खल,

० ग्रथन, नीच ३ मद्दहत, भाग्य, दुर्दैव ।

—नाटा, म, पु, बहुहीन निर्वाग, अविवहित ।

निग्रह, म पु (म) अङ्गति, रोध, नियन्त्रण

गा, बाधा, प्रति, बध रोध २ दम, दमन

३ दड ४ पीटन, मनापन ५ निग्रहण, बधन

६ मत्तन ना ।

—स्थान, स पु (म न) वादे पराजयस्थान (भ्या) ।

निग्राह, स पु (स) शाप २ दड ।

निघट्ट, म पु (म) वैदिकवैषयविशेष २ शब्दसंग्रह ।

निघर्ष, म पु (स) दे 'निमाव' २ पेषण, चूणन, मर्दनम् ।

निघात, म पु (स) प्रहार, आपात ० अनुदात्तस्वर (भ्या०) ।

निघाती, वि (म-निन्) प्रहृष्ट, आहन्तृ, प्रहारक, आपातक २ घातक, मारक, प्राणहर ।

निचय, म पु (स) समूह, राशि, गण,

निर्णय ० निश्चय ३ सचय, सग्रह ।

निज्जा, वि (हि नीचे) अर्वाच्, अधर, अवर, अधस्तन, नीचरथ, अध-उ अधोदेख ।

निचला, वि (म निश्चल) अचल, स्थिर २ शांत, गम्भीर ।

निचाई, स स्त्री (हि नीचा) अपकर्ष, हीनता, निम्नता ० अधमता, नीचता, गद्यना ३ निम्न-देश भूमि (स्त्री) ।

निचान, म स्त्री (हि नीचा) भवसर्पि प्रवण, भूमि (स्त्री), ० प्रावण्य, प्रमदा निम्नता ।

निर्चित, वि, दे 'निश्चित' ।

निनुडना, क्रि ज (स निश्चयन) च्यु (भ्या आ अ), च्युत (भ्या प से), क्षुर निगल् (भ्या प से), स्र (भ्या प अ), २ निषमपीट (कर्म), निगल्-उदह (कर्म) २ डुस्लीभ ।

निचोड, स पु (हि निरोडना) भूल, मूलवस्तु (न), नियाम, सार २ २ तात्पर्य, निष्प, भाव, निर्गन्ध निट्ट विन्ति, अर्थ ।

निचोडना, क्रि स (हि निनुडना) निप्-स पीट (चु), उद-निर्द (भ्या प अ), निगल् (भ्या प अ), निगल् (मे) २ सर्वस्व ह, निरनी ह । म पु, निप्-म पीटन, निष्करण, निगालन, मवस्वहरणम् ।

निछाउर, म पु (म न्यासावर्त मि अ निमार) (पीठदेवसावनाई) अर्पण, उपनयन, उपहरण, उत्सर्जन २ उत्सर्ग, दान, बलि (पु), उपायनम् ।

—करना, सु, उत्सृज् (तु प अ), त्यज् (भ्या प अ) ।

—होना, सु, कस्मैचित् प्राणान् त्यज् ।

निज, वि (स) आत्मीय स्वीय, स्वरीय, स्वक, आत्म, स्व २ व्यक्तिगत, वैयक्तिक ३ मुख्य, प्रधान ।

—का या निजी, वि, दे 'निज' २ ।

निटल्ला ल्ल, वि (हि नि-टल्ल = धाम) क्षीण निर्-वृत्ति, वृत्तिहीन, निष्साधार २ अलस, कायविमुक्त । स पु, वातरायण ।

निटाला, स पु (हि नि-टल्ल) अवराज, निर्व्याधरता ।

निटुर, वि, दे 'निटुर' ।

निटुराई, स स्त्री (हि निटुर) दे 'निटुरता' ।

निदर, वि (म निर्दर) अभय, अभीन,

निर्भीन, विदर २ माहमिर, माहमिर ३ धृष्ट ।

—पन पना, म पु, निर्भयता, निर्भीकता २ ।

निडाल, वि (हि नि+डाल = निरा हुआ)
आन, कान, शिथिल, अशक्त २ अल्प,
निरुत्पन्न ।

नितय, स पु (म) दे 'चूतड' २ स्कध
३ तट-रम् ।

नितप्रिनी, म स्त्री (स) सुनितवाची नारी
२ सुन्दरी ।

नित, कि वि दे 'नित्य' कि वि ।

—नित, कि वि दे 'नित्य' कि वि (१) ।

नितरा, अ य (म) पूनया, सामस्येन,
२ अनिशयेन अत्यन्त ३ सदा ४ निश्चयेन ।

नितान, वि (म) अत्यधिर, सानिशय,
निरनिशय, अत्यन्त । कि वि, मवया, पूनया,
अत्यन्तम् ।

नित्य, वि (स) शाश्वत [नी (स्त्री)] अन-
श्वर, अविनाशिन, प्रब, सनन, अनाद्य-
नन, अमर २ अधिक प्रात्यहिक [नी
(स्त्री)] । कि वि अनुप्रति, दिन, दिने
दिने प्रत्यह, अन्वह २ सदा, सर्वदा,
३ सनत, अविच्छिन्नम् ।

—कर्म, स पु [स मन् (न)] प्रात्यहिक
दैनंदिन, कार्य, अधिक, नित्य, क्रिया-कृत्यम् ।

—प्रति, कि वि, दे 'नित्य' कि वि (१) ।
नित्यता, म स्त्री (म) नित्यत्व, अमरता,
ध्रुवता, शाश्वतता ।

नित्यानिम्य, वि (स) भ्रुवाभ्रुव, शाश्वता
शाश्वत ।

निधरना, कि अ (म नि+धिर >) स्वेर्वेण
निर्मलीभू (जलादि) । म पु, निकण्ठन,
*निपदनम् ।

निधार, म पु (हि निधरना) निर्मलजल
२ नलाध-स्थित मलम् ।

निधारना, कि म (हि निधरना) स्वेर्वेण
निर्मली कृ अवा शुध (प्रे) ।

निदर्शक, वि (स) प्रदर्शक, दर्शयितृ
२ कथक, कविर, अपवापक, शापक ।

निदर्शन, म पु (म न) उदाहरण, दृष्टान
२ प्रदर्शन, प्रसंगीकरणम् ।

निदर्शना, स स्त्री (म) काव्यालसारेभेद ।

निदाघ, स पु (म) धीम, धीष्, काल-
ममय कृत (पु) २ आप्तप, ख्यालोक
३ दाह, ताप ।

निदान, म पु (म न) रोगनिर्णय रोग-
हेतु (पु) २ आदि-मूल-कारण ३ कारण
४ अत, अवमान ५ शुद्धि (स्त्री) ।
कि वि, अतत, अति, अततो गत्वा, चरमत ।
वि निकृष्ट, अधम ।

निदारण, वि (म) कठोर, घोर, दुःमह,
अमह १ निर्दय, निष्करण ।

निदिध्यासन, म पु (स न) निदिध्याम,
मतत-निरन्तर अनवरत, निग्नन-मरण ध्यानम् ।

निदेश, वि (स) आज्ञा, आदेश २ वधन
३ मामीप्स्यन् ४ पात्रम् ।

निद्रा, स स्त्री (म) स्वप्न स्वपन, स्वाप,
सुप्ति (स्त्री) शयन, मवेश ।

—भग, स पु (स) जागरणम् ।

—वृक्ष, म पु (स) अन्धकार ।

निद्रायमान, वि (स निद्रायमाण) शयान,
निद्राय, निद्रित, शयित ।

निद्रालु, वि (म) तद्राल, निद्रालील, शयालु ।

निद्रित, वि (म) शयित, सुप्त, निद्रागन्त ।

निधटक, वि (हि नि+धटक) निरक्तोच,
निर्भय नि शक । कि वि, निर्भय, निरक्तोच,
नि शक, विलम्बम् ।

निधन, म पु (म पु न) मृत्यु २ नाश ।

निधन, वि (स) दे 'निर्धन' ।

निधान, म पु (स न) आधार, आश्रय,
२ निधि, कोष ३ स्थापनम् ।

निधि, म पु (स) कोष ण, द्रव्य, राशि
(पु) सप्रह-मन्त्र, निधान, शे(मे)वधि
(पु) २ आधार, आश्रय ।

निनाद, स पु (म) ध्वनि, रज, शब्द ।

निनानये, वि [स गवनपि (नित्य स्त्री)]
ण्कोनशतम् । म पु, उक्ता मर्या, तद्रको
(९९) च ।

—के फेर में पड़ना, मु विजोराजनपर (वि)
मू, सर्वोत्तमान धन मवि, (स्वा उ अ) ।

निपट, वि (देश) अत्यन्त, अत्यधिर, नितान ।

निपटना, कि अ, दे 'निवटना' ।

निपटाना, कि स, दे 'निवटना' ।

निपटा(ट)रा, म पु, दे 'निपटेरा' ।

निपटावा, स पु, दे 'निवगाव' ।

निपात, स पु (स) अध नि-पन २ प्र-
धम ३ मृत्यु (पु) निधन ४ व्याकरण
लक्षणातुल्य पदम् (व्या.) ।

निपातन, स पु (स न) अवपातन, अव
भननं अरकृतन २ वि, नाशन घ्वसन,
हननं, मारणम् ।

निपान, म पु (॥) तटाग नौ, जल-तोय,
आधार आशय २ आहाव, निपानक
३ दोहनपात्र दे, 'दोहनी' ४ आचमन, पान,
पीति (स्त्री) ।

निपीडन, स पु (स न) अर्दनं, सतापनं,
नि-अप विप, कर्ण २ मर्दनं, दहन ३ निर्ह
रणं, निष्कर्षण, निष्पीडनम् ।

निपुण, वि (स) प्रवीण, निष्णात, कुशल,
चतुर, दक्ष, विश, कृतिम्, विचक्षण, विदग्ध,
प्रौढ, कुशलम् ।

निपुणता, स स्त्री (म) प्रावीण्यं, वैदग्ध्यं,
दाक्ष्य, कुशलता, दक्षता इ ।

निपूता, वि (स निपुन) अपुन, पुनहीन
२ दे 'नि सतान' ।

निपाक, स पु (अ) द्रोह, नेर २ विच्छेद,
विभेद, विघटनम् ।

निप्रध, स पु (स) वधन, निप्रधन, इष्टी
करण २ प्रस्ताव, लेख, प्रवन्ध ।

निब, स स्त्री (अ) लेखनीचतु (स्त्री),
कामाग्रम् ।

निबटना, क्रि अ (म निवत्तनं) निवृत्त
रुग्भावकाश-कृतकार्यं (वि) भू, निवृत्त (भ्वा
आ से) २ समाप् (कर्म), निपमं पद
(दि आ अ) ३ निर्णी (कर्म), व्यवनो
(कर्म) व्यवनायेते ।

निबटाना, क्रि म, व 'निवटना' क प्रे रूप ।

निबटाव, निबटेरा, स पु (दि निवटना)
अवराज, वायनिवृत्ति (स्त्री), क्षण, निग्राम
३ समाप्ति, निष्पत्ति (स्त्री) ३ निर्णय
कलहान् ।

निबटना, क्रि अ, दे निवटना ।

निबट, वि (म) पिनड, बट, निषटिन २
विष्ट, शून्यित ३ स ग्रथितमृत्तिन ४
निशितन समित ५ मयट ।

निबरना, क्रि अ (दि निबटना) दे 'निव
टना' (१३) २ विष्टिन् विवृत् (कर्म),
व्यप ३ (अ प ॥) ३ विदित् (दि प
अ) ४ वि, मुन (कर्म), वैरह (कर्म) ।

निबल, वि, दे 'निबल' ।

निबहना, क्रि अ, (निवहणम्) दे 'निभना' ।

निवाह, स पु (स निवाह) जीवनयापन,
कालक्षेप, निर्वहण २ धारण, रक्षणं ३ त्राणो
पाय, रक्षामायन ४ निवृत्ति-समाप्ति (स्त्री) ।

निवाहना, क्रि म (स निवाहण) निर्वह
(भ्वा उ अ, प्रे) रक्ष (भ्वा प से),
प्रवृत्त (प्रे), न विष्टिन् (रु प अ)
२ (वचन) प्रतिष्ठा निवह् शुभ (प्रे) भा
(प्र पाल्यति) अपवृत् (जु) ३ निवृत्
निष्पद-साध् (प्रे), समाप् (स्वा उ अ)
४ निरतरं कृ या विधा (जु उ अ) ।
स पु, दे 'निवाह' ।

निवाहनेवाहा, स पु, निवाहण, मपादक,
साधक, पूरयित (पु) ।

निविड, वि (स) घन, सान्द्र २ कठिन ।

निवेड(रे)ना, क्रि स (दि निवेड(रे)ना)
समाप् (स्वा उ अ), अवसो (प्रे अवसाय
यति), साध-सपद (प्रे) २ विन्दन् निमुञ्च
(जु प अ प्रे), मोक्ष (जु), ३ विरिलप्
(प्रे) ४ धक् कृ, विदुन् (रु प अ) ४ निर्णी
(भ्वा प अ), व्यवस्था (प्रे), अव निर
ध् (जु) ।

निवेडा रा, स पु (दि निवेडना) मुक्ति
(स्त्री), मोचन, मोक्षण २ रक्षा, त्राण, उद्धार
३ वरण, श्रुति (स्त्री) ३ विरलप, धक्
कृति (स्त्री) ४ निर्णय, व्यवस्था ।

निर्वोरी-स्त्री, स स्त्री (म निव) निव अरिष्ट,
कल-शीनम् ।

निभ, वि (म) सुख, ममान । (म पु न)
ध्यान, मिष २ प्रभा, आभा ।

निभना, क्रि अ (दि निवहना) निवह(कर्म
निरन्ते), निवहो भू २ निपमं पद (दि
आ अ) समाप् (कर्म) ३ निरतरं कृ
विधा (कर्म) ।

निभारा, वि, (निभारय) अभारय, मन्द
राग्य अग्य प्रारम्भ हीन ।

निभाना, क्रि स दे निवटना ।

निभार, स पु, दे निवाह ।

निभन, क्रि (प) ३ निभन, निभना
पिन २ शुभ, अनन्तिन ३ अन्तानुन ४
अप ५ प्रवृत् ६ पूग ७ निर्वन, शून्य ८
नोरव, निगृह्य ९ मन्द १० विदित ११
धीत ।

निमग्न, म पु (म न) अभ्यधन-ना,
आमग्न, आवाहन, आह्वान = भोजनाय
अभ्यधनम् ।

—देना, क्रि म, अणि-आनि-मव् (चु आ
मे), अभ्यर्थ (चु आ से) आममाहे
(भ्वा ष अ) आहू आवह् (प्रे) ।

—यत्र, म पु (स न) अभ्यर्थन-आमग्न,
पत्रम् ।

निमग्नित, वि (स) आमग्नित, आहूत ।

निमक, स पु, दे 'नमक' ।

निमित्त, म पु (म न) कारण, हेतु (पु)
२ विह, लक्षण १ शकुनम् । क्रि वि,
उत्थित, अभिलक्ष्य ।

निमिष, स पु (स) दे 'निमेष' ।

निमीलन, स पु (स न) पक्ष्ममकोचन,
निमेष ।

निमीलित, वि (स) मुद्रित, पिहित, मृष्ट ।

निमेष, म पु (म) निमिष, पक्ष्मसंगोच,
२ क्षण, पलम् ।

निमोनिषा, स पु (अ) कुक्षुमप्रदाह,
श्वसनरज्वर ।

निम्न, वि (स) ग(ग)भीर, गहन २ नन,
नीच, अध स्थ ।

—लिखित, वि (म) अधो लिखित-वर्णित ।

नियता, स पु (स नियत) व्यवस्थापक,
स्वाय-विधि, प्रवक्त २ विधायक, कायमवा
रुक १ शामक, शामित् (पु) ४ अध
शिक्षन, ५ अध्ययन, अभिधान, दश
६ मारुति (पु) ।

नियग्न, स (म न) निग्रह, निरोध
प्रतिबध ।

नियत्रित, वि (स) नियमित, नियमबद्ध,
प्रतिबद्ध, निरुद्ध ।

नियत, वि (म) मयन प्रतिबद्ध १ न वशी
कृत २ निश्चित, स्थिरीकृत, पूर्वनिर्णीत ३
प्रतिष्ठापित, नियोजित, नियुक्त ।

नियति, स स्त्री (म) नय, दैव, नवित
व्यथा ।

नियतेन्द्रिय, वि (म) तिर्तेन्द्रिय, मरुमिन् ।

नियम, म पु (न) विधि (पु) व्यवस्था,
यत्र, स्थिति-यदति (स्त्री), ममादा, अ नि
देश, नियोग २ प्रतिबध, नियन्त्रण ३ गीति

(स्त्री), परपरा ४ प्रतिष्ठा, दृढमन्त्र
५ दे 'शन' ।

—धर्म, स पु (स-मौ) मदाचार, सद्
वृत्तम् ।

—बद्ध, वि (स) नियमाधीन, नियमिन्,
नियमित, नियत्रित, सनियम ।

नियमन, म पु (स न) वशीकरण अनु,
शामन, नियन्त्रणम् २ दमन, निग्रह,
निग्रहणम् ।

नियमित वि (स) दे 'नियमबद्ध' ।

नियम्य, वि (स) वशीराय, अनु, शास
नीय, नियन्त्रणीय २ दमनीय, निग्रहणीय ।

नियान, म पु (का) इच्छा २ प्रार्थना
३ दशनम्, मायात्कार ।

—मद्, वि, इच्छुक २ प्रार्थित्, ३ दशनाधिक
दिदृक्षु ।

—हामिल करना मु, दशन क परिचय
प्राप (स्वा उ अ) ।

नियामक, स पु (स) व्यवस्थापक, विधा
यक प्रतिबधक २ निरोधक, प्रतिबधक ३
नाविक ।

नियामत, स स्त्री, दे 'निशामत' ।

नियुक्त, वि (म) आयुक्त, नियोजित, व्याप
रित २ निश्चित, नियत, स्थिरीकृत ।

नियुक्ति, स स्त्री (म) नियोजन, नियोग,
व्यापारण, स्थापनम् ।

नियुत, म पु (स न) कथ, लक्ष्मदशक वा ।

नियोग, म पु (म) नियोजन, नियुक्ति
(स्त्री), व्यापारण २ प्रेरण या ३ अवधारण,
निश्चय । ४ देवरादिभि अपुनाना पुनोत्पादन
(धन) ५ आश ।

नियोजन, स पु (स न) दे 'नियुक्ति'
२ प्ररण्या ।

नियोजित, वि (म) दे 'नियुक्त' (?) ।

निरकुश, वि (म) स्वैर स्वराणि स्वैरिन्,
काम-वृत्ति चारिन् ।

निरनन, वि (म) पूत विशुद्ध, पवित्र,
निर्लेप । २ अशक्त । म पु दशर ३
शिव ।

निरक्षर, वि (म) अविज्ञान-निरक्षर, स
(म) नन अन २ अन्वयवहित । क्रि वि, मदा,
सन निरक्षर, नित्य अनक्षर अनक्षरान् ।
निरक्षर, वि (म) अनक्षर, अक्ष, अभिहित मूला

निरखना, किं स (म निरीक्षण) दे देखना ।
निरपराध, वि (म) अनिर, न्दोष, अनवब,
दोषहीन, अनर, निपाप ।

निरपेक्ष, वि (म), निरीह, अज्ञान, नि
विगत, रह, विरक्त, तटस्थ ।

निरर्थक, वि (स) अर्थशून्य, अनर्थक २
निप-अवि, फल, मोय, बध्य, अनुपयुक्त ।

निरम्, वि (स) दे 'नीरम' ।

निरस्त, वि (स) अशस्त, निराशुच ।

निरहकार, वि (म) निरभिमान, नम्र,
विनोत ।

निरा, वि (म निराण्य) विशुद्ध, मिश्रण
रहित, अमसृष्ट २ कवल, धव, मात्र
३ अत्यन्त, अत्यधिक ।

निराकार, वि (स) अदेह, अजाय, अक्षरी,
अमूर्त, अरूप । स पु, दशर २ जाकाश शब्द ।

निरादर, स पु (स) अनादर, अवज्ञा,
अव-अप, मान, अवधीरण-णा, निरम्बार,
परिभव ।

निराधार, वि (म) निरवलम्ब, निराश्रय
२ असुक्त, मिथ्या ३ निराहार ।

निरामिष, वि (म) निर्मूल मासरहित
२ शानाहारित ।

निरायुध, वि (स) दे 'निरण्य' ।

निराह्व, वि (म निराण्य) अदभुत,
विचित्र, विलक्षण, विशिष्ट २ अनुपम, अनुस्य,
अपूर्व ३ विनिर, चन । स पु, निर्मूलस्थानम् ।

निराशा, वि (स) अग्न्याश, ह्नाश, त्यक्ताश,
आशाहीन, निरपेक्ष ।

निराशा, स स्त्री (म) नैराश्य, निराशता,
आशाहीनता ।

निराश्रय, वि (म) अनाश्रय, अशरण, अन
शाय, आश्रयहीन ।

निराहार, वि (स) निरन्, अनाहार, उन्
धित, हृतोपवास ।

निराक्षण, स पु (स न) दशनं, वीक्षण,
अवलोकन २ अवेक्षण, निरूपण, कार्यदशनम् ।

निरीक्षित, वि (स) दृष्ट, आलोकित २
अवेक्षित, निरूपित ।

निरक्त, स पु (म न) वेदशविशेष २
यात्यमुनिप्रण तो दशविशेष ।

निरक्ति, स स्त्री (म) निवचन, व्युत्पत्ति
दशना व्याख्या ।

निरुत्तर, वि (म) अनुत्तर, बद्ध रुद्ध, मुक्त ।

निरुपम, वि (स) अनुपम, अतुल्य, अम
दृश [-स्त्री (स्त्री)], दे 'अनुपम' ।

निरूपण, स पु (स न) अव निर, धारण,
निर्णय-अन, निश्चय २ अवलोचन ३ निद
शनम् ।

निरूपित, वि (स) व्याख्यात, निवेचित
सम्यक् वर्णित २ निधारित, निर्णीत ३ अव
लोकित, इक्षित ।

निरूप्य, वि (स) व्याख्यातव्य, विवचनीय,
वर्णनीय २ निर्धारणीय, निर्णेतव्य ३ अव
लोक्य, इक्षणीय, अन्वेषणीय ।

निरूप्य, स पु (म न) तर्पण, विवेचन,
प्रिचारणम् २ निर्धारण, निर्णयनम् ।

निरोध-शी, वि, दे 'नीरोध' ।

निरोध, स पु (स) अवरोध, प्रतिबन्ध
२ नाश ।

निरोधक, वि (स) निवारक, प्रतिबन्धक,
प्रतिषेध, वचक ।

निर्य, स पु (फा) अर्ज, मूल्यम् ।

—नामा, स पु (फा) अर्ज-शी, मूल्यपत्रम् ।

निर्यात, वि (म) निर्यात, प्रस्थान, निष्क्रान्त ।

निर्गम, स पु (म) बहिर्गमनं, प्रस्थान २
द्वार, निर्गमनमार्ग ।

निर्गुंडी, स स्त्री (स) शोफाली शिका, निधुवार ।

निगुण, वि (म) निगुणता २ मूल, गुणहीन ।
स पु, परमेश्वर ।

निर्जन, वि (स) विचन, प्रकान्त, विविक्त ।

निर्जर, वि (म) जराहीन । स पु, देवता ।

निर्जल, वि (स) जलशून्य, शुष्क ।

निर्जोष, वि (म) अचेतन, नष्ट, प्राणहीन ।

निर्धाय, स पु (म) आपर्पण, निर्णयपाद,
व्यवस्था, इडाशा २ निश्चय, परिच्छेद ।

निवेव, अव निर, धारण धारणा ।

निर्वात, वि (म) निर्धन, अव निर, धारित ।

निर्द्वय-शी, वि (म निर्द्वय) निरूप्य, निष्कल्प,
कुर, निष्ठुर, निष्पुण, नृशम, कठोर ।

निर्दिष्ट, वि (स) उक्त, कथित, वर्णित २
निश्चित, नियत, मक्रेति ३ आदिष्ट ।

निर्देश, स पु (स) वर्णन, कथनं, विशुद्धनं,
मतेन २ निश्चय, निर्णय ३ आशा, आदेश-

४. नामन् (न), संज्ञा ।

निर्दोष, वि (म) दे 'निरपराध' ।
निर्द्वन्द्व, वि (म निर्द्वन्द्व) शब्द प्रविन्द्वि, रहित
० द्वन्द्वानां, विरक्त ३ स्वर, स्वरगति ।

निर्घन, वि (म) अकिंचन, दरिद्र, अधन,
नि स्व, अर्थ द्रव्य धन वित्त, हीन, दुगत, दीन ।
निर्घनता, म स्त्री (म) दारिद्र्य, अकिंचनता,
दुगति (स्त्री), दानता ।

निर्धार, म पु (म) । निश्चय, परिच्छेद,
निधारण, स पु (म न) । विवेक अवधारणा
निधारित, वि (म) निश्चित, कृतनिश्चय,
परिच्छिन्न ।

निर्निमेष, वि (म) अनिमिष, पक्षपातरहित ।
किं वि, अनिमि(मे)ष, तानमे(मि)षम् ।

निर्वन्ध, म पु (स) आग्रह, अभिनिवेश
२ विन, अन्तराय ।

निर्वल, वि (म) अवन, अशक्त, दुर्बल,
निम्नेत्रस, निवाय, अल्प शीण, नल शक्ति,
नि मत्त ।

निर्वलता, स स्त्री (स) बल-शक्ति, शून्यता,
बल शक्ति मत्त, शय-नाश-हानि (स्त्री) ।

निर्वुद्धि, वि (स) मूर्ख, जड ।

निर्वोध, वि (स) अज्ञान, अवोध ।

निर्भय, वि (स) अभय, अमीन, अकुतोभय,
निर्भाक, निर्भय ० प्रगल्भ, साहसिन् ।

निर्भयता, स स्त्री (स) निर्भीकता, अभय,
अभीति (स्त्री), नि शयता २ प्राण-
साहसम् ।

निर्मोक, वि (स) दे 'निर्मग' ।

निर्भोक्ता, स स्त्री (म) दे 'निभयता' ।

निर्मम, वि (स) विरक्त, वैराग्यवत् २ नि
स्वार्थ, निरिच्छ ३ उदासीन, तटस्थ ।

निर्मल, वि (स) अनल, विमल, स्वच्छ,
शुभ्र २ अपाव, पवित्र ३ निष्कन्क, निर्दोष ।

निर्मलता, म स्त्री (म) विमलता, स्वच्छता
० पवित्रता २, निष्कल्बता ३ ।

निर्मली, स स्त्री (म निर्मल) अवप्रसाद,
कनर, निक्तमरिच ० कनकवीन ३ दे
'रोटा' ।

निमग्न, म पु (स न) निर्मगि (स्त्री),
रचन-भा, विधानं, सज्जन, घन, कल्पन
साधन, सहायनं, सति (स्त्री) ।

निर्माता, म पु [स-र] रचयितृ-सहृ(पु) ।

निर्मल्य, म पु (म न) देवोच्छिष्टद्रव्य,
देवापेक्षितवस्तु (न) ।

निमित्त, वि (स) रचित, धर्मित, कल्पित,
सह ।

निर्मूल, वि (म) जमूलक, निमूलक, निरा
धार ० उगूलित, उत्पासित ।

निर्मोक्ष, वि (म निर्मोह) निमग्न, ममत्व
शून्य, रूक्ष २ निदय, पाषाणहृदय ।

निर्लज्ज, वि (म) अप-निम्, त्रप, निर्, ब्रौह
हीक, त्रपा-लज्जा, हीन, धृष्ट, विघात ।

निर्लोभ, वि (स) परिम-मुष्ट, रुप्त, नि स्पृह,
वितुष्ण, अलोडुप, अगृध्नु ।

निवाण, स पु (स न) मोक्ष, मुक्ति
(स्त्री), अपवग ।

निर्वात, वि (म) अपवन, निर्वात्य, वातवे
शून्य (प्रदेशादि) ।

निर्वाह, स पु (स) दे 'निवाह' ।

निर्विकार, वि (स) विकृति विकार परिवर्तन,
रहित, अविकारिन्, अपरिवातम् ।

निर्विघ्न, वि (स) निरतराय, निर्व्यापात,
विघ्नरहित । किं वि, निर्विघ्न, गत्या (वृ.)
निरुपद्रवम् ।

निर्विदेक, वि (म) निवृद्धि, अविवेचिन् ।

निर्वीर्य, वि (म) निस्तेजस् नि मत्त, निबल ।

निवार, स स्त्री (फा नवार) पर्यवपट्टिका,
अनिवारम् ।

निवारक, वि (म) रोधक २ अपमारक,
नाशक ।

निवारण, स पु (म) नि, रोध-रोधन
० अपसारण, दूरीकरण ३ निवृत्ति (स्त्री) ।

निवाला, म पु (फा) दे 'घास' ।

निवास, स पु (म) वसति स्थिति (स्त्री)
० गृह, निवेन आ(अ)गार, आबन्ध,
आनि, स्थ २ वाम-गृहस्थानम् ।

—करना, किं अ, अपि-आ नि प्रवि-वस
(भ्वा ष थ) ।

निवासी, स पु (म-यिन्) वामहव (पु),
वामिन्, स्थ, वतिन् ।

निवृत्त, वि (म) वि, मुक्त, विरत, लक्ष्माय
वादा, हनकार्य ० विरक्त, पृथग्भूत ।

निवृत्ति, स स्त्री (स) उपरम, प्रवृत्त्यभाव,
अप-उप वि, रति (स्त्री), मुक्ति (स्त्री) ।

निवेदन, म पु (म न) आवेदन, प्रार्थन-ना,
अभ्यर्थना, याचना याचना, विद्यापना विद्वत्सि
(स्त्री) ।

—करना, नि स, आनि-विद् (प्रे) विद्या
(प्रे, विद्यापयति) अभिप्रार्थय (तु वा से),
याव (भ्वा उ से) ।

—पत्र, म पु (स न) आवेदन प्रार्थना,
पत्रम् ।

निशाक, वि, दे 'नि शक' ।

निशाध, वि (स) राक्षध, दोषध ।

निशा, स स्त्री (म) रात्रि (स्त्री), शबरो ।

—कर, —गन्ध, —पति, ॥ पु (सं) चन्द्र,
मोद ।

निशाचर, स पु (स) राक्षस, रक्षस् (न),
विशाच ० चौर, छुठक ३ नक्तचर ।
(उल्लू आदि) ।

निशात, वि (म) निशित तान्त, तेजित,
शित, क्षुण्ण २ परिष्कृत जल, उज्ज्वलित ।

निशाद, म पु (म) निशादन, नक्तभोगिन्
२ राक्षस विशाच ३ धूक ।

निशादि, स पु (स) नायन, (अव्य) मन्था ।

निशान, स पु (का) अभिज्ञान, चिह्न,
अक, लक्षण, लान्न, लिङ्ग, व्यञ्जन
० प्रमाण, साधन ३ विण, क्षत, अक चिह्न
४ लक्ष्य, शब्दव्य ५ अधिवासर प्रतिष्ठा, चिह्न
६ ध्वज, वैचर्यन ची ।

—करना या लगाना, कि स, अक (पु),
विह्वलि मुद्रपादि (ना वा) ।

—दार, वि (का) विहित, अकित २ ध्वज
वाहक ।

—बदार, म पु (का) वैजयन्तिक, एताकिन्
१ अग्नेमर, पुत्रेण ।

नाम—, चिह्न, लक्षण २ अस्तित्वलेश ।

निशानचा, मं पु (का निशान) दे
'निशानबदार' २ लक्ष्यवेधक ।

निशाना, स पु (का) लक्ष्यदर्श, शरव्यम् ।

—सोधना, सु, लक्ष्मी-स्थी क, संघा (उ
उ अ) ।

—मारना या लगाना, पु, लक्ष्य प्रति शिप्
(पु प ल) अम् (दि ष से) ।

निशानो, सं स्त्री (का) दे 'निशान'

२ स्मृति-स्मृति स्मरण, दान २ अभि
दान, स्मारकम् ।

निशास्मान, सं पु (म न) निशा, अति
त्रय ज्ञान, प्रन (न्य) ।

निशीथ, म पु (म) अन्ध-मध्य, रात्रि,
रात्रि निशा, अर्थ २ रात्रि (स्त्री) ।

निश्चय, म पु (र) निश्चय, निश्चित्य,
ध्रुवत् ० विधास, विश्रम ३ निर्णय ४
दृढ-मात्र, अध्वयमाय ।

निश्चल, वि (स) अचल, अविचल, धीर,
दृढ धृतिमान् ० स्थिर, ति स्थय निश्चेष्ट ।

निश्चिन, वि (स) दीप्त मुक्त चित्त, शान्त,
निगा रणरणक, रविण ।

निश्चिन, वि (मं) नदेह मन्त्र शुन्य, अ
निम, सगर, नियत, दृढ २ निर्गोत, निर्भा
रित ।

निश्चास, म पु (स) दे 'नि शान' ।

निषध, न पु (म निषधा बहु) विध्याच
लभ्य देशविशेष ० 'रमाक' प्रदेश ३ निष
धवन्ति ।

—पति, म पु (म) नन् ।

निपाद, मं पु (मं पु) अनापानातिविशेष
० चाणल, हीन ३ सप्तमस्वर (मगीन) ।

निषिद्ध, वि (सं) प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट,
निवारित २ दूषित, गर्ण, निष ।

निपूदन, वि (म) मारक, मारयिन्, हट्ट,
प्रणटर, अन्तकर, घातक ।

निषेक, म पु (सं) अव आ, मैत्र मैचन,
अभि, वर्षण उद्योग ० गर्भाधान ३ गर्भाधान
संस्कार ४ भक्षण-जल ५ मन्त्रित ६
वीर्याण्डि (स्त्री) ।

निषेचन, म पु (स न) दे 'निषेक' १ ।

निषेध, मं पु (मं) प्रतिषेध, निरोध,
निवारण, निषिद्धि (स्त्री) ।

निषेधक, वि (मं) प्रतिषेध, निवारक,
प्रतिषेध, बाधक, निरोधक ।

निष्कट, वि (मं) नि वृत्त निवार, निरतराय
० नि रन्त्य, अव्यक्त ।

निष्कट, वि (मं) कजु, मरु, अनाय,
निराल, विगुह ।

निष्काम, वि (मं) निरिच्छ, निरीह,
नि रूह ।

निष्कारण, वि (म) अकारण, निरनिमित्त ।
 किं वि अकारण, अहेतुकम् ।
 निष्कमण, म पु (म न) बहिर्गमन, निर्गमन
 २ मस्कारभेद (धर्म) ।
 निष्ठा, म स्त्री (म) प्रत्यय, विश्रम, विश्वास
 २ भक्ति (स्त्री), श्रद्धा ।
 निष्ठुर, वि (म) क्रूर, क्रूरकमन, निर्दय,
 निर्भृग, निष्करण, शृङ्गास, कठोरहृदय ।
 निष्ठुरता, म स्त्री (म) क्रूरता, निर्दयता
 शृङ्गासता ।
 निष्पत्ति, म स्त्री (म) अप, समाप्ति (स्त्री)
 २ परिपाक, सिद्धि (स्त्री) ।
 निष्पन्न, वि (स) समाप्त, अवप्ति २ निष्,
 परिगत, मयन्न ।
 निष्पादन, स पु (म न) साधन, निवर्तन
 विधन २ समर्थन, संपूरणम् ।
 निष्पाप, वि (म) अपाप, अनप, अवलम्प,
 अतिन्विष, पपराहित, पुण्यात्मन् ।
 निष्प्रयोजन, वि (स) निस्स्वार्थ, निष्काम
 २ अकारण, निष्कारण ३ अनर्थक, व्यर्थ । किं
 वि, व्यर्थ, मुधा ।
 निष्कल, वि (म) निरर्थक, अनुपयोगिन,
 मोष, विकल्प, निष्प्रयोजन, मुधा, मुधा ।
 निस्सत, स स्त्री (अ) सदस, अनुषा
 २ वाग्दान, वाक्प्रदान ३ तुलना, माहृदयम् ।
 किं वि, अपेक्षया तुलनया औपम्येन (तुलाया) ।
 निस्सर्ग, म पु (म) स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ।
 निस्सार, स पु (अ) दे 'निटावर' ।
 निस्स्थ, वि (स) जडी-निपट्टी, भूत,
 अवलम्प, अटुल्य, निदोष २ अनालपिब,
 मौनित्व, तूष्णीक ।
 निस्स्थिता, म स्त्री (म) निष्पदता,
 निष्पदता, षट्ता, निदोषता २ नीरवता,
 मौनम् ।
 निस्तार, स पु (स) अपवर्ग, मुक्ति (स्त्री)
 २ उद्धार, त्राणम् ।
 निस्तारा, स पु (स. निस्तार) निर्णय,
 निर्धारण २ दे 'निस्तार' ।
 निस्तेज, वि (म निस्तेजम्) अप्रज, निष्प्रम,
 मन्त्रि, तेजोदीन २ निस्त्व, निर्वाय,
 निरालम् ।
 निस्पद, वि (स) निस्पद, अस्प, अचल,
 स्थिर, गतिरहित, निस्पन्द, निस्पन्द ।

निस्पृह, वि, दे 'नि स्पृह' ।
 निस्पृ, वि (अ) दे 'आधा' ।
 निस्मंकोच, वि (म) दे 'नि मकोच' ।
 निस्मृतान, वि (म) दे 'नि मृतान' ।
 निस्मदेह, वि (म) दे 'नि मदेह' ।
 निस्मार, वि (स) दे 'नि मार' ।
 निस्मीम, वि (म) दे 'नि सीम' ।
 निस्स्वार्थ, वि (म) दे 'नि स्वार्थ' ।
 निहम्, वि (सं नि मन्) एकल, पञ्चाकिन्,
 २ मस्कारिण ३ नग्न ४ निर्लज्ज ।
 निहत्या, वि (म निर्हन्) निरस्त्र, नि शस्त्र,
 निराशुष, अस्त्र शस्त्र, होन २ निर्धन ।
 निहाई, म स्त्री (स निधाति >) शर्म मी,
 स्थूणा ।
 निहायन, वि (अ) अत्यत, अत्यधिक ।
 निहारना, किं म (म निमान्) दे
 'दिमाना' ।
 निहार, वि (फा) सतुष्ट, पूर्णकाम, प्रमत्त ।
 —करना, किं ॥, प्रमत्त आनन्द रूप (मे) ।
 निहित, वि (म) स्थापित, न्यस्त, निक्षिप्त ।
 निहोरा, म पु (स मनोहार >) अनुमद,
 कुर, उपकार २ कृतज्ञता, कृतवेदिता
 ३ मार्गन-ना, निवेदन ४ आश्रय, आधार ।
 किं वि, द्वारा-कारणेन (अव्य) ।
 —माहता, किं अ, उपकार स्पृ (भ्वा. प.
 अ) कृत शा (कृ. उ. अ) ।
 नीद, सं स्त्री (स. निद्रा) स्वपन, सवेदः, दे
 'निद्रा' ।
 —आना, किं अ स्वप (सन्नप, उ, सपु
 प्पति) निद्रया पराम् (कर्म) ।
 —उच्छाट होना, किं अ, विभग्न-निद्रा
 (वि) भू ।
 —न आना, सं पु. निद्रा, स्तोप नाश ।
 —भर मोना, तु, यथेष्ट स्वप (अ. प. अ) ।
 नीदू, वि (हि नीद) दे 'निद्राट' ।
 नीबू, म पु, दे 'निबू' ।
 नीक-का, वि (स निक >) अच्छ, सुन्दर,
 उत्तम, भद्र, उत्कृष्ट ।
 नीच, वि (म) अधम, नीच, भानि, कृष्ट,
 पुष्ट, धन, गरी, चण्ड, तुच्छ, पामर ।
 म पु, जन्मद, जन्म, दुष्ट, पृथग्जन,
 २ हान, चानि-बां-कुल, अन्धजानीय,
 नीच, कुल-वशप्रसूत ।

—ऊँच, सु, भद्राग्रे (न) २ गुणावगुणी,
३ हानिलाभी ४ सुखदुःखे (न) ५ मपद
विपदी (स्त्री) ६ उत्त्थापकपौ ।

नीचता, सं स्त्री (म) अधमता, सुत्रता,
तुच्छता पामरता, २ अन्त्यजता, हीनबुद्धता ।
नीचा, वि (स नीच) अधस्थ, अधस्तन
(-नी स्त्री), नन, निम्न, नीचस्थ, अबाध
२ दे 'नीच' ।

—ऊँचा, वि, नतोन्नत, विषम, अमम, २ दे
'नीच-ऊँच' ।

—दिराजाना, सु, पराजि (भ्वा अ अ),
परामू २ ही (प्रे हेपरानि), लघू कृ, ज्ञीड
(प्रे) ।

नीचाई, स स्त्री (इह नीचा) नीचता, निम्नता,
अध स्थता ।

नीचे, कि वि [स नीचे (अव्य)] अध,
अधोभागे, अधस्तात् तले २ अधोनताया,
बन्धे ३ न्यून, अवर ।

—ऊपर, कि वि, अन्योन्यस्योपरि, हतरेण
हस्योर्ध्वम् । २ अस्तन्वस्त, सकीर्णता ।
नीढ, स पु (म पुं न) दे 'धौमल' ।

नीति, स स्त्री (म) उपाय, युक्ति-नीति
(स्त्री), प्रयोग २ राजराज्यशासन, नीति
नय-न्याय मार्ग, नय नीति प्रम मार्ग
३ सदाचार, सद्ब्यवहार, सुमत् चरित
४ नीति, विद्या शास्त्रम् ।

नीतिज्ञ, वि (म) नयन, नीतिशास्त्रज्ञ ।

नीतिमान्, वि (स-मन्) नयपर सदाचा-
रि [-मती (स्त्री)] ।

नीप, स ॥ (सं) वदव विषयन, मदिरा
गण ।

नीच, स पु (म निबुव) दे 'निबू' ।

—निचोड, वि, अल्पदायिन् बहुग्राहिन्, अल्प
दातु बहुमणीत, अल्पद बहुग्राहक ।

नीम, स पु, दे 'नम' ।

नीम, वि (फा, मि स नेम) दे 'आम्हा' ।

—हकीम, स प वैद्यमानिव वैद्यमन्त्र,
निष्ठा-कुटम्, वैद्यविस्तार ।

—हकीम सुतरे जान, सु, वैद्यमन्त्र-वाग् प्रण
सकटम्, छद्ममेव सकटावह ।

नीयत, स स्त्री (स्त्री) अशय, उद्देश, भाव,
इच्छा, लक्ष्यम् ।

—चदल जाना, सु पाप प्रति प्रवृत्त (भ्वा आ
म), धर्म त्यज (भ्वा प अ) ।

नेच—, वि, मदाशय, सुमन्त्र ।

वद—, वि, दुराशय, कुमन्त्र ।

नीर, स पु, (म न) तीव्र, दे 'यल' ।

नीरज, सं पु (म न) पद्म, दे 'कमल' ।

नीरद, स पु (स) जलद, दे 'मर' ।

नीरम, वि (म) अरस, विरस, अवि, द्रव,
सुष्क २ अम्बादु, रसहीन, अरुचिकर ।

नीरोग, वि (म) सुस्थ, कथ्य, वास्तं, दे
'स्वस्थ' ।

नीरोगता, स स्त्री (म) आरोग्य, दे
'स्वास्थ्य' ।

नील, स पु (स नील) (पौष्ट) बाला,

नीलो, नीलिनो, रञ्जनी, २ (द्रव्य) नील, नील

रञ्ज ३ प्रहारण, नीलविह, नीला ४ लाज

५ बाजविशेष ६ इन्द्रनीलमणि, नीलोदल

(पु) ७ मर्यादविशेष (दस हजार अरब

अथवा सौ अरब) । वि, दे 'नीला' ।

—कठ, स पु (स) चच, किरीटि(री)वि
(पु) २ शिव ३ मयूर ।

—कमल, स पु (मं न) नील, पद्मम्
अथ इन्द्रि(री)वर, इन्द्रीवार ।

—का टीरा, सु, कनक, जयगम् (न) ।

—गाय, ॥ स्त्री, दे 'तवद' ।

नीलम, स पु [फा, म नीलमणि (प)]

नील, नीलाय, महा रत्न, नील ।

नीलाग्र, स पु (म न) मानदीपवस्त्र

२ तालीशयत्रम् । स पु, बलदेव २ राज्ञम् ।

नीलोत्तर, स पु (फा नि स नीलायन)

नुमुद, किरण २ इन्द्रि(री)वर, नील,

अथ यत्रम् ।

नीला, वि (म नील) दयाम, मेवक, नीलवर्ण ।

—रग, स पु, नील, नीलवर्ण, नीलिमम्
(पु) ।

—पौला होमा, सु, वृष (ईद प अ) दुप
(दि प मे) ।

नीलाई, स स्त्री (हि नीला) नीलत्व,
नीलिम् (पु) ।

नीलाधोया, स पु (हि नीला ५ म तुभं)

हेममार, तुभं, नालाघ्नन, नाशगर्भ, मयूर

श्रीव, नील विजुम्, मयूररम् ।

पुर, मर, मुख्य २ प्रभु, स्वामिन् ३ निर्वा
हक, प्रवर्तक [नेत्री (स्त्री)] ।

नेती, स स्त्री (स नेत्र) जवनरज्जु (स्त्री),
मध्यगुण ।

—घोती, स स्त्री, दीपपट्टिका अत्रसाधन
(हठयोग) ।

नेत्र, स पु (स न) जवन, चक्षुः (न)
दे 'अक्ष' २ दे 'नेत्रा' ३ वस्त्रशाला ।

—रत्न, स पु (स न) वस्त्रम् ।

नेत्र्य, वि (स) जवन नत्र, विषयक सर्वाधि
२ जवन नेत्र, हितवर ।

नेट्टिट्ट, वि (स) निरुत्तम २ अश्विनम्
३ निपुण ।

नेनुआ वा, स पुं (?) घोष पत्र, आदना,
देवदानी, ऐसी, महापला ।

नेपचून्, स पुं (अ) नेपचून्, ग्रहविरोध ।

नेपथ्य, स पु (स न) वेष्ट प, परिधान,
वस्त्र, आभरण, अलङ्कार २ (शशाङ्क्या)
वैद्यभान, अलङ्कारकोष्ठ ३ रंग, भूनि
(स्त्री) शाला ।

नेपाल, स पु (स) भारतोत्तरवान देश
विशेष । (स न) दे 'तावा' ।

—जा, स स्त्री (म) नेपालजाता दे
मैनिल ।

नेचूला, स पु (अ) नीहारिका ।

नेमि, स स्त्री (स) नेमी, प्रथि चक्रपरिधि
(न) २ कृपातिरममन्थल ३ कृपमयी
रज्जुधारणार्थं विदाम्बन्ध, त्रिका ।

नेवता, स पु, दे 'निमरण' ।

नेवर, स पु (म नूपुर) दे 'नूपुर' २ अश्व
पादक्षतम् ।

नेवला, स पुं (म नवुल) पिण्ड, भूची
बदन, लोहितानन, जगूष, वंश ।

नेवार, स पु, दे 'निवार' ।

नेस्व, वि (का) नष्ट, क्षत ।

—नाबूढ, वि (जा) नष्टवृद्ध, उच्छिन्न ।

नेस्ती, स स्त्री (का) अनस्तित्व, जमाव
२ आलस्य ३ नाश ।

नेह, स पु (स स्नेह) प्रेमवत् (पु), प्रीति
(स्त्री) २ दृढ, तेजम् ।

नैतिक, वि. (सं) नीति, विषयक शास्त्रीय ।

नैत्य, वि (स) नैत्यक नैत्यिक[नी (स्त्री)],
नित्य सवधिन्करणीय ।

नैन ना, स पु (म नवन) दे 'अयि' ।

नैपुण्य, स पु (म न) कौशल, दाक्ष,
पाठवम् ।

नमिस्तिक, वि (म) निमित्त, न य त्पत्र,
अनेत्विक ।

नैया, म स्त्री, दे 'नाय' ।

न्यायिक, स पु (स) न्याय नर, नायक,
न्यायवि (पु), नायिक ।

नेराश्य, स पु (म न) दे 'निराशा' ।

नैर्द्धत, म स्त्री (स नैर्द्धी) नैर्द्धनरीण,
अवाची प्रताप्येम वा दिन् (स्त्री) ।

नैरेय, स पु (म न) देव-दहि (पु)
शोचन, भोग ।

नेमगिक, वि (सं) प्राकृतिक साहसिक,
स्वाभाविक मासिद्धिक[री (स्त्री)], प्रवृत्ति
स्वभाव, सिद्ध ।

नैहर, स पु, दे 'माहरा' ।

नोक, म स्त्री (का) अग्र, अग्रभाग, अणि
(पु स्त्री) प्रात मुक्त शिखर चतु
(स्त्री) २ उदय-नदिवर्ध, शण भय ।

—मोक, म स्त्री, नम, नालाप भासिन् परि
(स्त्री) दाम, शयनम् ।

—दार, वि, दे 'तुरीला' ।

नोरीला, वि, दे 'तुरीला' ।

नोस, म स्त्री (हि नाचना) कुंघ, कुवन
२ आकस्मिक आश्चर्य, कुटन ३ परितो
याचनम् ।

नोचना, वि म (म कुवन) कुन् (स्त्री
प से), उत्पन्न (पु), अग्नित् (रु प
अ) २ विन् (रु प म) ३ अपनी
निर्द्वन्द्वपद (स्त्री उ म) ४ अवविद्
(मे), निन्द (रु प अ), पुर (पु
प म) ।

नोट, स पुं (अ) स्मृत्यर्थे न्य नयन निरन्,
२ स्मरण, स्मरणसिद्ध, जमिन ३ पत्र,
पत्रिका ४ लिपिनाली, टाटा ५ धनपत्र,
माणपत्रम् ।

—करना, वि म, निन् (पु प म),
अंक (रु) ।

—कर्ता, स पु (म तृ (पु)) दे 'न्यायाधीश' ।

—सभा, म स्त्री (म) दे 'न्यायालय' ।

न्यायाधीश, म पु (स) न्याय धर्म, अध्यक्ष, जातिपरगण निर्णेतृ-व्यवहारद्वष्ट (पु) प्रातिविधान, समक्षपरगण, दण्ड नायक पर ।
न्यायालय, म प (म) धर्म न्याय, समा, व्यवहारमण्डप, अधिकरणम् ।

न्यायी, वि (म यिन्) न्याय, पर परायण-शील, न्यायवर्तिन् ।

न्याय्य, वि (मं) उचित, धर्म्य, युक्त, योग्य, तथ्य ।

न्याय, वि (म निर + भारत >) दृश्य, दूरवर्ति २ विदित, पृथक् स्थित ३ अन्य, अपर भिन्न ४ विभूज, विविज [न्यायी (स्त्री)] ।

न्यायिया, म पु (हि न्याय) टावर, बहुल ।

न्याये, कि वि (हि न्याय) दूर, दूरे, आरा २ पृथक्, विदित ।

न्याय, स पु (म) निधान, स्थापन, न्ययन निक्षेपण २ उपनिधि (पु), निक्षेप ३ अयण, त्याग ।

न्यूलियम, म पु (अं) नाभिः ।

न्यून, वि (सं) अन्तर, अन्पीयम्, क्षोदीयम्, लघीयस्, ऊन २ अवर, अधर ३ सुद, नीच ।

न्यूनता, स स्त्री (सं) ऊनता, अल्पता, अपूर्णता, पर्याप्तताभाव २ हीनता, अभाव ।

न्योटावर, स स्त्री, दे 'निटावर' ।

न्योतहरी, स पु (हि न्योता) निमग्नजन ।

न्योता, म पु, दे 'निमग्न' ।

न्योला, सं पु, दे 'नेवला' ।

न्योली, स स्त्री (स नली) हठयोगक्रियाभेद ।

प

प, देवनागरीवर्णमालाया एकविंशो व्यञ्जनवर्ण, पञ्चा ।

पक, म पु (स पुं न) वर्द्धम, चिकित्, ॥ 'कीवट' ।

पक्व, म पु (स न) पक्व, मराज, दे 'कमल' ।

पक्वासन, स पु (म) चतुर्धुस म्हात् (पु) ।

पक्विल, वि (म) सपक, सवद्धम, सचिन् ।

पक्ति, म स्त्री (म) देवता, लता २ तनि, रानी नि भेरी नि आवली नि (मव स्त्री) ।

—पयुन, वि (म) पानिच्युत ।

—दूपक, वि (म) दीन, नीच, कुत्ता ।

—पानन, म पु (म) मित्रवर, ब्राह्मणश्रेष्ठ, शिवात्म ।

पय, म पु (म पय) बाज, गस्त, पत्र, पत्र, छंद तनूहम् ।

पयडी, म स्त्री [म पयमन् (न)] पुण्डलम् ।

पया, म पु (हि पय) व्यञ्जन, वीजन, तावृत्तम् ।

—शरणा, कि म, बीन् (जु) ।

पय का—, 'प्राणवर्ण' ।

चम का—, धवित्रम् ।

पयी, म स्त्री (हि पया) व्यञ्जन-वीजनवम् ।

पयी, स पु, दे 'पयी' ।

पगतति, म स्त्री (म पति) दे 'पति' (१ २) २ सभा, समाज ।

पगु, वि (म) ओण, यय, सोल-ड ।

पच, वि (स पचन्) । मं पु, उक्ता मर्या, तद्वत् (१) च २ लोक, जनता ३ निर्णेतुम्भा, मध्यस्था ।

—तत्त्व, स पुं, (म न) पचभूतम् (पृथिवी तलानलानिलाकाशानि) ।

—नद, स पु (सं) पचनदीयुत प्रातनिक्षेप, ॥ पञ्चाप ।

—नामा, मं पु (मं + का) ॥ पचनित्थपत्रम् ।

—प्राण, स पु (म प्राणा) प्राणपचवम् (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) ।

—भूत, मं पु (मं + त्र) पंचतत्त्व, पंच, तत्त्वानि भूतानि ।

—महायज्ञ, मं पु (सं + यज्ञ) ब्रह्मदेव दिव्य वल्लिदेव नृपका ।

—तन, मं प (स न) वनरहीकनी मणिपञ्चरा-मं किशानी पचरत्नानि ।

पचक, मं प (म न) पचरत्नमुमुदाप ।

पचत्त्व, म पु (म न) मरण, निधन, मृत्यु, पचना ।

पंचम, वि (सं पंचम-मीमं) २ सुद ३ दध । सं पुं, पंचमस्वर (सपीन) ।

पंचमी, सं स्त्री (सं) शुक्ला कृष्णा वा पंचमी

निब (स्त्री) = विनिविनेय (व्या)
३ श्रौष्ये ।

पचाग, म प (म न) कानिनिनत्रययोग
करपातमरपतिरा निसा ।

पचागिन, म स्त्री (म न) पचागमेद पचनरा ।

पचानन वि (हि पचन) अच्य । म प
गिव = मिह ३ अच्यगि ।

पचाननी, म स्त्री (म) दुगा २ मिहा ।

पचायन, म स्त्री (स पचायन) १ पच
मम मदिनि (स्त्री) २ पामनभा ।

—नामा, म पु (दि + का) पचमगनि
यपरम् ।

पचायनी वि (हि पचायन) पचसभा
मकधिन् २ ममान्य सावचनिब ।

पचाही, म स्त्री (म) पुपला, वच निनिम
पुपिरा २ श्रौषदा पाचाली ।

पडा, म पु, दे 'पडा' ।

पडर, म पु (म) गडाल, देहाधनमूह
२ दड, शरीर ३ दे 'पिडरा' ।

पचा, म प (का) पच २ पचरगाना
पचायनीममगज्यभाभा वा ३ (व्यायनीला)
शर ।

—पजे मे, तु, अभिको, वसे ।

पचाबी, वि (का) पाचनर [न्दा (स्त्री)] ।
म पु, पचनयामिन् ।

पचारा, म पु (म पचिक) तनुकार
कनर २ दे 'पुनिया' ।

पचीरी, म स्त्री (क पका) गोधूमभिचूर्ण,
मिश्रात्रमेद ।

पैडवा, म पु, (') मदिपी पचविनी, गाव
गावर ।

पडा, म स्त्री (म पत्ति) तीधपुरोहित ।

पडाडन, म स्त्री (हि पडा) तीधपुरोहित
भया पत्नी ।

पडाल, म पु, (गमिन पैल) दे मण्ण ।

पडिन, म पु (म) दुध, कोविद प्रश्न,
विदम (पु) २ मण्डा । वि, पानिन्,
बुद्धिम् २ चतुर, दक्ष ३ सम्पुत्र ।

पडिना, म स्त्री (स) विदुषी, बुद्धिमयी नारी ।

पडिनाई, म स्त्री, दे 'पात्ति' ।

पडिनाऊ, वि (हि पत्ति) पडिनमहाण,
तुल्य-मदय ।

पडिनामी, म स्त्री (हि पत्ति) पडिन
कोविद पत्नी यावा २ मण्डापी, दिनोत्तमा ।

पडुक, म पु (स पाडु) कपोतनातीय
यगमेद, पाडु, मूर ।

पथ, म पु (म पथि) यन्, वल्म (न)
२ सम्प्रदाय, मन, धनमा ३ रीति
(स्त्री) ।

पथी, म पु (हि पथ) पथिर, यानि
२ माप्रदायिर मनवन्दिन् ।

पैवाडा, म पु (म प्रवाद) आख्यान वृद्ध
विस्तृत कथा, अविरर वृत्तम् ।

पमारी, म पु (म पण्यमालिन्) औषध
निविदयिन १ पण्यमालिन् ।

पसेरी, म स्त्री (म पच + सेर) पचमरी,
पचसेटरी ।

पकड, म स्त्री (स प्रहृष्ट) ग्रह ह
ध(ध)रण, ग्रमन, आरन्त २ मल्लबाड, मुद्ध
३ शोणवेग, अक्षेप, अपत्ति (स्त्री) ।

—पकड, म स्त्री, निरोधमेवौ, ग्रहणधरणे
(दोनों दि) ।

पकडना, कि स (म प्रहृष्ट) ग्रह (क
प मे), धृ (म्वा प ज, चु), आदा
(जु आ ज), अवलव (म्वा आ मे),
परगुस् (तु प अ) २ निम्ध (क उ
अ), आमिध (म्वा प मे), दध (क प
अ) ३ अस्त (प्रे), लव (म्वा आ मे,
चु), पथार् आत्य भक्तिन् (म्वा प से),
पथार् आमिन् (तु प से) ४ निवृत्तम
(प्रे), स्थिरीकृ ५ अन्विष (दि प से),
अनुमथा (जु उ अ) ६ अन् (म्वा
आ से), अक्रि (म्वा प मे) । स पु,
दे 'पडट' ।

पकडनेवाला, स पु, ग्रहातृ धनुधारयिन्
(पु) निरोधन, आवेष्ट २ ।

पकडवाना, पकडना, कि प्रे, व 'पचन्त'
के प्रे रूप ।

पकडा हुआ, वि, गृहीत, धृत, निरुद्ध, ग्रस्त ।

पकना, कि अ (म पच) १ पच आश्री
(कम), मिष (दि प अ) २ भाक प्रवृ
(म्वा प से), पाकोमुख (वि) मू ।
(केशा) धवली शुक्ली मू ।

पञ्चवाङ्, न स्त्री (हि पञ्चवाना) पाचन,
मूल्यभूति (स्त्री) ।

पञ्चान, न पु (स पञ्चान दे) ।

पञ्चाङ्ग, न स्त्री दे पञ्चवाङ् = पाचन पञ्च,
दे पञ्च ।

पञ्चान्ता, त्रि स्त्री (हि पञ्चाना) पञ्च (स्वा
प अ) श्री (क उ अ) आ (अ ए
अ, उ अपदानि) (अण्) मन्त्र अधव
मिध (द्वे साधरति)

पञ्चाने योग्य, वि पञ्चान, आनन्व, श्रेतः ।

पञ्चानेवाहा म पु पाचक, मृद वल्लव ।

पञ्चमाहुभा, वि पञ्च, पाचिन्, माधिन,
नक्कुन, आण ।

पञ्चाव, न पु (हि पञ्च) पञ्चन, पञ्च
२ (अगादीन्) रूपयत्, परि, पार ।

पञ्चाहुभा, वि, पञ्च निद्र, आण, शून ।

पञ्को(की)वा, न पु (हि पञ्को) पञ्च
पौट ।

पञ्को(की)वी, स स्त्री (स पञ्चवटी) पञ्च
वतिना ।

पञ्का, वि (स पञ्च) सु परि, पञ्च, परिणत,
पञ्चतामापन = ओड, मिद्र, परि-पूर्व
४ सत्त्व, ५ शोधिन ४ पञ्च, आण, शून
५ अनुभवित्, बहुदर्शित् ६ दक्ष, निपुण
७ दृढ, स्थिर ८ निश्चित, प्रुष ९ अमागित,
प्रमाणमिद्र ।

पञ्क, वि (स) दे 'पञ्का' (१, ३ ४) ।

पञ्काम, न पु (स न) मन्त्रनिद्र शून,
अशून ।

पञ्काशय, न पु (स) नाभ्यभोग, लव
वारमिरी भाग ।

पञ्क, म पु (स) पञ्चार्थ-श्व, पञ्चार्थ-भा,
हुनि (पु) २ दे 'पञ्क' ३ दल गार, भव
४ अद्वैत, मायाई ५ मदापन, मन्त्रि
(पु) ६ मृद ७ मन्त्र, निचर ।

उत्तर—, म पु (स) सिद्धान्त, कृतान्त,
समाधि (पु) ।

पूर्व—, म पु (स) ज्ञानोपपदन, सिद्धान्त
विद्वद्वीर्य (स्त्री), शीघ्र, देव्य, क्विरा ।

पञ्कर, म ॥ (स) गुप्तचोर, द्वारदार
(स्त्री) २ पादव श्व, पञ्चमाग ३ सहाय
सहायक ।

पञ्कति, म स्त्री (स) पञ्चवान, शून्य,
शून्य प्रथमविधि (स्त्री), प्रतिपदा, प्रति
पदी ।

पञ्कवात, म पु (स) पञ्चवातिन, अमन,
दृष्टि रुद्रि (स्त्री), अनमता ।

पञ्करात्री, न पु (स तित्) पञ्च, पञ्चपर
पञ्चवदित्, मपञ्च, पञ्चिन् ।

पञ्कात, म पु (स) अमात्रमा २ पूर्णमा ।

पञ्काघात, म पु (स) पञ्चघात, जाडघ
रुम, माद्र ।

पञ्किलो, न स्त्री (स) पञ्किली, पञ्किली,
गत्तमी बन्नि, नै-न, नीनोडवा ।

पञ्कार, म पु (स पञ्किल) विद्या, विद्या
गम, द्या, शकुन वि (पु), शकुन नि
(पु) द्विन्, पञ्किल, पञ्किल, अङ्ग,
बन्नि वि (पु), पञ्किल (पु), गत्तम
(पु), पञ्किल, पञ्किल गम २ पञ्किल, पञ्क
पञ्किल ।

पञ्क, म पु (स पञ्क >) पञ्क, विद्या
२ दोष, हुनि (स्त्री) ३ विन प्रतिपदा ।

पञ्कवाराहा, म पु (स पञ्क + वार >)
हुनि शून्य ॥ पञ्क २ अद्वैत, म माद्र ।

पञ्कराना, त्रि स (स पञ्करान) दे 'पञ्क' ।

पञ्कवत्त, न स्त्री (स पञ्कवत्त >) पञ्क
भेद, पञ्कवत्त ।

पञ्किल, न पु (स पञ्किल (पु)) दे 'पञ्क' ।

पञ्किली, न स्त्री (स पञ्क >) अमात्रि
(न) अनुपपन्नमिध (पु) ।

पञ्क, म पु (स पञ्क) पञ्क, पञ्क, चदल ग
२ पञ्क, कम ३ पादपञ्क, चरणपञ्क ।

—पञ्किली, म स्त्री, पञ्क, पञ्किली (स्त्री)
पञ्किली, पञ्किली ।

पञ्किली, म स्त्री (स पञ्क) पञ्किली, प
पञ्किली, पञ्किली, पञ्किली, पञ्किली ।

—पञ्किली, त्रि स, पञ्किली परिभा (पु)
२ पञ्क (पु प अ) ।

—पञ्किली, मु. लू. क. अपञ्किली (द्वे) ।

—पञ्किली, मु. द. 'पञ्किली' उपायना
२ पञ्किली (स्वा प स), पञ्किली
(स्वा उ अ) ।

—पञ्किली, मु. सौहार्द स्था (द्वे म्पदपदानि) ।

पगना, त्रि अ (स पञ्क >) रमन मपु

पट्टाडना, क्रि म (हि पट्टाड) जननि पट
(प्र) ० (गन्धु) परानि (स्वा जा अ) ।
पट्टाडी, स स्त्री दे पिडाडी ।

पट्टाया, = प (पा) इष्टाया ।

पट्ट, स पु (न) वस्त्र, वसन, सुवस्त्र २
निरस्तरिणी व्यवधान प्रतिमारा ३ चित्रपट
४ धातुमय पत्र पट्ट पट्टिका ।

—खोलना, क्रि स निरस्तरिणी अपस
विचल । (प्रे)

—मकप—पास, स पु (म) दे 'तव' ।

पट्ट, क्रि वि (चट्ट वा अनु) झटिति, सपदि ।
पट्ट (अनु) पतन-ताडन, ध्वनि (पु),
पतिनि ।

पट्ट, स पु (देश) ऊक (पु) । वि, अधो
मुग, अधोत्तर, अवमूर्द्धक्ष्य ।

पट्ट, स पु (म पट्ट) कपा(ता)ट्ट-टीट
हार, हार (स्त्री) ।

—खोलना—बद करना, क्रि स, दे 'हार' ।
पट्टकना, क्रि स (अनु पट्टक) उत्थाप्य भूमौ
रमसा नि-अव पट्ट (प्रे) २ बाहुयुद्धे प्रति
द्वन्द्विनि जि (स्वा प अ) ।

पट्टकनी, म स्त्री (हि पट्टकना) रमसा अध
नि अव पात पतनम् ।

—देना, क्रि म, दे 'पट्टकना' ।

पट्ट(ट्ट)का, स पु (स पट्टन >) परिकर,
पति, वपनी-वलयम् ।

—बाँधना, ॥ परिवार वष् (कृ प अ),
उपन-मन्त्रज (वि) भू ।

पट्टधार, स पु (स) चौर, स्तेन । न,
नागवस्त्रम् ।

पट्टडारा, म पु (म पट्ट-ट्ट) काष्ठ-दार,
फलक फल २ काष्ठ-दार, पीठम् ।

—कर देना, मु, निर्वली नि मत्वी कृ ० अव
जन्-मद् (प्रे) उच्छिद् (कृ प अ) ।

पट्टाडी, म स्त्री (हि पट्टाडा) पट्टक-व
२ पट्टिका ३ पत्रा, चरण्यादि (स्त्री),
पाद चरण पत्र ।

पट्टना, मं पुं (मं पट्टन >) कुशुमपुरं, पुष्प
पुर, पादनिपुत्रम् ।

पट्टना, क्रि अ (हि पट्ट = भूमि की सतह के
बराबर) मानमा एतद् (कर्म), आ मं वृ
(कर्म) २ व्याप् आस्तु (कर्म) ३ वृ प

(कर्म) १ जाग्रमपूर् (कर्म) ४ निच
(कर्म) ५ समर् (नि आ अ), परविस्ती
मू ६ ज्ञाना-मु (कर्म) ।

पट्टपट्ट, म स्त्री (अनु) पट्टपट्टाशब्द, पट्टप
ध्वनि (पु) । न वि, मपट्टपट्टाशब्दम् ।

पट्टगानी, म स्त्री (म पट्टगानी) पट्ट, देवी
महिषी रात्र, महिषी ।

पट्टल, न प (स न) -दिम् (न) छदि
(स्त्री) २ प्रावरण, आभूषण ३ निरस्त्र
रिणी, व्यवधान ४ आभूषण, फलक-क ५
दृष्टेराचार ६ संभूत, पट्टणी ७ अध्याय,
परिच्छेद ८ चय, राशि (पु) ९ परि
च्छेद १० निलका-क ११ दे 'मोदियादि' ।

पट्टना, म पु (म पट्ट + हि दाहा) *पट्टवाह,
*पट्टहार ।

पट्टकाना, क्रि प्रे, व 'पट्टना' के प्रे रूप ।

पट्टवारगरी, म स्त्री (हि पट्टवारी + का
गरी) ग्रामभूलेखम् २ ग्रामभूलेखपदम् ।

पट्टवारी, मं पु (मं पट्ट + हि वार) *ग्राम
भूलेखम् ।

पट्टसन, म पु (म पाट + क्षण >) क्षण,
अनमी, समणी ।

पट्टह, म पु (स) दुडुनि (पु), भेरी,
पणव ।

पट्टहार, म पु, दे 'पट्टना' ।

पट्टा, म पु (स पट्ट ह) काष्ठ पट्टपीठ
२ मिथ्यातन्त्र ३ लुपट, दट ।

पट्टाई, म स्त्री (हि पट्टना) पट्टन आच्छा
दनम् २ पट्टलाच्छादनभूति (स्त्री) ।

पट्टारु, म स्त्री (अनु) तारध्वनि (पु),
महा, सन्ध नाद ।

पट्टाया पार, म पु (अनु पट्टारु) अग्निमोद
नरभद, *पट्टार ।

पट्टाक्षेप, म पु (म) खनिश खनिश २
अग्नी निपात अवपात ।

पट्टाना, क्रि म, व 'पट्टाना' के प्रे रूप ।

पट्टापट्ट, क्रि वि (अनु पट्ट) मपट्टपट्टाशब्दम् ।
म स्त्री, पट्टपट्टाशब्द ।

पट्ट, वि (मं) कुशल तन्त्र निपुण, प्रवीण,
निष्णात, विगार, विदग्ध ।

पट्टता, म स्त्री (सं) कौशल-व्य, दक्षता,

नेपुण्यंण, प्रावीण्य, वैचक्षण्य, पटुत्व, वैद
रूपम् ।

पट्टेबाज, म पु (हि + बा) सन्नाभ्यानि,
'मध्यमिवोष' ।

पटेल, म पु (हि पट्टा) ग्रामणी (पु),
ग्रामाध्यक्ष ० दक्षिणभारतवर्षे उपाधिभेद ।

पटोर-ल, म पु (स पटोल) लताराज
अमृत(ता)कटुनाम, फल, कुष्ठानि (पु),
जालमरुत ।

पट्ट, स पु (स पु न) पीठ ठी, उप ग्रामन
२ पट्टिका ३ धातुमय, पत्र पट्टिका ४ चर्मन्
(न) कलक ५ पणपापान, शिला
६ उष्णीष ७ व्रण, बन्धन आवेष्टन ८
उत्तरीय ९ नार १० चतुःपथ-श्च, शृंगारक
११ राज, मिहासने १२ कौटोय १३ दण
१४ दे 'पट्टा' ।

पट्टन, म पु (स न) पत्तनं, पुर, नगर
० महानगरम् ।

पट्टा, म पु (स पट्ट) पट्टोल्लस, आविहित
कालाद् भूम्यभिरारपन २ (बुक्कुरादीना)
ग्रंथ ग्रंथापट ३ वेष्ट, पाठ-कल्प ४ पाठ
५ चर्ममय, कठिबधना परिका ६ दे 'वध
राम' ७ सटगभेद ८ अधिकारपत्रम् ।

पट्टे पर दाने कि म, आविहितभग्न
निरूपितमूल्येन दा अथवा निम्न (तु
प अ) ।

पट्टी, स स्त्री (स पट्टिका) वाष्ट, पट्टिका
० पाठ, प्रपाठन, ३ शिक्षा, उपदेश
४ वचनारमकोपदेश, ५ (वस्त्रादिरस्य)
दीर्घ, नरद शकल ६ व्रण, बन्धन आवेष्टन ७
० नपावेष्टन ८ और्गपत्रभेद, पट्टी ९ पक्ति
नति (स्त्री) १० प्रमाथिता वेष्ट ११
रिक्तभग्न १२ सटगया पत्र, वाष्ट-दट
१३ निष्ट भ्रमेद ।

—पट्टेयना, कि स, पट्टिका वध (क् प अ)
व्रण भाव-८ (तु) ।

—दार, म पु (हि + का) अक्षिन्, भग्न
द्राक्षिन् ।

—दारा, स स्त्री (हि + का) अक्षित्,
भागद्राक्षित्वम् ।

पट्टी, स स्त्री (स) अक्षवक्षोन्धनञ्जु (स्त्री),
कड्या, नट प्री २ ललायभूषा ३ यत्रकम् ।

पट्ट, म पु (हि पट्टी) और्गपत्रभेद,
नाशार ।

पट्ट, म पु (स पुट्ट) तण्ण, युवक,
युवन्, कुमारक २ गाव, पीन, टिम
३ मल्ल, वाटुयोष भिन् ४ दीपस्थूलपत्र
५ रजसा, स्नायु (स्त्री), पेरी ।

पठक, म पु (स) पाठक, वाचक ।

पठन, म पु (स न) अध्ययनं, पाठ,
अधीति (स्त्री), वाचन २ श्रावणं, उच्चारणम् ।

—पाठन, स पु (स न) अध्ययनाध्या
पनने (हि) ।

पठनीय, वि (स) पठितव्य, अध्येतव्य,
पाठ्य, वाचनीय, पठन अध्ययन, अर्ह ।

पठान, म पु (पठती पुस्ताना) यवननाति-
भेद, *रत्नान् *पठान ।

पठानी, स स्त्री (हि पठान) पम्पूनी,
पठानी २ पठानत्व, परपूतत्वम् ।

पठार, स पु (स प्रसार >) अपिस्थका,
० प्रसार ।

पठावनी, स स्त्री (स प्रस्थापनम्) प्रपण,
प्रतिनि (स्त्री) ० प्रस्थापनभूमि । (स्त्री) ।

पठित, (हि स) अधान, वापित २ आविन्
३ साक्षर, विद्यावान्, विद्वन् ।

पठ्यती (त्री), स स्त्री दे 'परछती' ।

पडताल, म स्त्री (स परितील्लन >) अनु-
मथान, अवेषण २ अन्वीक्षण, विमर्श,
निरूपणम् ।

—करना, कि स, अनुमथा (जु उ अ),
अविष् (दि प से) २ विमृश (तु प
अ), निरूप (जु), अनुपरि रश् (स्त्री
आ से) ।

पडतालना, कि म, दे 'पडताल करना' ।

पडती, म स्त्री (हि पडना) अकृण् महत्त्व,
भूमि (स्त्री) ।

पडदादा, म पु (स प्र + दाद >) प्रथिता
मह ।

पडदादा, म स्त्री (हि पडदादा) प्रथिता
महो ।

पडना, कि अ (स पनत्) अवनि, पत्
(स्त्री प मे), अक्ष-मस् (स्त्री आ से),
च्यु (स्त्री आ अ) २ पट्ट-च्यु (स्त्री आ
से) आसपय प्रमन (कर्म) सञ्चुत्, स

ममाप (दि आ अ) ३ मविश् (तु प अ), विशम् (दि प से) शी (अ आ स), स्वप् (ज प अ) ४ रुग्ण (वि) वृद् रोगेण अनिम् (कर्म) ५ प्रविश् (प प अ)।

क्या पदा है, गोष्ठ, कि प्रयोजनम्।

पङ्गाना, स पु (सं प्र-दे नाना) प्रमाणा मह।

पङ्गानी, स स्त्री (हि पङ्गाना) प्रमाणा महां।

पङ्ग(र)वा म स्त्री, दे 'प्रतिपदा'।

पङ्गवाल, म पु, दे 'परवाल'।

पङ्गाव, म पु (हि पङ्गना) प्रयाणभग, निवेश अवस्थिति (स्त्री) २ निवेश विश्राम, स्थानम्।

पङ्गोम, म पु (स प्रतिवास या प्रतिवेश) निरुद-ममीप-मनिहित, देश, मनिवि (पु), २ सानिध्य प्रातिवेशम्।

पङ्गोसी, म पु (हि पङ्गोम) प्रतिवेश इय शिन्, प्रतिवासिन्, प्रातिवेशिक, [पङ्गो सिन (स्त्री) -प्रति, वैशिनी-वामिनी २]।

पङ्गना, कि स (म पङ्गन) पट् (भ्वा प से), हरिद् (अ आ अ), (अपने आप पङ्गना) अट्ठवच् (प्रे) २ वच् (प्रे), उक्त् (प्रे) २ अभ्यस् (दि प से), आहृन् (प्रे)। म पु तथा भाव, पाठ, पठन, अध्ययन, वाचन, उच्चारण, अभ्यसन, अभ्यास, आदर्शन, श्रावणम्।

—लिखना, म पु, पाठलेखी पठनलघने, विद्याभ्यास, शिक्षा।

पङ्गनेयोग्य, वि, दे 'पठनीय'।

पङ्गनेवाला, म पु, अत्येव पठितृ (पु) वाचक, पाठक, अधीयान [अत्येजी, पठित्री, पाठिरा (स्त्री)]।

पङ्गा हुआ, वि, दे 'पठित'।

पङ्गवाना, कि प्रे, अ 'पङ्गना' के प्रे रूप।

पङ्गा, वि (म पठित, दे)।

—लिखा, वि, विद्म्, उपात्तविन, मक्षर, शिक्षित, स्युत्पन्न।

पङ्गाई, म स्त्री (हि पङ्गना) दे 'पङ्गना' सं पु १२ अ-यापन, पाठन, शिक्षण ३ अध्या

पन, शैली रानि (स्त्री) ४ अध्ययन अध्यापन, श्रुत-वेतनम्।

पङ्गाना, कि म (हि पङ्गना) पठशिम् (प्रे), अधिर (प्रे अध्यापयति), शाम (अ प से), उपदिश (तु प अ)। स पु तथा भाव, अध्यापन, उपदेश, शिक्षा क्षण, पाठनम्।

पङ्गानेवाला, स पु, अध्यापक, शिक्षक, गुरु, उपदेष्टृ शान्त (पु)।

पण, म पु (स) वत, देवन, दुरोदर, कैतव २ गृह (घन) ३ मूल्य, निवेश ४ शुल्क स्क, प्रतिफल ५ धन, रिक्त ६ पणितव्य, विक्रयवस्तु (न) ७ व्यवसाय, व्यवहार ८ सुनि (स्त्री) ९ सुष्ठिमान १० (पैसा) ताग्रमुद्राभेद, पणमुद्रा।

पतगा, स पु (स >) पयचिन्न ना, चिन्ना भाम, पतग २ सूर्य ३ पग ४ शलम १ —उठाना, कि स, पनचिल्ल पतग उठरी (प्रे उडुययति)।

—वाह, स पु, पतगोद्धानक।

—वाङ्गी, स स्त्री, पतगक्रीडा।

पतगा, स पु (म पतग) शलम २ स्थुलिग, अनिकण।

पतजलि, म पु (सं) मोगदशनकारकपि विशेष २ महामास्यकारो मुनिविशेष।

पत, म पु (स पति) भर्तृ, धव २ प्रभु, स्वामिन्।

पत, न स्त्री (म प्रत्यय >) प्रतिष्ठा, गौरव, मान, वशम (न) कीर्ति (स्त्री)।

—उतारना वा लेना, मु, अप भव मन् (प्र), उप (प्रे दुपर्वी)।

—रटना, कि स, गौरव रक्ष (भ्वा प से)।

पतझड़, सं श्री (स पत्र-हि शङ्कना) शिशिर, शिशिरतुं (पु) (माघफाल्गुन म-पौ) २ अवनतिराल, मरुदमथ समय।

पतव्यकर्ष, म पु (स) काल्यदोषभेद (सा०)।

पतत्र, स पु (स न) पत्र, पत्र, पत्र २ पान, बहज, सुयर्थ, बाढ़।

पतत्रि, म पु (म) वक्षिन्, पत्रिन्, पत्रिन्, राग, विहग।

पतन, म पु (म न) अव नि-अप, पान,

पत्र म पु (म न) पर्ण छदन, पलाश,
दल ल उद - (पुष्परादीना) पत्र, पर्ण,
पृष्ठ ३ समाचार-वृत्त पत्र ४ मदेश, पत्र,
लेखक ५ लेखपत्र ६ (भावादे पट्ट ८,
पल्लव-मम्)

—कार, म पु (स) वृत्तपत्र लेखक संपादक ।

—वाहक, म पु (म) लेखहार, सदेशहार ।

—स्थवहार, म पु (सं) पत्रविनिमय,
लेखव्यवहार ।

पत्राचम, सं पु (स न) मशीनी-सौ, मशि,
वि नि (सव (स्त्री)) ।

पत्रा, स पु (म पत्र >) पत्राग, पत्रिका
२ पृष्ठ, पर्ण, पत्रम् ।

पत्राचार, स पु (स), पत्र, स्थवहार
विनिमय ।

पत्रावलि, सं स्त्री (स) पर्ण-दल उद-श्रेणी
राणी-आवली २ पत्रभग ।

पत्रिका, स स्त्री (स) सदेश पत्र २ साम-
यिक, पुस्तक ग्रन्थ ३, समाचार वृत्त, पत्र
४ लुल्लेख ।

पत्री, म स्त्री (से) लिपिपत्रिका, लुल्लेख
२ मदेश, पत्रम् ।

पत्रम्—, सं स्त्री (म) जन्मपत्रिका ।

पथ, सं पु (स) पथिक (पु), मार्ग,
अध्वन् (पु), धर्मन् (न), पदवीति
(स्त्री) २ रीति (स्त्री), विधानम् ।

—गामी, स पु दे 'पथिक' ।

—(प्र)दर्शक, म पु (म) मार्ग, दल्लक उप-
देशक, नेत्र, नायक ।

पथरी, म स्त्री (हि पथर) प्रस्तर-खोरा-
रिका २ अश्मरी, अश्मरी रं ३ अष्टीना
(स्त्री बहु), पापलग्नकला (पु बहु)
४ दे 'मर्मर' ५ पश्चिमतर ६ श मर-
शाणी ।

पथरीला, वि (हि पथर) प्रस्तर-उपल,
मकुल आकीर्ण-बहुल ।

पथिक, म पु (म) अध्वग, अध्वनीन,
अध्वय, पाथ, पथिल, यात्रि(न्)क,
यात्रि-गण (पु), पथर ।

पथ्य, सं पु (स न) उपयुक्ताहार ।
२ मर्मरम् । वि, स्वास्थ्यर, आरोग्यावह ।

पद, स पु (सं न) पाद, चरण, अग्र

(पु) २ पाद पत्र विह मृग ३ पत्र, पद
पाद-याम विशेष, वि, नम, ४ स्थान,
स्थिति (स्त्री), पदवी ५ वृत्ति (स्त्री),
अवसाय ५ पथ, छदन (न) ६ पद्यपाद,
छन्दश्चरण ७ उपाधि (पु) मानपद
८ सुसिद्धन्त प्रातिपदिक, मविमलिक शब्द
(न्या) ९ मकिगीति (स्त्री) १० नि श्रे-
यम, मुक्ति (स्त्री) ।

—चर, म पु (म) पदग, पदानि-
ति (पु) ।

—छन्द, म पु (म) मधिममानुसुक्तवाक्य
स्थ पदाना विभाग (न्या) ।

—च्युत, वि (स) अष्टाधिकार, अधि-
कारच्युत ।

—छलित, वि (म) पादपद, भाजान
भाजन २ अपरापत, अवपीणित ।

पदक, सं पु (म न) कीर्तिप्रतिष्ठा, मुद्रा ।

पदवी, म स्त्री (म) पद, वृत्ति स्थिति,
(स्त्री) स्थान २ उपाधि (पु), उपमान,
पद, कीर्तनिक ३ मार्ग ४ रीति (स्त्री) ।

पदार्ति, म पु (म) प(पा)दातिर, पदिक,
पत्ति (पु) प(पा)दय, प(पा)दात् (पु),
पादात् ।

पदाना, कि म न 'पदना' के प्रे रूप ।

पदार्थ, म पु (म) मूल, द्रव्य, वस्तु (न),
अर्थ २ शब्दार्थ ३ धर्मार्थममोपा
४ द्रव्यगुणरमादय प्रमेयविषया (दर्शन) ।

—विज्ञान म पु (म न) विज्ञान भोजन
शब्दम् ।

पदार्पण, म पु (म न) उरणापण, पादन्य
मन, शुभगणनम् ।

पदचिह्न, म स्त्री (म) शब्दश्रेणी २ गीत
मयद ।

पद्विनि, म स्त्री (म) मार्ग, पथ, पथिक
२ पथि वनि (स्त्री) ३ रीति (स्त्री),
परिपाटीटि (स्त्री) ४ प्रसार, रिधा ५
मन्त्रारविशिष्टशरीर-ग्रन्थ ।

पद्विहि, म स्त्री (म पद्विहि) मारिरमन
भेद (मा०) प्रतिरक्षण १६ मात्रा, अन्न म
नगण, उ० नम रीति मयन लममय विन्याम ।
पद अटन वक्त्र शब्दनाम् ।]

पद्य, म पु (म न) सरान, पुत्रीन, दे

परीहा, स पु (देश) चातक मेघजीवन,
सदर, स्तोत्रक ।

परीता, स पु (देश) रघुवैण्ड, महापद्मा
द्वल २ पीपीकर, क्रीडनकभेद ।

परीहा, स पु (अनु) दे 'चानर' ।

परीया, स पु (अनु) चातक २ पीपीकर,
क्रीडनकभेद ३ आमवृक्षक ।

पपोटा, स पु (स प्रपट >) दे 'पलक' ।

पल्लिक, स स्त्री (अ) लोता, जनता,
जना । वि, मार्ग, जनिक नवीन लौकिक ।

—प्रासिक्युटर, स पु (अ) राजकीय
प्राभियोवत ।

—नक्सं डिपार्टमेंट, स पु (अ) लोक
निर्माणविभाग ।

पल्लिहार, स पु (अ) पुरतव ग्रथ, प्रकाशक ।
दे 'प्रकाशक' ।

पय, स पु [स पयस (न)] दुग्ध, क्षीर
२ जल ३ अन्नम् ।

पयस्विनी, स स्त्री (स) क्षारिणी दोग्धी,
दुग्धदा, दुधा ।

पयाळ, स पु (स पयाळ >) निष्कण्ट,
निश्शब्दो धान्यनाम् ।

पयोज, स पु (स न) मरोच, पद्म, दे
'कमल' ।

पयोद, स पु (स) मेघ, दे 'बादल' ।

पयोधर, स पु (स) कुच, लीम्बन
२ ऊपस् (न), आपोत ३ मर ।

पयोधि, } स पु (स) मागर, समुद्र ।
पयोनिधि, }

परंच, अन्य (स पर + च) अपर च, अपि
च, अथ च २ तथापि, किन्तु, परंतु ।

परतप, वि (स) अरिमर्दन, रिपुमर्दन ।

परंतु, अन्य (स पर + तु) किंतु, पर,
तथापि ।

परपरा, स स्त्री (स) अनु, क्रम, जानपू
वीज्य, पूर्वांशक्रम २ मगान, सतति (स्त्री)
३ परिप्राप्ति (स्त्री) प्रथा ।

—गत, वि (स) परदरीण, माप्रदाविन
पौराणिक [स्त्री (स्त्री)], क्रम, आमन प्राप्त ।

पर, वि (स) अपर, अन्य, दतर, स्वार्थिक,
आत्मभित्त २ परपीय, अन्यदोष, अन्य, पर
(समापारम्भ में), अन्यम्, परम् ३. दर,

दर, स्वार्थिक, विप्रकृष्ट ४ अपर, उत्तर,
उत्तरकालीन, पाश्चात्य ५ अतिरिक्त, भित्त
६ उत्तम, मेष्ठ ७ लीन, मग्न, परायण । (उ
स्वार्थपर-स्वार्थमग्न) । स पु (स) दातु
अरि (पु) ।

पर, अन्य (स पर) तदनु, तत, तत्पर्याय
२ परंतु किंतु, तथापि ।

पर, प्रत्य (स उपरि) प्राय सप्तमी विभक्ति
से (उ कुर्मी पर-भ्रामद्याम्) अपि,
उपरिष्टात्, ।

पर, स पु (का) पशु, गहत् (पु) वाज ।

—द्वार, वि मपशु, वाजिन्, पशिन्, गहत्भव ।

—कट जाना, मु, अशक्त प्रमथ्य (वि) भू ।

—न मारना, मु, गन्तु न शक (स्वा प अ) ।

—निकलना, मु, दृष्ट (दि प अ), गन्
(स्वा प से) प्रगल्भ (स्वा आ से) ।

परकर, स पु (का) ।

परकीय, वि (सं) दे 'पर' (२) ।

परकीया, स स्त्री (स) नापिकाभेद, पर
पुरुषानुरागिणी ।

परकोण, स पु (स परिकृ >) प्राकार,
वप्र प्र, माल, वरण ।

परम्ब, स स्त्री (स परीमा) विमश, मृधम,
निरूपण परीक्षणजनन २ विवेक विचारणा
परिच्छेद ।

परखना, कि स (स पराक्षण) परीक्ष
(स्वा आ से) विमृश (स प अ)
२ विविध (रु उ अ), विच-विच (पु
उ अ), परिच्छिद् (रु प अ) । स पु,
दे 'परल' ।

परखनेवाला, स पु, दे 'परीक्षक' ।

परम्बा हुआ, वि, दे 'परीक्षित' ।

परमना, स पु (का) उग्रमण्डविभाग,
ग्रामममूह, परिगण ।

परमदानी, स स्त्री (स प्रमदण >) नृवर्ण
कारणा जालाकार उपकरणभेद, प्रमदणी ।

परचना, कि अ (स परिचयन) परिचि
(स्वा उ अ), सुपरिचित (वि) भू, रूढ
बद्ध, मन्व्य-मौदद (वि) भू ।

परचा, स पु (का) (पराशाया) प्रश्न-
पत्र २ संदेश, पत्र ३ पत्रसद-जम् ।

परचाना, वि म, व 'परचना' के प्रे. रूप ।

परमार्थी वि (स विन्) तत्त्वज्ञानामित्यादिन्
२ मुमुक्षु, मोक्षेच्छुक ।

परमेश्वर, स पु (स) दे 'परमात्मा'
२ विष्णु ३ शिव ।

परला, वि (स पर) पर, परस्थ, परवर्तिन्,
२ अनन्तर निरन्तराल ३ दूर, दूरस्थवर्तिन् ।

परलोक, स पु (स) लोकान्तर २ देहांतर
प्राप्ति (स्त्री), प्रेत्यभावा, पुनज मनु (न) ।

—गमन, स पु (स न) घटयु (पु) निधनम् ।

—वासी, वि (स सिन्) मृत, विपन्न,
दिवगता स्वर्गिन् ।

—सिधारणा, मु, दिव-स्वर्गं धनत्व गम् ।

परवरदिगार, स पु (का) पालक २ ईश्वर ।

परवरिण, स स्त्री (का) पालन, पोषण
भरणम् ।

—करना, क्रि म, परि प्राप्ति पा (प्रे पाल
यति) सङ्घ परिपुष (प्रे) ।

परवल, स पु (म पडोल्) दे 'पत्नैर' ।

परवश इय, वि (स) दे 'परमज' ।

परवशाता, स स्त्री (सं) दे 'परतन्ता' ।

परवा^१, स स्त्री (क) आशया विना,
व्यग्रता, उद्वेग २ आशय, अवलम्ब ।

परवा^२, स स्त्री (स प्रतिपदा' दे०)

परवाङ्ग, स स्त्री (का) उट्पन्न, उपवन,
सै क्लिप्तपक्ष २ गङ्ग, ज्वलन् ।

परवानगी, सं स्त्री (का) अनुमति (स्त्री),
अनुज्ञा ।

परवाना, सं पु (का) आज्ञा ग्रामन अनुज्ञा
पत्र २ पत्रग शल्भ, दीपग्राह्य (पु) ।

—राहदारी, स पु दे 'धामपा' ।

परवाल, स पु (म पर+वाल >) वस
प्रकोट ।

परशु, सं पु (स) पशु (पु) परश्च
पथं कुठार ।

—राम, सं पु (म) भागव, जामदग्न्य,
पशुराम ।

परसा, सं पु, दे 'परशु' ।

परताल, स पु (सं पर+का साल)
(विछल) गतवर्ष परशु (अव्य) २ (आगामी)
उत्तर-पर-आगामि वर्षम् । किं वि, परम्,
गतवर्ष २ आगामि, नत्परेवर्षे ।

परसौ, किं वि [स परश (अव्य)] २
परदिन २ ॥ पूर्वदिनम् ।

परम्पर, किं वि (स परस्पर) अन्योन्य,
इतरेतर, मिथ (मव अव्य) ।

—का, वि, परम्परस्य अन्योऽयस्य इतरेतरस्य
(केवल एववचन में), परम्पर, अन्योन्य,
इतरेतर, मिथ ।

परहित, स पु (मं न) दे 'परोपकार' ।

परहेज, स पु (का) कुपय्यत्याग, पय्य
सेवन, मित, अशन पान, आहार-पानाशन,
नियम २ मयम, जितेन्द्रियता, दोष-मुक्त्यं,
त्याग ।

—करण, किं स, कुपय्यं स्यन् (श्वा प
अ), २ दोषान् परि वि-वजं (चु) ।

—हार, स पु (का) कुपय्यत्यागिन्, सब
ताहार २ मयमिन्, जितेन्द्रिय ।

—गारी, सं स्त्री (का) दे 'परहेज' (१-२) ।

परौटा, स पु (हि पण्डता ?) करम घृत
गर्भ, रोटिका, परोट ।

परात, स पु (म) मृत्यु, निधनम् ।

—काल, स पु (स) मृत्युमय २ मुमुक्षुणा
देहत्यागकाल ।

परा^१, स स्त्री (मं) ब्रह्म-उपनिषद्, विद्या ।

वि स्त्री (म) परवर्तिनी दूरस्था २ भेदा ।

परा^२, स पु (का पर-परा ?) पक्षि-सति
(स्त्री) ।

पराकाष्ट, स स्त्री (स) अनिभूमि परा
कोटि (स्त्री), चरममीमा, परमावधि (पु),
अव्ययता ।

पराक्रम, स पु (मं) वीर्य, शीर्ष, विजय,
वीर्य, ओजस्-महत् परम (न), रणोत्साह ।

पराक्रमी, वि (सं दिन्) वीर, शूर, विज
मिन्, विजान्, वीरै विक्रम, जालिन्, माहमिन्
[वी (स्त्री)], तेजस्विन् [नी (स्त्री)] ।

पराग, स पु (मं) पुष्प-कुसुम इति (स्त्री)-
रजम् (न) देषु (पु) २ रजम, धूलि
३ स्थानीयसुगन्धिचूर्णं ४ चंदन • कपूर-
रजम् ।

पराहमुख, वि (मं) विमुख, परानीन २
प्रतिहूल, विपरीत, विरक्त [पराह्मुखो
(स्त्री)] ।

पराजय, सं पु (मं) पराभव, हारीति,
(स्त्री) मंग ।

पराजित, वि (स) हारिन्, पराभूत, निर्-
वि, जित ।

परात, स भ्वा (न पात्र >) पारीत्रा ।

पराधीन, वि (म) रे 'परतत्र' ।

पराधीनता, स स्त्री (म) 'परतन्त्रता' ।

पराभव, स पु (स) दे 'पराजय' २ निर
स्कार, मानहानि (स्त्री) ३ विनाश ।

पराभूत, वि (स) दे पराजिन' २ तिरस्कृत
३ भवम्, नष्ट ।

परामर्श, स पु (स) विवेचन विचारणा,
वित्त, मंत्रणा २ उपदेश अनुशामनम् ।

परायण, वि (रा) लग्न, मग्न, प्रवृत्त पर,
निरत (प्रायः समाप्तान् मे उ धर्मपरायण=
धर्मपर इ) ।

पराया, वि पु (पर) दे 'पर' (२) ।

पराह, स पु [स परारि (अव्य)] धूवना
बत्सर, गतवृत्तीयवर्षं वर्षम् ।

पराहं, स पु (म न) शस्त्र-य, अष्टादशाक
वर्ती सरया (१००००००००००००००००) ।

पराधर, वि (स) पूर्वापर २ निवटदर ३
सर्वात्तम, सर्वश्रेष्ठ ।

परावर्त, स पु (स) (निणयादिवस्य) परा
मस्या, वृत्ति (स्त्री) वर्तनम् ।

—व्यवहार, म पु (स) अभियोगस्य निर्णयस्य वा पुनर्विचार ।

परावर्तन, स पु (म न) प्रतिनि निपरा-
प्रत्या, वृत्ति (स्त्री)-वर्तन, अप, क्रमण-संरण
यानम् ।

पराशर, स पु (स) व्यासपितृ ।

पराश्रय, स पु (स) अन्य पर, सश्रय-अव
लम्ब-अवलम्बन २ दे 'परतत्रता' ।

पराश्रित, वि (म) अन्य पर,सहित-अव
लविन २ दे 'परतत्र' ।

परासु, वि (भ) प्रेत-ज्ञान, मृत-ज्ञानम्,
परेत-ज्ञान, निष्ठावि-ज्ञान, प्रणीत-ज्ञानम् ।

परास्त, रि (स) दे 'पराजित' ।

पराह, स पु (स) अपराह, विवाह ।

परिदा, म ११ (फा) पञ्चिन्, पञ्चिन्, पञ्चिन्,
सग ।

परिकर, म पु (स) परिजन, अनुचरवग
२ वस्त्रिय, प्रगाढगात्रियावध ३ कुटुम्ब
४ समूह ५ अथात्कारभेद (सा) ।

परिकल्पित, वि (स) रचित, आविष्कृत २
वर्णित, उद्भावित ३ निश्चित ।

परिक्वमा, स स्त्री (स-म) प्रदक्षिण-गा-म,
(पूजार्थ) परिभ्रमणम् ।

—करना, किं स, परिक्रम (भ्वा प से, भ्वा आ अ), (पूजायै) परिभ्रम (भ्वा प से) प्रदक्षिणा कृ।

परिखा, स स्त्री (॥) स्वात, स्वेयम् ।

परिस्थात, वि (॥) निख्यात, विश्रुत ।

परिगणन, स पु (स न) सख्यान्, सम्यक्
गणनम् ।

परिगृहीत, वि (स) स्वीकृत, उदरीकृत २
प्राप्त, लब्ध २ अतर्भूत, समाविष्ट ।

परिग्रह, स पु (म) अदान, ग्रहण, प्रति
ग्रह ७ लब्धि प्राप्ति (स्त्री) ३ धनादि
सग्रह ४ स्त्री-भगा-वार ५ विवाह ६ पत्नी
७ परिजन, परिवार ८ परिवेष्टनम् ।

परिध, अ पु (स) परिघातन लोहमुसलगुड
२ परि, घात हनन ३ अर्गल कलाकी
४ मुद्गर ५ शूल ६ कलस ७ भवन
प्रतिबध, बाधा ।

परिचय, पु (म) परि, जान, अभिज्ञता,
बोध २ प्रमाण, उपपत्ति (स्त्री) ३ अभ्यास ।
परिचर, स पु (स्) अनुचर, सेवक, द्वे
'परिचारक' ।

परिचर्या, स स्त्री (स) सेवा, शुश्रूषा पणा,
उपस्थान, उपचार, उपासनम् ।

परिचायक, स पु (स) परिचयदायक,
पटि-अभि, शापक २ सूचक, चोतक, बोधक,
निर्देशक, शापक । परिचायिका (स्त्री) ।

परिचारक, स पु (स) सेवक, किकर,
दास, भृत्य, प्रेम्ह, भुजिष्य, नियोज्य ।

परिचालन, स पु (स न) (कार्य)
निर्वाह संग्रालन २ प्रबोधना, प्रेरणा,
प्रोत्साहनम् ।

परिचिन्त, वि (स) अभि परि ज्ञान, परिचय
विशिष्ट २ ज्ञान, बुद्ध, विदित ।

परिच्छद, स पु (स) परिधान, वेश ५,
वसन २ आच्छादन ३ राजचिह्नानि (न
बहु) ४ राजसेनकवय ५ परिजन, *परि
वार, कुल ६, उपस्कार, सभा, सामग्री :

परिच्छेद, म पु (स) अध्याय, प्रकरण,

उल्लाम, उल्लाम २ विभजन, खटन
३ सीमा, हयत्ता ४ विवेक ५ निर्णय
॥ विभाग, विभाजनम् ।

परिजन, स पु (स) परिवार, कुटुंब, कुल
२ दाम अनुचर-वर्ग, परिवार ।

परिणत, वि (म) विकृत, रूपांतर विकार
भात, सविकार २ पक्व ३ जीर्ण, जठरान्नी
पक्व ४ पुष्ट, प्रौढ ।

परिणय, स पु (स) विवाह, दारपरिग्रह ।

परिणाम, स पु (स) फल २ अन्त, पार,
उदय ३ विकार, विक्रिया, रूपांतर-अवस्था
तत्, प्राप्ति (स्त्री), दशापरिवर्तनम् ।

परित्याग, स पु (म) दुःख, क्लेश, व्यथा
२ सनाप, क्षीम ३ अनुपश्राव, ताप ।

परितोष, स पु (स) रुष्टि (स्त्री), सन्तोष
२ हृष, मोद ।

परित्याग, स पु (म) सर्वथा त्याग-वर्जन
उत्सर्ग २ निष्कासनं, बहिष्करणम् ।

परित्राण, स पु (म न) रक्षा, रक्षण, पालन
२ हस्तधारण, भारणोपगतस्य निवारणम् ।

परिधान, स पु (स न) वसन, वस्त्र, वासस
(न), परिच्छिन्न, नैपथ्य, वेश ४ २ वस्त्रे
आवेष्टन-आच्छादन, वस्त्रधारणम् ।

परिधि, स स्त्री (स पु) परिणाह, परिवेश,
मंडल २ सूय-वस्त्रसमीपमंडल, ३ प्राचीर,
वृत्ति (स्त्री) ४ निदलमार्ग ।

परिधेय, वि (म) धार्य, वनबीज, भारणीय,
परिधातव्य ।

परिनिर्वाण, स पु (स न) मुक्ति परि
निवृत्ति (स्त्री), मोक्ष ।

परिनिष्ठा, स स्त्री (स) चरमसीमा, परमा
धापि (पु), परावाधा, पारम् ।

परिनिष्ठित, वि (म) पारगन्त, क्षुत्तिपुण,
सुदृढ, विश्व ।

परिपक्व, वि (स) सम्यक्, सिद्ध-सत्कृत-पक्व
२ (जठरे) सुष्टु-जीण पक्व परिणत ३ प्रौढ,
मुविकसित, पुष्ट ४ अनुमविन, बहुमंसम्
५ कुशल, प्रबोध ।

परिपक्वता, स स्त्री (स) दे 'परिपाक' ।

परिपाक, स म (म) (जठरे) पचन, पाचन
परणाम २ प्रौढता, पूरण ३ अनुमन,

बहुदाशिता ४ नैपुण्य, प्रावीण्य ५ परिणाम,
फल ६ वर्म, रिपास कल्म ।

परिपाटी, स स्त्री (म) अनु, कम, परिपाटि
(स्त्री), परपरा, आनुपूर्वी-व्यं २ दौली,
प्रणाली, विधि (पु) ३ रीति पद्धति (स्त्री),
सपदाय ।

परिपालन, स पु (स न) रक्षण, पालन
२ रक्षा, आणम् ।

परिपूर्ण, वि (म) स्वात, समूत, सपूर्ण, पूरित,
निभर २ अनिरुद्ध, सतर्पित, ३ अक्षमित,
समाप्त ।

परिभ्र(भा)व, स पु (म) तिरस्कार, अप
अव-मान, अनादर ।

परिभाषा, स स्त्री (स) लक्षण, निर्बचन,
निर्देश, परिच्छेद, प्रवृत्ति, समयकार ३ अथ
मध्यपरिवाहार्थं सकेत मया विशेष ३ परि
कृतभाषण ४ विदा ।

परिभूत, वि (म) पराजित २ निरंकुत ।

परिभ्रमण, स पु (म न) पर्यटन, विहारण
२ पूर्णन-जा ३ दे 'परिधि' ।

परिमल, स पु (म) आमोद, सौरभ,
सुवास, सुगन्ध २ मैथुनम् ।

परिमाण, स पु (म न) मान, प्रमाण,
प्रपरि, मित्रि (स्त्री) २ माना, भार
३ विस्तार, हयत्ता ४ परिधि (पु) ।

परिमाजन, स पु (स न) परिभावन, परि
शोधन, परिष्करणम् ।

परिमाजित, वि (स) परि शीत धावित,
परिष्कृत परिशोधित ।

परिमित, वि (स) परिच्छिन्न, सवधिब,
समीम, समवर्द्ध, दित, २ अल्प, मूल ।

परिरम्भ, स पु (स) उपगृहण, परि
परिरम्भ, स पु (म न) ध्वज, आश्रितम् ।

परिवर्त, स पु (म) विभा-वर्तन आकृति
(स्त्री), पूर्णन २ विनिमय, परिवृत्ति (स्त्री) ।

परिवर्तन, स पु (म न) विकार, विकृति
(स्त्री), विक्रिया, रूपान्तर, दशान्तर २ विनि
मय, परिदान, नैमेष, व्यति(ती)हार,
परावर्तन, विमय, वैमेष ३ आवर्तन, पूर्णन
४ नाटयुग-समप्ति (स्त्री) ।

—वर्तना, वि म, परिवृत्त (मे), परिवर्तन

अन्यथा कृ २ प्रतिदा (जु उ अ) विनि-
निमे (भ्या आ अ) ।

—होना, कि अ, परिष्वत् (स्वा आ से),
बिहु (कर्म), विषयम् (णि प से) २ व्यतिह
—प्रतिदा-विनिमे (कम) ।

परिवर्तित, वि (स) विकृत, रूपान्वित,
दशान्न प्राप्त २ विनिमित्त, व्यतिहृत विनि-
मयेन प्राप्त ।

परिवर्द्धन, स पु (स न) परिवृद्धि (स्त्री),
वृद्धि, स्फीति (स्त्री) ।

परिवर्द्धित, वि (स) विस्तृत विस्तीर्ण प्र-
वि-नन, उपचित २ विशालीकृत वृद्धि भीत
अप विन ।

परिवा, म स्त्री, द्वे 'प्रतिपदा' ।

परिवाद, म पु (स) निदा, अपवाद,
दोषकथन २ बोधावादनबलय (मित्रराज) ।

परिवादक, स पु (स) निदक, अपवादक
दोषकथक २ अभिव्यक्ति (पु) अपेक्ष
वादिन् ३ बोधावादन ।

परिवार, स पु (सं >) कुटुम्ब, पुत्रबन्धु
दीनि, गृहजन, परि(री)वार ।

—निषेधजन, स पु (स न) परिवार
कुटुम्ब-निगन्धन-निरोध, सन्नि-म-तान
निरोध ।

परिवाह, स पु (स) पलोच्छ्रित सौवर्णाव ।

परिवृत्त, वि (स) परिवर्द्धित, परिगत,
परिनिप्त २ अप्छवादित, आवृत ।

परिवृत्त, वि (स) 'परिवर्तिग (२) २ परिवे-
ष्टित, परिगत ३ समाप्त ।

परिवेषण, स पु (स न) भोजनपात्रे भोजन
निषाज २ परिधि (पु), वेष्टन ३ परि-
वश प ।

परिवेष्टन, स पु (स न) सवलन, परिवेषण,
परिवाण २ अप्छादन, आवरण गुट,
वेष्टन, कश प ३ परिधि (पु) ।

परिव्रज्या, म स्त्री (स) सन्वास, वैराग्य
चतुर्थाश्रम २ परिभ्रमणम् ।

परिमाणक, स पु (स) भिषु,

परिमात्र, म पु (म मात्र) द्वे 'सन्वासी' ।

परिनिप्त, म पु (स न) परिशेष, पूर्ण
उत्तरमन्, दोषप्रथ खिलम् । वि, अव शिष्ट
शेष, उद्धृत ।

परिशीलन, स पु (स न) गभीर-समनन,
अध्ययन पठन २ स्पर्शनम् ।

परिशीलित, वि (स) सम्यक्-सुष्ठु, अधीत
पठित ।

परिशुद्ध, वि (स) पूर्ण, शुद्ध ममल-निर्दोष
पूत २ काराकारवास, सुकृ ।

परिशुद्धि, स स्त्री (स) पूर्ण शुद्धि (स्त्री)
पवित्रता निर्दोषता २ कारागार-मुक्ति (स्त्री) ।

परिशेष, स पु, (म) अन्त, समाप्ति (स्त्री),
दे परिशिष्ट' स पु तथा वि ।

परिशीघ्रण, स पु (स न) परिमार्जन,
परिधावन, २ ऋण, शोधन शुद्धि (स्त्री) ।

परिध्रम, स पु (स) आप्र-यास, भ्रम,
कथम्, उद्योग प्र यत्न २ क्लम, क्लानि
श्राति क्लानि (स्त्री), क्षेद ।

—करना, कि अ, आपस् परिभ्रम् (दि प
से), उद्यम् (स्वा प अ), व्यन-सौ
(दि प अ) ।

परिध्रमी, वि (म मिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्,
लघम-उद्योग-परिध्रम, शील, आयसिन् ।

परिभ्रात, वि (स) कलात, म्लान, सिद्ध,
आयस्त ।

परिपक्व, स स्त्री (स पक्) समा, समाज,
समिति (स्त्री) २ वनसमूह ।

परिपद, स पु (स) सदस्य, समासद (पु) ।
२ राज-बल्लभ, सभासद ।

परिष्कार, स पु (म) शौच शुद्धि (स्त्री),
शुचिता, सत्कार २ निमलत्व, स्वच्छता
३ आभूषण, अलंकार ३ मदन, प्रसाधनम् ।

परिष्कृत, वि (स) मानित, धावित, धीन
२ मण्डित, प्रसाधित, अलंकृत ३ सत्कृत,
शोधित ।

परिसर्या, स स्त्री (स) सख्या, गणना
२ अर्थालंकारभेद (सा) ।

परिस्तान, स पु (फा) अप्सरोलोक
२ सुदरीगन्धानम् ।

परिहरण, स पु (स न) बलात् ग्रहण
अपहरण २ परि, त्याग, उत्सर्ग ३ दोषादीना
निवारण, निराकरणम् ।

परिहार, स पु (स) (दोषादे) निवारण,
निराकरण २ उपचार, उपाय ३ त्याग,
परिवनन ४ गोप्रचर, प्रचारभूमि (स्त्री)

५ युदाङ्गित धन, विजितद्रव्य इ (करादे) मोचन, वर्जन ॥ प्रत्याख्यान, खटन ८ अवशा, अपमान ९ उपेक्षा ।

परिहार्य, वि (स) परिवर्जनीय, प्रोद्धानीय, हेय, त्यक्तव्य ।

परि(री)हास, स पु (स) नर्मन् (न), नर्मोन्मत्, प्रहसन, हास्य, विनोद, उक्ति (स्त्री) भाषणम् ।

परी, स स्त्री (का) अपसरस (स्त्री), योगिनी, पक्षिणी, विद्यापरी २ सुदरी ।

—ज्ञात्, वि (का) अनिर्मुक्त, परमशोभन ।

परीक्षक, स पु (स) प्राप्तिन्व, अनुयोजनं परीक्षित (पु) २ विचारक निरूपण ३ समालोचक, समीक्षक ।

परीक्षा, स स्त्री (स) पराक्षण, प्रहन, अनुयोग २ समालोचना, समीक्षा, ३ निरीक्षा, अवस्था, आलोचन, निरूपण ४ दिव्य ५ प्रयोग, अनुभव ।

परीक्षित, वि (स) नृपाङ्गण, अभिमनु पुन २ प्रवित, अनुयुक्त, हनपरीक्ष ३ समा लोचित, समीक्षित ४ अनुभूत, प्रयुक्त ।

पर्य, वि (स) कूर, निर्दय, निर्घृण, २ अश्रिय, कड ।

परे, क्रि वि (स पर) दूर, दूरे, दूरत, २ वृषक, नहिस् ३ तन्नु, तन, तदनन्तर ४ उपरि, उच्चै (सप्त अव्य) ।

—परे करना, ॥ परिद (न्वा प अ), अप, वृन् (पु), न संगम् (न्वा आ अ) ।

परेषा, स पु (स) पारावन (दे) 'वदूत' ।

परेषान, वि (का) उद्दिग्न, व्यग्र, व्याकुल ।

परेशानी, स स्त्री (का) उद्दिग्नता, व्याकुलता ।

परोक्ष, वि (स) अदृश्य, अलक्ष्य, अचक्षुष २ युक्त, गूढ । स पु (म न) अनुपस्थिति (स्त्री), अविद्यमानता ।

परोपकार, स पु (स) परोपहानि (स्त्री) परहित, शोभमाहात्म्य, उदारता ।

—करना, क्रि स, परापरार्थं कृ, परहित सपद (प्रे) परमाहात्म्य विधा (पु उ अ) उपकृ ।

परोसना, क्रि म (॥ परिवेषण) मद्याणि पात्रे रथा (प्रे) स्थापयति, परिवेष (प्रे) ।

सं पु, परि(री)क्षप णम् ।

परोसनेवाला, म पु, परिवेषक, परिवष्ट (पु) ।

परोसा हुआ, वि, परिवेषित, पात्रे निहित ।

पर्चा, स पु, दे 'परचा' ।

पर्जन्य, स पु (स) जलद, दे 'मप' ।

पर्ण, स पु (सं न) दे 'पत्र' (१) २ तानुलो नागलता, दल, तानुलम् ।

—रता, स स्त्री (म) पुत्रागवस्ती, नागलता ।

—शाला, म स्त्री (स) पर्णकृती, उद्वज जम् ।

पर्णाद, म पु (स), पत्र पर्ण, अक्षत आहार अक्षर (त्रिभिन्) २ कश्चित्पक्ष ।

पर्णाशन, म पु (म) दे 'पर्णाद' ।

पर्णाहार, स पु (स) दे 'पर्णाद' ।

पर्ण, म पु (स) पर्णिन् वृक्ष, तन्, पारप, त्रिप पिन् ।

पर्व, म स्त्री, दे, 'पर्वत' ।

पर्दा, म पु, दे 'परदा' ।

पर्यङ्क, स पु (म) पर्वत, अवसतिधरा, पर्वस्थिता, परित्र ।

पर्यटन, स पु (म न) १ भ्रमण ।

पर्यंत, अव्य (म पर्यन्त) यावत्, आ, पर्यंत (उ, वृत्तुपवैत, वृत्तु दावत्, आद्यन्तो, मरणपर्यन्तम्) ।

पर्याप्त, वि (सं) प्रभूत, प्रचुर, पूर्ण, यथेष्ट, उपयुक्त, अल (तुष्ट्यां के माध) २ समर्थ, शक्त ।

पर्याय, स पु (स) तुल्यार्थं ममार्थं, शब्द २ क्रम, परपरा, आनुपूर्व्य-स्त्री ३ अद्यावत् ४ अवसर, उचितसमय ।

—प्राची, वि (म वि) पर्यायवा १२, सम समानतुल्य अर्थक ।

पर्व, म पु [स पर्यन्त (न)] उत्तम, उन्नत, उन्नप, धृण, मह २ पक्षप्राणि (चतुर्शी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा, रक्षितप्राणि) ३ प्रपञ्चिदेद, पञ्च ४ मधि (पु) मधि (पु) १ र्वट, आग ।

पर्वन्, म पु (म) अद्रि गिरि (पु), नील, धरणीवीर्य, सानुमन्त श्मश्रुतिपविन् (पु), अगल, भूधर, अग, गग, कु चरा अकनी मही धरणी, भूधर, भूति नृत् (पु) २ चय, राति (पु) ।

—नदिनी म स्त्री (म) १ पाननी ।

—राज, स पु (स) दे 'हिमालय' ।
 —वासी, स पु (स सिन्) गिरि शैल-वासिन्,
 पर्वत [नी (स्त्री)], पर्वतीय [यी (स्त्री)] ।
 वि, पान, पार्वतीय इ ।
 पर्वतीय, वि (स) सपर्वत, नयप्राय, शैल
 अद्रि-मय [मयी (स्त्री)]
 पल्लग, स पु, दे 'पर्यव' ।
 —योश, म पु (हि + फा) पर्वकप्रच्छद ।
 पल्ल, स पु (स) विघट्टिता, धर्मिकाया पट्टि
 तमी भाग पट्टिविपलात्मक काल (-२४
 सेकण्ड) २ क्षण, सुहृन्, निमि (मे) प ।
 —भर मे या—मारते, मु, क्षणेन, क्षणात्,
 निमेष पल, मात्रेण ।
 पल्लक, म स्त्री (म पल) दे 'पल' २ नव
 नयन, छद ।
 —मारना, त्रि अ निमील (भ्वा प ने),
 निगिप् (तु प रो) ० चक्षुषा भवेत् क ।
 —मारते या झपस्ते, मु, दे 'पल भर मे' ।
 पल्लन, म स्त्री (अ प्लट्टन), मैनिगाना
 दिशनी, मय, रत्न-गण ।
 पल्लना, क्रि अ (रा ब्रलोठन) नि प्रनिनि
 प्रत्या-वृत् (भ्वा आ से) प्रत्या, गम्
 (भ्वा प अ)-या (अ प अ) २ पर्यम्
 (कर्म), अधोलुली अपरोत्तरीभू, परिपरा ।
 ३ (दशा) परिवृत्त, अवस्थानर जन् (दि
 आ से) ४ परिपरा-वृत् । क्रि स, व
 पल्लना' के प्रे रूप । म पु, नि प्रत्या,
 वर्तन, वि, पर्याप्त परिवर्तनम् ।
 पल्लटा, स पु (हि पल्लना) नि प्रत्या, वृत्ति
 (स्त्री), दे 'पल्लना' स पु २ प्रविपल,
 कर्मविपल ३ स्वरपरावृत्ति (मगीन) ४
 लपात्, उत्पल्ल ५ व्यतिहार, निनिमय
 ६ परिवर्तन, (भाजनभेद) ७ दे 'वदला' ।
 पल्लटाना, त्रि म, दे 'लैलाना' ।
 पल्लटा हुआ, वि, प्रतिनिवृत्त विपर्यस्त परि
 वृत्त, परावृत्त ।
 पल्लहा, स पु (म पल्ल >) तुला, फल
 पल्लवन् ।
 पल्लथी, स स्त्री (म पर्यस्त >) स्वस्तिना
 सनम् ।
 —मारना, क्रि अ, स्वस्तिनामनेन उपविष्ट
 (तु प अ) ।

पल्लना, क्रि अ (म पालन >) पाल पोष
 समृ (कर्म) २ परि, पुष (कर्म) प्याय
 (भ्वा आ से), पुष्ट-पीन (वि) भू ।
 पल्लनाना, क्रि प्रे, व 'पालना' के प्रे रूप ।
 पल्लस्तर, म पु (अ प्लास्टर) *पल्लस्तर,
 लेप, सुधा २ उपनाह, प्रलेपपट्टिका ।
 —करना, क्रि म, सुधया लिप (तु प अ)
 ० उपनह (दि प अ) ।
 —कीला होना या बिगडना, मु, अत्यत
 विकल पीडित (कर्म) ।
 पल्लाड्ड, स पु (स) दे, 'प्याज' ।
 पल्लाड, स पु (स) पल्लाइन, पल्लाश,
 राक्षस । वि, मान, भक्ष्य आहारिन् ।
 पल्लान, म पु (स पल्लयन) पर्याण, पर्य
 यण, दे 'जीन' ।
 पल्लाघ, म पु (म न) दे 'पुलाव' ।
 पल्लागक, म पु (म) वि-प्र-, पल्लागिन,
 पुद्-विमुर, पराङ्मुख-स्वार्थिन् ।
 पल्लाग्यन, म पु (स न) वि, द्रव, उद्
 राप्रति, द्रव, चक्रम, शृंगारिका, अय,
 कम-गानम् ।
 पल्लागमान, वि (स) प्रवि, द्रवत्, अप,
 भावत् कामत्, परायत् (सक क्षान्त) ।
 पल्लाग्न, म पु (स) निशुक्, याष्टिक,
 त्रिपणं, नक्षत्रक्षक, पूतद्र (पु), (स न)
 पन, पर्णम् ।
 पल्लाग्री, म पु (स-शिन्) वृष, तह २
 क्षीरक्षु (बूल पीपल, वागद, महुआ इ०)
 ३ राक्षस । वि सपव, पत्रवन् २ मास
 भक्षक ।
 पल्लित, वि (स) वृद्ध, दे 'वृद्धा' २ पक्व,
 धवल, दैन, मित, (कैश) । स पु (स
 न) कैशपाव ।
 पल्ली, स स्त्री (स पल्लि >) *स्तेहनिका
 सनी, पल्लिना ।
 पल्लीता, स पु (फा) भूलवदाविका वर्तिका
 वार्ति (स्त्री) २ दहनवार्ति । वि कोपाकुल,
 सरम्भ २ शीघ्रगामिन् ।
 पल्लीद, वि (फा) मल्लिन, मलीमस, अपवित्र
 २ नीच, खल ।
 पल्लेथन, म पु (स परितरण >) (गोधू
 मादीना) शुष्कचूर्ण, *रोटिकापरितरणम् ।
 —निकालना, क्रि म, परुष तद् (तु) ।

पलौठा, वि (हिं पडला) *प्रथमज (पलौठा-प्रथमजा) ।

पल्लव, स पु (स पु न) विम(श)लव य प्रवाल, नवपत्र, किम(न)ल २ प्र, शाता बिदप ३ नवपत्रस्तव ।

पल्लवित, वि (म) सपत्न, मकिमन्य २ तन विस्तृत ३ रोमांचित ।

पल्ला, क्रि वि (स पर या परे >) दूर, दूरे, दूरत । स लोरे, दूरता, विप्रकष ।

पल्ला पल्ल, म पु (स पटाञ्जल) वमनान, वल्, अवल २ पार्थ अपिपारे ३ दिशा ।

—पुडाना, मु, आत्मान उदह (स्वा प अ)-मुच (मे), अनिट त्यच (स्वा प अ)-अपात (दि प से) ।

—पसारना, मु, वाच (स्वा आ से) ।

पल्ले पडना, मु, लभ् अभिगम् (वम) ।

पल्ला, स पु, दे 'पलटा' ।

पल्ली, स स्त्री (म) ग्रामक, ग्रामटिटा २ ग्राम ३ कुटी ४ गृहगोथिका ।

पवन, म पु (स) अनिल, वात, दे 'वायु' ।

—चहरी, न स्त्री, वायुपेणी, *पवनचक्री ।

—चर्च, म पु (म न) वातचत, चर्चवात ।

—पुन, स पु (स) हनुमद २ भीमसेन ।

पवनाशन, स पु (स) पवनाश, सर्प ।

पवि, स पु (स) मज अ, कुन्दि, अशनि (पु स्त्री) ।

पवित्र, वि (स) वि, शुद्ध शुचि, स्वच्छ, विशद, निर्मल २ पुण्य, निष्पाप, जन्य, अवन्मव ।

पवित्रता, स स्त्री (स) शुचिता, शीच, वि, शुद्धि (स्त्री), शुद्धता २ स्वच्छता, वैशद्य, निर्मलता ३ पुण्यता, निष्पापता ।

पवित्रात्मा, वि [स-स्मन् (पु)] विमल शुद्ध-आत्मन् (पु), शुद्ध, भवि हृदय ।

पवित्री, न स्त्री (म पवित्र) पवित्रक, पुशागुलीयकम् ।

पशम, स स्त्री (का पदम) उत्तमोर्णा, मुर्णा २ उपरयलोमन् (न) ३ अतितुच्छवरत्न (न) ।

पशमीना, म पु (का पशमीनह्) दे 'पशम' २ उत्तमोर्णा, नरत्न पट ।

पशु, स पु (स) लोमलाण्डवन्तीव (सिंह-वाग्गोमहिषादय), गत (पु), सुरावा, मृग २ प्राणिन्, शिवमादन् ।

—पति, स पु (म) शिव २ पशुप्रभु ।

—पाल, म पु (स) पशुगो, रक्षक पालक ।

—राज, स पु (म) मृगेन्द्र, सिंह ।

पशुता, स स्त्री (स) पशुत्व, पशु, भाव धर्म २ मौर्य, औदत्य, जाड्यम् ।

पशुत्व, म पु (स न) दे 'पशुता' ।

पश्वान्, अव्य (म्) तत, तदनन्तर, तत्प आत्, तदनु, तत्र, पर ऊर्ध्वम् ।

पश्चात्ताप, म पु (स) अनु, ताप शय शोक, पाप-कुङ्कुन-खेद, विप्रीनसार ।

—करना, क्रि, अ, दे 'पश्वाना' ।

पश्चिम, स पु (स पश्चिमा) प्रतीची, वारुणी, पश्चिम, दिशा आशा । वि, पश्चात् उत्पन्न, २ अत्य, अंतिम ।

पश्चिमा, स स्त्री (स) दे 'पश्चिम' ।

पश्चिमी, वि (म पश्चिमा >) प्रतीच्य, वाक्तात्य, पश्चिमावासासंस्थित् ।

पश्चिमोत्तर, स पु (स पश्चिमोत्तरा) उत्तर यन्मा वायवी । वि, वायव, वायुदिवस्थ ।

पश्तो, म स्त्री (देश) पश्चिमोत्तरसीमाप्रा तस्य भाषाविशेष ।

पश्यती, स स्त्री (स) वेद्या, गणिका, क्षुद्रा, रुपाशीका २ वाणीभेद, वायुमयोपाय नाभिज शब्द ।

पसद्, स स्त्री (का) अभि, रुचि (स्त्री), मनोरथ । वि, मनोनीत, रुचिर, स-अभि, मन, प्रिय ।

—करना, कच् (स्वा आ से चतुर्थी के साथ) अभि प्रति, नद् (स्वा प से) अनुमुद् (स्वा आ से) २ दे 'पुनता' ।

पसदीदा, वि (का) अभीष्ट, वृत्त, रुचिर, रोगक, उत्तम ।

पस, स पु (अ), पूय-य, क्षतार्ज, मलज, कुणपम् ।

पस, अव्य (का) तदनु, तत्पश्चात्, तदनन्तरम् ।

—(सो) पेश, पु मिथ, आज, उत्तम् ।

पसहरा, क्रि अ (स प्रमरण) मस्य (स्वा प अ) प्रवितम् (कर्म) २ विस्तृ (कर्म), वृष् (स्वा आ से) ३ करचरणान् प्रमार्थ दो (अ आ से) ।

पसली, म स्त्री (म पशुवा) पाश्चात्ति (न), पार्श्वम् ।

—का रोग, स पु, वसनक ।

हट्टी—तोड़ना, मु, भृङ्ग तट् (जु) ।

पसाना, कि स (स प्रसाविण) मट प्रस् (प्रे) २ अतिरिक्तजलाज अवपत (प्रे) ।

पसार—रा, स पु, दे 'प्रसार' ।

पसारना, कि स (स प्रसारण) व 'पसरना' के प्रे रूप । दे 'फैलाना' ।

पराव, स प (स प्रसाव >) प्रसाव, मट-व, दे 'माह' ।

पसीजना, कि अ (स प्रस्वेदन) (शनै) खट्गल् (भ्वा प से) मु (भ्वा प अ) प्रस्तु (अ प से) २ दवाई-वरनाई (वि) मू, अनुकृप-दय (भ्वा आ से) ।

पसीना, स पु (हि पसीजना >) प्र, स्वेद, घर्म, घम-स्वेद, उदक जण बिंदु (पु) घम बारि (न) ।

—आना, कि अ, प्र, स्विद् (दि प अ) स्वेद लूनित्स् (भ्वा प अ) ।

पसोपेश, स पु (का) विग्वित्मा, विनई, सक्षय आ परि वि, शया २ परिणाम, हानिलाभौ ।

—करना, कि अ, दोलायते (ना घा) विडव विजलप् (भ्वा आ से) ।

पस्त, वि (का) पराजित, विजित २ परि आन, क्लान्त ।

—बृद्ध, वि (का) वायन, खव ।

—द्विम्बस्त, वि (का) माल, वागर् ।

पहचान, स स्त्री (स परिचयन या प्रत्य निश्चान (प्रति, अभिज्ञा-अभिज्ञान, २ विवेक, विचारण गा, परिच्छेद २ लक्षण, बिद्ध ४ परिचय, परि, ध्यानम् ।

पहचानना, कि म (हि पहचान) प्रति, अभिज्ञा (कि उ म) अनुस्मृ (भ्वा प अ) परिच्छिद् (र प अ), सविद् (अ प से) २ बिच् (जु उ अ), विशिप् (क प अ), परिच्छिद् ३ अव गम् शा (क उ अ), बुध (भ्वा प से), विद् (अ प से) । स पु, दे 'पहचान' ।

पहचाननेवाला, स पु, प्रति, अभिज्ञात् (पु), परिच्छेद, विवेकिन्, शास्त्र, बोद्ध (पु) ।

पहचाना हुआ, वि, निर्विक, परिच्छिन्न, प्रति, अभिज्ञात, बुद्ध, विदित ।

पह(हि)नना, कि स (स परिधान) परिधा (जु उ अ), वस् (अ आ से), धृ (भ्वा प अ, चु), भृ (जु उ अ) । स पु, परिधान, व(धा)रण, भरण, वसनम् ।

पहनने योग्य, वि, परिधेय, धार्य, वसनीय ।

पहननेवाला, स पु, परि, धाव (पु) धायक, धर्तु धारयितृ (पु) ।

पहनवाना, कि मे } व 'पहनना'

पहनाना, कि स } के प्रे रूप ।

पहनाना, स पु (हि पहनना) वेश प, परिधान वस्त्राभिवसनान (न बडु), नेपथ्य, परिच्छिद् ।

पहना हुआ, वि, परिहित, धृत, धारित, वसित इ ।

पहर, स पु (स प्रहर) वाम, होराव्रत-यो २ बाल युग, समय ।

पहरना, कि म दे 'पहनना' ।

पहरा, स पु (हि पहर) रक्षा, रक्षण, नाग ग्वा, निरूपण, अवेक्षण-क्षा, गौरव, गुप्ति (स्त्री) २ रक्षक, रक्षित, रक्षापुत्र, रक्षि वर्ग, प्रहरित, वैवोधिक ३ रक्षणकाल, प्रहर ४ प्रहरि, भ्रमण पर्यटन ५ प्रहरिपरिवर्तन ६ प्रहरिचाप ।

—देना, कि अ, रक्षायै नामृ (अ प से) परि, भ्रम् भट् (भ्वा प से) ।

पहरेदार, स पु (हि + पा) दे 'पहरा' (२) ।

पहरावनी, स स्त्री (हि पहरना) २ परिधा पनी, परिधोपवेश ।

पहरी, पहरुआ, पहरू, स पु दे 'पहरा' (२) ।

पहल, स स्त्री (हि पहल) उपक्रम, म, आरम्भ २ अनि-आ, क्रम, प्रथमापहर ।

पहलवान, स पु (का) मल्ल, बाहु, बौध-बौद्ध (पु) यौविन् २ इडाग, वक्रदेह ।

पहलवाना, स स्त्री (का) मल्ल-बाहु, सुदृढ ।

पह(हि)ला, वि (स प्रथम) दे 'प्रथम' ।

पहलू, स पु (का) पह, पार्श्व-र्थ (सव अर्थो मे) २ पञ्च पार्श्व, भाग, कन्नाथोभाग ३ विनायविषयस्य अग्र-भाग, विशेष ४ गुडाशय ५ व्यग्राय ।

—चयाना, मु, सप्तद परिह (भ्वा प अ) ।

—में बैठना, मु, अतिभगीप-ये उपविश (तु प अ) निषद् (भ्वा प अ) ।

पहले, अन्य (हि पहला) पूर्व, प्रथम, आदौ, प्राक्, आरम्भे २ पूर्व, पुरा, पूर्वप्राचीन, काले ।

—पहल, अन्य, सर्वप्रथम प्रथमवार, आदौ ।

पहाक, म पु (स पाषाण >) दे 'पवत' (१०) ३ दुस्साध्य-दुस्तर, कार्यम् ।

पहाडा, म पु (स पत्तार >) गुणनसूची ।

पहाडिया, वि (हि पहाड) दे 'पवतवासी' ।

पहाडी, स स्त्री (हि पहाड) पवतक, लुग गिरि (पु) २ बल्मीक, बामलर ।

पहिया, म पु (म परिधि) चक्र, रथाग्रम् ।

पहिलाडा, वि, दे 'पलोडा' ।

पहुँच, स स्त्री (म प्रभूत >) उपमर्षण, अभि उप, नाम प्रवेश २ गनिमीमा ३ प्राप्ति (स्त्री), प्राप्तिमुचना, अभिमुनामीमा, परि चय ४ आगमन, उपस्थिति (स्त्री) ।

पहुँचना, कि अ (हि पहुँच) आ, गमनम् (स्वा प अ) समा मद् प्र-म आप (स्वा प अ), मपद् (दि आ अ) २ विलु (कम) ३ प्रविश (तु प अ) ४ लभ् प्राप (कर्म) । स स्त्री, दे 'पहुँच' ।

पहुँचनवाला, स पु, आगत उपस्थान (पु), लब्धप्रवेश, सहायक ।

पहुँचा, स पु, दे 'कलाह' ।

पहुँचाना, वि स, व 'पहुँचना' के प्रे रूप ।

पहुँचा हुआ, वि, आगत, उपस्थित, प्राप्त, प्रपन्न, प्रविष्ट, लब्ध, अग्रिमन, निद्र ।

पहुँची, स स्त्री (हि पहुँचा) अवापन, गति बन्धनम् ।

पहुनाई, स स्त्री (हि पाहुना) प्रापण अनिधि, सेवा स्त्वार । २ अतिथित्व, प्रापणम् ।

पहेली, स स्त्री [स प्रहेलीलि (स्त्री)] प्रहेलिता मदनपती, प्रबद्धी लि (स्त्री) — लिवा २ समस्या, गूढार्थव्यापार ।

पहवी, म स्त्री (म पहव >) पारसीक देशस्य प्राचीन भाषा, पहवी ।

पौंच, वि (स पञ्च) । म पु, उक्ता मरया तद्व (५) २ ।

—भौतिक, वि (स) पञ्चमूर्तानामन (शरीरादि) ।

पौचों उँगलियों की मं होना, मु, सर्वथा प्र उपरि (कम) मृष्ट (दि प मे) ।

पौंचवों, वि (हि पौंच) पचम-मयी (पु न स्त्री) ।

पाचाल, म पु (स) पचाल । वि पचाल देशोद्भव ।

पाचाली, म स्त्री (स) शालभजीत्रिका, पुत्रिका, पचालिका २ रीतिविशेष (सा) ३ द्वीपद्वी, कुणा, वायसेनी ।

पाडव, स पु (स) पाडुनन्दन, पच पाटवा ।

पाडिय, स पु (स न) बुद्धिपी, मत्त, व्युत्पत्ति (स्त्री), विद्वत्ता, विद्वत्त्व, ज्ञान, प्राप्ताता ।

पाडु, म पु (म) नृपविशेष २ मितपोत-वर्ण, हरिण, पाँ (डु)र ३ रक्तपीतवर्ण ४ श्वेनवर्ण ५ दे 'पाडुरोग' ।

—रोग, स पु (म) बामल-ला, पाडु (पु) ।

पाडुर, वि (स) मितपोतवर्ण, पाडु २ पीन ३ शुक्ल । स न (स) श्विरोग । स पु (न) दे 'पाडुरोग' ।

पाडुलिपि, स स्त्री (॥) पाडुलप, ३शोध नीयलेप ।

पाडे, } ॥ पु (स पडित) द्विज पाडेय, } कायस्थ, मेद ३ प्राक्, विश्म (पु) ४ शिक्षक, अभ्यापन ५ पाचक, चद ।

पाँत, पाँति, स स्त्री, दे 'पक्ति' ।

पाथ, स पु (स) पथिक, यात्रिक २ प्रता मिन ३ वियोगिन् ४ भातु ।

—निवास, स पु (स) पाथशाला, यात्रिक गृहम्, धर्मशाला ।

पाँव, स पु (स पाद) पद, चरण न, अग्नि (पु) २ जपा ३ मूल, आपार, उपष्टम्भ ४ धैर्य, स्थैर्य ।

—का अगूठा ॥ पु, पादागुष्ठ ।

—का सोना, स पु, पादहप (रोग) ।

—की अँगुली, म स्त्री, पादागुली नि (स्त्री) ।

—जड़ाना, मु, दे 'टाग अटाना' ।

—उरखना, मु, परा वि (कम), पलाव् (स्वा आ मे) ।

—उटाना, मु, विष्कम्भ (स्वा प मे) २ मत्वर चन् (स्वा प मे) ।

—जमाना, मु, निदचन् दृढ रथा (स्वा प अ) ।

—तले की मिट्टी निकल जाना, मु, जदी निपदी भू, विस्मयेन उपहन (कर्म) ।

—पटना, मु, चरणयो अवपत् (भ्वा प मे), अनिनस्रया याच् (भ्वा आ से) ।

—पसारना, मु प्रसृते प्रसृ (प्रे) मुख स्वप (अ प अ) २ दे 'भरन' ।

—पाँव, मु, पादचारी भूत्वा, पङ्क-बामेव चलत् (शत्रुत) ।

—पूना, मु चरणी चूर् (भ्वा प से) —सेव (भ्वा आ से) ।

—फटना, मु, पाशो शीतेन स्पृष्ट (त प से) ।

—हूँक-हूँक कर रखना, मु, मवधान प्रवृष्ट (भ्वा आ से) कार्येषु ।

—फैला कर सोना, मु निर्दिष्ट स्वप (अ प अ) ।

—भारी होना, मु, गर्भे आधा (जु उ अ) ५ (जु) ।

दवे—आना, मु, निर्भूल अया (अ प अ) ।

धरती पर—न रखना, मु, नितरा इप् (दि प अ), गव (भ्वा प से) ।

पाँवड़ा, म पु (हि पाँव) पादचरान्तरणम् ।

पाँवड़ी, म स्त्री (हि पाँव) दे 'गन्तक' तथा 'जुग' ।

—पादा (स) न, वि (स) दृषक, कलक जनक ।

पाशु, म स्त्री (स पु) पाशु (पु), धूली लि (स्त्री), रस (न) ।

पाशुल, वि (स) रेणु-द्विषित रूख, धूनिधूमर ।

पाँसा, स पु (स पाशक) अश्व, देवन, सार, शार ।

—उलटना, मु, यत्नो विपरीतकरो नन् (दि आ से) ।

पा, स पु (क्रा) पाद, पद, वाण मम् ।

—अंदाज, स पु पद-अद, यवण प्रोत्तम् ।

पाइओरिया, म पु (अ) दन्तपूयम् ।

पाई, स स्त्री (॥ पाद >) पादिका २ चतुर्शीशमृत्तिका ऊर्ध्वरेखा (उ ५-भवा चार) ३ आकारमात्रा (१) ४ पूणविराम चिह्नम् (१) ।

पाउड, म ॥ (अ) निष्क, दीनार २ ऋषीड, अरुमेरारमको देवीय आम्बोलमेद ।

पाउडर, म पु (अ) पिष्ट, क्षोद, चूर्ण २ पक्वसक्, पिष्टाजक, पिष्टाप ।

पाक, स पु (म) पचन, पानन, आनि (स्त्री), अपिश्रवण, पना, रथन (सात प्रमार का पाक—

भार्जन तन्म स्वेद पचन वचन तथा ।

ता-रं पुष्टपक्वश्च पाक मपविधौ मत ॥)

२ पक्व-सिद्ध, अन्न ३ परिणति (स्त्री) ४ औषधमेद ५ जठरे आहारपचन ६ दैत्य विरोध ।

—शास्त्र, म स्त्री (स) महान्त-सम् ।

—शास्त्र, म प (म) दे 'इन्द्र' ।

पाक, वि (क्रा) पवित्र, वि शुद्ध २, निष्पाप, निष्कलत्र ३ मन्त्रम् ।

—दामन, वि (क्रा) पतिव्रता, मनी ।

—साक, वि (क्रा+अ) स्वच्छ, निमल ।

पाकेट, स पु (अ) दे 'नैव' ।

पाक्षिक, वि (स) अदम्यनिक, मासादिक २ पक्षपातिन ।

पाखड, स पु (स पाखड-ड) दम्भ, दाभि कता, छाभिना, आयकृपा, कपटधर्म, कुटन हिा, वृष्टि (स्त्री) कापट्यम् ।

पाखडी, वि (स पापदिन्) पाखड-डक, दभिन, दाभिक कपदिन्, कापटिक, आर्य, रूप गिगिन्, छत्र-वपट, वशिन् ।

पाख, म पु (स पक्ष) दे 'पखवारा' ।

पाखर, स स्त्री (म प्रखर) प्रखर, अश्वगज, सज्जहि ।

पाखा (या) व, म पु (म पापाग) प्रमत्त शिला, अदमन्, प्रावन् (पु) ।

पाखाणा, स पु (क्रा) शौच, कृप न्धान २ उच्चार, गूह-थ, मन्त्र, पुरोष, विष (स्त्री) विषा, शकुन् (न), शमलम् ।

—निष्कलना, मु, नितरा भा (जु प अ), जस (दि प से) ।

पाखाने जाना, मु, शौचकृप या (अ प अ) पुरोष उत्सज (तु प अ) ।

पाग, म स्त्री (ह पर) दे 'पगडी' ।

पाग, म ॥ (म पाक >) मधु गर्करा, —

कनाथ २ मधुनायपक्व-हन्मोप वा ।

पागना, कि सु (म पाग >) शुद्ध-निता, रमे निगस्व (प्रे) ।

पागल, स पु (देख) उन्मत्त, वातुल,

अन्व २ मच, मचक ३ कृष्णजदनम् ४
उद्वन्धनपट्ट-टम् ५ कुडयकोणपट्ट-टम् ।

पाणि, स पु (म) कर हस्त ।

—प्रदण, स पु (म न) उद्ध, दे
'विवाह' ।

—प्राहक, म पु (स) मवृ (पु), दे पति ।

पाणिनि, स पु (म) अष्टाध्यायीप्रणेता
वैयाकरणविशेष ।

पात^१, स पु (स पत्र) दे 'पत्ता' ।

पात^२, स पु (म) अध नि, पतन, त्वमन,
श्रुति (स्त्री) २ पानन, ३ वि नाश
ध्वम ४ मृत्यु (पु), अवोनयनम् ।

पातक, स पु (स न) दे 'पाप' ।

पातकी, (म किन्) दे 'पापी' ।

पाताल, स प (स) अपो भुवन लोक,
मालोक २ विह, बिल ३ भुवनविशेष ।

पातिव्रत, स पु (म न) पातिव्रत्य-सनीत्वम् ।

पातुर, स स्त्री (स पाली) दे 'वेश्या' ।

पात्र, स पु (म न) भाजन, अमत्र, भाट
कोश स्त्री, कोश स्त्री, नोषि(शि)का पात्री
२ नट, अनिनेष्ट (पु) ३ तीरद्वयानर
(हि पात्र) ४ रानमित्र ५ सुवादोनि
यनोपकरणानि ६ *नाटवत्य कथापुरप
(नायकादि) ७ सत्पात्र, गुणान्वयम् । वि,
योग्य, उचिन्, अहं ।

पात्रता, म स्त्री (म) विप्रतपस्याचारयुक्ता,
पात्रत्व, योग्यता, अर्हता, गुण ।

पाथ^१, न पु (म पाथ) पाथम् (न), पन्थम् ।

पाथ^२, म पु (स पथ) मार्ग, अध्वन्
(पु) ।

पाथना, कि स (हि थापना) गोमयानि
रन् (जु) निर्मा (जु आ अ) २ तट
(पु) ।

पाथय, म पु (स न) म(स)वत् पथि
उपभोक्तव्य द्रव्यम् ।

पाथोधि, म पु (म) सागर ।

पाद^१, म पु (म) पद, चरण-अ, पद (पु),
अहि-अत्रि (पु) २ मन्त्रलोकादीना चरण
३ चतुर्थभाग ४ अथभाग ५ गिरिवृक्षादीना
मूलम् ।

—टीका, म स्त्री (म) पृष्ठतल-पद-गिष्णी ।

—प्राण, स पु (म न) दे 'पदुका' ।

—पीठ, म पु (म ने) पदामनम् ।

—प्रसार, स पु (म) चरणाधान, दे
'ठोकर' ।

पाव^२, म प (म पर्द) अपान अधो-वायु
(पु) ।

—सारना, कि अ, दे 'पादना' ।

पादना, कि अ (म पददन) पदद (भा
आ मे), अपानवायु उत्सृज (हु प अ) ।

पादप, म पु (स) तरु, दे 'वृक्ष' ।

पादरी, म पु (पुर्त पैद्रे) निम्नमन, पुरो
हित उपदेशक ।

पादविक, म पु (स) पथिक, पाथ,
यात्रिन् ।

पादागुली, स स्त्री (स) } दे 'पवि' के
पागुल, म प (स) } नीचे ।

पादात, स पु (म) पादपद चरण, अग्र
अग्रभाग २ पञ्च-चरण-वमानम् (म०) ।

पादुका, स स्त्री (स) पादू (स्त्री), पाद,
त्रयाण पदरमिका, कौपी । २ दे 'जूना'
तथा 'वृट' ।

पाद्य, स पु (म न) पादप्रक्षालनजन्यम् ।

पाद्या, स पु (स उपध्याय) गुरु (पु),
आचार्य, शिक्षक २ पण्डित, विद्वान् (पु) ।

पान^१, म प (स न) पीति (स्त्री), आच
मन, पवन, द्रवद्रव्यस्य गलाध करण २ मद्य
सुरा, पान ३ पेयद्रव्य ४ मद्य ५ जलम् ।

—करना, कि स, दे 'पीना' ।

—पात्र, म पु (म न) पान, चषक,
मर्क, पानमात्रम् ।

पान^२, म पु (म पर्ण) ताबूली, ताबूलवल्ली,
नाग, न्यता-वल्ली २ ताबूल, पर्ण, नागवल्ली
दल ३ क्रीडापत्ररसभेद ४ पत्र, किमलय ।

—गोष्ठी, स स्त्री (स) आपान, मद्यपान,
चक्रमभा ।

—टान, म पु (हि+का) *पर्णपान, ताबूल
वरक ।

पानक, म पु (स न) *मधुराम्लपेयम् ।

पाना, कि म (म प्रापण) म, आप (स्ता
उ अ), लब्ध (भा आ अ), विद (जु
उ वे), समा भिद (मे) आपि पद
(दि आ अ) अपिगम्, आदा (जु आ अ),
ग्रह (क प से), २ (सुखदि) अनुभू,
गुर् (क आ अ) ३ बुध् (भा उ मे)-
विद (अ प मे) ४ तुल्य-सदृश (वि) भू

५ माद (भ्वा ष से) ६ सह (भ्वा आ से) । म पु, प्राण, लब्ध (स्त्री), अधि गमन, आदान, अनुभव, बोध, भुक्ति इ । पानेवाला, म पु, प्राण, अग्नितु-आदान, प्रदीप्त (पु) इ ।
 पाने योग्य, वि, प्राप्य लभ्य, अदेय, ग्राह्य इ पाया हुआ, वि, प्राप्त, अधिगत, लभ्य गृहीत इ ।
 पानिष, म पु (हि पानी) घुनि कानि (स्त्री) ० दे 'पानी' ।
 पानी, स पु (म पानीय) वरि-अभय (न), इ 'नल' २ वानि घुनि (स्त्री) ३ प्रतिष्ठा, समान ४ वृष्टि (स्त्री) ५ पीव्य, नीच ७ वातव्यादिमांसघ्नी, अन्ववायु (न) ७ रम ८ जीतवस्तु (न) ० समय, अवसर १० परिस्थिति (स्त्री) ।
 —वार, वि (हि + का) वानिन्, भासुर १ मान्य ३ आहमाभिमानिन् ।
 —देवा, म पु, तर्पण, पिष्ट २ पुत्र ३ स्वर्गीय ।
 —फल, तं पु, दे 'मिषाण' ।
 —से करना, स पु, आर्क, नल, भालन मराम ।
 —कर देना, मु, प्रोष अपनी (भ्वा ष अ) शम् (प्रे, शमयति) ।
 —का तुलतुला, मु, क्षणगुर, अमार, नथर ।
 —की तरह बहाना, मु, अपभ्यस् (तु), अमित व्यय, सुभा धे (प्रे, भवति) ।
 —के मोल, मु, स्वयम्भूयन, अत्य-पारण ।
 —देना, मु, (विन्) उदान लृप् (प्रे) २ उदर पत्र (प्रे) निषिद् (तु ष अ) ।
 —पचना, मु, इष्ट (भ्वा ष से) ।
 —पानी होना, मु, अनीव लृप् (तु आ मे) ।
 —पे पी कर कोसना, मु, निरा आमु-श (भ्वा ष अ)-ममिशम (भ्वा ष से) ।
 —भरना, मु, (तुलनायां) तुल्य (वि) प्रतीयते ।
 —में आग लगाना, मु, गांग नल पुन उनीव (प्रे)-नवीन ।
 —लगाना, मु, प्रतिबलवत्वायुनाऽप्यस्य (वि) मु ।

—या पतला, मु, तलरूप, जलकुल, जल विरल ।
 अत्र का—, म पु, आर्द्रकलम् ।
 गारा—, म पु, क्षारकलम् ।
 पानीय, वि (स) पेय, पालय । स पु (म (न) द 'नल' ।
 पाप, म पु (मं न) अभर्म, पाप्मन् (पु) पापर, विनिर्णय, कान्य, वृजिन, अर्थ, अहं, एनम् (न), इरित, दुष्ट, पापक, क्षय २ अपराध, दोष ३ वध ४ पापदुष्टि (स्त्री) ५ अनिष्ट, अहितम् ।
 —करना, वि अ, पाप्य मुच् (धर्म) पाप नस् (दि ष ने) ।
 —करना, वि म, पाप क अववा भार (भ्वा ष से) २ अपराध (दि स्वा ष अ) ।
 —नाशी, वि (मं शिन्) पापान्, अपनाशन, पापहर ।
 —बुद्धि, वि (मं) पाप बुद्धि, मति-बुद्धि ।
 —रोग, म पु (सं) रोगिणी (प्रमेहादि) ।
 —लोक, म पु (मं) दे 'नर' ।
 पापक, वि (सं) दुर्जन, दुष्ट, पापिन् । स पु, दुर्जन, पाप, पापिन् २ दुष्टरूप, पाप्य ।
 पापद, म पु (मं वपट) मापयौनि, शिबी पूष, वैदलपिष्ट । वि, तनु २ सुष्य ।
 —बेलना, मु, धीर परिश्रम (दि ष मे) ० दुर्त जीव (भ्वा ष न) ।
 पापदा, म पु (मं वपट) अर, वर, प्रग, मुक्ति ० द 'पितपापदा' ।
 —घार, म पु (मं वपट) अन्वीयर ।
 पापर, म पु (मं) दृष्टि, अकिञ्चन, निर्धन ।
 पापाचार, म पु (मं) दुराचार, दुष्टलम् ।
 पापात्मा, वि (मं-स्मन्) दे 'पापी' ।
 पापिन नी, वि स्त्री (मं) पापिनी, दुष्टा, दुराचारी, पाप-वरी-कारिणी, एनमिनी-२ अपराधिनी, दोषिणी ।
 पापिष्ट, वि, (मं) पाप (पि त्त, दृष्टतम [पापिष्टा (स्त्री) = पापमा, दुष्टतमा] ।
 पापी, वि (मं शिन्) पापिन्, पाप, पाप कर, पु पाप-दुष्ट-दुष्ट, नरक, एनमिन्, निवि पित्, पाप, निरप-बुद्धि मति, पापदुष्ट पापा मन् २ अपराधिन्, दोषिन् ।

पापोश, त स्त्री (क) दे 'जूषा' ।
 पायद, वि (का) णि, बद्ध, परतन्त्र, निरुद्ध
 सयत्, नियन्त्रित ।
 पायदी, सं स्त्री (का) बध्, दंभन, निय
 त्रणपा २ विवदाता, बाधना ।
 पाम, सं पु (सं पाम्) पामा, विनिश्चिन्ना,
 खजू—बहुनि (स्त्री) ।
 —पान्, सं पु, (म) पामारि, गन्धक
 सौगन्धिक ।
 पामन, वि (सं) पाम पामा-सखू पीडित प्रस्त ।
 पामर, वि (स) दुष्ट राल, दुष्ट २ नीच
 अधम ३ मूर्ख, जट ।
 पामाल, वि (का) पदा णि, पदरालि
 पादगुणा, अस्मै-मादित २ वि, ध्वस्त-नष्ट ।
 पायैचा, सं पु (का) *पादायानजेष्वा ।
 पायैता, सं पु (हि पयै) खटवाया *पद्मान,
 *पदनाल ।
 पायैती, सं स्त्री, दे 'पायैना' ।
 पायैदास, सं पु (का) *पादयर्षगम् ।
 पाय, सं पु (सं पद) दे 'पर्व' ।
 पायदाता, सं पु, दे 'पाताना' ।
 पायजामा, सं पु दे 'पामा' ।
 पायजेय, सं स्त्री, दे 'पाजेव' ।
 पायदार, वि (क) विर, रथावि, दृढ ।
 पायदारी, सं स्त्री (का) निरुद्धाविता, दृढता ।
 पायमाल, वि (का) दे 'पामाल' ।
 पायल, सं स्त्री (हि पाय) दे 'पाजेव'
 २ वशति श्रेणी ३ शीरगामिनी इति णि ।
 पायस, सं पु (सं पु न) परमान्न, दे
 'दीर' २ भीराम, दे 'तारपीर' ।
 पाया, सं पु (सं पाद) (पर्वगादीनां)
 पाद, अपा, टगा, २ स्तम्भ, स्तूपा, रथाणु
 (पु) ३ प, पश्य वि (स्त्री), स्थिति
 (स्त्री) ४ गोपाद, पय-मार्ग, परम्परा ।
 पायु, सं पु (म) दे 'गुदा' ।
 पारगत, वि (म) पारण, परतीर पाद-गत,
 २ प्रीतिमान्, अधीनिष्ठ, अनुदिन, शास्त्र
 मर्मज्ञ ।
 पार, सं पु (सं पु न) पर, पीरन्त्र
 २ अथर तट ३ पर अभिमुखार्थ दिग्वा
 ४ अन, पर्वत, सीमा ५ कर्त्त, अधोभाग ।
 अभ्य, पादे, दूरे, अग्रे, परत ।

—करना, वि स, स-उद्य-यु (भ्वा प से),
 उद्य-रूप (भ्वा आ से, यु), अति ३
 (अ प अ), अतिम् (भ्वा प से) ।
 २ समाय (स्वा उ अ) सपूर (जु),
 निर्द्वार (प्रे) दे 'वीथना' ।
 —दशक, वि (स) स्वच्छ, विरल प्रकाश,
 भेष ।
 —दर्शी, वि (न शिन्) दूरदर्शिन, भविष्य
 दर्शिन ।
 —पाना, मु, सम्पद् दुष (भ्वा प से),
 आपत या (अ प अ) अभवा सपूर (जु) ।
 पार—, सं पु पारवार, पारावारम् । वि वि,
 अवारपारम् ।
 पार—, सं पु, दे 'आरपर' ।
 पारस्त्री, सं पु (हि परस्त्र) परीक्षर, गुण
 दोषविद् (पु) ।
 पारग, पारगत, वि (सं) दे 'पारगन्' ।
 पारण, सं पु (सं न) पारणा, उपवासान्
 न्तर प्राथमिकभोजन २ तर्पण ३ समाप्ति
 (स्त्री) ।
 पारतन्त्र्य, सं पु (सं न) दे 'परतन्त्र' ।
 पारद, सं पु (सं) दे 'पारा' ।
 पारदेमिक शी, वि, दे 'परदेसी' ।
 पारधी, सं पु, दे 'शिकारी' ।
 पारलौकिक, वि (सं) अनुभूतिक, परलोक,
 सबन्धि निपयक, अपार्थिव ।
 पारस, सं पु (सं स्वर्ण >) स्वर्ण, मणि
 उपल २ अतिशुभद्र पदार्थ ।
 पारसाल, सं पु (सं + पार + का साल) गत
 वर्ष, परत (अभ्य) । किं वि, मताब्दे, परम् ।
 पारसी, वि (का) पारसवासिन् २ भारतस्था
 पारसीया ३ 'फारसी' ।
 पारसीक, सं पु (सं) पारसदेश, पारसिक
 २ पारसवासिन् ३ पारसभोजन, बानाणुज ।
 पारम्परिक, वि (सं) दे 'परपर का' ।
 पारा, सं पु (म पार) महा-रिभ्य, रस,
 रस, राज नाभ उत्तम इन्द्र, चपल, पारद,
 शिवबीज, मिथ्यापु ।
 पारायण, सं पु (सं न) समापन, समाप्ति
 (स्त्री) २ आप तथाठ ।
 पारावत, सं पु (स) वपीत, २ वपि
 ३ पर्वत ।

पारावार, स पु (म) समुद्र । (म न)
तद्वय २ सीमा पर्यन्त, अवधि ।

पारिजात, स पु (स) सुरदेवकल्प, तरु
वृक्ष, मदार ।

पारिजातक, म पु (स) देवतरुषु अन्यतम
२ हस्त्यगार ३ काचनाल, कोविदार ४
परिभद्र देववृक्षविशेष ।

पारितोषिक, स पु (स न) निक्षिपाल,
नयनाम, दे 'इनाम' ।

पारिपथिक, स पु (स) परिपथिन्, लुट
(टा टा) क, मागतस्कार ।

पारिभाषिक, वि (म) सांकेतिक, परिभाषा
सक्तेन, मवधिन् ।

पारिपद्, स पु (म) सभामर् (पु), सभ्य,
पारिषद २ गण, अनुचरवर्ग ।

पारी, स स्त्री, दे 'वार' ।

पार्यन्त्य, स पु (स न) वृथक्ता, निवृत्ता
२ वियोग, विरह, विश्लेष ।

पार्थिव, वि (स) मृण्मय (यी स्त्री), मातक
(की स्त्री) २ भीम, पृथिवीसवधिन्
३ शोकिक, ऐहिक (की स्त्री) । म पु, नृप
२ कुज ।

पालियामेट, स स्त्री (अ) व्यवस्थापिनी सभा ।

पार्वती, स स्त्री (म) उमा, अदिना, अविना,
गौरी, नन्दा, भवानी महादेवी, सिद्धा, रुद्राणी,
मती, सिद्धादिनी, क्रिमादिननवा, हैमवती ।

—नन्दन, स पु (स) कार्तिकेय ।

पार्श्व, स पु (स पु न) वक्षाधीभाग, पार्श्व
पक्ष, भाग, कुक्षि २ पक्ष, पार्श्व-र्ष, समीप
निकट, स्थान ३ पार्श्वस्थि (न), पार्श्वकम् ।

—कर्त्ता, स पु (स णिन्) प्रसीपक्ष निकटस्थ,
अन ।

—शूल, म पु (म पु, न) शूलरोगभेद ।

पाल, म पु (स) पालक, पोषक २
पतद्वय, दे 'पीरुदान' ।

पाल, म पु (हि पाल्ना) कल्पाकाल
पालायनकरणम् ।

पाल, स पु (स पट वा पाट >) नौ, *
वानपट २ पट, मंडप-गृह ३ शक्यग्रद्वयम् ।

पाल, म स्त्री [मं पालि (स्त्री)] सेतु,
धरण, वपवध २ उच्च, तीर-कूल, दे 'वगार' ।

पालक, म पु (मं) पोषक, रखक, पालन

कर्तृपालयितु २ अश्व, पालक रक्ष ३ दत्तक
पुत्र ४ चिक्कवृक्ष ।

पालक, स पु (स पालक) पालकी, सु
निध, धरा, मधुरा, सुरपत्रिका, प्रामीणा ।

पालकी, स स्त्री (स पत्यक >) शिरस्का,
उयन, शिविका, *पल्लवी, रघुगर्भक, याप्य
यानम् ।

—गादी, स स्त्री, *पल्लवी शकटी ।

पालतु, वि (म पालित) गृह, वधिन् पोषित,
गृह, जैक, गृह, ग्राम ।

पाल्यी, स स्त्री, दे 'पल्यी' ।

पालन, म पु (म न) भरण, पोषण, स,
वर्धन, अन्नवमनै रक्षण २ निर्वाह, अनुकूल
चरण, अनुवदन, साधन, पूरणम् ।

पालना, किं म (स पालन) परि, पा (प्रे
पालयन्), परि, पुष् (श्वा क् प से
तथा प्रे), सवृष् (प्रे), सं, भृ (श्वा जु
प अ) २ (पशुविहगान्) विनी (श्वा प अ),
दम् (प्रे), गृहे पुष् मवृष् (प्रे) ३ अनुकूल
आचर (श्वा प मे), निवह (प्रे) मपूर्
साध (प्रे) । म पु, दे 'पालन' २ (शिशु)
प्रेता दोहा ।

पालने योग्य, वि, परि, पालनीय पोषणीय,
भरणीय, विनैय, निर्वास, इ ।

—वाला, म पु, दे 'पालक' (१) २ विनेट,
गृहे पोषक ३ निर्वाहक, माषक ।

पाला, स पु (स प्रालेय) तुषार, नोहार,
कुम्भारिना, मिटिका, तुहिन, २ घनजल, चल
घन, तुषारमयान, हिम ३ शीत, शैत्य, हिम ।

—मार जाना, मु, नोहारेण नष्ट (दि प वे),
तुषारेण ध्वस्त (श्वा आ से) ।

पाला, स पु (हि पला) व्यवहारायसर, सवध ।

—पडना, मु, व्यवहार सवध-वार्थ अन
(दि आ से) ।

पाले पडना, मु, वशाभू, अधीन (वि) जन् ।

पाला, म पु (म पट >) प्रधातवान्,
सुरयकायालय २ विभाजनरोगा ३ क्षेत्रमीमा
४ अश्वार्थ वृद्ध्यान् ५ मत्तयुद्धभूमि (स्त्री),
व्यावामशाश ।

पालायन, म स्त्री (हि पॉय+लगना)
चरणनुवन, पादप्रणति (स्त्री), प्रणाम,
पदना, नमस्कार ।

पाला हुआ, वि, परि, पालित, पोषित, स
भृत, गृहे संबंधित, सपूरित, रक्षित, इ ।
पालित, वि (स) दे 'पाला हुआ' ।
पालिका, स स्त्री (अ) प्रमाजंग, *कान्तिरी ।
पालिसी, स स्त्री (अ) नीति (स्त्री) नय
२ राजनीति शास्त्रनीति (स्त्री) ३ उपाय,
शुक्ति (स्त्री) ४ आयनिरक्षणममयलेख
समाव्यहानिरक्षण पत्रम् आश्वासिका ।
—होलडर, म, पु आध्यात्मिकाधारक ।
पाली^१, स स्त्री (म पालि-पक्ति >) भारत
वर्षस्य प्राचीनभाषाविशेष (प्रायः बौद्ध धर्म
ग्रन्थ इमी मे है) ।
पाली^२, वि (स लिन्) पालक शोधक २ रक्षक ।
पाली^३, स स्त्री (स पालि स्थान >) बुद्ध-
बुद्ध भूमि (स्त्री) ।
पाव, स पु, दे 'पाव' ।
पाव, स पु (म पाद) चतुर्थ, अश भा, ,
तुर्य, तुरीय २ (चार गिरह) गनतुर्य, हस्ताई
३ मेर, पाद, षट्कचतुष्कम् ।
पावक, स पु (स) अनल, अग्नि २ ताप
३ सूर्य । वि, पावन, शोधक, मार्जक ।
पावन, वि (सं) शुद्ध, पूत पवित्र, शुचि
२ दे 'पावक' । वि [पावनी (स्त्री)] ।
पावस, स स्त्री (म प्रावृष) दे 'बरसात'
(मौसिम) ।
पावा, स पु, दे 'पावा' (१) ।
पाश, स पु (सं) शूलभेद, बधन, २ पाल,
मृगबधनी, पातिली, बागुरा ३ 'पामा' ।
पाश्चात्य, वि (म) पश्चिमदेशन, प्रनीच्य
२ उत्तर, उत्तरगामिन् ३ पश्चिम, चरम,
अपर, अवर ।
पापड, सं पु, दे 'पाखड' ।
पापडी, वि, दे 'पाखडी' ।
पापाग, स पु (स) दे 'पातर' ।
पासग, सं पु (का) प्रतिशोक्त गुणापूरकम् ।
पास^१, स पु (स पार्श्व-र्थ) पक्ष, दिशा
२ अधिकार, आधिपत्य (अव्य), निकटे,
समीप ये, अतिक-के, आराध, उपकठ, निकषा,
समया, मविधे (सब अव्य) ।
—पटोम, सं पु, समीप-मन्त्रिण, देश, प्रति
वेश २ प्रातिविद्या प्रतिवर्गिन (पु बहु) ।
मान—, कि वि, रक्षण अभिन, परित
२ दे 'लगभ' ।

पास, स पु (अ) *अनुपापत्रम् ।
वि उत्तरीग, सकल, सकलीभूत २ खोक्त,
उत्तरीकृत ।
—पोर्ट, म पु (अ) पार निष्क्रम पत्रम् ।
—बुक, स स्त्री (अ) धनागारपुस्तकम् ।
पामा, सं पु (स पाञ्चक) दे 'पामा' २ दे
'चौमर' ।
—फैकना, मु, मार्थ्य परीक्ष (भ्वा आ से)
२ अमै त्वि (दि प से) ।
पाहुना, स पु (म प्राहुण) प्राहुण(गि)र,
प्राहुणक, अनिधि २ नामात् दे दामाद' ।
पाहुनी, सं स्त्री (हि पाहुना) प्राहुणिका-स्त्री,
प्रप्राणस्त्री २ आनिध, अनिध-सत्कार ।
पिग, वि (म) आशपद पीत २ कपिल,
पिम्ब, पिडा ३ आशपद पिगल-कपिल ।
पिगल, स पु (स) छद मृत्रकारो मुनि
विशेष २ (पिगलचिन्) छद शास्त्र ३ कपि
४ उत्प्लुक्त ५ अग्नि । वि, दे 'पिग' ।
—शास्त्र, स पु (स न) छन्दो, विद्या
विज्ञानम् ।
पिगला, स स्त्री (स) शरीर नाटीभेद ।
पिगी, सं स्त्री (स) शमी, शिवा, भद्रा २
३ मृषा मृषिका ३ क्षुद्र मूषक-आसु ।
पिन्डा रा, स पु (स पिन्डर) पञ्जर-र, वि
(वी) नस ।
पिन्डर, स पु (म न) कार्यास्थिद्वय ककाल,
अस्थि-र-र २ स्वर्ण ३ दे 'पिन्डार' ।
वि, शंख पीत २ सुवर्णाभ ३ कपिल, पिगल ।
पिड, स पु (स पु न) गोल-ल, वतुलद्रव्य
२ लोष्ठ ठ, मृद-खड पिट, द्रव्यखट-ख,
गट, धन ३ चय, राशि, ४ निवास,
आद्योपयोर्भिन्नकरिणो ५ आहार ६
शरार, देह ।
—रजूर, सं स्त्री (स पिन्डर-र) राजजव
(स्त्री), स्थूलपिन्डा, पिन्डर-रूरी, दीव्या,
फलपुष्पा, हयमशा ।
—दान, स पु (स न) पिन्डनिर्वाप ।
—त्रोडना, मु, न बाध (भ्वा आ से) ।
पिडली, स स्त्री (म पिडी) न्यापि-
पिन्डिका पिडि (स्त्री), पिन्डिका ।
पिडा, स पु (म पिड-ड) दे पिण्ड (१,
२, ४, ६) ।
—पानी देना, मु, पिदम्य पिन्डोरक दा ।

पिडालू, स पु (पिडाळ) रोमाल, रोम
पिट, कद, रोमश ।

पिडिका, ॥ स्त्री (स) छुद्रपिड-ठ २ लोष्ठक
३ दे 'पिडली' ४ चक्रनामि (स्त्री) ५ प्रति
मावेदिका ।

पिडित, वि (स) पिडी-मनी, भूत २ गणित
३ गुणित ।

पिडी, म स्त्री (स) दे 'पिटिका' (१, १, ४) ।
२ अल्पाक्षु (स्त्री) ३ पिडपञ्चूर ४ बलि
वेदी ५ मृदगोक्त-लम् ।

पिड, वि (स प्रिय) बल्लभ, वान, दयित ।
स पु, पति, भर्तृ ।

पिक, मं पु (स) कोकिल, दे 'कोयल' ।
—बैतु, म पु (स) पिक, राग-बल्लभ,
आजबुद्ध ।

—बैनी, स स्त्री, कोकिल-कूठा-ली, कुम्भधु,
कूठा-ठी ।

पिकानन्द, स पु (म) पिकवान्धव, वमन्त,
कानुराग ।

पिघलना, कि अ (स प्रपरणम्) गल्-लर
(भ्या प से), वि, द्रु (भ्या प अ),
द्रवीभू, वि, ली (दि आ अ) २ कर्णाद्री
दयाद्रीभू, कर्णया द्र, दय (भ्या आ से) ।
स पु क्षरण, गलन, विलयन, द्रवण २ दयाद्री
भाष, दयनं, अनुरन्धनम् ।

पिघलनेवाला, वि, वि, लेय, द्रवणाव, गलनाई ।

पिघलाना, कि स, व 'पिघलना' (१२) के
प्रे रूप । म पु, वि, द्रावण-लावन,
द्रवीकरणम् ।

पिघलनेवाला, ॥ पु, विद्रावक, विलयनकृत् ।

पिघला हुआ, वि, वि, लीन, वि, दूत, गलित ।

पिघलाया हुआ, वि, वि, द्रावित-लापित,
क्षारित, गलित ।

पिघालगिदु, म पु (हि + स) द्रावाद्,
द्रवण, अञ्च विदु ।

पिच (चि) ड, स पु (स पुं न) उदर,
पठर, फट ।

पिचकना, कि अ, व 'पिचकाना' के बर्म
के रूप ।

पिचकाना, कि स (अनु पिच) आनि-स-
पीड (धु), मष्ट (क् प से), आ-मं-कुच
(भ्या प मे) । मं पुं, मपीडनं, संमर्दनं,
मंकोचनम् ।

पिचकानेवाला, स पु, सपीडक, संमर्दक १ ।

पिचकाया हुआ, वि, सपीडित, संकोचित १ ।

पिचकारी, स स्त्री (अनु पिच) रेचन
यन्त्र, मृद्व, मृद्वक, वरित (पुं स्त्री) ।

—छोडना या मारना, ॥, श्रुतेण क्षिप् (तु
प अ), नरन्ध्रस्य सवेग प्राप्त (दि प से) ।

पिचपिचा, (हि पिचपिचाना) उज्ज, निज्ज,
व्यान, साद्र ।

पिचपिचाना, कि अ (अनु पिचपिच)
पिचपिचायने (ना धा), धनै क्षर
(भ्या प से), प्र-स्तु (अ प से) ।

पिचुका, स पुं, दे 'पिचकारी' १ दे 'गोन
गप्पा' ।

पिच्छ, स ॥ (स न) पुच्छ, पक्ष-वाज
२ मयूरपुच्छ, बहई ई, शिखर, बलाप
३ शरपञ्च, पुच्छ रम् ४ पक्ष, वाज ५
शिखा, शेषरम् ।

पिच्छल, वि (स) चिकण-ग्राणम्, मेरु
रानम्, श्लक्ष्ण द्वाण्डणम् ।

पिछना, कि अ (हि पिछावी) मंद चल
(भ्या प ली), मदायते चिरायति (ना धा),
पश्चात् श्रुत् (भ्या आ से) ।

पिछनेवाला, स पु, मंद, मथर मंद
गामिन् ।

पिछला, पिछलम्, स पु (हि पीछे +
लगना) अनुवाविन्, अनुगामिन्, अनुवर्तिन्,
शिष्य २ सेवक ३ आश्रित ।

पिछला, वि (हि पीछा) पृष्ठस्थ, पश्चिम,
पृष्ठय, पश्च, पश्चात्, २ उत्तर, उत्तरकालीन,
अपर, पर, पश्चात्स्थ ३ अन्त्य, अन्तिम, उत्तर
४ गत, अतीत, पुराण ।

पिछवाड़ा, म ॥ (हि पीछा) गृहस्थ

पिछवाड़ी, स स्त्री (हि पीछा) पृष्ठ, पृष्ठभाग २ पृष्ठ
पश्चात्, भाग ३ गृहपृष्ठवर्तिभूमि (स्त्री) ।

पिछाड़ी, स स्त्री (हि पीछा) पृष्ठ, पृष्ठपश्चात्,
माग-वेष्ट २ (अक्षादीना) पृष्ठपश्चादन्तु
(स्त्री) ।

पिछना, कि अ (हि पीछा) ताट् आहन्
(बर्म) ।

पिछवाना, कि प्रे, व 'पिछना' के प्रे रूप ।

पिछाई, स स्त्री (हि पीछा) ताटनं, प्रहरणं,
आहनन २ ताटनमृति (स्त्री) ।

पिटारा, सं पु (स पिट) फेट, करड, कटोल ।

पिटारी, सं स्त्री (हि. पिटारा) पिटक-क, पेग(ग)फ, पेडा, मजूषा, पेन्(डि)फा, तरी रि (स्त्री) ।

पिटहू, म पु (हि पीठ) अनुगामिन्, अनु यायिन् २ सहाय, साहाय्यकारिन् ।

पित, म स्त्री (स पित्) धर्मचर्चिका, धर्मपटक ।

पितपापडा, स पु (स पपट) अरक, बरक, छ, निक्त, चरक, शीन, प्रगप ।

पितर, स पु (म 'पितृ'का बहु) पिठ स्वभा आढ, सुन मात्र, पिडाश (मर बहु) ।

पितराई, म स्त्री (हि पीतल) पित्तल-नाम, रिट्ट-मल-म्बाद, दे 'कमल' ।

पिता, म पु (स पितृ) ताल, जनक, बप्प, प्रसविष्ट, जनपिष्ट, ननिष्ट, जमद, नोनिन् ।

—मह, स पु (स) दे 'दादा' ।

—मही, स स्त्री (म) दे 'दादी' ।

पितृ, स पु (स) दे 'पिता' २ दिवगता पूर्वपुरुषा २ देवविशेषा ।

—पूज, स पु (स न) जावमानस्य पूज भेद (अपना पुत्र उत्पन्न होने पर मनुष्य पितृ पूज से मुक्त होता है । धर्म) ।

—कर्म, स पु [स-अन् (न)] आदितर्पणारिक्तिया ।

—गृह, स पु (स न) इमजान २ दे 'मायका' ।

—तर्पण, स पु (स न) निनिर्, नाप, निवपन, निर्वपण २ दे 'तिल' ।

—सिधि, स स्त्री (स पु स्त्री) अमाव (वा)त्या ।

—तीर्थ, स पु (न) गया २ बाराणस्यादितीर्थस्थानानि ३ तर्जन्यगुह्ययोगध्यम् ।

—पस, स पु (स) आधिनकृष्णपक्ष २ पितृमवधिनि (नहु) ।

—यज्ञ, सं पु (स) पितृयज्ञम् ।

—लोक, सं पु (स) पितृयवनम् ।

पितृक, वि (स) दे 'पैरु' ।

पितृव्य, स पु (म) दे 'चाचा' ।

पित्त, स पु (स न) मालु, पत्ज्वन्, निरुपातु ।

—घ्न, वि (स) पित्त-मालु, हर-नाशक ।

—ज्वर, स पु (स) वैत्तिक-मालुन, ज्वर ।

—की बैली, स स्त्री, पित्तकोष (gall-bladder) ।

—पथरी, स स्त्री, पिनामरी ।

—पापडा, स पु, दे 'पितपापडा' ।

—प्रकृति, वि (म) मालुप्रकृति २ क्रोधिन् ।

—प्रकोप, स पु (स) पित्त-मालु, प्रकोप-आधिक्य विकार ।

—हर, वि (म) दे 'पित्तघ्न' ।

पित्तल, म पु (स न) आरकूट, ट, जार, धुद्र-सुवर्ण, रीनी नि (स्त्री), पीतलक, पानक, पिंगलोलोहम् ।

—का, वि, पित्तन पीतक, मय (—की स्त्री) ।

पित्ता, स पु (म पित्त) दे 'पित्ताशय' २ साहम, शीर्य, शीर्य ३ कोप, क्रोध ।

—स्त्रौलना, सु, अत्यन्त क्रुद् (दि प अ) ।

—निरालना, सु, निनरा परिश्रम् (प्रे) ।

—पानी करना, सु, सुतरा परिश्रम् (दि प ने) ।

—मारना, सु, क्रोध विनियम् (भा प अ) ।

पित्ताशय, स पु (स) पित्त-मालु, कोष ।

पित्ती, स स्त्री (न पित्त) शीतपित्तन, पित्तविकारन स्वप्नोपभेद, २ दे 'पित' ।

पिण्य, वि (स) दे 'पैरु' । स पु, (म) अम्रन २ माषमास ३ मधानक्षत्रम् ४ यधु (न) ५ माष, मामन ।

पिण्या, स स्त्री (स) अमावस्या २ पूर्णिमा ।

पिदही, स स्त्री, दे, 'पिही' ।

पिडा, स पु (अनु पिड)

पिही, स स्त्री चटकभेद २ पुच्छ, जीव पदार्थ ।

पिधान, स पु (स न) आच्छादनं, आवरण, कोष २ छद, छदन, पुट्ट-रुटी ३ अस्ति कोष ।

पिधायक, वि (स) आग्रच्छादक, आवरक ।

पिन, स स्त्री (अ) *पानुवट्टक, अन्ध शूची ।

पिनकना, क्रि अ (अनु) (अहिफेनमदेन) इषट निद्रा-स्वप् (अ प अ) ।

पिनाक, स पु (स पु न) (शिवस्य) चाप, धनुस् (न) २ विशुलम् ।

पिनाकी, म पु (स किन्) शिव, महादेव ।
पिन्ना, स पु (स पिन्ट-ड) तैलमिट्टि पिण्याक,
पिन्ट-ड २ मूत्र-मोल पिन्ट ।

पिन्नी, म स्त्री (स पिन्डी) पिंटिका, पिन्टि
(स्त्री) वादक, मिष्टान्न भेद २ दे पिन्टली ।
पिपरमिट, म पु (अ) पुदीनजातीय सुप,
*पिपरमिट २ *पिपरमिम्भ ।

पिपरामूल, स पु (स पिप्पलीमूल) बोल
बड्ड, मूल, ग्रन्थि, सर्व वट-बड्ड ग्रन्थि (न) ।
पिपरी, म स्त्री (स पिप्पली) पिप्पलि
(स्त्री) श्यामा कृष्णा, मागधी, उ(ऊ)पणा,
कोला, दतफला ।

पिपासा, स स्त्री (म) तृषा, दे 'ध्यासा' ।
पिपासित, वि (म) रुपित, दे 'ध्यासा' ।
पिपासु, वि (स) रुपित, दे 'ध्यासा' ।
पिपीलिक, स पु (स) पिपील, पिपीलिक,
पीलक, दे 'चौटी' ।
पिपीलिका, स स्त्री (स) पिपी(पि)ली, हीरा,
दे 'चौटी' ।

पिप्पल, स पु (स) अश्वत्थ, दे 'पीपल' ।
पिप्पलाद, म पु (म) कपिशिरोष ।
पिप्पली, स स्त्री (स) दे 'पिपरी' ।
—मूल, स पु, दे 'पिपरामूल' ।

पिय, पिया, वि (म पिय) बल्लभ, वान,
दयित । स पु, रत अर्प ।
पियानो, म पु (अ) आग्लवाचभेद,
*प्रियधान ।

पिरिच, स पु (देज) दे 'नदरी' ।
पिरोना, कि स (स प्रोत >) सञ् (चु),
गु(गु)क (गु प से) स, यद् (कूपस),
स, इम् (चु, स्वा, गु प से) । म पु,
सुक्षण, गुन्धन, ग्रन्थन, रुदनंशम् ।

पिरोने योग्य, वि, मूत्रविनश्य गुप्तीय ३ ।
पिरोनेवाला, म पु, गुफक, शयन,
सुखित ३ ।

पिरोया हुआ, वि, गुणित, गुप्तिन, गु(ग्र)विन,
मदुग्ध ३ ।

पिल, म स्त्री (अ) गुटिका, गुटिया, वटिका ।
पिलना, कि अ (म पैलन >) सहमा
प्रविष्ट (गु प अ) २ मवर्ग अभिद्रु
(स्वा प अ)-आण्ड (स्वा प म)
२. सोत्साह प्रकृष्ट (स्वा जा ने) अत्यन्त

परिश्रम (दि प से) ४ निष्पीडनिरूप
(कर्म) ।

पिलपिला, वि (अनु पिलपिल) शिबिल,
अतिपक्व, अतिमृदु ।

पिलाना, कि प्रे (हि पीना) पा (प्रे पाय
यति), पे (प्रे, भाषयति), चम् (प्रे, चाम
यति), २ स्थान्य-मन पा पे (प्रे) ।

पिल्ला, स पु (तामिल) श्व, राक्व शिशु ।
पिशग, वि (म) कपिल, पिगल ।

पिशाच, स पु (स) भूत, प्रेत, राक्षस,
बेटाल, असुर, दानव, दैत्य, निशाचर ।

पिशाचनी, म स्त्री (म पिशा-ची) पिशाचिका,
निशाचरी, राक्षसी ।

पिशुन, म पु (म) दिनिह, मूत्रक,
वर्णनप २ परीक्षामिदक, परिवादरत
उ दुर्जन, राख, नीच, गर्ह्य ।

पिशुनता, म स्त्री (स) वैद्युन्व, पिशुनत्व,
दिनिहता २ परीक्ष, निंदा परि(री)बाइ
३ दुपन्ता ।

पिष्ट, वि (स) चूर्णित, चूर्णीकृत, क्षुण्ण ।
म पु, दे 'पीडी' ।

—पेषण, स पु (म न) चूर्णितचूर्णन,
क्षुण्णक्षोदन २ पुनरकि (स्त्री), पौनदच्य,
पुनर, वचनवाद ।

पिमनहारी, स स्त्री, (हि पीमना) *पेषण
कारी ।

पिसना, कि अ, व 'पीमना' के कम के
रूप ।

पिसाई, म स्त्री (हि पीतना) पेषण, चूर्णन,
विदलन, क्षोदन २ पेषण-चूर्णन, मृति (स्त्री)-
मृत्वा ३ वीरपरिश्रम ।

पिसान, म पु (हि पिसा+म अन्नम्)
दे 'आटा' ।

पिमा(सवा)ना, कि प्रे, व 'पीमना' के प्रे
रूप ।

पिसीनी, म स्त्री, पेषण, चूर्णनम् २ अन्न
चूर्णन-वचमाय ३ अनिपरिश्रम ।

पिस्ता, स पु (पा) मुकुटम् ।
पिस्तौर, म पु (अ पिस्टल) गुल्मिका,
लघ्वन्ययम् ।

पिस्सू, म पु (का पदशब्द=मच्छर) *कुटरी,
देहिता, कुट ।

पिहित, वि (स.) निरोद्धित, गुप्त २ अर्थात् कारभेद (सा) ।

पिंजना, कि स (म पिंजन=पुनर्की) ।
पिंज (प्रे पिंजयति) दे 'धुनना' ।

पी, म पु (म प्रिय) बाल, दक्षिण, वस्त्रम्, २ पनि, भर्तृ, प्राणेश्वर ।

पीक, म स्त्री (अनु पिच) पण्डित, तावुल्लान् ।

—प्रातः, म पु (हि + क्रा) पठप्रह, प्रति प्राह, *ग्लाधारं, निघोषनपात्रम् ।

पीच, म स्त्री (स पिच्छा) पिच्छल-रत्ना, भक्तमठ उ, दे 'माह' ।

पीडा, म पु (म पश्चात्) १ पृष्ठ, पृष्ठ पश्च पश्चाद् भग देश २ अनु, गमन-परण-भावने ३ अन्येषाम् ।

—करना, मु, अनु, इया (अ प अ) अनु, गन्-न् (श्वा प अ), अनु गव व्रत् (श्वा प से) २ माप्रह प्रार्थं (जु आ से) ।

—छुडाना, मु, परिह (श्वा प अ), वि परिहृत् (जु), अतमानं रक्ष (श्वा प से) ३ (श्वा आ अ) ।

—छोड़ना, मु, न वार् (श्वा आ से) ४ यत्-मन् (प्रे) ।

पीछे, कि ति (हि पीडा) अनु (द्वितीया के साथ), पृष्ठ, पश्चात्, पश्चाद्-पृष्ठ, भागे-देशे २ अनन्तर, कर्त्तृ, पर, पश्चात् (मन् अन्य) ३ अनुपस्थितौ, अभावे, परोक्षे ४ निध नान्तर ५ हेतौ, कारणत्, निमित्तात् ६ अर्थ, अर्थ, कृते (वशी के साथ) ७ अन्त, अन्ति, परिणामे ।

—आना, मु, विर्लबेन या कालमतिक्रम्य आया (अ प अ) ।

—छूटना या रहना, मु, अनिकम्-अनिलम् (कर्म) मद्-चल् (श्वा प से) म्हायते (ना था) ।

—चलना, मु, अनु, इया (अ प अ), अनु, व्रत् (श्वा प से) म् (श्वा प अ) कृ ।

—पडना, मु, साप्रह प्रार्थं (जु आ से) २ सन-वध (श्वा आ से) अर्द्ध-व्यम् (प्रे) ।

—लगना, मु इष्टनिश्चये सनन अनुगम, २ रोगादिभि निगतरं पीड (कर्म) ।

पीटना, कि स (स पीटन) अभि-वध प्र, हन् (अ प अ), आहन् (अ उ अ),

प्रह (श्वा प अ, मत्तमी के साथ) २ तत् (जु), छुट (जु प अ), प्रह, आहन्, अर्द्ध-

पीड (जु) ३ दह (जु), निग्रह (क् प से) ।

म पु, आहति (स्त्री), आपान, प्रहार, तान, प्रहरण, पीडन, दटन, निग्रह, मृत्तु, शीर्ष, आपद्-विपद् (स्त्री) ।

पीटने योग्य, वि, आहननीय, प्रहरणीय, ताडनीय, दटयितव्य ।

पीटने वाला, म पु, आ अभि, हृष्ट, प्रहर्तृ, ताडयितृ, पीडक, दटयितृ ।

पीटा हुआ, वि, आहत, प्रहन्, नाशित, दडित इ ।

पीठ^१, स स्त्री (स पीठ) पश्चिमा, तट्ट चरम २ पश्चाद् पृष्ठ, भाग-देश ।

—चारपाई से छगना, मु, निगरा क्षि (श्वा प अ) छड़ी म् ।

—छोँकना, मु, वसित् प्रोत्सह (प्रे) ।

—दिखाना या देना, मु, पलाय (श्वा आ से) अपभाव (श्वा प से) २ परित्यज (श्वा प अ) ।

—घर हाथ फेरना, मु, दे 'पीठ छोँकना' २ पृष्ठ परावृत् (जु प अ) ।

—पीछे, मु, अनुपस्थितौ, परोक्षे ।

—पीछे रहना, मु परोक्षे निम् (श्वा प से) ।

—फेरना, मु, प्रस्था (श्वा आ अ) २ प्राड्मुखी म् (३४) दे 'पीठ दिखाना' ।

—छगना, मु, मल्लयुद्धे उत्तानो निपट (श्वा प से) २ सर्वथा पराजित (कर्म) ।

—छगाना, मु, मल्लयुद्धे उत्तान निपट (प्रे) ३ सर्वथा विजित (श्वा आ अ) ।

पीठ^२, स पु (स न) (काष्ठपाषाणधातु दिनिमित्त) आमन, पीठी २ (व्रतिना) कुशासन, विष्णु ३ प्रतिमाधार ४ अभि धान, आवास ५ सिंहासन ६ वेदी-दिवा ७ प्रदेश, प्रातः ।

पीठक, स पु, दे 'पीठ' १ २ शिविनाभेद ।

पीठा, स पु, (स पिठ) ३ भोज्यभेद । पिठ ।

पीठिका, स स्त्री (म) दे 'पीठ' (२) ।

२ (लयादीना) आधार, पाद ३ ग्रथमाग ।

पीठी, स स्त्री (म पिठिका), पिठाट्टदाली लि (स्त्री), पिठट्टिदल ।

पीडक, स पु (स) दुःख, द-दायक द्राविन्, क्लेशकर, पीडाकह ।

पीडन, स पु (स न) अर्दन, बाधन, उपमदन, क्लेशन २. दे 'दवाना' ।

पीडा, स स्त्री (स) वेदना व्यथा, दुःख, रुच (स्त्री) रुचा, अ(आ)ति (स्त्री), क्लेश, बाध धा वानना, कष्ट, कष्ट, परि स नाप ।

—कर, वि (स) दुःख स्वरूप, वर आवह प्रद शं [—करी (स्त्री) = दुःखदा] ।

मानसिक—, स स्त्री (स) आदि, मनो-दया, वितोद्रेग ।

शारीरिक—, स स्त्री (स) व्याधि, रोग ।

पीडित, वि (स) दुःखित, व्यथित, क्लेशित, स-वध, सदन, कष्टगण ।

पीडा, स पु (स पीठ) दे 'पीठ' (१) ।

पीडी, स स्त्री (स पीठी) पीठक क (वाष्ठा निनिर्मित) उपासना, धुद्रामनम् ।

पीडी^२, स स्त्री (स पीठी) वक्षपरम्पराया विपुषितामहपुत्रवीशदीना पूजापरस्वान, *मन निकम ।

पीत, वि (स) हरिद्राम, दे 'पीला' ।

पीतल, स पु, दे 'पित्तल' ।

पीतावर, स पु (स न) हरिद्राभवस्त्र २ श्रीकुण्डल वि, पीतवलाधारिन् ।

पीडडी, स स्त्री, दे 'पिरी' ।

पीन, वि (स) पीवर, स्मृत, पुष्ट, मामल ।

पीनक, स स्त्री (हि पिनवना) अकेनशत्रा, अहिफेननिरा ।

पीनता, स स्त्री (स) पीवता, स्मृता, पुष्टता ।

पीनस^१, स पु (स) अपीनम, नामिरा मय, प्राणशक्तिरहितम् ।

पीनस^२, स स्त्री (का पीनम) दे 'पार्ली' ।

पीना, कि म (स पान) पाथे (स्वा प अ), चम् (स्वा प म), पान क २ मद् (स्वा आ स) ३ (कोपादीन्) निर्मन्त्रम् (स्वा प अ), प्र, शम् (प्रे) ४ मध पा, मुरापान क ५ उर, शुम् (प्रे) ६ घूम पा, घूमपान क ७ ५, धय, पान, आचमन, पीनि (स्त्री) ।

पीने योग्य, वि पेय, पानीय, चमनीय, पेय ।

पीनेवाला, स पु धय पादिन्, पाठ २ पान, आमक्त रत शौट, मयप ।

पीया हुआ, वि, पीत, भीत, चात ।

पीनोजी, स स्त्री (स) पीवरतनी गौ ।

पीपब, स स्त्री (स पूय-य) क्षतन, मलय, प्रमित, पूयन, पुणपम् ।

—पडना, कि अ, पूय (स्वा आ से) ।

पीपल^१, स पु (स पिप्पल) अश्वत्थ, क्षीरशुचिनोधि, द्रुम, चर, दल पत्र, कुल राशन ।

पीपल^२, स स्त्री, दे 'पिपली' ।

पीपलामूल, स पु, दे 'पिपलामूल' ।

पीपा, स पु (देख) *पट्टपानम् ।

पीयु, स पु (स) काफ, वायस २ सूर्य ३ अग्नि (पु) ४ उल्लू ५ समन ६ सुवर्णम् ।

पीयूष, स पु (स पु न) सुधा, अमृत २ (नवप्रमृताया यो) दुग्धम् ।

—रपों, वि (स इन्) सुधामयिन्, सुमपुर ।

पीर^१, स स्त्री (स पीठा) दे 'पीठा' २ सहा सुभूति (स्त्री) ३ प्रमवपीठा ।

पीर^२, वि (का) दृढ, जठ २ धूर्त । स पु, धर्मगुरु, सिद्ध (सुमलमान) ।

पीरी, स स्त्री (का) जरा, वाध-कयम् ।

पील, स पु (का) पत्र, द्विप ।

—पाँव, स पु (का + हि) इलीपद, शिली पदम् ।

पीला, वि (स पीन) पीतल, हरिद्राम, सुवर्ण, तुकुम, वर्ण २ निस्तेयस्क, कानिहीन । (पीली (स्त्री) = पीना, हरिद्रामा) ।

—सुखार, स पु, पीनस्वर ।

—पडना वा होना, सु, पाडुच्छाय (वि) भू, गतश्रीर नीरक्त (वि) जन् (दि आ से) ।

पीलिया, स पु (हि पीला) दे 'पांडुरोग' ।

पीलू, स पु (स पील) शुक्ल, शीतमह, विरेचन, इवाम, वरमवस्रम २ इमि, बीर ३ रागभेद ।

पीव, स पु, दे० 'पी' । स स्त्री, दे० 'पीप' ।

पीवर, वि (स) दे 'पीन' ।

पीसना, कि म (स पेयण) पिप्पुद (र प अ), कून् (लु), चूर्णा क, मृद (म् प से) २ मवर्त पिप् ३ विरद

परिश्रम् (दि प से) । म पु, वेषण, चूर्णन, मदन, मडन २ वषणीयपदार्थ ।

पीसने योग्य, वि, वेषणीय, चूर्णयितव्य इ ।

पीसने वाला, म पु वेषक, चूर्णयितृ मन्क ।

पीसा हुआ, वि, विष्ट, चूर्णन, मारत ।

—पीसना, मु, मनन घोर-त्र परिश्रम ।

पीहर, स पु (म पितृगृह) नारीणां वि वेगमन् (न) ।

पुगव, म प (न) वृष वृषभ । वि श्रेष्ठ उत्तम (उ नरपुगव = मानवोत्तम) ।

पुप, म पु (म) उत्कर, राशि, चय ।

पुड, म पु (स) पुड, दे 'निलक' ।

पुडरीक, म प (स न) शुक्लपद्म शतपत्र, महापत्र, मित, अत्रुन-अभोजन २ कमल ३ मिह ४ व्याघ्र ५ निलक ६ श्वेतच्छत्र ७ शकरा ८ तीक्ष्णविशेष ९ कुष्ठभेद ।

पुडरीकाक्ष, स पु (म) विष्णु । वि, कमल नयन (नयनीना स्त्री) ।

पुड, स पु (स) दे 'पुडक' (१) २ दे 'पु' रीक' (१) ३ दे 'पुड' ।

पुडूक, म पु (स) रमाल-स्त्री, इक्षु-नाटी योनि (स्त्री), रमद्रालिका, करकशालि, इक्षुभेद । २ माधवी लता ३ निलक ४ चित्रकवृक्ष ।

पुलिग, म पु (म न) पुष्पविह २ दिवन ३ (प्राय) पुरुषवाचकशब्द (न्या) ।

पुष्कली, म स्त्री (स) कुल्या, व्यभिचारिणी, वपारवा, स्वैरिणी ।

पुम्बन, स पु (म न) मस्वारभेद (धर्म) ।

पुस्व, म पु (म न) पीरुष, पुरुषत्व, मैथुनपानार्थ २ शुक्र, धीर्य ३ तेजस, ओजस् (न) ।

पुआ, स पु (स पूष) अपूप, पिष्टक ।

पुआल, म पु, दे 'प्याल' ।

पुकार, स स्त्री (हि पुकारना) आह्वयन, आह्वान, आवाह, अह्वानि (स्त्री), आका (क)रण-या, मवापन २ परिदेवन, दुःख निवेदन ३ प्रवलप्रार्थना, उच्चस्वरेण वाचना ४ चीत्कार, उत्क्रोश ।

पुकारना, कि म (म प्लुतकरण) आ हं (भ्वा ष अ) आकृ-मपुष् (मे) २ उच्चै वध (चु), उदधुष (मे) ३ नार

स्वरेण याच (भ्वा आ से) प्रार्थ (चु आ से) ४ रक्षार्थं आविरुश (भ्वा ष अ) ५ (प्रतिकारार्थं) परिदेव (भ्वा आ से, चु) दुःख निवेद (चु) ६ नाम कृ, अभिधा (चु उ अ) । म पु, दे 'पुकार' ।

पुकारने योग्य, वि, आह्वेय आकार्य, संबोधनीय ।

पुकारने वाला, म पु आह्वयन, आकारक इ ।

पुकारा हुआ, वि, आहूत आचारित इ ।

पुक्कश, पुक्कस, स पु (म) निषादाद शूद्राणां जानो मनुष्य वर्णमकरभेद । वि अपम नीच (—स्त्री स्त्री स्त्री) ।

पुस्तराग, स पु (स पुम्भराज) पुम्भराग, यीन, यीन स्मृति-मणि-अश्मन् (पु), मजुमणि ।

पुस्ता, वि (का नद्) मन्त्र, प्रन्त्र २ वृद्ध, कठिन ३ स्थायिन् ४ वक्त्रेष्टकानिमित्त ५ अभिषु ६ अनुमविन् ७ निश्चित ।

पुचकार री, स स्त्री (हि पुचकारना) पुच, कार-करण-कृति (स्त्री) ।

पुचकारना, कि स (अनु पुच) पुचपुचायते (ना धा), पुचिनि शब्द कृ ।

पुचारना, कि म, दे 'पोगना' ।

पुच्छ, म स्त्री (स पु न) दे 'पूछ' ।

पुच्छल, वि (स पुच्छ) पुच्छिन्, सपुच्छ, लागूनिन्, लागूवद् ।

—तारा, स पु, शूभ, केतु, उल्का, उषात ।

पुटल्ला, स पु (हि पूछ) दीपपुच्छ-च्छ, लव-लागुल २ चादुराग, मिथ्याशक्त ३ परिहायस्मिन् ।

पुतना, कि अ (हि पूजना) पूत-अभ्यवर् (कर्म) ।

पुजाना, पुजाना, कि प्रे, व 'पूतना' के प्र रूप ।

पुनापा, स पु (स पूजापत्र) पूना, प्रमेव पुन २ पूजासामग्र्यी, देव-उपायन-उपहार, नैवेद्यम् ।

पुजारी, स पु (स पूजाकारिन्) प्रतिमा, पूजक, देव-लोक २ भक्त, उपामक ।

पुटा, म पु (अनु) शीकरासिक २ आ ईषद्, रत्न ३ आ ईषद्, मिश्रण-संपर्क ।

पुट^२, स पु (म पु न) आच्छादन, आवरण,
कोप, सिधान्त, वेष्टन ० पर्णपुट-ट, पत्र,
द्रोण ३ द्रोणाकारपदार्थ (उ, अचलिपुट)
४ औषधपात्राय पात्रभेद ।

—पाक, म पु (म) पुनर्स्थापनचर्चन
(वैद्यक) ।

पुटकी, म स्त्री (म पुटक) दे 'पोगली' ।
पुटित, वि (स) चूर्णित, पिष्ट २ बिदारित,
छेदित ३ सकुचिन, आवुचिन ।

पुट्टा, म पु (म पुट्ट) निगब, चपन,
कटिप्रोष, २ अघादीना निगब ३ ३ गधा
वरकपृष्ठम् ।

पुट्टी, स स्त्री (हि पुट्टा) चरन्नेमी
भाग ।

पुट्टा, स पु (सं पुट्ट-ट) पत्रकोट ० दे
'पुटी' ।

पुट्टिया, स स्त्री (सं पुट्टिया) पत्र, पुट्टिया
२ औषधपुट्टिका ।

पुट्टी, स स्त्री (मं पुट्टी) दे 'पुट्टिया'
२ पट्टवर्मन् (न) ।

पुण्य, स पु (स न) शुभादृष्ट, सुकृत, धर्म
सुभद्र, कृत्य, धर्म, वृष, भेद्यन् (न) । वि,
शुभ, मंगल, पवित्र, अद्र, शाल्य धर्म, विहित ।

—भूमि, म स्त्री (म) भारत, भ(भा)रतवर्ष,
आयावन ।

—लोक, म पु (म) स्वर्ग, नाक, सुर
लोक ।

—वान्, वि (म-वन्) } दे 'पुण्यवासा' ।
—शील, वि (म) }

—दलोक, वि (स) मन्त्रित, आर्षकृत ।

—स्थान, म पु (न) पवित्रस्थल
२ तीर्थस्थानम् ।

पुण्याभा, वि (स-मन्) पुण्यवत्, पुण्य
शील, धर्मशील, धार्मिक, धर्मात्मन् ।

पुण्योदय, म पु (स) सीमान्वोदय, पूर्वं
सुहृत्फलम् ।

पुतला, म पु (म पुतलक) दे 'पुतली'(१)
(मृत्तिकावस्त्रादिनिर्मिता) प्रतिमूर्ति प्रति
कृति (स्त्री) ।

अङ्गल का—, वि, चतुर, दक्ष ।

साक का—, सं पुं, मानव, मनुष्यशरीरम् ।

पुतली, स स्त्री (मं पुतली) पुत्रिया, पुत्र

रिया, कुरटी, पाचालीलिका, शालभञ्जिका
२ कनीनिका, तारा, तारका ३ तन्वी, कुशाग्री
४ वस्त्रयत्र ५ ज्ञेयाकारमन्त्रपुराणम् ।

—का तमाशा, मं पु, पुतली, कौतुकनृत्यम् ।

—घर, स पु, वस्त्रचालय ।

—पिरता, सु, कनीनिके स्तम्भ (कर्म, मृत्यु
निष्ठ) २ दृष (दि प अ) ।

पुताई, स स्त्री (हि पोतना) लेप, लेपन
० लेपन, मृत्ति (स्त्री) भृत्या ३ सुधातेप ।

पुतारा, म पु, (हि पोतना) उपदेहत, मृते
पत्न्य २ लेपन उपदे न, पट-वस्त्रम् ।

पुत्तलिया, म स्त्री (मं) दे 'पुतली' (१) ।

पुत्तिका, स स्त्री (स) पतङ्गिका, मधुमक्षिका
विशेष २ दे 'दीमक' ।

पुत्र, स पु (म) पुत्र, आत्मन, तनय,
सुत, चतु, तनु(नू)ज, पुसतान, दायाद,
नदन, अत्मजन्मन् (पु), अगन, कुमार
दारक ।

—कद्दा, स स्त्री, (स) लक्ष्मणाकन्दा, पुत्रद
औषधिभेद ।

—स्त्री, स स्त्री, गर्भनाशकयोनिरोगभेद ।

—वती, स्त्री (म) सपुत्रा, सुतवती ।

—वधू, स स्त्री (सं) स्नुषा, वधू (स्त्री),
जनी, पुत्रपत्नी ।

पुत्रिया, स स्त्री (सं) दे 'पुत्री' २ दे
'पुतली' ३ कनीनिका, तारा ।

पुत्री, म स्त्री (म) कन्या, आत्मजा, दुहितृ
(स्त्री), तनुजा, सुता, तनया, स्वजा, नदिनी ।

पुत्रेष्टि, स स्त्री (स) पुत्रनिमित्तक-यज्ञभेद ।

पुद्दीना, स पु (का पोदीनह) पुद्दीन,
व्यङ्ग्यन, सुगन्धिपत्र, वातहारिन्, अजीर्णहर,
कविष्य ।

पुन, अव्य (स पुनर्) भूय (अव्य) ।

—पुन, अव्य (स) भूयोभूय, बारंबार, रेण,
अनेकवार, मुहु, अमरुद, पौन पुन्येन ।

पुनरावृत्ति, म स्त्री (म) पुन पाठ, पुन
रच्ययन २ आवृत्ति प्रत्यावृत्ति (स्त्री)
३ पुन, विधान संपादनं करणं ४ पुनरीक्षण,
मशोधनम् ।

पुनरक्ति, मं स्त्री (स) पुनरक्त्य, पुन
वचनम् ।

पुनर्जन्म, मं पु [म-जन्मन् (न)] पुन

भंव, पुनरत्पत्ति (स्त्री), प्रेत्यभाव, देहा
तरप्राप्ति (स्त्री) ।

पुनर्भू, स स्त्री (स) दिरूढा, दिशिषु
(स्त्री) ।

पुनरंशु, स पु (म दि) यामनी, आदित्यौ
(दि) ।

पुनोत्त, वि (म) पूत, पवित्र शुद्ध, निर्दोष ।
पुन्य, स पु, दे 'पुण्य' ।

पुमान्, स पु (म पुस) नर पु (पू)
रप, नृ (पु) ।

पुरदर, म पु (स) दे 'इद' २ नगरमण्डक
३ नीर ।

पुरघ्नी, म स्त्री (म) पुरभि (स्त्री),
कुटुम्बिनी २ नारी ।

पुर, अव्य (स पुरम्) अग्ने, अग्न, मसुरे,
पुरत, पुरस्तात्, समक्ष (सब अव्य षष्ठी के
साथ) २ पूर्व, प्राक्, अवाङ् (सब अव्य
पञ्चमी के साथ) ३ प्राच्या दिशि ।

पुर, म पु (स न) नगररी, पुर (स्त्री)
पुरा, पत्तन, स्थानीय २ शरीर ३ दुर्ग ।
४ गृह ५ लोक, भुवनम् ।

—द्वार, स पु (स न) नगर, द्वारम् ।

—वासी, म पु (स मिन्) पीर, नागरिक,
पुरनगर (जन) ।

अन —, म पु (स न) अवराध, शुद्धात्
पुरष्ठा, स पु (स पुरुष >) पूर्वजा, पूर्व
पुरुषा, पितर, वंशकरा (प्राय बहु मे) ।
पुरजा, म पु (का) (पञ्चमजादोनाम्) सट
ट, शकल-ल २ अक्षय, आयम् ।

चलता—, सु, चतुर ३ उद्योगिन् ।

पुरवा^१, म पु (म पुर >) लघुग्राम, ग्रामटिका ।

पुरवा^२, स पु (म पूर्ववात्) प्राचीपवन ।

पुरश्चरण, म पु (म न) पुरस्त्रिया, पूर्वा
मुष्ठानम् ।

पुरस्कार, म पु (म) पारितोषिक, उपायन,
प्रतिफल २ आदर, सम्मान, पूजा ।

पुरस्कृत, वि (म) आकृत, सम्मानित २
प्राप्तोपायन, लब्धपारितोषिक ।

पुरा^१, अव्य (स) पूर्व प्राचीन पुरातन, काले ।
वि, अतीत, प्राचीन (उ. पुरावृत्त) ।

पुरा^२, स पु (म पुर >) ग्राम ।

—कल्प, म पु (स) पूर्वकल्प २ प्राचीन
काल ।

पुराण, वि (म) प्राचीन, पुरातन । म पु
(म न) प्राचीन, कथा आख्यान २ हिंदू
नामष्टादश आख्यानग्रन्था (ब्रह्मविष्णुशिव
पुराणादि) ।

पुरातन, वि (म) पुराण, प्रतन, प्रतन,
चिरतन, चिरत्न, प्राचीन । (पुरातनी स्त्री) ।

पुराणा, वि (म पुराण) दे पुरातन २ जीर्ण,
शीघ्र, ३ अनुभवित, सानुभव ।

—सुरोट, मु, वृद्ध, जरठ २ अत्यनुभवित ।

पुरी, म स्त्री (स) नगरी, नृपावास,
दे पुर ।

पुरीष, स पु (स न) बिछा, दे 'पाखाना'
२ जलम् ।

पुरु, स पु (म) नृपविशेष, ययति कनिष्ठ
पुत्र । वि, प्रचुर, बहु ।

पुरुष, म पु (म) मनुज, मानुष, दे
'मनुष्य' २ नर, नृ, पुम ३ परमेश्वर
४ अत्मन् ५ पूर्वन्, पूर्वपुरुष, ६ पति
७ क्रियासर्वनामादीना रूपभेद (व्या)
८ शरीरम् ।

—कार, स पु (स) उद्योग, पुरुषार्थ ।

—घ्नी, स स्त्री (स) पतिघातिनी नारी ।

—धर्म, स पु (म) मनुष्यमात्रधर्म धर्म ।

—धैर्येयक, म पु (स) नरपथ नरपुंगव ।

—पुर, म पु (स न) गाधारदेशराधानी
(वर्तमान पिशाकर) ।

—मेध, स पु (म) यज्ञभेद, नरमेध ।

—वार, स पु (म) रविमण्डल दृष्टपति
शनि, नार नासर ।

—सूक्त, स पु (म न) ऋग्वेदस्य यजुर्वेदस्य
च सूक्तविशेष (यट 'सहस्रशीर्षा' से आरम्भ
होता है) ।

महा—, स पु (म) महानन, नरकुमार,
महात्मन् २ दुष्ट, दुरात्मन् ।

पुरुषत्व, स पु (स न) पौरुष, कीर्ति,
साहस २ पुरत्व, नरत्वम् ।

पुरुषार्थ, स पु (म) उद्यम, प्रयत्न, उद्योग,
परिश्रम, पौरुष, पराक्रम, पर्यवकार
२ पुरुष, प्रयोजन-रह्य (धर्माधिकारमोक्षा)
२ शक्ति (स्त्री), बलम् ।

पुरुषार्थी, वि (स यिन्) उद्यमिन्, उद्योगिन्,
परिश्रमिन्, उद्योग-उद्यम परिश्रम, शील-पुन
२ समर्थ, बलवत् ।

पुस्तोत्तम, स पु (म) पुस्तपत्रम्, नरकुत्तर,
मनुजश्रेष्ठ ० विष्णु इ श्रीकृष्ण ।

पुरोहित, म पु (म) पुरोधम (पु),
मौखिक धर्ममादिवाग्विद याज्ञिक,
याज्ञिक कर्त्ता ।

पुरोहिताई, म स्त्री (म पुरोहित >)
पौरोहित्य, पुरोहितकर्मन् (न) ० पुरोहित
दमिणी ।

पुरोहितानी, स स्त्री (स पुरोहित >)
पुरोहित, परनी भार्या ।

पुल, स पु (का) मेतु, वारण सवर ।
—बोधना, सेतु बध् (क् प अ) निर्मा
(जु आ अ) ।

पुलक, म पु (स) रोमाच राम, उद्गम
हृष विकार-उद्भेद, त्वगुष्ण, त्वगदुः
२ रत्नभेद ।

पुलकावली, स स्त्री (सं) पुलकावलि
(स्त्री), हर्षोन्मुक्तरोमाणि (न इट्) ।

पुलकित, वि (स) रोमाचन, रोमाकन,
पुलकित, नानपुलक, समुल्लव, कट्टकित
२ मङ्गल, प्रसन्न ।

—करना, कि म, रोमाचयति (ना धा),
रोमाणि उद्दृष्ट (मे) ।

—होना, कि अ, रोमाणि उद्गम (भ्वा प
अ) दृष्ट (दि प से) ।

पुलपुला, वि (अनु) दे 'पिलपिला' ।

पुलाव, म पु (का) मामौदन, भक्तमिषम्,
पलातम् ।

पुलिङ्ग, म पु (स) बदालभेद, प्राचीन
चार्तिविशेष ।

पुलिङ्गा, स पु (हि पूला) कुर्वा,
भार, पौष्टी ।

पुलिन, म पु (ल पु न) लोयोत्थितपट
टटी ० कूल, तीर, तट, ३ सैवन, सिकता
मय ताम् ।

पुलिम्, म स्त्री (अ) नगररक्षका, पुरपाला,
रक्षापुर्या (बहु) रक्षिण ।

—इन्स्पेक्टर, म पु (अ) रक्षक-रक्षि,
निराभार ।

—मैन, म ॥ (अ) रक्षक, दटपर, रक्षक
रक्षा-गर्ग, पुरप, नगरपाल, रात्रपुरप ।

—मव इन्स्पेक्टर, स पु (अ) रक्षको
निरीक्ष, दे 'कनेदार' ।

—सुपरिण्टेण्डेंट, स पु (अ) रक्षकाध्यक्ष ।
पुचाल, स स्त्री, दे 'पचाल' ।

पुश्त, स स्त्री (का) दे 'पीठ' २ दे
'पीठ' २ ।

—दर पुश्त, कि वि, 'वशपरपरया' ।

पुस्तैनी, वि (का पुस्त >) कुलक्रम-वश
परपर, अगत प्राप्त, परपरीय, परपरी ।

पुष्कर, स पु (स न) कमल, पद्म २ जल
३ तडाग-ग ४ गणशुभम् ॥ तीर्थविशेष ।

पुष्करिणी, म स्त्री (स) कासार २, तगा
क, सरनी, मरोवर ।

पुष्कल, वि (स) अधिक, बहु, प्रचुर, प्रभूत,
बहुल, विपुल २ पर्याप्त, पूर्ण ।

पुष्प, वि (स) पालित स, वर्धित, पोषित,
भृत २ बलिष्ठ, पीन, पीवर ३ बल, प्रद
बधक ४ दृढ ।

पुष्ट, म स्त्री (सं पुष्ट >) पुष्टिकर अक्ष
भोग्य वा, रसायनम् ।

पुष्टता, म स्त्री (म) पीनता, पीवरता,
दुर्भाग्य ।

पुष्टि, स स्त्री (ल) भरण, पोषण, स वर्धन
० बलिष्ठता, दृढता, पीवरता ३ दुर्भाग्य
४ समर्थन, अनुमोदन, दृढीकरण, उपो
द्वहनम् ।

—कारक, वि (सं) पुष्टि-कर-दायक, बल
वीर्य-वधक ।

पुष्प, स पु (म न) कुसुम, प्रखल, मणी
चक्र, सुम, सुन, सुमन, प्रमव, सुमनस्
(स्त्री न, क्वल बहुवचन में) २ आर्तव,
अनुवाय, रज लाव ३ नेत्ररोगभेद (दि
पूला) ४ बुद्धेरविमानम् ।

—करक, —डक, स पु (सं) उन्नविन्द्या
प्राचीनशिरोधानम् २ कुसुमकरक ।

—काल, स पु (स) वसत, अनुराग ।
२ नारीणा आर्नकरज, समय ।

—कीट, स पु (म) अमर, पटपट
२ कुसुमकीट ।

—न, स पु (सं) मकरन्द, भ्रामरम्,
पुष्परम ।

—पुष्प, —वाण, —शर, —पुर, स ॥ (सं)
पुष्पधनम् (पु) मदन, दे कामदेव ।

—पुर, स पु (म न) दे 'पुन्ता' ।

—रन्, म पु (म) पुष्पासन, झामर,
मकरद ।

—राज, म पु (म) दे 'पुखराज' ।

—रेणु, स पु (म) पराग, पुष्पधूलि (स्त्री) ।

—वाटिका, स स्त्री (स) पुष्प-कुसुम-वाटी
उद्यानम् ।

—वृष्टि, स स्त्री (म) पुष्प-कुसुम-आसार
वृष्टि ।

पुष्पक, स स्त्री (स पु न) कुबेरविमान
२ पुष्प ३ चक्षुरोगभेद ४ पितृमस्मन्
(न) ।

पुष्पित, वि (म) कुसुमित, कुसुमपुष्प,
त्रिशिष्टयुक्त ।

पुष्पोद्यान, स पु (स न) दे 'पुष्पवाटिका'
('पुष्प' के नीचे) ।

पुष्प, स पु (स) सिध्य, सिध्य, (अष्टम
तद्ध्र) २ पौषमान ।

पुस्तक, स पु (स पु न) ग्रन्थ, पुस्त-न्ती ।

पुस्तकालय, स पु (स) ग्रन्थ, आलय
अगार शाला ।

पूँज, स स्त्री (म पुञ्ज ञ्) लागू(गु)ल,
छत्र, (गालीवाली पूँछ) बालधि, बालहस्त
२ पृष्ठपश्चाद्भाग ३ दे 'पिठलगा' ।

पूँजी, स स्त्री (स पुन >) मूल, देव्यधन,
मूल २ ईशितसर्पति (स्त्री) धन, पुन राश ।

—पति, स पु, देव्यवर, धनित, वीरीश्वर,
धनाढ्य ।

पूआ, स पु (म पूय) अपूप, पिष्टक ।

पूग, स पु (स) गु(गु)वान, क्रमु, क्रमुक
२ समुदाय, समूह ३ (स न) क्रमुक
गु(गु) वाक, फलम् ।

—फल, पूगीफल, स पु, (म पूगफल) पूग,
चिका कग-कणा, उद्देगम् ।

पूज, स स्त्री (हि पूजा) पूज्या, प्रच्छन्ता,
अनुयोग, प्रन्न, निशामा = आदर, समान,
प्रतिष्ठा ३ आवश्यकता, प्रयोजन ४ अन्वेषण
णा, गवेषण णा ।

—गाछ, }
—ताउ, } स स्त्री, दे 'पूछ'(१) ।
—पाछ, }

पूजना, कि स (म पू(प्र)च्छन) प्रच्छ
(गु प अ), प्रदनयति (ना था), अनुयुत्
(रु आ अ) २ आहू (गु आ अ)

ममन् (प्रे) । म पु, प्रच्छन्ता, पूछा,
अनुयोग, निशामा ।

पूजने योग्य, वि, प्रष्टव्य, निशामितव्य, अनु
योक्तव्य ।

पूजनेवाला, स पु प्रष्ट, अनुयोक्त, निशाम ।

पूजा हुआ, वि, पूज, अनुयुक्त, निशामित ३ ।

वातन—, मु, न आहू (गु आ अ) न
ममन् (प्रे) ।

पूजक, स पु (स) पूनयित, अर्चक, उपा
मक, आराधक भक्त ।

पूजन, स पु (म न) पूजा, अभि, अर्चन
ना अर्चा, आराधन-न्ता, सपर्या, उपासन-न्ता
२ समानन, सत्करण ३ वदन-न्ता ।

पूजना, कि स (म पूजन) पूज् (जु),
अभि, अर्च (स्वा प ने, जु), उपाम्
(अ आ से), आराध (स्वा प अ),
मा (स्वा व अ) २ समन् (प्रे), आहू
(गु आ अ) ३ वद् (स्वा भा से),
नमस्यति (ना था) ४ उत्कीर्ण दा । म पु,
दे 'पूजन' ।

पूजनीय, वि (स) दे 'पूज्य' ।

पूजा, स स्त्री (म) दे 'पूजन' ।

पूजाई, वि (स) दे 'पूज्य' ।

पूजने योग्य, वि, दे 'पूज्य' ।

पूजनेवाला, स पु, दे 'पूजक' ।

पूजा हुआ, वि, दे 'पूजित' ।

पूजित, वि (म) अभि, अर्चित, आराधित,
उपामित २ समानित, गाहृत, गच्छन
३ वदित, नमस्कृत ।

पूज्य, वि (म) पूजनीय, पूनयितव्य, पूजाई,
अभि, अर्चनीय, आराधनीय, भजनीय
२ अदरणीय, माननीय, सत्कार्य, वदनीय ।

—पाउ, वि (स) परम-अत्यत, पूजनीय
आराध्य ।

—पूज, स स्त्री (स) सत्कार्य-मत्कार,
अर्चनीय पूजनीय, वन्दन-समादर ।

पूडा, स पु (स पू) अपूप, पिष्टक ।

पूडी, स स्त्री दे 'पूरी' ।

पूत, वि (सं) दे 'पवित्र' ।

पूत, स पु, दे 'पुत्र' ।

पूतडा, स पु (हि पूत) शिशु-बालक,
आस्तर-विस्तर ।

—(डो) का अमीर, मु परपरागत के मा
गत परपरीण, धनिक बनाह्य ।

पूतना, स स्त्री (म) राक्षसीविशेष २ बाल
रोगभेद ।

पूति, स स्त्री (स) दे पवित्रता ।

पूनी, स स्त्री (म पू >) पिजिना, तूल,
नालिका वारिका ।

पूप, स पु (म) अपूप पिष्टक ।

पूर, स पु (म) नल निष्पन्न दृष्ट २ अन्न
संशुद्धि (स्त्री) ।

पूरक, वि (स) पूरयितृ, पूरणकृत् २ सैलिक
परिशिष्टात्मक । म पु, बीजपूर, मातृगुण,
सुरल २ गुणवीक (गणित) ३ प्राणा
पामभेद ।

पूरण, म पु (म न) भरण, निनयन,
मकुलीकरण ध्यापन २ निर्वतन, निष्पादन,
समापन, मपादन ३ अकगुणनम् । वि,
पूरक, पूरयितृ ।

पूरना, क्रि स (म पूरण) पूर (पु) पूम्
(जु उ अ) २ आच्छद (जु) ३ मपद
माधू (प्रे) ४ ध्मा (ध्वा ष अ), (वायुना)
पूर (न) ५ दे 'बटना' ।

पूरव, स पु, दे 'पूर्व' ।

पूरवी, वि, दे 'पूर्वी' ।

पूर, वि (स पूण) पूरित, व्याप्त, सरीर्य, आ
सममा, कुल, आविष्ट, जित्तिन, समृत २
समग्र, समस्त, सरल, ३ अविफल, निर्दोष
४ दयेष्ट, पर्वोत्त ५ सपन्न, मपादित, कृत ।

—करना, क्रि म समाप (स्वा उ अ)
निर्वृत् (प्रे), नि शिष (प्रे), अत गम्
(प्रे), मपूर (जु) ।

—होना, क्रि अ, समाप (वर्म), अत गम्
(ध्वा ष अ), नि लेवी भू, मपद (दि
आ अ) ।

—उत्तरना, मु, यथोचित कृत् (ध्वा आ से)
२ मरणी भू ।

—होना, मु, स्वर्ग दिन गम्, मृ (तु आ अ) ।

पूरित, वि (म) दे 'पूरा' (१) । २ वृष्ट, वृष्ट
३ गुणित, आति हत ।

पूरी, म स्त्री (म) पू(चो)जिवा, पूषिका ।

पूतना—, दम्भुली ।

पूना, वि (स) दे 'पूरा' (१५) ।

—काम, वि (स) आप्तकाम, सङ्कल्पनीय
२ निष्काम, अकाम, निरिच्छ ।

—चंद्र, स पु (स) पूर्णेन्दु ।

—विराम, म पु (स) वाक्यपूर्णतान्निहम् ।
पूर्णतया, } कि वि (म) अशेषन, सर्वथा,
पूर्णतः, } साकल्येन, सामग्र्येण, मामस्त्येन,
निरवशेषम् ।

पूर्णतः, म स्त्री (स) ममग्रता, नाकन्य
२ सिद्धि, समाप्ति (स्त्री) ३ अविश्रुता,
निर्दोषता ४ पूरितत्व, समुत्तता ।

पूर्णमासी, म स्त्री (स) दे 'पूणमा' ।

पुर्णाहुति, म स्त्री (म) यागानाहुति (स्त्री)
२ अनुष्ठानावमानकृत्यम् ।

पूणिमा, म स्त्री (म) पूणमा, पूर्णमासा,
राका, पिन्दा, चाद्री सिता, शुभमती, अयोत्सनी ।

पूर्य, स पु (स न) पालनं २ बाधीकृप
तदाक्रान्तिनिर्माणम् ।

पूरित, म स्त्री (म) (आरम्भश्च) समाप्ति
निवृत्ति मिद्धि निष्पत्ति (स्त्री) २ पूणता,
ममग्रता ३ पूरण ४ गुणन ५ अपक्षितद्रव्यो
पस्थापनम् ।

पूर्व, म पु (म पूर्वा) प्राची, पूर्व, दिशा दिश
(स्त्री) आशा, ऐश्वर्य २ पूर्वदेश, वीरस्यजन
पद । वि, अग्रग, पूर्वाग, अग्र पूर्व गामिन्
वतिन् २ पुराण, प्राचीन ३ दे 'रिष्टम्' ।
क्रि ति, प्राक्, अर्वाक् (दोनों अन्त्य) ।

—काय, म पु (स) (पञ्चाना) देहाग्रभाग
२ (नराणा) देहोर्ध्वभाग ।

—काल, स पु (म) प्राग् पूर्वप्राचीन,
मग्नय काल वेला ।

—कालिन्, वि (म) पुराण, प्राचीन, प्राग्

—कालीन, वि (म) कालीन, पुरातन, प्राक्कन ।

—रत्न, वि (स) प्राग्विहित २ पूर्वजन्महन ।

—राम, म पु [स राम (न)] प्राग्गति
(स्त्री) ।

—दिशा, म स्त्री (म) दे. 'पूर्व' म पु (१) ।

—यस्य, म पु (म) शास्त्रीय, प्रदन गर,
चोप, देव्य, वजिरा २ कृष्णरथ ३ दे
'पूर्ववाद' ।

—पक्षी, म पु (म-विन्) वारिन्, मिर्दान
निरोधित ।

—मीमांसा, स स्त्री (म) तैमिनिमुनिप्रणीत
दशतन्त्रयविशेष ।
—वत्, किं वि (म) यथापूर्व, पूर्वमङ्गलम् ।
—वर्ती, वि (स त्तिन्) प्राप्तावतिन्, पूर्व-अग्र,
गामिन् ।
—वाद, स पु (स) भाषा, भाषापाद पूर्व,
पक्ष, प्रतिष्ठा, अभियोग दे 'नालिश' ।
—वादी, स पु (स दिन्) अभियोक्तृ
अधिन्, वादिन् शिरोवर्तिन्, दे 'मुद्व' ।
पूर्वज, स पु (स) पूर्वपुरुषा, पित्र (बहु)
२ अग्रज, ज्योत्सव भ्रातृ । वि, प्रागुत्पन्न ।
पूर्वत, अव्य (स) प्रथम, प्रथमतः २ पुरत
अग्रत (मत्र अव्य) ।
पूर्वतन, वि (स) पुरातन, प्राचीन, प्रतन,
प्रत्न ।
पूर्वापर, वि (म) अग्रिमपश्चिम पूर्वपरवर्तिन् ।
स पु प्राचीनप्रतीची (दि) २ हानिलाभी
(रि) ।
पूर्वाभिमुख, (वि स) प्राङ्मुख (स्त्री स्त्री) ।
पूर्वाह, स पु (स) त्रिधा विभक्तदिक्कमस्य
प्रथमभाग, प्राह, प्रतरह ।
पूर्वा, वि (म पूर्वाप) प्राग्य, पौरुष्य, पूर्व
देशीय, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् [स्त्री (स्त्री)] ।
॥ स्त्री, पूर्वायमापाविशेष २ रागिणीभेद ।
पूर्वाय, वि (स) दे 'पूर्वा' वि ।
पूला, स पु (म पूल) पूलव ।
पूप, पूव, स पु, दे 'पौव' ।
पृथक्, वि (स) भिन्न, व्यविरक्त, विद्विष्ट,
विभक्त, अमलग्नः । अव्य, विना, ज्ये, अत
रेण (मत्र अव्य) ।
—पृथक्, अव्य, वि, वि, भिन्नम् ।
पृथक्का, स स्त्री (म) पृथक्त्व, पृथग्भाव,
पार्थक्य, भिन्नता, विरलेष, विभेद ।
पृथा, स स्त्री (म) कुन्ती, पाण्डुपत्नी,
सुषिष्ठिरादिजननी ।
—तनय, स पु (म) सुषिष्ठिर, भीम,
अर्जुन, (प्राय अर्जुन, पार्थ) ।
—पति, स पु (म) पाण्डुपुत्र, कुन्तीपति ।
पृथिवी, स स्त्री (म) पृथ्वी, पृथिवि (स्त्री),
भूमि भू भूमि (स्त्री), धरा, धरित्री, क्षीणी,
वसुधा, वसुमती, वसुधरा, अवनीनि (स्त्री),
मेरिनी, धरणीनी (स्त्री), मटी हि (स्त्री),
अचलद्रीणा, अचल, स्थिरा, इडा ।

—तल, स पु (स न) भूधरणी, तल २
समाग ।
—नाय, स पु (स) भू, पति पाल ।
पृथु, वि (म) विस्तीर्ण, विस्तृत, विशाल,
२ बहु, प्रभूत इ विशिष्ट ।
—कीर्ति, वि (स) अतिशयस्त्विन् । स
स्त्री, वसुदेवभगिनी ।
—दर्शी, वि, (स) दूरदर्शिन, प्राह ।
—लोचन, वि, विज्ञात, नेत्र-नयन ।
—शेखर, स पु, (म) गिरि, पर्वत ।
—स्कंध, स पु (स) शूकर, कोल ।
पृष्ट, वि (स) अनुवृत्त, प्रदिनत, निशामित ।
पृष्ट, स पु (स न) दे 'पीठ' (१२) ।
२ पुस्तक, पत्रार्थ इ पुस्तकपृष्ठम् ।
—पोषक, स पु (स) सहाय-यक, उपकर्तृ ।
प्रेग, स स्त्री (म प्रेया>) दोलन, प्रेक्षण,
दोलाति (स्त्री) ।
—चक्राना या चक्राना, ■, सवेग प्रेक्ष (प्रे),
उच्चैः प्रेक्षोत्थयति (ना भा) ।
पेदा, स पु (म पिङ्-ड>) तल, अधोभाग,
वृत्त ।
पेंसिल, स स्त्री (अ) अङ्गुली, स्वपट्टेखनी,
वर्तिका, वणमातृ (स्त्री) ।
पेच, स पु (फा) व्यावर्तन, मोदन, आ-कुचन
२ विन, विप्रात प्रत्युह इ धूर्तता, छात्र
४ उष्णीष-व्यावर्तन ५ वज्र इ यत्रावयव
७ वन्यकूलक ८ पतंगपुत्रसमग्रन ९ (मल्ल
युद्धादीना) यपगोपाय, युक्ति (स्त्री)
१० उष्णीषादेरलकार ११ दे 'पेचिश्' ।
—रुश, स पु (फा) अव्ययकीर्ण २
अपिधानकर्ष ।
—स्ताना, क्रि अ, मङ्गली-वर्तुली भू ।
—डालना, क्रि स, पतंगसूत्राणि मिथ संहित्
(प्रे) ।
—ताय, स पु (फा) अत, कोप कोष ।
—द्वार, वि (फा) आकुचित, व्यावर्तित
२ गहन, कठिन, दुर्बोध इ संहित्, मग्रथित ।
—पडना, क्रि अ, पतंगसूत्राणि परस्पर संहित्
(दि प अ) ।
—वान, स पु (फा) बृहद्भूमिपानयन्
२ भूमिपानयन्त्र्य ब्रह्माली ।
पेचक, स स्त्री (फा) सङ्गतन्त्रु, गोन् गोन्म् ।

पेचिना, स स्त्री (फा) प्रवाहिका आमरक्तम्
२ उदरवेदनाभेद ।

पेचीदगी, स स्त्री (फा) कौटिल्य, वक्रत्व
२ दुर्बोधता किञ्चित्त्व, गहनत्वम् ।

पेचीदा, वि (फा) } दे 'पेचदार' ।
पेचीला, वि (फा पेच) }

पेज, स पु (अ) पुस्तक, पृष्ठम् ।

पेट, स पु (स पेट >) उदर, पेट र
कुक्षि, पेट, मनुष्य २ गर्भ ३ आमाशय
४ अन्न नरण ५ अवनाश ६ विस्मार
७ जीवन, प्राणधारणम् ।

—काटना, सु, धनसंचयाय अल्पं खाद् (स्वा
प से) ।

—का धधा, सु, नीवनोपाय, आर्वाविका
माधनम् ।

—का पदा, सु, अजावरणम् ।

—का हलका, सु, क्षुद्रप्रकृति, लुब्ध, प्राकृत ।

—की आग, सु, सधा, इच्छा ।

—की आग बुझाना, —सु, क्षुधा निवृत्त (प्रे) ।

—गिरना, सु, गर्भ पत्र (स्वा प से) लु
(स्वा प अ) ।

—गुठगुठाना या बोलना, सु, वर्जन अन्
(दि आ मे) कर् (स्वा प से) ।

—दिखाना, सु, निगदादिप्र प प्रत्ययानि (ना
धा) ।

—पालना, सु, कृच्छ्रेण पोष (स्वा प से),
महाकथंचित् उदर प (लु प से) ।

—पीठ पक होना, सु अत्यत क्षि (स्वा प
अ), दुर्धीम् ।

—फटना, सु, क्षीर (वि) भू, धैर्यं मुच
(लु प अ) ।

—फूलना, सु, हासनिष्ठयेन उदर स्थग (स्वा
आ से) निव (स्वा प से) ।

—भर, सु, उदरपूजन यावत् २ यथेष्टम् ।

—भरना, सु, म परिपुष् (दि प अ),
परिपुष् (दि प अ) २ उदर पूर (स्मै) ।

—मे चूहे कूटना या दौड़ना, सु, निगरा क्षुध
(दि प अ), अत्यन्त अशुनावानि (ना धा) ।

—रहना, } सु गर्भ पृ (पु), अन्नवन्ती

—से होना, } भू ।

—वाली, सु, गर्भिणी, गर्भवती, अन्नवन्ती ।

—से पाँव निकालना, सु समन कुमार्गे
प्रवृत् (स्वा आ मे) ।

पेटा, स पु (हि पेट) मध्य, मध्यभाग २
विस्तृतविवरण ३ दे 'पिगरा' ४ मीमा
५ परिनि ६ सरित्प्रवाहमार्ग ७ नदी विस्तार
८ पथत्र ९ अन्नतन्त्रशिक्षिन्भाग ।

पेटो, स स्त्री (मं) पेटिका, लघु पेट पे
पेग, भोज्या, समुदाय २ नापितशेष प ।

पेटो, स स्त्री (हि पेट) कटिम्भारवध,
मेरुका, वाची २ दुग्धुत्तरान्निभम् ।

पेटोकोट, स पु (अ) कोटी, पटमान ।

पेटू, वि (हि पेट) औदार्य, उदरक्षुक्षि
भरि, जगद, वस्त्रम् ।

पेटेट, वि (अ) विशिष्टाभिनारक्षिता नवरचना ।

पेटून, स पु (अ) मरकत दे ।

पेट्रोल, स पु (अ) अन्नरत्नम् ।

पेठा, स पु (देख) (मकैद) पीनपुष्प,
कुमाद, पीनपुष्प, पुष्प इत्य, कल (पांन)
पेठा-दे 'कुम्हवा' ।

पेह, स पु (स पिट ट >) दे 'बृष' ।

पेहा, स पु (स पिट) शिलापिट ट २
अर्द्रचूर्णपिन् ।

पेडी, स स्त्री (हि पेड) तरु, स्कन्ध प्रकार
२ वयन्ध ३ नाववशीदलभेद ४ सट्ठब्धनी
नीनीपुष ।

पेडू, स पु (हि पेड) वसि (पु स्त्री)
२ गर्भाशय ।

पेदवी, स स्त्री, दे 'पिदी' ।

पेन्तान, स स्त्री (अ) वादक्य-पूवसेवा,
वृत्ति (स्त्री) ।

पेन्शनर, स पु (अ) पूवसेवावृत्तिभोजिन् ।

पेन्मिल, स स्त्री (अ) दे 'पेन्मि' ।

पेपर, स पु (अ) पत्र, दे 'पागत्र' २ क्लेश,
लेख्यपत्र ३ वृत्तसमाचार, पत्रम् ।

पेय, वि (म) पानोप, पानार्ह, पेय । म पु,
पल्लवपत्र २ जम्ब ३ दुग्धम् ।

पेयूय, स पु (म पे(पी)यूय प) मत्त व्रम
भुतावा गो क्षीर २ अमृत ३ अभिनवपुनः ।

पेरना, वि म (स पीन) (रमनीयादि)
निष्पाट (लु), निरूप (स्वा प अ)

२ निगरा पीट (लु) अर्द्ध (स्व प मु) ।

पेलना, वि स (स पीटन) सहमा निविश

(प्रे) बन्ना अन प्रविश (प्रे) २ (हस्ता
दिक्तेन) प्रविशन् (प्रे), प्रयुक्त प्रवृत्त (प्रे)
३ उपदेश (भ्वा आ से) अवाण (चु)
४ त्वन् (भ्वा प अ), प्राम (दि प
से) = बल प्रयुत् (ह आ अ) ६ ७
दे देरना (१२)।

पेल्लाना, कि प्रे व 'पेल्लाना' के प्र रूप।
पेल्ल, म पु (हि पेल्लाना) कलह, वस्तुद्ध
१ अपराध, दोष ३ आक्रमण ४ (बन्ध)
अपनारण मचल्लनन्।

पेश, कि वि (फ) अग्रे पुर, पुरत,
समुत्त (सब अभ्य)।

—आना, मु, ब्यवह (भ्वा प अ), आचर्
(भ्वा प से) २ गृह्यह (भ्वा आ से)।

—करना, मु पुरत स्था (प्र स्थापयति)
दृष्ट (प्रे) २ उपहृ (भ्वा प अ), अ
(प्रे अपयति)।

—चलना या जाना, मु, प्रभुत्व कृत्।

—होना, मु, उपस्था (भ्वा आ अ), पुरत
स्था (भ्वा प अ)।

पेशगी, म स्त्री (फा) प्राग्दण्डमूल्य, अग्रार्थ।

पेश (प, स) ला, वि (म) सुकुमार,
मृदु, मृदुल २ तनु क्षीण ३ सुन्दर, मनोस
४ विश, दृष्ट ५ छलिन्, मायिन्।

पेशवा, स पु (फा) नेतृ, नायक, अग्रणी
० पुरोहित ३ महाराष्ट्रभाषोपाधि।

पेशवाई, स स्त्री (फा) प्रत्युद्यमान, दे
अगवानी २ नेतृत्वम्।

पेशा, म पु (फा) व्यवसाय, उपजीविका,
वृत्ति (स्त्री)।

—कमाना या करना, मु वेदयवृत्त्या
निवाद कृ।

पेशानी, म स्त्री (फा) मन्त्र ० अभ्य
३ अभिमान।

—पर चल आना या पटना, मु, दुष (दि प
अ), दुर्ग (दि प मे)।

पेशान, म पु (फा, मि० म प्रसव) मूत्रम्।

—की अधिकता, स स्त्री, मूत्र, मेह
आधिक्यम्।

—जाना, स पु (फा) मूत्रलस्य, मेहननाला,
प्रसवमारम्।

—चल कर आना, स पु, मूत्रहृत्।

—रक्तना, स पु, मूत्र, रोष स्तम्भ।

पेशावर, स पु (फा) व्यवसायिन्,
उपजीविन्।

पेशावर, स पु (फा पेश + अवर >)
पुरुषपुत्रम्।

पेशी, स स्त्री (फा) व्यवहारद्वय, विचार
२ उपपुर, स्थान स्थिति (स्त्री), अग्रेभाव।

पेशी, स स्त्री (स) (देहस्था) माम पिनी
मधि (पु) ० वज्र ३ अन्त ४ अंस
कोश ५ ७. गभविष्टनचममपरोष।

पेशानगोड़े, स स्त्री (फा) भविष्यद्धार,
अनागतवधनम्।

पेषण, स. पु (म न) चूतन, मर्दन खननम्।

पेषणी, स स्त्री (स) पेषणशिला, पेषणि
(स्त्री), पट्ट मृदाश्मन् (पु)।

पैशन नी, स स्त्री (हि पार्थ + अनु, शन >)
पादगद, नूपुर-र, मजीर-रम्।

पैठ, स स्त्री (स पठ्यस्थान) दे 'बाजार'
३ दे 'दुकान'।

पैठ, स पु (स पाददट >) पदव्याम,
चरणपान, कमण २ पद, कम ३ मार्ग।

पैठा, स पु (हि पैठ) गग, पथ, पतिन्
२ मडरा, वाणिज्या ३ रीति (स्त्री),
प्रणाली।

पैताना, स पु. (दि पार्थ) खचान
पदधान, अदतान।

पतालाल, वि [स पचचलरिवाद (नित्य
स्त्री)]। स पु, उक्त मस्या, तदनी
(४-) च।

पैलीस, वि [स पचचिगन् (नित्य स्त्री.)]।
स पु, उक्त संख्या, तदनी (१-) च।

पसट, वि [स पचपठि (नित्य स्त्री)]।
स पु, उक्त मस्या, तदनी (६-) च।

प, अन्व (स पर) चरण निज, पर ० जम
तर, तदनु ३ निश्चयेन, अवश्यम्।

नो—, यदि।
तो—, तदा।

पै, अन्व (हि पास या स प्रति) मनीषये,
निकटडे २ शक्ति, दिशि।

पे, प्रत्य (स उपरि) षधि, प्राय सप्तमी
विभक्ति मे = द्वारा, प्राय तृतीया विभक्ति मे ।

पेकेट, म पुं (अ) लघुकृच २ पत्रकोश ।

पेगावर, म पु (का) दशहृत, धर्मप्रवक्तृक ।

पेगाम, म पु (का) मदेश वार्ता ।

पेड, स स्त्री (म प्रविष्ट) प्रवेश, प्रविष्टि
(स्त्री) २ गति प्राप्ति (स्त्री), गतागतम् ।

पेड, म पु (अ) पत्राव्य ।

पेई, म स्त्री (दि पैर) दे 'मीडी' ।

पतरा, म पु (स पशानर) युद्धे पादन्वस
प्रकार ।

—बदलता, सु पादन्वाम परिश्रु (प्रे) ।

पैतृक, वि (म) विष्टु भवविष्टु विवक्षक, पित्र्य,
पैत्र [पैतृकी, पैत्री, (स्त्री)] ।

पैत्त, वि (म) पैत्तिक, वित्तप्रकोपज, पित्त,
कतिन उद्भूत ।

पैत्तल, वि (स) पीनलक पीनक-पित्तल,
मय निमित्त-सम्बन्धिन ।

पन्न, वि (म) दे० 'पैतृक' ।

पदल, कि वि (स पाद) पादचारी भूत्वा,
पदभ्यामेव, यान विना । वि, पाद चारिन्
गमिन् । मं पु, पदिक, पादय, पदगमिन्,
पदान नि, पदानिक, पदय, पति, पदय
२ पत्तय, पदानय, पदानिना (सव बड़) ।

पैदा, वि (का) जाल, उत्पन्न २ प्रवर्णित,
आविर्भूत २ आजन, प्राप्त ।

पेदाइश, म स्त्री (का) उत्पत्ति (स्त्री),
जन्मन् (न) ।

पैदाइशी, वि (का) महन, औत्पत्तिक
२ स्वाभ विर, प्राहृतिर, नैमगिक ।

पदवावर, म स्त्री (वा) द्विपिचल, शस्य
२ आद, अदायम् ।

पैना, वि (म पैन्) तीक्ष्ण, जिज्ञि(शा)न,
तेजित, क्षुण्ण । म पु, कृपाण, गोक-वैष्णुकम् ।

पमाइश, म स्त्री (का) मार्ग, प्रपरि मार्ग,
माननम् ।

—करना, कि स, दे 'मापना' ।

देमाना, म पु (का) माने, मान, दट न्यून
२, प्रपरि, माणम् ।

पैर, म पु, दे 'पर्व' ।

—गादी, स स्त्री, द्विचक्रो क्रिका, पादयानम् ।

पैरना, कि अ (स प्लवन) दे 'तेरना' ।

पैरवी, स स्त्री (का) अनु-गमनं मरण,
२ जात्रापालन ३ पक्ष, मंडन-समर्थन ४
उद्यम, प्रयत्न ।

पैरा, पैराप्राफ, स पु (अं) (प्रस्तावादिभ्यश्च)
मट, भाण, अनु परि, च्छेद ।

पैराक, म पु, दे 'तेराक' ।

पैराव, स पु, दे 'डुबव' ।

पैराशूट, मं पु (अं) *टयन उन्न, *परिभूतम् ।

पैरोकार, मं पु (का पैरवीकर) अनु
वर्णित गामिन् २ पक्षसमर्थन, सहायक ।

पैरोल, स पुं (अं) प्रतिष्ठा, सगर ।

—पर, वि, प्रतिष्ठा-संगर, बंद ।

पैरंद, स पु (का) पटलट ह, प्रमिण
शकल २ वृक्षानरनिवेशित, प्ररोह शाखा,
दे 'कलम' ।

—लगाना, कि स, वृक्षानरे निविष्ट (प्रे)
२ पटलट सिव (दि प से)-स्था
(जु उ अ) ।

पैवंदी, वि (का) दे 'कलमी' ।

पैशाचिक, वि (स) पैशाच, आसुर, भीत
२ घोर, बोभत्य, क्रूर, निर्दय ।

पैशाची, स स्त्री (स) प्राकृतभाषाविशेष ।

पैशुन्य, मं पु (स न) दे 'पिशुनना' ।

पैसा, म पु (म पणाइ) पण, पणक
२ धन, वित्तम् ।

पैसेवाला, सु, धनिक, धनाढ्य २ पणार्थ ।

पोगा, म पु (मं पुटक) कीचकपर्वन्
(न), अन्न शून्यवैष्णुनाली । वि, शून्यगर्भ,
शून्योदर = जन्, अश ।

पोगी, स स्त्री (ह पोगा) > 'बांगुरी' ।

पोंडना, कि म (म प्रोंडन) प्रोंड (भा
प से) मृत् (अ प से, जु), निष्टुष्य
शुध् (प्र) निष्टुप् (भा प से) । स पु,
प्रोंडन, मार्जन, निर्वर्णनम् ।

पोंडने शोम्य, वि, प्रोंडनीय, निष्टुष्य,
शोषनीय ।

—वाला, स पुं, प्रोंम्ब, मार्जर ।

पोंडा हुआ, वि, प्रोंडित, निष्टुष्य, शोषित ।

पोटर हा, म पुं (मं पुधर) दे 'तठार' ।

पोट, स स्त्री (मं पोट) पोहली-लवा
२ राशि ।

पोटला, मं पुं (दि पोटली) १ चं चं, भार- ।

पोटली, स स्त्री (स मोटली) पोटुलिका,
रुप-कूर्च भर ।

पोटा, स पु (स पुट >) उदर, नडर,
उदराशय २ माहस, शौर्य ३ सानध्य
४ अनुल्यय ५ अगुनीयवं (न) ।

पोटाशियम, स पु (अ) दहातु (न),
योगशम् ।

पोथ, स पु (स) पोथ, पाहित्य, प्रवहण,
होड महात्मीना २ दाव-यन, अभरु,
पोथरु, पुथुक, लिम ३ वन्ध ४ दश
वर्षो गज ।

पोतवा रा, स पु (हि पोनना) *पोतन
(शिथुमल) *पोउन ।

पोतना, कि म (म पोतन >) (मुषा
श्रुत्तिकादिभि) लिप (तु प अ) - भण
(र प से) दिह (अ उ अ) । म पु,
लेपनवत्तम् ।

पोता, स पु (म पौत) पुत्रपुत्र, नत्त ।

पर—, स पु (म प्रपौत्र) पुत्रपौत्र पात्रपुत्र ।

पोता, स पु (हि पानका) लेपनवत्त
२ लेपनकूर्चविज्ञा ३ (रपनाय) आर्द्र
श्रुत्तिका ।

—केरना, मु, सवत्त लठ (तु) २ मुषा
श्रुत्तिकादिभि लिप (तु प अ) ।

पोताई, स स्त्री दे 'पुताइ' ।

पोती, स स्त्री (स पौरी) पुत्रपुत्री, नप्त्री ।

पर— स स्त्री (म प्रपौत्री) पुत्रपौत्री, पौत्रपुत्री ।

पोत्या, स स्त्री (स) पोतमम्, नोका
पत्ति (स्त्री) ।

पोथा, स पु (म पुत्तव) उदर पुत्तव प्रथ ।

पोथी, स, स्त्री (म पुत्ती) पुत्तक ग्रथ ।

पोद्दीना, स पु, दे 'पुद्दीना' ।

पोना, कि म, (हि पूआ-ना) उग्रचूर्ण
रोकि रन् (तु) २ रॉफा पब् (आ
प अ) ३ दे 'पियोना' ।

पोप, स पु (अ) रोनीयधम, अज्यक्ष
अधिपति ।

—लीला, स स्त्री (अ + स) प्रयात्तन्वरविस्तर ।

पोपला, वि (हि पुत्तुला) दत्त-दशन-दशन
विहीन-रहित ।

पोर, स स्त्री [म पर्वन् (न)] अगुली,
अधि-सधि पवन् २ अगुलीग्रन्थो मध्यभाग
पर्वन् ३ शरीरवादिग्रन्थोर्मध्यभाग, पर्वन् ।

—पोर में, कि वि, पवणि पवणि, सर्वपवसु ।
पोरी, स स्त्री (हि पोर) दे 'पोर' (३) ।
पोल, स प (हि पोला) अवकाश, शून्य
स्थान २ मारहीनता, निस्सारता, शून्यगर्भता,
निगुणता, अनर्पता ।

—खुलना, सु, पाप प्रकटीभू, दोष विवृ(कर्म) ।
पोला, वि (म पोल >) अत शून्य, रिक्त-
शून्य-अप्य-अभ-उदर २ निस्सार, तत्सहीन
३ दे 'पुलपुला' [पोनी (स्त्री)] ।

पोलिटिक्ल, वि (अ) राजनीतिक, राज-
शासन, विषयक ।

—पूजट, स पु (अ) राजनानिकप्रतिनिधि ।

पोलो, स पु (अ) दे 'बीगान' ।

पोशाक, स स्त्री (का पोश) वेश-का, परि-
धान, कपनप्रण (बहु) ।

पोशीदा, वि (का) शुभ, प्रकृष्ट ।

पोषक, वि (मं) पालक, पालयिष्ट, पोष
यितु मवदक पोष्ट २ सहायक ।

पोषण, स पु (म न) पालन, भरण, सवर्द्धन
२ पुष्टि (स्त्री) ३ माहाय्यम् ।

पोषित, वि (म) पालित, सवर्द्धित ।

पोष्य, वि (म) पालनीय, सवर्द्धनीय ।

—पुत्र, स पु. (म) दत्तक ।

पोमना, कि म (म पोषण) दे 'पालना'
(१२) ।

पोस्ट, स स्त्री (न) पद, अधिकार २. पत्र-
वाहनमस्था ३ दे 'टार' ।

—आक्रम, स पु (अ) पत्रालय ।

—कार्ड, स पु (अ) पत्रम् ।

—सार्टम, स प (अ) शवपरीक्षणम् ।

—मास्टर, स पु (अ) पत्रालयाध्यक्ष ।

—मैन, स पु (अ) पत्रवाहक ।

पोस्टन, स स्त्री (अ) पत्रशुल्कम् ।

पोस्त, स पु (का) खसनिष्ठ-खसवत्त फल
२ खसुमपुष्पक ३ त्वच (स्त्री) ४, बरकल
अ, वल्ग-वन् ।

पोस्ती, स पु (का) खसुमफलमेविन्
२ अलम, मथर ।

पोस्तीन, स पु (का) *चर्म-चुक ।

पोचा, स पु (हि पाच) सार्धपच-पुननस्त्री ।

पौंड, स पु (अ.) निष्क, स्वामुद्रा(१)
अर्द्धसेर देसीय आम्बतोत् ।

पौंडा, स पु (स पौंड) पौंडर ।
इक्षुमेर ।

पौ,^१ स स्त्री (स पाट >) निम्न रश्मि,
ज्योतिस् (न) कटुमुंर, उषा ।

—फटना, सु, विप्र, भाता जन (दि आ मे)
अलग उत्तर (अ प अ) ।

पौ,^२ स स्त्री (स पद >) अश्वपानभद्र ।

—बारह होना, सु, जि (स्वा उ अ)
२ भाग्य उत्तर (अ प अ) ।

पौंडर, स पु (अ) क्षात्र कूर् २ पट्टाभक्त
पिछान ।

पौंडना, क्रि अ, दे 'लेटना' ।

पौत्र, स पु (स) दे 'पोता' ।

पौत्री, स स्त्री (स) दे 'पोती' ।

पौद, स स्त्री (स पौन >) बालवृक्ष वृक्षरु,
२ स्थानांतरे आरोपणीय उद्भिज्ज ३ मनान,
वश ।

पौटा, पौधा, स पु (स पौत >) क्षुद्रपादप,
वृक्ष, उद्भिज्ज, बालक २ धुप, गुल्म ।

पौन,^१ वि (स पादोन) त्रिचतुर्द, त्रितुय,
त्रिपाद [पौनी (स्त्री)] ।

पौन,^२ स पु स्त्री दे 'पवन' ।

पौना, स पु (स पादोन) पादोनगुणनक्षत्री ।
वि, दे 'पौन' ।

पौने, वि (स पादोन) दे 'पौन' ।

—सोल्ह आने, सु, प्राय सारधन-मासत्वेन
सामश्रयेण ।

पौर, वि (स) नागरिक पुत्रनगर सन
भिन्नात ।

—कन्या, स स्त्री (स) पौरनगर पुत्र
नगर-कन्या कुमारी २ नागरी पागाना ।

—जन, स पु (स) पौर नि नागर
नागरिक, पौर, पुर, पुरनगर-भिन् ।

—मुख्य, स पु (स) पौरवृद्ध मदायी ।

—रथ, स पु (स न) रथनागरिकता ।

पौराणिक, वि (स) पुराणमन्त्रि २ पुराण,
वैतुषट्क २ प्राचीन ३ कार्यान्तक ।

पौरिया, स पु (दि पौरि) द्वारपट्ट दास्य ।

पौरी निर्या, स स्त्री (स प्रती १ >) (नगर
दुर्गतिना) द्वार २ द 'दोरी' ।

पौरप, स पु (स न) पुरुषत्व, पुत्रत्व २ पुत्र
पार्थ, उद्यम, उद्योग ३ साहस्य पात्रभ ।
वि, पुरुषचरित, मानुष, मानव ।

पौरुषेय, वि (स १) पौरुष, मानवाव, मानव
भनु-व, चित्त ।

पौर्णमासी, स स्त्री (स) दे 'पूणिमा' ।

पौसा, स पु (स पाद) (सर) पाद
२ पाटमानपात्रम् ।

पौष, स पु (स) निष्य, तैष, पौषिक,
हेमन् महस्य ।

पौष्टिक, वि (स) पुष्टि, वरगारन, बन्-जीर्ण,
वक्षः ।

पौसर-ला, पौसाला, स स्त्री (स पय द ला)
प्रपा, दे 'मकोर' ।

प्याऊ, स पु (स प्रपा) पय द ला,
दे 'सती' ।

प्याऊ, स पु (का) पलातु, मुद्राण,
उष्ण दृढप्रिय, कुम्भिन, देवन, बहुपन,
रोचन, मुद्राण ।

प्याही, वि (का प्याह) पलातुवर्ण ।

प्यादा, स पु (का) पादग, पाग, पति,
पदानि २ दूत, मदेशहर ३ शक्तिभेद ।

प्यार, स पु (दि प्यारा) प्रीति (स्त्री),
प्रेमन (पु न), स्नेह, अनु, राग, भाव ।

प्रणय, अभिलिखे २ लालन, सुभन
आलिखन ।

—करना, क्रि स, भाव अनुसारा वधू (प्र
प अ) कथ (स्वा आ से) स्निह (दि
प स मसमी व माध) २ लल् (पु)
आग्नि (स्वा प से), परिभ (स्वा
आ अ) पुर (स्वा प से) ।

प्याग, वि (भ प्रिय) दयित वक्षभ, पात्र,
प्रेमपन २ हृष्य, रम्य, मनीस, रश्मि,
रम्य [प्यारी (स्वा) = प्रिया, वक्षना, उरिता
२ कवित्री, ह्याग] ।

प्याला, स पु (का) कपूर २ शरान ।

प्यालर, स स्त्री (का) शरारत, लुचपद ।

प्यास, स स्त्री (भ शिपामा) मृष्ट (स्वा) ।
वृष्णा, वृषा, तप, उदया, सुषिता २ नागना,
प्रदहन् ।

—सुज्ञान, सु, वृषा शब्द (भे) अपनी
(स्वा प अ) ।

—उद्यम, सु, उद्यमति (ना था), पिपासति
(सञ्ज) मृष्ट (दि प म) ।

प्यासा, वि (दि ध्याम) पिपासु, वृषार्त,
वृषिन, तपुल, वृषिन ।

प्रत्यय, स पु (म) वेपथु, रात्र्यु, दे
'वैपथी' ।

प्रकट, वि (म) स्पष्ट, व्यक्त, स्पष्ट, उल्लाप
व्यक्ति र आविर्भूत, दृष्ट ।

—करना, क्रि न, प्रकल्पयति (ना धा),
प्रकटीकृत, प्रकल्प (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, आविर् प्रकटा, भू, प्रकाश
(आ आ मे) ।

प्रकटित, वि (म) प्रादुर आविर् प्रकटी भूत,
२ अविप्रकटी, कृत ।

प्रकरण, न पु (म न) पौषाचर्य, पूर्वोक्त
मन्त्र, प्रसंग २ अध्याय, पत्रिच्छेद ३
वृद्धन्यायभेद ।

प्रकर्ष, न पु (म) उल्लाप श्रेष्ठत्व उत्तमता
२ अभिप्रेत, प्रान्वयम् ।

प्रकाट न पु (म पु न) स्वयं, दत्त,
वाक् २ शास्त्र ३ वृक्ष । वि, सुमहत् सुवि
रूप, सुविशाल ।

प्रकार, म पु (म) भेद, वा नति (आ)
२ रीति (स्त्री), सारणी, विधि ३ सादृश्यम् ।

प्रकाश, स पु (स) आलोक, उज्ज्वला,
आभा, आभाम्, सुनि सुनि दीप्ति त्विष्-
भाम् (स्व स्त्री), भागमज्यासिन्नेनस (न),
आ, धीन, प्रभा २ आनय, स्यालोक, धर्म
३ अभिव्यक्ति (स्त्री), आवभावा ४ प्रसिद्धि
(स्त्री) ५ अध्याय ।

प्रकाशक, म पु (म) धीनक, दासिन्तर,
उद्गातर २ ख्यापक, प्रकाशयितु ।

प्रकाशन, म पु (म न) प्रकटी आविर्, -
करण २ प्रस्थापन, प्रचारण (पुस्तकादि वा) ।

प्रकाशमान, वि (म) भागमान, धीनमान,
भासुर २ प्रसिद्ध, विष्णु ।

प्रकाशित, वि (म) दे 'प्रकाशमान' २
उद्गातित, आनयित ३ प्रचारित, प्रस्थापित,
प्रकट ।

प्रकाश्य, वि (म) प्रकाशनीय, प्रस्थापनीय,
प्रचारणीय ।

प्रकीर्ण, वि (म) अन्वि, न्या, व्यस्त, विभ्रित,
विदिष्ट ।

प्रकीर्णक, वि (म) दे 'प्रकीर्ण' । म पु
(स पु न) चमर, चमरम् । स पु (स)
धो, अथ । म पु (स न) नाना
विविध-वहुविध-वस्तुमय २ प्रकरण, अध्याय
३ विविधविषय-अध्याय ।

प्रकृषित, वि (स) अति, कृषित-कृद्ध-सरब्ध ।
प्रकृत, वि (म) बालाविक-तात्त्विक [-की
(स्त्री)] तत्त्व, अवितथ, वधार्थ २ सविशेष
कृत-रचित विहित ।

प्रकृति, म स्त्री (म) स्वभाव, वृत्ति (स्त्री),
दीप्ति, स्वरूप, धर्म, गुण २ दे 'तामीर' ३
प्रधान माया, जगत् उपादानकारण, पृथ्व्यादि-
परमाणव (बहु) ।

—च, वि (स) सहच, स्वाभाविक, सह
चात, नैसर्गिक ।

—सङ्ग, स पु (म न) राष्ट्र, राज्य, देश ।

—मिद्ध, वि (स) सहच, स्वाभाविक, नैम
गित, श्रोतृसक्त ।

—स्थ, वि (म) स्वस्थ, शान्त, विकार
क्षोभ रहित ।

प्रकोष, म पु (म) अत्यत, कोप-कोष
मन्त्र मन्त्र २ (रोषादीना) प्रमार,
आभिरूप ३ देहधातुविकार ।

प्रकोष्ठ, स पु (स) कफोदरधौमगिबन्ध
पयस्यो हस्तभाग २ रत्नद्वारपार्श्वरथ कोष्ठ
३ विशालासनम् ।

प्रक्षालन, म पु (स न) धावन, मार्जनम् ।

प्रक्षालित, वि (म) धीन मानित, जलशोधित ।

प्रक्षिप्त, वि (स) प्रालत, अपालत, निरस्त
२ कालान्तरे मिश्रित योगित ।

प्रक्षेप, म पु (स) प्रान्त, निरस्त, प्रक्षेपण,
अपामन २ विकिरण ३ पश्चाद मिश्रणम् ।

प्रखर, वि (स) उग्र, प्र, चड, प्रबल, तम्र
२ निशि(शान्त), तीक्ष्णप्र, दे 'तेज' ।

प्रख्यात, वि (म) दे 'प्रसिद्ध' ।

प्रख्याति, स स्त्री (स) दे 'प्रसिद्धि' ।

प्रगट, वि, दे 'प्रकट' ।

प्रगल्भ, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण
२ प्रत्युत्पन्नमनि, प्रतिभाशालिन् ३ उत्साहिन्,
साहसिन् ४ निर्भय, अभय ५ बावदूक,
प्रत्युत्पन्न ६ गम्भीर, प्रौढ ७ प्रधान, सुरेय
८ धृष्ट, निर्लज्ज, अपवध ९ उद्भूत, विनय
शून्य १० अभिमनित्, हस ११ पुष्ट १२
ममथ, शक्त ।

प्रगल्भता, स स्त्री (म) दास्य, वीर्य, प्रवीण,
प्रावीण्य २ प्रतिभा ३ निर्भयता ४ उत्साह
५ बावदूकतुल्य, प्रत्युत्पन्नमनित्व ६ गम्भीर्य
७ प्रधानता ८ धार्ढ्य, निर्लज्जता ९ उद्भूत,

वेयात्य १० अभिमान ११ पुष्टत्व १२ प्रन
स्व, बावदूकता १३ सामम्भम् ।

प्रगाढ़, वि (स) अत्यन्त अत्यधिक प्रभूत,
प्रचुर २ अनिग(ग)भीर अनिगहन ३ कात्म,
कठिन धन ।

प्रग्रह, स पु (स) ग्रहण धारण २ अथा
दीना हरिण ३ किरण ४ (तुणा) सूत्र
५ नाट ६ इन्द्रियनिग्रह ।

प्रचद, वि (स) तीव्र, उग्र धीर, प्र सर,
२ प्रबल, बलक ३ भीषण, भयङ्कर ४
कठिन, कठोर ५ अत्यन्त, दुस्मह ६ कुह्य
मट्ट ७ पुष्ट, पीन ८ प्रतप्त ९ प्रतापिन् ।

प्रचङ्कता, स स्त्री (स) उग्रता, तीव्रता,
प्रसरता, २ भीषणता भयङ्करता ।

प्रचलन, स पु (स न) दे प्रचार' ।

प्रचलित, वि (स) प्रचरित, सचारित
प्रसिद्ध, लोकप्रिय, वर्तमान, विद्यमान ।

प्रचार, सं पु (स) प्रचलन, प्रसार, सगोप
योग, निरन्तरव्यवहार ।

—करना, क्रि स प्रचर्-प्रचर् प्रसू (प्रे) ।

प्रचारक, वि (स) प्रसारक, प्रचालक, विस्तार
क । [प्रचारिका (स्त्री)] ।

प्रचुर, वि (स) विपुल, बहुल, अभिर, प्रभूत,
प्राज्य, बहु, भूयिष्ठ, भूरि ।

प्रचुरता, सं स्त्री (स) बाहुल्य, आधिक्य,
वैपुल्य, भूयिष्ठत्वम् ।

प्रच्छन्न, वि (स) गुप्त, गूढ अदृष्ट, निरी
भूत २ आच्छादित अग्रेष्ठित ।

प्रज्ञा, स स्त्री (स) सज्ञान, संज्ञा (स्त्री)
२ प्रकृत्य शासितज्ञा राज्यनिष्ठाभिन् (मव
बहु) ।

—सत्र, स पु (स न) जनतन्त्रज्ञान, प्रज्ञा
मन्त्रादी राज्य, जनताप्रमुखम् ।

—ज्ञाध, स पु (स) नृप २ प्रज्ञान
३ मनु ४ दध ।

—पति, स पु (स) सृष्टि पण्य, यद्वैरच
विद्वन्महर्, २ प्रज्ञान ३ मनु ४ नृप ५ सुख
६ अति ७ विद्व ८ दृष्टपति ।

प्रज्ञानी, स स्त्री (स) भ्रान्तानाया, दे
'भावना' २ अग्रजपत्नी ३ गर्भवती ४ मना
नवनी ।

प्रज्ञ, स पु (स) प्राज्ञ, बुद्धिमत् विद्वन्,
पति ।

प्रज्ञा, स स्त्री (स) बुद्धि (स्त्री) ज्ञान
२ सरस्वती ३ पञ्चमता ।

—चक्षु, स पु (स क्षुम्) धृतराष्ट्र २ अध
(व्यग्र) ३ सुदिनेयम् ४ प्राप् ।

—पारमिता, स स्त्री (स) पूर्णज्ञान, सर्व
ज्ञान (वीद ०) ।

—वाद्, स पु (स) पातित्य विद्वता पूर्णोक्ति
(स्त्री) ।

—हान, वि (स) मूर्ख, मूढ, पण, अशु ।

प्रज्वलित, वि (स) देदीप्यमान, ददस्मान्,
आज्ज-यमान प्रदीप्त, २ सुरपण, स्वच्छ ।

प्रज्ज, स पु (स पण >) ज्ञान, बुद्धिमत्त्व,
प्रणिता, ज्ञापक, वास ।

—करना, मत्तपथ प्रणिता (क् आ अ),
प्रनिधु (स्वा प अ) ।

प्रज्ज, वि (स) पुराण, प्राचीन ।

प्रज्ज, वि (स) प्रजाभूत २ वदमान ३ नम
४ निधन ।

प्रज्जति, स स्त्री (स) प्रज्ञा, प्रणिपान,
नमस्कार, नमस्क्रिया, वदना २ नम्रता
३ निवेदनम् ।

प्रज्जय, स पु (स) दे 'प्यार' २ सस्तेह-
प्राबन्धम् ।

प्रज्जयन, सं पु (स) लयन, रचन, निमाण,
विधान, वरणम् ।

प्रज्जयिनी, स स्त्री (स) प्रिया, प्रज्ञा दयिता
२ पत्नी माया ।

प्रज्जयी, स पु (स विम्) रमण, प्रज्ञान
कान दयित २ पति, भर्तृ ।

प्रज्जव, स पु (स) अकार २ परमेश्वर ।

प्रज्ञा, स पु (स) दे 'प्रज्ञा' (चतुर्वध
अष्टाग, पञ्चाग अभिवारन, वर्गशर
मर्थग) ।

—करना, वि म, नमस्, प्रज्ञ (भ्या प
अ) अभिवद् (तु आ स) वद् (भ्या
आ मे) ।

प्रज्ञाली, सं स्त्री (स) पञ्चाङ्गनाम परि
वाह, मरणि (स्त्री) २ प्रज्ञा, परिपान,
परपरा, रात्रि (स्त्री) ३ बुद्धि पद्धति (स्त्री) ।

प्रणिधान, स पु (स न) सम निवे
२ भगि वीण ३ उर्मस-पाय ४ रिस्ती
प्रम् ५ प्रथना ६ व्यवहार ।

प्रणिधि, स पु (स) दे 'प्रज्ञा' ।

प्रणिपात, स पु. (स) दे 'प्रणनि' ।
प्रणीत, वि (स) लिखित, रचित, निर्मित,
कृत, विहित २ संस्कृत, संशोधित ३ आनीत
४ प्रेषित ।

प्रणेता, स पु (स प्रणेत्) उत्पन्न, रचयितृ,
कर्तृ, निमातृ ।

प्रतप्त, वि (म) तापित, अत्युष्णी, कृत भूत ।

प्रताप, म पु (स) तेजस्-ओनम् (न),
अनुभाव, अभिरया, गौरव, ऐश्वर्य, महिमन्
(पु) २ पौरुष, वीर्य, शौर्य ३ ताप,
सङ्गता, धम ।

प्रतापी, वि (स-विद्) प्रतापवद् तेजस्विन्,
ओजस्विन्, अनुभाववद् २ वीर, चूर ।

प्रतारणा, म स्त्री (स) वचन ना, कपट,
प्रतारण २ धूर्तता, कैवल्यम् ।

प्रति, स स्त्री (स प्रति) प्रति-अनु, -लपि
(स्वा), प्रतिपल्ल । (उद्गम) समझ,
सम्मुख तुलनाया २ प्रति (दिनीया के साथ,
सप्तमी विभक्ति से भी, उ, भगवान् के प्रति
श्रद्धा = भगवत् प्रति अथवा भावनि, श्रद्धा)
३ दिशि (सप्तमी) ।

प्रति(त्ती)कार, स पु (म) प्रतिपत्ति (स्त्री),
प्रतिक्रिया, नियानन, शमनोपाय २ चिकित्सा,
व्यचार ।

प्रतिकूल, वि (स) विपरीत, विरुद्ध, प्रतीप,
विषम ।

प्रतिकूलता, म स्त्री (स) वैपरीत्य, विरोध ।

प्रतिकृति, स स्त्री (स) प्रतिमूर्ति (स्त्री),
प्रतिमा २ चित्र, आलेख्य ३ छाया, प्रतिविम्ब
४ प्रतिक्रिया, प्रति(त्ती)कार ।

प्रतिक्रिया, म स्त्री (स) प्रति(त्ती)कार,
प्रतिपत्ति (स्त्री) २ प्रतिपात, प्रत्याधान
३ निवारण शमन, उपाय ।

प्रतिक्षण, त्रि वि (स-क्षण) अनुक्षण, क्षणे
क्षणे, प्रति-अन, पलम् ।

प्रतिग्रह, म पु (स) स्वी-अग्नी-कार, आ
दान, ग्रहण २ विवाह, पाणिग्रहणम् ।

प्रतिघात, म पु (म) प्रतिप्रहार, प्रत्याघात,
प्रतिहिन् (स्त्री) ३ विघ्न, बाधा ।

प्रतिच्छाया, म स्त्री (स.) प्रतिविम्ब, छाया,
प्रतिफल, प्रतिकूप २ चित्र ३ मूर्ति (स्त्री) ।

प्रतिज्ञा, स स्त्री (स) प्रतिश्रव, सगर,

समय, सविद्-आयू (स्त्री), वचन, वाचा
शपथ, वृद्धमन्त्र २ साध्यनिर्देश (न्या) ।

—करना, कि म, आप्रति-म-श्रु (भ्वा प
अ), प्रतिज्ञा (क्र आ अ) । 1. अ,
प्रतिज्ञा कृ, वचन दा ।

—तोडना, कि म, प्रातःशामन् (रु प अ),
उल्लघ् (चु), विमवद् (भ्वा प मे) ।

—पालना, कि म वचन पा (प्रे पालयति)
शुभ (प्रे) ।

—पत्र, स पु (मं न) समय प्रतिभा यत्र
लेख्यम् ।

—पालन, म पु (म न) प्रतिज्ञानवाह,
सगरशोधनम् ।

—भग, स पु (म) वचनव्यतिक्रम प्रतिज्ञो
ल्लपन, विसबाह ।

—विवाहित, वि (स) वायदत्त तात्तम,
प्रदत्त तात्तम, प्रता तात्तम ।

प्रतिज्ञात, वि (म) प्रातश्चर्य, मध्यन्, आश्रय ।
स पु (स न) प्रतिज्ञा, वृद्धसन्त्य ।

प्रतिद्वन्द्व, वि (म) दु शाल्-न्या-क, धृष्ट रूपा
धृष्टम्, आश्चालयित्, अननुवर्तिम् ।

प्रतिदान, स पु (म न) प्रत्यपण २ विनिमय ।

प्रतिदिन, कि वि (स दिन) अनु, दिन निवन्ध,
प्रत्यह अन्वह, दिने दिने ।

प्रतिद्विष्टता, स स्त्री (स) शत्रुता, वैर,
विरोध २ प्रतिस्पर्धा, प्रत्यधिता ।

प्रतिद्विष्टी, स पु (स दिन) अरि, शत्रु,
विरोधिन् २ प्रत्यधिन्, प्रतिस्पर्धिन् ।

प्रतिध्वनि, स स्त्री (स पु) प्रति, ध्वनि
नार शब्द-श्रुति (स्त्री) ।

—उठना या होना, कि अ, प्रति, ध्वन्-नद्
(भ्वा प से) ।

प्रतिनिधि, म पु (म) प्रतिपुरुष, प्रतिहस्त
स्तन २ प्रतगा, प्रतिमूल (स्त्री) ।

प्रतिपक्षी, स पु (स-विन्) विपत्तिन्, प्रति
वादिन् २ विरोधन्, प्रतिद्विष्ट ३ शत्रु,
वैरिन् ।

प्रतिपत्ति, म स्त्री (म) प्राप्ति-उपलब्धि (स्त्री)
अधि-गमन २ ज्ञान ३ अनुमान ४ दान,
अपण ५ निरूपण, प्रतिपादन ६ प्रवृत्ति

(स्त्री) ७ निश्चय ८ परिणाम ९ गौरव
१० प्रतिष्ठा, सत्कार ११ स्वीकृति (स्त्री)

१२ सप्रमाण प्रदर्शनम् ।

प्रतिपदा, म स्त्री (सं) प्रतिपद (स्त्री)
पति (स्त्री) शुक्रा प्रथमनिधि (स्त्री),
प्रतिपदी ।

प्रतिपक्ष, वि (म) हल, अवबुद्ध अधिगत
० स्त्री अग्री कृत ३ निर्धारित, निश्चित
१ शरणागत ५ समानित ६ प्राप्त ७ प्रवृद्ध ।

प्रतिपादक, वि (म) दातृ, दायक, ० निरूपक,
व्याख्यातृ ३ उक्तायक ४ निष्पादक ।

प्रतिपादन, म पु (म न) निरूपण, सप्र
माण बधन माधन स्थापन २ सम्यग जादन
अवरोपन ३ दान, अर्पणम् ।

प्रतिपादित, वि (म) सम्यग अवबोधित
जायित ३ निष्पत्ति निश्चित ३ दत्त ।

प्रतिपाद्य, वि (म) निरूपणीय, अवबोध्यनीय
० देय ।

प्रतिपादन, स पु (म न) पालन, पायन,
संरक्षण २ रक्षण, रक्षण ३ निष्कार अहणम् ।

प्रतिफल, म पु (म न) दे 'प्रतिष्ठावा' (१)
२ परिणाम, फल ३ प्रत्युपकार ४ प्रत्यप
कार, निष्पत्ति (स्त्री) ।

प्रतिवध, म पु (म) विघ्न, बाधा, अनुराग
० प्रतिरोध, व्याघात ३ दे 'प्रवध' ।

प्रतिविध, म पु (स न) दे 'प्रतिष्ठाया' ।

प्रतिविधित, वि (स) प्रतिफलित, प्रनिरूपित ।

प्रतिभा, म स्त्री (म) नवनवी मेघशालिनी
प्रभा, चमस्कारिणी बुद्धि (स्त्री), भविप्रद
३ बुद्धि प्रति धी (स्त्री) ३ वैदग्ध्य, बुद्धि
चातुर्य ४ दासि (स्त्री) ।

प्रतिभाशाली, वि (म लिङ्) प्रतिभावन,
प्रतिभास्वित, सप्रतिभा २ भीमम्, बुद्धिमत् ।

प्रतिभू, म पु (म) लग्नक, दे 'जमिन' ।

प्रतिभा, म स्त्री (म) अनुवृत्ति मूर्ति (स्त्री),
चित्र, प्रति, मूर्ति (स्त्री) भाव रूप चन्द्रक
० प्रति, वि, चन्द्रा ३ आट, माद, सोम
भार, मान ४ जलवाभेद (सा) ।

प्रतिबोहिता, स स्त्री (म) प्रतिबद्धिता,
अविश्रब्धा, अदम्यमिमा, विनिर्गोषा ३ विरोध,
राधुना ।

प्रतिबोहिनी, म पु (म लिङ्) प्रतिबद्धित,
प्रतिष्ठादित, विनिर्गोषा २ राधु, वैरिन्
३ मत्परा ३ अक्षिन्, अक्षमात् ।

प्रतिस्पर्ध, म पु (स न) मूर्ति (स्त्री),
प्रतिभा २ चित्र, आन्वेष ३ प्रतिनिधि ।

प्रतिरोध, म पु (स) विरोध, प्रतिवृत्त्यं,
वैपरीत्य २ बाध धा, व्याघात, प्रतिवध ।

प्रतिलिपि, म स्त्री (स) अनुलिपि (स्त्री),
प्रतिलेख ।

प्रतिलोम, वि (म) प्रतिवृत्त, विपरीत,
विरुद्ध २ तुल्य, नीच ३ विरोध, विपर्यय,
व्यत्यस्त ।

प्रतिलोमज, म पु (स) वर्णमकर २ उत्तम
वर्णाया नाया अधमवर्णाया पुरुषात् जात ।

प्रतिवचन, स पु (म न) उत्तर, प्रतिवचन
(न) ० प्रतिध्वनि ।

प्रतिवन्ध, अथ्य (म) प्रति-अनु, वर्ष-वत्सरं
अथ वर्ष-वर्षे, वत्सरे-वत्सरे ।

प्रतिवनिता, स स्त्री (स) सपत्नी, नभायां,
समानपत्निका ।

प्रतिवस्तु, स स्त्री (स) मनुष्य-मानस तुल्य,
वस्तु (न), पदार्थ २ प्रतिवस्तुपदार्थ ३
उपमानम् ।

प्रतिवस्तूपमा, स स्त्री (म) अर्थात्कारभेद ।

प्रतिवाद, स पु (स) प्रत्याख्यान, निरा
करण, निराम, दे 'खटन' २ विवाद ३
उत्तरम् ।

प्रतिवादी, स पु (म लिङ्) प्रत्यर्थिन्, अभि
युक्त २ विपक्षिन्, प्रतिपक्षिन्, प्रत्यावाद्य ।

प्रतिवासी, म पु (सं लिङ्) दे 'पडोसी' ।

प्रतिवेशी, स पु (स लिङ्) दे 'पडोसी' ।

प्रतिशोध, स पु (स >) निर्वातन, प्रति,
अपहार शोध ।

प्रतिशयाव, म पु (म) दे 'जुगाम' २ पौन
सरीय ।

प्रतिषिद्ध, वि (म) दे 'निषिद्ध' ।

प्रतिषेध, स पु (स) दे 'निषेध' २ रक्षण,
निरमन ३ अर्थात्कारभेद (सा) ।

प्रतिष्ठ, म स्त्री (॥) सम्भार, अर्हता, सं,
मान, आदर, शीर्ष २ यशम् (न),
कान विख्याति प्रमिद्धि (स्त्री) ३ स्थापनं
नर निधानम् ।

प्रतिष्ठित, वि (स) सन्तुष्ट, म, मानित,
अव्यक्ति २ शिक्षित, प्रमिद्ध, विख्यात २ स्था
पित, प्रतिष्ठापित ।

प्रतिस्पर्द्धा, स स्त्री (सं) प्रत्यर्पण, प्रति
द्विधा, विनिर्गोषा, अदम्यमिमा २ वल्ल ।

प्रतिस्पर्द्धा, म पु (म द्विन्) प्रत्यभिन्, प्रति
इदिन्, विनिगोषु ।

प्रतिष्ठन्, वि (य) अव प्रति, ऋद्ध प्रतिवाधि
२ पराशुत्र, परावर्तिन ३ अवन्त, क्षिप्त ४
चरित ५ निराश ॥ पराजित, परस्त ।

प्रति(ती)हार, म पु (स) हार (स्त्री)
हार २ हारपाल, हारथ ।

प्रति(ती)हारी, म पु (म रिन्) हारपाल,
हारथ, दोवारिक । म स्त्री (म) हार
पात्रिका ।

प्रतिहिम्सा, म स्त्री (स) प्रत्यपकार प्रत्यप
क्रिया, प्रतिद्वेष, प्रति, नियाननम् ।

प्रतीक, स पु (स न) प्रतिमा, मूल ०
मूल, आनन ३ अग्र अग्रभा ४ इत्येकादे
प्रथमशब्द ५ अग, अवयव ६ विह, लक्षण
७ भन्तार, ऋद्ध ८ प्रतिरूप, स्थानपत्र
वस्तु (न) ।

प्रतीकार, म पु (म) दे 'प्रतिकार' ।

प्रतीक्षा, म स्त्री (म) प्रतीक्षण, उदीक्षा,
प्रत्याशा, अपेक्षा ।

—करना, कि अ, अव उद् प्रति शब्द (न्वा
आ म) भन्तु प्रति पा (प्रे पल्यति) ।

प्रतीक्षा, म स्त्री (स) दे 'प्रक्षिप्त' ।

प्रतीत, वि (स) छात्र, विदित, अवगत, बुद्ध
० प्रगिद्ध ३ प्रमत्त ।

—होना, कि अ, ह्य-अवगमन्तु प्रती (=प्रति
इ) (सर्व कर्म) ।

प्रतीति, म स्त्री (म) ज्ञान, बोध, अज्ञान
० स्थिति (स्त्री) ३ विश्राम ४ आनन्द
५ आश्रय ।

प्रतीप, वि (म) विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल ।

प्रतीहार, म पु (म) दे 'प्रतिहार' ।

प्रत्यक्षा, म स्त्री (म) मौक्त, शिखिनी, ज्या,
धनुष्पुष्प ।

प्रत्यक्ष, वि (म) दृश्य, दृष्णीय, पुर स्थित
० इन्द्रियग्रह्य, इन्द्रियगोचर, ण्ठ्रियक ३
प्रकट, स्पष्ट । म पु (म न) प्रमाणभेद
(न्याय), अनुमत्तभेद । कि वि, नयनयो
पुरत २ स्पष्ट व्यक्तम् ।

—दर्शी, म पु (सं दिन्) (प्रत्यक्ष)
साक्षिन् ।

—प्रमाण, स पु (म न) प्रमाणभेद
(न्या) ।

प्रत्यय, म पु (म) विधान, विग्रह
० शब्दान्तरमात्र, प्रवृत्त्युत्तर वाचमान् ।

आगम (सुप्र निड अदि, न्वा) २ प्रमाण,
नाशन ४ ज्ञान ५ विचार ६ व्याख्या
७ कारण ८ आवश्यकता ९ प्रमिति
(स्त्री) १० विह ११ निर्णय १२ सम्मति
(स्त्री) १३ महायक १४ स्वादि ।

प्रत्यारणान, म पु (सं न) निवारण,
निरसन, रज्जनम् ।

प्रत्याशा, म स्त्री (म) आशा, आशम्,
आशाशा ० उदीक्षा, प्रतीक्षा, अपेक्षा ।

प्रत्याशी, वि (सं दिन्) प्रतीक्षाभेद २
पदान्तेषु ३ आश्रय, आशान्वित ।

प्रत्याहार, म पु (म) प्रत्याहरण, उपादान,
इन्द्रियनिग्रह ० अनेन कृतम् प्रहण
(३ पत्र-मत्तम्बरवर्ण, न्वा) (

प्रत्युक्ति, म स्त्री (स) उत्तर, प्रतिवचनम् ।

प्रत्युत, य य (म) दे 'वक्ति' ।

प्रत्युत्तर, म पु (म न) उत्तरस्वीत्तर,
उत्तरप्रतिवचनम् ।

प्रत्युत्थान, म पु (म न) त्यागनार्थम्
उत्थान प्रत्युत्थानम् २ शब्दानामुत्थानम्
उत्थानि (न्वा) ३ रायविशेषाय सज्जी भू,
मज्ज (वि उ अ) ।

प्रत्युत्पन्न, वि (म) पुनरुत्पन्न २ स्वात्मरे
उत्पन्न ।

—प्रति, वि (म) तत्काली, कुशाग्रीय
मति, सम्मदक्षिन् २ प्रतिभाञ्चित । म स्त्री
(म) तत्काली (स्त्री), कुशाग्रबुद्धि
(स्त्री) २ प्रतिभा ।

प्रत्युद्गमन, म पु (म न) प्रत्युत्थान,
प्रत्युद्गम ।

प्रत्युत्पकार, स पु (स) प्रति, उपकृति
(स्त्री)-माहात्म्यम् ।

प्रत्येक, वि (म) एकैक, सब, सरुल ।

प्रत्यन, म पु (म न) विस्तार, विनि
-वर्ण (स्त्री) = यद्य प्रसरण प्रसाराम् ३
क्षयान् ४ प्रदशनम् ।

प्रथम, वि (म) आद्य, आदिम, अग्रिम २
श्रेष्ठ, उत्तम ३ प्रधान, मुख्य । कि वि (सं
न) अमे, आदौ, पूर्व, प्रथमतः ।

—कल्प, म पु (म) सर्वोत्तम, उपप
युक्ति (स्त्री) २ मुख्यनियम ।

—पुरष, म पु (म) अन्यपुरुष (आ०) ।

—वय, म पु (म-यम् न) जीवन ताण्ड्यम्, नववयस (न) ।

प्रथमा, म स्त्री (म) विमर्तिविशेष (आ) २ मरिता ।

प्रथा, सं स्त्री (म) रीति-रूढि (स्त्री), अनुसार, आचार, व्यवहार २ दे 'प्रमिद्धि' ।

प्रथित, वि (म) ३ 'प्रमिद्ध' ।

प्रदक्षिणा, म स्त्री (स) प्रदक्षिण ण, परिक्रम ।

प्रदत्त, वि (म) अर्पित, विश्राणित, उद् वि लुष्ट, सत्कामित ।

प्रदह, म पु (म) नासीरोगवेद, असुन्दर (क्षी भेदी-रुचिप्रदर रक्तप्रदर) ।

प्रदर्शक, म पु (म) प्र दशयितृ, दशनगरा यितृ २ दशरू, दृष्ट, प्रेक्षर ३ गुरु ।

प्रदर्शन, म पु (स न) प्रगटन, प्रकाशन, व्यक्त, विरूपण, प्रकटी आविष्करण २ दे 'नुमाश' ।

प्रदर्शनी, त स्त्री (स) दे 'नुमाश' ।

प्रदर्शित, वि (स) प्रकटीकृत, प्रकटित, प्रकाशित ।

प्रदान, म पु (सं न) दानं, विश्राणन, अर्पण, मकामण २ विवाह ।

प्रदिक्षा, म स्त्री (सं) प्रदिक्षु विदिश (स्त्री) विदिशा, दिक्षेण ।

प्रदीप, म पु (स) दीप, कान्तवन, जलतोष्य दीपक २ प्रकाश ।

प्रदीपन, म पु (म न) उद्-म-दीपन, प्रवर्तन २ प्रदीपन, प्रकाशन, ३ उत्तेजन, प्रालाहणम् ।

प्रदीप्त, वि (म) प्रज्वलित, उद्-म-दाप्त, समिद्ध २ प्रकाशित, प्रकाशमान ३ उज्ज्वल, मासुर ।

प्रदण, म पु (म) चक्र, मण्ड, प्राण, दशविनाश, भूभण २ प्रण, मण्ड ३ मण्ड, अवयव ।

प्रणय, म पु (स) मन्थामय, मया, सार्वभौम, रितावमान, रत्नीमुग्ध २ मन्था प्रकार ।

प्रधान, वि (म) मुख्य, श्रेष्ठ, अध्व, अधिन, परम, उत्तम, प्रमुख, विशिष्ट । मं १ ।

नेतृ, नाथ, पुण्य, अग्रणी २ मन्त्रि, मन्त्रि ३ प्रभुति (स्त्री), नगन उपादान कारण, प्रधान ४ मभा, पति-अल्प ५ इक्षर ।

—मन्त्री, स पु (सं रिन्) महामन्त्रि, प्रधान, अमात्य-सचिव ।

प्रधानता, म स्त्री (मं) उत्तमता, श्रेष्ठता, मुख्यता २ नेतृत्व, नायकत्व ३ अध्यक्षता, मभापतित्व ४ मन्त्रिपद, मन्त्रित्वम् ।

प्रज्वल, मं पु (मं) वि नाश, प्रणाश, विषम, उज्ज्वल सहर ।

प्रपच, म पु (म) सृष्टि (स्त्री), मन्त्र, भोजन २ विमर, दिनार, ३ छल, अन्तर, वषट ४ दे 'वरेण' ।

प्रपची, वि (म रिन्) कापटिक, मायाविद्, छद्म २ चतुर, धूर्त ३ कल्हपिप ।

प्रपन्न, वि (मं) प्राप्त, आगत २ शरणगत ।

प्रपात, स पु (म) दे 'मरता' २ अत, मृग, निरवलम्ब पतनादिपथ ३ ज्व, शन-पतनम् ।

प्रपितामह, म पु (मं) दे 'पदादा' ।

प्रपितामही, म स्त्री (म) दे 'पदादा' ।

प्रपौत्र, म पु (स) दे 'परपौत्र' ।

प्रपौत्री, म स्त्री (म) दे 'परपौत्र' ।

प्रफुल्ल, वि (म) विरमित, स्फुटित, उद्-म-पुष्प, प्रवृद्ध, विज, विरच २ कुसुमि, पुष्पित ३ उमीलित, उमिवित (नेत्र) ४ मित, आदित ।

—नयन, वि (स) विरचनन [श्र भी (स्त्री)] ।

—चदन, वि (म) मिमनन, प्रवृत्तगुण [नी (स्त्री)] = मिमननानी प्रसङ्गगुण स्त्री] ।

प्रफुल्लित, वि (म) दे 'प्रफुल्ल' ।

प्रपन्न, म पु (म) मविधा, व्याप, आधा, तन्, प्रपन्न, पुष्पि (स्त्री) २ अन्न-पुष्प, निवाह हण, प्रवृत्त, अभिधान, व्यवस्थापन, गान्ध, व्यवस्था ३ निवध, लय, प्रमत्त ४ महाराम्य, मंगलितविना ।

—कृत, मं पु (म-न्) प्रवध, आधा, वन, व्यवस्थापन, निवाह, चालन, ५ यत्, अविधान, अवधर ।

—कल्पना, स स्त्री (स) स्नेहमत्प्रा
कल्पनायुक्ता कथा ।

—कारिणी, स स्त्री (स) प्रवचन्यवस्था,
कथोत्तमिनि (स्त्री) ।

—काव्य, सं पु (स न) कनकवदकाव्यम्,
अन्यकाव्यभेद (सा०) ।

प्रबन्धक, स पु (स) दे 'प्रबन्धकर्ता' ।

प्रबल, वि (स) बलवत् सङ्ग बलिन,
शक्तिमत्, ऊर्ध्वस्वित् प्रभविष्णु २ उग्र, धीर,
सीध, प्र बल ।

प्रबुद्ध, वि (स) जागरित, उन्मिद् जाग्रद
(शयन) ० विकृति २ ज्ञानिन् ।

प्रबोध, स पु (स) जागरणं, प्रबोधन निद्रा,
भग-स्याग २ यथार्थपूज-ज्ञान ३ मालिन-ना
४ विकास ५ पूर्वनिवेदनं ६ ज्ञेयनाशम्,
मूढताम् ।

प्रबोधन, स पु (स न) (निद्रा) उत्थन,
निद्राभवन २ जागरण ३ उत्क्रोध, उपदेश,
हासन ४ सात्वतम् ।

प्रभञ्जन, स पु (स) वपु, पवन २ वत्सा,
सहावाग, प्रकरणं । (स न) उत्पन्न,
उन्मूलन, वि, नाशनम् ।

प्रभव, स पु (स) उन्मूलन (पु) उत्पत्ति
कारण २ उत्पत्तिस्थान, आकार ३ सृष्टि (स्त्री)
४ (मन्त्रादौ) उद्गम, उद्भव, मूलम् ।

प्रभा, स स्त्री (स) दीप्ति-लुपि-काति-रुचि
शोचि (स्त्री) आभा, विभा प्रकाश, त्विका ।

—कीट, स पु (स) खरोन, दे 'जुगु' ।

प्रभाकर, स पु (स) दिवाकर, दे 'सुष' ।

प्रभात, सं पु (स न) विभान, प्रन-काल,
उषा, उषा, उष, ऊष, अहर्मुख, कालाव्य,
शुभ्र, प्रसु(त्पु) १, अकालोदय, विह्वल-न,
उषम (स्त्री) ।

प्रभाव, स पु (स) प्रामथ्यं, शक्ति (स्त्री), बल
२ माहात्म्य, मान्य ३ वग २ प्रवच्य
४ परिणाम, फलम् ।

प्रभु, स पु (स) चन्द्रोऽपनेधर
२ स्वमिन् अथ ३ अधिपति, नारक
३ श्रेष्ठजनोपाधि ।

—भक्त, वि (स) स्वनिभत्, कव्यभर,
सत्त्विक २ प्रभुपद, भावद्वयम् ।

प्रभुता, स स्त्री (स) महत्त्व, बलत्व

२ शासकता, अधिकारित्व ३ वैभव ४ स्वा
मित्व, प्रभुत्वम् ।

प्रभूत, वि (स) दे 'प्रचुर' २ उदय,
उद्भूत, उद्गम ।

प्रभृति, क्रि वि (स) तदाभ्य, ततोऽनन्तर,
आदि-इत्यादि । स स्त्री, आरम्भ ।

प्रभेद, सं पु (स) प्रकारः, वर्ग, नाति
(स्त्री) २ अन्तर, भेद, भिदा ।

प्रभञ्ज, वि (स) उन्मूल, मूढोन्मूल, मत्,
श्रीव २ उन्मूल, वातुल, उन्मादिन् ।

प्रभयन, स पु (स न) विनोदन २ कनकन
३ हननम् ।

प्रभद, स पु (स) आनन्द, हर्ष २ शीघ्रता ।
वि शीघ्र ।

प्रभदा, स स्त्री (स) सुदरी, उद्योगोपिद (स्त्री) ।

प्रभा, स स्त्री (स) यथार्थज्ञान, शुद्धज्ञान
२ दे 'भाव' ।

प्रमाण, स पु (स न) निदर्शनं, साधन,
उपपत्ति (स्त्री) मुख्यहेतु २ साक्ष्य, प्रामाण्य
३ मत्प्रा ४ इयत्ता, निर्दिष्टपरिमाण ५
शास्त्रम् । वि, मत्व, मित्र २ मान्य, स्वीकार ।

—पत्र, स पु (स न) अमान-निर्देश
निदर्शन, पत्रम् ।

प्रमाणित, वि (स) साधित, उपपारित,
स्थापित, प्रामाण्य-मत्प्रा, कृत, सत्यापित ।

प्रमाता, स पु (स न) प्रमाणी शत्रु-बोद्ध ।

प्रमातामह, स पु (स) मनामहविद् ।

प्रमातामही, स स्त्री (स) प्रमातामहपत्नी ।

प्रमाद, सं पु (स) भववधन-जना, उद्वेग,
सावधानता-भाव २ भ्रति क्षुब्धि (स्त्री),

प्रमुख, वि (म) प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य २ प्रथम, अदिम ३ प्रतिष्ठित, मान्य ।

प्रमुदित, वि (म) प्रहृष्ट, प्रसन्न आनन्दित ।

प्रमेह, म पु (म) मेह मूत्रदोष, बहुमूत्रता ।

प्रमोद, सं पु (म) हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता २ सुखम् ।

प्रयत्न, म पु (म) उद्यम, अध्यवसाय, आयास, चेष्टा, चेष्टित २ पीवन्वापार (न्या) ।

—दीर्घ, वि (स्) प्रयत्नवान्, मयत्न, उद्यमिन्, अध्यवसायिन्, मवेष्ट ।

प्रयाग, म पु (स) तीर्थविशेष २ महायज्ञ ।

प्रयाण, म पु (स न) प्रस्थान, गमन, प्रत्यायात्रा २ युद्धयात्रा ।

—काल, म पु (म) गमनकाल २ मृत्युममय ।

प्रयास, स पु (म) उद्योग, प्रयत्न, परिश्रम ।

प्रयुक्त, वि (म) व्यवहृत व्यापृत, उपयुक्त, सेवित, उपयुक्त ।

प्रयोग, म पु (स) उपयोग, उपभोग, सेवन, व्यवहार २ अनुष्ठान, साधन ३ क्रिया, विधान ४ तानिषोपचार ५ अभिनय ६ कुमीदाय ऋणदानम् ।

—करना, उपप्रत्युञ् (क आ अ), व्याप् (मे), सेव (भ्वा आ से), उपयुञ् (श् आ अ) ।

प्रयोजक, स पु (स) अनुष्ठान, उपयोजक २ प्रेरक ३ व्यवस्थापक ।

प्रयोजन, स पु (स न) अर्थ, कार्य २ उद्देश्य, अभिप्राय, आशय ।

प्रत्यर्कर, वि (म) प्रत्य विनाश-महार, कर-कारिन् ।

प्रत्य, सं पु (म) वृत्तान्त, प्रतिमन्त्र, मन्त्राट्टनाश, विन्ध, मन्त्रय ।

प्रत्याप, स पु (म) निरन्तरवर्तमानि (बहु), प्र, चल्-नत्पनम् ।

प्रलोभन, म पु (म न) विलोभन, लोभेन प्रवर्तन २ प्रलोभनप्रदाय, विरारहतु ।

प्रवचना, म स्त्री (म) पूर्वज्ञा, वृत्तव, गल्म् ।

प्रवचन, म पु (म न) व्याख्यान, विवरण, प्रशस्तन, स्पष्टीकरण २ व्याख्या ३ वंदायम् ।

प्रवर, वि (म) श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (म न) गावम् । (म पु) सन्नि (स्त्री) २ गात्र प्रवर्तनमुनिव्यावर्तनी मुनिगण ।

प्रवर्तक, म पु (स) आरम्भक, सम्हापक, प्रवर्तयितृ २ मन्त्रक, निर्वाहक ३ प्रेरक, निवर्तक ४ उत्तेजक = आधिपत्यक ।

प्रवर्तन, म पु (म न) कार्योपक्रम, १ वृत्त्य-संयोजन निर्वहण ३ प्रचारण ४ उत्तेजनम् ।

प्रवाद, सं पु (स) जनश्रुति (स्त्री), विजदनी, लोके-वाद-वार्ता २ अपवाद, मिथ्यामन्त्र ।

प्रवाल, म पु (म पु न) विद्रुम २ निश (म)ल्य ३ वीगादण्ड ।

प्रवास, म पु (स) विदेशवास २ विदेश ।

प्रवासी, वि (स मित्) प्रोषित, विदेशस्थ, विदेशवासी ।

प्रवाह, म न (स) स्रव, स्रवण, क्षुति (स्त्री), लाव २ (पल्) धारा, बग, ओष सोनम् (न) ३ कायनिवाह ४ व्यवहार ५ प्रवृत्ति (स्त्री) ६ क्रम, सततगति (स्त्री) ।

प्रविष्ट, वि (स) दृढप्रवेश, भ्रमगत ।

प्रवीण, वि (ङ्) निपुण, कुशल, दक्ष, पटु, चतुर, निष्णान, विश २ बोधावादनकुशल ।

प्रवीणता, स स्त्री (स) नैपुण्य, दाक्ष्य, बीरता, पार्व, चातुर्यम् ।

प्रवृत्त, वि (सं) रत, मग्न, पर, परापण २ उत्पन्न ३ निपुण ।

—करना, क्रि ३, प्रवृत् (मे), नि उद्-त्युञ् (कु) प्रवृत्ती कृ, प्रेर (मे) ।

—होना, क्रि अ, प्रवृत् (भ्वा आ से), रत मग्न तत्पर (वि) भू ।

प्रवृत्ति, म स्त्री (म) रुचि (स्त्री) छन्द, अभिलाष, भाव २ वृत्तान्त ३ कायनिवाह ४ विषयमग्न ५ उत्पत्ति (स्त्री) ।

प्रवेश, म पु (स) अन्तर, विगाहन-गमन २ गति (स्त्री), उपगम ३ बोध, शान्, परिचय ।

—पत्र, म पु (सं न) प्रतिष्ठि, पत्र पत्रम् ।

—शुल्क, म ३ (म) प्रतिष्ठि, शुल्क रम् ।

प्रवेशक, म स्त्री (म) परीक्षाभर २ प्रवेष्टी ।

प्रयोजित, वि (सं) मन्त्रयामिन्, चतुष्टयमिन्, परिव्राजक ।

प्रशमन्या, म स्त्री (म) शमन्यास, वैराग्यन,
चतुर्थाग्रन ।

प्रशमक, म पु (म) लोच, म्वाक,
नक्क, इत्येक २ चाङ्गहार ।

प्रशमनीय, वि (म) प्रशम्य, ल्यप्,
स्तुत्य नुत्य प्रशमाह ।

प्रशमा, म स्त्री (म) शमा, लुगि-लुगि
नु (स्त्री), म्वा, कीर्तन इडा ।

—करना, कि स, प्रशम (भ्वा ष म) इल्य
(भ्वा आ ने), लु (म ष म), लु
(म ष म) इड (अ आ से) ।

—होना, कि अ, प्रशम-स्तु-नु इल्य (न) ।

प्रशमित, वि (म) दे प्रशम्य ।

प्रशमन, स पु (स न) शमन, गावि
(स्त्री) ० नाशन ३ मङ्ग ४ वरीवरप्रम् ।

प्रशम्य, वि (म) नुन, भून्, स्तुन, इत्यादि,
प्रशमित २ दे प्रशमनीय ३ उत्पन्न श्रेष्ठ ।

—वाड, स पु (म) दशनाचावविशय ।

प्रशस्ति, स स्त्री (स) दे 'प्रशसा' २ प्रवरन
प्रशस्ताराक्य ३ राजा ४ निरुद्ध ४ प्राचीन
प्रधाना केन्द्रादिपरिचायकानि अक्षय

प्रसक्त, वि (म) मन्त्य, मरिष्ट २ आनक्त
३ प्रत्यागत ।

प्रसज, वि (म) म, लुङ्, प्र, हृष्ट, सानद,
आनदित, प्र, मुदिन, प्रफुल्ल २ निमल ।

—करना, कि स, अनद आह्लादस्तुप्रसद
प्रमुदप्रद (मे) ।

—होना, कि अ, प्रनद (भ्वा ष म),
आह्लादप्रमुद (भ्वा आ ने), प्र, हृप्
(दि ष से) ।

प्रसजता, म स्त्री (म) आनद, अह्लाद,
प्र, प्र, म-नोय, प्र, मोद उत्पन्न २ अनुमह
३ स्वच्छता ।

प्रसव, म पु (म) उत्पन्न प्रशुति (स्त्री),
यमनोयन २ यमन (न), उत्पत्ति (स्त्री)
३ सञ्चन ४ फल ५ कुसुमन ।

प्रसविनी, वि (स्त्री) उत्पदवित्री, जनवित्री,
प्रसविता ।

प्रसाद, म पु (म) हृग, दया, अनुप
० शनवत् ३ म्वा ४ वाच्यताविशेष
(स) ५ देवचरशिष्टप्रदार्थ, शेष
६ भोजन ७ नैवेद्य, वायन-नक्त ।

प्रसून, स पु (सं न) कुसुम, पुष्प २ फलम् ।
वि, जान, उत्पन्न ।

—वर्ष, स पु (सं) पुष्पवृष्टि (स्त्री) ।

—वाण, स पु (सं) पुष्प, शर-वाण, वाम, मदन ।

प्रसृत, वि (सं) प्रगत, प्रचलित २ विस्तृत, विस्तीर्ण ३ लव, दीर्घ, आयत ४ व्यस्त, सल्य ५ सुशील, विनम्र ६ गत, यत्न ७ स्फूर्तिमत् ।

प्रसृता, स स्त्री (सं) जघा, वलिका ।

प्रसेक, स पु (सं) आश्रय, सैक सैचनम्, अभिवृण, अभ्युक्षण, प्रोक्षणम् क्षरण, गलन, स्रवणम् ३ वसन, वय, वयि (स्त्री) ४ दावका, कटोरिका प्रप्रमाण ।

प्रस्तर, सं पु (सं) शिला, पाषाण, दे 'पत्थर' ।

प्रस्ताव, स प (सं) अवसर, उचितकाल २ प्रसंग, विषय ३ प्रकरण ४ उपक्षेप, उपन्यास ५ प्रति, वध, लेख ६ दे 'प्रस्तावना' ।

प्रस्तावना, स स्त्री (सं) भूमिका, उपोद्धान, प्राक्कथन, आसुप्त, अवतरणिका २ आरम्भ, उपक्रम ।

प्रस्तुत, वि (सं) लु(लू)त, दलायित ।
२ उक्त, कर्तव्य ३ प्राप्तिक, प्रमगप्राप्त ४ उपस्थित, प्रतिपक्ष ५ उद्यत, सज्ज ६ निष्पन्न, संपादित ।

प्रस्थान, स पु (सं न) प्रयाण, जङ्गम, गमन, यात्रा २ विविगीपुमेनाया प्रयाणम् ।

प्रस्वेद, स पु (सं) दे 'पसीना' ।

प्रहर, स पु (सं) वाम दे 'पहर' ।

प्रहरी, वि (सं रि) दे 'पहरा' स पु २ ।

प्रहसन, स पु (सं न) कृष्णनाट्य, भेद, परिहस्य, विनोद ३ अव-उप, हस्य ।

प्रहार, स पु (सं) आपात, ताट, निधान, हथ ।

—करना वि स न'हन् (अ प ज),

प्रह (स्वा प ज), ता (लु), प्रहारक ।

प्रहृष्ट, वि (सं) प्रसुद्धित, सुप्रसन्न, अत्यन्तदित ।

प्रहेलिका, स स्त्री (सं) प्रदन्तृती, दे 'पहेली' ।

प्रागण, स पु (सं न) अभिर, अवन, चत्वरम् ।

प्राजल, वि (सं) मरु, जल, २ मय्य, यथार्थ ३ सम, समतर ।

प्रात, सं पु (सं) देशभाग, राष्ट्रविभाग २ भूखण्ड, प्रदेश ३ सीमा, समत ४ अग्र, कोटि (स्त्री) ५ दिग्म (स्त्री) ।

प्रातीय, वि (सं) प्रातिक, प्रात, मवधिद विषयक ।

प्राइवेट, वि (अं) स्वरोप, आत्मोप २ विशिष्ट, असावजनिक ३ गुप्त, सवरणीय ।

—सेक्रेटरी, स पु (अं) *स्वरोपमविव ।

प्राकर, स पु (सं) वप्र प्र, शा(मा)ल, वरण ।

प्राकृत, वि (सं) प्रकृतिक, प्राकृतिक २ स्वाभाविक, नैसर्गिक ३ साधारण ४ लौकिक ५ शुद्ध, नीच ६ नीतिर । स स्त्री (सं न) व्यवहारभाषा २ प्राचीन भाषाविशेष ।

प्राकृतिक, वि (सं) दे 'प्राकृत' ।

प्राची, स स्त्री (सं) पूर्वदिशा, पूर्वदिश (स्त्री) २ पूज्यपूज्ययो पुरोवर्तिदिशा ।

प्राचीन, वि (सं) पुराण, प्राकृतन, पुरातन, पूर्व, प्राककाचीन २ पूर्वदेशीय, प्राच्य, पौरस्त्य, पूर्वदिक्स्थ, प्राच् ।

प्राचीनता, स स्त्री (सं) पुराणता, पुरातनता ३ ।

प्राचोर, स पु (सं न) प्रागने वृत्ति (स्त्री) प्रावर, प्राकृति (स्त्री), दे 'प्रवार' ।

प्राचुर्य, स पु (सं न) 'प्रचुरता' ।

प्राच्य, वि (सं) दे 'प्राचीन' (१२) ।

प्राज्ञ, वि तथा स पु (सं) पटित (), विद (), धीमान्, बुद्धिमान्, विद्वन् ।

प्राज्ञी, स स्त्री तथा वि (सं) पत्नि, बुद्धि मती विदुषी (नारी) ।

प्राण, स पु (सं प्राणि बहु) भगव (बहु) ह्मात्तन २ श्वात्त, उद्गाम, श्वित्त, ३ पवन, अनिल ४ वण, सति (स्त्री) ५ जीवन, जेत्य ६ अरसन ७ प्रियो मनुष्य पदार्थो वा ।

—न्याय, स पु (सं) मृत्यु, निधन २ भात्म, हत्या-प्रात ।

—दृष्ट, सं पु (सं) देहवृत्त्यु-दृष्ट, उत्तम साहस्य ।

—धारण, सं पु (सं न) जीवन, प्राणन, देहधारणम् ।

प्रारब्ध, म स्त्री (स न) भाय, देव, अद्भुत, प्राक्तन, नियति (स्त्री) । वि, कुलारम्भ, उपजात ।

प्रार्थना, स स्त्री (स) याचना याचना, अभिशक्ति (स्त्री), आनि, वदन, अभि, अथना ।
—करना, प्रि स अभिप्र, अथ (सुआमे), याच (म्वा उ से), मविनय आनि विद् (प्रे) ।

—यत्र, स पु (स) आवेदनपत्रम् ।

प्रार्थनीय, वि (स) याचनीय, अभ्यधनीय ।
प्रार्थित, वि (म) याचित, अभिधित, निवेदित ।

प्रार्थी, स पु (स धिन्) प्रार्थयितु, याचन निवेदक ।

प्रारब्ध, स स्त्री, दे प्रारब्ध' म स्त्री ।

प्रासंगिक, वि (स) प्रसंग, आगत प्राप्त चित्त, अनुसूय प्रस्तुत, प्रास्ताविक [-वी (स्त्री) = प्रास्ताविकी] ।

प्रासाद, स पु (स) रानन्तृष गृह भवन मदिर हृष्यं सोष धम् ।

प्रियम्, म पु (अ) निपादवराच ।

प्रिय, वि (स) दे 'प्यार' १ मनोर, अभिराम । सं पु, पति २ वान, दक्षित ३ जामादृ ४ दितम् ।

—सप्त, वि (स) प्रेष्ठ, प्राण प्रिय । म पु, पति, भद्र । २ वल्लभ, वान ।

—सप्ता, वि (म) प्रेष्ठा, प्राण प्रिया । म स्त्री, पत्नी १ वान ।

—दर्शन, वि (स) वृक्षम, दर्शन, अनुसूय स्वरूप, शोभन, सुदर ।

—भाषी, वि (म धिन्) मधुरभाषिन्, प्रिय, वादिन्-वचन ।

—वर, वि (म) प्रेष्ठ, प्रियतम ।

प्रिया, म स्त्री (स) नारी, रमणी २ पत्नी, भार्या ३ प्रेयमी, प्रेमवती, वाना ।

प्रीतम्, म पु, दे 'प्रियतम' ।

प्रीत, } सं स्त्री [म प्रीति (स्त्री)] दे
प्रीति, } 'प्यार' २ वृषि (स्त्री) ३ आनन्द, हर्ष ।

—पूर्वक, वि वि (स क) प्रेम्णा, गन्धेन ।

—भोज, सं पु (सं-भोग) प्रीतिभोजन, भोगनोत्सव ।

प्रेक्षक, स पु (स) दर्शक, द्रष्टृ २ (नाद वादि मे) पार्षद, सामाजिक ।

प्रेक्षण, म पु (स न) नेत्र २ अपलोचन, दर्शनम् ।

प्रेत, स पु (म) नरकस्थप्राणिन् २ भूत भेद, वेनात् ३ मृतमानव, शव ।

—कर्म, म पु [स-कर्मन् (न)] प्रेत, कार्य त्रिधा कृत्य, आभृत्यो सपिंडीकरणपर्यंत क्रियावन्त्वाप ।

—गृह, स पु (सं न) प्रेतभूमि (स्त्री) इमंशानम् ।

—दाह, स पु (सं) अत्येष्टि मृतर, सम्भार ।

—पक्ष, स पु (म) पितृपक्ष, गीण चाद्राधिन कुणापक्ष ।

—पति, स पु (स) यमराज ।

प्रेतनी, स स्त्री (स प्रेत) विद्याची चिन्ता, प्रेतपत्नी ।

प्रेम, सं पु [स प्रेमन् (पु न)] स्नेह, अनु, राग प्रणय, दे 'प्यार' २ काम, श्रद्धा, रति (स्त्री) ३ ईश्वरभक्ति (स्त्री) ।

—कहानी, स स्त्री प्रेमरथा, शृंगाराख्यायिका ।

—पात्र, स पु (म न) स्नेहभाजन (मानन वा पदार्थ) ।

—पाश, म पु (स) स्नेह-अनुदाग प्रेम, बन्धन रज्जु (स्त्री) श्रृंगार-जालम् ।

—पुस्तिका, स स्त्री (स) पत्नी, माया, कल्पत्रयम् ।

—वारि, सं पु (सं न) प्रेमाशु (न), स्नेहाश्रयम् ।

प्रेमालाप, स पु (सं) स्नेहस्तभाषण ३ शृंगार मवात् ।

प्रेमाशु, म पु (स न) प्रेम, पल वारि (न), अनुसंगवाच्यम् ।

प्रेमिक, म पु दे 'प्रेमी' ।

प्रेमिका, स स्त्री, दे 'प्रेयमी' ।

प्रेमी, स पु (सं धिन्) प्रणयिन, अनुरागिन, स्नेहिन, अनुराग प्रणय, वर २ कामिन, कामुक, रमण, वल्लभ । वि, प्रिय, आसक्त निरत, मन्त्री (व, मंगीन वा प्रेमी = सगीत, प्रिय-आसक्त इ) ।

प्रेय, वि (सं प्रेयम्) प्रियतर, अनिप्रिय

२ लौकिक-सामारिन्, मुख्यनि मो० ३ अल
वारभेद (सा०) ।
प्रेयसी, स. स्त्री (म) प्रेमवत्या, प्रमिगी,
प्रिया, पत्न्यमा, वाना, दमिता ।
प्रेरक, म पु (म) प्रचारयितु, प्रवर्णयितु
प्रोत्साहन, उत्तेजक ।
प्रेरणा, म स्त्री (म) प्रचोदना, प्रोत्साहन
ना, उत्तेजन-दा, प्रवर्णन २ दे 'पक्का' ।
—करना, क्रि म, उत्तन् प्रवृत्त प्रेर प्रवृत्त-
प्रोत्साह (मे) ।
प्रेरित, वि (स) प्रचोदित, प्रोत्साहित, उत्त
नित, प्रवर्णित ।
प्रेम, म पु (अ) मपीत्यन्यत्र २ मुद्रायन
३ मृदुल्यन्यत्र ।
प्रेमिष्ठ, म पु (अ) सभा, पति अथवा
प्रधान ।
प्रेमभक्त, म पु (अ) कथञ्चन २ कार्य
क्रमनयम् ।
प्रेमी, म पु (अ) प्रोत्साहित, भागनयन
प्रेम ।
प्रेत, वि (म) अविन, निम्न २ मृत,
प्रथित, पुषित ।
प्रेमाह्व, म पु (म न) धैर्य-उत्साह, वक्रन,
उत्तेजन, आश्वासनम् ।
प्रेमाहित, वि (अ) उत्तेजित, आश्वासित,
वृद्धोत्साह, प्रेरित ।
प्रेम, वि (म) विश्रुत, प्राप्ता २ प्रचलित,
प्रस्थित ३ स्थपित, स्थिरीकृत (स पु न)
१० अथ, तन्नामान्तरम् ३ शृङ्ग
लक्ष्यम् ।
प्रेमक, वि (म) उत्त उा आर्द्र २ निर्मल,
निर्गन्ध, शुभ ।
प्रेमोद, म पु (अ) जगन्निस्तारप्रणिज्जेस,
कथनम् ।
प्रेमगोडा, म पु (म) प्रचर, प्रचरकायम् ।
प्रेमाह्व, म पु (अ) स्वामिन्, प्रनु, वन ।
प्रेमोत्तर, म पु (अ) महाविद्यालयस्य विष
विद्यालयम् (अ) उपपद्य ।

प्रेषित, वि (स) विदेशस्थ, प्रवासित् ।
—पतिष्ठा, म स्त्री (स) प्रेषितमर्थात्,
नायिकाभेद ।
प्रेष्ठ, वि (म) प्रवृद्ध, पथित, प्रोपचित २.
सपरि, पूर्ण, भयत्र, मिद्ध ३ परिणत, परिपक्व
४ पुष्ट, दृढ ५ निपुण, चतुर ।
प्रेष्ठता, म स्त्री (म) प्रौढत्व, प्रवृद्धि (स्त्री)
२ परिपूयता ३ परिपक्वता ४ पुष्टि (स्त्री)
५ निपुणता ।
प्रेष्ठा, स स्त्री (म) विरिटी, श्यामा, सुवया,
वृष्टरता (स्त्री एक) (३० से ५५ वर्ष तक
की नारी) २ नायिकाभेद । वि, पुष्टा, परि
पक्वा, वृष्टा ।
प्लव, स पु (अ) निपन् ।
प्लवग, म पु (म) कपि, वानर २ हरिण
३ मङ्गव ।
प्लवन, म पु (म न) कुर्वन् २ तरणम् ।
प्लाटिनम, म पु (अ) महापु ।
प्लावन, म पु (म न) महाप्रवाह, चल,
प्रलय-वृत्तावच्छेद ।
प्लावित, वि (म) चलाम् ।
प्लास्टर, स पु (अ) दे 'प्लास्टर' ।
—आव पेरित, म पु, दवाचूर्णम्, परिम
प्रलेप ।
प्लोहा, स स्त्री (म) प्ला(प्लि)डन् (पु),
गुन्ध, प्लिहा ।
प्लुत, स पु (म) विमात्रवर्ण । वि, अनानि
युत २ प्लावित ३ तिक ४ विमात्र ।
प्लुरिमी, म स्त्री (अ) पुष्पसमवेष्टनम्,
पुष्पमावरणप्रदाह ।
प्लेग, म पु (अ) महा-मारी, भारिका
२ मृषिकरोष अग्निरोहिणी ।
प्लेट, म स्त्री (अ) दे 'तश्नरी' २ (पत्ता
दिव्य) पट्ट, पलक-कम् ।
—फार्म, म पु (अ) वेदी, वेदिका, मन्त्र,
पीठिका ।

फ

फ, देवतगरीवर्गमाया इविशनिमो ध्वन
नवर्ण, प्रकार ।

फका, स पु (दि फाँकना) मुष्टि (पु स्त्री),

अवलि (पु), मुष्टि-अवलि, माध अत्रादिक
२ खड्ग, दकल-कम् ।

फकी, स स्त्री (दि फका) चूर्ण, चूर्णोपपन्न ।

फट, म पु (म वध) वधन ० दे फटा
इ छत्, यप ४ रक्षस्व, गूत्वात् ५ दु यम् ।

फटा, स पु (म वध) पश वधन, वाधुरा,
पातिनी, युगवधना ० जाल इ दु म वधम् ।

—सगाना, मु, झल (जु) विप्रलम्भ (आ
आ अ) वच प्रः (प्रे) ० नात्र निक्षिप्
(तु प अ) निष्ठा (जु उ अ) ।

फटै म पञ्चना, झ, पाशे वध् प्रट् (कर्म),
वर्धा भू, २ विप्रलम्भ प्रतार (कर्म) ।

फमना, कि अ (हि फामना) सम्यग्मदित्त्वं
सवध् (कर्म), आकुली-सकीर्णी भू, मसक्त
सङ्गन्मदिलष्ट (वि) भू २ जाले पाश वा
ध्व-वध (कर्म) तालवद्ध (वि) भू ।

फमवाना, कि प्रे, व 'फसाना' वं प्रे रूप ।
फमाना, कि स (हि फसना) सादृश्य (प्रे),
सम्यग् (क् प से), आकुला सङ्गन्नी-सकीर्णी
कृ १ पाशेन वध (क् प अ) जाल धृ (जु),
पाशे पट (प्र) ।

फमाव, स पु } (हि फमना) सदिलहना,
फसावद्ध, म स्त्री } अधिकत्व २ सङ्गन्ना,
व्यतिरार, सप्त ।

फर, वि (अ फर) हरेत्, धुत्, च्वा-
२ विवर्ण, मद्यप्रभ ।

१ ग—होना वा फट जाना मु पाडु=टाव
विवर्ण (वि) भू, मद्य-म्लान मल्लि, प्रभ (वि)
जहृ (दि मा से) २ जाडुनी भू, मुर
(दि प से) ।

फकत, वि (अ) अल्, पयोत् ० एरारि ।
कि वि, वेवलम् ।

फकीर, म पु (अ) मित्र, मित्र ० मधु,
मन्त्र्यामित्र इ तिथन ।

फकीरनी, म स्त्री (अ फीर) मित्रो,
मित्रोपनीविनी, मित्रागरी ० परिमित्रा,
सन्ध्यामित्रा, वेगमिणी ।

फकीरा, म स्त्री (अ फरी) मित्रुता,
यागजन ० मन्त्राग इ इतिहास ।

फकड़, वि (अ फरी) निश्चिन् ० निरन्,
इ निर्वाहदिति । स पु, गान्, नदगान्
वरान्, नदगान्मय भगवन्, वरान् ०
मिथ्यावरान् ।

—चात्र, स पु, अशक्यगार अदनी
भाविन् २ मिथ्याभाविन् ।

—चात्री, म स्त्री, अशक्यभाविना, अव्यय
वाचरता ।

फकिरा, म स्त्री (म) तत्त्वनिर्वायामुपस्था
पित पूर्वार्थ ० झल, स्फुट, दम ।

फरर, स पु (फा फर) गर, जमिमान ।
फगुभर, म पु (हि फागुन) होलिनीमव
२ होलिनीगीतानि (न वहु) ।

फज्जीलत, म स्त्री (अ), गौरव, महता ।

—फी पगडी, मु, विद्वत्सामान्य, वैदुष्यो
न्नीयम् ।

फज्जीहत, म स्त्री (अ) दुर्गति (स्त्री) दुर्दशा,
२ वन्त ।

फज्जल, वि (अ) निरर्थक, व्यर्थ ।

—झर्चा, वि (अ + झा) मुक्तहस्त, अप
व्यर्थ, व्यविन् ।

—झर्चा, स स्त्री, अनि उप अभित, व्यय,
मुक्तहस्त ।

फज्जल, स पु (अ) कृपा, अनुग्रह ।

फट, स स्त्री (अनु) फटिति शब्द ध्वनि ।

—फट, म स्त्री, फट फटाच ० प्र ५ ।

—से, कि वि, सतिनि, सपदि ।

फटके, स पु दे 'स्फटि' ।

फटके, कि वि (अनु) तत्पणे, सतिनि ।

फटकन, स स्त्री (हि फटका) दुपमं,
गुप, अमाद्वयम् ।

फटफना, कि म, (अनु फट) प्रम्पुट् (प्रे),
प्रलम्भनेन शरणे विमुध् (प्रे) २ द 'पीपना'
इ दे 'फटफना' । ४ रेणु अपवृत्त (अ प
से), निधूली कृ ५ शिप् (तु प अ), धम्
(दि प से) । कि अ, वा (अ प अ),
गन् २ दूरी पृथग् भू इ 'वटफना' ४ धम्
(दि प से) ।

फटफरी, स स्त्री, दे 'स्फटारा' ।

फटफर, स स्त्री (अनु फट + सं मार >)
निर्मलता, वादद, उपलम्भ, जिग,
आमोश, गहा ।

फटफरना, कि म (पूर्व) शिवाया आन्व
आहत्य वषाणि प्रष्टु (जु) ० दूरी पृथग्,
कृ ३ निर्मलम्-नर्त्त (जु आ से) वातादट
(जु), निद्र (आ प से) ४ मरटफ
शब्द पृथक् (प्रे) ।

फटकारने योग्य, वि, निर्म-मन्दीय, नर्त्तनीय ।

फटकारने वाला, स पु, निभत्मक, तर्क ।
फटकी, स स्त्री (हि फट्) शकुनि-
पारम्भम् ।

फटना, क्रि अ (हि फटना) विट् विभम्
विट् (कर्म) २ स्फुट (तु प से), दल
(भ्वा प से) ३ खट्ठो भिद् (कर्म)
दबली भू ४ अप विट् (तु प से) इतस्त
विद् (भ्वा प से) ५ अत्यन्त व्यथ (भ्वा
आ से) ६ अन्ती भू ।

फट पड़ना, सु महसा आपत् (भ्वा प से)
उपस्था (भ्वा आ से) ।

छाती—, (शोकानिनायेन) हृदय विट् द्विधा
भिद् (कर्म) ।

फटफटाना, क्रि स (अनु फटफट) प्र,
गल्प (भ्वा प से) अपाधक वद (भ्वा प से)
२ दे 'फटफटाना' ३ प्रयत्न परिभम्
(दि प से) ४ फटफटावते (ना था),
फटफटाशब्द कृ ५ आजीविकावे भृश चेष्ट
(भ्वा आ से) ।

फटा, वि (हि फटना) विदोर्ण, विशीर्ण
२ स्फुटित, विदलित ३ शकलीभूत । स पु,
छिद्र, छेद, भेद ।

—दूध, स पु, अन्तीभूत क्षीरम् ।

—पुराना, स पु, चीर, चीकर, कर्ण ।

फटे में पाँव देना, मु- जम्पापारेपु व्यापार कृ,
परकार्येपु व्यपृ (तु आ से) ।

फटिक, स पु दे 'स्फटिक' ।

फट्टा, म पु (हि फटना) विदोर्विशुद्ध ।

फड, ॥ स्त्री (स फा) ग्लह २ घृत,
शाला-उभ ३ क्रयविक्रयस्थान ४ पक्ति
(स्त्री), समूह ।

—वाङ्ग, स पु (हि फा) स्मिन्, घन
कारक २ वाचान्, वाचदूष ।

फडक, स स्त्री (अनु) प्र, स्वद, स्फुरण,
कथ २ पक्ष, चालन-अस्फालनम् ।

—उठना, सु, प्रमद (दि प से) ।

—जाना, सु, अनुरज् (कर्म), तिनह (दि प से) ।

फडकना, क्रि अ (पूर्व) स्फुर (तु प से),
वेदकप्रसद (भ्वा आ से) २ धुम्
(दि प से), आहुली भू २ पक्षा विचल
(भ्वा प से), विष्ट (कर्म) ।

फडकाना, क्रि स, व 'फडकना' के प्रे रूप ।

फडफडाना, क्रि स (अनु फटफट) फ
फटावते (ना था), फटफटाशब्द नन् (प्रे)
२ पक्षा विष्ट (स्वा उ से, क् उ से,
भ्वा उ मे, तु), आस्पन् विचल (प्रे),
दे 'फटफटाना' । क्रि अ, धुम् (दि प से),
अकुली भू २ उत्सुक वृत् (भ्वा आ से) ।

फडफडाहट, स स्त्री (हि फटफटाना)
पक्ष, आस्पलन विधुवन विचान्न २ स्फुरण,
स्फदन, विकप ३ आकुलता, चित्त, वेग भ्रम,
म, क्षोभ ४ प्रयास, अनि प्र-यत्न, चेष्टितम् ।

फडवाना, } क्रि प्रे, व 'फाडना' के प्र रूप ।
फडाना, }

फडिया, स प (हि फड) धुम्कारक,
मभिक २ दे 'परचुनिया' ।

फण, स पु (स) फणा, फण, कट, टा-टी,
स्फट टा, भोग, स्फुट टा, दबी-दवि (स्त्री) ।

—कर, स पु (स) सर्प, बहि ।

—घर, स पु (स) नाग, सर्प २ शिव ।

—मणि, स स्त्री (स पु) सर्प-मणि-रत्नम् ।

फणा, स स्त्री (स) दे 'फण' ।

फणी, स पु (म-णिन्) फणधर, फाकर,
दे 'सर्प' ।

फणीन्द्र, } स पु (स) अनत, शेष,
फणीश, } मुनयेश, सपराज ।

फणववा, स पु (अ) व्यवस्था, निर्णय
(इत्थम्) ।

फणतह, स स्त्री (अ) विनय २ साकल्यम् ।

—मद, —बाब, (अ-फा) विनान्,
विनेत ।

फतिगा, स पु (म पता) शलभ, पतगम् ।

फतर, म पु (अ) दोष, विकार, २ हानि
(स्त्री) ३ विन ४ उपद्रव ।

फन, स पु, दे 'फा' ।

फन, स पु (फा) युग, वैशिष्ट्य २ विद्या,
ज्ञान ३ कलाकौशल, शिल्प ४ व्याज,
छन्नन् (न) ।

फना, स स्त्री (अ) प्रत्य, वि, नाश,
प्र, प्लव ।

फनी, स पु, दे 'फनी' ।

फफोला, स पु (स प्रस्फोट) त्वक्, स्फोट,
शोक । दे 'छाला' ।

दिल के पीछे फोटना, सु, वैर-साधन

शोधननियान्न कृ (ना धा), प्रनिहिम्
(रु प से), क्रोध प्रगटयति (ना धा),
फव, स स्त्री, दे 'फवन' ।

फवती, स स्त्री (हि फवना) क्षेला लिका,
नमन् (न), नमोक्ति (स्त्री), व्यववचन
० समयोचितवृत्ति (स्त्री) ।

—उड़ाना, सु अव-खप दस (भ्वा प से),
वक्रोक्तया आक्षिप (तु प अ) ।

—कहना, सु, सहाय्य उपायम् (भ्वा आ
अ) महान् व्यवयवचन प्रयुज (रु पा अ) ।

फवन, म स्त्री (हि फवना) शोभ, छवि
(स्त्री), सौन्दर्य २ मटन प्रसाधन, परिष्कार ।

फवना, नि अ, (म प्रभवन्) शुम् (भ्वा
आ मे) युन (वम) उपपद (हि आ
न), उचित उपपन्न अनुरूप युक्त सदृश (वि)
हृत् (भ्वा आ से) ।

फवनेवाला, वि, शोभन, उचित, युक्त, अनु
रूप, सदृश ।

फरीला, वि (हि फव) शोभन, सुंदर,
० उचित अनुरूप ।

फर, फरन्, म स्त्री, दे 'फटक' ।

फर, म पु, दे 'फर' ।

फरना, कि अ, दे 'फरना' ।

फरना, म पु (का) पुन, तनुन ।

फरजी, म पु, दे 'फजी' ।

फरद, म स्त्री, दे 'फरद' ।

फरफद, म पु (अनु फर + हि. फदा)
माया, कपट, छल, छद्म, (न), व्याज
० भाव, हाव ।

फरफर, म पु (अनु) वम, गुरुरण आका
म्भम् । कि वि सर्वेण चीन, दुन २
प्रनिहितम् ।

फरफराना, कि म, कि अ, दे 'फरफराना' ।

फरमा, स पु (अ क्रम) घटना, रचना
२ दे 'फरमा' ३ आकाशमाधनम् ।

फरमा, स पु (अ काम) सह-मुद्रणाई
पूगपत्रम् ।

फरमान, म पु (का) राजसीय आज्ञापत्र,
अनुशामनपत्र २ आज्ञा, आदेश ।

फरमाना, कि म (का) आज्ञा (प्रे),
आदिश (तु प अ) ज्ञाम् (अ प म.)
० कप् (तु) ।

फरयाद स स्त्री (का) दुःखनिवेदन
० प्रार्थना, अन्वर्थना ३ अभियोग ।

फरयादी, स पु (का) दुःखनिवेदक
२ अभियोक्तृ २ प्रार्थिव ।

फरलाग, स पु (अ) नौशस्त्र पीटशो भाग,
जघ्नमानमेद ।

फरलो, म स्त्री (अ) सार्द्धवेदनो दोषादि
कात्, अवकाशभेद ।

फरदरी, स स्त्री (अ) केनुरी) आग्लमव
त्तरस्व द्वितीयो मास ।

फरसा, म पु (सं परशु) दे 'कुल्हाडा' ।

फरहग, स पु (का) पोश प, अभिधान,
शब्दमग्रह २ टीका, कुचिका, व्याख्या ।

फरहत, स स्त्री (अ) मोद, हृष, प्रसन्नता ।

फरहरा, स पु (हि कहराना) पताका,
केतु ।

फराख, वि (का) आवन, विस्तृत, विशाल ।

—ठिल, वि (का) विशालहृदय उदार ।

फरागत, स स्त्री (अ) अवमाय विश्राम,
उद्योगविश्रांति (स्त्री), अवकाश ।

२ निश्चिन्ता ३ मन्त्र्याग ।

फरामोश, वि (का) विस्तृत ।

फरामोशी, म स्त्री (का), विस्तृति
(स्त्री), विस्मरणम् २ सफलन, स्वलिङ्गम् ।

फरार, वि (अ) (दृढभवात्) पलायिन,
अपराध ।

फरिदना, म पु (का, मि ॥ प्रेरित)
दिव्य दृश, दत्त २ देवता ।

फरीद, स पु (अ) प्रनिर्दिष्ट, विपश्चित्
२ वादिन्, अधिन्, प्रनिवारिन्, प्रत्यर्थिन्
३ पक्ष, प्रनिपक्ष ४ पक्ष, सपक्ष
५ श्रेणी, वर्ग ।

—मानो, (सं पु अ) प्रनिवारिन् ।

फरीकन, स पु (अ) (व्यवहारे) पक्ष
प्रतिपक्षी, वादिप्रतिवादिनी, अभियोग्य
भियुक्ती ।

फरहा, म पु, दे 'फावका' ।

फरददा, स पु (सं फल्द) राजमहा,
० बु, नद ।

फरेव, म पु (का) छल, कपट, प्रतारणा ।

फरेली, वि (का) छलित्, कापटिक,
भगारक ।

फलोत्पत्ति, स स्त्री (फा) विक्रय-यणम् ।
फड्, स पु (अ) पृथग्गतान्व, भिन्नत्व,
इतरत्व २ अंतर, भेद, विषय ३ दूरतान्व,
अंतर ४ न्यूनता, विकल्पा ।

फङ्ग, स पु (अ) घामकृत्य (इस्लाम)
२ कर्तव्यकर्मन् (न) ३ कल्पना
४ उत्तरदायित्वम् ।

—फरना, कि अ कृत्प (फ्रे), उत्प्रेष
(भ्वा आ से) (प्रमाण बिना) सिद्ध मन्
(दि आ प्र) ।

फर्जी, स पु (फा) कल्पित, काल्पनिक,
२ मत्वाहीन वितथ ।

फर्द, स स्त्री (अ) मुचोत्रि (स्त्री)
आम-बला (स्त्री), अनुकर्मिका
२ पृथग्विध पत्रवत्पादिरा २ प्रच्छदपत्र
स्यो वपुः । वि अनुपम, अतुल्य ।

फर्याद, स स्त्री, दे फर्याद' ।

फरदा, स पु (अनु) स्वरा, वेग २ दे
'दरा' ।

फर्रा, स पु (अ) कुपप्रसारक २ विधर ।
फर्रा, स पु (अ) दुर्द्धम म, शिलास्तर
२ गृहभूमि (स्त्री) आस्तरण, कुष-आ,
जमता, परिमोम ।

फल, स पु (म न) शान्त्य, प्रसव, उत्पन्न
२ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ३ परिणाम,
४ गुण, प्रभाव ५ वनभोग ६ प्रतिफल,
प्रतीकार ७ धारा, पत्र, फल (खण्डादिकस्य)
८ फल, दुर्गा, वृष ९ फल-क
१० दाल, फल, चर्मन् (न) ११ उद्देश्यसिद्धि
(स्त्री) १२ गुण्य (गति) १३ गणित
क्रियापरिणाम (उ योगगुणन, फल)
१४ क्षेत्रफल १५ ग्रहयोगपरिणाम (ज्यो)
१६ प्रयोजन, अथ १७ वृद्धि (स्त्री),
दे 'वृद्ध' ।

—फाना, या लगना, कि अ, फल् (भ्वा प
से), सपरीभू, फलकृ वृ (दि आ से),
फलित (वि) भू ।

—दार, वि (सं + फा) फलकृ, फलदायक,
फलद, फलप्रद, फलित, फलित्, सफल
२ अनोन, अवध्य ।

—पाक, स पु (म) कर्मार्थक २ नला
मलक ३ फलपरिणति (स्त्री) ।

—पाना, कि स, (स्वकर्मणान्) फल भुक्
(रु आ अ)-लभ् (भ्वा आ अ) प्राप्
(स्वा प अ) ।

—प्राप्ति, स स्त्री (स) कृतकार्यता, मनो
रथमिच्छि (स्त्री) ।

—भोग, स पु (म) उदयानुभव, परि
णामोपभोग ।

—रान्, स पु (स) दे तरवून' २ दे
'खरवूग' ।

फलक, स पु (स पु न) (काष्ठादिकस्य)
पट्ट २ शिला ३ दाल, चर्मन् (न)
४ रत्नपट्ट ५ आस्तरण ६ पत्र, पट्ट ७ हस्त
नल ८ फल ९ पीठ, पीठिका ।

फलक, स पु (अ) आकाश २, गगन २
स्वा ।

फलत, अन्ध (स) परिणामत, अत, इति
हेतो, अस्मात् कारणात् ।

फलद, वि (म) फल-दायक प्रद वनक ।

फलना, कि अ (म फलन) दे फल आना'
('फल' के नीचे) २ फल आवट (भ्वा प
अ), लाभजन्य (प्रे) ।

—फूलना, मु, मयूज (दि प से), सवृष
(भ्वा आ से), उत्कर्ष या (अ प अ) ।

फलसफी, स पु (अ) दशनशास्त्र, ठक,
विवासास्त्र ।

फलसफा, स पु (अ) दार्शनिक, तत्त्वज्ञ,
दर्शनशास्त्र ।

फला, वि (फा) अनुक ।

—फलों, वि भयुक्तानुक्त, निश्चित, निरिष्ट ।

फलाग, स स्त्री, दे 'कुदान' ।

फलागना, कि अ (स प्रलघनम्) दे
'कुदान' ।

फलाकाशी, वि (स शिव) फलपुष्प, फला
भिलाषिन् ।

फलाभा, वि, दे 'फल' ।

फलार्थी, वि (स-धिन) फलेच्छुक, फलाभि
लाषिन् २ परिणामोत्सुक ।

फलाहार, स पु (म) फलभक्षण, फलनिर्व
हणम् ।

फलाहारी, वि (स-रिन्) फलभक्षक ।

फलित, वि (म) फलकृ, फलित्, प्राप्तफल
२ सख, पूर्ण ।

—ज्योतिष, म पु (म न) दैवशिविवा ।
 फली, स स्त्री (हि फल) बीजपुट, बीजकोष ।
 फलोत्ता, म पु (अ फलील्ह) वर्तिका, वर्ति
 (स्त्री) २ नालाकाशवर्ति फली ।
 फलीभूत, वि (स >) मफल, फलप्रद ।
 फलोदय स पु (स) फलोत्पत्ति (स्त्री)
 ० लाभ ३ हय ४ स्वयं ।
 फमल म स्त्री (अ फल) क्षत्प, धान्य,
 अन्न ० मत्त ३ बाल ।
 फसाद, स पु (अ) मयोम विप्लव
 ० बल्ह उपद्रव २ विभार, विन्निवा ।
 फसादी, वि (फा) विद्रोहिन् विप्लवकारिन्
 ० उपद्रविन् कल्ह प्रथ ।
 फसाना, म पु (फा) आरक्षयिका, रजु,
 कषा ।
 फसाहत, स स्त्री (अ) माषा मौष्ठव
 परिष्कृति (स्त्री) ।
 फमील, म स्त्री (अ) प्रसार, वरण, वध,
 वप्रम ।
 फहरना, कि अ (स प्रसरणम्) प्रसृ (भ्वा
 प अ) उन्वी (भ्वा आ से) ।
 फहराना, कि म 'फहराना' के धलुओं के
 प्रेरणायक रूप ।
 फॉक, म स्त्री (म फल्कम् >) रणम्,
 शकल २ छुरिका ३ रेखा ।
 फॉकना, कि स (हि फकी) इस्फण्डन मुखे
 निक्षिप (हु प अ) । स पु, चूर्णम् मुखे
 निक्षेपणम् ।
 फॉडना, कि अ (स फणन >) कुर्द (भ्वा
 आ से) उत्पु (भ्वा आ अ) २ उत्पन्न
 (भ्वा आ न) । म पु उत्पन्नवन, कूटन,
 उत्पन्नम् ।
 फॉस, स स्त्री (म फास) बधनम्, दे
 'फदा' ।
 फॉसना, कि म (हि फॉन) पश्याति
 (ना था) २ वचप्रनु (ने) ।
 फॉसी, म स्त्री (हि फॉम) उक्कधनम्
 २ कृत्तुण् २ पशु बधनम् ।
 —फेना, कि म, उक्कध्व हन् (अ प अ) ।
 फाटल, म स्त्री (अ) परमयद २ पत्ति
 (स्त्री) ३ मृग, गुा ।
 फाका, म पु (अ फाल्ह) उपवास, उपोषन,
 रपनम् ।

फाग, स पु (हि फागुन) होलिरोम
 २ रक्तचूषणेद ३ होलिकागीतम् ।
 फागुन, स पु (म फाल्गुन दे) ।
 फाटक, स पु (म कपाट) अगनेश्वर, उद्द,
 द्वारम् २ लौटद्वारम् ३ दे 'कौनी होद' ।
 फाडना, कि म (म फाटनम्) प्रथ (हु
 प ने) भिद्दि (र प अ), वि,
 (त्रे) २ गण् (धु), भन (र प अ) ।
 म पु, प्रथन, भेदन, द्येदन, विचारण, विपान्
 २ गन्धन भजनम् ।
 फान्द, म पु (फा) *दीप, कोप पुट ।
 फान्दा, स प (अ फान्दह) काम, धन-
 मन्, आय ३ प्रयोजनमिद्धि, दैमिनप्रति
 (स्त्री) ३ मुखल सुपरिणाम ४ नीरोगता ।
 —फन, वि गन्धद्रव्यक, उपहारक ।
 फारखनी, म स्त्री (अ फारिग+खनी)
 दायित्वस्वाग ० दायित्वस्वागपत्रम् ।
 फारम, म पु (ध फार्म) प्रपत्रम् ।
 फारमूला, म पु (अ) मूत्रम् ।
 फारम, म पु (फा) पारसि(सी)क ।
 फारमी, म स्त्री (फा) पारमी ।
 —फाँ, वि पारमीविद्, पारमीपटित ।
 फारिग, वि (फा) लम्भावराश, निर्वर्तन
 व्यापार, निवृत्त ।
 —फोना, पु कार्यमुक्त, लम्भावराश भू २
 शीचाय गम् ।
 फारन, वि (अ) विदेशीय, परदेशीय, वै
 पार, देशिग ।
 —फारिम, म पु (अ) विदेश परराष्ट्र,
 बायाय्य ।
 —फेरेहा, म पु, विदेश परराष्ट्र, मचिव ।
 फारेनर, म पु (अ) विदेशीय, परदेशीय,
 वैदेशिग, पारदेशिग ।
 फारेनहाइट, म पु, चर्मनवेशनिरविशेष ।
 —थमामाट, म पु (अ) फरेनहाइट
 तापमापनम् ।
 फारेन्, म पु (अ) वन, जगन्म ।
 —डिवाटमेंट, म पु (अ) वन जंगल,
 विमण ।
 फाल, म स्त्री (म पु न) कुशिल, कृषिना,
 हलापरणम् ।
 फाल्गु, वि (हि फाल्=दुर्गा) उपयुक्तव

(भ्वा प अ) २ नृत् (दि प से) ।
म २ उत्पन्न, नर्तनम् ।

फुनगी, म स्त्री (स स्फुटनम्) शाला विटप,
अष्टपद अष्टाङ्गुरा (बहु०) ।

फुफुन न पु (म) दे 'फेफड़ा' ।

फुफरा, पु (अनु) दे 'फुरार' ।

फुफरा वे, (हि फूफा) पैतृत्वमेव, पि (पे)
तृत्वत्वाय ।

फुदन्त, न स्त्री (अ) वियोग, विरह ।

फुरता न स्त्री (स स्फूर्ति) दीप्रता,
क्षिप्रता ।

फुरतीला, वि (हि फुरती) दीप्रक्षिप्र,
कारिन्, स्फूर्तिमत् ।

फुरता, कि अ (स स्फुर) प्रादुर्भू, प्रवर्दीभू
२ चपनेर् (भ्वा आ से) ३ प्रकाश
(भ्वा आ से) ४ फुरपुरायेते (ना था) ।

फुरमत्त, न स्त्री (अ) अवसाह, रिक्तममय
२ अवसर, समय ।

फुलका, स पु (हि फुलना) लघुवनु,
रोहिता २ विस्तृत, पिङ्गवा ।

फुलवादी, न स्त्री (हि फूल + वादी)
पुष्पधारिणी २ क्लृप्तकारिणी वाता ।

फुलवाही, न स्त्री (सं पुष्पवाणी) पुष्प
वृद्धम, वादी-वायिका, उवाचम् २ वरदावाया
वात् निर्मिता पुष्पवादी ३ पुष्परत्नवाद्य ।

फुलाना, कि स, २ 'फुलना' वे प्रे रूप ।

फुल्ले, सं पु (हि फूल + ले) सुगन्धितैलम् ।

फुल्ल, वि (स) विकसित स्फुटित, उद्भिद् ।

फुसकुमा, वि (अनु फुस) क्षिप्र, दम्भ
२ भगुर, भिदुर ३ अशक्त, दुर्बल ।

फुमलाना, कि म (हि फिमलाना) प्रगल्भ
(प्रे), विप्रलम् (भ्वा आ अ) ।

फुहार, स स्त्री (स फूत्कार >) शीतरवर्ष,
मन्दवृष्टि (स्त्री) ।

फुहाग, सं पु (हि फुहार) नलपारा,
दन्त २ जलोत्क्षेप ।

फूँक, स स्त्री (अनु फू) फुत्कार, ध्वाजम्
२ सुगन्धक, श्वेत ।

—मारना, कि स, फूँट, ध्वा (भ्वा प अ) ।

फूँकना, वि म (हि फूँक) दह् (भ्वा
प अ), मरममादक २ फूँक ।

फूँकनी, सं स्त्री, दे 'फूँकनी' ।

फूँस, म स्त्री (ध्वा मे >) पलाल-लै,
पल २ शुष्क, दुग्धाम ।

फूट, म स्त्री (हि फूटना) चित्रा, मन्त्रा,
चित्रित्या पञ्चा २ विदलय ३ विरोध,
मनभेद ।

—डालना, कि म, विरोध जन् (प्रे) ।

फूटना, कि अ (म स्फुटनम्) भिदित्ति
विद् (वर्म) स्फुट (तु प से) २ विरम्
फूट् (भ्वा प से) ।

फूत्कार, म पु (म) दे 'फुत्कार' ।

फूफा, न पु (देश) नितुवत्त, पनि ३ ।

फूफो, म स्त्री (हि फूफा) नितुवत्त ।

फूल, न पु (म फुलनम्) वृद्धम, प्रयत्न, पुष्पम् ।

—दान, म पु, वृद्धमभाजन पुष्पदानम् ।

—दार, वि, पुष्पित, सपुष्प ।

फूलना, कि अ (हि फूल) फुल्ल विरम
(भ्वा प म) २ प्रमुत् (भ्वा आ मे) ।

म पु विराम, प्रमुत्त २ प्रमाद, जालाद ।

फूला, न पु (हि फूल) शुभ, पुष्पम्,
फूलो, म स्त्री (पुष्प नैररागभेद ।

फूस, स पु, दे 'फुस' ।

फूड्ड, वि (अनु) च, नृद, मन्दमति २
कदारार, वृक्ष, कुददान ।

फेकना, कि स (म क्षेपनम्) शिपुत्तु
(तु प अ) ३ भूम् (दि प स) २
प्रन देत पत् (प्रे) ३ सावमान त्यन् (भ्वा
प अ) ४ अन्वय (तु) । म पु, क्षेपा,
प्रामन, एतन, जपव्यय ।

फेकने बोधय, वि क्षेपाय, त्यक्त्य ।

—वाला, म पु, धार, प्रामन ।

फेँका हुआ, वि, क्षित, प्रामन, त्यक्त ।

फटना, कि म (सं पिष्ट) मध् (भू प म),
मध्वन् (भ्वा प से) २ जीर्यशानि
मिथ् (तु) ।

फेंग, म पु (हि फंग वा पंगी) परिग,
वि, अध पट २ लघुलीपय ।

फेम, म पु (म) जलदम, अधिराज,
मण्ड २, लिप्तीर, अनुपय ।

फेनिल, वि (म) फेन, युत प्रवृत्त, एतन् ।

फेनी, म स्त्री (म फेनित्) पराकात्रभेद ।

फेफड़ा, म पु (म फुफुस मन्) नित्य,
कलोम, कलोमन् (न), फुफुसम, रत्ननन ।

फेफडी, स स्त्री दे 'पपनी' ।

फेर, स पु (हि फेरना) भ्रामा, परिवहनम्
२ भ्रान्ति (स्त्री), क्रम २ पुनर (अन्य) ।

फेरना, कि म (म प्रेरणम्) धृतिपरिभ्रम्
(प्रे) २ प्रतिदाप्रत्यु (प्रे) ॥ प्रतिया
प्रतिनिवृत्त (प्र) स पु धृतिपरिभ्रामप,
प्रतिदान, प्रत्यपणम्, प्रतिपणन प्रतिनि
वर्तनम् ।

फेरफार, म प (हि फेरना) परिवहन विप
याम विषय २ व्याप्त, कपम् ।

फेरा, स पु (पूव) प्रत्यावर्तन, प्रत्यागमन
२ भ्रमणम् परिभ्रमणम् ३ विरागमन ।

फेरी, म स्त्री (पूव) परिव्रता प्रक्षिप्ता
३ दे 'फेरा' ३ दे 'फर' ।

—बाला, स पु, भाग्यवाट बर्बर ।

फेर, वि (न) विष, मोचन अनुत्ती ।

फेकरी, स स्त्री (अ) शिखरम् ।

फैलना, कि अ (म प्रसरणम्) । वल विस्तृ
(कर्म) ३ व्याप् (स्त्री प अ) ३ अर्च
(स्त्री आ अ) पीनी भू ४ प्रयात (वि)
नन् (दि था मे) ५ आग्रह । स पु,
विस्तार, विनिवृत्ति (स्त्री) ।

फैला हुआ, वि विस्तृत, विस्तार
अप्यायित पीन, प्रयात, प्रसिद्ध ।

फैलसूत्र, स पु (अ फिल-क्र) बुध,
प्र २ हस्ति, वपति । ३ पव्ययिन् ।

फैलसूफी, म स्त्री, (अ) बुद्धिबल, शानता
२ हल, कपम् ३ अप्यय, सुप्तवृत्तना ।

फैलाना, कि म, व फैलना के प्र रूप ।

फैलान, स पु (हि फैलना) विस्तार, प्रसार
२ वितति व्याप्ति (स्त्री) ।

फैदान, स पु (अ) रीति, प्रथा २ सौदा,
विवि, वेषमूषा ।

फैसला, म पु (अ सह) निर्णय, सपधारणम्
फोक, स पु (हि फूँकना) मल ल, उच्छिष्ट
शेष, अवसर ।

फोफ्ट, वि (हि फोक) विस्तार, तत्त्वज्ञान ।
फोकस, स पु (अ) रश्मिनिर्गम ।

फोटो, म प (अ) छायाचित्र, चित्रावली ।
—का फमरा, स पु, छायाचित्रवेष्टा ।

—ग्राफर, म पु (अ) छायाचित्रक ।

—ग्राफी, म स्त्री (अ) छायाचित्रणम् ।

फोडना, कि म (म स्फोटनम्) स्फुट विट
यण्ट (प्रे) । स पु, विदारण, स्फोटन,
स्फुटनम् ।

फोडा, स पु (म स्फोट), विट, स्फुट,
विश्रि ।

फौज, म स्त्री (अ), नेना, बल, सैन्यम् ।

—दार, स प, (फा) सैन्यपति, सैनाना ।

—दारी, म स्त्री (फा) दण्डाधिकारपद
३ कलह, पत्ति ।

फाजी, वि (फा) सैनिक, बौध । स प,
सैनिक, बौध ।

फौरन, कि वि (अ) तपदि, सद्यः सगिति,
अतिराम (मव अन्य) ।

फौलाद, म पु (फा पोन्ना) स्फोटन,
सारणोद्, शस्त्रम् ।

ब

ब, देवनागरीवर्माणां ब्यादेशो व्यवन
वर्ण वार ।

बग, स ॥ (स बग बहु) भाग्यम् प्रात
विशेष ।

बैगला, वि (हि बगल) बाग, बगदेशीय ।
स स्त्री, बगभाषा ।

बैगला, स पु (अ बैगली) एवमुक्ति भयनम् ।

बगाल, स पु (स बग बहु) प्रात ।

बगाली, वि (हि बगल) बगीय, बगदेशीय ।

स पु, बगालिन् ।

बजर, वि (हि बग-ऊन) ऊपर, ऊपवत्,

अश्वमूत्रम् । स पु ऊपर-नम्, अनुवरा भू
(स्त्री) ३ मरस्थलम् ।

बनारा, स पु (स बगिन्) धान्य, बगिन्
व्यवसायिन् ।

बैटना, कि अ (म बटनम्) विभक्त-वत् (कर्म) ।

बैटवाना, कि प्रे, 'बैटना' के धातुओं के प्रे
रूप ।

बडल, स पु (अ) पोडुलिका, गुच्छ, पोडुला,
सधान, मार, कुच ।

बडी, स स्त्री (हि बड) कु(क)पस्य कम् ।

बद, स पु (फा) बध, बधनम् २ अवरोध,

उपरोध ३, विन । वि, मयन निवर्तित
० अवमृद्व अन्तरित ३ पिहित मकृतमुस
४ विरत, मन्दव ।

—रना, रि म (जगलन) पिषा (जु उ
अ) र् (रु उ अ) बील्यति (ना
धा) ० निहृ (प्रे) प्रतिपथ (भ्वा प
मे) ३ विरम् पिशम् (प्रे) म्मम् (र् प
म) ४ (र्प्रदिक्) पूर (चु) ।

यदुगा, म स्त्री (फा) प्रणम ३ सवा
० धरापातना ।

यदुगा, म पु (म इदम्मा) दारम्मा
पुषपप्रमाणा वल्लमाज्जिका ।

यदुगा, म स्त्री (म वदना) प्रणाम
नमस्कार, व दन्तम् । कि म, प्रणाम (भ्वा
प म), व (भ्वा आ मे) नमस्कृ ।

यदुगा, म पु (म वानर) वपि मरु,
शापशु वलीमुस । (स्त्री वलीमुसी,
मरुदी) ।

—यदुगा, म पु (म वानरक्षनम्) वपि
मरुद, म्म भतम् ।

—युद्धा, स स्त्री निस्सार निग्राण, विभी
विश भयप्रदशनम् ।

—का घाव, मु रवावि स्थिर, प्रण शनम् ।

यदुगा, म पु (फा) पोताशय
० पोताशयपुरम् ।

यदुगा, स पु (फा) मानव, मनुष्य
० मैत्र, भूष्य ।

—निग्राह, वि, दीनदयालु, दीनवत्सल ।

—परवर, वि, अनाथता, दीनवत्सल ।

यदुगा, म स्त्री (फा) वधन, अवरोध ।

यदुगा, म पु (म दिन्) भट्ट, पारण, वन्ति
० कारागृह रट्ट, वन्ति ।

—याना, म पु, वारागृह, गुप्ति (स्त्री),
कारा ।

यदुगा, म स्त्री (अ) जालाभ्य, गुप्तिभ्य
अभ्यभ्यम् ।

यदुगा, म पु (फा) जालाभ्यभिनय ।

यदुगा, म पु (फा) अवैग, मविषा
० भूतविषय ।

यदुगा, म पु (म) न्याम, निधय, जाधि ।

यदुगा, म पु (म न) प्रतिबन्ध, जलराज
३ वधन, मयि ३ रज्जु (स्त्री), शृङ्गा
वारी, वन्तिभ्यम् ।

वैधना, रि अ, अवस्थ-वन् (वर्म) ।

वैधनाना, रि प्रे, 'वाधना' के धातुओं व
प्रे रुत ।

वधु, म पु (म) वा धव, गानि, सन नय,
समीन ।

वधु, म पु (स) रत्न, वधु, पुष्पमे ।

वधुता, म स्त्री (म) वधुत्व, समीन
मजागायना ० मैत्रा, मित्रा ।

यधेव, स पु दि वाधना) अवरोधोपाय
३ प्रतिपथ ३ नियन्त्रण इयनाय व
इयम् ।

यध्या, म स्त्री (म) वध्या, प्रसवश्रम्या
० वधा, जन्मरहित मी (स्त्री) ।

यध, म स्त्री (अनु) रणसिंह, नाद, क्षे-
० युद्धम् ३ अनियोज्यत्वम् ।

वधा, म पु (ज मवह) वन्नालीनाम् ।

वधुरा, म पु (मगाया वधु + ज वाट) वध
शरटम् ।

वधो, म स्त्री (म वधु + यम) मरारि
३ वरमाकुट, वृक्ष, रोगव, वामनूर ।

वधरी, म स्त्री (म वशी) मुरली, वधु,
वध नातिना ।

वैधरी, म स्त्री दे 'वहरी' ।

वध, म पु (म वर) वध ३ अमृतविष
३ कुवर ।

वधना, रि स (अनु वर) जलपू प्रण
(भ्वा प मे), अवान्य वध (भ्वा
प म) ।

म पु, प्रजन्त, उ मच, प्रलाप ।

वधरा, म पु (म वर) शुभ, छात्रा, ज,
ज, शुभ, छात्र (वधरी = मन्त्र, मव
अभा जन्मनी) ।

वधवा, म स्त्री (म वर + म वद)
प्रणय प्रवण । रि अ, दे 'वधना' ।

वधवादी, वि (हि वधवाद) अवयव, प्रण
पितृ, वाचाल ।

वधावन, म पु (हि वधरा + नीम) प्रे,
विपुष्टि, मृद्वि, वाधु ।

वधुता, म पु (म विधु +) वृत्त ३,
पाठ्यिना ० शुष्क, मयात ।

वधर, म पु (म) वध, मुरभि, मिद
वेमर ३ शिव ।

यकी, वि, दे 'द्ववर्दी' ।

यक्ष्म, स पु (अ बँक्स) पेन्का, मन्त्रा
मपु, मसु, पित्र-कम् ।

यग्न्या, स पु (का) दृढम्, जीवन-म्युनि
(स्त्री) ।

यज्ञवी कि वि (का) मय्य, मातु, सुष्ठ
(सब अम्) ।

यज्ञेदा, स पु (हि विमेरना) विपनि
मरम् २ विवा ३ कठिनना ।

यज्ञेदिया, वि (हि बरेण) विवा-कवि
मपु श्रिद विवन् ।

यज्ञेना कि म दे विरान' ।

यज्ञ, स पु (का) मय्य, देव अष्टम्
२ मीमांस्यम् ।

यज्ञावर, वि (का) मायशान्ति सुम
मदाभा ।

यज्ञाना, कि म (का वज्ञा) दप (स्वा
ना म), विधा (बु), उत्पन् (सु
प अ) ।

यज्ञिदश, स स्त्री (का) दानम् २ दश
वन्तु (न) ३ पुस्कार ३ क्षमा, अनग्रह ।

यज्ञा, स स्त्री (का) वज्ञा वदुसे, व
दाम् ।

यज्ञा, स पु (म वज्ञ) वज्ञ, दीर्घ, न
तपम दामिक, दीर्घमेवि, मीनगान्ति
शुक्लवायम् ।

यज्ञावत, स स्त्री (अ) राजद्रोह, विप्लव
उपलव ।

—का वज्ञा बुलद करना सु, राजद्रोह-राज
विरोध ।

यज्ञाचा, स पु (का वाचह) वट जी
वाशि, उपवनम् ।

यज्ञागोश स पु (देश) मनुगोन २
'नागदाता' ।

यज्ञा, स पु (हि वाङ्म-गोश) मरुत, व
वातवत वातम, धूमिक, वात्या ।

यज्ञ, अन्व (अ) विना, जनरा, जनरेण,
विधान, वनयित्वा, श्वेते ।

यज्ञी, स स्त्री (अ योनी) वतुशक मपु म
थयानम् ।

यज्ञारना, कि म (म अवधारणम्) अवट
(स्वा प १, सु, सु प अ, स्वा उ अ)

यजन पतृनादिकेन सिच् (सु प अ) ।

यज्ञेला, स पु (हि वाग) व्यात्र, मृगान्तर ।
वचत, स स्त्री (हि वचना) लभ, प्राप्ति
(स्त्री) २ वचय, मय्य ३ सचित-रक्षि,
अवशिष्ट वनम् ।

वचना, कि अ (म वचनम्) रम निर्मुच
(रम) २ अवशिष्ट (कम) ।

वचपन, स पु (हि वचना) वल्य, वीमर,
वल्ग्वम् ।

वचामा, कि स (हि वचना) परित्रै (स्वा
ना अ), रक्ष-गुप (स्वा प से) २ अव
शिष्ट (प्रे) मवि (स्वा उ अ) ।

वचाव स पु (पूर्व) रथा जाण, उद्धार,
गपन ऊनि (स्त्री) ।

वचोश, स स्त्री (का शिष्ट) दानम्
२ पारितोषिकम् ।

वच्य, स पु (हा वद) वस्म बाल, बालक,
शिगु २ वाव शावक ३ अज्ञानम् ।

—गर्भा, स स्त्री, गर्भाशय गर्भकोष ।

वच्यी, स स्त्री (का) वत्सा, बाला, बालिका ।
वचना स पु (म वत्स) गोवत्स, गोशावक,
तण ।

वच्येदा स पु (हि वचना) बालाव, अम
शावक ।

वचट, स पु (अ) आयम्यधिकम्, व्याख्यान ।
वचना, कि अ (म वदन) कण् वन
(स्वा प स), वाद (कर्म) ।

वचरग, वि (म वज्ञा) वृद्धावयव, अशानि
कठोर ।

—वली, स पु वतुमय ।

वचयाना, कि प्रे, व 'वचाना' के प्रे रूप ।
वचा, वि (का) युक्त, उचित । कि वि,
मत्यन् ओम् ।

वचा, स पु (अ वचना) वरुविकेद ।
वचाना, स पु (का) वनदृष्ट ।

वचाना, स स्त्री (का) वनविक्रय २ वन
निचय ।

वचाना, कि म (हि वचना) वाद (सु),
स्वा वन (प्रे) । स पु, वचनम् ।

वचानवाला, स पु, वादन, वादयितृ ।

वचाय, अन्व (का) स्थाने, प्रतिनिधि ।

वच, स पु (म वच) ऐन्द्रा, अशानि,
पवि ।

वट, स पु (म वट) वटि, न्यग्रोध ।

वटखरा, स पु (स वट् >) दे 'वट्' ।
 वटन, स पु (अ) वुडुप, गण ।
 वटना, कि स (भ वर्तनम् >) व्यावृत्त (प्रे),
 तन्तुन धूर्ण भ्रम (प्र) स पु, व्यावर्तन,
 तन्तु, धूर्णन आभरण ।
 वटमार, स पु (हि वट् + मारना) परि
 पन्थिव, तुण्ठय प्रतिरोधक ।
 वटलोई, म स्त्री (हि वट्) दे 'दोचा' ।
 वटपारा, म पु (हि वट्) भूमिभाग,
 भूमिव्यवधानम् = धनविभाग, दापमा ।
 वटा, स पु (हि वट्) भिन्न अपूर्ण,
 दासिभाग प्रभाग ।
 वटुभा, स पु (स वटु >) मुद्रा नागव
 कीद ।
 वटोर, स स्त्री (स वट्) वर्तन, वर्तनी,
 वातका ।
 वटोरन, म स्त्री (हि वटोरना) जवम्बर,
 निम्नवर्तुलसमूह उच्छिष्टम् ।
 वटोरना, कि म (स वटु >) रुचि
 (स्वा उ अ) सङ्ग (क उ मे) ।
 वटोही, स प (हि वट्) पन्थ, पथिव ।
 वटो, स पु (स वट्) टोच, वल्गु ।
 —वाता, म पु, अगप्यधनलेख ।
 वटा, म पु (स वट्) पेणप वाण,
 कुट्टनप्रसार २ प्रस्तरादीना वर्तुलछण्ट ।
 वट, स पु (स वट्) दे 'वट' ।
 वट, वि (हि 'वट' से, समाम के आरम्भ
 मे ही) दे 'वट' ।
 वटप्यन, म पु (हि वट्) श्रेयता, महत्ता,
 गौरवम् = वयम्पता, प्रीतिता ।
 वटयव, स स्त्री (अनु) प्र, गण, व्यधवचनम् ।
 वटयवना, कि अ (अनु वट्) प्र, गण
 (स्वा प ते) २ अमनापन जीने वट्
 (स्वा प से) ।
 वटयोला, वि (हि वट् + यो) विवत्पर,
 विवत्परशील ।
 वटभागी, वि (हि वट् + भाग) महामन्य,
 सुभ्य, भाग्यशालिन् ।
 वटवा, स स्त्री (स वट्) घोष, तुङ्गी
 २ वटवाणि ।
 वटवानल, स पु (मे वटवान्) वटवाग्नि,
 वटवानुत्त ।
 वट, (स वट् >) आयन, विवृत्त,

विशाल २ महत्, गुरु २ वयोवृद्ध, अधिन
 वयस्क ४ उत्तम, श्रेष्ठ ५ अधिक, अतिशयिन् ।
 म पु, धनाढ्य २ महापुरुष ।
 वटई, म स्त्री (हि वट्) मान, गौरवम् ।
 गट्टा, प्रतिष्ठा २ वृद्धता, गुरुत्वम् ।
 वटो, म स्त्री (स वट्) वटिना, वैष्ण-
 शिवा, वटिका ।
 वटो, म पु (स वट्) नम्र, तक्ष्ण,
 वटसिन्, त्वष्ट, छद् ।
 वटो, स स्त्री (हि वट्) उच्चिष्ट-वृद्धि
 (स्त्री), उपचय, उत्कर्ष ।
 वटना, कि अ (स वर्तनम्) वट् (स्वा
 आ से), उपचि (कर्म), वृद्धि प्राप्त (स्वा
 उ म), पृष्णाय अप्पाव् (स्वा आ मे),
 वट (स्वा तु प म) । म पु, दे 'वटनी' ।
 वटा हुआ, हि, उत्तम, वृद्ध, उपविष्ट, स्त्री,
 पौन, आप्यात ।
 वटाना, कि म, व 'वटाना' के धातुओं के
 प्रे रूप ।
 वटिया, वि (हि वट्) महार्प, वटुल्य
 २ उत्कृष्ट, गुणवत् ।
 वटिन्, म पु (म वटिन्) पद्यालीव, दे,
 'वटिन्' ।
 वटोही, म स्त्री (हि वट् + वट्) वार्ता
 लाप २ विवाद ।
 वटो, म स्त्री (अ वट्) वट, वाद २
 हसनाया खगवेद ।
 वटलाना, कि स (हि वट्) वट-वट (तु),
 आरथा (अ प अ), आवत् (अ आ),
 निविद (प्रे) २ वृषणा (प्रे) २ निर्दिष्ट
 (तु प अ), प्रदश (प्रे) । म पु, वटन,
 वटन, निवेदन, आवर्ण, बोधन, हासन, निर्दिष्ट,
 प्रदशनम् ।
 वटलाने योग्य, वि, वयनीय, वर्णनीय, आरथेय ।
 —वाला, स पु अख्यात वटक, वर्णविट्
 २ बोधन, हासन ३ निर्दिष्ट, प्रदशन ।
 वटलाना हुआ, वि, वयन, वर्णन, भाविन,
 बोधित, हासित ३ निर्दिष्ट, प्रदशन ।
 वटाना, कि म, दे 'वटलाना' ।
 वटाना, म पु (हि वटम्) वट् मितावुत्त,
 वातात ।
 वटो, स स्त्री (स वट्) वटो, वटिना,
 वटिनी, शिष्टी २ दीप ।

वत्तोस, वि [स द्वाविंशत् (नित्य स्त्री)]

स पु, उक्ता सख्या तद्वत् (३०) च ।

—वौ, वि, द्वाविंशत्तम मीम, द्वा ५
शी शम् ।

वत्तोमी, स स्त्री (हि वत्तोमी) द्वाविंशत्पदार्थ
ममूढ ० मानवदन्तममूढ, दन्तनावत्
(स्त्री) ।

वधुआ, स पु (स वास्तुकम्) शारराज,
राजशार, शारश्रेष्ठ ।

वह, वि, (का) दुष्ट, पाप, मन्त्र, नाश ।

—विस्मय, वि, मन्दभाष्य ।

—वलन, वि, दृष्ट, कुशित ।

—जघन, वि, वटुभाषिन्, दुभाषिन् ।

—जान, वि, कीर, भुद, निकृष्ट ।

—तमीन, वि, अक्षिप्त, उत्सव्य, ग्राम्य ।

—नीयन्, वि, वरर दुराजय ।

—परहेज, वि, कुपथ्यमेरिन् ।

—परहेजी, स स्त्री, कुपथ्यम् ।

—वू, स स्त्री, दुर्गन्ध, दे ।

—मादा, वि, दुर्धत, दुश्चरित्र ।

—दरल, वि, दुरूप, दुर्दर्शन ।

—दुजमी, स स्त्री, अजीर्ण, अग्निमान्द्य,
अपाक ।

वदन, स पु (का) शरीर, देह, वय ।

—दूटना, सु, अगमधिपु-अवयवव्यधियु वेदना
नुभव (वरपूर्वरूपम्) ।

—मे भाग लगाना, सु, अन्यन्तु पु (दि प
मे) नुध् (दि प अ) । ० अतीव मग्न
(वि) भू ।

—माँचे मे दला होना, सु, लावण्य मौन्द्य,
अतिशय-अतिशयम् ।

—मुख कर काँटा हो जाना, सु, अत्यर्थ
दुःशस्त्रीण शुष्काग (वि) भू ।

वदर, स पु (स) बदरी, बदरिका, बदर,
बदरीफलम् ।

वदलना, कि अ (अ बदल) स्थानान्तर
रूपान्तर-अवस्थान्तर गम्, अन्यथा भू, विकृ
(कर्म), परिवृत् (स्वा आ से), विपर्यय
(दि. प ने) । कि स, परिवृत् (प्रे),
अन्यथा कृ, विकृ, विपर्ययम् (प्रे), विनिमे
(स्वा आ. अ) । स पु, अवस्थान्तर
रूपान्तर-अवस्थान्तर, प्राप्ति (स्त्री), परिवर्तन,

विनिमय, विक्रिया, विपर्याय, परिवृत्ति,
(स्त्री), विपरिणाम ।

वदलना, स पु (हि वदलना) विनिमय,
आदानप्रदानम् २ प्रतिरोध, प्रति(ती)कारः
३ परिणाम, फलम् ।

वदलना, कि स, दे 'वदलना' कि स ।

वदली, स स्त्री (हि वदलना) परिवृत्ति.
(स्त्री), परिवर्तनम् ।

वदविनी, स स्त्री (स वद >) वैर, द्वेष,
विरोध २ प्रतिस्पर्धा ।

वदेलत, कि वि (का) कृपया, अनुग्रहेण
० करणेन साधनेन, द्वारा ।

वड्ड, वि (म) नियन्त्रित, वशी, कुलभूत,
मयन ।

—वोष्ट, स पु (म) मन्त्रविरोध, विद्वध् ।
वडाड, स स्त्री (स वड्डन >) वधारन, वृद्धि
व न, अभिनन्दनम् ।

—दना, कि स, वधापन दा (जु उ अ) ।

वधिया, स पु (हि वध-भारन) नपुसकः
पशु, पण्डाटन चतुष्पाद ।

वधिर, वि (म) अरुण, ण्ड, श्रोत्रविकृत ।

वधूटी, स स्त्री (स वधूटी), दे 'वधू' ।

वन, स पु (स वनम्) अरण्य, कानन,
नागार ।

—वन, स पु, अरण्यवानिन्, आग्विर ।

—वास, स पु, वनवास, अरण्यवास ।

वनजारा, स पु (हि वनज) वरव्यवसायिन्,
व गिज्यनीविन् २ वणिज, दे 'वनिजा' ।

वनना, कि अ (स वनन >) निर्माण-
विधा अनुष्ठा (कर्म) ।

वना हुआ, वि निर्माण, रचित, विवित, कृत,
सप्त, सप्त, निष्पन्न ।

वनमानुष, स पु (स वनमानुष) वानर
भेद २. अमन्यमानव ।

वनवाई, स स्त्री (हि वनवाना) निर्माण-
विधि (स्त्री)-शुल्क ।

वनवाना, कि प्रे, व 'वनाना' व प्रे रूप ।

वनात, स स्त्री (हि वाना) उत्तमौर्णपटभेद ।

वनाना, कि स (हि वनना) निर्माण (अ
प अ, जु आ अ), रच् (ल), कृ,
कल्पयट् (प्रे) २ जन् उत्पद् (प्रे)
३ सप्त-साध् (प्रे), अनुष्ठा (स्वा प. अ),

विधा (जु ठ ज) ४ अव्यय हम्
(भ्वा ए से) । स पु, रत्न वरण,
निमाण कपल जनन, उत्पादन, संपादन,
अनुष्ठानम् ।

वनाने योग्य, वि, निमातव्य रचनीय, वर
णीय, विधेय, अनुष्ठेय, अनयितव्य ।

—बाला, म पु, निमातृ, रचयितृ विधायक,
जनयितृ, उत्पादक, अनुष्ठान् ।

बनाया हुआ, वि, निमित्त, रचित, कल्पित,
विहित, रजित, उत्पादित, अनुष्ठित, संपादित ।
बनारसी, वि (हि बनारस) काशीस्थ,
वाटगण्डेय ।

बनाव, स पु (हि बनाना) निमाण, रचना
२ शृंगार, अलकरणम् ।

बनावट, स स्त्री (हि बनाना) रचनना,
रचनाकौशल, धटना २ आटवर ३ कृति
मत्ता ।

बनावटी, वि, (हि बनावट) कृत्रिम,
कृतक, अनेसागक ।

बनिया, स पु (सं वर्णिन्) नेगम,
सार्वबाह, बन्धविमर्षक, पण्थाजीव २ आप
गिक, विपणिम् ।

बनिश्चत्त, अव्य (फा) अपेक्षया, तुलनायाम्
२ उद्दिश्य, अधिहृत्य ।

बदर, म पु (फा) वंसरित, हरि, मिष्ट ।

बबूल, स पु (सं बबूर) मण्डल, तीक्ष्ण
कटन, स्वगुण्य, युग्मकटव, कषाणिक ।

बस, सं पु (अ बाव) अग्निगोत्राख्यम् ।

बया, स पु (सं बयनम् >) बय, यगभेद ।

बयान, स पु (फा) वर्णन, कथनम्
२ वृत्तांत, उद्गत ।

बयाना, म पु (अ ये) दे वेद्यगी ।

बयार, स स्त्री (सं बायु) पवन, वायु ।

बयालीस, वि [सं द्वि(श) चत्वारिंश (नित्य
स्त्री)] । स पु, उक्ता संख्या, तद्वती
(४२) च ।

—बौ, वि, द्वि(श)चत्वारिंशत्तम मीसम्,
द्वि(श)चत्वारिंश शीसम् ।

बयासी, वि [सं द्वयशीति (नित्य स्त्री)]
सं पु, उक्ता संख्या, तद्वती (८२) च ।

बरकत, सं स्त्री (अ) सम्पत्ति-समृद्धि
विभूति (स्त्री) ।

बरजास्त, वि, (फा) विसृष्ट, विमर्जित
२ पदच्युत, अष्टाधिकार ।

—करना, कि म, विसृज् (तु प अ)
२ पदपर च्यु (प्रे) ।

बरसाद, स पु, दे 'व' ।

बरत, म पु (म ब्रक्ष) कुत, प्राप्त,
प्राप्ति (स्त्री) ।

बरजोर, वि (सं बर + का नीर) बलवत्,
शक्तिशालिन् । कि वि, बलाव, इटान् ।

बरतन, म पु (सं वर्तन >) पात्र, भाजन,
भाणम् ।

बरतना, कि अ (सं वर्तनम्) व्यवहृ (भ्वा
ए अ), आचर (भ्वा ए से) । कि स,
उपयुज् (प्रे), व्याप्त (प्रे) ।

बरताना, कि स (सं वितरणम्) वितृ (भ्वा
ए से), विमज् (भ्वा उ अ) । स पु,
विभाजन, वितरणम् ।

बरताव, स पु (हि वर्तना) व्यवहार,
आचरण, वृत्ति (स्त्री) ।

बरदार, वि (फा) बोद्ध धारयितृ ।

बरदास्त, स स्त्री (फा) सहन, मर्पण,
सहिष्णुता ।

—करना, कि अ, मद् (भ्वा आ से) ।

बरफ, स स्त्री (फा बर्फ) हिम, घनवाटि
(न) ।

बरफी, स स्त्री (हि बरफ) हैमी, पायस-
मिष्ठानभेद, मिष्टानभेद ।

बरबस, नि वि (सं बर + बस >) इटान्,
बलात् २ मुधा, न्यवर्षम् (चारों अव्य) ।

बरवाद, वि (फा) नष्ट, ध्वस्त ।

बरमा, म पु (देश) बर्मा, लघुसोप-
वर्णभेद ।

बरमा, सं पु (सं) ब्रह्मदेश ।

बरमी, म पु (हि बरमा) ब्रह्मदेशवासिन् ।
सं स्त्री, ब्रह्मदेशभाषा ।

बरवा, सं पु (देश) एरोनावशनिमात्रानर-
शब्दभेद, भ्रुव-तुरण, छन्दस् (न) ।

बरस, म पु, (सं वर्ष) बरसर, संवत्सर,
अब्द ।

—गाँठ, सं स्त्री, वर्षप्रति, जन्म दिन
दिवस ।

बरसना, नि अ (सं वर्षण) वृष्ट् (भ्वा ए
से) । सं पु, वृष्टि (स्त्री), वर्षर्षम् ।

वरमात, वि (हि वरमा) वष (स्त्री वट) मयम, प्रवृष (स्त्री) वषाकाल ।
वरमाती, म स्त्री (हि वरमान) वर्षत्र, वृषिवारिणी ।

वरासी, म स्त्री (हि वरम) वार्षिक आद, वापनो मृत्युविम ।

वराडा, म पु (अ वराडा) प्रव(षा)ण, अलिङ्ग विष्क ।

वराडी, म स्त्री (अ) सुरमा, मनीवनी सुरा ।

वरात, स स्त्री (स वरयात्रा) विवाहयात्रा, २ प्रमोद ।

वराती, स पु (हि वरात) वरयात्रिक ।

वरावर, वि (का वर) सम, समान, मुख्य ।

वरावरी, स स्त्री (हि वरावर) समानता, साम्यम् ।

वरामद, वि (का) बहिरांग २ लब्ध ।

वरामदा, म पु (का) दे 'वरादा' ।

वरी, वि (का) मुक्त, विमोचन ।

वरोडा, म पु (स वारम >) देहली-नि (स्त्री) ।

वर(री)नी, स स्त्री (स वरण >) पद्मम्, वन्दु (दोनों) ।

वराव, स पु, दे 'वराव' ।

वरक, स स्त्री, दे 'वरक' ।

वर्धर, वि (म) नृशम, निर्दय २ असम्य, अशष्ट ।

वल्द, वि (का) उच्च, तु ।

वल, स पु (स न) सामर्थ्य, शक्ति (स्त्री) २ पराक्रम, शौर्य ३ सेना ४ बलदेव ।

वलगम, म स्त्री (अ) दलेभ्यन्, कफ, दैर्घ्य, वला ।

वल्वा, स पु (का) मशोम, ममद २ राजाभिर्दोह प्रशोम ।

वल्वान्, वि (म वल्) वल्नि, बलशालिन्, मन्व वीर ।

वल्हान, वि (न) निवल्, दुवल्, अवल, अशक्त ।

वला, स स्त्री (अ) आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ दुःख, वष्टम ३ प्रेनवषा ४ रोग ।

बलात्, कि वि (म) हठ, सरमन्म ।

बलात्कार, म पु (स) साहस, प्रमाथ २ हठमो, प्रमहगमनं, वर्षान्, दूषणम् ।

बलि, म स्त्री (म पु) रा, स्व रर गुल् २ उ हार, उपासन ३ पूजा, सामधी ४ वर ५ बलिब्रदेवयष्ट ६ देवमोज्य ६ मन्व, अन्नम् ७ नैवेद्यम् ८ देवतायै हत पशु ९ हव्य, गृहि (स्त्री) ।

—वजाना, मु, देवार्थ हन् (अ प अ) ।

—जाना, मु, दे 'बलिहारी जाना' ।

बलिदान, म पु (स न) उत्सर्ग, परित्या, विनिवो, समर्पणम् ।

बलिष्ठ, वि (म) बलवत्तम, शक्तिमत्तम् । सं पु, उट्ट ।

बलिहारी, स स्त्री (स बलिहार >) अत्मी त्मर्ग, अत्मसमर्पण, आत्मनिवेदनम् ।

—जाना, मु, आत्मान समर्प (प्रे) उत्सृज (तु प अ) ।

बली, वि (स लिन्) सबल, बलवत्, ब शक्ति, शक्ति, महाबल, वीर ।

बलिक, अव्य (का) प्रत्युत्, अपि तु, अपि ।

बल्लम, स पु (स बल्लमाखा >) यष्टिः (स्त्री), दड, लघु २ सुवर्ण-रत्न, दड ३ कुत्त, प्रास ।

बल्लमटेर, स पु (अ बाल्लियर) स्वयसेवक ।

बल्ला, स पु (स बल्लमाखा >) लघु २ ३ स्थूल ४ गौकाव ५ कन्दुकाजीवापट्ट ।

बवडर, स पु (स बावुमल >) चक्रवात, वातावन, वानप्रम २ बत्त्या, हासावान ।

बवासार, स स्त्री (अ) अरुस (न), गुदाकुर, गुदकालक, दुनामकम् । (धूनी)

रक्त-शस् (बादी) वान-शुष्क, अर्जम् (न) ।

बसत, स पु (स) बसत दे ।

—पञ्चमी, म स्त्री, श्रीबमी, मानगुक्त पचमी ।

बस्य, अव्य, वि (का) अक, पयान २ वर, अधिकार ३ देवत्वम् ।

बसना, कि अ (स बसन >) नि अधि-धनि, वम (म्वा प अ) स्वा (स्वा प अ) २ अधिवस, आपणा । स पु अधि-प्रतिनि, वस-वसन-वसति (स्त्री) ।

बसने योग्य, वि, वामोचित ।

—वाला, म पु, अधिनि, वामिन् ।

बसा हुआ, वि, अधुनि, अधिष्ठित ।

मन मै—, मु, सदा स्मृ (कर्न) ।

यसना^२, कि अ (हि वाम=गघ) सुगधिन
(वि) भू ।

यमर, स पु (फा) निवाँद, बालयापनम् ।

यमाना, कि स (हि वमना) अधिवम्-
निवस (मे) ।

यनूला, स पु (स वामि पु मी) नदी ।

यमरा, स पु (हि वमरा) अवासा, निवास
२ वाम, वमति (मी) ।

यमना स पु (फा-नह) पोष्टिका, कुर्व ।

यमनी, स स्त्री (स वसति) निवास २
ग्राम, ग्रामदिका ।

यहूनी, स स्त्री (स विहगिरा) वैष्णविका,
स्वयवाहनी ।

—का छीना, स पु, विहगिकाशिका ।

यहन्ता, कि, अ (हि वहना) अन्तिमा,
(वर्न), वच् (वम) २ पयभष्ट (वि)
भू २ लयभष्ट (वि) भू ४ मद् (दि प मे) ।

यहन्ता, कि म (दि) 'वहवना' क प्रे
रूप बनाएँ ।

यहन्त, वि [सं दिसतति (नित्य स्त्री)]
स पु, उता सन्या, तदनी (७२) च ।

—वा, वि, दिसततितम-मी मं, दिसतत
ती तम् ।

यहन्, स स्त्री (स भगिनी) दे 'वहिन' ।

यहना, कि अ (सं वहनम्) वद् (भा
उ अ), क्षर् (भा प से), सुक्त
(भा प अ) । स पु, वहनं, क्षरण,
मरण, क्षाव, क्षुति (स्त्री) ।

यहनाया, स पु (हि वहन) स्वस्त्व,
भगिनीत्वम् ।

यहनोद्, स पु (हि वहन) आउत्त,
नशिर, स्वत्पति, भगिनीभट्ट ।

यहनात्, स पु, दे 'यहना' ।

यहरा, ति पु (स बहिर) षट्, अकर्ण,
अधोप ।

यहलना, ति अ (हि वहलना) चित
विनोद वन् (दि आ मे) ।

यहलाना, कि स (फा वहल) चित
रन् विनुद् नन्द (मे) ।

यहलात्, स पु (हि वहलना) विनोद,
मनोरजनम् ।

यहली, स स्त्री (स वहल=वैल) रय
मदनी वृषभयौ ।

यहस, स स्त्री (अ) वार, वादप्रतिवाद,
ऊहापोह, प्रश्नोत्तरम् ।

—करना, कि अ, वादप्रतिवाद कृ, विवाद
(भा आ मे) ।

यहादुर, वि (फा) शूर, वीर, बलिष्ठ,
पराक्रमम् ।

यहादुरी, स स्त्री (फा) वीरता, शूरता,
पराक्रम ।

यहाना^१, कि स, व 'वहना' के प्रे रूप ।

यहाना^२, स पु (फा नह) मिषं, व्याज
छलम् ।

—करना, कि अ, -वर्षादि (तु प अ) ।

यहार, स स्त्री (फा) शोभा, धी (स्त्री),
दर्शनीयता २ मधुमाम यमन्तम् ३ मनो
विनोद ।

यहाल, वि (फा) पूववर्ष स्थित, पदाकृष्ट
२ स्वस्थ ३ प्रसन्न ।

यहाव, स पु (हि वहता) प्रवाद, स्तव
२ धारा, मन्दाक सौन्दर्य (न) ।

यहिन, स स्त्री (स भगिनी) मोदरा,
सहोदरा, स्वस्र, चामि (स्त्री) ।

छोरी—, अनुता, बही—, अगता, अर्धिता ।

यहिश, वि (स) बाण, यहिर्भव, यहि
स्थि ।

यहिश्व, स पु (फा विहिर) स्वर्ग, नाव ।
२ सुगन्धाम ।

यहिश्वार, स पु (सं) अपसारण २ निष्ठा
सनय, विवासनम् ।

यहिश्वर, वि (सं) अपसारित २ विवामित,
निष्कामित ।

यही, स स्त्री (हि रैधी) आयक्यय, पत्नी
त्रि (स्त्री) ।

यहु, वि (सं) अधिर, अनेक २ प्रचुर,
बहुल ।

—क्षीरा, स स्त्री (सं) बहुल प्रचुर, दुग्धा
मन्वा गी (स्त्री) ।

—गध्या, स स्त्री (सं) १ यूपी, यूपिरा,
हेमयूपिका, यन्त्रप्रभा । २ चंपर-यूपिरा
वोरव ३ कृष्णवीरव ।

—गुण, वि (सं) प्रचुर मन्त्र २ प्रचुर
विशेष ।

—नक्ष, वि (सं) वाचना, मुगार, जल्प
(पा) क ।

बहुकर, स स्त्री (म बहुकरी) भगवती, शोभनी । वि, परिभ्रमिन् ।

बहुत, वि (स बहुतर) अस्तरय २ द्योष्ट, पयोस्त ३ प्रचुर, विपुल, भूरि ।

बहुतायत, स स्त्री (हि बहुत) अतिशय, आधिक्यम् २ पयासना ।

बहुधा, क्रि वि (स) प्रायः, प्रायशः (दोनों अव्य) २, बहुप्रकारं ।

बहुभाषी, वि (स विन्) वाचाल ।

बहुमूल्य, वि (स) महाय, दुःक्रय ।

बहुरंगा, वि (म-न) चित्रविचित्र, अनेकवर्ण २ बहुवैश ३ चलचित्र ।

बहुरूपाया, वि (रु बहुरूप) वशाचविन्, बहुरूपक ।

बहु, म स्त्री (स बहु) बहुधा, नबोडा, नववधू ।

बहेडा, स पु (स विभीषण) बन्दिनम्, भूतवास ।

बोका, वि पु (स बक >) तिर्यक्त, बक, कुटिल, २ झुठर, मनोहर ३ वैशभाभिन, रूपगावन ।

बोग, स स्त्री (का) प्रातः कुक्कुटनाव २ यवनपुरोहितस्य पूजामयसूचकमहानाद ।

बोह, स स्त्री (स बध्ना द) ।

बोटना, क्रि स (बटनम्) विभन् (स्वा उ अ), अश्नन् (जु), पारिक्लृप (प्रे), पथभाष विगु (स्वा ष से) । स पु, अशन, बटन, परिवस्त्रपन, विभाजन, वितरणम् ।

बोटन योग्य, वि, अशनाय, बटनीय, विभाज्य ।

—वाला, स पु, विभाजक, अशायिन् ।

बोटा हुआ, वि, विभक्त, विभाजित, वटित ।

बोदी, स स्त्री (का बदा) दाढी, सबिका, परिचारिका ।

बोध, स पु (हि बोधना) १५, सह ।

बाघना, क्रि स (रु बधनम्) बध् (क् प अ), सनि-यम् (स्वा प अ), पिनह् (दि प अ), ग्रम् (क् प म, स्वा आ से, जु) । स पु, बधनम्, सनि-यमन, पिनाह, म्र(घ)थनम् ।

बोधा हुआ, वि, बद्ध, निधन, सयत, पिनह, ग्रथित ।

बाघव, म पु (स) अश्वर, दानाद, सगोर, सखुल्य, शाति ।

बाघव्य, स पु (स न) मगोत्रता, रक्त मन्वन्ध, बन्धुता, बहुत्वम् ।

बोधी, बोधी, स स्त्री (म वर्मा >) वर्मावीर वामल्ल वध्नी, कूट दौल । २ मर्ष अहि, विवर विलम् ।

बोम, म पु (स वश) वेणुदन्, शृण्णव, वेणु, बीचक, स्वरुमार, मृत्पुष्प ।

—पर चटना, मु, अपकीर्तिदुष्कीर्ति-बाध्यमान लभ (स्वा आ अ) ।

—पर, चटना, मु, कुल्यानि नयकानि कु ।

—बराबर, मु, अति, दीर भायनन्व ।

—(सो) उछलना, मु, अन्वर्ध मुद् (स्वा आ मे) ।

बोह, म स्त्री (रा बाहु पु) पुन-जा ।

बाहुमविल, स स्त्री (अ मादक) टिन्त्र निव, पादवानम् ।

बाई, स स्त्री (स वायु) बाल, दोष रोग ।

बाई, स स्त्री (हि बाका) कुलवधूनामादर सूचक शब्द, देवी २ वैद्या ।

बाईस, वि (स द्वाविंशति नित्य स्त्री) । स पु, उक्ता संख्या, तदकी (२२) व ।

—बो, वि, द्वाविंशतिम-मोम, द्वाविंश शीघम् ।

बाएँ, क्रि वि (हि बायों) वानन, वाम सव्य, पार्ष्वे ।

बाड़ी, वि (अ) अवशिष्ट, उरुहृत् । स पु, अव, शेष ।

बाग, स पु (अ) उपवन, उद्यानम्, आराम ।

बाग, स स्त्री (म बरगा) अमोघ, प्रमद, रश्मि ।

बागडोर, स स्त्री (स बला + डोर) दे 'बाग' २ प्रमुख, अधिकार ।

बागवान, स पु (का) मालाग, मार्ग, उद्यानपाल ।

बागी, वि (अ) विद्रोहिन्, रात्राद्रिन् ।

बागीचा, स पु (का बागचद्) बुसुनीयान, पुष्प, वाटिका ।

बाघ, स पु (स व्याघ्र) चुउक, भेल, चद्रकिन्, हिमाल, न्याड, शृगान्तक ।

—शाही, स स्त्री, यमुनण्ड ।

शाल्य, स पु (सं न) > 'वरपन' ।

शाल्यजुः, क्रि मि (ङ) एव सत्यनि, इति स्थितेऽपि ।

शाल्यन, वि [स द्वापचशान् (नित्य स्त्री)] ।

सं पु, उक्ता संग्या, तद्वी (५०) च ।

—शौ, वि, दि (दा) पचाशतम मी-मम् ।

शाल्यघो, सं पु (ङ) सुद, पचर ।

शाल्यल, वि (स शाल्य) विक्षिप्त, उन्मल २ मूर्ध ।

शाल्यली, स स्त्री (स शाली) वदिका, सोपा नकुप ।

शाल्यदा, स पु (का) नि, नामिन, वरनव्य ।

शाल्य, सं स्त्री (स वन) सुगन्ध, सुवाम, परिमल, सौरभ > दुर्गन्ध, पुनित्व ।

शाल्यठ, वि [स शिष्टि (नित्य स्त्री)] । स पु उक्ता संख्या, तद्वी (६२) च ।

—शौ, वि, दि (दा) वदितम मी-म, दि (दा) पष्ट हीष्टम् ।

शाल्यन, स पु (सं वामनम्) दे 'वरतन' ।

शाल्यमती, स पु (स शाल्यमती >) नाम वदप्रोहि ।

शाली, वि (स शालिन्) निवासिन्, वरनव्य २ शुष्क, म्लान, यमुनि, युष्ट ।

शाल्यह, क्रि वि (स वदिस) वदित, वदि भवन्म् ।

शाल्यही, वि (हि शाल्यह) वदित, वदि स्थ, वदि भव, वदिर्वातिन्, वदिस ।

शाल्य, स स्त्री (स पु) दे शौह ।

शाल्यल्य, स पु (सं न) दे 'वदुतावन' ।

शाल्यदा, स स्त्री (सं विदु) शान्त्वं रम २ अन्व, विद्वन् ३ निष्ठा-क, विद्वान् ।

शाल्य, स पु (सं) वन एव, वृषन २ दे 'विदी' १२ ३ अमध्यम् ।

शाल्य, सं पु (स पुं न) प्रतिष्ठाया, प्रति विवद्वति (स्त्री) २ शूर्वाचन्द्र, मन्त्र ३ विवद्वन् ।

शाल्यन, क्रि ञ (स विवद्वन् >) विद्वी (वर्म) ।

शाल्यनाना, क्रि ञे (हि शाल्या) विद्वी (ञे, विवद्वति) ।

शाल्यन, क्रि (हि शाल्या) विव, वण्य, विवद्वतीय ।

शाल्यन, स स्त्री (स विद्वी) वण्य, विवद्व, विवद्वन् ।

शाल्यनाना, क्रि ञ (स विवद्वन्) विद्वन् (वर्म) २ वृषन् (व्वा प अ) ।

शाल्यनाना (शाल्यनाना), क्रि म (स विवद्वन्) अवि, कृ (तु प म), अस्तृ (व प स),

विशिष्ट (तु प अ) । स पु भाव अव वि, विवद्व, विवद्व, आस्तृणम् ।

शाल्यनाना, क्रि अ (म विवद्वन्) विद्व (वर्म), दुप् (दि प अ), जि (वर्म),

दुर्दशा प्राप (स्वा प अ) २ उन्माद गन्, सुपथप्रष्ट (वि) भू ३ कुप (दि प मे)

४ दुर्दान्त (वि) चन् (दि आ मे) ।

शाल्यनाना, वि, विद्वन्, दपित, क्षीण, २ दुर्दान्त ३ दुर्दान्त ।

शाल्यनाना, क्रि स (हि शाल्यनाना) दुप् (ञे) आविल्यदि मलिनदनिष्कृतपयनि (ना धा)

२ सम्मागल भ्रम (ञे) ३ अत्यन्त लम् (तु) ।

शाल्यन, सं पु (अ) काटल-लम् ।

शाल्यनाना, क्रि अ (अनु) श्रुत विद्वन् (तु) आनर्न वद्वीह ।

शाल्यनाना, वि (वि शाल्यनाना) मध्यम, मध्यवर्तिन् ।

शाल्यनाना, स पु (हि शाल्यनाना) प्रमाणपुत्र, निगोत, मध्यस्थ, मध्य वार्तिन्-स्थ यिन्, स-धा

यक । सं स्त्री, मध्यस्थता, माध्यम्यम, निगायतत्वम् ।

शाल्यनाना, सं पु (स वृद्धि) आनि, आनिन्, दुण ।

शाल्यनाना (शाल्यनाना), क्रि अ (सं विद्वन् >) विद्वन् विद्व (वर्म), विष्ट (व्वा आ मे),

विष्टिन् (नि प अ), वृषन् भू । स पु, दे 'विद्वान्' ।

शाल्यनाना, क्रि म (स विवद्वन्) आवि रन् (व उ से), आवि, मन् (ल उ से),

प्रम (ञे) । स पु, आवि, स्वात, प्रमार्, प्रमार्णम् ।

शाल्यनाना, सं पु द 'विद्वान्' ।

शाल्यनाना, स स्त्री (हि शाल्यनाना) पद्मागुली भूषणम् ।

शाल्यनाना (शाल्यनाना), सं पु (हि शाल्यनाना) दे 'विद्वान्' २ वरारभेद ।

धीमन्त्र, वि (म) घृणवद् बुद्धिमत २ क्रूर
३ पापिन ४ मयावह ।

धीमन्त्रा, म स्त्री (म) जगुन्ना घृणा ।

धीमन्, स पु (म) दे महानर ।

धीमन् (का) अरम मकटम् ।

धीमा, म प (का वाम-मय >) ममाल्य
हाने रक्षणम् २ ममा वहानिपूरक शुक्रम् ।

धीमार, वि (का) रोगिन रण्ण ।

धीमारी, म स्त्री (का) रोग, व्याधि ।

धीम, रि [म विगति (नित्य स्त्री)] ।

स पु उक्ता मन्त्रा तद्वरी (२०) च ।

—धी, वि, निरुपितम मोम, विंश दीक्षम ।

धीहृद्, वि (म विरुद्) निविद्, दुग्म
२ विपम, नतोक्त ।

धुदा, मं पु (म व-द >) वर्णमरणभेद,
लोकम् ।

धुक्चा, स पु (धु च) पोडलीका,
कुर्च-चर्म, श्वर ।

धुकनी, म स्त्री (हि धूना-धीमना)
चूर्ण, क्षौद्र ।

धुम्राद, स पु (अ) चर ताप ।

—धुगमा, म पु, जाणव्वर ।

धुज्झिक्, वि (का) भीरु, प्रभु, वातर,
निम्तादस ।

धुजुर्ग, वि (का) वृद्ध, स्वविर । स पु,
पूवज, वक्षर, शुक्र ।

धुमना, क्रि अ (देन) दाम् (दि प मे),
निर्वापित (वि) भू २ शीनी भू ३ उत्साह
नम् (दि प मे) ।

धुमना, क्रि म (हि धुमना) निर्वा (प्रे),
ज्वाला दाम् (प्रे) २ शीनी क ३ उत्साह
नम् (प्रे) । म प निवास अग्निगमनम् ।

धुमारत, म स्त्री (हि धुमना) प्रहेलिका,
कृत्रिम ।

धुदुङ्गना, वि अ (अनु) चल् (स्वा
व-ने) ।

धुदुङ्ग, वि पु (धुङ्ग) द धुदा ।

धुदापा, म पु (दि धुदा) वद्ध-सु-परा
ज्यानि (स्त्री), स्वविनि ।

धुत, म पु (का) मूल, प्रतिवृत्ति (स्त्री),
प्रतिमा ।

—परत, वि, मूल प्रतिमा, पूतक ।

धुदुङ्ग, म पु, दे 'धुदुङ्ग' । (म धुदुङ्ग)
स प (अनु) चन, चल् (स्वा
वार), अन्वृत्तम् । २ गमस्थानपरिचय ।

धुङ्ग, वि (म) चानवत् चानव २ बुद्धये,
सुगत, मर्त्यविद्धि मुनी ।

धुद्धि, म स्त्री (म) धी मति (स्त्री),
घण्टा प्रज्ञा मनीष विज्ञा, विपणा, दुधा, मेरा ।

—मान्, वि (म मद्) धीमन्, प्राण, दुध,
मनीषिन् पण्डित, मेधाविन्, विचक्षण,
विद्वन्निवेदिन्, उत्तर ।

धुध, म प (म) दुधवासर २ चन्द्रम्,
चतुष्पद ३ जनिन् पटित ४ देव ।

धुनमा, क्रि स (स वयनम्) वैष्ण
(आ ज अ) । स पु भाव, वदन,
वयन, वस्त्रनिमाणम् ।

धुनने योग्य, वि वयनाम्, वपनीय, वानम् ।

—वाल्, म पु, न धुनाय, ननवाय, कुर्विद्,
पटार ।

धुना दुधा, वि, उत, न ।

धुनिदाद, स स्त्री (का) वस्तु, वास्तु (न),
गृहम्, पौत्र, मितिमूलम् २ वधावना ।

धुरका, स पु (अ) अवत्तम् ।

धुरा, वि (म विरुद् >) इषिन् दुष्ट, निष्ट,
मद, २ अर्गुण, अशुभ ३ गहर्ष, दुस्मिन्
४ राल, दुष्ट ।

धुराङ्ग, म स्त्री (हि धुरा) दुष्टता, नीचता,
निरुद्धता, दुर्लभ, यत्त्वम् ।

धुरादा, म पु (का) वाद्यचूर्ण, वाद्योद ।

धुरा, स पु (ज ज्ञा) आपर्पणी, लोममयी
मार्गनी २ तृप्तिरा, वतिरा ।

धुरा, म पु (ज) प्राचीर, पावर गृहम् ।

धुल्लुल्ल, म स्त्री (का) प्रियमात्र, धुल्लु,
गमभद ।

धुल्लुल्ला, म पु (मं धुल्लु >) च
विज्ञा, पद द धुल्लु ।

धुलाना, क्रि म (देन) धाट् (म),
अष्ट (स्वा प अ), सतिमन् । १ म
ने) गल् (पु) । म पु भव न ,
अहर्ष, १ न, मया ।

धुलाना, म पु (हि धुल्लु) द धुल्लु
मं पु ।

धुल्लेन, मं स्त्री (अ) रागिभूतध्वनि,
२ रागनाय आध्यात्मिक विमति (स्त्री) ।

- वुप, वुस, म पु (स वुषन्) वुमन्, वुष
स २ गुणतो, मय-मन् गुणवर्धन।
बुहारना, क्रि म (स बुहारी) नष्ट
(अ प द), वुष् (प्र०)।
बुहारी, स स्त्री (हि बुहारना) शोधनी,
दे 'बुकर'।
बूँद, स स्त्री (स विदु) वन्, लव, वृषन्,
वृषत् (न) विवृष (स्त्री) द्रव्य।
बूँदा-बूँदी, म स्त्री (हि बूँद + अनु) मन्द
वृष्टि (स्त्री) शीकरवर्ध।
बूँदी, स स्त्री (हि बूँद) निन्दव (पु बहु),
मिष्टान्नभेद २ वृष्टिचलदिदु।
बू, स स्त्री (का) गंध, वाम २ दुग्ध।
—उठना वा फलना, वु, वुरवान-अपरवान
(वि) भू।
बूआ, स स्त्री (देश) निवृष्यत् (स्त्री),
पितृमहिनी २ अग्रजा।
बूचड, स प (अ वुचर) दौलौनिन,
मार्मन्, रार्द्रक, कौटिक।
—झाना, स पु, घना, घना।
बूझ, स स्त्री (स बुद्धि) दाघ, शान, विवेक
२ प्रहेल्पा।
बूझना, क्रि अ (हि बूज) दा (फुअ),
बुध् (भ्वा उ से) २ प्रवृत्त (तु प अ)।
बूड, स पु (अ) उपानह (स्त्री), पत्रश्री।
बूडा, स पु (स विष्प) वृक्षक, बालवृक्ष,
लता, ओषधि (स्त्री) २ बटा, वक्षपरपरा।
बूटी, स स्त्री (हि बूटा) ओषधि (स्त्री),
वाष्पीवधन् २ भग्न २ बलम्भा पत्रपुष्परचना।
बूडना, क्रि अ, दे 'डूवना'।
बूहा, स पु (म बूड) वरठ, स्थविर,
पल्लि, वरित। वि, वरठ, वरित-न, वान,
जीर्ण, धनस्त, प्रकपस्, वृद्ध, स्थविर, पल्लि।
—होना, क्रि अ, जु (दि कृ प से), ज्या
(कृ प न), परिणन् (भ्वा प अ), वृद्ध
(वि) भू।
—पन, स पु, वरा, परि-नि-ज्यानि-जीर्ण
(स्त्री), वाधक-व्य, वृद्धावस्था।
बूदी, स स्त्री (हि बूटा) वृद्धा, ज्यती,
स्थविरा, पल्लि, पल्लिकी। वि, व 'बूडा'
वि वे स्त्री रूप।
बूता, स पु (म वित्त) वल्, उक्ति (स्त्री)।
बूरा, स पु (हि भूरा) शर्वरा २ सुपिण्ड,
- बुआ ३ चूरी, क्षो ४ वाहचून्।
बूहत्, वि (स) विष्णु मन् २ वृद्ध,
वृद्ध ३ पर्याप ४ उन् (स्वरदि)।
बृहस्पति, स पु (म) देवनाभिरु, सु-उर
गुरु, वाचस्पति, वनीरा (द न) २ म-
मन्त्यस्य पचमो ग्रह।
—गार, म पु (म) गुरु, वार-वमर।
बैच, म स्त्री (य) (वाहदिनिर्निन) २
सन, २ धम-व्यवहार, नमन ३ अपि-
पिता धमाध्यक्षा (पु बहु)।
बेत, स पु (म वेष्ट) वेष्टन, वानार, वनु,
नीरम्रिय, म्रपुत्र। २ वेन-वेन्-द
वधि (स्त्री)।
बैदी, स स्त्री (म विदु) वतुन्विष्ट २
निलक-क ३ शून्य, खन्।
दे, १ अन्ध (स दे) ज्ये, दे, अघि।
वे, २ अन्ध (का, मि म वि) अ, जन्, वि,
निर्, रहित, वाचन, अनिरिक्त, वनिन।
—अकल, वि (का + अ) निबुद्धि, मूल।
—अकली, स स्त्री, निबुद्धता, नीरर्गन्।
—अदब, वि (का + अ) अविनीत, धृष्ट।
—अदबी, म स्त्री, धृष्टता, वैयत्यन्।
—आचरु, वि (का) निरुक्त अवधोरित,
समानरहित।
—आवरुई, म स्त्री, अवधीरणा, अवन्,
अपमान।
—इतिहा, स पु (का + अ) अनत, अनीम।
—इन्साक, वि (का + अ) अन्यत्रिन्,
अधानन्।
—इन्साफी, म स्त्री, अन्याय, जघन।
—इज्जत, वि (का + अ) दे 'वेअवत्'।
—इज्जती, स स्त्री, दे 'वेअवत्'।
—इल्म, वि (का + अ) अविद्य, निरक्षर।
—इमान, वि (का + अ) कुम्भि, निम्न,
धनन्याय, निमुक्त, वधन्, वचन, शठ।
—इमानो, स स्त्री, कुम्भिता, वचना, अधर्न।
—ओलाद, वि (का + अ) निरपत्य,
निस्मान।
—ऊदर, वि (का) दे 'वेआव'।
—ऊदरी, स स्त्री (का) ३ 'वेअवत्'।
—ऊशर, वि (का) अशान, विकल्, व्या-
—ऊरारी, स स्त्री (का) अशानि (स्त्री),
व्याकुलता।

- कल, वि (काल, व्याकुल, जहात ।
 —कली, म स्त्री, जाम्ब्या कुलता जलानि
 (म्बा) लुगता ।
 —कम, वि (क) निम्नमाय २ नरिड
 ३ ताथ मायितृत्वेन ।
 —कमी, म स्त्री, दैव्यम्, विद्वन्ता, दीवता ।
 —कान्मी, वि, अवैध, विनियम, विरुद्ध
 विपरीत ।
 —काम्, वि (का + म) मयमधुन्य, निरुध
 २ अदम्य, अवश्य ।
 —काम, वि (क + हि) वृत्तिहीन, व्यरमाय
 दान्य ३ व्यथ, निरर्थक ।
 —कायदा, वि (का + म) नियमविन्यक्त,
 अवैध अनियमित ।
 —कार, वि (का) हे 'वेकाम' (१-२) ।
 क्रि वि, व्यर्थ निप्रयोजनम् ।
 —कारी, म स्त्री नियोगाभाव, वृत्तिरहितत्वम् ।
 —कुसुर, वि (का + म) निरपराध, निर्दोष ।
 —कुरक, क्रि वि (का + हि) नि मरीच,
 निशान, निर्भयम् ।
 —कुर, वि (क) अह, अतिरिचि २
 मूल्य, नि मय ।
 —कुरी, म स्त्री, अहता, प्रमाद २ मूल्य,
 माद, मल्लोप ।
 —कुरा, वि (का) निर्भय, कामहीन ।
 —कुरा, वि (क + म) निरपराध निश्चिन्त ।
 —गुनाह, वि (का) निपाप २ निरपराध ।
 —कुर, वि (क) विरुद्ध, अज्ञान २ विनिर्द ।
 —कुरी, म स्त्री अशुक्लता २ विनिर्द ।
 —उद, म पु (क + म) छदन) अत्यालु
 प्रामाणीय म्म (न) अमिनाथर वृत्तम् ।
 —कुरान वि (क) अभाव, मृ २ हीन ।
 —कुरा, वि (क) अनुचिन्त, अमगन २
 कुमिन, गम ।
 —कुरा, वि (क) निप्राण, वृत् २ निर्बन्,
 शक्त ।
 —कुरा, वि (का + म) अवैध, अनेयमिर ।
 —कुरा, वि (का + हि) अनुपम २ मयड ।
 —कुरा, वि (क + हि) मगन, व्युत्पन्न,
 २ निरपराध ३ अमगन ।
 —कुरा, वि (का + हि) कुरूप, वदारा ।
 —कुरा, वि (का + हि) अनाचारिन्,
 दुश्च २ कुरूप ३ अमग, कु-व्यवस्थित ।

- कुरा वि (का + हि) वदारा, कुशील,
 २ उदमन, कुम्प ।
 —कुरल्लुक, वि (का + म) उपकारोपेक्ष,
 निगन्तर २ उज्जु मरुत ।
 —कुरल्लुकी, म स्त्री, उपकारोपेक्षा, आनंद
 हीनता २ ज्ञान, मरुता ।
 —कुरी, वि (का + म) अशिष्ट, अमम्य,
 उदधुन, निवान ।
 —कुरा, क्रि वि (का + म) अनुचिन्त,
 अमम्य, अमम्य २ अमाधारण विनियम
 कृष्ण । वि, अत्यन्त ।
 —कुरी, वि (का + म) अनुचिन्त, अनेय
 मिर । क्रि वि, अनुचिन्तम् ।
 —कुरा, क्रि वि (का + म) अति, नवेन
 वेगेन गीतनवा २ मममम ३ अविचार्य,
 अविमृश्य ।
 —कुरा वि (का) दुर्बल २ विरुद्ध ।
 —कुरी, म स्त्री (का) निर्बलता २
 व्याकुलता ।
 —कुरा, वि (क + म) विचार, तनुहीन ।
 —कुरा का कुरा, म प विचारक, विचारो
 विषयविन ।
 —कुरा, वि (का + हि) विपमत्तर, नाम
 मयहीन २ हे 'वेद' ।
 —कुरा, वि (का) निष्कामिन, निरस्त,
 अपात्र, अतिरिक्त ।
 —कुरा, म स्त्री (का) निष्कामन, अपात्र
 अधिभारभ्रष्ट ।
 —कुरा, वि (का) मृद, निप्राण २ मृदवाय,
 मरणाग्र ।
 —कुरा, वि (का) निर्भय, निष्पन्न ।
 —कुरा, वि (का) निष्पन्न, शुद्धाचार
 २ निर्दोष निरपराध ३ स्वच्छ ।
 —कुरा, क्रि वि (का + हि) नि मरीच
 २ निर्भय ३ अविमृश्य । वि, नि मरीच,
 निर्भय, अविमृश्य ।
 —कुरा, वि (का + म) अनुपम, अतिनीय ।
 —कुरी, वि (का + म) मदद, मय ।
 —कुरा, वि (का) अनवृत्त, निराधारण
 २ नृत्त ।
 —कुरा, वि (का) निश्चिन्त, वीरचिन्त ।
 २ मय-व्यवस्थित ३ उदार ।

- परवाही, स स्त्री, निश्चिन्ता २ स्वेच्छा
चर ३ औदार्यम् ।
- पीर, वि (का + हि) निर्दय, अरुण
० गान्धुर्निहन् ।
- फायदा, वि (का) निष्कल, निरर्थक ।
क्रि वि, मोन, निष्कलम् ।
- फिज़, वि (का) दे बेपरवाह ।
- फिज़ी, स स्त्री, दे बेपरवाही ।
- वम, वि (स विवश) अशक्त, अवश
निराधिकार २ परवश पराधीन ।
- वमी, स स्त्री (हि) विवशता, अवशता
० परवशता ।
- बहुरा, वि, भाष्यहीन २ विद्याहीन ।
- बाक, वि निर्भय धृष्ट ।
- बाक, वि (का) निरन्तरित शोधन ।
- बुनियाद, वि (का) निर्मूल, निराधार ।
- भाव, वि (का + हि) अनर्घ्यान,
अगणित ।
- भाव की पड़ना, मु, मृश ताष्ट (कम) ।
- मज्ञा, वि (का) नीरस, विरस, निस्त्वाह ।
- भतखब, अ०, निम्नोन्नतम्, व्यर्थम् ।
- भानी, वि (का + अ) निरर्थक ।
- मुखवत, वि (का) निमनीच, अविमान,
अदक्षिण कुशील ।
- मेख, वि अमग्न, विषम ।
- मौक़ा, वि (का) असामयिक, अम
मयोचित ।
- रहम, वि (का + अ) निष्ठुर, निर्दय ।
- रहमी, वि निर्दयता, निष्ठुरता ।
- रोक, } क्रि वि (का + हि) निम्ननि
—रोक-रोक, } बध, निर्विघ्न, निर्व्यागम् ।
- रोजगार, वि (का) दे बेकार ।
- रोजगारी, स स्त्री, दे बेकारी ।
- रौनक, वि (का) शोभाहान, नि श्रीक
० निम्न, कनिष्ठ ।
- रंग, वि (का + हि) निमग्न, निर्मोह
० निम्न, निर्व्याग ।
- रफा, वि (का + अ) विश्वास, शान्त
शान्त, मन्त्रान २ दुःशोक ३ रुच्यम् ।
- रफाई, स स्त्री (का) विश्वासवात
० दुःशीलता ३ रुच्यता ।
- शऊर, वि (का + अ) दे बेतमीज ।

- शऊर, क्रि वि (का + अ) अवश्य,
निमदेहम् ।
- शर्म, वि (का शर्म) निर्लज्ज, अपन्न ।
- शरमी, स स्त्री, निर्लज्जता, निर्वाडता ।
- शुमार, वि (का) अमानि, अमह्य ।
- सब, वि (का + अ मत) अधार ०
अमत्तुष्ट ।
- सघरी, स स्त्री, चंचल २ सतोषाभन ।
- सरो सामान, वि (का) निपरिच्छद,
दारु, अक्रिय ।
- सुब, वि (का + हि) सूँ, नष्टमद,
निम्न ० अक्ष, रट ।
- सुरी स स्त्री, मूर्ख २ नडता ।
- सुर—सुरा, वि (स विस्वर) विपमस्वर
० ० शब्द, रटुम्बर ३ दे बेमौका ।
- स्वाद, वि (स विस्वाद) दे बेमज्ञा ।
- डद वि (का) असौम, निस्त्रीम, अपरि
मित ० अत्यधिक ।
- हया, वि (का) दे बेशरम ।
- हयाई, स स्त्री, दे बेशरमी ।
- हाल, वि (का + अ) निकल ० दुर्गन् ।
- हाली, स स्त्री, निकलता २ दुर्गन् (स्त्री)
दारिद्र्यम् ।
- हिमाव, क्रि वि (का + अ) अत्यधिक,
अपरिमितम् । वि, अत्यन्त, अगणनीय ।
- होश, वि (का) दे बेसुध ।
- होशी, स स्त्री, दे बेसुधी ।
- वेकल, वि (स विकल) अज्ञान, विज्ञान,
दे व्याकुल ।
- वेकली, स स्त्री, (हि बेकल) अज्ञान
अनिष्टि (स्त्री) दे व्याकुलता ।
- वेकिंग पाउडर, स पु (अ) भर्तृक्षोद ।
- वेस्ट्रीशिया, स पु (अ) क्षीणवत् (पु
वडु) ।
- वेगम, स स्त्री (तु) रानी, राजपत्नी
२ राजाचित्रान्तिव्रीडापत्रभेद ।
- वेगाना, वि (का) अस्वीय अस्वीय,
अनात्मीय पर, अन्य २ अपरिमित, अज्ञान ।
- वेगार, स स्त्री (का) विमि आजू
आजुर (स्त्री) ।
- टालना, मु, अमनोवोधेन कु, येन येन
प्रकारेण विधा (जु उ अ) ।

वेहूदगी

वेहूदगी, म स्त्री (फा) अक्षिप्ता, अमम्यता ।
वेहूदा, वि (फा) अक्षिप्, अमम्य
० अक्षिप्तापूम् ।

—पन, म पु दे वेहूदगी ।
यगन, म प (म वान) (पेटा) माम
वृत्तनी, पण, वर्तानी वृत्ता री वा
० (वृत्ता) वृत्ता नमपणम् ।
रंग(न)नी, वि (मि बैंगन) नील, लोहित
अरुण ।

य, म स्त्री (अ) विक्रय, विक्रयण,
मूष्येन दानम् ।

युगुण्ड म पु (म वैकुण्ठ) स्वर्ग नाव ।
युजती, बैनयती, म स्त्री, ० 'बैनयती' ।
युन, म पु (अ) चिह्न, लक्षण, लक्ष्मन् (न)
० दे 'वपरा' ।

यगरी, म स्त्री (अ) विगुधन ० *विगुरी
पिता, दे 'दाव' ३ दे 'नोपगाना' ।

यडक, म स्त्री (हि बैठना) *उपवेश
बीडर, दशनगृह, समानगोष्ठ २ आमन,
पीठ ३ अभिवेशन ४ उपवेश शन ५ उरवा
नोपवेशनात्मकी व्यायामभेद ६ मा ।

यडकी, म स्त्री (हि बैठक) व्यायामभेद,
*उपवेशनी ० आमन, पाठम् ३ पादफलक
प्रदीप ।

यठना, क्रि अ (स विज्) उपविश
(तु प अ), निषद (भ्वा प अ), आम्
(अ आ से) ० गन्ध-अनुव्यय (कर्म)
३ अन्धत्न (वि) भू ४ अन्ध प्रथवा तल
गम् ५ निमस्त्र् (तु प अ) ६ मकुच
(तु भ्वा प मे), मूष्येन प्र (कर्म),
श्री (कर्म) ७ लव्य व्यव (मि प अ)
निधु (दि प अ) ८ अ'अभिप् (भ्वा
प अ) ९ आ, रोप (कर्म) निषा (कर्म),
प्रति स्थप (कर्म) १० इद वन (भ्वा प
अ) ११ (वनमि मह) पनत्वेन सवम्
१२ वृत्तिगण, (वि) वृत् (भ्वा ग से)
१३ वृत्ति मू, परिधि (कर्म) १४ जप,
नगम् (भ्वा प अ) । म पु उपवेश
शन, निपन्न अग्नि, आमन निर्गति (भ्वा) ।
यठने योग्य, वि, उपवशनाय, निपदनीय,
आमिन्य ।

यठनेवाला, स पु, उपवेशन, उपवेष्ट, उपवे
शिन, अमक, निषदिन ।

बैठा हुआ, वि, उपविष्ट, निपण, अ नीन ।

बैठो-उठते, क्रि वि, मदा, प्रतिपन्नम् ।

बैठे बैठे, } क्रि वि, निष्करण अहेतुक

बैठे बैठाण, } ० अग्रे अन्त्यम् ।

बठाराना, क्रि प्रे, व 'बैठना' ० प्रे रूप ।

बठाना, } क्रि म व बैठन 'के प्रे रूप ।

बठालना, } क्रि म व बैठन 'के प्रे रूप ।

वेन, म स्त्री (अ) पय, द्योत ।

—चात्री, स स्त्री पद्यनामप्रतियोगिता २
अन्वयाक्षरी ।

बैतरनी, म स्त्री ० बैतरणी ।

बनाल, म प, ० बैतल ।

बन, म पु (म वान) ० शब्द २ वाना

३ *परिवेदनपथम् (पञ्चव) ।

बैना, म पु (म वान) वानन, साम्ना
रिक्मिष्टाग्रम् ।

बेनामा, स प (अ बै+पा नाम) ०
विक्रयपत्रम् ।

बैराग, वि (अ *वैशाग) शुन्यापेक्षित,
*निस्तार्ब ।

—छँटना, पु, विरल प्रवृत्तक य (वि) प्रत्य
वृत् (भ्वा आ मे) ।

बैर, स पु, दे 'वैर' ।

बैरक, स पु (तु) मैनिर, ध्वज त्रेतु २.

सैनिक, आवाग आगार ।

बैराग, स पु, दे 'वैराग्य' ।

बैरागी, स पु, दे 'वैरागी' ।

बैरी, स पु, दे 'वैरी' ।

बैरोमीटर, स पु (अ) वायुमापकम् ।

बैल, म पु [म व(व/वैवर)] बल्ल, वृष,
वृषभ, उश्न प्रतुष्ट वृषन् यत्नम् (पु),
पुत्र, शावर, मोक्षेय २ पण, मूत्र ।

—गड्डी, म स्त्री, गल्लदशकरी वृषभ(ग/हल्लम्) ।

छत्रे का—, म पु, शरद, धुरपर, धुरीण,

धीरेय, प्राग्ग्य

बूढा—, स पु, जरावय ।

हल मी'नेवला—, म पु मैनिर, हल्लि ।

बलून, म प (अ) दे 'गुच्छ'रा' ।

बशास, म पु, दे 'बैशास' ।

बशासी, म स्त्री (म बैशासी) जात्रा ।

पवनिष ।

बमासी, स स्त्री (म बैशास >) *वैशासी,

कुशियटि (स्त्री) ।

बोझ, म पु (म बोझ) भार, भर, बोझ पथार २ उम्ल, लोल, भार ३ दुष्करता ४ वाय बना ५ बयभार ६ उत्तरदायित्वम् ।

बोझ(वि)ल, वि (हि बो) उर, नारनय, भांग, मन्त्रि दुर्बल ।

बोटी, म पु (म इत) डिजम्बुनाष्टल १ खट, शरल-लम् ।

बोनी, स स्त्री (हि बो) मामस्य कम् ।
—बोटी काटना, मु शरीर सज्ज कृ
(तु प मे) शरीर के देह रंगरस खट
(च) ।

बोणल, म स्त्री (अ बोणल) काचकूपी ।
बोदा, वि (म बोध) दुर्भद्र जट, मति
धीबुद्धि मून २ अन्त, मधर ३ निकल,
अशक्त ४ शक्ति, इत्यम् ।

बोध, म पु (स) उपनिषि प्रविशति
(स्त्री) गान २ धैर्य, आधामनम् ।
—गन्ध, वि (म) नेत्र, बुद्धिगन्ध, सुबोध,
सुगम् ।

बोधक, म पु (स) अध्यापन, शिक्षक ।
वि, हापर, व्यपक ।

बोधन, म पु (स न) अध्यापन, शिक्षण
२ गान, मूचन ३ उत्पादन, निद्राभवन
४ उद्दीपन, प्रबलनम् ।

बोधनीय, वि (स) विज्ञापनीय २ निद्राया
उत्थापनाय ।

बोधि, म स्त्री (म पु) समानिभेद, पूर्ण
ज्ञान, प्रज्ञा उपनिषि (स्त्री) २ बुद्धि ।
—दुम, म पु (म) बोधि, नर बुद्ध, पावन,
विष्णु बलदत्त-बुधराजन ।

—सर्व म पु (म) बुद्धन्तोमुखो महात्मन् ।
बोना, मि म (स वपन) आनि, वृत्
(स्त्री उ अ), (सीआनि)विष् (तु प मे)-
आह (मे) । म पु, उति (स्त्री), वपन,
वाप, वर बीन, विविध आरोपनम् ।

बोने योग्य, वि, वपनीय, वसन्त्य, बन्ध ।
बानि बाला, म पु, वप, वपर, वपु,
वापिन् ।

बोया हुआ, वि, जट, मूनी विरीण (बी) ।
बोरा, म पु (म पुर = दोना) स्तून,
स्वीन, प्रमेव ।

बोरिक एमिड, म पु (अ) दृढमान् ।
बोरिया, म स्त्री (हि बोरा) व, मित्र
जट २ अन्तर रण, विष्टर ३ दे 'बेरी' ।
—(अथवा बोरिया बधना) उठाना, मु,
गमन प्रस्थान-उत्थान (वि) मू ।

बोरी, स स्त्री (हि बारा) स्तून, स्वीन,
प्रमेव ।

बोल, स पु (हि बोलना) वाणी, गिर
वाच उक्ति वाहति (स्त्री), वचन (न),
शब्द, वक्ष्य, वचन २ अगद-व्याज
क्षेप, उक्ति (स्त्री), दे 'बोनी ३ प्रतिप
४ वाचाना निवर्तन ५ गीताय ।

—बाल, स स्त्री, सौहार्द, मद्रभाव,
आस लप ।

—बाल की भाषा, न स्त्री, मातृपित्र-व्यव
हारिक, भाषा ।

—बाला होता, मु, वाक्य अह (वर्म)
२ भाष्य उद्भ (अ व अ) ३ वशी कृ
(स्त्री आ मे) ।

बोलना, कि अ (म मू) आत्मनादभन् (भट
प से), मू (न उ आ), वच (मा प अ)
२ रिलिजियनिस (मा भा), कृत् (भ)
प से ३ कथ् (तु) ४ गी (स्त्री प अ) ।
■ पु, आत्मन, निगदन, भपण, वचन, गदन
वचन, कृजनम् ।

बोलने योग्य, वि, आत्मनीय, वचनीय, नेत्र ।
बोलने वाला, ■ पु, वाचक, वचन, नादिन,
कथर, व्याख्यात, वाचन ।

बोला हुआ, वि, उक्त, गरित, वक्षित, गीत ।
बोली, स स्त्री (हि बोली) गिर-वाच्
(स्त्री) गिर, उदीरणा, वाणी २ वचन
उक्ति (स्त्री), वक्ष्य, शब्द ३ बिजय
घोषणा ४ भाषा, वषा गिरा ५ उदम-कृ
प्रदेष्टार, भाषा ६ वचन-व्यवस्था-क्षेप भागि,
उक्ति (स्त्री) भाषिन्, कृदष्टि ।

—बोली, म स्त्री, दे 'बोनी' (६) ।

—बोली मारना, मु, गन्धा अति (तु प अ)
वर्तकत्या अधिष्ठि, व्यापकता मूर (तु) ।
बोवा(आ)ना, वि प्रे, व 'बोना व प्रे रूप ।
बोहरी, म स्त्री (स वाधन) प्रथमविक्रय ।
बौरालाना, मि अ (म वापुमरान) १
रूप उन्म (दि प म) वतुनीम् ।

बौद्धाङ्क २, म स्त्री (स वयुस्तरप) चक्षुः, पक्षा, अनिल-वात-मरुत (पु) २ आस्तर, धारामपात ३ मन्तनपात ४ व्यभोक्ति (स्त्री) ५ 'वोन्' (६) ।

बाह्, स पु (म) गौ-मवुद्धानुयायन् । वि, बुद्ध-मवधिन् प्रचरित ।

—धर्म, स पु (म) बुद्धप्रवर्तिनचम, बुद्धमन्त्र ।

बौना, स पु (स वमन) राव, हस्व सङ्गत, 'पुङ्गव' यच । वि लव, हस्व ।

बारा, वि (स वागुल) विक्षित, उन्मथ । ३ अण मू ।

बाली, म स्त्री (देरा) विक, स्व प्रस्ताया गोदुग्धम् ।

व्याज, स पु दे 'युद' ।

व्याध, स पु, दे 'व्याध' ।

व्याना, क्रि स (स वीन) नन्-उत्पद् (प्रे), प्रयु (अ आ मे) ।

व्यालू, स पु (म वैकलिक) साध्य भोग, मन्तकाश । वैकालिकम् ।

व्याह, स पु (स विवाह) उद्गाह, परि गय, उपयम, पाणि, ग्रह-ग्राह ग्रहण, दार, परिग्रह-अधिगम ।

व्याहता, वि स्त्री (म विवाहिता) कडा, परिणीता । स पु, पनि, भर्तु ।

व्याहता, क्रि स, (स विवहन) (पत्नीग्रहण) उद्-वि-बह् (श्वा प अ), परिणी (श्वा प अ), उपयम (श्वा आ अ), परि, पनि ग्रह् (अ प से) २ (पनि ग्रहण) पनि विद् (पु उ वे) लभ (श्वा आ अ) अधिगन् (श्वा प अ) हृ (स्वा उ से), भर्ता मयुज (वम) ३ उद्बह ह्रु (प्रे), पाणि ग्रह् (प्रे) विवाहेन-मयुज (प्रे), पाणि ग्रहण मपद् (प्रे) । स पु, दे 'व्याह' म पु ।

व्याहने योग्य, वि, उद व-अ-हा बोद्धव्य, परि ज्ञेय, विवाहयोग्य ।

व्याहने वाला, स पु, वि-उद्-बोद् परिणेतु परिणायक, पाणि, ग्रह ग्रहण ग्रहात् ।

व्याहा हुआ, वि पु, विवाहन, सपत्नीक, मभार्य, कनदार, स्त्रीनय, उद्बविन्, उद, परिणीत । (वि स्त्री) सभभृता, पतिवत्नी, सधवा, मुवासिनी, परिणीता, कडा ।

व्योत, स स्त्री (स व्यवस्था) वृत्त, वृत्तान २ काय, विधि प्राणलौकिकी ३ युक्ति (स्त्री), उपाय ४ अयोनन, उपरत्नन ५ अवसर ६ व्यवस्था, प्रबन्ध ७ मयिनय वस्त्रननम् ।

व्योतना, क्रि स, दे कतरना ।

व्योपार ती, म पु ३ 'व्यापार ती' ।

व्योरा, स पु (म विवर्णन) विमृत्त, वानवृत्तान् २ उदन्त, वृत्तान् ३ अन्तरम भेद ।

—(दे)वार, अ० म विवर्त विमृत्तम्, विस्तारपूर्वकम् ।

व्योहार, स पु, दे व्यवहार ।

ग्रच, स पु, दे 'ग्रह' ।

ग्रत, स पु दे 'ग्रत' ।

ग्रह, स पु [म ग्रहान् (न)] परमात्मन्, परमेश्वर, सच्चिदानन्द वात्सर्ग्य २ आत्मन्, देहिन् ३ ग्राहण (प्राय समान्तरभ मे, उ ग्राहकत्वा) ४ चतुर्मुख, विधि, पद्यामन ५ वेद ६ ग्राह्य, भुवनवीथ ।

—चर्य, स पु (म न) आश्रमभेद, प्रथम-अम २ वीथरक्षा, अष्टागमैश्वर्यप्रतिषेध, यमभेद (योग), ऊर्ध्वरेतस्त्वम् ।

—चारिणी, म स्त्री (म) त्रयचर्यधारिणी, २ प्रथम-अभिनी ३ अनुदा, कुमरी ।

—चारी, स पु (स रिन्) प्रतिन्, लिङ्गिन्, लिङ्गस्थ, त्रयचर्यधारिन् वाणिन् २ प्रथमाश्रमिन्, अविवाहित ।

—ज्ञान, स पु (म न) परमेश्वरबोध ।

—ज्ञानी, स पु (स रिन्) ग्राहवेत्ता २ अद्वैतवेदिन् ।

—दिन, स पु (म न) परमशिविदित, सुख्यवधि (= १०० चतुर्गुणी) ।

—देस, स पु (म) अर्यावर्तस्य भागविशेष (कुरुक्षेत्र च मन्दास्य पचल शूरमेनका) एष ग्राह्यदिदेशो वै ग्राह्यवर्तदिनन्तर-मनु० २।१९)

—पुराण, स. पु (स न) पुराणविशेष ।

—बधु, स पु (म) पत्नीको विप्र ।

—भोग, स पु (स ज्य) त्रयभोगोत्पन्नम् ।

—मूहर्त, स पु (स पु न) सूर्योदयात् विचतुरधटीपूर्ववर्तिना, ग्राह्यरात्रि ।

—यत्, स पु (म) ग्राह्यमत्र, सविधि वेदाध्ययनाध्यापनम् ।

—रध, म पु (स न) ब्रज, उद्दिष्टारम ।

—रात्रि, स स्त्री (स) भक्ष्यो निशा, प्रलया
दधि (—१०० चतुर्थी)।

—वर्चस्, म पु (न न) न्न स्वाध्यायन
तेशम् (न) ।

—वचस्वी, वि (म त्विन्) ब्रह्मवर्चसविशिष्ट ।

—धादिना, म स्वी (मं) गायत्रीः । वि,
पेदापदेशी ।

—बाद्री, वि (स ग्नि) वेदोपदेशक ।

—निद्रा, वि (म) ब्रह्मवेत्तु र वेदार्थज्ञ ।

—विद्या, स स्त्री (स) उपनिषद्परा, विद्या ।

—वैशाख, स पु (५-वैश्व) मखन ।

—यवर्त्त, स. पु. (म. न.) पुराणविशेष ।

—समाज, स पु (स) आराममोहनराज
प्रवासेन सप्रचार्यनिधेय ।

—सूत्र, म पु (म न) द्वे 'यसोपवीन'
३ शरीरिसूत्रम् ।

—हत्या, स स्त्री (म) मिप्रवध ।

—हृत्यारा, स पु (स + हि) विप्र न
भाक्ष्यभातन ।

प्रह्लाद, स पु (स न) परमेश्वर, स्व ता
० ब्राह्मणस्वम ।

ग्रहार्पि, स पु (स) वनिष्ठादयो मन्त्रद्वय
श्रवय २ व्रातण ऋषि ।

महा, म पु (म लन पु) चतुर्मुख, अष्ट
कर्ण, अत्र व, वन, कमलपत्र अञ्ज,
चीनि, वि, धातु, नाभिज, प्रसासन, पर
मेष्ठिन, पिनामह, मिथि, मिरेचि वि वन,
विश्वत्जन, सदतौमुग, मृदु, स्वयम्, इत
वाहन, हिरण्यगर्भ (मव पु) ।

महाद, स पु (सं न) भुवनरोष, विश्व
गोलक, विश्व, जगत् (न), जगती, त्रिमयनाम ।

ग्रन्थाक्षर, स पु (म न) ओम् इत्यक्षरम्,
प्रणव ओङ्कार ।

ब्रह्माणी, सखी (स) ब्रह्मण पत्नी, जनरूपा,
सावित्री, सरस्वती, गायत्री ।

प्रज्ञानद, स पु (स) प्रज्ञादशनाहद ।

ब्रह्माभ्यास, स पु (म) वेद, अध्ययन
स्वाध्याय ।

ब्रह्मावर्त्तं, स पु (स) तपोवत्, सरम्बत
दृषद्वत्तोमध्वान्देश ।

ब्रह्मात्मनः, स पु (स न) यो ध्यान
आत्मनः ।

બ્રહ્માણ્ડ, સ પુ (મ ન) મહાસ્વરૂપમત્ર
૧ અમોગાસ્વરૂપે ।

आह्वय, स पु (स) आयाणाभुत्तमो व
३ विप्रः ज्येष्ठवर्गः अग्र च-मातातरु ।

भूदेव, द्वि जन्मनृपाणि, वक्त्रव, द्विज,
शुट, द्विपोतम, षट्कर्मन्, प्रशन्न (मिब पु)।

ब्राह्मण्य, स पु (मं न) द्विचत्त, विप्रत्य,
ब्राह्मण्यन् इ ।

ध्यातृणी, स स्त्री (स) ब्रह्मणस्पती १ ज्येष्ठ
वर्गा, द्विचोत्तमा ३ बुद्धि (स्त्री) ।

ग्राह्यमुहूर्त्तं, स पु (सं पु न) अम्णोश्च
कीलस्य प्रथमदण्डवम् ।

मङ्गली, न त्वी (स) दुर्गा २ भ रत्नवर्षस्य
प्राचीनलिपिविशेष ३ (बूटा) लोमवल्गर
श्रुता, परमेष्ठिनो, मङ्गलकन्यका, शान्दा
सरस्वती ।

ब्रिटिश, बि (अ) आगल ।

મુદ્રા, સં પુ (અ) આઘણી, હોમમયી શોધની
માર્ગની ૨ કૃત્તિકા નર્મ, તુલિકા, વાતમા ।

द्वरी, स ली (अ जयूरी) यवामवनी ।

धर्मकाण्डस, स पु (अ) श्वासेनालीमुनप्रदाह ।

ब्लॉक, सं पु (अ) • चिनपल्लव क २ चतु
रसो भूयड ३ गृहवर्ग ।

ह्लीर्ध्वं षौड्रं, सं पु (अ) श्वेनश्वौद,
रगनाशश्चर्गम् ।

इन्द्र, स पु (अ) मृताशय , नदिन (पु
स्त्री) ३ पिताशय ३ (पादमकुन्म्य)
अन्त कोष ।

५

भ, देवनागरीर्णभाष्यव्युत्तिशो व्यजनवण ,
भव'ए ।

ਭਗ, ਸ ਫੀ ਤੇ 'ਭਾਗ' ।

भगवत्, म पु (म) भवन, वेदन २ विनाश,
विश्वम् ३ अनिग्रहणं, उन्मूलनं ४ तृता,

कल्लोन् ७ घरायय ६ गज-ड ७ बाधा,
विन् ८ वक्रना, निष्पना ९ हे 'लरुधा' ।

भैरव, वि (हि भाग) भगवत्, मगवत् दिव ।
भैरव, म पु (मं भगवत्) वैश्य, वैश्य वन,
नुनन्ववद्वन पत्नी वि भग, वैश्य वन ।

भैरवा, स पु (हि भग) शाणप, वराशि मि ।

भगरा, स पु (म भृङ्गात्) पिकार साभेद ० दे 'भारा' ।

भगिन, म स्त्री (हि भगी) जल्पा (स्त्री), सम्भाषणा ।

भगिमा, स स्त्री (म भग प) नका, कुम्भिका, निहना, अरालना ।

भगा, म प (न भेज >) रू (५) मलहारक, मम २ ० भुद्रचनिन्द ।

भगा, वि (ह ना) दे भग ।

भगी, म स्त्री (म) भेद प्रच्छेद ० हि लता, वस्त्रा २ अतिवेश १२ ० ४ लोचन ५ व्यान ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ।

भगी, वि (म भगी) भिद्र ० नु टना नवनशील २ ननक भवन, सञ्च सञ्च ।

भगुर, वि (म) भिद्र टमा ० ननक, भुव २ भुविल, वक ।

भगुर, वि (म) रञ्ज, सञ्च, श्रौण्ड ० जलन अतिक्रमगरिण ।

भग्न, स पु (म न) सञ्च, श्रौण्ड, भेदन, क्षयशीकरण २ अनिक्रम-भा, जलन, भा, व्यादन ३ वि, ध्वसन ४ भग, ध्वम ५ नाराज, लोपनम् । वि, दे भग्न (१०) ।

भगना, क्रि अ (म भग्न) दे 'टूना' ।

भडा, स पु (स वृत्त) दे 'न' ।

भड, म प (स) दे 'भाड' ।

भडा, स पु, दे 'भाटा' ।

भडार, स पु (स भाटार) कोश ५ निधि, शेष, निधान ० धान्य, वीष्ठ, अ(अ)भार २ ३ पाकशाला ४ उदर, नठर ५ भाटा गर ६ दे 'भण्डा' ।

भडारा, स पु (हि भटार) दे 'भण्डार' (१५) २ ममूह, राशि ३ नाथना भो-नोत्पव ।

भडारी, स (हि भटार) वीष्ठक, अ(अ)-गारक २ कोश ५ ।

भडारा, म पु (भाटारिन्) कोगा(पा)पञ्च, धनाप्यक्ष २ भाण्यपरिव, भाण्यरि ३ सुद, पाचक ।

भमीरी, स स्त्री (अनु) रक्ता पत्रभेद, *भमीरी २ दे 'तीनी' ।

भेंवर, म पु (स अमरक) नन, आवर्त गुल्म, अमि (स्त्री) आवर्त, अवधूर्ण, वृन्दुव, तानूर २ दे 'अमर' ३ गर्त न, अवर ।

भेंवरा, स प, दे 'अमर' ।

भेंवरी, म स्त्री (हि भेंवर) दे 'भेंवर' २ शरीरात्थ रोम, वतु मल्लम् ।

भेंवरी, म स्त्री (हि भेंवरना, म भ्रमण >) ० भावर ० वैवधिरता, भाववाहकता ३ (प्रवृत्तपादै अधिकारिणा) पयटन पात्रभ्रमणम् ।

भण्डा, म पु (हि भाड, दे) ।

भक, म स्त्री (अनु) ज्वाला जलका, जनि (पु) ।

भक्त, वि (म) धार्मिक, धर्मागन्, पुण्य धन शाल पुण्यत्तम् । स पु, पूजक, उपानक मेव २ अनुपायिन्, अनुपायिन् ३ पञ्चरत्न, सत्कार ।

भक्ताई, स स्त्री, दे 'भक्ति' ।

भक्ति, स स्त्री (स) इश्वर, सेवा, पूजा-अर्चा उपानना परावपता २ नियम, धामनता, धमकिया, तपस (न) ३ श्रद्धा, निष्ठा ४ परावपता, निरति (स्त्री), अनुराग, अभिनिवेश ।

भक्ष, म पु (स) भोजनम् २ भक्षणम् ।

—हार, म पु (स) खादिक २ पाचक ।

भक्षक, वि (स) खदक, जहर, भोक्त, दत्त, भोविन् [भक्षिका (स्त्री) = खादिका, जनिना, भोक्त्री] ।

भक्षण, म पु (स न) अन्न, भाण्डादन, खादन, भोजन, अभ्यवहार ० आहार ।

भक्षित, वि (म) भुक्त, खादित, अदिन ।

भक्षा, वि (स क्षिन्) दे 'भक्षक' ।

भक्ष्य, वि (स) खाण, भोज्य, अभ्यवहार्य ।

न पु (म न) भोजन, भाहार, खावस्तु (न), अन्नम् ।

भगदर, म पु (म) अपानदेरो व्रगरोभेद ।

भग, न पु (म) स्य २ ऐश्वर्य, धन ३ मीमहा, नाथ ४ चद्र ५ वाणि (स्त्री)

६ सुद ७ पूर्वाक लुपानहत्र ८ धन

९ कानि (स्त्री) १० मोक्ष ११ नात्तम्

१२ यत्न ।

भरण, म पु (म) नक्षत्रमगृह २ गणवेद ।
(५१, छंद शास्त्र) ।

भगत, स पु तथा वि, दे 'भक्त' ।

भगतामी, स स्त्री (हि भगत) भक्त भार्या
पत्नी २ इश्वर, उपासिका पुजिता मंत्रिका,
धर्मदायिनी ३ अनुयायिनी ।

भगती, स स्त्री, दे 'भक्ति' ।

भगाद्वर, स स्त्री (हि भाग + दौट) पलायन,
अप, कर्मण दान, विद्रोह ।

—पद्मनाथ भयंका, त्रि अ, पलाय (भ्वा
आ से), विप्रद्रु (भ्वा प अ), अपधाव
(भ्वा प से) ।

भगवत्, स पु (स भगवत् >) दशर,
भगवत् (पु) ।

भगवती, स स्त्री (म) देवी ० गौरी
३ सरस्वती ४ गंगा ५ दुर्गा ।

—भगवत्, वि (म) श्रीमत्, लक्ष्मीवत्,
पञ्चशालिन् २ पूज्य, मान्य, अर्चनीय ।
म पु (स) परमेश्वर, जगदीश्वर २ विष्णु
३ शिव ५ निन ६ शुद्ध ।

—गीता, स स्त्री (स) श्रीकृष्णार्जुनसंवादा
त्मको विख्यातो धर्मग्रन्थविशेष ।

—पद्मी, स स्त्री (स) गंगा, शैववती ।

भगवो वा, स पु, दे 'गेर' । वि, दे 'गेरआ' ।

भगवान्, वि (स भगवत्) दे 'भगवत्'
वि तथा स पु ।

भगाना, कि म, क 'भागना' के प्रेरु रूप ।

भगिनी, स स्त्री (स) मोदरा, दे 'बहन' ।

भगीरथ, स पु (स) अवोष्वापतिविशेष ।
वि, सुमहत्, विपुल, अत्यधिक ।

भगोद्वा, वि (हि भागना) रणविजुता,
शुद्धत्यागिन् २ अपधावित, प्रपन्नावित
३ भीरु, वीर ।

भग्न, वि (स) सटित, कुटित, ध्वस्त ० भिन्न,
वि, दीर्घ ३ पराजित, पराभूत ।

भगनाश्लेष, स पुं (म) धमाश्लेष,
दे 'सच्छर' ।

भग्न, म पु (स न) पूजा, अर्घा, सगा,
मपय्या २ जप, सनतस्मरण ३ भक्ति
गीतिका ।

—करना, कि स, दे 'भजन' ।

भजना, त्रि स (स भजन) भज् (भ्वा
उ ॥), पूज्-समाप् (जु), उपाप् (अ

आ मे), आराप् (जु), नमस्तति (ना
था), सेव् (भ्वा आ से) २ जप
(भ्वा प से), निरतर स्मृ (भ्वा प अ)
३ आ, त्रि (भ्वा उ से) । कि अ,
दे 'भागना' । स पु, दे 'भजन' (१२) ।
भजनानन्द, स पु (स) भक्ति, आनन्द-रस
आह्लाद । वि भक्तिपरायण ।

भजनानन्दी, वि (स दिव्) भक्तपन्न,
मग्न हीन परायण ।

भजनीक, ॥ पु (स भजन >) गायक, गाय,
गातृ, गेष्ण ।

भजनाय, वि (स) पूज्य, सम्मान्य, सन्ध ।

भजने योग्य, वि, भजनीय, उपास्य, सन्ध,
उपाह, आश्वनीय ।

भजने वाला, स पु, भक्त, उपास
आराधक ।

भट, म पु (स) बोध, बोद्ध (सेनिक
आधुनिक) ० वीर, शूर ३ वर्णसरभेद ।

भटभट्टा, भटभट्टेया, स स्त्री (स भट +
कटर >) दुम्पशा, दुष्प्रवर्तिणी, बहुकटा,
विरक्ता ।

भटवना, कि अ (स भ्रान्तक >) मोष पर्यट्
परिभ्रम् (भ्वा प से) २ पदग्रह (वि),
इतस्तत् या (अ प अ), विषयगन् ३ भ्रम्,
मुह् (दि प से) । स पु, व्यर्थपर्यटन, पथ
भ्रम, उन्मार्ग-गमन, भ्रम, माया, मोह ।

भटकाना, कि स, क 'भ्रकाना' के प्रेरु रूप ।

भट्टा हुआ, वि, उन्मार्ग विषय-गामिन्, पथ-
भ्रष्ट, भ्रान्त, भूट ।

भट्ट, स स्त्री, (स कपू >) (मन्त्रोपन में हा)
(हे) सति । (हे) भक्ति । (हे) दयस्य
भट्ट, स पु (म भट्ट) जानिविशेष २ स्तुति
पाठा, दे 'माट' ।

भट्ट, ॥ पुं, दे 'भट' ।

भट्टा, म पुं (स भ्राष्ट >) आपाक, कट्-
(पु स्त्री), पाण्डुटी ।

भट्टी, म स्त्री (हि भट्टा) अश्रम, उद्यान,
अग्निश, अग्निवा, अभिषेकणी, अग्निपुट
२ संधानी, अभिषेकशाला ३ रजस्वलाह ।

भठियारा, म पुं (हि भट्टा) पाषाणाद,
अध्यक्ष पति २ गृहकार, भोष्टृविध, भोजन-
कार-कर्तृ ।

मठियारिन री, सं स्त्री (हिं मठियारा) बाधा
गाराप्यक्षा २ भजन, नारी-कवी, मृष्टकारी ।

भटक, सं स्त्री (अनु) औज्ज्वल्य, प्रभा,
भाम् (स्त्री), अतिवृद्ध, शानि शीति (दोनों
स्त्री) शोभा ।

—दार, वि (हिं + वा) मासुर, भासमान,
उज्ज्वल, दीप्तिमत् ।

भट्काना, कि अ (हिं भटक) उदप्रज्वल
(स्वा प से), उदप्रमदीप (दि आ से)
२ समाध्वस जपसु (स्वा प अ) परवृष्ट
(स्वा आ से), सहेसावप (स्वा आ से)
३ कृष् (दि प अ) ।

भट्काना, कि स व, 'भटकना' के प्रे रूप
२ उठिन उठाप (प्रे) ।

भट्क्रीला, वि (हिं भाट) दे 'भट्कहार' ।
भट्भविषा, वि (अनु भट्भट) बाबा, बाराट,
बावट्क, जल्द, बहुभाषण ।

भट्भूना, सं पु (हिं भाट भूना)
दे 'भटियाता' (२) ।

भट्भूजी, जिन, सं स्त्री (हिं भट्भूजा)
दे 'भटियारिन' (२) ।

भटुगा, सं पु, (हिं भाट) भगानीविन्,
बेइयाचार्य, बुढादिन्, विट ।

भटुर, सं पु (म भट्) छुद्रमाक्षणभेद ।

भगित, वि (स) उक्त, कति, व्याहृत ।

भर्ताजा, सं पु (स भट्ट) भ्रातृव्य, भ्रात्री
(स्त्री), भ्रातृ पुत्र ।

भर्ताजी, सं स्त्री (हिं भर्ताजा) भ्रातृजा,
भ्रातृप्या भ्रात्रीया, भ्रातृ पुत्री, भ्रात्रीयी ।

भक्ता, सं पु (स भक्त) भक्त, भागव्य,
दात्रावृत्ति (स्त्री), यत्तिवन् ।

भट्भेद, वि (अनु) अनिम्यूर २ कुदरसन ।

भटा, वि (अनु भट) बदाकार, उदरसन,
बुरूप, विषमाग २ नैपुण्यदाक्ष्य शून्य
३ अदलील, अवाच्य ।

भट्ट, वि (स) सम्य, सिष्ट, सुशिक्षित,
श्रेष्ठ, गुणिन, प्रशस्त, सधु, सुवृत्त, सुशील
२ मंगल, कल्याण, शुभ २ उचित, उपयुक्त ।

सं पु (स न) बल्याण, धोम, मणल,
हुशल, हित २ नन्दन ३ गन्तानिभेद
४ सुवर्ण ५ समृद्धि (स्त्री) ।

भट्ट, सं पु (स भट्टावरण) केशकूर्चमधु
मुदन, मुदनम् ।

भट्टता, सं स्त्री (स) सिष्टता, सम्यता,
सम्जनता, सुशीलता ।

भट्टासन, सं पु (स न) नृपासन, सिंहा
सन २ योगासनभेद ।

भट्टिका, सं स्त्री (सं) भट्टा नियि (द्वितीया,
सप्तमी, द्वादशी) २ वृक्षभेद ।

भनक, सं स्त्री (भ भ्) भट्ट-अस्पष्ट
ध्वनि २ ननप्रवाह, विवदती ।

भनमनाना, कि अ (अनु) भगमगायते
(ना वा), गुण (स्वा प से) शकार क ।

भनमनाहट, सं स्त्री (हिं भनमनाना)
भगमगायित, भगमगायनि, गुणन, गुणित,
प्रवार ।

भघ(भ)का, सं पु (हिं भाप) बक-
सधान, ययम् ।

भभक, सं स्त्री (अनु भक) ज्वालोत्थान,
कीलोद्गमि (स स्त्री) २ दे 'उज्जाल' ।

—भारना, कि अ, गर् (स्वा प से) ।

भभकना, कि अ (हिं भभक) प्रज्वल
(स्वा प से), उदीप (दि आ से)
२ तपानिशयेन स्फुट (हु प से) —भन्
(वर्म) ३ दे 'उबटना' ।

भभकी, सं स्त्री (हिं भभक) विभीषिका,
तर्जना, मत्सना, मयदर्शनम् ।

—देना, कि स, निर्, भल्, तर् (दोनों
पु आ से) ।

गीद—, शु, कपटविगीषिका, मिथ्या तनना ।

भभभट, सं पु, दे 'भीष्टभार' ।

भभूका, सं पु (हिं भभक) ज्वाला, शिखा,
ज्विम (न) ।

भभूत, सं स्त्री [स विभूति (स्त्री)]
गोमयभक्षण (न) २ वैभवम् ।

—हगाना, कि स, विभूत्या विग्रह लिप्
(हु उ अ) । सं पु भस्मगुहनम् ।

भयकट, वि (सं) वास भीति भय, जनकद प्रद
अवह, भीम, भीषण, भयानक, रौद्र, शेरव ।

भयकरता, सं स्त्री (म) भीमता, भीषणता,
भयानकता ६ ।

भय, सं पु (स न) भी भीति (स्त्री),

मात्रस, स, धाम, दर र, भिया २ आनक
३ आनका ।

—करक, —प्रद, वि, दे भयकर ।

—राना या रगना, कि अ, ओ (जु प
अ), वि मत्रस् (भ्वा दि प से), दे
'राना' ।

—भीत, वि (स) भीत, भयात, ससात्वन्,
धम्म मभय, सदर ।

—हीन, वि (स) निर्मय, अभय, निर्भीक,
अकुतोभय दे निर्भय' ।

भयातुर, वि (स) दे 'भयभीत' ।

भयानक, वि (म) दे 'भयकर' ।

भयावना, वि (म भय >) दे 'भयकर' ।

भयावह, वि (म) दे 'भयकर' ।

भर, वि (हि भरना) समस्त, सम्पूर्ण,
ममम, यावत् (ती स्त्री) तावत् (ती स्त्री) ।
कि वि, यावत् (दितोया क साथ) आ
(पचमी के साथ मात्र, मित, परिमित, परिमाण ।

आधु—, कि वि, यावज्जीव, आधुत्यो ।

कोम—, कि वि, कोश यावत्, कोशमात्रम् ।

बन्ध—, वि, बन्ध, मात्र मित परिमाण ।

शक्ति—, कि वि, यथाशक्ति (न), याव
उक्त्य, यावच्छक्ति (अव्य) ।

सर— वि, मेर-मेरक, मात्र परिमित ।

भरण, म पु (म न) पालन, पोषण,
संवधन, रक्षण, समालम्बनम् ।

भरणी, म स्त्री (स) नक्षत्रविशेष, यमदेवता
२ धोपकल्पा । वि स्त्री (म) पालयित्री,
पोषिका ।

भरत, म पु (म) कैकेयीपुत्र, रामानुज
२ शाकुन्तल्य, दौष्यमि, सर्वदमन ३ ऋष
भदेवपुत्र ४ नाट्यशास्त्रकेषको मुनिविशेष
५ नट ।

—खड्ग, म पुं (म न) भारत, भारतवर्ष
२ भारतान्तर्गतकुमारिराज्यम् ।

भरता, स पु (देश) ॥ वृत्ताभ्युक्तम् ।

भरता, भरतार, म पुं मि भरतार (१६) ।

भर, पति, ध्व २ व्याभिन्न, प्रभु ।

भरती, स स्त्री (हि भरना) मेन्यप्रवेश
२ प्रवेश ३ भरण, पूरण, पूर्ण (स्त्री) ।

—करना, कि म, मे-यप्रवेशकृ (प्रे) ।

—डालना, कि स, गर्न पूर (चु) ।

—हीना, कि अ, सेनायां प्रविश (तु प अ) ।

भरना, कि स (म भरण) भृ (भ्वा उ अ),
भृ (जु उ अ), वृ (जु प अ), पु (तु
प से) पूर (चु), व्याप् (स्वा प अ)
२ प्रभुपर (प्रे) ३ ऋणादिक शुप् निम्न
(प्रे) ४ मह (भ्वा आ से) ५ उत्ति
प्रतुप (प्रे) ६ लिप् (तु उ अ) । कि
अ, भृष्टृभ्याप् पूर (कर्म) २ अर्न कुप्
(दि प से) ३ ऋणादिक शुप् (दि प
अ) ४ पुष् (कर्म) । सं पु, भरण, पूरण,
व्यापनं, पूर्ण भृनि (स्त्री) ३ ऋण
३. उत्तोज ।

भरनी, स स्त्री (हि भरना) मल्लिक, त्र(न)-
सर, मूरवेष्ट हर्म २ निर्धक्त्व (पु वृद्ध) ।

भरनी, स स्त्री, दे 'भरणी' ।

भरने योग्य, वि, अनन्ध, भरणीय, पूरणीय,
पूरयितव्य २ शोधनीय (ऋणादि) ।

—बाला, स पु, पूरक, भरत, पूरयित
२ ऋणादिशोधक ।

भरा हुआ, वि, मं, भूत, पूर्ण, पूरित, आनं
कीर्ण, व्याप्त, निश्चित, सकल, आविष्ट ।

भरपूर, वि (हि भरना + पूरा) स परि,
पूण पूरित भूत मङ्गीर्ण व्याप्त, निश्चित । कि वि,
पूर्णता, अधोपेण २ मध्यम्, माधु ।

भरभराना, कि अ (अनु) आकुल (वि) भू ।

भरम, म पु (सं भ्रम) भ्रान्ति, मिथ्या
मति (दोनों स्त्री), माया, आभाम, भविष्य
२ भ्रम, रहस्यम् ३ प्रतिष्ठा, प्रत्यय ।

भरमार, म स्त्री (हि भरना + मार) वगुलता,
प्रचुरता, विपुलता, भूविष्णुता ।

भरराना, कि अ (अनु) सहना पद (भ्वा
प से) १ भृष्ट (दि तथा तु प से) ।

भरवाना, कि प्रे, व 'भरना' के प्रे रूप ।

भरगुरु, कि वि [हि भर + गुरु (= शक्ति)]
यथा शक्तिवन्-साधर्म्यं, पूर्ण, द्यवत्या-वलेन ।

भरा, वि (हि भरना) पूर्ण, पूरित, (सं)
भूत, निश्चित, आविष्ट ।

—(रो) जगानी, पूर्ण-शिवन-नारुप्यम् ।

—(रो) घाली में लगाना भरना, मु, लाभ
प्रदवीविकां परित्यज् (भ्वा प अ) ।

—भूरा, वि (हि भरना + पूरा) मंदक,
समृद्ध २ परितः, पूर्ण ।

भराई, म स्त्री (हि भरना) दे 'भरना'
मं पुं २ भरणं पूरणं, भृनि (स्त्री)—वेदनम् ।

भरना, क्रि प्रे, व 'भरना' के प्र रूप ।

भरी, स स्त्री (हि भर) दत्तमाषो ।

भरोमा, स पु (हि भरा + म विश्राम >)
विश्राम, प्रलय २ आश्रय, अवलंब बन,
आधर ३ आशा ।

—करना, क्रि अ, आ-अव-लब् (स्वा आ से)
२ विश्रम (अ प से) ३ आशा नष्ट (क
प ज) ।

भर्ता, } स पु (स मत्) दे 'भरता' ।
भर्तर, }

भर्ता, स पु, दे 'भरता' ।

भर्ती, स स्त्री, दे 'भरती' ।

भर्त्सना, स स्त्री (स) तजना, निर्बर्त्सना,
अभिधेय, निंदा, गद्दा बाग्दड, उपालम्भ ।

—करना, क्रि म, निभन्-त्तन (चु आ
से), गद् (स्वा आ से), निद् (स्वा
प से) ।

भलमनसत, } स स्त्री (हि भग्न + मानुस)
भलमनसाहत, } भट्टा, सज्जनता, आयत्न,
भलमनसी, } महानुभावता ।

भला, वि (स मद्र) शुभ, वर, शोभन,
उत्तम, धेनु, शुणवत्, निर्दोष, माधु, प्रशम्भ,
प्रशम्भ, वर सु, मत् २ उत्कृष्ट, विशिष्ट ।
म पु (स न) वत्स्याण, कुशल, भगल,
हित २ धाम, प्राप्ति (स्त्री) । अव्य, भवतु,
अस्तु, तावत् ।

—करना, मु, उपकृ, साहाय्य दा (जु उ अ) ।

—चगा, वि, नीरोग स्वस्थ, निरामय ।

—बुरा, म पु, दुर्-अश्लील-वचन २ हानि
लामी ।

—मानुस, स पु, भद्र, आय, सज्जन ।

भले ही, मु, काम, (लोट्), विधिलिङ् से भी
अनुवाद किया जाता है ।

भलाई, स स्त्री (हि भला) मञ्जनता,
माधुर्या, आर्याता २ उपकार, उपकृति (स्त्री),
परहितम् ।

भद्र, म पु (स) समार, तगर (न)
२ चम्पद (न), उत्पत्ति (स्त्री) ३ पुन
तनदुख ४ मत्ता ५ शिव ६ मेघ ।

—यवन, म पु (स न) तगजालम् ।

—मचन, म पु (म) ईश्वर, मुक्तिद ।

—भय, स पु (स न) पुनरन्वेषणम् ।

—मोचन, वि (स) मोक्षद ।

—मागर, स पु (स) समारपारवार ।

भवदीय, भव (स) भावत्क, सुष्मरीय,
स्वदीय, तावत्क यौष्माक [—की (स्त्री)],
यौष्माकीय ।

भवन, स पु (स न) अ(आ)भार २, वेदमन्
मन्त्र (न), सदन, निकेतन, मन्दिर, गृह,
गेह २ प्रासाद, नृपमन्दिरम् ।

भवानी, स स्त्री (स) दे 'पार्वती' ।

भवितव्य, वि (स) अवश्य भाविन्, भवनीय ।

भवितव्यता, स स्त्री (स) नियति (स्त्री),
भाग्य, मागधेय, दैवम् ।

भविष्य, वि (स) भविष्य, भविष्यद्, आगा
मिन्, भूषण ।

भविष्य, वि (स) आगामिन्, अनागत,
उत्तर, भविष्यत्, स्वस्तन [—नी (स्त्री)] ।

म पु (स न), भविष्यद्-आगामि-भावि
उत्तर-अनागत-काल समय, अनागत, स्वस्तन,
प्रपेतन, भाविन्-आगामिन् (न), आयति.
(स्त्री), उदकं ।

भविष्यत्, वि तथा स पु, दे 'भविष्य' ।

भविष्य(द्)वक्ता, स पु (म-वक्तु) भविष्यद्
वादिन्, देवद्व ।

भविष्य(द्)वाणी, स स्त्री (स) भावि
कथन-सुवन, भविष्यद्वाद ।

भव्य, वि (स) सधीक, शोभायित, दिव्य,
सुप्रभ, शोभन २ शुभ, भगल ३ सत्य, यथार्थ
४ योग्य ५ भाविन् ६ भेद ७ प्रसन्न
८ महत्, गुरु ।

भव्यता, स स्त्री (स) दिव्यता, शोभा, श्री
(स्त्री), सुदरता इ ।

भपक, स पु (स) कुक्कुर, मारधेय ।

भसीड, स स्त्री (देश) घृगाल-ल, शालक
(विमद ?), विम, नालक २ करहाट,
कर्कट, शिफाकद ।

भसुड, म पु, दे 'हाथी' ।

भसुर, म पु (हि भसुर का अनु) ज्येष्ठ,
भसुरमन ।

भस्म, म पु [म भस्मन् (न)] भस्मिन्,
वि, भूति (स्त्री.) ।

—करना, क्रि म, भस्म (स्त्री) कृ, भस्मनात्
कृ २ दे 'नलना' ।

भागना, कि अ (म भाच्) पलाय
(स्वा आ स), जयषब् (स्वा प मे),
विरेट्टु (स्वा प ज), अयन्तस्य (स्वा
प अ) २ वृज (वु) परिहृ (स्वा प ज)।
स पु, पलायन अययन, अय, यान इव।
मरा परिहृत्य।

भाग दौड, म स्त्री, दे 'अग्द'।

निर परपेर रखकर भागना, मु, महानवेन
पलान या अशवात्।

भागनेवाला, म पु दे 'मगोडा'।

भागवत्, स पु (स न) श्रीमद्भागवत,
महपुराणविशेष २ देवीभागवतपुराण ३
भावकृत्। वि, ऐश्वर, वैष्णव।

भागार्थी, वि (म विन्) भाग-अंशखंड,
इच्छुक-कामिन् अर्थिन्।

भागार्ह, वि (स) अश्विन्, अश्वभाविन्,
भाग धरिन् भाविन् २ विभज्य, अशनाय,
वर्नीन।

भागिनेय, म पु (स) दे 'भोज'।

भागी, स पु (म भागिन्) अश्विन्, अश-
नाय, अश्विन् धरिन् २ दानद, दायिक,
रिक्थिन् अश्व।

भागीरथ, वि (म) भागीरथ, जम्बविन्
विषय-मृदा।

भागीरथी, स स्त्री (स) गंगा, गङ्गवी
२ गंगाया बाबर्निगालविशेष।

भाय, स पु (स न) नाथेय, दिष्ट, अदृष्ट,
दंव, निपति (स्त्री) विधि, अतिव्यना,
विपद्, प्राकटनम्।

—उदय, म पु (स) पुण्योदय,
वैशानुदन्ना।

—चम, म पु (म न) दैव-वि (स्त्री),
नारयणम्।

—वरा, —वराण्, कि वि नीमग्नेन,
मुर्देने दिष्ट्या दैवत्।

—यान्, वि (म वय) भाग्ययान्ति, महा
भाग, सुभय, धन्य, श्रीभाग्यपुण्य, वर
नुहति, धन्य।

—हीन वि (स) हत-दुर्न्द, नायभा,
दुर्देव, दैवदत्तक।

भाजक, वि (स) विभाक्त्वक, विभेदक,
विच्छेदक, विभाजयितु २ हर, हार, हारक
(गति) दे 'भागफल' मे।

भाजन, स पु (स न) दे 'पान'।

भाजित, वि (स) विभक्त, विभजित २
पृथक्कृत, विदलेषित।

भाज्य, स स्त्री (स) व्यञ्जन, उपमेचन,
अन्नोपस्कर २ दाक, हरितक, शिमु
३ दे 'भाज'।

भाज्य, वि (स) भागाह, भाजनीय। स पु
(स न) भागाहो (गति) दे 'भागफल' मे।

भाट, स पु (स भट्ट) बामररत्नातिविशेष।
२ चारण, बदिन, वैतालिक, मागध, स्तुति
पाठक, मधुक ३ चाटुनार ४ राजदूत।

भाटा, म पु (हि भाठना) बैला, परिवर्त
अपचय, क्षीयमाण-अपचीयमान, बैला।

जगर—, स पु वेणोपचयापचयो (पु हि)।

भाट्ट, स पु (स भाट्ट ङ) अवरोध,
जननापाक।

—शोकना, मु, शुद्धकार्य कृ २ काल व्यर्थ या
(मे यापयति)।

—मे शोकना वा डालना, मु, नर् (मे),
क्षी (मे क्षपयति) २ त्यन् (स्वा प अ),
जपस् (स्वा भा से)।

—म पदे, मु, नवयत्, अस्मसात् यवत्।

भाडा, स पु (स भाटक क) भाट,
नटि (स्त्री)।

—भाटे का टट्ट, मु, अस्थिर, अस्थायिन् २
स्वार्थपर, अर्थपर ३ अल्पमूल्य, गुण
सार, हीन।

भात, स पु (स गक्त) ओदन-न, जल,
अपस (न) क्रूर, भिस्सा, दीदिवि २ वर
वधूभिर्भोजभोवनात्मको वैवाहिकरीतिभेद।

भाघा, स पु (स भला) दे 'तरकश'।

भाट्टो, स पु (स भाट्ट) भाट्टपद, नमस्य,
शोधपद।

भाट्ट, भाट्टपद, स पु (स) दे 'भाट्टो'।

भाट्टपदी, स स्त्री (स) भाट्टी, भाट्ट भाट्ट
पद, पूण्यम्।

भाज, स पु (स) प्रकाश, ज्योतिस् (न)
२ जल ३ आभास, प्रतीति (स्त्री)।

मानना, स पु, दे 'मान'।

मानजी, स स्त्री दे 'भाजो'।

मानमती, स स्त्री (स मानुमती) देन्द्र-
पालि, मयिनी।

—का पिढारा, म पु, विषमस्तुमग्रह ।
 भाना, कि अ, दे 'पमन्द जाना' ।
 भानु, म पु (स) रवि, मूर्ध्व २ निरण ।
 भानुजा, म स्त्री (म) यमुना, गान्दी,
 भानुवनया, भानुयुता ।
 भाप, म स्त्री (म वा(ता)प पम् ।
 —निरहना, कि अ, वा(ता)पावत (ना था)
 वाप उत्तिष् (तु प अ) उद्गृ (तु प से) ।
 —देना, कि स, वापण म्विर (त्रे) या पच्
 (भा प अ) ।
 —बनना या बनाना, उद्भापन, वापी,
 भवत-वर्णम् ।
 मामी, स स्त्री (स भानुवायां) अग्रतपस्वी
 २ भ्रातृ-जाया-पत्नी, प्रजावनी ३ जननी ।
 मामा, स स्त्री (म) पत्नी, भार्या २ नारी
 ३ कुशास्त्री ।
 मामिनी, स स्त्री (म) कोषनास्त्री २ नारी ।
 भार, म पु (सं) दे 'बोत' ।
 —बाह, स पु (म) भारिन्, भारिन्,
 भार-हर-हार, बाह(हि)क ।
 —डढाना, मुं, प्रह्व्यन्तं अगीकृ ।
 —उत्तरना, मुं, उत्तरदायित्व हा (तु प अ) ।
 भारम्, स पुं (म न) भारतवर्ष वं,
 म(भा)रतगण २ महाभारतग्रन्थ ।
 भारती, स स्त्री (म) गिर-वाच् (स्त्री),
 वाणी २ सरस्वती, शास्त्रा ३ वृत्तिभेद (मा) ।
 भारतीय, कि (म) भारत-देशीय-वर्णव ।
 स पु, भारतवासिन् ।
 भारी, कि (स रिन्) भारिन्, गुरु, दुर्बल,
 भारवत् २ करा, भीषण ३ मन्द, दुर्बल,
 विद्याल ४ अत्यन्त, अत्यधिक ५ अमध्य,
 दुर्मर, दुपर ६ प्रवृत्त ७ शन, म्फील ८ शीत,
 ग(ग)भीर ।
 —पन, स पु, भारवत्, गुरुत्वं, गरिष्ठता ।
 —भरकम, रि, अनि-वृत्, भारवत् ।
 पेर भारी होना, मु, गर्भे घृ (तु) ।
 भार्या, स स्त्री (म) दारा (पु वड),
 ३ 'पत्नी' ।
 भाल, मं पु (मं न) लम्ब, अलिक, गारि
 (पु स्त्री), निग(पि)न्, मूषन् (पु), मन्त,
 मस्त(मि)न्, मन्त्र ।
 —चद्र, —नेत्र, —लोचन, म. पुं (मं) छिन् ।

भाला, मं पु (म अन्न रन्) द 'वरण' ।
 —चरदार, म पुं (हि + फा) द 'वरण' ।
 भालू, म पु (स भालून्) भट्ट(ल्लु)न्,
 कष्ट, भल, दुर्भाव, दीर्घता, दुर्धर,
 भालून्, भालून् ।
 भाव, म पु (स) अस्तित्व, सत्ता, विष
 मानता २ मानम मना, विचार-वृत्ति (स्त्री),
 विचार ३ अभिप्राय, आशय ४ मुखादिनि
 (स्त्री) ५ जन्मन् (न) आत्मन् (पु)
 ७ पदार्थ ८ विद्मन् (पु) ९ जल
 १० हृत्प, विभूति (स्त्री) ११ संविषय,
 योग १२ प्रेमन् (पु न), अनुगम
 १३ समार १४ वचना १५ स्वभाव
 १६ गूढेष्टा १७ नीडीरीति (स्त्री)
 १८ दद्या १९ भावता २० विश्राम
 २१ प्रतिष्ठा २२ वस्तु, पुण धर्म २३ उद्देश्य
 २४ मूय, अर्थ, वस्तु, प्रवृत्त, अर्थमूल्य,
 प्रमाण २५ शब्दा, अस्ति (स्त्री) २६ स्वादि
 व्यभिचारिमास्तिर्भावा (काव्य), नादि
 कारिमानमविकारा २७ दाव, दे 'नगरा' ।
 —भाव, म पु, मूय, अर्थ ।
 —वाचक, म स्त्री (म वाचिन्) सदाभद्र
 (भा, उ श्रेयसा) ।
 —वाच्य, म पु (म न) वाच्यभेद (भा,
 उ ह्यत) ।
 —उत्तरना या गिरना, मु, अर्थ अपवि
 (वम), मूय हम् (भा प म), मदायने
 (ना था) ।
 —चडना या चडना, मु प्रमन् वृत् (भा
 आ म), अवश्य उत्पत्ति (वर्म) ।
 भावक, कि (म) उत्पन्न, मृत् २ वदना
 वाक् ३ उत्पन्न ४ वाच्यमिन् ।
 भावन, मं स्त्री (मं भवुवाया) द 'भावना'
 (२) ।
 भावना, कि (दि भावना = अस्मा ज्ञाना)
 विष, स्थित, रात्रि । म पु, वन्म विष
 नम, प्रमयावत् ।
 भावन, रि (म) वन्म, प्रमाण १ म
 पु (म) निविद्यारम्य २ मृत् ३
 शिव । (म न) वन्मन् २ विवनर
 ३ वचना ४ अनिभवना ।
 भावना, म स्त्री (मं) ध्यान, विना, विमन,

विचर २ कामना, वासना, इच्छा ३ स्मृत्यनुभवश्चित्तस्कारभेद ४ सामान्य, विचार-वर्त्यना ५ दे 'पुट' (वैचक) । वि, दोहन, प्रिय, रोचक । किं अ, दे 'पसद आना' ।

भावनीय, वि (म) चिन्तनीय, वर्त्यनीय । भावाभाव, स पु [स-वौ (हिं)] अन्विता नन्वित्वे (न) २ उत्पत्तिविनाशी ३ जन्म श्रृत् (सर्व हि) ।

भावार्थ, स पु (स) तात्पर्यार्थ, आशय, तात्पर्य, भाव १ भावप्रधानटीका ।

भावित, वि (स) विचारित, चिन्तित ।

भावी, वि (सं विन्) दे 'भविष्य' (वि) । ॥ स्त्री, दे 'भविष्य' स पु २ दे भविष्यता ।

भावुक, वि (सं) रसिक, सरस, रमभूषिष्ठ, भावप्रधान २ चिन्तक, विचारक ।

भाष्य, वि (स) भवितव्य, अवश्यभाविन् ।

भाषण, स पु (स न) कथन, बचन, उक्ति (स्त्री) १ व्याख्यान, प्रवचन, उपदेश ।

भाषातर, स पु (स न) अनुवाद ।

—कार, स पु (स) अनुवादक ।

भाषा, स स्त्री (स) वागी, वाच् मिर् (स्त्री), भारती, गिरा, उदीरणा २ हिन्दीभाषा ३ वचस् (न), वचन, वाक्य, उक्ति (स्त्री), व्याहार, निगद, शब्द, भाषित, अलप ४ सरस्वती ५ अभियोगपत्र (अर्जीदावा) ।

भाषित, वि (स) कथित, उक्त, उदीरित । स पु (म न) कथन, वागालाप ।

भाषी, म पु (स पिन्), वादिन्, वन्दु ।

भाष्य, स पु (सं न) टीका, व्याख्या, वृत्ति (स्त्री) विवरणम् ।

—कार, म पु (स) टीका-भाष्य-व्याख्या, याग कुट्ट (पुं) २ महामाध्यकार, पत्रालि, गोनदीय ।

भाम, म पु (स) संस्कृतभाषाया महकवि विशेष २ वर्णन-दासि (स्त्री) ३ वर्त्यना ४ गोष्ठ उम् ५ कुक्कुट ६ गृष्ट ७ पक्षिन् । भामना, किं अ (स भासन) भाम्प्रकाश (भा आ से) २ प्रति ३ (कर्म) ३ दृश (वर्त्त) ।

भासुर, वि (स) दे 'भास्वर' ।

भास्वर, स पु (स) ध्वं २ अग्नि, (स न) नुवर्ण ३ ज्योतिषग्रन्थकारो भास्कराचार्य ।

भास्वर, वि (म) धुनिकानि दीप्ति, मन्त्र, उज्ज्वल, भासुर, देदीप्यमान, भाजमान ।

भिडी, म स्त्री (स भिटा) भिन् भिन् २, सुशाक, करपणं, वृत्तबीज, चतुर्पुर ।

भिक्षा, म स्त्री (म) याचना, याचना, अर्चना, २ भिक्षान्न ३ मध्य, दानम् ।

—पात्र, स पु (म न) भिक्षु-दान, यात्र माजनाम् ।

भिक्षु, म पु (म) परित्राज, परित्राजक, श्रवक, (बौद्ध) सन्त्यामिन्, मत्सरिन्, प(पा) राशरिन् २ दे 'भिखारी' ।

भिक्षुक, स पु, (स) दे 'भिखारी' ।

भिखमंगा, स पु दे 'भिखारी' ।

भिखारिन्, स स्त्री (हि भिखारी) भिक्षुकी, भिक्षाकी, भिक्षाचरी ।

भिखारी, स पु (हि भीख) भिक्षु, भिक्षुक, भिक्षाक, भिक्षाचर, भिक्षारिन्, मार्गण, याचक, याचनक, वनीयक, अधिग ।

भिगोना, किं स (हि भीगना) विनद (प्रे), उद (व प से), आद्रीक ।

भिगवाना, किं प्रे, व 'भेनना' ॥ प्रे रूप ।

भिदनी, स स्त्री (देश) स्तनाग्र, चूचुकम् ।

भिद, स स्त्री (हि बरें) वरट-दाटी, इना चिवा, गधोली, गृहकारिका ।

भिदना, किं अ (चतु भद?) सपट्ट (भा आ से) सपट्ट-सहन् (कम) उप, या (अ प ज), समिल (हु प मे) ३ कलहायते (ना धा), युष (दि आ अ) ।

भिदना, किं स, व 'भिदना' ने प्रे रूप ।

भितल्ला, स पु (हि भीतर-तल) दे 'अस्तर' । वि आन्तर, आभ्यन्तर, दे 'भीतरी' ।

भितल्ली, स स्त्री, (हि भितला) वेष्टया अथस्थ पाषाण ।

भित्त, म पु (स न) भग्न, अश २ सग्न ३, शकल-जम् ३ दे 'भित्ति' ।

भित्ति, स स्त्री (म) कुड्य, कूड्य, कुड्यक, भित्तिका २ भित्ति-गृह, मूलम् ३ विवाधार ४ छेद, भेद ५ सण्ट शक ६ भग्न वस्तु (न) ६ क, किलन, रुगपूनी ७ दोष ८ अवसर ।

भिदना, किं अ (स भिद) विध्व-वध् (कर्म), छिद्रित (वि) भू २ आहन्त्रण (कर्म) ।

भिनकना, } कि अ (अनु भिनभिन्)भिष
भिनभिन्नाना, } भिषायेनेना भा), भिषभिन्,
रणिन निनद नन् (मे) ।

भिनभिन्नाहट, म स्त्री (हि भिनभिन्नाना)
भिषभिन्नायित, भिषभिन्, रणिन निनद,
यकार, सुचनम् ।

भिन्न, वि (स) असरुद्ध, अलम्ब, पृथग्भूत,
विद्विष्ट २ अन्य, इतर, अपर । स पु (स
न) अपूर्णा, राशि, भाग ।

—भिन्न, वि, अनेक, विभिन्न २ नि-नन्ता, विच ।

भिन्नता, म स्त्री (स) भिन्नत्व, पृथक्त्व,
भेद, अंतरम् ।

भिलावा, म पु (म भिलावक) भद्रान,
शोषहृद (पु), वीर, नर वृक्ष, कुमिन,
भूतनाशन, स्फोटवीजक, जगहृद (पु) ।

भी, अन्व (स अपि) च, अपि च २ अवश्य
३ अधिकम् ।

भीष, स स्त्री (म भिक्षा) दे 'भिक्षा' (१३) ।

—भागना, कि म, भिक्षु (स्वा आ से),
भिक्षा दात्र (स्वा आ से) ।

भीगी(ज)ना, कि अ (म अभ्यजन) >
किन्त्री-आद्री भू, उद (वर्म उचते), सिल
(दि प वे) ।

भीगी विल्ली होना, मु, भयात् लूणी रथा
(स्वा प अ) ।

भीड, स स्त्री (हि भिन्ना) जन, समुदाय
मरुद्-ओप-मधूद २ आ द निपद (स्त्री) ।

—भडका, स पु } समहार जनममद

—भाड, म स्त्री } ६ ।

भीत, वि (स) भयात्, डल, मभव ।

भीड की भीत ज्यों कल की भीत, पु,

* छुटताय दि नथरम् ।

भीत, म स्त्री, दे 'भिति' ।

भीतर, कि वि (म अभ्यतरे) जन, र्भो,
नरे, दे 'अदर' । ॥ पु, हृदय, मानस,

अन ररण २ अन पुर, अदोष ।

भीतरी, वि (हि भीतर) आंतर प्रत्ययर
[नी (स्त्री)], अन्तर, अन्तरय, अन्तर्भव
२ गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न ।

भीति, स स्त्री (म) दे 'भय' ।

भीम, म. पु (स) बुविष्ठिरानु, भीममेन,

वृहोदर । वि, दे भयकर २ समहृद, अति
विशाल ।

—के हाथी, मु, अप्रत्यागमि अप्रत्यागर्त,
पदार्थ ।

भीरु, वि (स) कानर, धम्नु, भयशील,
भार (उ)क ।

भीरता, स स्त्री (म) कानर्य, कापुण्यत्व,
करीबा, वस्तुना ।

भील, स पु (स भिल) स्नेहटत्राविशिष्ट ।

भीलना, म स्त्री (हि भील) निद्रा,
भिल्लनारी ।

भीषण, वि (म) दे 'भयकर' ।

भीषणता, म स्त्री (म) दे 'भयकरता' ।

भीष्म, स पु (स) गायेय, देवजन, शान्त
पुत्र २ शिव । वि, दे 'भयकर' ।

भुक्त्वद्, वि (हि भूत) दुग्धिन, दुग्धार्त
२ औदरिक, बहुभोविन् अपर, वस्तर,
अत्याहारन् २ दद्रिद्र, दीन ।

भुक्त, (॥) भक्षित, जघ २ उपभुक्त,
भ्यवहृत ।

—शेष, वि (म) उच्छिष्ट, जुष्ट ।

भुक्ते, म स्त्री (स) भोजन, आहार, अन्न
२ विषयोपभोग, लोकिष्ट-मुल्ल ।

भुक्त्वमरा, वि (हि भूस्व-मरता) दे 'भुक्त्वद्'
(२, ३) ।

भुगतना, कि म (स भुक्त) > उप, मुत्
(ह आ अ), अनुभू, प्राप (स्वा प अ)
२ उपसह (स्वा आ से), मृष्ट (दि
प म, तु) ३ (अनादिक) शुष (दि
प अ), अपाठ (कर्म) । कि अ, मनाप
(कर्म), पूर (घर्म), निवृत्त (स्वा आ
से) अकर्मो (दन्) ।

भुगनान, म पु (हि भुगनना) निवृत्ति
समाप्ति निदि पून (स्त्री) २ (अनादि
वस्तु) निम्नार, परिनुद्धि, अपनयनम् ।

भुगताना, कि प्रे व 'भुगताना' कि स के
प्रे रूप ।

भुगा, वि मृत्, जड, अद, निनुद्धि ।

भुग्न, वि (म) अराज, निद्रा, वन, नुम्न,
अ न (ना) भिन ।

भुच्च, भुच्चद्, वि (म भूत + हि नदना)
जड, अद, मृग, जटमनि ।

भुजंग, } स पु (स) दे 'सर्प' ।
 भुजगम }
 भुजगी गिनी, म स्त्री, दे 'सर्पणी' ।
 भुज, म पु (स) भुजा, बाहु, दोरद
 २ (ज्योमैट्री में) भुज, बाहु, पार्श्व ।
 —डड, म पु (म) दोर-बाहु-डड ।
 —पाज, म पु (म) अङ्गिगन, परिबन्ध ।
 —खन्, म पु, अगद, केयूर, बाहुवल्ग्य ।
 —मूल, म पु (स न) कक्षा, दोर्मूल, खडिक ।
 भुजना, स पु (हि भूजना) *भूटानम् ।
 भुजा, स स्त्री (म) दे 'भुज' ।
 भुजिया, म स्त्री (हि भूजना) *भोज्या
 गृष्ट्युक्त शाक शिष्ट । स पु क्वथितधान्य
 * क्वथितधान्यतडुल ।

भुहा, म पु (स भू>) मकायकणिशम् ।
 भुनना, म पु दे 'भूत' (७-९) ।
 भुनगा, स पु (अनु) (१२) जी
 पन, भेद ।
 भुनगा, कि अ, व 'भूना' के कर्म रूप
 * व 'भुजना' के कर्म रूप ।
 भुनभुनाना, कि अ (अनु) भुगभुगवते
 (या था) अव्यक्त वच (अ प अ) ।
 भुनवाना, कि प्रे, व 'भूना' के प्रे रूप ।
 २ व 'भुनाना' के प्रे रूप ।
 भुनाई, म स्त्री (हि भूना) वर्जन,
 भूति भाति (दोनों स्त्री) ।

भुनाई, स स्त्री (हि भुनाना) नाणकवि
 निमग्नाति भूति (दोनों स्त्री) ।
 भुनाना, कि प्रे व 'भूना' के प्रे रूप ।
 भुनाना, कि म (सं भजन) अस्त्रनाप
 केभ्य बृहन्नापकानि प्रतिश (जु उ अ)
 नापानि*भन*भु (प्रे) नापानि विनि
 मे (म्वा आ अ) ।

भुरदम्, स पु (अनु भुर>) *चूर्ण, शोध ।
 —निराहना, मु, निर्दय तड् (जु) २ नश
 घम (प्रे) ।

भुरता, म पु (अनु भुर>) दे 'भरता'
 २ चूर्ण विरुत, पदार्थ ।

—भरना, मु, आपटा चूर्ण (जु) भि
 (र प अ) ।

भुरभुरा, वि (अनु) मिदुर, मयुर, सुमय
 २ बाहुकानिम ।

भुलबड, वि (हि भूल्ना) विस्मरणशील,
 मज्जन्, स्मृति २ प्रमादिन, प्रमत्त ।

भुलाना, वि प्र व 'भूल्ना' के प्रे रूप ।

भुलाना, म पु (हि भुलाना) प्र, वचना,
 प्रवरणा, लम् ।

—देना, वि स, प्रवृ (प्रे), वच (जु) ।

भुल, अय (म) आराग्य श, आरिष्ट
 लोह दिव्यलौह २ द्वितीयमहाव्या
 इनि (स्वा) ।

भुवन, स पु (म न) नग्न (न), नगनी,
 सृष्टि (स्त्री), समार २ जल इ जन,
 लोह ४ चतुर्दश-भुवनानि (न बहु)
 लोहा ।

त्रि—, म पु (स न) त्रिलोरी, लोकत्रयम् ।

भुशुडि, स पु (म) वारुभुशुडि । (म
 स्त्री) भुशुडी, अक्षभेद ।

भुस, म पु, दे 'भूसा' ।

भुसी, म स्त्री, दे 'भूमी' ।

भूकना, कि अ (अनु) दे 'भौकना' (१२) ।

भूचाल, (स भूचाल) मही, भूकप प्रकप
 चालन, धमायिनम् ।

भूप्रना, कि स, दे 'भूना' (१२) ।

भूडोल, स पु दे 'भूचाल' ।

भू, म स्त्री (स) धरणी, धरा, दे 'पृथिवी'
 २ स्थान, स्थलम् ।

—कप, स पु (म) दे 'भूचाल' ।

—चाल, } दे 'भूचाल' ।
 —डोल, }

—तल, स पु (म न) धरातल
 २ पृथिवी ।

भूख, स स्त्री (म भुभुडा) भुधा, भुध (स्त्री),
 निपत्ता, अदनाया, अदनायित २ आवश्य
 कता इ अभिलाष ।

—का अभाव, स पु, अरवि (स्त्री),
 भक्त उपरान द्वेष ।

—प्यास, सं स्त्री, भुधापिधाने, भुतृषे ।

भूगो मरना, मु, आहाराभावात् मृ (ह आ
 अ) अवमद् (स्वा प अ) नश
 (दि प वे) ।

—लगाना, कि अ, भुध् (दि प अ,
 चतुर्थी के साथ), भुज (सत्रन, उभुश्रुति ने)
 भुधया अर्द्ध-पीड (कर्म) ।

भूया, वि (हि भूय) क्षुधा आविष्ट
आतुर प्रातः अविनशील, क्षुधित, विषम,
धुमुधु, अत्राधिन् अदनायित २ इच्छुन्
३ ददित् ।

—नगा, वि दीन, ददित् निषण अर्चिन ।

—प्यासा, वि क्षुपिपामित क्षुत्प्राप्त ।

भूखे प्यासे, सु अनिरज्जान अन्नवान
विना ।

भूगर्भ, स पु (म) धरा अन्तर अग्न्यन्तर-गम ।

—गृह, स पु (म न) भू-गृह गृहम् ।

—शास्त्र, स पु (म न) भूतत्त्व शास्त्र विद्या
विज्ञानम् ।

—शास्त्रवेत्ता, स पु (स-न्) भू-वेत्ता,
भूगर्भशास्त्रम् ।

भूगोल, स पु (स) भूमण्डल भुवनकोष
२ भूगोल, विद्या शास्त्र, भूगुणविद्या ।

—वेत्ता, स पु (स-न्) भूगोलशास्त्रम् ।

भूचक्र, स पु (म न) पृथ्वीपरिधि
२ विपुलरेखः ३ अवनवृत्त ४ त्रानिवृत्तम् ।

भूचर, स पु (म) स्थलचर २ शिब ।

भूत, स पु (स न) पृथ्व्यप्तेजोवाय्वायाना
पचक २ जटवेतनपदाथ, चराचरवस्तु (न)
३ प्राणिन्, जीव ४ भूत-अतीत, काल ५
शिव ६ नियाहपभेद (स्वा) ७ रत्नानु
चरा पिशाचा ८ मृतस्य आत्मन् (पु)
९ पिशाच, प्रेत रक्षम् (न) राक्षस ।
वि (म) गत, वि, अतीत २ युक्त ३ मृदा
४ परिणत (मव प्रायः समाप्तम् मे) ।

—उत्तरना क्रि ग, भूतात् निष्पन्न (प्रे)
अपतुन् (तु प अ) अपतु (प्रे) ।

—काल, स पु (स) पूर्वभूत अतीत काल
ममय ।

—नाथ, } स पु (म) शिव ।

—आवन, } स पु (म) शिव ।

—पूर्व, वि (म) प्रातन पूर्वान, पौत्रम् ।

—संचार, स पु (म) भूतवेश ।

—चन्दना या मन्त्रा होना, सु, अग्निर्ब्रह्म
अवस्था (स्वा उ अ) २ अथर्षं दुपू
(दि प मे) ।

भूतपदविद्या, स स्त्री (स) दे 'भूगमावषा' ।

भूतात्मा, स पु (म-म्) जीवात्मन्,

देहिन् २ जगिर २ परमेश्वर ४ विष्णु
५ शिव ।

भूतानुरूप, स स्त्री (म) जीवभूतप्रणि,
दवा रूपा अनुसम्भा ।

भूताविष्ट, वि (स) पिशाचभूत, अत्र
पीडित-आक्रान्त ।

भूतावेश, स पु (म) भूत-संचार काल
(स्त्री), पिशाचावेश ।

भूनि(त)नी, स स्त्री (हि भूत) शक्तिनी,
रात्रिनी, राक्षसी, पिशाची चिका ।

भूदेव, स पु (स) मातृगण भूदेव ।

भूधर, स पु (स) गिरि, पर्वत ।

भूतना, क्रि स (स भर्त्तन >) भून् (स्वा
आ मे), अत्र (तु उ अ), ईषत्पान
प्लुच (स्वा प से) शुष (प्रे) ।

भूप, स पु (म) भूपति, भूपाल, नृप,
राजन् (पु) ।

भूपति, } स पु (स) नृप, दे 'राजा' ।
भूपाल, }

भूभल, स स्त्री (स भू + हि बलता)
उष्ण, अमृत भस्मन् (न) बाहुय ।

भूमण्डल, स पु (स न) पृथिवी, धरा,
परिनी ।

भूमिका, स स्त्री (म) प्रस्तावना उपोद्घात,
अवनरणिका, आमुख, मुखवध २ वैद्यनर
परिग्रह ।

भूमि, स स्त्री (स) धरा, परिश्री, दे-
'पृथिवी' ।

—र, वि (म) भूमितान ।

—रा, स स्त्री (म) चान्द्री, मीना ।

—पुत्र, स पु (म) मगलप्रद, भुम्प ।

—सुता, स स्त्री (म) मीना वेष्टी ।

भूय, ३-व्य (म भूयम्) पुन, पुनरति ।

भूत, वि (म बभू) भून् मृद, वारग
२ वणिञ्च, विव, विगन् । म प १-२
वन्नपिण्य-वर्ग-रग ३ शरा, विता ।

भूरि, वि (म) अरिह, बहु प्रचुर २ मन्त्र,
जुम् ।

भूत्, स स्त्री (हि भूत्ता) रिमग्गं रिमग्गि
(स्त्री) २ दाव अयराथ ३ अनुदि
(स्त्री), स्थानि एयन्नं २ मोद, अन्न ।

—चूक, स स्त्री, प्रवाद, अपराध, त्रुटि (स्त्री), स्तम्भितम् ।

—भुलैया, स स्त्री, तुल्यहनस्थान, आनिचक्र २ सहाय-मदद, आस्तरनम् ।

भूलना, क्रि स (प्रा मुद्ध) विस्मृ (भ्वा प अ) २ स्मृल् (भ्वा प से), प्रमद (दि प मे) ३ त्वन (भ्वा प अ), हा (तु प अ) । क्रि अ, विस्मृ (कर्म) २ भ्रश-नर् (दि प से), च्नु (भ्वा आ अ) ३ त्विन अवलित (वि) भू ४ क्त् (भ्वा आ ने), स्निह् (दि प से, सप्तमी के साथ) । स पुं, विस्मरण, विस्मृति (स्त्री) २ प्रमाद, स्तम्भित ३ भ्रश, नाश ।

भूलने योग्य, वि, विस्मर्तव्य, विस्मरणीय ।

भूलनेवाला, स पु, दे 'भुल-बुल' ।

भूला भटका, वि, पथ-भ्रम, भ्रष्ट ।

भूला हुआ, वि, विस्मृत, स्मृतिपथ-अपेक्षित ।

भूलोक, स पु (स) मर्त्यलोक, भूनि (स्त्री) ।

भूलायी, वि (स-यिन्) भ्रातायिन्, भृत्य, २ भूमिपूजन ३ भूगोपनि ।

भूपण, स पु (स न.) आभरण, अलङ्कार, अ-वि, भूषण, दे 'रहना' ।

भूपणीय, वि (म) भूष्य, अलङ्कार्य, मङ्गीय ।

भूपा, स स्त्री (स) अन्क्रिया, परिष्कार क्रिया, प्रमाणन, नेरखन ।

भूपित, वि (म) अलङ्कृत, परिष्कृत, प्रमाणित, मङ्गीत ।

भूसा, स पु (म हुम) पाल २, यवन, धान्यतुल्य, पत् ।

भूमी, स स्त्री (दि भूमा) दे 'भूना' २ भुष, हुम, तुप-म, कृत्, धन्मत्वच (स्त्री) ।

भूसुरा, स पु (म) मित्र, ब्रह्मा ।

भृग, स पु (स) भ्रमर, पश्य २ कीर्षेद ।

—रात्र, स पुं (स) पक्षिभेद २ देशजन, देश, दुर्ग-बदन, क्षुण्णेद ।

भृङ्ग, स स्त्री (म) दे 'भा' ।

भृगु, स पु (म) मुनिविशेष २ पशुपति ।

—नाथ, स पु (स) परशुराम भृङ्गनाथ ।

भृत्, वि (स) पूरित, पूर, निविज २ पत्ति, पोषित ।

भृत्क, स पु (स) वैयक्तिक, कर्मकर ।

भृत्कृष्यापक, स पु (म) सवेनन शिपूक ।

भृति, स स्त्री (स) वेतन, भृत्या २ कर्म-या,

तुलिका, मरण, अन्धत्वा ३ मूल्य ४ पूरण,

मरण ५ पालन ६ वैयक्तिकता ।

भृत्य, स पु (स) सेवक, दे 'नौकर' ।

भृत्या, स स्त्री (स) सेविका, दामी २ दे 'भूति' ।

भृश, क्रि वि (म भृश) अत्यन्त, अत्यधिकम् ।

भेगा, वि (दिश) केकर, केदर, दे, गार, बन्धित ।

—पत्, स पु, निर्गच्छति (स्त्री), देना ३ ।

भेड, स स्त्री (स भिद्) स(समा)गम,

समिलन, साश्चर्यकर २ उपहार, उपायन,

प्राभृत-नक, प्रदेशनम् ।

—करना, क्रि स, सनिष् (तु प से),

अभि-स-मुलीभू, सह (अ प अ)

२ उत्तुज (तु प अ), उपहृ (भ्वा प अ),

उददीक (प्रे), कृ (प्रे अर्पयति) ।

भेक, स पु (स) दे 'भेडक' ।

भेख, स पु दे 'वेख' ।

भेजना, क्रि स (ग ब्रजन) रा, प्रेष (प्रे),

प्रहि (त्वा प अ), प्रस्था (प्रे), विस्मृ

(तु प अ), स, प्रेर (प्रे) । स पु, स,

प्रेषय प्रेषण, विमर्जन, प्रस्थापन, प्रहिनि (स्त्री) ।

भेजने योग्य, वि, प्रेषयितव्य, प्रस्थाप्य, प्रह

यणीय ।

भेजनेवाला, स पु, प्रेषक, प्रदेष्टु ।

भेजा हुआ, वि, प्रेषित, विस्मृत, प्रहित ।

भे(सि)गवाना, क्रि प्रे, व 'भेजना' क प्रे

रूप ।

भेजा, स पु (देश) दे 'ना' ।

भेड, स स्त्री (स भेक्) भेरी, पन्ना,

अविज, उरपी, उरा, कुररी जागिनी, अवि

(स्त्री), रखा (पु, दे 'भेज') २ नृ,

मूढधी, चञ्चु ।

भेडना, क्रि स, दे 'दद करना' ।

भेडा, स पु (म भेड) अवि, उरा, उरप्र,

कांठ, पंख, मू, हु, रो(लो)मय,

भेड, भेडक ।

भेडिया, स पु (दि भेड) वृक्ष, कोक,

इहामृग ।

—घमान, स पु, अध, अनुकरा-अनुसर

अनुवर्तनम् ।

भेदी, म स्त्री, दे 'भेद' ।

भेद, म पु (म) छेद दे 'भेदन' २ शत्रु
वशीकरणोपायभेद, उपनाथ ३ रहस्य,
गूढाचार्य ४ अन्तर, विशेष ५ प्रकार, गति
(स्त्री) ।

—खोलना, क्रि स, रहस्य विष्ट (स्वा उ मे) ।

—पाना, क्रि स, गुह्य बुध (म्वा प से) ।

—बुद्धि, म स्त्री (स) विद्वलेष, विच्छेद,
पञ्चाभाष ।

—भाष, स पु (स) अन्तर, विशेष ।

—लेना, क्रि स, गोप्य छा (मन्नन जिज्ञास्ते) ।

भेदक, वि (म) भेत्तु छेत्तु २ रेचक ।

भेदन, स पु (स न) विदारण, वेदन,
बैषण व्यथ भन, श्रोतनम् । वि, भेदक
२ रेचक ।

भेदिया, { स पु (सं भेद >) दे 'जासूस'
भेदी, १ } २ रहस्यविद (पु) ।

भेदी, वि (स भेदित्) छेदक, विदारक ।

भेद्य, वि (म) छेद्य, विदारणीय ।

—रोग, स पु (स) शल्यचिकित्स्यो रोग ।

भेरी, म स्त्री (स) भेरि (स्त्री), डुपुमि,
मिटिम, पन्हु, टका ।

भेली, सं स्त्री (देश) गुह्यपिट-शब्द ।

भेष, म पु, दे 'वेष' ।

भेषन, स पु (म न) औषध, अण्ड,
भेषज्यम् ।

भेष, स पु, दे 'वेष' ।

भेष, म स्त्री (स महिषी) मदनमना, महा
धीरा परस्विनी वस्तुषा ।

भेसा, म पु (स महिष) अश्वारि वस्तुष,
कासर कृष्णश्व, गद्गदस्वर, नरर) १,
यमरथ कुलाप (य), वीरत्वध, सैरिम,
हेरन ।

भेसा, स पु, दे 'भास' ।

भैरव, म पु (स) शक्र, शिव २ शिवगण
न्द ३ रागभेद । वि, भीम, भीषण,
मयङ्कर ।

भैरवी, स स्त्री (स) चातुटा, देवीविशेष
२ रागिणीभेद ।

भैरो, म पु, दे 'भैरव' ।

भौकना, क्रि स (अनु भू) सहसा शस्त्रा
निक निरिष (मे), व्यथ (दि प अ)
२ अनन्मात्र आहन् (अ प अ) ।

भौडा, वि, दे 'भू' ।

भौदू, वि दे, वृष्टि ।

भोपा, म पु (अनु भो) दे 'भोष' २
मृत, अण्ड ।

भोषू, म पु (अनु भो) कटल-रुला, सुप्त-
बाधभेद ।

भो, अ० (स) हे, और, अवि ।

भोक्तव्य, वि (स) दे० 'भोग्य' ।

भोक्षा, वि (स भोक्तृ) खादक, भक्षण
२ विलासित्, विपथित् ३ प्र-उप-भोक्तृ ।
स पु, पनि ।

भोग, स पु (स) सुख दुःखादीनामनुभव
२ सुख ३ दुःख ४ रति (स्त्री), समोग
५ सपत्न्य गणा ६ सप ७ धन ८ गृह
९ भक्षण १० शरीर ११ परिमाण १२
विपाक, कमण्ड १३ भुक्ति (स्त्री) (कण्ठा)
१४ नैवेद्य १५ भाटक कम् ।

—लगाना, क्रि स, देहाय नैवेद्य ऋ (प्रे
अर्पयति) २ भक्ष (तु) ।

—विलास, स पु (स) आनन्दप्रमोदा (पु
वहु), सुप्त हर्ष ।

भोगना, क्रि म (स भोग >) दे 'भुगना'
(१२) ।

भोगी, वि (संविन्) भोग-विषय, आनन्द-
लपट, विन्यामिन् २ भक्षक ।

भोग्य, वि (स) उपयोक्तव्य, उपयोगिन्
२ भोग्याह, उपभोक्तव्य ३ भक्ष्य । सं पु
(स न) धन २ धान्यम् ।

भोज, ॥ पु (स) भारतनगरस्थ मृगविशेष ।

भोज, म पु (॥ भोजन) भक्ष्य, आहार
२ सहज, भोजन संधि (स्त्री) ।

भोजन, स पु (स न) भक्षण, ध्यान,
अज्ञान, आश्वासन २ गार्ध, भोज्य, भक्ष्यम् ।

—करना, क्रि म, भुज (रु आ अ),
भञ्ज (तु) ।

—भट्ट, सं पु (स भोजनभट्ट) अत्याहारिन्,
अधर, धर्मर ।

—दाता, म स्त्री (मं) भोजन भाल्य
आहार (र) २ पावशाला महानम-मम् ।

भोजनाच्छादन, स पु (स न) अन्नवस्त्र,
अदानवसनम् ।

भोजपत्र, सं पु (सं) भूयंभूय, बहुलवन्द्य,
छत्रपत्र, वृद्ध, वृद्ध-त्वच् (पुं) ।

भोज्य, वि (म) भक्ष्य, खाद्य, भक्ष्यवहायं ।
म पु, भक्ष्यवहायं ।

भोर, स पु (स विभावरी) उपा, उपम
(स्त्री) विप्र, भान, विहान-जम् ।

मोला, वि (हि मूलना) सरल, ऋजु, निष्क
पट, निरदल २ मूलं, जड ।

—नाथ, स पु (दि + स) शिव ।

—पन, स पु आनव, सरलता, निर्व्यावृता
२ मोक्षार्थ, अक्षता ।

—भाला, वि, निष्कपट, सरल, ऋजु ।

भौ, स स्त्री, दे 'भौह' ।

भौकना, क्रि अ (अनु भौं भौं) दुक्क
(स्वा प से, बु), मप् (स्वा प से)
२ प्र, बल् (स्वा प से) । स पु, दुक्कन,
भयण २ नश्य पनम् ।

भौमुवा, (हि भौना=भूमना) तैलिक-तैलधार,
वृष वृषम । २ कौटभेद १ हन्तरोभेद ।

भौर, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर' २ नन्वा
वर्ग, भ्रमि (स्त्री) ।

भौरा, स पु (स भ्रमर) दे 'भ्रमर'
२ भ्रमरत-क, कौटभेद १ भू, नोह
गुम् ।

भौरा, म स्त्री (म भ्रमरी) वृषरी, मधुरी
२ घोटगदिशरीरत्वं रोम, चक्र-मडल-वतुन
३ वैवाहित, परिश्रम प्रदक्षिणा ४ आवर्त,
नलगुम् ।

भौह, स स्त्री [स भ्र (स्त्री)] विह्विक,
झुलना, नयनोद्वर्धनं रोमरागी ।

—चक्राना या तानना, दु, कुप (दि प से),
कुष (दि प अ) २ मू (भ्रू) कुटी बध्
(क्त प अ) -रच् (बु) ।

भौमोलिक, वि (स) भूगोल, विषयक सम्ब
न्धिन् ।

भौचक्र, भौचक्रा, वि (म भवचरित्) >
विरनवापन, विरिमत, मग्नाध्यम, मयाभिभूत,
रुमित ।

भौनाई, भौजी, स स्त्री (म भ्रातृनया)
दे 'भानी' (२) ।

भौत, वि (स) भौतिक, भूतनिर्माण २ पेशा
विन ३ भूताविष्ट । (स पु) मूढगुण
२ भूतवश ।

भौतिक, वि (म) भूतत्वस्य, भूतमय, आपि

पाच, भौतिक २ पार्थिव ३ शारीरिक, दैहिक,
दैव ।

भौम, वि (सं) पार्थिव, भौमिक २ भूमिन् ।
स पु, मगलप्रद, कुज ।

—वार, स पु (म) मंगलवासर ।

भौमिक, वि, दे 'भौम' वि । स पु, क्षेत्र,
पति-स्वामिन् ।

भौमी, म स्त्री (स) जानरी, सीता, वैदेही ।

भ्रश, स पु (म) अध अव, पतन पान
२ वि, नाश = ध्वंस ३ पलायनम् ।

भ्रशित, वि (स) अव पातिन २ वचित ।

भ्रम, स पु (स) भ्रान्ति (स्त्री), माता,
मिथ्या, मति (स्त्री) ज्ञान, आभाम, अविद्या
२ सन्तप्य सदेह ३ मूढप्रभेद ४ मूढार्थ
५ कुलान्त-वक्र ६ भ्रमण ७ भ्रमद्वस्तु (न) ।

भ्रमण, स पु (स न) पर्यटन, विचरण,
परिभ्रमण २ गतागत ३ यात्रा ।

—करना, क्रि अ, पयद विचर (स्वा प से),
परिक्रम (स्वा दि प से) ।

भ्रमात्मक, वि (म) भ्रमोत्पादक २ सद्विषय ।

भ्रमर, म पु (स) पटपद, दिरेण, मधु,
कर प-रिङ् (पु), अञि, अलिप्त, मृग,
शिर्षामुख, पुष्पवय, चञ्चरीक २ कासुक ।

भ्रमरी, म स्त्री (स) पटपदी, मधुरी,
शिर्षामुखी ३ जलकलना, पुनरावृत्ति ३ पावती
४ स्त्रीरोग, भ्रामरम् ।

भ्रमो, वि (स-मिन्) भ्रान्ति, भ्रमविशिष्ट,
मिथ्याज्ञानिन् २ चरित, विस्मित ३ शका
शील, माशक ।

भ्रष्ट, वि (स) अध-अव, मयित, अव, गलित
सस्त, भ्रुत २ विहृत, क्षुण्ण, सदाव ३ दुर्बल,
दुराचारिन् ।

—करना, क्रि स, भ्रष्ट-दुष्-आधुम् (प्रे)
भ्रु (प्रे) २ सतात्व नष्ट (प्रे) ३ मलिनो
कनुषीक ।

—होना, क्रि अ, भ्रष्ट (दि प से), भ्रष्ट
(स्वा वा मे) २ दुष् (दि प अ),
विकार आपद् (दि वा अ) ३ मलिनो
कनुषीक ४ क्षीणवृत्त (वि) मू ।

भ्रष्टा, स स्त्री (स) कुलटा, पुष्पनी ।

भ्रातृ, वि (म) भ्राता भ्रतृ, निशिष्ट
२ भ्रातृन्, विहृत ३ उन्मत्त ४ पथभ्रष्ट
५ नाशित, चक्रव्य बाहिन ।

म

म, देवनागरीवर्णमाला पदविशेष व्यञ्जनवर्ण,
मकार ।

मगता, म पु (हि माता) दे 'नितरी' ।

मगन, } म स्त्री (हि माता) बन्धन,
मगनी, }

विवहमनिष्ठा । २ पाप्मा, पावन-मा ।

मगल, स पु (म न) बन्धा, कुम्भ, मद्र,

हित, धेन, मध्य, म्र, दत्त, अरिष्ट, दिव, मद्र

३ कभीमिति (स्त्री) ३ महविर्देव, कुम्भ,

मौन, मारक, मरुचुड, बक्र, लोहिणा,

मबनेम ४ मालवर्ह । वि, (म) शुन,

मि, मद्र, मालव, दिव-शुभ, मर, मालिक ।

—काम, वि (म) शुभ-हित-मात, चिन्तक-

इच्छुव-कानिद् ।

—कामना, म स्त्री (सं) हित-चिन्तन,

शुन, इच्छा-कामना ।

—कारक, वि (म) बन्धा-म, कालि

मद्र दे 'म' वि ।

—कौम, स पु (स न) दत्त-वेचित

वीर-देवकम् ।

—मान, म पु (म) मगल-शुभ, चीन

मि (स्त्री) मानम् ।

—धार, म पु (सं) माल-मौन, वस्त्र ।

—सूत्र, म पु (म) हृदिदार-विनैव-हिक

मनम् ।

मालाचार, स पु (म न) प्रम-पारम्भे

कल्याण-मार्गम् ।

मालाचार, म पु (स) मालिक, जम्बर

कृत २ आदर्श-वत् ३ स्तव ।

मालामुखी, म स्त्री (स) दे 'वेष्टा' ।

माला, वि (मं माला) अना-मित्र, बन्धा-

वर (एवम्-मित्र) ।

मैत्रवाना, वि, प्रे, व 'मौन' के प्रे रूप ।

मगेतर, वि (हि मानी) बन्धन ।

मच, मचक, स पु (स) स २ पाठिका

३ वचनन, इन्द्रकोश-वचन, वेदिका,

५ रत्न, रत्न-भूति (स्त्री) पीठ ६ मच

मद्य ।

मंजन, स पु (स न) दत्त-पवन-दत्त, चूर्ण

२ (देव) अक्षरिष्ट, हतोददेश ।

मैजना, कि, म, व 'मौजना' के कर्म के रूप ।

मैजवाना, वि, प्रे, व 'मौजन' के प्रे रूप ।

मजरी, स स्त्री (स) मजरी-वहरी-री (सब

स्त्री), मजरी-वि (स्त्री) मजरी, वजरी, बजरी

(स्त्री) २ पत्रव, विमल ३ रत्न ४ मुल्य ।

मजिल, मं स्त्री (म) दे 'पत्रव' २ कोठ,

भूति (व दोन-पत्रा = द्विभूति) ३

३ लक्ष्म-मिष्टि, स्तनम् ।

मजरी, स पु (स पु न) नृप-र

२ सहाय-भेद ।

मजु, } वि (स) सुदर, मनोहर, मनोह,

मजुल, } मनोरम, चात, रम्य, रचिर, रम्य,

दृष ।

मजूर, वि (म) दे 'स्त्री' ।

मजुरी, स स्त्री (म मजूर) स्त्री-वृत्ति (स्त्री) ।

मजुपा, स स्त्री (सं) पित्र, दे 'नितरी' ।

मैसला, वि पु, दे 'मत्त' ।

मैसा, म पु 'मौसा' ।

मैसा, वि, वि, दे 'मैसा' ।

मै, मं पु (मं) दे 'मौ' ।

महन, मं पु (म न) अक्षर, पञ्चरत्न,

भूषण-प्रमथन ३ हरी-पुत्र-वत् मन्थन,

महान, प्रमथन-मन्थन ।

मध्य, म पु (म पु न) विन-ज,

उत्ताव, चर-वर्ष-आव २ मन्थन,

विश्वमगूह ३ (मम्करदिभ्यः) शल्,
पाच्छुन २ देवान्योध्वभाग ।

मडराता, कि ज, दे 'मैदलाना' ।

मङ्गल, म पु (म न) वृत्त, वतुल, चक्र
 वल्य १२ गोल्-ल ३ परिवेश, ४ परिधि,
 उपस्थक ४ निमिज, दिक्, चक्रत्, दि न
 ५ द्वादशरात्रव ६ समाज, सनुदान
 ७ ब्रह्मेद ८ चक्र, दे 'पहिया' ९ स्रवेद
 पत्तिद १० गोल्चिह ११ ग्रह, कक्षा-भा
 १२ भूप्रदेश ।

मडलाकार, वि (स) गोल, वतुण, चक्राकार
वृत्त ।

मैडलाना, कि अ (स मडल) चक्रकर
उरु (स्वा दि आ से) अपवा से च
(स्वा प से) २ परि, अन्, अन्, (स्वा
प ने) । स पु, चक्रव उद्दयन, यरि,
क्रमण अमणम् ।

भडली, स ली (म) समाज , सभा , समि
नि (ली), गोष्ठी २ सष , समुदाय ३ दूर्वा
४ गुडची ।

मङ्गली, १ म पु (स-लिङ्) मने २ सर्पनेद-
३ सूर्य ४ बिहल ५ मङ्गलाधिप ६ वट,
नमोष ।

मंडवा, व पु (स मंडप, दे) ।

मडा, म स्त्री (म) सुरा, मद्य र द्वे 'मर्विल' ।

सहित, वि (म) भूति, अलङ्कन, परिष्कृत ।

मडी, न ली (स मडप >) मणहड,
पण्यावर, वृहद् आपण-विपणी ।

महाक, त ए (त) २ 'महाक' ।

महूर, नं पु (स पु न) लैइनल,
शिवाग, निगानगम ।

मतस्य, म पु (स) विचर, मन् । वि,
स्वीकार्य, विधमनीय, अभ्युपगतस्य २ मन
नन्, भव्य ।

मन्त्र, स पु (स) वेदवाक्य २ वेदाना
महिताभा ३ मन्त्रा, परामर्श, विचार
४ गोप्य, रहस्य, गुप्त ५ अभिचारनञ्च(नञ्)
यत्र—, सं पु, ३ 'वाद् योन'।

—कार, म पु (म) मत्र, रचयितृ कर्तृ-द्रष्ट ।

—गृह, स पु (रु न) मन्त्रायमवनम् ।

—विद्या, स स्त्री, तत्र, तत्रविद्या ।

मन्त्रिणा, मै स्त्री (स) परामर्श, विचारणा
मन्त्रि (स्त्री) २ उपदेश, अनुशासनम् ।

भणित्व, म पु (स न) सचि-य, मन्त्रिता,
अमत्पत्त्व, मन्त्रिभचिव, कार्य-पदम् ।

सत्री, रु पु (म मत्रिन्) अनात्य, मन्त्रि,
धी मन्त्रि-यस, सन्त्रि-यिक, राज,
अनात्य-रुन्त्रि ।

प्रधान—, म पु (स त्रिन्) मुख्य-महा,
मत्रिन्, प्रधान-महत्वा, महाभावं ।

मथन, स पु (स न) मथन, विलोडन,
१ अनुमथान, अवगाहन, निरुपमा
३ दे 'मथनी'।

मथर, वि (स) मद, अन्न १ अन्न, मदमति
३ स्थूल, नरवत् ४ अथम । म पु (स)
३ 'मथनो' २ अन्नभेद ।

मद, वि (म) अस्त, तद्रात्र, कार्यविमुख,
उद्योगान्य २ मयः ३ शिपिन ४ मूर्त्त
५ दृष्ट ।

—बुद्धि, मति, वि (म) मूढ, मूर्ख, जड
वन्निश ।

—भास्य, वि (स) ह्यभास्य, दुर्दैव । स पु
(स न) दुर्दैव-भास्यम् ।

—मद, किं वि (मं-द) शनैः शनकैः (मध्य)
मद-त्या, सौम्यनया, गान्धीयेण ।

मदता, स त्सी (म) अलस्य २ मथरता
३ शीणत।

भद्र, म पु (म) मयशैल, पर्वतविशेष
२ स्वर्ग ३ सुकर । वि, भद्र, मयार ।

मैदरा, 16, है 'बीना' ।

मद्रा, वि (म मद्र) मधरा, मद्रा १ शिथिल
१ मय, मय, मय, सुलभ ४ निरुद्ध, हीन
५ विहा, मय ।

मदाकिनी, स खौ (स) स्वांविपद, गगा,
स्वादी, मुरदायेका ।

मदाक्रान्ता, स स्त्री (म) वार्धितभेद ।

मदाग्नि, म स्त्री (स पु) मदीर्ण, अपचन
अपक्व, अग्निमाचम् ।

मदार, म पु (म) स्वावृहविरोध २ अर्क
वृ ३ मरुत्पत्त ४ तज ५ स्वा ६ दे
'पत्तरा'।

मदिर, म पु (म न), देवपुत्र, देव, गृह
भवन्-निवेदनं-अल्प २ गृह, मेह, सन्न
वेदन (न) ३ आनि, वम, वसस्थानम् ।

मदी, न रुी (न यद) अनपन, पयसु
तनता, मून्वपकप ।

मद्र, म ॥ (स) गभीरध्वनि (पु) (संगान)
२ मृदगर । वि, मनोहर २ प्रसन्न ३ गभीर
४ मद्र गभीर (शब्दादि) ।

मसा, म खी (अ) दे 'मसा' ।

मसव, स पु (अ) पद, बदवी, स्थान
२ वर्तव्य ३ अधिरार ।

मसा, स खी (अ मसा) इच्छा, कामना
२ मक्तर ३ आशय ।

मसूत्र, वि (अ) विवृणु, अपसृष्ट, निरस्त,
निर्वाण, गन्ति ।

मसूत्री, स खी (अ मसूत्र) विलोप,
निराम निवर्तन, खंडनम् ।

मसूत्रा, स पु (का) सन्त्य, विचार
२ वृत्ति (खी), उदाय ।

—बाधना, सु, निर्ध (स्वा व अ),
सकलप (प्रे) २ उपाय चिद (तु) ।

मई, स खी (अ मे) आलस्यवत्त्व पचमो
मास, वैशाखज्येष्ठम् ।

मकट, म खी (म मकाय) कटि ।

मकडा, स पु (स मकट >) वृक्षजता ।

मकडी, स खी (हि मकडा) छाता, तल,
वाय-नाभ, उगनाभ, मर्कट-टन, आदि
कोषसार अष्टापद ।

—का जाला, म पु, मरणात्मा ।

मकतव, स पु (अ) पाठशाला ।

मकतवा, म पु (अ) पुस्तकालय २
ग्रन्थविपणि (खी) ।

मकतूर, म ॥ (अ) सामर्थ्य, शक्ति
(खी) ।

मकतानीय, स पु (अ) दे 'मुक्ता' ।

मकतारा, म पु (अ) समर्थ (पु),
*मृत्तमदिरम् ।

मकवृत्ता, वि (अ) अधिकृत, हस्तगत ।

मकवृत्त, वि (अ) स्वीकृत मन २ प्रय ।

मकर, स पु (॥) मरत् मरत्, पुष्प,
रम मार स्वेद निपात् निपात, मपु (अ),
पुष्प २ द्विज द्विजल ३ कुटुम्ब ।

मकर, म पु (म) नव आह, मुनीर
कवहार जलचर २ दशमराणि आरा
पर ३ मारमाम ४ व्यूहभद ५ दे
'मकरी' ।

—ध्वज, म पु (म) मकर, वज्र वज्र,
वामरव ।

मकर, स पु (का) कपट, छलम् ।

मकरुज, वि (अ) दे 'मृगी' ।

मकरुह, वि (का) वज्र, मलीमत् २ धृणी
स्थापक ।

मकमद, स पु (अ) मन कामना २
अभिप्राय ।

मकान, ॥ पु (का) अ(आ)गार २, भवन-
वेद्यमन्-मण्डप (न), सदन, दे 'पर' ।

—किराये पर देना या लेना, कि स,
मदन मारने दा अथवा आ-दा (जु आ अ) ।

मर्क—, स पु, शु, सदन-स्वामिन्पति ।

मकोडा, म पु (हि कोडा का अनु०)
मुद्रीट ।

मरोय, स खी (सं काकमाता म विप०)
काकमाचीचिरा, कुष्ठली, वायमी, रत्तावली,
वृत्रिल्ला, काका, क्यिनी २ काकमाची-
फल इ ३ दे 'रसमरी' ।

मका, स पु, दे मरद ।

मकार, वि (अ) कपटि, छलित् ।

मकारा, स खी (अ) कपट, छलम् ।

मकारन, स पु (स भ्रष्टा >) नवनीन,
मन्थन, नवीकृत तक नस्तार, दधि, जस्तवेह,
पीथ ह्यगवीनम् ।

मकरी, स खी (म ममीका) मक्षिका,
माचिरा, मधुलीतुषा, भम, पणिका,
वमनीया, पलक्या, नीला, वदना २ मधु
मक्षिका इ *अम्बुसमक्षिका ।

—चूम, म पु (म कृपण, मित्रपच, पदार्थ)
कीनी मक्की निगलना सु, जानप्रति
पापक ।

नाम पर मक्की न बैठने देना, सु, उपहार
न सह (स्वा आ से) ।

मक्की छोटना और हापी निगलना, सु, पाप
कानि परित्यज्य मदापणेषु प्रवृत्त (स्वा
आ से) ।

मक्की पर मक्की मारना, सु मक्षिका म्थन
मक्षिका, निवेदेवप्रतिनिधि (मी) ।

मक्की मारना या उठाना, सु, उपागदीन
(वि) स्था (स्वा प ॥) ।

मक्षिका, म खी (म), दे 'मक्की' ।

—मल, म पु, दे 'मोय' ।

मर, स पु (स) यव, मनु ।

मन्त्रसूत्र, स पु (स महापन्त्र) कृष्ण,
कौरोवन्दीदस्यम् ।

मन्त्रमल, स स्त्री (अ) *मन्त्रमल, इलक्षण
वल्गुभेद ।

मन्त्रमलो, वि (अ मन्त्रमल) मन्त्रमल,
मय निमित्त २ इलक्षण, स्तिग्ध ।

मन्त्रौल, स पु, (दे 'ठटठा') ।

मग, स पु, दे 'मगं' ।

मगङ्ग, स पु (अ मग) मल्लिक मस्तुतुगव
२ बुद्धि-मति (स्त्री) ३ दे 'मिरी' ।

—चट, स पु (अ + हि) वाचाल, वाचाट ।

—चट्टी, स स्त्री, वाचालता, प्रज्वल ।

—पच्ची, स स्त्री (अ + हि) बौद्धिकश्रम ।

—खाना या चाटना, सु बाबदुस्तरवा
खद (प्रे) ।

—खाली करना या पचाना, मु, प्र, नल्प
(स्वा प से) २ मल्लिक खिद
आयस् (प्रे) ।

मगङ्गी, स स्त्री, (अ मग) चौरीति
(स्त्री), दशा ।

मगध, स पु (स) कीर्तदेश, विहर
प्रातस्व दक्षिणभाग २ चारण, वदिन् ।

मगध, वि, दे 'मगध' ।

मगर, अन्य (का) किन्तु, पर, परतु ।

मगर, } स पु (स मकर)

मगरमच्छ, } दे 'मकर' (१) २ महा,
मत्स्य मील ।

मगरिव, स पु (अ) दे 'पश्चिम' ।

—जदा, वि, पाश्चात्यमभ्यतया प्रगतिन,
पश्चिम, आकृष्ट प्रेरित प्रवृत्त ।

मगरिवी, वि (अ) दे 'पश्चिमी' ।

—सहजीव, स्त्री, पाश्चात्यसम्यता ।

मगरूर, वि (अ) दे 'अभिमान' ।

मगरूरी, स स्त्री (अ मगरूर) दे
'अभिमान' ।

मग्न, वि (स) जलाव प्रविष्ट, निमज्जनेन,
भूत-नाष्ट २ हीन, निरत, आसक्त, पर,
परायण ४ मत्त, क्षीव, मदोद्भ ४ प्रसन्न,
प्रहृष्ट ।

—होना, कि अ, प्र, हृष् (दि प से)
२ निरत-हीन-आसक्त (वि) भू ।

मघरा, स पु (स-वन्) *द्र, अ'सृष्टल ।

मघा, स स्त्री (सं) नक्षत्रविशेष, मघा
(स्त्री बहु भी) २ औषधभेद दे 'पिप्पली' ।

मचक, स स्त्री (हि मचकना) भार, पीन
२ अस्थिसहिषोढा ३ कपनम् ।

मचकना, कि अ (अनु मच मच >)
अस्थिसहिष व्यध (स्वा आ से) पाङ्
(कर्म) २ भारेण समचमचध्वनि कप्
(स्वा आ से), निमिष (तु प से),
निमील (स्वा प से) ।

मचकाना, कि स (हि मचकना) व
मचकना के प्रे रूप ।

मचकोड, स स्त्री (हि मचकना) सन्धि,
व्यावतन व्याधेप ।

मचना, कि अ (अनु मच) कृ-आरम्
(कर्म), इष्ट (स्वा आ से) ।

मचलना, कि अ (अनु) निर्वर्धन वप्
(स्वा प से), साण्ड (वि) अवस्था
(स्वा आ ङ) ।

मचला, वि (हि मचलना) कपटमूढ,
अफलक्षण, व्यावबद्ध ।

मचलाना, कि अ (अनु) वम् (सञ्ज्ञत,
विवर्धित), वमनेच्छया पीड् (कर्म)
३ दे 'मचलना' ।

मचलापन, स पु (हि मचलना) कपट
मूढता, व्यावबद्धत्वम् ।

मचलाहट, स स्त्री (हि मचलना)
निर्वध, आम्रह २ विवर्धित, वमनहाटा ।

मचान, स पु (स मच) मचक उच्चारण,
वेदिका, इद्रकोष ।

मचाना, कि स (हि मचना) व 'मचनो'
के प्रे रूप ।

मचिया, स स्त्री (स मच >) मचिया,
पीठी, पीठक, छुद्रासनम् ।

मच्छच्छ, स पु (स मत्स्य >) महा-वृष्टि,
मीन-मत्स्य व्रण ।

—अवतार, स पु, दे 'मत्स्यावनार' ।

मच्छद्वर, स पु (सं मघरा) वज्रतुण्ड,
मघ, सूक्ष्मास्थ, सूक्ष्ममक्षि, रात्रिनागरद्व ।

—दानी, स स्त्री, मघ(शक्र)हरी, चतुष्की,
मस्त्रिका, नीशार ।

मच्छर पर तोष लगाना, मु, तुच्छरी
वृक्षान ।

मच्छी, म स्त्री (हि मच्छ) दे 'मच्छी' ।

मच्छर, म पु (म मत्स्येड या वदर मे अनु)
वपि वानर २ आलु मृषिक ३ जड,
मूढ ४ मिथ्यावेद्य ५ विदूषक, वैद्यानिक
६ मिथुर ।

मच्छरयैष, स स्त्री (हि मच्छरी + स गव)
मत्स्याय मीनयूनि (स्त्री) ।

मच्छा, म स्त्री (स मत्स्य) मीन, ज्ञप,
अन्न विमार पृष्ठोमन् (पु), शत्रुलिङ्ग,
वेमारिण आत्माशिल्प, निमि, चलपिपक ।
वि श्वर मरुतारिन् शिवाजिह्व, वज्रच्छद
७ मत्स्याकारो भूषणभेद ।

—वाला, म पु, दे 'मच्छा' ।

—की तरह लड़पना, मु, जलहीनमीनवद्
व्याकुलम् ।

मच्छा, म पु (हि मच्छी) मत्स्यभरिनीका
७ द मच्छा' ।

मच्छा बा, म पु (हि मच्छी) मत्स्य,
आनीद ग्यनीदिन्, माल्यिक, भीवर, वेवन ।

मच्छर, म पु (फ्रा) मर हर हार वादन
वाह, भारिक, बौद्ध, वाह, वाहक २ कामी,
कर्मिक, अमजीवित्, कर्म, कर-कार ।

मच्छरी, म स्त्री (फ्रा) भारवहन, श्रम,
ज्ञान ७ वमण्या, मृनि (स्त्री), भूत्या,
भर्मणा, भर्म, पारिश्रमिकम् ।

मच्छू, म पु (अ) उमत्त, उमादिन्,
वायुन् २ लयन्-वत्तम, कैम ३ प्रणयिन्,
प्रेमिन्, शम्भुन्, वामिन् ४ कुशाग, शुष्कभेद ।

मच्छून्, वि (अ) दृढ, २ स्थिर ३ बन्धन् ।

मच्छूनी, म स्त्री (अ मच्छून्) दृढता
७ स्थिरता ३ बन्धता ४ माहमम् ।

मच्छून्, वि (अ) दे 'मच्छू' ।

मच्छून्, वि हि (अ) कृन्, कृन्, कृन्,
हठार प्रमथ प्रमथम् ।

मच्छूनी, म स्त्री (अ मच्छून्) विवशता,
अगन्विता, अपरिहायता ।

मच्छा, म पु (अ) जन, समर्द्ध मनुदाय ।

मच्छा, म पु (अ) मनुदाय, मयद,
मनु ।

मच्छून्, म पु (अ) प्रमथ, निवध, मथ
२ मथवान् मथ विवध ।

—नवास, सं पु, निवन्ध, कार-लखक ।

मज्जमूम, वि (अ) विन्दित, दुष्ट २ शोन,
वर्णकुल ।

मज्जमान, स स्त्री (अ) निन्दा, कुत्सा
२ मत्तना ।

मज्जरूह, वि (अ) आहत, दे 'पावत' ।

मज्जलिम्, म स्त्री (अ) समा, समाज, गोष्ठी ।

मी—म पु (फ्रा + अ) समा, यनि
अध्यक्ष, प्रधान ।

मज्जलिमी, वि (अ) सामाजिक ।

मज्जह्व, स पु (अ) धर्म, सप्रदाय, मन्द ।

मज्जहवी, वि (अ) धार्मिक, साप्रदायिक ।

मं पु, खलू, शिष्य, शिष्य(मित्र),
जानि-विशेष ।

मज्ज, म पु (फ्रा) आ, स्वाद, रम २
आनन्द, सुख ३ विनोद, हास्यम् ।

—उड़ाना या लूटना, मु, मुद् (स्वा आ
मे), रम् (स्वा आ अ), नद् (स्वा प से) ।

—दिराना या खराना, मु, दद् (जु-
दिरम्) २ प्रनिहिम (न प मे), प्रत्ययः ।

मजे मे, मु, मानन्द, मज्ज, निर्विन्दन् ।

मज्जाक, म पु (अ) दे 'ठठठा' ।

मज्जार, म पु (अ) समाधि २ दे 'रुम' ।

मज्जाल, म स्त्री (अ) समर्थ, शक्ति स्त्री ।

म(मे)जिस्ट्रेट, मं पु (अ) दण्ड-नायक
अध्यक्ष-अभिरारिन् ।

म(मे)जिस्ट्रेटो, म स्त्री (अ मेजिस्ट्रेट)
दण्डनायक-दण्डाध्यक्ष, पद-धार्य २ दण्डनायक-
समा ।

मजीठ, मं स्त्री (मं मजिठा) रत्ता, रोहिणी,
रत्नचट्टिया, राधाद्या, अरुणा, रागाणी, वल
भूषणा, विक्रमा, विनी ।

मजीठो, वि (हि मजीठ) रत्त, अ विन्, अरुण ।

मजीरा, मं पु, (म मजीर) मुर, पादा
हृद (न) २-विषम, कुटा ।

मजेदार, वि (फ्रा) स्वादु, कष्य, रविकर
२ ग्लूक, उत्तम ३ आनन्द, दायर प्रद ।

मज्जन, मं पु (म न) न्नान, दे 'नशाना'
मं पु ।

मज्जा, मं स्त्री (मं) शुक्ल, पीशिक,
अप्य, मजेदार-मय, अविनन् ।

मज्जधार, मं स्त्री (मं मध्यधारा) नवा

मध्य-वेन्द्रीय-मध्यस्थ-मध्यम-धारा प्रवाह -
 मद्राक स्तनम (न) २ कार्य, मध्य मध्यम् ।
 मद्र(ओ)ला, वि (स मध्य) मध्यम, मध्य,
 वर्तिन्य २ मध्यमाकार, मध्यमपरिमाण ।
 मद्रक, मद्रकन, स स्त्री (हि मद्रकना) हय,
 विभ्रम, विलस २ गति (स्त्री) सचार ।
 मद्रकना, कि अ [म मद्र (सौवधातु) =
 अवसाद] विलस (स्वा प से),
 सविन्म चल (स्वा प से) विभ्रम (स्वा
 दि प से) ।
 मद्रका, म पु (हि मिद्रा) मगिक क, अलिनर ।
 मद्रकाना, कि स (हि मद्रकना) मविलास
 अगानि चल (प्रे) विभ्रम (प्र) ।
 मद्रकी, म स्त्री (हि मद्रका) छुद्र-मगिक
 अलिनर ।
 मद्रमेला, वि (हि मिट्टी+मैला) दे,
 'मद्रिपाल' ।
 मद्रर, स पु (स मधुर) कल्प, काल
 पूर, मुण्डकचक्र, रेणुक, वातुल, सनीन
 (लज्ज, हरेणु, लडिक) ।
 मद्ररगहन, स पु क (स मधुर+का
 गवा) मुलाटन, विहार, विहरण, यथेष्टभ्रमण,
 सुखसचरणम् ।
 मद्रियामसाम } वि दे 'मद्रियामे' ।
 मद्रियामेट
 मद्रियाला, वि (हि मट्टी+वाला) श्रुति रेणु
 प्राशु वर्णनम् ।
 मट्टी, स स्त्री, दे 'मिट्टी' ।
 मट्टा, म पु (स मधिन) अनरोदक-धोन्,
 चलनवनीन शून्य धोन्म ।
 मट्टी, म स्त्री (स मठ) पक्वात्रभेद ।
 मठ, स पु (म पु न) आनि, वाम,
 २ आग्रम, विहार, मुनिवाम ३ धार्मिक-
 विद्यालय ४ मन्दिर, देवालय ।
 —पारी, स पु (स रिन्) मठपति, मठिन् ।
 मदना, कि स (म मन् >) कोरी निविश
 (प्रे), आवेष्ट (स्वा आ से) २ चमादिभि
 रानुस अच्छ (प्रे) ३ बन्ध अरुह
 (प्रे), दे 'धीना' । म पु, आवेष्टन, आच्छा
 दन, आरोहणम् ।
 मद्रने योग्य, वि, आवेष्टनीय, आच्छादनीय ।
 मद्रनेवाला, स पु, आवेष्टक, आच्छादक ।

मद्राना, कि प्रे, व 'मदना' के प्रे. रूप ।
 मद्रा हुआ, वि, आवेष्टित, चमादिभिराच्छादित,
 बन्धारोपित ।
 मट्टी, स स्त्री (स मठ >) छुद्रमठ ठ, लडु
 मन्दिर २ कुटो, वर्णशाला ३४ छुद्र, मदन-
 मडप ।
 मणि, स स्त्री (स पु स्त्री) रत्न २, नर-
 पुगव-कुन्त-कृपम ।
 —काचन योग, स पु (स) उभयधोना-
 चक्रसंयोग ।
 —दीप, स पु (स) दीपोज्ज्वलमणि, रत्न
 दीप २ मगिररनजटितदीप ।
 —घर, म पु (स) सप, अहि ।
 —यध, म पु (स) मणि, पाणिमूल,
 क्वाचिका ।
 —माला, म स्त्री (+) रत्नहार २ रत्ना,
 पद्मा, कमला, इन्दिरा ३ वर्णवृत्तभेद ।
 मतग, स पु (स) गत्र २. मेघ ३ ऋषि
 विशेष ।
 मत, स पु (स न) धर्म, सप्रदाय
 २ मति (स्त्री), तर्क ३ आशय, अभिप्राय ।
 वि, पूजित ।
 मत्, कि वि (स मा) न, नो, मा, अन्
 (तृतीया के साथ) ।
 मत्तल, म पु (अ) आशय, अभिप्राय,
 तारपत्र २ शब्द-वास्य, अर्थ ३ स्वार्थ
 ४ उद्देश, उद्देश्य ५ सबब, सपक ।
 —निकालना, मु, स्वार्थ साप्तिष् (प्रे) ।
 वे—कि वि, व्यर्थ, मोष, निप्रयोजन, निरर्थकम् ।
 मतलबी, वि (अ मत्तल) स्वाधिन्,
 निवहित-स्वार्थ, परंपरायण निरत ।
 मतलाना, कि अ, दे 'मत्तलाना' (१) ।
 मत्तली, म स्त्री, दे. 'पक्वाहट' (२) ।
 मत्तवाला, वि (स मत्त) मद्रोद्धत, मदीमत्र,
 क्षीव २ उमत्त ३ अभिमानिन् ।
 मत्ताधिकार, स पु (स) मत्तप्रकाशनाधिकार ।
 मत्तावलवी, स पु (स-विन्) धर्म-मन, अनु
 गा मन-अनुयायिन्-अनुवर्तिन् अनुसारिन् ।
 मति, स स्त्री (स) धी (स्त्री), धि(धी)पणा,
 प्रज्ञा, बुद्धि (स्त्री) २ मत्त, तर्क, अभिप्राय
 ३ इच्छा ४ स्मृति (स्त्री) ।
 —मान्, वि (स-मत्) प्राज्ञ, चतुर ।

—हीन, वि (स) ७, मूढ मूर्ख ।

मतीरा, म पु, दे 'नरवृज' ।

मत्तुष, स पु (म) रक्तविन्, रक्ता, मन्काप्रद, उदर ।

मत्त, वि (स) शौन, उत्तम क्षीर, उन्नत, मदाद्य, समद, मदिरोत्तम, मद-मत्त-उन्नत वस्तु-उदय २ निर्विवेक ३ वस्तु, उन्नत ४ प्रसन्न ।

—मायद, सं पु (स मत्तज्जेद >) मयैवाद्यन्तोभेद । (७ अण+२ गुक अक्षर) ।

मत्पा, सं पु, दे 'मत्तक' (१) ।

मत्पर, स पु (स) मत्पर्य, परोत्तरदेव, असुया, ईर्ष्या २ क्रोध ।

मत्पय, स पु (सं) दे 'मत्तली' २ मीन राशि ३ विराटदेश (दीनवपुर-रगपुर, अथवा प्राचीन पाका के अन्तर्गत) ४ महा पुराविहीन ५ विभीरवतारविहीन, मत्पया वनात् ।

मथन, स पु (स न) दे मथन १२ ।

मथना, कि स (स मथन) दे 'विलेना' २ ध्वस्तना (मे) ३ अन्विष्ट (वि प से) ४ असह्य अनेकवारक । स पु, दे 'मथानी' २ मथन, मथ ।

मथनी निया, सं स्त्री (स मथनी) मथन घटी, गर्गरी, मथिनी २ दे 'मथानी' ।

मथानी, सं स्त्री (स मथानी) मथमथन, ६, मय, मथन, खन, वैशाख, मयि, मयिष्ट (पु), तज्जट ।

मथुरा, सं स्त्री (सं) मथुपुर-रा ।

मद, सं पु (सं) मद, मूढता, क्षीयता २ वस्तुनय, उन्माद, मनिमन ३ दर्प, अभिमान ४ सुरा, मय ५ हर्ष, मोद ६ वस्तु-रिक्ता, मृग, मद-नाभि ७ मज्जन बल, मद, मत्त-परि (न), दान ८ गुक, क्षीर ९ अन्तः, प्रमद १० मदन, काम ।

—माता, रि, दे 'मत्त' (१) २ कर्मचर, अन्तर्गत ।

मद, सं स्त्री (अ) लिखितपर २ गानापर ३ प्रमद ।

मदन, सं स्त्री (म मद >) मदक मदक दम्भेद ।

मदद, सं स्त्री (अ) दे 'सहानता' ।

—गार, वि (अ+ग) दे 'महद्व' ।

मदन, सं पु (सं) मन्मथ, वदप, अन-दे 'कामदेव' २ कामरूप, मैथुन ३ रिक्त-मुचुद, कविष्ट ४ सुतार = अमरः ६ सनन ७ दे 'मैका' ।

—कदुन, म पु (स) शिव, मदनहनन ।

—गोपाल, सं पु (म) मदनमोहन, कृष्ण ।

—वाण, सं पु (स) कामरार, पुनमेद ।

—सदन, सं पु (स न) मदन, मूढ-नयन, भाव ।

—महोत्पव, सं पु (अ) मदनोत्पव, सुव सनक, मदनपूनासनीनराविजागरणारिपुन-चैत्रे भव प्राचीनोत्सवभेद ।

मदनोद्यान, सं पु (स न) प्रमोदवनम् ।

मदर, सं स्त्री (अ) माद (स्त्री), जनने ।

मदरसा, सं पु (अ) विषालय, पाठशाला ।

मदाध, वि (म) दे 'मत्त' (१) ।

मदार, सं पु (म मदार) दे 'अक' ।

मदारी, म पु (अ मदार) दे 'कन्-१२' २ सौमिक, दे 'बादगर' ।

मदिरा, सं स्त्री (सं) सुरा, हर्ष, मय, वाष्पी, कारवरी, हृदिप्रिया, गर्भाक्षमा, शरा, प्रमत्ता, परिक्षुता, वदय, गधमदनी, मधवी, मद, मत्त, मदगधा, मधु, माध्वक, अविश्या, देवसुहा, मदका, दृढा, मैरेय, मीध, महानरा, मदनी, मोदिनी, मनोहा, मधुन, अक्षय, प्रिया, चरल, मत्त, कामिनी ।

मदिराक्ष, वि (सं) मत्तलोचन (नी स्त्री) ।

मदीय, वि (सं) मन्मदीन, मन्मद (निवा स्त्री), मय ।

मदीला, वि (म मद >) दे 'नदीना' ।

मदोन्मत्त, वि (म) मद, उत्तम-उदय-उदय ।

मदि(द)म, वि, दे 'मदयन' ।

मय, सं पु (सं न) द 'मतिरा' ।

—य, रि (म) सुगम, दे 'नराधी' ।

—यान, सं पु (म न) सुगमनयन ।

—मायन, सं पु (म न) सुगम-यान ।

मयु, सं पु (म न) क्षीर मति प्रा-.

मुमुनपुर, मयि, रि, वदय, मधवी, मय, पुनरम, उदय-मदय, मदिरा-वरी

मृद, वन २ मदिरा ३ दुरा ४ उद

५ मरुत, पु० मरुत ६ अमृत ७ वमनर्ष
८ वैवमम ९ दैतविशेष । वि, मधुर, स्वादु ।
—कठ, स पु (म) कौकल, पिक ।
—कर, स पु (म) अमर २ कानुज
३ भुजराजकुक्ष ।
—करी, स स्त्री (म) पञ्चदी, अमरी
२ मिहानपक्वान-भिक्षा ।
—कार, स पु (स) मधुमक्षिका ।
—कोप, स पु (म) मधु कल चक्रपल
कौश, कर चवा ।
—प, स पु (म) अमर २ मधुमक्षिका ।
—पन, स पु (स) दधिमधुमिश्र अन्य,
(अनिध्यादिभ्य) ।
—मक्षी, स स्त्री (म-मक्षिका) मधु, कार
कारिन् सरथा ।
—मय, वि (म) मधुर, मधुल, मिष्ट, स्वादु,
रविर ।
—माम, स पु (म) वैव ।
—मेह, स पु (म) मधुमेह, मूत्ररोधेर ।
मधुर, वि (स) निष्ठ, मधुर, मधुल, मधुक,
मधुमद २ रच्य, रचिकर, स्वादु ३ कर्ण
भुनि मधुर, पल, मजुल ४ सुदर, मनोह ।
—भापी, वि (स विन्) प्रियवद, मधुर
सु-वाच, चारुभाषिन् ।
मधुरिमा, स स्त्री [स रिमन् (पु)] माधुर्यं
२ सौन्दर्यम् ।
मधूकरी, स स्त्री, दे 'मधुवती' (२) ।
मध्य, वि (म) दे 'मध्यम' । कि वि, मध्य,
अनुर, अम्यारे । स पु, मध्य, मध्य-भा
देश-स्थल-स्थान २ गर्भ, अभि, अनरन् ।
—देश, स पु (स) हिमाचलविध्याचल-
क्षेत्रप्रदागमध्यस्थो देश २ मध्यप्रात ।
—भाग, स पु (स) मध्य-स्थल-स्थान,
वेत्तम् ।
—लोक, स पु (म) भूनि (स्त्री),
पृथिवी ।
—वर्ती, वि (म तिन्) वेद्रीय, मध्य,
मध्यम, मध्य-स्थ-स्थित ।
मध्यम, वि (स) मध्य, मध्य-स्थ-स्थित
वर्तेत २ मध्यपरिमाण ३ सामान्य, साधारण
४ व्यवहिन, अनरालम्भ । स पु (स)
चतुर्थम्वर (मणीन) २ ४ नायक-मृग-नाग,
भेद ।

—पुरुष, स पु (म) पदविशेष (व्या त्वं
पचनि ३) ।
मध्यमा, स स्त्री (स) ज्येष्ठा-पुली-लि
(स्त्री), मध्या, ज्येष्ठा २ न-रिसामेद ३
रत्नवला गारी ।
मध्यस्थ, स पु (म) निर्गुण प्रमाणपुरुष
२ उदासीन, निष्पक्ष, तत्स्थ । वि., दे
'मध्यम' ।
मध्यस्थता, स स्त्री (म) माध्यस्थ, निर्णय-
२ तत्स्थता ।
मध्याह्न, स पु (स) मध्य(ध्व)दिन, मध्याह्न,
काल-समय-वेला ।
मध्याह्नोत्तर, स पु (म न) अपराह्न, पराह्न,
विशाल ।
मन, स पु [स मनस् (न)] चित्त,
चेतन (न), हृदय, स्वान, हृद (न), मानस,
आ, अनगक, अत करण २ अत करणस्य
मन्त्रविकल्पात्मकवृत्ति (स्त्री) ३ विचार,
मन्त्र ४ इच्छा, कामना ।
—मन्दत, वि, मन कश्चित्, काल्पनिक, अवा-
स्तविक, मन प्रसूत ।
—चला, वि, निर्भय २ सङ्कल्पि ३ रसिक ।
—चाहा, -वीत, वि, अभीष्ट, मनोवाञ्छित ।
—जात, स पु, मनोज, कामदेव ।
—भाषता, भावन, वि, रच्य, रचिकर, प्रिय,
अभिमत ।
—मति, वि, स्वच्छन्द, अनियन्त्रित, स्वच्छा-
चारिन् ।
—मय, स पु, मन्मथ, कर्षण ।
—माना, वि, रच्य, रचिकर २ अभिमत,
मनोनीत ३ यथेष्ट, यथेच्छ, यथेक्षित ।
कि वि, यथेष्ट, यथामिच्छन् ।
—मानी, स स्त्री, यथेष्ट-कार्य-कर्मन् (न) ।
—मुगव, स पु, वैमनस्य, वैमत्य, दुष्ट, भाव-
बुद्धि द्वेय ।
—मोदक, स पु, वाचनिकमुख, मन
कल्पिमानन्द ।
—मोहन, स पु, शोभन् । वि, मनोहर, हन ।
—मौञ्जी, वि, स्वैरिन्, स्वच्छाचारिन् ।
—रजन, वि., मनोरन्क । स पु, मनोरजनम्,
चित्तविनोद ।

- हर, } १ मनोहर, मनोहर्तृ, मनोहारिन्,
—हरण, } २ मुदर, मनोज ३ प्रिय, हृद्य ।
—हारी, }
(टिप्पणी—मन के बहुत से योगिक शब्दों
और मुहावरों के पर्यायवाची 'नी', 'दिल'
और 'कलेजा' के नाँवे मिलेंगे, कुछ बड़ा
देते हैं) ।
- भटकना, मु, स्तिह् (दि प मे), अनु
रत् (कर्म) ।
- करना, मु, अभिलषाउ (दि स्वा
प से) ।
- कलङ्क खाना, मु, गगनवुमुमानि चि
(स्वा उ अ), मोषाशवा हृष् (दि प मे) ।
- बहलाना, मु, मनो विमुदरन् (प्रे),
विद्व (स्वा प अ) ।
- बसना, मु, रच् (स्वा आ से), दे
'मनमादा' ।
- भर, वि, यथेष्ट, यथेच्छम् । (कि वि),
यथा हचि, यथाभिलाष, यथेष्टम् ।
- भरना, मु, परिम्, वृप्-वृष् (दि प अ) ।
- भोना, मु, रष (मु प से), अभिलष,
रच् ।
- भाना मुदिवा हिलाना, मु, मनमि काम
यमानोर्धि शिरःपेन (वाह्यत) निविध्
(स्वा प से) ।
- माने, वि तथा कि वि, दे 'मनवर' ।
- मारना, मु, मन निग्रह् (क प से)
२ धैर्येण सह् (स्वा आ से) ।
- मिलना, मु मानान ऐवमत्य कृत् (स्वा
आ से) ।
- लल्लुखाना, मु, तुभ (दि प मे) तत्प
थिक् लृह् (बु, ग्लुषी के साथ) ।
- हरा होना, मु, मुद (स्वा आ म) ।
- मन, २ म पु (म मग) चत्वारिंशत्तरात्मन
भारमानम् ।
- भर, वि, मज, मित्र परिमित-आत्र ।
- मनका, १ म पु (म मगिन् >) अर, गुणिना
२ जपमाना ।
- मनका २ म स्त्री (म मन्याका) मन्,
अवट्, कुर्यात्कि, गिन् पीठ, घाट-टा ।
- दकल्लार, मु, सरकोमुखमुर्ध्-अमनकृत्यु
(दि) कृत् (स्वा आ से) ।

- मनकृत्वा, वि (अ) चर, चल्, अस्थिर ।
- गरमनकृत्वा जायदाद, स स्त्री (अ +
पा) स्थावरत्वय, स्थिरमपद् (स्त्री) ।
- जयदाद, म स्त्री, (अ + पा) उपर-
णरिवध, चरमपद् (स्त्री) ।
- मनन, म पु (स न) अनुचिन्तन, ध्यान,
आलोचनम् ।
- शील, वि, विचार, शील-वन् ।
- मननीय, वि (स) विचाराणीय, चिन्तनीय,
निवारात्यद, मननाई ।
- मनवाना, कि प्रे, व 'मानना' के प्रे रूप ।
- मनशा, म स्त्री, दे 'ममा' ।
- मनसब, म पु (अ) पद, पदवी २ अधि
कार ३ स्तर ४ सेवा ।
- मनसा १ म स्त्री, दे, 'ममा' ।
- मनसा, अ (सं) विवेक, हृदयेन । स स्त्री-
१ जलकाय पत्नी २ बासुकिमणिनी ।
- मनमिज, म पु (सं) कामदेव, पंचशर ।
- मनसुख, वि दे 'मसुख' ।
- मनसुवा, म पु, दे 'मसुवा' ।
- मनस्ताप, म पु (सं) मनोवेदना, आधि-
२ अनुपश्रान्त, नाप ।
- मनस्थी, वि (स विन्) महाशय, महानुभाव
२ बुद्धिमत्, मुबुद्धि ३ स्वेच्छाचारिन् ।
- मनहुँ, कि वि, दे 'मानो' ।
- मनहृन्, वि (अ) अशुभ, अनगल् २ पुरुष,
दुर्दर्शन ३ अन्तः, मधर ।
- मना, वि (अ) निप्रति, पिष्ट बन्धित ।
म पु दे 'मनारी' ।
- करना, मि म, निप्रतिविष् (स्वा प
म), निह् (प्रे), निअवन्ध (स्वा उ अ) ।
- मनादी, म स्त्री (अ मुनादी) उदाहरणा,
प्रत्यापनम् ।
- करना, मि म, उप्पुष (बु), प्रग्या
(प्रे, प्रत्यापयति) ।
- मनाना, मि म, व 'मानना' के प्रे रूप ।
- मनगही, म स्त्री (अ मना) निप्रति, पध,
निराध, निवारण, प्रत्यादेश ।
- मनिहार, म पु (म मागना) रत्नहार,
रत्नाभाविन् २ ३ कार्दमन्, नार
विमयिन् ।
- मनिहारी, म स्त्री (हि मनिहार) मणि, अयव-

साय-वागिज्य, रत्नव्यवहार २ काचद्रव्य व्यवसाय ।

मनी-आर्डर, म पु (अ) घनादेश ।

—कामे, म पु (अ) घनादेशपरम् ।

मनीय, स स्त्री (म) बुद्धि (स्त्री) २ स्तुति (स्त्री) ।

मनीषी, वि (स विन्) पठित, बुद्धिमत् ।

मनु, म पु (म) ब्रह्मण पुर, धर्मशास्त्र कातो मुनिविशेष २ अनुभू ।

मनुज, स पु (स) मनुष्य, मानव ।

मनुष्य, स पु (स) मानव, मनुज, मानव, मत्स्य, नगर, द्विपर, मनु, पञ्चजन, पुष्प (रघु), पुम्स्तु (पु), मण, विश्व (पु) ।

मनुष्यता, स स्त्री (स) मनुष्यत्व, मानवता २ सम्यक्ता, शिष्टता ३ दया, भौवादयः ।

मनुष्यी, स स्त्री (म) नारी, मानुषी, मानवी, मत्स्या, मनुनी, नरी ।

मनुहार, स स्त्री (म मानहार >) प्रसादन, उपशमन, सात्वन २ विजय, प्रार्थन-जा ३ आदर, मानन-जा ।

मनो, कि वि, दे 'मानो' ।

मनो, (म मनस न) दे 'मन' ।

—कामना, म स्त्री (स मन-कामना) अभिलाष, वाडा ।

—गत, वि (स) हृदयस्थ, हार्दिक ।

—ज, स पु (स) मदन, कर्षण ।

—ज्ञ, वि (स) सुन्दर, अभिराम ।

—नीत, वि (स) रघ्य, रुचिकर, हृद्य २ वृत्त ।

—योग, स पु (स) अवन्त्यमनस्तना, वित्तै कामय, अवधानम् ।

—रजक, वि (स) विनाहादय, सुखकर, हर्षावह हृदयहारिन्, मनोविनोदक ।

—रजन, स पु (म न) मनाविनोद, चित्ताकादन-र, कीर्ति, वीतुकम् ।

—रय, स पु (स) सृष्टा, वाडा ।

—रय सफल होना, कि अ, सफलमनोरथ (वि) भू, अभिलषित अधिगम् ।

—रम, वि (सं) मनोह, सुन्दर ।

—वाञ्छित, वि (म) अभिलषित, अभीष्ट ।

—विकार, स पु (म) चित्त-विकृति (स्त्री) विकार, मनो, धर्म-वृत्ति (स्त्री) वेग ।

—विज्ञान, स ए (म न) मानसशास्त्रम् ।

—वृत्ति, म स्त्री (म) वित्तवृत्ति (स्त्री), मनोवृत्ति, मानसी दशा ।

—हर, वि (म) मर, हृदयहारिन् ।

—हरना, म स्त्री (म) मोक्ष, वित्ताकर्षणता, मनाश्रिता ।

मनौती, म स्त्री (हि मानना) दे 'मनुहार' (१) २ दे 'मन्त्र' ।

मन्त्र, स स्त्री (हि मानना) देवपूजा, प्रण प्रतिष्ठा शपथ ।

—उत्तरना या वदना, सु, देवपूजामणिशा पा (प्रे पालयति) ।

—मानना, सु, अभ्यस्तित्वे देवपूजा प्रतिष्ठा (क् प्र आ अ) ।

मन्वनर, म पु (म न) एकसप्तति चतुष्टयारम्भ काल, ब्रह्मरिन्स्य चतुर्दशी भाग ।

मपना, कि अ, व 'मापना' के कर्म के रूप ।

मपना, मपाना, कि प्रे, व 'मापना' के प्रे रूप ।

मक्रर, वि (स) पलायित, गुप्त, अन्तर्हित, प्रच्छन्न, व्यपसृत ।

मम, सब (स) दे 'मेरा' ।

ममता, स स्त्री (स) स्वाम्य, स्वामि व,

ममत्व, म पु (स न) अधिहार, स्वत्व, प्रभुत्व २ स्नेह, प्रभुत्व (पु न) ३ वात्सल्य ४ मोह ५ लोभ ६ अभिमान, गर्व ।

ममिया, वि, दे 'ममेता' ।

—समुद्र, म पु, पति पत्नी-मातुल ।

—साम, स स्त्री, पति पत्नी-मातुली ।

ममियौरा, म पु (हि मामा) मातुलपूहम् ।

ममीरा, स पु (अ मामीरान) नेत्रोदो पकारक धुपमूलभेद ।

ममेरा, वि (हि मामा) मातुलीय, मातुलिक ।

—भाइ, म ए मातुलपुत्र, मातुलेय (—स्त्री स्त्री), दे 'भाइ' के नाचे ।

ममोला, स पु, दे 'रक्कन' ।

मयक, स पु (स मृगान) दे चर्द ।

मयस्सर, वि (अ) प्राप्त, लब्ध २ प्राप्य, सुलभ ।

मयूख, स पु (स) किरण, रश्मि ।

मयूर, स पु (स) दे 'मोर' ।

मयूरी, स स्त्री (स) दे 'मोरनी' ।

मरक, म पु (म) ३ मरा ।

मरकत, म पु (म न) हरिमणि अदम्य
वर्ध मरकत राननीय गरम्भ ।

मरकना, कि अ (अन) मारेण अन भिदूङ्
(कम) ।

मरघट म प (हि मरन + घाट) शतानर,
श्मशान विनृशानन प्रेनभू (स्त्री) ।

मरज्ज म पु (अ मज) रोय - शशि
२ दुष्यमन वृष्टि (स्त्री) ।

मरजिया वि (हि मरन + नीना) मृत्युमुक्त,
मृत्युवोदिन २ मरण उमुरा आमन्न २ मृत
प्रायश्चित्त । म पु (मुक्त र्थ) निवृत्त
विगत ।

मरण, म पु (म न) मृत्यु निधनम् ।

—प्रमा वि (म धमन्) मत्त्व, मरणशील ।

मरतवा, स पु (अ) पद, पदवी २ वार ।

मरतवान, म २ दे 'मृतवान' ।

मरवूद, वि (अ) निरुह्य, अपमानित
२ मुद्र ।

मरना कि अ (म मरण) मृ (तु आ अ),
पचत्व इया (अ प अ) अमृत प्राणान्-
देह तनु जीवित स्वय (भ्वा प अ) उत्सृज
(तु प अ) हा (तु प अ), प्रह (अ
प अ) गतामुपरास (वि) भू, रिपद
(दि आ अ) प्रती (कम), २ कृतेन
निर्धय मर (भ्वा आ मे) २ शुष (नि
प अ) स्ने (भ्वा प अ) ४ अत्यत
रज (तु आ मे) -रज (भ्वा आ मे)
५ परापरि भू (कर्म) पराविति (कम)
६ शन (नि प मे) ७ जीनाते बहिर्द्ध
(कम) । म पु मरण निधन, दे मृत्यु ।

—जीना मु क्षय गये हयगोत्र जी ।

जिनी पर— मु अनुवन् (कम) भव
अनुगत इव (अ प अ) ।

पनी— मु कर्त्तुं दूषित प्रथमजिन (वि)
भू अवगन् अवमन् (कर्म) ।

मरकर, मु, अशय मन, अतिरक्तिनया ।

मरक यचना, म मृत्युमुग्न मरु (कम)
मरणामश्रादि पुन मरक्य रभ (भ्वा
आ अ) ।

मरमिर्ना, मु, धमनिशयेन नन् (दि प मे) ।

मरने तत्क वा कुर्वत न होना, मु, अनिव्या
धन अनवकाय (वि) मर (भ्वा आ मे) ।

मरने योय, वि, मरणाई, -वर्धनीय, २
रुतक सन्, दुष्ट ।

मरनेवाला, म वि, मरिष्यमाण, मरणो मुख,
आमनमृत्यु २ मर्य, मृत्युवध, नश्वर ।

मरा हआ वि, मृत, गतासु पचत्व, गत प्राप्त
इत प्रेत, परेत, उपरत मस्थित, विपन्न, प्रमीत,
विधेयन निषमत्, प्राण ।

मरमुक्त्वा, वि (हि मरना + भूवा) भुषा
अदित-पीडित-आन-अवमन्न २ अकिंचन,
निधन ।

मरमर, स स्त्री (अनु) मर्मर भ्वनि शब्द,
ममर पचत्व, न्वन ।

मरमर, म पु (मृ०) विकणप्रस्तरभेद,
मरमर ।

मरमरा वि (अनु०) भिदुर, भंगुर, दुभग ।

मरमराना, कि अ (हि मरमर) मर्मर
रव क मर्मरायते (न था) २ समर्मरायते
अव भाजम् (भ्वा प अ) ।

मरम्मत म स्त्री (अ) जीर्ण, उद्धार, मरि,
ममधान सधान, सस्कार, नवीकरण, पूर्ण
वहा प्रापणम् ।

—करना, कि अ, पूर्ववत् नवी, क, उद् (भ्वा
प अ), मंममा प्रविशता, वा (लु उ अ)
२ तड् (चु) ।

मरवाना, कि प्रे, व 'मारना' के प्रे रूप ।

मरसा स पु (स मारिष) श्वर, भाषिक
(शारभेद) ।

मरसिया म पु (अ) निधनवाच्य, शोक
मयी बविता ।

मरहटा ग, म पु (म महाराष्ट्र >) महा
राष्ट्रवर्गमिन्, महाराष्ट्रा (वट्ट) ।

मरहटा-डी, स स्त्री (स महाराष्ट्री) माहाराष्ट्री ।

मरहम, स पु (अ) अनु, स्नेह, उपदेह,
सनातन अभ्यसनम् ।

—पट्टी, स स्त्री (अ + त) लिपट्टी,
जोषसार ।

मरहमन, म स्त्री (अ) अनुग्रह, कृपा ।

—करना या प्रहमाला, दे 'देना' ।

मरहूम, वि (अ) स्वर, गत-याद, दिव
गत, मृत ।

मराट्, स पु (सं) राजदत्त २ वारदत्त
२ अथ ४ गत्र ५ मेघ ।

मरिच, स स्त्री (सं न) दे 'मिरी' ।

मरियल, वि (हिं माना) मृगमल, कृग,
निर्जन।

मरी, म स्त्री (म मारी) जन मर,
महनरी, मरिका।

मरीचि, म स्त्री (म पु स्त्री) किरण,
गदि २ वानि (स्त्री) ३ मरुगचिका।

मरीचि, म पु (म) १-४ यधि-मरुद
दानव-दैत्य, विरोध।

मरीच, वि (अ) कृग, रागिन्।

मरीचिका, स स्त्री (स) दे 'मृगवृ'।

मरु, म पु (म) धन्व (पु), मरु-स्थल
स्थली ऊपर-२ खिलन्।

—भूमि, म स्त्री (म) } दे मर'।

—स्थल, स पु (स न) } दे मर'।

मरुभा, म पु (स मरु) गध-मरु पत्र
शीतल-बहुवैयं (धुपमेरु)।

मरुज, म पु (स) दे 'बयु'।

मरोड, म पु (हिं मरोडना) आकुचन,
व्यापन २ अन्न-उदर, वेदना-शूल पीडा
३ दर्प ४ क्रोध ५ दे 'पेविश'।

—कला, म स्त्री, मधुलिका, मूर्वा, मूर्वा,
मधुरमा, रा-दिभ्य, लता।

मरोडना, क्रि स (हिं मोडना) कुचकुच
(भ्या प मे), व्यावृत्त (भे), कुण्डलि
वक्राङ्ग २ पीडा (चु), दुःखयि (ना
धा) ३ मुष्टिना-मुष्ट्या ग्रह (क्र प मे)
पु (भ्या प मे)।

मरोडा, म पु, (हिं मरोडन) दे. मरोड'
(१२) २ दे 'पेविश'।

मरोडी, म स्त्री (हिं मरोटना) दे 'मरोड' (१२)
३ कुविन्-व्यावृत्त, वस्तु (म) ३ अधि।

मरुं, म पु (स) दे 'वदर'।

मरु, स पु (अ) दे 'मरु'।

मरु, म स्त्री (अ) इच्छा, रवि (स्त्री)
२ प्रमत्तता ३ स्वाहृति (स्त्री), अनुदा।

मरु, म पु (म) मनुष्य, जनव,
२ शरीरन्।

—लोह, म पु (म) भूमि (स्त्री), मूलोह।

मरु, म पु (क्रा) जनव मनुज, २ पुम
(पु), पुरुष, नर ३ धीर सहनिन्,
योध ४ पति।

—वत्सा, म पु, वीरवत्।

मरुन, म पु (म न) पदव्या पीडनं
क्रान् आक्रमा २ अव्यन, मरुहनं,
मरुन, दन्ता ३ ध्वनन्, नशन ४ पेया,
चूानन्।

मरुनगा म स्त्री (क्रा) 'गृग', वीरन्,
पुरुषवन्।

मरुना, वि (क्रा) पुग्न-गर-गृह, उचित
२ पुग्न-नर, मरुद उपन विकान, नर पुरुष।

—मेघ म पु पुग्नवेद मरोचिवेध।

मरुदिन वि (म) पुग्न-गृह-गृह-आन
२ सति, चूत ३ मणि।

मरुं, स पु (क्रा) नन, मनुष्य।

—जो, म पु, नरमश्रु मनुष्य।

—शिनाम, वि, नर-मानव, अभिष्ट।

—शुमारो, स स्त्री (क्रा) नन, मरुनं
गाना।

मरु, म पु [म मरु (न)] १ व, स्वरूप
२ रहस्य, गोप्यवृत्त ३ मरिस्थान ४ नीव
स्थानन्।

—ज, वि (स) तवह, नर्मविदिन्
२ रहस्यविद (पु)।

—पीडा, म स्त्री (स) हृद्यन्, ममभ्यथा।

—मेरी, वि (स-दिन्) मरु, मरु (पु)
भेदक देहक-विदारक।

—स्थान, म पु (स्त्री) मरुस्थान, जीवन
स्थानन्।

मरु, म स्त्री (अनु) दे 'मरु'।

मरुं, म स्त्री (स) स्थिति (स्त्री),
धरन्, मरु, नियम २ सीमा ३ कूल
४ प्रतिष्ठा, मरु ५ सदाचार, मरुद
६ शैव, प्रतिष्ठा ७ धर्म।

मरु, म पु (क्रा) मरु, यवनमिपुमेरु
२ उरुमेरु ३ स्वेच्छा-चरिन्।

मरु, म पु (स पु न) अव्य-पुनर,
व्य-च, किं २ वदम, पद ३ उच्चार,
गृह-अ पुरीष, विष (स्त्री), विष्ट, र-कृ
(न), शनलन्।

मरुना, क्रि म (म मरुन) अग (र प मे),
रिप् (तु प मे), रिद् (अ उ अ),
अन् (भ्या प से) २ धृष् (भ्या प मे),
मृद् (क्र प से, भे) ३ परिप्रमृद्
(अ प मे), निव् (तु उ अ) ४ कर

राभ्या चूर्ण (चु) । म पु, जपन, लेपन,
घर्षण, मर्दन, मार्जन, चूर्णनम् ।

हाथ—, सु, अनु पश्चात् तप् (दि आ अ),
अनुचुच् (न्वा प से) अनुशी
(अ आ से) ।

मलवा, म पु (स मल-व) दे 'मल' १२ ।
२ शकलराशि ।

मलमल, स स्त्री (स मन्मल्लक >) *मन्
मल्लक, सूक्ष्म मूलवत्त्वम् ।

मलमाम, स पु (म) अधिमान, मन्मिन्नुच,
असक्तानमान, नपुमसः ।

मलय, स पु (म) दक्षिणाचल, चदनान्द्रि,
ध्यावाट, मलयाचल २ तैलपाणिक, श्वेतचदन
२ नदनवनम् ।

मलयज, स पु (स न) दे 'चदनम्' ।

मलयाचल, म पु (स) मलय, अद्रि गिरि
पर्वत ।

मल्लयानिल, स पु (म) मलय, पवन-जान
समीर ।

मलवाई, स स्त्री (हि मलवाना) मर्दन-जनन
घर्षण, भृति (स्त्री) ।

मलवाना, मलाना, कि प्रे, व 'मल्ला' के
प्रै रूप ।

मलहम, स पु, दे 'मरहम' ।

मलाई, स स्त्री (का बाणई) (दध भी)
मनानी निरा, क्षीर, शर, दुग्ध, अमृतालीय,
शार्कर, शार्कर, (दही भी) दे 'शर' (ध)
२ शर उत्तमाश्र ।

मलामत, स स्त्री (अ) दे 'पञ्चार' ।

मलाई, स पु (म मल्लार) रागभेद ।

मलाल, स पु (अ) खेद २ ओदामी-न्यम् ।

मल्लिक, स पु (अ) नृप २ अधीश्वर ।

मल्लिका, स स्त्री (अ) राक्षी २ अधीश्वर ।

मलिन, वि (म) अधिल, कटुप मन्मथी,
सम, पत्रि मन्दम, मन्दविन २ दुषित,
विह्वल २ धूर्त्तवर्ण ४ धूमवर्ण ५ पण्यत्वम्,
दुष्ट, पाप ६ दिग्गज, स्थानमुप ।

मलिनता, स स्त्री (स) आविर्भाव, रादुःख,
मायि, पत्रित्वम् ।

मलिनमेट, स स्त्री (हि मल्लना + मिन्ना) ।

वि, धर्म-ज्ञान, क्षय, उच्छेद ।

—करना, वि, स, उच्छिद (क प अ),

१ धूमन्ना (प्रे), निम्न (पु) ।

मलीदा, स पु (का मालीदा) मर्दन,
स्निग्धमिश्रोटिराचूर्ण २ अर्णवमन्द,
मर्दन ।

मलीन, वि, दे 'मलिन' ।

मलेरिया, स पु (अ) विषमज्वर, *मशक-
कुपवन-ज्वर ।

मल्ल, स पु (स) प्राचीनजातिविशेष
२ बाहु-योध योधिन् । वि, महाबल, मासल,
स्थूल-महा-काय ।

—भूमि, स स्त्री (स) मल्लाला ।

—युद्ध, स पु (स न) बाहुनि-युद्ध, दे-
'कुशी' ।

—विद्या, स स्त्री (स) नियुद्धविद्या ।

मल्लाह, स पु (अ) नाविक, नी पोत, वाह-
औद्युपिक, मार्गर २ भीवर, कैवर्ण ।

मल्लिका, स स्त्री (म) दे 'मौलिया' २ छन्दो-
भेद ।

मल्ल, स पु (स मल्लुक) मल्ल, दे 'रीठ'
२ बानर ।

मल्लिक, स पु (अ) सुबकिल) अभि-
भाषननियोजक ।

मवाद्, स प (अ) दे 'पीप' ।

मवेशी, स पु (अ मवाशी) पदाव (पु-
वद्), पशुमूह, गोजुलम् ।

—खाना, स पु (अ + का) गोष्ठ घ, वन +
मदा(स)क, स पु (स) दे 'मच्छ' ।

मशक, स स्त्री (का) नलभला खिरा ।

मशकूक, वि (अ) सरेह मंदाय, आस्पद
पान, मरिम्भ ।

मशकूर, वि (अ) कृत्, न विद्-वेदिन,
उपहारण, उपहारमूर्त, आभारिन् ।

मशकवत्, स स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयान ।

मशकवती, वि (अ) उद्योगिन्, परिश्रमिन् ।

मशाला, स पु (अ) कायम्, व्यवसाय,
अर्ज रिरा, वृत्ति (स्त्री) ।

मशाल, वि (अ) व्यापन, व्यग्र, कार्यमग्न ।

मशारिन्, स स्त्री (अ) प्राची, द 'पूर्व'
(दिशा) ।

मशविरा, स पु (अ) समग्रणा, परामर्श ।

मशहूर, वि (अ) विख्यात, प्रसिद्ध ।

—खाना, स पु (स इमशान) दे 'मरपट' ।

मशाल, स स्त्री (अ) दापिरा, सिंघिनी,
अज्ञान, उल्लुख, उल्हा ।

—लेकर या जलान्नर दूटना, सु, मम्यक्
अन्विष (दि प से) ।

मसालची, म पु (अ + का) उन्वाचारिन्,
उत्सुक-दीपिका-वाह्य ।

मशीन, स स्त्री (अ) यन्त्रम् ।

मशक, स स्त्री (अ) दे 'अन्याम' ।

मष्ट, वि (म मष्ट) मौन, निश्चयता ।

—मारता, सु, नृणां स्था (स्वा प अ) भू ।

मसकना, क्रि अ (अनु मन) व 'मस
काना' के कर्म के रूप । क्रि स दे 'मसकाना' ।

मसकाना, क्रि स (हि मसकना) विदल्-
विट् (प्रे), विट् (चु) ३ मरल सृष्ट
(क प मे) निपीड (चु) ।

मसखरा, स पु (अ) विदूषक, मड,
बैहामिन् ।

—पन, स पु, भङ्गा, वैहासिकता, परिहास,
ध्वेज ।

मसजिद, स स्त्री (का) *यवनमन्दिर,
मोहम्मदीयदेवालय ।

मसनद, स स्त्री (अ) च(वा)नुर, चक्रगड,
बुददवालिश महामसरक २ धनिकामनम् ।

मसल, स स्त्री (अ) आभाणक, लोकोक्ति ।
(स्त्री) ।

ममलन्, क्रि वि (अ) यथा, उदाहरण-
दृष्टान्त, रूपेण ।

मसलना, क्रि स (हि मलना) हम्नैः पादेन
वासदृष्ट (क प से, प्रे), सर्पाट् (चु)
२ सवल निपाड (चु) ३ दे 'मथना' ।

ममलहत, स स्त्री (अ) *नावि-गुह, शुभ
मगल भद्र, औचल्य, युक्तता ।

ममला, स पु (अ) दे ममल २ विषय,
ममन्या ।

ममविदा, म पु (अ मुमविदा) । मस्कायं
शोधनय, लय २ ह्मन् अनुदिष्ट, ज्ञेय
३ युक्ति (स्त्री), उपाय ।

—मोधना, सु, उपाय विव (चु) ।

मस(छ)हरी, स स्त्री (स मसहरी) दे
'मच्छन्दानी' ।

मसा, म पु (म मामरीउ २) चमरील २
२ अर्श, कोल-बील, मामकीलक-कम् ।

ममान, स पु (म ममान) विट् वन-मानन,
अतशय्या, शतानक, रद्राकोल, दाह-मरस्
(न) स्थल २ पिशाच ३ राक्षेयम् ।

ममाना, म, पु (अ) मूत्राशय, वस्ति
(पु स्त्री) ।

मसाला, स पु (का) दश(प, स)वार, उप
स्कर, उपस्करमामयी, स्वादन २ उपकरणनि,
उपसाधनानि (न बहु), सामग्री ।

—डालना, क्रि स, उपम्क, स्वादूक, अपि-
वास (चु) ।

मसालेदार, वि (का) उपस्कृत, मोपम्कर,
वेशवायुक्त, स्वादूकन ।

मसि, स स्त्री (म स्त्री पु) मसिचल,
पत्राञ्जन, येन्य, ममी, रवनी, मशी, काली ।

—दान, स पु } म + का दे 'मसिपात्र' ।

—दानी, स स्त्री }
—पात्र, म पु (स न) मसि(सी), कूप-
घटी धानधानी-आधार ।

मसी, स स्त्री (स) दे 'मसि' ।

मसीह, स पु (अ) दे 'ईसा' २ विश्वप्राद ।

मसुहा, स पु [स श्मभु (न) >] दत्त,
मूल-माम, दत्त-बैट ।

मसूर, म पु [स मसु(स)र] मसु(स)रा,
मसूरक-का, मगल्य-स्था, पृथु गुट-कल्याण,
बोज, मोहिमचन ।

मसूरिया, स स्त्री (स मसूरिका) वसत्ररोग,
पापयोग, रक्तवनी, मसूरी, झीतल-ली,
दे 'वेचक' ।

मसूरी, म स्त्री (स) दे 'मसूरिया'
२ दे 'मसूर' ।

मसो(सु)मना, क्रि अ (का अकसोम)
(मनमि) रिट्-डु (कर्म), शुच (स्वा प
मे), नप् (दि आ अ) २ मनोवेग क्
(क प ज) शम् (प्रे) ३४ दे 'मरोटना'
तथा 'निचोन्ना' ।

ममौडा, म पु, दे 'मसविदा' ।

मम्व, वि (का) दे म 'यत्त'(१) २ निश्चिन,
निश्चिन ३ कामुक, कामिन् ४ स्वैरिन्,
स्वेच्छाचारिन् ५ दृष्ट, गवित ६ प्रहृष्ट, अति
प्रसन्न ७ उन्मादिन्, बाहुल ८ समद, मद
धुणित (नेत्रादि) ।

माल्—, वि, वित्तमत्त, घनमूढ ।

मार—, वि, पीनप्रमोदिन् ।

मस्तक, स पु (म पु न) शिरस (न),
उत्तमाग, शीर्ष, मूर्दन (पु), गुट, शिर,
वराग, मौलि, कपाल, केशभू (स्त्री)

२ ललाट, अलि(ली)क, भाट, ग्लाट भाट,
पट्ट, गोधि ।

महन्गा, स स्त्री (अ मन्गरी) उन्नमनियाम
भेद, मन्तगी ।

महन्ताना, वि (फा) मत्त तुल्य गृह्य > मत्त,
शब्द, महिरो मत्त ।

मस्तिष्क, म पु (स न) गोल्, गोर्द,
मन्तकस्नेह, मन्तुलुग (मन्तिष्कभागा—
इह मस्तिष्क, लुमन्तिष्क सुपुष्पाशीपकम्) ।

मह्ती, स स्त्री (फा) मत्तना, स्याता, शब्दता,
मदादयता, उन्नमना, २ सुतेकत्र, रतिनामना
३ अभिमान ४ मद, मदनल, दानम् ।

महत्तल, म पु (पूर्व) रूप, गुणवृद्ध-शब्द,
रूपवृद्ध ।

महत्ता, म पु, दे 'मत्ता' ।

महंगा, वि (म महा) महाह, बहु महा, मूल्य ।

महंगाई, स स्त्री (हि महंगा) महापना,

महंगा, बहुमूल्यता > दुर्लभ, दुष्प्राप्त ।

महत्, म पु (स महत् >) महाधीश,
२ साधूत्तम । वि, प्रधान, श्रेष्ठ ।

महती, स स्त्री (हि महत्) महाधीशता
२ साधुनेतृत्वम् ।

महक, स स्त्री (महमह मे अत्र) दे 'महाभ' ।

—दार, वि (हि+का) दे 'सुगधित' ।

महकना, कि अ (हि महक) सुवास-
कीरम उत्कृष्ट-सुब् (शु प ज) ।

महकमा, म पु (अ) विभाग ।

महकाना, वि (हि महकना) अति,
बाम् (बु), सुरभीष्ट, धूप (बु स्त्री प, मे),
परिमलवति (ना धा) ।

महकूम, वि (अ) ग्रामिन, अधीन २
अ दिष्ट, आचारित ।

महज, वि (अ) शुद्ध, वेद । वि वि, सबल,
ज्व, माना ।

महज्, वि (अ) गुप्त, विशाल, बृहत्, रक्ष्,
दोध २ उत्तम, श्रेष्ठ ।

महता, म पु (स महत् >) प्रामाणी (पु),
अग्रिम, पुराण, नायक > मर्याद, वायस्व ।

महतान्, म पु (फा) चंद्र, सप्त । स स्त्री
(फा) त्रिदश, त्रीमुदी ।

महतानी, स स्त्री (फा) वनिताकाराग्नि
कीदलवन्द, चन्द्रमा ।

महतारी, म स्त्री दे 'माना' ।

महती, वि स्त्री (म) बृहती, विशाला,
विपुला, प्रचुरा ।

महतो, म पु (स महत् >) प्रामाण्यक,
ग्रामणा (पु) ग्रामाध्यक्ष ।

महत्तत्त्व, म पु (म न) प्रवृत्ते प्रथम
विचार (माग्य), बुद्धितत्त्वम् ।

महत्तम, वि (स) महिष्ठ, ज्येष्ठ, श्रेष्ठ, महिष्ठ,
गह्रिष्ठ, विशालतम, प्रथित । स पु (स न)
[= आदे आनम (गणित)] ।

महत्तर, वि (सं) बृहत्तर, श्रुततर, विशाल
तर, उत्तर ।

महद्व, वि (अ) मित, परिमित, मनीम,
मयादित ।

महज्जिल, स स्त्री (अ) मगीतममा, प्रमोद
परिपद (स्त्री), रगशाला ।

महकृत्, वि (अ) सुरभित, परि, प्रात प्राण ।

महवृत्, म पु (अ) प्रिय, वात, दयित ।

महवृत्ती, म स्त्री (अ) प्रिया, वाता, दयिता ।

महारा, स पु (सं महत्तर >) दे 'कहार' ।

महाराव, स स्त्री, दे 'मेहराव' ।

महस्म, वि (अ) दक्षित, विरहित, दीन
(प्रायः सब समानात् मे) ।

महर्षि, म पु (स) कपीश्वर, ऋषिश्रेष्ठ
> रामभेद ।

महल, स पु (अ) प्रासाद, मीथ ध, हर्ष्य,
रान-नृप, कुल-भवन मंदिरम् ।

—मरा, स स्त्री (अ+का) अन्तपुर,
अवरोध ।

महल्ला, म पु (म) पुरभाग, नगरविभाग ।

महल्लेदार, स पु (अ+का) पुरभाग
नायक २ समपुरभागवासिन् ।

महमूर, वि (अ) परिवेष्टित, रक्ष, वाधित,
परिहृत ।

महमूल, स पु (अ) सर, राजस्व, शुभ्य
व, वणि २ भाट, भाट ३ दे 'मान्युगारी' ।

—मना, म पु, वारभू (स्त्री) ।

महमूम, वि (अ) अनुभूत, हात, उपगत
अवगत, निदिष्ट ।

महा, वि (मं महत्) अत्यंत, अत्यधिक,
अनिष्ट, बहून् २ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट
तम ३ किम्भीर्य, विशाल, विपुल ।

—काय, वि (सं) विशालदेह ।

—काल, म. पुं (सं) शिवरूपविरोध ।

- काली, म स्त्री (म) महाकालपत्नी ।
 —काव्य, म पु (म न) भगवत्, काव्य मेद ।
 —जन्त, म पु (म) मन्त्रन २ शरर ।
 —द्वय, म पु (म) द्विव ।
 —दवी, म स्त्री (म) दुगा २ पट्टराज्या उगारि ।
 —द्वीप, म पु (स) मूखड वर्षे वम् ।
 —धातु, म पु (म) सुवर्णम् ।
 —निद्रा, म स्त्री (म) मृत्यु ।
 —निशा, म स्त्री (म) निशीथ, अर्द्ध नय रात्र रात्रि (स्त्री), महागन्धम् ।
 —पथ, म पु (म) प्रधानमहापथ, मार्ग २ मृत्यु वग-श्री, पथ, सन्तरण, राज वमन् (न) ।
 —पाप, म पु (स न) महापापकम् ।
 —रापी, म पु (स-पितृ) महापापकित् ।
 —पात्र, म पु (स) मुख्यप्रधान महा, मन्त्रिन्-अमात्य-मन्त्रिव ।
 —पुह्य, म पु (म) पुरुषधम, नरोत्तम २ दुष्ट (व्यग्रमे) ।
 —प्रभु, म पु (म) पवित्रात्मन्, महात्मन् २ नृप ३ विष्णु ४ शिव ५ इन्द्र ।
 —प्रलय, म पु (म) त्रिलोकीनाश, सम्प्रत महा ।
 —प्रस्थान, म पु (स न) मृत्यु ।
 —प्राण, वि (स) महात्मन्, महाबल । स पु (स) वर्गमालाया अक्षरविशेषा (स्, घ्, छ, झ, ङ्, ढ्, ध्, ष्, क्, म्, श्, य, न इ) ।
 —बली, वि (म-निन्) बलिष्ठ ।
 —बाहु, वि (स) दीन-आनन्, बाहु २ बल वत् ।
 —त्राक्षण, म पु (म) गद्यविप्र ।
 —माग, वि (म) मौम्यवशब्धिन् ।
 —मारुत, म पु (म न) व्यमप्रगान इलोमन इतिहामप्रव ।
 —माध्य, म पु (म न) अष्टाध्यायीप्राणा पतन्किन्तु उद्गमाध्यन् ।
 —माय, म पु (म न) (१८) गानर-गन्धोत्क महिष-वराह-उष्ट्र-मय-मामम् ।
 —माई, स स्त्री (स + हि) दुगा २ काली ।

- माया, म स्त्री (म) प्रकृति (स्त्री) २ दुगा ३ गगा ४ गौतमबुद्धनमी ।
 —मारी, म स्त्री (म) मार्गिका, वनमार ।
 —मुनि, म पु (म) मुनिपुंगव, मुनीन्द्र ।
 —मूल्य, वि (म) महाप, बहुमूल्य ।
 —यज्ञ, म पु (म) ब्रह्मयज्ञ २ अग्नि प्रत्यह काया पचयता (मङ्गयन्, देवयज्ञ, पितृयज्ञ नृवय, बलिवैश्वदेवयज्ञ) ।
 —यात्र, म स्त्री (म) मृत्यु ।
 —युग, म पु (स न) चतुर्वर्गी ।
 —रथी, म पु (म महारथ) महायौव ।
 —राचा, म पु (म महाराज) रानैश्वर, रात्रि, नृपश्रेष्ठ मन्त्राज (पु), अग्निमन्त्र ।
 —राचाधिराज, म पु (स) चक्रवर्त-मार्क-मौम-नृप ।
 —रात्रि, स स्त्री (म) महाप्रलयपाकार २ दे 'महानिद्रा' ।
 —रानी, म स्त्री (स महारानी) अधिरानी ।
 —हाम, स पु (स) अट्टहाम, अग्नि, हाम हन्तिम् ।
 —महानन्, म पु (म) नरधर्म, पुरुषोत्तम २ मातु ३ भविक, धनद्वय ४ कुमीदिक दिन, बाहुपिक पितृ उगद ५ वणिज् (पु) ६ आप, मन्त्र ।
 —महाननी, स स्त्री (स महानन् >) वृद्धि जीविका, अर्थप्रयोग, कुमीद, कौमीध २ लिपिरिशेष ।
 —महावम, स पु, दे 'महात्म्य' ।
 —महात्मा, स पु (म-स्मन्) महाशय, महा नुभाव, महामनम् (पु), उदारचरित ।
 —महान्, वि (म महन्) दे 'महा' (१३) ।
 —महाराष्ट्र, स पु (म) दक्षिणापथे प्रातर्विद्येय ।
 —महाराष्ट्रो, म स्त्री (स) दे 'महद्दी' २ प्राकृतभाषाभेद ।
 —महावन, म पु (महावाज) हस्तिपक, हस्तिनक गवाताव, निशादिन, आपोरण, इष्य ।
 —महानर, म पु (स महावर्ण) वाव-यावरु-अश्वक-आशु रम् ।
 —महावरा, म पु, दे 'महावरा' ।
 —महाशन, वि (म अद्मर, धम्मर, औदरिक, उदरमरि ।
 —महाशय, स पु (म) महात्मन्, महामनम्,

सज्जन, आर्य, उदार, चेतसःमति धी, महा
नुभाव । (स्त्री महानया) ।
महासूत्र, वि (स) उच्च, पदस्थ अधिरात्रि
२ शक्तिशालिन्, सशक्त, शक्तिमत् ।
महि, म स्त्री (स) दे 'पृथिवी' ।
—पाल, स पु (स) दे 'राना' ।
महिमा, स स्त्री [म महिमन् (पु)] महत्त्वं,
माहात्म्य, गौरव, महत्ता, गरिमन् (पु),
गुह्यत्वं २ स्त्री (स्त्री), शोभा, प्रभाव,
महाप, ऐक्य (न), श्रवण, विशुद्धि (स्त्री)
३ सिद्धिविशेष (योग) ।
महिला, सं स्त्री (सं) नारी, रामा, स्त्री,
ललना, कनिता ।
महिष, स पु (स) असुरविशेष २ दे 'मैसा'
३ अभिषिक्तो नृप ।
महिषी, स स्त्री (सं) ३ 'मैसा' २ पट्टराक्षी ।
मही, स स्त्री (सं) दे 'पृथिवी' ।
—धर, स पु (सं) पर्वत, गिरि २ शेषनाग ।
—प, पति, सं पु (स) दे 'राजा' ।
—रह, स पु (सं) वृक्ष, पादप ।
—सुर, सं पु (स) नाक्षत्र ।
महीन, वि (महाक्षीण) दे 'सक्ष्म' तथा
'बारीक' ।
महीना, सं पु [स मास, नास् (पु), मि
का माह] दे 'मास' २ मासिवर्तनम् ।
महुआ, स पु (स मधूक) गुह्यपुष्प, मधु
द्रव्य, मधु, मधुक, मधु, पुष्प-वृक्ष खव,
माधव ।
महेंद्र, स पु (सं) दे 'इन्द्र' २ विष्णु
२ पवनविशेष ।
महेश, सं पु (सं) शिव २ ईश्वर ।
महेश्वर, स पु (सं) शिव २ परमेश्वर
३ सुवर्णम् ।
महेश्वरी, सं स्त्री (सं) दुर्गा, शक्ति ।
महोत्पल, स पु (सं) महा-लण उद्वर्ध-
पवन् (न) महत् (न) मह ।
महोदधि, सं पु (सं) महा-सागर-अधि ।
महोदय, सं पु (सं) महाशय महानुभाव
(अद्वयमूर्त महाधन) २ ऐश्वर्य, वैभव
३ स्वर्ग ४ मोक्ष । (स्त्री महादया)
महोपाध्याय, सं पु (सं) प्राध्यापन-
पन्न ।
महोपध, सं पु (सं न) भूम्यादुप्य २ दुर्दी

३ लघुन ४ वाराहोद ५ वत्सनाभ
६ विष्णु ७ अनिविषा ।
माँ, स स्त्री (मा) दे 'माता' ।
माग, सं स्त्री हि मागना) दे 'मागना' ।
स पु २ आवरणता, पृच्छा, निपृच्छा,
प्रेम्मा, लिप्मा ३ प्राथनाविषय ।
माग, सं स्त्री (स मागं ?) सीमा,
मूर्द्धनरेखा ।
—निकालना, कि स, सीमान्वति (ना भा),
सीमा उन्नी (भ्वा व अ) ।
—छोटी, सं स्त्री, वेदा, विन्यास सूक्तार ।
—जली, स स्त्री, विषदा ।
माँगना, कि अ (स मार्गण >) मिष्ट
(भ्वा आ से) शिक्षाटन कृ । कि स,
याच (भ्वा आ से), अभिप्रार्थय (लु
आ से) २ शरणं कृ अथवा मष्ट (क प से) ।
सं पु, मिक्षण, मिष्टा, मिक्षाटन, याचन-ना,
याद्या, अभ्यर्चन ना, प्राधन-ना ।
मागने योग्य, वि, याचनीय, अभिप्र-अर्ध-
नीय, प्रार्थयितव्य ।
मागनेवाला, स पु मिष्ट, मिष्टुक, याचक,
प्रार्थक, प्रार्थि ३ ।
मागलिक, वि (सं शिभ शुभ-वर (स्त्री स्त्री),
शिव, शुभ, वरदाण (स्त्री स्त्री), मगल, भद्र,
मागव्य ।
मागल्य, वि (सं) दे 'मागलिक' । स पु
(सं न) शुभ, भद्र, वरदाण, शिवम् ।
मागा हुआ, वि, प्रायित, याचित ।
माँजना, कि स (सं मार्जन) प्रसन्नम्
(अ प से, लु), प्रक्षाल (लु), धाव
(भ्वा व से, लु), अवनिर्, निवृ (जु
उ अ), पवित्री कृ २ पतंगपुर्ण तीक्ष्णोक्त,
मृज् (भ्वा व से) । कि अ, अभ्यस
(हि प से) । सं पु, मार्जन, प्रक्षालन,
धावन, अभ्यसनम् ।
माँजने योग्य, वि, मृज्य, मागनीय, प्रक्षाल
नीय, भावनीय ।
माँजनेवाला, सं पु, मार्जर, प्रक्षालक,
धावर, पावर, साधर ।
माँजा हुआ, वि, मागन, मृज, प्रक्षालित ३ ।
माँझी, सं पु (सं माय >) पुन्नित, नदी
मध्यस्थ, जीव २ वरप्रदं मन्त्रजनं ३ जीवा
दिव पावने ४ प्रसाद, राय ।

मौझा, स पु (स माने) *पतगुण
गुण, *माने ।

मौझी, म पु (म मध्य) दे 'मज्ञाह' ।

मौड, स पु (स मट-ड) भक्तमट, जाच प,
पिच्छा-जन्ना, निम्ब(मा)न, मासर, पिच्छा
चउन ।

मौडना, क्रि म, दे 'रौदना', 'मसलना'
और 'पूषना' ।

मौडलिक, म पु (स) मंडल, इश्वर-अधीश,
अध्यक्ष ।

मौडव, म पु (स मडव) औद्वाहिकमटप ।

माडवी, म स्त्री (म) भरतपत्नी कुशाब्जपुत्री ।

माडा, स पु (स मडव) पिष्टकभेद ।

माँडी, म स्त्री (स मड >) इवेनमार
मड-डम् ।

मात्रिक, वि (स) मन्त्र, मन्त्रविद् विपयक ।
म पु (स) मन्त्रविद्, वेदपाठिन् २
अभिचारिन्, मायिन् ।

माँद, वि (स मड) नि श्रोक, खिन्न, विवर्ण
२ मदनर, निवृत्तनर, मलिनतर ।

माँद, म स्त्री (देश) शुष्कगोमयराशि,
शुष्कचय २ (हिसपशुना) गुहा, गहर,
विवरम् ।

माँदगी, स स्त्री (का) रोग २ क्लानि
रुग्नि (स्त्री) ।

माँदा, वि (का) श्रान्त, क्लान्त २ अवशिष्ट
३ रुग्ण, रोगिन् ।

माम, स पु (सं न) पिशिन, पल, पल्ल,
तरस, कृष्य, आमिष, असन, कीर, जान्म ।

—का घी, स पु, माम, नर स्नेह, मेदम
(न) ।

—पेक्षा, म स्त्री (स) शरीरस्थ माम
पिन्ध, मामपिटी, रुमा, वरुमा, रुनायु,
रुनाव (ये पुरुष मे ५००, स्त्रियों मे ५००
होती है) २ द्वितीयसप्ताहे गमरूपम् ।

—मसक, स पु (स) मास, अद् (पु)
अ मोनिन् मक्षिन्-आहारिन्-आशिन् ।

—मक्षण, म पु (स न) माम मो-न
अशन अदन-आहार ।

—रस, स पु (म) माममड-ड, दे 'वपनी' ।

मामल, वि (स) पीन, पीवर, मामपूर्ण
२ पुष्ट, इडाग ३ बलवत्, बलिन् । म पु,
दे 'उडद' ।

मा, म स्त्री (म) लक्ष्मी (स्त्री)
२ मातृ (स्त्री) ।

—वाप, म पु, दे 'मातापिता' ।

माइकरोमीटर, स पु (अ) अनुनापकम् ।

माई म स्त्री [स मातृ (स्त्री)] दे 'माता'
२ वृद्धा, जरती स्थविरा ।

—का लाल, स पु, उदार, वदान्य
२ वीर शूर ।

माकूल, वि (अ) यथार्थ, न्याय्य, उचित,
युक्त, योग्य २ पर्याप्त ३ उत्तम ।

माखन, म पु, दे 'मक्खन' ।

—खर, म पु, श्रीकृष्ण ।

मागध, स पु (स) मगधवामिन् २ जरा
मध ३ चारण, वदिन् ।

माघ, म पु (स) शिशुपालवधमहाकाव्य
लेखरी महाकविविशेष । २ तपन् (पु),
मार्गविशेष (जनवरी-फरवरी) ।

माजरा, स पु (अ) वृत्त, वृत्तान्त २ घटना ।

माजाया, वि (सं मानान) मोदर, सहोदर,
सोदर्य ।

मान्, स पु (का) मन मायि छिद्रा, फल,
मायिका ।

—फल, स पु (का+म) माया-मायि
छिद्रा, फल, मायिकम् ।

मानून, म स्त्री (अ) अवलेह, लेह
(औषध) २ संगामिश्रितावलेह ।

माद, म पु (दि मग्का) बृहत्तिलमाड
२ 'मग्का' ।

मार्नी, म स्त्री, दे 'मिट्टी' ।

माषिक, म पु (स मागिष्य) शोग, रत्न
उपल, पञ्चराग, लोहितक, रत्नम् ।

मातग, म पु (स) द्विप, गन ।

मात, स स्त्री (अ) परा-अभिपरि, भव,
पराय २ पराजित, परास्त, पराभूत ।

—करना, क्रि म, विवि (म्वा आ अ),
पराभू ।

—होना, क्रि अ, पराभू (कर्म), विजित
(वि) भू ।

मातग्लि, वि (अ मोटग्लि) अनु-जशीन,
मध्यम, सामान्य, मध्यमवृत्तिक ।

मातवर, वि (अ मोतवर) दे 'विषसनीद' ।

मातवरी, स स्त्री (अ+का) दे 'विषस
नीयता' ।

मातम, म पु (अ) मृत्क, शोर कदन,
विलाप परिदेवना ।

—मृत्ना, म पु, शोर्मदन्व ।

—पुर्मी, सं स्त्री (अ + का) आत्मना, आत्मन,
मत्वन, शोर्मदमन अनुशोचनम् ।

—पुर्मी करना, कि म अनुशोक प्रकाश
(प्र) अनुशुच (श्वा प से), मृत्कव धून
समाश्रम (त्रे) ।

मातमी, वि (का) शोक मृत्क प्रकाशपूर्ण ।

—लिचाम, स पु (का + अ) शोक वेदा (ष) ।

मातरिद्धा, स पु (म + अ) बापु दे
वाप, पवन अनिल ।

मातरि, स पु (म) इद्रसारथि ।

—सूत, म पु (स) सुरेश, शचीपति, इद्र ।

मातहत, वि (अ) अधीन, आयत्त ।

मातहती, म स्त्री (अ मातहत) अधीनता,
आयत्तता ।

माता, सं स्त्री [स मातृ (स्त्री)] जननी,
जनपित्री शुभ्र (स्त्री), जनीनि (स्त्री),
पतित्री, सवित्री, प्रभु (स्त्री), अद्या, अद्या,
अविका, अवानिका, माता (मन्वित) ।
२ वृद्धा, स्थविरा, पूज्यनारी ३ गौ (स्त्री)
४ भूमि (स्त्री) ५ शीतलानी, दे 'वैचक'
६ मच्छीरिका, दे 'खमरा' ।

—छलना, कि अ, शीतल दम् (दि प से) ।

—निकलना, कि अ, शीतल आविर्भू ।

—पिता, म पु पितरी, मातापितरी, मातर
पितरो, मातानी, अबाजनवी ।

—मह, स पु (स) मातुर्ननक ।

—मही, स स्त्री (सं) मातुर्नननी ।

होरी—म स्त्री, लघुमयिका (हि लक्ष्म
काकदा) ।

माता, वि, दे 'मत्त' (१) ।

मातुल, स पु (स) मातृप्राण, पित्रुदाल,
मातुल ।

मातुली, सं स्त्री (सं) मातुलानी,
मातुलपत्नी ।

मातु, स स्त्री (स) दे 'माता' ।

—माया, सं स्त्री (म) अममया ।

मातृक, वि (मं) मातृ विषय-सम्बन्ध ।
मं पु (मं) दे 'मत्त' ।

मातृका, सं स्त्री (मं) दे 'मात' ७ उर
वि, माता, मातृमयनी ३ माया, मातृका,

अमयाली ४ अमोत्यादय सप्तदेव्य ५ स्वर
वर्णविहानि, माता (१, २, ३) ।

मात्र, अव्य (स मात्र) एव, केवलम् ।

मात्रा, सं स्त्री (स) परिप्र, पात, मन,
अश, भाग ७ सकृत्पेय्य औषधना
३ मात्रिका, कला, ह्रस्ववर्णोच्चारणार्थिन
काल ४ स्वरवर्णविह (१, २, ३) ।

मात्मन्य, म पु (म न) दे 'मत्तम्' ।

माया, म पु (म मन्मक-क) दे 'मत्तक'
(२) अश, अम भाग देश ३ मूर्धन्य (३),
शिरसम् ।

—पञ्ची, } सं स्त्री, दे 'मग्नपञ्ची' ।

—पिटन, } सं स्त्री, दे 'मग्नपञ्ची' ।

—टेकना, मु, चरणयो पद (श्वा प से),
प्रगम् (श्वा प अ) ।

—उनकना, मु, भाविमकट आशङ्क (श्वा
आ से) ।

—रगदना, मु, शब्दयो पतित्वा शब्द
(श्वा आ से) ।

मादक, वि (म) मद-कारक-अलक ।

मादकता, सं स्त्री (स) मदकारकता ।

मादर, सं स्त्री [का, मि स मातर (मातृ
से)] जननी, जनिनी, मातृ (स्त्री) ।

—हाद, वि (का), मि स, मातृमान
सहज, स्वाभाविक, नैसर्गिक, जात्याजमना
वमन (अध, बधिर इ) ३ रिगदर,
नग्न ३ सोदर, सहोदर ।

मादा, सं स्त्री (का) नारी, स्त्री, स्त्रीजनी
दवी बीव ।

मादा, सं पु (अ) प्रहृति (स्त्री) उदा
दानकारण २ योग्यता ३ दे 'पीप' ।

माधक, मं पु (स) विष्णु, नाटयण
२ वैद्य ३ वसन ।

माधवी, मं स्त्री (सं) वामनी, सुगंधा,
चद्रवती, मदलता, अरिमुक्त माधविना
२ सुप्रभेद ।

माधुरी, म स्त्री (मं) मधुरता २ सुतरता
३ मधम् ।

मातुर्य, मं पु (म न) मधुरता-रु,
मिष्टत्व, स्वादुत्व मधुमयता मिष्टता २ मीन्द्र्य,
रावण्य ३ वित्तद्वयीभावमयी हृद, वाच्य
गुणभेद ।

माध्यदिन, वि (म >) मध्य, मध्यम, मध्य
वर्तिन । ॥ पु, मध्याह्न, मध्य(ध्ने) दिनम्,
उदिनम् २ वाजसनेयिसंहिताया शास्त्रविशेष ।
माध्यम, वि (स) माध्यमक [—मिका
(खी)], माध्यमिक (—मिकी खी)
माध्य [—प्यी (खी)], वेन्द्रीय, मध्यम ।
स पु (स न) उपकरण, साधन २ गृह
संदेशहर ।

माध्यमिक, वि (स) मध्य, मध्यम, मध्य
वर्तिन । स पु बौद्धसम्प्रदायविशेष ।

माध्यस्थ्य, स पु (स न) दे 'मध्यस्थता' ।

माध्वी, स खी (स) मध्यादिनिमित्तपुत्र
२ माधवी, वासन्ती, सुगन्धा ।

मान, स पु (स) गर्व, अभिमान, दर्प,
अहंकार, अवलेप २ समान, प्रतिष्ठा, आदर,
समावना, पूजा, प्रश्रय-यण ३ कोप, प्रीति
प्रसाद-अभाव । (स न) यौनिक, पौनिक,
माय्य, हुष्य (हि तौल नाप) २ मय-रि-
माण, मात्रा ३ इच्छा, विहंगर ४ भर,
गुस्त्व, तोन् ५ मारभाव, परिमाण, मात्र,
माह ६ मान, नट-सूत्र ७ साधन, हेतु,
युक्ति (खी) ।

—करता, कि स, सप्तपुरस, कृ, सनव
(प्रे), पूज-नट (जु) । कि अ, मान था
(जु उ अ), कृ (दि प से) २ इप्
(दि प थ), गव (भ्वा प से) ।

—चित्र, स पु (स न) देशाष्टित्व, प्रदेश
चित्र, दे 'नक्शा' ।

—मदिर, स पु (स न) वैषणाला २ कोप
मदन, मानगृहम् ।

—मनौती, स खी (स + हि) दे 'मन्न' २
पाठपरिवर्धेमन् (पु न) ३ कौनप्रमा
दन-ने ।

—मोचन, स पु (स न) कोर, उपशान्तन
अपनयन, प्रसादनम् ।

—रखना, कि स, दे 'मान करना' कि स
२ स्वभिमान-आत्मसमान रख (भ्वा प से) ।

—हानि, स खी (स) अप-परि-वाद,
अनमाया अवधीरणा, मानमय, अवमनना ।

मानता, स खी (हि मानना) दे 'मन्न'
२ समन, प्रतिष्ठा ।

मानना, कि अ (स मनन) कल्प (प्रे),

तर्क (जु), उत्प्रेष (भ्वा आ से) २ अगी
स्वी, कृ अभ्युपगन्, अभ्युप ३ (प अ),
मन् (दि आ अ) ३ सम्मार्गागमिन् मू ।
कि स, दे 'मानना' कि अ २ दक्षप्रवीण
पूज्य मन् (दि आ अ) ३ श्रद्धा (जु उ
अ), विशस् (अ प से) ४ दे 'मन्न
मानना' । स पु, स्वी-अगी, वरण-कार,
अभ्युपगम-गमन, कल्पन, उत्प्रेक्षा-क्षा,
विशसनम् ।

माननीय, वि (स) पूज्य, पूजनीय, सत्काय,
आदरणीय, समान्य ।

मानने योग्य, वि, स्वी-अगी, कार्य, मत्तव्य,
अभ्युपेय २ अद्वेय, पूज्य, विशसनीय ।

माननेवाला, स पु, स्वीकर्तृ, मन् ३ श्रद्धा
जु, विशामिन् ।

मानव, स पु (स) दे 'मनुष्य' ।

मानवी, स खी (स) मानुषी, स्त्री, नारी ।
वि, मानव, मानुष, पौरुषेय, मनुजोचित ।

मानम्, स पु (स न) मनम चेतस् (न),
हृदयं, दे 'मन' (१४) । २ वैजानवनी
सरोवरविशेष ३ कामदेव, कदप । वि,
माननिक, चैत बौद्धिक, हार्दिक ।

—शास्त्र, स पु, (स न) मनोविद्वानम् ।

मानसिक, वि (म) मनोमय, मनस, दे
'मनम' वि ।

माना हुआ, वि, स्वी-अगी, कृ, मन २ पूजित
प्रतिष्ठित, विश्वस्त ।

मानिक, वि (का) गुण्य, सहस्र, अद् ।

मानिक, स पु, दे 'मानिक' ।

मानित, वि (स) आहुत, प्रतिष्ठित, पूजित ।

मानिनी, स खी (स) रणन-प्रिका । वि,
मानवती, अभिमानिनी २ रण, प्रतीया,
दुनिता ।

मानो, वि (स निन्) अहंकारिन्, हृत्त,
गन्धन २ समानित, प्रतिष्ठित । स पु, रूढ
नायक २ मिह ।

मानो, स पु (अ) अर्थ, तत्पर्य २ तत्त्व,
रहस्य ३ प्रयोजनम् ।

मानुष, स पु (स) मनुष्य, नर, दे
'मनुष्य' २ प्रमाणभेद (धन) । वि, मानु
षि(वृक), मानुष्यक, मनुष्यमवाधन, मानुष्य,
मानुषीय ।

मानुषिक, वि (म) दे 'मानुष' वि ।

मानुष्य, म पु (म न) अनुष्यन्त्वम् । वि,
दे मानुष वि ।

माने, म पु > मनी (१३) ।

मानो, अव्य (हि मानना) इव, (प्राय मन्)
(दि आ अ) मे अनुवाद करते हैं ।

मान्य, वि (स) दे 'माननीय' ।

माप, म स्त्री (हि मापना) (सामान्य)

मान प्रपरिमाण, यौ (पौ) त्व, पण्य,

द्रव्य १ (मन्नादि) मान, दृढ छत्र ३,

३ (बद्धा) भारिमान, माट मान ४ (पात्र)

प्रतीमान, प्रत्य ५ मान, मापन, माननिरूपण

६ परिमाण इयत्ता, दे 'मान' ।

मापक, म पु (सं) माननिरूपक, माट (पु)

२ दे 'मप' (१४) ।

मापन, म पु (म न) दे 'मापना' स पु ।

मापना, कि म (मं मापन) प्रपरिमा

(अ प अ जु आ अ, दि आ अ)

मान निरूप (लु) २ गुण (लु), भार

निरूप, दे 'तोल्ना' । म पु, मन, मान

निरूपण मापन मरित (स्त्री), तोलन,

मारनिरूपणम् ।

मापनै योग्य, वि, परि, ज्ञेय, तोल्यितव्य ।

मापनैवाला, म पु, दे 'मापक' ।

मापा हुआ, वि परि मित, नापमान, तोलित ।

माफ, दि दे 'मुआफ' ।

माफिक, दे 'मुआफिक' ।

माफी, दे 'मुआफी' ।

मासना, म स्त्री (स ममता) दे 'ममता'

(१४) ।

मासनी, स पु, दे 'मातुल' ।

मासनी, स स्त्री (जा) मातृ (स्त्री) जननी

२ वृद्धा ३ दानी ४ धात्री, मातृश ।

मासि (म) ला, म पु दे 'मुआसिला' ।

मासो, म स्त्री दे 'मातुली' ।

मासू, म पु, दे 'मातुल' ।

मासूल, वि (अ) दे 'अदत' २ शीवि-

परिपत्नी (स्त्री) ।

मासूली, वि (अ) माधारण, मासाय ।

मायश, म पु (हि माय) उदय विन-

मय गृह्य ।

मायल, वि (जा) जानन, यज्ञ, प्रवा

२ निधिन ।

माया, सं स्त्री (म) द्रव्य, धन, सपद् (स्त्री)

२ ज्ञान, आति (स्त्री), मयिया ३ छल,

कष्ट ४ प्रवृत्ति (स्त्री), सृष्टे वषादान

कारण ५ शरीरयशस्ति (स्त्री) ६ इंद्रजाल

कुहक ७ देव, लीला शक्ति (स्त्री) प्रेरणा

८ ममता-स्वम् ।

—कार, म पु (सं) मायाजीविन, देव

जालिक ।

—जोड़ना, कि स, धन स वि (स्वा प अ) ।

—मोह, स पु (स) जगज्जाल २ ममता

स्वम् ।

—रूप, वि (स) मायामय, अलीक, आति

मय, मायिक ।

—वती, सं स्त्री (सं) रति (स्त्री), काम

पत्नी ।

—वाद, म पु (स) आतिवाद, जीवजग

न्मिथ्यात्ववाद ।

मायाजीनी, स स्त्री (स) मयिनी, कपटिनी,

वचनशील २ पैँद्रजालिकी ।

मायावी, स पु (स विन्) मायिन् कपटिन्,

वचक, धूर्त, छठ १ पैँद्रजालिक, कुतुक

जीविन्, मायाकार ।

मायिक, वि (स) कृतक, कृत्रिम, २ दे

'मायावी' (२) ।

मायी, वि (म विन्) मायाविन्, धूर्त, वचक,

कपटिन् ।

मायूस, वि (का) दे 'निराश' ।

मायूसी, स स्त्री (का) दे 'निराशा' ।

मार, म पु (स) कामदेव २ विघ्न

३ विष ४ सुन्दर ।

मार, म स्त्री (सं मु) मारण, हनन,

हिमन २ पात, बध, हत्या ३ ताडन, आह

नन, प्रहरण ४ आघात, प्रहार ५ सुन्दम् ।

—का, म स्त्री, मुद्र २ बध, पात, हनन,

हिमनम् ।

—घाट, } म स्त्री, मारना, मारणनाडन,

—पीट, } अभिमर्द, अभिमर्दान ।

—खाना, } मु. गद् मट (वर्म) ।

—गहना, } मु. गद् मट (वर्म) ।

—गिराना, मु, अहृत्य निपट (प्रे) ।

—हालना, मु, हन (अ प अ), गृह्या

पद् (प्रे) ।

—बैठना, सु, परद्रव्य कपटेन आत्मसात्-कृ ।

—भगाना, सु, विद्रु (प्रे), पलाय (प्रे),
सर्वथा परा वि (भ्वा आ अ) ।

—मारना, सु, भूय-अत्यर्थं निर्दय तद् (चु) ।

—लाना, सु, लुट् (चु), अन्यायेन अपह
(भ्वा प अ) ।

—लेना, सु, दे 'मार बैठना' ।

—हृदना, सु, बलेन अपसु (प्रे)-विद्रु (प्रे) ।

भारक, वि (म) धातुक, हिंसन, महात्क,
नाशक ।

भारका^१, स पु (अ मार्क) चिह्न, लक्षण,
अभिज्ञानम् ।

भारका^२, स पु (अ) युक्त, मग्राम २
विनिष्ट, वृत्त-वदना ।

भारकीन, स ली (अ नैवविन्द) भारकीन,
स्थूलबलभेद ।

भारण, स पु (स न) इनन, हिसन,
व्यापादन २ तात्रिकप्रयोगभेद ।

भारतौल, स पु (पुर्त० मोर्टेनी) महा-वृहद्,
घन विघन ।

भारता, कि स, (स भारण) वृत्त्यापद
(प्रे), हन् (अ प अ), हिंस (भ्वा रु
प ने) मृद् (चु) २ तड (चु), प्रह
(भ्वा प अ), आहन् (अप अ) ३ पीड
(चु), डुलपति (जा धा) ४ मत्तयुद्धा
दिषु निपद (प्रे)-पराजि (भ्वा आ अ)
५ (विवाहादि) अ, पिधा (जु उ अ),
आम-वृ (स्वा उ से) ६ मुच प्रक्षिप (तु
प अ), आम (दि प से) ७ निग्रह
(क प से) निरप (रु प अ) ८ भक्ष
ध्वम (प्रे) ९ (भान्वादिक) अस्त्रीकृ
१० अन्यायेन आत्मसात् कृ ११ अनुन्धा
(भ्वा प अ) १२ जि (भ्वा प अ)
१३ दरा (भ्वा प अ) । स पु, भारण,
इनन, निपूदन, हिसन, विहसन, व्यापादन,
प्रमाण २ इत्या, वध, हिंसा, घात
३ आहनन, ताडन, प्रहरण ४ पीडन
५ निपातन ६ पिधान ७ नाशन, ध्वसन
८ भग्नीकरा ९ अन्यायेन आत्मसात्करण
१० दशन, ६ ।

भारने योग्य, वि, हतव्य, हिंसितव्य, व्यापाप
२ तात्रयितव्य, जादननीय, ६ ।

भारनेगला, स पु, घातक, हिंसक, ताडक ।
भारपेच, स स्त्री (हिं मारना+पेच) कैव,
कपटोपाय ।

भारवाह, स पु, राजस्थानस्य भागविशेष ।

भारवाढी, स पु, मारवाडवासिन् । स स्त्री
मारवाडी, मारवाडभाषा ।

भारा, वि (हिं मारना) दे 'भारा हुआ' (१२) ।

—जाना, कि अ, हन्-हिंस-मृद् (कर्म) ।

—भार, स स्त्री, मिथ ताडन, कलि, सपथं ।
कि वि, सत्वर, सबेग, शीघ्रतया ।

—भार करना, सु, त्वर् (भ्वा आ से),
शीघ्र या (अ प अ)-कृ ।

—भारा फिरना, सु, मुधा परिभ्रम् (भ्वा दि
प से), क्षीणवृत्तिरु (वि) पर्यट (भ्वा प से) ।

—हुआ, वि, इत, व्यापादित, मारित,
२ ताडित, प्रहव आहत ।

भारी, स स्त्री (स) दे 'भरी' ।

भारत, स पु (स) वायु, महद (पु),
मस्त ।

—तमय, स पु (स) पवन, मुक्त पुत्र-ज,
भारति, आर्जनेय ।

भारु, स पु (हिं मारना) रागभेद २ रण,
भेरी-डुडुभि । वि, भारक, इदपवेषक ।

भारे, अव्य (हिं मारना) कारणेन-गात, हैनो ।

भार्ग, स पु (सं) अधन् पयिन् (पुं), पथ,
वर्तन् (न) २ चरणपथ, पदवी वि (स्त्री),
पथा, पदतीति (स्त्री) ३ प्रतोली, रागपथ,
रथ्या, वाहनी, श्रीपथ, सरणी-णि (स्त्री)
४ बोधो-धि (स्त्री), विशिक्षा ५ उपाय,
शुक्ति (स्त्री) ।

भार्गशीर्ष, स पु (स) आग्रहायणिक,
भार्ग, भार्गशिर-त्स् (पु), सद्यस् (पु) ।

भार्जन्, स पु (स न) माष्टि-शुद्धि (स्त्री),
भार्जना, मृजा, प्रक्षालन, धावन, बोधन, पवन,
निर्मलैकरणम् ।

भार्जनी, स स्त्री (स) दे 'झाड़' ।

भार्जार्, स पु (स) दे 'बिला' (स्त्री स्त्री) ।

भार्जित, वि (म) पूत, बोधित, प्रक्षालित, धौन ।

भार्जड, स पु (स) ध्वं २ अक्षुप
३ श्वर ।

भार्जव, स पु (स न) दे 'यहुता' ।

भार्कत, अव्य (अ) दे 'दारा' ।

मार्मिक, वि (स) प्रमावशास्त्रि हृदयमादिन् ।
माल, स पु (अ) सपदसंपत्ति (स्त्री),
वित्त, अर्थ २ सामग्री, परिच्छेद २ पण्य
जात, पणसा (पुं बहु), कन्यद्रव्याणि (न
बहु) ४ राजस्व, कार ५ उत्पन्न प्रसव,
फल ६ स्वादुभोजन ७ गोपशु, धनम् ।

—माला, स पुं (फा) माहार, पण्यगारम् ।
—मादी, सं स्त्री (फा+दि) द्रव्यराकटी,
दे 'मादी' ।

—मालार, स पुं (फा) रात्रस्वदायक,
भूमिकरद ।

—मालारी, सं स्त्री (फा) भूमिक्षेत्र, कार
शुल्क ।

—माल, स पु, धन, वित्त, सपद् (स्त्री) ।

—मार, वि (फा) भनिक, धनाढ्य ।

—मारुत, वि (फा) रिच्छुम, धन, यत्किं सत् ।
माला—, वि, सुसपन्न, सुसम्पन्न ।

मालकंगमी, स स्त्री (दि माल + स कगुनी)
महाज्योतिर्मती, वशुनी, कनकप्रभा, सुररता,
तीव्रा, तेजस्विनी (स्त्वभेद) ।

मालती, स स्त्री (स) सुमना, सुमनस
(स्त्री, न), जालीनि (स्त्री) २ ज्योत्स्ना
३ रात्री ।

मालद्वह, स पु (देश०) बिहार राज्यस्य
नगरविशेष ० आज्ञाभेद ।

मालपु(पू) आ, सं पु (अ माल+स पू)
पूय, पिष्टय, दे 'पुआ' ।

मालवा, स पुं (स माल्वा) अर्वादेशः ।

मालवीय, वि (म) मालवसम्बन्धन् । स
पु, मालववासिन २ विप्रभेद ।

माला, स स्त्री (स) मान्य, सज् (स्त्री),
मान्(लि-ला)ता, आपीड अवतस, अभिनि
(स्त्री) २ पक्ति-आवलि-रात्रि ज्योति (स्त्री)
३ समूह, निकर ४ अद्य-जप, माला ५ वंठ
माला, हार ।

—मार, स पु (स) दे 'माली' ।

—फेरना, सु, ईश्वर, भन (म्या उ अ),
प्रगर्व नय (म्या प से) ।

मालामाल वि (अ) म्मुद्ध, सम्पन्न, धन
धान्यपूज ।

मालिक, सं पुं (अ) परमेश्वर २ स्वामिन्,
प्रभु ३ पति [मालिका (म्या) ।]

मालिका, सं स्त्री (मं) पक्ति ज्योति नवि

(स्त्री) २ माला ३ कठभूषणभेद ४ द्राक्षा,
मय ५ मालिनी ६ दे 'चमेली' ।

मालिकी, स स्त्री (फा मालिक) स्वामित्व,
प्रभुत्व, स्वत्वम् ।

मालिक्यूल, स पु (अ) व्यूहाणु, अनु ।

मालिन, स स्त्री (स मालिनी) मालाकारी,
मालिनी ।

मालिन्य, सं पु (स न) दे 'मालिनता'
२ अधकार ।

मालिन्य, स स्त्री (अ) मूल्य, अर्थ २ धन
३ मूल्यवद्द्रव्यम् ।

मालिका, सं पु, दे 'मालगुजारी' ।

मालिश, स स्त्री (स) अभ्यर्जन, मर्दन,
धर्षण, सवाहनम् ।

माली, सं पु (स लिन्) मालाकार,
मालिक, उद्यानपाल २ जातिविशेष ३
मान्यवादिन् ।

माली, वि (अ माल) आर्थिक, सापत्तिक,
अर्थद्रव्य धन, विषयक ।

मालोद्गोखिया, स पु (मूलानी) विवाद
बायुरोप, इलेभिक्कोन्माद ।

मालीदा, सं पु (फा) दे 'मालीश' ।

मालूम, वि (अ) ज्ञात, दे 'विदित' ।

माल्टाकीयर, स पु (अ) माल्टास्वर ।

माल्य, स पु (स न) दे 'माल्या'(१)
२ पुष्प, कुशुमम् ।

मावम, सं स्त्री दे 'अमावस्या' ।

मावा, स पु (स मड) दे 'माल' ३ किन्नाट
३ गोधुमावित्स्व दुग्ध ४ अंड, नार्मै पीतिमन्
(पु) ५ तमालु, मासर विण्व ६ सार,
निधर्ष ७ सामग्री, उपकरणजानम् ।

मावाही, स पु (फा मथार) दुनिहर ।

मावापा, स पु, दे 'मावा' ।

वत्तम, प्रिय ।

माशूर, स पुं (अ) वान, दयित, वत्तम,
प्रिय ।

माशूरा, सं स्त्री (अ) दिया, वान, दयिता,
वत्तमा ।

माय, सं पुं (सं) कुरुविन्, धान्यवीर,
वृषार, मामन्, बलाभ, प्रिय, पितृ
भोजन २ दे 'ममा' ३ 'मामा' ।

माम्, सं पुं (म पु न) वपौग, वपाह,
गुक्कण्यपद्धभाय्मा वात् विगानितमव

समय, मन्त्र (पु, शमने पहले पाव रूप नहीं होने), मन्त्र २ चाद्रमन्त्र, नात, सावत्तर ३ सौरमन्त्र, सवन्त्र ।

—भरका, वि, मन्त्र, मन्त्रान (दत्तारा) ।

हर—, कि वि, प्रतिजनु, मास, मने मासे ।

माम्, म पु, दे मान् ।

मासद, म पु (हि मन्त्री) मन्त्रवत्, धव धनि ।

मासा, म पु (स मन्त्र) मासक, मन्त्र, हेन, धानर, अष्टमन्त्र ।

—भर, वि, मन्त्र, मन्त्र-मात्र २ अत्यन्त ।

—तोला होना, मु, दशाया अस्थिरत्व अशु बल परिवर्तितम् ।

मासिक, वि (म) मन्त्रानुसिक, प्रतिमा मिक, मसि मन्त्र, मन्त्रान । म प (स न) अन्वहार्य, आहमेद २ एनोदन् ३ मन्त्रि बवेनन् ।

—धर्म, म पु (स) कर्त, अन्व, एन्म (न) रत्न, रत्नवाव ।

—पत्र, स प (स न) प्रतिमन्त्रविना ।

मासी, म या (म मन्त्रवत्) तननी मीनी ।

—का लब्धका, म पु, मन्त्रवन्नेद, मन्त्रवन्नी ।

—की लब्धकी, स का, मन्त्रवन्नेयी, मन्त्रवन्नी ।

मन्त्रान, वि (स) मन्त्रिक, मन्त्र, मन्त्रानुमानिक ।

माह, म पु (का) दे 'मन्त्र' २ चद्र ३ प्रिय ।

—ताव, म पु (का) चद्र २ चन्द्रिका ।

—तावी, म स्त्री (का) दे 'मन्त्र' ।

—वार, वि (का) दे 'मन्त्र' । कि वि, प्रतिमन्त्रम् । म पु, मन्त्रवन्नेन् ।

—वारी, वि (का) दे 'मन्त्र' ।

माहात्म्य, म पु (स न) अष्टमन्त्रान्त्रिम् (पु), महत्त्व, महत्ता, तैरव, मन्त्रान्त्र, २ तथैवत्रात्रयमन्त्रान्त्रिम्त्रिम्त्रिम्त्रिम् ।

माही, म स्त्री, (का) मीन, मन्त्र ।

—गौर, स पु (का) दे 'मन्त्र' ।

माहुर, म पु (स मन्त्र) विष, रत्नम् ।

मित्रदार, स स्त्री (अ) माया, परिमाण, मन्त्र ।

मित्रस्वर, म पु (अ) मित्रम् ।

मित्रदाना, कि स (हि मित्राना) नेत्रेऽसकृत् निमील (म्या प से) उन्मील च, नष्टे पुन पुन निमिष (तु प से) उन्मिष च, अन्तःपुर निनेषी मन्त्र २ दे 'मीचना' ।

मित्राना, कि ज व 'मीचना' के वर्म रूप ।

मित्रलाना, कि ज, दे 'मन्त्रलाना' (१) ।

मित्रराव, स स्त्री (अ) परि(री)वाद, वागमुद्रा ।

मित्रान, स पु (अ) प्रकृति, स्वभाव २ शास्त्रिक-मानासिक, अत्यन्त-दशा ३ दर्प ।

—दार, वि (अ + का) दृष्ट, गावित ।

—पुरी, म स्त्री (अ + का) बुद्धल-मृष्टाः ।

—शरीर, वाक्याश (अ), अपि कुशल नवान् ।

मिटना, कि अ (म मृष्ट) अप-म्या, मृष्ट (वर्म), विनष्ट (दि प से) २ उच्छिद्य (वर्म), विनष्ट (दि प से), उन्मील (वर्म) ३ निर-अव (कन), अष्टप्रत्यय्या (वर्म) । स पु, होर, अप-म्या, मृष्टि (स्त्री), उच्छिद्य, विनाश, निराम, प्रत्यागमनम् ।

मिटाना, कि स, व 'मिटना' के प्रे रूप ।

मिग हुआ, वि, अप-म्या, मृष्ट, विह्वल, विनष्ट, क्षुब्ध ।

मिष्टा, म स्त्री [स मृष्टि (स्त्री)] मृष्टिका, रेणु, मृष्टि (स्त्री) मृदा, मृष्ट (स्त्री) । (अन्त्र मिष्ट्री) मृष्ट-स्त्रा २ मृष्टि ३ अत्यन्त (न, सुवन्दिनी) ४ शरीर ५ नाव ।

—का तेल, स पु, मृष्टम् ।

—का पितर, स पु, मन्त्रवद्देह ।

—का पुतला, स पु, मन्त्र २ मन्त्र शरीरम् ।

—का माधव, स पु, जड, मृष्ट ।

—करना, मु, मन्त्रवन् (प्रे) २ कनुपमि (न वा) ।

—के मोल, मु, अत्यन्त, मृष्टेन-अर्थे, निम्न त्वमिव ।

—ठिकाने लगाना, मु, अत्यन्त २ शत्रु मृष्टी निषा (तु स अ) म्या (प्र) ।

—डालना, मु, शत्रु (प्रे, शत्रुवत्), मुह (म्या व से) ।

—पलोद या खराब होना, मु, परिधि (वर्म), क्षयनाश इत्या (अ. प. अ.),

परिक्षीण-गतविभव (वि) भू, दुर्देशा भण्ड
(दि आ अ) ।

—मैं मिलना, मु, दे 'मिट्टी पलीद होना'
२ मृ (तु आ अ) पचत्व गम् ।

मिट्टी, म खी (म मिट्) चुरन, दे 'चुमा' ।

मिट्टू, स पु (म मिट्) मधुरभाविन्
२ शुक्र, वीर । वि मौनिन, नृणीर,
प्रियवद् ।

अपने मुँह अप मियां मिट्टू बनना, मु,
विराध् (भ्वा आ से), आस्थान इलाध्
(भ्वा आ से) ।

मिठाई, स खी (हि मीठा) वादव, मिष्टान,
मिष्ट, मौदकजान २ दे 'मिठास' ।

मिठास, स खी (हि मीठा) मधुरतास्व,
मधुरिमन् (पु), मधुवै, मिहस्व ।

मिट (मि) ल, वि (अ) मध्य, मध्यम,
मध्यवर्तिन् । स पु मध्यमा वधा (खी) ।

—खी, वि, अल्पशिक्षित (शिरस्कारमन्त्र) ।

—स्कूल, स पु, मध्यम-विद्यालय ।

मित, वि (सं) परिमित, सीमित, मनीम
२ अल्प, स्तोक ।

—भापी, वि (सं विन्) मित, वाक्-वच,
अल्पवादिन् ।

—ओजो, वि (सं विन्) दे० 'मितादी' ।

—व्यय, स पु (सं) अल्प परिमित

—व्ययिता, स खी (सं विन्) व्यय-व्यपिना,
अमुक्तहस्तत्वम् ।

—व्ययी, वि (म-यिन्) अमुक्तहस्त, अल्प
स्तोक, व्यपिन् ।

मिताशन, स पु (म न) परिमितभोजन,
इष्टभक्षण, मिताहार २ वि दे मिताशी ।

मिताशी, वि (म-शिन) मिताहारिन्, परि
मित-अपश्यद्, भोजिन भुज ।

मिनी, स खी (सं मिनि >) देशी-मिनि
(पु खी) २ दिन, दिवस ।

—वार, वि वि, निर्विक्रमण, निर्विक्रमणम् ।

मित्र, स पु (म न) सुदृढ (पु) मणि
(पु), वयम् २ मङ्गर, मन्त्र ।

मित्रता, स खी (म) मित्रत्व, मन्त्र, मित्र,
मोहार्, मेरी, मैत्र, मित्रत्वम् ।

मिथुन, स पु (म न) दृढ, द (म-यिन्)
(दि), जायन्ती, मीथुनो युग्म-युग्म युग्म

२ गति (खी), सभोग २४ राशि-जन्म,
विशेष (ज्यो) ।

मिथ्या, वि (म अव्य) अनृत, अमत्य,
विनय २ कल्पविद्, अवास्तविन्, मायाप्रद ।

—वादी, वि (म दिन्) अनृत अमत्य मृषा-
विनय, भाषिन् आलाविन्-वादिन् ।

मिनिग्रम, वि (अ) नूनतम, अल्पिष्ठ ।

मिन्नत, स खी [अ, मि स विननि (खी)]
प्राथना, निवेदनम् ।

मिमिषाना, कि अ (अनु मिनिमिन् >)
मिषमिषावते (ना वा), मे मेषाब्द कृ, देम्

(भ्वा आ मे), उ (भ्वा आ ■, अने) ।

मिषाँ, स पु (फा) त्वामिन्, प्रभु २ पति,
मर्त्य २ (संशोधनेय) महाशय ! महोदय !

(मुमल) ४ अध्यापर ५ दे 'मुयम्मान' ।

—मिट्टू, स पु (फा + हि) मधुरभाविन्,
मधुवाच (पु) २ शुक्र ३ मूर्त्य ।

मियाव, स खी (फा) अवि, वीर २,
रट्ग, विधानम् ।

मियावा, वि (फा) मध्यम, मध्याकार ।

मियावी, स खी (फा मियाव) पदाया
मस्य मध्यमी वस्तुत्वं २ मध्यमी, मध्य
कोष्ठक (पु) ।

मिरगी, स खी (म मृगी) अपरमार, आमरम् ।

मिर्च, स खी [स मरि(री)न्] (काली)
कृष्ण, वी(का)क, दयाम, ऊ(औ)ण, वडुकाँ,

शाखाय मरदिग, धमपत्तन, वेक्षण, वचनरोधि
(न) पवित्रम् । (लन्) कुन्त, मरि(री)न्,

मीत्रशक्ति (वी), उच्चला, भनडा, वडु
वीर तीक्ष्ण (मर्कट) मित्र-मरि(री)न्

वल्लीन्, खवल, वडुलन् । वि, तीक्ष्ण उग्र,
स्वभाव ।

नमन—गाना, मु अन्युक्तश वण् (पु)
प्रतिपद (द्वे) अतिवन् (ना प म) ।

मिर्, स पु > मिर्च (लन्) ।

मिन्ता तुल्ला, वि लु य, मृद्वन् ।

मिन्न, स पु (म न) म (मना) मन्त्र,
मयोम, ममिन्न, परस्परमन्त्रा, २०

२ मिश्रण, मयाग, मयाग मन्त्रम् ।

—मार, वि, मिन्न-मन्त्र न न मन्त्रप्रिय ।

—मारी, स खी मन्त्र-मिन्न, मीन्ता ।

मिलना, वि अ (म मिन्) मिश्र-मन्त्र-
संयुग्-मन्त्र (कर्म), मी मिश्र-मन्त्र मृ, १

२ समिल (तु प से), सइ (अ प अ),
सगम् (भ्वा आ अ), आसमा-मद (भ्वा
प अ), आसमा-गम्, अभिमुली-ममुली
भू, नयन, पथ विषय या (अ प अ)
३ तुल्य-सम-सदृश (वि) वृद्ध (भ्वा आ
से) सवद (भ्वा प मे) ४ अन्गिम्
(भ्वा प से), परिभ (भ्वा आ
अ) ५ यम् (भ्वा प अ), सुरन आनन्
(त प से) ६ लभ (भ्वा आ अ)
अधिगम ७ एक-सम, स्वर (वि) भू
(सितारादि) । स पु, दे 'मिलन'
(१२) । १ सादृश्य, साम्य ४ आनिगन
५ मैथुन ६ लाभ ७ समस्वरता, इ ।

मिलनी, सं स्त्री (हिं मिलना) औदाहिक
मि(मै)लनम् ।

मिलवाना, कि प्रे, व 'मिलना' के प्रे रूप ।

मिला-जुला वि, मिश्रित २ समिलित ।

मिलान, सं पु (हिं मिलाना) समेलन,
समिश्रण २ समी-सदृशी, कारण, जुलना
३ सत्यापन, प्रामाण्यपरीक्षा ।

मिलाना, कि स, व 'मिलना' के प्रे रूप ।

मिलाप, सं पु (हिं मिलना) दे 'मिलन' (१)
२ सौहार्द पै, मैत्री ३ संयोग, रति (स्त्री) ।

मिलावट, सं स्त्री (हिं मिलाना) अपद्रव्येण
मिश्रण-मेलनम् ।

—करना, कि स, (अपद्रव्येण) समिश्र (तु) ।

मिला हुआ, वि, मिश्र, मिश्रित, सवृत्त, मसृष्ट
२ सगत, समिलित, ममुलीभूत ३ लब्ध, प्राप्त ।

मिलिद्ध, सं पु (स) भ्रमर, वृषपद ।

मिलिटरी, वि (अ) साम्यात्मिक सामरिक,
सैनिक । सं स्त्री, सेना, मैथ्य, पाहिनी ।

मिल्क, सं पु (अ) दुग्ध, पयम (न),
क्षीरम् ।

मिल्कियत, सं स्त्री (अ) भूमि (स्त्री)

रि(र)वध २ द्रव्य, सर्पित (स्त्री), दाप ।

मिल्कत, सं स्त्री (हिं मिलना) मैत्री
२ मित्रनशीलता ।

मिल्कत, सं स्त्री (अ) धम, संप्रदाय,
मतम् ।

मिल्कग्राम, सं पु (॥) सहस्रिधान्यम् ।

मिल्किमीटर, सं पु (अ) सहस्रिधाता २ इर
मुक्तभूमि ।

मिगन, सं पु (अ) उद्देश्य, लक्ष्यम् २
प्रचारकमण्डलम् ३ प्रतिनिधिमण्डलम् ।

मिशनरी, सं पु (अ) विप्रधम, प्रचारक
२ दे 'पादरी' ।

मिश्र, सं पु (स) द्विभोपाधिभेद २ मिश्रित,
मिश्रितद्रव्य, योग सहर मनिपात । वि,
मिश्रित, मिश्रापन, स-सृष्ट-मिश्र-मिश्रित
३ श्रेष्ठ ।

मिश्रण, सं पु (म न) संयोजन, समेलन,
समिश्रण, एकीकरण, वरण, ममर्जन २ नाना
द्रव्यसमुदाय, दे 'मिश्र' (२) । १ योग, संक
लन, दे 'जमा' (गणित) ।

मिश्रित, सं (स) ससृष्ट, समिश्र, दे 'मिश्र'
(वि) ।

मिष, सं पु (स न) छल, कपट २ व्यप
देश, व्याज, कृतकहेतु ।

मिष्ट, सं पु (स) मधुररस । वि, दे
'मीठा' (१) ।

—भाषी, वि (स विन्) मधुरभाषिन्, प्रिय
वद ।

मिष्टाल, सं पु (स न) दे 'मिठाई' (१) ।

मिम, सं पु, दे 'मिष' (२) ।

मित, सं स्त्री (अ) कुमारी, वन्या, अक्षता ।

मिसरा, सं पु (अ) पद्यपाद, दलोकचरण ।

मिसाल, सं स्त्री (अ) उपमा २ उदाहरण,
दृष्टान्त ३ लोकोक्ति (स्त्री), आभाषक ।

मिसिल, सं स्त्री (अ) छेद, पत्रिका ।

मिस्कीन, सं पु (अ) नि सहाय, निराश्रय
२ दरिद्र, अकिंचन ३ सरल, सुशील ।

मिस्तर, सं पु (अ) मिश्र, महाशय महोदय ।

मिस्त्री, सं पु (अ मास्टर) कुशल,—
शिल्पन् शिल्पकार ।

मिस्त्र, सं पु (अ = नगर) मिश्रदेश ।

मिस्त्री, सं पु (अ मिस्त्र) मिश्रदेशव सिद्ध ।
सं स्त्री, मिश्रदेशभाषा ।

मिस्ती, सं स्त्री, (अ) खण्ड, मोक्ष शर्करा,
शकरजा, शर्करा, खान्वा, मिठोपला, मिठा
खट, खण्डक ।

मिस्ल, वि (अ) तुल्य, समान, इव ।

मिस्ला, सं पु (म मिश्र) *मिश्रान् ।

मिस्मी रोटी, सं स्त्री, वेदनिका ।

मिस्सी-सी, सं स्त्री (फा मिस्ती) दत्त,
*मसी-मसि (स्त्री), दत्यचूर्णभेद ।

—वाचलकरना, मु अत्मान् मूष-मह् (पु) प्रमाथ (प्रे) ।

मौगा, स स्त्री दे 'गिरी' ।

मौआद, स स्त्री (अ) काल, अवधि, नियत समय २ अनेक-कारणान् अवधि ।

मौआद, वि (अ मौआद) सावधिक, नियमकालवत् ।

—मुआर, स पु, सावधिकज्वर २ सानिवा निवज्वर ।

मौचना, क्रि स (स मिप्) निमिष (पु प से) क्षीन्निमील (भ्वा प से) नेत्रे मुकुल्यति (ना था) ।

मौजान, स पु (अ) योग, सकल, परि सत्ता ।

मौजित, स स्त्री (अ) ममा, गोष्ठो, अपि बेशनम् ।

माग, वि (स मिट्) मधुर मधुल, मधु मधुमय २ सरस, स्वादु सस्वाद, स्वावत् ३ अन्न, मधुर ४ मध्यम, साधारण ॥ मय मद ६ नपुंसक ७ प्रिय, रुचिकर । ८ सुशील सरल । स पु, मधुरगन्दी, मिनिबूज, मधुरगरीर, मधुवीर्य, मधुली, मण्डला २ मिश्रण ३ मिष्ट, शुद्ध, रसता ४ ।

—तालू, स पु, दे 'शरवद' ।

—जाल, स पु, मिष्टगुह-ओदन (जम्) ।

—नेल, स पु नि, नैल-स्नेह २ रसस मर्दन्म् ।

—नलिया, स पु बल्लनाभ, प्रणहारक, मगपुन गरल, ध्वेष्ट, प्रदीपन ।

—नीव, स पु दे 'माठा' स पु (१) ।

—पानी ॥ पु बीरपेयम् ।

—वोल्ता, सु, म्रिय मृ (अ उ), मधुर अन्न (भ्वा ॥ से) ।

मौगा घुगा, स स्त्री, अन्नशत्रु, कषटमित्र, विशासपात्र ३ दुष्टि कषट्म् ।

मौगामार, स स्त्री, गृह-गुप्त-आवरण, ताडनं प्रहार ।

मान, स पु (सं) दे 'मर्दनी' (२२) शास्त्र, साधि ज्ञानम् ।

—मेज निवालना, सु, शुद्धोपान् परीक्ष (भ्वा जा म) २ टिद्रं अविष् (दि प से) ।

मौना, स पु (का) विन-वहुवर्ण, काच ३ नीलप्रस्तरभेद ३ *धातु-रजन विवर्ण (इनमेल) ४ गुराग्रह ।

—कार, स पु (का) *धातु, जव-विवर्ण ।

—कारी, स स्त्री (का) दे 'मौना' (१) ।

—बाज़ार, स पु (का) *कातापण, मनोहमेला, प्रदर्शनो ।

मौनार, स पु (अ मनार) सुन्दप्रस्तार, मेष्ठि वि ।

मौमासा, स स्त्री (स) दर्शनशालविशेष २ विचार, विवेचन, निर्णय ।

मीर, स पु (का) नायक, प्रधान ।

—मजलिस, स पु (का) मभा, पति अभ्यक्ष ।

—मुशी, स पु (का + अ) मुख्य, कोवक, वायव्य ।

मीरान, स स्त्री (अ) रिकूष, दास, निरुद्रव्यम् ।

मीरासी, स पु (अ मीरान) सगोत्रकुशल-यवनगति विशेष २ भद्र, वैधानिक ।

मील स पु (अ मयल) कौशार्द, अद्यकोश, *मील, *मीलकम् ।

मीलन, स पु (स न) पिधान, निमीलनं, मुद्रणम् २ सरोचन, सहर्ण, आकुचनम् ।

मालित, वि (म) निहित, निमीलित, मुद्रित २ सकोचित, सहन, आकुचित ।

मुंगरा, स पु (सं मुंगरा) वि, पन दुपण न, प्रण । [मुंगरी (या) छत्रमुंगरा ४.] ।

मुन, स पु, दे 'भून' ।

मुद्र, सं पु (स पु न) शिरम् (न), शीर्षं मूढम् (पु), मरतकं २ छिन्न, शिरस् शापम् । सं पु, क्वाणु, निष्पत्री वृक्ष २ राट् ३ नपुंस, मुद्र ४ उपनिषद्विशेष । वि मुद्रित, कापिनमुद्र, कृत्तकेश (शा, शी स्त्री) २ अधम ।

—माला, सं स्त्री (सं) छिन्नमस्तकमालम् ।

—मालिनी, स स्त्री (स) कान्ति ।

—माली, स पु (स निज्) शिव ।

मुद्र, सं पु (सं) नपुंस २ उपनिषद्-विशेष ३ छिन्न, शीर्षम् ।

मुद्रन, स पु (सं न) शौर, वेज, क्षेरनं वपन, पक्वपनं, म्रदवर्ण २ चूडा, चूडा वरपनमयं (न), संस्कारविशेष (धम) ।

मुँडना, कि अ (स मुडन) व 'मुँडना' के कर्मा के रूप ।

मुडा, स ॥ (स मुड) मुँडित, उबकेन, छिन्नमूर्द्धन, कृत्तकोश २ कृत्तवेज्ञ साधु सिन्ध २ श्याहीनपशु ४ अग-अवयव शास्त्रा, हीन ५ विपिविदोष (महावनी, लडे) ६ उपानत्यकार ।

मुँडाई, स स्त्री (हि मुँडना) दे 'मुडन' (१) । २ मुडन, मृत्वा मृति (स्त्री) ।

मुँडासा, स पु (स मुडवत्सम (न)) उष्णीष ५, दे 'पगडो' ।

मुडित, वि (स) दे 'मुड' वि ।

मुडी, म, स्त्री (हि मुडा) मुला, बल्लभ कैदाशी २ विषवा ।

मुडी, स पु (स-मुडिन्) मुडित, नलमकेन २ नापित ३ सम्पासित ।

मुँडे, स स्त्री (स मुड >) दे 'मुडेरा' २ दे 'मैट' ।

मुँडेरा, म पु (स मुड >) प्रकरणीय, मुकुटममुड-उम ।

मुँडेरी, स स्त्री, दे 'मुँडेरा' तथा 'मैट' ।

मुडो, स स्त्री (म मुण्डा) मुण्डिता, वणिता, धादिता, उत्त-कृत, रक्षा-मूर्द्धना ० विषवा, मृगभद्रका ।

मुतकिल, वि (अ) स्थानांतर नीत २ पर हस्ते समापित परत्वत्वे दत्त ।

मुतप्रव, वि (अ) निवाधित, वृत्त, चित २ उत्कृष्ट, श्रेष्ठ ।

मुतमिन्न, म पु (अ) अन्नस्य, व्यवस्थापन ।

मुतमिर, वि (अ) प्रतीक्षक, प्रतीक्षकारिव ।

मुँडना, कि अ (म मुडना) व 'मुँडना' के कर्मा के रूप ।

मुँदरा, स पु (म मुडा) (योगिना) कर्ण, मुद्रा-मन्थन ।

मुदरी, स स्त्री (हि मुँदरा) अगुनी, रीत्य पर, ऊर्मिका ।

मुसियाना, वि (अ०) उत्तक सदृश-उप युक्त । सं स्त्री, ऐयक, मृती (स्त्री)-मृत्वा ।

मुशी, सं पु (अ) उत्तक, कावस्थ लिङ्गित ।

मुमिक, स पु (अ) निर्णय, धर्म-न्याय अध्यक्ष-अधिकारिव ।

मुसिकाना, वि (अ) न्याय, उचिद-मुक्त अनुसारिव, न्याय्य ।

मुसिकी, स स्त्री (अ मुसिक) १ ३ न्यायाध्यक्ष पद-कार्य-मभा ४ न्याय ५ न्याय ।

मुँह, स पु (स मुख) आस्प, गुड, वक्त्र, वदन, रूपन, आनन २ मुख-वदन-आनन, मटल ३ (वर्तन आदि का) कण्ठविवर, मुख ४ िड, रम ५ आदर ६ सामर्थ्य ७ साहस ८ उपरितनभाग, कर्ण, कठ प्रात ९ विद्यमानता, उपस्थिति (स्त्री) ।

—औंहेरा—स पु, प्र-वि, मान, विहान-न, वषा, उषस् (स्त्री) ।

—काला, स पु अमल, अपदसास् (न) ।

—चोर, वि, लुण्ठान्, ह्रीमद, सलज्ज ।

—जबानी, वि, वाचिक, छेतरहित । कि नि, वाचैव समावयेन ।

—चोर, वि, वाचक, वाचक २ दुर्दान ३ दे 'मुँहफट' ।

—दिग्वाई, स स्त्री, नदी-मुखदर्शन २ मुख दर्शनोपहार (विवाह की रीतिर्वा) ।

—देला, वि, बाध, वर्षातेन, हृत्त्रिण ।

—रू, वि अवचदन, वाक्चपल, वक्त्रदुष्ट, अक्षिगुण्यवादिन् ।

—खोला, वि, धर्म (धर्म प्राप्ता आदि) ।

—मागा, वि, यवेष्ट, यवेष्ट, यवेष्टिन ।

—उतरना या निकल जाना, मु, कृशी-नन् भू, हृष्ट-न्दन (वि) नन् (दि आ से), शि (भा प अ) ।

—का कौर, मु सुलभद्रव्यवस्तु (न) ।

—काला करना, मु, दुष्ट (मे हृष्टपान), कल-यनि (ना धा), अक्रीते जन् (मे) ।

—काला होना, मु, कम्पित-दृष्टित (वि) भू, अपययन (न), लभ (स्वा आ अ) ।

—की गाना, मु, तितरा पराडि (कर्म) क्षुभ्रा अभिभू (कर्म) २ लज्जितो भू ३ दुःख आपद (दि आ अ) ।

—खोला, मु, वद (भा प से) २ गाली दा अपभ्रंश (स्वा आ मे) ३ अवगुठन अपभ्रं (प्रे) ।

—जुठाना या जूठा करना, मु, नाममात्रमेव मुन (र आ अ) ।

—त(ता)कना, मु, स्थिर आ-अव-भोक्त (तु) ० वि शि (स्वा आ अ), चवित (वि) स्वा (स्वा प अ) ।

—देखते रह जाना, मु, दे 'मुँह टाकना' ।

—देखे की प्रीति, सु, मृषान्नह कृत्रिमा
नुराग ।
—पर छाना, सु बद (स्वा प मे) क्य
(सु) ।
—पर हवाइया उठना, सु (अयल्लारिभि)
मुख विरगोभू ।
—प्रक होना सु, दे 'मुँहपर हवाइया उठना ।
—फुलाना या सिफोडना, सु, रू-उ पिग क्रुड
(वि) भू ।
—फेरना, सु, उपेल् (स्वा आ मे), अपरज
(दि व अ) ।
—बनाना, बिगाडना या चिड़ाना, सु,
किन्ब (सु) मुख विक्र, स्वमुखविरां उप
अव-हम (स्वा प मे) ।
—भीटा करना, सु, उत्तोर्ब दा ।
—मैं पानी भर आना, सु, बि प्र-मुम् (दि
प से) अत्यर्थ अभिलष (स्वा उ मे) ।
—छटकाना, सु, दे 'मुँह पुलना' ।
—(किसी के) लगाना, सु, उर-रव अचर
(स्वा प से) २ शृङ्गवा प्रवृत्तोरर रु ।
—लगाना, सु, हीनान् मित्रीवति (ना था,)
अनुमद् (क् प मे), उदणान् विधा
(जु उ अ) ।
—से फूल छडना, सु सुनभुर वच (वम) ।
मुहाँ—, सु परिपूर्ण, आवर्ण पूर्ण, निभर ।
सुहासा, स पु (दि मुँह) शीबन, बटक
सिद(दि)का ।
सुभज्जोस, वि (अ०) पूज्य, भगन्व २ महत्,
ज्येष्ठ ।
सुभत्तल, वि (अ) आनियतकाल अधिकारान्
प्याविन अथवा अशित । २ दे 'बेकार' ।
सुभत्तलो, सं स्त्री (अ सुभत्तल) आनिवन
काल अधिगार, भग्न ध्युति (स्त्री) २ दे
'बेकारी' ।
सुभद्व, वि (अ) मध्य, निष्ट ।
सुभद्वयाना, अभ्य (अ) सविनयम्, वि,
नम्र, विनयेन, नम्रनया ।
सुभम्मा, स पु (अ) प्रदेष्टी, प्रहेलिका,
प्रदनहृती २ शुद्ध, गोप्य, रहस्य ।
सुभल्ला, वि (अ) उच्च, उत्कृष्ट, प्रकृष्ट
२ उच्च, पद-अधिकार ।
सुभा, नि, दे 'मुब' ।
सुभाज, वि (अ) ज्ञान, धर्षित, दोष-रहित, सुच ।

—करना, दे 'क्षमा करना' ।
सुभाषिक, वि (अ) अनुकूल, अनुरूप
२ सहज, तुल्य ३ अन्याधिक ४ दयेष्ट ।
सुभाषी, स स्त्री (अ) दे 'क्षमा' २ कार
मुकभू (स्त्री) ।
सुभाभिला, स पु (अ) उपनीविता, वृत्ति
(अ), व्यवसाय २ पारस्परिकव्यवहार,
कलविषय, दानादान ३ वृत्त, वास्तो, विषय
४ कलह, विवाद ५ अभियोग ६ प्रतिष्ठा,
समय ।
सुभायना, स पु (अ) दे 'निरीक्षण' ।
सुभावजा, सं पु (अ) निष्कृति (स्त्री),
निस्तार, प्रतिकूल २ क्षतिपूर्ण हानिपूर्ण,
मूल्यम् ।
सुबद्धमा, स पु (अ) अभियोग, अश्र,
अथ, बाँध, व्यवहार, व्यवहारपदम् ।
—करना या रखा करना, कि स, अभियुज्
(व आ अ, सु), राजकुटे निविद् (प्रे) ।
सुकदमेबाह, सं पु (अ + का) कार्यार्थिन-
व दिन्, व्यवहत्, अभियोगशील ।
सुकदमेबाहरी, सं स्त्री (अ + का), अभियो
गशीलना, व्यवहारपदम् ।
सुबद्धमा, स पु, दे 'सुबद्धमा' ।
सुबद्ध, स पु (अ) मध्य, दैवम् ।
सुकदस, वि (अ) पवित्र, पुण्य, पावन ।
सुकदमल, वि (अ) समाप्त, अवसित २ सं
पूरा, नि शेष ।
सुकरना, कि अ (सं माअन + करण)
अप-निह (अ आ अ), अपलप (स्वा प
से) निराकृ ।
सुकरनी, सं स्त्री, दे 'सुकरी' ।
सुकरी, स स्त्री (दि सुकरना) कविनाभेद,
अपह्निपुता कविता ।
सुकरर, कि वि (अ) पुनर्दि, द्वितीयवार,
भूय ।
सुकरर, वि (अ) नियत, निश्चित २ निजुत ।
सुकाबला, सं पु (अ) विरोध, प्रति-
प्रतिकूल २ रक्षार्थ, संघर्ष, अहमहमिर,
प्रतियोगिता ३ सामान, सुद्ध ४ तुलना,
ओढ्य ५ साम्य, सहस्य ६ मनी-महरी,
करणम् ।
—करना, कि स, रार्थ (स्वा आ से),
संपृष्ट (स्वा प से) २ प्रतिह, विरुध्

(ह उ अ) इ युष (दि आ अ)
४ तुल (चु), उपमा (चु आ अ)
५ समी-सदृशी, कृ।

मुद्राम, म पु (अ) स्थान, स्थल २ विराम
स्थान, दे 'पटाव' ३ विराम, निवेश ४ आ
नि-वान, गृह ५ अवसर।

—करना, क्रि अ, विश्रम् (दि प से),
निविश (तु प अ), विरम् (स्वा प अ)।

मुकुट, म पु (स) ओकुण्ण २ रत्नमेद
३ पाद ४ मोक्षद, परित्राद।

मुकुट, स पु (म न) किरिट-ट, मकुट,
कोनर, मौलि, उत्तस।

मुकुर, स पु (स) दपण, दे।

मुकुल, म पु (स पु न) कुडमल, दे
'कली' २ आमल (पु) ३ शरीर ४ श्रुति।

मुकुलित, वि (स) समकुल, मकुडमल
३ ईषद्विकसित, अङ्गोनिपिन अङ्गनि
मोलित ३ निवेशो मेपयुक्त।

मुक्ता, स पु (म मुष्टिका) मुष्टि (पु ली),
मुक्ता, मुचुटी, सर्पिङ्गितामुष्टिपाणि
२ मुष्टिमुचुटी, प्रहार-याग-ताड हथ।

—मारना, क्रि स, मुचुट्या मष्ट (स्वा
प अ)।

मुक्तेवान्, (हि + का) मुष्टि-योष-योषिन्।
मुक्तेवाजी, म स्त्री, (हि + का) मुष्टियुद्ध,
मौष्टा, मुष्टिक, मुष्टी(ष्टा)मुष्टि (अव्य)।

मुक्त, वि. (स) लब्ध-प्राप्त, मोक्ष-निर्वाण,
निस्तीर्ण २ मोचिन, स्वाधीन, बन्धन-निरोध
रहित।

—कठ, वि (स) तास्त्वर, महास्वन २
अविष्टदयवादिन्, अपतवाच।

—हस्त, वि (स) व्ययशील, अतिव्ययिन्,
बहुव्यय।

मुक्ता, म स्त्री (म) }
—फल, म पु (स न) } दे 'मोती'।

—हार, स पु (स) मुक्तावली।

मुक्ताहार, स पु (स न) मुक्ति (स्त्री),
मुक्तिका, मुक्तिक-शब्द (स्त्री) प्रमवा।

मुक्ति, स स्त्री (म) मोक्ष, वैकल्य, निर्वाण,
श्रेयस (न), नि-श्रेयस, अमृत, अपवर्ग,
अपुनर्भव २ मोचन, निर्द्वन्द्व-व्या, निरोध
भाव ३ स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता।

—क्षेत्र, स पु (स न) काशी वाराणसी।

—धाम, स पु (स न) मो-२ स्थानम्
तीर्थम्।

—कौन, म स्त्री (स + अ०) मुक्तिमेता,
विस्तारमार्गचारकमय।

मुख, स पु (स न) दे 'मुँह'।

—चघ, स पु (स न) प्रस्तावना, भूमिशा।

मुखडा, म पु (स मुख) दे 'मुँह' (२)।

मुखतार, स पु (अ) प्रति, निधि पुरष
हस्तक ३ परामितीयकारिन् ३ उपाभिभाषक।

—नामा, स पु (अ + का) प्रातिनिध्य
प्रतिनिधित्व पत्रम्।

मुखतारी, स स्त्री (अ मुखतार) परामितीय
कारितात्व २ उपाभिभाषकता-स्त्व ३ प्राति
निध्यम्।

मुखविर, म पु (अ) दे 'नायन'।

मुखविरी, म स्त्री (अ मुखविर) दे 'नायनी'।

मुखर, वि (स) कडु-अ-प्रय-वादिन् भाषिन्
दुर्मुख २ बाचाल, बाचाट ३ नेष्ट, अग्रया-
यिन् ४ शुब्दायमान।

मुखरित, वि (स) प्रति, ध्वनित नादित।

मुखरथ, वि (स) मुखाम, कठाम, कठस्थ।

मुखारिफ, वि (अ) विपक्षिन्, विरोधिन्
२ वैरिन ३ प्रतिद्विदिन्।

मुखिया, स पु (स मुख्य) नेष्ट, नायक,
पुरो-अग्र-ना-गामिन्, अग्रणी, प्रधान,
मुखर २ ग्रामणी (पु), ग्राममुख्य।

मुखारिफ, वि (अ) मित्र, अपर २ बहु
अनेक, विष।

मुख्यसर, वि (अ) सक्षिप्त २ लघु, क्षुद्र
३ अल्प। म पु, सक्षेप।

मुख्य, वि (स) प्रधान, अग्रय, अग्रिम,
प्रमुखा परम, उत्तम, श्रेष्ठ, निशिष्ट, अग्रभ,
इष्ट, पुण्य, नर।

मुख्यत, } कि वि, (स) प्रधानत-तथा,
मुख्यतया, } विशेषतया, प्रधान-मुख्य
विशेषण, रूपेण।

मुखदर, म पु, दे 'मुखदर'।

मुख, वि (स) आसक्त, अनुरक्त, बद्धभाव,
सानुराग, कामानुक २ मूढ, भ्रान्त ३ सुन्दर,
अभिराम ४ नव, नवीन।

सुग्धता, स स्त्री (स) आसक्ति (स्त्री),
अनुराग २ मूढता ३ सौन्दर्यम्।

मुग्धा, स स्त्री (स) नाविकामेद २ सुकु
मारी लक्षणा ।

मुचलका, स पु (तु) निस्तार ।

मुठंडर, स पु (हिं मूठ) मद्य, गुण समस्त
व्ययत समश्रुल २ कपि ३ मूषिक ४ कुल
पयूष, जट ।

मुज्जर, वि (अ) पुष्टिग (-ग) ।

मुजरा, स पु (अ) उद्भूत-व्यय-लिन, धन
२ अभिवादन, प्रणिपात ३ देशवाया सन्
स्वयन्मुत्प न गानम् ।

मुजरिम, स पु (अ) अपराधिन, कृताप
राध दण्ड २ अभियुक्त ।

मुजस्मिम, वि (अ) सशरीर, देहवत,
शरीरित् ।

मुजिर, वि (अ) हानि, हारण, प्रद ।

मुम, सर्व (हिं मुमे) (अस्मद् क रूप धने) ।

—कौ, मा, मा २ मद्य, मे ।

—सै, मया २ मय ।

—मे, मयि ।

मुगई, म स्त्री, दे 'मोग' ।

मुद्रा, म पु (हिं मुट्टी) मुष्टि (पु स्त्री)
मुष्टिमान द्रव्य २ वारण, रत्न, मुष्टि
(पु स्त्री) ।

मुट्टी, म स्त्री [स मुष्टि (पु स्त्री)] दे
मुष्ठा (१) । २ मुष्टिमेव पदार्थ, मुष्टि
२ मवाह हन हना ४ प्रद-हयम् ।

—भरना, क्रि स, सर्वद् (प्र), मुद्र (क
प से) ।

—चाँदी, म स्त्री, दे 'मुट्टी' (१) । २ सेवा,
परिचर्या ।

—भर, वि, मुष्टि, मात्र-मयमिन ।

—भरम करना, मु, स्त्री-व दा ।

—मे, मु, वरी, अधिगारे ।

मुद्रमेष्ट, स स्त्री (हिं मुट्टी + विट्ना) भगवत्,
ममापान २ स्नान, मुद्र ३ सामुख्य,
समुत्पन्नमन म, निम्न आगम ।

मुष्टिपा, म स्त्री (मं मुष्टिका) (सङ्गदि
नी) लम्ब, वारण, मद्य २ दण्ड, वण,
मुष्टि पित्रा, लक्ष ३ अपिपदम् ।

मुद्रना, क्रि अ (सं मुद्रण) वजीरू, जय
(स्वा प अ) २ प्रत्यागम, प्रतिगम, प्रतिनिष्ठ
(स्वा आ, से) ३ व्यावृत्त । सं पुं, वक्त्र

भाव, वचन, प्रति, वचन आगमन, व्यावर्तनम् ।

मुद्राना, क्रि प्रे व 'मुद्रना' के प्रे रूप ।

मुद्रा, स पु (म मूर्द्धन >) लक्ष २ मृत्
पिट-य, तुलपीठी ।

मुद्रदी, स स्त्री (हिं मुद्रा) छिन्नलम्बम् ।

मुद्रभस्त्रिक, वि (अ) सर्वद, सलग्न, सग्न ।
क्रि वि, विषये, सर्वये ।

मुद्रफरिक्, वि (अ) बहु नाना वि, विष,
प्रस, वीर्य ।

मुद्रवक्त्रा, स पु (अ) दे 'दत्तक' ।

मुद्रलक्ष, क्रि वि (अ) किंचिद् ममान् ईषद्
अपि २ केवल, सर्वथा । वि, केवल, ऐरातिक ।

मुद्राविक, क्रि वि (अ) अनुसार देण,
अनुरोधेन धान्, यथा, अनु, वि, अनुकूल,
अनुरूप ।

मुद्राला, स पु (ज) प्रातःव्ययन २ कण
देव, रोष रोष ।

मुद्रित, वि (स) प्रमत्त, आनदित, प्रहृष्ट ।

मुद्रगर, स पु (म) घन, दुषन-य, प्रवण
२ गोपुत्राकारो व्यायामोपयोगी रम्यदट
३ अनियम, मथराण ।

मुद्रभा, म पु (अ) अभिप्राय, तात्पर्यम् ।

मुद्रई, म पुं (अ) परिवारक, अभिव्यक्ति,
वादिन्, अधिन्, अभिव्यक्ति २ दण्ड, वैरिम् ।

मुद्रत, म स्त्री (य) अवधि, समपसीमा,
नियतकाल, ० विर, विरकाल, महान् समय,
वृत्त गम् ।

—का नि, विर, कालिक-नामीन, पुराण,
पुरातन ।

—तक, —मे, नि वि, निर, विरेण, विराय,
विराय, विरम्य विरे ।

मुद्राअलेह, स पुं (अ) अभियुक्त, प्रत्यभिन्,
प्रति-अ-व, उत्तरादिम् ।

मुद्रक, म पु (म) मुद्रण वार २५ ।

मुद्रण, म पु (सं न.) मुद्रा २ अकर्म,
मुद्रागन २ मुद्रानिर्माणम् ।

मुद्रणालय, म पु (सं) मुद्रणालय, दे 'मेम' ।

मुद्राक्षित, वि (मं) मरुत, मुद्र, मुद्रादिदि
२ नारायणायुधविद्युत् (वेष्णव) ।

मुद्रा, म स्त्री (मं) मुद्रिना, प्रत्ययनारिणा,
* नामनन्त्री २ अनुजी (री) य-य, ऊर्ध्विका
३ नक्षत्र, टक-क ४ मुद्रित शब्द रिच
५ दे 'मुद्रण' ६ शरीरस्य तदवयवानां वा

मुद्राक्षर

स्थितिनिर्देश, अगतिन्यास, सस्तिविति (स्त्री)
 ■ मुग्ध, आकार-आइति (स्त्री) ८ मल्ल
 देशांकित भगवदशुभचिह्न ९ अगस्त्यपत्नी,
 लोपामुद्रा १० मुद्रा, लाटन चिह्नम् ।

—मार्ग, स पु (स) भ्रमरप्रभम् ।

—यत्र, म पु (म) मुद्रणयत्रम् ।

—रासम, म पु (म न) विशाखदत्तप्रणीत
 मस्कृतनाटकम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) मुद्रान्तर्वम् ।

मुद्राक्षर, स पु (स न) सोमक धातुमय-
 मुद्रण, भ्रमराणि ।

मुद्रिका, म स्त्री (म) अगुलीयक, कर्मिका
 १ अनामिकाधार्य कुशागुलोयक, पवित्र
 ३ नाणक ४ मुद्रा ।

मुद्रित, वि (म) दे 'मुद्रांशित' २ मुद्राक्षरै
 सोमनाक्षरै अंकित ३ पिहित, सङ्ग, निमी
 लित मुद्रलित ।

मुद्रा, अव्य (स) व्यर्थ, वृथा २ अमत्य,
 वृथा (अव्य) । वि, व्यर्थ २ असत्य । स
 पु, अमत्य, अनृतम् ।

मुनका, स पु (अ) काकलाद्रक्षा, नासिका,
 फलोत्तना, दुग्धीयिका ।

मुनहमि(स)र, वि (अ) आश्रित, अव
 लम्बित ।

मुनाजरा, स पु (अ) शास्त्राय, बाद,
 तरुशास्त्रम् ।

मुनाडी, म स्त्री (अ) दे 'मनादी' ।

मुनाफा, म पु (अ) लाभ वाय कल्म् ।

मुनामित्र, वि (अ) वञ्चित, युक्त, योग्य ।

मुनि, म पु (स) निचारक चित्तक, तत्त्व,
 गृहशास्त्र, प्रष्ट १ मौनिन, वाचयम्,
 ऋषि, व्रतिन, तपस्विन ।

मुनीम, स पु (अ मुनीव) सहाय-यक,
 उपकारिन, उप- (उ) उपमित्रिन् आदि)
 २ गणक, कायस्थ, देखर ।

मुनीदा, म पु (स) मुनीश्वर, मुनिपुगव
 २ शत्रुहृदेव ।

मुना, मुन्द, म पु (म मुट >) शिशु
 बालक २ (वधो को मुलने में) अग, तात ।

मुकरद, वि (अ) पनाकिन्, असहाय २
 अमिश्रित (औषधादि), केवैक ।

मुकरह, वि (अ) आनन्-मोद, दायकप्रद ।

मुकलिस, वि (अ) अपन, अक्रियन, दखि ।

मुकलिसी, म स्त्री (अ) निर्धनता, दरिद्रता ।

मुकस्मल, वि (अ) स, विलस प्रपञ्च । नि

वि, मर्विल(स्ता)र, विल(ला)रेण, विन्तरन ।

सं पु, नगर, उपात प्रान्त, पुरोपकठ ठ,

उप शास्त्रा, नगर पुरम् ।

मुक्रीद, वि (अ) उपकारिन्, उपयोगिन,

हितकर (स्त्री (स्त्री)] ।

मुफ्त, वि (अ) निशुल्क, निर्मु य ।

—झोर रा, वि, परपिडाद, पराध्रमुष्ट ।

—मे, मु, निशुल्क, निर्मूल्य, मूल्य विना

२ व्यर्थ, निष्प्रयोजनम् ।

मुफ्ती, स पु (अ) न्याय, अधीश्वर अधि-
 पति, परमाध्यक्ष (इस्लाम) ।

मुबतिला, वि (अ) प्रस्त, गृहीत, पीटित ।

मुबरा, वि (अ) मुक्त, अनिरुद्ध १ निर्दोष,

पूत ।

मुबल(लि)ग, वि (अ) सर्व, समस्त ।

स पु, मात्रा २ रूप्यकादिसत्या ।

मुबारक, वि (अ) शुभ भद्र, माल । अव्य,
 शुभ भद्र भूयात, स्वस्ति ।

—बाड, स पु } (फा) दे 'वधार' ।

—बाडी, स स्त्री } (फा) दे 'वधार' ।

मुबारिका, स पु (अ) आयुक्ति (स्त्री) ।

मुबारिमा, म पु (अ) स वि, बाद, हतु

वाद, प्रत, बाद, ऊहापोह, विचार-रणा ।

मुमकिन, वि (अ) सम्भाव्य, संभवनीय,

संभव, शक्य, सम्भावित, माध्य, सपाद्य ।

मुमानियत, स स्त्री (अ) दे 'मनाडी' ।

मुमुक्षु, वि (स) मोक्षार्थिन्, अपवर्गामला

विन् २ श्रमण, मुनि, साधु, भिक्षु ।

मुमुर्षु, वि (स) आमन्त्रयितु २ निधनेच्छुक ।

मुम्नाहिन, म पु (अ) दे 'परीशुक्' ।

मुमकना, क्रि अ (हि मुडना) व्यावृत्त

(भ्वा आ से), आनुच् (कर्म) २ वि,

जन् (दि प वे) ३ अभिशक्त (भ्वा आ

से) ४ प्रतिगम प्रत्यागम, प्रतिनिवृत्त (भ्वा

आ मे) ५ अस्मान् उ (तु दि प

से) मुष्ट (तु प से) ६ दे 'मोच आना' ।

मुमकाना, क्रि स, व 'मुमकना' के प्रे रूप ।

मुमकी, म स्त्री (हि मुमकना) कर्णपूरक,

कर्णवलयक-कम् ।

मुसगा, स पु (फा मुग) उपाकल, कृकवाकु,
 दे 'मुकुट' २ पश्चिन् ।

मुरगाजी, म स्त्री (स) जलपुक्कुट,
यष्टिक, शुक्लकण्ठ ।

मुरज, स पु (स) दे 'मुरज' ।

मुरझाना, कि अ (स मूर्जान) ग्लेभ्ले
(स्वा प अ), विज्ञ (वम), ग्लान
ग्लान विशीर्ण (वि) मू, वृ (दि प स)
२ अवमद विषद (स्वा प अ), दुर्मनायते
(ना धा), विषण्ण-व्यवसज्ज विरुद्राव (वि) मू ।
स पु, ग्लानि-ग्लानि (ग्लो) २ विषाद,
अवमाद वै-दीर, मनस्वम् ।

मुरझाया हुआ, वि ग्लान, ग्लान, जीर्ण,
शीर्ण २ विषण्ण, निर्विषण्ण, अवमज्ज, दीन ।

मुरझा, म पु (फा) मृनक-य, शय य,
कुणय, प्रतन् । वि, उपरत, प्रेन, परेन, विपन्न,
पराह मृन, निर्वीच, निष्प्राण, प्रमीत २ दुर्बल
२ ग्लान ।

मुरझार, वि (फा) मृत, प्रेत २ दूषित,
अपवित्र ३ जह, स्तमित, स्तब्ध ।

मुरघ्या, (अ मुरघ्यह) मिष्टपाक, पलोपस्वर ।

मुरघ्या, स पु (अ मुरघ्यज) समचतुरस्र,
समचतुर्भुज २ वर्ग, द्विपात ३ समचतुरस्र
समचतुर्भुज-वर्गाकार, भूतदः (हम) । वि,
वर्गीकृत, वर्ग- (गन, कुट-आदि) ।

मुरमुरा, स पु (अनु मुरमुर) मिथ्या,
मिमिदा-या भिस्म (सिम)दा ।

मुरमुराना, कि अ (अनु मुरमुर) मुरमुरा
यते (ना धा) ।

मुरली, स स्त्री (नी) बड़ी शिवा, बडा,
वणु, बडा नायिका, मानिका ।

—घर,
—मनोहर, } म पु (स) श्रीकृष्णवन्द ।

मुरघ्यन, म स्त्री (अ) शीर्ष २ सजनता ।
दे—, वि रुम ग्लानुभूतिगन्ध ।

मुरा, म स्त्री (अ) अभिलाष, कामना
२ आशय, अभिप्राय ।

मुरादी के दिन, ॥, यौवनम् ।

मुरारी, म पु (सं-री) श्रीकृष्णचर ।

मुरीद, म पु (अ) शिष्य २ अनुयायिन ।

मुरना, म स्त्री (वा मुरन) मृनु-जग
गानि (न वृ) चन्दा २ अवमद,
विषाद, दीर्घमर्थ, निर्वेद, उत्पन्नाभाव ।

मेहरे पर मुरनी छला या गिरना, मु, मुन

मृत्पुल्लक्षणाणि प्राप्नुं २ अति, विषण्ण-निराश
(वि) विद (दि आ अ) ।

मुरा, स पु . दे 'मुरदा' ।

मुरा, स पु (हि मरोड) दे 'मरोड' (२) ।
२ दे 'वेविद्य' ।

मुरजिम, वि (अ) अभियुक्त, दूषित ।

मुरतवी, वि (अ) विनवित, व्याक्षित,
अवगित ।

मुरतान, स पु (स मूलनान) मरुदापुर,
साम्नीपुरम् ।

मुरवानो, वि (हि मुरतान) मूलत्राण-
विषयक-सवविन, मूलत्राण । स स्त्री, राणिणा
भेद २ अपीनगैरिक, मूलत्राणीकृतिरा ।

मुरम्मा, वि (अ) भाग्युर, ज्ञानमान
२ सुवर्ण-रजत, रत्न रजित । सं पु, हेमलेप,
रजतरजन २ आदवर, आपातरम्या ।

—करना, कि स, रजतैत-स्वर्णेन लिप् (पु
प अ) -रज् (मे) ।

—साज, स पु (अ + फा) अथा हेम-
लेपकार ।

मुरहदी-डी, स स्त्री, दे 'मुलेडी' ।

मुरात्राव, स स्त्री (अ) दे 'मिलन' (२) ।

—करमा, कि स, दे 'मिलना' ।

—करवाना, कि मे, परिचय क (मे), परि
वि (मे) ।

मुराकाती, स पु (अ मुरावात) परिगिन
२ दर्शक ।

मुराजिम, स पु (अ) दे 'नीवर' ।

मुराजिमत, स स्त्री (अ) दे, 'नीवरी' ।

मुरायम, वि (अ) कोमल, सुवमार २ शृङ्गा,
विषण ।

—करना, मु, परस्व कोष शम् (मे) नमयति ।

मुराहिना, म पु (अ) दे 'निरीमग'
२ आदर ३ अनुग्रह ।

मुलेटी, म स्त्री [स मधुवटी (स्त्री)]
यष्टिमधु (न), मधुवटिना, मधुर, क्रीडनम् ।

मुल्क, मं पु (म) देग २ प्रांत ३ समार ।

मुल्क, वि (अ) स्व, देशीय २ शामन
नवविन् ।

मुरग, मं पु (अ) यवनपुरोहित २ अध्या
पन ।

मुराहिन, मं पु (अ) अभिभाषकनिदा
पन ।

मुवा-आ, वि (म मृत) निर्जीव, निष्प्राण
२ नीच, तुच्छ ।

मुसाइरा, स पु (अ) कविसम्मेलनम् ।
मुसाबहत, म स्त्री (अ) साहस्य, साम्यम् ।

मुस्क, म पु (का) कस्तूरी रिका, मृगमद
२ दुर्गन्ध ।

मुस्क, स स्त्री (देश) सुर, बाहु ।

मुस्क कसना या बाँधना, मु, बाहु पृथक्
नियत (नु) ।

मुस्किल, वि (अ) कठिन, दुस्ताध्य । स स्त्री,
कठिनता २ विपत्ति (स्त्री) ।

—कुशा, वि सन्दृक्लेश विन्, हर विनाशक ।

—आसान होना, मु, सन्दहरणम्, विपद्
विनाश (दि प से) ।

मुक्की, वि (का) कृष्ण श्याम २ मृदमद-
मिश्रित २ श्यामाश्च, क्षुगाह ।

मुक्त, म पु (का) मुक्ति (पुं स्त्री) ।

एक—, कि वि, युगपत् (अव्य) ।

मुहामुनी, स स्त्री [स टि (अव्य)] मुष्टी
मुष्टि (अव्य), मुष्टिमुहम् ।

मुहि, म स्त्री (म पुं स्त्री) दे 'मुका' (१) ।
२ पलपरिमाण (४ या ८ तोल वा) ३ चौथे
४ दुग्ध ५ त्तर, सर ।

—मुह, म पु (स न) दे 'मुकैवानी' ।

मुहका, स स्त्री (स) दे 'मुका' २ दे
मुहठी' (१) ।

मुमक(कि)राना, कि. अ (स स्मयकरण)
न्मि (च्वा आ अ), इवत्तमद मुदु हम्
(च्वा प ने) मुदुगास्य क । म पु, स्मयन,
इवद्दहमन, मिन, मुदुहाम् ।

मुमकरानेवाला, स पु, स्मेर, सम्मिन, स्मय
मान, स्मित-कारिन् शालिन् ।

मुमक(कि)राहट, म स्त्री (हि मुमकराना)
स्मितति (स्त्री), मद-मुदु-हाम् हस्मित-
हाम्यम् ।

मुसत्रिक, म पु (अ) ग्रथकार, पुस्तकप्रणेत् ।

मुसल, म पु दे 'मुसल' ।

मुसलमान, म पु (का) यवन मोहमादीय,
*मुसलमान ।

मुसलमानी, म स्त्री (का) यवनी *मुस-
लमानी २ दे 'यतना' ३ दे 'दुस्लाम' ।

वि, यवन (नी स्त्री), यवनधर्ममवधिन् ।

मुसलाधार, } दे 'मुसल' के नीचे ।

—मह वरमना, मु }
मुसलामुसलि, स स्त्री (म) मुस (श, प)
ल, युद्ध-मग्राम ।

मुसलिम, स पु (अ) दे 'मुसलमान' ।

मुसली, स स्त्री (म मुश(श)ली) मुश(श)लीका,
ताल-मुल्का पत्रिका, अशौन्नी, भूताली, दीर्घ
वदिका हेमपुपी, गोधापरी ।

मुसल्ला, म पु (अ) *आराधनास्तर,
*उशमनामनम् ।

मुसव्विर, म पु (अ) दे 'चित्रकार' तथा
'मोगेग्राफर' ।

मुयाकिर, म पु (अ) पयिक, पाथ, दे
'यानी' ।

—झाना, म पु (अ + का) पयिकाश्रम,
पाथ, शाला-गृह, *धर्मशाला ।

मुयाकिरी, म स्त्री (अ) पयिकत्वं २ यात्रा,
प्रवास ।

मुयाहब, स पु (अ) परिपार्थ(वि)क,
पार्थग्य ।

मुमीबत, स स्त्री (अ) बट, क्लेश २ आपद्
विपद् (स्त्री) ।

मुस(५)डा, वि (स दृढ का अनु) पुष्टाग,
दृढ, देह-तनु-अग, बलवत् २ दुवृत्त, खल ।

मुस्तकिल, वि (अ) ध्रुव, अचल २ दृढ,
चिररवायिन् ।

मुस्तनद, वि (अ) प्रामाणिक, विश्वसनीय ।

मुस्तहक, वि (अ) अर्ह, योग्य, पात्र, अधि-
कारिन् ।

मुस्तैद, वि (अ मुस्तअद) सज्ज, सनद्ध
२ आनुक्षिप्र-कारिन् ।

मुस्तैरी, म स्त्री (हि मुस्तैद) सज्जता,
मज्जता २ आनुकारित्व, क्षिप्रता ।

मुहताज, वि (अ) निर्धन, अकिंचन २ दीन,
पराश्रित २ आक्रान्तिन् ।

मुहब्बत, म स्त्री (अ) प्रेमन् (पु न)
२ मित्रता ३ अमिलाप, काम, प्रणय ।

मुहम्मद, स पु (अ) श्रीमोहम्मद, यवन
धर्मप्रवर्तक ।

मुहरिर, म पु (अ) लेखन, लिपिकार ।

मुहल्ला, स पु दे 'महल्ल' ।

मुहाना, म पु (हि मुह) नदीमुख, मरि-
त्तमग २ प्रवेशद्वारम् ।

मुहाफिज, वि (अ) रक्षक, जाल ।

मुहाल, वि (अ) बठिन दुष्कर २ अत्यन्त, अत्यन्त, असमर्थ । स पु, दे 'महला' ।

मुहावारा, स पु (अ) वाग्धारा, वक्त्र, -

रीति (स्त्री) सप्रदाय २ अभ्यास ३ नीत्यम् ।

मुहासिरा, स पु (अ) उपराध, अवरोधनम् ।

—करना, कि स, अव-उप-रूप (र उ अ) ।

मुहिम, स स्त्री (अ) दुष्करवारी २ आक्रमण ३ युद्धम् ।

मुह, अर्थ (स) पुन ।

—मुह, अव्य, पुन पुन, अमर्त्य ।

मुहूर्त, स पु (स पु न) द्वाराक्षणपरिमित-

काल २ पण्डित्य, अक्षरावस्थ निर्यो माग

३ मागण्डिममय (ज्यो) ।

मूँग, स स्त्री पु (स मुद्रा) सूत्रश्रेष्ठ, रमो

रम, हयानन्द, धार्मिकोत्पन्न, मुण्ड ।

छाती पर मूँग दर्शना, मु, दे 'छाती' के नीचे ।

मूँगफली, स स्त्री (स मूँगफली) मङ्गी

भूस्था, भूधार्मिका, भूवर्णम् ।

मूँगा, स पु (हि मूँग) विद्रुम, प्रवाल-ल,

भोमीग ।

मूँगिया, वि (हि मूँग) मुद्रा-हरित (ल)-

पलायन-वर्ण ।

मूँउ, स स्त्री [स शमश्रु (न)] गुफ, ओष्ठ

रो(लो)मन्द (न) ।

—उखाटना, मु, बटोर दन् (जु) २ बर्त

चूर्ण (जु) ।

—नीधी होना, मु, रजित (वि) भू

२ अवमन्द (वम) ।

—पर ताव देना या हाथ फैरना, मु, शीर्ष

प्रदेश (मे), बीरताभिमानेन शमश्रुतावृत्ति (मे) ।

मूँन, स स्त्री (स मुन) मुन्नक दृढ-भूष

मूँ, माक्रण्य, रज्ज, दूग्ध, धनुषम् ।

मूँह, स पु (स मुँह) द 'मुँ' (१) ।

—मुकाना, मु, पण्डित् (स्वा प मे),

संन्यस् (दि प मे) ।

मूँदन, स पु, दे 'मुदन' ।

मूँदना, कि म (सं मुण्डन) मुण्ड (स्वा

प से), वर (स्वा उ अ, मे), सुरसुर

(उ प मे), वरान दन् (उ प मे) -

दि (क प अ) - द् (उ उ अ) २ दन्

(मे), दन् (जु), प्रन् (मे), विरन्

(स्वा आ अ) ३ दीप् (स्वा आ मे)

मे), उपन्नी (स्वा प अ) । ४ मेरोगी कृत्

(उ प से) । सं पु, मुण्डन, क्षीर, वपन,

वेश, छेदन-लवन-वतनम् ।

मूँटवे योग्य, वि, मुण्डनीय, वपन्य, वप्य ।

मूँटवेवाला, स पु, मुण्डक, नापिन, मुडिन् ।

मूँडा हुआ, वि, मुण्डित, क्षुरित, उप्त, वल्ल-
वेश-वस्त्रम् ।

मूँदी, स स्त्री, दे 'मुण्ड' (१) । २ मुण्डित

अर्धभाग ।

मूँदना, कि म (सं मुद्रण) प्र-आ, कट

(जु), स-आ, इ (स्वा उ से), आ, म्

(स्वा उ अ), स्तु (क उ से) २ अ,

पिधा (जु उ अ) ३ निमील (स्वा प से),

(मे) मुद्रयति (वा धा) । सं पु, आ-
कटन, आ-स, वरण, पिधान, निमीलन,

मुद्रणम् ।

मूक, वि (म) अवाच्, वागीहीन अनिर्गिर ।

मूगरी, स स्त्री (स मुद्रा >) * वसन

उद्दनी, * मुद्रगरी ।

मूजी, वि (अ) दु पकलेष्ट-वह, द-रादक

२ दुष्ट, दुर्जन, खल ।

मूठ, स स्त्री, दे 'मुठ्ठी' (१ २) तथा 'मुठिया'

(१ २) ।

मूठा, स पु, दे 'मुठ्ठा' ।

मूठ, वि (मं) अश्र, मूर्ध, मर्ध, निवृद्धि

२ स्तम्भ, निषेध ३ व्यामोहित, मृदमय ।

—मति, वि (सं) मूठ, बुद्धि-वैयम् ।

मूठता, स स्त्री (स) अश्रता, मूर्धता, बुद्धि-

वैयता ३ ।

मूठ, स पु (स न) खव, प्रकाश, मेह,

गुणनिस्वर ।

—मूठना, कि अ, मूठयति (जु), मूठयति

क, मिह (स्वा प अ), मूठ उत्सृज् (उ

प अ) ।

—मूठ, स पु (स न) अश्रमी ३ मूठ

३ मूठरी ।

—मूठान, स पु (मं न) * मूठानागर-रन्,

मूठान्य ।

मूर्ध, वि (म) निर-दन्, बुद्धि, अनिर,

बाध, अश्र, अनभिष्ट, अश्रित, मन्, मर्धा,

विषा प्रदान-बुद्धि, क्षीन-राष्ट्र-रहित ३ ।

मूर्धना, स स्त्री (मं) अश्रता, अनभिष्टता,

मदता, दुर्निर, दुद्धि, व, ज्ञान, अवोष,
जन्ता इ ।

मूर्च्छना, सं स्त्री (म) सतीता-प्रकार ।

मूर्च्छा, स स्त्री (स) सं, मोह, कर्मल,
मूर्च्छन, मूर्च्छाय, चैतन्य-सा-शेष-नाश ।

—आना, क्रि अ मूर्च्छ (स्वा प से),
मुह (दि प से) मोह-मूर्च्छा प्राप् (स्वा
प अ), रुद्धा चेतना हा (जु प अ), नष्ट
सह-जुसचेतन (वि) भू ।

मूर्च्छित, वि (स) मूह, मुष, मोहवश,
मूर्च्छावश, नष्ट-जुस-विगत, चेतन-चैतन्य-सह ।

मूर्त्ति, वि (स) मूर्तिनय, स्तार, अद्वित्युक
२ कठिन, स्थूल, सुसह्य, घन इ 'मूर्च्छिना' दे ।

मूर्ति, सं स्त्री (स) चित्र अट्टेस्य रेख
चित्र २ प्रतिरूपि (स्त्री), प्रतिच्छद,
प्रतिमा इ अद्वि (स्त्री), आकर, स्वरूप
४ शरीर, देह ।

—कार स पु (स) चित्रकार २ प्रतिमा
कार ।

—पूजा, स स्त्री (सं) प्रतिम-पूजनम् ।

—विद्या, सं स्त्री (स) मूर्ति-निर्मा-यटना ।

मूर्तिमान्, वि (स मय) शरीर, शरीरिन,
वय-देह, भव-धरिन्-वय, हेदिन्, मूर्त्ति
२ हृदय, हृदिगोचर, प्रत्यक्ष, सकार ।

मूर्द्धा, स पु (स) शिरोर, दे 'वेद्य' ।

मूर्द्धा, स पु (स-अन्) शीर्ष, दे 'तिर' ।

मूल, सं पु (स न) शिष-का ज्य,
मूल (अ) ज, अग्निनामक २ वद-द इ उप
क्रम, आरय, अदि ४ आदि, करण
बीज हेतु, प्रकृति (स्त्री) ५ मूलवित्त,
दे 'पूजा' इ अद्य-अरमिक, अग ७ गृह
मूल, वास्तु (पु न) ८ मूलग्रन्थ, व्याख्येय
वक्तृ ९ नक्षत्रविशेष १० समीप ११ दे
'निष्क-मूल' । वि, मुख्य, प्रधान ।

—घन, स पु (स न) मूल, मूल, द्रव्य
विद्य, सामकम् ।

—मूलदा, वि (सं समा-सन्तर्मे) —कारणक,
सद-मूल, —उत्पन्न (उ अज्ञानमूलक, अज्ञान
कारणक इ) ।

मूली, स स्त्री (सं मूलक) राजपुत्र,
महेश्वर, हरिदत्त, वदमूल, दीर्घ, मूलक-

पत्रकन्दकम् । (छोटी मूली) मूलकपोषिक,
चातक्यमूलक, लघुमूलकम् ।

मूली को मूली गावर समझना, मू, टा-य-मू
मन् (दि आ अ), अवधीर् भवान् (जु) ।

मूल्य, स पु (म न) बल-न, अद,
अर्ह, अवकर, प-य ।

—रहित, वि (स) तुच्छ, निस्तर, व्यर्थ,
धुद ।

—मृद्धि, स स्त्री (स) बल-अर्थ, मृद्धि-उप
चय-उद्वि (स्त्री) ।

मूल्यवान्, वि (स-वय) बहुमूल्य, महार्थ,
अमूल्य, अमूल्य ।

मूल्याकन, सं पु (सं न) मूल्य-बल
अर्थ, निर्धारण-निश्चयनम् ।

मूप, मूप (पि) क, म पु (स) उदुह, दे
'चूहा' ।

—वाहन, स पु (म) गणेश ।

मूसल-न, स पु (स सुसल-ल) सुर(र)-
ल-ल, अयोध्याम् ।

—चद, स पु, अशिष्ट, असम् २ पुष्टपुष्ट ।

मूसल (ला) वार बरसना, सु, अनिव-अनि
वे-न भगामरी वृप् (स्वा प से) ।

मूसलाधार वर्षा, आसर, धारा, आसर
(नि-न) पात-वर्ष-वर्षम् ।

मूसली, स, स्त्री, दे 'मुसली' ।

मूसा, स पु (स मूष) दे 'चूहा' ।

मृग, स पु (स) हरिण, कुरा, जन्,
वातापु, (अ) निनयोनि, प-ग-क, क्रय-
भ, रिष-भ, चारुलेचन, शारण, कृष्ण
सार, पृथग-य (पु), प्लाविद (पु),
मस्क, रुह, रोदिन, लिपु, वनन, शवर,
रौद्धि, वातप्रमो (पु) २ पशुमन्त्र
२ वन्यपशु ४ मार्गशीर्षमास ५ मकरराशि
६ पुरुषभेद ।

—छाला, स स्त्री (सं+दि) मृदा हरिण,
अग्नि वर्मन् (न) ।

—तृष्णा, स स्त्री (स) मृदा, तृष्-तृष्णा-
तृष्णि-तृष्णि-मरीचिका (सव स्त्री) ।

—नयनी, स स्त्री (स) कुरा मृग, दृश
(स्त्री) शोचन (नी) अग्नी-ईशान-नयना ।

—राज, स पु (स) मृन्त्र, दे 'सिंह' ।

—शिरा, स स्त्री (सं) मृगशिर-शिरम्
(न) शीर्षम् ।

रुगया, स स्त्री (सं) दे 'शिकार' ।

सुगाक, स पु (सं) दाद, अकलांजन,
दे 'चौद' ।

सुगी, स स्त्री (सं) हरिणी, कुरगी, एणी,
पृथनी २ अपरमर ३ कस्तूरी ।

सुगेन्द्र, स पु (सं) सुव, पति-राज,
दे 'सिंह' ।

सुणाल, स पु (सं पु न) विज्ञप्तं, मृणाली,
पद्म-मल-जाल, पद्मपु ।

सुन, वि (सं) दे 'सुरदा' वि ।

सुतक, स पु (सं पु न) दे 'सुरदा'
म पु ।

—कर्म, स पु [स-अन् (न)] प्रेनकृत्य
(अप्येष्टि) ।

सुत्तिका, स स्त्री (सं) दे 'मिष्टी' (१) ।

सुत्युजय, स ॥ (सं) वित्तमुल्य २ शिष ।

सुत्यु, स स्त्री (सं पु) मरण, निश्चय-जं,
पचत्व ना, प्राणनाश, तनु-स्वाय-विच्छेद,
कालधर्म, दिवाग, सन्निधि (स्त्री), प्रलय,
अस्थय, प्राण मय, नाश, मृति (स्त्री),
कवनाज, दीर्घनिद्रा ।

—लोक, स पु (सं) अमलोक २ मर्त्यलोक ।

सुदग, स पु (सं) सुरज, पट्ट, घोष ।

सुद, वि (सं) इक्ष्ण, मनुष्य, सुवत्सर्ग,
२ शुनि मधुर, कवचय शून्य, मनुष्य
२ सुकुमार, रेलव, कोमल, मृदुल, सौम्य,
४, मद, मधुर, दिलम्बवारिन् ।

सुदुता, स स्त्री (सं) इक्ष्णता, मखणता
२ मनुष्यता, शुनि, मधुरता ३ सुकुमारता,
बोमलता २ भदना, मधुरता ३ ।

सुदुल, वि (सं) दे 'सुद' ।

सुदुलता, सं स्त्री (सं) दे 'मृदुल' ।

मै, अव्य (सं-अच्चे) अतरे, अत, प्राय
सप्तमी विभक्ति से (उ पर मै गृहे) ।

—सै, अप्वाय (बड़ी के साथ), प्राय बड़ी
थपा सप्तमी विभक्ति द्वारा (उ खाना
गयेपु वा इम सैष्ठ) ।

मै२, सं स्त्री (अनु) रेभ्य, अजदभ्य ।

मेगनी, स स्त्री (हि गौरी) ॥ गूणशुलिका,
॥ मण्डली ।

मेगनीज, सं पु (अ) लोहकं, मातृम् ।

मेडक, सं पु, दे 'मेडक' ।

मेडा, स प, दे 'मेडा' ।

मेवर, स ॥ (अ) सदस्य, ममामद (पुं) ।

मेह, स पु (सं मेघ) > दे 'वर्षा' ।

मेहदी, स स्त्री, दे 'मेहदी' ।

मेक्सिमम, वि (अं) भूविष्ट, अधिकतम ।

मेख, स पु, दे 'मेघ' ।

मेख, स स्त्री (क्रा) दे 'खूँटा' २ दे
'कील' ३ दे 'पखट' ।

—सारना, सु, बाध (आ आ से), विहद
(अ प अ), विज (ना था, विजयति) ।

मेखल-का, स स्त्री (सं मेखला) बाँची
वि (स्त्री), रस(दा)नान, सारस(दा)न,
कल्या । मसका-की ३ नटिसूत्र ३ कङ्गादि
निबधन ४ सैतमितक ५ नर्मदा ।

मेगज़ीन, ॥ पु (अं) दाखलकोड २ सानि
यिकपत्रिका ।

मेगनेसियम, स पु (अ) अजकतु, मगनकं,
मागिनयम् ।

मेघ, स पु (सं) नल रयो भारा-अमो, धर,
अन्न भुव-वरि-बाह, स्तनयित्तु, दलाहक,
अधर गोरद, वरिद, जलद, मोयद,
अधुर, अयोद, पायोद, धन, ओमून, धूम
योनि, वारि जल रयो, मुक् (पुं), दनाधन,
पर्वन्य २ रागभेद (सीतान) ।

—काल, सं पु (सं) मधुर (स्त्री) बाँची
(स्त्री, बहु), बरै-मन, काल-समय ।

—गर्जन, स पु (सं न) मेघ-मुदभि-नाद-
स्वन, गजित, गर्जन-ना, स्तनिग, वि, स्तुर्भुम् ।

—कृत, सं पु (सं न) कालिदास प्रणीतं
कृत-न्यम् ।

—धनु, स ॥ [स-धुम (न)] रद्भवाय ।

—नाथ, सं पु (सं) मेघपति, दत्त ।

—नाद, सं पु (सं) ददभित २ मेघगर्जनम्
३ वरा ।

—मण्डल, सं पु (सं न) धनपट्टी, मेघ
माला यद्विनी ।

—उर्ण, वि (सं) धनदयाम ।

—बाह्य, सं पु (सं) दत्त, दत्त ।

मेज़, स स्त्री (क्रा) पादपत्रक जम् ।

—गोता, सं पु (क्रा) पादपत्रक जम् ।

मेजवान, सं पु (का) आनिष्ककारिन्, अति विवेक ।

मेटना, कि स दे मिटना ।

मेढ, सं पु (म भित्त) शेव, मीमापर्वन ।

मेढक, सं पु (स मढक) मेक, प्लव, प्लवग, तुर, वर्षा, भू-योष, अडुक, कंडुक, हरि, द्राष्ट, शा(मा)ष्ट ।

मेहा, सं पु (स मेह) दे 'मेडा' ।

मेथिलेटिड स्प्रिट, सं स्त्री (अ) मिथिलिन सार ।

मेथी, सं स्त्री (स) मेथि (स्त्री), मेथिका मेथिनी, दीपनी, बहुपणी, गंध, फला-मीना ।

मेढ, सं पु [म मेढम(न)] वषा, वसा, मेढ २ मेढस्विना रक्षिष्य ३ वस्तूरी ।

मेढा, सं पु (अ) पक्वाशय, पिचड, फड, मलुक ।

मेदिनी, सं स्त्री (स) धरा, दे 'पृथिवी' ।

मेघ, सं पु (म) यज्ञ, मख २ हविस्(न) ।

मेघा, सं स्त्री (स) धारणावनी बुद्धि (स्त्री), स्मरणशक्ति (स्त्री), धारणा ।

मेघावी, वि (स) पण्डित, धीमत्, मेघावत् ।

मेम, सं स्त्री (अ मेम) गौरागी, श्वेतांगी (विदेशीय नारी) ।

मेमना, सं पु (अनु मे-में) अजपोत, छागशाव २ अविर्दिभ, मेपशिष्ट ।

मेमार, सं पु (अ) स्वपति, बास्तुशिल्पिन्, गृहमवेशक, पल्लव, गेहकर ।

—का काम, सं पु, सत्कर्मन् (न) ।

मेरा, री, सर्व (हि मै) मम, मदीय (-या स्त्री), मामकीन (-ना स्त्री), मामक (-मिका स्त्री), मत- ।

मेरु, सं पु (स) सुमेर, हैमाद्रि, रत्नसा, मुरालय २ जपमालाया प्रधानगुटिका ।

—दूद, सं पु (स) वृष्ट, वन्य अस्थि (न) २ ध्रुवमध्यरेखा ।

मेल्, सं पु (सं) दे 'मिलन' (१२) ३ ऐक्यत्व, साम्यत्व, वैमत्याभाव ४ सह्य, मित्रत्व, सौहार्द ५ आनुकूल्य, मामनस्य ६ साम्य, सादृश्यम् ।

—जोल, } सं पु, सुपरिचय, अन्यतरत्व,

—मिलाप, } गाढसौहार्दम् ।

मेला, सं पु (मं मेल्) मेल्क, यात्रा,

मगाज, उत्सव २ जनसमर्द, सकुलम् ।

—टेला, सं पु, जनौष, जनसमर्द ।

मेवा, सं पु (का) शुष्क, फलम् ।

—करोश, सं पु (का) फल, विक्रेत विक्रयिन् ।

मेव, सं पु (स) दे 'मेवा' २ क्रिय, राशि विशेष ।

मेहदी, सं स्त्री (स मेही) रागांगी, मेधिका, यवनेष्टा, नख, रजिनी, रागगर्भा, कोकदत्ता ।

मेह, सं पु (स) मूत्र २ प्रमेह ३ मेघ ।

मेह, सं पु (स मेघ) जलद २ वृष्टि (स्त्री), दे 'वर्षा' ।

मेहनत, सं पु (का, मि स महत्तर) ज्येष्ठ, प्रधान २ मलवाहक, दे 'मंगी' (मेहनतानी स्त्री) ।

मेहनत, सं स्त्री (अ) परिश्रम, प्रयास ।

—मजदूरी, सं स्त्री, शारीरिक-कायिक, अम ज्ञातम् ।

—ठिकाने खराना, सु, थममाफल्यन्, अमेण कायमिद्धि (स्त्री) ।

मेहनताना, सं पु (अ + का) * परिश्रमिक, कर्मण्या, मर्मण्या ।

मेहनती, वि (अ मेहनत) परिश्रमिन्, उद्योगिन् ।

मेहमान, सं पु (का) अतिथि, दे ।

—खाना, सं पु, अतिथि प्राधुण, शाला-गृहम् ।

—नवाज़, वि, अतिथि प्राधुण, सेवक-पूजक-सत्कारक ।

—नवाज़ी, सं स्त्री, दे 'मेहमानदारी' ।

मेहमानदारी, सं स्त्री (का) } अतिथ्य
मेहमानी, सं स्त्री (का मेहमान) } अतिथि, से
वा सत्कार ।

मेहर, सं स्त्री (का) कृपा, अनुग्रह ।

मेहरवान, वि (का) कृपा, अनुग्रहशील ।

मेहरबानी, सं स्त्री (का) दया, अनुकम्पा ।

मेहराव, सं स्त्री (अ) तोरण-ग, वृत्तखण्ड-दम् ।

—दार, वि (अ + का) तोरणाकार (दारादि) ।

मैं, सर्व (स अस्मद्) अहम् । सं स्त्री, अहमनि (स्त्री), अहकार ।

मेका, सं पु, दे 'मायका' ।

मैत्री, सं स्त्री (स) मैय, दे 'मित्रता' ।

मैथिल, वि (स) मिथिलासंघिन् । सं पु, मिथिलावासिन् २ जनक ।

मैथिली, म स्त्री (सं) वैदेही, जानकी ।

मैथुन, स पु (स न) रत्न, सुरत, रति, क्रिया-श्रीदा, महासुख, श्रीदारुण, अमल चरक, निधुवन, धर्मि, समो ।

—करना, कि स, सुगत जानन (त प से), संभोग-रतिक्रीडा क, महासुख अनुभू ।

मैदा, स पु (फा) ममिना, अपूप्य, *अट्टसार ।

मैदान, स पु (फा) समभूमि (स्त्री) हवल-स्थली प्रदेश, उपसल्य २ कीन, भूमि क्षेत्र १ सुद्धभूमि, रणक्षेत्रम् ।

—मारना, मु, विपराजि (भ्वा आ ज), दे 'जीतना' ।

मैन, स पु (स मदन) कामदेव २ दे 'मोम' ।

मैनफल, स पु (सं मदनफल) शसन-छन्दन शल्य-करहाटक, *क २ (वृक्ष) मदन, शसन, छन्दन, शल्य ।

मैनसिल, स पु (स मन शिला) मैपानी, मनोहा, शिवा, कुनदी, दिव्यौषधि (स्त्री), नागजिह्वा, कल्याणिका ।

मैना, सं स्त्री (स मदना) शा(सा)रिका, चित्रलोचना, कुणारी, मधुरालापा, मेधाविनी, गौ, किराटा किराटिका, कलहप्रिया ।

मैनाक, सं पु (सं) हिमवत्सन, सुहिरण्य, नाम ।

मैया, स स्त्री (श मायका) दे 'माना' ।

मैल, सं स्त्री (सं मलिन) दे 'मल' (१-२) । * दोष, विकार ।

—झोरा, वि (हि + क्रा) मल, गोविन्द-गोप्य ।

सं पु, अन्तर-वन्ध-वसन-वासन (न) २ दे 'साडन' ।

हाथ बी—, मु, कुण्टवस्तु (न) धुवदन्त्यम् ।

मैला, वि (म मलिन) दे 'मलिन' । सं पु, दे 'मल' (१-३) ।

—वटना, कि स, आविलयनि-मलिनयनि (ना पा), पत्रिली-मलिनीठ ।

—होना, कि अ, आविली मलिनीभू, वनुष पत्रिल (वि) जन् (रि आ मे) ।

—नुचैला, वि, अनि आविल वनुष मलिन ।

मो, सं स्त्री, दे 'मूछ' ।

मोटा, सं पु (स मूद्वन्) *शरकाङ्गीठ * मुजमूल-वृक्ष-प्रदेश ।

मोटा, सं पु (सं) दे 'मुक्ति' ।

—विद्या, स स्त्री (स) वेदानशास्त्रम् ।

मोगरा, सं पु (म मुदगर) अनिम्ब गन्ध, रात मार, बिट, प्रिय, जन मृदा, इष्ट २ दे 'मुंगरा' ।

मोघ, वि (स) *वर्ष, निष्फल ।

मोच, म स्त्री (स मुच् >) संधि, व्याप्रेष व्यावर्तन, स्नायुविनान ।

—आना या निकलना, कि अ, संधि-व्याधिप् (कर्म)-व्यावृत् (भ्वा आ से), स्नायु विन (कर्म) ।

मोचक, स पु (स) मुक्तिद १ मन्वामिद २ कदली ।

मोचन, म पु (स न) मोक्षण, मुक्तिदान, बधनभजन, मुक्ति (स्त्री) । वि, मोचक, मोक्षन, मुक्तिप्रद ।

मोचना, स पु (स मोचन >) *मोचन, *मालोत्पादन २ मुजुटी, लोहकारीक रणमेद ।

मोचरस, सं पु (स) मोच, स्नाव-स्नार निर्धान, नरमलीपेट, सरस ।

मोची, स पु (सं मुच् >) चर्मकार, पाद-कार मधायक ।

मोझा, स पु (फा) अनुपद्रीना, *चरणधारण, दे 'जुतर' ।

मोजिजा, स पु (अ) वनत्वार, कौतुर, आश्चर्यम् ।

मोट, म स्त्री, दे 'गठरी' ।

मोटन, स पु, (सं न) वैषण, चूर्णन, मर्दन, लण्डनम् ।

मोटार, सं पु (अ) चालन प्रवर्तक, चरम् ।

—हार, सं, स्त्री (अ) चित्तै, रथ, *मोहरम् ।

—पाना, सं पु, मोटरगागरम् ।

—झाड़वर, स पु, मोटरचारक ।

—वय, स स्त्री *मोटर वयम् ।

—घोट, सं स्त्री *मोटरनीरा ।

—साइडिल, सं स्त्री *मोटरसाइडम्, *फटाटिया ।

मोटा, वि (सं मुटि > ?) पीन, पीवर, पुष्ट, पुष्टा (श्री स्त्री), रघुन, रघुलदेह, मरम्बिन् २ वन, निविड, साँद, गाद, रघुन ३ वणमय, कुपिट, ४ अद, नि-वृष्ट, हान, गर्द ५ कुरूप

६ 'ममाधर', विणिष्ट ७ इम, गवत् ८
नह्य, बह्व ९ धनत्, गन्त् ।

—असामी, स पु, धनिन्, धनशन्नि,
धोन् ।

—ताना, वि, दृष्टुष्ट, पष्टा, माम्ल ।

मोती बात, म स्त्री, सामान्य-माधारण प्राकृत,
वार्ता ।

मोट हियाय से, कि वि, -गुलमानेन ।

मोटड, म स्त्री
मोटापन, मोटापा, म पु

मोट, म स्त्री (म मकुष्ठ) रात्र-अरण्य-वन,
मुदग मुकुष्ठ इर, मय(पु)ष्ट शृङ्ग ।

मोड म पु (हि मुना) (नदीमा-
आदि ना) बर आधुत्ति (स्त्री)
० बक्रता, बक्रिमन् (पु), बक्रिभाव,
जिह्मता ३ दे मुटना स पु ।

मोडना, क्रि म, व 'मुडना' के प्रे रूप ।

मोडा, स पु, दे 'मोडा' ।

मोतदिल, वि दे 'मोतदिल' ।

मोतिया, म पु (हि मोती) मही, मलिका,
वन, चन्द्रिका, गौरी, प्रिया मोत्या, मिता, दे
'मोतरा' (१) ।

मोतियाविद्र, स पु (हि मोती+स विद्र)
मौक्ति-मुक्ता विद्र (नेत्ररोग) ।

मोती, म पु (म मौक्ति) मुक्त, शक्ति,
मुक्ताङ्ग शक्तिन् ।

—पिरोना, क्रि म, मोतिरानि मृत् (बु)
उ(पु)न (पु प से) समथ् (क प से) ।
पु, मुमधुर भाप् (स्वा आ मे) ० मुख
धानै लिप (पु प मे) ३ रुद्र (अ प
मे) ४ मुमुक्षुमार्ग कृ ।

मोतीचूर, म पु (हि मोती+चूर) मुक्ता
मातृक ।

—आँख, म स्त्री, *मीनरुनत्र, लुगोलभा
सुरनेत्रम् ।

मोतीज्वर, म पु (हि मोती+स ज्वर)
शीतल-मसरिका, ज्वर ।

मोतीमि(श)रा, म पु (हि मोती+शरणा)
आन्त्रि मन्थर, ज्वर ।

मोधा, स पु (सं मुलक क) मुक्ता, कुरु
विद्र, भद्रा, भद्रक ।

मोद, म पु (स) हर्ष, आनन्द, दे
प्रमत्तन् ।

मोदक, स पु (स) मिष्टान्नभेद । वि, हर्ष
चनक, आहृदक ।

मोदी, स पु (॥ मोदक) ० अन्न, विक्रेत
विक्रयिन्, दे 'परचूनिया' ।

—भ्राना, स पु (हि +क्रा) अन्न
भांडारम् ।

मोम, स पु (क्रा) सिक्थ, सिक्थक, मांश
कामन्-ल, मधुज, मधुदोष, मधूच्छिष्ट, मधून्,
मधूल्म ।

—की नाक, स स्त्री मु, चल्चित्, अस्थिरमति ।

—जामा, स पु (क्रा) *माधुज-सैक्थिक-
मिक्थाक, वलम् ।

—दिल, वि (क्रा) मृदुमानस, आद्रचित्त ।

—बत्ती, स स्त्री (क्रा + हि) मधुज सिक्थ,
वर्ती-नति (स्त्री) ।

—हरना या बनाना, मु, दयाद्रीक, करुणाद्रि
(वि) विधा (जु उ अ) ।

—होना, मु, दयाद्रि (वि) भू, अनुक्प्
(स्वा आ से) ।

मोमियाई, स स्त्री (क्रा) कृत्रिमशिलानद्य
(न), कृत्रिमशिलानित (स्त्री) २ जग-
पूर्व स्निग्धोपभेद ।

मोमी, वि (क्रा) सिक्थमय, माधुज,
सैक्थिक ।

मोर, स पु (॥ मयूर) बाँहण, नीलकण्ठ,
चित्र, पिच्छक पत्रक, कलापिन्, केकिन्,
चक्रिन्, नतनप्रिय, बाँहण, मुनगारि,
मयानदिन्, शिरादिन्, शिखावल, वर्षामद,
प्रचलाकिन् ।

—की ध्वनि, स स्त्री, 'केवा' दे ।

—की पूछ, स स्त्री, कलाप, पिच्छ, प्रच
लाक, नई, शिखड ।

—चद्रिका, स स्त्री, चद्रक, मेचक ।

—पखी, स स्त्री, केलि-वि १२, नौका ।

—मुकुट, म पु, मयूरमुकुट-ट, शिखड
शेपर ।

—शिखा, स स्त्री, बाँहचूडा, शिखिशिखा,
शिखाड ।

मोरचा, स पु (क्रा) दे 'जग' २ मुकुर
मलम् ।

मोरचा^२, स पु (का मोरचा^२) परेया, खेय, खाताम् ।

—बदी करना, मु, परिखाया परिवेष्ट (प्रे) परिखायन् (२३ प मे) सेना खातेपु निजुञ् (र वा अ) ।

—लेना, मु, युष (दि आ अ) ।

मोरछल, म पु (हि मोर+छल) *शिखट चामर, *कलापव्यजनम् ।

मोरनी, स स्त्री (हि मोर) मयूरी शिखरिणी, बहिणी, बेकिनी ।

मोरी, स स्त्री (हि मोहरी) नाली, नालि (स्त्री) *बहनी, जलमाय ।

मोल, स पु (स मूल्य, दे) ।

—लेना, कि स, दे 'खरीदना' ।

—मोल, स पु, अधनिर्धारण, मूल्यनिर्णय ।

मोह, सं पु (स) भ्रम, भ्राति मिथ्यामति (स्त्री), निवर्त, आमास, प्रपंच, अविद्या अज्ञान १ मनतात्त्व ३ स्नेह, राग, प्रेमन् (पु न) ४ बह, दुःख ५ मूर्च्छा ।

—लेना, कि स, मुह (प्रे), मन ह (वा प अ), बदी कृ ।

मोहक, वि (स) चेतोहर, मनो-हारिन् रत्न, २ मोहजनक ।

मोहताक, वि (अ) दे 'मुहताक' ।

मोहन, सं पु (॥) मोहक, मनोहारिन् १ श्रीकृष्ण ३ मूर्त्तिकारक उपचाग्भेद (तत्र) ४ अक्षभेद ५ कदर्पबाणविशेष ६ शस्त्ररूप । वि, मोहक, चेतोहर ।

—भोग, स पु (न) (१-३) सयाव कदली-आम्र, भेद ।

मोहना, कि अ (म मोहन) अनुरन्-आमन (कर्म), आसक्त-अनुरक्त-बद्धभाव भू २ मुह (दि प से), दे 'मूर्च्छा जाना' । कि स, प्रीति-अनुशास-अभिलाषजन्य (प्रे), अनुरज् (प्रे), बदी कृ २ भ्रम भ्राति-सिद्धि जन्य (प्रे), प्रनु-वच (प्रे) । स पु, अनुरजन, अनुशास मूर्च्छा, मोहन, बन्दीकरण, बचन, प्रद्वारणम् ।

मोहनी, सं स्त्री (स) विष्णो रूपविशेष २ मित्राग्रभेद ३ मोहन, शक्ति (स्त्री) मंत्र ४ माया । वि स्त्री (सं) मोहना, चेतोहरी ।

—डालना, मु, अभिनयेन मायया वा बशीकृ ।

मोहर, स स्त्री (का) दे 'मुद्रा' (१-४) । २ भुवर्णमुद्रा, निष्क व, दीनार ।

—लगाना, कि स, मुद्रयति (ना था), मुद्रया अक (नु) ।

मोहरा^३, स पु (हि मुह) पात्र भाजन, मुख १ पदार्थस्व अग्र-ऊर्ध्व, भाग ३ पण्डित जातक ४ नासीरचरा (पु बड़), सेना मुख ५ निगमनमार्ग, द्वारम् ।

मोहरा^२, स पु (का मोहर) शार-रि, केनौ २ मृगमय *मस्थानपु (माचा) ३ दे 'जहरमोहरा' ।

मोहलक, स स्त्री (अ) अवकाश २ अवधि ।

मोहित, वि (स) मोहमत्त, भ्रात २ आमक, अनुरक्त, बद्धभाव ।

मोहिनी, वि तथा स स्त्री (अ) दे 'मोहनी' वि तथा स स्त्री ।

मोही, वि (स-हिन्) मुग्धकारिन्, चेतोहर ३ अनुरागिन्, स्नेहिन् ३ भ्रात ४ मुग्ध, लोभिन् ।

मौजी, म स्त्री (स) मुजमेयला ।

—बधन, स पु (स न) मुजमेयलधारणम् ।

मौका, स पु (अ) घटनास्थान २ स्थान, प्रदेश ३ अवसर, अवकाश ।

—देखना, मु, अवसर प्रतिपा (प्रे, प्रतिपा लयति) ।

—हाथ से न जाने देना, मु, अवसर न वा (प्रे वापयति) हा (नु प अ, प्रे, हापयति) ।

मौकफ, वि (अ) दे 'बरखास्त' ।

मौकफ़ी, म स्त्री (॥) दे 'बरखास्तागी' ।

मौक्तिक, स पु (स न) मुक्ता, मुक्तफल, शीतकथ, शक्तिजम् ।

—दाम, सं पु (स-मह न) मुक्ता-मौक्तक, हार-न्त- मुक्तदर्शी ।

—मर, स पु (सं) दे 'मौनिकदाम' ।

मौक्तिक, वि (सं) बालिक छल विना ।

मौज, स स्त्री (अ) तरंग, बप्ती, शीवी वि (स्त्री) २ कामपार, छं, छद्म (न), चित्तराग ३ अनन्द, माद ४ वेमद, विम्व ५ दे 'धुज' ।

—आना, मु, स्वच्छन्तया महना प्रवृत्त (वा आ से) ।

—मनाना या उठाना, मु, नद् (भ्वा प से),
मुद् (भ्वा आ से), रम् (भ्वा आ म) ।

मौज़ा, स पु (अ) ग्राम ।

मौजी, वि (अ मौन) अजदिन्, उलामिन्
२ कामचारिन्, त्वैरिन् २ अस्तिरमणि ।

मौजूद्, वि (अ) उपस्थित, विद्यमान ।

मौजूदगी, स स्त्री (अ न फ्रा) उपस्थिति
(स्त्री), विद्यमानता ।

मौजूदा, वि (अ) वर्तमान, विद्यमान, प्रचलित,
आधुनिक, सांप्रतिक ।

मौत, स स्त्री (स मृत्यु दे) ।

—सिर पर खेलना, मु, जीविनसशये वृद्
(भ्वा आ से) ।

अपनी—मरना, मु, प्रकृत्वा स्वभावेन मृ
(तु आ अ) ।

मौन, स पु (स न) निशब्दता, तूष्णीं
भाव, वाक्, रोध-नियमन-स्तथ २ मुनि
व्रतम् । वि, दे 'मौनी' ।

—अत, स पु (स न) मूकता-मूकित-तूष्णीं
कता, प्रतिज्ञा सकल्प व्रतम् ।

—खोलना, कि अ, मौन भञ् (र प अ),
तूष्णींभाव त्यज (भ्वा प अ) ।

—धारण करना, कि अ, वाचयम् (भ्वा,
प अ)-निरुध् (र उ ङ), मौन धृ (तु)
भञ् (भ्वा उ अ) ।

मौनी, वि (स निन्) वाचवम, मौनव्रतिन्,
मूक, निशब्द, तूष्णीक । स पु (स) मुनि,
तपस्विन् ।

मौर, स पु (स मुकुट) वरस्य तालपत्र
मुकुट, *मुकुट, २ प्रधान, शिरोमणि ।

मौरी, स स्त्री (हि मौर) कष्पात्तालपत्रमु
कुटक, *मुकुटकम् ।

मौरुसी, वि (अ) पैतृक, पितृ, परंपरागत ।

मौर्व्य, स पु (स न) मूर्धन्ता, अगता,
जटता, मूढता ।

मौर्य, स पु, (स) प्राचीन भारतस्य वंश
विशेष ।

मौर्वी, स स्त्री (स) धनुषुष, प्रत्यचा, ज्या ।

मौलसिरो, स स्त्री (स मौलि + श्री >)
बकुल, सीधुगंध, मुकु(कु)ल, मधुपुष्प
सुरभि, स्थिरकुसुम, भ्रमरानंद ।

मौला, स पु (अ) परमेश्वर ।

मौलि, सं स्त्री (स पु स्त्री) शिखर, शृंग,
ऊर्ध्वभाग २ शीर्ष, मस्तक ३ मुकुट, किरीट
४ जट, जटक ५ अशोकवृक्ष ६ प्रधान,
मुख्य ७ पृथिवी ।

मौलिक, वि (स) मौल, आधारभूत २ प्रधान,
मुख्य ३ माद्य, आदिम ।

मौमा, स पु, दे 'मासड' ।

मौसिम, स पु (अ) ऋतु, काल, समय
२ उपयुक्तसमय, उचितकाल ।

मौसिम, वि (क्रा) आर्तव, ऋतु-संबन्धिन्
विषयक २ समयातुकुल, कालानुरूप ।

मौसी, सं स्त्री, दे 'मासी' ।

मौसेरा, वि (हि मौसी) मातृष्वसुसंबन्धिन् ।

—भाई, स स्त्री, मातृ, प्लेसेय प्लेसीय ।

मौसेरी बहिन, स स्त्री, मातृ प्लेसी प्लेसीया ।

म्यौर्वी, स स्त्री (अनु) विडालशब्द,
*म्यौर्वार ।

—करना, मु, मवेन मदमद वद् (भ्वा प से) ।

म्याद्, स पु, दे 'मीआद्' ।

म्यान, स स्त्री, दे 'मियान' ।

म्लान, वि (स) म्लान, विशीर्ण २ दुर्बल
३ मज्जित ४ सिन्न, अवसन्न ।

म्लानि, स स्त्री (स) म्लानता, कानिश्चय,
विषण्णता २ खेद, अवसाद, शोक, *म्लानि,
(स्त्री) ।

म्लेच्छ, स पु (स) वर्णाश्रमधर्मविहीन,
अनार्य २ गोमांसभक्षक ४ अस्पृष्टभाविन्
५ दुर्ज्ञेय, दुष्ट । वि, अधम, नीच, पापिन् ।

य

य, देवनागरीवर्णमालाया षड्विंशो व्यञ्जनवर्ण,
यकार ।

यता, स पु (स यन्द्) शल्यक, निदेशक
२ वाहन-चालक, सारथि । ३ हस्तिपा, गजानोव ।

यंत्र, सं पु (स न) देवाधिष्ठान, विविध
प्रभावयुक्त अकार्ययुक्त कोष्ठकचित्र (तत्र) ।

२ दास्ययंत्रादि, यत्र (मशीन) ३ साधन,
उपकरण ४ अग्न्यस्त्रं ५ वाद्य, वीणा ६ दे
'ताला' ।

—गृह, स पु (स न) यत्रशाला २ मान
मंदिर, वेधशाला ३ (अपराधिना) यत्रणागृहम् ।

—मंत्र, स पु (स न) अभिचार, कुहक,
कुसुनि ।

—प्रिया, स स्त्री (म) यत्र शास्त्रविधानम् ।
 —शाला, स स्त्री (स) दे यत्रगृह ।
 यत्र, म पु (म) यत्रर यत्र, शान्तिम् ।
 यत्र, म पु (स न) निवृत्त, दमनम्
 २ वन, मयमनम् ३ पीडा, वेदना
 ४ रक्षण, अभिरक्षा ।
 यत्रा, म स्त्री (स) कष्ट, क्लेश, यातना
 २ वेदना पीडा ।
 यत्रालय, स पु (म) यत्र, गृहशाला
 २ मुद्रणालय ।
 यत्रित, वि (स) यत्रन् २ तालवृद्ध ।
 यत्रता, वि (का) अनुपम, अद्वितीय, अग्रतम ।
 यत्रमो, वि (का) वृत्त, सन, सहस्र ।
 यत्रीन, स प (अ) निश्चय २ विश्वास ।
 यत्र, म पु (म न) कालखट, कालक,
 बालेन, कला, महासाधु, दे 'विगर'
 २ यत्र, वर-वृद्धि ।
 यत्र स पु (म) देवताभेद, गुणक २ कुबेर ।
 —रात्र, म पु (स) कुबेर, यत्रराज ।
 यक्षिणी, स स्त्री (स) यक्षभावा, यक्षी,
 २ कुबेरपत्नी ।
 यक्षी, म पु (स यक्षम्) क्षय, शीघ्र,
 राजयक्ष्म (पु), रोगराज ।
 यत्रनी, स स्त्री (का) मान, मन्द-रस
 २ शाक, मन्द रस ।
 यत्रा, स पु, अतमीय, सवित्, वाध, वपु । वि, पत्रादि २ अनुपम ।
 —योगावा, स पु, स्वरीयपरपीवा (बहु)
 २ मित्राधवा (बहु) ।
 यत्रमान, स पु (स) यत्रपति, यष्ट, जतिन्, यष्ट-कृत् २ दानिन्, दत् ।
 यत्रुर्द म पु (स) अर्वाणा परमप्रविविध, यत्रुम (न), यत्रुति (स्त्री) ।
 यत्रुर्वेदी, स पु (स-दिन्) यत्रुर्विद (पु) ।
 यत्र, स पु (स) याग, अन्तर, सन-जन, मरा, मनु, सन, हवन होम यज जि, इत्या, इष्टि (स्त्री), मन्त्रानु, मह २ विष्णु ।
 —यत्र, म पु [मं भन् (न)] यष्ट, क्रिया कृत्य २ वमनीयम् ।
 —यत्र, मं पु (मं भन् न) हवन, वेदो-कुटम् ।
 —यति, म पु (स) दे 'यजमान' ।
 —यष्ट, मं पु (सं) यष्टियन्त्रि २ अथ १ धातु ।

—पात्र, म पु (न न) याग, भाजन भातम् ।
 —भूमि, स स्त्री (स) यागक्षेत्रम् ।
 —शाला, स स्त्री (स) यष्टसदन-मदि (यागक्षेत्रम्) ।
 —यष्ट, स पु (स न) यष्टोपवीतम् ।
 —यष्ट, स पु (स) यागवृष्ट ।
 यष्टा, स पु, (स न) यष्टभाग २ यत्र साधनम् सामग्री उपकरणम् । (सं पुं) यष्टुम्भर ज तुफल २ क्षुद्रि, दत्तधावन ३ विष्णु ।
 यत्रागार, स पु (स न) यष्ट, शाला वेदी वेत् (स्त्री) ।
 यष्टोपवीत, स पु (स न) पवित्र, सावित्री यत्रागार, यष्ट, द्वितीय ।
 यति, स (सं) यति, जितेन्द्रिय, तापस, परित्राण, सन्त्यामिन्, योगिन्, भिन्, रत्नसन् २ अष्टाचारिन् ।
 —यत्र, स पु (स) सन्त्यास, गिज्ञावर्षम् ।
 यति, स स्त्री (म) विगम, विरति (स्त्री), विप्राम, पाठविच्छेद (छन्द) ।
 यतिनी, स स्त्री (म) सन्त्यासिनी, परित्र जिज्ञा २ विप्राम ।
 यती स पु (स तिन) दे 'यति' 'सं पु' ।
 यतीम, सं पु (अ) छत्तिमड, अनाथ, मातृविहीन ।
 —यत्रा, स पु (अ-का) अनन्त्यास, छत्तिमडालय ।
 यत्र, स पु (स) प्रयत्न, उद्योग, उपम, अध्यवसाय, चेष्टादि, आश्र-याम, परि, श्रम, व्यवसाय २ उपाय, वृत्ति (स्त्री) ३ विरति, उद्योग, रोगप्रतिकार ।
 —यत्रा, वि अ, प्र, यत्र तथा वेष्ट (म्वा आ मे) परि, श्रम (दि प से), अष्टाव-यष्ट मो (दि प अ), उद्यम (म्वा प अ), आवम (म्वा दि प से) प्रयत्न परिश्रम अध्यवसाय इ ।
 —यत्र, वि (स) यत्रवत्, उपमिन्, उद्योगिन्, आश्र-यामिन्, परिश्रम उद्योग सम, शीन यत्रवत्प्रायण इ ।
 यत्र, अथ (सं) यत्रिभू देवे ३ श्लेष-यत्रे ।
 —यत्र, अथ (स) यत्र तत्र, इतस्तत्र २ अनेत्र, यष्टुम् ।
 यत्रा, अथ (सं न) यथा, भाग सङ्गम्,

मत्त अग, अनुस्मर-अनुकृन् २ यथायोग्यन्,
यथोचिनम् ।

यथा, कव्य (मं) देन प्रकरो, यदा रीत्या
२ दृष्टा उदाहरण, रूपेण, तथा यथा हि,
यत्, इव, यद्वद, अनुरूप, अनुसारम् ।

—काम, क्रि वि (स न) यथा, इच्छ ३४
इप्सिन् अभिनम् ।

—कम, क्रि वि (म न) क्रमेण, कम-नुसारणे ।

—तथा, क्रि वि (स) यथास्तुचित्, येन
वेन प्रकरो ।

—मति, क्रि वि (म न) यथादुद्धि, यथाह-नम् ।

—योरय, वि (म) यथोचिन, यथाह ।

—रुचि, क्रि वि (स न) दे 'यथाराम' ।

—वत्, क्रि वि (स) यथोचित, यथाह,
यथायुक्त २ यथाविधि, नियमानुसर ३ यथा
नर्थ, यथ सत्यम् ।

—शक्ति, क्रि वि (स न) यथा-बल-सामर्थ्य
शुम् ।

—शास्त्र, क्रि वि (स न) शास्त्रानुसृतम् ।

—सम्भव, क्रि वि (स न) यथाशक्यम् ।

—समय, क्रि वि (स न) यथाकाल,
कालानुसारम् ।

—साध्य, क्रि वि (स न) यथा, शक्ति
नमाम्यम् ।

—स्थान, क्रि वि (स न) स्थानानुकूल,
रचिनस्थानेषु ।

यथार्थ, वि (स) सत्य, अवितथ, निर्दोष,
निष्प्रान्त २ उचित, यथार्थ, युक्त । क्रि वि
(म न) युक्त, यथाह, सप्रत, सत्यम् ।

यथार्थता, स स्त्री (स) सत्तरता, निर्दोषता
२ औचित्य, युक्तता ।

यथच्छ, क्रि वि (स न) 'यथकाम' दे ।
वि, (न) यथष्ट, यथेप्तिन्, यथाक्रम ।

यथच्छाचार, स पु (स) स्वेच्छाचार,
उपेक्ष्यवहार ।

यथच्छाचारी, वि (स रिन्) स्वच्छन्द,
स्वैर, स्वैरिन्, अनियत्रित ।

यथष्ट, वि तथा क्रि वि दे 'यथेच्छ' ।

यथोचित, वि (स) यथा, योग्य ३६ युक्त ।

क्रि वि (स न) यथा, योग्य-अहम् ।

यथा, अव्य (स) यस्मिन् काले-समये ।

—कदा, अव्य (स) काले काले, कदाचित्,
कदापि ।

यदि, अव्य (म) चेत् (यह वाक्यारम्भ मे
नहीं आता) ।

यद्, म पु (न) यन्निपु ।

—यन्, म पु (म) यद्, नाथ-श्रेष्ठ पनि
३३, श्रेष्ठम् ।

यद्यपि, अव्य (म) यद्यपि वा सप्तमी से भी,
जैसे, यद्यपि दशरथ विलाप करना रहा तो भी
राम वन को चक दिया = विलपित दशरथे
(विलपनो दशरथस्य) रामो वन ययौ ।

यम, म पु (स) धर्मराज, पितृपति,
कुमार यमुनाप्राप्त वैवस्वन्, कान्, द्रुतधर,
अनर धन महिषध्वज, मन्त्रिवाहन,
जोवितेश २ इन्द्रयनिप्रह ३ योगा-विरोध,
अहिमन्त्य स्तेनमक्षचयापरिग्रहमपालन ४.
बहु ५ दे 'यमज' ।

—यूत, स पु (म) धर्मराजवर ।

—पुर, स पु (स न) यमपुरी, यमलोक ।

—राज, स पु (स) दे 'यम' (१) ।

यमक, स पु (स न) शब्दालकाभेद
(काव्य), (म पु) समय २ दे 'यमज' ।

यमन, म पु (स-औ) यमौ, यमकौ, यमलौ
२ अश्विनीकुमारी (जोड़े में से एक) यम,
यमल । वि, यम, यमक, यमल ।

यमल, स पु तथा वि, दे 'यमज' ।

यमुना, स स्त्री (स) कालिन्दी, कलिन्दा,
कन्या-नदिना, यमौ, यमनौ, सर्वभूता, तरा-
तनुना २ दुर्गा ।

ययाति, स पु (स) नहुषपुत्र, पुररित्,
चक्रवर्तिनृपविरोध ।

ययज्ञान, स पु (अ) पाण्डु, रोग-आमय,
कामन्, पाण्डुक ।

यय, म पु (स) मित-साक्षा, साक, मध्य,
दिव्य, अश्व, धान्यराज, सुराप्रिय, शक्तु,
महेष्ट, पवित्रधान्यम् ।

—यय, स पु (स) यवन, पश्य, ययाग्रज ।

यवन, स पु (स) यूनानवासिन् २ दे
'युग्यमन' ३ विदेशीय ४ म्लेच्छ ५ वै.
६ वेगवान् अश्व ।

यवनानी, स स्त्री (स) १२ यवन-यूनान,
अपा-लिपि (स्त्री) ।

यवनारि, स पु (स) कृष्ण, नन्दनन्दन,
बामदेव, मधुसूदन ।

यवनिका, स स्त्री (स) जवनका, अपनी,
कांडपट २ निरस्करिणी प्रनिसीरा, व्यवधानभा
यवनी, स स्त्री (स) यवनभर्या २ यवन
जातेनारी ।

यवस, स स्त्री (म पु न) घाम, शा, नृणम् २ पत्र, पलाट धान्यतृणम् ।

यवागू, स पु (स स्त्री) उष्णिक्का, आण, विळेपी, तरला ।

यश, स पु [न यशस (न)] जयाति-कील
विश्रुति प्रमिदि (स्त्री) इलोच, विश्रव,
अभिख्यान, समाख्या ।

—गाना, सु प्रशस (भ्वा प से), इलाघ
(भ्वा आ से) २ इत हा (क ड अ),
उपकार विद् (अ प से) ।

यशस्वी, वि (स स्विच्) कौनिमत्, प्रवि,
ख्यात लोकविभुन, सुशस यशोधर, कीर्ति,
पुण्यलोक, प्रसिद्ध । [यशस्विनी (स्त्री) =
कौतिमती, विद्याना इ ।]

यष्टि, } स स्त्री (स) दड, लघुड, यष्टी
यष्टिका, } २ हारभेद ।

यह, तव (स इह >) इदम् एतद् ।

यहाँ, कि वि (स इह) अत्र, अस्मिन् देशे-
स्थाने ।

—तक, कि वि, एतद्-अत्र, पर्यंत-यावद्-
अवधि-अनम् ।

—वहाँ, कि वि, अत्र तत्र, इतस्तत्, अत्रामुत्र ।

—से, कि वि इत, अस्मात् स्थानात् २ अत
इत, पर-ऊर्ध्व प्रभृति ।

यही, कि वि (हि यह + ही) अवश्य इद
एव यथा एतद्, एव ।

यहीं, कि वि (हि-यहाँ + ही) इहैव, अत्रैव,
अस्मिन्नेव स्थाने ।

यहूदी, सं पु (इशानी, यहूद) यहूद, नामिन्
भाषाविधि (स्त्री) ।

यों, कि हि, दे यहाँ ।

या, अन्य (का) वा, अथवा यदा, (प्रवृत्त
करने में) नु ।

यादूत, स पु (अ) दे * इल (रत्न) ।

याग, स पु (म) दे * यज ।

याचक, सं पु (म) अपिन्, प्रार्थक
२ मिथु, मिथुन ।

याचना, सं स्त्री (सं) याचनं, याच्य, प्रार्थनं
ना । कि स, दे * मांगना ।

याजक, सं पु (सं) याजयित्, पुरोहित ।
याज्ञवल्क्य, सं पु (सं) वैशम्पयनादिभ्य,
वाजसनेय २ जनकसम्बन्धी योगीश्वरवाक्य
इ स्मृतिकारविशेष ।

याज्ञिक, सं पु (सं) यजमान, यष्ट २
याजयित् । वि, यज्ञि(ही)य, यागविषयक ।
[याज्ञिकी (स्त्री)] ।

यातना, स स्त्री (स) पीडा-वेदना-व्यथा-
अतिशय २ यमदण्डपीडा ।

यातायात, स प (स न) गतागत, आया-
तनियान २ प्रेत्यभाव, पुनर्नगमन् (न) ।

यात्रा, स स्त्री (स) प्रस्थान, प्रयाण, जम्पा,
गम भ्रम, प्रवस, देश, भ्रमण पर्यटन, प्रस्थिति
(स्त्री), अथ मार्ग, गमन क्रमणम् ।

—करना, कि अ, प्रया (अ प अ) प्रवम्
(भ्वा प अ), देखे अट (भ्वा प से),
यात्राक ।

यात्री, वि (स त्रिन्) पथिक, पथिक, पाथ,
अध्यय, अध्यय, पादविक, प्रबामिन-
मार्गिक, यात्रिक, सारथिक २ तीर्थयात्रिन,
कापटिक ।

याद, स स्त्री (का) धारणा, स्मृति-स्मरण
शक्ति (स्त्री) * स्मरणम् ।

यादगार, स स्त्री (का) स्मृतिविद्,
स्मारकम् ।

याददास्त, स स्त्री (का) स्मृति (स्त्री),
धारणा २ स्मरण, स्मारक-टिप्पणी ।

यादव, म पु (स) यदुवहव, यदुर्वशज-
२ श्रीकृष्ण । वि, यदुसमभित् ।

यान, स पु (स न) प्रवहण, रथ स्वदन,
शताह, वाहन, वहनम् ।

यानी-ने, अन्य (अ) अथ आशय, एव भाव,
इद तात्पर्य, अर्थात् ।

याचन, सं पु (स न) काश्चेप, समयाति
वहनम् ।

यारू, स पु (का) दे * यट् ।

याम, सं पु (सं) दे * यहर २ समय ।

यामेनी, स स्त्री (म) रात्रि, रात्री, निद्रा ।

यार, सं पु (का) यित्, सुहृद् (पु)
२ उपपत्ति, जार ।

यारनी, सं स्त्री (का यार) उपपत्नी,
मुनिभ्या २ प्रिया, दयिका ।

याराना, सं पु (का) मरुतं, भिजता
यारी, सं स्त्री (र) अधन्यं जनुविन, प्रणय
प्रेमन् (पु न), अनगराग ।

याल, सं स्त्री (हु) दे 'अयाल' ।

यावक, सं पु (सं) सप्त २ अलकक ।

यावजीवन, कि वि (स न) आ, मरण
मृत्यो, यावज्जम, यावजीवनम् ।

यावत्, वि (स) दे 'जिनता' २ समस्त,
सकल (अव्य) पर्यन्तम्, आ- समास मे वा
पञ्चमी युक्त) ।

यावनी, सं स्त्री (स) करकशादिनामक
रुद्र, गुडगुणभेद, वि स्त्री यवन-सम्बन्धिनी ।

युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न, योग्य,
औपपत्तिक २ सृष्टि, महत्, मन्त्र, मिलित ।

युक्ति, सं स्त्री (स) उपाय, प्र-योग-युक्ति
(स्त्री) २ कौशल, चातुर्य ३ राति (स्त्री),
प्रथा ४ न्याय, नीति (स्त्री) ५ अनुमान,
सर्क ६ हेतु, कारण ७ ऊहा, तर्क ८ योग,
संक्षेप ।

—युक्त, वि (स) उचित, उपपन्न न्याय्य,
यथार्थ ।

युग, सं पु (स न) द्वय, दितय, युग्म,
युगल, युतक, यमक २ समय ३ सुदीर्घ
कालपरिमाणविशेष, कृतादिकालचतुष्टय (दे
'कालियुग' आदि) ४ युग् (स्त्री), धुवी,
मामग, युग-ग ५ शार रि, खेलनी ६ एक
कोष्ठनस्थ शान्दयम् ।

—युग, कि वि (स न) निरतरं, सदा,
शाश्वत्, नित्य, चिर, (मन् अव्य) ।

—धर्म, सं पु (सं) युगानुरूप, कर्तव्य
आचार ।

युगपत्, अव्य (स) सदैव, समकालम् ।

युगल, सं पु (स) दे 'युग' (१) । २ दपती
(द्रि) जपती ।

युगल, सं पु (स) महाप्रलय, कल्पात्
२ सत्यादियुगविशेषस्य समाप्ति (स्त्री) ।

युगात्तर, सं पु (सं न) अन्य द्वितीय-युग
२ परिवर्तित समय ।

—उपस्थित करना, मु, भवधा परिवृत्त (मे)
कति कृ ।

युग्म, सं पु (स न) दे 'युग' (१) ।

युत, वि (स) युक्त, संग्गन, सहित, मिलित,
संश्लिष्ट ।

युद्ध, सं पु (स न) संग्राम, आयोधनं,
जन्म, प्रथम, मृष्ट, आस्कन्दनं, सत्य, ममर,
रण, विग्रह, सप्रहार, अभिसर्पण, वलि,
आह्व, विदार, आग्नि (पु जी) बल्य,
युध् (स्त्री) ।

—काल, सं पु (स) सगर-संग्राम, समय
काल-नेला ।

—क्षेत्र, सं पु (स न) युद्ध-रण-संगर, भू-
(स्त्री) भूमि (स्त्री) क्षेत्रम्-अजिरम् ।

—विद्या, सं स्त्री (स) रण-ममर-संगर-
शास्त्र विद्वन्म ।

—वीर, सं पु (सं) भद्र, वीर्य, शूर,
योद्धृ ।

युधिष्ठिर, सं पु (स) पांडवराज, अज्ञात-
शत्रु, धर्मपुत्र, शत्रुघ्नी, अजमोड ।

युरेनियम, सं पु (अ) किरणधातु, बर्त-
निकम् ।

युवक, सं पु (स) दे 'युवा' ।

युवती, सं स्त्री (स) युवति (स्त्री), तरुणी,
युनी, धनि(नी)का, मध्यमा, मिमा, वयस्था,
वयां, ईश्वरी, वृष्टरजस् (स्त्री), प्राप्तयौवना ।

युवराज, सं पु (स) राज्याधिकारिन्, राज-
कुमार ।

युवा, सं पु (स युवन्) तरुण, सज्जन, वय-
(य) रूप ।

यू, अव्य, दे 'यौ' ।

यूका, सं पु (स) यूक, केशनीट, स्वेदज,
बालकर्म, पालीलि (स्त्री), पट्पद ।
दे 'जू' २ दे 'वटमल' ।

यूथ, सं पु (स न) कुल, वृद्ध, गण, समज,
सज्जतीयवस्तुसमूह २ सेन्ध, दल-रुम् ।

—पति, सं पु (स) यूथ, पत्ताध २ दल-
पति ।

यूनान, सं पु (ग्रीक, आयोनिया) *यूनन,
यवनदेश ।

यूनानी, वि (दि यूनान) यवनदेशसम्बन्धिन् ।
स्त्री, (१-२) यवनदेश यूनान, भाषा-
विभिन्ना प्रणाली । सं पु, यवनदेशीय,
यूनानवाग्निन् ।

यूनिवर्सिटी, सं स्त्री (अ) विश्वविद्यालय ॥

यूप, सं पु (स) यज्ञ-याग, स्तम्भ २ वि,
अपस्त्रम्, कीर्तिस्तम्भ ।

यूरोप, स पु (अ यूरोप) *यूरोप, महाद्वीप विशेष ।

यूरोपियन, वि (अ) *यूरोपीय, यूरोप मय भिन्न विषयक । ॥ पु, यूरोपीय, यूरोप वामिन ।

यूय, स पु (स पु न) जूय य, द्विदल क्वाथरस । ३ शोरवा ।

ये, सव (हि दह) इमेष्टे इदम ण्द्वे बहुवचन के रूप ।

यो, अव्य (स एकमेव) इत्य, एव, अनेन प्रकारेण, एतया रीत्या ।

—तो, कि वि प्राय, प्रायश्च, प्रायेण २ साधारण्येन, सामान्यत ।

—ही, कि वि, ण्वमेव, इत्यमेव २ व्यर्थ, सुधा, निप्रयोजन ३ अकारण, अहेतुम् ।

—ही सही, कि वि, ण्वमस्तु, ण्व मवत्, स्यास्तु ।

योग, स पु (स) चित्तवृत्तिनिरोध, भन स्वीय २ दर्शनशास्त्रविशेष ३ मोक्षोपय, मुक्तिमुक्ति (स्त्री) ४ सधि, संग, स(ममा)-गम, सहति (स्त्री), सवोग, सन्नेष ५ उपाय ६ औषध ७ धन ८ काम ९ शुभमंगल, अवसर मुहूर्त (न) १० दूत, चर ११ बलीवदशान्दी १२ चातुर्य १३ वाहन १४ परिमाण १५ निवम १६ उपयुक्तता १७ सामाधुपायचतुष्टय १८ वशीकरणोपाय १९ ध्यान, चिन्तन २० सवध २१ धनोन्नतजनकद्वारे २२ सीद्धाई २३ वैराग्य २४ संकलन, परिसङ्ख्या, विवरण (गणित) २५ सीकृत्य २६ निविकार कथनादीना स्थितिविशेष (अर्थ) ।

—सोम, स पु (स न) अनागतजन्यनागत स्थणे (न डि), प्राप्तिस्थणे । जीवननिर्वाह २ मगल ३ लाभ ४ राष्ट्रसुखवस्था ५ दायादिषु अकिमाज्य वस्तु (न) ।

—निद्रा, स स्त्री (म) योगममाधि २ वीरगति (स्त्री) ।

—पल्ल, स पु (स न) सग, पिट, परिसत्त्वा (गणित) ।

—यल, स पु (स न) तपोवन्, योग शक्ति (स्त्री) ।

योगांग, स पु (स न) योग, साधनानि

उपाया (पु) { यमनिदमगमनप्रणायास प्रत्यह स्थारणाध्यानसमाधयोऽष्टावगति ।

योगज्ञान, स पु (स न) सिद्धान्त, भूग मर्यादावद्विज्ञानवज्जलम् २ नेत्रोगनश्च कानम् ।

योगाभ्यास, स पु (स न) योगानुष्ठान योगसाधनम् ।

योगासन, स पु (स न) महासन, ध्यानासनम् ।

योगिनी, स स्त्री (स) योग्यामिनौ तपस्विनी २ रण, विद्याची विद्याविना ।

योगी, स पु (स गित्) योग्यामिनः, तपस्विन्, कापस, यति मुनि, वैराग्य गित्, सन्यासिन् ।

योगीश्वर, स पु (सं) योगीन्द्र, योगिराज ।

योगेश्वर, स पु (स) श्रीकृष्ण २ शिव ३ योगेन्द्र, सिद्ध, योगेश ।

योग्य, वि (स) क्षम, शक्त, समर्थ, पात्र ३ सुशील, श्रेष्ठ, ३ चतुर, दक्ष, निपुण ४ उचित, उपपन्न, युक्त ।

योग्यता, स स्त्री (सं) क्षमता, सामर्थ्य २ चातुर्य, निपुण्य ३ औचित्य, युक्तता ।

योग्या, स स्त्री (सं) युवती, तरुणी २ अभ्यास ३ शन्यक्रियाभ्यास ।

योग्य, वि (स) सयोनक, सम्मेलन सन्नेषः । स पु कमरमध्यम्, बृहद्भूतण्ड युग्मयोवनमृक्षमभूमाय ।

योगन, स पु (स न) (१-३) द्विचतु अष्ट, वीर्यी ४ योग ५ सयोननम् ।

योगना, स स्त्री (म) उपाय, वरना, प्रयोग, प्रयुक्ति (स्त्री) २ नियुक्त (स्त्री) ३ रचना, विद्यास ४ व्यवस्था, भावोन्नति ।

योद्धा, स पु (स योद्ध) भट, दाप, योधा, वार, शूर मेनिक, आयुधिन, युद्ध शस्त्र उपनीविन्, अस्त्रास्त्र धर मूर्त आजीव ।

योनि, स स्त्री (स पु स्त्री) भग, वर्या, स्मरमंदिर, रतिगृह, अपर, स्मरवदप, वृष नारी, गुण्य उरार्थ, समारमाण २ वारा ३ उद्गम, उद्भव, निगम ४ प्रायोजानि (स्त्री) ५ देह ६ गर्भ ७ जन्म (न) ८ गर्भाक्षय ।

योनिज, वि (स) भगव, योनिमय ।
 म पु, (स) जरायुज अटजो वा
 नीव ।
 योरोप, स पु, दे 'यूरोप' ।
 यौगिक, स पु (स) व्युत्पन्न, प्रकृतिप्रत्यय
 योगलभ्यार्थवाचक शब्द २ समस्तशब्द ।

यौतक, स पु (स न) यौतुक, युतक,
 दे 'दहेज' ।
 यौवन, स पु (स न) तारुण्य, पूर्व प्रथम
 नव, वयः (न) ।
 —काल, स पु (स) यौवन, दशापदनो-
 तारुण्यावस्था ।

र

र, देवनागरीवर्णमालया सप्तविंशो व्यजनवर्ण,
 रेफ, रकार ।
 रक, वि (म) दरिद्र, निर्धन २ कृपण,
 कदय । स पु, भिक्षुक २ दरिद्र ।
 रग, सं पु (स) राग, वर्ण २ वर्णक-का,
 लेप ३ नृत्यगीति (न दि), सगीत ४ नाट्य
 रग, क्षेत्र, शाला-गृह-मण्डप-स्थल-भूमि (स्त्री)
 ५ युद्ध-रण, क्षेत्र-भूमि ६ शरीर-स्वर्ण, वर्ण
 ७ यौवन ८ सौंदर्य ९ प्रभाव १० कौतुक,
 क्रीडा ११ युद्ध १२ कामचार, छद्म (पु)
 १३ आनन्द १४ दशा १५ कांड, अद्भुत
 व्यापार १६ कृपा १७ अनुराग १८ प्रकार,
 रीति (स्त्री) ।

—करमा, कि स, दे 'रगना' ।

—छद्मना, कि अ, व 'रगना' के कर्म के रूप ।

—दग, स पु, अकार, रूप, २ दशा
 ३ आचार ।

—द्वार, वि, रजित, वर्णित, सराग, रागयुक्त,
 चित्रित ।

—द्विरग-गा, वि, अनेक-बहु-नाना, रग-वर्ण,
 चित्र, वर्ण, शब्द । २ विशिष्ट, अनेक-बहु
 नाना विध प्रकारक ।

—भूमि, म स्त्री (स) उत्सव, स्थल-स्थान
 २ क्रीडा-कौतुक, स्थल ३ दे 'रा' (४) ।

—र(रे)लियों, स स्त्री, आमोदप्रमोद, परि-
 हाम, विनोद, लीला, हासिका, विहार,
 क्रीडा ।

—रम, स पु, दे 'रगरलियों' ।

—रसिया, स पु, क्रीडाप्रिय, विलम्बित,
 विनोदित, आनन्दित, हास्यशील ।

—रूप, स पु (म न) आसार, आकृति
 (स्त्री), रूपम् ।

—रेज, स पु (फा) रज, रजीव ।
 [नि (स्त्री) -रजका] ।

—शाला, स स्त्री (स) दे 'रा' (४) ।

—भाज, स पु (फा) रजक, वर्णचारक,
 कृणु वर्णा, तौलिक, तौलिकिक, रा,
 कार-जीवक आनीव २ रग, निर्माद रज
 विहकार ।

—सापी, स स्त्री (फा) रजन, वर्णन,
 रजकता, तौलिकता ।

—महल, स पु (स+अ) रगभवन्,
 प्रमोदप्रासाद ।

—उठना वा उत्तरना, मु, पाहुँचाव (वि)
 जन् (दि आ से), विवर्णना प्रपद (दि-
 आ अ), मलिन-स्नान-मद, प्रम-काति युनि
 जन् ।

—जमरना वा बाँधना, मु, स्वमीरव प्रतिष्ठा
 (मे प्रतिष्ठापयति), निम्नप्रतिष्ठा प्रपद (मे) ।
 —पीला (फर, फीका वा मद) होना,
 मु, दे 'रग उठना' ।

—बदलना, मु, कुब् (दि प अ), कुर्ष
 (दि प से) ।

—मे भंग पडना, मु, आनन्दोत्सव विह
 (२म), रगमगो जन् ।

—र(रे)लियों मनाना, मु, मुद (स्वा अ
 से), रम् (स्वा आ अ), विह (स्वा प
 अ), नद-क्रीडा विलम्ब (स्वा प से) ।

रगत, सं स्त्री (म रग >) दे 'रग' (१६) ।
 २ अनन्द, स्वन्द ३ दशा, अवस्था ।

—लाना, मु, परिवर्तन जन् (मे), क्रांत उत्पद,
 (मे) ।

रंगा, कि स (म रग >) रज (मे),
 चित्र-वर्ण (जु) २ दे 'मोहना' कि स
 (१) तथा कि अ (१) । सं पु, रजन,
 चित्रण, वर्णनम् ।

रगने योग्य, वि रजनीय, चित्रयितव्य,
 वर्णनीय ।

रगनेत्राला, स पु, दे 'रगनेत्र' तथा 'रगसान' ।

रगरूट, सं पु (अ रिक्त) नव-नूतन,
 सैनिक २ नव, गज-दीपिन-शिष्य, शैल ।
 रंगरेज, सं पु दे 'रंग' के नीचे ।
 रंगवाह, सं स्त्री (हि रंगवाना) रज
 वर्णन, भूति (स्त्री) भूत्वा ।
 रंगवाना, कि प्रे, २ 'रंगना' के प्रे रूप ।
 रंगाई, सं स्त्री (हि रंगना) दे 'रंगवाई'
 २ दे 'रंगना' सं पुं ।
 रंगा हुआ, वि, रचित, चित्रित, रणित,
 रागयुक्त ।
 रगी, वि (स गिन्) विनोदिन्, आनन्दिन्,
 उत्सामिन् २ सरग रगयुक्त ३३ रनक, ४
 अनुरक्त ५ अभिनेत् ।
 रगीम, वि (का) दे 'रंगदार' २ विलासिन्
 आनदिन्, विहारिन्, विनोदिन्, रमिक
 ३ नमस्कृत, भक्तकृत (भाषा आदि) ।
 रगीनी, सं स्त्री (का) सरागता, सचित्रता
 २ शृंगार, अक्रिया ३ अनुरागिता,
 कामुकता ।
 रगीला, वि (स रग >) दे 'रगीन' (२) ।
 २ सुदर ३ अनुरागिन्, वामुक ।
 रगोपजीवी, सं पु (सं विन) नट, अभि
 नेत्, शैल्य, भरतपुत्रक ।
 रघ, रघक, वि (स न्यच् >) अश्व, स्तोक ।
 रज, सं पु (का) शोभ, परित्याग, आर्ति
 (स्त्री) ।
 रजक, सं पुं (सं) दे 'रगसाज' (२) दे
 'रंगरेज' । वि (सं) रंगवार, वर्णचारक
 २ आह्लादक, आनन्दप्रद ।
 रजज, सं पु (स न) चित्रण, वर्णन
 २ आह्लादन, परितोषणम् ।
 रजित, वि (ल) वर्णित, चित्रित, सरग २
 आह्लादित, सख ३ अनुरक्त, आपक ।
 रजित, सं स्त्री (का) वैर, शत्रुता २ अप
 वि-राग, प्रसाद प्रीति, अभाव ।
 रजीदगी, सं स्त्री (का) दे 'रजित' (२) ।
 २ शोक ।
 रजीदा, वि (का) जोषयस्व, परितप्त
 २ विषय, प्रसन्नता-लम् ।
 रंज, वि (म) पूर्ण, वञ्चक २ विजय, निष्पन्न
 ३ टिप्पण-विषय प्रग । सं पु (म) निर
 पत्य, निस्मान्नान २ निष्पन्न अश्व-वृक्ष
 नक ।

रडा, सं स्त्री (ल) विधवा, गत मृत भर्तृका,
 विधस्ता, वारदायनी । सं पु (प०) दे
 'रंडुआ' ।
 रडापा, सं पु (स रडा) वैधव्य, दे ।
 रदी, सं स्त्री [(प) विधवा सं रग >]
 वेद्या भोग्या, गणिका ।
 —राच, सं पु (हि + का) वेद्या गणिका
 गमिन् ।
 —राजी, सं स्त्री (हि + का) वेद्यागमन,
 रम्भारमणम् ।
 रडुआ घा, सं पुं (हि राड) मृत्पत्नीक,
 गतमाय, विधुर ।
 रदा, सं पु (का) तक्षणी, त्वक्षणी ।
 —करना, कि स, नक्षत्रा समीक्षणीक,
 तन् (भ्वा स्वा ष से) ।
 रझ, सं पु (ल न) छिद्र, विवर, बिल
 २ योनि (स्त्री) २ शेष ।
 रबा, सं पु (प) सुरम ।
 रभा, सं स्त्री (स) बदली, दे 'कैला'
 २ गोध्वनि ३ अप्परोविशेष ४ वेद्या ।
 रभाना, कि अ (स रभण) रभ्रेभ (भ्वा
 आ से), मृदु नदं (भ्वा ष से) ।
 ॥ पु, रभा, हवा भा, रेभगम् ।
 रभध्यत्, सं स्त्री (अ) प्रजा २ कुपीवल् ।
 रईस, सं पु (अ) धनाढ्य, धनिक, रयीश
 २ भूत्वमिन्, क्षेत्रपति ।
 रझा, सं पुं (अ) क्षेत्रफलम् ।
 रज्ज, सं स्त्री (अ) सल्या, परिमाण
 २ सपत्ति (स्त्री), पत्न ३ प्रकार, विधा ।
 रकाय, सं स्त्री (का) (सादिन) पादधार
 आदधान २ दे 'तपती' ।
 —पर पर ररना, मु, गत मङ्गीभू ।
 रकायी, सं स्त्री (का) दे 'तपती' ।
 रजीव, सं पुं (अ) मपत्न, प्रत्यभिन् प्रति
 रपदिन् ।
 रक्ष, सं पुं (म न) दान, शोणित, लो(रो)-
 दिन, रोई, रघिर, अर्ध, प्रमृत् (न), शून्य
 अंगन, स्वर्ण, यमी २ वृद्धुमं ३ तप
 ४ मिदूर ५ पत्रं हिगुम् । वि, अनुरक्त,
 आरुत २ रक्त-लोहित-वर्ण ३ रपत्,
 वमिन्, वामुत् ।
 —रमन, सं पु (म न) कोनदं, रवि

प्रिय, रक्त-अरुण शोण, अमोघ ऊमल पद्म वारिजम् ।

—कोद, स पु (स रक्तकोद) रक्तजुष्ट ध, विमर्ष ।

—चदन, स पु (स न) अर्ककुशोमित धुद, चदन तिलपर्ण, रजन, ताम्रवृक्ष, लोहितम् ।

—पात, स पु (स) रुधिर-रक्त, स्वर्ण स्त्राव शरण २ शोण-रक्त, पातन स्रवण ३ नर नृ, हस्ता पात ।

—शयी, वि (स विच) शोणय, रक्तम् । स पु मस्तुग, दे 'खटमल' ।

—पित्त, स पु (स न) रोगमेद २ दे 'नन्मरी' ।

—प्रदर, स पु (स) प्रदरमेद, नारीरोग मेद ।

—प्रमेद, स पु (स) रक्तमेद, मूत्ररोगमेद ।

—बहना, कि अ, रक्त स्र (स्वा प अ) धर (स्वा प से) ।

—बहाना, कि स, रक्त शोण पद्मसुमुच (मे), वृ (मे), हल (अ प अ) ।

—मोचन, स पु (स न) रक्त, मोक्षण मोक्ष, शोणितलाव, दे 'कल्' ।

—लोचन, स पु (म) कपोत । वि, लोहितेक्षण ।

—घर्ण, वि (स) अरुग, लोहित, शोण, रक्त ।

—स्त्राव, स पु (स) रुधिरक्षरण, अलक स्तुति (स्त्री) ।

—हीन, वि (स) शोणयुज्य, रुधिररहित २ निर्बीर्य, निस्तोदक ।

दक्षक, स पु (स) शरण्य, शरण, प, पात (समासांत में), रक्षित, रक्षित, श्राव, पात, गोचर २ प्रहरित, वामिक ३ पालक, सर्वदक्ष, पोषक ।

रक्षण, स पु (स न) ररि, प्राण, गोपन, रक्षा, गुहि २ पालन, पोषण, सर्वदक्षम् ।

रक्षणीय, वि (स) रक्ष्य, रक्षित्य, प्रातन्य, गोपनीय २ पालनीय, पोषणीय ।

रक्षा, स स्त्री, (अ) दे 'रक्षण' (१) । २ वट निवारक-यज्ञ, रक्षिका ।

—रुना, कि स, अणुशुष्ण (स्वा प से), पा (अ प अ) ।

—वधन, स पु (म न) श्रावणी, पर्वविशेष २ अन्त्यपूर्णमासां वेदस्वाध्यायोपायमन्त्र (न) ।

रक्षित, वि (स) वात, प्राण, गुप्त, गोपायित, पात, उक्त, अक्षित २ प्रतिपालित, पोषित ३ रथापित ।

रखना, कि स (स रक्षण) न्यस् (दि प से), निक्षिप् (जु प अ), निधा (जु उ अ), स्वा (प्रे रथापयति) २ रक्ष-अव-शुष् (स्वा प से), त्रै (भ्रा मा अ) ३ सवि (स्वा उ अ), सप्रह (क उ से) ४ आपीकृ, उपनिधा (जु उ अ), न्यस ५ धृ (जु), भृ (जु उ अ) ६ आह्रसाव-स्वापत्तीकृ ७ (गौ आदि) अस् (अ प) विद् (दि आ अ) ८ इव (स्वा आ से) ८ निशुज (जु, उ प अ) ९ विलप् (प्रे), व्याक्षिप् (जु प अ) १० उपपत्तिस्त्वेन उपपत्नीस्त्वेन वा स्वीकृ ११ अम्ययेन सवि । स पु, न्यसन, विक्षेपण, निधानं, स्थापन २ रक्षण, गोपनं, ३ सचदन, सप्रहण ४ आपीकरण, उपनिधान ५ धारण, भरण ६ आत्मसात्करण ७ विवीचन, ८ विलंबन ९ ।

रखनी, स स्त्री (हि रखना) दे 'रखेली' ।

रखने योग्य, वि, न्ययनीय, स्थापयितव्य, रक्षितव्य, सचेष्ट, उपनिषेय, धार्म, निवोक्तव्य ।

रखनेवाला, स पु, निधाव, स्थापक, रक्षक, सचायक, उपनिधायक, धारक ३ ।

रखवाई, स स्त्री (हि रखना) रक्षा, मृति (स्त्री) मत्वा ।

रखवाना, कि प्रे, न 'रखना' के प्रे रूप ।

रखवाला, स पु (हि रखना) दे 'रक्षक' (१२) ।

रखवाली, स स्त्री (हि रखना) दे 'रक्षण' (१) ।

रखा हुआ, वि, न्यस्त, निहित, रक्षित, सचित, उपनिहित ३ ।

रखेली, स स्त्री (हि रखना) उर, पत्नी भायां कलत्रम् ।

रग, स स्त्री (फा) धमनी, नाडी, रक्तवाहिनी, शिरा, शैलिका ।

—मे, गु, सर्वस्मिन्नपि शरीरे ।

—से वाकिक होना, गु, मम्यक्-द्व-साधु शा (क् उ अ) परिधि (स्वा उ अ) ।

—रेशा, म पु (का) शरीर, अवस्था अङ्गानि (वटु) २ पत्र, पक्षव, नाट्य (स्त्री वटु) । रगद, स स्त्री (हि रगना) दे 'रगना' मं पु । २ स्वभगहीन-क्षुद्र, जण (ण) ३ रगद, रित्ता ४ रित्ता, रित्ता प्रयास ।

—रगना या रगना, कि अ, व 'रगना' के कर्म के रूप ।

रगना, कि स (अनु) घृष्ट (भ्वा प स), घृष्ट (क प से) २ चूर्ण (चु), रिष्ट (र प अ) ३ श्लक्ष्णीक, परिष्कृत ४ परि प्रभुन (अ प से प्रे), निष्ट (चु उ अ) ५ अभ्यस (दि प से), पुन पुन कृ ६ सवेग सपरिश्रम च संपद (मे) अनुष्ट, (भ्वा प अ) ७ पीड (चु), सनष्ट (प्रे) ८ तद् (चु), आहन (अ प अ) । स ॥, घषण, मर्दन २ धूर्णन, घेषण ३ श्लक्ष्णीकरण ४ परिमार्जन, प्रक्षालन, ५ अभ्यसन, आबुद्धि (स्त्री) ६ घोटन ७ ताटन ८ सवेग संपदन ९ ।

रगदने योग्य, वि, घर्पणीय, मर्दनीय, घेषणीय ९ ।

रगदनेवाला, सं पु, घर्पक, मर्दक, घेषक ९ । रगदवाना, कि प्रे, व 'रगना' के प्रे रूप । रगदा, सं पु (हि रगना) दे 'रगना' सं पु । २ अनिश्चय-अवस्था, परिष्कृत-अवस्था ३ चिरस्थायिकरह, नैतिकविवाद ।

—रगदा, सं पु (नित्य सगन) विवाद-वह-कति ।

—हुआ, वि, पणित, मर्दित, पिष्ट, अभ्यस्त ।

रगदी, वि (हि रगदा) विवादक, रगद कति, प्रिय, विवादिन् ।

रगदत, मं स्त्री (अ) कामना २ रुचि प्रवृत्ति (स्त्री) ।

रगदना, कि स (रु र्दे), अनुष्ट (तु प अ), निद्रु अपवात् (प्रे) ।

रगु सं पु (सं) सर्ववस्थो नृपतिरोप, रिलीगण्ड ।

—रगद, मं पु (मं) रगु, नाथ अनि-रान-वर्-हीर, भीरामचंद्र ।

—घरा, मं पु (मं) रगुदुर्ग २ महारवि-कान्दिग प्रणीतो महाराज्यविद्युत् ।

रचना, कि स (सं रचन) सज् (तु प अ), निर्मा (अ प अ, जु आ अ), जन-उत्पाद (प्रे) २ कल्प-उत्पत्ति (प्रे), रच (चु), कृ ३ प्रणी (भ्वा प अ), निबध (कृ प अ) रच (चु), लिख (तु प से) ४ यथाविधि-न्यस् (दि प से) स्था (प्रे) ५ परिष्कृत, अलंकृत, भूत (भ्वा प से, चु) ६ आशुज (प्रे), मत्र (चु आ से) । स पु, दे 'रचना' स स्त्री (११, ८९) परिष्करण, भूषण, अयोजनम् ।

रचना, कि स (स रचन) दे 'रगना' कि अ अनुरज् (कर्म), स्निह (दि प से) २ व 'रगना' के कर्म के रूप ।

रचना, स स्त्री (स) रचन, निर्माण, सज्जन, घटन, विधान, वलन, साधन, निष्पादन, उत्पादन, जनन २ ३ रचना निर्माण उत्पादन, कीर्तन-रति (स्त्री) ४ रचित निर्मित, वस्तु (न) ५ यथमयी पथमयी वा कृति (स्त्री) ६ केशविन्द्याम ७ पुष्पगुफन ८ स्थापन ९ प्रगयन, नि प्रगयनम् ।

रचने योग्य, वि, स्रष्टव्य, निर्माणार्थ, रचनीय, प्रणेतव्य, यथाविधि, स्थपनीय ९ ।

रचनेवाला, स पु, स्रष्टु, निर्मातृ, जनयितृ, घटयितृ रचयितृ, प्रणेतृ, स्रष्टा आयोजक ९ ।

रचयिता, स पु (सं रच) निर्मातृ, स्रष्टु, विधातृ, उत्पादक २ स्रष्टक, प्रणेतृ ९ ।

रचवाना या रचाना, कि प्रे व 'रचना' के प्रे रूप ।

रचा हुआ, वि, सज्, निर्मित, जनित, रचित, पठित, प्रणीत, लिखित, परिष्कृत ९ ।

रचित, वि (स) निर्मित, पठित, २ सृष्ट, जनित ३ लिखित, प्रणीत ।

रज, सं पु [सं रजस (न)] पुण्य, कुपुर्म, आर्तव, अनु, रज (पु) २ प्रवृत्तेर्गुणविशेष, रज (पु) ३ आरग्य श ४ पाप ५ पत ६ पता, रेणु (पु स्त्री), पुण्यगुणित (स्त्री) ७ सुवन, शोभ । सं स्त्री, रजम् (न), पूर्यति (स्त्री) २ रानी ३ प्रयास ।

—का रज आना, सं पु, रजोदीप २ रजो निवृत्ति (स्त्री) ।

—की पीड़ा, सं स्त्री, अनुष्ट, रज रज्जुम् । रजक, मं पु (सं) निर्जन्म, धावन, शीमेव, बर्मेरीत्य ।

रजकी, स स्त्री (स) रजका, निर्णेतिका, धाविका ।

रजत, सं स्त्री (सं न) रूप्य दे 'चौदी' २ सुवर्ण ३ गजदंत ४ हार । वि, रजतमय २ शुक्ल ।

—कुम्भ, पु (सं) रूप्य-श्वेत, कुम्भ-घट कलश ।

—पात्र, सं पु (सं न) रूप्य-श्वेत-दुवर्ण, पात्र भाजनम् ।

रजनी, स स्त्री (स) विद्या, रात्रि २ हरिद्रा ३ जतुका ४ नीली ५ लाक्षा ।

—कर, स पु (सं) रजनी, -पति-नाय, चद्र ।

—चर, स पु (सं) राक्षस, निशाचर ।

—मुख, सं पु (सं न) साय, प्रदोष, दिनाग ।

रजवाहा, सं पु (हि राज+वाहा) देशीय राज्य २ नृप, राजन् (पु) ।

रजस्, स पु स्त्री (सं न) दे 'रज' स पु स्त्री ।

रजस्वला, स स्त्री (स) स्त्रीधर्मिणी, कतु मनी, पुष्पवती, पुष्पिता, ग्लाना, पाशुला ।

रज्ञा, स स्त्री (अ) इच्छा, काम २ समति (स्त्री), एकचित्ता, मतेव्य ३ अनुज्ञा, अनुमति (स्त्री) ।

—मद, वि (का) सह-यक, मत-वित्त, समत ।

—मदी, स स्त्री (का) दे 'रजा' (२३) ।

रजाइस, रजायस, रजायसु, स स्त्री (स राजादेश >) आ-नि, -देश, नियोग, आज्ञा, शासनम् २ अनुमति-स्वीकृति (स्त्री) ।

रजाई, स स्त्री (< सं रजन ?) • पिबुल प्रच्छद, सुलाण्डादनम् ।

रजिस्टर, स पु (अ) पत्रिका, पत्री ।

रजिस्टर्ड, वि (अ) पत्रीबद्ध ।

रजिस्ट्रार, स पु (अ) पत्री पत्रिका, लेखक ।

रजिस्ट्री, स स्त्री (अ) पत्रीनिबधनम् ।

—कराना, क्रि प्रे, राजकीयपत्रिकाया लिख (प्रे) ।

—शुदा, वि, पत्री-पत्रिकाकृत, लिखित ।

रजिस्ट्रेशन, स पु (अ), पत्री पत्रिका, करण लेखनम् ।

रज्जील, वि (अ) अधम, नीच २ अन्त्यज ।

रजोगुण, स पु (सं) दे 'रज' स पु (२) ।

रजोदर्शन, स पु (सं न) दन्त्याया प्रथम शुष्यस्ताव ।

रजोधर्म, स पु (सं) दे 'रज' स पु (१) ।

रज्जु, स स्त्री (म) दे 'रस्ती २ वेणी ।

रट, स स्त्री (हि रटना) असकृत सच्चार, आप्रेरुन, अभीक्ष्ण वचन, पौन पुन्येन पठनम् ।

रटना, क्रि म (स रटन >) अभ्यस (दि प से), असकृत आवृत्त (प्रे) २ मुखरद हृदयस्थ-कठरथ (वि) कृ, स्मरणार्थ पुन पुन उच्चर (प्रे) उद-यठ (भ्वा प से) ।

क्रि अ, अभीक्ष्ण रण-क्वण (भ्वा प से) ।

स पु, अभ्यसन, आवतन, आवृत्ति (स्वा), कठे करण, हृदये धारण, पुन पुन उच्चारणम् ।

रटने योग्य, वि, आवतनीय, स्मृतव्य स्मरणाह ।

रटनेवाला, स पु, अभ्यासिन, आवर्तायितु ।

रटा हुआ, वि, अभ्यस्त, आवर्तित, कठे कृत ।

रण, स पु (स पुं न) सभाम, दे 'युद्ध' ।

—सेन, स पु (सं न) रणागण-न युद्ध-रण, भूमि (स्त्री)-स्थल-क्षेत्रम् ।

—छोट, सं पु, श्रीकृष्ण ।

—बाँकुरा, स पु (सं + हि) ग्रा, भद्र ।

—रग, स पु (सं) युद्धोत्साह २ युद्ध ३ रणक्षेत्रम् ।

—स्तंभ, सं पु (सं) विजय, स्तम्भ-यूप ।

रत्न, वि (सं) न्वायुत, मग्न, लज्ज, लीन, आसक्त २ अनुरक्त, वदभाव ।

रत्नजगा, स पु (हि रत्न+जागना) रात्रि, जागरण-जागरा २ नैशेत्तव ।

रत्नार, वि (सं रत्न >) आ ईषद, रत्न लोहित ।

रत्तानू, सं पु (सं रत्ताल) (= लाल शकरकंद) रक्त पिंडक-पिंडाल, लोहित, लो हिताल, रत्नार ।

रति, स स्त्री (म) कामदेवकलत्र, मदनपत्नी २ मेथुन, समोग, कामक्रोडा ३ अनुराग, प्रीति (स्त्री) ४ शोभा, सौन्दर्य, छवि (स्त्री) ५ सौभाग्य ६ स्थापिभावभेद ७ रहस्यम् ।

—क्रिया, स स्त्री (सं) रति, वेति (स्त्री)-कलह-मगर, मैथुनम् ।

—गृह, स पु (स न) रति, मवर्न-प्रदिर
२ योनि (स्त्री) ।

—नाथ, स पु (स) रति, नानं पनि प्रिय
राज-रमण, कामदेव ।

—वध, स पु (स) सुरतासनम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) कामशास्त्र, कोक
शास्त्रम् ।

रत्तीधी, स स्त्री (हि रात + मधा) निद्राप
तात्त्वम् ।

रत्ती, स स्त्री (सं रत्तिका) काक, निष्का-
वस्त्ररी पीठ-जवान-चिन्नी, कुण्डल, दे 'शुभा' ।
२ रत्ति-नापरिमाणम् ।

—भर, वि, अवप, स्तोक, रंष ।

रत्ती धी, स स्त्री (सं रथ) विमानं, शव,
यनं, फलक, दे 'भरपी' ।

रत्न, स पु (स न) मणि (पु स्त्री),
अदम्यभेद २ स्वर्गान्तिभेद ३ माणिक्यम् ।

—गर्भा, स स्त्री (सं) वसुधरा, वसुधा ।

—जटित, वि (स) मणि, स्वचिन्-अनुविद्ध
वर्णित ।

—दाम, स स्त्री [स-मध (न)]
मणिमाला ।

—भारखी, स पु, रत्नपरीक्षक २ मणिकार,
रत्नाजीविम् ।

नौ—, स पु, दे 'नवरत्न' ।

रत्नाकर, स पु (स) रत्नालय, समुद्र
२ मणि खानि (स्त्री) भर्जा ३ बाह्यकी
प्रथमनाम्य (न) ।

रत्नायली, स स्त्री (स) मणिमाला, रत्न
दामन् (न) ।

रथ, स पु (स) शायन, स्थल, चक्र
यानम् । (युद्ध को रथ) संधिराविव, वैना
यिक । (मैर को रथ) पुष्प-रथ । (वाजा
वा) पारिषानिक । २ शरीर ३ चरण-यम् ।

—कार, स पु (सं) रथ-व्यन्दन-चक्रयान,
निर्माण-रचयितृ-कर्तृ । २ वर्णसंकरजातिभेद ।

—चर्यो, स स्त्री (सं) रथ चक्रयान, वाजा
वज्रा गमनम् ।

—पति, स पु (स) रथिव, रथिव,
रथि-रथिर ।

—यात्रा, स स्त्री (स) आपादशुस्त्रिनी
यात्रा श्री-यज्ञ-वस्त्र-रथारोहणरूपीत्यर्थः ।

—वीथि, स स्त्री (ता) रथमुख्य प्रधान,
मार्गं पथ ।

—शास्त्रा, स स्त्री (सं) स्वन्दनागारम् ।

—विद्या, स स्त्री (सं) रथ-शास्त्र विज्ञानम् ।

—सूत, स पु (सं) सारथि, रथवाह ।

रथवान्, स पु (सं रथवत्) रथ, वाह
वाहक, सारथि, दे 'सारथी' ।

रथाय, स पु (स न) चक्रम् २ मयभेद
३ कोय, चक्र, कामुक ।

—पाणि, स पु (सं) चक्रपाणि, दिष्णु ।

रथी, स पु (सं यिन्) रथिक, रथिन,
रथिर रथ-भारोद्भिन्-स्वामिन्, साराथ ।

वि, रथस्थ, रथासुद्ध । २ रथस्थ-महा-योध
योद्ध । ३ (स रथ) दे 'रथी' ।

रद, } स पु (स) दत्त, दे 'दत्त' ।
रदन, }

—च्छद, } स पु (सं) ओष्ठ, दे 'ओष्ठ' ।
—पुट, }

रह, वि (अ) घोष, निरर्थक २ मंद, निष्प्रभ,
३ निरल्प, छडित ।

—करना, कि स, निरस् (दि प से),
सह (चु), निष्ठ (मे) ।

—बद्ध, स पु (अ + क्) परिवर्तन,
निर्धाय, परि(री)वर्त ।

रहा, स पु (देश) इष्टकान्तिका, स्तर ।

—रखना वा लगाना, कि म, भित्ति वि
(त्वा उ अ), स्तर रह (चु) निर्मा
(जु आ अ) ।

रही, वि (अ रह) निरर्थक, अनुपयोगिन् ।
स स्त्री, निरर्थक-प्राणि (न बहु) ।

रन(नि)वत्स्य, स पु (हि रानी + मं वान)
अन-पुर, शुद्धान, अवरोध ।

रपट, स स्त्री (हि रपटना) दे 'निसलाह'
२ भोवनं, मत्सरगमन ३ निम्नभू (स्त्री),
प्रवणम् ।

रपट, स स्त्री (अं रिपो) मूचना, आख्या ।

रपटना, कि अ (सं रपन) दे 'निसलता' ।

रफ, वि (अं) विष्णुनाम-य, दुष्प्रभं,
विषम २ संस्कार परिवाराशय ।

रफा, वि (अ) अपमानित, दूरीकृत २ निरा
रित, शक्ति, शान ३ ममान, पूज ।

रहू, स पु (य) अनुविध-निष्पूरणम् ।

—करना, कि म, क्खलिद्र तत्तुमि पूर(सु) ।
मु, स्वविरोधिवचनेषु सामञ्जस्य दृश (प्रे) ।

—गार, म पु (फा) वल्लिद्रपूक ।

—चहर हांना, सु, पलाय (भ्वा आ से),
अपधाव (भ्वा प से) ।

रफ्तार, स स्त्री (फा) गर्भि (स्त्री) २ वेग,
जव ।

रफ्ता रफ्ता, कि वि. (फा) शनै शनै
(अव्य) १ क्रमशः (अव-त) ।

रथ, स पु (अ) परमेश्वर, जगदीश ।

रथङ्, स पु (अ रवर) धर्षक, घृषि(न)-
वृष्टनिर्यामभेद २ वटजातीयो वृष्टभेद,
धषयत ।

रथङ्, स स्त्री (हि रगड) धर्षय, अम
प्रयास २ दूरता, विमर्षय ।

रथङ्गना, कि स (हि रपटना) तरलद्रव्य
परिभ्रम-चल (प्रे) । भ्रम क्लम (प्रे),
मुधा धाव (प्रे), आयस सिद्ध (प्रे) ।
कि अ, वृथा भ्रम (भ्वा प से)-परिभ्रम
(दि प से), आयस (भ्वा दि प से) ।
रथङ्गी, म स्त्री (हि रथङ्गना) क्लिष्टिका,
क्षीरेयम् ।

रथाव, स पु (अ) वाघभेद, श्रवापम् ।

रथाविया, रथावो, स पु (अ रवाव)
रथाववादक ।

रथत, स पु (अ) अभ्यास २ संवेध ।

—ज्ञात, स पु, गाढसौहृद, सुपरिचय ।

रथ्दी की प्रमल, स स्त्री (अ) चैत्रशतयम् ।

रमण, स पु (स अ) क्रीडा, विलास,
विहरण, विहार, खेलि (पु स्त्री), ऐला, लीला
२ मैथुन, रति (स्त्री) ३ भ्रमण, पर्यटन
४ जघनम् । (स पु) पति २ कामदेव ।
वि, मनोहर २ प्रिय, आनन्दप्रद ३ क्रीडापर ।

रमणी, स स्त्री (स) नारी २ सुन्दरी,
वरवर्णिनी, वामा ।

रमणीक, वि (स रमणीय) मनोह, मनोहर,
दे 'सुन्दर' ।

रमणीय, वि (स) सुस्प, शोभन, दे
'सुन्दर' ।

रमणीयता, सं स्त्री (स) सुष्ठवि (स्त्री),
मनोहरता, दे 'सुदरता' ।

रमता, वि (हि रमना) विचरत विहरत
अन्तः (अन्त) ।

रमना, कि अ (स रमण) रम् (स्वा आ
अ) नदकीड् (भ्वा प से), मुद (भ्वा
आ से) २ सुषोपलब्धये वम् स्था (भ्वा
प अ) ३ विह (भ्वा प अ), पर्यट्
(भ्वा प से) ४ व्याप (स्वा प अ),
व्यद् (स्वा आ से) ५ अनुरज् (कर्म),
स्निह (दि प से, सप्तमी के साथ)
६ कामक्रीडा कृ सुवत आतन् (त प से) ।
स पु रमण, नदन, क्रीडन, क्रीडा, मीद,
मुवाय वसन, विहरण, विचरण, व्यापन,
व्यशन, अनुराग, निधुवन २ ।

रमा, म, स्त्री (स) दे 'लक्ष्मी' ।

—पति, स पु (स) विष्णु ।

रम्ज, सं स्त्री (अ) (नेत्रादिभि) संकेत,
इगिनम् २ रहस्य, गुह्य, कूम् ३ आशय,
अभिप्राय ।

रम्माल, स पु (स) दैवत, ज्योतिषिक ।

रम्य, वि (स) दे 'रमणीय' ।

रम्या, स स्त्री (स) स्थलपतिनी २ रजनी
३ गगा ४ निर्गुण्यो, रद्राणी ।

रम्हाना, कि अ (स रमण) दे 'रभाना' ।

रम्यत, स स्त्री (अ रम्यत) दे 'प्रजा' ।

रव, सं पु (सं) शब्द, नि, नाद, ध्वनि,
वि, रव राव २ कलकल, कोलाहल,
उत्क्रोश ।

रवौ, वि (फा) प्रवृत्त प्रलब्ध प्रचलद्
(शवन) २ अभ्यस्त ३ निश्चित, तीक्ष्ण
(शलादि) ४ प्रस्थित ।

रवा, सं पु (स रज) कण, लव, अणु,
लेख २ दे 'खजी' ।

रवा, वि (फा) उचित, युक्त २ प्रचलित,
विद्यमान ।

रवाज, स पु (अ) दे 'रिवाज' ।

रवानगी, स्त्री (फा) प्रस्थान, प्रयाणम् ।

रवाना वि (फा) प्रस्थित, प्रचलित २ प्रेषित,
प्रहित ।

—करना, कि स, प्रस्था (प्रे प्रस्थापयति),
प्रहि (स्वा प अ), स, प्रेष् (प्रे),
प्रचल् (प्रे) ।

—होना, कि अ, प्रस्था (भ्वा आ अ),
अप, सु-गम् (स्वा प अ), प्रवा (अ प अ) ।
रवानी, म स्त्री (फा) प्रवाद, प्रगति (स्त्री) ।

रवायत, स स्त्री (अ) कथा २ लोकोर्त्तो (स्त्री) ।

रवि, स पु (स) अरु सानु, दे 'मय' ।

—चार, स ॥ (अ) आदित्य, चार वामर ।

रवेया, सं पु (का रविश) आचार, आचरण, चेतित, वृत्ति (स्त्री), व्यवहार ।

रशना, स स्त्री (सं) काची, दे 'भक्तला' (१) २ जिह्वा ३ रज्जु (स्त्री) ।

रस्क, स पु (का) इष्वा, मात्मयम् ।

रदिम, सं स्त्री (स पुं) किण्व १ अक्षरज्जु (स्त्री) ३ पक्ष्मन्-न पु (न) ।

रस, सं पुं (स) आ, स्वाद २ षट् इति संख्या ३ शरीररूपधनुर्विशेष, रमिका चम रक्त, सार, तैज अग्नि-आहार, नभस ४ तत्त्व, सार ५ काव्यनोष्कानुभवन शृङ्गारादिदश विधो मानसानन्दभेद (काव्य) ६ 'नव' इति संख्या ७ आनन्द, सुख, आह्लाद, प्रमोद ८ अनुराग ९ रति (स्त्री), सुरत १० वस्त्राह, औत्सुक्य ११ गुण १२ द्वय, सार, रस, आसव, निवास, सत्त्व १३ जल, १४ मू(ज) १५ १५ द 'शरवत' १६, वीर्य १७ विष १८ पारद १९ दे 'दिगिरक' २० धातुभस्मन् (न) २१ आनन्दरूप भस्मन् (न) २२ २३ गन्ध-शिला, रस २४ प्रकार, रूप २५ विस्तारण, छद् ।

—रूना या टपकना, कि अ, रस कणश निस्स्यद् (भ्वा आ स) न्मु (भ्वा व अ) ।

—लेना, कि अ, नद (भ्वा ष मे), मुद् (भ्वा आ से) ।

—कपूर, स पु (म रसकपूर) वपूरम ।

—गुलना, सं पुं, 'रमगा' ।

—भरा, वि, रस, मूत्र-मय-शुक्लवत्, गरम रसिन् ।

—भरी, म स्त्री, 'रमकदरी' ।

—रति, सं पु (सं) चट् २ मूष ३ पारद, 'रमतान' ४ शृङ्गाररम रसराज ।

—मिदूर, म पु (म न) मिदूरम ।

रमज, म प (मं) रमस्वज्ज, जिह्वा २ काव्यममङ्ग, काव्यालोचन ३ निपुण, कुशल ४ अनुरागिन्, रिसा, प्रमिन् ५ गुणप्राप्त ६ रसदेव ७ रसावनविद (पु) रमद्, वि (मं) धृत्वा, आनन्दप्रद, २ स्वाद, रमम् । मं पुं (मं) विरामा रेव, भिरम् ।

रसद्, स स्त्री (का) अन्नमाग्री भक्ष्यताम् ।

रसनो, ॥ स्त्री (स) रसा, जिह्वा, रमजा, लोला, रसनेन्द्रिय २ कांची, मेखला ३ रज्जु (स्त्री) ४ अमीशु पु, वल्गा ।

रसना, कि अ, दे 'रिमना' ।

रसनीय, वि (स) आस्ताव, चपणोय २ स्वाद, रस्य, संचिकर ।

रसनेन्द्रिय, स स्त्री (स न) जिह्वा, रसा, लोला, रसजा ।

रसम्, सं स्त्री (अ रसम्) प्रपा, परिपाटी-टि (स्त्री), रीति (स्त्री) ।

रसा, स स्त्री (स) शिवी २ जिह्वा, रसना ३ पाठा ४ रासना, प्लायणी ५ द्राक्ष ६ नदी ७ रसातलम् ।

—पवि, सं पु (स) नृप, भूप ।

—पायी, वि (सं-विन्) जिह्वापायिन् ।

स पु, भन्, कुक्कुर, सारमेय ।

रसा, ॥ पु (स रस >) मू (ज्) प प० रस, दे 'शोरवा' ।

रसाई, स स्त्री (का) दे 'पहुँव' ।

रसान्न, सं पु (ज्ञ न) दे 'रसीत' ।

रसातल, सं पु (स न) पाताल २ पाताल विशेष ।

रसायन, स पु (स न) जराभ्यापिनाश कीषध २ तक्र ३ दिषं ४ रम विना शाम्भ सिद्धि (स्त्री) ५ 'रसायनशास्त्र' दे 'रेमिद्री' ६ धातुविषा ।

—बनाना, ॥ (धृदधानू) सुवर्णरूपण परि भम् (त्रे) अपवा सुवर्णीक ।

—शास्त्र, सं पु (सं) दे 'रैमिद्री' ।

रसाल, स पु (म) रसु, दे 'गज्ञा' २ आश्र ३ वि, स्वादु, सुरवाद २ सरस ३ मरु ४ मुंदर ।

रसिक, सं पु (सं) रसाम्बारिन्, स्वाद ग्रहिन् २ प्रणयिन्, अनुरागिन्, कामुव ३ मद्धदय, भावुर, काव्यमगश ४ आन दिन्, विनोदिन् ५ अज, प्रेमिन् ।

रसिकता, सं स्त्री (सं) विनोदित्व, परि हानविद्यता २ सहृदयता, भावुरता ३ कामु यता, विलम्बिता ।

रमिया, सं पु, दे 'रसिक' ।

रसीद, सं स्त्री (का) प्रति-उपनिधि (स्त्री) २ 'प्रतिपद' ।

—बुरु, म स्त्री (का + अ) प्रातःपत्रपत्रिका ।
 रसीला, वि (स रस >) दे 'रममरा' ।
 रसूल, स पु (अ) ईशदूत ।
 रसद, स पु (स) पाद, दे 'पाद' ।
 रसोइया, स स्त्री (हि रसोई) पाचक,
 सद सपरार, बहव, आराविक, आपसिक,
 औदनिक, रन्धक ।
 रसोई, स स्त्री (म रसवती) पाकशाला,
 महानर २ सिद्धात्र, पन्नाहार, भोजनम् ।
 —घर, म पु, दे 'रसोई' (१) ।
 —दार, स पु, दे 'रसोइया' ।
 यचा—, म स्त्री (घृणादिपु) *अपक्वभोजनम् ।
 पक्षी—, स स्त्री, (घृणादपु) *पक्वभोजनम् ।
 रसीत, स स्त्री (स रसोदभूत) रसानन,
 रसगर्भ, कृतक, बालभैषज्य, बर्वाजनम् ।
 रस्ता, स पु (हि रस्मी) स्थूलमदान,
 बृहदरञ्जु (स्त्री), स्थूलरदिम ।
 रस्ती, स स्त्री [स रसिम (पु)] रञ्जु
 (स्त्री), गुण, दामन (न), बराट, शुल्वा,
 बगी, रश(स)ना ।
 रहँद, म पु, दे 'अरहर' ।
 रहटा, म पु, दे 'चरखा' ।
 रहते, कि वि (हि रहना) उपस्थितौ,
 विद्यमानताया, जीवने (स्व सक्षमी द्रु) ।
 रहन', म स्त्री (हि रहना) वाम, वसन,
 वसनीनि (स), वस्ति (स्त्री), स्थिति
 (स्त्री) २ आचार, व्यवहार, चरित,
 वर्तन, वृत्ति (स्त्री) ।
 —सहन, स स्त्री दे 'रहन' (२) ।
 रहन', स स्त्री (हि रचना) अपान,
 दे गिरवी' ।
 रहना, कि अ (स रागन >) अधि-निप्रति,
 वम (म्वा प अ) २ अवस्था (म्वा आ
 अ), वृद्ध (म्वा आ मे), म्वा (म्वा प
 अ) ३ नीव (म्वा प मे) प्राणान् घृ
 (पु) ४ विरम् (म्वा प अ), विग्रम्
 (दि प से) ५ अव उत्तरि, शिप (कम)
 ६ उज्ज-त्यन् (वर्म) ७ विद् (दि आ अ),
 उपस्था (म्वा प अ) ८ मुधा बाल्य या
 (मे) । स पु, अधि-निप्रति, वसन वसनी
 नि (स्त्री), अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री),
 जीवन, प्राग्वहार, अवस्थितना, त्याग,
 उपस्थिति (स्त्री) ।

रहने योग्य, वि, निवसनीय, वासाह ।
 रहनेकाला, स पु, नि, वासित, स्थ, वर्तित,
 (तद्धित प्रत्यय से नी, व, भारतीया,
 पाचनदा) ।
 रह रह के, शु, पुन पुन, भूयो भूय, पौन
 पुन्येन, बार बारम् ।
 रहम', म पु (अ) कृपा, दया, करुणा,
 अनुकृपा ।
 —दिल, वि, कृपातु, स्वरूप ।
 रहम', स पु (अ रहम) गर्भाशय, दे ।
 रहमत, स स्त्री (अ) कृपा, अनुग्रह ।
 रहमान, वि (अ) अनिशप-परम, कृपातु-
 दयातु । स पु, परमेश्वर ।
 रहस्य, वि (स) गोप्य, गोपनीय, गुह्य
 २ गुप्त, गूढ, प्रच्छन्न । स पु (सं न)
 गुह्य, गोप्य, मर्मन, गूढ, मन्त्र, वार्ता ।
 रहा-सहा, वि, 'बचासुचा' ।
 रहा हुआ, वि, वषित, अव, स्थित, अव-उत्तर
 परि, गिष्ट, उपस्थित इ ।
 रहाइचा, स स्त्री (हि रहना) वसनी-ति:
 (स्त्री), वास, अवस्थान, अवस्थिति (स्त्री) ।
 रहित, वि (स) होन, विरहित, वञ्चित,
 शय, वियुक्त, विनाभूत ।
 रहीम, नि (अ) दयातु । स पु, ईश्वर ।
 राँग, गा, स पु (म राग-ग) वग, त्रपु,
 त्रपुष, वृत्तिगन्ध, कुक्ष्य, मधुर, हिम, पिच्छदम् ।
 राँड, वि (स रडा) विषया दे । २ वेद्या ।
 राँधना, कि स (स रधन) दे 'पकाना' ।
 राँधी, स स्त्री (देश) चर्मकारसुरिका,
 *चर्मकर्त्री ।
 राँभना, कि अ, दे 'रगना' ।
 राई, स स्त्री (स राजी) रक्तसर्पप रक्तिका,
 ज्योती, खव, सधक, झुनक । दे 'सरसो'
 के भेद २ अत्यल्प-मात्रा-परिमणम् ।
 —नोन उतारना, मु राभीलवगधूमेन कुदृष्टि
 प्रभाव नष्ट (मे) ।
 —भर, मु, त्रिल त्रपु-लेश-राजी, मात्र,
 अत्यल्पम् ।
 —से पर्वत करना, मु, अनुमपि पवतीक,
 निसे ताल पदयति, अत्युत्पदा वर्ण (पु) ।
 राईफल, स स्त्री (अ) कुक्षिमृतास्त्र, नाग
 खमेद ।

राका, स स्त्री (स) सपूर्णचन्द्रा, पौर्णमासी
२ पूर्णिमा, पूर्णा, पूर्णमासी ।

राकेन्द्र, स पु (म) राकापति, चन्द्र ।

राक्षस, स पु (म) निशा रक्षनी गति नक्त,
चर, क्रव्याद-र (पु), रक्षस (न),
पलाश शिन्, भूत, दाष्ट, सन्ध्यावल्,
यातु, यातुधान, अस्त्र-कोण, ष, बडुर,
दैत्य, असुर दानव २ दुष्टप्राणिन्, पाप
३ विनाहमेद (धर्म) ।

—विवाह, स पु (म) विवाहमेद, युद्धेन
कन्यां प्राप्य विवाह ।

राक्षसी, स स्त्री (सं) पिशाचो, निशाचरी,
दानवी । वि, राक्षस दानव, उचिन्त्योग्ध,
भमातुपिक ।

राख, स स्त्री (स रख् >) गमिन, गमम्
(न), भूति (स्त्री) ।

राखी, स स्त्री (स रखा >) दे 'रक्षानघन'
२ दे. 'राख' ।

राग, सं पु (स) अभिमतविषयाभिलाष,
लुब्धपणा २ वलेश, वष्ट ३ मात्सर्ष्य, इष्या
४ प्रीति (स्त्री), अनुराग ५ अनुराग
६ लोहित, रग-वर्ण ७ रजन, आह्लादन
८ कथा ९ सगीतशास्त्रीयराग (भैरवादि) ।

—रग, सं पु (सं) विनोद, विलास कीर्ण
कौतुक, संगीत, रजनम् ।

अपना—अलापना, सु, (परविचारान् अश्रुत्वा)
स्वकीयानेव विचारान् मरभम् श्रु (३) ।

रागान्धित, वि (स) अनुक्त, नामन्,
सकाम २ बुधित, कुद ।

रागिनी, सं स्त्री (सं रागिणी) रागपत्नी
(भैरवी, गुर्वरी आदि) २ निद्राया नारी ।

रागी, स पु (सं गिन्) रागविद (पु),
गायन्, गाष्ट २ अनु-रागिन्-रक्त, प्रेमिन् ।
वि, रगित, मराम २ लोहित-रक्त-वर्ण
३ विषयाम्क, भोगिन् ।

राघव, सं पु (म) रघुवश्य २ अज
३ दशरथ ४ आरामचन्द्र ।

राष्ट, स पु (म रश् >) (श्लिपिना) उप
करण, सपथन, सय २ करपथा ३ दे 'रघू' ४
५ चञ्चरी पेषणी, वीर्य ।

राज, सं पु (म राज्य) शामन, शिति
(स्त्री), देश प्रबन्ध व्यवस्था, प्रजापत्य,
आधिपत्य २ जनपद, नीवृत् (पु), मङ्ग,

राष्ट, देश, राज्य, विषय, उपवर्जन ३ अधि
कार, आधिपत्य ४ शामन-राजत्व-मन्त्र्य,
वाल । म पु (म राजन्) नृप २ 'मेमार' ।

—करमा, कि म, प्र, शाम (अ प से),
दैर् (अ अ से) अधिष्ठा (म्वा प अ),
परिषा (प्रे, पालयनि), तन् (तु आ स) ।

—कर, सं पु (स) राज, स्वर्गि श्रु-
(क) चनम् ।

—काज, स पु (स कार्य) शामन, व्यवस्था
कृत्यम् ।

—कुमार, स पु (सं) राज, पुत्र-नृप, नृपु ।

—कुमारी, स स्त्री (म) राजनृप, कन्या
कुनापुत्री ।

—कुल, स पु (म न) राज-नृप, वंश अन्वय ।

—गद्दी, स स्त्री, नृपामन, राजभिहामन
२ राज्य, अभिषेक, *राजतिष्ठ नम् ।

—गीर, स पु, दे 'मेमार' ।

—गुरु, सं पु (स) राज, शिक्षन् पुरोहित ।

—गृह, सं पु (म न) नृप-राज, प्रामाद
भवनं मदिर सदन, मीध, सुधामय २ मगध
प्राप्त्य प्राचीनराजधानी ।

—तिलक, स पु (स पु न) दे 'राजगद्दी'
२ अभिषेकोत्सव ।

—दद, स पु (म) राज शामन, प्रजापालन
२ राज्यनियमविहित आर्थिक-शारीरिक-दद
३ दे 'राजन्' ।

—दंत, स पु (सं) पुरोवर्तिनचतुर्थ
२ उपरिधेणीमध्यवर्तिनद्वयम् ।

—दरबार, सं पु, द 'राजमना' ।

—दूत, म ३ (म) नृप, वार्तिक-मादेशि ।

—द्रोह, स पु (स) नृपविराट, राजवि
रुध, प्रजाघोम ।

—द्रोही, स पु (सं हिन्) नृपविराटि ।

—धनो, स स्त्री (सं) नृपनगर ।

—नीति, स स्त्री (म) नृप-राज, नय विधा,
शामननीति (स्त्री) (मधिविग्रहमामगनादि) ।

—नीतिक, वि (सं) राजशामनविषय
तत्त्वमवधिन् ।

—पय, सं पु (सं) राज, माग वामन् (न),
महा-पय श्री, पय ।

—पाट, स पु, (सं) राजभिहामन २ शामन-
धिकार २ जनपद, राष्ट्रम् ।

- पुत्र, स पु (स) राजकुमार २ क्षत्रिय
जानि भेद ३ बुधप्रद ।
- पूत, स पु (स राजपुत्र >) क्षत्रियजाति
भेद, *राजपुत्र ।
- पूतो, स स्त्री (हिं राजपूत) शौर्य, कीर्त्यम् ।
- फोडा, स पु *राजस्थिति, *स्थोत्रराज,
दे 'धारवकम्' ।
- बाहा, ॥ पु, राज महाकुल्या ।
- भदार, स पु (स भागर) राज-राज्य,
कोष (श) भावगार (रम्) ।
- भक्त, स पु (स) राज्य-राज, भक्त निष्ठ ।
- भक्ति, स स्त्री (स) राज्य-राज, भक्ति
(स्त्री) निष्ठा ।
- भवन, } स पु (सन) दे राजगृह (१) ।
- भवि, } स पु (सन) दे राजगृह (१) ।
- भजदूर, स पु, पलगडकारिका, गेहवार
वर्मकारा (भाव बहु) ।
- महल, स पु, दे 'राजगृह' (१) ।
- मार्ग, स पु (स) दे 'राजपथ' ।
- माय, स पु (स) वक्ता-टी, नील-नृप,
माय, नृपोचित ।
- मुद्ग, स पु (स) सुवृष, दे 'मोठ' ।
- यक्ष्मा, स पु (स-स्मन) राजयक्ष्म,
दे 'यक्ष्मा' ।
- योग, स पु (स) अष्टागयोग ।
- राजेश्वर, स पु (स) सम्राट् (पु),
राजाधिराज ।
- रोग, स पु (स >) असाध्यव्याधि
२ दे 'यक्ष्मा' ।
- रक्षण, स पु (स-न) सहन राजचिह्न
(सामुद्रिक) ।
- रक्षणी, स स्त्री (स) राज्ञी (स्त्री),
२ नृपचरि (स्त्री), नृपवैभवं ।
- वशी, वि (स राजवश >) राजवदय,
नृपकुलोद्भूत, राजकुलम् ।
- सत्ता, स स्त्री (॥) राज, शक्ति-अधिकार
(स्त्री), राजान्त्वम् ।
- सभा, स स्त्री (स) राज-परिषद्-संसद
(दोनों स्त्री) २ नृपसिमाज ।
- हस, स पु (स) मराल २ बल्हम्,
कदम्ब ३ नृपोत्तम ।
- राज्ञ, स पु (फा) रहस्य, गुह्य, गोप्यम् ।

- राजकीय, वि (स) राज नृप, राज-राज्य,
विषयक २ नृपोचित, राजाह ।
- राजत, वि (स) रीत्य-स्थी-प्यन्, राजमय
योग्य, राजत, अथ निमित्त-कृत ।
- राजत्व, स पु (सन) राजता, नृपत्व राज
अधिकार आधिपत्यम् ।
- राजस, वि (स) रजोगुण, उद्भूत रजिन-
प्रधान-मय (राजनी स्त्री) ।
- राजसिक, वि, दे० 'राजस' ।
- राजसी, वि (स राजस >) राज, योग्य-अहं,
नृपोचित, राजनीय ।
- राजसूय, स पु (स) नृपाध्वर, क्रतु, राज
उत्तम ।
- राजस्व, स पु (स पु न) राज, धन का
कति ।
- राजा, स पु (स राजन) नृप, भूप, पापव,
नर-भूमही, पाल पति, क्षा-महा भू भू
(पु), पाप, महाद्र, नरोद्र, प्रवेशर,
भूमिप, दत्तधर, अकनि, न-पति, इन,
भूमि (पु) राज (पु), महीक्षिप (पु),
नाभि, अधपति, प्रभु २ त्वामिन, अधि
पति ३ उपाधिपेद ४ धनाध्य ।
- राजाज्ञा, स स्त्री (स) नृपादेश, राजशा
सन्तम् ।
- राजाधिकारी, स पु (॥-रिज) राज, रजिपो
गिन भूत्य-कर्मकर-पुरुष २ न्यायाधीश,
धर्माध्यक्ष ।
- राजाधिराज, स पु (स) राजराजेश्वर,
सम्राट् (पु) ।
- राजाधिष्ठान, स पु (स न) राजधानी,
नृपनगरी, राजपुरम् ।
- राजानक, स पु (स ?) राजक, साधारण,
नृप भूप पाथिव, सामत ।
- राजाभियोग, स पु (स) प्रत्यक्ष वन्द
कायकारणम्, दे 'वेपार' ।
- राजिजिका, स स्त्री (स) श्रेणी, पक्ति
(स्त्री) २ रेखा ३ दे 'राज' ।
- राज्ञी, स स्त्री (स) दे 'राजि' ।
- राज्ञी, वि (अ) एक-सह-स, मत-चित्त
२ स्वस्थ ३ प्रसन्न ४ सुखिन ।
- करना, क्रि स, प्रसद (प्रे), सपरितुप
(प्रे), प्री (क्र उ अ) ।

—होना, कि अ, प्रसद (भ्वा ष अ) स-
परि लुप् (दि ण अ) प्री (कर्म) ।

—नामा, स पु (अ + का) समाधान
२ समाधानपत्रम् ।

राजीव, स पु (स न) नीलकमल २ पद्म,
मरोज, कमलम् ।

राजेन्द्र, स पु (सं) दे 'राजाधिराज' ।

राज्ञी, स स्त्री (स) राजपत्नी, दे 'रानी' ।

राज्य, स पु (स न) दे 'राज' (१२) ।

—च्युत, वि (स) राज्यभ्रष्ट, सिंहासनच्युत ।

—च्युति, स स्त्री (स) राज्य, भ्रष्ट मग,
मिहामनावरोपणम् ।

—नम्र, सं पु (स न) शासन, अणाली-
व्यवस्था ।

—पाल, स पु (सं) राज्यप्रदेश प्रान्त,
शासक । (प्रादेशिक शासन का सर्वोच्च
प्रबन्धक) ।

—लक्ष्मी, सं स्त्री (स) दे 'राजलक्ष्मी' ।

—व्यवस्था, म स्त्री (सं) राज्य, निबन्ध -
व्यवस्था ।

राज्याभिषेक, सं पु (सं) राज्य-सिंहासन,
आरोहण, राजनिलक कं २ मिहामनारोहणे
राजस्यै वा नृपत्नानविशेष ।

राजा, सं पु (सं राजन्) राजपुत्रनृपाणां
उपाधि ।

राज, सं स्त्री [सं राजीवि (स्त्री)]
रा(शा), वंरी निशा निशीथिनी त्रियामा, छणदा,
छपा, विभावरी, रजनी यामिनी तमो, तम
श्विनी इयामा, घोरा, नक्त, दोषा ।

—दिन, कि वि, नक्तदिन, नक्तदिव, सदा,
मर्वदा ।

—भर, कि वि, यावत्तक, निज्ञान यावत् ।
आधी— म स्त्री मध्य अर्थ राज निशीथ,
निज्ञानात्रि अर्थम् ।

राजो— कि वि, निशीथे ण्व ।

रात्रित्री, स स्त्री (मं) दे 'रात्र' ।

राज्यध, सं पु (स) निज्ञाण (मनुष्य या
पु आदि) ।

राधाधिका, सं स्त्री (सं) रामेश्वरी,
रामेश्वरी कृष्णप्रिया, वृषभानुतनया ।

—रमण, सं पुं (स) राधावत्तम, श्रीकृष्ण ।

रान, सं स्त्री (का) कर्, सविध (न) ।

राना, स पु, दे 'राता' ।

रानी, स स्त्री (सं रात्री) राजपत्नी, नृप-
कलत्र २ स्वामिनी ।

छोटी—, स स्त्री, परिहृती ।

पट्ट—, स स्त्री, पट्ट-राष्ट्री-महिषी देवी, महा
पट्ट राष्ट्री ।

प्रिय परन्दु छोटी—, स स्त्री, वाधाता ।

राव, स स्त्री (मं द्रावक) फागित, अर्द्ध
वर्तितेष्टम् ।

राखड़ी, स स्त्री, दे 'रखड़ी' ।

राम, स पु (सं) परशुराम २ बल, राम
देव ३ श्रीरामचंद्र ४ परमेश्वर ५ 'वि'
इति सख्या ।

—कली, स स्त्री (स) रामक(कि)री
(रागिणी) ।

—कहानी, सं स्त्री, वृष्टकवा २ करणकथा ।

—जनी, सं स्त्री, हिन्दू नर्तकी २ वेद्या ।

—तरोई, सं स्त्री, दे 'भिडी' ।

—दूत, स पु (सं) इन्दुमद (पु),
पवनपुत्र ।

—धनुष, स पुं [सं नुस् (न)] इन्द्रबाण ।

—नवमी, सं स्त्री (सं) श्रीरामजन्मतिथि,
चैत्रद्युस्त्वनवमी ।

—नामी, सं पु [सं रामनामन् (न)]
रामनामादिनवस्त्र २ रामनामाकिनहारभेद ।

—गुर, सं पु (म न) स्वर्ग २ अयोध्या ।

—बाण, सं पु (म) अग्नीपनाशक औषध
विशेष २ रामचर, शरवृक्षभेद । वि,
अमोप, मघ फलदायिन् ।

—रस, स पु (स) लवण २ भंगामव
(मदरास में) ।

—राज्य, स पु (सं न) धर्म-व्याप्य,
राज्यम् ।

—राम, अर्थ (सं) प्रणाम, नमस्कार ।

—टीला, सं स्त्री (सं) रामायणाभिनय ।

—सखा, सं स्त्री (सं-ख) मुग्धीव ।

—काके, मु, अत्पायासेन, अनिकृष्टेण,
वयावधनिय ।

—जाने, मु, न वेधि, न जाने, ईश्वरो जानानि
२ ईश्वर साखी, अहं सरयं वसिम् ।

—नाम सत्य हे, मु, रामनाम(गोविन्दनाम)-
सत्य, प्रेनवहनकालोचितवाक्यम् ।

रामचन्द्र, सं पु (स) दशरथस्य ज्येष्ठपुत्रः ।
रघुनन्दनः, सीतापतिः, राममद्रः, रावणारिः ।
रामा, सं स्त्री (स) सुदरनारी, सुन्दरी,
बाना २ नारी ३ सगीतकुशला नारी
४ सीता ५ राधा ६ रुक्मिणी ७ लक्ष्मी
८ सीताला ।

रामानन्द, स पु (स) वैष्णवाचार्यविशेषः ।
रामानुज, स पु (सं) लक्ष्मणः, सौमित्रि
२ श्रीवैष्णवसम्प्रदायप्रवर्तनाचार्यः (स
१०७३ ११९४) ।

रामायण, स पु (स न) श्रीवाल्मीकि
प्रणीतो महाकाव्यवैशेषः २ रामचरितम् ।

रामायणी, वि (स रामायणम् >) रामायण,
मन्वन्धित-विषयकः, रामायणीयः । स पु
रामायणः, पठित् पठितः ।

राय^१, स पु (स राजन्) नृपः, भूप
२ सामन्तः, नायकः ३ चारणः, बहिनः
४ राजकीयोपाधिभेदः, राजन् (पु) ।

—बहादुर, स पु (हि + का) *राज
वीर (उपाधिभेदः) ।

—साहब, स पु (हि + का) *राजमहोदय
(उपाधिभेदः) ।

राय^२, स स्त्री (का) मत्तः, भक्ति (स्त्री)
अशयः, अभिप्रायः, विचारः, तर्कः ।

—देना, कि अ, निजमतस्वमूर्ति प्रकटयति
(ना धा) ।

—एजना या खेना, कि स, परमं प्रब्धं
(पु प ज), (स्वहिताय) परविचारः छा
(मज्जतः, जिज्ञासते) ।

रायगाँ, वि, (स) व्यर्थः, निरर्थकः, अपार्थक्यः ।
रायन्, वि (स) दे 'प्रचक्षितः' ।

रायता, स पु (स राज्यका) दाधिरन्वय
नभेदः, दाधेयम् ।

रायल, वि (अ) राजकीयः, राजोचितः, नृपो
चितः, राजाह ।

रार, स स्त्री [म रा (स्त्री)] दे 'झगड' ।

राल^१, स पु (स) शाल-माल-वृक्ष २ सर्ज
शालः, निर्माण-रसः, सुरयश्च धूपः, सुरभिः,
अग्निवत्प्रभः, दे 'धूप' ।

राल^२, स स्त्री (स लाण) सुषि(णी)का,
स्वदिनी, द्राविका, मुखलाव ।

—गिरना चूना वा टपकना, पु, लालयते

(ना धा) रालयित (वि) भू, अत्यर्थं
अभिलषु (आ प मे) ।

राज, स पु, दे 'राज' ।

—चाव, सं पु, मगीनोत्सवः, दे 'रागरग'
२ लालनम् ।

रावण, स पु (स) पौलस्त्यः, लक्षेशः, दश,
कषरः श्रीवः आननः आस्यः ।

रावली, स पु (म राजपुर >) अतः पुरं,
दे 'रनवास' ।

रावली^२, सं पु (स राजपुत्र >) नृप
२ सामन्तः ३ समानध्वजः संबोधनपदः,
राजन् ४ बोधः, भट ।

रावी, स स्त्री (स इरावती) घेरावती,
पचनदग्न-वर्तिनदीविशेषः ।

राणि, स स्त्री (स पु) दु(पि)नः, पुनि
(स्त्री), उत्तरः, कूट-ट, समुच्चयः, निकरः,
दे 'डेर' २ ज्योतिष्यकस्य द्वादशांश
३ उत्तराधिकारः ।

—चक्र, स पु (स न), ज्योतिष्यकः, म,
महत्पत्नर-चक्रम् ।

—भाग, स पु (स) राक्षसः, मग्नांश
(ज्यो) ।

—भोग, स पु (म) राशी महावर्तिनिकालः
(स्त्री) २ राशी महावर्तिनिकालः ।

राशी^१, स स्त्री, दे 'राशि' ।

राशी^२, वि (अ) दे 'रिशवजोद' ।

राष्ट्र, स पु (स न) देशः, विषयः, जनपदः,
दे 'राज' (२) २ राष्ट्रधामिनः, राष्ट्रिका,
जनाः, प्रजा (सब बहु) लोकः, जनता
३ राष्ट्रीय-उपदेशः, दे 'संति' ।

—पति, स पु (स) राष्ट्रिकः, राष्ट्रियः,
राष्ट्रनायकः, प्रजातन्त्रप्रधानः ।

—पाल, स पु (म) नृपः, भूपः २ कम
भ्रातृ ।

—विप्लव, स पु (स) राजद्रोहः, प्रजा
क्षोभः कान्ति (स्त्री) ।

राष्ट्रीय, वि (सं) देशीयः, देश्यः, राष्ट्रियः,
जानपदिकः ।

राष्ट्रीयता, स स्त्री (स) देशीयता, देश
भक्ति (स्त्री) ।

रास^१, स पु (स) कोलाहलः, कलकलः,
महाध्वनः २ ध्वनिः, शब्दः । सं स्त्री

(स पु), गोपाना नृत्यक्रीडाभेद २ नाट्य रूपक, भेद ३ मृत्कला ४ प्रचलितगानिनाभेद ५ विलास ६ लभ्य ७ नववन्मसाय ।

—क्रीडा, स स्त्री (स) रामविलास रम लीला २ कृष्णगोपिमानृत्यम् ।

—घोरी, स पु (स रिन्) रामाभिनेतृ ।

—विहारी, स पु (स रिन्) श्रीहृण्य ।

राम, स स्त्री (अ) दे 'राम' ।

राम, स स्त्री, दे 'रामि' (१२) ।

रामभ, स पु (स) गर्दभ २ भवन्तर (राममी स्त्री) ।

रास्त, वि (का) सरल २ उचित ३ अनु कूल ४ यथागत ।

रास्ता, स पु (का) मार्ग, पथिन् (पु) २ रीति (स्त्री) ।

रास्ती, स स्त्री (का) सत्य, तथ्य, नृत्य २ आनन, धर्मशीला ।

राह, स स्त्री (का) पथिन् (पु), दे 'मार्ग' २ प्रपा, रीति (स्त्री) २ नियम ।

—सर्व, स पु (का) समान्यव ।

—गीर, स पु (का) मार्जन, पथिक ।

—चलता, स पु (का + दि) पथिन् २ अपरिचित ।

—ज्ञान, स पु (स) दस्त, परिपथिन्, मार्गनस्वर ।

—ज्ञानी, स स्त्री (का) तुलन, मोरण, अपहार ।

—दारी, स स्त्री (का) पथ, नर-द्वय, मार्ग शुष्क-कम् ।

—रीति, स स्त्री (का + मे) परस्पर, व्यवहार-समर्ग ।

—ताकना या देखना, मु, प्रतीक (स्त्री आ मे), प्रतिपा (प्रे प्रतिपान्यति) ।

—नापना, मु, व्यर्थ पदट (स्त्री आ मे) ।

—निकालना, मु, मुक्ति चिन् (चु) उपाय कल्प (प्रे) ।

—पर आना, मु, मुखे प्रकृत (स्त्री आ स), समर्ग अन्तर्ग (स्त्री आ स) ।

—बनाना, मु स्वयदाय अन्त्यु (प्रे) २ मार्ग कृन् (प्रे) ।

—रचना, मु, व्यवह (स्त्री आ मे), समीप (स्त्री आ मे) ।

—रचना, मु, प्रस्था (स्त्री आ मे), या (अ मे) ।

राहत, स स्त्री (अ) सुख, आनन ।

राही, स पु (का) पथ, पथिन् ।

राहु, स पु (स) विधुत, मैदिक जेय, तमस (पु न), स्वभाव, शीर्षक, स्वध ।

—ग्राम, स पु (स) राहु, यमन-दशन-स्पर्श ग्राह उपराग, सर्व चन्द्र, ग्राहणम् ।

रिआयत, स स्त्री (अ) मूल्य-दुत्ता २ अनुग्रह, व्यवहारनादर्थ, प्रसाद ३ पञ्चपान ।

—करना, क्रि ॥, मूल्य न्यूनीक २ अनुग्रह (क् प से) ३ सपञ्चपा' आचर (स्त्री प से) ।

रिआयती, वि, (अ) प्रामादिक, आनुग्रहिक, न्यूनमूल्य ।

रिआया, स स्त्री (अ) प्रजा, दे ।

रिक्ता, स स्त्री (अ रिक्ता) अनर, यान-वाहनम् ।

रिक्ता, स स्त्री, दे 'रक्ता' ।

रिक्ता, स स्त्री, दे 'तक्षरी' ।

रिक्ता, स पु (अ) बालग्रह (रोगभेद) ।

रिक्त, वि (स) पर, शुद्ध, शून्यगर्भ २ निर्धन ।

—हस्त, वि (स) शून्यपाणि ।

रिक्त, स पु (स न) क्षय, पैतृपथनम् ।

—हारी, स पु (न रिन्) रिक्थिन्, दायाद ।

रिक्त, स पु (अ रिन्) आन्ध, जीविरा, वृत्ति (स्त्री) ।

रिक्त, वि (अ) रिक्त, निश्चिन्, निषय ।

रिक्त, स पु (अ) परोक्षा, अन्ध-परिणाम २ परिणाम, कल्प ।

रिक्ताना, क्रि स, व 'रीक्षता' के प्रे रूप ।

रिप्पु, स पु (स) अरि, बैरिन्, दे 'उत्तु' ।

रिपोर्ट, स स्त्री (अ) सूचना २ निवरणिका, निवरण, प्रतिवेदनम् ।

रिपोर्ट, स पु (प्रे) संवाद, दातृ-प्रेषण, वृत्तान्त-समाचार, ज्ञेयम् ।

रिपोर्ट, स पु (अ) घटना-दातृ-प्रेषण, महिस्वायविशेष, *रिपा तावम् ।

रिक्तामं, स पु (अ) मंशोधन, दोषानयन, संस्करणम्, संस्कार । *मृदार ।

रिक्तामर, म पु (अ) (समान) मशोधक
मस्कारक-दोषहन्, *मृद्वारण ।

रिक्तामरदरी, म स्त्री (अ) कागारमालक
सस्कारकपादशाला *मशोधिका *मस्कारिका,
*मृद्वारिका ।

रिश्चन, म पु (अ) पट्टिका ।

रिमक्षिम, म स्त्री (अनु) शीकर-वर्ष पात ।

—होना, कि अ, मद मद वृप् (भ्वा प से) ।

रियामत, स स्त्री (अ) देशीयराज्य, राज्य
२ ऐश्वर्य, वैभवम् ।

रिवाज, म पु (अ) दे 'रीति' ।

रिशवत, म स्त्री (त्र रिश्चन) उत्कोच,
आमिष, दौकन, लका २ उत्कोचदानादानम् ।

—खाना, कि अ, उत्कोच ग्रह (कृ प से)
आद्या (जु आ अ) ।

—झोर, म पु (अ + का) उत्कोचश्रावित् ।

—झोरी, म स्त्री (अ + का) उत्कोच,
आदान ग्रहणम् ।

—वेना, कि म, उत्कोच दा ।

रिक्ता, स पु (का) दे 'मवध' ।

रिक्तेदार, म पु (का) दे 'सवधी' ।

रिक्तेदारी, स स्त्री (का) दे 'मवध' ।

रिम, स स्त्री (स रिष्) कोष, कोच ।

रिमना, कि अ (स रम) विदुषा कण
कलेण मन्द (भ्वा आ से) क्षर-गल (भ्वा
प से), री (दि आ अ) २ मद मद लु
(भ्वा प अ) प्रप्नु (अ प से) स्वद्, री ।

रिमालदार, स पु (का) मादि-सेना, नौ
(पु) पनि ।

रिमाला, स पु (अ) सामयिक, पत्रिका,
२ पुस्तिका ।

रिमाला, स पु (का) तुरगवल, सदिसेन्य,
अधारोडा किम् ।

रिहा, वि (का) निरवि, मुक्त विमोक्षित,
दे 'मुक्त' ।

रिहाई, म स्त्री (का) (बधनादिभ्य) वि,
मुक्ति (यी) उद्धार, निम्नार ।

रींगना, कि अ, दे 'रेंगना' ।

रीधना, कि स (म रधन) दे 'पकाना' ।

री, अन्य (म रे) अरे, भो, अयि, हे, दे
'अरी' ।

रीछ, म पु (म ऋछ) मल्लु, दे 'मालु' ।

रीझ, म स्त्री (दि राझना) तुष्टि एष्टि प्रीति
(स्त्री), प्रसाद, २ दे 'रीझना' स पु ।

रीझना, कि अ (स रजन) अनुरज-आमन्
(वर्म) अनुरक्त-आमक्त-वदभाव (वि)
भू, वि-परि, मुह (दि प से) २ तुप-तुप्
(दि प से), प्रमद (भ्वा प अ) । म पु,
अनुराग आमक्ति (स्त्री) २ तुष्टि प्रीति
(स्त्री) ।

रीझा हुआ, वि, अनुरक्त, आमक्त, वदभाव,
वि, मुग्ध, प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

रीटार्ट, म पु (सं) वक्रमाण्डम् ।

रीठा, म पु (स रिष्ट) अरिष्ट दृक्, मागल्य,
कृष्णवर्ण, अर्थमाधन पीतकेन, गुच्छकल,
केनि(रि)न २ रिष्ट केनि(रि)ल-कणम् ।

रीढ़, स स्त्री (स रीढक) पृष्ठवत्, पृष्ठारिष्य
(न), वदे(से)र(पु न), वदोरुका ।

रीठा, वि (स 'रिक्त' दे) ।

रीति, स स्त्री (स) रुढि (स्त्री), आचार,
स्ववहार प्रथा, परिपाटी (स्त्री)
२ मस्कार, कृत्य, विधि, कल्प ३ प्रसार,
विधा, पदति (स्त्री) ४ नियम ५ रसा
दीना उपरुशी पदसमष्टना (काव्य, उ)
वैदमी, गौडी इ) ५ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री),
धर्म ।

—रिवाज, सं पु, रुढय, आचारस्ववहार,
सम्प्राप्ता (भीर्नो बहु) ।

रीस, म स्त्री (स रीष्) मात्मर्य २ स्पष्टा,
मिनिगीषा ।

—करना, कि अ, स्पर्ध (भ्वा आ से),
संपृष् (भ्वा प से) । (प) अनुकृ ।

रुड, म पु (स पु न) कवच, नि शीर्षनाय
२ शिब्रपाणिपादौ दह ।

रुँ(रुँ) दवाना, कि प्रे व 'रौदना' के प्रेरूप ।

रुधना, कि अ (स रुड) अव-उप, रथ
(कम) प्रविधापुस्तम (कर्म) ।

रुकरा, कि अ, व 'रोकरा' के वर्म के रूप ।

रुकराना कि प्रे, व 'रीकरा' के प्रेरूप ।

रुकाव, स पु } (दि रुकरा) दे 'रोक' ।

रुकाव, स स्त्री } (दि रुकरा) दे 'रोक' ।

रुका, स पु (अ रुकअ) पत्रक, लुपवन् ।

रुक्म, स पु (स न) सुवर्ण, काचर्न
२ लोह इ रुक्मिणीप्राद । वि भास्वर ।

—रथ, म पु (मं) रथमवाहन श्रेणाचार्य ।
रविमणी, म स्त्री (स) श्रीकृष्णस्य प्रथम
पत्नी, विदर्भेशमीश्वरपुत्री ।

रवमी, स पु (मं विमन्) विदर्भेश्वरमीश्वरस्य
ज्येष्ठपुत्र ।

ररा, स पु (का) मुख, वदन, आनन,
२ कपोल, गाल ३ मुखमुद्रा अङ्गुलि
(स्त्री) ४ भाव, आशय ५ कृपा-दया,
दृष्टि (स्त्री) ६ रथ-यान नामकश्चतुरंगशर
किं वि, मनि (दिताया के साथ), दिशाया
२ समर्थ, पुत्र ।

—करना या देना, मु, अवधा (जु उ अ)
मनोयुन (जु) २ अनिदुलीधृ ।

—सदरना या केरना, मु, पराङ्मुखीधृ
२ मनोज्ञ्यन युन (जु), अन्यमनस्क
(वि.) धृ ।

रप्रसक्त, म स्त्री (अ) प्ररमान, प्रयाण
२ अवकाश दे 'छुट्टी' ।

रराई, सं स्त्री (हिं रुखा) शुष्कता, दोष,
नौरसता २ रुग्णता, औदामीन्य, रोगाभाव,
उपेक्षा, रौक्ष्यम् ।

ररानी, म स्त्री (सं रौरगान्) ० रौर
गननी, वर्षस्फुपकरणभेद ।

ररना, कि अ (मं रौरनं) रुच् (स्वा भा
स), नियमद्र-रचिकर मनिइ (वर्म) ।
इएअमिन्व (वर्म) ।

ररि, मं स्त्री (सं) अमिरवि-श्रीनि श्रुति
प्रश्रुति (स्त्री), छंद, वाम २ अनुराग,
प्रेम (पु न) ३. निरण ४ मौदर्व,
रवि (स्त्री) ५ शुभुश, निपत्ता, शुभा
६ आन्वाह ।

—कर, वि (मं) रकारिष्ट, सुरम २ दध,
पिय, मनोहर, रचिकारक ।

—चढेक, वि (मं) रचिनाखवरनारि
२ पानर, भीरु, अनिदवर्द्ध ।

ररि, वि (मं) सुंदर, मनोहर २ मधुर,
सम्पाद ।

रराता, रि म, व 'रुटना' के प्रे रूप ।

ररावा, मं पु (अ) पद, पदवी २ मान,
प्रतिष्ठा ।

रदन, सं पु (सं) रदित, रोदनं, निरूपनं,
रिन्ना, रदनं, रदित, अनुपात ।

रद, वि (स) वेष्टित, वरपित, सवीन,
२ मुद्रित अ, पिहित, आस, वृत्त ३ स्तम्भित,
निश्चलीकृत ।

—कठ, वि (सं) रदगदस्वर, स्वरद्वचन
० वक्तुमममथ (प्रेमादि के कारण) ।

रद, सं पु (सं) शिवस्य रूपविशेष, शिव
२ गणदेवताभेद ३ 'षवादरा' इति संख्या
४ रसभेद (काव्य) । वि, भीम, भयंकर
भीषण ।

रदाल, म पु (सं) (वृष्ट) नृगमठ, अमर,
पुष्पगमर २ (कल) शिव हर मीलबठ, अर्थ,
पावन, भूतनाशनम् ।

रधिर, सं पु (स अ) श्रेष्ठित, दे 'रक्त' ।

रप्या, मं पु, (स रूप्य) रूप्यक, रूपर,
दृश्य, रत्नमुद्रा २ धनम् ।

—रकाना, मु, धन अवच्यद् (जु) अवधा
वृथा छे (प्रे) ।

—रोदना, मु, धनं सचि (स्वा उ अ) ।

—रुदना, मु, दे 'भुनाना' ।

—रुटा, रि, धनिक, धनाढ्य ।

रपहला, वि (हिं रुपा) रूप्य रत्न, मय,
राजन २ रूप्य-रत्न, वण, धनम् ।

रमाली, मं स्त्री (का रुमान्) दे 'रंगो' ।

ररना, स पु (हिं ररना) मीषगरव रुद्र
कभेद ।

रराई, स स्त्री (हिं रोना) दे 'रहन'
२ रोगनश्रुति (स्त्री), रहदिषा ।

रराना, कि म, व 'रोना' के रूप ।

रद, वि (मं) रुपित, रुद्र ।

रूधना, कि स (मं रौरमं) (रक्षाधेय
कारिणि) परि, रक्ष (स्वा भा म, प्रे),
परिह (स्वा उ मे, प्रे) २ परिह (अ
प अ), परिच्छद (जु), सवन्वति (ना
धा) सवन् (स्वा भा म) ३ अव-नि
मन्ध (र उ अ), विषा (जु उ अ) ।

रूँ रूँ, मं स्त्री (अनु) शिपु, रुदित-रदनं,
० रूँका ।

—करना, रि अ, र्द र्द र्द र्द (अ प स) ।

रु, सं पु (का) सुमं, वदनं (२३) उपरि
अथ, माय ।

—रुयाह, वि (का) अवधीतिमय, वन्धित ।

—रुयाही, सं स्त्री (का) अप-यशम् (न),
वीरि (स्त्री) ।

रुई, म स्त्री [म रोमन् (न)] (पौदा)
कपांम समी, कपांमी मिका २ (घूआ)
कपांम, तल-ल, पिनु, पिचुल, पिनु
तुलम् ।

—का गाला, म पु, पिनुपिड रन् ।

—दार, वि, कपांस (-सी स्त्री), कपांसिक
(-की स्त्री) ।

—दार वर, स पु, कपांस, पाल, बादर,
तुलावरन् ।

रुख, वि (स) दे 'रुखा' ।

रुख, स पु (स रुम्) पदप, तह ।

रुखा, वि (स रुख) स्निग्धना चिह्नणना
मसुणना इलङ्गना, शुन्य-रहित २ घृत-तैल,
हीन रहित ३ विरस, स्वादहीन ४ शुष्क,
निर्जल, नोरस ५ उदासीन, प्रेमहीन, विरक्त
६ कठोर पद ७ विषम भूतोलन ।

—सूला, वि, रुखशुष्क (भोजनादि), विरस,
नि स्वाद ।

रुखापन, स पु, दे 'रुखा' ।

रुठन, स स्त्री (हिं रुठना) दे 'रुठना'
स पु ।

रुठना, कि अ (स रुठ) रप् (दि प से)
अप विरज (भ्वा उ से) रन(ञ्व)तिनै,
रुठ-कुपित रपित (वि) भू । स पु, रोष,
अप वि, राग, प्रीति प्रसाद परिणोष, अभाव ।
रुठा हुआ, वि, रपित, कुपित, अप-वि, रक्त,
कृतरोष ।

रुठ, वि (म) आ-अभि, रुठ, उपर्वासीन
२ प्रवर्तित, प्रमिद्ध ३ कठिन, कठोर
४ अविभाज्य (संख्या) ५ अशिष्ट, ग्राम्य ।

रुठि, स स्त्री (स) प्रया, दे 'रीति' (१) ।
२ ख्याति प्रमिद्धि (स्त्री) ३ आ-अभि,
रोह ४ वृद्धि (स्त्री) ।

रूप, स पु (स न) आकार, आकृति
मूर्ति (स्त्री) सत्त्वान २ प्रकृति, स्वभाव
३ मुद्रा, सौन्दर्य-रवि (स्त्री) वर्ण ४ काय,
देह ५ वेद्य-य ६ दशा ॥ लक्षणम् ।

—विगाडना, कि स, विरूप (चु), आकृति
दुष् (प्रे) विकृ ।

—रंग, स पु (स न) वर्णारारम् ।

—रेखा, स स्त्री, दे 'रूप' (१) ।

—भरना या बनाना, मु, वेप ग्रह (क् प
से), रूपं धृ (भ्वा प अ, चु) ।

रूपक, ॥ पु (म न) नाटक २ अपाङ्गकार
भेद (काव्य) । स पु, दे 'रूप' ।

रूपवती, वि (स) मुरूपिणी, वरवर्गनी ।

रूपवान्, वि (स-वर) सुन्दर, मुरूप, रूप
शालिन् ।

रूपा, स पु (सं रूप्य) रजन, श्वेतं, शुभ-
मित, दे 'चौदी' ।

रूनी, वि (॥-पिन्) रूपान्वित, रूपधारिन्
२ तुल्य, समान ।

रूपोपजीविनी, स्त्री स्त्री (स.) वेद्या,
वारागना ।

रूपोपनीवी, स पु (स-विन्) दे 'बहु-
रूपिया' ।

रूपोश, वि (फा) (ददभयाद्) पलायिन
गुप्त-गुप्त प्रच्छन्न ।

रूपोशी, स स्त्री (फा) (ददादिभयाद्)
गुप्ति (स्त्री), अज्ञानवास, प्रच्छन्ना ।

रूप्यक, स पु (स न) दे 'रूप' ।

रुवरु, कि. वि (फा) अमि स, मुख-मुखे,
पुर, पुरत (सर-अव्य) ।

रुमाल, स पु (फा) वरक, कर, वस्त्र पू,
(पु), कपट ।

—पर रुमाल भिगोना, मु, अत्यधिक रुद्ध
(अ प से), अश्रुधारा प्रवह (प्रे),
वाष्पवर्षक ।

रुल, म. पु (अ) नियम, विधि २ पत्ररेखा
३ रेखादृढ ।

—दार, वि (अ+फा) रेखाकित, सरेख
(पत्रादि) ।

रुलर, स पु (अ) रेखादृढ २ प्रमाण-
पट्टिका ३ शासक ।

रुम, स पु (फा) *रुम, देशविशेष ।

रुसी, स पु (फा) रुसवाग्निन् । स स्त्री,
रुसभाषा ।

रुह, स स्त्री (अ) जीव, आत्मन् (पु)
२ तपस्, सार-रन् ।

—वेचड़ा, स स्त्री, केतकीमार ।

—गुलाब, स स्त्री, जपा, तत्त्व-सार ।

रेंक, म स्त्री (हिं रेंकना) *रेंकार, सर-
गईम, नाद, चि(ची)त्कार, हेप पापितम् ।

रेंकना, कि अ (अनु) आरट् (भ्वा प से),
रेंक, गीतक, हेच-हेच (भ्वा आ से)

२ पदं नै (भ्वा प अ) ।

रेंगटा, स पु (हि रेंकना) गर्दभार्गज
राममशावक ।

रेंगना, कि अ (स रिगण) रिग्-भ्वा प से)
सप् (भ्वा प अ) वरसा गम् २ निभृत
शने अनिमद चल (भ्वा प से)-सप् । स पु,
रिगण, सर्पण, वरमा गमन, शनै चलभम् ।

रेंगनेवाला, म पु, उरोगामिन, सापन् ।

रेंड-टा, स पु (देश) मिषाण, सिद्धान-नं,
नासामलम् ।

रेंड, स पु (स परड) अन्वक, हस्तपर्ण ।

रेंडी, स स्त्री (हि रेंड) षेरदबोन्नम् ।

—का मेल्, स पु, परदौलम् ।

रेंडी, स स्त्री (देश) छुद्रस(डी)वृक्ष २ छुद्र
तरु- (प रेंडी) ।

रेंडै, स स्त्री (अनु) दे हूँ हूँ ।

रे, अन्व (स) अरे, अयि, भो (सव अन्व) ।

रे, स पु (स ऋषभ) ऋषभस्वर (सगीत) ।

रेण्ड, स स्त्री (स रेखा) दे 'रेखा' २ चिह्न
१ संख्या, गणना ४ नवहमधु (न), ह्रम
शब्दे ।

रेखाश, स पु (स) द्रापिमाश ।

रेखा, स स्त्री (सं) रेण, रेण, दण्डकार
न्पि (स्त्री) २ चिह्न, अंक १ गणना,
सख्या ४ आकार ५ पाणिनाद्रादिरेखा
(सामुद्रिक) १ होरवदोषभेद ७ आगम् ।

—गणित, म पु (स न) भूज्या, मिति
(स्त्री) ।

रम—, सं स्त्री (सं) माग्यलेख, देवम् ।

रेगिस्तान, स पु (फा) मर, मरु, स्थल
भूमि (स्त्री), त्रिदल, धन्व (पु), ऊपर -रम् ।

रेचक, वि (स) रि, रेचक रेचन, दे "दस्तावे" ।

रेचन, सं पु (सं न) वि, रेक, प्रस्तुतनं,
रेचना, विरेचन, उदरदोषनम् । स पु,
मारक वि, रेचन रेचनम् ।

रेजा, स पु (फा) एब, रेज, अनु, वण ।

रेजीमेंट, स स्त्री (अं) सै-व, दल-मुल्यम् ।

रेट, स पु (अं) अर्थ, मूल्यम् ।

रेडियम, सं पु (अं) रेडियम, पातुभेद ।
२ सवानु (न) ।

रेणु सं स्त्री (म पु) पातु-मु, धूनी-
(स्त्री) २ बाहु, मित्रा १ वण-मित्रा ।

—रहित, वि (सं) धूनिधूमरित २ गन्ध ।

रेणुका, स स्त्री (स) दे 'रेणु' १, २, ३
अमदग्निपत्नी, परशुरामनननी ।

रेत, स पु [स तस (न)] वीथ २ पारद
३ जलम् ।

रेत, स स्त्री (स रेतना) बालका, मित्रता,
सिका, शीतला, महा, मूक्षमा ।

रेतना, कि स (हि रेत) मध्व्या धृष्
(भ्वा प से), लोहमार्जन्त्या इक्षणीष्ठ
२ मध्व्यादिभि शनै शनै हृत् (छ प से) ।

स पु, लोहमार्जन्त्या धर्पण इक्षणीकरणं
कर्तान् भेदनम् ।

रेतल-स्त्री, वि, दे 'रेतीना' ।

रेता, सं पु (हि रेत) दे 'रेत' २ धूलि छि
(स्त्री) ३ सिक्कित्तल्यलम् ।

रेतिया, स पु (हि रेतना) (लोहमार्जन्त्या)
वर्षक ।

रेती, स स्त्री (हि रेतवा) लोहमार्जनी,
मधन-स्त्री ।

रेती, स स्त्री (हि रेत) पुलिन, सैन्य
२ सदि-मध्ये सिक्कित्तल्यलम् ।

रेतीला, वि (हि रेत) सिक्कित्तल्यलम्, सैन्य,
बालका मित्रता मय-मुत्त ।

रेण, सं पु (स) रवर्ण, रकार (र) २ वर्णा
न्तरमूर्धन्यो रकार (उ, ऋ) ।

रेल्, स स्त्री (अं) लोहपथभाग ।

—की शाहन, स स्त्री, लोह, पथ-सारणी
भाग ।

—गादी, स स्त्री, वाप्यशकटी ।

रेल्, सं स्त्री (हि रेल्ना) धारा, प्रवाह
२ आभिषय, बाहुल्यम् ।

—वेल, सं स्त्री जनोप, जनसंमद २ बाहुल्य

रेल्ना, कि स (देश) दे 'भकेल्ना' ।

रेल्वे, सं स्त्री (अं) लोहपथ २ लोहपथ
विभाग ।

रेल्, सं पु (देश) दे 'भका' २ दे 'धावा'
३ प्रवाह, आप्लाव ४ पक्ति, राशि (स्त्री) ।

रेवद, सं पु (फा) पीतमूली, गन्धिनी ।

रेवड, सं पु (देश) (भवनेषादीना) धूर्ण,
धूर्ण, ममन, मुत्त, वण्ट-दम् ।

रेवडी, स स्त्री (देश) भु-नि-गुणी ।

रेवनी, स स्त्री (सं) नक्षत्र-२ २ वण्डेव
पत्नी, रेवणुजी ३ स्त्री (म्ना) ४ दुर्गा ।

—रमण, म पु (सं) वण्डेव-राम ।

रेवा, म स्त्री (स) नर्मदा २ वामपत्नी, रवि (स्त्री) ३ दुर्गा ।
 रेश, स स्त्री (क) शक्ति, कूर्व, कूर्चन ।
 —सफेद, स पु (क) बृह, स्थविर, चरठ ।
 रेशम, स पु (का) कौशेय, कौश, वस्त्र, कौश, पट्ट-रुन ।
 —का कौवा, स पु, तनु पट्ट, कोर ।
 रेशमो, वि (का) कौश, कौशिक, कौशेय, पट्ट, कौश— ।
 —कपडा, स पु, कौशिक, चीन-मट्ट, अशुक, दुकूल, कौशारम् ।
 रेशा, स पु (का) (कन्वल्कलादीनां) गुा, तनु, सज २ नदी, दे 'रग' ३ दे 'जुका' ।
 रेवेदार, वि (का) श्व-रुतु, नव-युक्त ।
 रेहन, स पु (का) दे 'गिरवी' ।
 रेदास, स पु (स रावदास) मल्लिरोष, श्रीरामनंदशिष्यविशेष २ चर्मकर ।
 रेन, स स्त्री (स रवनी) दे 'रान' ।
 रेयत, स स्त्री (अ) प्रज, दे ।
 रोआँ, स पु, दे 'रो-ज' ।
 रोगा, स पु [स रोमन् (न)] लोमन् (न), आचर्मन्त्वा, ज, तनुरहन ।
 रोगादे खडे होता, सु, रोगाच-रोमहर्-रोमो हगम वन् (दि आ से), दे 'रोगाच' ।
 रोक', स स्त्री (स रोषक) विराम, विरति (स्त्री), निविच्छेद, अवरोष २ निप्रति, वेध, प्रत्याख्यान ३ बाध-धा, विन, प्रतिवध ४ वरण, वृत्ति (स्त्री) ।
 —रोक, स स्त्री, दे 'रोक' (२३) ।
 दे—रोक, कि वि, निर्नराव, निर्विज, निर्वाध (सब अर्थ) ।
 रोक', स पुं (स) प्रस्तुतकैर्न्यवहा १ टक, नाक, मुद्रा, दे 'नक' ३ दीप्ति (स्त्री) ।
 रोकड, स स्त्री (स रोक) दे 'रोक' (२) २ मूलद्रव्य, दे 'पूजी' ।
 —वही, स स्त्री (हि रोकड) मूलद्रव्य आयव्य, ऐतनप्रक्रिया ।
 रोकडिया, स पु (हि रोक+प्रिया), रोकव्यमूलद्रव्य, ऐतनप्रक्रिया ।
 रोकता, कि स, (हि रोक) अवनिप्रतिम, म् (र व अ), अवयव (प्रे), प्रतिवध (अ व अ), वि, सन् (अ व स) ।

० निविनि वृ (प्रे), निप्रतिविध् (म्वा प से), निवृत्त (प्रे) ३ वशीकृत, निवृत्त (अ प मे), निवृत्त (म्वा प अ) ४ प्रतिवृत्ति (दि आ अ), शत्रुमेव्य प्रतिवधप्रतिवध । स पु, अवनिप्रतिवध, रोष रोषन, निवारण, निवर्तन, निग्रह-इर्ण, प्रतिवोधन, निप्रति, वेध रोषनम् ।
 रोकनेवला, स पु, अवनि, रोषक, निवारण, प्रतिवोधक, प्रतिवोध ३ ।
 रोक हुआ, वि, अवनि, रुद्ध, निवारित, निवृत्त ३ ।
 रोग, म पु (स) रू (स्त्री), रक्षा, व्याधि, गद, प्र(आ)म, कान्य, उपनय, मृक्षुमृत्यु ।
 —कारक, वि (स) व्याधिजनक ।
 —ग्रस्त, वि (म) रोगाग्रस्त, दे 'रोगी' ।
 —नाशक, वि (रु) रोगनाश, हारिन्-हर, स्वस्थकर ।
 —निदान, स पु (स व) रोग, निदान-निरूपणम् ।
 —राज, म पु (स) राज, यस्मिन् (पु) यज्ञ ।
 —रक्षण, स पु (म न) व्याधिद्वि २ रोग निदानम् ।
 —रुग्ना, कि. अ., रोगे ग्रन्थनसुखम् (वर्न) ।
 रोगन, स पु (का रोगन) रोग, दे 'रोग' २ रुक्म, रग, रोग, वर्ण-मृच्छ-रिका ।
 —करना, कि. स., रज् (प्रे), रज् (पु), १ रुक्ममेव लिपि (तु प अ) ।
 —जर्न, स पु (का) घृत्, अन्त्यम् ।
 रोगी, वि (स) व्याधि, रोग, रोग-युक्त पेशिन्-आर्त्त-अज्ञान, अनुत्तर, अन्धा, अन्य मित, नामर, अप्रयाविन्, मर, विवृत्त । [रोगिणी (स्त्री) = रुग्णा, व्याधिता] ।
 रोकक, वि (स) अन्नादक, मनोरञ्जक २ दे 'रुचिकर' (२) ।
 रोचन, वि (स) रोचक, रुचिकर २ दीप्ति मर, छविमर २ हव, प्रिय ।
 रोचना, म स्त्री (स) रोचन, रक्तमन २ रोगेचना ३ वलनरी, सुन्दरी ४ दे 'वदन्-वन' ।
 रोन, म पु (पा) दिन, दिवन्, अहन् (न) ।
 जि वि, दिने दिने, प्रति अनु-दिन-अहन् ।

—वरोज, } कि वि, दे, 'रोज' कि वि ।
—मरो, }
—रोज, }

रोजगार, स पु (का) आ-उप, जीविका, वृत्ति (स्त्री), व्यवसाय २ वाणिज्य, वृत्तिकर्मन् (न) ।

रोजनामचा, स पु (का) दे 'ढायरी' २ दैनिकायव्ययपत्रिका, दैनिकलेख ।

रोझा, स पु (का) जठ, उपवास, उपोषण वित्तम् (इस्लाम) ।

रोझाना, कि वि (का) प्रतिदिन २ सवदा ।
रोझी, स स्त्री (का) दैनिकात्र, प्रात्याह्निक भोजन २ आ-उप, जीविका, व्यवसाय ।

रोझीना, वि (का) प्रात्याह्निक, दैनिक । स पु, प्रात्याह्निक-दैनिक, वृत्ति भूति (स्त्री) -वैतनम् ।

रोड, स पु (हिं रोटी) बृहत्-स्थूल, रोडि(ट)का २ मिष्टस्थूलरोटिका ।

रोटी, सं स्त्री (स रोटिका) रोटका २ भोजन, सिकात्रम् ।

—कपडा, मु, भोजन-वस्त्र, निर्वाहसामग्री २ प्रासाध्यादनमात्रम् ।

—दाल, मु, सामान्य-साधारण, भोजन, अग्रीहकमात्रम् ।

—दाल चल्ना, मु, जीवन निर्बह, सामान्य निर्वाह भू ।

बिस्ती के यहाँ—तोड़ना, मु, पराग्रेन जीव (स्वा प से), पराग्रेत मुन् (र आ अ) ।

रोड़ा, स पु (स छोड़-ह) रोहक, रोह पपाण प्रस्तर इका, खण्ड शकल ।

—अटकाना, या डालना, मु, बाध् (स्वा अ से), अव-उप विप्रति स, रध् (र प अ), प्रतिबध् (अ प अ) ।

रोदन, स पु (सं न) दे 'रुदन' ।

रोधन, सं पु (॥) अवरोध दे 'रोक' २ दमनम् ।

रोना, कि अ (स रोदन) रुद (अ प से), अश्रुणि पद (त्रे) वयुच् (उ प अ), आ-जन् (स्वा प से) रुन् (स्वा प अ), रुन् (स्वा प से) २ दे 'रुटना' २ अनुत् (दि आ अ), अनुत् (अ आ ॥) पथापण कृ । नि स, अनुत्-रिन्

(स्वा प से), परिदेव् (स्वा आ से) । स पु, दे 'रुदन' ।

रोनी, वि स्त्री (हिं रोना) विपण्णा, शोकमय ।
रोनैवाला, म पु, रोदन, अश्रुमोचक, आकदक २ अनुरोचक, परिदेवक, विलापक ।

रोपना, कि स (स रोपण) दे 'बोना' ।
रोष, स पु (अ रुअर) आतक, तेजस् (न), प्रताप, प्रभाव, प्रावत्यम् ।

—दाब, सं पुं (अ) दे 'रोष' ।

—दार, वि (अ + का) तेजस्विन्, प्रतापिन्, प्रभावशालिन् ।

—जमाना, मु, स्वप्रभाव न् (त्रे), स्वगौरव प्रतिष्ठा (त्रे), मित्रतेजसा अभिभू ।

—जें आना, मु, परसेजसा अभिभू (कर्म), परप्रतापेन नय (स्वा प अ) ।

रोबीला, (अ) दे 'रोबदार' ।

रोमय, स पु (सं) उद्योय चर्वण, दे, 'जुगाली' ।

रोम, स पु [स रोमन् (न)] दे 'रौंगटा' ।

—रूप, स पु (स पु न) रोम, विवर छिद्र, रोम, दार-यत् ।

—राजी, ॥ स्त्री (स) रो(ली)मलता, रोमा स्त्री, रोमावलीलि (स्त्री) ।

—हर्ष, स पु (सं) रोमाच ।

—हर्षण, स पु (स न) रोम, उद्गम उद्भेद हर्ष । वि (स) रोमाचकर, भीषण ।

—रोम मे, मु, सर्वदेहे, सपूर्णशरीरे ।

—रोम से, मु, सर्वांगना, सभिनिवेशम् ।

रोम, सं पुं (सं रोमक) रोम, पचन-नगर, रोमन् ।

—वासी, स पु (सं सिन) रोमका (प्राय बहु) ।

रोमन, स ॥ (अ) रोम, निवासिन्-वाल्गव्य । वि रोम, सम्प्रतिन्, विषयक ।

—वैयलिक, स पु, सिरतमग्नशायविशेष ।

रोमाच, सं पुं (स) रोम, उद्गम-उद्भेद-विचार विविधा हर्ष हर्षण, पुलक, बंटक ज्ञ, उद्घर्षण, उद्गमन, उत्खण्वन् ।

रोमांचित, वि (सं) दृष्टरो(ली)मन्, पुष्कित, बंटीन, सपुलक ।

—रुना, कि स, बंटवयति पुष्कयति-रोमा चयति (ना था) ।

—होना, वि अ, पुष्कित-वटित (वि) जन् (दि आ से) ।

रोया, स पु, दे 'रोंया' तथा 'रोम' (२) ।
 रोल्, सं पु (अ) (१२) समीकरण-पिंडी
 करण, यत्र ३ दे 'बेलना' ।
 रोला, स पु (सं रावण) कोलाहल, कलकल
 तुमुल, महा, शब्द स्वन ध्वन-शेष-रव
 राव, निनाद, निस्वन, लकोश, उद्धोष
 २ तुमुलपुद्गल ।
 —डालना या मचाना, कि स, कलकल-
 कोलाहल क, रि, रु (अ प ज), चत्कुश
 (भ्वा प ज) ।
 रोला, सं पु (स) चतुर्विंशतिमात्रिक
 छन्दस् (न) ।
 रोली, स स्त्री (सं रोचनी) चूर्णहरिद्रा
 निमित्त तिलकोषयोगि रक्तचूर्णम् ।
 रोशन, वि (फा) प्रकाशित, प्रदीप्त २ भास्वर,
 प्रकाशमान ३ प्र-वि, ख्यात ४ प्रकट, व्यक्त ।
 —दान, सं पु (फा) गवाक्ष-छदिवातायनम् ।
 —दिमाग, वि, प्राज्ञ, बुद्धिमत् ।
 रोशनाई, सं स्त्री (फा) दे 'मली' २
 प्रकाश ।
 रोशनी, स स्त्री (फा) प्रकाश, आलोक
 २ दीप ३ दीपमात्रिका ४ शानालोक ।
 रोप, स पु (स) कोष, क्रोध, मन्दु ।
 रोहिणी, स स्त्री (स) धेनु (स्त्री), गौ
 (स्त्री) २ तटिष्ठ (स्त्री), चपला ३ नक्षत्र
 विशेष ४ बलदेवजननी ।

—पति, स पु (स) चद्र २ वसुदेव ।
 रोहित, वि (स) रक्त, लोहित । सं पु,
 रधिर, रक्त २ रक्त-वर्ण रग (३४) शृग
 मीन, भेद ५ हरिश्चन्द्रपुत्र ।
 रोह, स स्त्री (स रोहिष) (१-२) मीन
 शृग, भेद ।
 रौंद(घ)ना, कि स (स मदन) पादाम्बा
 मृद (म् प से) शुद (र प अ) ।
 रौ, स स्त्री (फा) धारा, प्रवाह, मद्राक,
 खोतस् (न) ।
 रौगन, स पु (फा) दे 'रौगन' ।
 रौझा, स पु (अ) समाधि, चैत्य २
 उद्यानम् ।
 रौद्र, वि (सं) रुद्र, विषयक-संबन्धित २ भीम,
 मोक्ष ३ चक्र, सरम्भ, कोपान्वित । स पु
 (स) रुद्रोपसक्त २ कोप ३ रसभेद
 (काव्य) ४ यम ।
 रौनक, स स्त्री (अ) काति-दीप्ति-भुति
 (स्त्री) २ श्री (स्त्री), शोभा, छटा
 ३ जन-ओष-समुदाय ।
 रौप्य, स पु (स न) रुप्य, रजतम् । वि
 (सं) राजत, रजतमय, रजतोपम ।
 रौरव, वि (स) भीम, घोर २ घूर्त, कापटिक
 ३ रुमन्वन्धित । स पु (स) नरकविशेष ।
 रौस्त्रा, सं पु, दे 'रौला' ।
 रौशन, वि, दे 'रौशन' ।

ल

ल, देवनागरीवर्णमालाया अष्टविंशो व्यन्जनवर्ण,
 लकार ।
 लक, स स्त्री (स लका, दे) ।
 —नाथ-नाथक पति, सं पु (स) रावण,
 दशानन ।
 लका, सं स्त्री (सं) रघुपुरी, रावणराज
 धानी २ भारतद-निगवतिद्वीपविशेष ।
 —पति, स पु (स) दे 'रावण' ।
 लग, स स्त्री, दे 'लग' ।
 लग, स पु (स) दे 'लगापन' ।
 लैगादा, वि (स रग) पशु (गू स्त्री),
 यत्र, शोण, खोड-रु, विचलगति २ एकपाद
 शीन (मेष आदि) । स पु, उत्तमाग्रभेद ।
 लैगादाना, कि अ (हिं लगदा) खज्-खोल्

खोर-खोड-ल्यू (भ्वा प से), सन्ग चल्
 (भ्वा प से) । स पु, खजन, खोडन-रग
 लनं, लगनं, लग विकल-गति (स्त्री) ।
 लगदापन, स पु (हिं लगदा) खजला,
 पशुना, खोड(रुल)ना, लग, विकलगति
 (स्त्री) ।
 लगर, सं पु (फा) लागल, पोतरतमन
 २ महानम, पाकशाला ३ अनाथ-दरिद्र,
 मोहन ४ 'लगेष्ट' ५ लोहमयीस्थूल
 मृसला ६ लवक, लोहक ७ दुष्टधेनूनां
 गललगुड । वि, भारवत्, गुरु २ खल, दुष्ट ।
 —घ्राणा, सं पु (फा) श्रेष्ठ, अनाथभोजन
 शाला ।
 —गाह, स पु (फा) नौनाशय, नौनाश्रय ।

—करना, मु, कुल्लिन् चेट (म्वा आ से),
बुचैष्टा कु।

लगूड, म पु (स लागूडिन्) वषि, मकट,
वानर २ वषि-वानर, पुच्छ, लगू(गु)ल
३ श्वेतलोमा कृष्णमुखो वानरभेद।

—फल्, स पु (हि + स) नारिकेल,
सागलिन्।

लगूल, स पु (स न) लगूल, पुच्छ, दे
पुच्छ।

लंगोट टा, स पु (म लिंग + हि ओट)
पुनो पट्टी, चौरीन लिंगावरणम्।

—बद्ध, वि, मल्लचारिन्, ऊर्ध्वदेवम्।

लंगोण्या याह, स पु (हि का) सह पाशु
नीतिन् गौराव-बाल्य-भिन्न सति (पु)।

—म मन्त्र, मु, वारिद्वयेऽपि प्रसन्न, अकिंचन
त्वेऽपि सत्पुष्ट।

लंगोटी, स स्त्री (हि लंगोट) दे 'कठनी'
२ ह्यु पुटी-चौरीन चरित्रा।

लघन, स पु (स न) उपवास, उपोषण
पितृ अनाहार, मत २ दे 'लौघना' स पु
प्लवन ३ अति-क्रमण-क्रम नियम मग-उत्स
घन ४ घोटकानां अनित्वरितगति (स्त्री)।

लघना, कि स (स लघन) दे 'लौघना'।

लघ, म पु (अ) मध्याह्न-आष्वत्थिन,
भोजनम्।

लठ, वि (हि लट्ठ) पठ, मूर्ख २ भूष्ट।

लटूरा, वि (देश) अलागु(गु)ल, त्रिप्रपुच्छ,
लूमहीन (जगादि) २ परित्यक्त, निराश्रय।

लप, स पु (अ लैव) दे 'लालटेन'।

लपट, वि (सं) लिपट, अभिक्क, कामिन्,
कामुक, विषय-काम, आमक, रतेच्छु, स्मरार्थ,
व्यभिचारिन्, दुराचारिन्।

लपटना, सं स्त्री (मं, व्यभिचारी, विषया
सक्ति (स्त्री), कामुकता, अभिरता, लापत्य,
दुराचार।

लव, रु पु (सं) लव (= लघूद)। वि
(सं) दे 'लवा'।

—कर्ण, म पु (सं) अज २ तव ३ सर
४ दान ५ राक्षस ६ श्वेन। वि (सं)
दीनश्रवण।

—श्रीय, म पु (म) उष्ट्र, ममेलक।

लवणदग, वि (म लव + दग + र्ग)।
लवण, अलुव, अलुचिन्।

लवा, वि (सं लव) दीर्घ, दीर्घ आकार परि
माण, वायत, आवामवत् २ उच्च, प्रागु, तुग,
उच्छिन्न ३ विशाल, महत्, बहु, अधिक।

—करना, कि स, दीर्घ-लवो-आयनी दितनी
कु आयम् (म्वा उ अ), विस्तृ प्रसृ (प्रे)
प्र-वि-नन् (उ उ से)। मु, प्रस्था (मे)
२ भूमी अवपत् (प्रे)।

—चौडा, वि, विशाल, विपुल, महत्, बृहत्,
लंबोद, आयतविस्तृत।

—डोना, कि अ, दीर्घभू, विस्तृ प्रतन
आयम् (कर्म)। मु, प्रस्था (म्वा आ अ),
प्रथा (अ प अ)।

लवाई, सं स्त्री (हि लवा) दीर्घान्त्व,
दीर्घ्यै, द्राघिमन् (पु) आयाम, आय
मन, आयनि (स्त्री) लवना, आनाह
२ उच्यता।

—चौडाई, स स्त्री, आनाहपरि(री)णाष्टौ,
दीर्घत्वयुक्ते आयामविलारी (सक दि)
२ मन, प्रपरि-माणम्।

लवान, स स्त्री (हि लवा) दे 'लवाई'।

लवो, वि स्त्री (हि लवा) दीर्घा, आयता,
आयामवती।

—सानना, मु, निधिन गी (अ प से)।

—सास भरना, मु, दीर्घ नि शस् (अ प से)।

लवोतरा, वि (हि लवा) दीर्घचतुरस्र
अद, आकार-आकृति।

लवोदर, वि (सं) लुरिक भ-ल-त। स पु
(सं) गणेश २ भौदरिक, परमत्।

लकडवग्या, सं पु (हि लकड + वाय) ईदा
वृक, *लुगुदभाष।

लकडफोद, स पु (हि लकड + फोदना)
दावाण्ट, काष्ठकूट।

लकडहारा, म पु (हि लकड + हारा)
वाष्पक, वाष्पिद, *लुगुदहार।

लकडा, स पु (सं लकुट) लगुड-र-ल,
लुगुदहृद, नाग-दाल (न)।

लकड़ी, सं स्त्री (हि लकडा) वाष्ट, दाम
(न) २ हवन, ण्व, दट, पट्टि (स्त्री),
वेव ३ दे 'गतरा'।

—देना, मु, अत्येष्टि क, सर्व दत् (म्वा प अ)।

लकव, सं पु (अ) उपधि, उपनामन् (न)।

लकलक, सं पु (अ) लवमीवा नन्नागभेद,
*लवण्व।

लक्ष्मी, मं पु (अ) आदत्तम् ।

लक्ष्मी, स स्त्री (स लेखा) रेखा-स्ता, दण्ड का
रूपिणी (स्त्री) २ पक्ति-श्रेणि आलि (स्त्री) ।

—का फकीर, मु, विवेकशून्य, अध, अनुया
मिन्-अनुयायिन् अनुवर्तिन्, परपरानुमारिन् ।

—र चलना, } मु, अधवन् अनुगम् (स्वा
—पोटना, } प अ)-अनुया (अ प अ) ।

लक्ष्म, म पु (स) लक्ष्म, यष्टि (स्त्री),
दण्ड ।

लक्ष्म, स पुं, दे 'लक्ष्म' ।

लक्ष्मी, मं पुं (अ) व्यननपुच्छ पारावत,
ज्योतिर्भेद ।

लक्ष्मी, रि तथा म पु (स) दे 'लक्ष्म' ।

लक्ष्मक, वि (म) प्रकटयितु, प्रकाशक । म
प (म) लक्ष्यार्थप्रकाशक शब्द । (म
न) दे 'लक्ष्म' ।

लक्ष्मण, स पु (स न) अक, विह, निग,
लान्, व्यजन, अभिज्ञानम् । २ परिभाषा,
परिच्छेद, निर्देश ३ विशिष्टनिग, विशेष
४ चरित, आचार ।

लक्ष्मणा, सं स्त्री (म) शब्दशक्तिभेद, शब्द
संबन्ध (मा) २ सारमी ३ हसी ।

लक्षित, वि (स) निर्दिष्ट, क्षापित २ दृष्ट,
धीक्षित ३ अनुमिन, तर्किन ४ चिह्नित,
अङ्गित ।

लक्ष्मण, म पु (मं) रामानुज, सीमित्रि
२ दुर्वापनपुत्रविशेष ३ सारस ।

लक्ष्मी, सं स्त्री (स) श्री, वमला, पद्मा,
पद्मान्या, हरि, प्रिया-वसुधा, इन्दिरा, मा,
रमा, क्षीराब्धितनया, भार्गवी, श्रीरामाष्ट (स्त्री)
२ धन, संपद (स्त्री) ३ छवि (स्त्री),
शोभा ४ दुर्गा ५ मीना ६ वीरनारी
७ गृहस्वामिनी ।

—नारायण, म पु (स) लक्ष्मीजनादन
शालग्रामभेद ।

—पति, स पुं (सं) विष्णु २ श्रीकृष्ण
३ रूप ।

लक्ष्मीश, स पु (म) विष्णु २ आज्ञावृक्ष
३ धनाढ्य ।

लक्ष्म्य, म पुं (सं न) शरव्य, लभ, वेध्य,
वेध, प्रतिकाय २ निदा-आशेष-उपालभ,
विषय ३ आशय, उद्देश, अमि, इष्ट,

मनोरथ, इष्टित ४ लक्ष्यार्थ । वि, दर्शनीय,
अवलोकनीय ।

—वेधी, म पु (सं धिन्) वेध्यवेधक ।

लक्ष्मपती, म पु (स लक्ष्मपति) लक्ष्म, इष्ट-
अधीश २ धनिक धनाढ्य ।

लक्ष्मी, म पु (हिं लाल) लक्ष्मी-जतु, वार
२ हिंदूप्रजाभिभेद ३ कुक्कुभ, लेपक लेपिन् ।

लक्ष्म, कि रि (स लक्ष्म) दे, 'तक',
२ समीपदे । अग्य, सह, सार्द्ध २ दे 'लक्ष्म' ।

—भग, वि वि प्राय, प्रायश, प्रायेण, प्राय,
नल्प, उप, आसन्न- ।

लक्ष्मन्, म स्त्री (हिं लाना) आत्मग, प्रीति
, स्त्री), आप्र सक्ति (स्त्री), अभिनिवेश,
दे 'धुन' २ प्रेमन् (पु न), अनुराग,
स्नेह ३ दे 'लक्ष्मन्' म पु ।

लक्ष्मन्, म पु (स लक्ष्मन्) राज्ञीनामुदय
(ज्यो) २ (विवाहस्य) शुभमुहूर्त-तन् ।

—कुल्लो, म स्त्री (सं लक्ष्मकुल्लो)
जमकुल्लो ।

—लक्ष्मन्, कि अ, अनुरज् (कर्म), स्निह
(दि प मे) ।

लक्ष्मन्, कि अ (स लक्ष्मन्) स, पुज् (कर्म),
लक्ष्म (स्वा प स), सहन्-मथा (कर्म),
संश्लेष (दि प अ) संपृच्
मसृ (कर्म) २ आरोप-मूल् (कर्म)
३ निवेश-मथाप् (कर्म) ४ आहन्-मथा
प्रह-मथाप् (कर्म) ५ लक्ष्म-मथाम् परामृश
(कर्म) ६ विन्यस-मथाप्-मथाप् (कर्म)
७ दृश-लभ-प्रती (कर्म), प्रति, भा (अ
प अ) ८ संवन्ध (कर्म), सम्बन्ध शास्त्रि
वृत् (भ्वा आ से) ९ स्वाद-रस भा
१० अनुरज् (कर्म), स्निह (दि प मे)
११ कर शुभ-नियोज् (कर्म) १२ मूल्य
अपेक्ष (भ्वा आ से), मूल्यकेन लभ (कर्म)
१३ व्याप् (तु आ अ), मग्न-व्याप् (वि)
वृत् १४ पण् (कर्म) १५ पूतीभू,
तृ (दि प से), पूय (भ्वा आ से) ।
म प तथा भाव, लक्ष्मन्, स, योग, सधान,
म श्लेष श्लेषण, सपक, संसृष्टि (स्त्री),
आरोपण, मूलन, निवेश, स्थापन, आघात,
प्रहार, स्पर्श, ममालम्भ, वि-यान, मूह,
व्यवस्थिति, प्रतीति (स्त्री), भान, व्याप्ति
आत्मिकि (स्त्री) १६ पूतीभाव, पूयन १ ।

लगा हुआ, वि, स, युक्त, लीन लग्न सहन,
सष्ट, ससृष्ट, आरोपित निवेशित स्पष्ट,
विन्यस्त, अनरक्त, व्याप्त भग्न इ ।

लगवाना, कि प्रे, व 'लगाना' के प्रे रूप ।

लगातार, कि वि (हि लगाना + तार)
सगत, अविच्छिन्न, दे 'निरतर' ।

लगान, स पु (हि लगाना) भूभूमि, कर,
शत्यशुल, रादस्वम् ।

लगाना, कि स, व 'लगना' के स रूप ।

लगाम, स स्त्री (का) कविक-का, खलीन
न, कवि(वी)य, कवी, पचागी २ वल्गा, रविम,
अवक्षेपणी, कुशा ।

—लवाना या देना, मु, सयम् (स्वा प अ),
निप्रह (क प से), वशीकृत, निह (प्रे) ।

लगावली, सं स्त्री (हि लगाना) अनुराग,
प्रेमन् (पु न) २ संवध, सपक, ससर्ग,
सगति (स्त्री) ।

लगाव, स पु (हि लगाना) दे 'लगावली'
लगावट म स्त्री } १२ ।

लगुह-र-ल, स पु (स) दह पटि (स्त्री)
२ लोहमयोष्मभेद ।

लगाव, स पु (सं लग्न >) लङ्, वेणु-वश
२ नौदह इ अक्षणी ।

लग्नी, सं स्त्री (हि लग्ना) प्रीतह
२४ दे 'लग्ना' १३ ।

लग्नी, स (पु स न) 'लग्नी' (१२) ।

लग्नी, वि (स) सयुक्त, सदृष्ट, मल्लित,
सदह २ आसक्त, मग्न, व्याप्त, पर, परावण,
निष्ठ इ लज्जित ।

लग्नु, वि (सं) अल्प ईषद, भार, सुमुख, राक्ष
२ अणु, महत्त्व-वृद्धि, शून्य, क्षुद्र, तनु भव्य,
भाकार-आकृतिकार्य इ निस्तृप्त, निस्मार
४ अल्प, स्तोक (मात्रा) ५. अथम, नीच
६ दुर्बल, निबल इ वनीयम, वनीयस ।

—लेना, वि (सं-नस) तुच्छ, क्षुद्रमति,
क्षुद्राद्य ।

—लौका, सं स्त्री (सं) मृगोष्मण, मेहनम् ।

लघुता, म स्त्री (स) लघुत्व, लघुत्व, लघिमन्
(पु), अल्पभारवत्त्व २ अणुता, तनुता,
क्षुद्रता इ अथमता ४ कनीयस्त्व ५ अल्पता ।

लचक, म स्त्री (हि लचकना) शिवनिम्बा
पर्वता-त्वं, नम्यता, कुञ्जवना २ द 'लच
रन्' सं पु ।

—दार, वि (हि + का) नम्य कुचनीय, नमन
कुचन शील स्थितिस्थापक, प्रवृत्तिप्रापक ।

लचकना, कि अ (हि लच अनु) अव,
नम् (स्वा प अ), वकीभू । स पु तथा
भाव, अव नमन नति नाम, वकीभाव ।

लचकाना, कि स, व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचकीला, } वि (हि लचक) दे 'लचकदार' ।

लचलचा, } वि (हि लचक) दे 'लचकदार' ।

लचना, कि अ, दे 'लचकना' ।

लचाना, कि स व 'लचकना' के प्रे रूप ।

लचीला, वि, दे 'लचकदार' ।

लच्छ, स पु (स लच्छु >) सूत्रस्तदक,

गुणगुच्छ, तनुपची २ सूत्राकार, पट्टिका

कारा वा तनुदीर्घछटा इ सूत्रमततुरूप

पाणिपादभूषणभेद ४ मिष्टान्नभेद ।

लच्छेदार वि (हि + का) गुच्छ-सूत्र पट्टिका,

आकार २ अग्निमधुर, सुशाम्य, सुवश्व ।

लज्जाना, कि अ, दे 'लज्जित स्त्रीना' ।

लज्जालू, स पु, दे 'लज्जवती' ।

लज्जीज, वि (अ) सुत्पाद, सुरस, स्वादिष्ट
(भक्ष्य) ।

लजीला, वि (हि लग्ना) दे 'लज्जाशील' ।

लज्जल, म स्त्री (अ) आ स्वाइ, रम ।

—दार, वि (अ + का) दे 'लज्जीर' ।

लज्जा, स स्त्री (सं प्रोह-ल हा (स्त्री))

प्रपा, मरार्थ, शान्तिमता, लज्जा २ मान,

प्रतिष्ठा ।

—कर, वि (स) प्रपा-लज्जा प्रद-जनक

भावह, गर्हित ।

—शील, वि (सं) हीनश्च शालीन, लज्जालु,

सलज्ज, शिनीन, लज्जावश लज्जान्वित ।

—हीन, वि (सं) निर्लज्ज, निमोड, धृष्ट,

निस्त्व, अशुभ, लज्जा प्रपा, शून्य ।

लज्जालु, वि (सं) दे 'लज्जवती' २ दे

'लज्जाशील' ।

लज्जित, वि (सं) हीन, हीन, निर्लज्ज, प्रविन,

प्रपा-लज्जा, जन्विन ।

—करमा, कि स, लज्जवत् प्रो-ही (प्रे) ।

—होना, वि अ, लज्ज (तु आ से), प्र

(स्वा आ से), प्रोड (नि प से), स्त्री

(तु प अ) ।

लज्ज, सं स्त्री (सं लज्जा) लज्ज, चूर्णगुण,

कुरल २ केशपाश, कनक ३ नग, सद्य,
सखिप्रेक्षा ।

—रानी, म प, नदिन, नमि (निपु) ।

लट, २ म स्त्री (हि लट्) चाला, अग्निद्विगा ।

लट्, स स्त्री (हि लट्कना) दे लट्कना

स पु । २ कुचनीयता, नम्यता ३ आवेश,

गवेग ४ शत्रु, विभ्रम, मनोहरी (रा)

आभगि (स्त्री) ।

—गल, स स्त्री मन्त्रिभ्रमगति (स्त्री) ।

लट्कन, स पु (हि लट्कना) दे लट्कना

म पु २ हाव, विभ्रम ३ प्रालव

लोच ४ नामिनाभूषणभेद ॥ उणीपलविनो

रानगुच्छ ।

लट्कना, कि अ (स लट्कन) १ प्रप्रत्य

(न्या आ मे), उदबध (कम) २ शोला

धन (ना था) । ३ म्र (भ्या प मे)

३ विलंब क, विरागिते (ना था),

विलय (भ्या आ मे) । म पु तथा

भार, अवप्र, लम्ब लम्बन उदबधन

२ प्रैक्षण, दोहन ३ विस्मयन, बालक्षेप ।

लट्का, म पु (हि लट्क) गति (स्त्री),

चार २ हावभावो, विभ्रम ३ सविलास

मापन ४ वागाधार (= सत्रिया क्लाम)

५ सक्षिप्त, योग-उपचार-औषध ६ चण्ड

गीत ७ माया वातु, यष्टि (स्त्री) ८ अभि

चारमन ।

लट्काना, कि स, व लट्कना' के प्रे रूप ।

लट्काव, स पु, दे 'लट्कना' स पु ।

लट्कलीला, वि (हि लटक) दे 'लट्कदार' ।

लट्कपट्टा, वि (हि लट्कपट्टा) प्रमत्त

विचल्य (शान्त), अधिरागिक २ शिथिल,

अपरिग्रह, असन्वयस्त, अवशस्त ३ अस्पष्ट,

शुच्य (शुच्य) ४ कमदीन, अधमन

५ मित्र, शान, ग्लान, अशक्त ६ उदपेय,

गाढ-धन ७ वलियुत (वलादि) ।

लट्कपट्टाना, कि अ (स लट्कपट्ट) प्रसक्त

(भ्या प मे) २ पतल्य चप (भ्या प से)

३ उपन्यता गन् ४ वेप (भ्या आ मे)

५ अनुरत (कम) । स पु, प्रमत्तन, दूषि

तानि (स्त्री), कपन, अनुराग ।

लट्, वि (म लट्) लट् २ नीय ३ तुच्छ

४ पति ५ दुष्ट ।

लट्पट्टी, म स्त्री (हि लट्पट्टा) दे 'लट्

पट्टा' स पु २ बलह, वलि ।

लट्टी, म स्त्री (हि लट्ट) १२ अमद

अमत्य, बार्ता ३ भिक्षा(धु)को ४ वेरया

५ पनीजि (स्त्री) ।

लट्टूरी, म स्त्री (हि लट्ट) दे 'लट्ट' (१) ।

—उत्तरवाना, चूडावरणसम्भार क (प्रे) ।

लट्टोरा, स पु (लट्ट) वलिग, धूम्राट्ट,

रगभेद ।

लट्टू, स पु (म लट्टन) १ अमरक क,

२ लटक लज्जनीयकम् ।

—होना मु अत्यधिक स्निह (दि प से),

गाढ अनुरत (कर्म) ।

लट्ट, स पु [म लट्टयष्टि (स्त्री)] स्थूल

बृहद्-दट-यष्टि लट्ट, लट्ट ।

—बाज, वि (हि + का) यष्टियोध धिन्,

दडपर, दडिक ।

—बाजी, म स्त्री (हि + का) दंडा, डि

(अभ्य), यष्टियुद्ध ।

—मार, वि (हि) दे 'लट्टबाज' २ कड,

कठोर (वचन) ।

—मारना, कि स, दडेन-यष्टया प्रह (भ्या

प अ) । मु, पक्षपत्र (अ उ से) ।

पीवे—लिये फिरना, मु., सतत विरुध (व

उ अ) २ प्रतिकूल आचर (भ्या प से) ।

लट्टा, स पु (हि लट्ट) दीर्घकाष्ठ २ तुला,

छटि, स्मृणा ३ साक्षेपचगमिती मृमानदद ।

लट्टम—, स पु, दे 'लट्टबाजी' ।

लट्टा, स पु (अ लट्टकलाय) १ लंबपट ।

लट, स पु, दे 'लट्ट' ।

लटालठी, स स्त्री, दे 'लट्टबाजी' ।

लटत, स पु (हि लट) दे 'लट्टबाज' ।

लटत, स स्त्री (हि लट्कना) दे 'लट्टाई' ।

लट, स स्त्री [ल यष्टि (स्त्री)] आवली

लि (स्त्री), सरल, मालाहार २ रज्जो

पटक-मुद्रम, नातु ३ मुखल लला ४ अंघ्रि

पक्ति (स्त्री) ।

लट्कपन, म पु (हि लट्कना) बाल्य,

सौमार २ चापल्य, चाचल्यम् ।

लट्कलुद्धि, स स्त्री (हि + ल), बालुद्धि

(स्त्री), अपक्वमति (स्त्री) ।

लट्का, स पु (हि लाड) बालक, कुमार

२ पुत्र ।

—वाला, स पु, सति (स्त्री), मना २ परिवार, वृद्धयम् ।

—लङ्की, स स्त्री, सति (स्त्री) ।

लङ्केवाला, सु, (विवाहे) वरस्य जनक सरक्षयो वा ।

लङ्के वा खेल, सु, मुकरकमन् (न), सुमाध्यकार्यम् ।

लङ्की, स स्त्री (हि लङ्का) बालिका, कुमारी २ पुत्री ।

—वाला, सु (विवाहे) वध्वा जनक सरक्षयो वा ।

लङ्कौरी, वि स्त्री (हि लङ्का) बालोत्सगा, शिशुमयी ।

लङ्कवङ्गाना, कि अ (स लङ्+हि रङ्ग) प्रस्तल (भ्वा प से), धूर्ण (भ्वा आ से) २ गद्गदवाचा भाष (भ्वा आ से), सगद्गदम् (अ उ से) स्वल् । स पु, प्रस्तलन, धूर्णन २ सगद्गद भाषण, स्तलनम् ।

लङ्गना, कि अ (स रणन >) विप्रद (क प से) युध (दि आ अ), युद्ध-मग्राम सगर क २ विप्रद (भ्वा आ से) विप्र रूप (भ्वा प से), बलहायते (ना धा) ३ दण (भ्वा प अ) ४ सवट (भ्वा आ से), सशूद (क् प से) ५ भल्लयुद्ध क, हरताडस्ति मुष्टीमुष्टि युध् । स पु तथा भाव, विप्रद, युद्ध, विवाद, विप्रलाप, कलह, दशनं, सपटनं, समद, भल्लयुद्धम् ।

लङ्कवङ्गाना, कि अ, दे 'लङ्कवङ्गाना' ।

लङ्कवावरा, वि (हि लङ्का+वावरा) मूर्ख, अह, बालमुदि २ अशिष्ट, घामाण ।

लङ्काई, स स्त्री (हि लङ्का) समास, दे 'लुद' २ मल्ल-बाहु, युद्ध ३ बालयुद्ध, कलह ४ वाद, वादप्रतिवाद ५ सपट, समापात ६ विरोध, वैरम् ।

—करना, कि स, दे 'लङ्कना' ।

—का मैदान, रणक्षेत्र, युद्धभूमि (स्त्री) ।

—मोल लेना, सु, कामन बल्हे प्रकृष्ट (भ्वा आ से), युध (सप्रत, युयुत्सवे) ।

लङ्काका, स पु (हि लङ्का) योध, मट, योद्धा । वि, बल्ल-बलि, विय, युयुत्सु, विदरिन् ।

लङ्कावृ, वि (हि लङ्का) सायमिन् (स्त्री स्त्री), दीड (स्त्री स्त्री) ।

लङ्गाना, कि न, व 'लङ्गा' के प्रे रूप ।

लङ्गी, स स्त्री, दे 'लङ्गा' ।

लङ्गीला, वि, दे 'लङ्गना' ।

लङ्गुड, म पु (स लङ्गु) लङ्गुड, मोदक ।

—खिलाना, सु, निमत् (जु आ स) ।

—मिलना, सु, मफल अभिगम् ।

मन के—खाना, सु, मनोरान्ध्र विनुम् (प्रे) ।

लङ्गा, स पु [हि लुङ्(लङ्क)ना]

लङ्गिया, म स्त्री] बल्लदशकदी ।

लुत्त, स स्त्री (स रुति >) दुः-कृति (स्त्री) शीर्ष, रुदम्याम, दुर्व्यसन, दुःप्रकृति (स्त्री), दे 'आदत' (डुरी) ।

लुत्तसौररा, वि (हि लुत्त+शा सौर) पाद प्रहारसह, अधापनसह, कुक्किन् २ नाच, सुद । स पु, दाम, किन्नर २ देहन्, अव प्रहणी ३ दे 'पाषडाना' [लुत्तसौरिन (स्त्री)] ।

लुत्तपत, वि, दे 'लुत्तपथ' ।

लुत्ता, म स्त्री (स) वल्ली, व(वे)दि त्र(प्र)-तानि (स्त्री) (बहुत शाखाओं तथा पत्तों वाली) प्रतानिनी, युग्मिनी, वीरध (स्त्री), उल्फ २ सुन्दरी, तन्वी, रौचना ।

—मडप, म पु (म) लुत्ता, भनतुन गृह, नि, युज-ज, दुर्ग-गर्भ ।

लुत्ताई, स स्त्री, दे 'लुत्ता' ।

लुत्ताडना, कि स (हि लुत्त) दे 'रौडना' ।

लुत्तिका, स स्त्री (भं) लुत्त-वल्ली त्रतानि (स्त्री) ।

लुत्तीका, स पु (अ) दे 'लुत्तुका' ।

लुत्ता, म पु (सं लुत्तव) नक्तव, सपट २, चोर, पटचर, जीर्णवसन ३ वस्त्र ३ वस्त्रम् ।

—कपडा, स पु, परिधानं, वस्त्राणि वानामि (न बहु) ।

लुत्ती, स स्त्री (हि लुत्त) पदप्रहार, लुत्तायान, गुर, भाषाण शेष ।

लुत्ती, म स्त्री (हि लुत्ता) अनगपुच्छ २ रुदवस्त्राद टम् ।

लुत्तङ्गना, कि अ, ट 'लुत्तङ्गना' व वन व रूप ।

लुत्तपथ, वि (अनु) अनि, विच्छ उन्न निनिन आद २ (एवादिभि) लित शिथ मज्जिन, क्लृप्त ।

लुत्ताड, म स्त्री (अनु लुत्तपथ) भूना पान

यित्वा दत्तस्तन कपण २ परावय ३ हानि (स्त्री) ४ अधिशेष, निर्मलमन ना, तर्जनम् । लघादना, कि स, दे 'लतादना' २ 'ल थेदना' ।

लयेदना, कि स (अनु लयपञ्च) एकेन मन्त्रिनयनि (ना धा), कदमे कृष् (म्वा प अ) २ समिधू (चु), ससब्ज (तु प अ) ३ निर्मल (चु), अधिशेष (तु प अ) ४ व्यय (प्रे), पीड (चु) ।

लदना, कि अ (स लघ्) ब 'लादना' के कर्म के रूप २ मृ (तु आ अ) ।

लदवाना, } कि प्रे, ब 'लादना' के प्रे रूप ।
लदाना, }

लदा फँदा, वि (हि लदना + फँदना) मारा काल, मारप्रस्त, पर्याहारपीडित ।

लदाव, स पु (हि लादना) दे 'लादना' स पु १ मार, मर, पर्याहार ३ पटला दिवु निराधार गृहकावय ।

लदुवा, लदुदू, वि (हि लादना) पुरपर, पुरीन, धौरेय, पुर्ण, दृष्य, स्फुरित (घोग, बेल आदि) ।

लदुद, वि (हि लदना) अलस, मथर ।

—पन, स पु, आलस्य, मथारत्वम् ।

लप', स स्त्री (देश) अनलि, करपु २ अकलि, मित्त-मान वस्तु (न) ।

लप', म स्त्री (अनु) वेव-यष्टि, शब्द, लपलपध्वनि २ लट्गादीना तरलप्रभा ।

लपक, म स्त्री (अनु) ज्वाला, अग्निशिखा २ क्षणिक-अस्थिर, दीप्ति (स्त्री) प्रभा ३ वेग, ज्व, त्वरा, लापन ४ प्लुति (स्त्री), शपा ।

लपकना, कि अ (हि लपक) भाव् (म्वा प से), दु (म्वा प अ), सत्वर गम् २ स्फुर (तु प से), तरलप्रभया प्रकाश (म्वा आ से) ३ बल (म्वा प से), उद, म्ल (म्वा प अ) ४ मृ (चु), ग्रह (म् प से) । स पु, धावन, स्फुरण, उद, प्लवन, धारणम् ।

लपकाना, कि स, ब 'लपकना' के प्रे रूप ।
लपकी, म स्त्री (हि लपकना) सरलसीवन नेद ।

लपप्रप, वि (अनु लप + हि शपटना) चपल, चवल २ क्षिप्र, आशु ।

लपट, स स्त्री (हि ली + पट) वह्निशिखा, ज्वाला २ तप्तपवन, घमानिल ३ सुगन्ध, सुवास, दुर्गंध, पूनियव ४ सुगन्धिगुणधि, पवनतरंग ।

लपटना कि स, दे 'लिपटना' ।

लपटशपट, स स्त्री (स लपन + अनु) प्र, जल्प पन, निरर्थकशब्दा (बहु) ।

लपन, स पु (स न) दुस्त २ भाषणम् ।

लपलप, स पु (अनु) लेहन, लेह । वि, क्षिप्र शीघ्र, क्षारित, आशु । कि वि, क्षिप्र, द्रुतं, शक्ति (सब अव्य) ।

—करना, कि स, लिह (अ उ अ), जि ह्याप्रेण पा (म्वा प अ) ।

—खाना, कि स, सत्वर मस् (चु) ।

लपलपाना, कि स (अनु लपलप) (जिह्वा-खड्गदिक) परिभ्रम् (प्रे)-विधू (स्वा क् उ मे) । कि अ, सङ्गवत् प्रकाशमान् शुभ (म्वा आ से) । स पु तथा भाव, विधुवन, विधूति (स्त्री), विधूनन, परिभ्रा (भ्र) भण, प्रकाशन, भासन, घौननम् ।

लपलपाहट, स स्त्री (हि लपलपाना) (छ ह्मादीना) धुनि-दीप्ति (स्त्री), प्रभा २ दे 'लपलपाना' स पु ।

लपसी, स स्त्री (स लपिका) द्रवप्राय सयाव ३ द्रवप्राय मध्यम् ।

लपेट, स स्त्री (हि लपेटना) दे 'लपेटना' स पु स्यावर्त, व्यावृत्ति (स्त्री) बधन चक्र ३ परिधि, परिणाह, परिवेश, मङ्गल ४ कष्ट, क्लेश, क्लृप्, जाल ५ कुटुष, प्रभाव ६ वेहन, बधन ७ पुट, भग, बलि (स्त्री) ।

लपेटना, कि स (हि लिपटना) सवेष्ट (प्रे), सपुटीक २ भ्रमपूर्ण (प्रे) ३ व्यावृत्त (प्रे), पुटीक, पुटयति (ना धा) ४ पिण्डी वतुली-क ५ आच्छाद (चु), परिवेष्ट (म्वा आ से, प्रे) ६ सप्रभ (क् प से) ७ अन्तर्गम (चु) सशिल्प (प्रे) । स पु तथा भाव, सवेष्टन, सपुटीकरण, भ्रामण, घूर्णन, व्यावर्तन, पिण्डीकरण, आच्छादन, सप्रभन, सश्लेषणम् ।

लपेटवाँ, वि (हि लपेटना) मपुट, ममग, बलियुत २ व्यावृत्त, आनुचित, ३ गूढार्थ, गुहाशय, व्यग्य ४ वक्र ।

लघुपद, स पु, दे 'यप्य' ।

लघ्या, स पु (देश) सौवर्ण-राजन-सतुजाला
भरणभेदः ।

लघुगा, न पु (का-ग) लघु, व्यभिचारिन्
२ कुपय, दुर्वृत्त ।

लघुदण्ड, स पु (अ हेन्दिनेट) घणाध्वज
२ प्रतिपुम्प ।

—गर्वनर, म पु (अ) उपप्राताध्यक्ष, उप
भोगपति ।

—जनरल, स पु (अ) अश्वीहिनीयः ।

सेरुङ्ग—, स पु (अ) गुल्मप ।

लघुज, म पु (अ) शब्द, पद २ उक्ति
(स्त्री), भाषणम् ।

—वल्गुज, कि वि, शब्दज्ञ, यथाशब्द,
अधुराज्ञ ।

लघुजी, वि (अ) शब्दचिह्नः ।

—तनुमा, स पु (अ) अक्षरञ्च शब्दश-
मूलशब्दानुवर्ति भावोपेक्षक-अनुवादः ।

—पह्म, न स्त्री (अ) भावोपेक्षक शब्दिक-
शब्दप्रतिवादः ।

लघुकाज्ञ, वि (अ.) बाबदक, बाबाल,
बहुभाषिन्, मुत्तर ।

लघुकाज्ञी, स स्त्री (अ) बाबदकता,
बाबालता, मुत्तरता, अल्पकता ।

लघु, स पु (का) अक्षर, ओष्ठ, इतच्छब्द
२ स्वदिनी, कान्ता २ प्रान्त, मुख, कठ,
धार, कर्ण ।

—रैज, वि, परि, पूर्ण, समूह ।

लघुधर्मोप, स स्त्री (अनु) कोलाहल-
कलरल २ अनु-द्वर, व्यवस्था, संकुल,
क्रमाभाव २ अन्याय, अपर्ण, अतीति (स्त्री)
४ वाक्कुल, वाग्वचना ।

लघुलवा, स पु (अनु) क्लेश, पठक्रिया
(अ) पेनक्रियासः) । वि, चिह्नण, सल्लग्नशील ।

—कारय, म पु, क्लेशरस ।

लघादा, न पु (का) अपिचुर्ननुव २,
कचुक ।

लघार, वि (मं लपन) द्विध्याभाषिन्
२ व्यापार, कृपाभाषिन् ।

लघालय, नि वि (का) आ, नष्ट मुसंनर्णम् ।
नि, आवर्ण, परिपूर्ण ।

लघी, न स्त्री, दे 'राव' ।

लघेरा, म पु (देश) दे 'लमोदा' ।

लघु, वि (सं) अवप्र-आप्त, अधिगत,
ममामादित २. उप, अर्जित । स पु (स
न) फल, लब्धि. (गणित) २ दामभेदः ।

—प्रतिष्ठ, वि (सं.) लब्ध, कीर्तिनामन,
विप्र, ख्यात ।

लब्धि, स स्त्री (सं) प्राप्ति (स्त्री), लाभ.
२ उत्तर, लब्धाव (गणित) ।

लभ्य, वि (सं) पाप्व, अधिगम्य २ उचित ।

लभच्छब्द, स ॥ (हि लभा+छद्) लवयष्टि-
(स्त्री) २ कुत, प्राप्त ३ लवगम्यलभम् ।
वि, तनुनव ।

लभर्दशा, वि (हि लभी+दाग) दोषजप
(स्वा, वी स्त्री) २ दे 'लभर्दोग' ।

लभर्दोग, स ॥ (देश) सात्स, पुष्कराङ्गः ।

लभतदंग, वि, दे. 'लवतदंग' ।

लभहा, स पु (अ) क्षण, पल, निमिषि)पः ।

लभ्य, स पु (सं) एकरूपता, ऐकरूप्यं, यत्नो
सदृशी, भाव, साधुर्ण्यं, मरुता, लीनता
२ एकाग्रता, समाधि, अनन्यमनस्कता
२ अनुराग, प्रेमन् (पुं न) ४ महाप्रलय,
वत्सात ५ अदर्शन, 'ओष', तिरोभाव ६ स-
श्लेष, समिश्रण ७ नृत्यगीतवाधानां सान्ध्यं
(सपीत) ८. मूर्च्छा । स स्त्री, स्वरोद्गम-
प्रकार (२३) दे 'तर्ज' तथा 'सम' ।

लभज्ञता, कि अ (का. जरजा) कर्तृ-
(स्वा आ से) २ भी (जु प अ), वि-
सत्रत् (स्वा दि. प, से.) ।

लभज्ञा, स पु (का.) कप, वेपथु २ भूक्ष्ण
३ कपज्वरः ।

ललक, स स्त्री (सं लल = चाहना))
उत्सङ्केष्टा, लालसा, अभिलाषानिदायः ।

ललकना, कि अ (हि. ललक) भग्यन्त लल-
(पु. चतुर्थी के साथ), अतीव अभिलष-
वात् (स्वा प से.) ।

ललकार, स स्त्री (हि अनु. लेल+मं कारः)
समार, आह्वानं, मुद्राय आचारण-गा, रणनि-
मेषण २ आक्रमण, उच्छेदना प्रेरणा ।

ललकारना, कि स (हि ललकार) आह्वे
(स्वा आ अ), (योद्धु) आहु उरीपू-उत्तिज-
प्रचुर (वि) । स पु तथा भाव, दे 'ललकार' ।

ललचना, वि. अ (हि. लालच) दे 'लल-
चाना' वि. अ ।

ललचाना, कि अ (हि ललचना) (अत्यन्त)
लुभ (लि प मे) सुह (चु) वम् (स्वा
आ से) अभिलष (स्वा दि प मे) २ मुह
(दि प मे) । कि म, अभिलाषा नव (प्रे)
प्र, लुभ (प्रे) २ मुह (प्रे) बनीक ।

ललचाई, वि (हि लालच) लोलुप म गृध्र
अयभिलाषिन्, अत्यावाक्षिन् ।

ललन, स पु (स) प्रियरुलित बल
कुमार २ रात्र वस्त्र ३ (नायकमवोपन
पद) ललन 'प्रियकर' ४ बिहार, क्रीडा,
केशि (स्त्री) ।

ललना, स स्त्री (म) कामिनी रामा
२ जिह्वा ।

लला-लला, म पु (स लल) दे 'ललन'
(१३) २ (वाङ्मयवोधनपद) अग ।
वस्त्र । ललित । ललितक ।

ललाई, म स्त्री (हि लाल) दे 'लानी' ।
ललाट, म पु (स न) अलि(ली)क, गोधि-
(पु स्त्री) भाल, निदिटल, दे 'भाया'
२ भाय, दैवम् ।

—लल, स पु (स न) ललाट-भलक,
पट्ट-भलकम् ।

—लेखा, स स्त्री (स) भाग्यलेख ।

ललाटका, स स्त्री (स) पत्रपात्राया, ललाटा
भरणभेद २ ललाट, चरी चनी, मातृस्वर्च
दन, तिलक-कम् ।

ललाम, वि (स) रम्य, सुन्दर २ रक्त,
लोहित ३ श्रेष्ठ, प्रधान । स पु (स न)
आ, भूषण २ रत्न ३ चिह्न ४ ध्वज
५ शृंग ६ अश्व ७ अश्व, भूषण, भाल
चिह्न ९ प्रभाव १० वेम(श)र १, दे
'अयाल' ।

ललित, वि (स) सुन्दर, मनोहर, रम्य,
२ इक्षित, समीष्ट ३ लोच, चंचल, कम ।

—लला, स स्त्री (स) कोमल-उल्लस-लला
शिष्य (काव्य, सुगन्ध, चित्रकारी इ) ।

—लोचन, वि (स) सु-नैत्र-नयन ।

ललिता, स स्त्री (म) रमणी, सुन्दरी
२ रात्रिकाया सखीविशेष ।

ललिताई, स स्त्री (म ललित) सौन्दर्य,
रम्यता ।

लली, हली, स स्त्री (हि लला-ह्ला) प्रिय
पुत्री, ललितननुता २ (नाविनासवोधनपद)

प्रिये 'कन्ने' वल्लभे' ३ (वाङ्मयवोधन
पद) ललिते 'बले' वल्लभे ।

ललाई, वि (हि लाल) आर्षद्-रक्त
लेखित ।

ललने म स्त्री (स ललना) लिङ्ग-रस ।

—ललो, स स्त्री चाटु (पु न),

—ललो, स चाटुकि (स्त्री), उपच्छदनम् ।

—ललो करना, मु, मिथ्या प्रशम् (स्वा प
मे) उपछद (चु), चाटुभि तुप् (प्रे) ।

ललग, म पु (स न) दे 'लीग' ।

—लला, स स्त्री (म) शीघ्रपलना (२ राधा
मतीविशेष) ।

लन म पु (स) परम अणु, लेश, वण,
वणिका, सुदृढ, विदु २ काष्ठादय, पट
निशत्रिनेवमित का ३ श्रीरामपुत्र,
कुशभ्रतृ ।

—लेश, म पु (म) २२ अत्यल्प-मात्रा
समय ।

लवण, स पु (स न) दे 'नमक' । स पु
(१३) राक्षस-रस-समुद्र, विशेष । वि,

लवणित, लवणिक, दे 'नमकीन' २ सुन्दर ।

—भास्कर, स पु (स) पाचकचूर्णभेद
(वैद्यक) ।

लवणाकर, स प (स) लवणल(ला)नि
(स्त्री) २ सागर ।

लवनिनी, स स्त्री (स लवन) शस्य-लाव
मवय ।

लवलोन, वि (स लव + लोन) व्यग्र, नि,
मग्न, पर-परायण, निरत, लीन, आमक्त,
व्याहृत ।

लवा, स पु (स लव) लाव (व), लाव
(व)क, लघुजगल ।

लल्लर, स पु (ल) सेना, सैन्य, अनीक
मिनी २ वन-ओष समुद्र ३ शिवि(वि)र,
निवेश ४ नाविका-नौबहा (बहु) ।

लल्लरी, वि (का लल्लर) सैनिक, सेना
मवधिर २ चीन-य, डोड । स पु, सैनिक
२ नाविक ।

—भाषा, म स्त्री, मित्रित सैनिक, भाषा २
दे 'उद्' ।

लल्लुन, म पु (म न) दे 'लल्लुन' ।

लम, म पु (स लम्) सलग्नशीलता,

—लुहान होना, मु, लोहितविलस्ररधि
लुहान रक्त, जित शोभो (वि) भू ।

लुग, म स्त्री (स लुग) कच्छ च, कच्छ (कच्छा, विवा, कच्छा कक्षा दे 'काँठ' ।

—लुलना, मु, अत्यर्थे भी (लु प अ), साहस धैर्यं मुन् (लु प अ) ।

लुगल, स पु (स न) दे 'हल' ।

लुगली, स पु (संलिन) दलराम २ सर्प ।

लुगूल, स पु (स न) पुच्छ २ शिखरम् ।

लुगुली, स पु (संलिन) कपि बानर ।

लुघिना, कि स (स लपन) लप (लु), अतिक्रम (भ्वा दि ष से), नृ (भ्वा ष मे) २ उत्प्लव्य लप (भ्वा आ से, लु) ।

म पु तथा भव, अनिक्रम, लपन, तरण, उत्प्लव्य लपनम् ।

लुलन, म पु (स न) कल, दोष, दूषण, अपकीर्तिविद्ध २ बिद्ध, लक्ष्मा लक्ष्मन् (न), लिंगम् ।

—लुगाना, दुप (मे) कलरयनि, यशो मलि नयनि (दोनों ना था) ।

लुगिन, स स्त्री (अ) पक्ति (स्त्री) २ रेखा ३ लोहमाग, ४ पत्तिसेना ५ दे 'बारक' ।

—लुगरी, स स्त्री, दे 'पेछलोका' ।

लु, अ (अ) विना, न, कृते (सब भव्य) ।

—लुगज, वि (अ) असाध्य, निरुपाय, अविहित्य, अप्रतिवार्य ।

—लुगम, वि (अ) निरकर, शिष्टाचार्य, विधावि 'न, अक्ष ।

लुगिट, म स्त्री (अ) प्रकाश, आलोक ।

—लुगम, म पु (अ) प्रकाश, सत्त्व गृहम्, आकाशदीप दीपस्तम्भ ।

लुगडा काकडा, स पु दे 'माया (लोच)' ।

लुगणिक, वि (सं) लक्षणगम्य (अर्थ), लक्षण २ लक्षणश लक्षण्य ३ गौण अप्रधान ४ लक्षणसवधिन् ।

लुगशा, स स्त्री (स) कोशा, जतुका, दे 'लुग' ।

—लुग, स ॥ (स न) पादवशाहार्थं दुर्बोध ननिर्मापिनो अतुगहनिनेव ।

—लुग, सं पु (स) दे 'महावर' ।

लुग, म स्त्री (स लुग) राक्ष, दाव, पावक क, जतुका, जतु (न) रक्षा, अजक

(कन), दुग, आमय व्याधि, मुद्रिणी, जतुका २ रक्तवर्ण कृमिभेद ।

—लुगडा, स स्त्री, पत्रकलाक्षा ।

लुग, वि (स लुग) नियुत, अयुतदशक, महस्रक्षणक २ असह्य, अगण्य । ॥ पु (स न) उक्ता मर्या, तदकारव (= २०००००) ।

कि वि, अनकृप, अनेकवार, बहु, अधिकम् ।

—लुगे की बात, ॥, अत्युपयोगिवार्ता ।

—लुगे झाक होना, मु, वैभवात् दार्द्र्य उप ३ (अ प अ), विरक्त परिधि (कर्म) ।

लुग, म पु (हि लुग) ओष्ठरनवी लाक्षि करग ।

लुग, म स्त्री (हि लुग) लाक्षिकरग । वि, लाक्षिक लाक्षा, निमित्त रजितवर्ण सवधिन् ।

लुग, ॥ स्त्री (हि लुगाना) सपक, समर्ग, सवध २ प्रमत् (पु न), अनुगण २ अभिनिवेश, आत्मिक (स्त्री) ४ युक्ति (स्त्री), उपाय ५ इद्राल माया ६ प्रति योनिता स्वर्दा ७ बैर, शत्रुता ८ अभिचार ९ भूमिकर १० धातुभस्मन् (न), दे 'भस्म' ११, *गवन् ।

—लुग, म स्त्री (हि) बैर, द्वेष २ मर्नि, योगिता स्वर्दा ।

—लुग, स स्त्री (हि) पक्षपात, पक्षपातिता, समष्टिपभाव (स्त्री) २ मनोपसि-सहनि (स्त्री) ।

लुगल, स स्त्री (हि लुगाना) व्यय, विनि योप, विमर्नन २ मूल्य, अर्थ, अर्हा ।

—लुगाना या घटना, कि अ, मूल्येन की-मद् (कर्म) २ व्ययेन मपद्-माध् (कर्म) ।

लुगव, स पु (स न) दे 'लुग' (१५) ।

६ विप्रता, द्रुतता, दक्षता ७ क्लीबता ८ आरोग्यम् ।

लुगार, वि (क्वा) विवश, निरुपाय, अगणिक । कि वि, विवश-निरुपाय-अगणिक-तया ।

लुगारी, स स्त्री (क्वा) विवशता, अगणिकता ।

लुग, म स्त्री, दे 'लुग' ।

लुग, म स्त्री (स लुग) दे 'लुग' (१२) ।

—लुगाना या करना, कि अ, दे 'लुग' होना ।

—लुग, मु, प्रविष्टा रक्ष (भ्वा ष से), अपमानन्त्रे (भ्वा आ अ) ।

लानवत, वि (स लानवत) दे लानाशील ।
लानवती, वि (हि लानवत) लज्जवती,
शामनी । स स्त्री, लानावु (पु स्त्री),
सकोचिनी, रसशंका, मन्त्रांगीना, महीपथि
(स्त्री) रक्त पादी-मूला ।

लानवद, सं पु (का, मि स लानवत)
नृपावन आवनमणि २ (विदेशीय) नीलम् ।
लानवद्री, वि (का) नीलवर्ण, दण्डवत् नील ।
लानवधाय, वि (अ) निरुत्तर, मूरी, कृत
भूत वादे पराजित ३ अनुपम, अनुल ।

लाना, स स्त्री [स लाना (पु बहु)]
अक्षुता (पु बहु) २ तदुल ।

लानिम, वि (अ) अवयवक अवयवकतथ्य
२ उचित युक्त ।

लानिमी वि (अ लानिम) दे 'लानिम ।
लाट', स पु (अ लाँट) शमक, शानिन्
२ भोगपति, प्राणाध्यक्ष ।

लाट', स स्त्री (हि लट्ठा) सलज, मेढि
वि, धूप ।

लाट, स पु (सं बहु) प्रातर्विद्येय (गुण
रात, अद्वयवाद के आसपास) २ लाट
प्रातःमनि (बहु) ३ (लाट) अनुप्राप्त
मेद (सा) ४ जीर्णवसनभूषणादिक
५ वसनानि-नामासि (न बहु) ६ घटित ।

लाटरी, सं स्त्री (अ) शुटिकापान, पाठक,
काम्प्री ।

लाटानुप्राप्त, स पु (स) शम्भालकारमेद
(सा) ।

लाटिका, लाटी, स स्त्री (स) रीतिभेद
(सा) २ प्राकृतमातृविशेष ।

लाठ, स पु, दे 'लाट' (१-२) ।

लाटी, स स्त्री (स लुटयष्टी) यष्टिक
का, यष्टि (स्त्री), वाट, लुट्ट, दट,
पुन २ वेत, वेत्रयष्ट (स्त्री) ।

—लाना, मु, दण्डदिजन (दि आ मे) ।

—टेश द लाना, मु, यष्टिप्रवक्ष्य दक्षाध्वेय
चलु (स्वा प से) ।

—वाधना, मु, यष्टिधु (जु) ।

लाद, स पु (स लाट) लाटन, उप, लानन,
२ परिवग आग्निन, परिदण्ड ३ लुबन,
निम्न ४ मोर्झरजम्ह ।

—करना, क्रि म, लान-लाट (जु),
नुर्-अग्नि (स्वा प से), मोर्झर ।

लादरा, वि (स लाड >) उप, लाटि(वि)
त लुबिन, आग्निन, प्रेम-लानन, आस्प-
पादमानन, मित्र, अभिमत ।

अत्यधिक—, वि, दुर्लभ, अनित्यनि
लाननद्विपित ।

लाडा, स पु (हि लाट) दे 'वट' ।

लाडी, स स्त्री (हि लाटा) दे 'वधू' ।

लाट, स स्त्री (देश) न्या मादर, पसु
२ पाट, चरण, पद ३ नया पाद, नशर
आधान ४ सुरमाणा श्लेष आधान ।

—लाना, मु, पादेन नया प्रह (स्वा प
अ) तट (जु) ।

—जाना, मु, (गौ भैम आदि) दुग्ध न दद
(स्वा आ मे) ।

—भारना, मु, शुचि मत्वा स्वन (स्वा
प अ) ।

लाद, स स्त्री (हि लादना) दे 'लाना'
स पु २ उदर ३ अंदम् ।

लादना, क्रि म (हि लदना) भार स्वम
(दि प से), निषा (जु उ अ) —भार
(प्रे) निविश (प्रे), भारकान ह, भारेण
पूर (जु) ३ राशी क समा नि (स्वा उ अ) ।
स पु भ(भा)र, न्यास निवेशन-आधान
आरोपणम् ।

लादनेवाला, स पु भ(भा)र, —आरोपक —नि
वेशक ।

लादवा, वि (अ) दे 'लाहलज' ।

लादा हुआ, वि, भार, प्रस्त आधान, आरोपित
निदेशित-स, भार ।

लादी, स्त्री (हि लादना) भार, पोडलिका ।

लादू, वि (हि लादना) दे 'लद' ।

लानत, स स्त्री (अ लानन) पिहार,
व्यकार, निर, अर्त्तमन-ना, अधिधेय गर्हा ।

—मलामन करना, क्रि स, निभर्त्त (जु
आ से) अधिनिष् (जु प ३) ।

लानती, स स्त्री (अ लानन >) निष, गद्य,
निर्मलमनीय, दुग्ध, गल ।

लाना, क्रि म (हि लेना + प्राना) अनी
(स्वा प अ), उप-ना, ह (स्वा प अ),
आनह (स्वा प अ) १० टपग्या (प्रे), पुरो
निषा (जु उ अ), उपवन (नि प म)
३ उपह (स्वा प अ), ममह (प्रे),
उपायन दा ४ उदर नद (प्रे) । सं पु,

आनयन, आ उपा हरण, आवहन, उपस्थापन, उत्पादन २ ।

लाने योग्य, वि, आनेय उपाहार्य, उपस्थाप्य ।
लानेवाला, सं पु, आनेर, आ-उपा, एतु
हारक ।

लापता, वि (अ ला+हि पता) अलभ्य,
अदृश्य, तिरोहित, अन्तर्हित, गुप्त, प्रच्छन्न,
अज्ञातवास्त ।

लापरवा वाह, वि (अ ला+फा परवाह)
निश्चित, अनवरित, प्रगल्भ, प्रमादित् ।

लापरबाही, सं स्त्री (अ+फा) निश्चिन्ता,
अनवधानता, प्रमत्तता, प्रमाद ।

लाफ, सं स्त्री (फा) आत्म-स्व, इत्याद्या
प्रशंसा, विकल्पनम् ।

—जान, वि, आत्मश्लाघित्, विकल्पनशील ।

—जानी, सं स्त्री, आत्मश्लाघिता, विकल्पन
शालिनी ।

लाफिंग मीस, सं स्त्री (अ) डमनकानि
(स्त्री) ।

लाम, सं पु (स) अवप्र, आसि, उप,
लब्धि (दोनों स्त्री) अधिगम-जन, आ
सादन ३ फल, अय, उदय, वृद्धि (स्त्री),
लभ्य ३ कल्याण, उपकार, दितम् ।

—उठाना, क्रि अ, लाम अधिगम्, अर्ज
(स्वा प से, प्रे), लम (स्वा आ अ)
ममाम् (प्रे), विद् (तु उ बे) ।

—दायक, वि (स) लाम, कारक-कारित्
जनक प्रद, गुणकारिन्, हित, हिनकर, फल
दायक, उपयोगिन् ।

लामालाम, सं पु (स भौ द्वि) आयापायी,
अधिगमापगमी, वृद्धिदायी, उपचयापचयी ।

लाम, सं पु (फा लाम) सैन्य, सेना
२ जनौ ३ युद्धम् ।

लामज्जहव, वि (अ) वमविमुख, नास्तिक ।

लायक, वि (अ) योग्य, क्षम, समर्थ, शक्त
२ अनुरूप, अनुकूल, उपयुक्त ३ गुणिन्,
गुणवर्य क्षरील, श्रेष्ठ, भद्र ।

लाया हुआ, वि, आनीत, आ-उपा, हुन, उप
स्थापित, उपन्यस्त ।

लार, सं स्त्री (स लार) दे 'राल' (२) ।

लार्ड, सं पु (अ) त्र्यदोश २ स्वामिन्
३ क्षेत्रपति ४ आगलदेशे उपाधिभेद ।

लाल, सं पु (फा) पमराग, दे माणिक्य'
वि, रक्त, लोहित, शोण ।

—आलू, सं पु, दे 'रताल' २ दे 'अरुई' ।

—इलायची, सं स्त्री, दे 'इलायची' (बडी) ।

—कुर्त्ती, सं स्त्री, आगलसैन्यनिवेश, शिवि
(वि)रम् ।

—चदन, सं पु, रक्त-कुन्देवी, चदन, रजन,
दे 'चदन' में ।

—पानी, सं स्त्री, घुरा, मधम् ।

—पेठा, सं पु, दे 'कुम्हडा' ।

—सुसम्बद्ध, सं पु, पंडित प्रज्ञ, मय, प्राज्ञ-
पंडित मानिन्-अभिमानिन्-वादिन् ।

—मिर्च, सं स्त्री, दे 'मिच' में ।

—मूली, सं स्त्री, दे 'शलमम' ।

—शाकर, सं स्त्री, दे 'खांड' ।

—मागर, सं पु, रक्तसागर ।

—मुख, वि, अग्निरूप, अगारवर्ण, अतिलोहित
३ अति, कुपित-सरस्व ।

—पीला होना, पीली आँखें निकालना, मु,
अत्यंत कुप् (दि प से) कुप् (दि प
अ), सरभाविशयेन लोहितलोचन रक्तचदन
(वि) भू ।

लालच में स्त्री (स लालसा) लोलुपता,
दे 'लौम' ।

लालची, वि (हि लालच) लोलुप, दे 'लौमी' ।

लालटेन, सं स्त्री (अ लँटन) प्रदीप पत्र,
प्रदीपकोश (प) ।

लालची, सं स्त्री (फा लाल) मिथ्यामा
गिन्य, कृतकलोहितकम् ।

लालन, सं पु (सं न) दे 'लाड' सं पु ।

—पालन, सं पु (सं न) पालन भरण,
पोषण, संवदन, भरण, रक्षणम् ।

लालन, सं पु (हि लाला) प्रिय-लालिन,
पुत्र-कुमार २ बालक ।

लालसा, सं स्त्री (स) उत्कटेच्छा, लिप्सा-
आपाशा-वाञ्छा-मृहा-इच्छा-अमिलाप, अति
शय २ उत्कठा, उत्तुक्ता ३ गर्म, दोहद ।

लाला, सं पु (सं लालक >) महाशय,
महोदय, श्रीमत्, श्रीयुग २ (क्षत्रियवैद्याना
संबोधन) श्रीमन् महोदय । श्रेष्ठिन् ३ काय
स्व ४ शिशु, बाल ५ (बालसंबोधनपद)
वत्स । अग । ललिन । लालिनक । ६ पितृ,
जनक ।

—येया करना, ॥ सादर सभाष (भ्या आ मे) मनुष्य (प्रे) २ एटलस (चु) ।

शाला^२, म स्त्री (म) मुखलाव, दे 'शाल' (२) ।

शाला^३, स पु (प्रा) रास्वममगनिल पुण्यम् ।
शाला^४, वि (स) एनष्ट मल, स्तम्भिन
० श्व आयत्त निरष्ट इ मावधान । स पु,
मावधान मवक ० अणम् ।

शाला^५, वि (म) अत्यगिलपिन, अ
त्यागानि अत्युपुन, लणम् ।

शाला^६, वि (स) शालित, चुविन, आग्निन,
ज्ञानेष्टन पिथ ० सबाद्धन पापिन ।

शाला^७, म स्त्री (म न) मोदवै, मनासुता
मनोहरता छवि (भ्या), माधुर्यम् ।

शाला^८, म स्त्री (प्रा शाल) दे 'शालो' ।

शाला^९, म स्त्री (फा शाल) रत्नत्वना,
लौह्य रत्नमन्लोहिनिमन्-अग्निमन् (प)
अग्निना, रोहितनास्व, २ मन्मान, प्रतिष्ठा
इ प्रिय, कन्या(यि)शालुमारिषा ।

शाले^{१०}, म पु (स शाला) शालमा, उत्त
देष्टा ।

(विमीचीन के) —पडना, सु, अतिगालाधिग
(वि) भू, अत्यंत सृष्ट (चु, चतुर्थी के साथ)
२ दुर्लभ-दुर्प्राप (वि) वृष्ट (भ्या आ से),
कुल्लेण लभ प्राप (अम) ।

शाल^{११}, स पु (स) बतन, कृतन, एवन,
छेदनम् २ एव, लावन, एतुनगल ।

शाल^{१२}, स स्त्री (देस) दे 'रत्ना, रत्नी' ।

शालक^{१३}, म पु (स) एव, शालक, एषु
गल २ छेदक, छेष्ट, छेदकर, -छिद्र ।

शालण्य^{१४}, स पु (स न) एवणनास्व, शारता
२ विशिष्ट-मौदयै-रूप, छवि (स्त्री), आगता,
श्री-वाति (स्त्री) ।

शालनी^{१५}, म स्त्री (देस) (१०) छदो-
गीतिका, भद्र, -लक्षणी ।

शाललशकर^{१६}, म पु (हि + का) मपरिच्छद
सेव्यम् ।

शालवद^{१७}, वि (अ) निष्मन्तान, निरपत्य ।

शाला^{१८}, म पु (स शाल व) दे 'श्व' ।

शाला^{१९}, म पु (अ) ज्वागामुगी प्रग्नय,
उदाम् ।

शालारिम^{२०}, वि (अ) अदावाद, दायादरहित

(मनुष्य) २ अदाविन, स्वामि प्रमु, हीन
(धन) ।

—शाल^{२१}, म पु (अ) अदाविक स्वामिहीन,
रिक्थ-द्रव्य धनम् ।

शाला^{२२}, स स्त्री (फा) दे 'शव' ।

शाला^{२३}, स पु (हि लम) मरुत्यक, द्रव्य-रूप
२ द्रुमद्रुम्य शुष्कीरम् ।

—शाला^{२४}, सु, प्र वि लुम् (प्रे) प्रभू-वन्
(प्रे) २ उतित् उदीप (प्रे) ३ मरुत्यक
द्रव्येण दगान वच (कृ प अ) ।

शाला^{२५}, वि (अ) अनुपम, अप्रतिम,
अद्वितीय ।

शाल्य^{२६}, म पु (म न) नृत्य २ भावनात्
एव-आश्रय नृत्य इ शीनृत्य ४ तीयानकम् ।

शालीरा^{२७} नमक, म पु (हि + का) इ 'मैरा
नमक' (नमक के नाते) ।

शाला^{२८}, स पु (म) विद्ध लक्षण अभिमान,
रुद्रमन (न) २ अनुस-कारण, माधुर्य
हेतु इ मूलप्रकृति (स्त्री, मा) ४ मेष्ट-
इ, दे 'मिष्टि' ० शिवमूर्ति मेष्ट इ शब्द
रूपभद्र (भ्या) ७ पुरालिखिते ।

—देह, स पु (स) गृहमग्नि, शरीर (=१०
शत्रिणी, ७ -मात्रा, मन, बुद्धि-१७ तत्त्व) ।

—पुराण, म पु (म न) शैवाना पुराण
विशेष ।

—शालि^{२९}, म पु (स) धर्मभक्तिन्, दामिन्,
निविन् ।

—स्थ, स पु (म) कक्षचारिन् ।

लिगोद्विष, स पु (स न) गीत, शिदन
न, लिग, उपस्थ-स्थ, शेषम् (न), राग
काम-लता मेष्ट २, मेहन, शत्रु, काम-भद्रम्,
अवृद्ध, ध्वन, बद्धमुष्ण ।

लिगोटी^{३०}, म स्त्री, दे 'लोटो' ।

लिट, स पु (अ) मगोयवोगी दक्ष-वत्सभेष्ट ।

लिफ, स ॥ (अ) देहरम् ।

लिष्ट, अव्य (कारकविद्ध) (स नान वा हने)

—अर्थ, —अर्थ-अभाव-हने, हनी, (प्राय चतुर्थी
विभक्ति, मे, उ राम व णि-प्राप्य) ।

लिग्न, म स्त्री (म लिगित) मेष्ट, गिति
बद्ध-अक्षर-मन्, विषय ० लिगितपत्रं
३ लिगित द 'दम्बेष्ट' ।

लिखना, वि म (म लिगित) लिम् (तु
प मे), छरका (चु) प्रणिप् (प्रे),

पत्रे अरुह निविश (प्रे), लिपिबद्ध (वि)
 कृ २ (ग्रथदि) प्रणी (भ्वा प अ),
 रच (चु), निर्मा (जु आ अ, अ प अ),
 ग्रथ् (क प मे), निप्र, वष (क प अ)
 ३ वर्ण (चु), आ-अभि-लिख, चित्र (चु) ।
 सं पु लि(ले)खन, पत्रे आरोग्य नवेशन
 ० रचन, निर्माण, प्रणयन ३ आलिखन,
 विवर्णम् ।

लिखने योग्य, वि, लेख्य, लेखनीय,
 लेखाद् ६ ।

लिखने वाला, ० पु, दे लेखक ।

लिखाई, स स्त्री, दे 'लिख' (४) ।

लिखवाना, कि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप ।

लिखाई, स स्त्री (हि लिखना) लिपन,
 लेखन, अक्षरविन्यास २ लिपि (स्त्री)-पी,
 अक्षर रचना ३ लि(ले)खन, नीति (स्त्री)
 शैली ४ लि(ले)खन, भूति (स्त्री) ।

—पढ़ाई, स स्त्री, विद्याभ्यास, शिक्षा,
 लिखनपठनम् ।

लिखाना, कि प्रे, व 'लिखना' के प्रे रूप ।

—पढ़ाना, मु, शिक्ष (प्रे), विद्याभ्यास क
 (प्रे) ।

लिखापत्री, स स्त्री (हि लिखना + पठना)
 लेख-पत्र, व्यवहार २ लिखतेन दृढीकरणम् ।

लिखावट, स स्त्री (हि लिखना) लिपी-पि
 (स्त्री), अक्षर, विन्यास-संस्थान २ लेख
 रूपन, प्रणाली शैली ।

लिखा हुआ, वि लिखन, लिपिबद्ध, लेख्यपित
 २ रचन, प्रणीत, निर्मित ३ चित्रित ।

लिखित, व (स) लेख लिपि, वद्ध, अवित,
 लेख्य, कृत आरुढ स पु (स न) लि(ले)-
 खन, लेख २ लिपी-पि (स्त्री) ३ लिखित,
 दे 'दस्तावेज' ४ प्रमाणपत्रम् ।

—पाठक, स पु (स) हस्तलेख, पाठक
 अध्येतृ ।

लिटमम, स पु (अं) दोबलम् ।

लिटाना, कि स, व 'लेटना' के प्रे रूप ।

लिथइना, कि अ, व 'लेथटना' के कर्म
 के रूप ।

लिपटना, कि अ (स लिथ >), आग्रम्,
 मन (भ्वा प अ), स परि, ल् (भ्वा प
 ने) मसक्तपरिलम्ब (वि) भू, दिलप्
 (दि प अ) २ अलिप् (भ्वा प से),

अदिलप्, परि, स्वप् (भ्वा आ अ),
 उप्लु (भ्वा उ से) २ लीन भग्न-व्यापृत
 निरत परायण (वि) भू । स पु, आमग,
 परिलम्बन, श्लेष ० आलिप्तन, परिरम्भा,
 परिष्वजनम् ।

लिपटनेवाला, स पु, आसृगिन्, मंलग्नशोल
 २ अलिग्नकर्तृ, परिरम्भक ३ अलिग्नित ।

लिपटाना, कि स, व 'लिपटना' के प्रे रूप ।

लिपटा हुआ, वि, परिलम्बन, मसक्त, उपगूढ ।

लिपटो, स स्त्री (स लेप >) उपनाह,
 उत्साहिका, प्रलेप ।

लिपना, कि अ, व 'लीपना' के कर्म के रूप ।

लिपनाना, लिपाना, कि प्रे, व 'लीपना' के
 प्रे रूप ।

लिपाई, स स्त्री (हि लीपना) प्रवि, लेप

रूपन, उपनाहन, लिप, लिप लिपी पि
 (स्त्री) २ लेपन मृत्या-धर्मण्या भ्रमण्या ।

लिपि, स स्त्री (सं लिपी पि, स्त्री) लिपिका,
 लिपी वि वि (स्त्री), अक्षर, विन्यास

संस्थान रचना, लिखित, लि(ले)खनम् ।

—कर, स पु (स) लेपक, लेपकार, पल्लव,
 लिप लिपिकर २ लेपक, पत्रिकार,
 लिपिकार ।

—कार, ॥ पु (स) दे 'लिपिकर' (२) ।

—बद्ध, वि (सं) लिपित, अक्षरलिपित,
 लेखनिवेशित ।

—मज्जा, स स्त्री, लेख, माधनानि-उपकरणानि
 (न बहु) ।

लिप, वि (सं) चर्चित, दिग्ध, लेखान्वित,
 २ भग्न, लम्ब, निरत, आमक्त, लीन ।

लिप्ता, स स्त्री (स) इच्छा, अभिलाष,
 ईप्सा २ लोभ, लोडुपता ।

लिप्सु, वि (स) इच्छु च्छुक, अभिलाषिन्
 २ लोडुप-भ, गृध्नु ।

लिफाफा, स पु (अ) पत्र, पुट-बोध-आवे-
 हन अवरण २ आपानरमणीयवेश ३ आई
 वर ४ मयुरभिदुर, पदाध ।

—खुलना, मु, रहस्य विवृ (कर्म), स्वरूप
 प्रकटीम् ।

—बनाना, मु आटवर रच (चु) ।

लिवास्त, स पु (अ) दे 'वेश' ।

लियाकत, स स्त्री (अ) योग्यता, क्षमता
 २, गुण, वृत्ति ३ सामर्थ्य ४ शीलम् ।

लिखाना, कि प्रे, व 'लेना' तथा 'लाना' के प्रे रूप।

लिखा लाना, कि स, सह आनी (भ्वा प अ)।

लिसोडा, स पु, दे 'लसोडा'।

लिहाऊ, स पु (अ) अवेषण अवधान २ कृपा-दया, दृष्टि (स्त्री) अनुग्रह ३ पञ्च पात तिता ४ लज्जा, त्रपा ५ प्रणिष्ठा-मर्यादा, विचार ६ शीलसंकोच।

—करना, कि अवधा (जु उ अ) २ गद्ग (हु आ अ) ३ अनुग्रह (क् प से) ४ मर्यादा पा (प्रे पालयति)।

लिहाऊ, अ (अ) अत, अत एव (दोनों अर्थ)।

लिहाऊ, स पु (अ) दे 'रजारी'।

लीक, स स्त्री (स लेखा) रेखा-मा, दृष्टाकार लिपि (स्त्री) २ (चक्रदासोना) चक्र-मार्ग ३ दे 'फगदडी' ४ यज्ञसू (न), प्रतिष्ठा ५ रीति (स्त्री), शोकाचार, भया ६ कलक, लोठन ७ गणनाविह्वल।

—पर चलना, } सु दे 'लकीर' के नीचे।

—पीटना, } सु दे 'लकीर' के नीचे।

—से बेलीक होना, सु पथभट (वि) मू, रुद्धि त्वन् (भ्वा प अ)।

लीख, स स्त्री (स लीखा) लिखा, बुराट, लि(ली)का, लिख्य।

लीचद, वि (देश) अलस, मंद, मंथर २ सलग्नशील, दृढप्रादिन् ३ कृषण, वन्य।

—पन, स पु, आलस्य, कापण्य, सलग्न शीलता।

लीची, स स्त्री (चीनी-लीचू) अलीविका, फलभेद।

लीहर, स पु (अ) दे 'नेता'।

लीद, स स्त्री (देश) (गजाभादीना) अन स्वर, उच्चार, शमल, पुरीष, पलम्।

लीर, वि (स) लयप्राप्त, समाविष्ट, व्याप्त २ म मय, नि भग्न, आसक्त, तद्वृत्तविच, निरत, व्याप्त पर, परायण। ३ द्रवीयूत ४ निरोधित, दुष्ट।

लीनता, स स्त्री (स) तमयता, तत्परता, निमग्नता, आसक्ति (स्त्री)।

लीपन, स ॥ (ल लपन) दे 'लिपाइ'(१)।

लीपना, कि स (स लैपन) अनुप्रवि, 'ग्य (पु प अ) २ दिह (अ उ अ),

उपनह (दि प अ), अज (रु प वे)। स पु, अनुपवि, लेप-लेपन, उपनाहन, उपदेहनम्।

—पोतना, कि स, शुष् (मे), सस्क।

लीपनेवाला, स पु, लेपक, पलंग, २ उपदेहक।

लीपा हुआ, वि, प्र-वि, लिप्त, दिग्ध, अक्त।

लोमू, स पु (का) दे 'निम्'।

लील, स स्त्री (सं) क्रीडा, केलि (स्त्री), खेला, खेलन, कूर्दन, क्रीडन २ विहार, विनोद, रजन ३ शृङ्गारभावचैता, विलास, काम, क्रीडा-केलि (स्त्री) ४ हावभेद (सा) ५ विचित्रव्यापार, रसस्वरूप ६ चरित्रा भिनय (उ रामलीला इ)।

—गृह, स पु (स न) विलास-क्रीडा, रजनम्।

—पुरुषोत्तम, स पु (स) श्रीकृष्ण।

—स्थल, स पु (स न) क्रीडाभूमि (स्त्री)।

लीलावती, वि स्त्री (स) विलासिनी।

सं स्त्री (स) भास्वरार्चार्थभार्या २ गणित-प्रथमविशेष (३४) रागिनी उदो, भेद।

लुगी, स स्त्री (दि लाग) भिन्नकण्ठ, शादी पूर्विका २ श्रेयोभ्योष प, चित्रशिरो देहनम्।

लुचन, स पु (स न) उत्पादन, उद्धरण, उत्कर्षण, २ पृथक् करण, अवनयन ३ कतन घेदनम्।

लुज जा, वि (स लुचन) वरचरणविहीन, अपांग, व्यग, विरल, विकर्णग, श्रोग। सं. पु, स्थाणु भुव, शकु अपवपादप।

लुठक, स पु (स) लुटा(डा)क, दे 'लुटेरा'।

लुठन, स पु (सं न) अपहरण, मोचन, दे, 'लुटना' (सं पुं)।

लुंड, सं पुं (सं) और, तत्तर।

लुड, स पु (सं रुड रु) कथ।

—मुड, ॥ (सं रुड+मुड) दे 'लुन' वि तथा सं पुं २ पोडनीवद व्यवहृतम्।

लुडा, वि (स रुड) दे 'लुडरा'।

लुआरी, सं स्त्री (सं उल्ला+वाउ) अल्ला, उल्ला, प्रदीप्तराश्रम।

लुआय, सं पुं (अ) संलग्नशील, पलंगार २ लाना, स्पदिनी।

—दार, वि (अ + क्रा) सत्कर्मशील, दे 'लसदार'।

लुक, सं पु (सं लोक >) लुक्कुम (स्वा निदा) २ जाला।

लुकना, कि अ (स लुक = लोप >) दे 'ठिपना'।

—लुकठिपकर, मु, निमृत्, रहमि, रह (सं अन्व)।

लुकमा, सं पु (अ) कवल, मास, गुड्ड।

लुकमान, सं पु (अ) प्राचीनो वैव विशेष।

—के पास दवा नहीं, मु, असाध्य-अप्रति कार्य-निस्पाद, रोग व्याधि-मय।

—को हिक्मत मिखाना, मु, प्राणाय प्रज्ञा दा (लु ष अ), चतुरमपि चतुर्यै शिष्य (प्रे)।

लुकाद, सं पु (स लुक(क)च) (वृद्ध) शिब, शर, कादव, हृदयकल, वृद्ध।

२ (कल) लुक(कु)व, शर ३।

लुकाना, कि स (हि लुकना) व 'ठिपना' के प्रे रूप।

लुगदी, सं स्त्री (देश) आर्द्रगोष्क-कम्।

लुगाई, सं स्त्री (हि लोभ) नारा २ पत्नी।

लुचपन, सं पु (हि लुचा) लपटना, क्षमकता २ दुष्टत, दुराचार, दीर्घत्वम्।

लुचा, सं स्त्री (हि लुचकना, स लुचन से) लुचक, अपहारक, दुष्ट, दुराचारित, कुपय गामिन् २ लपट, कामुक ३ छद्र, दुष्ट, निर्लज्ज [लुची (स्त्री)]।

लुची, सं स्त्री (सं चूर्णिक) पक्वान्मभेद।

लुटना, कि अ, व 'लुटना' के कर्म के रूप।

लुटवाना, कि स व 'लुटना' के प्रे रूप।

लुटाना, कि म (हि लुटना) व 'लुटना' के प्रे रूप। २ अमित अन्व (चु), अप अन्व-अतिव्ययक अन्व (चु) ३ मूल्य विना दा ४ मुष्टिभि परिणिप् (लु प अ) पर्यम् (दि प से)। सं पु, अप-यति अतिव्यय २ मुषा विशेष।

लुटानेवाला, सं पु, अपव्ययिन्, विशेषिन्।

लुगार, वि (हि लुगाना) अप-प्रतिवृथा, व्यभिच, लुचदस्त, अयनादिन्।

लुटिया, सं स्त्री (हि लोटा) लट्ठमटल्ल।

—लुटाना, मु, अमान न्यस्त (प्रे)।

लुटेरा, सं पु (हि लुटना) मागतस्कर, हठमोषन, पाटधर, परिपथिन्, लुट(दा, ठा)क २ वचन, प्रसारक।

लुटकना, लुटना, कि अ (स लुठन) वि लुट (लु प से), विलुट (स्वा दि प से) २ लु (स्वा प अ), बहि पत् निर्गल (स्वा प से), नि लु (स्वा प अ)। सं पु वि, लुठन-लोठन २ बहि पत्न, निगतन, व्यवनम्।

लुटकाना, लुटाना, कि स, व 'लुटकना' के प्रे रूप।

लुटियाना, कि स (हि लोटिया) वलिका कार सिव (दि प से)।

लुतरा, सं पु (देश) परोपनिदक, दिशुन, काहसाधक। वर्योप २ अपनारक, कुपे ध्व [लुगरी (स्त्री)]।

लुत्त, सं पु (अ) आनन्द, मोद २ रम, आ, स्वाद ३ उत्तमता ४ कृपा ५ रोचकता।

लु(लो)नाई, सं स्त्री (हि लोना) दे 'लवण्य'(२)।

लुपरी-बी, सं स्त्री (सं लोप >) दे 'लिपरी' २ द्रवप्राय भक्ष्य, लुप्तिता।

लुल, वि (स) गुप, प्रच्छन्न, निमृत् २ अन हत, निरोधत, अदृष्ट ३ नष्ट, ध्वस्त। सं पु, लुल, लोचनम्।

लुल्य, वि (म) गृध्नु, गर्दन, दे 'लोमी'। २ मुग्ध, मोहित, हत। सं पु, दे 'लुल्यक'।

लुल्यक, सं पु (म) व्याध, दे 'शिकारी' २ लपट ३ गृध्नु।

लुल्यलुवाव, सं पु (अ) तस्व, सार, साराश २ दे 'गूरा'।

लुभाना, कि अ (हि लोभ) विलुम् (प्रे), दुराचारे-कुमार्गे प्रवृत्त (प्रे) २ वि, लुह (प्रे), प्रलुम् (प्रे) ३ मय, आह्व (स्वा प अ)। कि अ, दे 'लीभना'।

लुहदा, सं पु (स लोहदा) अवनवाली।

लुहा(ह)गी, सं स्त्री (स लोहा >) *लोहागी, लोहमुली यद्येष्टि (स्त्री)।

लुहार, सं पु (सं लो(ली)हार) अवस्कार, व्योहार, कमार, कमकार (लुहारिन स्त्री)।

लुहारी, सं स्त्री (हि लुहार) लो(ली)हारी,

अवस्थारी २ लोहकारव्यवसाय, वर्गारता, अव शिल्पम् ।

लू, स स्त्री (हि लू) धर्मवान्, उष्णानिल तप्तपवन ।

—चलना, कि अ, उष्णानिल वा(अ प अ) ।

—मारना या लगाना, मु, धमवातेन व्यथ (भ्वा आ से) ।

लूक, स स्त्री (म लोक >) ज्वाला २ दे तुआठी ३ दे 'लू' ४ वस्त्रा ।

लूट, म स्त्री (हि लूटना) वि लुट(ठ)न, बलात् अपहरण मोक्षण, लुटाठा, लुठित, लुटी ठी टि ठि (स्त्री) २ अन्याय-व्यवहार ३ लौट, लौट लौट श्री, स्नेय-अपहृत लुठित, धन, लुपम् ।

—का माल, सं पु, दे 'लूट' (३) ।

—खसोट घाट, स स्त्री लुठनध्वसन, लुठा लुठि (न) ।

—खूट, मार, स स्त्री मोक्षहिंसन लुठन मारण लुठामारम् ।

—पढना या मचना, कि अ, व 'लूटना' के धर्म के रूप ।

—सचाना, कि म, दे 'लूटना' ।

लूटना, कि म (म लुठन) वि लुट-लुट (भ्वा ए मे, लु) लुट (भ्वा णि ए से), बलात् अपहृ (भ्वा ए अ), प्रसङ्ग मुक् (क प से) २ लुट (लु) मुक्, अपहृ ३ वि धर्म नष्ट (प्रे) ४ छलेन अन्यायेन वा आदा (लु भा अ)-हृ ५ अत्यधिक अनुचित, मूल्य आदा ६ मुह (प्रे), बड़ी क मनो ह । सं पु, दे 'लूट' ।

लूटने योग्य, वि, लुठनीय, लुठितव्य ।

लूटनेवाला, म पु, दे 'लूटेरा' ।

लूटा हुआ, वि, लुटि(ठि)न, बलात् अपहृत मुपित ।

लूना, स स्त्री (सं) मर्कटक, ऊर्णनाभि, दे 'मवड़ी' २ पिपीलिका ३ मर्कटकमूल स्पर्श स्वप्नोप ।

लूनी, म स्त्री, दे 'लुआठी' ।

—लगाना, मु, फलहंज (प्रे), दे 'लुगरी करना' ।

लून, वि (सं) छिन्न, कृपा ।

लून, म पु (सं स्वर्ण) दे 'नमन' ।

लूनीया, वि (हि लून) लवण क्षार । स पु, लवणकार ।

लूम, स पु (स ल) लाल, पुच्छम् ।

लूमड़ी, म स्त्री, दे 'लोमड़ी' ।

लूना, वि (स लून >) छिन्न-लून पाणि-

हस्त-कर २ अपाग, नष्ट ३ असक्त, असमर्थ ।

लेंडी, स स्त्री (स लेंड >) बद्धमल, विद्या वति (स्त्री) २ दे 'मैगनी' ।

लेंस, म पु (अ) बीजम् ।

—मेगिनफाइड लेंस, पृष्ठदर्शकबीजम् ।

लेंहवा, सं पु (देश) पशु दूर-गृह कुल समन ।

ले, लेकर, अव्य (हि लेना) आरभ्य, प्रभृति, आ, (पचमी ॥ भी उ, गाव से लेकर) = आग्रामात्, ग्राम त कल से लेकर = अ (प्रभृति आरभ्य) २ गृहीत्वा, आदाय ।

लेई, स स्त्री (म लेप >) सदैवकलेप, २ मृषेष्टकचूर्णलेप ।

लेइ, म स्त्री (म लेइ) अवनेह, दे २ लपितका, द्रवप्रापकयंत्र ।

लेकिन, अव्य (य) किंतु, परंतु २ तथापि ।

—भगर, अव्य (अ + का) निद्रु, यदि ।

लेखकर, म पु (अ) व्याख्यान, भाषण २ प्रपाठ, अध्यापनम् ।

—बाड़ी, म स्त्री (अ + का) व्याख्यान प्रत्युत्तर ।

—साखना, मु, सीताह व्याख्या (अ प अ) अथवा अधि (प्रे), अध्यापयति ।

लेखचरार, सं पु (अ लेखचर) व्याख्यात, उपदेशक, बकर २ अध्यापक, उपाध्याय ।

लेक्टोमीटर, सं पु (अ) दुग्धमापकम् ।

लेख, सं पु (सं) लिपी(वी)-वि (वि) (स्त्री) २ चितित-निविबद्ध-विषय-वार्ता ३ प्रस्ताव, निबंध ४ दे 'लिखार' (१-३) । ५ गणन, संकलनम् ।

लेखक, सं पु (म) प्रवक्ता, पुस्तक-लेखक रचयितृ प्रणेता २ लिपि(पीनी) पार, प्रसिद्ध, पंजीगर, लिपिह, वाणिज्य ।

लेखन, स पु (म न) दे 'निपट' (१) । २ लेखन-व्यवसाय ३ गणन, संकलन ४ मूलत्व (स्त्री) ।

लेखनी, म स्त्री (सं) भण्डार-वर्ण, तूनी

लिना कर्म, दिवस, वराश्रय, वणिना, शस्त्री ।

लेखा, न पु (न लख >) नक्कन, मन्थन, लेखना २ व्ययमूल्य निरुक्ता अनुमान २ आनन्ददेवादेय, विवरण ४ अनुमान विवर ।

—डालना, सु, अयव्ययपविवादा ननन् (न) लिख (त प मे) ।

—पूरा या साफ करना, सु, अवशेष गुण (प्रे) ।

लेखिका, म स्त्री (स) ग्रथकर्त्री, पुस्तक प्रणेत्री २ लिपिनारी, लिपिका ।

लेखे, कि वि (हि लेखा) विचारो २ मन्थि ।

लेख्य, वि (म) लि(ले)खितव्य, ले(लि)खनह, ले(लि)खनीय । स पु (स न) लिखित लिपिबद्ध-विषय, लेख २ दे 'दस्तावेज' ।

लेखिस्तेनैव काउमिल, म स्त्री (अ) व्यवस्थापकममा ।

लेट, नि (अ) विरहित, विलीन, कल समग्र शरीर ।

लेट, म स्त्री (देह) २ 'ज्व' ।

लेटना, कि अ (हि लेटना) संविदा (तु प अ), शी (ज आ मे) २ विध्व (दि प से) ३ दे 'मरना' । म पु, संविदा शन, शननम् ।

लेटनेवाला, स पु, मवेशेयुक्त शवाड ।

लेटर, न पु (ले) (अ) पत्र, लेत्र, लेख्य, पत्रिक, पत्री पत्रक लिखित, मन्त्रेयपत्र ।

२ क्षत्र, बर्मा, मातृका अभिनिर्वाण ।

—वाक्स, स पु (अ) पत्रवेदिता ।

लेटाना, कि स, व 'लेटना' के प्रेर रूप ।

लेटा हुआ, वि, मविष्ट, शयान, शयित ।

लेड, स पु (अ) सीस, भीमकम्, दे 'सीसा' ।

लेडा, स स्त्री (अ) महिला, कुलाना, आर्या २ नारी, रानी ३ लडोपाधिधर कन्य पत्नी ।

—डाक्टर, स स्त्री (अ), चिकित्सा, चिकित्सा जीविनी, चिकित्सिका, रोगधारिणी ।

लेन, स पु (हि लेना) अदान, ग्रहण, धारण २ दे 'लहना' (१-२) ।

—दार, स पु (दि + का) उत्तर्माण, कपट, महानन ।

—देन, न पु (हि) अदानप्रदान, व्यवहार २ कौमीय, वृद्धिजीवन-विरा ।

लेना, कि न (म लभन) आदा (तु आ अ) प्रतिग्रह (तु प मे), प्रतिगिरि,

ग्रह (क प मे) २ अधिगम् (भ्वा प अ) जानद् (प्रे) प्राप् (स्वा प अ),

लन (स्वा आ अ) ३ धृ (भ्वा प अ), लु (अव-आ-लव (भ्वा आ मे) ग्रह

४ त्रि (भ्वा प अ) अभिभू (भ्वा प मे) वशीकृ ५ क्री (कृ उ अ) ६ क्षण

ग्रह ७ अके-कोडे निधा (जु उ अ) ८ स्वी-अगी-कु प्रतिगद् (दि आ अ)

९ प्रत्युद्-गम्-वन (भ्वा प से) आ (अ प अ) मस्तु समन्-सम् (प्रे)

१० कर्मभार स्वीकृ ११ रुचि (स्वा प अ) समग्रह (क प मे) १२ उपहस् (भ्वा प से), व्यग्योक्तिमि लज्ज (प्रे) ।

स पु, आदान ग्रहण, प्रतिग्रह, अधिगमन, प्रापण आसद्दन, आलवन, धारण, नानादान,

अगीकरण वशीकरण, संचय-यन, कर्मा, कर्म इ ।

लेने योग्य, वि (स) आदेय, प्राद्य, ग्रहीतव्य, प्राप्य, आसद्दनीय कर्म, कर्माणीय इ ।

लेने वाला स पु, अदात, गृहीत, अधिगत, अन्तर्दण्डित, अगीकृत, केत, प्राश्नक ।

लिया हुआ, वि (स) आत्त, आदत्त, गृहीत, प्राप्त अधिगत, धृत, अगीकृत, वशीकृत, कीर्त इ ।

ले अना, सु, दे ३ 'लाना' ।

ले च ना या ले जाना, सु, अदय गम् २ आत्मना सह नी (भ्वा प अ) ।

ले चुबना, सु, परमपि आत्मना सह क्षे अवमदन्श (प्र) ।

ले देवर, सु, सर्व मकलव्य २ कृष्ण, कथनपि ।

लेना एक न देना दो, सु, न कोऽप्यर्थ, न निमपि प्रयोजनम् ।

लेना देना सु, दानादान, आदानप्रदान २ नैसीय, वृद्धिजीवनम् ।

लेने के देने पटना, सु, मद्रस्यामद्र फल, इष्टाशायामनिष्टप्रसंग ।

ले मागना, सु, सह नीत्वा पलाय (भ्वा आ से), अपह (भ्वा उ अ) ।

ले भरना, सु दे 'ले कुवना' ।

लेन्स, स पु (अ) चान ।

लेप, स पु (म) अभि अजन, उपदेह, समा
लभ, लपनाह, प्रलेपपट्टिका २ लेपन, सुधा
३ लेपस्तर ४ उद्गतन, दे 'उदग्ग' ५ सपक,
सम्बन्ध ।

—चदाना, कि स, दे 'लीपन' ।

लेपक, स पु (स) लेपित, लेपकार, पल
गट, लेप्यकृत ।

लेपन, सं पु (सं न) दे 'न्याय' (१) ।

लेपना, कि स, दे 'लीपना' ।

लेपालक, स पु (ति) लेना + पालना)
दत्तक, दे ।

लेवर, स पु (अ) परि, सम, आयाम,
प्रयाम २ श्रमिक-कर्मकर, वर्ग ।

—पार्ति, स स्त्री (अं) श्रमिन्दत्त लभ ।

—यूनियन, स स्त्री (अ) श्रमिक-सम्वर,
सप्त-समाज मन्था ।

लेवुल, स पु (अ) लेपपत्रम् ।

लेवोरेटरी, सं स्त्री (अ) प्रयोगशाला,
२ रसायनशाला ।

लेमोनेड, स पु (अ) जवीर पेय पानकम् ।

लेखा, स पु (सं लेह >) दे 'रछडा' ।

लेवा, वि (हिं लेना) आ, दाह-दायक ।

—देवा, स पु, आशानप्रदानम् ।

नाम—, स पु, पुत्र २ दायाद ।

लेवा, स पु (स) दे 'लव' २ विह, लक्षण
१ सवय ४ अलवारभेद (सा) २ अत्य,
स्तोक ।

—मात्र, वि (स) अनु-अत्य-मात्र (-वा,
त्री स्त्री) ।

लेम, सं पु, दे 'लामा' (१) ।

—दार, वि (दि + प्रा) दे 'लसदार' ।

लेहन, सं पु (सं न) जहवा स्वादन स्व
दन-रसनम् ।

लेहाजा, वि वि (अ) अत, अतएव ।

लेहिन, स पु (ल) टकप-न, रमशोषन,
विहम् ।

लेह, वि (सं) लेहनीय लटव्य । सं पु
(सं न) दे 'अवन' २ लेहनीयाहार
३ अमृतम् ।

लेन, सं स्त्री, दे 'लहन' ।

लेसम, स पु (अ लाहमेंस) अधिवारपत्र
अनुज्ञाक्षेत्र ।

लेस, स पु (अ लेस) सज्ज, सत्रद, सिद्ध
२ जालभरण, दे 'क्रीता' ।

लेन्द, सं पु, दे 'मलमास' ।

लेोदा, स पु (स लेट्ट ह) आद्र पिड
(-ड)-घन, विलम्बित (-ल) लेट्ट (-ट्ट) ।

लेो, अन्य (हिं लेा) दृश्यता प्रेक्ष्यता,
अवलोक्यता । (केवल इन्हीं स्त्रो में) ।

लेोई, स स्त्री (स लोमीय) लोमी, नीहार,
अ विरु कर्णासु बबलभेद ।

लेोई, ल स्त्री, दे 'पेदा' (गूथे हुए अटेवा) ।

लेोक, स पु (स) भुवन, भुज्ज स्वरादय
चतुर्दशस्थानविशेषा २ जगद् (न), जगती
विश्व, चराचर, ब्रह्माण्ड, भुवन, विष्टप ३ नि
आ, बा ४ दिशा, प्रदेश ५ लोक-वा,
जन-ता ६ समाज ७ प्राणिम् ।

—कटक, स पु (स) जनपीठक ।

—तय, स पु (सं न) जनप्रज्ञानीयम् ।

—तय, स पु (ल न) निभुवन, नैलोक्य,
त्रिलोकी ।

—नाय, स पु (स) मज्जन् (पु) २ विष्णु
३ शिव ४ बुद्ध ५ लोकपाल ।

—पति, स पु (स) मज्जन् (पु) २ नृप
३ लोकपाल ।

—परलोक, स पु (स-त्री) उभौ लोकौ,
लोकद्वयम् ।

—पाल, स पु (स) दिक्पाल २ नृप ।

—प्रवाद, स पु (सं) जन-लोक, रव-मुनि-
(स्त्री)-प्रवाद ।

—मयांदा, सं स्त्री (सं) लोक, आचार-
व्यवहार, जगदीति (स्त्री) ।

—यात्रा, सं स्त्री (स) जीवन, प्राणधारण ।

—विश्रुत, वि (सं) जगद्धारण । २ व्यव
हार, लोकविश्रुत्यानि (न बहु) ।

—श्रुति, सं स्त्री (सं) दे 'लोहप्रवाद' ।

—सग्रह, स पु (सं) शास्त्रा, राजनं
प्रमाणनं २ लोकहितविषया ।

लोकान्तर, सं पु (सं न) परप्रेत-लोक ।

लोकान्याय, स पु (सं) जगदीति स्त्रि
(स्त्री) ऐरिज, लोक, मां-दवदार ।

लोकाट, स पु (चीनी छ + क्) लवक,
चैनन् ।

लोकालोड, स पु (न) चक्रवाल पवन
विशेष (पुराण) ।

लोकेपणा, स स्त्री (स) अम्बुन्यामिण्य
= स्वात्मिण्या ।

लोकोक्ति, स स्त्री (न) आनयन, जनन
स्थिक न्याय २ अलङ्कारभेद (स्तं) ।

लोकोत्तर, वि (स) ऊर्ध्वोक्ति, अनानुप
अपाध्व लोकाभिधानि, दिव्य, अवि,
विलम्बन अद्वयम् ।

लोग, स प (स लो) लोकाया जन
ना, मनवा, मनुष्या, नरा, मनुष्या, मत्वा,
मनुज (स्तं वृत्) ।

लोच, स स्त्री (हि लच) दे 'लचक'
२ योमन्त, मृदुता ।

लोच, स पु [स रवि (स्त्री)] अभि
हास, इच्छा ।

लोचन, स पु (स न) नयन, नेत्रम्, दे
'लोच' ।

लोड, स स्त्री (हि लोना) छ (लो, डन,
लोडन, वेल्न, लुग, लुडा, लोट ।

—पोट, वि, लुग (ठि) न, बलिच, स्थलिन
२ मुच, वदभव, अनुरागिन् ३ वि, आहुल
४ अत्यक्त, विषयन ।

—जाना, मु, मूर्च्छ (भ्वा प से, मूर्च्छति)
२ मृ (तु आ अ) ३ विघ्नम् (दि प
से) ४ चकितो मुग्धो वा भू ।

—पोट होना, मु, (पाडादिनि) वि, लुठ
(तु प से, भ्वा आ ने) २ भाव-अनुराग
वध (क प अ), ३ मइसा विउठन वा मृ
(तु आ अ) ।

—होना, मु, अनुल-आसक्त (वि) भू
२ अकुलीभू ।

लोडन, स पु (म न) दे 'लो' २ लोड
नवोत्त ३ हास्यभेद ४ माहकता ।

लोडना, कि अ (म लोडन) छट (भ्वा दि
प से), छट (भ्वा आ से, तु प से)
= पर्व पर्विण्य (प्रे) ३ अकुल-व्याकुल
(वि) भू । स पु तथा भाव, दे 'लो'
सं स्त्री ।

लोडा, मं प (हि लोना) कमल, दे ।

लोडन, स पु (स न) मयन, आवि
लोडनम्, मय ।

लोडित, वि (स) मयित, आवि-लोडित,
व्यापटित ।

लोडा, स पु. (म लोड छट) दे 'वडा' ।

लोय धि, स स्त्री (म लोड छट)
रव दे ।

—पोथ, मु रवि, शिक्षा धान-खित ।

लोथरा, स पु (हि लोथ) परल-मान,
पि (ड) ।

लोद घ, स स्त्री (स लोथ) (लाल) लोथ,
रक्त, मार्जन, तिरिट तिरुक् । (सफेद)
मुग्ध, मडा मडा लोथ, शाबा ।

लोड, स पु (स लवण) दे 'नमक'
२ आवण्य विशिष्टोन्मयम् ।

लोना, वि (हि लोन) लवण दे 'नमकीन'
२ सुन्दर, चार । ३ पु, कुडयमिति,
लवण इ लवणिकुडयस्य धूलि (स्त्री) ।

लोनिया, स पु (हि लोण) दे 'लनिया'
स पु ।

लोप, स पु (स) वि, नाश, क्षय, वि,
ध्वस ३ अदशन, निरोध, अतर्धान
३ अभाव, अविषमानता ४ वर्णविनाश.
(व्या) ५ विच्छेद, विराम ।

लोप मुद्रा, स स्त्री (स) अगस्त्यमुनिसूत्री,
लोप, वरप्रदा, बोधोन्की ।

लोवान, स पु (अ) मुग्धनिर्वासभेद
लोवानम् ।

लोबिया, स पु (स लोभ्य = मूंग) शुभा
मिजनक, चप(बल), चर्च, सुकुमार,
शिक्षा, दीर्घ, शिम्बी-बीज ।

लोभ, स पु (स) परद्व्याभिलाष, गृध्या,
गृध्रता, सुहा, लैत्य, लिप्ता, गर्द, दृष्ट्या,
काशा, दासा, लोभुषता भता, इच्छा, वाडा,
मनोरथ, अभिलाष, काम २, कापण्य,
वदयता ।

लोभित, वि (स) मोहित, आकृष्ट, हतचित्त,
दुग्ध, मुग्ध ।

लोभी, वि (स-भिन्) गृध्र, गर्दन, दुग्ध,
लोभयन्, लिप्सु, अभिजातुक, वृष्ण ।

लोम, स पु (स) लोमन् (न) दे.
'लोम' २ लोम, पुच्छम् ।

—हर्षण, स पु (म न) रोमाच, दे ।
वि, दे 'रोमहर्षण' ।

लोमङ्, स पु (म लोम >) *लामङ्,
*लोमङ्, दे 'लोम' ।

लोमङ्गी, स स्त्री (हि लोम) लोमङ्गा,
लोमादिका, दे गीदटी (संस्कृत मे गीदन्
लोमङ तथा गीदन्-लोमन्त्री के विष्णु समान
शब्दों का ही प्रयोग होना है ।) ।

लोमङ्ग, स पु (म) कृषिविशेष २ मेघ,
दे 'मेघ' । वि, बहुलोमान्वित, वेश्मन्, वैश्विक
२ कर्णात्रय (स्त्री स्त्री), औण (स्त्री स्त्री) ।

—माजार्, म पु (म) मधमाजार्, पूजि,
मूत्रपानन ।

होरी, स स्त्री (स लोह >) निद्राशयन,
गीतिका ।

—हेना, जि म, निद्रा नीतिप्रिया स्वप् (प्रे) ।

होल, वि (स) सङ्घ, कपमान, वैषमान,
क्षपित, कप २ चचलचित्त ३ क्षणमगुर, पण,
क्षणिक ४ उत्सुक, उत्पटित ।

होला, स स्त्री (स) बिह्व, रसना २ लहरी
स्त्री (स्त्री) ।

होलुप, वि (स) दे 'लोपी' ।

होलुपता, स स्त्री, दे 'लोम' ।

होशन, स पु (न) व्रणधालन, धावनीपथ,
*औषधजलम् ।

होष्ट, स पुं (स पु न) होष्ट, मृत्तिसामय्य,
दन्ति (पु स्त्री) दन्ती २ अक्षमराष्ट्र ।

होह, स पु (न होह ह) होह, दे 'होहा'
२ हर्षि ३ रक्तगण ।

—कात, स पुं (म) अवस्वान, होह,
चुवक ।

—कार, स पु (म) अयस्कार, दे 'नुहार' ।

—किट, स पु (स न) होह, मन्त्र, मङ्गर,
होहन, कृष्णचूर्ण, अयो, मन्त्र-रजस (न) ।

—चून, }

—चूर, } स पु (म होहचूर्ण) काण्डोद ।

—चूर्ण, }

—दावी, स पु (म विन्) लाहित, टक्का
न दे मोहागा ।

होहमी, स स्त्री (म होहमी) होहमी,
यष्टी-दंढ-गुह ।

होहा, स पुं (स होह ह) हृण, अयम्

(न) आयम, कान्, कान् वस, लीन, अक्ष
गिरि-मन्त्र, दृष्ट, पिष्ट २ अक्ष, मन्त्र,
३ होहमयद्वयम् । वि, रक्त, होह
२ अग्नि, दृष्ट-वीर्यम् ।

होहे का, वि, होह (ही स्त्री), लान्जदो,
मय (स्त्री स्त्री), आयस (मी स्त्री), होह,
आयस ।

होहे का चना, मु, सुदुष्कर कर्मम् (न) ।

होहे के चने चधाना, मु, सुदुष्कर कर्म मय
(मे) ।

—गाहना या लेना, मु, युष् (दि आ अ)
दे 'हटना' ।

—वजना, मु, युद्ध प्रवृत्त (भ्वा आ मे) ।
(निमीका)—मानना, मु, (अन्यस्व) प्रमुत्त
*स्वीकृत २ विपरा, वि (कर्म) ।

होहार, म पु (स होहकार) दे 'नुहार' ।

—सी स्वाही, स स्त्री, दे, 'हीरास्त्रीम्' ।

होहित, वि (स) रक्त, शीत । म पु (म)
मग्नप्रह, कुन, भौम २ रक्तवण । (स न)
रक्त, शिरम् ।

—चदन, म पु, हेमर-र, वस्मीरन,
कुकुमम् ।

—नयन, वि, (स) रक्त होहित, नेत्र-नयन
ईक्षण, सुपित, मुह ।

—दातपत्र, स पु, वीचनद, रक्त, उत्पन्न
नीरयम् ।

होहिया, स (हि होहा) होहपण्य
निम्न, होहविक्रियन् २ होहिनर्पम् ३ होह
गुल्वा ।

होह, म पु (स होहित) दे 'रक्त' तथा 'हृ' ।
हौ, अन्य (हि ल्य) दे 'सर' २ महस,
गुव ।

हौग, स पु (स लवग) देवकुमुद, भी,
प्रमन पुष्प मञ्ज, स्वर्ग, दिव्य, शायर, लव
२ लवग (घाणभूषणभेद) ।

हौडा, स पु (हि होना) (लाव्यविशिष्ट)
कान्त्र-दायक । वि, अवाध, भय २ चपल,
चपल ।

—हान, स पु, बाल्य २ चारयम् ।

हौडी दिया, स स्त्री (हि हौडा) यन्त्रा,
कुमारी २ पुत्री ३ दासी ।

हौडयाज, वि (हि न-या) पुमेधुनशान्तिम् ।

लैटिवाजी, मं स्त्री (हि + का) पुमैशुनम् ।
 लौ, म स्त्री (हि लपट) कील ला अग्नि
 ज्वाला (ल) ज्वाला, निहा, शिखा २ दीपशिखा ।
 लौ, म स्त्री (हि लग) अभिलाष राग
 २ वित्तभनो, वृत्ति (स्त्री) २ कामना, वाछा ।
 —लगाना, कि अ, उचन (वि) मू
 २ (भक्त्यादिषु) लीन-मग्न-निरत (वि) मू ।
 —लगाना, कि म, सतत अभिलष (स्वा प
 मे) २ आत्मान भक्त्यादिषु निमग्न-आसन्
 (मे) ३ आक्रे (मे) ।
 —लीन, वि (स) मग्न, आसक्त, निरत ।

लौकिक, वि (म) सामरिक, पट्टिक,
 प्रपञ्चिक, लौक्य २ व्यावहारिक आचारिक ।
 लौकी, स स्त्री (स लाव-वू दोनों स्त्री)
 अलावु नू (स्त्री) दे बद्दू ।
 लौटना, कि अ (हि उलटना) दे वापस
 आना तथा वापस जाना ।
 लौटफेर, म पु (हि लौटना + फेरना) बृहत्
 महा, परिवर्त परिवर्तनम् ।
 लौटाना कि स, दे 'वापस करना' ।
 लौह, म पु (म न) दे 'लोहा' (१) । वि,
 दे 'लोहे का' ('लोहा' में) ।

स

स, देवनागरोवर्णमालाया ऊनमिदो व्यजनवर्ण,
 वकार ।
 सक, वि (स) अराल, वृत्तिन, कुचिन, वक्र,
 भानत, मिहा, वेजित, आमुग्न, कुटिल । स
 पु (स) नदीवज्रम् ।
 सकिम, वि (म) शक्-विचित, —अराल-
 वक्र-वृत्तिन ।
 सग, स पु [स वगा (पु बहु)] वंगप्रति
 (= बंगाल) । (स न) जपु, जपु (न),
 रग, नागन, हस्तीर २ सीस-मक सीमपत्रम् ।
 —भस्म, स ए [म म्भमन् (न)] रगभस्म
 (न) ।
 सगन, स पु, दे 'सैगन' ।
 सक्क, वि तथा स पु (म) कपटित्,
 प्रताप (, पुप () ।
 सचना, सं स्त्री (स) बचन, प्रतारणणा,
 मया, कपट, कैत्र, बचथ ।
 सचित्त, वि (स) प्रतानित, विप्रलब्ध
 २ हीन, रहित ।
 सद्धन, स पु (स न) वदना, प्रणाम,
 प्रणति (स्त्री) नमस्कार २ पूजा, अर्वा,
 आराधना २ स्तुति-भुति (स्त्री) ।
 —वार, स स्त्री (स वदनमात्र्य) वदनमाला
 त्वा, तोरणस्रज (स्त्री) ।
 वदना, स स्त्री (म) दे 'वदन' (१३) ।
 वदनीय, वि (स) नमस्त्य, वध २ पूज्य,
 अर्चनीय ३ स्तुत्य, नानाज्य ।
 वदी, स पु (स णि) स्तनिपाठक, मा(म)
 गध, चरण, वदथ २ कारलुप्त, वदीदि
 (स्त्री) ।

—गृह, मं पु (सं न) कारा, कारा, गृह
 गारम् ।
 वंघ, वि (स) दे 'वदनीय' ।
 वंघ्या, स स्त्री (स) दे 'वध्या' ।
 वश, स प (म) कुल, अन्वय, अन्ववाय,
 गौत्र, अभिव्रत २ चाति (स्त्री), वग
 ३ शुद्ध, गृहजन, पुत्रकल्पादीनि (न
 बहु) ४ वेणु, वृद्धमथि, दे 'वाम' ।
 ५ मुरली, वशी ६ वृद्धस्थि (न), वृद्धवश
 ७ युवादीना स्वार्थि (न) ।
 —ज, स पु (सं) पुत्र २ सतिन ।
 —धर, सं पु (म) वशन, मगति (स्त्री) ।
 —शेषन, मं पु (स शो(रो)वना) वशशकरा,
 वश-जा, वाशी शुभा ।
 —हीन, वि (स) निर्वश २ अपुत्र ।
 वंशानुक्रम, म प (म) वश, अन्वय क्रम,
 परम्परा (स्त्री) अवलि वितति ।
 वंशावली, म स्त्री [स लो-नि (स्त्री)] वश,
 क्रम-श्रेणी परम्परा ।
 वशी, स स्त्री (स) वशिका, मुरली दे ।
 —धर, स पु (स) मुरलीधर, श्रीकृष्ण
 व, अव्य (का) व, दे 'और' ।
 वक् स पु (म) दे 'वगला' २ राक्षस
 विरोध ।
 —वृत्ति, स स्त्री (अ) विहालवृत्ति, दम ।
 वकालत, स स्त्री (अ) अभिप्रायकतात्व,
 वाक्कीलत्व, व्यवहारदक्षकतात्व २ परप्राति
 निध्य, परकायसाधकत्व ३ दूतकर्मन् (न)
 ४ परपशुमदनम् ।

—करता, क अ, परिपङ्क समर्थ (चु) २ अभिभावकवृत्ति लक्षणम् (भ्वा ष से) ।

—नामा, स पु (अ + ञा) अभिभावकना पत्रम् ।

वकील, स पु (अ) अभिभावक, व्यवहार दक्ष, वाक्कील, पक्षवादिन् २ रात्रि, दूत ३ प्रतिनिधि, प्रविष्टस्तर ४ परपत्र पोषक ।

वकुल, स पु (स) दे 'बकुल' ।

वक्त्र, ॥ पु (अ) शान २ शास्त्र (खी) ।

वे—, वि (का + अ) निर्बुद्धि ।

वक्ष, स पु (अ) समय, बाल २ अवसर ३ अवराश ४ ऋतु ५ वृत्तुनाल ।

—की वीज, स स्त्री, बालानकूले रात्रि ।

—वे वक्त्र, वि वि कालऽग्रासे वा, समयेऽ समये वा ।

—काटना, सु, येन केन प्रकारेण शल या (मे) यापयति २ मनो विमुक्त (प्रे) ।

—पडना, सु, आपद् आपत् (भ्वा ष से), उपनम् (भ्वा ष अ) ।

वक्तुं फीवसन, वि वि (अ) कदा वदा, यदा वदा २ यथाकालम् ।

वक्तव्य, वि (स) कथनीय, वचनीय २ हीन, वरित्त । स पु (स न) वचन, वचन २ बाल्यान्तरम् ।

वक्ता, स पु (स वक्तु) वाग्मिन्, वक्त्रपट्ट २ श्वायत्त, उपदेशक ३ कथ(वि)क ।

वक्त्रता, सं स्त्री (स) वक्त्रत्व, वाग्मिना, वाक्पाटव, भाषणशील २ व्याख्यान, भाषा, कथनम् ।

वक्त्र, सं पु (स न) मुख आस्थ, लपन, वदनम् २ चक्षु—चू (स्त्री) ३ लम्ब, प्रलम्बसरम् ४ दायाग्रम् ५ कावारम्भ ६ परिधानभेद ।

—न, स पु (सं) श्लाघन, विप्र २ दान, दशन, रदन, रादन ।

—मुद्र, सं पु (स) गणेश, मन्त्रम् ।

—शोधन, सं पु (स न) मुख्यमुद्रि (स्त्री) २ निवृत्त, लंकीय ३ मातुर्लङ्घनम् ।

वक्त्र, स पु (अ) परोपकाराय दान २ धर्मार्थ वस्तु संपद (स्त्री) ।

—नामा, सं पु (अ + ञा) दानपत्रम् ।

वक्त्रा, स पु (अ) अवराश २ उद्योग विश्रान्ति (स्त्री) ।

वक्त्र, वि (स) दे 'वक्त्र' २ हस्ति, कपटिन्, घूर्त । स पु (अ) जनेश्वर २ प्रगल्भ, भीम । (स न) नदीवक्त्र, वक्त्र ।

—गाम्भी, वि (स) कुम्भिगति २ दाढ, कुटिल ।

—मुद्र, स पु (स) गणेश २ शुक ।

वक्त्रता, स स्त्री (स) जिह्वाता, आनति, (स्त्री), लौटित्व २ छल, कपट, शङ्कम् ।

वक्त्रोक्ति, स स्त्री (स) काकुक्ति (स्त्री) २ शब्दालङ्कारभेद (सा) ३ चमत्कृत कुटिल उक्ति (स्त्री) ।

वक्ष स्थल, सं पु (स न) उरस्त्वक्षस् (न), बन्ध, उत्सर्ग, उर स्थलम् ।

वर्ग रह, लब्ध (अ) भादि, प्रभृति ।

वक्षन्, स पु (स न) भाषा, सरस्वती, वाणी दे २ उक्ति (स्त्री), कथन भाषण, वाक्य ३ परस्वार्थबोधक शब्दरूपभेद (भ्वा) ४ प्रतिज्ञा, संगत ।

वज्रह, स स्त्री (अ) कारण, हेतु ।

वज्रन, स पु (अ) भार, शुस्त्वम् ।

वज्रनी, वि (अ वजन) भारवद, शुभ २ मान्य प्रभावशालिन् ।

वज्रा, स स्त्री (अ वज्र) रचना २ आकृति (स्त्री) ३ आकार, व्यवहार ४ दक्षा ५ रीति (स्त्री) ।

वज्रास्त, स स्त्री (अ) माचिन्त्य, अमात्यत्व, मन्त्रित्वम् ।

वज्रीका, स पु (अ) (छात्र) वृत्ति भूति (स्त्री) ।

वज्रीर, स पु (अ) अमात्य, सचिव, मन्त्रिन्, मन्त्रधर, मन्त्र, धी-मुद्रि, नद्याय ।

वज्रीरी, सं स्त्री, दे 'वज्रास्त' ।

वज्र, सं पु (अ) प्राधनाया पूर्वं अंग प्रशान्त (वस्त्वम्), अत्रस्पर्श ।

वज्रद, सं पु (अ) अग्निर्द, मत्ता ३ शरीर ३ सुष्टि (स्त्री) ४ अभिव्यक्ति (स्त्री) ।

वज्र, स पु (स पु न) मुद्रि, पवि, अशनि (पु स्त्री), दम्भोक्ति, हस्तिनी, शनधार, अत्रोत्पत्ति, शब्द, विरिन्ध २ शीर २ शीरव, रत्न २ विपुल (स्त्री) । वि, अग्नि, दृढ-संहत-क्षीय-वर्धन, दुर्भेद २ धीर, भीषण ।

—घर, स पु (स) इद, बजिन, बज
पणि बाहु-मुष्टि ।
—पात, स पु (स) वज्रघन ।
—मय, वि (स) दे वज्र वि (१) ।
—हृदय, वि (स) पाषाणहृदय, नि-
रण, निदय ।
वट, स पु (स) न्यग्रोध, वृक्षनाथ, रज-
कल, क्षीरिन्, वट, बबरोडा, महजय ।
वटी, स स्त्री (स) गुली-रिफा, बटिया,
निम्नली, दे 'गोली' ।
वटु, } स पु (स) बालक, माणवर
वटुक, } २ बाल, शत्रुघ्नचरिन् ।
वडी, स स्त्री (स वटी) माणवटी ।
वणिक्, स पु (स वजिन) पञ्चनव
अथविक्रयिक २ वैश्य ।
वतन, स पु (अ) जम भू भूमि (दान
(स्त्री) स्वदेश २ निवासस्थान ३ जन
स्थानम् ।
वतीरा, स पु (अ) प्रधा, रीति (स्त्री)
२ आचार-वृत्तम् ।
वत्स, स पु (स) मोक्षिण, तर्पक दोष
वत्, तनुम २ शिशु, बालक ।
वत्सवर, स पु (स) दम्ब, दुर्वा, गि ।
वत्सवरी, स स्त्री (स) विहयवी गौ (स्त्री) ।
वत्सर, स पु (स) अय, हयन, वयम् ।
वत्सल, वि (स) अपत्यानुप्राप्ति सन न
स्नेहिन, पुत्रमेभिन् २ स्नेहिन, मेभिन् ।
वत्सलता, स स्त्री (स) (सन्नादिक्तस्य)
अनुरा-स्नेह ।
वदन, स पु (स न) मुष्ट, आननन ।
वदान्य, वि (स) वटप्रद, दानशाल, उदार
२ वलुकाव मधुरभाषिन् ।
वदाम, स पु, दे 'वदाम' ।
वदावद, वि (अ) वाचल, वाचाट ।
वट, स पु (स) पान इनन, हत्या,
विशसन, प्रमाथ, सहाम ।
वधक, स पु (स) नरपात्र, हर, हिम्ब
२ व्याध, शत्रुनिक ३ मृत्यु ।
वधू, वधूनी, स स्त्री (स) नवोदा, नववधू,
पणिगृहीता २ पत्नी ३ पुत्रवधू ।
वध्व, वि (स) वधार्ह, शीर्षच्छेद, हतव्य ।
वन, स पु (स न) अरण्य, विविन, अग्नी,

वनन रहन, दक्षाव, बालार २ वयिरा
३ वलम् ।
—चर स पु (स) वन, वरिन् विहारिन्
२ वन्य पशु मनुष्य ।
—माली, स पु (स) शीट्ट २ वनपुत्र
मालाधारिन् ।
—रात्र, स पु (स) सिंह ।
—चाम, स पु (स) विविनवसनि (स्त्री) ।
—वासी, स पु (स मिन) आटवित्र,
वनेवर वनोक्त ननिम् ।
—स्थली स स्त्री (स) वानन भूमि,
अरण्यप्रदेश ।
वनस्पति, स स्त्री (स प) पुष्पहीन फलि
वृक्ष (उ वट, पीपल आदि) २ वृक्ष
पात्र ३ वट, यमोध ।
—शास्त्र, स पु (स न) वनस्पतिविज्ञानम् ।
वनिता, स स्त्री (स) नारी, रमणी
२ प्रिया, काता ।
वनी, स स्त्री (स) वन, दे ।
वनी, स पु (स-निन्) वनप्रस्थ दे,
२ दे वनवासी ।
वन्य, वि (स) वन, उद्भव उद्भूत-जान,
अरण्यव चाल २ असम्भ, अशिष्ट
३ क्रूर, हित ।
वपन, स पु (स न) वेशमुच्चन २ बीजा
धानम् ।
वपा, स स्त्री (स) मेदस् (न), वसा ।
वट, स पु [स वपुन् (न)] शरीरम् ।
वप्र स पु (स पु न) वरण, साल, प्रकर
२ क्षेत्र ३ भूति (स्त्री) ४ दुपत
५ विविधवर् ६ वल्मीक-क मृत्तिकाचय ।
—व्रीडा, स स्त्री (स) वप्रक्रिया ।
वक्रा, स स्त्री (अ) प्रतिशालन २ अण्ण,
वार्ति-अनुमरण पालन ३ विश्वसनीयत
४ सुशीला ।
—दार, वि (अ + क्रा) विधतनोय, विश
म्ब, स्वाभिमत २ आज्ञा, कारिन् पालन
३ वन्यपात्रक ।
—दारी, स स्त्री (अ + क्रा) दे 'वक्र' ।
वज्रा, स स्त्री (अ) महा-मारी, जन, मार,
न-मि २ स्वयंमंचरिरोय ।
वबाल, स पु (अ) मार, मर २ वट,
विपद (स्त्री) ।

वमन, सं पु (म न) वय, वमि (स्त्री),
 छर्दन, छर्दिता २ वान-वमन, द्रव्यम् ।
 —करना, वि स, उद्, वय (भ्वा प से),
 छर् (चु) ।
 वय सधि, म स्त्री (स पु) बाल्ययौवन
 मध्यकाल ।
 वय, सं स्त्री [स वयस (न) आयुस् (न),
 वय क्रम, अनीनयौवनकाल ।
 वयस्क, वि (स) प्रौढ, प्राप्तव्यवहार,
 दे 'वाग्गि' ।
 वयस्य, स पु (स) समवयस्क २ मित्र,
 सखि (पु) ।
 वयस्या, स स्त्री (स) मखी दे ।
 वयोवृद्ध, वि (स) स्वविर, जरठण, जरित
 नृ, वृद्ध ।
 वरच, अव्य (म) अपि तु, दे 'वन्कि'
 १ परतु, रिनु ।
 वर, स पु (म) वृत्ति (स्त्री), मयोमि
 देवेभ्यो याचिनी मनोरथ २ (देवादीना)
 अनुग्रह, प्रनाद, भाषित् (स्त्री) ३ जामातृ
 ४ परिणेतृ, वोढृ ५ पति, भर्तृ । वि (स)
 उत्तम, श्रेष्ठ (उ ऋविवर = ऋविश्रेष्ठ) ।
 —मागना, कि स, वर याच (भ्वा आ
 ने) वृ (स्वा उ से) वृ (क् उ से) ।
 —दान, स पु (स) मनोरथपूर्णा, अभीष्ट
 प्रदान २ दे 'वर' (२) ।
 —दायक, स पु (स) वरद प्रद-दातृ,
 दाष्टितार्थद, समर्पक ।
 —यात्रा, स स्त्री (सं) ३ वनेन, परिणेतृ
 प्रस्थानम् । दे 'वरात' ।
 —वणिनी, म स्त्री (३) वर, अगना नारी,
 सुदरी ।
 वरद, स पु (अ) (पुत्र-) पञ्च पर्व
 २ ३ सुवर्ण रजत, पद्मम् ।
 —गदानी, ३ स्त्री, (अ + का) ग्रन्थे
 विहगमदृष्टि (स्त्री), अध्ययनादम्बर,
 अध्ययनभाम ।
 —स्थाह करना, शु, अत्यन्त-अत्यर्थ निरु
 (तु, प स) ।
 वरगलाना, कि स (का वरगलानीदन)
 प्रभुम् विमुद् (प्रे) २ प्रतुवन् (प्रे) ।
 वरजिज्ञा, स स्त्री (का) न्यायम्, द ।
 वरण, म पु (म न) वृत्ति (स्त्री), उन्मथण

२ भर्तृत्वेनापीकरण पतित्वेन स्वीकरण ३
 पूजा ४ आवरण, आच्छादनम् ।
 वरद, म पु (स) दे 'वरदायक' ('वर'
 के नीचे) ।
 वरदी, स स्त्री (अ) अनियतपरिधान, विशिष्ट-
 वनीय-वेष ।
 वरन्, अव्य (म वर >) अपि तु ।
 वरना, अव्य (अ) अन्यथा, इतरथा, नो चेत् १
 वराटिका, स स्त्री (स) कपटिका, दे 'कौपी' ।
 वरानना, स स्त्री (३) सुदरी, वरवणिनी,
 सुवदना मी ।
 वराह, स प (स) शूकर, दे 'वृभर' २,
 विष्णु, विष्णोरबनारविद्येय ।
 वरिष्ठ, वि (स) उत्तम श्रेष्ठ, पूज्यतम ।
 वर्य, स पु (म) पाशिन, प्रवेतम, अपू
 अपा, पति, जलेश्वर, मेघनाद २ जल
 ३ मूर्य ४ ग्रह विशेष (अ नेपचून) ।
 वरणाख्य, स पु (सं) माग ।
 वरुधिनी, म स्त्री (३) सेना, सेन्यम् ।
 वरे, कि वि [म अवारत (अव्य)] इत,
 एतत्स्थान प्रति, अत्र २ समीपपेपन,
 अतिकके (सव १२ अव्य) ।
 वरेण्य, वि (स) प्रधान, मुख्य २ वरणीय,
 सत्कार्य ।
 वर्कशाप, म स्त्री (अ) प्रावेशन, शिखर-
 शाल शाला ।
 वर्ग, सं पु (स) (सत्राणीयानां) गण,
 जाति (स्त्री), समूह, श्रेणी नि (स्त्री)
 २ समस्थानवत् व्यजनपंचक (उ वर्ग, इ)
 ३ अध्याय, परिच्छेद ४ सम, चतुर्भुज
 चतुरस्र ५ समदिशात, वर्गफल, कृति (स्त्री)
 (उ १५३=९ वर्गांश) ।
 —फल, स पु (म न) दे 'वग' (५) ।
 —मूल, स पु (सं न) वृत्तिसमानादय
 स्थायक, पद (उ १२१ वर्गमूल=३) ।
 वर्चम्, सं पु (म न) तेजस् (न), कां
 (स्त्री) ।
 वर्नेस्वी, वि (म स्विन्) तेजस्विन्, वाग्मिन् ।
 वर्चन, स पु (म न) त्याग २ निरुप ।
 वर्जनीय, वि (म) त्याग्य, हेय, वज्य
 २ निषेधाई ।
 वर्जित, वि (अ) त्वक, अमृष्ट २ निरिष्ट, हेयः
 वर्ण, सं पु (म) आवागां ब्राह्मणादिविभाग

चतुष्टय, जाति (स्त्री) २ रत्न राग
३ प्रकार, विधा ४ अक्षर ५ रूप, अकार ।
—धर्म, स पु (म) ब्राह्मणादिकृतव्यवस्थाप ।
—नाद, स पु (स) वर्ण-अक्षर, लोप ध्वनि
(निरुक्त) (उ, ध्वनोदर से ध्वनोदर) ।
—मात्रा, स स्त्री (स) वर्णमन्त्रानाम्,
अक्षरमेषो (व अ से ह तक) ।
—विकार, स पु (म) अक्षरविनिर्वा (निरुक्त)
(उ गान्धे मे गान्धे) ।
—विचार, स पु (स) व्याकरणविमेष,
रिधा ।
—विपर्यय, स पु (स) अक्षरव्यवस्थाप
(निरुक्त, उ दिस से सिद्ध) ।
—वृत्त, स पु (स न) अक्षरछन्दस (न) ।
—श्रेष्ठ, स पु (म) ब्राह्मण ।
—सक्र, स पु (स) वर्ण-जाति, निरुक्त
२ मिथुन, सक्र, सभक्तिक ।
—हीन, वि (म) वर्तमान, अपातय ।
वर्णन, स पु (स न) निरुक्त, विवरण,
व्याख्यान, सविस्तारवचन, वर्णना २ लवन,
गुणकयन ३ रजन, चित्रणम् ।
—करना, कि स, विदु (स्वा उ से), निरुक्त,
वर्ण (चु), सविस्तर कम् (चु), व्याख्या
(अ प अ) ।
वर्णनीय, वि (स) वर्णवित्तव्य, निरुक्तवि
त्तव्य, वास्तव्य, वर्ण्य ।
वर्णन, वि (स) निरुक्त, व्याख्या
२ उक्त, कथित ।
वर्णो, स पु (स विन) ब्रह्मचारिण २ लेखक
३ चित्रकार ।
वर्ण्य, वि (म) वर्णनीय, निरुक्तवित्तव्य,
प्रस्तुत, उपमेय, व्याख्यातव्य ।
वर्तन, स पु (स न) व्यवहार, वृत्त,
चरित, आचरण २ वृत्ति (स्त्री), आ-उप,
जीविका ३ पात्रम्, भाजन, दे 'वर्तन' ।
वर्तनी, स स्त्री (स) मातृ, पथ, पवित्र
२ वेषागमृत (स्त्री) ३ रक्तु (पु स्त्री),
रक्तुत्तम् । ४ वर्णनीति (स्त्री), अवधि
(स्त्री) ५ वर्णविधास, उद्देश्योद्धारणम् ।
वर्तमान, वि (स) प्रचरि (लि) न, प्रचर
सर्वसमन २ उपस्थित, विद्यमान ३ अधु
निव (स्त्री), अधुना इदानी, तन (नी स्त्री) ।

म पु (स) क्रियावा कालभेद (व्या)
२ वृत्तान ३ प्रवर्तितव्यवहार ।
वर्ती, स स्त्री (स) वर्ति निर्वा (स्त्री), दे
'वर्त' २ शब्दान्ता ।
—वर्ती, वि (म - तिन) मय, वामिन ।
वर्तुल, वि (म) गोल, प्रवृत्त चक्र, आकार ।
वर्दी, स स्त्री, दे 'वर्दी' ।
वर्द्धन, स पु (स न) वृद्धि उत्पत्ति (स्त्री)
२ समृद्धि (स्त्री) ।
वर्मो, स पु (स वर्मन्) क्षत्रियोपाधि ।
वर्बर, स पु (स) दैत्यविरोध २ वर्बरवासिन्
३ असभ्य, ग्राह्य ४ म्लेच्छ, दबर, बबर,
अनार्य ।
वर्ष, स पु (स पु न) अक्ष, इत्यन्,
समा, धार (स्त्री), म, दक्षर, मवन्
(मय) २ मेघ ३ वृष्टि (स्त्री) ४ महा
भूभाग ।
—मातृ, स स्त्री (स + दि) वर्षावर्षि (स्त्री),
जन्म, दिवस दिनविधि ।
—फल, स पु (स न) वाषिष्ठमहफल
वर्षिक पत्रिका ।
वर्षा, स स्त्री [सं वर्षा (स्त्री नहु)]
प्रावृष्टा (स्त्री), मेघागम, धनकाल,
अलगाव, पतनार २ वृष्टि (स्त्री), वर्ष-
वर्ष, गोपुत्र, पराभूतम् ।
—काल, स पु (म) दे 'वर्षा' (१) ।
—होना, कि अ, वृष्ट (स्वा प से), वृष्ट
भू । भू, अनिमय अवपद (स्वा प से) ।
वर्लद, स पु (अ वन्द) पुत्र २ सन्तान ।
वर्लद, स पु (स पु न) कटक, भावापक
२ वेष्टन ३ मङ्गलम् ।
वर्लपित, वि (स) परिवेष्टित, परिपूत ।
वर्लवत्तर, स पु (न) उत्साह, औत्सुक्यम् ।
वर्लहक, स पु (स) मेघ, जलद
२ वर्तव ।
वर्लि, स स्त्री (स) दे 'वर्ली' ।
वर्लित, वि (स) वर्लानामित, भागुरन
२ आवर्तित, प्रवृत्त ३ वर्लपित, दे ४ वर्लीनद,
वर्लित, वर्लित = आवर्तित ३ सहित
३ लग्न ।
वर्लो, स स्त्री (स) वर्लि (स्त्री), वर्लीलि
(स्त्री), २ 'वर्ली' २ श्रेणी अवलोकि-
(स्त्री) ३ रेखा ४ वृत्त, मय ।

बला, म पु (अ) स्वामिन्, प्रभु २ शसक
३ सधु ।

—अहद, म पु (अ) युक्ता ।

बल्लल, स पु (स पु न) बल्ल क
बल्लवाच (स्त्री) चोच शल्क, छली
२ बल्लन्वन्त, वसन्तवन्त ।

बल्ल म पु (अ) दे बल्ल ।

बल्लियन्, म स्त्री (अ) पितृनामन् (न) ।

बल्लमीक, म पु (स) बालमूर, बल्लकूट,
कृमिगैल्ल नाडु २ बल्लनीक मुनि ।

बल्लम, वि (स) प्रियतम दयित । म पु
(म) नायक प्रियतम, पान २ पति, भर्ता ।

बल्लभा, वि (म) प्रियतमा, पाना, दयिता ।
म स्त्री (स) प्रिय, पत्नी भार्या ।

बल्लरीति, म स्त्री (म) लता, बल्लीति
(स्त्री) २ मन्त्री ।

बल्लवद, वि (स) बल्लवर्तेन अनुग, अगा
वारिन् । स पु (म) सैवक दाम ।

बला, स पु (स पु न) अधिकार, प्रभुत्व
२ शक्ति (स्त्री) प्रभव, सामर्थ्य
३ अधीनता, आयत्ता ४ इच्छा, कामना ।
वि (स) अधीन, आयत्त ।

—(मं) करना, कि स, बल्लक दम् (प्र
पि प ने), बल्लनी (म्वा प अ), निवम्
(म्वा प अ) ।

—बल्ली, वि (स बल्लिन्) बल्लान्, बल्लानुग,
—बल्ल, —अधीन —आयत्त परतन् ।

बल्लिष्ठ सं पु, दे 'बलिष्ठ' ।

बली, वि (स शिब) निरत्नम्, मयप्रिन्
२ अधीन, —आयत्त ३ शक्तिमत्, ममथ ।

बलीशिरण, स पु (स न) (मणिमन्त्रीषथा
दिभि) स्वयंशीरणी २ दम् मन पिशह
ह, बलीशिर ।

बलीकृत, वि (सं) बल्ल नीप २ मन्त्रमोहित
३ मुग्ध ।

बलीभूत, वि (स) अधीन, आयत्त २ पावराग ।

बल्य, वि (म) दिनेय शिष्य, दम्प ।

बल्यक, वि (सं) आशाववन, अनुबलित्व
आदिन् सेविन् पाल्य ।

बल्यका, सं स्त्री (मं) आङ्गनुबलिनी पत्नी ।

बल्यता, सं स्त्री (स) अपेक्षता, परबलता,
पराधीनता ।

बल्य, स स्त्री (सं) वशवर्तिनी, आशानु
बलिनी, पत्नी ।

बल्य, अन्व (स) देवनिमित्तकवह्नित्वमन्त्र ।

—कार, स पु (सं) होम, देवयग ।

बल्य, सं पु (सं) कृतुराज, दे 'बल्य'
२ शीतलाटी ३ मयूरिकारोग ४ रामभेद
५ तालभेद ।

—तिलक, ■ प (सं ब क-वा) वल्लकृत भेद ।

—यचमी, स स्त्री (सं) क्षीपचमी, माघ
शुक्लपचमी ।

बल्यी, वि, दे 'बल्यी' ।

बल्यी, स स्त्री (स) बल्यि वसि (स्त्री),
नि, वास २ गृह, सधन् (न) ।

बल्यन्, म पु (स न) बल्य, वासत् (न) ।

बल्यिष्ठ, स पु (स) कृषिविशेष २ सप्तविं
मन्त्रानुगतो नक्षत्रविशेष ।

बल्यीका, स पु (अ) समयप्रतिज्ञा सविद्,
सध पत्रम् ।

—नवीस, स पु (अ + का) दे 'अनीनवीस' ।

बल्यीयत्, स स्त्री (अ) (मरणमश्रय)
अत्यादेश २ रिकयविभागम्यकथा ।

—करनी, कि ■, शृङ्खलपद्मदा (बु उ अ)-
क (प्रे, अर्पयति) ।

—नामा, स पु (अ + ना) शृङ्खल पत्र लेख ।

बलीय, स पु (अ) उदाय, साधन,
२ साहाय्य ३ सव्य ।

बल्यपरा, स स्त्री (स) बल्यपादा, पुषिती, दे ।

बल्य, म पु (स न) धन २ रत्न ३ सुवर्ण
४ तलम् । (सं पुं) गणदेवताविशेष, अष्ट
वक्त्र (धरी भुवश्च सोमश्च विष्णुश्चैव निली
उत्तर १ प्रत्युपध प्रभातश्च बल्योऽङ्गी क्रमात्
रमृता २ वल्लभ ३ रति । अष्ट इति
मह्यया ४ सुखं ५ विष्णु ६ सज्जन ।

बल्येन्द्र, स पु (मं) कृष्णशिव आनन्ददुग्धि ।

बल्यधा, सं स्त्री (स) बल्यदा, बल्यनी,
पुषिती, दे ।

बल्य, वि (अ) प्रस, लब्ध २ समाह्वय ।

बल्यी, स स्त्री (अ बल्य) प्राप्ति (स्त्री)
अभियन्त्र २ समाहार ।

बल्यि, सं स्त्री (स पु स्त्री) नाभेरधोभाग,
दे 'वेद' २ मूत्रादाय ३ रेचनयंत्र, गृहक
वं, दे 'रिचमती' ।

—कर्म, म पु [म-मन् (न)] यत्रिण मल
भुवनिकामनम् ।

वस्तु, स स्त्री (म न) पदार्थ, द्रव्य २ मत्स्य
३ वृत्तान ४ नाटकीयाख्यान, कथावस्तु (न) ।
वस्तुन, अव्य (स) यथार्थत, तत्त्वत, याया
र्थेन, मत्स्य, यथाधनम् ।

वस्त्र, म पु (म न) नि वसन, वासन (न)
आच्छादन जेल छ, अशुक, अवर, ए, ,
निचय, परिधान, छाद, वाम, कपट ।

वस्त्र, म पु (अ) भद्र गुण, विशेष
धर्म २ स्तुति (स्त्री) ।

वस्त्र, स पु (स) सगम समागम,
मिलनम् ।

यह, त्व (स म) तद् तथा अस्त के रूप ।
[उ स, अमौ (पु), मा, अमौ (स्त्री),
तद्, अद (न)] ।

यहन, स पु (म न) प्रापण, स्थानान्ते
नयन, २ धारण, उत्पादनम् ।

यहम, म पु (अ) भ्रम, आनि (स्त्री)
२ मिथ्या, शका-सदेह ३ मिथ्याधारणा
४ परिपूर्णता, कुक्षिरोग ।

यहमी, वि (अ यहम) सहायस्मन्,
सहायिक, आश्रित् ।

यहशी, वि (अ) वन्य, आरण्य २ अमन्य,
अनिष्ट ३ दुर्दान, दुर्दमनीय ।

यहाँ, कि वि (हि कह) तत्र तस्मिन् स्थाने ।

—से, कि वि, तन, तन्मात्र स्थानात् ।

यहाँ, कि वि (हि कहा + ही) तत्रैव, तस्मि
न्नेव स्थाने ।

यही, तर्ब (हि कह + ही) स एव, असावेव
(पु), मैव, असावेव (स्त्री), तदेव, अद
एव (न) ३ ।

यहि, म पु (स) अनल अग्नि, दे 'आग' ।

याडनीय, वि (स) स्पृहणीय, कमनीय,
काम्य २ वाञ्छित, दे ।

याडा, स स्त्री (सं) इच्छा, अभिलाष,
कामना ।

याडित, वि (म) अभिलषित, अभीष्ट ।

वा, अव्य (स) अथवा । २ दे 'वह' ।

वाइदा, म पु, दे 'वादा' ।

वाइम धान्सलर, स पु (अ) विश्वविद्यालय
अध्य उपाध्यक्ष, कुलपति ।

वाइम प्रेसिडेंट, म पु (अ) उपसभापति,
उपप्रधान ।

वाइसराय, स प (अ) राज निर्निग ।

वाक्, म पु [म वाच (स्त्री)] वणी,
वाक्य २ सरस्वती शारदा ३ वाणिज्य,
वाक्शक्ति (स्त्री) ।

—पट्ट, वि (स) वाक्कुशल, वाग्मिन् ।

—पट्टता म स्त्री (म) वाक्पाठव, वाग्मिन्ता,
वाक्वैद्यम् ।

—पाठ्य, म पु (म न) अभियन्ताधी
क्षारण वडुभाषणम् ।

—सत्यम, स पु (स) वाक्यम, मिनवाच्
(स्त्री) ।

वाक्, म पु (स) वाक्य, वचनम् उक्ति
(स्त्री) । ॥ स्त्री, वणी, सरस्वती, शारदा ।

वाक्कड, कि वि (अ) वस्तुन, यथाधन । वि,
यथाय सत्त्व ।

वाक्ता, वि (अ) स्थित, वर्ति, म्भ ।

वाक्कि (क) आ, स पु (अ) घटना, वृत्त
२ समाचार ।

वाक्किफ, वि (अ) परिवर्तित, अभ्यन्त
२ नात बोद्ध अभिज्ञ ३ अनुभवित् ।

—कार, वि (अ + का) कायामिष्ट, कुशल,
निष्ठात ।

वाक्किचत, म स्त्री (अ) परिचय, परि-
शान २ अनुभव ।

वाक्य, स पु (स न) पदसमूह, बोध्यता
काप्रासक्तियुक्त पदोच्चय २ कथन, वचन
६ सूत्र ४ आभाषण ।

वागा, स स्त्री (स) वल्गा, दे 'लगाम' ।

वागीश, म पु (म) वृहस्पति २ ब्रह्मन्
(पु) ३ वाग्मिन्, वावि । वि (स) सुवक्त्र-
सुव्यरथात् ।

वागुरा, स स्त्री (स) मृगवधनार्थ जालमेद ।

वागुरिक, स पु (म) व्याप, शाकुनक ।

वाग्गाल, स पु (म न) वाग्दर, शब्द
उत्तर, वाक्प्रपञ्च ।

वाग्दड, स पु (स) निभर्तना, अधिक्षेप ।

वाग्दत्ता, स स्त्री (स) *नियन्त्रा, *वाचा
पिता (वन्या) ।

वाग्दान, स पु (सं न) वन्द्यादानप्रतिष्ठा ।

वाग्दुष्ट, वि (म) वडुभाषित् २ अभिज्ञात ।

वाग्दवी, म स्त्री (स) सरस्वती, दे ।

वाग्मी, म पु (स वाग्मिन्) वाग्मिदग्ध
वाग्मिदग्ध सुवक्तृ २ पठित प्राज्ञ ३ वृद्ध
स्पति ।

वाग्मिलस, म पु (म) मानलो वातालाप ।
वाग्मय, वि (म) वाक्यामय २ वाग्मिद्वि
(वाग्मि) । म पु (स न) भाषा २
साहित्यम् ।

वाच, म स्त्री (स) वाणी २ वाक्यम् ।

वाच स स्त्री (अ) २ वटिका ।

वाचक वि (म) साधक, धोतक, सूचक,
बोधक २ पठक वाचयितु ३ वक्तु ।

—छुत्ता, म स्त्री (स) उपमात्कारभेद ।

वाचन स पु (स) पठन अध्ययन,
उच्चारण २ कथन ३ प्रतिपादनम् ।

वाचस्पति, स पु (म) वृद्धस्वति, सुविदस ।

वाचा, स स्त्री (सं) वाणी, गिरा २ वाक्य,
वचनम् ।

वाचाट-ल, वि (स) बहुभाषिन्, मुखर,
जल्प(रा)क २ वाक्पटु ।

वाचाल(ट)ता, म स्त्री (स) मुखरता,
बहुभाषिणा २ वाग्मैदग्धम् ।

वाचिक वि (स) वाग्मिवचक २ मौखिक ।

वाची, वि (स-चिन्) सूचक-बोधक ।

वाच्य, वि (स) वचनीय, वचनीय २
अभिधेय, अभिधावृत्ता बोध्य (अर्थ) ३
कुस्मित, हौन ।

वाच्यार्थ, म पु (म) अभिधेय-मूलशब्द,
अर्थ शब्दाद्य ।

वाच्याजाल्य, वि (मं) भद्राभद्र (वाक्यदि) ।

वाङ्, स पु (अ) उपदेश, धार्मिक
व्याख्यानम् ।

वातपेय, स पु (म पु न) श्रोतवागभेद ।

वातपेयी, म पु (म विन्) कुतवातपेय
२ ब्राह्मणोपाधिभेद ३ सुवृत्त ।

वातसनेय, म पु (सं) यजुर्वेदस्य शास्त्रा
विशेष २ वाद्यसंज्ञ ।

वाचिष-वी, वि (अ) रचित, योग्य, युक्त ।

वाजी, स पु (अ-विन्) अश्व, पीठक
२ आमिशामरतु (न), मोरट (=फटे
हुए दूध का पानी) ३ पशुिन् ४ वाण
५ वामक ।

—कर, वि (सं) वामोदीपक (औषधादि) ।

—करण, म पु (म न) वीथवृद्धिर
प्रयोग ।

वाट, म पु (स) मार्ग २ वास्तु ३ भण्य ।

वाटर, म पु (अ) अरु, वारि (न) २
उल्लास्य ३ भूकम्प ४ होराभा ।

—ग्रूक, वि (अ) अकरोष्ठ, उल्लास्यम् ।

—फाल, स पु (अ) उल्लप्रपात ।

—वक्त्रम्, म पु (अ) २ उल्लयन ३ जल्य
आल्य ।

वाटिका, स स्त्री (म) क्षुद्र आराम
उद्यान दे 'बगीचा' ।

वाडवाग्मि, स स्त्री (स) वाटव ब(वा)'
वान् ।

वाण, म पु (स) बाण, दे ।

वाणिज्य, स पु (म न) क्रयविक्रय,
निगम, वणिक्कर्मन् (न), व्यापार ।

वणी, स स्त्री (सं) दे 'वाणी' ।

वात, स पु (म) पवन, वायु, दे ।
२ देहस्थवायु ३ रोगभेद ।

—चक्रम्, म पु (स न) चक्रवान, वातावृत्त ।

—ज, वि (स) वातद्वेषण (शोणदि) ।

—नरित, स पु (स) हनुमन् मारुति ।

—तूल, स पु (स न) वृद्धमूत्रक, शीघ्र
हामन् ।

—ध्वज, स पु (स) वातरथ, मेघ ।

—पट, म पु (स) ध्वज, पताका ।

—पुत्र, म पु (स) हनुमन् २ भीम
३ महापूर ।

—प्रकोप, स पु (मं) (वारी) वायुवृद्धि
(स्त्री) ।

—रोग म पु (म) वायु-जन्य-व्याधि,
चलत्क, अनिलामय, ३ 'गटिपा' ।

—चैरी, म पु (सं रिन्) वनाद्, दे ।

वाताद्, सं पु (सं) नेत्रोपमन्, वाताद्,
वातवैरिन् । (पल) वाताद्, वातामन् (दे
वाताम्) ।

वातायन, सं पु (म न) क्षुद्रमरुतिना
२ दे 'रोशनदान' ।

वातुल, सं पु (सं) वामन्, दे 'बावला' ।

वात्सल्य, स पु (मं) रमविशेष (काव्य) ।
(म न) पित्रो-अपत्यस्नेह, वत्सलता ।

वात्स्यायन, सं पु (सं) -वायुमूत्रमात्र
वार २ वामसूत्रप्रणेता, पंडित, मंदनाग ।

वाद, म पु (स) वदानुवाद, वादप्रति
वत्, कदापि, शास्त्रार्थ, दे । २ मित्रान्,
राक्षान् ३ कलह, विवाद ।

—विवाद, म पु (स) दे 'वाद' (१) ।

वादक, म पु (स) वद्वदयितृ २ वक्तृ
३ वदिन्, तर्किक ।

वादन, स पु (स न) वचन-दिन ध्वनन
२ वाच, दे ।

वाद्रायण, स पु (म) महापि वेदव्यास ।

वादा, स पु (अ वददा) नियतममय
२ प्रतिष्ठा, वचन, मंगर ।

वादानुवाद, स पु (म) दे 'वाद' (१) ।

वादी, स पु (स-दिन्) अभिव्यक्तृ, अभि
नोति अभिन्, शिरोवर्तिन्, दे 'मुद्ग'
२ प्रलापर, प्ररोध ३ वक्तृ ।

—प्रतिवादी, म पु (स वादिप्रतिवादिनौ)
अभिप्रत्ययिनी २ पक्षिप्रतिपक्षिणौ (सव दि) ।

वाद्य, म पु (स) वादित्र, ज्योत्षन् ।

वानप्रस्थ, म पु (स) तृतीयाश्रमिन्,
वानम आरण्यक, तपस २ तृतीयश्रम
३ ४ मधूक पलाश-वृक्ष ।

वानर, स पु (म) कपि, मकट, दे 'वदर' ।

वानरी, म स्त्री (स) मकटी, वनोमुदी ।

वापस, वि (फा) विप्रत्याप्रतिनि, वृष,
प्रति, गत-आगत-यात-आदान ।

—आना, क्रि अ, प्रत्यागम, प्रत्यावृत्
(आ आ से) ।

—करना, क्रि स, प्रतिगम, प्रतिनिवृत् (प्रे)
२ प्रतिदा (जु उ अ), प्रतिक्र (प्रे
प्रत्यर्पयति) ।

—जाना, क्रि अ, प्रति, गम निवृत् ।

—लेना, क्रि स, प्रत्यादा, पुन स्वीकृ ।

—होना, क्रि अ, दे 'वापस जाना' २ प्रति
दा-आदा (कम) ।

वापसी, वि (फा वापस) प्रत्या-प्रतिनि, वृत् ।

स स्त्री, प्रति, गमन-आगमन-आवृत्ति (स्त्री)
२ प्रति, दान-अर्पण-आदानन् ।

वापी, स स्त्री (स) वापि (स्त्री) दीपिका,
वपिका ।

वावस्ता, वि (फा) वद, सयत, २ लम्ब,
दिष्ट ३ सद्ध, समर्थित ।

वाम, वि (म) मव्य, दक्षिणेतर, दे 'वयो'

२ प्रविद्ध, विरुद्ध प्रतीय ३ कुण्डि ४ दुष्ट,
नीच ५ अमर, अमगल ।

—देव, म पु (स) शिव ।

—मार्ग, स पु (स) वामावर वेदविरुद्ध
मप्रदायविशेष ।

—मार्गी, म ॥ (स गिन्) वामाचारिन्,
वे-विरोधिन् ।

—लोचन, स स्त्री (स) वामाक्षी, सुदरी,
शोभना ।

वामन वि (म) खर्व, हत्व, लघुकाय ।

स पु (म) सट्टन, खट्टेक, खर्व, हन्व
२ विष्णु ३ शिव ४ पुराणप्रयविशेष ।

—अवतार, स पु (स) वामनावतार)
अदिनियमनो विष्णो पचमावतार ।

वामनी, स स्त्री (स) खवा खट्टनी ।

वामा, स स्त्री (स) नारी, रामा, २ दुर्गा,
गौरी ३ लक्ष्मी, सरस्वती ४ स्कन्दानुचरी ।

वामी, म स्त्री (स) वामा, २ रासमा
३ श्याली ।

वायव्य, वि (म) १३ वायु, सवधिन्
देवताक निमित्त, वायवीय ।

—कोण, स पु (स) पश्चिमोत्तर-कोण
दिशा, वायवी ।

वायस, स पु (स) वाक, ध्याय ।

—वायु, म स्त्री (स पु) वात, पवन,
अनिल, गन्ध(वा)ह, मनीर-रण, महत्,
मा म)वत, श्वसन, मानरिश्च, सदागति,
जगत्प्राण, नभस्त्वत्, पवमान, प्रमजन,
धूलिध्वज, वणिप्रिय ।

—कोण, म पु (स) पश्चिमोत्तरदिशा,
वायवी ।

—गुल्म, म पु (स) वातचक्र, चक्रवान,
वत्या २ बल-गुल्म आवर्त ३ वातगुल्म,
उदरव्यधिभेद ।

—पुत्र, म पु (स) पवन-सुत पुत्र, हनुमत् ।

—मक्षण, स पु (स) वायु, मल-भुन्,
यनिभेद २ पवनमक्षण, सर्प ।

—मडल, स पु (स न) अतरि(री)श्व,
गगन २ वातावरणम् ।

वारट, म पु (अ) अधिकारपत्रम् ।

—गिरफ्तारी, न स्त्री (अ + क) *ग्रामेधा
धिकारपत्रम् ।

—तलाशी, स पु (अ + का) *अवेण
विचारपत्रम् ।

—रिहाई, स पु (अ + का) (कारागारा
दिभ्य) मोचनविचारपत्रम् ।

वारवार, कि वि, दे 'वारवार' ।

वार, स पु (स) वदाय, नन् २ अवसर
समय ३ सप्ताह-दिन-रात्रि-समय वामर
४ द्वार ५ आधान, प्रहार, आक्रमण
६ आवरण ७ समूह ८ पर-भ्यम् ।

—करना, कि म (अ + क्तिन्) (स्वा प अ)
अवत्क (स्वा प अ) आक्रम (स्वा प
से, स्वा आ अ) ।

—प्राप्ती जाना, सु, लक्ष्य न व्यथ (कर्त्त)
अस्व अपत्यस्य पद (स्वा प रु) २ बुद्धि
निष्पत्तीम् ।

वारक, वि (स) निषेधक, प्रतिबधक ।

वारण, स पु (म न) निप्रतिषेध,
२ विघ्न, अनुराध । (म पु) गज, वाण
वार, कवच-भ्यम् ।

वारदान, स स्त्री (अ) दुष्पत्नी २ विन्ध,
मञ्जरी ।

वारना, कि स (म वारण) अनिष्टवारणाया
उत्सृज्य (पु प अ) स्वयं (स्वा व अ) ।

म पु, शानिकर उत्सृज्य, कष्टवारक दानम् ।

वारनारी, स स्त्री (स) वारमुष्णी, वरागमा,
वैद्या, वारावन्मिनी ।

वारपाद, स पु [■ अवारपादौरे (पु न)]
(नवादीना) तद्वय २ अन्त, सीमा । कि
वि, अवाराद पाद यावत् ३ निकटपाश्चात्
परपाश्चर्यम् ।

वारगमा, स स्त्री (स) वारनारी, द ।

वारा, स पु (स वारण) मित्रव्यय
२ लाभ ।

वारागमी, स स्त्री (स) वाराशिका,
शिवपुरी, तप स्थली, व(वा)रणमी ।

वारान्यास, स पु (हि वार + यास)
निषय, निश्चय, निर्धारण २ समन्धान,
मधि, शम-भनम् ।

वारापार, म पु तथा कि वि, दे 'वारपार' ।

वाराह, म पु (ह) वराह, दे ।

वारि, स पु (म न) वनीय, जल, ३ ।

—चर, म पु (म) उल्लङ्घन २ मन्त्र ।

—न, म पु (म न) वमन्, वर्द्धमान-भ्यम् ।

—द, स पु (स) वारि, धर-वाह, मेघ ।

—धि, स पु (स) वारिनिधि, सार ।

—यत्र, स पु (म न) जलयत्र, दे
'पञ्चयत्र' ।

वारित, वि (न) नि-अव, रद्ध, निवर्तित
२ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध, प्रत्यादिष्ट ३ आच्छादित,
अवृत्त ।

वारिद^१, स पु (स) मेघ, चन्द्र ।

वारिद^२, वि (अ) आगत, आगत २ प्रकट,
अविर्भूत ।

वारिम, स पु (अ) अक्ष, हर हारिन् भाजू,
दायाद, दायिक २ उत्तराधिकारिन् ।

—होना, कि अ, वैदिकमपराधिकारी अद्
(दि आ ने), दायत्री भू ।

वारीष्ट, स पु (म) वारीष्ट, मार ।

वारणा, स स्त्री (स) वरिणा, मघ, सुरा
२ पश्चिमदिशा ३ वरणाती ।

व डे, म पु (अ) रक्षा, गोपन २ पुर-
विभय ३ कारागारादीना विभा ।

वारर, स पु (अ) रक्षक २ कारारक्षक ।

वारा, स स्त्री (म) विषय, प्रसंग २ विषय
दती, जनसुवि (स्त्री) ३ समाचार,
वृत्त ४ वात्स्याय दे ।

वात्तलाप, स पु (स) मन्त्र, स्वर्ण,
समाचन, आलाप ।

—करना, कि अ, सङ्घ-मवद (स्वा प मे),
मन्त्र (स्वा आ से) ।

वात्तिक, स पु (म न) उत्तानुकुटुहलार्थ
प्रशङ्कनी ग्रथ, सीमा । (सं पु) चर २ दूत ।

वाद्धक्य, स पु (सं न) वद्धक, वृद्धत्व,
वृद्धावरण, स्वविरत ।

वाधिक, वि (स) अतिरिक्त, वात्सरिक, सांख्य
त्सरिक २ प्रवृत्त्येय ।

वाल टेयर, म पु (अ) स्वर्णदेवक, स्वर्ण
नेत्र ।

वाल (लि) ईन, सं पु (अ) पिनी, माण
पिनी (दोनों दि) ।

वालिट्, म पु (अ) पिट्, जनक ।

वालिट्, म स्त्री (अ) माट् (स्त्री), जननी ।

वालमीकि, म पु (म) रामायणप्रणेता
विद्वत्, ब्रह्मन्वीक, प्रायेण, अपहृति,
बहिर्ग्रेह ।

वावदूक, म पु (म) वार्द्धन् २ वावन् ।

वावेला, स पु (अ) विलाप २ कोलाहल ।
वाप्प, स पु (सं) उष्णन्, दे 'भाप'
२ अशु (न) ।

वासती, स स्त्री (स) माषवी, प्रहसंती,
वसन्ता २ यूथी ।

वास, सं पु (स) अव, स्थान-स्थिति (स्त्री)
नि, वस्ति (स्त्री) २ गृह, भवन ३ सु, गंध
४ दुर्, गंध ।

वासक, स पु (स) अटरूप, वैद्य भिषङ्,
भाट (स्त्री), वासा-सक ।

वासकेट, स स्त्री (अ वेस्टकोट) वासकटि ।

वासना, स स्त्री (स) कामना, अभिलाष,
बाढा २ सत्कार, भवना, स्मृतिहेतु ३ ज्ञान
४ प्रत्याशा ५ देहात्मबुद्धिजन्यो मिथ्यासं-
स्कार (न्याय) ।

वासर, स स्त्री (स पु न) दिवस, दिनम् ।

वासव, स पु (स) इन्द्र, दे ।

वासित, वि (स) भावित, सुरभीकृत
२ बलवेष्टित ३ पशुपित ।

वासी, स पु (स-सिन्) निवासिन,
वाल्मीक्य ।

वासुदेव, स पु (स) श्रीकृष्ण ।

वास्तव, वि (स) सत्य, यथार्थ, अवितथ ।

—मै किं वि, वस्तुतः, सत्यम् ।

वास्तविक, वि (स) तथ्य, सत्य, तार्त्विक,
दे 'वास्तव' ।

वास्ता, स पु (अ) सवष, सपकं ।

—पड़ना, मु, व्यवहारावसर जन् (दि-
आ से) ।

वातु, सं पु (अ पु न) वैदमभू, गृहपो-
तक २ गृह, सौष ।

—विद्या, स स्त्री (स) भवननिर्माणकला,
स्थापत्यम् ।

वास्ते, अव्य (अ) अर्थ, निमित्तम्, चतुर्थी
विभक्ति से ओ (उ, तेरे वास्ते = त्वर्थ,
तुम्यम् ।

वाह', अव्य (फा) साधु, वर, भद्र, शोभन
२ अद्भुत, आश्चर्य ३ शिक् ४ इत ।

वाह, अव्य, साधु-साधु इ ।

—करना, कि स, अभिप्रति, नद (भ्वा प
से), साधु-वादान् दा २ करतलध्वनि कृ ।

—होना, मु, जमिप्रति-नद (वर्म) ।

वाहक, स पु (स) भारवह, भारिक
२ सारथि, यत् ।

वाहन, स पु (अ न) यान, युग्म, दे
'सवारो' ।

वाहवाही, स स्त्री (फा) रयानि विभ्रुति
(स्त्री), साधुवाद, प्रशंसा ।

—लेना या लूटना, मु, यश वितन् (त उ
मे), साधुवादान् लभ् (भ्वा आ अ),
प्रशंसापात्र भू ।

वाहिद, वि (अ) एक, एकाकिन, एकल,
अद्वितीय ।

वाहिनी, स स्त्री (म) सेना २ नदी
३ सैन्यभेद (= ८१ हस्ती, ८१ रथ, २४३
घडे, ४०५ पैदल) ।

—पति, म पु (स) सेनापति ।

वाहियात, वि (अ वाही + का यात)
व्यय, निरयक २ दुष्ट, खल ।

वाहीतवाही, वि (अ + का) निरर्थक, निष्प्र-
योजन २ असंगत, असंबद्ध । स स्त्री, प्र,
अथ पन २ गालि (स्त्री), अपमानजनम् ।

वाह्य, वि (सं) बोधव्य २ बोद्ध ।

विदु, स पु, दे 'विदु' ।

विध्याचल, स पु (स) विध्य, पर्वतविशेष ।

वि, उप (स) वैशिष्ट्यनिपेधादिवोधक
उपसर्ग (व्या) ।

विकच, वि (स) विकसित, उत्पुल्ल २ केश-
हीन ।

विकट, वि (स) कठिन, दुस्माध्य, दुष्कर
२ भीम, भीषण, भयप्रद ३ विशाल, विस्तीर्ण
४ दुर्गम ५ वक्र, कुटिल ।

विकराल, वि (स) दे 'विक' (२) ।

विकल, वि (स) विह्वल, उद्विग्न, वि, अकुल,
अद्यान २ रुद्धित, अपूर्ण ।

विकलाग, वि (स) अ, प्रोड, अगहीन,
विकलन्यून, अन्न इद्रिय ।

विकला, स स्त्री (स न) कलाया धष्टिमो-
भग ।

विकल्प, स पु (स) अम, भ्रान्ति (स्त्री)
२ मदेह, संशय ३ विभाषा (भ्वा)
४ विरद्ध विपरीत, विचार-व्यवस्था ५ चित्त-
वृत्तिभेद (यो) ६ अर्थाङ्कारभेद (सा)

७ अवानरकल्प ८ एच्छिकविषय ।

विघ्न, म पु (म) व्याघात, अतराय, प्रत्यूह,
प्रतिबन्ध, बाध धा, रोष, प्रति वि, हम्भ ।

—कारी, वि (स रिन्) बाधाजनक विघ्न,
वर-कर्तृ विधातिन् ।

—नाशक, स पु (स) विघ्न, विनाशक
पति-रान नायक, गणेश ।

विचक्षण, वि (सं) विदस्, बुद्धिमत्
२ कुशल, दक्ष, निपुण ।

विचरण, स पु (म) चलन, गमन, २. भ्रमण,
पयटन, विहरणम् ।

विचल, वि (स) क्लृप्तमान, क्लृप्त २ चञ्चल,
चल ।

विचलता, स स्त्री (स) अस्थैर्य, चाञ्चल्य
२ वि आकुलता ।

विचलित, वि (स) पतित, स्खलित २ लोल,
अधीर, चञ्चल ।

विचार, स पु (म) मातृ (स्त्री), वृत्तपना,
भावना, संवत्स, तर्क, मत, अभिप्राय
२ चिन्तन, ध्यान, आलोचन, विचारण-भा,
सत्त्व-निगम, वितर्क-कण, मनमा कल्पन,
विवेचन ३ व्यवहारदर्शन, विचारकरणम् ।

—शील, वि (स) विचारवत्, विवेचिन्
समीक्ष्य विमृश्य-कारिन् ।

—शीलता, स स्त्री (स) विवेचिना, बुद्धि
मत्ता ।

विचारक, म पु (स) विचारधर्मन्याय,
अप्यक्ष, अधिकरणिक २ विवेचिन्, गुण
दोष, विवेचक, आलोचक ।

विचारणीय, वि (स) विचाय, विनयाय,
विचाराहं, ध्येय २ सदृग्ध ।

विचारना, क्रि अ (स विचारण) विचर्-
मभू (भ्रे), विच-नर्क (चु) ध्वे (स्वा
प अ), विमृन् (तु प क), आ पर्या,
लोच् (चु) ।

विचारित, वि (स) ध्यात, चिन्तित, तर्कित,
पदालोचित, विमृष्ट २ निर्णीत निश्चित ।

विचार्य, वि (स) दे 'विचरणीय' ।

विचिक्षिप्ता, ग स्त्री (स) रुद्धय, सदेह ।

विचित्र, वि (स) कर्तुर-रित, वल्माप पित,
घार, शबल २ विशिष्ट, विलक्षण, असाधारण
३ अद्भुत, आश्चर्य, विरमापक ४ सुन्दर ।

—वीर्य, सं पु (स) चन्द्रवंशीयो नृपविशेष ।

—शाला, स स्त्री (स) अद्भुतालय ।

विच्छिद्य, वि (सं) निकृत्त, विलुप्त, विवृक्क
२ विवृक्त, विशिष्ट, पृथक्-स्थित ३ समाप्त,
अवसित ।

विच्छेद, स पु (स) लवन, लाव, कलन,
विच्छेदन २ विश्लेष-वण, वियोजन ३ क्रम,
नय नवन ४ विरह, वियोग ।

विछोह, सं पु (स विशोम >) वियो-
विरह ।

विजय, वि (स) निजय, विविक्त, नि-शलाक,
पकान ।

विजय, स पु (स) जय, जयन, वशी
स्वायत्ती करणम् ।

—दशमी, स स्त्री (म) दे. 'दशहरा' ।

—पताका, स स्त्री (स) जयकेतु २ जयचिह्न ।

—शील, वि (स) विचयिन्, सदाजयिन्, जिष्णु ।

—श्री, स स्त्री (स) जयलक्ष्मी (स्त्री) ।

विजया, म स्त्री (सं) भगा, हर्षिणी, दे 'भाग'
३ उमासखी ३ दुर्गा ।

—दशमी, स स्त्री (म) आश्विनशुक्ल-दशमी,
आर्याणां पर्वविशेष, विजयोत्सव ।

विजयी, वि. (स-यिन्) वि, नेतृ, जयिन्,
जित्, जिष्णु (विजयिनी स्त्री) ।

विजयोत्सव, स पु (स) विजयदशमी-
विजयादशमी, उत्सव मयन् (न) -क्षण ।
२ नय, उत्सव-क्षण उद्घर्ष ।

विजय, वि (सं) अनर, निर्नर, बाह्य
रहित २ नूतन, नवीन ।

विजल, वि (स) अनल, निर्जल, जल-बारि,
रहित ।

विनासीय, वि (म) भिन्न-असमान, जाति
वर्ण २ सम्भारहित, अमम ।

विनिगीषा, स स्त्री (स) विजयकामना
२ उत्कष ।

विनिगीषु, वि (स) जयामिलायिन् ।

विजित, स स्त्री (अ) अभिमान, अभ्यागम,
दर्शनार्थं गमन, दर्शनयात्रा ।

विजित्य, स पु (अ) दर्शक, प्रेक्षक २
अभ्यागत, गृहागत ।

विजिटिंग कार्ड, स पु (अ) *दर्शकपत्रम् ।

विजित, वि (स) पराजित, अभिभरा, भूत,
वशी-स्वायत्ती, कृत ।

विजेता, स पु (स-तृ) दे 'विजयो' ।

विज्ञ, वि (स) प्रवीण, कुशल, विशेषज्ञ
२ धीमत्, बुद्धिमान् ३ कोविद्, पंडित ।

विज्ञता, स स्त्री (म) प्रवीणता २ बुद्धिमत्ता
३ विद्वत्ता ।

विज्ञप्ति, स स्त्री (स) सूचन, रक्षणम् ।

विज्ञात, वि (स) अवगत, अवगत २ प्रसिद्ध ।

विज्ञान, स पु (स न) ज्ञान, बोध, अवगत,

चपलविध (स्त्री) २ विषयविशेषस्य विनिष्ट

ज्ञान ३ अध्यात्म-विद्याज्ञान ४ कामन् (न)

५ आत्मानुभव ।

—मयकोप, स पु (स) ज्ञानेन्द्रियसंज्ञिता

बुद्धि (स्त्री) ।

विज्ञापन, स पु (स न) बोधन, सूचन

बोधन, व्यापन, विज्ञप्ति (स्त्री), विज्ञापना

२ विज्ञापनपत्रम् ।

विष्ट, स पु (स) कामुक, लप २ वृष्ट

३ नायकभेद (सा) ३ कामुकानुचर ।

विष्टप, स पु (स न) शाका शाखा

पल्लवसमुदाय २ क्षुप गुल्म म ३ वृक्ष ।

विष्टपी, स पु (स पितृ) वृष्ट, पदप ।

विष्टामिन, स पु (अ) खाद्यीजम् ।

विष्टवना, स स्त्री (स) अनु-करणकार

कृति (स्त्री) २ अव-उप हाम, अवहलना

२ निर्भर्त्तन मा ।

—करना, कि स, अव-उप-हस (स्वा प मे)

२ सौपदास अनुकृ विष्टव् (पु) मवहाम

अवमन् (दि आ अ) ।

विष्टारना, कि स (हि वात्ना) विवृ

(तु प से), विष्टिप (तु प अ) २ (वि,

नरा (मे) ३ विष्टरुपलाय (मे) ।

वि(वि)डाल, सं पु (स) मावार दास

लोचन-अक्ष, दे 'विज्ञा' ।

वितडा, स स्त्री (म) परपक्षन्युद्गमपूर्वक

स्वपक्षस्थापन २ प्रविपक्षस्थापनाहानो जल

३ व्यथ, कलह विवाद ।

वित्त, वि (म) विस्तृत, विस्तीर्ण ।

वितथ, वि (स) विनथ्य, अमत्य, अनृत

२ न्यर्थ ।

वितरण, स पु (स न) दान, अरण, उत्पण

२ विभाजन, अंशम् ।

—करना, नि म, अंश (तु) विम

(स्वा उ अ) ।

वितर्क, स पु (सं) ऊह हन, ऊहापोह
२ सदेह ३ अनुमान ४ अर्थोत्तरभेद
(सा) ।

वितल, स पु (स न) पातालविशेष ।

वितस्ता, स स्त्री (स) पचनदमानवती

नदविशेष ।

वितस्ति, स स्त्री (स पु स्त्री) द्वादशागुल,

दे 'विज्ञा' ।

विस्तान, म पु (स पु न) उल्लोच, चद्रानप

२ विस्तार ३ यह ।

वितुड, मं पु (म वि + तुड >) गज, द्विप ।

वितृष्य, वि (स) नि स्मृ, निष्क म, सतोविद् ४

विष्ट, स पु (स न) सपत्ति (स्त्री), धन, दे ४

—वान्, वि (स न्य) धनाढ्य ।

—हीन, (वि) विधेय ।

विदग्ध, वि (स) चतुर, दक्ष, कुशल २-

व्युत्पन्न, पठित ३ प्लुष्ट, व्युष्ट । स पु (सं)

रमिक २ विद्वान् ।

विदग्धता, स स्त्री (स) चतुर्यै ३ शक्ति-

विद्वत्ता ।

विदा, स स्त्री (अ विदाअ) प्रस्थान, प्रवाण

३ गमनानुमति (स्त्री), प्रस्थानानुष्ट ।

—करना, कि स, प्रस्था प्रया (मे) विद्यन्

(तु प अ) ।

—होना, कि अ, प्रस्था (स्वा आ अ),

प्रया (अ प अ) ।

विदाई, स स्त्री (हि विदा) दे 'विदा'

(१२) । ३ 'प्रास्थानिक धन द्रव्य' वा ।

विदारक, वि (स) विपाटक, विभेदक, विदारण ।

विदारण, स पु (सं न) विपाटन, विभेदन-

विदलन २ हनन ३ युद्धम् ।

विदारीकृद्, स पु (सं पु न) भूमिदुष्प्राड-

विदारीरका, वृष्य स्वाड, कडा ।

विदिन, वि (स) अवगत, बुद्ध, ज्ञान, दे ।

विदिता, सं स्त्री (स) दशार्थानां रागधानी,

नगरविशेष (मेलमा) २ दिक्-दिशा, बोध ।

विदीर्ण, वि (सं) विपाटित, विदलित, विभिन्न

२ तुष्टि, भग्न ३ हन ।

विदुर, मं पु (स) धृतराष्ट्रस्य भ्राता मन्त्री च ।

विदुष, म पु (सं विद्वान्) पंडित, प्राज्ञ ।

विदुषी, वि (मं) विप्रकृष्ट, सुदूरवाहित ।

विदूर, सं पु (सं) देहामिर, प्रहसित,

प्राप्तिद, वामनित २ भट ।

विदेश, स प (म) परदेश, देशान्तरम् ।
 विदेशी, वि (॥ विदेशीय) अन्य पर, देशीय,
 वैपर ऐशिक ।
 विदेह, वि (म) अवाय अक्षरीर रिन् ।
 स पु (म) जनक, मिथिलेश्वर ।
 —पुर, म प (म न) जननपुरी मिथिला,
 विदेहा ।
 विद्व, वि (म) मच्छिद्र, मनुस्वीर्ण [सुत्तर
 बेधित, चित्रित, निमिन्न २ क्षण, प्रणित
 ३ पित, अस्त ।
 विद्यमान, वि (स) वर्तमान, भवत्, २ प्रत्यक्ष,
 समक्ष, उपस्थित ।
 विद्यमानता, स स्त्री (म) उपस्थिति (स्त्री),
 वर्तमानता ।
 विद्या, म स्त्री (म) ज्ञान, विज्ञान, बोध
 २ अध्यात्मविद्या, परा विद्या ३ शास्त्रम् ।
 —दान, म पु (स न) अध्यापन २ पुस्तक
 दानम् ।
 —प्राप्ति, स स्त्री (स) ज्ञानाधिगम,
 अध्ययनम् ।
 —वान्, वि (स, वत्) विद्वत्, प्राज्ञ ।
 —हीन, वि (स) अशिक्षित, निरक्षर, अज्ञ,
 अविद्य ।
 विद्यारम्भ, म पु (स) १ वेदारम्भसंस्कार
 २ अध्ययनोपक्रम, शिक्षाप्रारम्भ ।
 विद्यार्जन, म पु (स न) ज्ञान-बोध, प्राप्ति
 उपलब्धि (दोनों स्त्री) २ विद्यया धनोपा
 र्जनम् ।
 विद्यार्थी, स पु (स धिन्) छात्र, शिष्य,
 २ अधीयान, अध्येतृ, पाठक ।
 विद्यालय, स पु (स) पाठशाला, विद्या,
 गृह-मन्दिरम् ।
 विद्युत्, स स्त्री (स) चचला, चपला,
 तन्त्रित (स्त्री), दे 'विजली' ।
 —प्रिय, स ॥ (स न) वास्य २ वास्य
 पानम् ।
 विद्रुम, स पु (स) प्रवाल, भोगीर,
 दे 'मृगा' २ रत्नवृक्ष ३ पत्तन-व, क्रिस(श)-
 लय-यम् ।
 विद्रोह, स पु (स) राज-द्रोह, विरोध,
 प्रनाक्षोभ, प्रवृत्तिप्रवेष, राज्यविवर्ध ।
 विद्रोही, स पु (स-दिन्) राज-द्रोहिन्
 विरोधिन् दुह ।

विद्वत्ता, स स्त्री (स) पारित्य-गुत्पत्ति
 (स्त्री), विद्वत्त्व, विद्यप्रकर्ष ।
 विद्वान्, स प (म वद्व) पण्डित प्राज्ञ,
 बहुजन विपश्चिन् गानकम् ।
 विद्वप, म प (स) वेर, शत्रुता, विरोध ।
 विद्वेषी, स पु (॥ विन्) वैरिन्, विरोधिन्,
 शत्रु ।
 विधवा, म स्त्री (म) रक्षा, मृतभर्तृका,
 विश्वस्ता, यनिनी जालवा ।
 —पन, स पु (म + हि) वैधव्य, दे ।
 विधवाधर्म, म पु (॥) *विधवालय ।
 विधाता, म पु (म नृ) ब्रह्मन् (पु),
 त्रगदुत्पादक मृष्टिकर्तृ परमेश्वर २ विधायक,
 रचयितृ ३ व्यवस्थापक, *प्रबंधक ।
 विधात्री, स स्त्री (स) रचयित्री, विधायिका
 २ व्यवस्थापिका ।
 विधान, स प (स न) अनुष्ठान, करण,
 नपादन, निष्पादन, साधन २ व्यवस्था,
 आयोजन, *प्रवच ३ रीति पद्धति (स्त्री),
 प्रणाली ४ निर्माण, रचन-ना ५ उपाय,
 युक्ति (स्त्री) ६ पूजा, अर्चा ७ शासन
 पद्धति (स्त्री), राज्यव्यवस्था ८ विधि,
 नियम, कल्प ।
 —करना, *क्रि स, विधा, आदिश (हु प अ),
 शान् (अ प से) ।
 —परिपद्, स स्त्री (स) विधि-अधिनियम,
 निर्मात्री सभा ।
 विधायक, म पु (स) अनुष्ठान, कर्तृ, निष्पा
 दक, साधक २ निर्मातृ, रचयितृ, विपातृ,
 ३ व्यवस्थापक प्रबन्धक, प्रस्तोतृ ।
 विधि, स स्त्री (॥ पु) (शास्त्रणा) आदेश,
 नियोग, नियम, कल्प, अनुशासन २ रीति
 (स्त्री), कार्यक्रम, प्रणाली ३ व्यवस्था,
 भगति (स्त्री), क्रम ४ आचार, व्यवहार
 ५ प्रवृत्ति, रीति (स्त्री) ६ भाग्यम् ।
 म पु (स) ब्रह्मन्, विपातृ (पु) ।
 —निषेध, स पु [स धी (दि)] नियोग प्रति
 षेधो (दि) ।
 —पूर्वक, क्रि वि (स-वंक) यथाविधि, यथा
 शास्त्र २ यथानुष्ठान, यथोचितम् ।
 —वत्, क्रि वि (स) दे 'विधिपूर्वक' ।
 —वशात्, अ (स) देवात्, भाग्येन, भाग्य
 देव-वशात् ।

—वाहन, स पु (म) हम, मराल, धवलपक्ष ।

—हीन, वि (स) ऊर्ध्व, आवाहन, विधि विन्द, अनिवार्य ।

विपु, स पु (स) चतुर्मास ।

—वदनी, स स्त्री (स) चन्द्रमुखी २ सुन्दरी ।

विपुर, वि (स) दुस्त्रिण शीघ्र २ आव, प्रसन्न ३ वि, आलस्य ४ अममय ५ परत्यक्त ६ विन्द [विपुरा (स्त्री)] ।

विषेय, वि (स) अनुषय, वनय, निष्पाद्य, माय ३ वदवर्धन, विनीत, वक्ष्य विनय, वचनेक्षित ३ विधानाह, अनुगामनाय ।
स पु (म) विरोध, वावयोरभेद (या) ।

विष्वम, स पु (स) वि, नाश, ज्वलाद, निर्मूलन, उच्छेद ।

विष्वसी, वि (म-मिन्) विष्वस्य वि, नाशक, निर्मूलयिन् ।

विष्वस्त, वि. (स) वि नष्ट, उच्छिन्न, निर्मूलित, वस्तन ।

विमल, वि (स) प्रगत, वदमान २ आवर्तित, प्रवण ३ वक्र, निष्ठा ४ मनुविन ५ नम्र ६ शिष्ट ।

विमली, स स्त्री (म नि) प्रार्थना, वाचना २ विनय, नम्रता, शिष्टता ३ प्रवणता, प्रह्लाता ।

विनय, स स्त्री (म पु) प्रशय, नम्रता, शालीनता, सौम्य, दाक्षिण्य २ शिष्टा ३ निवेदन, प्रार्थना ४ निर्ममता ५ नाति (स्त्री) ।

—शील, वि (स) मम विनीत, शिष्ट, दक्षिण, सन्ध्य, सुजन, सुशील ।

विनय, वि (म) क्षयिषु, नष्ट, अनित्य, अस्वादिन् ।

विनष्ट, वि (स) वि, पवन, अवमम, उच्छिन्न, निर्मूलित २ मृत ३ विहृत ४ मृत ।

विना, अन्य (स) अनुरोध मुक्ता, वनदित्वा विहाय (मम द्वितीया व माध) । अने (पञ्चमा के साथ) ।

विनायक, स पु (म) गणेश, दे ।

विनाश, स पु (म) दे विध्वंस तथा 'नाश' ।

विनाशक, स पु (स) नाशक, विध्वंस ।

विनिपत्य, स पु (म) वि, नाश ध्वम

० वध, हत्या ३ अर अय, मन, अनार, अवधीरणा ।

विनिमय, स पु (म) परि वन-वृत्त (स्त्री), प्रति परि, दानम् ।

—करना, वि म, विनिम (भ्या आ म), प्रतिना, परिकृ (मे) ।

विनियोग, स पु (म) कृत्यविशेषे मनप्रयोग २ उपयोग प्रयोग ३ प्रेषण ४ प्रवेष्ट ।

विनीत, वि (स) दे 'विनयशील' ३ निर्मल ३ शिक्षित ४ अपमान ५ दान ६ धामिन् ।

विनोद, स पु (स) कु(वी)नहल, कौतुक, मनोरन्ध्रभाषार २ खेल, क्रीडा, लाल ३ परिहाम, प्रमोद ४ आनन्द, हस ।

विनोदी, वि (स दिन्) कु(वी)नहल, कौतुकिन् २ लीलामय, मीमांसी ३ आनन्दित उल्लासित ४ परिहामशील, प्रमोदप्रिय ।

विन्याम, स पु (स) स्थापन, व्यवसन, निधान २ रचन, परिष्करण, अलङ्करण ३ प्रणिधान, उत्तरधन, अनुष्यधन ४ क्षेप पणम् ।

विपक्षी, स स्त्री (स) वीणाभर २ वैलि (स्त्री) ।

विपक्ष, स पु (स) प्रति विरुद्ध-विपरीत प्रतियोगि-विरोधि, पक्ष २ विरागिवग, प्रति द्विवग ३ प्रतिवादिन्, विराधिन् ४ विरोध ५ अपवाद, वाधनियम (भ्या) ६ साध्याभाववान् पक्ष (न्या) । वि (स) विरुद्ध २ असहाय ३ विरुद्ध, निवान ।

विपक्षी, स पु (स दिन्) प्रतिपक्षिन्, प्रति वादिन्, पर-पक्षीय पक्ष पक्षवादिन् प्रति द्विन् २ दृष्ट, वैरिन् ३ निपत्य, पक्षहीन (पक्षी जादि) ।

विपक्षि, स्त्री, स स्त्री (म) भाषा, हृष्ट, पण्य शला-वीर्या, ३ विभेदपदार्था (पु) ३ वाणिज्य, व्यापार ।

विपक्षि, स स्त्री (स) आपद् विपद् आपत्ति (भ्या), व्यवसन, महा-दुःख २ आपद् विपद्, वान-मय ।

—आना वा पङ्कना, वि अ, व्यवसन-व्यवधा (भ्या ए अ) वृत्त आनमापद् (भ्या ए मे) विपद् उपपन्न (भ्या ए अ) ।

विपक्ष, स पु (स) कु, पय माग २ वद-आचर आचरणम् ।

—गति, स स्त्री (सं) कुमार्य-कुपय, अमन गति (स्त्री) ।

—गा, न स्त्री (सं) कुमार्यगामिनी नारी २ नदी, मरिच (स्त्री) ।

—गामी, वि (स मित्) कुमार्यगामिन, दुर्वृत्त, दुष्टाचारिन् ।

विपद्-दा, स स्त्री (स) दे 'विपत्ति' ।

विपन्न, वि (स) विपद्-अपद्, मल्ल, २ दुःखिन् ३ अन्त ४ सुत ।

विपरीत, वि (सं) विरुद्ध, प्रतीप, अप प्रति, सन्ध, प्रातिकूल, विलोमक २ रट्ट, क्रुद्ध ३ कट कर, दुःखप्रद ।

विपरीतता, स स्त्री (स) प्रतीपता, प्रणि कूलता, विरोध, वैपरीत्यम् ।

विपर्यय, स पुं (सं) व्यत्यास, व्यत्यय, विपर्याप्त, व्यतिक्रम २ अव्यवस्था, क्रममाव ३ भ्राति (स्त्री), स्थिति ४ मिथ्याज्ञानम् ।

विपर्यस्त, वि (स) व्यत्यस्त, अवरोध २ अव्यवस्थित, भग्नक्रम, सकुल, सकीर्ण ।

विपर्यास, स पु (स) दे 'विपर्यय' (१२, ४) ।

विपल, स पु (स न) क्षण, निमिष, पलत्य पठितमी मास ।

विपाक, स पु (स) पचन, पक्वता २ चर मोक्षार्थ, पूर्णता ३ फल, परिणाम ४ कर्म फल ५ अदरे मोक्षनस्य १ स्वरूपेण परिणति (स्त्री) ६ स्वाद ७ दुःखति (स्त्री) ।

विपिन, स पु (स न) जगत्, वन, दे । २ उपवन, वाटिका ।

विपुल, वि (स) बहु, भूरि, प्रभूत, अत्यधिक २ विशाल, विलोप ३ बृहत्, महत् ४ अगाध, अतिगभीर ।

विपुलता, स स्त्री (स) आधिक्य, बहुत्व, अतिशय २ विशालता, निरधीर्गता ३ महता, बृहत्ता ।

विपुला, सं स्त्री (स) पृथिवी, दे ।

विप्र, स पु (स) माक्ष्ण दे २ पुरोहित ।

विप्रतिपत्ति, स स्त्री (म) विरोध, विस वाद, असंगति (स्त्री) २ परस्परविसर्वादि वाक्यम् (न्या), दुष्प्राप्ति (स्त्री) ४ विवृति (स्त्री) ५ अनिष्टि (स्त्री) ।

विप्रतिपेध, स पु (स) मिथोविरोध, असंगति (स्त्री) ।

विप्रलम्भ, स प (म) वियोग, विरह, रागिणोर्विच्छेद २ छल, वचन-ना ।

विप्लव, स पु (स) उपदेव, डिद, अनर २ विद्रोह, दे ३ कुप्यवस्था क्रमहीनता ४ आपद्-विपद् (स्त्री) ५ विनाश आप्लाव, जलबुद्ध्यम् ।

विफल, वि (स) निष्फल, दे ।

विबुध, स पुं (स) पठित, प्राण १ देव ३ चद्र ४ शिव ।

विबोध, स पु. (म) जागरण २ सम्यग्ज्ञान ३ सावधानता ४ विकास ।

विभक्त, वि (स) कृतविभाग, परिकल्पित २ पृथक्कृत, विदलेषिन् ३ विभिन्न, प्राप्त विभाय ।

विभक्ति, स स्त्री (स) विभजन, विभग्य २ वियोग, पार्यन्त्य ३ सुप्रत्यय, निड प्रत्यय (न्या) ।

विभव, स पु (स) धन, भयति (स्त्री) २ देशर्च, प्रताप ३ मोक्ष, नि श्रेयसम् ।

—शास्त्री, वि (स-किन्) पनाट्य २ प्रता पित् ।

विभा, सं स्त्री (स) कानि (स्त्री), प्रभा २ किरण ३ सौन्दर्यम् ।

विभाग, स पु (स) परिकल्पनं, विभजन, अशनं, वदन २ अक्ष, भाग, राक्ष-व, एव देश ३ दायाद, रिक्यभाग ४ प्रकरण, अध्याय ५ शाखा, कापक्षेत्रम् ।

—करना, क्रि स, दे 'वर्तिना' ।

विभाज, स पु (स) विभाजयित्, विभा, परिकल्पक, वट(ड)क ।

विभाजन, स पु (स न) वट(ड)न, विन जन, विभा, परिकल्पनम् ।

विभाजित, वि (स) कृतविभाग, परिकल्पित, वटित, पठित ।

विभाज्य, वि (स) विभजनीय, विभाज्य, वटि(डि)ज्यम् ।

विभाजना, स स्त्री (स) अर्थालकारभेद (सा) ।

विभावरी, स स्त्री (स) शर्वरी, रात्री २ दूती, कुट्टनी ।

विभाषा, स स्त्री (स) विवक्ष्य (न्या) ।

विभिन्न, वि (सं) विच्छिन्न, लून, कृन्त

० विभक्त त्रिभुक्त, पृथक्स्थित ३ नाना
अनेकवदु-वि विष ।

विभिन्नता, म स्त्री (स) विविधता - पृथक्
कनास्त्वम् ।

विभीषण, स पु (म) राजषाणां । वि
(स) भयकर, भीम ।

विभु, वि (स) सर्वव्यापक विश्वव्यापिन
सर्वग, सर्वगत, २ नित्य ३ सुमहत् ४ शक्ति
मत् । स पु (म) ईश्वर २ स्वामिन्
३ जगन्मन् ।

विभूति, म स्त्री (म) विभव, ऐश्वर्य २ धन,
वित्त ३ अलौकिक-दिव्य शक्ति मिद्धि (दोनो
स्त्री) ४ शिवभूतभन्मन् (न) ५ लट्भी
(स्त्री) ६ (विविध) सृष्टि (स्त्री), वृद्धि
(स्त्री) उत्कर्ष ।

विभूषण, म पु (स न) अलङ्करण, मटन
२ आभूषण अलङ्कार ।

विभूषित, वि (म) अलङ्कृत, मटित ० वृत्त,
महित ३ सुशोभित ।

विभ्रम, म पु (म) वि भ्रान्ति (स्त्री),
भ्रम स्तम्भित २ मदेह ३ भ्रमण ४ स्वीण
हावमेड ५ सौन्दर्यम् ।

विमति, स स्त्री (म) विपरीत-विरुद्ध, मत
विचार १ दुमति (स्त्री) ।

विमन, वि (म नम) विमन, विषण्ण, दुर्मनम् ।

विमर्श, म पु (म) विचार-रण रणा भवण
णा, विवेचनं ० समीक्षा आलोचना
३ परीक्षा ४ परामर्श ।

विमल, वि (म) स्वच्छ निर्मल, दे
१ निर्दोष ३ सुन्दर ।

—मणि, म पु (स) दे 'रत्न'क ।

—मति, वि, (म) मुद्ध इदम्वित ।

विमलता म स्त्री (म) निर्मलता दे ।

विमला, म स्त्री (म) मरुत्वती, शारदा
० मिद्धिविशेष ।

—पति, म पु (म) भगवन् (पु), विधि ।

विमाम्, म पु (म पु न) अस्वच्छ अप
विष-अमश्य, आमम् । (कुसुमादीनाम्) ।

विमाता, म स्त्री (म-तृ) मातृमपत्तनी ।

विमान, म पु (म न) देवस्थ, वायु
व्योम-वाय ० रथ, वाहन ३ शीघ्र
४ सुसभूषितं गृह ५ शयनम् ।

विमुख, वि (स) विरत निरपेक्ष, निरीह,
जौत्मुखवद्भीन २ विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल
३ निराश, अपूर्णकाम ४ अवदन ।

विमुखता, स स्त्री (स) विरति (स्त्री),
जौदम्भीय ० विरोध, विपरीतता ।

विमुद्, वि (स) अज्ञ, भ्रान्तिन, २ निस्मय,
भ्रूच्छत ३ आन्या, कुल, विकल्प ३ अति,
सुख-मोहिन ।

विमोक्ष, स पु (स) दे 'मोक्ष' ।

वियोग, स पु (स) विरह, विप्रलम्भ,
विप्रयोग २ विच्छेद, विश्लेष, विभेद
३ पाथक्य, पृथग्भाव ४ व्यवकलनं (गणित) ।

वियोगात्, वि (स) दुःख, अतः पर्यवसानादि
(नाटकदि) ।

वियोगिनी, वि स्त्री (स) विरहिणी, वियुक्ता,
प्रोपिन, पतिका मर्त्यका ।

वियोगी, वि (म विन्) विरहित, वियुक्त ।

वियोजक वि (स) विश्लेषक, विच्छेदक ।

विरधि, स पु (स) विपत्त, प्रकम् (पु) ।

—सुख, स पु (म) नरद ।

विरक्त, वि (स) विरत, विमुक्त, निरीह,
निवृत्त २ इदासीन, सिम्प्रयोगिन ३ क्षिप्त,
रट वैरागिन्, वैरागिक ।

विरक्ति, सं स्त्री (सं) विरति (स्त्री),
विराग, विमुक्तता, वैराग्य, विरक्तता
२ औदासीन्य ३ राग ।

विरक्त, वि (स) दे 'विरक्त' (१, ४) साव
नाश, अव्यय-अनिव्यायन, -पर, -परायण ।

विरति, सं स्त्री (सं) दे 'विरक्ति' (१३)
४ विराम, विच्छेद, उपर(रा)म ।

विरद स पु, दे 'विरत्' ।

विरल, वि (स) घनता-विघना, शुभ्य
२ दुर्लभ, दुष्प्राप प्रापण ३ तनु ४ निर्जन
५ अल्प ६ विप्रकृष्ट, दूरस्थ ।

—पातक, वि (म) न्यून अल्प पातक पाप,
अभिलिप्त-अनन्य पून, प्राप-वत्स ।

विरला, वि (सं विरल) दे 'विरल' (१२) ।

विरव, वि (स) नि शब्द, नीरव ।

विरस, वि (मं) नीर, दे २ अभिय ।

विरमा, सं पु (अ) दे 'विरामन' ? ।

विरह, म पु (सं) दे 'वियोग' (११) ।

४ वियोजन दुःखम् ।

—जनित, वि (स) विरह, जन्म, विवोग,
जन्मभूत ।

विरहिणी, वि स्त्री (स) विवोगिनी, दे ।

विहरी, वि (स हिन्) दे 'विवोगी' ।

विराग, स पु (स) दे 'वैराग्य' ।

विरागी, वि (स निन्) दे 'वैरागी' ।

विराजना, कि अ (स विराजन्) शुभ
विराज् (भ्वा आ मे) प्रविआ (अ प
अ) ० हृत् (भ्वा आ मे), विद् (दि
आ अ), उपविद् (तु ष अ) आम्
(अ आ से) ।

विराजमान, वि (स) प्रकाशमान, शोभ
मान, भागमान, भागुर २ विषमान, उप
स्थित, वर्तमान ३ उपविष्ट, आनीत ।

विराट्, स पु (स-राट्) विशङ्क्य, शङ्कन्
(न) ३ ह्रस्वि ।

विराट्, स पु (स) प्रत्यदेश २ तद्दे
शोपीराजविरोध ।

—पर्व, स पु [स-र्व (न)] कीर्ण
भारतस्य चतुर्थं पर्वम् (न) ।

विराम, स पु (स) दे 'विरति' (४) ।
२ विग्राम, विग्रहि (स्त्री) ३ बाक्वत्
मन् ४ इति (स्त्री) ।

विराव, स पु (म) शब्द, ध्वनि २ वलकल ।

विरासत्, सं स्त्री (अ) दाव, पैतृकपत्न,
रिक्थ २ दामादत्त्व, रिक्थदत्तत्वम् ।

विरह, स पु (स) गुणोत्कषर्णन, यथा
कीर्तन, प्रशस्ति (स्त्री) २ यदास (न),
कीर्ति (स्त्री) ३ मृषेय'शिशुम् ।

विरहावली, स स्त्री (स) लवमाला, यशो
पानम् ।

विरुद्ध, वि (स) प्रतिकूल, विरोधिन्, विप
रोधि, प्रतीय २ हृत्, लिङ् ३ अनुविन्,
अन्वय्य ।

विरूप, वि (स) वदरूप, भावाकार ० वुरूप,
कुदार्थ ३ परिवर्तन ४ निदशीन, रोग
हीन ५ विरुद्ध ६ भिन्न ।

विरेशक, नि (सं) सारक, मन्त्रभेदक, विरे
चकान्, दे 'रेचक' ।

विरेशन, स पु (स न) मन्त्रभेदवैषय, दे
'रेचन' २ रेक, रेचन-ना, मन्त्रभेद ।

विरोध, सं पु (स) वैर, शत्रुतात्वं, वि,
द्वेष, सापत्न्य २ असंगति (स्त्री), विसंगतः ,

विपरीता ३ विप्रतिपत्ति (स्त्री), व्यापत
४ ज्वालद्वारभेद (स्त्री) ।

—करना, कि स विप्रतिपत्ति (रु उ अ),
प्रतिपत्ति प्रत्ययस्था (भ्वा आ अ) विप्रति
हन् (अ ष ॥) २ विप्रत्य (भ्वा प मे),
प्रतिविष (तु ष अ) ।

विरोधी, न पु (रु-धन्) वैरिन्, शत्रु,
३ विपक्षिन्, प्रागुद्दिन् ४ विरोधन्,
विनवर ।

विरोध, स पु (स) अनिकल, बेलानिकम्,
काल-क्षेप इरण दे 'वैर' ।

विरुद्धित, वि (स) विरायित, व्याक्षित
० प्रत्यय लक्ष्यम् ।

विरुद्धण, ॥ (स) भ्रमाधारण, अमामान्य,
अद्भुत अपूर्व, विरिष्ट ।

विरुद्धणम्, स स्त्री (म) वैरुद्धण्य, मिशि
ष्टा इ ।

विरुध्य, स पु (स) विलयन, द्रवीभवन
० लोप, मर्यादा ३ शत्रु ४ वि, नाश
५ प्रत्यय ।

विरुप, स पु (॥) परिवेदन, ना, शोकन
वचन अनुवीचनोक्ति (स्त्री) २ कदनं,
शरीरजनम् ।

—करना, कि अ, विरुप् अनुदात्त परिदेव्
(भ्वा प से) ।

विरुप्यत, स पु (अ) विपर, देश ० दूर
वस (यूरे, अमेरिका आदि) ।

विरुप्यती, वि (अ) दे 'विदेशी' ।

—वर्ण, स पु (अ-र्हि) दे 'टमापर' ।

विरुप्यत, स पु (स) विभ्रन, लीला, हाव
भेद दे 'वर्णरा' २ आनन्द, हृष ३ मनो,
चनविनोद ४ सुसंयोग ५ रूप पन,
पति (स्त्री) ६ आह्वय इवमन्-मनोहा
रन्ति, वेष्टा विना ।

विरुप्यन्ती, स स्त्री (स) कादिनी, मुदरी,
वरागना २ बारी ३ वेरया ४ वर्णवृत्तभेद ।

विरुप्यती, वि (स मित्) भोगिन्, विषय
मा-आमक, वासिन् २ लीलापर, लीला
प्रिय, वीतुकिन् ३ मुपेयिन् ।

विरुप्यत, वि (स) अन्तरविरोहित, कुप
० नष्ट ३ गुण, गूढ ।

विरुप्यन्, स पु (स विलयन) विलयन,
द्रवीभव २ क्षरण, मर्यम् ।

विलुठन, स पु, विलुठन, लुठ, लुठ २
चोरण मोचणम् ३ लुठन, लोठनम् ।

त्रिलोकना, त्रि म (स विलोकन) द
'देवना' ।

विलोडना, कि स, दे 'विलोना' ।

विलोम, वि (स) प्रतिकूल, विपरीत, प्रति
लोम, प्रतीप २ स्वरावरोह (संगीत) ।

विलोल, वि, (स) चल, अस्थिर २ हृदर ।

विवक्षा, स स्त्री (स) वक्तुमिच्छा, विव
दिपा २ साक्षात् ३ सदेह ।

विवक्षित, वि (स) वक्तुमिष्ट २ अपेक्षित ।

विहर, स पु (स न) छिद्र, विल २ गनं
र्त, अवत, छात ३ कदरा, गुहा ।

विहरण, स पु (स न) व्याख्यान, विवे
चन २ विस्तृत, वर्णन-वृत्तात् ३ टीका,
भाष्य, व्याख्या ।

विवर्जित, वि (स) निषिद्ध, वर्जित २ उपे
क्षित, अनादृत ३ वचित, रहित ।

विवर्ण, वि (स) निस्तेजस, निष्प्रभ, वर्ण
हीन २ क्षुद्र, नीच ।

विधत्, स पु (स) भ्रम, भ्रान्ति (स्त्री)
२ रूपान्तर, दशांतरम् ।

—याद, सं पु (स) वेदानमिदं विविध ।

विवश, वि (म) अनतिक, निरुपाय २ परा
धीन ३ दुर्दोष ४ निर्मल ।

विवस्वान्, स पु (स-स्वप्) स्वर् २ अरण्य,
सूर्यसारथि ।

विवाद, स पु (स) वाद, अनुवाद प्रति
वाद, वाग्वाद, युद्ध, तर्कवितर्क २ बलह,
बलि ३ मारभेद ४ व्यवहार, कणादि-
न्याय, दे 'मुकदमेवाजी' ।

—वरना, ति म, विवद (भ्वा आ से),
विप्रतिपद (दि आ ज), विप्रन्ध् (भ्वा
प से) ।

विवादास्पद, वि (स) विवाद-अहम्य
योग्य, सन्देह ।

विवाह, स पु (स) पाणि, ग्रहण-वरणं
पौडन, उपपद(या)म, परिणय, उद्वाह, दार,
परिमह-वयम् ।

—करना, कि स, उद् वि वह् (भ्वा उ अ),
दारान् परिमह (क् प ङ), परिणी (भ्वा
प अ) ।

—(स) देना, कि ङ, विवाहे दा, पाणि ग्रह
(प्रे), उद्द (प्रे) ।

विवाहित, वि पु (म) ऊढ, परिणोत,
निविष्ट, कुलविवाद, उपयन, स्त्रीभत्, सप्तमीम् ।

विवाहिता, म स्त्री (स) पतिवती, मभर्तृमा,
ऊढा, परिणीता, उपयता ।

विविक्त, वि (स) पृथग्भूत, विदुक्त २
ग्नल, असहाय ३ पूत, निर्दोष ४ विवेचिन,
विवेकशील ।

विविध, वि (स) अनेकनाना-बहु, विध
प्रकार-रूप-जातीय ।

विवेक, स पु (स) परिच्छेद, सदसज्ज्ञान,
मिथो व्यावृत्त्या वस्तुस्वरूपनिश्चय, पृथग्भाव,
पृथगात्मता, विवेचन २ भद्राभद्र-सदस्य,
परिच्छेदशक्ति (स्त्री), ३ बुद्धि मति
(स्त्री) ४ सम्यग्ज्ञानम् ।

विवेकी, वि (स किन्) परिच्छेदक, विवेचन-
गुणदोषज्ञ, विशेषज्ञ, विवेकानन्द २ बुद्धि-मति,
मन् ३ ज्ञानिन् ४ न्यायशील ५ आधि-
कारिक ।

विवेकक, वि (म) दे 'विवेकी' ।

विवेचन, म पु (स न) दे 'विवेक'(१) ।
२ सम्यक्, परीक्षा-क्षण, गुणदोषविचारण-
परि, आलोचन ना ३ अनुसन्धान ४ तर्कवि-
तर्क ५ मोक्षासा ।

विवेचना, स स्त्री (सं) दे 'विवेचन' ।

विवाद, वि (स) निर्मल, विमल, स्वच्छ
२ सुवि, स्पष्ट, न्यक्त, प्रकट, स्पष्ट ३ सित,
उज्ज्वल, श्वेत ४ सुदूर ।

विशारता, स स्त्री (स) राधा, नक्षत्रविशेष ।

विशारद, वि (स) कुशल, दक्ष, प्रवीण
२ विद्व, विशेषज्ञ, अनुपम, निष्णात ।

विशाल, वि (स) विस्तृत, विस्तीर्ण, महद,
बृहत्, पृथ् उरु २ अभ्य, सुदूर ३ विस्मयन ।
विशालता, स स्त्री (सं) प्रथिमम्, विस्तार,
बृहत्ता, पृथुता ।

विशार, स पु (म) वाण, शृपु । वि-
(सं) शिराहीन ।

विशिष्ट, वि (स) युक्त, युक्त, अचित्त, सहित
२ विशेष-असामान्य ३ अद्भुत, निम्नगुण
३ अनिशिष्ट ४ यशस्विन् ५ प्रसिद्ध ।

विशिष्टता, सं स्त्री. (सा) दे 'विशेषण' ।

विशिष्टाद्वैतवाद, म पु (स) ज्ञानेन्द्रवाद,
द्वैताद्वैतवाद ।

विनीर्ण, वि (म) शुष्क २ छीन ३ नीर्ण ।
विशोल, वि (स) दुर्बलित दुर्शील,
कुशील ।

विशुद्ध, वि (म) दे 'शुद्ध' ० मन्त्र ।

विशुद्धि, म स्त्री (स) शुद्धता पवित्रता
२ मदेह-मशय, निवारणम् । ३ प्रनिर्णी
कार, प्रनिरोध ४ पाणधोषनन् ५ परि
ष्कार ६ पुष्कलायम् ।

विशुद्धिका, म स्त्री, दे 'विशुद्धिका' ।

विशेष, वि (म) भ्रमाधारण (भी स्त्री),
विशिष्ट, विस्मयः । स पु (स) स्मरणार्थो
नार्तिपदविशेष (वैशेषिक) २ अनर, भेद
३ अर्थान्तरभेद (सा) ।

विशेषज्ञ, वि (स) प्रवीण, निपुण, विश्व,
पारंगत, पारदक्षिण ।

विशेषण, स पु (स न) सहादीना विशेष
कारोपक पद (व्या) २ उपाधि गुण,
विशेष्यवर्ग ।

विशेषत, अन्ध (म) विशेषण, प्रधानत ।

विशेषता, म स्त्री (स) विशिष्टता, असा
धारणा, विलक्षणता ।

विशेष्य, स पु (स न) विशेषणान्वित
सहादिपद (व्या) ।

विशोक, वि (म) शोकादीन, प्रसन्न, मुदित,
प्रहृष्ट ।

विश्रम, स पु (स) विश्राम, श्रवण
२ अनुत्तराग्र प्रेम्ण (पु न) ।

विश्रम्भ, वि (स) विश्रमनीय, विश्रामार्ह
२ शान्त ३ निभय ।

विश्रात, वि (स) व्यपगतप्रम, क्लान्ति
शान्ति, श्रुत्य ।

विश्राति, म स्त्री (म) विश्राम, दे ।

विश्राम, स पु (स) विश्रान, विश्राति
(स्त्री), श्रमोपशम, कार्य-व्यापार, निवृत्ति
(स्त्री) २ पुत्र ३ शान्ति (स्त्री) ।

—करना, कि अ, विश्रम् (दि प से),
आश्रितम् (व्या प अ), कायाश्च निवृत्त
(व्या का से) ।

विश्रुत, रि (स) विख्यात, प्रसिद्ध, दे ।

विशिष्ट, वि (स) पञ्चभूत, जिन, विदग्ध

२ विमिश्रित ३ प्रकट ४ असाधुता ५ शान
६ व्यङ्ग्य ।

विश्लेष, म पु (म) विपटन, विच्छेद,
पृथग्भाव २ विरह, वियोग ।

विश्लेषण, म पु (स न) व्यवच्छेद,
व्याकृति (स्त्री), पृथक्करणम् ।

विश्वभर, स पु (म) परमेश्वर २ विश्व ।

विश्वभरा, स स्त्री (म) धरणी, पृथिवी दे ।

विश्व, स पु (स न) पगद (न), जगती
(स्त्री), विशुबल, ब्रह्मा ३ भू-पृथिवी,
लोक । वि (म) सर्व, सकल, समस्त ।

—कर्मा, स पु (म त) परमेश्वर ।

—कर्मा, स पु (म मन्) विश्वकृत, देव,
ब्रह्मक शिल्पिन, स्वप्न परमेश्वर ३ ब्रह्मन्
(पु) विधि ४ सूर्य ५ तक्षक, वधकि
६ लोहकार ७ गृहकारक, पलायन ।

—कोर (य), स पु (स) सर्वविषय वृहत्,
कोर ।

—जिह्वा, स पु (स) यन्त्राग, भेद ।
वि (स) जिवविश्व, विश्वविजयिन् ।

—देव, स पु (स ना बहु) देवगणभेद ।

—नाथ, स पु (स) शिव २ साहित्य
दर्पणकार पठितविशेष ।

—वति, स पु (न) ईश्वर ।

—बपु, स पु (स) शिव २ जगत्सत्त्व ।

—विद्यालय, स पु (स) दे 'पूनिवासीटी' ।

—व्यापार, वि (स विन्) विश्व-सर्व, व्यापक
(ईश्वरारि) ।

—साक्षी, स पु (स विन्) सर्वद्रष्टा जगदीश्वर ।

विश्वसनीय, वि (स) विश्वास्य, विश्वास,
योग्य अर्थ, विश्रम, पात्र भावन भावपदम् ।

विश्वसनीयता, स स्त्री (न) विश्वास्पता,
विश्वासपात्रता ।

विश्वस्त, वि (म) दे 'विश्वसनीय' ।

विश्वाभिन्न, स पु (म) माधेय, गाधिन ॥
कोशिक (ब्रह्मविशेष) ।

विश्वास, स पु (म) प्रत्यय, विश्रम,
० अद्या, दे ।

—करना, कि, अ, विश्वस् (अ प से),
अद्या (पु उ अ), प्रतिद (अ प अ) ।

—दिलाना, कि स, उपर्युक्त धातुओं के
रे रूप ।

- घात, स पु (म) विक्रमवर्ग प्रत्यय
भक्षण समस-प्रत्यय मय ।
- घातक, वि (२) विनाममञ्ज, विश्वा
यानि ।
- घात्र, स पु (स न) विश्वाभ्य विश्वसनीय ।
- विश्वेश्वर, स पु (स) परमेश्वर २ शिवम्
तिविशेष ।
- ग्रिप स पु (स पु न) गरल, ज(वा)गुल,
खेड, कालकूट, ह(हा)लाहल, गर, गरद,
घोर, तीक्ष्णम् ।
- कन्या, स स्त्री (स) मैथुनमात्रेण समोक्त
हनी कुमारी नारी वा ।
- धर, स पु (सं) सर्प ।
- हर, वि (स) विर, आशय-याति ।
- की गाढ, सु, अपनारव, हानिप्रद ।
- देहा, सु, विप्रेत मृदु (त्रे) ।
- विपक्ष, वि (स) रुग्णित, बद्धभूत, दृढयुक्त
सम्पत् ।
- विपण्ण, वि (सं) शोभमान, परि-भ, ताप्त,
अवमान ।
- सुप, वि (स) विपण्णवदन, सशोभारव ।
आर्त्त, विदूत ।
- विपण्णता, स स्त्री (स), मन्त्रता, परिणता,
अवमानता, शोभानता ।
- विपम, वि (सं) अमम, नोन्नत, पिंढावृत्त,
२ अयुग्म, दे 'ताक' ३ विन्द, वडिन,
दुस्साध्य ४ अति, नीत्र तीक्ष्ण ५ भीषण,
घोर ।
- ज्वर, स पु (सं) ज्वरभेद २ दे
'मन्त्रिया' ।
- नयन, स पु (म) विपमनेत्र, शिव ।
- याण, स पु (स) वदर्प, काम ।
- युक्त, स पु (म न) अममचरण कृत
(छद) ।
- विपमता, स स्त्री (२) वेवम्य, समताऽभाव
२ अयुग्मता ३ वैर, विरोध ।
- विषय, स पु (म) गोचर, इन्द्रिया
(=शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा) २ देश, जनपद
३ प्रकरण, प्रसंग ४ उपमाय, आश्रय
दर्श ५ मुरत, मेयुर्न ६ द्रव्य, पदार्थ
७ कार्य, व्यापार, अर्थ ।
- सुष्ठ, स पु (सं न) इन्द्रियभौक्ष्यम् ।

- त्रिपयक, वि (सं) सवधित, उदिरव,
अधितृप्त्य, अश्रित्य ।
- त्रिपयी, वि (सं यिन्) भोग त्रिपय, आमक्त,
लघु त्रिपय, निरत पर परादण-अधीन, कामिन्,
विनामिन, रतहिण्टक, टांकर, औपस्थिक ।
- विपाण, स पु (स न) शृंग, दे 'सौग'
२ गजदत ३ कोन्दत ।
- विपाट, स पु (स) अवसाद, दुःख, शोक,
परि-भ, ताप, आधि (पु), आति (स्त्री)
२ आश्रय ३ मौल्यम् ।
- विपुव, स पु (स न) विपुवत् (न),
विपुव, विपुण, समरात्रिदिवका [= मौर
चैत्र मास की नवी (२१ मार्च) तथा मौर
आश्विन मास की नवी (२२ मिनवर)] ।
- रेखा, स स्त्री (सं) निरक्ष, भूक्ष, भूमन्त्रणा,
विपुवरेखा ।
- जल—, स व (स न) विपुवद (२१ मिनवर) ।
- महा—, स पु (म न) हरिपद (२१ मार्च) ।
- विपुचिन्ता, स स्त्री, दे 'हिजा' ।
- विष्टा, स स्त्री (स) उच्चार, गृध्र-अ, मल
ल, पुरीष, नामक, शकुन (न), विष्ट (स्त्री) ।
- विष्णु, स पु (म) चक्रिन्, चतुर्भुज, चक्र
पाणि, जनार्दन, विविक्रम, हरि, हृषीकेश,
श्री, पनि निरास बल-वर धर, वैकुण्ठ,
माधव, मनुमूर्दन, पुष्पोत्तम, पीताम्बर,
दामोदर, पद्मनाभ, नारायण, वैशव,
कृष्ण, गोपाल ३ २ अग्नि ३ अद्विष्ट
विशेष ।
- गुप्त, स पु (स) वैयाकरणविशेष
२ वाणक्य ।
- पद, स पु (सं न) आकाश श २ पर्श
३ क्षीरोद ।
- पदी, स स्त्री (स) गगा ।
- पुराण, स पु (सं न) पुराणप्रवविशेष ।
- विमर्ग, स पु (म) विमर्गनीय, वगविशेष
(=व्या) २ दान ३ त्याग ४ मुक्ति
(स्त्री), निवेद्यम् ५ मृत्यु ६ प्रत्यय
७ विरह ।
- विमर्गन, स पु (सं न) परि, त्याग उत्सर्ग,
मोहन, उन्मूलन २ मन्त्रेण, प्रस्थापन
३ प्रस्थान, प्रवाण ४ समाप्ति (स्त्री), अंत
५ दान, वितरणम् ।
- विमाल, स पु (अ) संयोग, संगम ।

विश्वचक्र, स स्त्री (स) विश्वजी, दे 'देवा'
२ ज्योतिषगोपभेद ।

विस्तार, स पुं (स) विस्तार, दे २ आसन,
पीठम् ।

विस्तार, स पुं (स) विस्तार, प्रसृम्भ, र,
आयान, वितति (स्त्री) विग्रह, व्यान,
विस्तीर्णता २ विनय, नासा ।

—करता, किं स, प्रसृ+वल् (प्रे), दे
'केलता' ।

विस्तीर्ण, व (स) विस्तृत प्रसून, वित्त
आयन २ विपुल, प्रचुर ३ विद्याल, महत्,
हृत् ।

विस्तृत, वि (स) दे 'विस्तीर्ण' ।

विस्तार, स पुं (स) सशब्द-भा-स्पृष्टन
स्त्रोत्र २ रि(वि)ष्टक-कला, स्त्रो-रुह ।

विस्तोत्रक, स पुं (स) दे 'विस्तो' (२) ।
१ स्त्रोत्रोत्तर २ दे 'विचक्र' ।

विस्मय, स पुं (स) आश्चर्य, चमत्कार
२ ग्व ३ सदेह- । वि (स) हतदर्प ।

विस्मरण, स पुं (स न) विमृष्टि (स्त्री)-
स्मृति, जाग्र-शेष ।

विस्मय, वि (स) विस्मय-आश्चर्य, आनन्द
भावित, चकान, विस्मयलुल ।

विस्तृत, वि (स) स्मृतिज्ञ, स्मृतिप्रय-
भवेत् ।

विस्तृति, सं स्त्री (स) विस्मरण, दे ।

विस्मय, स पुं (स) विधास, प्रत्यय
२ हत्या, वध ।

विहग, विहगम, विहग, स पुं (स) छग,
दे 'पद्मी' ।

विहारण, स पुं (स न) विचारण, अटन,
अनग २ विद्योत् ३ प्रत्ययम् ।

विहार, स पुं (स) परिक्रम-नय, पचन,
परिभ्रमण, विहगम विचारण २ गुरत,
संभोग ३ गुरतालय ४ सपाशम, अणन,
गठ दे ।

विहारी, स पुं (स-रिज) भोगमस्त
२ विहारकृत् ३ भोग्या ।

विहित, वि (स) (वाक्यदिशि) अदिष्ट,
दिष्ट, उददिष्ट २ व्यापद, धन्य, उचित
३ हन, अनुहित ४ दत्त ।

विहीन, वि (न) परि, हृत् उच्छिन्न
२ रहित, नञि शून्य, वञ्चित, शून्य ।

विह्वल, वि (स) विह्वल, व्याकुल, दे ।

विह्वलता, स स्त्री (स) व्याकुलता, दे ।

वीची, व स्त्री (स) रहरी, ठरा, दे ।
२ रहिम, बरीधि, दीधिति, (सङ्गु)
३ कान्ति दीप्ति (स्त्री) ।

—शोभ, स पुं (स) रहरी-विस्त ।

—तराग न्याय, स पुं (स) दे वध परिशिष्ट ।

—माली, स पुं (स-रिज) छारा, स्त्रुत्,
अन्द ।

वीज, स पुं (स न) बीज, दे ।

वीचन, स पुं (स न) न्यवन, दे 'पद्मा' ।

वीणा, स स्त्री (स) बल्लरी, विपची-विद्या,
ध्वनिमाना, वगनदी, परिवारिणी घोषवती,
कठकूलीका २ विद्वत् (स्त्री) ।

—वृद्ध, स पुं (न) प्रवृत् ।

—प्राणि, स स्त्री (य) सरस्वती ।

वीर, वि (स) प्रस्थित, प्रदाय २ परित्यक्त
३ युक्त ४ सनात ५ रहित, शून्य ।

—भय, वि (स) विगत-निर-भय ।

—राग, वि (स) विरक्त, निस्सह ।

—शोक, वि (स) निरशोः । स पुं (स)
अशोकवृक्ष ।

वीथी, व स्त्री (स) वीथि- (स्त्री), वीथिना,
रम्या, मार्ग २ पथि (स्त्री) ३ रूपकमेव
(स्त्री) ।

वीर, स पुं (स) शूर, शीवीर, सुविक्रम,
प्र-महान्, वीर, वेद २ वीर, वीर्य, मन्,
सैनिक ३ नायक, अग्रग (पुं) ४ पुत्र
५ पति ६ भ्रातृ । वि (स) विह्वल,
वीरवत्, सङ्घटिक, पराक्रमित् ।

—केसरी, स पुं (स-रिज) वीर, दुर्ग-
वलय ।

—वाहि, सं स्त्री (स) सुरवे नाराय स्वर्ग
राम २ स्वर्ग ।

—वक्र, स पुं, (स-रिज-वक्र) सैनिकानां
अरुद्धि, सम्मानस्वर-स्वाभय राक्षस वा
पदकम् २ पुरस्कारविशेष ।

—पत्नी, स स्त्री (स) वीर-नर्या ।

—प्रसू, स स्त्री (स) वीर-मन्-मातृ (स्त्री)-
जननी ।

—भद्र, स पुं (स) अशोकवृक्ष २ वीर
राम २ शिवा-विशेष ।

—शोक, सं पुं (स) स्वर्ग ।

धारता, स स्त्री (स) बाँध, धारता, शीर्ष, परावि, ह्रम, सहस, रणात्साह, ओजस् भामन् (न) ।

वीरान, वि (का) निमातुष, निरवि, नन २ निदम्भीक, शोमाहीन ।

वीराना, स पु (का) विनन, निननप्रदेन ।

वीरानी, स स्त्री (का) विननता, निर्जनता ।

वीर्य, स पु (स न) शुम्भ, रेतसूतेवस (न) बीज, चरमपातु इन्द्रिय ३ दे 'रज' ३ वीरता, दे ४ बीजम् ।

—के कीडे, स पु, शुम्भनीदा ।

—ज, स पु (स) पुत्र, तनय ।

—विरहित, वि (स) निजक २ क्लीव ३ भीह ।

वीर्यवान्, वि (स-वत्) बलवत्, दृढांग २ मासल ।

शुद्धक, स पु (अ) परिचय २ ज्ञानम् २ वृद्धि (स्त्री) ।

शुद्ध, स पु (अ) अगच्छानम् (इस्लाम) ।

शुत्, स पु (स न) चुचुक-क, स्नन कुच, अग्र २ प्रसवदधन, दे 'शोटी' ।

शुद्, स पु (स न) समूह, निकर २ कौटि शाक, अर्जुनम् ।

शुदा, स स्त्री (म) शुलसी (पौदा) दे २ राधा ।

—धन, म पु (स) शुदारथ २ नीधविशेष ।

शुक, स पु (स) शीत ईहमृग २ शृगाल ।

शुल, स पु (स) तर, पादप, शारिन्, विटपिन्, हु, हुम, पत्तसिन्, मही शिति भू, रह १ अग, लग, विटप ।

शुल, म पु (स न) चारत, चरित, आचार, आचरण २ सह, श्रुत आचार ३ समाचार, वृत्तान्त, उद्ग ४ वर्णचिह्नस (न) ५ मन्त्र, वतुलम् ।

—राट, स पु (स पु न) मन्त्रवर्तुल, शीत ।

शुक्ति, म स्त्री (म) आशीर्ष नन विना, जीवन, जीवित २ उपजीवित, मृति (स्त्री) ३ मंगितगोभोरव्याख्या, मन्त्रार्थविवरण, टीका ४ शुल, वृत्तान्त ५ नाटकीयदर्शनी (सा वैदिकी ३) ६ व्यवहार ७ विज्ञापस्था (योग, शिष्टमूढादि) ८ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ।

छात्र, म स्त्री (स) शिक्षणोपजीविका ।

मनो, स स्त्री (स) स्वभाव, प्रकृति (स्त्री), प्रवणता ।

वृथा, वि (स) व्यर्थ, निरर्थक, भोष । कि वि (म) गुप्ता, व्यर्थ, निष्फलम् ।

वृद्ध, वि (म) स्थिर, वयस्व, -न, व्रीण, जरित-न । सं पु (स) जरट, स्थविर ३, दे 'वृद्ध' २ पठित ।

वृद्धता, स स्त्री (स) जरा, बाह्य-व्य, दे 'वृद्धता' ।

वृद्धा, स स्त्री (स) स्थविरा, जरती, दे 'वृद्धि' ।

वृद्धावस्था, स स्त्री (स) दे 'वृद्धता' ।

वृद्धि, स स्त्री (स) वपन, वृहण, उत्पत्ति (स्त्री), उत्कर्ष, उपचय, आधिनय, विस्तार २ वृशीद, बाह्य-व्य, दे 'मृद्ध' ३ सम्बुद्धम्, समृद्धि (स्त्री) ४ वृष्यापहवर्गोपचय (राजनीति), स्पीति-स्पाति (स्त्री) ५ जीवभद्रा (औषधविशेष) ।

—जीवक, स पु (म) कुमीदिन, बाह्य-विक ।

—जीवन, स पु (म न) जीवाय, वृद्धि जीविका ।

वृक्षिक, म पु (म) वृक्षन, पदाङ्ग, दे 'विच्छ' २ अष्टमराशि (ज्यो) ३ अग्रहा षणमास ।

वृष, स पु (स) कृषभ, वृषभ, दे 'वैल' २ पुत्रप्रकार (यामशाल्य) ३ धम ४ द्वितीयराशि (ज्यो) ५ पति ।

वृषभ, म पु (स) क्लीवद, उत्तम, दे 'वैल' ।

वृष्टि, म स्त्री (स) वर्ष, पवन, परावृत्त, दे 'वृषा' ।

वृहस्पति, म पु (स) सुराचय, दे 'वृह स्पति' २ नवमहात्मनश्चममद ३ गुरुवार । वे, मव (दि वद वा बहु) ते अमी (दानो पु बहु) हा, अमू (दोनो स्त्री बहु), तानि, अमूनि (दोनो न बहु) ।

वेग, म पु (स) प्रवाद, धारा, वैणी, ओष २ जव, स्थद, रय, मरमरदस (न), रमम, प्रमम ३ भूचविष्ट दिनिगमप्रवृत्ति (स्त्री) ४ स्वरा, नागता ५ आनन्द ६ प्रवृत्ति (स्त्री) ७ उषेग ८ वृद्धि (स्त्री) ९ वीर्य, शुर्व १० गुणमद (चाय) ।

वेगवान्, वि (स-वत्) क्षिप्र, द्रुत, द्रीघ, नवन, आशु ।

वेणी, स स्त्री (स) वेणि (स्त्री), प्रवेणी नि, वेणिका २ नचोष, सोऽप्रवाह ।

वेणु, स पु (स) वश, दे 'वर्म' २ वशी, दे 'वसुदी' ।

वेतन, स पु (म न) मरु-ज्य, निर्वेश, भति (स्त्री), मत्वा, मर्मण्या, कर्मण्या २ मासिक, मानिवमणि (स्त्री) ।

—भोगी, स पु (स गिन्) वेतन मृति, दुर्ज, वेदनिक ।

वेताल, स ॥ (स) द्वारपाल २ भूतभेद ३ भूताधिष्ठितशाल ।

वेत्ता, स पु (म-वृ) शास्त्र, मोदय, विद ।

वेद, स पु (स) श्रुति (स्त्री), छद्स् (न), काम्या, निगम, मध्य (न), प्रवचन, आर्यधर्मग्रन्थविशेष (ऋग, यजु, साम, अथर्व = ४ वेद) २ सत्यज्ञानम् ।

—व्रयी, स स्त्री (स) वेदवचम् ।

—निदक, स पु (स) श्रुतिविरोधिन्, मानिक २ पुद्ग ३ बौद्ध ।

—पारग, स पु (स) वेद, स विद-मूर्ति वेष्ट शानिन्-दक्षिन् ।

—मन्, ॥ पुं (स) श्रुति, वचन-वाक्यम् ।

—माता, स स्त्री (स तृ) गायत्री, भाविनी २ मरुत्वती ३ दुर्गा ।

—वान्य, स पु (स न) वेद, मन्-वचन २ प्रामाणिकवचनम् ।

—विद्, म पु (स) दे 'वदपारग' ।

—विहित, वि (॥) वेद, प्रतिपादित आदिष्ट उक्त ।

—व्यास, स पु (सं) दे 'व्यास' ।

—सम्मत्, वि (स) वेद, अनुगुण अनुमोदित ।

वेदना, स स्त्री (म) पीडा, व्यथा, यतना, मत्ताप २ वेदन, अनुभव, मवेद, ज्ञानम् ।

वेदनीय, वि (सं) ज्ञानव्य, वेद्य, बोद्धव्य २ ज्ञानीय, बोधयितव्य ३ कष्टप्रद, दुःखद ।

वेदना, स पु (स न) श्रुत्यवयववर्णप्रकार शास्त्र [= शिक्षा, वत्स, व्याकरण, निर्वृत्त, ज्योतिष, छद्म् (न)] ।

वेदात, स पु (स) ऋषि अथवा ज्य, विद्या, ज्ञानराज २ उपनिषद् (स्त्री) ३ उत्तरमीमांसा, दर्शनशास्त्रविशेष ।

वेदाती, म पु (स तिन्) वेदानशास्त्रवेत्तु ब्रह्मवादिन् ।

वेदाम्यास, स पु (स) वेद, अध्ययन स्वाध्याय-पाठ ।

वेदी, १ स स्त्री (म) वेदि, वेदिका, वितर्दी दिका (सव स्त्री) ।

वेदी, २ स पु (म-दिन्) पण्डित २ शास्त्र ।

वेदोक्त, वि (स) वेदविहित, दे ।

वेध, स पु (स) वेष्टन, निर्भेद-जन, व्यथ । यत्र वेष्टनस्य तावन्नोक्तनम् ।

—दाला, म स्त्री (॥) मानमदिरम् ।

वेधक, म पु (स) वेष्टनकर, छिद्रकार, वेष्टिन् ।

वेधना, कि स (स वेष्टन) व्यथ (दि प. अ), विष्ट-समुत्क (शु ॥ से), छिद्रपति (ना धा) । स पु, वेष्ट धनं, व्यथ धनं, गुल्मिरण (दे वेधक, विद १) ।

वेधनी, स स्त्री (स) वेष्टनिका, आ, स्त्री टनी, वृष्टदक्षिका ।

वेधी, म पु (स यिन्) वेष्टक, दे ।

वेला, स स्त्री (स) काल, समय २ सागर तरंग ३ समुद्रतट-टङ्क ।

वेष्टिग, स पु (अ) सम्पानम् ।

वेष्ट, स पु (अ) कषाट ।

—वय्य, म स्त्री (अ), *रूपाटनटिका ।

वेष्ट, स पु (स) आकण, प्रसाधन, नेपथ्य, प्रतिहर्षन (न), वेष्ट २ परिधान, वस्त्राणि वसनानि (न बहु) ३ पट, कुटी-मण्डप ४ गृहम् ।

—घारी, स पु (॥ रिन्) वेष्टर, कषाट छत्र, वेष्टिन् २ दम्बिन् ।

—भूषा, म स्त्री (म) परिधान, वस्त्राभरणम् ।

क्रिया का—धारना, मु, अन्यवेष्टा परिधा, वेष्ट परिवृत् (प्रे), वेष्टातर विधा ।

वेष्टया, स स्त्री (स) वेष्ट-युग्मी-वधू (स्त्री)-वनिता स्त्री, वार, भगना-वधू विष्टाभिनी जारी स्त्री, वणिका, रूपाजीवा, माधारणस्त्री, पण्यागना, कामरेखा, मोष्या, भुजिया, भुद्रा ।

—पन, म पु गणितावृत्ति (स्त्री), वेष्टातीव ।

वेष्ट, स पु (स) दे 'वेष्ट' ।

वेष्टन, स पु (स न) पुष्ट-य, कोश १,

प्रावरण २ आच्छादन परिवेष्टन ३ उष्णीष
पम् ।
वेष्टित, वि (म) बन्धित, मवीन, कुत्तरेण
२ रुद ।
वेसर, स पु (म) वेष्ट(श)र, अमसर,
वेगसर, दे उज्जर ।
वेस्यार, म पु (स) उपसर, वेष्ट (प)
वार ।
वेष्टितक, वि (रु) वेष्टित, रज्यधीन
२ रुद्रिण, विस्तृत ३ एतर्गम् ।
वेकुट, स पु (म न) स्वम्, विष्णु-
(स पु) विष्णु ।
वैजयन्ता, म स्त्री (व) केतु, पत्न्या ध्वन ।
वैज्ञानिक, स पु (मं) विज्ञान, वेत्तविद् ।
वि (त) विज्ञान, सम्बन्धित विषय मूलक ।
वैतनिक, स पु (स) दे 'वैतनभोगो' ।
वैतरणी, स स्त्री (म) यमद्वारवर्ती नदी
विशेष (पुराण) ।
वैताल, वि (स) वैताल, विषय-सम्बन्धित ।
सं पु दे 'वैताल' तथा 'वैतानिक' ।
वैतालिक, स पु (म) वैताल स्तुतिपाठक,
बोधकर ।
वैद, वि (स) वेद, विषयक सम्बन्धित, औन,
छन्दस् २ वेद, अनुकूल विहित समायन ३
वेदघ । स पु (श) वेदक-वेदनिष्ठात
विप्र ब्राह्मण ।
वैदिक, वि (म) छांदस, औन, वेद, विषयक
सम्बन्धित-उक्त प्रतिपादित ।
वैदूर्य, म पु (म न) केतुरान, विदूररत्न
जम् ।
वैदेशिक, वि (स) अन्य पर विदेशीय ।
म पु (त) पारदेशिक, विदेशीय ।
—मन्त्री, म पु (सं निन्) पारदेशिकमन्त्रिण ।
वैदेही, स स्त्री (स) विदेहतनया, अनारी,
सीता ।
वैद्य, स पु (स) मिषज्, अगर्दमार रोग
हारिन्, विविक्तक, आयुर्वेदिन् २ पंडित ।
—राज, म पु (स) मिषवर ।
वैद्यक, स पु (मं न) आयुर्वेद, विविक्ता
शास्त्रम् ।
वैद्य, वि (स) वैद्यक (वा), धर्म्य, -जन्म
शास्त्र, मन्त्र-अनुकूल २ उचित, गुण ।
वैद्यम्, म पु (मं न) रंदात्मम् ।

वैनेत्य, स पु (स) गरट, दे ।
वैभन, म पु (म न) वित्त, धनं, विभव,
सफल-संपत्ति (स्त्री) ऐश्वर्य २ महिम्न
(पु), सामर्थ्यम् ।
—शाली, वि (सं लिन्) सद्बुद्ध, धनिन् ।
वैमनस्य, म पु (सं न) वैर, वि, द्वेष
२ अन्यमतसत्ता ।
वैयकरण, सं पु (स) व्याकरण, वेत्त-अध्यत
पठित ।
वैर, स पु (म न) विरोध, वि, द्वेष,
शत्रुतात्, सप्तान्य, विपश्चना, द्वेषभाव ।
—करमा, वि द्विप (म उ म), विरप्,
(रु प अ), वैराग्ये (ना धा), अनिष्टा
यते (ना धा) ।
वैराग्य, स पु, दे 'वैराग्य' ।
वैरागी, स पु (सं मिन्) वैरागिक वैराग्य
वन्, विरक्त' दे । २ वैराग्यमप्रदायविशेष ।
वैराग्य, स पु (सं पु) विरक्ति (स्त्री),
वैरत कव, अनारति (स्त्री) ।
वैरी, स पु (म रिन्) अरि, शत्रु, सपत्न,
रिपु, अराति, विघात, द्वेष, प्रत्यभिन्,
परिपविन् ।
वैराहिक, वि (सं) औदाहिक (स्त्री स्त्री),
वैवाह (स्त्री स्त्री) ।
वैशाख, म पु (सं) माघ, राघ, सौर
प्रथम चाद्रितीय-मास ।
वैशेषिक, स पु (सं न) कणारमुनिप्रणीतो
दशानुप्रविविशेष, औलख्यदर्शनम् ।
वैश्य, स पु (सं) कुरु, धर्म्य, विश,
वणिन्, पणिक, भूमिजीविन्, वाणिज्य,
व्यवहर्तृ ।
वैश्यानी, सं स्त्री (सं वैश्य) वैश्या, अर्था,
अव्यापा ।
वैश्वदेव, स पु (सं) विश्वदेवसंबन्धित ।
वैश्वामर, सं पु (सं) अग्नि २ परमेश्वर ।
वैष्णव, सं पु (सं न) विषमता, दे ।
वैष्णव, म पु (सं) विष्णु-उपासक मन,
नाम् २ सप्रदायविशेष । वि (सं) वाष्ण,
हार, विष्णुसंबन्धित ।
वैसा, वि (हि वद-सा) तादृश-श, सप्त,
सुख-मद, तथाविध ।
वैसा—, वि (सामा-य, माधारण, प्राप्ति ।
—का वैसा, वि (वि, पूवत्, यथापूर्वम् ।

वसे, किं वि (हि वसा) तथा, तद्वत्, तत्स
इयम् ।

—ही, किं वि, मूल्य विना, दे 'मुक्त' ।

वोट, सं पु (अ) मन, छद्, छद्स् (न)
२ मतदर्शन ३ मतदर्शनाधिकार ।

वोटर्, सं पु (अ) मतदर्शक २ मतदर्श
नाधिकारिन् ।

व्यग, वि (सं) अकाय, अक्षरीर २ विकल
हीन, अंग ३ 'व्यग्य' ।

व्यगार्थ, सं पु, दे 'व्यग्य' ।

व्यग्य, सं पु (सं न) व्यञ्जनया बोध्योऽर्थ,
गूढ-गुप्त, अर्थ-आशय २ उपालम्भ, अधि
भा, शेष ।

—कमना या छोड़ना, किं स, उपालम्भ
(व्वा भा अ), अधि-आ, क्षिप (तु प अ),
अव-उप-हृम् (व्वा प से) ।

व्यञ्जन, सं पु (सं न) स्फुरी प्रकटी-करण
भवन, प्रकाशन २ दे 'व्यञ्जना' २ निद,
स्फुरण ४ अर्द्धमात्रक, ककारादयो वणां
५ आर्ग, अवयव ६ इमधु (न) ७ तेम,
तेमन, निष्ठान, अन्नोपकरण ८ सिद्धात्र
९ उपस्थ ।

—कार, सं पु (सं) पाचक, सूत्र, रन्ध्र ।

—साधि, सं स्त्री (सं पुं) व्यञ्जन, संयोग
सन्निकर्ष ।

व्यञ्जना, सं स्त्री (सं) दे 'व्यञ्जन' (१)
२ शब्दशक्तिविशेष (सा) ।

व्यक्त, वि (सं) प्रकट दिन, स्फुट, विशद,
स्पष्ट, प्रत्यक्ष, प्रकाशित ।

—करना, किं स, व्यन् (रु प से, प्रे.)
प्रवण (प्रे), प्रवटी विशदी-स्थटीक ।

—होना, किं अ व्यन् (कम), प्रकटी
स्थटी-आविर, भू, प्रकाश (व्वा भा स) ।

व्यक्ति, सं स्त्री (सं) स्पष्टता, विशदता,
स्फुटता, प्रामाद्य, आविर-प्रादुर, भाव
२ मनुष्य, मानव ३ व्यङ्गि (स्त्री),
पृथक्त्व ४ वस्तु (न), पदार्थ ५ भूतमात्र
६ प्रकाश ।

—गत, वि (सं) व्यक्ति, स्थ, वर्तित-सवधिन,
वैयक्तिक, पुरुषविशेषात्पुनः ।

व्यग्र, वि (सं) सम्राट्, अधीर, व्याकुल, दे,
२ मीन, प्रस ३ व्याघ्र, कार्यमग्न, व्यासक्त ।

व्यग्रता, सं स्त्री (सं) उद्वेग, सभ्रम, व्या
कुलता दे २ चिन्ता, रणरणक, उत्कलिका
३ व्यासक्ति (स्त्री) ।

व्यञ्जन, सं पु (सं न) तालवृत्तक, दे
'पंथा' ।

व्यनिक्रम, सं पु (सं) क्रम, भग विपर्यय
विपर्यास-व्यत्यय २ अतराय, विन् ।

व्यतिरिक्त, वि (सं) भिन्न, अपर, इतर
२ अधिक, विशिष्ट । किं वि (सं न)
विना, अतिरिक्तम् ।

व्यातरेक, सं पु (सं) भेद, भिन्नता, पृथ
क्त्व, अतर २ वृद्धि (स्त्री) ३ अनिक्रम
मण ४ अर्थालंकारभेद (का) ।

व्यतीत, वि (सं) अतीत, गत, अनिक्रान ।

व्यत्यय, सं पु (सं) दे 'व्यनिक्रम'
व्यत्यास, (१) ।

व्यथा, सं स्त्री (सं) पीडा, वेदता, यातना
२ कष्ट, क्लेश, दुःखम् ।

व्यधिन्, वि (सं) पीडित, आर्त २ दुःखिन,
स परि, ताप्त ३ शोकमग्न ।

व्यभिचार, सं पु (सं) आरम्भन् (न),
पारदार्य, परस्मोपित्त्व । (स्त्री का) परि
धन, परपुरुषगमन २ कदाचार, दुराचर,
दुर्वृत्तम् ।

व्यभिचारिणी, सं स्त्री (सं) गारिणी, पुश्चली,
बधनी, परपुरुषगमिनी ।

व्यभिचारी, सं पु (सं रिन्) पारदारिक,
परस्मोपित्त्व, नार, मुनग, परतल्यग, उप
पति २ दुर्वृत्त, दुराचारिन् ३ दे 'सचारी'
(भाव) ।

व्यय, सं पु (सं) वित्त, विनियोग, अर्थ,
उत्पन्न, २ दान ३ परित्याग ।

—शील, वि (सं) मुक्तहस्त, अमितव्ययिन् ।
व्यर्थ, वि (सं) विफल, निष्फल, सोय,
निरर्थक, निष्प्रयोजन, वृथा, मुधा २ अपार्थक,
अथहीन । किं वि (सं न) निरर्थक, वृथा,
मुधा, निष्प्रयोजन, निनिमित्त, निष्फलम् ।

व्यग्रच्छेद, सं पु (सं) पाथक्य, पृथक्त्व,
२ विभाग, खट-ट ३ विराम, ४ निवृत्ति
(स्त्री) ।

व्यवधान, सं पुं (सं न) व्यवधा, आवरण,

२ निरन्तरिणी, प्रतिरीरा ३ विभाग, सठ
४ विच्छेद ।

व्यवसाय, स पु (स) वृत्ति (स्त्री), उप
आ, नीविका, आनीव २ व्यापार, क्रम
विशय ३ वाय, आरम्भ उपक्रम ४ निश्चय
५ प्रयत्न, उद्यम ।

व्यवसायी, स पु (स विन्) उद्यमिन्,
उद्योगिन् २ क्रयविक्रयिक, वणिज् ३ वृत्ति
मय, व्यवसायविशिष्ट ४ अनुष्ठान् ।

व्यवस्था, स स्त्री (स) शासनिकृति,
विधि विधाननिणय २ रचना, विन्याय,
क्रमेण स्थापन ३ व्यवहृत् ३ प्रवच, कार्यनिर्वा
हण अव्यवस्था ४ स्थिरता ।

व्यवस्थापक, सं पु (स) व्यवस्थादायक,
व्यवस्थापयिन् २ अधिष्ठात्, अध्यक्ष, चालक,
निर्वाहक, प्रवचक ।

—मंडल, स पु (म न) व्यवस्थापिका सभा ।
व्यवहार, स पु (स) वृत्त, वर्तन, चरितं,
आचार, चैष्टित २ क्रमन् (न), कार्य
२ व्यवसाय, व्यापार ३ कौमीय, वृद्धिनी
जन ४ विवाद ५ गृह, पण ६ अभियोग,
कार्य (—मुकदमा) ७ प्र-उप-योग ।

—करना, कि अ, व्यवहृत् (स्वा ड अ),
वृत् (स्वा आ से), आचर् (स्वा ष से) ।
व्यवहारी, वि (स रिन्) व्यवहारक, व्यव
हर्त् २ प्रचलित, लौकिक । स पु (सं)
वर्दिन्, कार्य, भविन् ।

व्यवहार्य, वि (सं) व्यवहारणीय २ उप
योक्तव्य ।

व्यवहित, वि (म) व्यवधानविशिष्ट, सावरण,
नितोहित ।

व्यवहृत, वि (सं) व्यापारित, उपप्र, युक्त
२ आचरित, अनुष्ठित ।

व्यमन, म पु (सं न) दोष, दुर्गुण,
गुणीन्, दुर्गुति (स्त्री) २ विपद्-विपत्ति
(स्त्री) ३ दुःख, कष्ट ३ अनिष्ट, अमंगल
४ शिष्य, अनुयाय-आसक्ति (स्त्री) ५ दुर्
दौर, भयं ६ अभिक्रि (स्वा) ।

व्यमना, वि (म निन्) दुःखीन्, दुष्ट,
विशमन् २ वर्याणामिन् ।

व्यमन्, वि (मं) संभ्रान्, व्याकुल दे
२ व्यासक्त, लीन, मग्न ३ व्याप्त

४ शिष्य ५ प्रत्येक, पृथक्-पृथक् ६ क्रमहीन,
अव्यवस्थित ।

व्याकरण ॥ पु (सं न) वेदांगविशेष,
शब्दशास्त्र २ व्याकरणग्रन्थ ।

व्याकुल, वि (स) आकुल, व्यग्र, सभ्रान्,
विह्वल, विह्वल, मोहित, विक्षिप्त, वि, मूढ,
कान्तर, विह्वल, अधीर, सभ्रान्-व्यस्त विक्षिप्त
मूढ, चित्तमनस २ अति, उत्क-उत्कण्ठ-उत्सुक ।

—करना, कि स, मुह-सभ्रम् (प्रे), आकुली
विह्वलीकृ, वि स, शुभ् (प्रे) ।

—होना, कि अ, आकुलीभू, मुह (दि प
मे), २ अत्युत्सुक (वि) भू ।

व्याकुलता, स स्त्री (म) आ-व्या, कुलना
कुलत्व, व्या, मोह, व्यग्रता, सभ्रम, विकल
ता, व्यस्तता, विह्वलता, संवि, क्षोभ, चित्तवै
कल्या-अशांति अनिष्टाति (स्त्री), उद्वेग,
व्याधेय, उद्विग्नता २ उत्कण्ठातिशय, लालसा ।

व्याख्या, स स्त्री (स) स्पष्टी विद्यदी, करण,
विवरण, प्रकाशन, व्याख्यान, प्रवचन २ टीका,
निष्णी, भाष्य (विविधभेद) ३ विवरणात्मनी
ग्रन्थ ।

—करना, कि स, व्याख्या (अ प अ),
निरूप (चु), विष्ट (स्वा उ से), व्याचम्
(अ आ अ), खुटी विद्यदी स्पष्टीकृ ।

—स्थान, स पु (मं न) व्याख्यानप्रवचन
सभाप्रवचनम् २ विद्यालय ।

व्याख्याता, सं पु (स-न्) भाष्य-व्याख्या
टीका, कार २ प्र, वक्तृ, उपदेशक, व्याख्यान-
नदात्, सञ्चारक ।

व्याख्यान, सं पु (स न) १ 'व्याख्या' (१)
२ भाषण, उपदेश, प्रवचनम् ।

—देना, कि म, व्याख्या (अ प अ),
समाज (स्वा आ से) उपदिष्ट (तु प.
अ), प्रवच् (अ प अ) ।

—शाला, सं स्त्री (स) समा-व्याख्यान,
स्थान प्रवचनम् २ शिक्षालय ।

व्याघात, सं ॥ (सं) विघ्न, दे २ प्रहार,
आपान ३ अन्धकारभेद (मा) ।

व्याघ्र, स ॥ (मं) शङ्ख, द्वापिनन्,
मृगान्तक, हिमाक, चंद्रशिल्प, पञ्च, व्याघ्र
२ पञ्च, नरा-शिव भाष्य, निर दे ।

व्याज^१, सं पु, दे 'व्याज' ।
व्याज^२, सं पु (मं) अङ्क्यप, देश,

कपट, छल, छद्मन (स) , मिथ २ विन
३ विल्व ।

—निदा, स स्त्री (स) कपटकुत्सा २ अलमार
भेद (मा) ।

—स्तुति, स स्त्री (स) कपटप्रशंसा २ अल
कारभेद (सा) ।

व्याचोक्ति, स स्त्री (स) कपट-छल, वाक्य
२ अलंकारभेद (मा) ।

व्याध, स पु (म) मृगयु, मृगजीवन,
लुब्धक, द्रोहाट, बलपाशुन अस्त्रक,
मृगवधार्थ २ दानुनिक, जालिक पक्षि
प्राह्व, जीषातक ।

व्याधि, स, पु (स) रोग, दे २ विपत्ति
(स्त्री) ।

व्यान, स पुं (म) देहस्थवायुभेद ।

व्यापक, वि (म) व्यापिन्, प्रसारिन्
२ आच्छादक ।

सव—, वि (स) विश्व-व्यापिन्, सर्वग ।

व्यापकता, म स्त्री (स) व्याप्ति, दे ।

व्यापना, कि स (म व्यापनं) व्याप (स्वा
प अ), वि-अश (स्वा आ से), अत
प्रस (भ्वा प अ) ।

व्यापादन, स पुं (स न) अपवार-अनिष्ट,
विन्ना विभनन् २ बध, हत्या ३ नाश,
ध्वंस ।

व्यापार, स पु (स) वाणिज्य, बणिक्कर्मन
(न), क्रयविक्रय, निगम २ कार्य, कर्मन्
(न) ३ व्यापार, इन्द्रियाधमयोग (न्या)
४ व्यवसाय ।

—करना, कि अ, क्रयविक्रय-वाणिज्य कृ,
प् (भ्वा आ से) ।

व्यापारी, स पुं (स रिन्) बणिन्,
बणिज, आपणिक, नैगम, क्रयविक्रयिण,
पण्याजीव, साधिक, श्रेष्ठिन्, व्यापारिन् ।

व्यापी, वि (स रिन्) दे 'व्यापक' ।

व्यापृत, वि (स) कार्य, मल्ल-न-लान-रत
२ निदिन, स्थापित । म पु (स) मविन्,
उद्यकर्मचारिन् ।

व्याप्त, वि (स) ओत प्रोत, अत प्रसृत
२ भत, परिपूरित ।

व्याप्ति, स स्त्री (स) व्यापन, परिपूरण,
अन प्रकार ।

व्याम, म पु (स) व्यानन, दैव्यमानभेद ।

व्यामोह, म पु (स) विसं, मोह, विवेक
भ्रम ।

व्यायाम, स पु (स) मल्लक्रीडा, बलवर्द्धक,
भ्रम २ परिश्रम ।

व्यायोग, स पु (म) रूपक-नाटक, भेद
(सा) ।

व्याल, स पु (स) सर्प, अहि २ तिष्ठ-
३ व्याघ्र ४ हिंस्रपशु । वि (स) दुष्ट,
अपकर्तृ ।

—प्राही, स पु (स हिन्) दे 'संपिता' ।

व्यावहारिक, वि (स) वनन-व्यवहार, विध
यक २ अभियोगसम्बन्धिन् ३ सामान्य,
सधारण ।

व्यास, स पु (स) पाराशर-रि-र्यं, कृष्ण,
द्वैपायन, बानीन, वादरायण-र्य, सत्य,
भारत जन-रत, माठर, वेदव्यास, सात्य
वग २ कथावाचक ३ विष्कम्भ, गोलस्य
मध्यरेखा ४ वित्सार ।

व्यासक्त, वि (स) अत्यतानुरक्त ।

व्यावृत्ति, स स्त्री (म) उक्ति (स्त्री)
२ मन्त्रविशेष (= भू, भुव, स्व) ।

व्युत्पत्ति, स स्त्री (स) विशिष्टज्ञान २ उद्-
गमस्थान, मूल ३ निरुक्ति (स्त्री), शब्द-
साधन सिद्धि (स्त्री), निवचनम् ।

व्युत्पद्य, वि (म) निष्पात, प्रवीण, निपुण,
विशेषज्ञ, विद् २ व्युत्पत्तिपुत्र ३ सस्कृत ।

व्यूह, स पु (म) नैग्य-मेना, विन्यास-
संस्थान २ मेना ३ समूह ४ रचना, ५,
तक ६ शरीरम् ।

—रचना, कि स व्यूह (भ्वा प से),
सैन्य विन्यास (द्वि प से), व्यूह रच् (पु) ।
व्योम, स पु [स मन् (न)] आकाश श
२ पल ३ नल्द ।

—यान, स पु (स न) विमान-जं, वायु
यान, वातपोत ।

अञ, स पु (स) समूह, मनुदाय २ मनु
राहुदत्तनयोश्चतुर्णामर्थवर्तिदेश . जन, मटल
भूमि (स्त्री) ३ गोष्ठम् ।

—नाथ, स पु (म) धोकृष्ण, जन
मोहन-राज-वत्तम इश्वर इद्र ।

—भाषा, स स्त्री (म) शौरसेनीप्राकृताद्
दभूतो भाषाविशेष ।

मण, स पु (स पु न) श्रुति (स्त्री),
अरस् (न), ईर्मे मै २ दे 'विस्फोट' (२) ।

मृत्, स पु (स पु न) निय(वा)म, पुण्यक,
२ उपवास उपोषण, लयन ३ इद, सवस्व
अध्यवसाय निश्चय प्रतिष्ठा ।

—रखना, क्रि अ, उपवास (भ्वा प अ), लय
(भ्वा आ से), उपोषण कृ, मृतपति (ना धा) ।

—लेना, क्रि अ, इद-सवस्व कृ, सशय
प्रतिष्ठा (क् आ अ), मृत धृ (चु) चर
(भ्वा प से) ।

मृती, स पु (स तिन्) मृत्, धर-स्थ
चारिन् २ वनमान ३ ब्रह्मचारिन् ४ तापस,
तापसिन् ।

मृत्य, म पु (म) सत्कारहीन २ सावित्री
पतिव्रत ३ साक्षरि, मिश्रन ।

मृदा, स स्त्री (सं) तृपा, लज्जा ।

मृदि, स पु (स) शान्ति, स्वकारि-
२ धान्यमात्रम् ।

मृदु—, म पु (स) समासभेद
(भ्वा) ।

श

श, देवनागरीवर्णमालायां त्रिंशो व्यञ्जनवर्ण,
शकार ।

शकर, वि (सं) शुभ(प्र)कर, मण्य, शुभ,
शिव, भद्रः । सं प (म) महादेव, शिव,
दे । २ शकरावय ।

शकरा, स स्त्री (म) पार्वती २ मनिषा
३ शमीवृक्ष । वि स्त्रा, सुख-मण्य, चारिणा
दायिनी ।

शकराचार्य, स पु (स) अद्वैतमतप्रवर्तक
आचार्यविशेष ।

शंकरी, स स्त्री (सं) शिवनी, उमा १ मनिषा,
रक्ता ३ शमीवृक्ष ४ रागिणीभेद । वि स्त्रा,
मण्य-वल्याण, चारिणी ।

शंका, स्त्री (म) भय, भीति (स्त्री),
वास, दर, माध्व २ मदेह, मशय,
विवक्ष्य, आशङ्का ३ अशुभ ।

शंखित, वि (म) भीत, अन्न, समन्वय
२ सन्निध्य, अनिश्चित ३ सशय-मदेह-मग्न,
आशङ्किन्, साशङ्क ।

शक्र, स पु (म) तीक्ष्णानिश्चिन्तन,
पदार्य १ वीर्य ३ नागधनुर, वाक्त्र
४ कुन्त, प्राम ५ (शक्रशता) फल् फल्क
६ दशलक्षणी (स्त्री) (मन्वाविशेष)
७ मै ८ गोपुत्रशक्र सन्मशो नृप ।

शक्र, स पु (म पु न) कृत्, कवाञ्च,
अर्णोभव, पावनप्रेमि अत्र कुम्भि, मन्-
शुभ-शुभ-शुभ-शुभ सुगम, हरिप्रिय २ लक्ष
कोटि (स्त्री) दशनिगवमस्या ३ गड
४ गजगट गन्तव्यमन्त्र वा ५ असुगविशेष ।

—वनाना, रि म, शरा घ्ना (भ्वा प अ),
अष्टेन पूर (चु) ।

—ध्वनि, स. स्त्री (स पु) कर्तुनाद ।

—राणि, म पु (स) शङ्खधर, विष्णु-
२ कृष्ण ।

शस्त्रिणी, म स्त्री (स) चतुर्ब्रह्मनादीबन्ध
तमा २ चरमहाभद्र, तित्ता, सुष्मपुत्री
३ दे 'मीर' ।

शठ, म पु (सं) अविवाहित, अकुलविवाह,
कुमार २ सुख ३ क्लीब ।

शठ, म पु (म) क्लीब, शिमुष्क, पट ॥
नपुम (पु), नपुम-सक (क) २ तीरनि,
कलीवर्द ३ उग्नरु ।

शतपु, म पु (म) महाभीम, प्रातीप,
भीमननर ।

शतर, म पु (स) दैत्यविशेष २ युद्धम् ।
(म न) जल ३ श्रेष्ठ ३ धनम् ।

—सूदन, म पु (सं) कामदेव ।

शत्रुकृक, म पु (स) शत्रु वा, शत्रु,
जल, शुक्ति (स्त्री) श्रेष्ठ, दुश्चर, पञ्चमङ्क,
वीर्य २ शत्रु ३ दुष्टराज ।

शत्रु म पु (म) महादेव, शिव दे-
२. नम्र ३ विष्णु ।

—धीन, म पु (स न) पारद, दे 'पारा' ।

—भूषण, म पु (म. न) चद्र ।

शत्रु, म पु (अ) विवेक, धर्म, इष्टि
शुद्धि (स्त्री) २ योग्यता, वीर्य ३ शिष्टता,
शुशीलता ।

—दार, वि (अ + का) विवेकिन् २ योग्य
३ शिष्ट ।

शक्र, म पु (म) तानिविशेष २ शक्रादित्य,
शालिवाहन ३ शालिवाहनप्रवर्तिन संवत्-
विशेष ।

शक्र, स पु (अ) सदेह, मशय २ अवि
ज्ञान, प्रत्ययाभाव ।

—करना, क्रि अ, दे 'सदेह करना' ।

शक्र, स पु (म पु न) वहन, अक्ष,
अनसु (न) २ शरीर, देह ।

—का भार, स पु, शक्र, शक्रटीन ।

शक्रिका, स स्त्री (स) लघुशक्रट, ८,
शक्रटी २ शक्रटीटनरम् ।

शक्र, स स्त्री (स शक्र, का) शक्र,
शक्र-रक्त, शक्रा, गुटचूर्णम् ।

—कद, स पु (॥ शक्रान्द द) (लाल)
रक्तलु, भीतिनालु, रक्त-कद पिडक (सपेद)
शक्रा-मधुर, अद ।

—पारा, स पु (स का) शक्रपाल, शक्रा
पाल ।

—बावाम, स पु (का) शुरमानिका, दे
'शुरमानी' तथा 'नद आल' ।

शकल, स स्त्री (अ शकल) आकार, आकृति
(स्त्री), रूप २ सुखमुद्रा २ रचना, पटन
ना ४ उपाय ॥ मूर्ति (स्त्री), दे 'रूप' ।

निगाहना, सु, भूषण (सु) ।

शकल, स पु (स पु न) खड्ग, लव,
भाग ।

शकल, वि (अ शकल) आइनिमत, सुदर,
सुख, वाह ।

शकुन, स पु (स) सग, दे 'पक्षी' २ कीट
भेद २ विश्वामित्र ।

शकुतला, स स्त्री (स) कण्वप्रतिपालिता
मैत्र्याविश्वामित्रयो कन्या, दुष्यतपत्नी
२ श्रीकालिदासप्रणीत प्रयातनायकम् ।

शकुन, स पु (स पु न) फलपूर्व, लक्षण,
अजन्य, निमित्त २ मगलमुहूर्त (न), सग
भव कार्य वा २ पक्षिन् ४ गृभ ४ माहलिक
गीत ५ विवाहनिश्चायको वरोपहार, *शकुन
नम् ।

—देखना या विचारना, सु, (कायारना
प्राक्) शकुने फल चित (सु) ।

शकुनि, स पु (स) पक्षिन् २ गृभ
२ गाथारीप्राक्, सौबल्य ४ महादुष्ट ।

शकर, स स्त्री (स शकरा) दे 'शकर'
२ दे 'चीनी' ।

शकी, वि (अ शक) सशयात्मन्, विश्वास
विहीन, अद्राष्टव्य, शंकाशील ।

शक्त, वि (स) समर्थ, क्षम, योग्य २ सबल,
शक्तिमत् २ धनिक ४ मधुरभाषिन् ।

शक्ति, स स्त्री (॥) बल, सामर्थ्य, प्रभाव,
तरम-ओजस् तेजस ऊर्जस् महस (न), शौर्य,
पराक्रम, शुष्म, सह, स्थामन् शुष्मन्
(न), प्राण २ वरा, अधिरार २ शत्रु-
विजयसाधन प्रभु मन उत्साह, शक्ति (स्त्री),
४ गाथा, प्रकृति (स्त्री) ५ दुर्गा, भगवती
६ गौरी ७ लक्ष्मी (स्त्री) ८ काश-म्
(स्त्री), शक्तभेद ९ राडग १० देव
नावल्म् ।

—धर, स पु (म) शक्ति, प्रहृष्टज
पाणि भूत, कांतिजेय ।

—चाला, वि, शक्ति-मत् शक्तिन्, बलवत्,
शक्त, बलिन्, पराक्रमिन्, ऊर्जस्विन्,
ममय ।

—हीन, वि (स) अशक्त, अवल, निर्बल,
बलहीन, असमर्थ २ नपुंसक, क्लीब ।

शक्य, वि (स) सम्भवनीय, सम्भाव्य, समा-
वित २ सपाथ, साध्य २ दे 'शक्त' । स
पु (॥) शक्यार्थ ।

शक्यता, स स्त्री (स) सम्भाव्यता, सम्भव-
२ साध्यता, सपादनीयता ।

शक्र, स पु (स) पुरन्दर, दे 'इन्द्र' ।

शक्राणी, स स्त्री (स) शची, इन्द्राणी ।

शकल, स स्त्री (अ) दे 'शकल' (१) ।

शक्रम, स पु (अ) जन, मनुष्य, दे,
'व्यक्ति' ।

शक्तिवत्, स स्त्री (अ) शक्तित्व, दे ।

शगल, स पु (अ) व्यवसाय, उपजीविका
२ मनोविनोद ।

शगु(गु)न, स पु, दे 'शकुन' ।

शगुनिया, स ॥ (हि शगुन) निमित्त,
देव ।

शगूका, स पु (का) कोरक-क, बलिका
२ पुष्प ३ विलक्षणवृत्त ।

—खिलना, सु, अद्रुत, सद्रु (श्वा का मे) ।
शचिची, स स्त्री (स) पौलोमी, ऐन्द्री,
दे 'इन्द्राणी' ।

—पति, स पु (स) शचीश, बलमिन्, दे,
'इन्द्र' ।

शजर, स पु (अ) पादप, वृक्ष ।

शजरा, स पु (अ) वशावलीति (स्त्री),
वशवृक्ष २ वृक्ष ३ क्षेत्रमानविषय ।

शठ, वि (स) भूत वचन, प्रतारक भाषा
विन २ दुष्ट, दे लज्जा ।

शठता, स स्त्री (स) भूतभाषा शठ्य,
कप २ दुष्ट दुराचार, दौर्जन्यम् ।

शठप्या, स पु (अनु शठप) शठ्यार,
द्रुतनिगरण्यनि ।

—मारना, उ, द्रुत निग (तु प मे)
शठ्यकारे मुञ्ज (क् आ अ) ।

शण, न पु (स) दीप, शम्भु वल्लव मास्य
पुष्प, त्वत्मार, वमन, कडुनिकक २ भगा,
विनया ३ शणपुष्पी ।

शत, वि [स शत (नित्य न)] । स पु,
दशगुणितदशमस्या तद्बोधका अष्टांश (१००),
दे ली' ।

—कोटि, स पु (स) बर्ज, पवि । स स्त्री
(स) अञ्जसरया, अर्जुददशक अर्जम् ।

—जुत, स पु (स) शनमय, इट्ट ।

—ज्वा, स स्त्री (स) अलभेद, लोहवटव
सज्जा महती शिला ।

—च्छद, स पु (स) काष्ठवृष्टपक्षिण । (स
न) शतदलपद्मम् ।

—वृल, स पु (स न) शनपत्र, वमलम् ।

—पत्र, स पु (स पु न) दे 'शतच्छद' ।

—पय माह्वण, स पु (स न) शुषक्यजुर्वे
दस्य माह्वणमविशेष ।

—पथिक, वि (स) नानामनाबलविन्,
नानापथगामिन् ।

—पद, स ■ (स) शतपदी, कणारीदी
२ विपीलिका । वि, शत, पदपाद ।

—पद्मी, स स्त्री (स) कणारीदी, शनपादिका,
कर्ण, अलुका-जलोत्पन्न (स्त्री) शनपाद (स्त्री) ।

—मिष, स पु (स शनमिषा) नक्षत्रविशेष,
शनमिषज् (स्त्री) ।

—लक्ष, स पु (स न) कोटी टि (स्त्री) ।

—वादन, स पु (स न) अनेकवाद्यानां
गुणपद वादनम् ।

—वर्ष, वि (स) शताब्द, शतायुम् । स पु
(स न) शताब्दीब्दम् ।

—महत्, स पु (स न) लघुम् ।

शतक, स पु (स न) शतवर्ष, वषट्शत,

शताब्द-स्त्री २ शत, शतवस्तुसमूह । वि,
शतसख्याविशिष्ट, शत ।

शतघ्रा, अव्य (स) शनप्रकार २ शनवपु
३ शनगुणणित ।

शतद्रु, स स्त्री (स) शितद्रु, शतद्रु, शत
द्रिद्रु (स न स्त्री) ।

शतरज्ज, स पु (का) चतुरगन् ।

—का मुहरा, स पु, सेल्नी, शार रि ।

—की विसात, स स्त्री, अष्टापद, शारिफलम् ।

—बाज्ज, स पु (का) चतुराग्रीव ।

—बाज्जी, स स्त्री (का) (१२) चतुराग,
क्रीडा-अभ्यसनम् ।

शतरजी, स स्त्री (का) विविधजरोदिका
२ बहुवर्ण, कुशाभरी ३ अष्टापद, शारिफलम् ।

स पु, चतुरागचतुर ।

शतस, अ (स) शत जनमिति कृत्वा
२ शतकृत्व (अव्य) शतवारान् ३ अनेकधा,
बहुधा नानाप्रकारेण ।

शताब्दी, स स्त्री (■) दे 'शत' (१) ।

शतायु, वि (स-युम्) शत, वर्ष-अब्द ।

शनिक, वि (स) शतकान् २ शत, सनयिन्
विषयक ।

शनी, स स्त्री (स) शनी, शनाब्दी - शत
वस्तुसमम् ।

शत्रुजय, स पु (स) शत्रु-अभिज, निज,
शत्रुवध, अरिदम, रिपुसहन ।

शत्रु, स पु (स) रिपु, अरि, सपत्न, वैरिन्,
द्वेष, द्विष, दुष्ट, दौर्हृद, पर, शात्रव,
अराणि, प्रत्यभिन्, परिपथिन्, प्रतिपथ
क्षिन्, द्वेषिन्, निपाद्य वागन्, डिमन्,
२ शत्रुमना ।

शत्रुघ्न, स पु (स) लक्ष्मणानुच, शत्रुमर्दन ।
(अ-य) ३ 'शत्रुजय' ।

शत्रुता, स स्त्री (स) वैर, नापत्य, विद्वेष,
प्रतिवि, एकादिना, विरोध ।

—वरना, वि अ, वैरायत, अमित्रान्, अमित्र
यनि, अमित्रायन् (मव वा धा), वि, डिप्
(अ उ अ) ।

शहीद, वि (अ) गभीर, प्रबल, भयङ्कर नीज ।

शनाइन, स स्त्री (का) दे 'पद्मान

शनि, स पु (स) शनश्चर भीरि, मर,
छायायुज, ग्रहनावर, वज्र, पंगु शयंपुत्र-
२ दीर्घायु २ शनिनामर ।

—प्रिय, स पुं (स) नीलमणि, दे 'नीलम' ।
 —वार, स पुं (सं) शनि शनैश्चर, वार वासर ।
 शनै, अव्य (स) मद शनकै ।
 —शनै, अव्य (सं) मद मद, शनकै शनकै ।
 शनैश्चर, स पुं (म) दे 'शनि' (१३) ।
 शपथ, स स्त्री (म) दे 'सौमद' २ दिव्य ३ प्रतिज्ञा ।
 शफ, स पुं (स न) (गवादीना) सुर, दे ।
 शफक, सं स्त्री (अ) सथा, सध्या, सध्याशु ।
 शक्रकृत, स स्त्री (अ) अनुग्रह २ प्रेमन् (पु न) ।
 शक्रताल, स पुं (का) (दे-) सप्तालुक ।
 (७७) सप्तालुक, आरुह, दे 'आरु' ।
 शक्रा, सं स्त्री (अ) स्वास्थ्य, मोरोगना ।
 —श्राना, स पुं (अ + का) विरिहस्तम्भ ।
 शव, सं स्त्री (का) रानी वि (स्त्री), रजनी ।
 शयनम्, स स्त्री (का) अवव्याप, दे 'ओस' ।
 शयल, वि (स) कुर, कुरमाप, नानावर्ण, विन ।
 शयाच, सं स्त्री (अ) वीचन २ सौन्दर्या निशय ।
 शयान, स स्त्री (अ) आकृति (स्त्री) २ ममाना ।
 शयीह, स स्त्री (अ) चित्र २ साम्यम् ।
 शय्द, स पुं (सं) निन(ना)द, वि, र(उ)व, निरु, घोष, स्व(स्वा)न, ध्वनि, ध्व(ध्वा)न २ पद, सार्धकोऽक्षरसमूह ३ औश्म, प्रणव ४ मक्तिगीत्यम् ।
 —कोप, सं पुं [म-व (श)] अभिधान, शब्द समूह ।
 —चानुर्य, सं पुं (सं न) वाग्मिता, वाक पाठ्यम् ।
 —चित्र, सं पुं (स न) अचमकाव्यभेद, अनुप्रास ।
 —चोर, सं पुं (स) कुम्भिल, शब्दतत्त्वर ।
 —चोरी, सं स्त्री, शब्दचौर्य, कुम्भिलत्वम् ।
 —पति, स पुं (सं) अनुवायिरहितो नेतृ ।
 —प्रमाण, स पुं (सं न) आश्रयमाणम् ।
 —विरोध, सं पुं (सं) विरोधाभास, मिथ्या वैपरीत्यम् ।
 —महान्, स पुं (स न) चत्वारो वेदा ।
 —भेदी, वि (स-दिन्) शब्द, वैभिन्-यानिन् ।

सं पु, अर्जुन २ दशरथ ३ बाणभेद ४ पायु ।
 —वेधी, सं स्त्री (सं धिन्) दे 'शब्दभेदी' ।
 —शक्ति, स स्त्री (स) शब्दानामर्थबोधक-
 शक्ति (स्त्री) (=अभिधा, लक्षणा न्ययना) ।
 —शास्त्र, स पुं (स न) शब्दविद्या, व्याकरणम् ।
 —श्लेष, स पुं (म) शब्दाङ्कारभेद (सा), अनेकाक्षरपदप्रयोग ।
 —सौष्ठव, सं पुं (स न) पदकालित्वम् ।
 शब्दाडयर, स पुं (म) शब्द पद, जाल प्रपञ्च ।
 शब्दातीत, वि (स) शब्दातिग, अवगनीय, (ईश्वरादि) ।
 शब्दानुशासन, स पुं (सं न) दे 'शब्द शास' ।
 शब्दार्थ, स पुं (स) पदानुवर्ती अर्थ, भावो पेशकोऽथ ।
 शब्दालकार, सं पुं (म) अलकारभेद (मा), शब्दाभिन्नो वाक्यमत्सार ।
 शम, स पुं (स) प्र, शाति (स्त्री), शपथ, निश्चलत्व, स्वास्थ्य, प्र-उप, शम २ मोक्ष ३ इन्द्रियनिग्रह ४ निवृत्ति (स्त्री), बैराग्य ५ क्षमा ।
 शमन, स पुं (स न) दे 'शम' (१) ।
 २ शब्दार्थ पशुहन्तन ३ दमन, नाशन ४ चर्वण ५ हिंसा ।
 शमनी, स स्त्री (सं) निशा, रजनी ।
 शमला, सं पुं (अ) वणीव शिरोवेहन, शिखा शिखर-अग्र प्रान्त ।
 शमशेर, स स्त्री (का) अमि, दग्ध ।
 —बहादुर, स पुं (का) आमिक, सन्निधि ।
 शमा, स पुं (अ शमअ) दे 'भोम' २ दीपिका ३ दीप पत्र ।
 —दान, सं पुं (का) दीपि-दीपिका, वृक्ष ध्वज ।
 शमी, स स्त्री (सं) शवतु, फला-कली, शिवा, केगमशनी, पापशमनी, मदा, श शुभ, करी ।
 शमोः, वि (सं भिन्) शात, क्षीमरहित, निश्चल ।
 शयन, सं पुं (म न) सवेश, स्वपन, निद्राणं, शयि (स्त्री), स्वाप २ शय्या ३ सवेदनं, मैथुनम् ।

—गृह, म प (स न) शयन, आगार मन्दिरम् ।
 शयालु, वि (स) निद्रालु, तद्रालु २ सुषुप्त, निद्रावस ।
 शय्या, म स्त्री (म) आसन, दे 'विजैना' २ खटवा, पर्यंक, दे 'साट' ।
 —रात, वि (म) रुग्ण, रोगिन् ।
 —गृह, सं पु (स न) दे 'शयनगृह' ।
 —मूत्र, मं पु (स न) मूत्रप्लव, शिपुगोमेद ।
 —छादन, स पु (स न) पर्यंकप्रच्छद ।
 शर, स पु (स) श्पु, बाण, दे १ शरबाण, दे 'मरकटा' ३ धीरशर, दुग्धाघ्न, सनानो निवा ४ दधिशर, दधि, सार स्नेह, बट्टर, क्वर ५ छरार ।
 शरभ, म स्त्री (अ) धर्म, मत् २ धर्मशास्त्र ३ प्रया ४ धार्मिकदेश ५ ईश्वरशतमाग (इत्थाम) ।
 शरकाड, सं पु (म) दे 'मरकटा' ।
 शरण, स स्त्री (म न) आश्रय, गति (स्त्री) २ आश्रयत्राण-स्थान ३ गृह भवन ४ शरण्य, रमिन्, नाट ५ शरणान्तरालम् ।
 —डेना, कि म, अवच्छ (भ्वा ष मे), शरण दा ।
 —डेना, कि अ, आशि, भ्वा उ मे), शरण प्रप् (वि आ अ) इत्या (दोनों अ प अ) ।
 शरणगात, वि (मं) शरणापन्न, अभिपन्न, शरणार्थिन, शरणैयिन् । स पु (स) शिष्य ।
 शरणार्थी, वि (म धिन्) शरणेच्छुक, रक्षा भिलापिन् ।
 शरण्य, वि (स) शरण्य, शरण्यमरक्षक, राहू, प्राट २ दुग्गिन, अमदाय ।
 शरद्, म स्त्री (म) परि-वत्सर, अब्द, वर्ष पै ३ वर्षावमान, मेघान, कालप्रमान — त प्राहृत्यय (म आधिन-वार्तिक) ।
 शरधि, मं पु (स) लृण, श्पुधि, दे नरराज ।
 शरङ्ग, म पु (अ) महत्त्व, महत्ता २ श्रेष्ठता ३ गुण ४ प्रतिष्ठा ।
 शरयन्, म पु (अ) शररोदक, गुडोदक, पानन, गोम्य, मित्राद, मिष्टोद २ शरंरा मधु-न्याय ।

शरवती, स पु (अ शरवत्) दे 'मीठी' (फल) २ दक्षपीनवर्ण । वि, रसपूर्ण, सरस, सुगधुर ।
 शरम, स स्त्री, दे, 'शर्म' ।
 शरह, सं स्त्री (अ) टीका, व्याख्या, भाष्य २ दे 'भाव' (मूल्य) ।
 शरा, म स्त्री, दे 'शरत्' ।
 शरास्त, स स्त्री (का) सहभागिता, दे 'साक्षा' २ सहकारिता ।
 शराकस, स स्त्री (अ) सज्जनता, सौमन्य, शीलम् ।
 शराच, स स्त्री (अ) सुरा, मदिरा २ दे 'शरान' (दिकमन) ।
 —का छमीर, स पु, मधुपक, सुराकृत्, मेदक, जगल ।
 —का प्याला, सं पु, पान-मधु-सुरा, भाजन भाड पात्रम् ।
 —के छमीर की झाग, स स्त्री, मधु, फेन — मड, वार-उत्तर-उत्तम ।
 —के मरो में चूर, वि, मत्त, क्षीर, मदोदक, मदोदक, समद, मदाद्य, मदोन्मत्त, शौड ।
 —रावा, स पु (अ + का) गता, शुभा, सुरालय ।
 —रीचना, कि स, मय मथा (जु उ अ) सुरो म्भ्यद् (दे) । म पु, मय, संधान अभिपव ।
 —रीचने का स्थान, सं पु, संधानी, अभिपव शाला ।
 —रीचने वाला, स पु, सुराकार, शौक्षिक, सधानिन् ।
 —खोर, स पु (अ + का) पान, आसन — रत, मधु-मय-सुरा-प, पानशौच, सुराष्ट्र ।
 —खोरी, मं स्त्री, सुरापान-म, मयमेवनम् ।
 —पीना, कि स, सुरा या (भ्वा प अ), मय सेव् (भ्वा आ से) ।
 शरावी, सं पु (अ शराव) दे 'शरावतोर' ।
 शरावीर, वि (का) दे 'लघपव' ।
 शरावत्, मं स्त्री (अ) कुचेष्टा-रहित, दुर्लभित, दुष्टता यत्ना, अपकार ।
 शरावती, वि (अ शराव) कुचेष्टक, दुर्लभित, दुष्ट, रात्र, अपकारक ।
 श(स)राव, मं पु (सं पुं न) बर्धमानक, मानिक, मृन्मार्ग, दे 'पुरह' ।

शरासन, सं पु (श न) शरास्य, शरावाप
दे 'धनुष'।

शरीरत, म स्त्री (अ) दे 'शरत्' (२, ५)।

शरीर, वि (अ) समिलित । सं पु, मह
चर कर्त्तृ-योगिन् २ सह-आनि, अशिन,
अशमदिन् ३ सह-य-यक ४ सचातीय,
सन्नि ।

शरीर, सं पु (अ) अभिज्ञान, कुल्लेन,
आप, सुप्रतिष्ठ, भद्रजन, सज्जन । वि (अ)
मध्य, मित्र, सहाचारिन् २ कुल्लेन, अभिज्ञात,
अभिजनवद् ३ पवित्र, निर्दोष ।

शरीर, सं पु (म शीरन्) (फल)
मोक्षफल, वैदेहवल्गव, गङ्गावत् कृत्वा वडु,
बीजकम् । (वृष्ट) सोनफल इ पु क् ।

शरीर, सं पु (स न) कथ्य, देह-ह,
कषेत्र-र, गात्र, अंग, क्षेत्र, विग्रह, सहनन,
वपुः (न) । मूर्ते-तनु-नू (स्त्री) पुर,
चतुःशाय, पिण्ड, स्कन्ध, पत्तन, श्रित्तिपा
यन, पुद्गल, करणम् ।

—त्याग, सं पु (स) देहपान, मृत्यु ।

—रक्षक, सं पु (म) अगारक्षक, अनुव ।

—शास्त्र, सं पु (स न) शरीरविज्ञानम् ।

—मस्कार, सं पु (स) मूर्त्तधामादय
पोऽशमस्कारा २ बाधशुद्धि (स्त्री),
देहशुद्धि ।

शरीर, वि (अ) दे 'शरास्ती' ।

शरीरात, सं पु (म) देहपान, निषनव ।

शरीरी, सं पु (म रिन्) शरीरवत्, देहिन्
२ जीव, अशमन् ३ प्राणिन्, जल ।

शर्क, सं पु (अ) प्राची, पूर्वदिश ।

शर्करा, सं स्त्री (स) दे 'शकर' २ तिगना
का ३ अमरी, दे 'धयरी' ३ अछीला
पायणशकला (वडु) ४ क(स्)पूर ।

शर्क, वि (अ शर्क) प्राच्य, पूर्व ।

शर्त, सं स्त्री (अ) पा, गृह २ सरेन,
मन्य, नियम ।

—करना, बाँधना या लगाना, मु, पा
(भ्वा आ से), गृह् (भ्वा चु उ से)
२ समय-नियम क ।

विण—, कि वि, समय-नियम विना ।

शतिया, कि वि (अ) गृहेन, पण्येन, गृह
पा पूर्वक २ निस्सशय, निस्सन्देहम् । वि,
अनेन, अवध्य ।

शर्म म स्त्री (का) दे 'लज्जा' २ संकोच,
३ शिञ्ज ३ मन, प्रतिष्ठा ।

—से गडना या पानी पानो होना, मु,
अन्तर्य लज् (त आ मे)-वप् (भ्वा आ
न)-जानतास्व (वि) भू ।

शर्ममार, वि (का) लज्जाशील २ हर्षा,
लज्जित ।

शर्मा, सं पु (श शर्मन्) ब्रह्मगोपधिमेद ।
शर्माना कि अ तथा कि म (का शर्म)
दे लज्जित होना २ दे लज्जित करना ।
शर्माशर्मा, कि वि (का शर्म) लज्जना, हिपा ।
शर्मिन्दा, सं स्त्री (पा) लज्जा, वषा,
मोडा ।

—उडाना, मु, दे 'लज्जित होना' ।

शर्मिन्दा, वि (का) लज्जित, मोडित, जतिन ।

शर्माहा, वि (का शर्म) लज्जावत्, सलज्ज,
दे 'लज्जाशील' ।

शर्वरी, सं स्त्री (स) निशा, रात्रो, दे 'रत्न' ।

—नाथ, सं पु (स) शर्वरीदीप, चन्द्र ।

शलग(ग)म, सं पु (का) शिला, मूलकद,
गृध्रनम् ।

शल(र)भ, सं पु (स) पत्राक-ग, पत्र,
फट्टिग, शिरि, दे 'शिञ्जी' २ पत्ता, दे
'पत्रा' ।

शलाका, सं स्त्री (स) धातुकाष्ठदिनिर्मिता
यष्टिन्, दे 'सलाख' २ बा ३ अस्थि (न)
४ कृ ५ शरिका ६ वज्रलशलाका
७ ग ८ देवन ९ दीपशलाका ।

शल्य, सं पु (न) मश्रान, माद्रीभान
२ ३ दिव्य-लोभ-वृक्ष ४ मीमा ५ शलाका
६ शुष्क-स्त्री, शल्यक ७ मीममेद (म न)
कुन, ग्राम २ इपु, वग ३ कर्कक
४ पीडकरप ५ दुववन ६ पाप ७ कष्ट
८ विष ९ अस्थि (न) १० अलचिकित्सा
११ इडु ।

—कर्ता, सं पु (म-मृ) दे 'मनन' ।

—त्रिया, सं स्त्री (सं) दे 'सवरी' ।

शव, सं पु (स पु न) दुष्प, शिनिवद्धन,
मृतक-क, प्रेतम् ।

—दाह, सं पु (स) अन्तेष्टि-मृतक, संस्कार ।

—यान, सं पु (स न) शवस्थ, खाद्य
क्रि, लो, काष्ठमल, दे 'अरपी' ।

शबर, स पु (म) स्नेच्छजानिभेद २ शिव
३ जलम् ।

शबरी, म स्त्री (म) श्रमगाना नातपत्निनी
२ शबरजालेनारी ।

शश, स पु (म) शशक शक्ति रोम
वर्ण शृङ्गरोमम् २ चद्राद्यन् ३ पुष्पभेद ।

—धर, स पु (सं) दाशमृत्, चद्र ।

—जग, स पु (म न) शत्रवविषाण,
सपुष्प, गगनकुसुम, अम्भवनीयवस्तु (न) ।

शशक, म पु (सं) दे 'शश (२) ।

शशमाही, वि (का) पाष्मासिक जडवारिक
(स्त्री स्त्री) ।

शशकि, म पु (म) शशधर, चद्र ।

शशी, म पु (सं शशिन्) शशधर, मोम,
दे 'चद्र' ।

—कीर, स पु (सं) चद्रकिरण ।

—कला, स स्त्री (सं) चद्रकला २ वृत्त
भेद (छत्र) ।

—कात, म पु (म) चद्रकात्मणि । (सं न)
कुसुम् ।

—कुल, स पु (सं न) चद्रवश ।

—कुन, स पु (सं) शशिन, पुष्पम् ।

—प्रभा, म स्त्री (सं) कौमुदी, चद्रिका ।

—भूषण, म पु (सं) शशि-चद्र, मौलि
शेखर, शिव ।

—चदना, स स्त्री (म) वृत्तभेद (छत्र)
२ चद्रमुली-खा । (उपयुक्त सभी मन्त्रार्थों में
'शशि' रूप रहेगा । उ शशिकर ह) ।

शस्त्र, स पु (सं न) अस्त्र, प्रहरण, शत्रुघ्न,
हस्त, हेनि (पु स्त्री) ।

—शोधना, क्रि अ, शस्त्राणि धृ (लु) सग्रह
(नि उ अ) ।

—कम, सं पु [म-मन्त्र(न)] शस्त्रग्रन्थ,
क्रिया ।

—गृह, म पु (सं) शस्त्र, शाला आगारम् ।

—जीवी, स पु (सं-विन्) शस्त्रकृति,
अनुधिक ।

—धारी, वि (सं-विन्) शस्त्र शस्त्र, मूत्रधर ।

—विद्या, सं स्त्री (म) धनुर्वेद ।

शस्त्रागार, सं पु (सं शस्त्र+आगार) शस्त्र
शाला-गृह-न्यासम् ।

शस्त्राभ्यास, स पु (म) अभ्यासिष्ठा, मुरली ।

शस्त्र, स पु (सं) शस्त्र, क्षेत्रस्थ कर्म, दे

'कसल' शब्द, शब्द ३ वृक्ष-कला, कल
४ धान्य (शस्त्र क्षेत्रगत प्राङ्, सत्पुष्प धान्य
मुच्यते । अथ वितुषमित्युक्त, श्वित्तम्भ
मुद्राद्वयम् ॥) वि (सं) उत्तम, श्रेष्ठ २ स्तुत्य,
प्रशमनीय ।

—भक्षक, वि (सं) वृण शक, भक्षक ।

शस्त्रागार, स पु (सं न) धान्यागारम्,
कुशल ।

शस्त्रशास्त्र, स पु (का) शानाधिराज, दे-
'समाज' ।

शस्त्र, सं स्त्री (का) शस्त्रोत्तेजना ।

—दना, मु, निभूत उत्तिज्-जदीप् (पे) ।

शस्त्रज्ञान, स पु (का) राजकुमार-
२ कुवराज ।

शस्त्रज्ञान, वि (का) बलिन्, शक्तिशालिन् ।

शस्त्रोत्तर, स पु (का) शूला, स्थूणा, छत्राधार ।

शस्त्रोत्तर, स पु (का) (वृक्ष) मल्लदार,
तृण, तृण, पुष्प बल्लण्य, तृण, वृष । (फल)
तृण, तृण, तृण, वृष, वृषम् ।

शस्त्र, सं पु (म) माक्षिक, शौद्र, मधु
(न) दे ।

—की मन्त्री, स स्त्री, मधुमक्षिका ।

—समाकर चाटना, मु, चर्च पदार्थ निरर्थ
रक्ष (भा ५ से) ।

शस्त्रार्थ, स स्त्री (का) सानेपीपिका,
मानिका ।

शस्त्राला, सं पु (का) मन्त्राल (पं-
सवाल), श्वर, वृष्टि-सहचर ।

शस्त्र, स पु (का) नगर, पुरम् ।

—पनाह, सं स्त्री (का) मन्त्रालोद्, वृत्ति-
(स्त्री), प्राचीर, दे ।

शस्त्री, स पु (का) शौर, नागरिक, नगर-
शौर, वन । वि, नगरीय, नागर, नागरेयम्,
नागरिक दे ।

शस्त्रवत, स स्त्री (म) सम्भोग मैथुन,
वृष्टि ।

—परस्त, वि, कामुक, लप्स, कामातुर ।

—परस्त्री, सं स्त्री कामुकता, लप्सता,
कामान्धता ।

शस्त्रसगर, सं पु (का) कुशलसादिम् ।

शस्त्रद्वय, सं स्त्री (म) साक्ष्य, दे 'गवारी'
२ प्रमाण ३ बलिदानम् ।

शहीद, स पु (अ) *हुतात्मनः, धर्महत, धर्म
पतन ।

—होना, क्रि अ, धर्मार्थं प्राणं न ह्य (जु प
अ) परीप्राण्य हन् (कम) ।

शात, वि (स) स्वस्वचित्त, प्रमत्त, मानस
चेतन, निवृत्त, स्वस्थ अनन्दग, आवेशशून्य,
शमन, शमान्वित २ रुद्र, वेगगति क्रिया,
रक्ति, विरत ३ मौम्य गभीर, घोर ४ नि
शब्द, मोहिन् ५ चित्तेन्द्रिय मयमशील
६ शिथिल, निरुत्साह ७ आन, क्लान्त, शिथ
८ निवासित, निवाण (अग्न्याग्नि) ९ निविज
निवाण । स पु (स) रमविशेष (वाच्य) २
विरक्त, योगिन् ।

—करना, क्रि म, उपप्रशम् (प्रे) २ प्रमद
शुष (प्रे) ।

—होना, क्रि अ, शम् (दि प मे), शान
निश्चल (वि) भू ।

शातना, स स्त्री (स) दे 'शानि' ।

शातनु, स पु (म) दे 'शानु' २ वरुणी ।

शाता, स स्त्री (स) दशरथनन्दा, श्रेष्ठ
श्यामावा ।

शासि, स स्त्री (म) दे 'गम' (१) । २ गति
क्रिया वेग-श्रीम, राहित्य ३ नीरवता, नि
शब्दता ४ रोगादीनां क्षय नाश ५ मृत्यु
६ सौम्यता, गम्भीरता ७ वैराग्य, वृष्णाश्रय
८ सकटनिकारणम् ।

—शायक, वि (म) शानि, प्रद-कर-दायिन् ।

—पर्व, स पु [स १७१ (न)] श्रमन्महा
भारतस्य द्वादशपर्वम् ।

शायूर, स पु द 'शायर' ।

शाइस्तरगी, स स्त्री (का) शिष्टता, मञ्जुता ।

शाइस्ता, वि (का, न) शिष्ट, सुशील ।

शाक, स पु (म पु न) ३ माग ।

शाकाहार, स पु (स) हरितकमोदन, भान
त्याग ।

शाकाहारी, वि (स रि) हरितकमोदिन्,
भासत्यग्निम् ।

शाक, स पु (म) शक्त्युपात्मक, शक्तिव,
शाक्तेय ।

शाक्तिक, स पु (स) दे 'शाल्' । २ शक्ति
वाच्य, धर सैनिक, शाक्तीक ।

शाक्त्य, स पु (म) प्रार्थनश्रवित्वादि
विशेष ।

—मुनि, स पु (म) गौतममुनि, सिद्धार्थ,
महाबोधि, महामुनि ।

शास्त्र, स स्त्री (का) दे 'शास्त्रा' (१) ।
२ श्रम, विषाण ३ उपाय ४ वरनदी ।

—दार, वि (का) शास्त्रासुत २ श्रमसुत ।

शास्त्रा, स स्त्री (म) विष्णु प, शिष्टा, लका,
लना २ देहावयव, शरीराग (हाथ, पाँव
आदि) ३ अगुनी, करशास्त्रा ४ अग, उपाय
५ वि माग ६ वैदिकग्रन्थ भेद ।

—नगर, स पु (स न) उपपुर शास्त्रापुर,
नगरप्रात ।

शास्त्री, स पु (स रिन्) वृक्ष २ वेद ।
वि, मशास्त्र ।

शानिर्द, स पु (का) शिष्य, दे ।

शानिर्दी, स स्त्री (का शानिर्द) शिष्यता
२ सेवा ।

शाटक, स पु (स पु न) पत्र, वल्गुम् ।

शाटिका, स स्त्री (म) दे 'जोनी' ।

शाटी, स स्त्री (स) दे 'साडी' ।

शाठ्य, स पु (म न) दे 'शठना' (१२) ।

शाण, स पु (म) शाणी, सामकः (छोटा)
सामर २ नि, वष-म, कषपट्टिका ३ माष-
चतुष्टय, टक, निष्क ।

शाद, स पु (स) कर्दम २ शम्पम् ।

शाद, वि (फा) प्रमत्त, मुदित २ परिपूर्ण ।

शादाव, वि (का) जलाढ्य, जलमिक्त ।

शान्तिषाना, स पु (का) मगन्वाच २ दे-
'बभार' ।

शान्ती, स स्त्री (फा) विवाह, दे २ हर्ष
३ आनन्दोत्पन्न ।

—गमी, स स्त्री (का+अ) हर्षशरी, सुख-
दुःखे ।

—शर्मा, स स्त्री, हर्षातिरेकजनितशत्रु ।

शाहल, स पु (म पु न) हरित-न, शम्प-
बहुलो देश । वि, हरित, शम्भाञ्जल ।

शान, स स्त्री (अ) श्री (का), अभिख्या,
औज्यव्य, शोभा, प्रभा, मय्यता, आदर
२ विभूति शक्ति (स्त्री) ३ प्रविष्टा, गौरव
४ विभ्रम ५ महिमन् (पु) ।

—दार, वि (अ+का) श्रीमद, शोभान्वित,
मय्य, सादर, शोभन, सुप्रभ, समुज्ज्वल,
वैभवशालिम् ।

न्याया, नियमन ८ राज्य दण्ड ९ लिखित
प्रतिज्ञा ।

—करना, कि स, प्र, शम् (अ प से),
दश (अ आ से), तृ (चु), अधिष्ठा
(स्वा प से), नियम्-विनी (स्वा प अ) ।
म.पु, दशन, अग्निष्ठान, नियमन, नियमनम् ।

—कर्ता, मं पु (स न) शामक, शामनघर,
शाम्न्, शासितृ, अग्निष्ठान, देशक ।

—यत्र, म, पु (स न) रात्रादेशपत्रम् ।

—हर, मं पु (म) आत्रावाहक १ शामन,
हारक-हारिन्, रात्रदूत ।

नामित, वि (स) कृतशामन, अधिकृत,
अधिष्ठित, नियमित २ दक्षिण, दे ।

शास्त्र, म पु (म न) धर्मग्रन्थ २ विज्ञानम् ।

—कार, म पु (म) शास्त्र-कृत-रचयितृ
आचार्य ।

—चल, म पु [स-क्षम् (न)] व्याकरण
२ शानिन् ।

—ज्ञ, म पु (स) शास्त्र-दर्शितृ-दृष्टि विद
कोविद-वेत्तृ ।

—वक्ता, म पु (स-क्तृ) उपदेशक ।

—विरुद्ध, वि (स) धर्मविरुद्ध, अन्वर्थ ।

शास्त्रानुसार, कि वि (स न) यथाशास्त्र,
धर्मानुसूलम् । वि, शास्त्रोक्त, स्मृत ।

शास्त्री, स पु (म क्षिन्) उपाधिभेद
२ धर्मशास्त्र ३ दे 'शास्त्रज्ञ' ।

शास्त्रीय, वि (म) श्रौत, स्मार्त, शास्त्रविषयक
२ शास्त्र-वक्तृ-विहित ।

—श्रोतव्य, वि (म) शास्त्र, विहित-निर्दिष्ट
अनुकूल ।

शास्त्र्य, वि (स) नियमणीय, नियतव्य,
शामन-अह-वीर्य ३ शिक्षणीय, उपदेष्टव्य,
विनिय ३ दण्ट्य, दंडनीय ।

शाह, म पु (फा) महाराज २ खनभित्तु
पात्र । वि, महत्, बृहत्, प्रधान ।

—जात्रा, म पु (फा) दे 'महजरा' ।

शाह्निद, मं पु (अ) नाभिन्, प्रत्ययदर्शिन,
देव्य ।

शाही, वि (फा) राजकीय २ मूषोचिन,
नृपयोग्य ।

शिकारक, म पु (फा शक) हिरण्य, अ,
हिरण्य, नि, रक्तपारद, चूर्णपारद, मुरग,
रमोद्धवम् ।

शिकार, म पु (स न) नानिकामल, शिना
णक-क २ लोहमल ३ काचपात्रम् । (म पु)
शिनाणक, श्लेषम् ।

शिजन, म पु (म न) शिजित, शणत्कार,
शणत्क्षणव्यति ।

शिकनवी, स स्त्री (फा शिकनवी) पानक-
*अम्लगोन्वम् ।

शिकना, म पु (फा) १३ निपीडन-दृष्टी
करण-निपादन-यत्र ४ ग्रथनिपीडनयत्र
५ निगड, दृष्टि ६ ३ कोन्टू ।

शिकजे म स्त्रीचना, मु, प्रमथ (क प मे) २
यद् (प्रे), अत्यर्थ यद् (प्रे) पीड (चु) २
निगडयति (ना था) ।

शिकन, म स्त्री (फा) व(ब)ली लि (स्त्री)
२ पुत्र मग ।

—डालना, कि म, वलिन क २ सपुट विधा ।

—पडना, कि अ वलिन-वलिम-वलिदुत
(वि) भू २ सपुटमग (वि) जन्
(दि आ से) ।

शिकम, म पु (फा) उदर नठरम् ।

शिकरा, स पु (फा) श्वेनभेद, *शीकर ।

शिकवा, म पु (ज) दे 'शिकायन' ।

शिकस्त, म स्त्री (फा) अभिनया, भव,
परानय दे २ वैफल्यम् ।

—शाना, कि अ, परिभू विनि (कर्म), दे
'हारना' ।

शिकायत, म स्त्री (अ) (सविहापा) विना-
पना, दुःखनिवेदन २ परि(री)वाद, आक्षेप,
गहां, निदा ३ उपालम्भ, ४ आमय, व्याधि

—करना, कि अ, मशोर-मविलाप विना-
निपिद् (प्रे) २ आ-अनिशिप् (क्ष प अ),
गह (स्वा लु आ मे), अपपरि, नद्
(स्वा प मे) ३ उपालम्भ (स्वा आ अ) ।

शिकार, म पु (फा) आग्नेय खेदत-टक,
मृगया, मृग्य, आग्नेय, पापद्धि (स्त्री)
२ मृग्य-वतु प्राणिन् ३ मृगयाहती जीव
४ माम ५ मध्य ६ प्रनारित, वञ्चित ।

—करना, कि म, मृग (लु आ से, दि प,
से) मृगयाक, अनुवाक् (स्वा प मे) । मु,
छलेन घनादिक दृ (स्वा प अ) ।

—होना, कि अ, आगेरे हन् मार (कर्म) ।
मु, वशवती नन् (दि आ मे) ।

शिकारी, म पु (फा) व्याध, लुब्धक २

मृगशु, जटोट, जीवातक, शकुनिक, जालि, बायुरिक । वि, आरोटि ।

—कुत्ता, म पु, मृगदश, मृगयाकुचुर, विश्वरु ।

—व्याह, स पु, गा-वविवाह ।

—लियाय, ॥ पु, मृगया-अ रोट, वेष्ट (म) । शिक्षक, म पु (स) अ व्यापन, गुण, उपाध्याय, अनुशास्त्र, उपदेशक आचार्य ।

शिक्षण—म पु (स न) शिक्षा, अध्यापन, विद्यादान पाठन, अनु-द्वामन शिक्षि (स्त्री), विनय २ विद्या, उपादान ग्रहण-अभ्यास ।

शिक्षा, म स्त्री (स) अध्ययन-व्यापन, पठनपाठन । २१ दे 'शिक्षण' (२२) ४ निपुणता ५ उपदेश, मय ६ वेदांगविशेष ७ नियन्त्रण ७ दद, कुफलम् ।

—हीन, वि (स) अशिक्षित, निरक्षर ।

शिक्षार्थी, स पु (सं विष्) शिष्याग्राह्य, छात्र ।

शिक्षालय, स पु (मं) शिक्षणालय, विद्यालय ।

शिक्षित, वि (स) साक्षर, अक्षराभिग, छेद नवाचनक्षम, कृतविद्य २ पठित, विद्व । [शिक्षिता (स्त्री) = कृतविद्या पठिता इ] ।

शिरद-टक, स पु (स) मयूरपुच्छ २ चूडा, शिरा ३ कानपक्ष ।

शिरगटी, स पु (सं टिन्) मयूर २ कुचकुट ३ हुपदपुत्रविशेष ४ विष्णु ५ कृष्ण ६ शिव ७ बाण ८ शुभा ९ स्वर्णधुविका ।

शिर्य, म पु (स पु न) गिरि, मरुत शृङ्ग, पवनप्र, वृत् २ उद्यतमी भाग, दे 'चोटी' ।

शिर्यरन, म स्त्री (म शिर्यरिणी) *इति मित्रोदरम् ।

शिर्यरिणी, म स्त्री (म) वक्त्रभेद २ स्त्री रत्न ३ रीमशनी ४ द्रव्याभेद ५ दे शिर्यरन ।

शिर्यरी, म पु (म रिन्) पर्वत २ वृक्ष ३ वाट ।

शिर्या, म स्त्री (म) शिरद टक, चूडा २ अग्निज्वाला, ज्वाला, अचिम (न) ३ दीप, अचिम (न) शिर्या ४ शिर्य रं ५ शिर्य ६ शिर्या ।

—कंद, म पु (सं पु न) दे. 'शान्त्वम्' ।

—वान्, वि (म-वत्) शिरिन्, चूडावन, शिर्यावित । ॥ पु, दीपक २ अग्नि ३ केतुग्रह ४ उल्का, योत्का ।

—सूत्र, स पु (म-त्रे) चूडावधोषवीने (न द्वि) ।

शिरिनी, म स्त्री (स) मयूरी, शिरिणिनी, वेणिनी २ कुचकुटी, कुचकुटवधू (स्त्री), पक्षिणी ।

शिरिरी, वि (म शिरिन्) शिर्यावत् चूडावत् । ॥ पु (म) मयूर २ कुचकुट ३ दीपक ४ अग्नि ५ पर्वत ६ बाण ७ वृक्ष ८ उल्का, केतु ।

शिर्याक, स पु (का) छिद्र विल ३ विदर, भेद ।

शिर्यार, शिर्या(गा)र, म पु (का) शृगाल, जडुर ।

शिर्याव, कि वि (का) दीघ, सरवरम् ।

शिर्यिल, वि (स) मयम-पन, दम्ब, सस्त, दे 'दीला' ३ अल्प, मय ३ उदासीन ४ दृढत्वान्वय ५ वधनहीन, मुक्त ६ भाग, कर्त ७ अस्पष्ट (शब्दादि) ८ उपेक्षित (नियम) ।

शिर्यिलता, स स्त्री (स) शीथिल्य, दम्बता, सस्तता, दे 'दीलापन' २ अल्प्य ३ औदासीन्य ४ दृढताभाव ५ शान्ति (स्त्री) ५ नियममग ६ शक्तिन्यूनता ।

शिरिन, मं स्त्री (न) उग्रता, क्षीयता, प्रचटता २ आश्रयम् ।

शिर, म पु (म) शिरत् (न) २ 'निर' ।

शिर(रा)कन, म स्त्री (अ) दे 'गराकन' ।

शिरस्त्राय, म पु (म न) दीपण्य, शिरस्त्र, दे 'छोद' ।

शिरा, स स्त्री (म) शिरा, रंशिरा, रक्त वहिनी नानी (Vein) ।

शिराचार्य, वि (मं) अगोस्वी, शर्य, पाल विनय ।

—करना, मु, सादर स्वी अग्री, क ।

शिरामणि, म पु स्त्री (म) चूडामणि, शिरोरत्न २ प्रधान, मुख्य ।

शिरा, म स्त्री (म) शिरा, पट्ट-अल्प २ अदम्य भावन (पुं) ३ गटरी ४ *दे वणशिर्य, *मिन्ना पट्टो पट्टिका, *शिरा ।

- जीत, म पु [स-जतु (न)] गिरि
अग-अद्रि-अदम-शिला-ज, अदम-जतु-कल्प
उप, शिला, तितु (स्त्री) -द्र-मल-स्वेद ।
- लेप, म पु (स) प्रस्तरलेख्यम् ।
- वृष्टि, म स्त्री (॥) करकामार ।
- शिलोड, स पु (म) उद्यशिल, उपात्तशस्य
क्षेत्रात् शेषावचयनम् ।
- शिल्प, म पु (म न) यत् कला, *हस्त
कर्मन् (न) -शिल्प-म्यवमाय शिल्पिक, दे
'दलाकारी' ।
- कला, म स्त्री (स) दे शिल्प' ।
- कार, म पु (स) शिल्पिन्, कार, देवट,
शिल्पजीविन, शिल्पकारिन्, कमरार ।
- विद्या, म स्त्री (स) हस्तकौशल २ गृह
निर्माण-वास्तु-कला ।
- शाला, स स्त्री (म) शिल्प (वि), गृह
गृह शाला-आवेशनम् ।
- शास्त्र, स पु (म न) हस्तम्यवमाय
शास्त्र २ गृहनिर्माण-वास्तु, शास्त्रम् ।
- शिल्पो, स पु (स पिन्) दे 'शिल्पकार'
२ गृह-कारक-निवेशक, पल्लव ३ चित्र
कार ।
- शिव, स पु (स) महादेव, शम्भु, पशुपति,
शक्तिन्, महा ईश्वर, शकर, चन्द्रेश्वर,
गिरीश, सृष्ट, पितामहि, त्रिलोचन, भूतेश,
धूम्रि हर, त्र्यम्बक, त्रिपुरारि, गंगाधर,
शृङ्गध्वज, मय, रुद्र, उमापति, महानन्द,
भैरव, पञ्चानन, कठेकाल नदीश्वर
२ परमेश्वर ३ वेद ४ शृङ्गाल । (स न)
कल्पयण-मगलम् । वि, कल्याण-मगल, कारक
कारिन् ।
- हुम, स पु (स) दिग्वृष्ट ।
- नदन, स पु (म) गणेश ।
- पुराण, स पु (स न) शैवपुराण, पुराण
ग्रन्थविशेष ।
- पुरी, म स्त्री (म) काशी, शिवनीयम् ।
- पौत्र, स पु (स न) पारद, शिववीर्यम् ।
- रात, म स्त्री (स निवराणि) निवचतु
द्वयो फाल्गुनकृष्णचतुर्दशी ।
- लिङ्ग, म पु (म न) शिवप्रतिमाभेद ।
- लिङ्गी, म स्त्री (म-लिङ्गिनी) शिव, वल्ली
वह्निका, श्वरलिङ्गी, चित्रकला ।
- लोक, स पु (स) वेलास, शिवशैल ।
- वाहन, म पु (म) शिववृषभ, नदिन् ।
- मुदरी, म स्त्री (न) दुर्गा ।
- शिवा, स स्त्री (स) दुर्गा २ पावती
३ शृङ्गाली ।
- शिवानी, म स्त्री (स) पावती, गौरी, दुर्गा ।
- शिवाला, स पु (स-न्य) शिव, मन्दिर
आयतन २ देवालय ३ दमशानम् ।
- शिवि, म पु (॥) उद्गारनरूपपुत्र, ययानि
दीहिन् २ हितपशु ३ भूतकृष ।
- शिविका, म स्त्री (म) याप्ययान, शिवीरथ,
दे पालकी' ।
- शिविर, स पु (म न) वटक-क, निवेश,
आगतुकमैव्यवाम २ पट, मडप-कुटी, दे
'तव' ३ दुर्ग-गम् ।
- शिवेतर, रि (स) अशुभ, अमगल, हानि
कारक ।
- शिशिर, स पु (स पु न) कपन, शीत,
हिमकूट, कीटन (माघ तथा फाल्गुन)
३ तुषार, तुहिनम् । वि, शीत, शीतल,
उष्णताशून्य ।
- कर, स पु (स) हिमाशु, चद्र ।
- काल, म पु (स) दीर्घ, शीतकाल ।
- शिशु, म पु (स) स्तनपय, लनप, वस्त,
बाल, दारक, उत्तानशाय, हिम,
अपत्यम् ।
- शिशुता, स स्त्री (स) शिशुत्व, शैशव,
बाल्यदे ।
- शिशुपाल, स पु (म) चेदिरान, दमघोष-
सुत, वैद्य ।
- वध, स पु (म न) महाकविनायप्रणीत
महाकाव्यविशेष ।
- शिष्ट, वि (म) सम्भ, भद्र, श्रेष्ठ, सुशील
२ धर्मात्मा ३ ग्रात ४ बुद्धिमत् ५ शालीन,
व्यवहारनिपुण ६ प्रवचन ७ आह्लाकारिन् ।
- शिष्टता, स स्त्री (स) सम्भत्ता, भद्रता,
सुशीलता, श्रेष्ठता २ अधीनता ।
- शिष्टाचार, म पु (म) सदाचार, सद्ब्यव
हार २ मत्कार, ममान ३ विनय, प्रश्रय
४ उपचार आचार, यथाविधि वतन
५ अनिव्यय आनिधेयम् ।
- शिष्य, म पु (स) छात्र, अति-वामिन्, सद्

विषयिन्, शिक्षार्थिन ० अनु-गामिन्, यादिन् ।

शिक्षन्, म स्त्री (का) शिष्य लक्ष्यन् ।

—बाधना, मु, लक्ष्ये दृष्टि वध (क प अ) ।

शीकर, सं पु (स) पवनप्रतिरित, पल्लव, तुषार २ अवश्याय, दे 'ओम' ३ स्वल्प वृष्टि (स्त्री) दे 'कुहार' (२) ।

शीघ्र, किं वि (म शीघ्र) आशु, सद्य मपदि, अचिरं, अतिवृत्ति, क्षिति ।

—कारी, वि (स-रित) विलम्बान्ध, आशु कारित ।

—कोपी, वि (म पिन्) कोपन, आशुकोपिन् ।

—गामी, वि (म मिन्) द्रवगामिन्, आशु ।

—चेतन, वि (म) तीव्रवृद्धि ।

—वेधी, ॥ पु (सं चिन्) लघुहन् ।

शीघ्रता, स स्त्री (म) त्वरा, शिघ्रता लक्षण, तत्संज्ञक (न) अव, वेग, रभस-मन् ।

—हरता, किं अ, त्वत् (स्त्री आ से), मत्वरक्षति ।

शीत, वि (म) शीतल, शिनिर, हिम, तुषार, उष्णत्वघ्न २ शिथिल, दीघनञिन् । म पु (स न) शीत शीतल, शीतलान्, शिनिर हिमामग २ शीतना, शिघ्रता, शीतल अव श्याय तुषार ४ प्रतिश्याय दे 'जुगम्' ५ जलम् ।

—कटिबध, म पु (म) कटुप्रत्येसापर वार्तनौ अनिशोनी भूभगौ (पु द्वि) ।

—काल, स पु (म) दे 'शीत' स पु (१) ।

—किरण, स पु (म) शीत हिम, कर रश्मि-अशु, शुचि चद्र ।

शीतता, ॥ स्त्री (मं) शीत्य, शीतलम् ।

शीतल, वि (मं) दे शीत वि । ० शान, शमन्तिन ३ अनुष्ट, प्रमत्त ।

शीतलता, स स्त्री (म) दे शीतता ।

शीतला, स स्त्री (म) विस्फोटमौल, विस्फोट, मरुत्का शीतली, वमनरोग, दे 'वेचक' २ वमनविस्फोटकादीनामपिशाचि द्वयी ।

—वाहन, म पु (सं न) गर्दभ, खर ।

शीताशु, सं पु (स) चंद्र ० कपूर रश्मि ।

शीत, सं पु (का) शीत, दग्ध, दे 'दूध' ।

शीताकुल, वि (॥) शीत शैत्य-दिन, आशु-मदित शीत-विह्वल ।

शीरा, स पु (का) दे 'शरदन' २ दे 'चञ्चनी' ।

शीरी, वि (का) मधुर २ प्रिय ।

शीरीनी, स स्त्री (का) मिष्टान्न, दे 'मिठान्न' २ माधुयम् ।

शीर्ष, वि (स) कृश, क्षीणननु, क्षाम, २ भग्न, क्षति, ३ च्युत ४ जीर्ण, विदीर्ण ५ स्थान, विरस ।

शीर्षता, स स्त्री (स) कृशता, दौर्बल्य, च्युतता, विदीर्णता ।

शीर्ष, स पु (म न) शिरम् (न), दे- 'मिर' २ कलाद, दे 'माध' ३ शिखर ४ अधभाग ।

शीर्षक, स पु (स न) अग्राक्षरपक्ति, शिर पक्ति (स्त्री) २ शिरस्त्र, दे 'शिर' ।

शील, स पु (म न) चरित्र, आचरण, वृत्ति (स्त्री) ३ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ४ सदाचर, सचरित्रम् ५ सत्य, स्वभाव प्रकृति (स्त्री) ६ हृदयमादृत्य ७ सरोव, आदर वि पर, परावण (उ दानशील) ।

शीलवान्, वि (स-वत्) सदाचारिन्, सदाचर २ मत्स्वभाव, कौमलप्रकृति, सुशील ।

शीलम, स स्त्री (का) शिक्षा, पित्रि (च)णा, पिता, कपिला, भद्रमार्गः ।

शीलमहल, स पु (का शीलान्-अ मरु) काच-मार्कटिक, भवन २ काचकोष्ठ, अद श्वागम ।

—का कुत्ता, मु, उन्मत्त, बाहुल ।

शीशा, सं पु (का) काच, दे २ आदर्श, भुङ्कर, दर्पण, दे ३ काचमलक-कम् ।

शीशा, स स्त्री (का शीशा) काचरूपी ।

—सुधाना, औषधयुक्त मूत्र (प्रे) ।

शीश, स स्त्री (स) कटुप्रति, दे 'सौष्ठ' ।

शुक्, स पु (मं) शीत, वक्रमुष्ट, दे 'शोना' २ महर्षि-व्यासपुत्र ।

शुक्ति, सं स्त्री (स) मुक्तमाद (स्त्री), दे 'सीपी' ।

—वीच, स पु (म न) मोक्षित, शुद्ध मणि ।

शुक्, सं पु (सं) मित, भेद, काव्य, कवि, भार्गव, दीक्ष्युक्त २ अग्नि ३ ज्येष्ठ माम ४ शुक्वासर । (सं न) वीच, वीथी

देतु (न) २ बन्, सामर्थ्यम् । वि (म)
मासुर, देदीप्यमान २ स्वच्छ, उज्ज्वल ।

शुक्र, स पु (अ) वस्यदाद, कृतशता
प्रकाश ।

—गुजार, वि (अ + का) कृतश्च, दे ।

—गुजारी, म स्त्री (अ + का) कृतशता ।

शुक्ल, वि (स) श्वल, मित, श्वेत, दे
'सकृद' ।

—पक्ष, म पु (स) शुक्लक, दे पक्ष' मे ।

शुक्लता, म स्त्री (स) श्वलता, दे मफदी' ।

शुपाल, म पु (अ) दे शगल' ।

शुधि, वि (म) विशुद्ध, पवित्र पूत
२ उज्ज्वल, निर्मल ३ निर्दोष, निष्पाप
४ शुद्ध मानस ।

शुधुसुग, म पु (का) * उद्भुसुग ।

शुन्ता, म स्त्री (का) निवर्ति (स्त्री),
मविनयता ।

शुद्ध, वि (म) श्वल, स्व- मिश्रण-रूप
२ उज्ज्वल, श्वेत ३ शुद्धिर्गति, यथाशय,
मध्य ४ निर्दोष ५ पूत, पवित्र, पावन, मध्य ।

—करता, क्रि म, परि पू (क् उ म),
शुचीकृ । परि वि म, शुभ् (प्रे), निमली
कृ २ प्रतिममा-ममाधा (जु उ अ), शुद्धि
रहित विग (तु उ अ) ।

शुद्धता, म स्त्री (म) शुचिता, शीघ्र, पवित्रता,
पूतता, वि, शुद्धि (स्त्री) २ निर्दोषता,
यथाशयता ।

शुद्धि, म स्त्री (म) दे 'शुद्धता' (१) ।
२ स्वच्छता, निर्मल्य ३ वैदिकधर्मप्रवेशन
कार ।

—पत्र, म पु (म न) शुद्धिदशकपरम् ।

शुचता, म पु (अ) सदिह २ भ्रम ।

शुभ, वि (म) मया, दिन, कल्याण २ उत्तम,
मद्र । म पु (म न) मया, दिन, कल्याणम् ।

—कर्म, म पु (म-मन न) सुकृत, पुण्यम् ।

—घटी, म स्त्री, मागन्त्रिकमुद्भूत-नम् ।

—चितक, वि (म) द्विषिन्, निश्चितक ।

—दर्शन, वि (म) प्रियम्-दर्शन, सुन्दर ।

—फल, म पु (म न) सुपरिणाम ।

शुभ्र, वि (स) श्वेत, शुक्ल, भासुर ।

—कर, म पु (म) शुभ्र मानु-रविम,
चद्र ।

शुभ्रता, म स्त्री (म) शुक्लता, भासुरता ।

शुमार, स पु (का) 'गणन', सकलनम् ।

शुमाल, म पु (अ) उदीची, दे 'उत्तर'
(दिशा) ।

शुमाली, वि (अ) उत्तर, उदीचीन, उत्तर,
दिव्य-मवधिन् ।

शुरू, म पु (अ) उपक्रम, आरम्भ दे
२ प्रभव, आदि ।

शुल्क, स पु (स पु न) घट्टपादीना कट-
२ बराह आधोर्ध्व ३ युक्त दे 'देहेन'
४ पत्र मूत्र ५ मूल्य ६ माट, भाटक
७ प्रतिकूल, वेदनम् ।

शुश्रूषा, म स्त्री (म) पत्त्रिया, मेवा दे
२ श्रवणेच्छा ।

शुष्क, वि (म) निर्मल, आर्द्रताहित, वान
२ रिन्नी-अ-रम्, निम्बाद ३ मृदकर,
अविग ४ मोर, निरर्ध ५ क्लृप् स्नेहीन
६ शीघ्र, शीघ्र ।

शुष्कता, म स्त्री (म) शीघ्र, शुष्कता
२ तीक्ष्णता ३ अरोचकता ४ क्लृप्ता
५ तीक्ष्णता ।

शुकर, स पु (म) बराह, दे 'वृष' ।

शुद्ध, म पु (स) श्वल, दान, पादक,
पत्र, पत्र, अघन्य, द्विजमेवक, उपामक,
चतुर् २ निकृष्ट ३ मैवक ।

शुद्धक, म पु (म) मृच्छकटिकान्वयिता
महावि २ शुद्ध ३ शुभ्र, तपस्विशुद्ध
विशेष (रामायण) ।

शुद्धा, स स्त्री (म) शुद्धताने स्त्री ।

शुद्धी, म स्त्री (म) शुद्धम् पत्नी ।

शून्य, वि (म) रिक्त, वशिक, शून्य रिक्त,
गर्म-अन्य २ निराकार ३ अमर ४ रहित ।
स पु (म न) आनाश श, दे २ बिन्दु,
म ३ रिक्तपक्षान्तिर्नैव-स्थान ४ अभाव ।

शून्यता, म स्त्री (म) शून्यत्व, रिक्तता ।

शुष्प, म पु (म शु प र्) सर्प कुम्भ, प्रस्फो
टन-ना दे 'गन्' ।

शूर, म पु (म) दे 'वीर' ।

शूर्य, स पु (स) दे 'सूरज' ।

शूरता, स स्त्री (स) दे 'वीरता' ।

शुर्प, म पु (म पु न) दे 'शुर्प' ।

—कण, स पु (स) गन् २ गणेश ।

—णखा, सं स्त्री (स) रात्रिभगिनी ।

शुल, स पु (स पु न) उदरवेदना, जठर
भ्रया, वातरोगभेद २ पीडा, क्लेश
व्यथा ३ कुत, प्राप्त ४ शूल, विहीरक
५ ध्वज ६ मृस्यु ७ अयकील ८ शलाका
९ दे स्त्री ।

—धारी ॥ ॥ (स रिन्) शूल, पराग्रहिन्
पाणि, शिव ।

शुली, सं पु (सं लिन्) शिव, शूलपाणि
२ दाशक ३ शूलस । म स्त्री, दे स्त्री ।

शूलका, सं स्त्री (मं) शूलक-क, निगड,
वध, वधन २ क्रम, परपरा ३ श्रेणी, पकि
(स्त्री) ४ मेखला, पुम्बदिवस्त्वप ५ काची,
रस(म)ना ।

—बद्ध, वि (म) शूलकानि, निगडिन २ क्रम
श्रेणी, वक्र ।

शूल, सं पु (स न) विपाण, दे 'शीन'
२ मानु, कृ ८, शिसर, शैलाग्र ३ वाघ
भेद ४ कामोत्तजना ५ क्रीडानलयत्र (पिच
कारी, दे रघुवंश १६७०) ६ दे 'वंगुरा' ।

शूलार, स पु (म) रसविशेष (भा)
२ मैथुनस्पृहा ३ मंडन, भूषण, प्रसाधन,
अलङ्कारण परिभरण ४ समोग, मैथुन
५ मदन प्रसाधन, नाभन द्रव्य (चदनादि)
दे 'वीर्य शूलार' ।

—करना, कि स, अलङ्क, परिष्क, प्रसाध
(प्रे), भूष-मट् (तु) ।

—धोनि, सं पु (स) मदन, वदप ।

शूलि, मं पु (सं गिन्) गज २ वृष्ट
३ पर्वण ४ कश्चिद्विशेष ५ शूलवत् पशु
६ वाघभेद ७ महादेव ।

शूलाल, सं पु (म) गोमातु, जौड, 'जु
(वू)क, दे 'गौडक' । वि, भीक २ तल
३ निष्ठुर ।

शूल्य, सं पु (अ) श्रीमोहमदर्वशजानामुपाधि
२ यवनवर्गविशेष ३ यवनोपदेशक ४ वृद्ध ।

—चिल्ली, म पु (अ + हि) मद, जट
२ मंड, विद्वत् ।

शूलर, सं पु (॥) शिरोपान्न, शोर्षमाला
२ शिरोभूषणमात्र ३ शीर्ष ४ विरीट,
मौलि ५ पर्वणाम, सप्तु ।

शोरी, मं स्त्री (अ शोख) दप, गर्व
२ विवर्धन, गञ्जिक (स्त्री) ।

—वाज्ञ, वि (हि + का) विवर्धक, आत्म
इलाभिन् २ इत् ।

—शब्दना या निकलना, ॥, गर्व खड् (कर्म)
मद व्यपगम् (स्वा व अ) लघुभू ।

—वधारना, सारना या हाँकना, सु, विकथ
(स्वा आ से), आत्मान दलाध (स्वा आ
से) ।

शेष, स पु (॥) शेष(क)त् (न), शेष
फ, भिद् २ मुष्क, वृषण, शुकप्रवि ३ पुच्छ,
लंगूल, लघम् ।

शेषुपी, स स्त्री (स) मुक्ति भी भति (स्त्री),
प्रहा ।

शेषर, म पु (अ) अक्ष, भाग ।

—होखर, म पु (अ) भक्षिन्, भागिन् ।

शेर, स पु (का) द्वीपिन्, भेल, मृगानक,
शादल, व्याघ्र दे २ केमरी, सिंह दे
३ वीर, शूर ।

—पजा, स पु (का + हि) दे 'वधनरा' ।

—वद्या, म पु (का + हि) सिंह-व्याघ्र,
वीर शावर २ वीर, शूर ।

—ववर, स पु (का) दे 'शेर' (२) ।

—मर्द, वि (का) वीर, निर्भय ।

—होना, सु, अव मुच् (तु प अ), निर्भय
(वि) भू ।

शेर, सं पु (अ) वक्तायाश्चरणद्वय (उर्द,
कारसी आदि) ।

शेरनी, सं स्त्री (का शेर) व्याघ्री, द्वीपिनी
२ मिही, केमरीणी ।

शेरवानी, सं स्त्री (देश) *भाजानुलबी
मंचुभेद ।

शेष, स पु (मं) अनन, सर्वराज, शेषनाग,
कणीक्ष, कणीश्वर २ परमेश्वर ३ लक्ष्मण
४ बन्नाम ५ अतरम् (गणिग) ६ अत
७ परिणाम ८ मज ९ मृत्यु १० नाश ।
(स पु न) अवपरि, शेष, उद्धर्त, अव
शिष्ट उपयुक्तेन, वस्तु (न) २ अप्याहार्य
शब्द । वि, अवशिष्ट २; समाप्त ३ स्तर,
अपर, अन्य ।

—नाग, सं पु (मं) दे 'शेष' सं पु (१) ।

—दायी, मं पु (सं दायिन्) विष्णु ।

शेषान, सं पु (सं) १ २ अवशिष्ट-अग्निम,
भाग ।

शैतान, सं पु (अ) ईश्वर विरोधी देवविशेष

(समी धर्म) २ भूत, जेल ३ क्रूर ४ दुष्ट,
छल ५ काम, मदन ६ क्रोध ।

शैतानी, स स्त्री (म शैतान) दुष्टता,
कुचेष्टा ।

शैत्य, स पु (सं न) शीतता, शीतस्त्वम् ।

शैथिल्य, स पु (न) शिथिलता, दे ।

शैल, स पु (स) गिरि, अद्रि, पर्वत, दे ।
२ शन्दैल, दे 'चट्टान' ३ दे 'शिखरी' ।

—कुमारी, स स्त्री (स) अद्रितनया, शैल,
कन्याजा, दे 'पार्वती' ।

शैली, स स्त्री (सं) भाषण-लेखन, रीति
मर्या (दीनो स्त्री) प्रकार २ प्रथा, रीति
३ शिष्या (स्त्री), प्रणाली ४ चर्चा, रतन,
वृत्ति (स्त्री) ।

शैलेंद्र, स पु (स) हिमगिरि, हिमालय ।

शैव, स पु (स) शिव, भक्त उपभक्त-अनु-
ययिन् २ सम्प्रदायविशेष । वि (स) शिव
भवति ।

शैष्या, स स्त्री (स) सत्यहरिश्चन्द्रपत्नी ।

शैशव, स पु (म न) शिशुत्व, बाल्यम् ।
वि (स) बाल-बाल्य-सम्बन्ध ।

शोक, स पु (स) आति (स्त्री) आधि,
दुःख, परिणाम, क्षेद, शुष्क (स्त्री), शुष्का,
मन्यु, निस्सम, शीघ्रमर्त्यम् ।

शोकार्त्त, रि (न) शोकिन्, शोक, आङ्गुल
आधुर प्रत्य-उपहन विङ्गल, सशोक, परितप्त ।
शोभ, वि (का) शृङ्ग, वियाय २ वचन,
पद ३ गाढ, आधुर (रम) २ दुर्लभित,
कुचेष्टक ।

शोभी, स स्त्री (का) भाव्य, वैवाह्य
२ वाञ्छित्य ३ गाढता, प्रसरता ।

शोच, स पु (स शोचन्) शोच २ क्लिप्त ।

शोचनीय, वि (स) आपन्न, दुःख, क्लेश,
निरानन्द २ सापेक्षिक, सदृश्य ।

शोण, स पु (स) रक्तवर्ण-वर्ण-रस
२ नदविशेष, हिरण्यवाह ३ मासिक्य
४ रक्तेशु ५ अर्जित ६ लोहितपत्र । स
न, रुचिर ३ सद्गुरुम् ।

—रत्न, स पु (स न) पद्मरागमणि, शोभि-
तोत्पल ।

शोणित, स पु (म न) रुधिर, रक्त-दे ।
वि (स) लोहित, रक्त, शोण ।

शोणित्वा, स स्त्री (स मन् पु) रक्तिमन्,
लोहितमय अरुणितम् (पु) । दे 'लाली' ।

शोष, स पु (स) शोषक, शोषक, श्वपु ।

शोष, स पु (म) शोषन, निस्तार (कृष्णादि-
का) २ अनुसंधान, भ्रमवर्ण ३ शुद्धि (स्त्री),
शुद्धिसम्कार ४ परीक्षा-शुभम् ।

शोषक, स पु (स) पावन, शोषन, मलहर
३ भ्रमवर्ण, अनुसंधान ३ दे 'सुधारक' ।

शोषन स पु (स न) पावन, सत्स्वरण,
निर्मली विषी शुची, वरण, मार्जन, प्रक्षालन,
पावन २ प्रतिपन्ना-ममा, पान, कुट्टितिरसन
३ चानूना निर्दोषीकरण ४ भ्रमवर्ण, अनुस-
धान ५ परीक्षा ६ अयनिस्तारण ७ दह
८ प्रावक्षित ९ विरेचन १० तिक्क ११ व्य-
वहन्म् ।

शोषना, क्रि स (स शोषन्) दे 'शुद्ध-
करना' (१२) ३ औषधार्थं पातु सक्त
४ भविष्य (वि प से), अनुसंधान (शु-
च अ) । स पु, दे 'शोषन' ।

शोषनी, स स्त्री (स) स, मार्जनी, बहुकरी ।

शोषनीय, वि (सं) पवनीय, मार्जनीय
२ नित्यार्थ, प्रत्यपयितव्य ३ अनुसंधिय ।

शोभन, वि (स) सुन्दर, रम्य, रमणीय,
२ उत्तम, श्रेष्ठ ३ उचित, उपयुक्त ४ भाग-
लिक, मण्डल्य, मण्डलीय ।

शोभा, स स्त्री (स) वाति धृति दीप्ति
(स्त्री), भा, मास, श्री (स्त्री) २ छाया
वि (स्त्री), सुन्दरता, रुचिरता ३ भूषा,
परिष्कार ४ वर्ण, रंग ५ श्रेष्ठता ।

—देना, क्रि अ, राज् शुभ (भा भा से) ।

शोभायमान, वि (स शोभायमान) राजमान,
आजमान, आभुर, दीदीप्यमान, सुन्दर
२ विद्यमान, उपस्थित ।

शोभित, वि (स) शोभन्वित, सुन्दर,
उज्ज्वल २ मण्डित, भूषित ३ उपस्थित,
विद्यमान ।

शोर, स पु (का) महात्त, कलकल,
वैराग्य दे ।

—मचाना, क्रि अ, कोषहर्त्त क, उत्कुर
(भा व अ) ।

शोरवा, स पु (का) युष्-ध, सप, हास,
३ स २ मासरस, दे 'शरणी' ।

शोरा, स पु (फा शोर) यदशार, निपा
तिन्, निषीनिन्, पावय ।

शोरे का वेज्ञाव, मं पु, भूयिकाम्, पावय
श्रावक, नविक्रयवशार, अमन् ।

शोला, स पु (अ), ज्वाला जचिम (न) ।

शोशा, स पु (फा) अद्भुत विलक्षण, नाचा
२ व्यययोक्ति (स्त्री) ३ वन्द्योत्पादिका वाचा ।

शोषक, वि (म) रमाकर्षक, शोषणर
२ क्षय-धन, वारिन् ।

शोषण, म पु (सं न) रमाकर्षण, शुभी
वरण २ क्षपण ३ वि, नाशन, वि, व्यसन
४ सारोदार, ५ चूषणम् ।

शोहवा, मं पु (अ) दे 'शुष्वा' ।

शोहवत्, स स्त्री (अ) रयानि प्रमिदि
(स्त्री) ।

शोहरा, म पु (अ) शोहरन, दे ।

शौक, स प (अ) अमि श्वि (स्त्री)
प्रवृत्ति (स्त्री), प्रवणता २ लालसा उत्पत्ता,
औत्सुक्यम् ।

—करना, सु, पुन (ह आ अ) ।

—खरांना, सु, शीघ्रम् अविलम्ब (भाष मे) ।

—पूरा करना, सु, वाम उपभोगेन शम् (मे) ।

—से, सु, मानद, सहर्ष, समोदय ।

शौकीन, स पु (अ शौक) प्रसाधन शृङ्गार
सुवेश प्रिय, वेषाभम निन्, छेव २ वेश्या
गामिन् ३ प्रेमिन्, अनुरागिन्, रनदिन्, अशि
रदिन् ।

शौकीनी, मं स्त्री (हि शौरीन) वेषाभिमान,
शृङ्गारप्रियता २ वेश्यागमनम् ।

शौच, म पु (म न) शुद्धता, शुद्धि
(स्त्री), पवित्रता, पुरता, शुचिना-स्व, पुण्यता,
निष्पापता २ प्राग-वृत्त्यानि-कार्याणि (न
बहु०) (शौच, स्नान, म-या आदि) ३ पुरी
पोत्मग, हदनम् ।

शौरसेनी, मं स्त्री (मं) १ २ प्राकृत अप
भ्रा, मायाविशेष ।

शौर्य म पु (सं न) शूरता, वीरता,
पराक्रम ।

शौहर, मं पु (का) पति, भर्तृ ।

शमनान, मं पु (मं न) शिव, नन-कानन,
अनशय्या, शान्तक, कदात्री, दाहमर
(पुं), शक्मानम् ।

—वासी, म पु (स सिन्) शिव,
२ चांडाल ।

शमश्रु, स पु (सं न) कुर्वन्, चोट,
व्यन्त्र, मुखरोमन् (न), शिगिन् (न),
शिघाण, दे 'दाडी' ।

—वर्षक, म पु (स) नापित ।

श्याम, म पु (सं) श्रीकृष्ण २ कृष्णवर्ण ।
वि (स) काष्ठ, कृष्ण ३ कालनील, कृष्ण
मेचक ।

—सुदर, मं पु (म) श्रीकृष्ण ।

श्यामता, स स्त्री (स) कानिमन् वृष्णिमन्
(पुं) २ नीलता, मेचरता ।

श्यामल, वि (म) दाल ॥ बालीन ।

श्यामा, म स्त्री (म) राधा विरा २ शकुनी,
फाल्गि कृष्णा (रामभेद) ३ अप्रमृता
गता ४ (नगराचनवर्णाभा) नारी ५ कृष्णा
गौ (स्त्री) ६ यमुना ७ रात्री ।

श्याल, म पु (म) श्यालक, भायां परनी,
श्राव ।

श्याली, म स्त्री (स) श्यालिना, श्याली,
भायां परनी, भगिनी ।

श्येन, स पु (म) शशाङ्क-धन, कपोतारि,
रामानक, धानि रण, पठिन्, नीलविन्ड ।

श्येनी, म स्त्री (सं) श्येनिना, नीलविन्डी
रणा ।

श्रद्धा, म स्त्री (स) आदर, समान
सत्कार २ विश्वास, प्रत्यय, विश्रम
३ निष्ठा, आस्था, भक्ति (स्त्री) ।

—करना वा—ररना, नि अ भदा (जु व
अ), विश्वम् (अ प से) ।

—हीन, वि (सं) अविश्रामिन्, अश्रद्धधान
२ आस्था निष्ठा पक्ति, हीन ।

श्रद्धालु, वि (मं) श्रद्धा-वन् युक्त अविन्,
श्रद्धधान, विश्रामिन्, प्रत्ययिन् २ (स्त्री)
दोहदरनी ।

श्रद्धेय, वि (मं) विश्राम श्रद्धा, पात्र आरपद्,
श्रद्धालव्य, पूज्य, मं, मान्य, नम्य ।

ध्रम, सं पु (स) परिश्रम, दे । २ श्रान्ति
(स्त्री) ३ व्यावाम ।

—जल, मं पु (मं न) म, स्वेद, ध्रम, रणा
शीरग (बहु) दे 'धमीता' ।

—जीनी, मं पु (मं विन्) श्रमिक, वर्धक,
दे 'धन्दूर' ।

श्रवण, स ॥ (स पु न) वर्ण, श्रव, श्रोत्र दे 'कान' स न निशमन्, आकर्णनम् (स पु स्त्री) श्रवणनक्षत्रम् (ज्यो) ।

श्रवणा, स स्त्री (स) श्रवण-ण, नक्षत्र विशेष ।

श्रव्य, वि (म) दे 'आव्य' ।

श्रुत, वि (स) क्लृप्त, ग्लान, खिन्न, श्रमार्थ, अवसन्न, नातथम २ शान ३ निवृत्त ।

श्राति, सं स्त्री (स स्त्री) श्रम, आयाम, अवसाद, रोग ।

श्राद्ध, स पु (स न) श्रद्धया क्रियमाण कर्मन् (न) २ पितृन् उद्दिश्य श्रद्धया भक्षादिदान ३ पितृ-आधिर्नैकृष्ण, पक्ष ।

श्राप, स पु, दे 'सराप' ।

श्रावण, स पु (म) श्रावणिक, नम (पु) ।

श्रावणी, स स्त्री (स) श्रावणमासीयपूर्णिमा ।

श्राव्य, वि (स) श्रव्य, श्रोतव्य, श्रवणाहं, अकर्णनीय, निशमनीय ।

श्री, स स्त्री (स) कमला, लक्ष्मी दे २ सरस्वती ३ धन, सपद् (स्त्री) ४ विभूति (स्त्री), विभव ५ यशस् (न) ६ शोभा, प्रभा ७ कानि-भूति (स्त्री) ८ नामपुरोवर्ति समानपद श्रीयुत, श्रीमन् ९ वृद्धि (स्त्री) १० साफल्य, निधि (स्त्री) ११ रागभेद । वि, योग्य २ मनोह ३ उत्तम ४ मंगल ।

—कठ, सं पु (म) शिष्य, शत्रु ।

—खड्ग, म पु (म पु न) हरिचन्दन २ दे 'शिखरत' ।

—धर, स (सं) विष्णु, श्री, निवास निकेतन । वि, तैत्तिरिन् ।

—पति, स ॥ (स) विष्णु २ श्रीराम ३ श्रीकृष्ण ४ कुवेर ५ नृप ।

—पथ, म पु (स) राज, मार्ग पथ ।

—पाद, वि (म) पूज्य २ सपन्न ।

—पुष्प, म पु (त न) लवण, श्रीप्रसन्नम् ।

—फल, स पु (स) बिल्वपत्र २ नारिकेल ३ रामादनीवृक्ष ४ आमलक-को ।

—फली, स स्त्री (स) आमलकी २ नीलो ।

श्रीमत्, वि (स-मत्) धनिक, धनाढ्य ।

श्रीमत्, वि (स) धनवत्, धनिन्, श्रील, २ शोभान्वित, धुनिमत् ३ लविमत्, सुन्दर ।

स पु, विष्णु २ कुवेर ३ शिव ।

श्रीमती, स स्त्री (म) स्त्रीनामपुटोर्वर्तिर्नमान

पद २ लक्ष्मी (स्त्री) ३ राधा । वि, धनाढ्या २ शोभान्विता ३ सुन्दरी ।

श्रीमान्, स पु (स श्रीमत्) नरनामपुरो वर्तिसमानपद, श्रीयुत, श्रीयुक्त । दे 'श्रीमत्' वि तथा सं पु ।

श्रीरम्, स पु (स) श्रीवैष्ट, दे 'श्रीवास' ।

श्रीराग, स पु (स) बद्धरागमध्ये तृतीयो राग ।

श्रील, वि (स) लक्ष्मीवत्, धनाढ्य २ श्री शोभा, युक्त-युत ३ अनशूल, भद्र ।

श्रीवन्त, स पु (म) विष्णु २ विष्णुवन् स्थशुक्लरर्णदक्षिणावरोमावली ।

—खालन, स पु (स) विष्णु ।

श्रीवास, म पु (सं) पायस, वृक्षरूप, श्रीवैष्ट, सरलद्रव्य दे 'गधाविरोधा' तथा 'तारपीन' २ पक्ष ३ विष्णु ४ शिव ।

श्रीहर्ष, स पु (स) नैवधकान्यरचयिता २ सप्तार्द्धपरवर्जन ।

श्रुत, वि (स) आकर्णन, श्रवणोचरता गत, निशान्त २ प्र, ग्वान ।

—कीर्ति, म स्त्री (सं) शत्रुघ्न पत्नी । वि, कीर्तिपुत्र, यशस्विनः ।

श्रुति, स स्त्री (सं) वेद २ वर्ण, दे 'कान' ३ श्रवण ४ ध्वनि ५ शिखरती ।

—कटु, स पु (म) (काव्ये दोषभेद) कर्कशसम्प्रयोग, दुःश्रवणम् ।

—पथ, सं पु (स) वर्ण २ वैदोक्तमार्ग ।

श्रेणी, स स्त्री (स) श्रेणि (स्त्री) कक्षा, वर्ण, छात्रगण २ पक्षि, क्तिका, बिजोनी, आलीलि, आवलि-ली, राजीनि, बीधी भिका, रेखा, छेखा, पालीलि (मव स्त्री) ३ क्रम, परपरा, भङ्गला ४ समव्यवसायि मण ।

—बद्ध, वि (स) पक्षि, बद्धस्थ, वगाङ्गन ।

श्रेय, स पु [स श्रेयस (न)] कल्याण, आनन्द, मंगल २ धर्म, सुकृत ३ मोक्ष, समृद्धि (स्त्री) ४ कीर्ति (स्त्री), यशस् (न) । वि, भद्रतर, साधीयस्, उत्कृष्टतर २ उत्तम, श्रेष्ठ ३ शुभकर, मंगल ४ कीर्ति कर, यशोदायक ।

श्रेयस्कर, वि (स) कल्याण हित-मंगल, कारक-कारिण ।

श्रेष्ठ, वि (म) उत्तम, परम, प्रशस्ततम, वरेण्य,
मुख्य, प्रथम, अग्नि(प्रो)थ ३ पूज्य, मान्य
४ वृद्ध, ज्येष्ठ ५ अभिमान, अभिमानवत्,
कुलीन ६ आर्य, महापुमान्, महादाय ।

श्रेष्ठता, म स्त्री (म) जोदार्य, माहात्म्य,
प्रधानता, भद्रता, आयत्त, कुलीनता २ उत्त
मता, उत्कृष्टता ।

श्रोतव्य, वि (मं) दे 'श्राव्य' ।

श्रोता, म पु (स-न्) आश्रय, श्रवण निष्ठ
मनःकर्तृ, आकण्विन् ।

श्रोत्र, स पु (स न) श्रवण-य, कर्ण, दे
'कान' ।

श्रोत्रिय, स पु (स) वेद, विद् पाठक,
छात्र २ ब्राह्मणजनिभेद ।

श्रौत, वि (स) अति-वेद, निहित प्रति
पादित २ वैदिक, छात्र ३ यज्ञीय । (स
न) शार्ङ्गपत्माहवनीयदक्षिणाग्नय (बहु) ।

—सूत्र, सं पु (म न) यज्ञविधायकग्रन्थ
विशेष ।

श्लाघनीय, वि (स) इलाय, प्रशमन य, दे
२ उत्तम, श्रेष्ठ ।

श्लाघा, म स्त्री (स) स्तुति-मुनि (स्त्री),
प्रशमा, दे २ चाङ्ग (पु न), चार्तुत्
(स्त्री) ३ श्रेष्ठ ।

श्लाघ्य, वि (म) श्लाघनीय, दे ।

श्लिष्ट, वि (स) संयुक्त, मलग्न २ आलिंगित
३ अनेकाक्षक, श्लेषयुक्त (शब्दादि) ।

श्लोपद, म पु (म न) पादवल्लीक, दे
'श्लोपादि' ।

श्लील, वि (म) उत्तम, उत्कृष्ट २ शुभ, भद्र ।

श्लेष, सं पु (म) अनेकार्थशब्दप्रयोग,
शब्दाङ्कारभेद (सा) २ परिहर, आलि
ग्न ३ मयोग, सवि ।

श्लेष्मा, स पु (स-मन्) कफ, दे 'क्व-
गम' ।

श्लोक, म पु (म) अनुष्टुप्छन्दम् (न)
२ पद्य, छन्दम् (न) ३ यशम् (न)
४ प्रशमा ।

श्वसुर, मं पु (स) दे 'समुर' ।

श्वशुर्य, स म (म) देवर २ दयान् ।

श्वश्रू, म स्त्री (म) दे 'माम' ।

श्वान, म पु (म) श्वन्, कुक्कुर, दे 'कुत्ता' ।

—निद्रा, स स्त्री (म) अगाध-कुक्कुर,
निद्रा-श्वप ।

श्वानी, स स्त्री (म) कुक्कुरी, शुनी, नरमा,
मयी, मारमेयी ।

श्वपद, सं पु (स) हिरण्यशु ।

श्वाम्, म पु (म) प्राणा भ्रमव (बहु),
दे 'मान' २ श्वारोग, दे 'दमा' ।

—धारण, म पु (म न) श्वामरोग, प्राणा
याम ।

श्वामोच्छ्वास, स पु (स) प्राण, गति
क्रिया, श्वामोच्छ्वासमिन्द ।

श्वित्र, म पु (म न) श्वेन-श्व, श्वेतुच्छम् ।
वि (स) श्वेत २ श्वित्रिन् ।

श्वित्री, वि (म-विन्) निज-श्वेतुच्छ-युक्त ।

श्वेत, वि (मं) धवल, गौर, शुक्ल-रक्त, दे
'मरुद' २ निमल, स्वच्छ ३ निर्दोष, निष्क
लक । म पु (स) शुक्ल-वर्ण २ श्वेत
३ शुक्लग्रह (म न) रूप्य, ज्ञेयम् ।

—कुष्ठ, म पु (स न) दे 'विद्र' ।

—कृष्ण, वि (म) मिश्रमिश्र, शुक्लश्याम
२ पञ्चविपश्च ।

—केतु, सं पु (म) उदात्त-पुत्र ।

—प्रदर, स पु [म प्रदरभेद (क्षीरोग)] ।

श्वेतता, मं स्त्री (सं) श्वेतिमन् (पु),
शुक्लता, दे 'मरुद' ।

श्वेतावर, मं पु (स) जैनममदायविशेष,
धवलवर्ण ।

प

प, देवनागरीवर्णमन्त्राया ध्वनिशोध्यजननवा,
पकार ।

पट, म पु (म) दे 'पठ' (१२) ।

पट्, वि (स पट्) सं पु, उदा संख्या,
तद्विषयकद्वय (६) २ दीर्घरूपम् ।

—धर्म, सं पु (स-मन्) (न) पट्-माहा

कमानि (यजनं, याजनं, अध्ययन, अध्यापनं,
दान, प्रतिग्रह) ।

—कोण, सं पु (म न) पट्-मुत्र । वि,
पट्-मुत्र ।

—पद, स पु (सं) पट्-वि, पट्-रण,
भ्रमर ।

—पदी, स स्त्री (स) अमरी २ छन्दोभेद (छप्पय) ३ यूका ।

—शास्त्र, सं पु (स न) भाग्ययोगन्याय वैशेषिकमीमांसावेदान्तशास्त्राणि (न बहु) ।

—शास्त्री, सं पु (म-खिन्) षडदशनविद् ।

पट्क, स पु (स न) षट् इति संख्या २ षट्वस्तुसमूह ।

पडग, स पु (स न) वेदागवट्शास्त्राणि (शिक्षा, नय, व्याकरण, निस्वन, छन्दस (न), ज्योतिष) २ षट् शरीरावयवा (नवि बाहू शिरो मध्य षट्गमिदमुच्यते) वि, षडवयवयुक्त ।

पडमि, स पु (स) अमर, षट्पद ।

पडानन, स पु (स) कानिदेय, षट्मुख ।

पडगुण, स पु (म न) षाड्गुण्य, राज्य रक्षणस्य षड्भाषा (= सधि, विग्रह, यान, आसन, दैर्घ्यभाव, सश्रय) । वि, गुणषट्कयुज २ षड्गुणि ।

पड्, स पुं (स) स्वरसप्तके प्रथम, चतुर्थो वा स्वर (संगीत) ।

पड्दर्शन, सं पु (स न) दे 'षट्शास्त्र' ।

पड्यत्र, स पु (स) कूट-२, कूट, युक्ति (स्त्री)-उपाय उपजाप, षडवयव, षट्पत्रक, कुमजगा ।

पड्स, स पु (स-रस, रसा) रसषट्क (= मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय) ।

पड्पु, स पु (स न) षड्वर्ग, विकारषट्क (= काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहो च मत्सर) ।

पष्टी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपङ्क्तयो षष्ठी तिथि (स्त्री) २ सङ्गविभक्ति (व्या) ३ कात्यायनी, दुर्गा ।

षाड्गुण्य, स पु (स न) दे 'षड्गुण' स पु ।

षोडश, वि तथा (सं) 'षोडश' ।

—कला, स स्त्री (स बहु) चद्रमङ्गलस्य षडधिकदश भागाः (= अमृता, मानदा, पूर्णा, शुद्धि, पुष्टि, रति धृति, शशिनी, चन्द्रिका, वानि, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अमदा, पूर्णा, पूर्णामृता = २६ कला) ।

—शुद्धार, स पु (स बहु) षोडशसंख्याकानि प्रसाधनसाधनानि ।

(जग शुची, मन्त्र, वसन, माग, महावट, केश । निलक भाल, तिल बिजुकने, भूषण, मेहदीवेष । मिस्ती, काजल, अर्घना, बीरी और गुग्गुलु । पुष्पकली, युत होय कर तब नवसत निवन्ध ।)

—संस्कार, स पु (स बहु) धार्मिककृत्यभेद (= यर्माधानपुंसवनसमिन्तोष्यपनजातकमनाम करणानिष्क्रमणाग्रश्रावणचूडाकर्माकर्णवैधोपनयन वेदारभ्यमावर्तनविवाहवानप्रस्थसंन्यासास्त्येष्टि संस्कारा (स्वामी दयानन्द) ।

षोडशी, स स्त्री (स) षोडशवर्षा युवति (स्त्री) २ प्रेक्षाविधेय ।

षोडशोपचार, स पु (सं बहु) षोडशपूजन, (= आसन स्थापन पादमर्प्यमाचमनीयकम् । मधुपर्काचमस्तन वसनाभरणानि च ॥ गंधपुष्पे धूपदीपी नैवेद्य वदन तथा । प्रयोज्येष्टार्चनाया उपचारास्तु षोडश ॥)

स

स, देवनागरीवर्णमालाया द्वाविंशो व्यन्जनवर्ण सवार ।

सकट, सं पु (स न) आपद् विपद्-आपत्ति विपत्ति (स्त्री) २ दुःख, कष्ट ३ जन, समूह समर्प ४ गिरिद्वार, दे 'दर' ५ सवापयथ ।

सकटापन्न, वि (स) आपद्-विपद्-आपत्ति, प्रप्त ।

सकटोत्तीर्ण, वि (स) कष्ट-क्लेश-विपत्ति, मुक्त-रहित ।

सकर, स पु (स) सम्मिश्रण, समिलन

२ सावर्किक, मिश्रज, सकरज, ३ अर्धव्यं विवाह ।

सकरता, ॥ स्त्री (स) समिश्रता, सावर्क्य, क्रममग, व्यतिकर, अस्त्वन्वसता ।

सकल, स स्त्री (स) मृत्पला, दे ।

संकलन, स पु (स न) समग्रण, सचयन २ सचय, राशि, ३ परिगणन, परिसंख्या ३ समग्र, समग्रग्रन्थ ।

—करना, कि स, सकल (सु), समग्र (क, प से), समाह (स्वा प ज) ।

संकलित, वि (स) सङ्गृहीत, संचित २ परि
सख्यात, परिगणित ३ राक्षसी-पञ्चवो-कृत ।

संकल्प, स पु (म) विकीर्ण, भाव, विचार,
इच्छा, काम २ विशिष्टमन्त्रपुत्रकन्दान विन
रण-उत्सवभन ३ मंत्रविशेष ४ निश्चय,
अवधारण, अध्यवसाय ।

—करना, कि म निधि (स्वा प अ), दृष्ट
अवध (चु), मकलप (प्रे) २ सवचनमन
पूर्वक विवृ (स्वा प से), दा ।

सकाश, वि (म) दुल्य, सदृष्ट २ निकट
समीप, बर्तित । (म पु) सामीप्य, नैकट्यम् ।

सकीर्ण, वि (स) मबाध, मकट, सकुचित
२ मिथित, समिश्र समष्ट ३ भुद्र, पुच्छ
४ सकुल निचिन व्याप्त, समा आ-कीर्ण ।

सकीर्णता, म स्त्री (स) मबाधना २ मिथि
ताव ३ सकुलता ४ भुद्रता नीचना ।

सकीर्तन, म पु (म न) (देवादीना)
शुणगान, कीर्तिकथनम् ।

सकुचित, वि (स) सकीर्ण, मबाध ३ सलज्ज,
सनप ३ कदय, निपचन ४ सदृष्ट, सवि
हित, आकुचित ५ मुद्रित, भीलित, मुकुलित ।

सकुल, वि (स) आ-स, कीर्ण, निचिन,
व्याप्त, कटिल, गहन, मधृत, सपरि, पूर्ण,
पूरित । स पु (स न) भुद्र २ नन, भोन
समर्प ३ पशुकुल, गौ, वृद्ध कुल, वृष, निग्रह
४ अमगतवाक्यम् ।

सकेत, स पु (स) इद्रित, मका, सवान,
अगविशेष, प्रकृति (स्त्री) आकार, अभि
प्राप्यमकवेष्टा २ (प्रेमिणी) सकेतनिवेतन,
समितनस्यान ३ शृंगारवेष्टा, हाव, विभ्रम,
विभ्रम ४ चिह्न ५ उपशेष, आकृत, उप
न्याम ।

—करना, कि स, इगितेन मूच् (चु),
उपजिप् (तु प अ), मादृत उपन्यम् (दि
प से) ।

सकोच, स पु (म) आकुचन, संकोचन,
समाकर्ष, मणीजन २ रुग्णा, धवा ३ निश्चया
भाव विनश्य, सशय ४ संशेष्ट पणम् ।

सकोचन, स पु (म न) दे 'सकोच' (३) ।

सकोचना, कि स (म संकोचन) मकुच्
(प्रे), आकुच् (प्रे), अन्वीकृ, मंड (स्वा
प अ) । जि म, एज् (तु आ म) वप्
(स्वा आ स) ।

सकोची, वि (स चिन्) एज्जात, एज्जाशान,
विनीत, शालीन ।

सक्रमण, स पु (म न) गमन, व्रतन
२ अग्रमण पर्यटन ३ सूर्यस्य राश्यंतरप्रवेश ।

सक्रात, वि (स) अनीत, गत २ प्रविष्ट,
निविष्ट ३ प्राप्त गृहीत ४ स्थानान्तरित
५ प्रति, फलित निम्नित ।

सक्राति, सं स्त्री (स) दे 'सक्रमण' (३) ।
२ ३ सूर्यमक्रमण, समय दिवस ।

सक्रामक, वि (म) स्पर्श, अ-य-संचारिन्
(रोग) ।

सक्षिप्त, वि (स) मद्धत, समस्त, सकुचित,
एतु अवशीभूत ।

—करना, कि म, सक्षिप्त (तु प अ),
ममस (दि प से), समाह-मद्ध (स्वा प अ) ।

—लपि, म स्त्री (म) दे 'शार्दूल' ।

सक्षेप, म पु (म) सार २, समष्ट, ममास,
ममाहार ।

सक्षेपण, स पु (म न) सकोचन, सहरण
२ मचयन, समग्रणम् ३ प्रासन, क्षेपणम् ।

सक्षेपत, अव्य (स) सक्षेपेण, समानेन,
साररूपेण ।

सख, म पु, दे 'शख' (१२) ।

सखिनी, म स्त्री, दे 'शखिनी' ।

सखिया, स पु (स श्रुतिक) केनादमन,
आसु-नीरी-भाषण, शत, मल्ल, बरबोरा,
कुनदी नाय, विहिना मानु (स्वा) ।

सख्या, म स्त्री (म) गणना २ अक ३ बुद्धि
(स्त्री) ४ विचारणा ।

—करना, कि स, गन् (चु) सख्या (अ
प अ) ।

सग, म पु (स) मल, समिलन, समानम
२ सगतति (स्त्री), साहचर्य, समग,
मवाम, मपर्क ३ विषय, अनुराग आसक्ति
(स्त्री) ४ मरित्प्रथय । जि रि, मह, मार्क,
मर्क, मर्म (तृतीया दे आद्य) ।

—करना, जि अ, सगम् (स्वा आ अ), राह
चर (स्वा प म), सवम (स्वा प अ) ।

सग, म पु (का) पाषाण, प्रस्तर, दे
'पत्थर' । वि, वीजस, वज्र, वक्रवत्, २
उद्योत ।

—जराजत, म पु (का न अ) वयण,
पाषाण प्रस्तर ।

—तराश, स पु (का) मूर्तिप्रतिमा, वार, आदिमक, औपनिक्त ।

—तरासी, स स्त्री, मूर्तिप्रतिमा निर्माणम् ।

—त्रिल, वि (स) पाषाण-कठोर, हृदय, निद्रय ।

—दिलो, स स्त्री, निद्रयता, निष्करुणता ।

—ममर, स पु (फा + म) रागदमन (पु), मणिशिला, ममर, उपल प्रस्तर ।

—मूसा, स पु (फा) *मूपोपल, *मूषादमन (कृष्णदलक्षप्रस्तरभेद) ।

संगठन, स पु (म म + हि गठना) सवट न-ना, सव्यवस्थान, सविधान, दे 'मघटन' २ सस्था, मघ ३ ऐक्य, रुधि, नं, हनि (स्त्री) योग-गम ।

संगठित, वि (हि भगठन) सघटित, सविहित, सव्यवस्थापित ।

सगत, स स्त्री (स न) दे 'सग' (१) । २ सहचर, मलिन् ३ मैथुनम् ।

—घरना, क्रि ज, दे 'सग करना' ।

सगतरी, स पु (पुर्न) (वृक्ष) नारग, नागरग, पेरवत । (कल) नारग ३, दे 'नारगी' ।

सगति, स स्त्री (म) दे 'सग' (१२) । १ मैथुन ४ सवन्ध ५ सवाद, विरोधाभाव, अनुकूल्य ६ हानि ७ युक्ति (स्त्री) ।

सगती, स पु (स गत >) सहचर, मित्र, महाय ।

सगम, स पु (स) दे 'सग' (१०) । ३ वेणीणि (स्त्री) सरित-सयोग-समा गम-मन्त्र ४ मैथुन ५ ग्रहयोग (ज्यो) ।

सगर, स पु (स) युद्ध २ प्रतिष्ठा ३ नियम ४ आपद् (स्त्री) ५ आजीवार ६ विषम् ।

सगम्यार, स पु (का) *उपलभार, प्राण दडभेद । वि, नष्ट, ध्वस्त ।

सगिनी, स स्त्री (हि सगी) महचरी, मड गामिनी २ पत्नी ।

सगी, स पु (हि सग) महचर, महाय २ मित्र ३ बंधु ।

सगीत, स पु (स न) प्रेक्षणार्थं नृत्यगीत वाद्यम् ।

—शास्त्र, स पु (स न) गन्धर्व, विद्यावेद । सगीन, स स्त्री (का) *नाल्यस्त्रमणिनी ।

वि, अदमपाषाण, मय-रचित २ स्तूल ३ स्थापित, दृढ ४ धोर, विकट ५ सकीर्ण ।

सगृहीत, वि (म) मचित, समाहृत, एकत्रीकृत २ सकञ्चित, परिसंख्यात ।

सग्रह, स पु (स) सञ्चय यन, सग्रहण, समा, हार हनि (स्त्री)—हरण, सङ्गलन, राक्षी-यकत्री, करण २ सग्रहप्रथ ३ संक्षेप ४ मुष्टि (पु स्त्री) ५ निग्रह, सयम ६ रक्षा ७ बद्धकोष्ठ, दे 'कब' ८ स्वीकृति (स्त्री) ९ ग्रहणम् ।

सग्रहणी, स स्त्री (स) ग्रहणी (अनीणभेद) ।

सग्रहणीय, वि (स) सचेतव्य सचयनीय, निचेय ।

सग्रहालय, स पु (म) भद्रमुतालम् ।

सग्रहीता, वि (स न) सग्राहक, सग्रहिन्, सचेत्, सचयिन् ।

सग्राम, स पु (स) रण, आहव, युद्ध, दे ।

—मुला, स स्त्री (स) युद्धपरीक्षा ।

—भूमि, स स्त्री (स) युद्धक्षेत्रम् ।

—सुन्नु, स स्त्री (स पु) बीरगति (स्त्री), रणमरणम् ।

सघ, स पु (स) सभा, समाज, समिति (स्त्री), गोष्ठी, परिषद्-मसद् (स्त्री) २ समूह, गण, वृद्ध, दल ३ प्राचीनप्रजा त्वभेद ४ बौद्धधर्मणममाज ५ विहार, मठ ठम् ।

—चारी, वि (स रिन्) गण-ग्रह, गामिन् । स पु, मोन ।

—शासन, स पु (स न) *समुक्तवन् ।

सघटन, स पु (स न) दे 'सगठन' (१३) ४ निर्माण, रचन ५ घटना, रचना ।

सघट्टन, स पु (स न) सघर्षे पण २ स घट्ट, समर्द्ध ३ रचना, घटना ४ समिलन, सयोग ५ दे 'सगठनम्' ।

सघर्ष, स पु (स) सघृष्टि (स्त्री), म अभि आ-यर्षे पण, आवि, पट्टन, परस्पर-ग्रहण मदन २ प्रति, स्पर्द्धा, विजिगीषा, प्रतियोगिता, अहमप्रमिता ३ स-घट्ट-मद ४ युद्धम् ।

सघर्षण, स पु (म न) दे 'सघर्ष' ।

सघात, स पु (स) समूह वृद्ध २ इनन, वध ३ आघात ४ निर्विडसयोग ५ आवास ।

सघाती, स पु (स सघा >) सहचर, मित्रम् ।

सधाराम, स पु (म) आश्रम, विहार, मठ ठम् ।

कृतार्थ ० अनुनास, तोपिन, प्रीन, मा त्वन,
प्रमादित ।

सतोप, म पु (स) म परि, नोष-नुष्टि (खी),
विदुष्या शानि-नुष्टि (खी), प्रीनि,
२ आनन्द, हय, सुगन् ।

—करना, कि अ, सतुष-मरुष (दि प अ),
नद (भ्वा प से) ।

सतोपी, वि (स पिन्) दे 'सतुष' (२) ।

सथा, स पु (म महिता > १) आहिन,
दैनिरु, पाठ ।

सदर्थ, म पु (स) रचना, पटना, निमिनि
(खी) २ प्रस्ताव, लेख, प्रनि, बध
३ भाष्य-टीका, आत्मकग्रन्थ ४ लुपु ग्रन्थ
पुस्तक ५ समूह, सकलन (ग्रन्थ) ६ विस्तार ।

सदल, स पु (फा) मलयन श्रोत्रउ,
चदन, दे ।

सदलो, वि (फा सदल) चदनवर्ण, हय
लोन २ चदन, मप-निमिनि ।

सदिग्ध, वि (म) सदेह-मशय, युक्त पूर्ण,
निश्चयशून्य, सविस्मय, विकल्प्य ।

—व्यक्ति, स पु (म स्त्री) शक्ति शक्य, जन ।

सदृक्, स पु (अ) मपुट, पेटा, मजुपा,
समुद्रग ।

सदृक्का, स पु } (अ + का) पेडिका,
सदृक्का, म स्त्री } समुद्रगक ।

करण्डक, मपुट(टि)क ।

सदश, स पु (सं) मवाद, वार्ता, वाचिक,
दिष्ट, आख्यायनी २ वयप्रानीयनिष्ठाभेद ।

—मेनता, कि म, सदश (हु प अ),
वाचिक दिष्ट प्रेष् (प्रे) ।

—हर, स पु, वार्ताहर, वार्तिक, सादेशिक,
दूत, आरवायक ।

सदसा, स पु, दे 'सदेश' (१) ।

सदेह, म पु (म) सदृष्ट, विच्छिन्नस्मृ,
दापर, विकल्प, दैव, आशका, निश्चय निणय,
अभाव २ प्रत्यय विश्राम, अभाव ५ अर्था
लकारभेद (सा) ।

सदोह, स पु (स) समूह, निजर ।

सधान, स पु (स न) अभिषय, सधानी,
मत्तसञ्जीकरण, सधिका २ चापे नाणयोजन
३ मदिराभेद ४ संधन, मथोवन ५ अन्वे
षण ६ सञ्जीवन, दे ७ सधि ८ अवदश
९ वार्तिक १० सधानिका ।

मधि, स स्त्री (स पु) मथोग, ममिन्न,
मगम, सहनि (स्त्री) २ मधि, पवन(न),
सधिस्थान ३ मित्राकरण, राजरक्षाया गुण
विशेष (राजनोनि) ४ मैत्री, मरय ५ वर्ष
द्वयमेकन, सहिता (व्या) ६ रूपकगभेद
(मा) ७ दे 'संध' ८ युगसधि ९ वय
मधि ।

—चोर, स पु (स) सधिहारक ।

—च्छेद, स पु (स) सहितपदविश्लेषणम् ।

—जीवक, म पु (म) विट, सन्धारक ।

—वधन, स पु (सं) स्नसा, स्नायुवध ।

—वेला, स स्त्री (म) अहोरात्रमिलनसमय,
मधिकाल २ मायम् ।

मध्या, म स्त्री (स) सधिकाळ, अहोरात्र-
सयोगसमय २ सायकाल, दे ३ उपासना
भेद ४ युगसधि ।

—कालिक, वि (म) सध्याकालीन, विकाल
सधिकाळ, मन्मथिग ।

—थल, स पु (स) निशाचर, राक्षस ।

—राग, स पु (स) सध्या विकाल-विका
लक-व्यक्तिमन् शाणिमन्-राग ।

—वदन, स पु (स न) सध्यापानम् ।

सन्निरुप, स पु (स) सन्निधि, सन्निधान,
सामीप्य २ इन्द्रियार्थमन्वध ।

सनिपात, स पु (म) वातपित्तकफानां युग
पद विहार, विगरोत्पादक मिलितदोषत्रय
२ समाहार, समूह ३ समवपान ४ सप्त
कुयन ५ मथोग, मिश्रणम् ।

सनिवेश, स पु (स) समुपवेश-शन
२ उपवेश शन, आसित, निषदन ३ आनि,
धान, स्थापन ४ प्रतिबधन, उत्तचन, प्रणि
धान ५ गृह ६ समूह ७ रचना ८ सस्थान
९ प्रतियोगिना स्थापनम् ।

सनिहित, वि (स) निषट-मनोप, स्थ-वार्धन
२ (समीपे) स्थापित ।

सन्यास, स पु (स) आर्यजीवनस्य चतुर्था
श्रम, प्रव्रज्या, वैराग्य २ काम्यकर्मन्यास
(गीता) ३ जगमासी ।

सन्यासी, स पु (स पिन्) चतुर्थांशमिन्,
परि, आनक माज्, अमण, मिथु, मन्वरिन,
कमन्दिन, पाताशरिन् ।

सपत्ति, म स्त्री (स) विभव, वैभव, ऐश्वर्य,
अर्थ, धन, वित्त, श्री-लक्ष्मी समृद्धि (स्त्री)

२ रिषय, दाय ३ सिद्धि (स्त्री), सफलता, पूर्णता ४ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ।

सपद दा, स स्त्री (स सपद) दे 'संपत्ति' ।

सपन्न, वि (म) धनाढ्य, धनिय, धनिष्ठ दे २ सिद्ध, निष्पन्न, पूर्ण ३ सहित, युक्त ४ मनुष्य, धनधान्ययुक्त ।

सपराय म पु (स) उत्तरकाल २ युद्ध ३ आपद (स्त्री) ।

सपर्क, म पु (म) समर्ग, सम्बन्ध, साहचर्य २ मिश्रण दे ३ सयोग, मिलन ४ स्पर्श ५ योग मङ्गलन (गणित) ।

सपात, म पु (म) सहचनन २ समागम ३ समग्रस्थान ४ सवृत्ति समापत्ति (स्त्री) ।

सपादक, म पु (म), पत्र पत्रिकादीना सपादयिन्, सपादनकर २ मापक, निष्पादक ३ अनुष्ठान, कर्तृ, निर्वाहयिन् ।

सपादकता, म स्त्री (स) सम्पादनत्वम् ।

सपादकीय, वि (म) १२ सम्पादक-लिखित-नमस्त्रिभन् ।

सपादन, म पु (म न) मुद्रणार्थं सज्जीकरणं २ परिकल्पन, प्रमाणन, अङ्गीकरण ३ मापन निष्पादन, समापन ४ करण, निर्वाहन, अनुष्ठानम् ।

संपादित, वि (म) मुद्रणार्थं सज्जीकृत २ निष्पादित, पूर्ण गमित-नीत, संपूरित, नाशित ३ प्रस्तुत, सज्ज ।

सपुट, म पु (म) समुद्रतट, करद्वय, संपुट (टि)रा, मञ्जरा, दे 'निष्ठा' २ अञ्जलि, करद्वय प्राणि, पु ३ श्रेण, पत्रपुट, दे 'दीना' ।

सपूर्ण, वि (म) व्याप्त, पूरित, पूर्ण, आर्जनं भूत २ समग्र, समस्त, सर्वत्र, ह्यस्तन ३ समाप्त, अवशिष्ट । म पु, सप्तस्वरयुगो राग (मणीन) ।

सपूर्णतया, कि व (म) साधनेन, साम सपूर्णतया, स्तेन २ सम्पन्न, सुष्ठु (भव अव्य) सपूर्णता, म स्त्री (म) समग्रता, वात्सल्य, मातृव्य २ समाप्ति (स्त्री), अवसानम् ।

सपूज, वि (म) मिश्र, मिश्रित २ सचिव ३ सपुत्र ४ मसृष्ट, जातसम्बन्ध ।

संपेरा, म पु (हि साँ) अ(आ)हिनुष्टिक, मारुति, बागलिक, जोगल, व्याख्यादि ।

संपोला, म पु (हि साँ) अहि-मर्ष, दाव-शयन ।

संप्रति, अव्य (म) अधुना, इदानीं २ अद्यत्वे, वर्तमाने ।

संप्रतिपत्ति, म स्त्री (॥) ऐकमत्य, सामर्थ्य २ स्वीकृति (स्त्री) ३ लाभ, प्राप्ति (स्त्री) ४ प्रवेश ५ सम्बन्ध बोध ६ कार्यसिद्धि (स्त्री) ।

संप्रदाय, स पु (॥ न) दान, वितरण, विश्रायण, प्रतिपादन २ कारकभेद, चतुर्थी (व्या) ३ दीक्षा, मन्त्रोपदेश ४ उपहार ।

संप्रदाय, स पु (सं) मत, धर्म, शास्त्र-पथ माग २ आम्नाय, गुरुरपरंपरागतमनुपदेश, गुरमन्त्र ३ अनुयायिमण्डल ४ प्रथा, रीति (स्त्री) ।

संप्रदायी, वि (स यिन्) मतावलंबिन्, मतानुयायिन् ।

संबन्ध, स पु (म न) सयोग, सहनेष, सम्मिलन २ सम्पर्क, समर्ग ३ वधुता, सगोत्रता, सज्जीवता, श्रावित्व ४ प्रगाढसख्य ५ बन्धु, विभक्तिभेद (व्या) ।

संबन्धक, वि (स) सम्बन्धिन्, विषयक २ उपयुक्त, योग्य । म पु (स) व्रतविवाह सत्यादिजनित सम्बन्ध ।

संबन्धी, वि (म यिन्) सम्बन्धविशिष्ट २ सपृक्त, ससृष्ट ३ प्रसंगगत । स पु (सं) सपु, बाधक, सगोत्र, शानि (स्त्री) २ दे 'समधी' ।

संबद्ध, वि (स) संयुक्त, मङ्गित, सज्जन २ सम्बन्धविशिष्ट ३ (अ-) विहित, सज्जन ४ सप्रयत्न, सप्रयत्नित ।

सयल, स पु (म पु न) पाथेय, सबल-लम् ।

संवाध, वि (स) सकीर्ण, सज्जीवित २ संकुल, परिपूर्ण । स पु (म) विज्ञ, बाध, बाधा २ तन, अनुदाय-भयद समर्द्ध ओद ।

संशोधन, म पु (स न) आभिमुख्यविधानं, आमरण, समुद्रि (स्त्री), आशरण, आहार २ आधानात्मक शब्दरूपभेद (व्या, उ राग) ३ प्रमाणन निद्रान उन्नापन ४ भाव्या पन, शयन ५ आशयभाषिन् (नाटक) ।

संभलना, कि अ (हि सम्भलना) उत्तम-वपन्मन्धूय (सर्वत्र) २ निश्च-दुर्द-व्या (व्या प अ) ३ सावधान-अवहित त्रागरूक (वि) भू ४ पादमहारपरानपादिभ्यो रध्-मुच् (वर्म) ५ उत्तरं या (अ प अ.),

अभिवृध् (भ्वा आ से) ६ पुन स्वाख्य
लभ् (भ्वा आ अ), प्रकृति आपद (दि
आ अ) ।

मभव, म पु (म) उत्पत्ति (स्त्री), जन्म
(न) २ मेन्, ममागम ३ शक्यता
सम्भवनीयता । वि (म >) नक्य, सम्भव
नीय, सम्भाव्य ७ साध्य, म्भाव्य ।

सम्भवत्, किं वि (स) कदाचित् स्वात्
सम्भाव्यते, शक्यते (विधिलिङ् से भी) ।

संभार, म पु (म) सग्रहण, सञ्चयन
समाहरण ३ मामग्री, आवश्यक्कस्मिन् (न
बहु) ३ सम्पत्ति (स्त्री) ४ राशि चय
५ मरणपोषणम् ।

संभाल, म स्त्री (सं मभार) पोषण, भरण,
सर्वदल, २ रक्षण, त्राण, पालन ३ पर्यवेक्षण,
अवेक्षणभूषण, अधिष्ठान, कायनिवारणम् ।

संभालता, किं म (हि संभाल) उन्-उप-म
स्म (रु प मे, मे), आ-अव-ल् (भ्वा
आ मे), म, वृ (भ्वा प अ, जु), २ ग्रह
(रु प से), धु विरम् (प्रे) ल्प् (रु
उ अ) (पादप्रहारपराजयादिभ्यो) रक्ष
(भ्वा प से) नै (भ्वा आ अ) ३ सवृध
(जु), पुप (रु) ४ उपरु साहाय्य विधा
(जु उ अ) ५ अधिष्ठा (भ्वा प अ),
निवृत्त्युत्पत्ति (प्रे) ६ मनोवेग नियम् (भ्वा
प अ) ७ पर्यवेष (भ्वा आ से) ८ प्रो
त्सहसमावस (प्रे) । म पु, आ प्रव, ल्व
लवन, धारण, उत्तमभन २ ग्रहण ३ रक्षण,
त्राण ४ सर्वधन, पोषण ५ साहाय्यदानं, उप
कार ६ अधिष्ठान, निर्वाहण ७ पर्यवेक्षण
८ प्रोत्साहन ९ ।

संभालने योग्य, वि धारितव्य, उत्तमभनीय,
रक्ष्य, प्रालम्ब्य, पोष्य, पर्यवेक्षणीय, ९ ।

संभालनेवाला, सं पु, उत्तमभ, धातक,
आधार, आश्रय, आलम्बनं, पोषक, सर्वदल,
रक्षक, प्रोत्साहक ९ ।

संभाला हुआ, वि, सस्तमित, धृत, धारित,
रहित, सर्वधित, उपकृत, पर्यवेक्षित, प्रोत्सा
हित ९ ।

सम्भावना, सं स्त्री (सं) शक्यता, सम्भव
नीयता, सम्भाव्यता, सम्भव २ आदर,
सत्कार ३ प्रतिष्ठा, मान ४ वक्ष्यता, अनु
मानम् ।

सम्भावित, वि (म) दे 'सम्भव' वि
२ कल्पित, उद्भावित ३ आदृत सम्मानित ।

समाव्य, वि (स) दे 'सम्भव' वि ।

समापण, स पु (स) आम, लाप, वार्ता
लाप, म, वधावाद माया ७ प्रवचन, व्या
ख्यानम् ।

समूत, वि (सं) (मह-) गत उत्पन्न उद्भूत ।

समूति, स स्त्री (स) उद्भव, उत्पत्ति (स्त्री)
२ विभूति शब्द (स्त्री) ३ क्षमता ।

समोप, म पु (म) रति (स्त्री), मैथुन
दे २ सम्भन, उपवीण व्यवहार-प्रयोग
३ मयोगशुभा (मा) ।

सम्भ्रम, म पु (म) याकुलता, वैकल्य,
व्यग्रता ७ त्वगरि (स्त्री) रभम, रभम
(न), आम, वैग ३ आदर मान ४ भ्रान्ति
(स्त्री) भ्रम, स्वल्पितम् ।

सम्भ्रात, वि (म) व्याकुल, व्यग्र, उद्दिग्ध
७ प्रतिष्ठित, ममानित ।

—जन, म पु (स) सम्मान्य पूज्य, जन
मनुष्य ।

—मना, दि (म नस) वि-म, भ्रातृपुत्र,
आकुल, व्याकुल ।

समत, वि (स) मप्रतिपन्न, २ समादृत,
समादित ।

समति, स स्त्री (स) समन, ऐकमत्य, भौतिक,
मात्रित्य, ऐक्य २ अनुमति (स्त्री)-न, अनुगा,
अनुमोदन ३ मतति (स्त्री), अभिप्राय,
आशय, बुद्धि (स्त्री) ।

समन, सं पु (अ सम-स) (धर्माधिक रिण)
आह्वानपत्रम् ।

समर्प, म पु (म) मुद २ विवाद ३ नन
समुदाय-सङ्कल्प ।

सम्मान, सं पु (स) मद्, आदर सत्कार,
पूजा, अहणा, अभ्यर्चन, सम्भावना, प्रतिष्ठा,
गौरव, जना ।

—करना, किं म, समन (प्रे) आदृ (तु
आ अ), मह पूव (जु), मद् (प्रे) ।

संमानित, वि (स) ममादृत, सत्कृत, पूजित,
गौरव दित, अभ्यर्चित, पूज्य, उपास्य, नमस्य,
स माय २ प्रवान, मुरय, अधिय ।

समिलन, सं पु (सं न) सगम, समागम,
मव, संयोग, मगनंति (स्त्री) ।

संमिलित, वि (स) समिश्र, मिश्रित, मयुक्त, महत सयुक्त समवेत ।

समिश्रण, सं पु (स न) मयुक्त, ससर्ग सयोग समिश्रण २ मिश्र मिश्र द्रव्य, सनि पात ससर नानाद्रव्यसमुपाय ।

समुद्य, कि वि (स समुद्य रो) अभिमुद्य-रो पुर, पुरत, पुरस्तात् ममथ माक्षात्, प्रत्यक्षम् ।

समेतन, म पु (स न) ममान, मभा, परिपद (स्त्री) २ इहदिविजनं ३ संमनन, सदा ४ दे समिलन ।

सयत, वि (स) अव निम नड, नियत, निगृहीत २ नि प्रत नड, निगतिन, पित्त ३ वश नीन वशीकृत, दमि ४ क्रम नियम, बद्ध व्यवस्थित ५ निव, ममसाद सावधि ६ विनैद्रिय, आत्म विद्रव्य, निग्रहिन् ।

—मना, वि (म नम) मयमशील, सयत, आत्मनिग्रहिन् ।

—प्राण वि (स) प्राणायासिन, मयतवाम ।

—सुय, वि (स) मित अव्य, भाषि वादिन् ।

सयम, सं पु (म) इन्द्रिय त्व नियम, दम, आत्मनियमन २ निग्रह, निरोध, नियमन-या ३ पश्यमेवन, मिताशन ४ परि मितान्त्व मयादापान्न ५ विमान, निमोचन, सवरण ६ वधनम् ।

सयमी, वि (म मिल) इन्द्रिय-आत्म नियम हिन, मयत विहेन्द्रिय, दमिन्, सवमशाल, योगिन् २ मित अ/वमयत आहार भोगिन ।

सयुक्त, वि (म) समवत, मयत, मयन, सगृह २ मयित अन्वित, युक्त ३ मयद्ध, सयुक्त ४ समिश्रित, समिधित ।

सयोग, सं पु (म) दे 'समिलन २ मयेप, समिश्रण ३ मभागभृगार (सा) ४ मदध, मपर ५ अनायननमयेप ६ योग, सयुक्त (गणि) ७ देव, देव, पन्थायति (स्त्री)-योग ।

—से, सु, देवान् देव, यमात्तनकात्, अक स्मात् ।

सयोगी, सं पु (म गित्) गृहस्थमयु २ रयितयुत ।

संयोजक, वि (म) मयन, मयेप ।

म पु (स न) १२, शब्द वाक्य, योनक पदम् ।

सरसक म पु (स) आशयदान्, पुरस्वर्त, २ पोषक, प्रतिपालन, भरणकृत, संवर्द्ध सरश्चन ३ ज्ञान् गोप्त्र, पालक, ररित ५ सदायक, उपकरण ।

सरसण, स पु (स न) गोपन रक्षा, ज्ञान २ अवैज्ञ, पर्यवेक्षण ३ अधिहार ४ रोष, प्रतिवध ।

सलवन, वि (सं) सयुक्त, महत, मरिष्ट, महित, समिलित, मयद्ध ।

सलप, स पु (स) बालाप, सवाद ।

सवत्, सं पु (सं अव्य) वर्ग पै, अव्य, वत्त, परि, वत्तर २ विनमाव्य ३ क्षात्र । मयन्यर, म पु (मं) दे 'मयव' ।

सरण, म पु (म न) गोपन, प्रच्छादन, निगृहणम् ।

सैवरा, कि अ (म सवयन) व 'मैवा रना' के वर्य, के रूप ।

सवाद, सं पु (म) दे 'ममापण' (१) । २ वृत्त वृत्तार, ममापार ३ वया, प्रमय ४ अवधार, अभियोग ५ देवमत्त, ममति (स्त्री) ६ मदेश, दे ७ स्वीकृति, अनुमति (स्त्री) ।

—दाता, म पु (मं य) वृत्तमेपर वृत्तान केयक ।

समादी, वि (मं रित्) मलापित, मलापित २ सद्ग, ममान, शुद्ध । म पु (मं) मंगीने स्वरोध ।

सैवराणा, कि न (मं मयन) २ मय, परिष्, मयुधन् (यु), प्रमान (प्रे) । २ मय् मं, युध (प्रे) ३ व्यवस्था (प्रे), विषय (पि प म), रय (पु) ४ वार्य मयन् मयन् निपद (प्रे) । मं पु, अय परिष, वरण, महर्न प्रमान २ मयार, शाधर्न ३ अवस्थापन ४ मय्यर् मयादन ।

सैवराणे दोष्य, वि, अन्वयार्थ, परिभरणीय, मययितव्य, मय्यार्थ, व्यवस्थाप्य ।

सैवराणे गारा, मं पु, अय परिष्, वर्यवार, प्रमापक, मद्विष्ट २ मयोर, मय्यर् ३ व्यवस्थापन, मय्यार्थ ।

सैवारा हुआ, वि, अय परिष्, रत, मयित,

प्रसाधित २ मस्कृत, म, शोधित ३ व्यवस्था
पित ४ सुमपाधित ।

सवाहक, सं पु (म) अगशरीर, मर्दक
सवाहक । वि (स) चालक, चालयितृ ।
संवेदना, सं स्त्री (स) संवेदन, अनुभव,
सुखदुःखादि प्रतीति (स्त्री) ।

सशय, म पु (म) मदेह, दे ।

सशयासा, स पु (म-स्मन्) विश्वासहीन,
सदेहहीन, श्रद्धाहीन, मशयालु ।

सशयापन्न, वि (स) सदिग्ध, अनिश्चिन ।

संशयालु, वि (म) दे 'मशयासा' ।

मशोधक, म पु (स) मशोधयितृ, प्रति,
समाधान २ मस्कृत, मन्वारक, ३ निम्नारक
(शणादि) ।

सशोधन, म पु (सं न) पावन, निर्मली
करण १ दोषनिवारण, शुद्धिनिष्कासन,
मत्कार, प्रति, समाधान ३ निस्कारण
(शणादि) ।

—करना, क्रि स, स-परिशुद्धि (प्रे), पू
(क ड से) २ दोषान निहृ (प्रे), मस्कृ
३ निस्तृ (प्रे) ।

सशोधित, वि (स) सुपूत, मन्वक निर्मली
कृत २ संस्कृत, परशोधित ३ निस्तारित ।

संसार, स पु (म) मपक, मवष २ नाह
चय, मगति (स्त्री) ३ मयोग समिलन
४ सुपरिचय, अन्तरस्त्वम् ।

ससार, म पु (म) सृष्टि (स्त्री), भुवन,
विश्व, नगम् (न)-नी, चराचर, मसृति
(स्त्री) २ पुनर्जनन (न), प्रेत्यभाव,
३ भू-मर्त्य-इह-लोक ४ प्रपञ्च, नगज्जाल
५ सततपरिवर्तन ६ गार्हस्थ्यम् ।

—चक्र, स पु (म न) १२, दे 'मसार'
(२, ४) ३ दशपरिवर्तनम् ।

ससारी, वि (स ग्नि) लौकिक, मासारिक
२ गेहिक, प्रापचिक ३ व्यवहारकुशल
४ अनुकूलमन् । स पु (म) प्राणिन
२ नीरस्मन ।

ससृति, म स्त्री (म) दे 'मसार' (१२) ।

ससृष्ट, वि (म) मिथित, मछिष्ट २ मवद,
सत्पन्न ।

ससृष्टि, म स्त्री (स) समिश्रण, मरेप
२ संवध, मपक, ३ सुपरिचय, सौभाग्य

४ समग्रण, मवयन ५ अलङ्कारमिश्रणभेद
(सा) ।

सस्करण, म पु (म न) प्रथमुद्गणवार,
आवृत्ति (स्त्री) २ मशोधन ३ परिष्करणम् ।

सस्कार म पु (म) परि-म, शोधन, मस्क
रण २ परिष, न्कार-वरण, परिमार्जन ३ शोच,
शरीरशुद्धि (स्त्री) ४ मानमी शिक्षा ५ शिक्षा
सगत्यादीना प्रभाव ६ पूर्व-अन्तर्भावना
७ पावन, शुद्धि (स्त्री) ८ धार्मिकरूपभेद
(दे 'पाठशमस्कार') २ प्रत्येष्टिक्रिया, दाह
कर्मन् (न) ।

सस्कृत, वि (म) म परि, शोधित, निर्मली,
कृत २ परिष्कृत, परिमाणन, परिमृष्ट
३ पाविन, मिद्ध, पक्व ४ कृतमत्कार, मत्कार
पूत । म स्त्री (म न), देववाणी, सुर गर्
(स्त्री), आवाणा भाषाविशेष ।

सस्कृति, म स्त्री (स) मन्मता, आचार
विचारा (बहु) २ सन्क्रिया, सत्कार,
शुद्धि (स्त्री) ३ परिष्कार ।

सस्था, म स्त्री (म) मडल, दल, गण
२ सभा, समाज, परिषद् (स्त्री) ।

सस्थागार, म पु (म पु न) समानवनम्
२ मन्दभवनम् ।

सस्थान, स पु (म न) चतुःपथ, चतुःक
२ आकृति (स्त्री), आकार ३ रचना ४ स
त्रिवेश ५ स्थिति (स्त्री), दशा ६ नाश
७ मृत्यु ८ अयोजन, व्यवस्था (९१०),
दे 'द्विचा' तथा 'धारा' ।

मस्थापक, सं पु (म) प्रवर्तक, प्रवर्तयितृ,
आरम्भक, प्रतिष्ठापक ।

मस्थापन, म पु (म) प्रवर्तन, प्रारम्भण,
प्रतिष्ठापन, प्रारम्भ २ निभाग ३ दृढी
करणम् ।

सस्थापित, वि (स) प्रवर्तित, प्रतिष्ठापित,
प्रारम्भ २ निर्मित ३ दृढीकृत ।

मसृष्ट, वि (म) मृष्ट, क्षुप्त, परामृष्ट २
मंथक, तापमपक ३ मयुक्त, मवद ।

मसृष्ट, वि (म) अपावृत्त, -पावृत्त, उद्
घटित २ विनसित, उन्निद्ध, स्फुटित, उन्नीलित ।

संस्मरण, स पु (म न) मस्मृति (स्त्री),
सम्यक्, स्मरण अनुचितन अनुवोधन २ स्म
रक, स्मारकघटना ३ सम्भारनं शानम् ।

सहस्र, वि (म) घन, इद, निर्दिष्ट, अनंतर
० मयुक्त, सवद ३ मनिग्न, समिश्रित
४ अहन ५ मयुहीन ।

सहस्रि, सं स्त्री (स) सगति (स्त्री),
स्निग्ध २ राशि, चय ३ गग, समूह
४ घनत्व, निर्दिष्टा ५ मधि, मयोग ।

संहार, म पु (म) हिमाभन हनन, हत्या,
वध, धन २ वि, नाश ध्वम ३ (मुक्ता
रत्न) महर्गमकोचनुमहर्गि (स्त्री),
४ मप्रह, मकोच ५ मधेर, मार ६ रुमागि
(स्त्री) धन ७ प्रत्य, कल्याण ।

—करना, कि म, मृ-यपदनिवृत्त (प्रे)
१ रि, मशब्दम (प्रे) ।

सहारक, म पु (म) महर्ग, नाशक २ मघ
हीन, मचेतु ।

सहिता म स्त्री (म) मधि, वर्णमनिर्य
(व्या) २ सयोग, मिलन ३ धर्मसहिता,
मृति (स्त्री), अनिवारिका ४ वेदाना
मत्रभण ।

सह्यौ, म पु (स स्वामिन्) पति २ वात
३ ईश्वर ।

सह्यौ, सं स्त्री (हि सखिया) दे 'सखी' ।
सकता, म पु (अ-न) सन्यास, मूर्छा
(रोगभेद) २ कति (स्त्री), विराम
(छन्द) ।

सकना, कि अ (म राजन) शक (स्वा प
अ), मभू (स्वा प से), हस-ममर्थ (वि)
भू । (यह किदा मदा दूसरी क्रियाओं के
माथ ही प्रयुक्त होती है) ।

सकपकाना, कि अ (अनु सकपक)
किम् (स्वा आ अ), विमयाजुनीभू ।
२ अभिदाक् (स्वा आ से) दोषयते
(जा धा) ३ लज (तु आ से), जप
(स्वा आ से) ।

सकर्मक, वि (म) कमविशिष्ट (व्या) ।
सकल, वि (म) दे 'सक' ।
सकाम, वि (म) कल्मिष्पिन, कामना
विशिष्ट २ लब्धकाम, पूज्यमनोरथ ३ कामुक,
कामिन ।

सकारण, वि (म) सहस्र, कारणविशिष्ट ।
सकुचनी, कि, अ (म सरोवन) कीड (दि
प मे), री (तु अ अ), लज (तु आ

से) २ सकुच-मह (वम), मुद्रित-सकु
चिन् (वि) भू ।

सकुचाना, कि अ (स सरोवन) दे 'सकु
चना' । कि स, व 'सकुचना' के प्रे रूप ।
सकुचोला, वि (म सरोव >) मकोचशील
दे 'लज्जार्थ' ।

सकुन्त, म स्त्री (अ) नि, वाम, निकेतन,
नि, वामस्थानम् ।

सकुत्, अभ्य (स) दक्षार २ सदा
३ सह ।

सकुचना, कि म, दे 'लिकोचना' ।

सकोरा, म पु (हि कयोग, दे) ।

सखरा, स पु } दे 'सखी-गच्छी' ।

सखरी, म स्त्री }

सखा, म पु (म सखि) मित्र, सुहृद्, २ सह,
चारित्र्य, सखिन् ३ नायकमहचर
(मा) ।

सखावन, म स्त्री (अ) वदान्यता २ औ
दार्यम् ।

सखिच, म पु (म न) सख्य, मैत्री ।

सखी, स स्त्री (स) सहचरी, आनीलि,
(स्त्री), वयस्या, अधीची कमिनी
२ नायिकाया सहचरी (स्त्री) ।

सखी, वि (न) दानशील, वदान्य ।

सखुत, म पु (पा) वार्ताप, मवाद
२ काव्य, कविता ३ वचनम् ।

—तेकिया, म (का) दे 'नकिया कल्प' ।

—दौ, सं पु (का) काव्यमर्म, रमिर
२ वरपट्ट ३ कवि ।

—दानी, म स्त्री (का) काव्यमर्मज्ञता, रमि
कता २ वार्ताप ३ काव्यकला ।

—दानाम, म पु (का) दे 'मस्तुनर्दा' ।

—मात्र, सं पु (का) कवि २ दे 'गणरी' ।

सग्न, वि (पा) वीरम, कर्ष, वारण, धन,
दृढमधि, मदन २ दुष्पर, कटिन्, दुष्माप्य,
निर्दय, निष्कर्ण ३ चट, परुष, कठोर, दुष्मह
५ कुशील, दुष्प्रवृत्ति ६ कृपा ७ अनियम,
अत्यधिक । कि वि, परुष, निर्दय, तीव्रम् ।

—मुक्त कहना, (मु) भर्त्स (तु आ से),
अक्रु (स्वा प अ) ।

सगती, सं स्त्री (का) वक्रगता, वीकमता,
घनता २ दुष्कृता ३ निर्दयता ४ चान्ता
५ कुशीलता ६ अधिकवैद ।

—से, कि वि, चड, घोर २ निर्दयम् ।

—करता, सु, बल प्रयुत् (र आ अ)
निदय व्यवह (म्वा प अ) ।

सत्य, म पु (म न) सौहार्द, मासपदीन,
निवना, दे ।

सगध, वि (स) गध-वाम, चत-युक्त, सुवाम,
गधित, वासित २ सुगधि, सुगधित, सुगन्ध
बन्, सुवासित ३ समान-गुण्य, यध ४ गधित ।

सग, म पु (का) खान, कुकुर ।

सगण, वि (म) सदल, समेन्य । म पु
(स) शिव २ छद्द शास्त्रीयगणभेद
अन्तःसुगण ।

सगवग, वि (अनु) अति क्लिन्न आर्द्र दे
'लघय' २ आर्द्र-श्री, मृत ३ परिपूर्ण ।

सगर्व, वि (स) गर्विन, इष्ट । कि वि, सगर्व,
साभिमानम् ।

सगा, वि (म स्वक >) सोदर, महोदर
सोदर्य, मयोनि, सगर्न २ स्वकुलम् । स पु,
सकुल्य, सगौर, बहु ।

—भाई, न पु, सोदर, सहोदर, मास्य ।
सगापन, म पु (हि सगा) सोदरना, मग
मता २ सवधनैकत्वम् ।

सगाई, स स्त्री (हि सगा) ३ 'सगनी' ।

सगुण, वि (म) गुणिन्, गुणात्मिनः । म पु
(म) साकारेश्वर २ अवतारपूजक भक्त
मद्राय ।

सगुन, म पु, दे 'सकुन' ।

सगोती, म पु (स सगोत्र) एक-मम, गौर
२ बहु, शानि (स्त्री) ।

सगोत्र, वि (म) सवधिन, सनाति, मता
तीय, एक-मम, गौर । (स न) कुलम् ।

सघन, वि (म) निविड, मांद्र, घन, अनन्तर,
गाढ २ स्थूल, सहन ।

सच, वि (स मय) यथार्थ, अविनय, ३
'सत्य' । स पु, मत्य, तथ्य, अविनयम् । वि
वि, वस्तुन यथार्थन (दोनों अर्थ) ।

—बोलना, कि म, मत्य बद् (म्वा प ने)
बु (अ उ) ।

—सुच, कि वि (हि अनु) तत्त्वतः,
वस्तुतः, मत्य, मत्यत २ अवदर्थ, नि मदिहम् ।

मचराचर, म पु (म) चराचर-स्थाय

नगम-अन्वयेन मजीवनिवति पदाधा (पु
बहु०) ।

मचल, वि (म) चल, चर, नगम, गति
शील २ चेतन, प्राणिन् ।

सचाई, म स्त्री (हि मच) सत्यता, अविन
यता २ याथार्थ्य, वास्तविकता ।

सचान, म पु (म मचान अथवा मच
मान > ?) इयेन, पत्रिन् मशादन, दे
बाज' ।

मचित, वि (म) जिना पर मचन, उद्विग्न,
व्याकुल ।

सचिव, म पु (म) मित्र, मति (पु)
२ मत्रिन्, अमात्य ३ सहान-यक ।

मचेत, वि, दे 'मचेतन' ।

मचेतन, वि (स) चेतनम्, ममन, चेतनो
पपत्र २ मावधान ३ पुर ।

मचेष्ट, वि (म) उद्योगिन्, उत्साहिन्,
सोत्साह, मोषोग, उत्साह-उद्योग, शील २ चैष्ट
मान, कर्माद्युक्त ।

मच्चा, वि (म मत्य) मत्य-यथार्थ, भाविन्
वादिन् २ मत्य, यथार्थ, वास्तविक ३ वि,
शुद्ध, पवित्र, स्वच्छ, निश्चल-गुण्य ४ यथा
योग्य, यथोचित ।

मच्चाई, म स्त्री, दे 'मच' ।

सच्चिदानन्द, म पु (म) नित्यज्ञानसुखम्ब
रूप ब्रह्मन् (न) परमेश्वर ।

मच, म स्त्री (म मच्चा) अलक्रिया, परिक्रिया
प्रमाणन, मचन २ रूप, आकृति (स्त्री)
३ प्रोभा, ऋति (स्त्री) ।

—मच, मच, म स्त्री (हि अन) दे 'मच'
(१३) । ४ परिकल्पन, मच्चा, सचन-ना ।

मचरा, वि (म मच-हि नागना) नागकूट,
अरहित, सविधान ।

सचन, म ॥ (स मचन) आय, भद्र,
मत्पुरुष २ पनि, भर्तु ३ उपपति, नार
४ दयित, कान्त ।

सचनपद, वि (म) एक-ममान, देशन
दशीय-देशवाग्नि ।

मचना, कि अ (स मचन) मचन (म्वा
उ म) मचपरिचलित मिद्र (वि) म्
२ आत्मानं मच-मृ (लु) अन्क ३ राज्
क्षुम् (म्वा आ म) ।

सजनी, म स्त्री (हि सनेन) मसी, महचरी
२ उपपत्नी, गारिणी, मुनिष्या ३ नागा,
प्रिया, दक्षिणा ।

सज्जल, वि (म) उत्त, सज्ज, निमित्त, आर्द्र,
क्षिप्त, नल्लुत सनीर २ मवाप, साक्ष,
अशुपूर्ण (नेत्र) ।

सज्जा, म स्त्री (का) दे 'दह' ।

—याशता, वि (स) दक्षि, मुक्तदह २ अप
शोधन पुराणपातसिन् ।

—दाह, वि (का) दहनीय, दहय ।

सजाति } वि (म) मगोन, गोत्र, मर्षा इय
सजातीय } २ तुल्य, सह्य ।

सजाना, क्रि स (हि सजना) सजीक,
सज्ज-परिवृत्त, (प्रे) २ व्यवस्था (प्रे),
क्रमशः निविष्ट (प्रे) ३ मटभूष (तु),
अलङ्क । दे 'सवारना' ।

सजावट, स स्त्री (हि सजाना) दे 'सज'
(१) २ शोभा, श्री (स्त्री) ३ दे 'सज
पत' (४) ।

सजावट, म पु (तु सजावट) *सुल्ल*,
करमप्राप्त २ राजकमचारिन् ३ दे
'मिपाही' ।

सजा हुआ, वि, मज्ज, मिड, सज्ज २ भूषित
३ शोभमान ।

सजीला, वि (हि सजना) सुवेशमानिन्,
वेशाभिमानिन्, अलङ्क २ उर्विमद,
मनोहर ।

सजीव, वि (म) प्राणिन्, प्राणधारिन्,
चेतन, ऐक्यवत् २ क्षिप्र, ह्यु ३ आज
स्विन् ।

सजीवता, म स्त्री (स) प्राणवत्ता, चेतन्य
२ लाज, प्रियता ३ आश्रयिता ।

सजीवन, म पु, दे 'सजीवनी', म स्त्री ।
१, २ ।

—वृत्ती, = स्त्री वृत्तकी (२) ।

—मूर्, मूल, म पु 'सजीवनी वृत्ती' ।

सज्जन, म पु (म) आर्द्र, मद्र, मत्तुरव,
सुमाधुजन, महासुमन्त्र, महाशय २ तु
शीन, अभिमान । वि, मद्र, मद्रवृत्त २ महा
पुन, कुलीन ।

सज्जनता, म स्त्री (म) भद्रता-त्वं, आयता

त्व, सुशीलता, मौन्य, सुजनता-त्वं २ कुली
नता, अभिजात्यम् ।

सज्जित, वि (म) अलङ्कृत, भूषित, मटित,
परिष्कृत २ मज्जद, मिड, सज्ज, उवन ।

सज्जी, स स्त्री (स मज्जी) सजि (स्त्री),
सजिना, स्वनिक्, स्वनिन् ।

सज्जक, स स्त्री (अनु सज्) मृदुयष्टि (स्त्री)
२ धूमपानयनस्य नम्यनाली ३ निमृता
पमार ।

सज्जना, क्रि अ, निमृत् अपया (अनु मट)
(अ प अ), शनै अपय (स्वा प अ) ।
सज्जना, क्रि अ (स स+स्था) ह्य
(स्वा प से), सज्जन् (तु प अ),
लग्न-सज्ज-सज्जित (वि) भू २ क्षिप्
(दि प अ) सज (स्वा प अ) ।

सज्जपटावा, क्रि अ (अनु) सज्जपटायने (ना
धा), सज्जपटायनि नन् (दि वा से)
२ अज्ञान पर्याप्त चर्चन् (वि) भू दे
'व्याकुल होना' ।

सज्जपटाया हुआ, वि, सज्जपट, समूह, अज्ञान,
व्याकुल, सज्जान, अस्वस्थ ।

सज्जपटार, वि (अनु) धृष्ट, मुक्त, साधारण ।
म स्त्री, व्यर्थार्थ २ दुष्परकृतयम् ।

सज्जाना, वि म, व 'सज्जना' के प्रे रूप ।

सज्जा हुआ, (वि), लग्न, मज्जद, सज्जित,
२ सज्ज, सज्ज ।

सज्जीक, वि (म) सज्जपट, व्याख्यायित ।

सज्ज, म पु (म सज्ज) ममयलग्न, दे
'इकरारनामा' २ मदिभयन् व्यवहार, रत्ना ।

सज्ज-बद्ध, म पु (हि सज्जना+अनु)
उपवास, बृट्-ट्, बृट्, नृत्ति-उपाय २ ममग,
मज्ज ।

सज्जियाना, क्रि अ (हि साठ) पट्टिपत्रं
(वि) भू २ ज्या (क प अ), अ (दि
क प से) ३ वार्धक्येन बुद्धि क्षि (कर्म)
नश (दि प से) ।

सज्जियाया हुआ, वि, पट्टिपत्रं २ जरट, श्व
विर २ जरया मद्रमिज्जदुद्धि ।

सज्जक, म स्त्री (अ शरर) अध्वन, पविन्,
राजश्री, यय, मार्ग, दे ।

सज्जन, म स्त्री (हि सज्जना) गल्लन, विद्र
वर्ण, विन्ययनम्, धरणम् ।

सटना, कि अ (स शरण >) विशू (कर्म),
 नू (दि प से), वियल (भ्वा प से)
 २ पूय (भ्वा आ से), पूतीभू ३ केनयते
 (ना था), उत्तिच् (कर्म), अत शुभ (दि
 प से) (= खमीर आना) ४ दुर्गव (वि)
 स्या (भ्वा प अ), अवसद् (भ्वा प अ) ।
 ■ पु, जीणि (स्त्री), विगलन, पूयन पूनि
 (स्त्री), अवमाद, दुर्गनि (स्त्री), अभिवव
 अन-शोभ ।

सडसठ, म पु तथा वि, दे सनसठ ।

सडाक, स स्त्री (श्नु सड) त्वत् २ कडा
 शब्द ।

सडाद्वैध, स स्त्री (हि सटना + १४ >)
 दुर्गव, पूति (स्त्री), पूतिगध ।

सडा हुआ, वि, जीर्ण, विदीर्ण, दूषित, विग
 नित, पूति, पूतिगध, पूतिक, वस्तिज, सफेज,
 दुर्गव, अवमत्र ।

सडियल, वि (हि सटना) पूति, पूतिगध,
 कलुष २ जीर्ण, शीर्ण ३ छुद्र, दुग्ध ४ नि
 रर्थक, व्यर्थ ।

सद्, सं पु (स) श्रवि २ सज्जन । (स
 न) मकन (न) २ अद्रभू । वि (सं)
 सत्य, यथाय २ साधु, श्रेष्ठ ३ धीर ४ शाधन,
 नित्य ५ प्राण, पंडित, ६ पूज्य ७ पवित्र
 ४ उत्तम, वक्तृष्ट । सत्कर्म आदि, दे अगै ।

सत, स पु (स सत्त्व) तत्त्व, सार २ निष्क
 र्ण, भाव ३ कर्तन (न), सामर्थ्यम् ।

सत, वि (सं सत्तन्) दे 'सात' ।

—सजिला, वि (हि + अ) सत, भूमिक
 मौन (महल आदि) ।

—मासा, स पु, सप्तमास्य (शिशु) २ रीति
 विरोध, *मपमासिकम् ।

—रगा, वि, सप्तवर्ग-रग ।

सतगुरु, स पु (म गव + गुरु) सद्गुरु,
 सन्निष्ठाक २ परमेश्वर ।

सतगुण, स पु, दे 'सत्यगुण' ।

सतत, अव्य (म मत्त) निरन्तर, सदा,
 सर्वदा, नित्यम् ।

—गति, सं पु (म) पवन वायु ।

—ज्वर, सं पु (स) स्वापिस्थास्तु-नित्य
 जीर्ण, ज्वर-ताप ।

सतर, सं स्त्री (अ) रेखा २ पकि (स्त्री) ।

सतरह, वि (सं सत्तदशन) स पु, उक्ता
 सरया तद्बोधका औ (१७) च ।

सतरहवाँ, वि (हि सतरह) सत्तदश शो
 ष (पु स्त्री न) ।

सतर्क, वि (म) सहेतुक, समुक्तिक, उप
 पत्तिम् २ प्रमादरहित, जाहूक, मवधान ।
 सतर्कता, स स्त्री (म) 'रूकन', साव
 धनता ।

सतलन, स स्त्री, दे 'शनटु' ।

सतलडा, स पु (हि सात + १४) सप्त
 सूत्रो हार २ सप्तगुण माला । वि, सप्त, नूत्र
 उप शुल्ब ।

सतवनी, वि स्त्री (स सत्यवनी >) सुव
 रिता, पतिव्रता, पतिपरायणा, सता, साध्वी ।

सतसई, } म स्त्री (स सतरानीनिका)
 सतमैया, } शतमस्तकपद्यत्मक सप्तह २ श्री
 विहारीलालरचितो हिंदीभाषाया काव्य
 विरोध ।

सतसठ, वि [स सप्तषष्टि (नित्य स्त्री)] स
 पु, उक्ता सरया तद्बोधका औ (१७) च ।

सतह, स स्त्री (अ) तल, पृष्ठ, उपरि-पृष्ठ,
 भाग ।

सतहसतर, वि [स सप्तसप्तति (नित्य स्त्री)]
 म पु, उक्ता सरया तद्बोधका औ (७७) च ।

सताना, कि स (स सनापन) सं परि-त्प
 (प्रे), पीड (बु), दुष्पयति (ना था),
 क्लिष्टा (क प मे) २ सिद्ध अयस्-उद्भि
 (प्रे) । स पु, स-परि-नापन, पीडन,
 क्लेशन अर्धन, अयामन, उद्बेजन, बधन ।
 सताने योग्य, वि, सनाय, पीडनीय, उद्बे
 जनीय ।

सताने वाला, स पु, स-परि-नापक पीडक,
 क्लेश-दुष्प-कर आविष्ट, अपासक, सिद्धकर ।

सताया हुआ, वि, पीडित, मत्तपित, अपासित
 उद्बेजित, बाधित, २ ।

सताल, म पु, दे 'शकनल' ।

सतावर, स स्त्री (स शतवरी) शतमूली,
 नारायणी, वरी, बहुमुता ।

सतासी, वि [स सप्ताशीति (नित्य स्त्री)]
 सं पु, उक्ता सरया तद्बोधका औ (८७) च ।
 सती, वि स्त्री (सं) दे 'सतवती' । स स्त्री
 (सं) परिमिता नारी २ मृतभर्त्रा सह दग्धा
 नारी, सह, गामिनी-मृता २ दक्षकन्या ।

—चौरा, स पु (म + हि) *मपीवेदिका ।
 —पुत्र, स पु (म) पतिव्रता-भाष्यी, पुत्र
 सनद ।
 —घत्त, स पु (म न), पातिव्रत-त्वम्,
 मनीत्वम् ।
 —वत्ता, स स्त्री (म) पतिव्रता नारी ।
 —होना, मु, श्रुतभवा माहं दह (कर्म)-
 भस्मीभू ।
 सतीत्व, स प (मं न) पातिव्रत्य, भाष्यीत्व ।
 —निगाढना या मष्ट-करवा, मु, सतीत्व नष्ट
 (प्रे), बलात्कारेण गम् (भ्वा आ अ)-अभि
 गम् (भ्वा प अ), पातिव्रत्य दुष्ट (प्रे) ।
 —हरण, स पु (म न) बलात्कार, दह
 ममोग, बलाग्रेयुनम् ।
 सतीर्थ, स पु (स) सतीर्थ, एकयुग्म ।
 सतून, स पु (फा) स्मृणा, स्तम्भ ।
 सतीयुग, स पु, दे 'सत्ययुग' ।
 सतीयुगी, वि (हि मनेयुग) दे 'सत्य
 युगी' ।
 सत्वर्म, स पु (स मं न) शुभ-मु पुण्य,
 कार्ये इत्य-कृति (क्री)-क्रिया-कर्मन्, पुण्यम् ।
 सत्कार, स पु (स) आदर, समान, पूजा
 २ आनिध्य, अनिदिनेषा ।
 सत्कार्य, स पु (म न) दे 'सत्वर्म' । वि,
 पूज्य, मान्य, आदरणीय ।
 सत्कृत, वि (स) आहुत, समानित, पूजित ।
 सत्त, स पु दे 'सत्त' ।
 —सत्तम, वि (स)-गत्तम, श्रेष्ठ ।
 सत्तर, वि [म सत्यनि (नित्य स्त्री)] उक्ता
 मत्या तद्वोधकाङ्गी (७०) व ।
 सत्तराई, वि (हि सत्तर) सप्ततिम नाम्नी
 रीम (पु स्त्री न) ।
 सत्तरह, वि, तथा मं पु दे 'मत्तरह' ।
 सत्ता, स स्त्री (मं) मत्त, अग्नित्व, भाव,
 विद्यमानता २ शक्ति (स्त्री), सामर्थ्य
 ३ प्रभुत्व, अभिपार ।
 —घाटी, स पु (म नीन >) अभिपारित्व,
 अधिपारिक ।
 सत्ता, (म सत्तन् >) सप्ततिद्वयिना ज्ञानपत्र,
 *सप्तक ।
 सत्ताइम्, वि [मं सप्ततिशक्ति (नित्य स्त्री)]
 स पु, उक्ता मत्या तद्वोधकाङ्गी (२७) व ।

सत्ताइसवाँ, वि (हि सत्ताइस) सप्तविंशति
 तम-तमी-नम्, सप्तविंश शी श (पु स्त्री न) ।
 सत्तानवे, वि [म सप्तनवति (नित्य स्त्री)]
 स पु, उक्ता मत्या तद्वोधकाङ्गी (९७) व ।
 सत्तावन, वि [म सप्तपचाशत् (नित्य स्त्री)]
 स पु, उक्ता मत्या तद्वोधकाङ्गी (५७) व ।
 सत्तासी, वि [मं सप्तासीति (नित्य स्त्री)]
 स पु, उक्ता मत्या तद्वोधकाङ्गी (८७) व ।
 सत्तू, स पु [म सत्तु (फल पु बहु में
 सत्तव)] मत्तु, शक्त (पु न), मृष्टयव
 चूर्णम् ।
 सत्त्व, स पु (स न) मष्टनेष्टुंगविशेष ९ सत्ता,
 अस्तित्व, भाव ३ सार, तत्त्व, मूलद्रव्य
 ४ विशेषता, अन प्रवृत्ति (स्त्री) ५ वित्त
 प्रवृत्ति (स्त्री) ६ चेतना चैतन्य ७ प्राण
 ८ आत्मन् ९ प्राणिन् १० गर्भं ११ प्रेत,
 भूत १२ शक्ति (स्त्री), वीर्यम् ।
 —गुण, स पु (म) सत्त्वमसु प्रवर्तको गुण,
 विवेकशीलप्रवृत्ति (स्त्री) ।
 —गुणी, वि (म) साधिवन्, उत्तमप्रवृत्ति,
 विवेकशील ।
 सपथ, स पु (सं) शुभन, मार्ग २ सद्,
 श्रुत-आचार ३ सु, सप्रदाय मित्रान् ।
 सत्पात्र, स पु (म न) सुपात्र, दानार्हो जन
 २ आर्य, मद्रजन ३ सु वर बोध ।
 सत्पुरुष, स पु (म) आर्य, मद्रवृत्तो
 मानव, मद्र ।
 सद्य, स पु (स न) तथ्य, ज्ञा, तथ्य,
 यथार्थ, अवितथ, भूत-परम-तत्त्व, -अर्थ
 २ शपथ ३ प्रविष्टा ४ कृतयुगम् । वि, तथ्य,
 अवितथ, वास्तविक, यथार्थ, ज्ञातु २ अदृष्टिम,
 अदृष्टक ।
 —काम, वि (सं) सत्य, प्रिय अभिलाषित ।
 —नारायण, स पु (मं) दत्तकविशेष
 (= सत्यपीर हि) ।
 —प्रतिज्ञ, वि (म) सत्य, व्रत-गार रूप
 अभिप्राय ।
 —युग, स पु (मं न) तत्पुण्येय प्रथमयुगं,
 कृतयुग (= १७२८००० वर्ष) ।
 —युगी, वि (म सत्ययुग >) सत्ययुगम्बन्धिन्
 २ अति, पुराण प्रचीन ३ धर्मात्मन्, मद्र
 वृत्त, मरम् ।

—लोक, ॥ पुं (म) सप्तलोकातर्गत उच्चमो लोक, महालोक ।

—वचन, स पु (सं न) सत्य-यथार्थ, कथन भाषण २ प्रतिज्ञा ।

—वादी, वि (स दिन्) तथ्य सत्य, भाषिन्, यथार्थवक्तु २ दे 'सत्यप्रतिज्ञ' ।

—व्रत, सं पु (सं न) सत्यभाषणप्रतिज्ञा । वि, सत्य, वादिन् प्रतिज्ञ सत्त्व ।

—मकरप, वि (सं) दृढसंवत्स ।

—सध, वि (स) दे 'सत्यप्रतिज्ञ' । स पु (मं) श्रीराम २ भरत ३ जनमेजय ।

मर्यत, अघ्य (स) वस्तुन, सत्यम् ।

सत्यता, स स्त्री (म) वास्तविकता, याथार्थ्य २ नित्यत्वम् ।

सत्यभामा, म स्त्री (स) सत्रातिपुत्री, श्रीकृष्णपत्नीविशेष ।

सत्यवती, वि स्त्री (स) सत्य, भाषिणी-वादिनी २ धार्मिकी । सं स्त्री (सं) व्याम जननी, योजन-मत्स्य, गधा गध, काली ।

—सुत, म पु (म) व्यास, द्रैपायन ।

सत्यवान्, वि (म-वत्) दे 'सत्यवादी' (१२) ।

॥ पु, सावित्रीपति, नृपविशेष ।

सत्या, स स्त्री (सं) मत्यता, दे । २ स्त्रीना ३ द्रोपदी ४ दे 'सत्यवती' स स्त्री ५ दुर्गा ।

सत्याकृति, स स्त्री (स) सत्यापन, सत्य वार, अग्राय, दे 'पेशगी' ।

सत्याग्रह, म पु (सं) नि-शस्त्र-अहिंसात्मक, विरोध प्रतिवार २ तथ्यनिर्वैध ।

—आदोलन, स पु (सं न) नि-शस्त्र विरोधादोलनम् ।

सत्याग्रही, स पु (मं हिन्) अहिंसात्मक विरोधिन् २ तथ्याभिनिवेशिन् ।

सत्यानास, सं ॥ (॥ सत्तानाश >) वि, ध्वस-नाश, सर्वनाश ।

—करना, कि स, वि, नन् ध्वस् (प्रे), समूल उच्छिद् (४ प अ) ।

सत्यानासी, वि (हिं सत्यानास) सर्व वि, नाशय ध्वसक २ मद हत, माग्य ।

सत्यानृत, सं पु (मं न) वाणिज्य २ सत्या सत्यमिश्रणम् ।

सत्र, सं पु (सं न) यज्ञ, भाग, मख

२ सोमयागभेद ३ भवन, सत्रम् (न), ४ धन ५ दे 'सदावत' ।

सत्रह, वि तथा स पु, दे 'सतरह' ।

सत्वर, अव्य (सं-र) शीघ्र, दे ।

सत्सग, ॥ पुं (स) आर्य-सत्, संगति (स्त्री)-समागम-ससर्ग-सवास-साहचर्यम् ।

सत्सगी, वि (स गिन्) सत्जनसहचर (-री स्त्री) २ धार्मिक (-की स्त्री) ।

सधिया, स पुं (स स्वस्तिक) मार्गलिक विद्वविशेष २ दे 'जराह' ।

सदका, सं पुं (अ-वद्) दान, बलि, उपहार, दे 'निडावर' ।

सदन, स पु (मं न) भवन, गृह, दे 'घर' २ जलम् ।

मदमा, स पु (अ सदमह) आघात, प्रहार २ दुःख, शोक ३ अत्याहित, विषद् (स्त्री) ४ महा, क्षति हानि (दोनों स्त्री) ।

—पटुचना, कि अ, आहन् (वर्म), शोकेन विपदा वा घम (कम) ।

सदय, वि (स) दयान्वित, दयालु, दे ।

सदर, वि (अ) प्रधान, मुख्य, विशिष्ट । सं पु, कैदस्थल २ राजधानी ३ सैन्यनिवेश, दे 'छावनी' ४ समा, पति-अध्यक्ष ।

—नशीन, स पु (अ + फा) दे 'सदर' (४) ।

—घाजार, स पु (अ + फा) प्रधानापण २ सैन्यापण ।

—थोर्ड, स पु (अ + अ) *राजत्वपरिषद् ।

—मुकाम, स पु (अ) मुख्यकार्यालय ।

सदरी, सं स्त्री (अ) दे 'वास्कट' ।

सदस्य, स पु (स) दे 'सभासद्' ।

सदा, अव्य (स) नित्य, सर्वदा, अनिरा, सतत, सर्वकाल २ निरन्तर, अनवच्छिन्न, अविरतम् ।

—गति, स ॥ (स) बायु ।

—बहार, वि (सं + फा) *सदावसत, नित्य हरित शृङ्खलम् ।

—वर्त, ॥ पु (स व्रत >) नैत्यवभोजन, दान वितरण-उत्सर्ग, *सदावन २ नैत्यकदानम् ।

—सुखी, वि (स रिन्) सर्वदानद ।

—सुहागिन, वि स्त्री (स + हिं) नित्य सौभाग्यवती, अमरपतिका २ वेश्या ।

सदाचार, स पु (स) सचर्या, सदाचरण, सचारिध्वं, सद्वृत्त चि (स्त्री), सचारित, सद्

व्यवहार २ शिष्टता, मौजब, मद्रता ३ रीति (स्त्री), प्रथा ।

सदाचारी, स पु (म रिन्) सद्वृत्त, सुचरित-मविरत्र २ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् [सदाचारिणी-सद्वृत्ता आदि (स्त्री)] ।

सदानन्द, वि (म) आनन्दशील, जित्वा नन्द । म पु (म) परमेश्वर ।

सदाश, वि (स) सपत्नीक, जायाचित ।

सदाशिव, म स्त्री (अ) सभा, पतित्व भव्यमना ।

सदाश्रित, वि (म) परावन्दशील, परावलम्बिन् ।

सद्वी, म स्त्री (अ) शताब्दी, शती २ शतम् ।

सनुपदन्त, म पु (म) मन्त्रिष्ठा २ सम्प्रदाय ।

सदृश, वि (म) मरूप तुल्याकार २ मम, ममान, तुल्य सदृश ३ योग्य, उचित ।

सदृशता, स स्त्री (म) समानता, तुल्यता ।

सदेह, कि वि (म न) सारो, मकायम् ।

सदैव, अव्य (म) सदैव, नित्यमेव ।

सदोप, वि (म) मापराध, अपराधिन, दोषिन दुष्टिदोष-युक्त ।

सदृगति, स स्त्री (म) मोक्ष, मुक्ति (स्त्री) २ सुदृशा, सुगति (स्त्री) ३ महाचार ।

सदृगुण, म पु (म) सुगुण, मन्त्रगुणम् ।

सदृभाष, म पु (स) हितशुभ विना, हितैषणा पिता २ माय ३ निष्कपत्ता, मरुता ऋजुता ४ सत्ता, अस्तित्वम् ।

सधना, कि अ (हि सधना) विनी (कर्म), वशीभू, दम् (दि प से) २ अभ्यस्य (वि) भू ।

सधर्मिणी, म स्त्री (स) धर्मपत्नी २ तुल्य मनावलम्बिनी ।

सधर्मी, वि (म मिन्) सधर्मन्, सधर्म, समान धर्मानुयायिन् २ सुत्यशुण ।

सधवा म स्त्री (स) मिदूरतिलका, सभ लुका सनाथा, पतिवनी, नीवत्यनिका, सौभाग्यवती ।

सधाना, कि स (हि सधना) विनी (स्वा प अ) दम् (प्रे) शिष्ट (प्रे) वशीकृ ।

सं पु, विनयनं, दमन, वरी वरणम् ।

सधानेपाला, स पु, विनेन्, दमयिन् ।

सधा हुआ, वि, विनीत, दात, शिक्षित, वशम् ।

सन्, स पु (अ) दे 'सवन्' (१, ३) ।

—ईसवी, सं पु, ख्रिस्त, शाक-संवत् (अव्य) ।

—हिजरी, स पु, यवन, शाक संवत् ।

सन, स पु (ण शण) दीर्घ, शाख पत्रम्, त्वकसार, वमन ।

सन, स स्त्री (अनु) मणिति, मणत्कार, शीघ्रनिर्मगध्वनि । वि, स्तब्ध २ मि शब्द ।

—से, कि वि, समणत्कारम् ।

सनई, स स्त्री (हि-सन) क्षुद्रशण ।

सनक, सं स्त्री (म शका >) वृद्धाग्रह, उत्कटाभिनिवेश, चित्तहरी, छन्द ३ उन्माद, चित्तभ्रम ।

सनकना, कि अ (हि मनक) उमद् (दि प से), व्यामुह (दि प वे) ।

सनकी, वि (हि सनक) उत्कटाभिनिवेशिन्, वृद्धाग्रहिन् ।

सनद्, म स्त्री (अ) प्रमाणपत्र २ प्रमाणम् ।

—याप्ता, वि (अ + क्ता) प्रमाणपत्रधारिन् ।

सनना, कि अ (स सभान >) व 'सानना' के कर्म के रूप ।

सनम, स पु (अ) श्रियतम, वदित, वल्लभ ।

सनमान, स पु, दे 'समान' ।

सनसनाना, कि अ (अनु सनसन) सगमणावते (ना भा) ३ सनसगसिद्ध वा (अ प अ) ।

सनसनाहट, म स्त्री (हि सनसना) पवनवहनध्वनि, वातगतिशब्द २ (राता दीना) सनसगावित, सनसगत्कार ३ दे 'सनसनी' ।

सनमनी, स स्त्री (अनु सनमन) सवेदन नाटीनां स्पन्दनधेद, सनसगकृति (स्त्री) २ स्तब्धता ३ संक्षोभ, उद्वेग ४ नीरवता ।

—खेज, वि (अनु + क्ता) संक्षोभननर, उद्वेगकर ।

मनस्योक, सं पु (अ) अनुपात ।

सनातन, वि (सं) अति, पुराण प्राचीन पुरातन २ क्रमागत, परंपरात्मक ३ नित्य, शाश्वत [सनातनी (स्त्री)] । सं पु, प्राचीनत्व २ पुरातनी परंपरा ३ विष्णु ४ ब्रह्म ५ शिव ।

—धर्म, सं पु (स) प्राचीन पुरातन धर्म

२ परपरागो धर्म ३ प्रतिनापूजनशून्यक
आद्यादिविभासी हिंदूधर्मोपासविशेष, पौरा
निकर्म ।

—धर्मी, स पु (स धिन्) सनानधर्मा
नुयायिन्, पुराणमतवल्लिन् ।

—पुरुष, स पु (स) विष्णु ।

सनातनी, स पु (स मनातन) दे 'मना
तनधर्मी' । वि, पुराणत परंपराव्यवस्था ।

सनाथ, वि (स) सन्निहितम् २ सपत्निक,
समर्पक, सत्सङ्गुत, सहायबन्धु [मनाथा
(स्त्री) जीवदमयुजा] ।

सनाभि, स पु (स) मोक्ष, सद्योदर
२ सन्नि, सगोत्र, मनाथ्य ।

सनाथ, स स्त्री (अ मनाऽ) स्वापत्नी-त्रिका
रैचनी, कल्याणी मन्त्रारणी ।

सनाह, स पु (स सनाह) अनुज्ञा, कवच
व दे ।

सन्निद्र, वि (स) निद्रित, निद्राग, शयित,
क्षुप्त, शयान ।

सनीचर, स पु, दे 'सनीचर' ।

सनीह, वि (स) सङ्कल्प, समन्वयक, नीह
वनिन् २ सम्बन्धित, सम्बन्धक, संपत्तिन् ।
स पु, सनीप्य, नैक्यम् २ प्रातिविशयम्,
अतिवैश ।

सनीवर, स पु (अ) दे 'नीव' (वृक्ष) ।

सन्न, वि (म सन्) चकितचकित, अति
विस्मित २ स्तब्ध, जडीभूत, व्यामोहित
३ नि मन्न, अनेन ४ सत्सङ्ग, भयाभिभूत ।

सनद्ध, वि (सं) बद्धवचन, धृतसनाह
२ सायुष, सद्यः ३ सज्ज, सिद्ध, वधत,
उपलब्ध ४ सवद्ध, मल्लम् ।

सन्नाटा, स पु (हि सुत्र) नि शब्दता, नीर
वना २ निजन्ता, निजन्ता, विविक्त ३ मय
वित्तपादितनिता नि स्तब्धता । वि, नीरव
२ निर्जन ।

सन्मान, स पु, दे 'समान' ।

सन्मुख, अन्ध, दे 'समुख' ।

सन्यास, स पु, दे 'सन््यास' ।

सपत्, स पु (स) स्वपत्, पतिन्-अवन्तिन्,
सहायक, मित्रम् ।

सपत्नी स स्त्री (स) समानपतिता, समान
भर्तृका ।

सपत्नीक, वि (स) सकलत्र, सपरिव्रज ।

सपना, स पु, दे 'स्वप्न' ।

—होना, सु दुर्दैय-दुर्लभ (वि) भू ।

सपरदाई, स पु (स सपरदायिन्) दे
'साजिदा' ।

सपर्या, स स्त्री (स) पूजा-जन, अराधन
नम् ।

सपाट, वि (म) मम, सनरेख समर्थ,
ममल ।

सपाटा, स पु (स सर्पण) चलनधाव
नोड्डयनादीनां, श्व वेग, रय २ त्वरित
गति (स्त्री) धावनम् ।

सैर— स पु, परिभ्रम, पयनम्, विहरणम् ।

सपिड, स पु (स) सनाभि मत्पुत्रान
गतानि (पु), मगोत्र, मवशीय, वधु ।

सपूत स पु (स सुपुत्र) सपुत्र, सुतनय ।

सपेग, स पु दे 'सपेरा' ।

सरो(रे)र, स पु 'सरोण' ।

सस, वि (स ससम्) स प, उक्ता सख्या
सद्वोधकोज्ज्वल (७) ।

—सपि, स पु [स सतर्पय (बहु)
=मरीचि, अत्रि, अग्निरस, पुरुषस्य, पुलह,
क्रतु, वसिष्ठ, अथवा गौतम, भरद्वाज,
विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप] ।

—निह, स पु (स) सप्तज्वाल, अग्नि ।

—धातु, स पु [स सप्तधानव (बहु)
=रनाधमासनेदोऽस्थिमज्जान शुक्रमयुता ।]

—पदी, स स्त्री (स) विवाहागसप्तपदी
यमनम् ।

—पाताल, स पु (स न) सप्ततल्याकाधो
भुवन (= अरु, वितल, सुनल, रसात्म,
तलान्त, महातरु, पातालम्) ।

—पुरी, स स्त्री (स) सप्तपुण्यनगरानि
(न व) (= अयोध्या, मथुरा, माया (हरि
द्वार) काशी, काँचो, अवतिका, (वज्रयिनी),
द्वारका) ।

—प्रकृति, स स्त्री (स प्रकृतय (स्त्री बहु)
राज्यस्य सप्तार्ण (बहु) (= नृप, मन्त्रिन्,
सामन्त, देव, कोश, दुर्ग, सेना) ।

—भुवन, स पु (स न) सप्तोर्ध्वलोका (पु
बहु) भूमिव स्वर्गहस्त्रैव जनश्च तप एव च
सत्यलोकश्च) ।

—सप्ति, स पु (स) स्य, सप्ताथ ।
 सप्तक, स पु (स न) सप्तवस्तुसमूह
 २ सप्तस्वरसमूह (सगीत) ।
 सप्तमी, स स्त्री (स) शुक्लकृष्णपञ्चमो
 सप्तमिति (पु स्त्री) । २ अधिवर्णकार
 कस्य विभक्ति (स्त्री) ।
 सप्तपि, स पु [स सप्तर्षय (वडु)] दे
 'सप्तर्षि' ।
 सप्ताथ, स पु (स) स्य, मातु, रवि,
 अर्द्ध ।
 सप्ताह, स पु (स) सप्तादिकमात्मन काल,
 ७ दिनमासक २ साप्ताहिक कृत्य ३ श्रीमद्भाग
 वतादीनां साप्ताहिकी कथा ।
 सप्तज, वि (स) सवाल, सापत्य, सम्मतान,
 अपत्यवटु ।
 सक्त, स स्त्री (अ) श्रेणीणि (स्त्री),
 पक्ति (स्त्री) २ लवणट ।
 सक्तर, स पु (अ) वाना दे ।
 —सक्च, स पु (अ+क्रा) मार्गव्यय ।
 सप्तरमैना, स स्त्री (अ सैपर+माह्नर)
 पनरमौगिना (पु वडु) ।
 सप्तरि, वि (अ मकर) यात्रोपयोगिन् ।
 सप्तरि, स्त्री (सप्तरा) जप्तर, मल्यभेद ।
 सप्तर, वि (स) फलिन, फलवत्, फलिन,
 सुश्लेष, फलयुत २ सार्वक, अमोन, अर्थवत्
 २ निष्पन्न, निद्र, पूष ४ कृत, कार्य-कृत्य
 मफलमन्तारथ, निद्रार्थ, कृतार्थ, कृतिन्, चरि
 तार्थ, प्राप्त पूर्ण-लक्ष्य, नाम ।
 —होना, क्रि अ, कृतकार्य-सफल (वि) भू ।
 सफलता, स स्त्री (स) सापत्य, अर्थ-अनो
 रथ, निद्रि (स्त्री), कृत, कापता-कृत्यता
 २ पूषता, निष्पन्नता ३ फलवत्ता ४ साधकता ।
 सप्तरहा, स पु (अ) पत्र, पूर्ण, वृष्टम् ।
 सप्तरा, वि (अ) अविनिर्, मल, स्वच्छ,
 २ शुचि, पूत, पवित्र ३ शरण, मसृण ४ सम
 तल, समस्थ ।
 —चट, वि, अतिस्वच्छ, नितान्तनिर्मल २ अनि,
 शरण-मसृण ।
 —चटकरना, क्रि म, शुरेण मुट (म्वा प स,
 चु), वंशान् सम्पत्क आण (म्वा उ अ,
 द्वे) २ विनन् विध्वम (द्वे) ।
 सप्तराई, स स्त्री (अ मात्र) स्वच्छता,
 निमलता २ शीघ्र, शुद्धि (स्त्री) ३ अव

स्करापमारण ४ निष्कपटता, आर्च ५ चित्त
 मानम्, शुद्धि (स्त्री) ६ निर्दोषिता
 ७ चणशोधन ८ निर्णय ।
 —देना, मु, स्वनिर्दोषिता प्रमाणीकृत, आरोपिता
 पराध निरस्त (दि प से) ।
 सप्तीना, स स्त्री (अ) पुस्तक २ दे 'समन' ।
 सप्तीर, स स्त्री (अ) राजदूत ।
 सफेद, वि (क्रा सुफेद) श्वेत, धवल, श्वेत,
 श्वेत, शुक्ल, सित, शुक्ल, शुभ्र, गौर (स्त्री
 स्त्री) २ अव चिह्न लेख, रहित (पञ्चादि) ।
 —स्वाह, स पु (क्रा) हिताहित, इष्टानिष्टम् ।
 —योना, स पु (क्रा) आर्य, मद्रजन । वि,
 श्वेतवाससु ।
 रग—पङ्गो, मु, विवर्णता अपद (दि
 आ अ) ।
 सफेदा, स पु (क्रा सुफेदा) मीसकमस्मद
 (न), श्वेतसीत २ आभ्रभेद ३ श्वेत
 (वृष्टभेद) ।
 सफेदी, स स्त्री (क्रा सुफेदी) शुक्लता, श्वेतता,
 धवलता, धवलमन्, शुक्लमन्, श्वेतमन्
 २ शुभा, सुधालेप ३ प्रस्थ, प्रमाणम् ।
 —करना, क्रि स, सुधया लिप् (तु प अ)
 धवलपति (ना था), सुधालेप कृ ।
 —आना, मु, ज (दि प से), ज्या (कृ
 प अ), केशा धवलपते (ना था) ।
 सब, वि (स सर्व) विष, समस्त, सकल,
 अगिल, निखिल, कृत्स्न, अक्षय, नि शेष
 २ पूर्ण, अनून, अलङ्क, समग्र ।
 —कही, क्रि वि, सर्वत्र ।
 —का सब, वि, समग्र, संपूर्ण ।
 —कुड, स पु, सर्वम् ।
 —कोई, सब, सर्वे, विभे (पु वडु) ।
 —से अच्छा, वि, उत्तम, परम, श्रेष्ठ, प्रशस्ततम ।
 —हाल, स पु, संपूर्ण, कृत-कृतात ।
 —मिलाकर, मु, सर्व, समस्त २ सर्वाणि
 सफल्य परिगण्य ।
 सब—, वि (अ) सहायक, उप— ।
 —इन्स्पेक्टर, स पु (अ) उप, निरीक्षक
 अवेश्वर ।
 —जक्त, स पु (अ) उप-धिकारिक, उप
 न्यायाधीश ।
 सयक्त, स पु (क्रा) पाठ, दे । २ शिक्षा ।
 सयव, स पु (अ) कारण, हेतु ।

सवर, स पु, दे 'सत्र'।

सबल, वि (स) बलवत्, बलशालिन्, बलिन्, धीरवत्, शक्तिमत्, शक्त, प्रबल, कर्जित, कर्जस्वल, समर्थ २ समैन्य।

सबा, स स्त्री (अ) प्रमानपवन।

सबाध, वि (स) दुःखद, वष्टदायक २ हानिकारक, अहितकर।

सबील, स स्त्री (अ) माग, पथिन् २ उपाय ३ प्रपा, दे।

सबल, स पु, दे 'सुबल'।

सब्ज, वि (का) हरितवत्, प(पा)लाश, हरिद्वर्ण २ नव, प्रत्यग्र, सरस (फलशाकादि)।

—बाग दिखाना, मु, मोषाशाभि बच् प्रतु (प्रे)।

सब्जा, स पु. (का) हरितवत्, हरित्य, शाद, शादबलता २ भगा, विजया ३ हरिन्मणि, मरकतम्।

—झार, स पु (का) शादल जम्।

सब्जी, स स्त्री (का) दे 'सब्जा' (१) २ शाक क, शि(नि)म्, हरितक-क ३ भगा, विनया।

सब्जेष्ट, स पु (अ) विषय, प्रकरण, प्रमग २ प्रपा।

—(बदल) कमिटी, स स्त्री (अ) विषय समिति (स्त्री)।

सत्र, स पु (अ) सतोष, धैर्य, निनिक्षा, सहिष्णुता।

दे—, वि (का + अ) सतोषहीन २ असहिष्णु।

बेसत्री, स स्त्री, निनिक्षाभव, असहिष्णुता २ धीरताभाव, व्याकुलता।

सभा, स स्त्री (स) समाज, गोष्ठि (स्त्री)।

—समिति परिषद्-संसद-परिषद् (स्त्री), समज्या, सदस् (न), आस्थान २ सभा, भवन-गृह आगार-मंडप निकेतन, आस्थान-नी।

—पति, स पु (स) समाध्यक्ष, ससत्पति, (सभाया) प्रधान।

—सद, स पु (स-सद) मदस्य, सम्य, सामाजिक, परिष(पर्य)दल, प(पा)रिषद, पार्षद, सम्-स्तार, प(पा)रिषय।

धर्म—, स स्त्री (स) धार्मिकपरिषद् (स्त्री)।

न्याय—, स स्त्री (स) व्यवहारमंडप।

रान—, स स्त्री (स) राजकीयपरिषद् (स्त्री)।

समागा, वि (स) सुभाष्य) सौभाग्य, नवशालिन्, महामाग, धन्य।

समाला, स पु (स) संभल) वरमल, परिगेनुभिन्नम्।

सम्य, स पु (स) समासद, दे २ सज्जन, मद्रपुरुष। वि, शिष्ट नागरिक, दक्षिण, मद्र, विनीत, सुशील, आर्यवृत्त, सत्कृत, सत्कृति (स्त्री)।

सम्यता, स स्त्री (स) शिष्टता, नागरिकता, दाक्षिण्य, सुवचना, आर्यवृत्ति (स्त्री) २ सत्त्वता।

समजस, वि (स) उचित, न्याय्य, योग्य।

सम, वि (म) समान, तुल्य, सदृश ३, मद्र, सनिभ, सविध, उपम, निभ, प्रकार, विध (समानान्ते) २ समतल, दे ३ शुभ, दे जुष्ट। म पु (स) तालमानभेद (मगीन) २ अर्धालकारभेद (सा)।

—कक्ष, वि (स) तुल्य, सदृश।

—काल, अव्य (म-ल) शुभपद (अव्य), योगपथेन, एक-सम, काल-काले)।

—कालीन, वि (म) एक-कालिक-कालीन, समकाल।

—कोण, स पु (स) नवत्यशात्मक कोण। वि, तुल्याभिमुखकोण (त्रिभुज अथवा चतुर्भुज)।

—चित्त, वि (स) सम, चेतस्-बुद्धि, धीर, ज्ञानमनस्क।

—तल, वि (स) सम, समत्प, समरेख, सपाट।

—दर्शी, वि (स) सम, दर्शन-दृष्ट-दृष्टि-बुद्धि।

—भाव, वि (स) सम, प्रकृति-गुण २ समता, तुल्यता।

—भूमि, स स्त्री (स) सम, भू (स्त्री) —स्थली।

—वयस्क, वि (स) सबयस्क, समायुक्त।

समस्त, अव्य (म-स्त) अग्रे, अग्रत, पुर, पुरन, पुरस्तात् (भव अव्य)।

समग्र, वि (स) दे 'सब' (१२)।

समज्ञ, स स्त्री (हि) समज्ञता) बुद्धि धीमति (स्त्री), प्रज्ञा २ ज्ञान, बोध, उपलब्धि (स्त्री)।

—मे आना, कि अ, अवगन्तुषु (कम) ।
—दार, वि (हि + का) धीमन्, बुद्धिमन्,
प्राण, विचक्षण ।

ममज्ञाना, कि म (म सञ्ज्ञान) चा (क
उ अ), बुध (भ्वा प मे) अवगन्,
सुदया ग्रह (क् प मे) २ वलुप (प्रे),
उद्रेण (भ्वा आ मे), तर्क (बु)
३ विचर (प्रे) ४ प्रतिक्रियन् (बु) ।
म पु, ज्ञान, दीरत, अवगमन, उपलब्धि
(स्त्री) ।

समज्ञाने योग्य, वि, डेय, अवगन्तव्य, वा प ।
समज्ञानेवाला, म पु, छात्र, बौद्ध अवगन् ।
समज्ञाना, कि प्रे (हि समज्ञाना) व 'मम
ज्ञाना (१) के प्रे रूप २ विद्वद्दीप्यटीक
-वाच्य (अ प अ), व्याचक्ष (अ आ)
३ उपलब्ध (तु प अ), शिक्ष (प्रे)
४ निभत्सु (बु आ म) ५ प्रति ह (प्रे),
अभिज्ञा (प्रे) ।

—बुझाना, कि प्रे, दे 'ममज्ञाना' ।
समज्ञा हुआ, वि, ज्ञान बुद्ध अवगन् ।
समज्ञाता, म पु (हि समज्ञाना) मधि,
म ममा, धान, कश्च विवाद, शम शानि (स्त्री),
१ समति (स्त्री), परमत्यम् ।
समज्ञाता, म स्त्री (म) तुल्यता, सादृश्य,
समानता, साम्य, समत्वम् ।
समज, वि (म) मत्त, क्षीव, उमद, मदी
रुत २ मद्राकन, मत्त (गतादि) ३ प्रमज,
प्रहृष्ट ।
समध (धि)न, म स्त्री (हि समधी) १२
पुत्र पुत्री अपत्य, अधू (स्त्री), जामातृ-स्तुषा,
-चननी ।

समधिदान, स्त्री, म ॥ (हि समधी) पुत्र-
पुत्री, अधुराण्य ।

समधी, स पु (स सबधियु) १२ पुत्र
पुत्री आपत्य, अधुर, जामातृ-स्तुषा, चननी ।

समन्वय, म पु (स) मयोग, मिलन
२ आतुरूप्य, विरोधाभाव, सवाद ३ वाय
वारणनिवाद ।

समन्वित, वि (म) मयुक्त, मिलित, मयुक्त
२ युक्त युग, मदिन २ निषाव ।

समय, म पु (मं) वेला, बाल, दिष्ट,
अनहम् २ प्रमत्त, प्रमग ३ अनु ४ अव
वाच, धृण ५ अवसर, उचितमय ।

समर, म पु (स पु न) मग्राम, युद्ध दे ।
—मूमि, म स्त्री (म) ममरागण, युद्ध-रण,
क्षेत्रम् ।

—सायी, म पु (स यिव) लम्बीरगति,
भराशायिन ।

समर्थ, वि (म) क्षम, योग्य, शक्त, सामर्थ्य
वत् = वन्ति, मवल ।

समर्थक, वि (म) समर्थनकार, महाव्यरा
रित्, उपोद्बलक, अनुमोदक ।

समर्थन, म प (म न) दृढोपमाणी,
रण, उपोद्बलन, अनुमोदनम् ।

—करना, कि म, समन् (बु), दृढी
प्रमाणीकृत, दृढयनि (ना था), उपोद्बलपति
(ना था) ।

समर्थित, वि (म) उपोद्बलित, दृढीकृत,
अनुमोदित ।

समर्पक, वि (त) समर्पयितृ, समर्पणकर,
उपहारित्, उपहारक ।

समर्पण, म पु (म) उपहरण, समर्पन
उत्सर्ग ३ दान, उत्सर्ग ।

—करना, कि म, म रू (प्रे, समर्पयति),
मादर दा, उपहृ (भ्वा प अ) ।

समर्पित, वि (म) उपहृत, मादर उत्सृज्यत ।
समवाय, स पु (स) समूह २ नित्य गुण

गुणि नातिन्यक्ति अवयवावयवि, सवध (स्याय)
समवेत, वि (म) सञ्चित, मगृहीत १ युक्त,
मिलित ३ नित्यसम्बन्धिशिष्ट ।

समष्टि, म स्त्री (म) सप्त, समुदाय, समूह ।
समस्त, वि (मं) समग्र, सपूर्ण, नि शेष,
दे 'मभ' २ ममामयुक्त ३ संक्षिप्त ।

समस्या, म स्त्री (सं.) समानार्थी, समान्य
यर्था (पचरत्नार्थै) श्रोताज्ञ २ विनष्टप्रश्न
३ कठिनावसर ।

—पूर्ति, म स्त्री (म) निर्दिष्टपचाशमाश्रित्य
वाच्यरचना ।

समौ, स पु (मं मय) बाल, वेला ।

—वैधना, सु (मगीतादिमन्तनया) स्तम्भीम् ।
समाख्या, म स्त्री (म) वक्षन् (न),
नायन् (न) ।

समागम, म पु (स) आगमन, आवान
२ सम्मिलन, मयोग ३ मैथुनम् ।

समाचार, म पु (स) वृत्त, वृत्तान, उदय,
वाता ।

—पत्र, स पु (स) वृत्तपत्रम् ।

समाज, स पु (स) सभा, दे २ मधूह, सध, दल, समुदाय ३ आर्यमहाज ।

—वाद, स पु (स) मपत्तौ राज्याधिकार इति सिद्धान्त ।

समाजी, स पु (स-विन्) सममद् २ आर्य समाज, सदस्य सभासद्, आर्यमामाजिक ३ दे 'सपरदार' ।

समाहत, वि (स) सम्मानित, पूजित, मत्कुव ।

समाधान, म पु (म न) समाधि, अन ध्यान, प्रतिष्ठान २ शका-मदिह, निवरण ३ शकानिधारकमुत्तर ४ आत्मना, ध्यान मात्वन ५ विरोधापहरण ६ निराकरण ७ अनुनयन ८ तपन (न) ९ ध्यान १० समर्थन, दृढीकरण, उपोद्बलनम् ।

—करना, कि स, समाधा (जु उ अ), शका निहृ (प्रे) ।

शका—, स पु (स न) मदिहनिवारणम् ।

समाधि, स स्त्री (स पु) अध्यान, मना धान, ब्रह्मणि स्थिति (स्त्री), योग्य चरन फल २ प्रेतावन, दण्ड-अन्धि, नान ३ निद्रा ४ चित्तैकाग्र्य, अनन्यमनस्कता ५ योग ६ मौन ७ प्रतिशोध ८ अयान्कारभेद (सा) ।

—रहाना, कि अ, ब्रह्मणि मनो निविश (प्रे)

—ममथा (जु उ अ), अत ध्या (स्वा प अ), समाहित समचित्थ (वि) भू ।

समान, वि (म) तुल्य, समक शब्द, मम, सखिभ, सविध, सर्वा, उपम, विध, रूप, प्रकार ।

समानता, स स्त्री (स) समता, मान्य, समुदय, औपम्य, सरूप्य, सावर्ग्यम् ।

समाना, कि अ (स सकादेशनम्) प्रविश (तु प अ), अत या (अ प अ), कि स, प्रविश (प्रे), अन्त स्था (प्रे), धाम्भ मृ (कर्म) ।

समाप्त, वि (स) अवसित, अत, गण इत, संपूरित, संपूर्ण, नि-रोधीभूत ।

—करना, कि स, समाप्त (स्वा प, अ, प्रे), निहृ (प्रे), सष्ट (प्रे) पूर (तु), पार अन गम् (प्रे), निशिष्ट (प्रे), सपद (प्रे) ।

—होना, कि अ, समाप्-अवसो (कर्म), नि-रोधीभू, समाप्ति-अन गम् ।

समाप्ति, म स्त्री (स) अत, परि, अवसान, निवृत्ति सिद्धि (स्त्री), नि-रोधना २ प्राप्ति (स्त्री) ।

समारोह, म पु (स) आडवर, विभव, दे 'वृन्धान' २ आडवरमय उत्तव ।

—से, कि वि माडवर मागेरम् ।

समार्थक, वि (स्) सन्नायक, पर्याप्तवचिन्, तुल्यादय (शब्द) ।

समालोचक म पु (म) गुाशेष-निरूपक विवेचन अलोचन ।

समालोचना, म स्त्री (म) स, अलो चन-ना, गुादाव निरूपण-विवेचन-दर्शन परोक्षम् ।

—करना, कि म, गुाशेषान् निरूप (तु) विविच (क उ अ) विवर (प्रे), समालोच (प्रे) २ सिद्धि अन्विष्ट (दि प से) ।

समावर्तन, म पु (स न) (गुरुद्वारा) प्रद-मन, प्रत्यवृत्ति (स्त्री) २ अर्थात् सत्कारभेद, मन-वर्त-वृत्ति (स्त्री) (धर्म) ।

समाविष्ट, वि (म) अन्त, गत-भूत-गति २ एकाग्रचित्त ।

समावेश, म पु (म) अनर्भाव, अन्तर्गत ।

—करना, कि स, अनर्भ (प्रे), अन्ता (तु) ।

समाप्त, म पु (स) पदमयोग (व्या) २ मध्ये ३ समिश्रण ४ समष्ट ।

—करना, कि म, मनम् (दि प मे), एकीकृत, समिश्र (तु) ।

समासोक्ति, स स्त्री (स) अयान्कारभेद (सा) ।

समाहार, म पु (स) मचयन, समष्टा २ चय, राशि ३ मधेय ।

—द्वद्, स पु (म) द्वदसममभेद (व्या) ।

समिति, स स्त्री (म) परिपद (स्त्री) समा, दे ।

समिधा, म स्त्री [स मधि (स्त्री)] यद्विद् होनीय, श्वन-दध २ एध, श्वन दे ।

समीकरण, म पु (स न) मनालीकरण, समीक्रिया २ क्रियाभेद ।

समीक्षा, म स्त्री (म) मनालीचना, दे ।

समीचीन, वि (म) सत्य, दधार्थ, अविनाश २ उचित, उपपन्न, योग्य, ३ न्यय्य, धर्म्य ।

समीप, किं वि (स समीपये) अधिक-के वाट, आराख निरुषा, निरुट्टये, उपकठ ठे, समया, मविधे, सकांशे शाव, सनिधौ, उप- ।

—धर्ती, वि (॥ तिन्) समीप, निकट, सनिहित, अतिरु, अभ्याश, आमत्र, उपकठ, उपात, अभ्यय, अभ्यय सविध, समीप निवटस्थ बातन् ।

समीपता, स स्त्री (स) समीप्य, नैरुट्टय, मनिधि (पु), आसन्नता, सनिकर्ष ।

समीर, म पु (म) समीर, समीरण, पवन, वायु दे ।

समीहा, स स्त्री (स) उद्योग, प्रयत्न २ इच्छा १ अनुसन्धानम् ।

समुद्र, सं पु (स समुद्र) सागर ।

—साग, म पु, दे 'समुद्रपेन' ।

—सोख, म पु (स समुद्रसोप) क्षुपभेद ।

समुचित, वि (म) यथेष्ट, उचित दे ।

समुच्चय, स पु (म समाहार) समिलन १ राशि, समूह २ अर्थलकार भेद (सा) ।

समुद, वि (म) सहर्ष, सामोद, सानन्द । अ, सहर्ष, सानन्दम् ।

समुदाय, म पु (स) नि-स, चय, निरु, राशि १ गण, सय, इद, समूह ।

समुद्र, म पु (म) सागर, अधि, वारि अभी-उद रलनार अशुपाधौ, र्ध, पारावार, सरित्पति मिदु, अर्णव, रलनार, नीर-वारि जल, निधि मकरान्य, कर्मिमास्तिन् ।

—सट, स पु (स पु न) सागर, नीर-कूल, रोषस (न) वेला ।

—पनी, म स्त्री (म) समुद्र, नाना-गा, नदी ।

—पेन, स पु (म) समुद्रवर्ष, जलहाम, समुद्रम् ।

—यान, स पु (म न) पति ।

—लयण, स पु (स न) अग्नि(क्षी)व, वशि(मि)र समुद्रक, रवणा-वजम् ।

—वह्नि, म ॥ (सं) वटवानल, वाटव ।

समुद्रगुप्त, सं पु (सं) गुप्तवशीय सप्राद्वि उप

समुद्रीय, वि (मं) समुद्रिय, समुद्रय ।

समुल्लास, सं पु (सं) परिच्छेद, अध्याय २ आनन्द, हर्ष ।

समूचा, वि (म समुच्चय >) समस्त, समग्र, सपूर्ण ।

समूल, वि (स) सकारण, सहेतुक २ मूल, वन-अन्वित । किं वि (स न) मूलत, सम्पूर्णतया, अदोषेण, सावत्येन ।

समूलोन्मूलन, स पु (स न) (मूलत) उत्पादन-उच्छेदन व्यपरोपणम् ।

—करना, किं म, उत्पद् (चु) बिध्वस् उन्मूल (प्रे), आमूल उत्पन्न (भ्वा प से)-व्यपहृ (प्रे, व्यपरोपवति) ।

समूह, स पु (स) निवह, ब्यूह, सदोह, विमर, मज, स्तोम, औष, निरर, प्राण, कार, सधान, निप्रस, चय, समुद्र(दा)य, समवाय, गण, सरति (स्त्री), इद, निकुरव, कदवक, ममाहार, समुच्चय, —मटल, —जाल, पूग, ग्राम (समासात मे) । (सट्टस पदाभौ का) बर्ग । (जतुभौ का) सय, साथ । (सजातीय जतुभौ का) कुलम् (टेडे जतुभौ का) व्य-य । (पशुभौ का) समज । (औरीं वा भुट) समाज । (एक धर्मवालों का) निकाय । (अत्रादि का डेर) पुन, पिन, पुनि (स्त्री), राशि, उत्तर, कूट २ जन्ता, जनमेलक, जन-होर, सय समुदाय समर्प मकुल २ बहुवच, बाहुल्य, बहु वृहत्, सरया ।

समूहनी, स स्त्री (स) समार्जनी, 'दे झाट' ।

समुद्दि, वि (स) अतिशय, धनाद्य-धनिव-सपव ।

समुद्दि, सं स्त्री (सं) पथा, अतिशय प्रचुर, सपद-सपति (दोनों स्त्री)-विच विभव-वैभवम् ।

समेटना, किं स (हि सिमटना) एष्व क, समद् (क् प से), सति (स्वा उ अ), सनी-समाह (भ्वा प अ) २ अकुच् (मे), सकुच् (तु प से), सट्ट (भ्वा प अ) । सं पु तथा भव, चक्रवर्ण समहण, सच यन, सनयन, ममाहरण, आकुधन, सरोवनम् ।

समेत, किं वि (सं न) सद, सार, सार्प, सहित, सम (सब दुनीया के साथ) । वि (स) सयुक ।

समीमा, स पु (का) • समीप, निराग्य कार पक्वभेद ।

सम्बन्ध, किं वि (स) सर्वथा, सप्रकारेण
२ संप्रदाया, मामस्त्येन, मायत, सपूर्ण
३ सङ्गुगातु ।

सम्राज्ञी, म स्त्री (स) सम्राट्पत्नी २ रान
रानेश्वरी, अत्र महा-राजाभि-रात्री ।

सम्राट्, म पु (म सम्राज) मह, राजाभि
रान, मार्गमौम, चक्रवातन, मण्डलेश्वर,
एक अधिपति-रान, अत्र इश्वर-रान ।

सयाना, वि, दे 'स्वाना' ।

सयूप्य, वि (स) एव-समान-अभिन्न, वर्ण
गण-संघ ।

सद्योनि, वि (स) मोदर, मद्योदर, सगभ,
सोदर्य २ निकट समीप-सम्बन्धिन् । म पु
(म) मद्योदर, मोदर, सोदर्य २ इन्द्र,
शचीपति ।

सर, म पु [म मरम् (न)] मरमी,
कामर, हृद, मगोवर, पद्मावर, तटारु-क,
तडाग-य, जलाशय ।

सर, स पु (का) शिरम् (न), दे 'मिर'
२ शिखर, शिरा, अग्रम् । वि, परानित,
अभिभूत ।

—अंशाम, म पु (का) सामग्री, मभार
२ मित्रि, समाप्ति (स्त्री) ।

—कश, वि, (का) उद्गत, उद्द २ अवश्य
३ कुटुम्ब, वैष्टक ।

—कशी, म स्त्री (का) औदत्य, उद्घण्टता
२ कुचेष्टा, चापत्यम् ।

—गना, —गरीह, म पु (का) अग्रणी,
नायक ।

—गर्भ, वि (का) उत्साहिन, उत्साहवर ।

—गर्मी, स स्त्री, उत्साह, व्यग्रता ।

—गोर, वि (का) बलवत् २ उद्घण्ट ।

—गोरी, म स्त्री, बलवत् २ उद्घण्टता ।

—ताज्ञ, स पु (का) पुरोग, नायक,
शिरोचूटा-मुकुट, मणि ।

—पच, म पु (का + हि) समा, पति-
अध्यय, *पत्रप्रधान ।

—परस्त, म पु (का) जानू, रक्षक
२ मरक्ष, आश्रय ।

—परस्ती, म स्त्री, एण, प्राण २ संरक्षण,
आश्रय ।

—पेच, म पु (का) उष्णीषभूषणभेद ।

—वराह, स पु (का) कायान्यक्ष, अधि
ष्टान्, *प्रबन्धक ।

—वराही, स स्त्री, अधिष्ठान, *प्रबन्ध,
अवेष्टा २ अधिष्टानृत्वम् ।

—हृद्, म स्त्री (का + अ) सीमन् (स्त्री),
मीमा, दे २ मीमान पर्यंत, प्रात ।

—हृदी सूवा, म पु (का) (पश्चिमोत्तर)
मीमाप्रात ।

—करना, मु, विनि (भ्वा आ अ), अभिभू,
वशीकृ ।

सर, म पु (अ) आगन्तीयानामुपाधिभेद,
*शिरोमणि २ भद्र, आर्य ।

सरकडा, स पु (म शरकाड) बाड, तेनन,
गुदक, छुरिगापन, उत्कट ।

सरकना, कि अ (स मरण) शनै-मृदु चल
(भ्वा प से)-मुण्स् (दोनो भ्वा प अ)
२ सत्वर सु ३ अलक्षित अती (अ प अ)
४ उरसा गम्बल । म पु तथा भाव, मृदु
सरण सपण चलन, ३ ।

सरकाना, कि स, व 'मरकना' के द्वे रूप ।

सरकार, स स्त्री (का) राज्य-सन्धानत्र
शामक-अधिकारि-वर्ग, राजमणि (बहु)
२ प्रभु, स्वामिन् ३ राज्य, राष्ट्रम् ।

सरकारी, वि (का) आधिकारिक, रान्तीय,
राज्यमन्त्रिन् ।

—नीकर, स पु (का) राज्य, मृत्यु-मेव
परिचारक ।

—नीकरी, म स्त्री (का) राज्य-सेवा-
परिचर्या ।

सरगम, स पु (हि मा + रे + गा + मा)
स्वर, ग्राम (मगीत) ।

सरधा, म स्त्री (स) मधुमक्षिका, दे ।

सरजा, म पु (का सरजाह = उच्चपदाधिकारी,
अ शरजह = शेर) नायक, अग्रणी, नर
शार्दूल २ सिंह ।

सरणी, म स्त्री (म) मरणि (स्त्री), पविन्,
मार्ग २ पक्ति (स्त्री), रेखा ३ पथा,
पञ्जि (स्त्री) ४ शैली, प्रकार ।

सरद, वि, दे 'सर्द' ।

सरदई, वि (का सरदई) हरित्पीन ।

सरदल, स पु (देश) द्वारोर्ध्व-शृङ्गा ।

सरदा, स पु (का सरदई) *शीतसर्पजम् ।

(स्त्री) ३ ममार, जगत् (न) ४ स्वभाव, प्रकृति (स्त्री) ५ संनति (स्त्री) मनान ६ उद्गम, मूल ७ प्रवाह, साव ८ क्षेपण, प्रासन ९ प्राणिन् १० प्रवृत्ति (स्त्री) ।

सर्जन^१, स पु (स न) सृष्टि-जगदुत्पत्ति (स्त्री) २ विमनन दे ।

सर्जन^२, स पु (अ) शम्बदेव शस्य विवि स्मरु ।

सर्जरी, स स्त्री (अ) शस्य, चिह्नित्वा शास्त्र, शस्त्रवेधन २ शब्दक्रिया ।

सर्जि, स स्त्री (ङ) सर्जी सर्जिका सर्जि नाभिना-क्षार, क्षार, बापोन, सौवचल रुचक, दे 'मर्जी' ।

सर्ज, स स्त्री दे 'मरयू' ।

सर्जिकेद, स पु (अ) प्रमाणपत्र दे ।

सर्ज, वि (का भि स शरद >) शीत, शीतल दे १ अलस मद्र ३ नपमन, निर्वाण ४ शिखरद, नीरस ।

—सर्ज, स का (का + म) शरद (स्त्री) दे ।

—सर्जाना, स पु, हिमगृहम् ।

—सर्जाना, वि (का + अ) निरसाह २ रुक्ष ।

—सर्जना, सु, शृ (तु आ अ) २ शीतली मदी भू ।

सर्दी, स स्त्री (का) शीत, शैत्य, हिम २ प्रतिश्याय ।

—सर्दी, स पु (स) शीतान्वर ।

—सर्जाना, सु, शीतपीडित (वि) भू ।

सर्प, स पु (स) अहि भुजग, दे सर्प ।

—सर्पक, स पु (स) मयूर ।

—सर्पि, स पु (स) भुजगकण्ठ ।

—सर्पा, स पु (म) पतन्निवृत्तगो नाम यष्ट ।

—सर्प, स पु (म) शेषनाथ २ वासुकि वेष ।

—सर्पा, स स्त्री (म) नागवस्त्री, दे 'पान' ।

सर्पिणी, स स्त्री (म) भुजगी, दे 'सर्पित' ।

सर्प, वि (अ) स्थित, विनियोजित, दे 'सर्प' ।

सर्प, स पु (अ सर्पद) स्थित, विनियोग २ मितव्यय ।

सर्पा, स स्त्री (अ) दे 'मर्पा' ।

सर्व, सव (सं) सारल, समस्त ।

—सर्व, वि (स) सव, प्रिय इष्ट ।

—सर्व, अ० (म) सर्वदा, नित्यम् ।

—सर्वी, वि (स) सार्वकालिक, सदातन ।

—सर्वी, वि (म) सार्वजनिक, विश्वजनीन ।

—सर्व, वि (स) विश्व, नित्य विजेतु २ उत्तम श्रेष्ठ । (स पु) यक्षभेद २ शृत्यु ।

—सर्व, वि (म) सर्व विश्ववेत्तु विद् । (स पु) परमेश्वर ।

—सर्व, स स्त्री (स) विश्ववेत्तव्यम् ।

—सर्व, वि (स) सर्वशास्त्रसमस्त । (स न) सर्वशास्त्रम् ।

—सर्वस्वन, वि (स) सर्वशास्त्रादयः ।

—सर्व, स पु (स) भरतराज, दुष्यत पुत्र । वि (स) सभाभिभावक ।

—सर्वी, वि (स क्षिप्) विश्वद्रष्टु ।

—सर्व, स पु (स मन् (न) शब्दभेद (न्या) ।

—सर्व, स पु (स) विश्वम, विनाश, समूलोच्छेद ।

—सर्व, स पु (म नृ) विश्वनियामक, परमेश्वर ।

—सर्व, वि (स) विश्व प्रिय इष्ट-वस्तु ।

—सर्वी, स पु (स क्षिप्) सर्वमक्षय २ अग्नि ।

—सर्व, स पु (सं न) चराचर, सर्वसृष्टि (स्त्री) ।

—सर्व, स पु (स) सीमवागभेद २ मार्ग अनिक्मन्त्रम् ।

—सर्व, स स्त्री (सं) वृक्षा, पुक्षणी ।

—सर्व, वि (स) विश्वव्यापित्, विश्व सर्व, गगन ।

—सर्व, वि (स) सर्वमार्गव्युत्त । (स पु) परमेश्वर ।

—सर्व, वि (स) सर्व, उत्तम, प्रशस्ततम ।

—सर्वी, स पु (म क्षिप्) परमेश्वर २ अग्नि ३ वायु ।

—सर्व, स पु, जना, लोका, जनता, पृथग्प्राकृत-जना । वि (सं) साधारण, सामान्य ।

—सर्व, वि (म) साधारण, प्राकृत, प्राथिव ।

सर्वत्र, अव्य (सं) सर्वदिग्देवकाल ।
 —ग, वि (म) सर्वव्यापक ।
 सर्वथा, अव्य (सं) सर्वप्रकारेण २ साम
 स्येन ३ निनात, अत्यन्तम् ।
 सर्वदा, अव्य (सं) सदा, दे ।
 सर्वस्व, स पु (म न) समस्तसपद (स्त्री),
 समग्रद्रव्य, निरिच्छधनम् ।
 सर्वांग, म पु (म न) समस्तशरीर २ सब
 वेदांगानि (न बहु) ३ समग्रावयवा
 (पु बहु) ।
 सर्वांगीण, वि (सं) सार्वदेहिक-सर्वांगिक
 (—की स्त्री) ।
 सर्वात्मा, स पु (सं-मन्) परमात्मन्,
 ब्रह्मन् (न) ।
 सर्वाधिकार, म पु (सं) पूर्णप्रभुत्व, पेशाधि
 पत्यम् ।
 सर्वे, स पु (अ) सर्वेक्षणम्, भूमापनम् ।
 सर्वेयं, म प (अ) सर्वेक्षक, भूमापक ।
 सर्वेश्वर, म पु (म) सर्वेश, परमेश-व्य
 २ चक्रवर्तिन्, सर्वभौम ।
 सर्पप, स पु (सं) दे 'सरसों' ।
 सलगम, म पु, दे 'शलगम' ।
 सलग, वि (सं) हीमच, लज्जाशील दे ।
 सलतनत, म स्त्री (अ) राज्य २ साम्राज्य
 ३ शासनम् ।
 सलना, क्रि अ (सं शस्त्र) व 'सालना'
 के कर्म के रूप ।
 सलफ, वि (अ) प्राचीन, पुरातन, पुराण ।
 सं पु, पूर्वजा, पूर्वपुरुषा, पितर (सभी
 बहु) ।
 सलब, वि (अ मत्व) नष्ट, उच्छिद्य ।
 सलवाई, स स्त्री (हि सलवाना) वेषन,
 शुष्कभृति (स्त्री) ।
 सलवाना, क्रि प्रे, व 'मालना' के प्रे रूप ।
 सलहज, म स्त्री, दे 'मरहज' ।
 सलाई, म स्त्री (म शलाका) घत्वादि
 निमिना तनुयाति (स्त्री) २ दीपशालाका ।
 सलाई, स स्त्री (हि सालना) वेष धन
 २ दे 'सलवाई' ।
 सलाख, म स्त्री (का मि स शलाका) दे
 'सलार' २ धातु-दृष्ट याति (स्त्री) ३ रेखा ।

सलाजीव, स स्त्री, दे 'शिलाजीव' ।
 सलाद, म पु (अ सेजड) शिष्टुमापनम् ।
 सलाम, स पु (अ) प्रणाम, दे ।
 —अलंक या अलंकम, प्रणाम, नमस्ते, नम
 स्कार ।
 दूर से—करना, मु (अनिष्ट दुर्जन वा दूरत)
 परिहृ (भ्वा प अ)-हा (जु प अ) ।
 सलामत, वि (अ) सुरक्षित, अशुभ, सस्त्र
 मुक्त २ जीवत सजीव ३ स्वस्थ, नीरोग
 ४ विद्यमान, बतमान । क्रि वि, सकुशल,
 क्षेमेण ।
 —रहना, क्रि अ, स्वस्थ (वि) जीव (भ्वा
 प से) कुशलं वृत्त (भ्वा आ से) ।
 सलामती, स स्त्री (अ सलामत) त्वास्थ्य
 २ कुशल, क्षेम ।
 —से, मु, ईश्वरकृपया ।
 सलामी, म स्त्री (अ सलाम) नमस्त्रिया,
 अभिवादन, २ मैत्रिक, प्रणाम प्रणति (स्त्री)-
 नमस्कार ३ अग्न्यस्त्रे समानना सभाषना
 ४ प्रवण, निम्न-अवसर्पि, भूमि (स्त्री) ।
 —उतारना, मु, अग्न्यस्त्रे सभू समन् (प्रे) ।
 सलाह, म स्त्री (अ) अभिप्राय, तर्क,
 मन नि (स्त्री) २ परामर्श, मन्त्रणा
 ३ उपदेश, मन्त्र ।
 —करना, क्रि अ विचर (प्रे), समन् (चु
 आ से), परामृष्ट (तु प अ, एनीमा के
 साथ) उपदेशार्थ प्रच्छ (तु प अ) ।
 —कार, म पु (अ + क्रा) उपदेश, मन्त्रद,
 परामर्शप्रद, बुद्धिमहाय ।
 —देना, क्रि सं, उपदिष्ट (तु प अ), अनु
 शास् (अ प से), मन्त्र (चु उ से) ।
 —ठहरना, मु, सर्वे निधिनिर्णी (कर्म),
 माभत्य ग्न् (दि आ से) ।
 सलिल, म पु (म न) अनु, वारि, जल दे ।
 —निधि, म पु (सं) सागर, समुद्र दे ।
 सलिलाहार, वि (म) सलिल-जल-नीर,
 अशन भोजन । स पु (सं) जल-नीर,
 अशनम्-आहार ।
 सलीका, म पु (अ) कौशल, दास्य, वेद
 ग्ध्य, चातुर्य २ ममय शिष्ट, आचार, शिष्टता
 ३ आचार, चरित्र, व्यवहार ४ सम्यता ।

—मद, वि (अ + फा) दम्, कुशल, विदग्ध, चतुर २ शिष्ट, शिष्टाचारिन् २ मध्य ।

सलीस, वि (अ) सुगम, सुनोष २ दे 'मुहावरेदार' ।

सलूक, म पु (अ) व्यवहार, वृत्ति (स्त्री), वर्तन २ स्नेह, सद्भाव ३ उपकार ।

सलूना, वि (स सलवण) ल(ल)वण, लाव गिरा । सं पु, व्यजन, दे 'भाजी' ।

सलोतर, स पु (स सल्लिहोत्र >) २२, पशु-अश्व-चिरित्सा ।

सलोतरी, स पु (हिं सलोतर) १२ वशु अश्व, चिकित्सक-शेष ।

सलोना, वि (स सलवण) दे 'मलूना' वि २ सुतर, लावण्यमय, छविमय ३ स्वादु सरस ।

मसोनो, स स्त्री (स श्रावणी) अक्षितपणी रक्षावधनं दे ।

सवन, सं पु (स न) यशस्वान्न २ सौम पान ३ यज्ञ ४ प्रसव ।

सवर्ण, वि (सं) सुख-समान-सम्पन्न-जानि जातीय-वर्ण २ सहस्र ममान सुख्य ।

सवा, वि (स सपाद) पादाधिक, पादोर्ध्व ।

सवाय म पु (अ) पुण्यं सुकृतफल २ द्विग उपकार ।

सवाया, वि, दे 'सवा' ।

सवार, स पु (फा) मादिन्, सुरगिन् अश्व-आरोह-आरोहिन् । वि, आरूढ अधि रूढ, उपर्यामीन ।

—होना, क्रि स (अधादिक) अधि-अध्या आनमाराह (भ्वा प अ), अविरथा (भ्वा प अ) अध्यात्म (अ आ से) ।

सवारी, सं स्त्री (फा) अधि-अध्या-आ रोहण, आ-रोह रूढ, (रथादिभि) सचरण विहरण २ यान, वाहन ३ आरोहक, आरो हिन्, यात्रिन्, यात्रिव ४ यात्रा, दे 'मलूम' ।

—करना, क्रि अ, अध्याभिभि गम् या (अ प अ) ।

सवाल, सं पु (अ) अनुयोग, प्रश्न दे । २ निवेदन, प्रार्थना ३ मिश्रायाचना ४ गतिन प्रश्न ५ प्राधान्यविषय ।

—जवाब, सं पु (अ) प्रश्नात्तर २ वाद प्रतिवाद ३ बन्ध, ।

—जवाब करना, सु, विवर (भ्वा अ से), विचर् (प्रे), तर्क (चु) अहापोद कृ ।

सवालिया, वि (अ सवाल >) प्रश्नात्मक, वृत्तापर ।

सवाली, वि (अ सवाल >) दाचक मिश्रक, अधिन् ।

सविकल्प, वि (न) सशय-मदैह विरग्य, युक्त, सदिग्ध २ सार्ध, मशयान, सदिहान ।

स पु (स) समाधिभेद ।

सविता, स पु (स वृ) सप्त, भानु ।

सवित्री, स स्त्री (स) साविका, दे 'दाश' २ 'वदनी' ३ गी (स्त्री) ।

सवेरा, स पु [स सुवेला > (स्त्री)] अहो गी दय, अहमुत्त, प्रातःकाल, दे विश्व चिरत्स, अभाव ।

सर्वया, सं पु (हिं सवा) मार्जनी, उद्बोधेद २ मपादसेरात्मक भारमान ३ सपादगुणन सूची ।

सव्य, वि (सं) वाम, दे 'बायो' २ दक्षिण (कभी ही) ३ विरुद्ध, प्रतिकूल ।

—साची, म पु (स चित्) अर्जुन ।

सदाक, वि (म) दोलायमान, मशायक, सशयान २ मीन, उद्दिग्ध, प्रल ३ भीम, भयकर ।

ससुर, स पु (न शशुर) पतिविह २ जाया जनन ३ (माली) दुष्ट, शठ, लल ।

ससुराल, स स्त्री (स शशुरालय) १२ पति परनी, पितृगृह, शशुरगृहम् ।

ससुरी, सं स्त्री (हिं ससुर) शशू (स्त्री), दे 'साम' २ दुष्टा, पापा ।

सस्ता, वि (सं स्तव्य >) अप, अर्ध-मूल्य, सुस्तत्रेय २ मुलम ३ सामान्य, साधारण, अवर ।

—होना, क्रि अ, अन्यमूल्य सुस्तत्रेय (वि) भू मस्ते छटना, सु, स्तोमार् मुच् (कर्म) ।

सस्य, सं पु (सं न) शस्य, धान्य, भीय, मीहि, स्तव्यरि २ वृक्षादीनां फलम् ।

मह, अव्य (मं) साक, सार्ध, सम, सहिन (सव वृत्तिया के साथ) दे 'माथ' ।

—कार, म पु (सं) आप, आप २ सहा यक ३ सहयोग ।

—कारिना, सं, स्त्री (मं) मदयोगिता २ सहायता ।

—काशी, स पु (स रिन्) मह, कृत् कृत्वन् योगिन्, सव्यवसायिन् २ सहायक ।

—गमन, म पु (स न) सह, चरणवधेन २ पतिरावेन सह ज्वलन्, सह, मरण अनु गमनम् ।

—गामिनी, स स्त्री (म्) महशृणा पत्या सह ज्वलिता नारी २ पत्नी ३ सहचरी ।

—गामी, म पु (स मिन्) सगिन् मह चर चरिन्-यायिन् वतिन् २ अनुयायिन् ।

—चर, स पु (म) दे 'सहामी' (१) । २ सेवक ३ सति मिश्रन् ।

—चरी, म स्त्री (स) पत्नी, भार्या २ सखी, वयत्या ३ महगामिनी सगिनी ।

—चार, म पु (स) दे 'सहगामिन्' (१) । २ सग, सगनि (स्त्री) ।

—चारिणी, स स्त्री (म) दे सहचरी' (१३) ।

—चारी, स पु (स रिन्) दे 'सहगामिन्' (१) । २ सेवक, अनुचर ।

—जात, वि (म) सहजन्मन, यमन २ सोदर, सहोदर ।

—जीवी, वि (म विन्) समकालीन २ सह वासिन् ।

—धर्मिणी, स स्त्री (स) सहधर्म, चरी-चारिणी, धर्मपत्नी ।

—पाठी, स पु (स ठिन्) सह, अध्यायिन्-पाठक ।

—भोज, स पु (स) सधि (स्त्री) सह भक्षण, समभ्र ।

—भोजी, स पु (स जिन्) सहभक्षक ।

—मत, वि (स) एक, मत चित्त, सवादिन्, सप्रतिपक्ष ।

—योग, स पु (स) सह, कार-कारिता-योगिता २ मगति (स्त्री) ३ सहायता ।

—योगी, म पु (स गिन्) दे 'सहकारी' (१२) ३ समवयस्क ४ समकालीन ।

—वाद, म पु (स) वादप्रतिवाद, हेतु, वात् ।

—वास, स पु (स) सहवासनि (स्त्री) २ सग ३ मैथुनम् ।

—वासी, स पु (स-सिन्) सहवासकृत् २ दे 'महगामी' ।

सहज, वि (म) सुगम, सरल, सुकर २ सह जान, दे ३ स्वाभाविक, प्राकृतिक ४ साधा रण । कि वि, मौन्येण, सुखम् ।

—पथ, म पु (म सह+पथिन्) महन पथनामा वैष्णवमप्रदायविशेष ।

—मित्र, म पु (म न) स्वाभाविकसुहृद् २ भागिनेय ३ भ्रातृवसेय ४ पैतृवसेय ।

—शत्रु, म पु (स) स्वाभाविकशत्रु, सह जाति २ पित्र्यपुत्र ३ वैमात्रेयभ्रातृ ।

सहनन्, म पु दे 'सहिन' ।

सहनिया, म पु (म सहन्) महन मतानुयायिन् ।

सहदेव, म पु (म) पादुरात्प पञ्चमपुत्र ।

सहन, म पु (म न) सहिष्णुता, मर्ष, मर्षण २ क्षमा, निनिष्ठा, क्षान्ति (स्त्री) ।

—करना, कि अ दे, 'महना' ।

—शील, वि (म) सहिष्णु निनिष्ठ २ क्षमिन्, क्षमिन्, महन ।

—शीलता, म स्त्री (मं) दे 'सहन' (१२) ।

सहन, म पु (अ) आन, प्रागण, अपिर, चत्वरन् ।

सहना, कि अ (म सहन्) क्षन् मह (आ आ से), तिन् (मञ्जन्त, निश्चिते), मृष (दि प मे, चु) । स पु तथा भाव, सहन, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा, मर्षण, क्षान्ति (स्त्री), निनिष्ठा ।

महनीय, वि (सं) मर्षणीय, सह्य, सोढव्य, क्षमार्ह, क्षम्य ।

सहने वाला, स पु, सोद्, क्षुद्, सह ।

महम, स पु (फा) भय, घाम २ मकोच, दे 'लिहात्' ।

सहमना, कि अ (फा मदम) दे 'हरना' ।

सहर, स स्त्री (अ) उषा, प्रभानम् ।

सहारा, स पु (अ) मरु, मरु-स्थल भूमि (स्त्री) २ वन, निविडकाननम् ।

सहरी, स स्त्री (स शरी) मीनभेद ।

महल, वि (अ) मरल, सुगम, सुकर, सुमाध्य ।

सहला(रा)ना, कि स (हि-सहर = धीरे अथवा अनु०) मृद (क प मे), घृष (आ प से) । म पु अगमन, सवाहनम् ।

सहसा, अभ्य (म) अकस्मात्, एकपदे, अवाट-टे, अवाकित, अतिनि (सद अभ्य) ।

महत्त, वि (स न) दशशततन्त्रम् । म पु, दशशतसख्या २ तद्बोधकावाश्च (१०००) ।

—कर, स पु (स) सहस्र, करिण रदिम, सूर्य ।

—दल, स पु (स न) सहस्रपत्र कमलम् ।

—नयन, स पु (स) सहस्र, न्येनन नेत्र दृष्ट ।

—नाम, स पु [स-मन् (न)] सहस्र नामयुत देवस्तोत्रम् ।

—बाहु, सं पु (स) शिव, २ कातधीर्बो ज्जुन, नृपविशेष ३ बन्निपत्य ज्येष्ठमुन ।

सहस्राक्ष, स पु (सं) सूर्य ।

सहस्राक्ष, स पु (स) रश्मि २ बिष्णु ।

सहाय्य, सं पु (स महाय) महायक दे ।

सहाय्यायी, स पु (म यिन्) दे 'सहपाठी' ।

सहानुभूति, स स्त्री (स) समवेदन ना, समदुःख(सि)ता २ समदुःखसमुपना ।

—करना या दिखाना, कि अ, महादुःखी प्रकटयति (ना था), प्रकाश (प्रे) ।

सहाय, स पु (स) सहाय, दे २ सहायता, दे ३ आश्रय ।

सहायक, वि (सं) सहाय, उप-कृत्यारिण कारक, साहाय्यद अभिसर, अनु, नर प्लव २ उप-, (उ उपमर्श) ।

सहायता, सं स्त्री (सं) साहाय्य, उप-कार कृणुति (स्त्री) २ अनुग्रह ।

—करना, कि म, साहाय्य कृ, महायन भू, उपकृ (वष्टी के नाथ), अनुग्रह (क प से) ।

सहारा, कि ■ (वि सहारा) दे 'सहना' २ धृ (धु), भू (जु उ अ) ३ उत्तम-उपस्कम्भ (क प से) । सं पु, दे 'महना' म पु २ धारण, उत्तममन, उपस्कम्भ ।

सहारा, स पु (स सहाय) दे सहायता (१) २ आश्रय अवलम्ब, अवलम्ब ३ विश्राम, प्रत्यय, विश्रम ।

—देना, कि म, साहाय्य कृ उपकृ २ उत्तम उपस्कम्भ (क प से) ३ शरण आश्रय दा, उप (स्वा प से) ४ सहाय्य (प्रे) ।

—हदना, मु, आश्रय अन्विष्ट (दि प से) ।

सहिजन, सं पु (म शीमावन) तीक्ष्णपथ, मु, तीक्ष्ण, शरिरजन ।

सहित, वि (म) समेत, युक्त, भग्न, अन्विष्ट, द 'साय' तथा 'मह' । वि वि, मार्क, मार्थ, मर्म, मद ।

सहिष्णु, वि (स) सहनशील, दे ।

सहिष्णुता, सं स्त्री (स) सहनशीलता, दे ।

सही, वि (फा सहीह) सत्य, यथार्थ २ प्रामाणिक ३ शुद्ध, निर्दोष ।

सहीफा, स पु (अ) ग्रन्थ, पुस्तकम् २ धर्म, ग्रन्थ पुस्तकम् ३ पत्रम् ४ प्रवृत्ति ।

—सलामत, वि (हि+अ) स्वस्थ, नीरोग २ सपूर्ण, निर्दोष, सुदिरहित ।

सहूलियत, म स्त्री (फा) सुजरता, सुगमता २ शिष्टाचार ।

सहृदय, वि (स) समवेदना महादुःखी, युक्त २ दयालु ३ रमिक ४ भद्र, महाशय ५ मद-माधु, स्वभाव ६ प्रसन्नमनस्क, आनन्दिन् ।

सहृदयता, स स्त्री (स) समवेदना, सहानुभूति (स्त्री) २ मजनता, सौम्य ३ रमितास्व ४ अनुकूल, दयालुता ।

सहेजना, कि स (अ सही+हि पाचना) सम्यक् परीक्ष निरीक्ष (स्वा आ से) सुष्ठु बोधयित्वा प्रतिपद (प्रे) दा ।

सहेली, सं स्त्री (स सह+हैलन) सखी, आत्मीय (स्त्री), सगिनी २ परिचारिका, अनुचरी ।

सहोक्ति, स स्त्री (स) अर्थलकारभेद (सा) ।

सहोदर, म पु (मं) मोदर, सोदर्य, सहज, सगर्भ, समानोदर्य, भ्रातृ ।

सह्य, वि (स) सहनीय, दे । स पु (स) सुखादि ।

साँह, सं पु (स स्वामिन्) प्रभु, राज, अधिकारिन् २ परमात्मन्, परमेश्वर ३ पति, भर्तृ ४ यवनभिष्ट ।

साकड, साकल, म स्त्री (मं शुद्धता, दे) ।

साकेतिक, वि (स) संज्ञेतात्मन्, साधुगिक, सकेत, सम्बन्धिन् विषयक ।

साख्य, म पु (स पु न) सहचरविन् प्रगीतो दर्शनग्रन्थविशेष ।

सागी, स पु, दे 'साग' ।

सागरे, सं स्त्री (स शक्ति) वाद्य-य (दोनों स्त्री), अस्वभेद ।

साग, वि (मं) सपूर्ण, सर्वोपयुक्त ।

सागी, सं स्त्री (हि साग) दे 'सागरे' २ साग्यवाद्यात्मन्, युग-न ३ साग्योपवित् आत्मन् ।

सातोपाग, वि (स) अगोपागवृत्त, स, पूर्ण, ममप्र, समस्त ।

साँच, वि (स सन्) अवितथ, यथार्थ ।

साँचा, स पु (स स्वत्) आफारमाधन, सम्मान, मत्पानपुर २ दे 'छापा' ।

साँचे में ढला होना, सु, सर्वायमुदर (वि) वृत् (म्वा आ मे) ।

साँझ, स स्त्री (म मध्या) मायफल दे ।

साँझ, स प दे सम्भा ।

साँट, म स्त्री (अनु मट) मृक्षमननु दड - याँट (स्त्री) २ वृक्ष ग ३ वृष्टि-वृक्षा - प्रहागच्छि ४ नीच ५ कच्ची ।

साठी, म स्त्री (हि गाठ का अनु) मूल धन दे 'धुँती' ।

साठ ह, स पु (म षड) ष(ष)ह, गोपति, वृषन्, वृषम २ दिवगनस्मृत्यामुत्सृष्टोऽति ती वृषम इ वृषणाथ, वृषन् । वि, इडाग, बलिन् २ स्वेरिन्, दुराचारिन् ।

साँठ(ह)नी, म स्त्री (हि माठ) उष्ट्री, इ 'ऊठनी' ।

—सगर, म पु (हि + का) उप्र, आरोह आरोहिन् २ उप्र क्रमल्ल, बाहक ।

साँडा, म पु (म शयानक) कुजलाश म, क्रम-पाद, प्रतिमूल, मरट ड, गोषिका, चित्रहीन ।

सात, वि (म) अतवत्, नवर, नाशवत् ।

साखना, म स्त्री (म) साख-स्वन, आ सगा-भारत २ शम, शानि (स्त्री), इ प्रणय ।

—देना, क्रि म, सा(शा)ख् (सु), आ समा-भम् (रे) शोक शम् (प्रे) ।

माद्र, स पु (म) वम २ शशि । वि (स) धन, निविड, सुन्दर ।

साद्रा, स स्त्री (सं) निरिडता, धनता इ ।

साधिविग्रहिक, स पु (सं) सधियुद्ध मन्त्रिन् ।

साध्य, वि (स) सध्या, सम्बधिवन् विषयक, वैवाहिक, वैकालीन ।

सानिध्य, स पु (म न) सामीप्य, निकटता २ मातृमेद ।

साप, म पु (स सर्प) मुज(च)ग, मुजगम, अहि, फज-विष, घर, व्याल,

सरीसृप, आशीविष, कुडलिन्, चक्रु श्वस, फणि, विटेश्व, उरग, पत्रग, पवनाशन, दर्शिन द्वि-जिह्व-रसन, वृदाकु, चक्रिन्, दद वृक्ष, भोगिन्, गूढपाद-द, दीर्घशृङ्ग, निक्षग । (चन्नीवाला साँप) मातुलाहि, मातुधान । (धारीदार साँप) रावि(नी)ल । (फनिधर साँप) भोग फण भूत धर, फणिन, भोगिन् ।

—की रूहर, सु, अहि-शम्बका ।

—के मुँह में, सु महामन्त्रे ।

—छट्टे-दर की दसा, सु, द्विधीभाव, दोला वृत्ति (स्त्री) सँह ।

—मूँघ जाना, सु सर्पण दश (कर्म), मृ (दु आ अ) ।

रुलेज पर—होटना, सु (ईर्ष्यादिभि) मनीऽ-त्पन सतप (कर्म) ।

सापत्तिक, वि (स) आर्थिक दे ।

सापिन, म स्त्री (हि साप) सपिगी, मर्षी, पत्रगी, उरगी, मुजगी इ ।

साप्रत, अव्य (स-त) अनुनैव इदानीमेव, सय, स्प्रति । वि (ह) उक्ति, योग्य, २ प्रामाणिक, प्रास्ताविक ।

साप्रदायिक, वि (म) शास्त्रागत, मप्रदाय भ्रम-मन, निषस्व-अनभिन् २ १२५रीण, क्रमा गत ।

साव, स पु (स) श्रीकृष्णपुर ।

सावर, म पु (स सावर) संवरीद्रव, रौमक, वस्तु २ राजपुत्रस्थानप्रदेशी कासारविद्येय ।

सामुच्य, म पु (म न) दे 'सामना'(२) ।

साँय साँय, म स्त्री (अनु) दे 'सनसनाहट'(१) ।

साँवला, वि (म इयामल) कृष्ण, इयाम २ इषच्छवाम, आकृष्ण ३ कृष्णनील । स पु, श्रीकृष्ण २ पति ३ प्रेमिन्, प्रणयिन् ।

साँवलापन, म पु (हि साँवला) इयामकता, इयामता, आ कृष्णता, पृष्णनीकता ।

साँवाँ, म पु (म इयामाक) इयाम-मृक, त्रिकीच, अविग्रिय ।

साँस, म स्त्री [स श्वा (पु)] उच्छ्वास, उच्छ्वसित, नि(नि)श्वाम, नि(नि)श्चित, आन, आहर, एतन, असव प्राणा (दोनों पु वतु) २ दीर्घश्वास, निश्वास, उच्छ्वास ३ निराम, विश्राम ४ रफोट, भग ५ श्वासरोण, दे दमा ।

—रूकना, कि अ, श्राम निरूप (कर्म) ।
 —लेना, कि अ, अन्प्राण-श्राम् (अ प से) २ जीव (म्वा प से) ३ विग्रम् (दि प से) विरम् (म्वा प अ) ।
 —उखटना, मु (निघनवाले) कुच्छ कष्ट श्रम् ।
 —खींचना, मु, श्राममग निरूप (रुप मे) ।
 —चटना या—फूलना, मु, सवेग प्राण ।
 —तक म लेना, मु, मोन आकण (चु) ।
 —इहते, मु, पावज्जीव-वन, आश्रुत्यो ।
 गहरी या रूनी—लेना, मु, दोष श्रम ।
 साम्सारिक, वि (म) एहिक लौकिक, प्राय चिक, व्यावहारिक ।
 सा, वि (म नदृश) सम, ममान, सुख्य, सदृश २ इव, मात्र (उ बोझ सा-सिचि दिव, किचिन्मान) ३ आ, इषत् (उ काला सा=भा-इषत्-कृष्ण) ।
 साइक्लोपीडिया, स स्त्री (अ) (विषयविशेष निरूपक) इहदप्रव २ विश्वरोश प ।
 साहित, म स्त्री (अ साभन) होरा, दे 'बदा' २ पल, क्षण ण ३ अंगणमुहूर्त, शुभलग्नम् ।
 साइजबोर्ड, म पु (अ) चिह्नपट्ट-कृम् ।
 साइन्स, म स्त्री (अ) विज्ञान, शास्त्र २ साम्यान्वकनिष्ठान् भीतिकविज्ञान च ।
 साइजम, म स्त्री (अ) उरक्षेपणाली ।
 साई, म स्त्री दे पशुगा ।
 साईम, म पु (राम वा अनु) अश्व, सेवक पाल पातक-रक्षक, वातामिक ।
 साहसी, स स्त्री (हि मारस) अश्वसेवा अश्वसवयत्वम् ।
 साह, म पु, दे 'माग' ।
 साकास, वि (॥) इच्छु, इच्छुक, आका शिन्, अभिलाषिन् ।
 साका, म पु (स शान) मवत् (अव्य), द २ यशस् (न), वाणि-रत्नादि (स्त्री) ३ वीण, विद्वन्मारण ४ आनक, प्रभाव ५ कीनकर कर्मन् (न) ।
 साकार, वि (स) आपारवत्, आकृतिमत्, रूपवत् २ रस्य, यत् ३ मूर्तिमत्, वपुष्मत्, देहधारिन् ।
 साकारोपायना, म स्त्री (स) मृत्यान्मि ममुपजन, मूर्तिपूजा ।

साकिन, वि (अ) नि, वासिन्, वास्तव्य ।
 साक्षी, स पु (अ) सुरापारिवेक २ वल्लभ, प्रेमपात्र, दे 'माशुक' ।
 साकूत, वि (स) सार्धक अर्धवत् सामि प्राय, सप्रयोजन ।
 साकेत, स पु (स न) अयोध्या, दे ।
 साक्षर, वि (सं) शिक्षित, अक्षर, न अमिश्र ।
 साक्षात्, अव्य (म) पुरत, अग्रत, ममक्ष, प्रत्यक्षम् । वि, मूर्तिमत्, साकार, विग्रहवत् । स पु, स-समा, गम, मेल, समिलनम् ।
 —करना, कि स, साक्षात् कृ त्वचक्षुष्यौ दृष्ट (म्वा प अ), निचेन्द्रिय अवगम् ।
 —कार, स पु (स) दे 'साक्षात्' । म पु २ प्रत्यक्ष, इन्द्रियार्थसन्निकर्षजं ज्ञानम् ।
 साक्षी, स पु (स क्षिन्) दे 'गवाह' २ दृष्ट, प्रेक्षक । स स्त्री, साक्ष्यम् ।
 साक्ष्य, स पु (स न) साक्षितात्व, दे 'गवाही' २ दूरमम् ।
 साख, स स्त्री (हि साका) प्रभाव, वश दौ, आनक २ (हट्टे) प्रतिष्ठा, प्रत्यय, विश्वसनीयता ।
 साग, म पु (॥ शाक-कं) जि(मि)पु, इ(हा)रितक २ व्यजन, अन्नोपस्कर, दे 'भाची' ।
 —पात, म पु, शाकपत्र, कदमूल २ साधा रण नीरस, भोजनम् ।
 सागर, स पु (सं) समुद्र, दे २ महा, इद-नटान (कम्) ।
 सागवान, स पु, दे 'सागौन' ।
 सागू, स पु (अं सेनो) • मागू, वृक्षभेद ।
 —दाना, म पु (हि + का) • साधुदान ।
 सागौन, स पु (सं शारवन) • गृहद्रुम, श्रेष्ठकाष्ठ, शाक, शाक, तरु-वृक्ष, अण ।
 साज, स पु (का, मि स सजा) सामग्री, उपकरण २ (अश्व-) सज्जान-नाह ३ वाय, जादित ४ अस्त्रशस्त्र ५ सुपरिचय, प्रगाढ मन्व्यम् । वि (का) • बार २ प्रतिममाधार । (उ वहीमात्र-वटीकार, पटीप्रतिममाधार) ।
 —जान, म स्त्री, सुपरिचय ।
 —सामान, स पु, सामग्री, उपकरण, परि ष्कट २ दे 'ठाठबाट' ।
 साजन, स पु (सं सज्जन) मद्रजन, आर्य, सत्पुण्य २ पति ३ वल्लभ ४ परमेश्वर ।

साजना, कि म, दे 'मजाना' ।

साजिदा, मं पु (का) बाघवादिन, बादक ।

साजिदा, स स्त्री (का) दे 'बद्वन' ।

साझा, म पु (स साहाय्य) अशिला, आशिला, आशयत्वं २ अज्ञ, भाग ।

साझी, म पु (हिं सजा) दे 'साझेदार' ।

साझेदार, म पु (हिं साझा) अज्ञ, अशिल, आशय, अशयितृ ।

साझेदारी, स स्त्री (हिं साझेदार) दे 'साझा' (२) ।

साइन, स पु (अ सैटिन) साइन, कौशेय बाबभेद ।

साटा, म पु (देश) विनिमय, परिवर्तन ।

साठ वि [स वटि (नित्य स्त्री)] स पु उक्ता सख्या तद्वोधकांकी (६०) च ।

साठगँ, वि (हिं साठ) वृत्तिम-मी-म (पुं स्त्री न) ।

साठा, वि (हिं साठ) वटिवर्ध ।

साठी, म पु (मं वटिक-का) स्निग्धतद्बुल, वटिन ।

साडी, स स्त्री (स शाटी) नारीवस्त्रभेद ।

साइमरयोरे, स स्त्री (हिं सादे+मा) ।

साइमतवर्ध (आम-दिवस) वनिनी शनिदशा ।

—आना वा—चढ़ना, मु, दुर्दिदानी आरंभ (भवा प से) ।

साइ, स पु (म इवालीधव) श्यालीपति, गामान्शिव ।

साइ, वि (म साध) अध्वर्य ।

सान, वि (स सात) स पु, उक्ता सख्या, तद्वोधकान्ध (७) ।

—सुना, वि, मस, गुण-गुणित ।

—प्रकार का, वि, सप्त विध-प्रकार ।

—फेरी, स स्त्री, दे 'गौर' ।

—पाच, मु, पाच, वापत्यम् ।

—पाच करना, मु, श्रु-वच् (प्रे), विप्रठम् (भवा जा ज) ।

—पुत्यों से, मु, अनादिकालात् ।

—समुद्र पार, मु, अनि, दूर-दूरे ।

सातवाँ, वि (हिं सात) सप्तम-मी-म (पुं स्त्री न) ।

सात्यकि, म पु (स) बादवोधविशेष, धीरुणमारजि ।

सात्विक, वि (म सात्विक) १३ सत्त्वगुण, मरचिन् निष्पादित प्रधान ४ शुद्धात्मन, निष्कपट, कान्त, सरल । स पु (स) सत्त्व गुणवा अष्टप्रकारा भावा (स्वेद स्तभोऽथ रोमाव स्वरमगोऽथ वेषधु । वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्विका स्मृता, सा) ।

साथ, अव्य (सं सहित) सह, साक, साथ, सव, उतीवा से भी (उ मोष के साथ=कौपेन ३) म—पूर्वक, —पुरमर (उ भादर के साथ=मादर, आदर, पूषक, पुर सर ६), मं, (उ साथ रहना=मकान) । स पु सग, सगनि (स्त्री) सहचार, साहचर्य, भ्रमण ।

—का, मु, न्यजन, अक्षोपस्कार ।

—सूटना, मु, विच्छिन् (दि प अ), व्यप ६ (अ प अ) ।

—देना, मु, साहाय्य कृ २ रक्ष (भवा प से) ३ सह या (अ प अ) ।

—ही, मु, आर व, अन्यथ, अपि च, किं च, अनिरुक्तम् ।

शक—, मु, दुगपद, समकाल-म्, योगपद्येन २ सभूय, भित्ति ।

साधिन, म स्त्री (हिं साधी) सहचरी २ सती ।

साधी, म पु (हिं साथ) सतिन, सहचर २ मित्र, मसि (पु) ।

सादगी, स स्त्री (का) साधुता, सरलता, भावद, निष्पापद्व २ आह्वारहीनता ।

सादर, वि (म) सगौरव, सविनय । किं वि (स रं) सप्रश्रय, सविनयम् ।

सादा, वि (का-द) निष्कपट, निश्छल, सरल, कान्त, माया, रहित, निर्व्याज, शुद्धात्मन २ अज्ञ, मुखं ३ श्वेत, रथ-वर्ण, हीन ४ अज्ञ रोगादिरहित, रेखादिरहित ५ शुद्ध, केवल ६ अलकाररहित ७ विनीत-अनुश्रुत, वैश(५) ८ अल्पामयव (यं-दि) ।

सादापन, स पु (का सादह) दे 'सादगी' ।

सादि, वि (स) सारम्भ, सोपक्रम, आरम्भ उपक्रम, नव-युक्त ।

सादिक, वि (अ) सत्त्व, दयार्थ २ शुद्ध, पुष्टिरहित ।

सादृश्य, स पु (स न) समता, समानता, साम्य, सदृशता, तुल्यता ।

साध^१, स पु, दे 'साधु' ।

साध^२, स स्त्री (स उत्साह >) अग्नि
लाभ, कामता, लालसा, वाञ्छा ।

साधक, स पु (स) स निष, पादक, समा-
पक, मिद्धिकर, निर्वर्तयितृ २ तपस्विन्,
तापस, योगिन ३ करण, साधन ४ परहित
कारिन्, परकायमहाय ५ भक्त, उपासक
६ भूतापसारक, दे 'ओष्ठा' ।

साधन, स पु (म न) निष्पादन, विधान,
संपादन, करण, अनुष्ठान, समापन, निर्वर्तन
२ उपनयन, मामग्री ३ युक्ति (स्त्री),
उपाय ४ उपामना, पूजा ५ सहायता
६ धातुशोधन ७ कारण हेतु ८ धन
९ पदार्थ १० सिद्धि (स्त्री) ।

साधना, स स्त्री (स) सिद्धि निर्वृत्ति निष्पत्ति
(स्त्री) २ आराधना उपासना ३ अभ्यास
क्रियासातत्य, नित्यानुष्ठानम् । किं स (स
साधनं) साध (स्वा प अ, प्रे), सिध
(प्रे साधयति) २ निवृत्त्युत्पत्तिः समाप् (प्रे),
अनुष्ठा (भ्वा प अ) २ विनी (भ्वा
प अ) शिष्य (प्रे) ३ दम् (प्रे दमयति)
वशीकृ ४ अभ्यस (दि प से) अभ्यास-
व्यवहार कृ ५ नियत्र (चु) अनुष्ठाम् (अ
प से) । स पु तथा भाव, साधन, निर्वर्तन,
स निष, पादक, अनुष्ठान विनयन, दे 'साधक',
'साधन' इ ।

साधर्म्य, स पु (म न) मधमनास्व समान
शुभ धमनाशुभता ।

साधारण, वि (स) सामान्य, विशिष्टता-
रहित, प्रायिक प्राकृत मध्यम अवर २ सुवर,
सामान्य इ सावजनित्य सर्वजनीन ४ सद्गुण,
गुण्य ।

—धर्म, स पु (स) मार्गनिष्कर्षार्थ २ चातु-
र्वर्ण्यस्य सामान्यधर्म ।

—स्त्री, स स्त्री (सं) वेद्या ।

साधारणत, क्य (स) सामान्यत, प्रायशः,
प्रायेण, बहुश (मव अव्य) ।

साधारणतया, क्य (म) दे 'साधारणत' ।
साधारणता, स स्त्री (स) सामान्यता,
विशिष्टताऽभाव साधारण्यम् ।

साधु, स पु (म) स-यामिन्, परित्राजक,
महात्मन्, तपस्व, मुनि, यति २ सत्पुण्य,

सम्बन्ध, कार्य ३ अभिमान, कुलीन । वि
(म) भद्र, उत्तम क्षेत्र २ यथार्थ, मत्स्य,
अविनाश ३ प्रशसनीय, स्तुत्य, ४ निपुण
५ जह, योग्य इ उच्यते, युक्त ।

—वाद, सं पु (स) साधु-वचन-उक्ति
(स्त्री), शास्त्रार्थवचनम् ।

—साधु, अव्य (स) धन्य धन्य, सम्यक्-
सम्यक, शोभन शोभन, वर वरम् ।

साधुता, स स्त्री (स्त्री) सज्जनता, श्रेष्ठता,
भद्रता आर्यता २ मरलता, आजव इ ४
साधु, चरित धर्म ।

साधू, स पु, दे 'साधु' ।

साध्य, वि (सं), निष्पादनीय करणीय,
अनुष्ठेय, समाप्त्य २ शक्य, सम्भाव्य, सम्भ-
वीय ३ सुकर, सुगम ४ प्रमाणयितव्य,
सत्यापयितव्य, उपपादयितव्य ५ प्रतिज्ञादाह,
प्रतिवार्य इ शेष । स पु (म) देवता
२ गणदेवताभेद ३ साधनीयपदार्थ (ग्या) ।

साध्यम्, स पु (म न) भद्र इ व्याकुलता ।

साध्वी, स स्त्री (स) सती, सचरित्रा २ पति-
व्रता परायणा ।

सान्द, वि (स) प्रकृष्ट, मुदित । किं वि (स
न) मकुञ्जल, सहर्षम् ।

शान, स पु (स शाण) शाणी, शागादमन् ।

—देना, किं स, निम् (प्रे), नि, शो (दि
प अ), शीक्षणीकृ, क्षु (अ प से) ।

सामना, किं स (हि सनना, स सधा ने)
मदनेन समिष् (चु), इत्याम्ना मृद (क
प से, प्रे)-सपोड (चु) २ मलिनयति,
कलुषयति-कलवयति (ना धा) ३ समिष्
(प्रे), मवध (कृ प अ) ।

सानी^१, स स्त्री (हि सानना) भिक्षात्रम् ।

सानी^२, वि (अ) द्वितीय, अपर २ तुल्य,
समान ।

ज—, वि (अ) अद्वितीय, अनुपम, अग्रिम ।

सापन्त्य, सं पु (सं न) सपत्नीभाव, सदा
रत्वम् । (सं पु) सपत्नीमुत २ शत्रु ।

साक्र, वि (अ) स्वच्छ, निर्मल दे । २ शुद्ध,
केवल इ निर्दोष, शुद्धीन ४ स्पष्ट, विशद
५ द्रव्येण उज्ज्वल, भास्वर ॥ निष्पद,
निवृत्त ७ सम, सम-नल रेण ८ निविघ्न,
निर्बाध ९ अवच्छेद्य, उत्तरादि । किं वि,

निष्कलंक निरपवाद २ प्रच्छन्नं, निमत
३ हानि क्षति विना ४ अत्यन्त निर्यात
५ निराहारम् ।

—करना, कि म, प्रक्षल (चु) प्रमं, मृत्
(अ प मे, प्रे), भाव (म्वा प मे, चु),
निमित्त (सु उ अ) २ शुभ (प्रे), पृ
(क् उ मे), पवित्रोक्त ३ (अणदिक)
निस्तु शुभ (प्रे) अपाकः ।

—गो, वि, स्पष्ट-यथार्थ, भाषित्वादिन् ।

—गो, स स्त्री स्पष्ट-यथार्थ भाषिता-वादिता ।

—दिल, वि (म + का) अजु मरल,
निष्कपः ।

—साक, अव्य, स्पष्टन प्रकटम्, प्रकाशम्
स्पुटं, व्यक्तम् (मर अव्य) ।

साफल्य, म पु (स न) सफलता दे
३ लाभ ।

साफा, म पु (अ साक) उष्णीष प
शिरोवेष्टनम् ।

साफ्री, म स्त्री (अ साक) गालनी ।

साधन, म पु, दे 'साधुन' ।

साधर, म पु (म शवर) मृग भेद २ शवर
चमत् (न) ३ वातमृगचमत् (न) ।

साधिक, वि (अ) पुरण, पुरातन, पूर्व,
प्राचीन, प्राक्तन ।

साधिका, म पु (अ) व्यवहार, मवध
२ परिचय ।

साधित, वि (अ) प्रमाणित, सिद्ध दे ।

साधु(ष)न, वि (का मवृत्) सपूर्ण, समस्त,
पूर्ण २ निर्दोष ३ स्थिर ।

साधुन, म पु (अ) फेनल, स्वफेनम् ।

साधुदाना, म पु दे 'साधुदाना' ।

सामान्य, म पु (स न) औचित्य, योग्यता
२ उपयुक्तता ३ अनुकूलता ४ आनुकूल्य,
आनुरूप्यम् ।

सामत, स पु (स) वीर, मट, बोध,
२ नायक, गणाधिपति ३ क्षेत्र, यति
स्वामिन् ।

साम, स ॥ [स मन् (न)] सामवेद
२ गेयवेदमन्त्र ३ प्रियवाक्यादिभि सात्वन,
मधुरभाषण ४ उपायभेद (रात्रनीति) ।

—वेद, स ५ (स) आर्याणां प्रसिद्धो चर्म
ग्रन्थविशेष ।

सामक, स पु, दे 'सार्वा' ।

सामग्री, म स्त्री (स) उपकरणानि, ममार,
माधनसमूह, आवश्यकरूपव्याणि (न बहु)
२ परिच्छिन्न, उपस्तर ।

सामग्र्य, म पु (म न) समग्रता, पूर्णता,
समष्टि (स्त्री) २ अनुचर-मेवक, वर्ग
समुदाय ३ उपकरणसमूह ४ कोष =
परिच्छिन्न, उपस्तर ।

सामना, म ण (दि सामने) अग्र पूर्व, भाग,
मुरा २ म(ममा)गम, सम्मिलन, दर्शन,
सामुख्य ३ विरोध, विपश्चिता ।

—करना, कि स, विप्रतिष्ठ (न उ अ),
प्रत्यवस्था (म्वा आ अ) बाध (म्वा
आ से) ।

सामने, कि वि (म समुत्ते) अग्रत, अग्रे,
पुर, पुरत, समग्र, अभि मं, समग्र-मुत्ते २ उप
स्थितौ, विद्यमानताया ३ तुलनाया, प्रतियो
गिताया, विरुद्धम् ।

—आना या—होना, कि अ, अभि-सं, मुखौ
भू, समुत्तं स्था (म्वा प अ) ।

—करना कि म, अग्रे पुरत स्था (प्रे),
समग्र नो (म्वा प अ) ।

—से, कि वि, अग्रत, पुरस्तात्, पुरत ।

आमने—, कि वि (अन्योन्यम्) समुत्त-ने,
सुरामुत्ति, प्रतिमुत्तरम् ।

सामयिक, वि (म) कालिक [—की (स्त्री)]
काल-समय, विषयक २ साप्रेतिक, इदानीं तन,
आधुनिक, वर्तमान ३ समयोचित, कालानुरूप ।

—पत्र, म पु (मं न) समाचारपत्र, दे ।

सम—, वि (स) समकालीन, दे ।

सामर्थ्य, म पु स्त्री (म न) भीशक्ति
(स्वा), योग्यता, कार्यक्षमता २ बल, शक्ति
(स्त्री) ३ तेजम् (न), पराक्रम ४ शब्द
मवध (म्वा) ।

सामाजिक, वि (म) सामुदायिक, समाज
जनसमूह-संबन्धित-ममात् ।

सामान, स पु (का) दे 'सामग्री' (१२) ।
यत्राणि, उपकरणानि (दोनों न बहु) ४ दे
'प्रदक्ष' ।

सामान्य, वि (म) दे 'साधारण' । स पु
(स न) सादृश्य, समानता २ साधारण, धर्म
गुण (वैशेषिक) ३ अव्यालंकार भेद (सा) ।

—वनिता, स स्त्री (म) वेदया, वारागता ।

सामान्यत, कि वि (स) दे 'साधारणत' ।

सामान्यतया, किं वि (म) दे 'साधा
रणतया' ।

सामित्री, स स्त्री, दे 'सामित्री' ।

सामीप्य, सं पु (स न) साश्रिध्य, नैकट्य
२ मुक्तिभेद ।

सामुदायिक, वि (म) सामूहिक, सामन्ताधिक ।

सामुद्रिक, सं पु (स न) अनुचिह्नविज्ञानम् ।

वि (म) सामुद्र, समुद्रीय ।

साम्य, न पु (स न) समता, समानता,
सुलभता ।

—वाद्, सं पु (स) समाज-अमर्षि, वाद,
पाश्चात्य सामाजिकसिद्धांतविशेष ।

साम्राज्य, सं पु (स न) आधिपत्य, आधि
राज्य, पूर्णाधिकार, दशलक्षाधिपत्य २ महा
विरुद्ध-राज्य विषय-शब्दम् ।

सार्ध, किं वि (स) दिनाग्रे, सायकाले ।
न पु, दे 'सार्धकाल' ।

—काल, न पु (म) सायाह, साय-य,
सायमव्याममय, रजनीमुलं, प्रदोष, दिवस
दिन, अग अवसान, मध्या, वि वै, काल ।

—काळीन, वि (म) सायतन (—नी स्त्री),
साय, प्रादोपिन्न वैकालिय (—नी स्त्री), सायभव ।

—सध्या, न स्त्री (म) परिचमा मध्या ।

सायम्, न स्त्री, दे 'सायम्' ।

सायन, न पु (स) श्पु, बाण २ छटा ।

सायण, न पु (म) चतुर्वेदभाष्यकारो माय
णपुत्र ।

सायत, न स्त्री, दे 'सारत' ।

सायवान, न पु (का माय वान) प्रघ(वा), न,
अर्द्धि २ अनुप्रवृत्तिस, अनुप्रवृत्तयवत् ।

सायल, न पु (अ) प्रदत्त, क(वा)र-वन,
मष्ट, दृष्टव २ वाचक, भिक्षु ३ प्राप्तिन्,
आवेदन ४ पद-आकाङ्क्षित-अन्वेषिन् ।

साया, सं पु (का-यद्) दे 'छाया' ।

सायुज्य, न पु (म न) एकीभाव, ऐक्य,
मारूप्य २ मुक्तिभेद ।

सारग, सं पु (सं) मृगभेद २ मृग
३ वायभेद ४ राशिगीभेद ५ अनुम् (न)
६ श्पु ७ मर्व ८ रायी ९ रमणी १० खटग
११ मंत्र १२ खग १३ मयूर १४ हस्त
१५ चानर १६ अमर १७ सामर
१८ वमर १९ चद्र २० श्रावण, इ ।

—यानि, सं पु (मं) विष्णु ।

—लोचना, न स्त्री (स) मृगलोचनी,
हरिणाशो, कुरगाश्री, मृगनयनी ।

सारंगिया, सं पु (सं सारंगी) सारंग(गी)-
वाद्यम् ।

सारंगी, न स्त्री (मं) शारंगी, सारंग,
पिनाकी, वाद्यभेद ।

सार, न पु (स पु न) तत्त्व, मुख्यार्थ,
स्थिरार्थ, मूल, मूलवस्तु (न) २ भाव,
तत्पर्य, निष्कर्ष, विहित निष्कृष्ट निर्गलित,
अर्थ ३ मञ्जा, अस्थि, अ-सम्भव स्नेह-नेत्रस्
(न) । (स पु) रस, द्रव, निर्दाम
२ सङ्घेय, ममद्व ३ शक्ति (स्त्री), बल ४
वीर्य, पराक्रम ५ वज्रक्षार ६ बाहु ७ रोग
८ पाशक ९ दध्युत्तर १० अधोलंकारभेद
(सा) । (म न) जल २ धन ३ नवनीत
४ अमृत ५ लोह ६ वनम् । वि (स) उत्तम,
भेद ३ दृढ, बलवत् ३-वाच्य, धर्म ।

—सार्धित, वि (म) तत्त्वपूर्ण, सार, युक्त वत् ।

—सर्जित, वि (म) निस्तार, तत्त्वहीन ।

सारथि धी, सं पु (स वि) सूत, हयनय,
नि, यत्, नियामक, क्षत्र, प्राप्तिन्, दक्षिणस्थ,
रथ, जागर-मुर्द्धनिन् ।

सारथ्य, न पु (स न) मरुता, इ ।

सारस, न पु (स) शुष्कराज, रुद्रमय,
लक्षण, कामिन्, रमिक, सरसीर २ हस्त
३ चद्र । (सारमी स्त्री) ।

सारस्वत, सं पु (स) प्राक्कलजातिभेद
२ व्याकरणग्रन्थविशेष । वि (सं) सार
स्वतीय ।

साराश, सं पु (स) सार, निष्कर्ष,
वित्तिर्था २ अभिप्राय, आशय ३ परिणाम,
बल ४ उपमहार ।

सारा, वि (स सर्व) सपूर्ण, समग्र, समस्त ।

सारिका, न स्त्री (सं) सारी, शारीरिका,
त्रिप्रलोचना, पीतपादा, कन्दप्रिया, मधु
रान्ता ।

सारूप्य, न पु (मं न) तुल्य, सम-म एव,
रूपता, तुल्यता, समता २ मोक्षभेद ।

सार्ध, वि (मं) सार्धेय, सामिप्राय २
समान तुल्य, अर्थेय अर्थिन् (शास्त्रादि) ३
धनिन्, धनाढ्य । सं पु (मं) धनाढ्य,
धनिर २ सार्ध-सामिप्य, समग्र-समुदाय

हरण ३ कुतल्य ४ दृष्ट ५ कृष्ण, निर्दयता
६ मृ-धीर, कमल (न) ७ परदारयमन
८ बल्लकार ९ दह १० अथ धन, दह ।

साहस्यक म ष (म) विकसदित्य,
शान्ति ।

साहस्यि, म पु (म) साहस्यि, अतः
यिन, कपोपन २ नुठक, दस्तु ३ परत
लग्न परदारयमिन । वि (मं) साहस्यव्य,
पराकमिन् वीर २ निर्भीक, प्रगल्भ
३ मिथ्या, अविन-वदिन् ४ परबभषिन्,
बहुवर्त्तन् ५ हठकारिन् ।

साहस्यी, वि (म मिन्) दे 'साहस्यिक'
वि (३२) ।

साहस्य्य, म पु (म न) सहायता, दे ।

साहित्य, स पु (म न) वाङ्मय, सारस्वत
अयममूह मगनि (स्त्री), सनित्तन,
मथ ३ साहित्य भलकार, शास्त्र ।

साहित्यिक, वि (म) साहित्यभक्षिन्, वाङ्मय
विषयक स पु, साहित्य, मेवन्, मेविन् ।

साहिष्, म पु (अ) मित्र, छद्म २ प्रभु,
स्वामिन् ३ परमेश्वर ४ महाशय, भीमन्
५ श्वेतवर्णी वैदेहिक् ।

—हृत्पाल, वि (अ) सपन्न, समृद्ध ।

—जरादा, म पु (अ + का) पुत्र, अनुवाज ।

—दिमाग, वि (अ) धी-बुद्धि, मन् ।

—सहासत, म स्त्री (अ) मित्र प्रणाम,
पारस्परिकनमस्कार २ परिचय ।

साहिबा, म स्त्री (अ) स्वामिनी, इश्वरी
३ आर्दा, कुलागता ३ देवी, भट्टिनी ४ अत्र
तत्र भवती, भद्रा, भवती, आननी ।

साहिल, म पु (अ) वेल्, लग्न दम् ।

साही, म स्त्री (म साहवी) शल्य, शल्यक,
आविष, कदम्बपाद, शल्यमृग, विलेश्य,
सेदार ।

साहूह, म पु (म मपु) सज्जन, आय,
भद्रमनुष्य २ कुमोदिकदिन, बाहुषिक ।

साहू(ह)ल्, स पु (का शङ्क) लक्ष,
सहस्रमन्त्रम् ।

साहूकार, म पु (हि साहू) धनिक, धनाप
२ संप्रदाह, साधिक, अहिन् ३ कुमोदिन,
बाहुषिक ।

साहूकारा, सं पु (हि साहूकार) वृद्धि,
वीरन-वीरिवा ३ अर्थव्यवसाय ३ अधापण ।

साहूकारी, स स्त्री (हि साहूकार) दे
'साहूकारा' (१२) ।

मिगा, स पु (स मृग) दे 'नरनिहा' ।

मिगार, स पु (स मृगार दे) ।

—दान, म पु (हि + का) *श्वारथन,
*प्रगल्भपिडकन् ।

—हाट, म स्त्री, श्वारथदृष्ट वेदवापण ।

मिगारिधा, सं पु (हि मिगार) शङ्करवार,
प्रसाधक ।

मिगिया, सं पु (म मृगिन्) विषमेद ।

मिगौटी, स स्त्री (हि लौ) (वृषादीनां)
भ्रातृभूषणम् ।

मिगौटी, स स्त्री (हि मिगार) दे 'मिगा
रदान' ।

मिघ, म पु, दे 'मिह' ।

मिघण, म पु (स म) मिघान्, मिघणी
मिघाकम्, नविकामन् २ अयोमल्ल, *
अयोम ।

मिघाहा, सं पु (स मृगट-टक्) सग्निका,
जलवटि, कटक-कुम्भक, * ग, बट-मूल,
गुल्फुध ।

मिघासन, सं पु, दे 'मिघासन' ।

मिघाई, म स्त्री (हि मीवना) मैक, मैचन,
नल्लवावन, मिक्कि (स्त्री) २ अभिद्र,
उक्षय ३ मेवम प्रोक्षण, भूति (स्त्री) भूत्या ।

मिघित, वि, दे 'मीवाहुआ' ।

मिडिबेट, स पु (अ) व्यापारमणि
(स्त्री) व्यवहारमण २ विरविद्यालय
प्रवचनमिति (स्त्री) ।

मिदूर, सं पु (सं न) सीरुक्क, मन्त्र्य,
गणेशभूषण, मृगारक, सीभाव्य, नाग, ज
संभवनाभै, अल्प, शोण, रक्तन् ।

मिदूरिया-री, वि (म सिदूर) शोण
मिदूर, वर्ग ।

मिध, स पु (स सिधु) मिधुलेत्, भारत
वर्षत्य प्राग्विदेश । सं स्त्री (सं पु) पर
नदप्रातःकालेनद्विदेश ।

—सागर, सं पु (स मिधुसागर) मिधु
विनलमध्यवर्तिप्रदेश ।

मिघी, सं स्त्री (हि मिघ) सैधवी, मिधुप्रांत
मथा । सं पु, मिधु देशीय-वादिन्, मैषवा
(प्राय बहु) २ सैधव (घोडा) ।

मिथु, स पु (स) नागर २ नद ३ नद विशेष ४ प्रातर्विशेष, मिथुनेल ।

—रुन्या, म स्त्री (म) मिथु-जायला, लक्ष्मी (स्त्री) ।

—पुत्र, स पु (स) चद्र ।

—माता, म स्त्री (म नृ) सरस्वती (नदी) ।

मिथुर, म पु (म) गज, द्विप ।

—वदन, म पु (स) भगवन्, गणेश ।

मिथोरा, म पु (म मिथुर >) मिथुरपुट ।

मिह, म पु (मं) हरि, हर्षण, मृग, राज इन्द्र अधिप, पञ्च-आस्य विप मुख, वेश (म रित्, महा, नाह-वीर, नरिण, इत्यादि २ लेख, पञ्चमराशि (ज्यो) ३ वीर श्रेष्ठ (३ पुत्रमिह) ४ दे 'मिक्क' ।

—के(श)मर स पु (म पु न) मठ-या २ वल्लवृक्ष ।

—नाद्र, स पु (म) मिह, गानन गर्पना ज्वनि २ ह्वेदा, रणोत्साहवर्ग ३ नि शक्य वनम् ।

—पीर, स पु (म + हि) मिहकार, प्रवे शनम् ।

मिहनी, स पु (हि मिह) नयिनी, मिही, पञ्चमुत्पी ।

मिहल, स पु (म) स्वगदोष-य (मीनोन या लका) ।

मिहली, वि (स मिहल >) मंहल २ मिहल वामिन् ।

मिहाम्लोक्त, - पु (स न) मिहाम्लोक्ति २ पूर्ण, अनुदशन-वृत्तानविमर्श ३ पञ्चरचना रीतिभेद ।

मिहामन, म पु (म न) मृप-राज, आमनम् ।

—पर धंडना, कि अ, मिहामने उपविश (द्व प अ), राज्ये अभिषिच् (कर्म) ।

—से उतारना, कि स, रात्र्यान् भश्चु (प्रे) ।

मिहिका, म स्त्री (म) राधुमात्र, राक्षसी विशेष ।

—मूनु, स पु (स) संहित, स्व, राहु ।

मिहिनी, म स्त्री द 'मिहनी' ।

मिही, म स्त्री (म) दे 'मिहनी' २ मिहिना ३ मृग, वाषभद ।

मिभार, म पु (म मृगाल) दे 'गार' ।

मिर्वन्धीन, म स्त्री (वा) दे 'शिरन्धान' ।

मिक्की, स स्त्री (म. मृगाल) दारनपाद,

शृगला, दे 'कुटी' २ मृगभूषणभद्र ३ कानी, मेगला ।

मिक्ता, म स्त्री (मं वहु) वातुका (स्त्री वहु), दे 'रेत' २ भद्रमरी, दे 'पथरी' ३ बर्करा, निता ।

—मेह, म पु (स) प्रमेहभेद ।

मिक्तर, म पु (व मेक्तेरी दे) ।

मिक्लीगर, म पु (अ मेक्ता + का गर) दे 'मेक्लीगर' ।

मिक्कर, म पु (म शिक्क + कर) शिक्क कया शिक् (स्त्री), काव, दे 'लीरा' ।

मिक्कदन, म स्त्री (हि मिक्कना) मरोच चन आकुचन २ दे शिक्कन ।

मिक्कना, कि अ (हि मिक्कीना) मकुच् (भ्वा पु प से), आकुच् (भ्वा आ से, शु प से), मक्क (कर्म) २ वलिमर्ग नन् (दि आ से) ३ अक्षी-म्यूनीभू ।

मिक्कीना, कि स (स मरोचन) मकुच् (प्रे) मक्क (भ्वा प अ), आकु (प्रे) २ मद्रिप् (तु प अ), भल्लीट ३ वलिम (वि) क । मं पु तथा भाव, मक्कोच-चन, सफरण, आकुञ्चन, मक्षप पण, अक्षीकरणम् ।

मिक्का, म पु (अ) टफ क, नाणक, मुद्रा २ पदकम् ।

—जमाना वा बैठाना, मु, शामन प्रभुव-आविपत्य स्वा (प्रे), वदा ट, अधिष्ठा (भ्वा प अ) २ प्रस्ताप प्रभाव प्रष्ट (प्रे) ।

मिक्कय, म पु (म शिक्क) अनेवामिन्, छात्र २ गुरुनानकमतानुयायिन्, *मिक्क ।

—मल, म पु, शिष्य मिक्कय, मत भद्रदाय-धर्म, नानकपथ ।

मिक्क, वि (म) अभ्युक्षित २ वृत्तमेचन, आर्द्र, विन्त्र, दे 'मीचन' ।

मिक्क, म स्त्री (स शिक्षा) उपदेश ।

मिक्कलाना } वि स, व 'मीचन' क प्रे मिक्कलाना } रूप ।

मिक्कटे, म पु (अ) तमापुवर्ती नि (स्त्री) ।

मिक्का, म पु (अ) तमापुवर्तक ।

मिक्कदा, म पु (अ) प्रणाम, नमस्कार ।

मिक्किनी, म स्त्री (अनु) द 'रगनी' ।

मिक्कपिटाना, वि न (अनु) दे 'मिक्कपिट्टा भूतना' २ मिक्क (भ्वा आ स), दोला

यत्ते (ना धा), मशी (अ आ मे) ।
 मिटी, म स्त्री (ज) नगर-री, पुर-री ।
 मिट्टा, म पु (दिश) बणिश, मगरी, दे 'मुट्टा'
 तथा 'बाली' (अन्न बी) ।
 सिट्टी, म स्त्री (अनु मीयना) बागपाटवम् ।
 —पिट्टी भूलना, मु, व्यामुह (द प वे),
 रिजर्नवा मूढ (वि) च (दि आ से),
 मन्नम् (स्वा दि प से) ।
 मिटनी, म स्त्री (म अक्षिण >) वैवाहिक-
 गति (स्त्री), गगान्मिनिता ।
 सिद्ध, म स्त्री (हि मिना) उन्माद बालुलता
 २ दे 'धुन' ।
 —पिल्ला, म पु (हि मिडी + विल्ला)
 उन्मत्त २ मूर्ख ।
 सिडी, वि (म श्रुति >) उन्मत्त, बाहुक
 २ दृढाग्रहिन ३ स्वेच्छाशरित् ।
 सितबर, म पु (अ) नादप्रदायिन आग
 लीयो नवममाम ।
 सित, वि (स) द्रव्य शुक्ल ० शुभ्र, भास्वर
 ३ निमल, स्वच्छ । म पु (स) शुक्लग्रह
 ० शुक्लपक्ष ३ मिता, शर्वरा ४ रत्नम् ।
 —पट्ट, स पु (म) हम्, मिनपक्ष ।
 —भानु, म पु (स) मिताशु, चद्र ।
 मितम, म पु (का) अर्धन, पीन, नेष्टुर्व,
 क्रौर्व ० अन्याय, अनौति (स्त्री) ।
 —गर, म पु (का) मित्रुर, क्रूरचित्त,
 अनर्थकर २ अन्यायशील ।
 —डाना, कि म, पीट् (तु), अर्द (स्वा
 प ने, प्रे) ।
 मितरी-स्त्री, म स्त्री (■ शीतल >) शीतल
 प्रखेद ।
 मितौ, म पु (का) स्थान, स्थलम् २
 निवास, स्थानम् ३ देश ।
 सिताशु, म पु (म) चन्द्र, मीम ।
 मिना, म स्त्री (र्त्) दे 'चीनी' २ दे
 'शकर' २ मक्षिका ४ चटिका ।
 —मंड, म पु (म) मधुशर्करा २ दे
 'मिमी' ।
 सितार, म पु (म मग + तार) वीणा, वल्लरी,
 विपंची, (मान तारोवाला) परिकादिनी ।
 —यात्र, म पु (दि + या) वीणावादक ।
 मितारा, म पु (का र) नारा, नारका, मं,

नक्षत्र, रादित्र, उडु (स्त्री न) २ भाग्य,
 देव ३ अतिरार, वाद्यमेद ।
 —चमकना या बलद होना, मु, भाग्यम्
 उत् + ह (अ प अ), भाग्य पुण्य कन्
 (स्वा प मे) ।
 सितोपल, स पु (म) कठिना, दे गडिया
 (म पु) स्फटिक, सितमणि ।
 मिटोपला, म स्त्री (स) शर्करा दे 'शकर'
 २ दे 'चीनी' ३ मिनासद, दे 'मिलो' ।
 सिद्ध, वि (म) निष्कन्म, यत्र पादिन, माधिन,
 अनुष्ठित, कृत ० प्राप्त, उपलब्ध ३ कृतकृत्य,
 मन् ४ अतिशुद्ध, मुनिपुण ५ दिव्यशक्ति
 युक्त ६ योगदिभूतिश्च ७ मोक्षाधिकारि
 ८ प्रमाणित, माधिन ९ निर्णीत १० शोधित
 ११ अनुकूल १२ पक्व, मृत्, आग १३ प्र
 ग्वान १४ सञ्जी, भूत कृत, उपलब्ध, १५ प्र
 म्नुत, उपस्थित । स पु (स) मुनि, ऋषि,
 पुण्यवन, योगिन्, महात्मन् २ देवयोनिमेद ।
 —करना, कि स, माध (स्वा प अ वा प्रे),
 मिध (प्रे, माधयति) मपद् (प्रे) २ मने
 वशीकृ ३ प्रमाणीकृ, मर्याकृ ।
 —होना, वि अ, मिध् (दि प अ) स-
 निष्, पद् (दि आ अ) २ मने वशीकृ
 ३ प्रमाणीकृ (कम) ।
 —हस्त, वि (म) प्रवीण, कुशल, पट्ट, निपुण ।
 सिद्धात, स पु (र्त्) राक्षान्, पूर्वपक्ष
 निरस्य स्थापित मत २ तत्त्व, मत, बाद ।
 —पक्ष, स पु (स) तर्कमगत-युक्तियुक्त,
 पक्ष मतम् ।
 सिद्धाती, म पु (र्त् दिन्) मोनामक, तारिक
 २ शास्त्रविद् ३ सिद्धान्त नियम, निष्ठ ।
 सिद्धार्थ, वि (स) आश पूर्ण, काम, हनहरण ।
 स पु (म) गौतममुद ।
 मिद्धि, म स्त्री (र्त्) निपति, समाप्ति
 (स्त्री), पूर्णता २ साफल्य, श्रुतकार्यता
 ३ योगना दिव्यशक्ति (स्त्री), विभूति (स्त्री)
 (योग की आठ सिद्धिर्वा —अणिमा रदिमा
 प्राप्ति प्राकाम्य महिमा तथा । रंशित्व न वशित्वं
 च सर्वव्यापकमायिना ॥) ४ समृद्धि (स्त्री),
 भाग्योदय ५ निर्णय ६ निश्चय ७ मोक्ष
 ८ नेपुण्य, दास्यम्,
 सिधाई, म स्त्री (हि मीधा) मरलता, श्रजुता,
 मारुत्य, आर्जवम् ।

मिथारना, ि अ (स मिथ) प्रथा (स्वा
आ थ), प्रया (अ प अ) २ प्रइ (अ
प अ), घृ (तु आ अ), दे 'भरना' ।
सिन, यिब, म पु (अ) वयम्-अयुम
(न) , दे 'उग्र' ।

मिनक, म स्त्री (स मिहा(या)णक) नामा
नामिका, अन्, मिन्(धा)ण, दे 'रेंट' ।

सिनकना, कि स (हि मिनक) मिपय सु
(मे), नामिका मुख (मे) ।

मिनेट, म स्त्री, दे 'सीनेट' ।

मिनेमा, म पु (अ) चन्चिन्, गृह शाला,
२ चन्चिन्म, बिजपट ।

सिद्यी, म स्त्री (का शीरानी) दे 'मिठाई' ।

सिपर, म स्त्री (का) मंगरीट, सेटक,
डाल, दे ।

मिपाह, म स्त्री (का) मैना, सैन्यम् ।

—गिरी, म स्त्री (का) शुद्धभवमाय,
मैनिष्ठुति (स्त्री) ।

—साहर, म पु (का) प्रधान, सेनापति
सेनाजी बनूपति ।

मिपाह्वा, म पु (का) नैतिक, योष, वीर्य,
भट २ रात्रपुत्र, बटिदट, घर, रजिन,
छान्तिरक्षण, रक्षापुत्र ।

मिपुर्दे, दे 'छपुर्दे' ।

सिप्रा, स स्त्री (म) उज्जयिनीमभीषतिनदी
विशेष ।

मिस्त, स स्त्री (अ) गुण, विशेषना २ लक्ष्य
३ स्वभाव, धर्म ।

मिस्तर, म पु (अ) शून्य, विदु, खम् ।

मिफारिहा, स स्त्री (का) गुणवर्णन, प्रशमन
२ अनुशसा, परकार्यमिदृश्यैर्मनुरोष
३ प्रशमा, पद-लेख ।

—करना, कि म, प्रशस (स्वा व से),
गुणान् वन् (सु) २ परस्परमिदृष्टे अनुरूप
(र अ अ), अनुशान (स्वा व से) ।

सिफारिशी, वि (का) गुणश्लाघिन् प्रश
सामक ।

—टट्ट, स पु (का + हि) परप्रभावव्या
धिकार, पणुप्रहनिपुत्र, गुणहीन ।

मिमन्ना, कि अ (म मयिन्) आकुच
मनुच मनिप-मह (कर्म), कुञ्चित भू, दे
'मिकुन्ना' ।

मिमेटना, कि स, दे 'समेटना' ।

सियापा, स पु (का सियाहपीठ) सविलाप,
मपरिवेदन-ना ।

सियार, म पु (म श्यान्) चतुर, दे
'बीदह' ।

सिर, म पु [स शिरम् (न)] शीर्ष, शीर्षक,
मस्तक-क, मूषण (पु), मौलि (पु स्त्री),
मुठ-ह, उत्तमंवर, आ, शिर २ अग्र, शिर,
शिरा तानु (पु न) शृङ्खल ।

—कटा, वि, उच्च, शीर्ष मस्तक शिर ।

—का घूमना, म पु, अ(आ)मर, अम मि
(स्त्री) वर्णि (स्त्री) ।

—का दई, स पु, शिर, शूल पीन, गिरी
वेदना ।

—कं बल, कि वि, अनाकशिर, अभीशीर्षम् ।

—गुपी, स स्त्री, कशिरप्रथन आयर्णामौद्
वाहिन्नीतिविशेष ।

—चटा, वि, दुर्लभ, अग्निलिप्ति, दृप्त,
उत्तमक ।

—मुडा, स पु, मुड, क्लृप्तकेश मुडितशिर ।

—आँखो पर होना, मु, शिरोधार्य(वि) वृत्त
(स्वा आ से), मध्य स्वीकार्य(वि) वृत्त ।

—आँखो पर बैठना, मु, अत्यन्त मत्त, अत्यर्थ
मन्मथ (मे)-आइ (जु भा अ) ।

—उतारना या काटना, मु, शिर उच्च
(र प अ), मरतक छुट (जु प से),
शिरस्त्रेदक ।

—गना करना, मु, बन्धन नट (जु),
वरु प्रह (स्वा प अ) ।

—चढ़ाना, मु, दृष्टा-उत्तिष्ठ-अवर्जित विधा
(जु व अ) २ अत्यन्त लज् (जु) ।

—प्रवाना, मु, नम (स्वा प अ), अभिवद्
(मे) ।

—धुनना, मु, शुच (स्वा र मे) सशीर्षता
द्वन रुद (अ प मे) ।

—नीचा करना, मु, जप् (स्वा आ मे),
लज् (तु आ से) ।

—पर, मु, मणीपये, निरुट टे ।

—पर खून सवार होना, मु, निर्वासविष्ट
(व) वृत्त (स्वा आ मे), बधोषत (वि) भू ।

—पर बटना, मु, अमर्याद (स्वा प मे),
उपनम (स्वा प अ, यद्यो के साथ) ।

—पर लेना, मु, उच्चरदादित्य उररीक,
भार स्वीकृ ।

—परस्त्री करना, सु, अनु प्रणिपा (प्रे
पालयति) सवृष (प्रे), साहय्य कृ।

—पीटना, सु, दे 'मिर धुनना'।

—भारी होना, सु, आ रेण धूर्त्वा वा पीट
(कर्म) = शिरोवेदना वृत्।

—मारना, सु, अत्यन्त प्रयत्न (भ्या आ से)
भूरि परिश्रम (दि प मे) = मपरिश्रम
अविष (दि प मे) विदि (स्वा उ ज)।

—सुँडाना, सु, परित्रय (भ्या प मे), सन्धस
(दि प मे)।

—सुँडना, सु, छुर् (भ्या प से, पु),
इत्येन अपहृ (स्वा प भ)।

—मक्रोद् होना, सु, वेदा भवलीभू, पत्नि
शीर्ष (वि) जन् (दि आ से)।

—सै ककन धौधना, सु, निषनोधन (वि)
भू मरणाय मज्जीभू।

—से पाँउ तक्र, सु, आमूलचूल, आपादशीर्ष,
आनमशिराम्।

—होना, सु, उल्हासने (ना भा), कल्होषन
(वि) भू।

बिना—पैर का, वि, निराधार, निमूँद
१ असन्न, भ्रामाग्निक, असन्न।

मिरका, स पु (का) शुक्ल, दीप्तिकम्।

सिरकी, स स्त्री (दि सम्बन्ध) शरकाट,
छुरिकापत्र ३ शरकाट निरन्धरिणी प्रतिसीरा।

मिरजनहार, म पु (स सज्जन) लघू,
जगत्कर्तृ, विभाट (सब पु)।

सिरताप, स पु (दि + का) विरीट २
सु(म)कुट दे = शिरोमणि, अग्रणी, पुरो,
श्रेष्ठ, मुख्य, प्रधानम्।

सिरनामा, म पु, दे 'मरनामा'।

मिरपेक्ष, म पु (का) उष्णीष प दे पयनी।

सिरहाना, म पु (म शिर + धन) =
शिरोधामनु (न), शिवादीना शिरो-अग्र,
भाग २ उपधान, सुगन्धिन, उपबह हर्ण,
उष्णीष, शक्ति, मण्डल।

मिरा, म पु (श शिरस) अन्, प्राग,
अग्रि, मीमा २ उर्वं शीर्ष भाग, शिवा,
शिरा ३ अत्यन्त प्रिय भाग ४ अथ
शिरस, भाग ५ अग्र, अग्रभाग ६ अग्र
णि (स्त्री) अग्रि शक्ति (स्त्री)।

सिरिच, स स्त्री (अ) शृंग नृ, दे 'पिनरारा'।

सिरोपात्र, स पु (स शिर पाद) समान
वेश प।

सिरोही, स स्त्री (देश ०) मिरोहीनगर
निर्मित राडय, शिरोनी।

सिक्र, वि, वि (अ) दे 'केवल'।

सिरी, वि, दे 'सिद्धी'।

सिल, सिला, स स्त्री (म शिना) पाषाण,
प्रस्तर, उपर २ शैल, शिलेय, महा
प्रस्तर ३ शिला, पट्ट फलक।

—चट्टा, स पु, शिलावटक, श्लेषणपाषाणी
(दि)।

मिलना, कि, अ (दि सीना) सिन् (कर्म)।

सिलपट, वि (म शिलापट्ट) सम, ममम्भ,
सपाट।

सिलपट्ट, स पु (स शिला + वटक) =
शिलारत्नकनी, श्लेषण, पाषाणी प्रस्तर।

मिलधट, स स्त्री (दि मिलना) बलि (स्त्री),
वत्सर्ग, पुटनिहम्।

सिलवाई, स स्त्री (दि मिलवाना) जीवन
मेव न स्पृति, मनि भृत्या कर्मण्या।

मिलवाना, (दि मीना) मिन् (प्रे)।

सिलमिला, म पु (अ) क्रम, आनुपूर्वी,
परपरा २ वलि शक्ति अग्नि (स्त्री),
३ शृङ्गना ४, व्यवस्था, मविधान, विद्याम
५ वशानुकम कुलपरपर।

—लेवार, कि, वि (अ + का) क्रमेण, क्रमश,
यथाक्रम, आनुपूर्वी, अनुपूर्वश।

सिलह, स पु (अ मिलाह) अस्त्र, शस्त्रम्।

—प्रातर्, म पु (अ + का) शस्त्रशाला,
अस्त्रागारम्।

—पोश, वि, सन्नद्ध, शस्त्रास्त्रसज्ज।

मिला, म पु (अ) पुरस्कार, पारितोषि
कम् २ परिणाम, फलम्।

मिना, म स्त्री, दे 'शिना'।

मिलाई, स स्त्री (दि सिलाना) मधि,
जीवन २ सीमितन, स्पृति (स्त्री) ३ दे
'मिल्ला'।

मिलानीत, म पु [स शिलानु (न)]
अद्रिज, अदम्य, दे 'शिनाजीत'।

मिलशम, म पु (म मिश्रोरम) श(म)न
रह, द्रव रस निर्वाण।

मिलिडर, स पु (अ) रम्भ वहुं (रात्रभेद)।

सिलो, सिल्लो, म स्त्री (हि निन्) शान्
पी, सानक, शागादमन् (पु) ।
सिलौट, सिलौटा, स पु (हि सिल+बट्टा)
शिना, पट्ट फलक २ दे 'सिलबट्टा' ।
सिवई, म स्त्री, दे 'सैवई' ।
सिवान, स पु (स सोमाव) सीमा, प्राग,
पर्यंत ।
सिवाय, कि वि (अ सिवा) अपि च, अपर
च २ अत्ते, विना, व्यनोप, विहाय, बगवित्वा ।
वि, अधिक, भूयस २ अपेक्षाधिक ।
सिवार-ल, स स्त्री पु (स सैवाल) सैवाल -
ल, जल, केश नीली-नीलिका, सैवाल, मल्लि-
कुन्तलम् ।
सिबिल, वि (अ) नागरिक, पौर २ सम्भ,
शिष्ट ।
—डिसभोबिडिप्स, स स्त्री (अ) मविन
पावशा ।
—सर्वन, स पु (अ) नागरिक शकुवैष ।
—सवित, स स्त्री (अ) नागरिकमेवा ।
सिमकना, कि अ (अनु) सादाद रद
(अ प मे) २ निधनासक्त (वि) कृप
(म्वा आ से) ।
सिमकी, स स्त्री (हि सिमकना) गद्गद्-द,
गद्गद्भवनि ।
—भरना या लेना, कि अ, दे 'निमकना' ।
सिहरा, म पु, दे 'सैहरा' ।
सीक, म स्त्री (स शीका) शिका, रा
काम, मृज्जनाल-सूक्ष्मकाष्ठम् ।
सीकर, स पु (हि सीक) शीकपुष्पम् ।
सीकिया, स पु (हि सीक) स्तेतोवकभेद ।
सींग, म पु (स शृङ्ग) विद्या-२, कृषिका
२ कष्टल, लट्ठा, शृङ्गमथो वाद्यभेद ।
(किमी के मिर पर)—होना मु, बैशिष्ट्य
वृत् (म्वा आ से) ।
—दिखाना, मु, अगुष्ट दृष्ट (प्रे), किन्त्य
दत्ता उपहम् (म्वा प से) ।
—निखलना, मु, (पशु) युवा वन् (दि
आ म) २ वनद् (दि प से), दे
'शतरान' ।
—समाना, मु, आश्रय शरण लम् (कर्म) ।
सींगी, स स्त्री (हि सींग) दे 'सींग' (२) ।

२ रक्तचूषाशृङ्ग, रक्तचूषा ३ शृङ्गी, मीन
भेद ।

—लगाना या सोदना, मु शृङ्गे रक्त निष्कम्
(प्रे) ।

सींचना, कि स (स. सेचन) अव्, मिच्
(तु प अ), वारिणा अप्ठु (प्रे)-अभ्युक्ष्
(म्वा प से), अभिवृष् (म्वा प से),
जल दा २ अभिप्र-स, तश्, अव-आ-नि,
सिच ३ अव-वि, कृ (तु प से) । स पु,
अव-आ, मेक-मेचन, जलप्लावन, अभिवर्षा,
अभ्युन्नग, प्रोक्षणम् ।

सींचने योग्य, वि अव-आ, सेचनीय-मेकव्य,
अभ्युक्षणीय, अभिवर्षणीय ।

सींचने वाला, स पु, सेवक, सेवक, प्रोक्षक ।

सींचा हुआ, वि, सिक्त, अभ्युक्षित, जल-
प्लावित ।

सींह, स पु (देश) शल्य, शल्यक, शल्यकी,
शल्यमृग ।

सी, वि स्त्री (हि सा) समा, हुल्या, सङ्ग्री,
सङ्ग्री ।

सी. आई. डी., स पु (अ) पुस्तकपविना,
अपसर्पच(चार)प्रतिधि, विभाग ।

सीकर, स पु (स) का, द्रप्स, पुष्प, लव,
सिंदु, विभुष् (स्त्री) २ शीकर, हुनार
३ प्रस्वेद, घर्न, स्वेदलम् ।

सीख, स स्त्री (म शिक्षा) शिक्षा, विनयन,
अध्यापन, अनुशामन, बोधन २ शिक्षाविषय
३ मन्त्रा, परामर्श, उपदेश ।

सीख, म स्त्री (प्रा) शलका, धातु-जोड़,
दब २ लघुमुष्मयष्टि (स्त्री) ३ शङ्ख,
शल्य, महावृद्धि (स्त्री) ४ (मानमर्गनाय)
शुक्लम् ।

सीखचा, स पु (प्रा) दे 'सीख' (१, ४) ।

सीखना, कि म (स शिक्षा) शिम् (म्वा
आ से), अपि ३ (अ आ अ) अभ्यस्त
(दि प मे), अभ्यमेन विद्या लम् (म्वा
आ अ)-प्राप (स्वा प अ), पठ् (म्वा
प से) । म पु, शिक्षा, अध्ययन, अभ्यास,
विद्या, अर्जन-त्याग, प्राप्ति (स्त्री) ।

सीखने योग्य, वि, शिक्षणीय, अध्येयव्य,
अभ्यमनीय ।

सोमने वाला, स पु, छात्र शिष्य, शिक्षक (क्वचित्) अध्येन विद्याधिन शिक्षाधिन ।
सीखा हुआ, वि (मनुष्य) शिक्षित, कृतविद्य,
पठित, प्राज्ञ, बुध । (विषय) शिक्षित, ज्ञान,
बुद्ध, पठित, अधीन ।

सीगा, सं पु (अ) नामन विभाग २ न्वन
माय, वृत्ति (सी) ।

सीजना, कि अ (सं निह) सापेन निष्
(दि प अ), उभ्रणा शीषच (कम),
निह (वि) भू २ (सापादिभि) शृङ्गम्,
मादव जन् (भ्वा आ अ) ३ वष्ट सह
(भ्वा आ से) ४ भ्रण शुष (दि प अ),
कणनिस्तार जन् (ि आ से) ५ शीतेन
वि, गल् (स्वा प से) ।

सीटी, न स्त्री [सं शीत्कृति (स्त्री)] शीप-
कृतकार, शीच्छम् २ शीत्करी, बाधभेद ।

—चनाना, कि अ, शीच्छम् कृ । कि स,
शीत्करी वद (प्र) ।

—तेना, सु, शीच्छन्नेन आकृ (प्रे) ।

सीठना, सं पु (म अशिष्ट) अधीन
गीत नि (स्त्री), वैवाहिकगति (स्त्री) ।

सीठनी, सं स्त्री (हि मीठना) दे 'सीठना' ।

सीठा, वि (मं शिष्ट) भरत, विरत, नारत,
स्वावहीन ।

—पन, सं पु, नीरमता, निस्त्वादाना ।

सीटी, सं स्त्री (स शिष्ट) (पत्रपुष्पफला
दीना) वच्छिष्टं, नारताद्य २ निस्तारद्वय
३ नीरमपदार्थ ।

सीङ्, सं स्त्री (सं शीत) क्लेद, स्तोम,
आर्द्रता २ किञ्चभूमि (स्त्री) ।

सीङ्गी, सं स्त्री (॥ श्रेणी) सीपान, पथ
मार्ग पक्ति (स्त्री) पदनि (स्त्री) पदवी,
अशिरोर(दि)गा, नि(नि) श्रेणी नि (स्त्री),
नि(नि)प्रय(वि)गी २ वाङ्निश्रेणी ।

—का डंढा, स पु, सोमानदद ।

—चदना, सु, कमश उत्तकै मञ्
(स्वा प से) ।

सीतल, वि, दे 'शीतल' ।

—पाटी, सं स्त्री, शीतलकट ।

सीतला, न स्त्री, दे 'शीतला' ।

सीता, म स्त्री (मं) ज्ञानवी, मेदिनी,
देहेरी, अयोनिता, भूमुना, पार्थिवा । २ फाल
रेमा, शीतलपद्मि (स्त्री), ह्मि (पुं) ।

—द्रव्य, म पु (सं न) वृषिकर्पण, उप
करणानि (न वट्ट) ।

—पति, मं पु (म) श्रीराम, राघव ।

—फल, म पु (स) दे 'शरीका' २ दे
'कुम्हडा' ।

सीत्कार, मं पु (मं) मीत्, कृतकृति (स्त्री),
आनंदपीडादिन मीच्छम् ।

सीघ, सं स्त्री (हि सीघा) सरलायाम,
अजमावति (स्त्री) २ लक्ष्यम् ।

सीघा, वि (म शुद्ध) सरल, वक्रनारहित,
पञ्च, अक्रम, प्रगुण २ निष्प्राज्ञ, निष्पट,
निच्छल ३ शिष्ट, सुशील ४ शान्तत्वभाव,
सीम्य, ५ सुन्दर, सुताम्य ६ सुबोध, सुगम
७ दक्षिण, अपमध्य । कि वि, सरल, अवन्,
अनिकम् ।

—करना, कि स, सरली प्रगुणी, कृ २ दम्
(प्रे), वशीकृ, विनी (भ्वा प अ) ।

—पन, स पु, सरलता, भक्तताजभाव
२ जानव, सीम्बता, निष्पटता ।

—होना, सरली प्रगुणी भू २ वशीभू ।
३ ममार्ग अवन् (भ्वा आ से) ।

सीघा, मं पु (सं अतिष्ठ) अतिष्ठ-अपक्व
आय, अजम् ।

सीधी तरह, कि वि, शान्त, शात्या २ सम्यक्,
सुचारुरूपेण ३ धर्मेण, न्यायेन ।

सीधे, कि वि, सरल, अवल २ दे 'सीधी
तरह' ।

सीन, म पु (अ) वृद्धय, वृक्षानविषय
२ ज(य)वनिता, अपटी ।

मीनही, सं स्त्री (अ) वृद्धयप्रदेश, प्राट्टिक
वृद्धय २ रंगसज्जा ।

साना, कि म (स मीवन) मिर् (दि प मे) ।
म पु, मवनं, सीवनं, स्मृति (स्त्री), ऊनि
वृत्ति (स्त्री) ।

—पिरोना, सं पु, मूची(वि)-कर्मन् (न)
—दिन्यम् ।

सीना, मं पु (फा) उरस्-वशु (न) ।

—गोर, वि (फा) प्रबल, दुर्दम, उदधन ।

—गोरी, सं स्त्री, औदधत्य, बलात्कार ।

—यद्, मं पु (फा) आंगिक-कर्म, दे 'अंगिया' ।

—ठभार कर चलना, सु, माटीय, चल्
(भ्वा प से) ।

सीने से लगाना, सु, आलिंग (स्वा प से),
वरुह (स्वा उ म) ।

सीनियर, वि (अ) वरीयम्-ज्यायम (जी
स्त्री) । म पु, गुन्तन ।

सीनेट, न स्त्री (म) वृद्ध प्रधान-महा, ममा ।

सीने योग्य, वि शीवनीय, सीविन्य,
मीवनाह ।

सीने घाला, म प मेवक मीवनचर्तु, मीवक ।

सीप, स पु [स शुक्ति (स्त्री)] शुक्तिहा
मुका, नान् (स्त्री) मय (स्त्री) रणे, नैकिक
प्रमथा, सौमित्र ।

—सुत, स पु (म शुक्तिनुत) मानिक,
मुत्ता, शक्त-जयीन् ।

सीपा, म स्त्री, दे 'सीप' ।

—मा मुँह निकल आना, सु अत्यन्तदुर्लभ
अत्यधिकश्री (वि) भू ।

सीमत, न पु (स) केलेपु धर्मन् (न),
दे 'मति' । २ अस्थिमणि ।

सीमतिनी, स स्त्री (स) नारी, द ।

सीमन्तोद्भवन्, म पु (स न) गन्धिते
पठेऽग्रे वा माने करणीय सत्कार (धर्म) ।

सीमात, म पु (म), सीमा, सीमन् (स्त्री),
उपाय, पर्यंत, प्रातः २ ग्रन्थमीमा ।

सीमा, स स्त्री (म) नामन् (स्त्री) अवधि,
आधात, प्रातः, पर्यन्त, मर्यादा २ दे
'सीमन्' (१) ।

सीमित, वि (स) परि-मित, उन्मत्त मया
दिन ।

सीया हुआ, वि, स्यूत, स्यून ।

सीमें, स पु (न) वज्रचूणम् ।

सीर स पु (स) हल, हाल २ मय
३ अवधूत । स स्त्री, क्षेत्रपते अरुन्धट
भूमि (स्त्री) ।

—ध्वज, स पु (स) जनक २ वल्लभ ।

—मैं, सु, मभूय, एवम् मिलित्वा ।

सीरम, स पु (अ) रत्नरस ।

सीरा^१, म पु (का शीरह) मधु शर्करा, वनध,
दे 'चादनी' २ लम्बिका ।

सीरा^२, वि (स शीतल) शीत, शिशिर,
उष्णत्वान्य २ शान, मौनित्वा ।

सीर^३, स स्त्री (स शीतल) कन्द, स्तेन,
आर्द्रता ।

सीरा^४ वि (स शीतल) आर्द्र, विलम्ब ।

सीरा^५, म पु (म शीर-ठ) मुनीना जीव
नोपायभेद, मन्थस्त्रिकानेकधान्योच्चयनम् ।

सीवन, स पु (स न) सेवन, स्युति (स्त्री),
सूचीकर्मन् (न) २ सीवन, (स्युति) सधि-
३ लिंगमण्यध गूत्रम् ।

सीस, म पु (म शीर्ष) दे 'मिर' ।

—फूल, स पु (हिं) शीर्षफूल, शिरोभूषण
भेद ।

सीसा, स पु (स सीस) सीसक, सिन्दूर
कारण, अप (पु न), महाबल, बहुमल,
सुवर्णादि, चान् ।

सीसे का डर, म पु, सीमकालम् ।

सीसी, स स्त्री (अनु) सीय, कार-कृति,
(स्त्री) कृत, शर्षपीडाशीनादिजनितध्वनि ।

सीह, स पु, दे 'सीह' ।

सूँघनी, म स्त्री (हिं सूँघना) नत्थ, दे
'नमवार' ।

सूँघाना, कि प्रे, वनाश्री 'सूँघना' के प्रे रूप ।

सुदर, वि (म) रचित, सुषम, चाह, शोभन,
कान्त रुच्य, मज्जु, मज्जुल, मनोहर, मनोह,
मनोरम, (मनो)हारि, रमणीय, रामणीयक,
बभ्रु(धृ)र, पैरा(म)ल, वाम, (अभि)राम,
नन्दित, सुनव, वल्लु, मुरूप, अभिरूप,
दिव्य २ शुभ, भद्र, मंगल ३ उत्तम, श्रेष्ठ,
उत्कृष्ट । ('सु' ने भी रूप बनाने हैं, जैसे-
सुमुगम् ।)

—काद, स पु (स पु न) लकावतिमुदर
पवनमण्डित्व रचिररामायनस्य पञ्चम कादम् ।

सुदरता, स स्त्री (स) मोन्दर्य, रुचिरता,
सुषमा, वानि (स्त्री), मज्जुता, मज्जुलत्व,
मनोज्ञता-त्व, रमणीयता, अभिरूपता, लवण्य,
शोभ्य, रूप, अभिरुच्य, श्री-रश्मी (स्त्री) ।

सुदरी, स स्त्री (स) रूपलावण्यसंपन्ना नारी,
रामा, वामा, रोचना, वरागना, वरवर्णिनी,
सिता । वि (स) रूपवती, मनोशा, रुचिरा ।

सुबा, स पु (म सूचक) श्लोहवेधनी,
शान्ती, शोषनी ।

सुबुल, स पु (का) सुगणितमभेद,
सुबुलम् ।

सु, उप. (स) सौन्दर्योत्कर्षमद्रत्नादिवोचक
उपसर्ग (उ सुपुव इ) ।

सुकचाना, कि अ, दे 'सुकुचाना' ।

सुकचना, कि अ, दे 'सिकुटना' ।

सुकर, ॥ (सं) सु-मुख-अयत्न, साध्य निष्पाद्य कार्य, अनायास ।

सुकरता, सं स्त्री (स) सु-मुख, साध्यता, सौकर्य, सुकरत्वम् ।

सुकर्म, सं पु [सं-मन् (न)] सु-सर्व-उत्तम पुण्य-श्रेष्ठ-कर्मन् (न) कृत्य कार्यम् ।

सुकर्मो, वि (सं-मिन्) सुकर्मन्, सुकृत्य, सत्कृत्य, सुकर्मशील ३ धर्मात्मन्, पुण्यात्मन् ३ सराचारिन्, सद्गुण ।

सुकवि, सं पु (सं) कविश्च, सुकाव्यकार ।

सुकाल, सं पु (स) सुसमय २ सुभिसन् ।

सुकुमार, वि (स) अति, कोमल, मृदु, मृदुल, प्र-सन्न, परि, रेलव, इलक्षण, ललित ।

स पु (सं) सुन्दर-उत्तम, बालक ।

सुकुमारता, सं स्त्री (स) सुकुमार्य, मादवं, पेल्वता, मृदुलता, तनुता ।

सुकुमारी, सं स्त्री (स) सुन्दर श्रेष्ठ-कन्या = दुर्दिद (स्त्री), पुत्री ३ वि (स) वीर्य लाली, तन्वगी, तनुगात्री ।

सुकुल, वि (स) मङ्गाकुल, अभिजन, सदनं राज, कुलीन । सं पु (सं न) सु-मद, वर ।

सुकुलीन, वि (स) दे 'सुकुल' वि ।

सुकृत, सं पु (सं न) पुण्य, सत्तु-पुण्य कार्य-कृत्य-कर्मन् (न) वि (सं) मीमा ण्यवद, भाग्यशालिन् ३ धार्मिक, पुण्यात्मन् ३ सुविहित ।

सुकृति, सं स्त्री (स) पुण्य, सत्तुत्वम् ।

सुकृती, वि (सं निन्) धार्मिक, पुण्यवान्, सत्तुर्मन् ३ मीमाण्यशालिन् ३ श्रेष्ठ, सुद्विन्द ।

सुकेशी, सं स्त्री (स) सुन्दरवेशवती नारी, सुकेशिनी ।

सुख, सं पु (सं न) सुद (स्त्री), सुदा, सुदितता, प्रीति (स्त्री) हृष, आप्र, मोद, संमद, शमन् (न), श्(सा)न, आ, नद, आ, नन्सु प्र, मद, भोग, रमस, निवृत्ति (स्त्री) मौल्य, जोष ।

—कर, वि (सं) सुख-कार-कारिन्-कारक अवह-दायक, सुखकर ।

—की नींद सोना, सु, सुख बीज् (स्वा प से) भस् (स्वा प अ)

—चैन, सं पु (सं + हि) दे 'सुख' ।

—दायी, वि (सं-यिन्) सुख, द प्रद-दायक दातृ-आवह, दे 'सुखकर' ।

—देना, कि स, सुखपति (ना भा), सुखी क, सुख दा, निर्वृत-सुखिन क ।

—धाम, सं पु [सं-मन् (न)] स्वा, स्वर्लोक ।

—पाना, कि अ, सुखमनुभू सुखावते (ना भा), निर्वृत-सुखित (वि) स्वा (स्वा प अ), सौख्य लम् (स्वा भा अ) ।

—पाल, सं पु (सं + हि पालकी) सुख शिदिका ।

—पूर्वक, कि वि, (स-क) सुखेन, सौकर्येण, सुख, लीलया, अनायासम् ।

—लूटना, सु, सुखायते (ना भा), यथेष्टमुप भुन (ह आ अ) ।

—साध्य, वि (सं) सुकृत, अयत्नसाध्य । सुखात्, सं पु (सं न) सुखप्रधान नाट्य रूपकं वा २ प्रहसर्न (सा) ।

सुखामल, सं पु (॥ न) स्वामन, सुभा गमनम् ।

सुखाना, कि स, बनाओ 'सुखना' के प्रे रूपः सुखार्थी, वि (सं-यिन्) सुखेयिन्, सुखेऽनुभ- वसकामिन् ।

सुखी, वि (सं-यिन्) सुखित, निवृत्त निश्चिन्, स्वस्थ, सुस्थ, विशदेग, शांत, आनदिन, सुदित, शीतचिन्, प्रसन्न, सानंद, सद्गुण ।

सुखेच्छा, सं स्त्री (सं) सुख-अभिगाय कामना-वांग ।

सुख्यात्, वि (सं) प्ररपन्, प्रसिद्ध, विद्युत् ।

सुख्याति, सं स्त्री (सं) सुखीति विभुति (स्त्री), वरास (न) ।

सुगध, सं स्त्री (सं पु) सु, वाम, सुरभि, सु, गंध, सौरभस्व, अनोद, परिमन् ।

सुगधि, सं स्त्री (सं >) दे 'सुगध' सं स्त्री । वि (सं) दे 'सुगधित' ।

सुगधित, वि (सं) सुरभि, सुगधि, सुगन्ध, आमोद परिमन्, वद-सुत्, सुवातिता, सराग, इष्टगन्ध, प्राणनपण, सुगन्धित ।

सुगम, वि (सं) उपगम्य, वदसर्पणीय, सुगम्य, सुख, अगम्य-उपसर्ग्य ३ सुषोष, सुखदेय ३ सुवर, सुसाध्य, सरल ४ सुलभ, सुप्राप्य, सुप्राप ।

सुगमता, स स्त्री (म) मौम्यै, सुसाध्यता ।
 सुगम्य, वि (स) दे 'सुगम' (१) ।
 सुग्मा, म पु (म) 'जुक' दे 'सोता' [सुग्मी
 (स्त्री) = शुर्मी] ।
 सुग्रीव, म पु (म) सुकठ, वानरेन्द्र,
 श्रीराममय । वि, सुगठ, सोमनस्यीव ।
 सुघट, वि (स) सुकट, सुसमाध्य २ सुदर,
 मनोहर ३ सुषटित, सुरचित, सुरेय ।
 सुघटित, वि (म) सुरचित, सुनिर्मित ।
 सुघट, वि (स) सुगट सुदर, सुनेय, सुषटित
 २ निपुण दक्ष, प्रवीण ।
 सुघट(वा)ई, स स्त्री (हि सुघट) सुदरता,
 सुकृपता २ चातुर्य, कौशलम् ।
 सुघटता, स स्त्री, दे 'सुघटई' ।
 सुघटी, स स्त्री (स सुघटी) सुशुभ, काल
 समय सुहृत्तम् ।
 सुघर, वि, दे 'सुषट' ।
 सुषित, वि (म सुषित) सावकाष्ठ, निम्नो
 पार २ निश्चित ३ मावधान ।
 सुषेत, वि (स सुषेतम्) अवहित, सावधान,
 प्रमादशून्य ।
 सुषन, स पु (स) आर्य, सत्यवत्,
 भद्रजन, सज्जन दे ।
 सुषन, म पु (स स्वपना) आरम्य पारि
 वारिक, पना मवधिन, बाधना (सव बहु) ।
 सुजन्ता, म स्त्री (म) मौजन्त्य, भद्रता,
 सज्जनता दे ।
 सुजाति, म स्त्री (स) सखल, सदवश,
 वरावय । वि (म) अभिजात कुलीन दे ।
 सुजान, वि (स सुजान) प्राज्ञ, बुद्धिमत्,
 पटित, विद्व २ प्रवीण निपुण । स पु, पति
 २ प्रणयिन्, रत्न ३ परमात्मन् ।
 सुजाना, कि म वनाश्री 'सुजाना' के प्रे रूप ।
 सुजाना, कि म, वनाश्री सुजाना' के प्रे रूप ।
 सुडि, वि [म सुडु (अन्य)] सुदर, वर,
 उत्कृष्ट २ अतिशय, बहु । कि वि, सामग्र्येण,
 संपूयतया, मन्यक ।
 सुडपना, कि म (अनु सुड-सुड) मगड
 सुडशब्द पा (भ्वा प अ)-आचम (भ्वा
 प मे) ।
 सुडरुना, कि म (अनु सुडसुड) सशब्द
 सत्वर च निगु (तु प से) २ सशब्द श्वसु
 (अ प से) ।

सुडौन, वि (म सु+हि टौल) सुरूप, सुरेय,
 मदानार, सदाकृति, सुन्दर, सुवदित ।
 सुडंग, म पु (स स+हि ङग) सुरीति
 सुरुति (स्त्री) । वि, सुरूप, सुदर ३ सदवृत्त ।
 सुत, स पु (सं) आत्मन, सन्तु, पुत्र दे ।
 सुतनु, वि (स) सुगाव, सुन्दरशरीर । सं
 स्त्री (म) कोमलगी, रुशगी, सुन्दरी ।
 सुतराम्, अन्य (स) अत २ अविदु
 ३ अगत्या ४ अत्यत ५ अवश्यम् ।
 सुतली, सं स्त्री दे 'सुतली' ।
 सुता, स स्त्री (स) पुत्री, दुहित (स्त्री),
 तनुजा ।
 —पति, स पु (स) जामातु (पु), दे
 'दामाद' ।
 सुतारी, स स्त्री (स सत्कार >) आरा,
 चर्म, प्रमेदिका प्रमेदिनीवेधनी, *चर्म, सूची
 सीवनी ।
 सुतार्थी, वि (स थिन्) पुत्र-सन्तान-सन्तति
 अपत्य, अभिधापिन्-कामिन् इच्छुक ।
 सुतिनी, स स्त्री (सं) पुत्रवती, सुतवती,
 प्रजावती, सन्तानवती, ससन्ताना ।
 सुतीक्ष्ण, वि (स) अत्यन्त-अत्यधिक, शित
 शान-सीव प्रखर । दे 'सीक्ष्ण' । स पु (स)
 अगस्त्यभ्रातृ, ऋषिविशेष । २ शोभाजन,
 तीक्ष्णगण, दे 'सहिजन' ।
 सुत्यन, म स्त्री (देश) सुत्थणा, *सुत्थान,
 जपावस्त्रभेद ।
 सुथना, स पु } दे 'सुत्यन' ।
 सुथनी, स स्त्री }
 सुथरा, वि (स स्वच्छ वा सुत्थ >) स्वच्छ,
 निर्मल, विमल ।
 —पुन, स पु, स्वच्छता, नैर्मल्यम् ।
 सुदर्शन, वि (स) शोभन, सुरूप, सुन्दर,
 प्रियदर्शन [सुदर्शना नी (स्त्री)] । स पु
 (स) सुदर्शनवक्रम् ।
 —चक्र, स पु (स न) विष्णुचक्र, सुनाम,
 श्रीकृष्णस्याग्रविशेष ।
 —चूर्ण, स पु (स न) चरीषधभेद ।
 सुदामा, स पु (स-अन्) श्रीकृष्णसख । वि
 (स) सुदात ।
 सुदिन, स पु (सं न) शुभ, दिन दिवस
 पुण्याहम् ।

सुदी, स स्त्री (स सुदि अन्य) शुक्लमिति,
पक्ष-अद्वयस ।

सुदूर, वि (स) अनि-सु-वद् दूर-दूरवतित्व
दूरस्थ, अतिविप्रकृष्ट, दवीयम्, दविष्ट । कि
वि (स न) अविदुर रे ।

सुदृढ, वि (स) सुस्थिर, सुनिश्चल, सुधीर
२ अति, गाढ-धन-वीकम्, दुर्भय ३ अतिव
लिप्त, सुशक्तिमत् ।

सुदेह, वि (स) सुतप्त, सुकाय, सुन्दर । स
पु (स) सुन्दरशरीरम् ।

सुध, स स्त्री [सं शुद्ध (शुद्धि) >] स्मरण,
स्मृति (स्त्री) २ सज्ञा, चैतन्य, उपलब्धि
(स्त्री), प्रति, बोध, चेतना ३ अवधान,
वृत्तज्ञानम् ।

—सुध, स स्त्री, चेतना, चैतन्य, सज्ञा ।

—दिलाना, मु, स्मृ (प्रे) ।

—म रहना या विमरना, मु विम्ह (कम) ।

—विसराना या विसारना, मु, विस्मृ (स्वा
प अ) ।

—रखना, मु, सावधान जागरूक (वि) स्वा
(स्वा प अ) ।

—लेना, मु, वृत्तान्तज्ञा (क् उ अ) ।

बै—, वि, नि मद्ध, मूर्च्छित २ प्रमादित् ।

सुधना, कि अ (हि सोधना) शुध् (दि प
अ) निर्मलीभू ।

सुध-सुध, स स्त्री (स शुद्धि >) दे
'सुध' (१) ।

—जाती रहना या मारी जाना, मु, गतने
तन-नष्टसङ्गति सङ्ग-मूर्च्छित (वि) भू ।

—टिकाने न रहना, मु, विक्षिप्त (वि) जन्
(दि आ से) ।

सुधरना, कि अ (हि सुधना) दोष-वृद्धि,
रहित होन (वि) भू, परि-वि-म, शुध (दि
प अ), शुद्ध निर्दोष (वि) पन् (दि आ
से), प्रतिमोक्षा (कार्य) ।

सुधवाना, कि प्रे (हि सोधना) शुध् (प्रे),
पू (प्रे), दोष-मूल, हीन कृ (प्रे) ।

सुधार, स पु (स) चद्र दे ।

सुधा, मं स्त्री (सं) पीयूष, अमृत दे २ मरु
रंद्, पुष्परस ३ मधु (न) ४ जल
५ दुग्ध ६ विष ७ चूर्ण, दे 'चूना' ।

—कंठ, मं पु (स) विष, बोक्ल ।

—कर, म पु (सं) सुधा, घट दोषिति
(पु) घर आधार मयूत रश्मि-योनि (पु)
—स्मृति (पु)-निधि, चद्र ।

—कार, स पु (म) सुधाजीविन्, पलगट,
लेपक ।

—घाँत, वि (म) सुधा-चूण, मित-क्षालित
धवन्ति ।

—निधि, स पु (म) दे 'सुधाकर' ।

—भोजी, म पु (स मिन्) सुधासुत, देव ।

—स्पर्शी, वि (म पन्) अमृत पीयूष, उपम
मदुश, समुधुर ।

सुधाना, कि प्रे, दे 'सुधाना' ।

सुधार, स पु (हि सुधारना) दोष, इरण-
अपनयन, स, शोधन, सत्करण, प्रति, समा
धानम् ।

—करना, कि म, म, शुध् (प्रे), निर्दोष
दोषरहित रिधा (जु उ अ) कृ प्रति, समाधा,
संस्कृ ।

सुधारक, म पु (हि सुधार) सशोधक,
दोषहारिण, सत्कारक ।

सुधारमा, कि म (हि सुधारना) दे 'सुधार
करना' ।

सुधित, वि (स) सुव्यवस्थित २ सुनम्यक्,
पक्व मिद स्थित ।

सुधी, स पु (म) पटित, विद्वत् (पु),
२ चतुर, सुबुद्धि ।

सुनना, कि म (म श्रवणं) सु (स्वा प
अ, शृणोति), आ-समा-श्रणं (चु), निशाम्
(दि प मे वा प्रे निशामयति), श्रवण
गोचरीकृ २ अवधा (जु उ अ) ३ भर्त्ता
जावचनादि श्र । मं पु, श्रवण, आ-समा,
वर्णन, निश्र(श्र)मनं, श्रुति (स्त्री) ।

सुनने योग्य, वि, श्रोतव्य, श्राव्य, आ-समा,
कणनीय, निशमनीय ।

सुनने वाला, म पु, श्रावक, आ-समा, श्रणं
विनृ-नोन् (पु) ।

सुन लेना, मु, श्रुत्वन यदृच्छया अलक्षित
वा श्रु ।

सुना हुआ, वि, अत आ-समा, वर्णित, श्रवण
गोचरीकृत ।

सुनी अननुजी कर देना, मु, श्रुत्वापि न अवधा
(जु उ अ)-उपेभ् (स्वा आ से) ।

सुनय, म पु (सं) सु-उत्तम-श्रेष्ठ, नीति (स्त्री) ।
 सुनयन, म पु (स) मृग । वि (मं) सुनोचन ।
 सुनयना, म स्त्री (स) नारी । वि (स) सुलोचना-नी ।
 सुनवाई, म स्त्री (हिं सुनना) श्रवण, निरा (शा) म्रम २ व्यवहारदर्शन, कार्य, अवेशण विचारणम् ।
 सुनयान, वि (स शून्यस्थान >) निर्जन, विपन्न, विविक्त, एवान्त २ उच्छिन्न, उद्ध्वस्त, पर्वर । म पु, नीरवता, नि स्तब्धता ।
 सुनहारा री, वि, दे 'सुनहला' ।
 सुनहला, वि (हिं सोना) हेम, सौवर्ण, सुवर्ण-वाचन हेम हिरण्य, वर्ण-आम ।
 सुनाई, म स्त्री (हिं सुनना) दे 'सुनवाई' (१, २) । १ न्याय ।
 सुनाना, कि दे, व 'सुनना' के प्रे रूप ।
 सुनार, स पु (हिं सोना) सुवर्ण हेम, कार, बलाद, नाहिम, मौष्टिक, हेमल ।
 सुनारी, स स्त्री (हिं सुनार) सुवर्णकार, व्यवसाय वृत्ति (स्त्री) २ सुवर्णकारपत्नी ।
 सुनावनी, स स्त्री (हिं सुनाना) मृत्तुमना चार, निधनवृत्तम् ।
 सुनीति, म स्त्री (स) सुनय, दे २ भ्रुव जननी, उत्तानपादपत्नी ।
 सुनी सुनाई, स स्त्री (हिं सुनना-सुनाना) किंवदन्ता, अनप्रवाद ।
 सुनेत्र, वि (स) सु-सुन्दर, नयन-नेत्र-लोचन ईक्षण ।
 सुष्ठ, वि (स शून्य >) चेष्टा क्रिया-चैनना स्पन्दन, शून्य हीन, जडीभूत, नि स्तब्ध, निक्षेष्ट, निवां, निश्चल । स पु (स शून्य) किं, खम् ।
 सुष्ठत, म स्त्री (अ) दे 'स्वतना' ।
 सुष्ठा, म पु (स शून्य) किं, खम् ।
 सुष्ठी, स पु (अ) यवनसमप्रदायविशेष ।
 सुषक, वि (म) सुपरिणत २ सुसिद्ध, सुश्रुत, सुश्राप ।
 सुषय, म पु (स) मत्स्य, समार्ग, सुपत्न्या (पु एक) २ सदाचार, सद्वृत्तम् ।
 सुषय्य, स पु (स न) पथ्य, स्वास्थ्य प्रदाहार ।

सुपना, म पु, दे 'स्वप्ना' ।
 सुपरि टेंडेंट, सं पु (अ) पर्यवेक्षक, अध्यक्ष ।
 सुपर्ण, स पु (स) गरुड २ कुक्षुट ३ किरण ४ खग ।
 सुपात्र, सं पु (स न) योग्यपन्न, अधिकारी व्यक्ति (स्त्री) ।
 सुपारी, सं स्त्री (सं सुप्रिय >) क्रमुक, पूग, क्रमुक पूग, फल, ताबूलम् ।
 —पाक, सं पुं (हिं + सं) रौष्टिकौषधमेद ।
 सुपास, स पु (देश) सौख्य, सुख दे ।
 सुपुत्र, स पु (स) सद-उत्तम-श्रेष्ठ, पुत्र ।
 सुपुत्री, म स्त्री (स) सद-उत्तम-श्रेष्ठ पुत्री ।
 सुपुर्द, स स्त्री, (का) निक्षेप, न्याम ।
 —करना, कि स, निक्षिप् (तु प अ), न्यस (दि प से) ।
 सुपूत, स पु (स सुपुत्र, दे) ।
 सुपूती, स स्त्री (हिं सुपूत) सुपुत्रत्व २ सुपुत्रा ।
 सुस, वि (स) निद्रित, निद्राण, शयित २ जडीभूत, निक्षेष्ट, नि स्तब्ध ३ सुदित, सुकुलित ४ कर्णविमुख ५ अलस ।
 सुसि, स स्त्री (स) निद्रा, स्वप्न, स्वाप, शयन, रावेण २ सुसागना, भगवज्जता, स्तम्भ ३ तारा, निद्रानुता-स्वप्न ।
 सुप्रतिष्ठा, स स्त्री (स) सुख्याति-सुविभूति (स्त्री) ।
 सुप्रतिष्ठित, वि (मं) सुकीर्तिमत्, सुविख्यात ।
 सुप्रतीक, वि (सं) सुदराग, रूपवत्, सरूप, सुन्दर, सरूप २ धार्मिक । स पु (स) शिव २ कामदेव ३ दिग्गजविशेष ४ यक्ष विशेष ।
 सुप्रदर्श, वि (सं) सुदर्शन, रूपवत्, सुन्दर ।
 सुप्रसिद्ध, वि (सं) सुविश्रुत, प्रख्यात ।
 सुफल, सं पु (म न) सत्परिणाम २ सुन्दर फल । वि सफल, कृतार्थ २ सुन्दरफलयुक्त ।
 सुबड, म स्त्री (अ) प्रात, दे ।
 सुबास, स स्त्री, दे 'सुनाम' ।
 सुबाहु, स पु (स) राक्षसविशेष । वि (म) दृढ-सुन्दर-बाहु-सुज ।
 सुबुक्, वि (का) लघु, अल्प-लघु, भार २ सुन्दर ।
 सुउदि, स स्त्री (सं) मुमति (स्त्री),

सुषिपा, सुषी (स्त्री) । वि (म) सुदि
धी, नन्द, पत्ति, प्रय सुष ।

सुवृत्, स पु (अ) प्रमत्ता, माधन, उपपत्ति
(स्त्री) ।

—उहरीरी, स पु (अ) उहृयमत्ता, सधन
पत्रम् ।

सुभ वि दे 'पुभ' ।

सुभग, वि (म) सुन्दर, मनोरम २ मौमा
व्यवत्, धन्य ३ प्रिय, प्रियजन ४ सुख आनन्द,
प्रद ५ वनात्प, देवयशस्वि ।

सुभगा, वि (स्त्री) सुन्दरी, रूपवती २ जीवित
पतिता, मन्त्रा । स स्त्री (म) पात्रप्रिया,
मनूयज्ञना ।

सुमह, स पु (स) सुमैजिक, सुयोध ।

सुमह, स पु (स) सुविद्वत् (पु) पंडितवर ।

सुमह, वि (स) भाग्यवत् २ श्रेष्ठ । स पु
(स न) मौमव्य २ कल्याण ।

सुमहा, स स्त्री (सं) महृष्यमयीनी,
भवनस्य भार्या, भूमिमनुजननी ।

सुमाग, वि (स) स्त्री, भाग्यवत्, सुमाय ।
स पु (स) मौमाव्य, सुदैवम् ।

सुमागी, वि (म सुमा) धन्य, महामग,
सौ, मन्त्रवत्, सुमाय ।

सुमाव्य, वि (म) दे 'सुमागी' । स पु
(स न) मौमाव्य, दे ।

सुमान, मव्य (अ सुवहान) माधुसु
वाद्यम् ।

—अकला, धन्योऽसि परनेधर । (अक्षदादि
वापकं वीक्ष्यम्) ।

सुमाव, स पु (स स्वमव, दे) ।

सुमापित्त, वि (म) सुमपुत्त । स पु (म
न) सुदि (स्त्री), करवचनम् ।

सुमिप्त, स पु (स न) सुवत्, अश्रुनिद्रा,
बहुवचनम् ।

सुमाता, स पु (स) मौक्यं एतमग
२ मन्त्रवत्, सुयोध ३ सुस मौन्दम् ।

सुमृपित्त, वि (म) मन्दक उल्लङ्घन, सुमटित्त ।

सुमगल, वि (म) सुमागलिक, सुमत्, शिव,
मन्त्र ।

सुम, स पु (स) सुव, विव, सुव दे ।

सुमति, सं स्त्री तथा वि (म) दे 'सुमति'
सं स्त्री तथा वि ।

सुमन, स पु (स ममनम्न, स्त्री बहु)
पुप, सुम २ सुविद्वत्, सुहृदयम् (म पु)
देव २ पत्ति ३ गोधूम । वि (स) सुहृदय,
सुविद्वत्, दयालु ।

—चाप, स पु (म सुमनधार) वानदेव ।
सुमनस, स पु, तथा वि दे 'सुमन' मं पु,
तथा वि ।

सुमरन, स पु, दे 'स्मरण' ।

सुमरना, स स्त्री (हि सुमरना) (मत्तविद्य
निपुणिकावनी) वपमात्मिका ।

सुमापरा, स पु (म सुमापरा) मन्त्रवत्
पुमान्मार्गेनहादीवविद्येव, सुवर्मा, भूति (स्त्री)
दापन ।

सुमार्ग, स पु (स) दे 'सुपय' ।

सुमिता, स स्त्री (म) दस्यवधानी २ मार्त-
व्यजननी ।

—वदन्, स पु (म) उहृमग २ सुकुल ।

सुमुक्, स पु (मं न) सुवदन, शोभनाननम् ।

वि (म) सुवदन, सुन्दरानन २ सुन्दर
३ प्रसन्न ४ सुपातु ।

सुमुखा-न्वा, स स्त्री (स) सुवदना-नी, सुन्द-
रानना-नी २ सुन्दर ३ वपम् ।

सुमेर-र, स पु (सं सुनेर) मेर, हमाद्रि,
रत्नवानु, सुपात्य २ उच्चश्रुव ३ वपन-
लाभा इत्युपदिष्टा ।

सुयथा, स पु [स यथा (न)] सुतीति
एवमिति सुविद्वति सुप्रमिति (स्त्री) ।

सुयाग, स पु (म) योग्यवित्त, मन्त्र,
मन्त्र-वचनम् ।

सुयोग्य, वि (सं) सुवमर्थ, सुयुक्त, सुकुशल,
मन्त्रिणां अनुपुग ।

सुयोधन, मं पु (म) दुर्वाधन ।

सुरग, वि (स) शोभन-सुन्दर-वर, वर-रग
रम् । वि, सुन्दर, रुद्रादि, सुव्य ।

सुरग, स स्त्री (मं सुर(ह)ग-या) सुर(ग)
रम्, मन्त्र-सुमुमौन-माग २ मन्त्रि,
माधन्य नुर(ह)ग-या, मानिक ३ व(मा)नी
नि (स्त्री), आकर ४ योग्यपाणिनी सुरगा
(यवमन्) ।

—उद्याना, वि स, सुवर्गं सुवर्धं सुवृत् (त्रे) ।

—ज्याना, वि स, उपलिं कृ वपना मन्
(म् ६ म) ।

—मिळाना, सु, समुद्रे पथि वा सुखा न्यम्
(दि प मे) निद्रिप (तु प ग) ।

सुरगिया, म पु (म सौरगिक) सुद्ध
(गा)कार ।

सुर, स पु (म) अमर, देव देवता दे
२ मूय ३ पटित ।

—गन, म पु (म) देवदिप २ ऐरावत ।

—गाय, म स्त्री (म गौ) कामधेनु (स्त्री) ।

—गायक, म पु (म) गयर्ब ।

—गिरि, म पु (स) मुमर, मरपर्वत ।

—गुर, म पु (म) गृहस्पति ।

—चाप, म पु (स) सुरदद्र धनुम (न) ।

—जन, स पु (म) देवगण ।

—नन, वि (स) सजन सजन २ चतुर ।

—सर, म पु (म) कल्पवृक्ष, सुर, द्रुम
पादप ।

—वार, म पु (स न) देवदाक (न) ।

—दिप्, सं पु (म) असुर, राप्म २ राहु ।

—धाम, सं पु [स-मय (न)] स्वर्ग, नाक,
देवलोठ ।

—धुनी, म स्त्री (म) गगा, देवनादी ।

—धूप, म पु (स) राह ।

—धनु, स स्त्री (म) कामधेनु ।

—धन, स पु (स) इन्द्रधन, सुरकेतु ।

—नाथ, म पु (म) सुर, नायक पति पालक
इन्द्र इश ।

—नारी, म स्त्री (म) सुरदेव, वधू (स्त्री)
वाला अगना ।

—पथ, म पु (सं न) अकाश शम् ।

—पुर, म पु (स न) देवपुरी, अमरावती ।

—मदिर, म पु (सं न) देवल्य, मदिरम् ।

—मणि, म स्त्री (म पु) चिन्तामणि ।

—रिपु, म पु (न) दानव, राक्षस ।

—लोक, म पु (स) स्वय, देवल्य ।

—रत्ना, म स्त्री (म) तुलसी, वृद्धा ।

—राणी, म स्त्री (म) देवराणी, मरुतभाषा ।

—श्रेष्ठ, म पु (म) इन्द्र २ शिव ३ विष्णु
४ गणेश ५ धर्म ।

—नरि, } म स्त्री (म-सरि) यगा,

—सरिता, } सुरमिधु ।

—सरी,

सुर, म पु (म स्वर) ध्वनि, नाद, स्वन
दे 'सुर' ।

—मिलाना, कि म, तुल्यस्वरं ॥

वे—, वि विस्वर ।

वेमरा कि वि विस्वर, अपस्वरम् ।

—म सुर मिलाना, मु, यादूकमि तुप (प्रे)
या उपच्छन्द (चु) ।

सुरत, स स्त्री [स स्मृति (स्त्री)] स्मरण,
दे मुष (१३) ।

—सँमालना, सु, सावधान-अवहित (वि) मू ।

सुरत, स पु (स न) काम-केली, क्रीडा,
संभोग, मैथुन, रतिक्रिया, निधुवनम् ।

ग्लानि, म स्त्री (स) रतिनारीकल्पम् ।

सुरता, म स्त्री (स) देवत्व, अमरत्वम् ।

२ देव-सुर, ममूह-समुदाय ३ परती, भाया ।

सुरति, म स्त्री, दे 'सुरत' (१-२) ।

सुरभि, म स्त्री (स पु न) सुगंध, मौरभ,
सु, वाम । (म स्त्री) गौ (स्त्री) २ काम

धेनु (स्त्री), सुरभी ३ पृथिवी ४ सुरा ।

सुरभित, वि (स) सुरभि, सुगंधित दे ।

सुरभी, स स्त्री (म) सुगंध, दे २ कामधेनु
(स्त्री) ।

सुरमई, वि (फा) यामुनरग, मोवीरवर्ण,
आश्रय-कृष्ण-नील ।

सुरमा, स पु (फा-मह) यामुन, सीवीर,
स्रोतोऽवन, कपोतावन, कृष्ण अजनम् ।

—दानी, स स्त्री, यामुन-सीवीर-अजन,
आधना ।

—लगाना, कि स, (नेत्रयो) मौवीर निविशु
(प्र) या श (प्रे) अपयति ।

सुरम्य, णि (म) सुदर, दे ।

सुरम, वि (स) मधुर, स्वादु २ सरस, रस
सुक ३ सुदर ।

सुरमा, म स्त्री (म) हनुम-मार्गावरोधक
नायकम् (स्त्री) २ राधनीविशेष ३

दुर्गा ४ नदीविशेष ५ तुंगसी ६ ब्राह्मी ।

सुरसुराना, कि अ (अनु सुर+सुर>)
सुप (स्वा प अ), मन्द निभूत च गन्

२ कइति अनुम् ३ सुरसुरायते (ना था) ।

सुरसुरी, म स्त्री (मं) सुरसुर-मपण, ध्वनि-
२ कइ-कइति-खजू (स्त्री) ३ को भेद ।

सुरक्षित, वि (स) सन, स्वविन, सुत्रान,
सुराण, सुपान्ति ।

सुरागना, स स्त्री (स) देवी, देवपत्नी,
अमराणा ३ अपसरा, स्वर्वद्या, नाकनतकी ।

सुरा, म स्त्री (स) मदिरा, वरणी, हला, कादवरी, मद्य दे ।

सुराज, म पु, दे 'सुराज' । दे 'सुरा' ।

सुराग, म पु (तु) अन्वेषण, अनुसंधान २ पद चिह्न लक्षण सूत्र संधानम् ।

—लगाना कि म चिह्नं शृंग (तु) या अन्विष (दि प से) ।

—लेना, कि म निभूत निरीक्ष (भ्वा आ मे) ।

सुरागाय, स स्त्री [मं सुरगी > (स्त्री)] चमर-समर [-ती (स्त्री)], त्रिविष्टपदेशीय सकलजो गोमेद ।

सुरागी, स पु (का सुराग) च(न)र अपसर्प दे 'भेरिया' ।

सुराही म स्त्री (सं) *लब्धवीचपगी, *सुराधि ।

—दार वि (अ + का) सुराधिसन्ध ।

सुरीला, वि (हि सुर) सु-मधुर स्वर स्वन कल, मनुक कणमधुर (राग, कठादि) २ सु मधुर, कठ (गायकादि) ।

सुरसुर वि (का सुरसू, दे) ।

सुरधि, स स्त्री (म) उत्तम, रवि अभिरवि शील २ भुवभक्तस्य विमात् (स्त्री) । वि (स) सुरधि-उत्तमाभिरवि, विविष्ट ।

सुरूप, वि (स) सुन्दर, रूपवत् २ सुस्मिन् ।

स पु (म न) बराकृति (स्त्री), सुन्दराकार ।

सुरेन्द्र, म पु (स) देवेश, इन्द्र, सुरेश-वर ।

—चाप, म पु (स) इन्द्रधनुम (न) ।

सुरज, वि (का) रक्त, रौलो, हिन शोय, शोणित, अरण, कषाय, कल्युन ।

—होना, हि अ., रक्तवर्त-लोहितावते (ना था) ।

—रू, वि (का) तैलस्निग्ध, वाणिमन् २ प्र निष्ठित, संमानित ३ कुतकाय ।

—रुद्र, म स्त्री, कृतवर्षाणा २ यशम (न), वीति (स्त्री) ३ समान, प्रतिष्ठा ।

सुरज, म पु (का) वीज, पुत्र, चक्र, चक्रवाल, रथांग, रथागनामक ।

—का पर लगाना, सु, बैलक्षण्यविशिष्ट (वि) इत् (भ्वा आ मे) ।

सुरगी, स स्त्री (का) रक्तिमन्-लौहिनिमन्, अरणिमन् (पु), शोणित, रक्तता २ (रक्ता दीना) शीर्षक ३ रश्मि, रक्त ४ इष्टराचूर्ण ५. रक्तवर्ण ।

सुलक्षण, मं पु (सं न) शुभ भद्र-सु-लक्षण चिह्न-लक्षण (न) । वि (म) शुभ, शिव, मागलिक, सुलक्ष्मयुत २ भाग्यवत्, धन्य ।

सुलगना, कि अ (अनु सुलसुल >) (मधुम) ज्वन (भ्वा प से) दह इत् (कर्म), दीप् (दि आ से) २ अत्यंत मनस् (कर्म), दु छावते (ना था) ।

सुलगाना, कि स (हि सुलगाना) उदीप-प्रज्वल (प्रे) सम्, रश् (न आ से) २ मत्प (प्र), पीठ (तु) ३ उतिष् उदीप (प्रे) ।

सुलक्ष्मना, कि अ (हि उलक्ष्मना) उदग्रध् (कर्म) विशिष्य (दि प अ), सरलीभू ।

सुलक्ष्मना, कि स (हि सुलक्ष्मना) उदग्रध् (क प से) विशिष्य (प्रे), सरलीकृ, चरिता अपनी (भ्वा प अ) २ विवाद शय (प्रे ना(शा)प्रयति) ।

सुलक्ष्माव, स पु (हि सुलक्ष्मना) विशिष्य, मोचन, सरणीकरण, ज निलदापनयनम् ।

सुलतान, म पु, दे 'सुलतान' ।

सुलफा, सं पु (का) तदालुभेद, *सुलफ २ दे 'वरस' ।

सुलभ, वि (स) सुलभ्य, सुप्राप्य प २ सरल, सुगम ३ मामा'य, साधारण ।

सुलभता, म स्त्री (स) सुलभत्व, सुप्राप्यता २ सरलता ।

सुलह, स स्त्री (अ) मरय मैत्री, लौहार्द २ शान्ति (स्त्री), विष्णुबामाव ३ संधि, संधान ४ प्रसादन, ममापनम् ।

—नामा, स पु (अ + का) मभिपन्नम् ।

सुलाना, कि स, व 'सोना' व प्रेरणार्थक रूप ।

सुलूक, स पु, दे 'सलूक' ।

सुलेमान, स पु (अ) सुल्मान, देवदूतो नृपविशेष २ चर्चविविधेष ।

सुलेमाना, वि (अ) सुलेमानसंबन्धिन् । सं पु (अ) सिन'शो'य २ श्वेतकृष्ण प्रस्नार भेद ।

सुलोचन, वि (मं) सुनयन, सुनेत्र । सं पु (म) दैत्यविशेष २ शृंग ३ चकोर ।

सुलोचना, वि स्त्री (मं) सुनयनीना । सं-स्त्री (म) मेरुनाम्पत्नी ।

सुलतान, सं पु (अ) नृप, राजन्, सन्धान् ।

सुलताना, म स्त्री (अ) सम्, राणी, नृपपत्नी ।

मुस्तानी, वि (अ) राजकीय = रत्नवर्ण ।
स स्त्री, रात्रि, पद अधिकार रत्न = वीरो
यवसभेद ।

मुचर्ण, स पु (स न) स्वर्ण, काचन,
दे सोना । २ धन, विचय । वि (म)
सुदर-रम्य, नयन रंग २ हेमवत् ३ कुलीन,
अभिजात ।

—कार, स पु (स) दे 'सुनार' ।

मुधाम, स पु (स) मुगध दे = सु,
सदन भवन-गृह, सुदर, निवास निलय ।

मुविचार, स पु (स) सद्विचार २ सुनिर्णय,
सुन्याय ।

मुविधा, स स्त्री, दे 'सुभाषा' ।

मुवृत्त, वि (म) मद्राचारिन् मधुरिच
२ गुणिन् ३ साधु ४ सुचन्द्रोकिशिष्ट (वाच्य) ।

मुवेश प, वि (स) सुदरवेषण, सुवसन,
सुवेशि (वि)न् = सुन्दर, मरूप ।

मुशिक्षा, स स्त्री (स) मच्छिक्षा सुदर,
अनुशासन-अनुशिष्टि (स्त्री) ।

मुशिक्षित, वि (स) सुविनीत, न्युत्तम,
सुपाठित, सुपदिष्ट २ शिष्ट, सन्तुष्ट प्रबुद्ध ।

मुशील, वि (म) मद्र-उत्तम, शाल-त्वभाव
प्रकृति, शीलवत्, सभ्य, दक्षिण = मन्त्रिन्,
सदाचारिन् ३ नम्र, विनीत ४ मरुत्, शत्रु ।

मुशीलता, स स्त्री (स) शीलवत्ता,
दाक्षिण्य, सम्यक्ता, शिष्टता = मन्त्रारिय,
सद्गुणि (स्त्री) ३ नम्रता ४ आनन्दम् ।

मुश्री, वि (स) अति, सुदर-रम्य-मनोहर
२ महा-वृद्ध, धन, सुसपन्न, सुमधुद ।

मुपमा, स स्त्री (म) शोभानिधाय,
सुदरता, दे ।

—शाली, वि (म) अनिसुदर, सुपमिन ।

मुपिर, स पु (स न) विविध, छिद्र = वश्या
दिवाचम् । वि (म) सच्छिद्र, मरुध ।

मुपुस, वि (म) गाढ अवित्तुप्त निद्राण,
गाढनिद्रामग्न ।

मुपुसि, स स्त्री (स) सु-गाढ, निद्रा-स्वप्न
स्वाप शक्ति (स्त्री) = शयन-सवेश २ अज्ञान
(वे) ३ चित्तवृत्तिभेद (यो) ।

मुपुसु, वि (स) शिशुपिपु, निद्रा, आकुल
आतुर ।

मुपुम्मा, स स्त्री (स-णा) इडागिलामध्वगा
मध्यनाडी, नाडी, वृद्धवत् ।

मुष्ट, वि (म दुष्ट का अनु) शुभ, भद्र
२ सुदर ।

मुष्ट, अव्य (म) अत्य त, सानिध्य २ सम्यक्,
सुचारु ३ यथायोग्य, अवितथम् ।

मुष्टुता, स स्त्री (म) मंगल, शिव २ सौभाग्य
३ सौ दयम् ।

मुसगति, स स्त्री (म) सु-मद्र साधु-उत्तम,
सय सगम-ममागम-सगति ।

मुसजित, वि (म) सुप्रसाधित, सुमङ्गित,
सुश्रुषित, सुपरिष्कृत स्वरङ्कृत ।

मुसतावा, कि अ (का मुस्त) विश्रम्
(दि प से), आविरन् (स्वा प अ),
कायां निवृत् (स्वा आ से), अम अपनी
(स्वा प अ) ।

मुसमय, स पु (म) सुकाल २ समिश्रम् ।

मुसर रा, स पु (स श्चुर) दे 'ससुर' ।

मुसरार-रु, स स्त्री (म श्चुरालय) दे
'ससुराल' ।

मुसरी, स स्त्री (हि ससुर) दे 'ससुरी' ।

मुस्त, वि (का) अलस(क), आलस(स्य)-
कार्य-उद्योग, विमृग, मद, मध(द)र, शीतक-
तृद, परिश्रुत परिमार्ज २ निर्बल ३ निस्तै
जत्क, हतप्रय ४ मद्र, गति-वैग ५ स्थूल मद,
वृद्धि ६ रण, दे 'रोपी' ।

मुस्ताना, कि अ, दे 'सुस्ताना' ।

मुस्ती, स स्त्री (का) आलस्य माध, लघोण
कार्य, विमुक्तता-देश २ तैन्नीहीनता, निष्प्रभता
३ रोग ।

—करना, कि अ, समय व्यर्थ नी (स्वा प अ)
अलस निर्मापार-उद्योगशून्य (वि) स्था
(स्वा प अ) = विन्द (स्वा आ से),
चिप(र)यति (ना था) ।

मुस्तिपति, स स्त्री (म) सुदर-मुपद्र, स्थिति
(स्त्री) अवस्था-दशा । २ मुख, मंगलम्
३ स्वास्थ्यम् ।

मुस्तिधर, वि (स) अचल, निश्चल २ सुदृढ,
धीर ।

मुस्वर्ण, वि (म) कोमल, मृदुल, चिकण-
शृण्ण ।

मुस्मिता, स स्त्री (स) स्फेरमुक्षी, प्रसन्न-
प्रफुल्ल, सुखी-आनन्द-वदना ।

सुहवत, स स्त्री, दे 'मगत' ।

सुहाग, स पु (सं सौभाग्य) सुमनस्य, पतिः
स्त्रीत्व, २ वरस्य नैवातिशयम्, दे नामा
३ वैवाहिक मंगलगीतम् ।

—पिटारा, सं पु, *सौभाग्यपिटक ।

—पूरा, स पु, सौभाग्यपुट ।

सुहागा, सं पु (सं सुमग) प्रकण-न, कनकसार,
रसशोधन, विट, लोहद्राविन्, स्वणपाचक ।

सुहागिन स्त्री, स स्त्री (हि सुहाग) सधवा,
पतिवती, सनाथा, समनृता, चोवत्पत्निका ।

सुहाता, वि (हि सुहाना) शोभन, सुखरत्न ।

सुहाता, वि (हि सहाना) सहनीय, सख ।

३ कोण, मनुष्ठा (जल) ।

सुहाना, कि अ (स शोभन) विराज शुभ
(भ्वा आ से) २ कच् (भ्वा आ से),
श्विकर धृत् (भ्वा आ से) ।

सुहावना, वि (हि सुहाना) शोभन, प्रिय
सुमग, दर्शन, सुन्दर दे । [सुहावनी (स्त्री) =
शोभनी] । कि अ, दे 'सुहाना' ।

—पन, स पु, सौन्दर्य, मनोहरता ।

सुहृद्, स पु (सं) सखि, मित्र, वयस्य ।

सुहृदय, वि (सं) श्विच, सुमनस्क २ सह
दय, स्नेहशील ।

सूँघना, कि स (सं शिञ्ज) शिष्ट (भ्वा प
म), आ-उपा-स, प्रा (भ्वा प अ), प्राणे
द्विदेग गध ग्रह (भ्वा प मे) २ अत्यल्प
मह (भु) ३ (सपदि वा) दम् (भ्वा प
अ) । स पु, उपा-आ, श्रण, श्रानति (स्त्री)
गन्धग्रहणम् ।

निर—, सु, शिरनि आ-मना-उपा, प्रा ।

सूँघनी, सं स्त्री (हि सूँघना) नस्य, दे
'नसवार' ।

सूँघने योग्य, वि, श्रान्त्य, श्रेय, शिष्यनीय ।

सूँघने वाला, म पु, शिष्य, श्राव, गध
प्रादक ।

सूँघा सं पु (हि सूँघना) विश्वरूद्र, मृतया
दुःख, अवेष्टित २ *निविष्टान् ३ च(पा)-
र, अपमर्ष ।

सूँघाहुआ, वि, निरित, प्रप, प्राण, गृहीत
गध ।

सूँद, म स्त्री (स सुद) शुभा, दण्ड, शुदार,
रति, रम्य, करि, कर ।

सूँव, सं पु [सं शि(शि)सुमर] अङ्गुलि, ।

असि, पुच्छ पद, शिमुक, मदानम,
उणवय, उडु(ख)पिन् ।

सूँसूँ, म स्त्री (अनु) *सूँ, कार-वृत्ति
(स्त्री) ।

—करना, कि अ, नामिकया सूँ क अथवा सूँ
सूँष्वनि क ।

सूँबर, म पु [स सू(शु)बर] वराह,
रोमश, निरि, दष्टिन, झोट, पौन-दलरद,
आयुध, शूर, कोर, मेदन, घोणिन्,
पोनिन् २ (गाली) अधमनन, गृन्तु ।

—का नाम, स पु, श्वर-वराह, नामम् ।

सूँबरी, म स्त्री [स सू(शु)बरी] कोणी,
वराही, शूर ।

सूँआ^१, म पु (स शुक्) कीर, दे 'तोना' ।

सूँआ^२, म पु (स सूआ) सूचक, स्थूल
वृहत्, मूर्च्छी ।

सूँई, म स्त्री (स सूची) सूचि (स्त्री),
व्यधनी, सूचि, सू(से)वनी २ घटीमूर्च्छी ।

—पिरोना, कि ॥, सूची समूहा क या मृग
सनावयति (ना था) ।

—का काम, स पु, सूचीकर्मन् (न) ।

—का नासा, स पु, सूची, जिह्व-प्रमुग
पाश ।

—की शोक, म स्त्री, सूक्ष्म, सूचिकाग्रम् ।

—तागा, स पु, *सूची, मृग टोरम् ।

—का भाला या फावदा बनाना, सु, अनु
पर्वणीक, अत्युक्तया वर्ण (भु) ।

सूँर, म पु (सं) दे 'सूँर' ।

सूँरी, म स्त्री (॥) दे 'सूँरी' ।

सूँक, सं पु (सं) वेदमन्त्र क्रूर, समूह
२ उत्तमरवन ३ महावाक्यम् । वि (सं)
साधु रति, मय्यनुक ।

सूँकि, म स्त्री (सं) सुभाषित, सुन्दरकवन,
सुन्दर-वचन-वचन-वचि (स्त्री) ।

सूँस, वि (सं) अति-अत्यन्त, अत्यन्त-अत्यन्त
दम-अत्यन्त-अत्यन्त सुख २ दुर्वध, गहन, गूढ
३ अति-अत्यन्त विरल पदम् ।

—कोण, म पु (सं) अनुरोध ।

—द्वर्जयर्थ, म पु (मं) अनुवीक्षण
वर्णम् ।

—शिक्षिता, म स्त्री (मं) कुशाग्रबुद्धि (स्त्री)-
प्रत्युत्पन्ननिबन्धम् ।

—दर्शी, वि (म दिन्) कुशाग्र, बुद्धि-भानि, सूक्ष्मदृष्टि, गूढज्ञ, सुविवक्षण, प्रत्युत्पन्नानि ।

—भूत, म पु (स न) अपवाहन-काशादि भूतम् ।

—मति वि (म) तीक्ष्ण-तीव्र-कुशाग्र, बुद्धि-भानि ।

—शरीर, स पु (स न) सूक्ष्म-लिंग, देह-शरीरम् ।

सूक्ष्मता, सं स्त्री (स) सूक्ष्मत्व, अति, लघुता-अल्पता-सोकता २ सु-अग्नि, ननुता विरलता, कक्ष्यता ३ दुर्बोधता, गहनता, गूढता-स्वम् ।

सूचना, कि अ (म शोषां) शुप (दि प न), शोष-शुच्यता या (अ प अ), शुष्क निजल-नीरम (वि) मू २ कान्ति प्रभा, हीन (वि) मू ३ नश (दि प वे) ४ कृश दुबल (वि) जन् (दि आ से) ५ भी (जु प अ), सर (स्वा प अ) ६ विगृ (कर्म), झै (भ्वा प अ) । स पु, शुप, शा, शोषा, शुशीनी (स्त्री) ।

सूना, वि (स शुष्क) निर्जल, निरुदक, अरम, विरम, नीरस, बान २ निष्प्रभ, कान्तिहीन ३ नष्ट, ध्वस्त ४ कुशाग्र, दुबल विशीर्ण, स्थान ६ परुष, बठोर, निदर ७ केवल, शुद्ध । स पु, अनवृष्टि (स्त्री) अवर्षण, अवप्रा(प्र)ह २ नश, तीर-कृल ३ निर्जलस्थान ४ शुच्यतम-सु ५ बाल-बाना) कानभेद, शोष ६ दौर्लभ्य, कुशागता ७ भा, दे 'मी' ।

—यदना, कि अ, दृष्टि-वर्ष, विषय-विरोध दृष्ट (स्वा आ से) ।

—जवाब देना, मु, स्पष्ट निराकृ वा प्रत्याख्या (अ प अ) ।

सूखा हुआ, वि दे 'सूखा' (१०) ।

सूयकर काँटा होना, मु, अतिवृत्त-अन्विष्टी (वि) जन्, अत्यतश्चि (स्वा प अ) ।

सूखे खेत लहलहाना, ॥ सुदिवसा आन ।

सूचक, स पु (स) सूचोचि (स्त्री), दे 'मू ३' दे 'सूअ' ३ सू(नी)चिक, मौचि, तुत्रवाय, सूभिद, दे 'दरनी' ४ सूचपर ५ कवक ६ दुहुर ७ सर, विशासनाक ८ सुप्त, चर-चर ९ सिद्धन,

कौतप १० शिक्षक । वि (स) शापक, बोधक, निर्देशक निदर्शक ।

सूचना, स स्त्री (म) विज्ञापना, आ, ख्यापना, विज्ञप्ति (स्त्री) २ दे 'सूचनापत्र' ३ वार्ता, संदेश, ज्ञान, बोध ।

—पत्र, स पु (स न) विज्ञापन विज्ञप्ति-बोधना-प्रसिद्धि, पत्रम् ।

सूचनीय, वि (स) बोधनीय, ज्ञापनीय, ज्ञापयितव्य, ज्ञावेदनीय ।

सूचि, स स्त्री (स) दे 'सूरं' ।

सूचित, वि (स) ज्ञापित, बोधित, आ, ख्यापित, कथित, प्रकाशित ।

सूची, स स्त्री (स) दे 'सूई' २ अनुक्रमणी णिका, नानावलीनि (स्त्री) परि, गणना-सख्या ।

—कर्म, स पु [सं-यन् (न)] कल्पभेद ।

—पत्र, स पु (स न), सूचि(ची) पुस्तक-पत्रकम् ।

—भेद्य, वि (स) सीवनी-भेद्य २ धन, निविड (अन्धकार) ।

सूनन, स स्त्री (हि सूजना) शोष, शोर, गड ।

सूजना, कि अ (फा सोमिश) सशोष-सशोक (वि) सजन् (दि आ से), धि (भ्वा प से), र्काय (भ्वा आ से) । स पु, दे 'सूनन' ।

सूननी, म स्त्री (फा मौजनी) कुपभेद-सूचिनी ।

सूजा, स पु (स सूवा >) दे 'सूआ' २. वैधनी, वैधनिका ।

सूजाक, स पु (फा) मूरा, वष्पावात, रजिबरोभेद ।

सूना हुआ, वि, सूज, र्काय, मशोर, शोषयुक्त ।

सूनी, स स्त्री (स सूचि >) कणिक ।

सूस, ॥ स्त्री (हि सूजना) कलना, उद्गावना २ बोध, ज्ञान ३ दृष्टि (स्त्री) ।

—चूष, स स्त्री, बुद्धि-भानि (स्त्री) ।

सूक्ष्मता, कि अ (स सुध्यानम्) दृश-रक्ष (कर्म), अवमस् (भ्वा आ से), प्रतिभा (अ प अ) २ (मनसि विचर) अविर्भू अयवा उत्तर (दि आ अ) ।

सूट, स पु (अ) आदल, वैद्य (प) परिधान २ सनवेद्य-य ।

—केम्, स पु (अ) वैश(प)कोष ।

सूटा, स पु (अनु) (तमास्तुप्रमृतीनां) धूम, कर्ष कृष्टि (स्त्री) ।

सूत^१, स पु (स मृज) तनु, डोर, शुल्ब २ मूत्र, वयोपवीत ३ मेमला, वाची ।

—धार, स पु, दे 'वद्व' ।

सूत^२, म पु (म) वर्णमकरजातिभेद, क्षत्रि वाय ब्राह्मणीसूदन २ मारवि, वष्ट, सप्त, हयवध ३ चारण, वदिन, वैतालिक ४ पुरा णवक्तु पौराणिक । [सूती (स्त्री)] वि (स) प्रेरित २ उत्पन्न ।

—पुत्र, स पु (म) सारथिन २ सारवि ३ कर्ण ४ कीचक ।

सूतक, स पु (म) जन्माशौचम् २ मरणा शौचम् ३ सूर्यचन्द्र, ग्रहण, उपराग ।

सूतली, स स्त्री (हि मूल) मूत्र, डोर, शुण, रज्जु (स्त्री), शुल्ब, शुभ्रम् ।

सूति, म स्त्री (म) प्रमृति (स्त्री), प्रमज्ज, जननम् २ सन्तति (स्त्री), सन्तान ।

—गृह, स पु (स न) दे 'सूतिकागृह' ।

—मारुत, स पु (सं) प्रसव प्रमृति, पीडा जेदना, भूतिवान् ।

सूतिका, स स्त्री (म) तप्त जव, प्रसूता, दे 'गृहा' ।

—गृह, स पु (सं न) अरिष्ट, भुक्तिकावार, प्रसवभूति, गृह भवन आवास गेहम् ।

सूती, वि (हि सूत) कार्पास, कार्पासिक, मूलमूलक पित्रु-पितृनु, निर्मित मवधिम् ।

—कपडा, म पु, कार्पास, फाल, बादर, लूणवरम् ।

सूत्र, स पु (म न) तनु, डोर, शुल्ब, शुभ्र २ यज्ञ, मूत्र-उपवीत ३ प्राचीनमानभेद ४ रेखा पा, रेखा ५ मेमला, वाची ६ नियम, व्यवस्था ७ समार मन्त्रित्वचन ८ कारण, मूल ९ संधान दे 'सुता' ।

—कट, स पु (मं) आच्छा २ कपोत ३ यजन, पत्ररीट ।

—कर्म, स पु [म-मृत् (न)] दाहकर्मन्त्र, तपशिल्प २ हृष्यकर्मन्त्र, इष्टशान्वास, बास्तु निर्माणम् ।

—कार, स पु (स) गृह, कर्तृ प्रणेत्वरचयितृ इय ।

—ग्रथ, म पु (स) सूत्ररूपेण रचित पुस्तकम् ।

—धार, म पु (म) नाटकीयकथामुत्रसूचक प्रधाननट, नाट्यशालान्यवस्थापक, सूत्रभृत् २ तन्त्रम्, रथमार ३ इन्द्र [धारी (स्त्री) सूत्रधारपत्नी] ।

—पात, स पु (स) उपक्रम, प्र, आरम्भ । सूयनी, म स्त्री, दे 'सूत्यन' ।

सूद^१, म पु (का) लाभ, प्राप्ति (स्त्री), आय, पण्य, अर्थ २ वृद्धि (स्त्री), वाढ्य, कला कावित्रा, कारिका, वार्त्तिका ।

—त्वाना, कि स, वाढ्य ग्रह (क् प से) ।

—खोर, म पु (का) कुशी(शीपा)द हक, कुमीदिन, वाढ्यिक, वाढ्यिन, वृद्ध्याजीव ।

—खोरी, म स्त्री, कुमीर, कीमाष, वृद्धि, जीवन्-जीविका ।

—दर सूद, म पु (का) वनवृद्धि (स्त्री) ।

—पर देना, कि म, कुसीद ह ।

—पर लेना, कि स, वृद्ध्या कण ग्रह ।

—वडा, म पु, हानिलाभी, आयापायी ।

दे—, वि, वृद्धिकला, रहित २ निष्फल, व्यर्थ ।

सूद^२, म पु (स) पाचक, सुपकार २ नय जन, दे 'भावी' ३ मारध्य ४ अपरप ५ पापम् ।

सूदन, वि (स) नाशक, धावक ।

सूदी, वि (का) सवादुष्य, सन्ध (दर्श आदत्त वा) ।

सूना, वि (म सू व) निर्जन, विजन, विविक्त, जन, हीन शून्य २ रिक्त, -विरहित, -हीन, वक्षिक, तुष्ट, निर- । स पु (स न) एवान, विविक्त, निर्जनस्थानम् ।

—धन, म पु, सू-यता, विजनता, विविकता २ रिक्ता ३ एवान ।

सूनु, म पु (मं) पुत्र २ अनुत्र ३ दीहित्र ।

सूप^१, म पु (स श्रं पै) प्रफोटननी, दुष्य, श्रं ।

सूप^२, म पु (स, वि अ यप) पक्व-मिष्ट, दानीलि (स्त्री) २ दानीरत ३ मरमं भ्यजन ४ मृद ।

—कार, म पु (मं) गृह, भौदनिक, औपमिक, पात्र(कु)क, अक्षयवार ।

- सूक, स पु (अ) दे 'ऊन' ।
 सूक्री, स पु (अ) बरनमप्रदायविशेष ।
 वि शुद्ध, पवित्र ।
 सूवा, स पु (अ) प्रातः प्रदेश, देशभाग ।
 सूवदार, स पु (अ + का) प्रातः, अविपति
 शमन-अयुध, भोगपति २ मेनाधिका
 रिभेत् ।
 सूवेदारी, स स्त्री (अ + का) भोगपतित्व,
 प्राताविपतित्व २३ प्राताधिपति, पद
 कमल (न) ।
 सूम, वि (अ श्रुम=अशुभ) कृपण, मितपच
 दे 'कजूम' ।
 सूम, स पु (म) नल, नीरम् २ दुग्ध,
 क्षीरम् ३ गगनं, आकाश शून्य ।
 सूय, स पु (म पुं न) सोम-मोमलता,
 निष्पीडन संपीडनम् २ यज्ञ, धाम, मेघ,
 मय ।
 सूर, स पु (म) सूर्य २ अर्कवृक्ष
 ३ पटित ।
 सूर, स पु, दे 'शूर' ।
 सूर, स पु, दे 'सूर' ।
 सूरन, स पु (म सूय, दे) ।
 सूरत, स स्त्री (का) रूप, आकार, आकृति
 (स्त्री) २ मौदर्य, छवि (स्त्री) ३ युक्ति
 (स्त्री), उपाय, विधि ४ दशा, अवस्था ।
 —निराना, सु, प्रकटति (ना धा) समुद्र
 रेत आया (अ प अ) ।
 —बनाना, सु, वेपयिषुन (प्रे) २ अन्यस्य
 रूप ग्रह (क प मे) ३ (चु) ३ अग्नौ
 प्रकटयति (ना धा), विटव (चु) ४ विज
 त्ति (भ्वा प से) ।
 —विगाडना, सु, वदन विवर्णं वन (दि
 आ से) ।
 —विगाडना, सु, सुयं विरूपयति (चु) कुरूप
 विधा (जु उ अ) २ दड (चु) ३ अप
 अवमन (प्रे) अकृता (क प अ) ।
 —शक्ल, स स्त्री (का + अ) आकृति (स्त्री) ।
 सूरदास, स पु (म सूर्यदम्) हिन्दीभाषाया
 श्रीकृष्णभक्तो महाकविविशेष २ अथ,
 प्रणवमुष्क ।
 सूरन, स पु [स सू (श्) रण] अशौच, ओल
 स, वानरि, सुवृत्त, बहुरुच्य, कद, दे
 'शमीकद' ।

- सूरमा, स पु (म सूरमानिवृत्त) शूर,
 वीर, योष, मट, विक्रमशील ।
 —पन, स पु, शौर्य, वीरत्व, विक्रम, माहसम् ।
 सूरमागर, स पु (सं) भक्त सूरदामरचित
 श्रीकृष्णलीलावर्णनानामक काव्यविशेष ।
 सूरार, स पु (का) छिद्र, विल, विवर,
 २ धन नष्टि (स्त्री) ।
 —करना, कि म, छिद्रयति (ना धा),
 समुक्त (तु प से) ।
 —हार वि, सच्छिद्र, मरम् ।
 सूर्य स पु (स) सूर, आदित्य, भास्कर,
 जिन प्रभा विभा दिवा, कर, भास्वत, विवस्वत,
 उष्ण निग्म चड, रश्मि, कर, अर्क, मानण्ड,
 माहर, नरणि, मित्र, सवित्र, अगु-मरीचि,
 मन्त्रि, मदलाशु, रवि, दिन अह, पति,
 तपन, पथिनीवल्लभ, दिनमणि, सप्त-अश्व-
 सप्ति तापन, रादिवा, मणि, पनग, ग्रहाण,
 समोनुद ।
 —दात, स पु (स) सूर्य-तपन, मणि,
 रविमान, सूर्यारमन, अग्निगर्भ अर्क-दीप्त,
 उपल ।
 —ग्रहण, स पु (स न) सूर्योपराग,
 मयप्रद ।
 —घडा, स स्त्री (स सूर्यघटी) शकुपत्रम् ।
 —ननय, स पु (स) सूर्य, पुत्र-सुत-नदन,
 कण २ शनि, शनैश्चर ३ यम ४ सुग्रीव
 ५ त्रिभिन्नो (दि) ।
 —तनया, स स्त्री (त्रि) सूर्यपुत्रा, सूर्या,
 यमुना मानु-जा-तनया ।
 —मडल, स पु (त्रि न) उपनयन, परिधि,
 परिवेश, मडल, सूर्यविवरम् ।
 —सुखी, स स्त्री (सं) सूर्यलता, आदित्य
 भक्ता, वरदा, अर्ककान्ता, भास्करेश, अकहिना ।
 —सुग्री का फूल, स पु, सूर्यकमल, वरदा
 पुष्पम् ।
 —रश्मि, स स्त्री (स प) रवि-किरण-
 पाद सर ।
 —लोक, स पु (सं) सौरमुवन, लोक
 विशेष ।
 —वश, स पु (म) रविकुलम् ।
 —वशी, वि (स शिन्) सूर्यवश्य, रविकुलज ।
 —वार, स पु (मं) रवि-आदित्य-वार
 वापर ।

—सक्राति, स स्त्री (स) रविमक्रमणम् ।
 प्रातः का—म पु, बाल-रवि-संघ-अर्क ।
 सूर्यास्त, म पु (स) अस्त, अस्तमन,
 निम्नोच्च, भानोरस्ताच्छलगमनं २ दिनात्,
 सार्यवाल ।
 —होना, कि अ, सूर्य अस्त इया (अ प
 अ) गम् ।
 सूर्योदय, स पु (सं) मानूद्यम २ प्रातः
 काल ।
 —होना, कि अ, सूर्य उदय (अ प अ)
 उदयम् ।
 सूर, स पु, देखो शूल ।
 सूर्यी, स स्त्री (स शूल-ल) शूला, तीक्ष्णाग्र
 स्मृणा २ शूलारोपण, प्राणद्वयप्रकार ३ वध
 पाशस्थाना, दे 'पौंसी' ४ दण्डपाशवत्, कंठ
 उद्वध्य वात, उद्वधन ५ प्राण-वृत्त-रुद्ध ।
 —सदाना या—देना, कि स, चले आरुह्ये
 आरोपयति) २ उद्वध्य व्यापद (मे) या हन्
 (अ प अ) ।
 —सदाने या—देनवाला, दण्डपाशिक,
 वधक *शूलारोपन ।
 सूर, सूरमा, स पु (स शिशुमा) दे
 सूरम् ।
 सूर्या, वि (हि सीहता) रक्त, छोण, लाहित ।
 सूरजन, स पु (स सजन) उत्पादन, निर्माण,
 रचन २ सृष्टि-उत्पत्ति (स्त्री) ३ मोहनम् ।
 —हार, स पु, सृष्ट, उत्पादक, विधान ।
 सूरजना, कि स (स सजन) सज् (तु प
 अ), उत्तर (मे), विधा (तु प अ) ।
 सृष्टि, स स्त्री (स) ससार-उत्पत्ति (स्त्री)
 —सर्ग निर्माण-रचना २ जगत् (न), सत्वर,
 चराचर वस्तुनाम २ प्रकृति (स्त्री), दे
 'सुदरत' ।
 —कता, स पु (सं तूँ) सृष्ट, वैधस, विधान,
 विशिष्ट, मदान् (सव पु) २ शब्द ।
 सैक, स पु (हि सैकना) उ(क)म्भ, त(ना)-
 प, उण्ण ण-आ, उण्णत्ता २ तापन, उष्णी
 वरण, तापेन अंगारेण ॥ ममनं ३ प्र-स्वेदनं,
 गर्भमेव, कामणा तापन-उष्णिकरणम् ।
 सैकता, कि स (सं श्रेयण) कामणा अंगारे
 वा अस्त (तु उ अ) २ तप (मे), उष्णी
 क ३ (उष्णजलादिभि) स, सिच् (तु प
 अ) सय क, प्र, सिद् (मे) ।

और—, सु, सौन्दर्य अवलोक (भवा आ से,
 तु प से) ।
 भूप—, सु, आप भव (स्वा आ मे) ।
 सेंटर, स ॥ (अ) वेन्द्र, मध्यविन्दु, मध्य-
 ध्य २ प्रधानमुख्य, स्थानम् ।
 सेंट्रल, वि (अ) केन्द्रीय, मध्य, मध्यम,
 मध्यस्थ ।
 सेंटिमेन्ट, वि (अ) शक्ति ।
 सेंटिमीटर, स पु (अ) शक्तिमान्, शक्तिश
 मानम् ।
 सेंट, स स्त्री (॥ सहति = क्रियायत्
 २ रात्रि >) -यवामात्र विनियोगामात्र ।
 —मत्, कि वि (हि + अनु) मूल्य विना
 २ निष्प्रयोजन, व्यर्थम् ।
 —का, सु, मूल्य विना लब्ध, निर्मूल्य ।
 —म, सु, व्यर्थ-मूल्य, विना २ व्यर्थम् ।
 सेंद्रिय, वि (स) सत्करण, साध्य, इन्द्रियवत्,
 सनीव । २ पुस्तकगुण, मैथुन-समर्थ, शीघ्रवत् ।
 सेंध, स स्त्री [स मधि (पु)] सधिया, सुर-
 (क)ग गा, गानिकम् ।
 —लगाना या सेंधना, सधिया क अथवा सन्
 (स्वा प से) ।
 —लगाने वाला, स पु, सुर(क)गयुज् सधि
 हातक, सधियावत् ।
 सेंधा, स पु (सं सेंध-न्) भीतक्षिप्त, माणि-
 मय-न्ध, व'शर, मिथु(देव)व, शिष, निष्ठ
 पथ्यन् ।
 सेंधिया, मं पु (हि सेंध) दे 'सैंध लगाक
 वाला' ।
 सेंवई, स स्त्री (मं मैरिदा) मृष्टिका ।
 —पूरना या—बटना सु, मैरिदा व्याहन(मे) ।
 सेंडुड, म पु, दे 'सूर' ।
 से, प्रत्य (प्रा सुतो, पु हि सेंति) वरग
 कारकविद्ध (प्राय तृतीया से, 'स' से दा
 —पूर्व, —पूर्वर्त आदि से अनुवाद करते हैं । उ,
 आदर से=आदरेण, सन्दर, आदरपूर्वकं इ)
 २ उत्पादानविद्ध (प्राय पञ्चमी से 'आ' ॥
 या 'प्रभृति' 'आरम्भ' आदि से अनुवाद करते
 हैं । उ, वृक्ष से गिरा वृक्षम् अपतम्, जम
 से-आजम, आजन्मन्, रक्त म लेखर=ध-
 प्रभृति, स्व आरम्भ इ) ।
 सें, वि (हि 'सा' का बहु) सम, समान,
 सदृश ।

सेकड, स पु (अ) विकला, विपन्न, क्षण ।
वि (अ) द्वितीय ।

सेक, स पु (॥) दे 'सिच्चार' ।

सेक्रेटरी, स पु (अ) भविष्य, लेखनसचिव ।

सेकशन, स पु (अ) विभाग ।

सेचक, स पु (स) सेप, वरिष्ठ । वि
प्रो. क. सेचर ।

सेचन, स पु (स न) अब-आ, पेक
सेवन, अन्तुक्षण, प्रोक्षणम् ।

सेच, स स्त्री (स शय्या, दे) ।

—पाल, स पु (स शय्यापर) शयना
गाररक्षक, शय्या, अध्यक्ष पात्र ।

सेठ, स, पु (स श्रेष्ठिन्) लक्षणवि, कोलीवर,
धनाढ्य । २ बगिचर, सार्यबह ३ धनिना
नितनोपाधि ४ क्षत्रियोपपातिभेद [सेठानी
(स्त्री) धनाढ्या, धनाढ्यपत्नी] ।

सेतु, स पु (स) वारण, सवर, दे 'पुल' ।

—बध, स पु (स) वारण सवर, धन-
निर्माण २ श्रीरामनिर्मित सेतुविशेष ।

सेना, कि स (स सेवन) अंडाए उरवद्विरे,
३ देव उपविन् (पु प अ) २ सेव (भ्वा
आ से) ३ उपास् (अ आ से) ।

सेना, स स्त्री (स) मैत्र्य, बल, वहिनी,
चतु (स्त्री), बनीककिनी, पूतना, ध्वनिनी,
वक्ष्पिनी, चक्र, पुलिनी ।

—पति, स पु (स) सेनानी, पाहिनीपति,
सेना, बाह-नायक-पाल-अध्यक्ष-अधीश-
नाथ ।

—स्यूह, स पु (॥) सैन्यविन्यास ।

सेनानी, स पु (स नी) दे 'सेनपति' ।

सेनेट, स स्त्री (अ) प्रधानव्यवस्थापिका
गभा, १ विधिविधालयस्य प्रकल्पकर्त्री सभा
३ परिषद् (स्त्री), सभा ।

सेक, स पु (अ) रोहपेटिका, रक्षाभूषण ।

सेब, स पु (का) गात-जेविमिबिनिव-
मिचिनिवा, फल, सेव, मुष्टिप्रणागदरन् ।

सेम, स स्त्री (स सिनी) सिना, सिविका । वि
(स्त्री) सिदा, सिदिका, सिवीवि (स्त्री) ।

सेमल, स ॥ [स शस्त्रालि (पु स्त्री)]
शस्त्रालि लिनी, गूलकृश, दीर्घदुम, रम्यपुष्प
द्वारातोहा ।

सेर^१, स पु (स) सेटकन् ।

सेर^२, वि (का) वृक्ष, सतुण ।

सेराब, वि (का) जलप्लुन, अनिच्छित २ सिक,
प्लावि ।

सेरी, स स्त्री (का) वृष्टि (स्त्री), सतुण ।

सेरु, स पु (हि सिरो) छट्वाया शीर्षादपट्टी ।

सेल, सं ॥ (अं) बीवकोष ।

सेलखडी, स स्त्री, दे 'खडिया' ।

सेरुलोड, स पु (अ) काष्ठीवन ।

सेवक, स पु (स) परि अनु, वर, किंकर,
भृत्य, भूतक, कर्मक(ता)र अनुजीविन्,
दास, नियोज्य, चेष्ट, चेष्ट, डिगर, परि,
कर्मिन्-चारक-जन-स्कर, प्रेम्प, मुद्रिष्प,
ल डीक, शुभ्रक २ मक, उपसक, आरा
पक ३ शिष्य, अन्तर्वासिन् ।

सेवकाई, सं स्त्री (स सेवक >) उप, चार
चर्पास्थान, परिचर्पा, शुभ्रभा, सेवकत्व, कर्मपै,
सेवा, ववृष्टि (स्त्री) २ आराधन, पूजा ।

सेवती, स स्त्री (स सेवन्ती) शानपत्रा,
कपिका, चाफेक(स)ए, महाकुमारी, पक्षान्धा,
अनिमजुला, तण्णी, मूढेडा, शिववत्सभा, राम
तण्णी ।

सेवन, स पु (स न) दे 'सेवा' २ उपा
सन, आराधन, पूजन ३ उपयोग, प्रयोजन,
उपयोग ४ सनतवास ।

—करना, कि स, उपभुन् (ह आ अ), सेव्
(भ्वा आ से) ।

सेवनीय, वि (म) मैत्र्य, सेवित्र्य, सेवा
परिचर्पा-उपचार, अर्हयोग्य २ पूज्य, आराध्य
३ उपयोगार्ह, प्रयोजनीय ।

सेवा, स स्त्री (सं) दे 'सेवकार' (१, २)
३ अश्रय, शरणम् ।

—करना, कि स, सेव् (भ्वा आ से),
अनु उप परि, चर् (भ्वा प से), उपास
(अ आ मे), उपस्था (भ्वा आ अ),
श्रु (सत्रन्त शुश्रूषे) ।

—टहल, स स्त्री (सं + हि) परिचर्पा ।

—शुश्रूषा, स स्त्री (स) उप, चार चर्पा ।
सेविका, स स्त्री (स) चेटी, दासी, मुद्रिष्ठा,
प्रेम्प, कर्मकरी, नियोज्या, परिचारिका ।

सेवित, वि (स) शुश्रूषित, उप परि, चरित

२ उपामित, पूजित, आराधित ३ व्यवहृत, प्रयुक्त ४ आश्रित ५ उपयुक्त, कुतरेरयोग्य ।
 सेवी, वि (स विन्) मेवक सत्वापरायण
 २ पूजक, आराधक ३ -भोनी। -भुन्, -भक्षिन्, -रायिन् ।
 सेवान, स पु (अ) बहुदिवससममप्य अपि
 देशन समेत्न २ सत्र (स्तूत्र आदि वा) ।
 -कोटं, स स्त्री (अ) दण्डसत्त्वाधिकरणम् ।
 -जज्ञ, स पु (अ) दण्डसत्त्वाधिकारः ।
 सेहत, स स्त्री (अ) सुख, मौख्य २ रोग
 मुक्ति (क्ता), दे 'स्वास्थ्य' ।
 -खाना, सं पु (अ + का) औषागारम् ।
 सेहरा, स पु (स होखर) बरमुखाबलवि
 मालाबली-खरबाळ २ बर-परिनिष्ठ, सुकुट
 ३ बरगुणवर्णनात्मकं गौनम् ।
 -बैधाई, स स्त्री, दोस्तरबधनशुष्कम् ।
 सेही, स स्त्री, दे 'साही' ।
 सैङ्गल्लाई फीवर, सं पु (अ) बाहुकामक्षि
 काञ्चर ।
 सैतालीस, वि (स सप्तचत्वारिंशत्) स पु,
 उक्ता मख्या, तद्बोधकावौ (३७) च ।
 सैतालीसवाँ, वि (हिं सैतालीस) सप्तचत्वा
 रिंशत्तम-मीन, सप्तचत्वारिंश शीश (पु
 स्त्री न) ।
 सैतीस, वि (सं सप्तविंशत्) स पु, उक्ता
 मख्या, तद्बोधकावौ (३७) च ।
 सैतोसवाँ, वि (हिं सैतीस) सप्तविंशत्तम-
 मीन, सप्तविंश शीश (पु स्त्री न) ।
 सैधव, स पु (म) (मिथारदूरभव) दोग्क,
 मिथुदेशीयोऽथ २ दे 'सैधा' ३ जयदध
 ४ मिथुदेशवामिन् । वि (सं) मिथुदेशीय
 ० समुद्र, समुद्रीय मातुलिक ।
 सैकडा, स पु (स शतवाट ४) शत, शतक
 ० शतवस्तु-समुदाय-समूह-समुच्चय । कि
 दि., प्रतिशतम् ।
 सैकडों, वि, पर-शत ।
 सैकलगर, सं पु (अ सैकल + गर) शत, -
 मार्ग-साधक-जैवक ।
 सैदानिक, सं पु (स) मिदान, विद्वद्,
 तत्त्वज्ञ, राजनिक २ ताविज्ञ । वि (म)
 मिदान-राजन-तत्त्व, मंत्रीधन् ।
 सैन, सं स्त्री (स सप्तपत्नी) मनेत्र, मंडा,
 शक्ति २ सङ्घर्ष, विद्वद् ।

-करना, कि स., (शीर्षहस्तादिभि) मण्ड
 मनेत्र वा कृदा ।
 -मारना, कि स, सहाय भवलोक् (चु)
 २ निमेषेण मनेत्र कृ ।
 सैना, स स्त्री, दे 'सेना' ।
 सैनान्त्य, सं पु (न) सेनापति सेना
 ध्वज, वार्य पदम्, सेनापतित्वम् । वि (सं)
 सेनापति, सम्बन्ध-विषयक ।
 सैनिक, स पु (सं) सेनाचर, योध, भट,
 सैन्य, मातुलिक, योद्धा २ रक्षापुरव, दे
 'मन्त्री' । वि (सं) सामानिक, सामरिक,
 मातुलिक, क्षत्र-यो (स्त्री)] ।
 -बाद, स पु (स) मन्त्रसमर्थकसिद्धान्त,
 युद्धानुमीदकवाद ।
 सैनिटरी, वि (अ) स्वास्थ्य आरोग्य, कट
 रक्षक विषयक ।
 सैनिटेगन, स पु (अ) आरोग्य स्वास्थ्य,
 रक्षा-रक्षणम् ।
 सैन्य, स पु (स न) दे 'सेना' ।
 सैराथी, स स्त्री (सं) रथपदा शित्वचर्चिनी
 २ अगपुर, परिवारिका-दाम्नी ३ द्रौवरी ।
 सैर, स स्त्री (का) सुख, पर्यटन, परि,
 भ्रमण, विहार, विहरण, विचरणम् ।
 -करना, कि अ, सुख पयद्विचर (क्व
 प मे), विह (क्वा प अ), भ्रम् (क्वा
 प से) ।
 -गाह, स स्त्री (का) भ्रमण पर्यटन, स्थानं
 स्थली ।
 -मपाटा, स पु, दे 'सैर' ।
 सैरानी, वि (का सैर) पर्यटन भ्रमण-
 विहरण, शील, पयस्क, शोधविहारिन् २
 आनन्दिन्, विनोदिन्, प्रमोदिन्, उन्नामिन् ।
 सैराथ, स पु (का) अग, स्थान-वहा
 विषय प्रलय अप्लाव २ महा, महा-
 अग ।
 सैर, प्रत्य, दे 'सै' ।
 सोखर नमक, स पु (स सोखर + न)
 सौख्य, स्वर्ग, रत्न, अर्थ, कृपा-वर्मा,
 निष्क, हृष्यणम् ।
 सोटा, सं पु (सं सुट >) स्फुट, स्फुट,
 यति (स्त्री)-दण्ड २ मुमल लम् ।
 -बरदार, सं पु (हि + दा) रद, भर-
 धृत् ।

सोठ, स स्त्री [स शुठी डि (स्त्री)] मडा
विश्व औषध विश्वमेधन, कटुप्राय, कफारि ।
सोधा, वि (स सुगंध) सुगन्धि, दे ।
सोपना, क्रि म दे सोपना ।
सोह, स स्त्री दे 'मौवद' ।
सो, सर्व (म म) देखो वह । अव्य, अत,
अन-यस, अनेन कारणेन अस्मात् कारणत् ।
सोडह, वाक्याश्र (स म + मड) अह जडा
निम (वे) ।
सोभा, स पु (स शताब्दा) मित-अति,
-उष्मा, शन, भर्ता पुं पका मधुरा, मधुरिका,
मधुरी, मिश्रीति [(स्त्री) शास्त्रभेद] ।
सोई, सर्व, दे 'वडा' ।
सोखना, क्रि म, दे सुखाना ।
सोख्या, स पु, दे 'व्याहीचूम' ।
सोगद, स स्त्री, दे 'सौगद' ।
सोग, स पु (म शोण) (शृङ्खलित)
परिभाष, शुचा, पु सम ।
—सनाना, सु, शीतचिह्नान धृ (चु), शुच
(स्वा प से) ।
सोच, स पु (स शोचन) शोक, शुचाच
(स्त्री), विपाद २ विचार, विमर्श, विचा
रणना ३ विज्ञा, रणरणक, उत्पत्तिका,
-वसता ४ पश्चात् अनु, नाप ।
—विचार, स पु (ि + म) विचार -रणा,
विमर्श, आलोचना, समीक्षा, विनश्, विवे
चन-ना ।
सोचना, क्रि अ (म शाचन) विचर (द्वे),
विमृश (तु प अ), आपर्वा-समा लोच
(चु) २ विन्नाक, विन्ना (चु) ३ शुच
(स्वा प से), दे विचारना ।
सोण्डवास, वि (म) प्रमत्त, प्रष्ट २ निमित्त,
इत्य ३ सञ्चयामयुक्त ४ मन्त्रप्राण । अव्य
(स न) नदीधवास, नि श्रामपूर्वक, सनि
श्रामम् ।
सोत्र, स स्त्री (हि मूत्रना) शोध, शाक,
दे 'सुजन' ।
सोत्रिद, स स्त्री (का) पात्र, प्रदाह
२ शोध ।
सोटा, स पु दे 'मोता' ।
सोडा, सं पु (अं) विशार ।
—वाटर, स पु (अ) विशारलम् ।
खने बा—, *अध्यविशार ।

खोवे का—, *भावनविशार ।
सोडियम, स पु (अ) क्षारातु (न),
क्षारत्वम् ।
सोव ता, स पु (स) श्रोतस (न) उत्प-
वारिप्रवाह, प्रसवण, निर्, क्षार २, नदी-
शाला, कुल्या ।
सोता, वि (स) सुप्त, शयान, निद्रित ।
सोते-जागते, मु, अहर्निश, दिवानीश, प्रति
क्षण, सदा ।
सोदर, स पु (स) सहीदर, सोदर्य, भ्रातृ ।
सोदरा, स स्त्री (स) महोदरा, सोदर्या,
स्वस (स्त्री) ।
सोन, स पु (स शोण) हिरण्यवाह-दु,
शोषभद्र, शोणा (नदविशेष) ।
सोनमूही, स स्त्री (स स्वर्गमूही) हरिणी,
पीतिका, हेमपुपिका, हेमा, स्वर्गमूधिका ।
सोना, स पु (स सुवर्ग) स्वर्ण, कनक,
हिरण्य, हेमव (न), हाटक, तपनीय, छात
कुम, चामीरर, जलरूप, महारजत, पावन,
स्वप्न, कार्यभर, चालूद, अष्टापद, भद्र,
कतु(पु) र, द्रविण, पिंजर, कलथीत, लाइवर,
कल्याण, मनोहर, भास्कर, दीप्त, मगस्य,
निष्क, अग्निशिख, २. महावै-वज्रमूल्य, वस्तु
(न)-द्रव्यम् ।
—(ने) का तार, स पु, कनकवज्रम् ।
—(ने) का पावी, स पु, सुवर्गलेप ।
—(ने) का वड, स पु, सुवर्गपत्रम् ।
महनों का—, स पु, श्रुति, श्रुती, श्रुती
कनकम् ।
सोना, क्रि अ (स शयन) स, शा (अ
आ स), निद्रा (अ प अ), सविश (तु
व अ), स्वप्न (अ प अ) २ (आदि)
निद्रादि निस्त्वन्-निधल (वि) भू ३ दे
'मरना' । स पु, शयन, निद्रा, गुहाका, तंद्रा,
तामसी, प्रमीला, सवेश, सुप्तति (स्त्री),
स्वप्न, स्वाप, शी ।
सोनामास्त्री, स स्त्री (म स्वर्णमास्त्रिक)
मास्त्रिक मधु पातु, तापित (उपधातुभेद) ।
सोने का कमरा, सं पु, स्वप्न-गृह निद्रितन,
शयन-गृह मदिर-जागरम् ।
सोने सोम्य, वि, शयिन्य, शेष, शयनाव ।
सोनेवाला, स पु, सुपुत्र, शिशुपु,
निद्रातु, शयातु, तद्रातु ।

सोया हुआ, वि, निदिन, निद्राण, भयिन,
सुप्त, शयान, निद्रामग्न ।

सोप, स पु (अ) दे 'सापुन' ।

सोपान, स पु (स न) दे सीढ़ी ।

सोफ़ा, म पु (अ) शय्या, पर्श्व, शय
नीयम्, *उपवेश्य, *आरय ।

सोम, स पु (म) दुर्वाशु, चद्र, दे 'चंद्र'
२ सोमवार ३ स्वर्ग ४ कर्पूर ५ सोम
हन्ता ।

—काष्ठ, सं पु (सं) चट्टान ।

—मूह, स पु (स) चद्रमूहणम् ।

—देव, स पु (स) सोमदेवता २ चद्रदेवता
३ कषातरितसारस्य रक्षवितृ ।

—नाथ, स पु (स) ज्योतिर्विशिष्टो
२ प्राचीनगर्विशिष्ट ।

—पान, स पु (स न) सोमपीननि (स्त्री) ।

—पायी, वि (स-विन्) सोम, प-या-यीतिम् ।

—पुत्र, स पु (स) सोमज, पुत्रग्रह ।

—यज्ञ, स पु (स) सोम, याग-यज्ञ-यन्त्र ।

—रोग, स पु (स) आरोपभेद २ बहु
भूतज्ञा, मृगानिहार ।

—रत्ना, स स्त्री (स) सोमवन्तः, सोमा,
क्षीरी, दिवप्रिया, शुक्ल-वस्त्र, वस्त्री, धनुजता,
सोमक्षीरा, यशस्वेष्टा २ शुद्धची ३ मण्डा ।

—वस्त्र, सं पु (सं) चद्रवस्त्र २ युषधिर ।

—वती, म स्त्री (सं) सोमवती जमावत्या ।

—वल्ली, सं स्त्री (स) सोमलता २ शुद्धची
३ सोमराजी ४ पातालगरनी ५ माक्षी
६ सुदर्शना ।

—वार, स पु (सं) सोम-चद्र, वार नाम
दिनम् ।

सोरठ, सं पु (सं सोरठ) प्रा-विशेष
(गुजरात तथा दक्षिणे काठियावाड) २ भोग्य
राजधानी (सुरत नगर) ३ रामभेद ।

सोरठा, स पु (हिं सोरठ) हिंदी-विक्रिया
छंदोभेद ।

सोल्, वि (?) शीत, शान्त, शिथिल
२ नित्य-व्यथाय । स पु (?) शीत, शीत्य
३ नित्य-व्यथाय स्वाद ।

सोल, म स्त्री (अं) आत्मन्, जाव, जेनम् ।

सोल्, सं पु (अं) पाद, तन्त्रम् २ पाद
कोणम् ।

सोलह, वि (स सोल्ह) पदसिद्धम् ।

स पु, उक्ता मत्वा, तद्बोधनाक्षी (२६) च ।

सोल्हो आने, सु, सगरत्येन, अशेषन,
पूर्वतया, सामत्येन ।

सोल्हवाँ, वि (हिं सोल्ह) पो-श ही-श
(पु स्त्री न) ।

सोसल, वि (अ) सामानिक, सामानविषयक ।

सोसलिङ्गम्, सं पु (अ) ममानवाद ।

सोसलिस्ट, म पु (अ) समाजवादिन ।

सोसनी, (वि (का मौसन) रक्तनील ।

सोसाइ(य)टी, स स्त्री (अ) ममांज, सभा,
गोष्ठी २ मगनि (स्त्री), ममार्ग ।

सोह-सोहगम, वैशाल्य-वाक्य, दे 'सोह' ।

सोहन, वि (मं) शोमन, मनोहर, दे 'सुदर'
स पु, नायक, सुन्दरपुष्प ।

—चिह्निया, ■ स्त्री, *शोमनचटक
(का स्त्री) ।

—पपड़ी, म स्त्री, *शोमनपपनी ।

—हलवा, स पु, *शोमनसयाव ।

सोहना, कि अ (स शोमन) शुभ-विराम
(भ्वा आ से), लन्ति-सुदर शोमन (वि)
बुद्ध (भ्वा आ से), विभा (अ प अ) ।

वि, शोमन, रम्य, सुदर, मनोह ।

सोहना, कि स (म शोमन) कुतूहानि
उन्मूल (सु), शेष कुतूहलित कृ ।

सोहवात, स स्त्री (अ) सगनि (स्त्री),
ममार्ग २ मैथुनम् ।

सोह(हि)ला, म पु (हिं सोहना) *पुत्र
ज-भोत्सवगीत २ मगत्य-भोग्यिक शुभ, गीत
३ देवतास्तोत्रम् ।

सोहिनी, वि स्त्री (सं शोमिनी) सुदरी,
मनारमा, रम्या, सुकृपा स स्त्री, रागिणी
भेद ।

सौंदर्य, स पु (सं म) रमणीयता, दे
'सुदरता' ।

सौपना, कि म (सं समर्पण) न्यस (दि व
म), निधिष (■ प अ), सम्पन्न (प्रे
समपयति), प्रतिपद-निविश (प्रे) । म पु,
न्याम, निधिष, समर्पण, प्रतिपदनम् ।

सौपने योग्य, वि, निधेय्य, समर्पणीय ।

सौपने वाला, म पु, निधेयन्, समर्पयितृ ।

सौपा हुआ, वि, निश्चित, न्यस्त, समर्पित ।

सौंफ, सं स्त्री (सं शनपुष्पा) मपुरिका,

माधवी, माधुरी, मधुग, सुगंधा, शतपत्रिका,
अग्नि निव, छत्रा ।

—का अत्र, स पु, शतपुत्रासव ।

महि, म स्त्री दे 'सौद' ।

सौ, वि (स शन, नित्य न) दशगुणितदश
मर्या । स पु, उत्ता मर्या, तद्बोधराका
(१००) च ।

—शत की पूरु बात, सु, सार, तत्पर्य,
साराग ।

—विस्त्रे, सु निश्चयेन, अवद, नि मशयन् ।

सौधी, वि, शततम-सौ-मन् ।

सौमन्, स स्त्री, दे 'सौन' ।

सौकर्य, स पु (म न) सुकरता, सुमाध्वता
२ दे सुमीता ।

सौकुमार्य, स पु (म न) कोमलता, दे
'सुकुमारता' २ यौवन ३ वाक्यगुणभेद ।

सौखिक, वि (स) सुखेच्छुक, सुखैषिन्,
सुखकामिन् २ सुख-आनन्द-भोह, दायक प्रद
३ सुख आनन्द, विषयक-सम्बन्धक ।

सौख्य, स पु (म न) आनन्द, सुख दे ।

सौगद, स स्त्री (जा) शपथ, समय, प्रतिष्ठा,
वचन, वाचा, स्वरूप ।

—स्वाना, कि अ, शप् (भ्वा दि उ अ),
सशपथ वर (भ्वा प से) ।

—देना, कि स, शप् (प्रे), सशपथ वच
(प्रे) ।

सौगंध, सं प (स न) सुगंध दे २ गांधिक,
दे 'गंधी ३ वस्त्रगन् । म स्त्री, दे 'सौद' ।
वि (स) सुगंधि दे ।

सौगंधिक, वि (सं) सुगंधि, सुगंधित, सुगन्ध,
सुगन्धि । स पु (म) गांधिक, गंध,
विक्रियिन् उपजीविन्-वणिज । २ गन्ध(भि)ज,
गन्धदमन् । (म न) नील, कमल-उत्पल,
सुवन्त्यन् । २ पुण्डरीक, सिताम्बोन, श्वेत
कमलन् । ३ मगन्धिधामभेद ४ पद्मराग ।

सौगात, स स्त्री (तु) उपहार, उपायन,
प्राप्तन-नक २ दुर्लभवस्तु (न) ।

सौगन्ध, स पु (म न) मञ्जनता, सुजनता,
दे ।

सौत, सौत(ति)न, म स्त्री (सं सपत्नी)
ममानपत्रिका ।

सौतिया डाह, स पु, सापत्न्येभ्यां २ साप
त्य, ईष्यां ।

सौतेला, वि (हि सौत) सापत्न [—नी (स्त्री)]
सपत्नी जन-वधिन ।

—पिता, स पु, वि भानृपति ।

—पुत्र, स पु सपत्नीपुत्र, सापत्न्य ।

—बच्चा, स, पु पर नान अपत्यम् ।

—भाइ, स पु वैगात्र, वैमात्रेय विमालुज ।

सौतेला पुत्री, स स्त्री, सपत्नी, पुत्री-दुहिष्ट
(स्त्री) ।

सौतेली बहन, स स्त्री, वैमात्री, वैमात्रेयी,
विमालुता ।

सौतेली माता, स स्त्री, विमालु (स्त्री) ।

सौदा, स पु (अ) भाइ, भाडानि (बहु),
पण्य, क्रयविक्रयवस्तु (न) २ अदान प्रदान,
दानादान, व्यवहार ३ क्रयविक्रयी (द्वि),
नियम, वाणिज्य, व्यापार, वणिक्मन् (न)
४ क्रय विक्रय, प्रतिष्ठा ।

—करना, कि अ, क्रयविक्रय कृ, वाणिज्य कृ,
पण (भ्वा आ अ) ।

—सुलुफ, स पु, दे 'सौद' (१) ।

—मूत, स पु, व्यवहार ।

सौदा, स पु (अ) उन्माद, दे 'पागलपन' ।

सौदाई, स पु (अ सौदा) वन्मत्त, दे
'पागल' ।

सौदागर, स पु (का) नैगम, क्रयविक्रयिक,
पण्याजीव वणिज, वाणिज्यकारिन्, सार्थ
वाह, सार्थिक ।

—बच्चा, स पु (का + हि) वणिज्
२ वणिक्पुत्र ।

सौदागरी, स स्त्री (का) दे 'सौदा' (१) ।

सौदाम(मि)नी, स स्त्री (स) सौदाम्नी,
चपला, चंचला, तद्विद विधुत (स्त्री), दे
'विनली' ।

सौध, स पु (स न) इयं, प्रसाद, भवन,
अट्टालिका ।

सौसिक, स पु (स न) निशायुद्ध, रात्रिण,
रात्रि निशा,भारण २ महाभारतीयपरिविधेय ।

सौभागिनी, स स्त्री, दे 'सुहागिन' ।

सौभाग्य, स पु (स न) सु भग्य-भागधेय
दैव-दिष्टि (स्त्री)-निनति (स्त्री) २ सुख,
आनन्द ३ वस्त्राण, कुशल ४ दे
'सुहाग' (१) ५ ऐश्वर्य, विभव ६ सौन्दर्य
७ शुभेच्छा ८ साकल्य ९ मिदूरम् ।

—शुद्धी, स स्त्री (म) क्षुतिरोगनाशक
याकमेद (आयु) ।

सौभाग्यवती, वि स्त्री (स) सपत्नी, दे
'सुहागिन' २ भाग्यशालिनी ।

सौभाग्यवान्, वि पु (स-वत्) महाभाग,
सुभाग्य, सुभग, पुण्यवत्, भव्य २ सुखी
सपत्नश्च ।

सौमित्रि, स पु (म) सौमित्र, वस्त्रमण ।

सौम्य, वि (म) मोक्षसंबन्धित २ मौमिक,
चान्द्र ३ शीतस्निग्ध ४ नम्र सुशील, शान्त
५ शुभ, मर्त्य ६ प्रसन्न, प्रहृष्ट ७ मित्रदर्शन,
सुन्दर ८ उज्ज्वल, मासुर ।

—दर्शन, वि (म) मित्रदर्शन, सुमगाकार ।

—चार, सं पु (स) सुभवासर ।

सौम्यता, स स्त्री (स) शीनता, शीत
स्निग्धता २ सुशीलता, साधुत्व ३ सौन्दर्य
४ उदारता, परोपकारिता ।

सौर^१, वि (स) सौर्य, सूर्य विषयक मन्त्रिण
२ भानुन ३ सूर्यानुसारिन् ।

—माम, स पु (स) सूर्यकराशिभोगावच्छि-
न्नकाल ।

—सवत्सर, स पु (म) सूर्यस्य द्वादशराशि
भोगावच्छिन्नकाल ।

सौर^२, सं स्त्री (देश=सौद) दे 'चादर' ।

सौर्य, स पु (म) वीर, मट, वीर्य,
वीर्य ।

सौरभ, स पु (म न) सुगंध, दे २ कुकुम,
दे 'केसर' ३ आम्रम् ।

—बाह, स पु (म) बाहु, पवन ।

सौरभित, वि (म) मरभि, सुगन्धित दे ।

सौराष्ट्र, सं पु (म) शान्तविशेष (धुतरात
वाडिपावाह) ।

सौरा, म स्त्री (म मूलकामार) दे 'भुजिका
गृह' ।

सौष्टव, म पु (म न) सौन्दर्य, सुप्रमा,
लावण्य २ लाजव, क्षिप्रता ३ शुण्ण अतिशय
उत्कर्ष, बेमिष्ट ४ उपयुक्तता, उपयोगिता ।

सौहार्द, सं स्त्री (म शब्द) दे 'सौहार्द' ।

सौहार्दना, म पु (स शोभाजन) नीरव
गंध, सुशील, रचिर्ज्ञान ।

सौहार्दं, सं पु (म न) सख्य, नाह्वरीन,
मोहर्ष, भव्य ६ 'मित्रता' ।

स्फुट, म पु (स) कानिदेव, सेनानी,
शिक्षिताहन, धाण्यातुर, कुमार, शक्तिधर,
स्वामिन्, द्वादशलोचन ।

—पुराण, म पु (म न) पुराणग्रन्थविशेष ।

स्फुट, स पु (स) अम, पुनश्चिरम् (न)-
मूल, दो शिखर, कल्मष २ प्रकाश-द्वे, दह,
स्फुटस् (न) प्रकाशक, दे 'नना' ३ शाखा
४ समूह ५ मैत्र्यन्तूह ६ ग्रन्थविभाग,
रट-उ, पवन (न) ।

स्वधावार, म पु (स) शिवि(वि)र, कटक,
२, सेना, अन्धाम-स्थान ३ राजधानी ४ सेना
५ यात्रि-वणिक्, निवेश ।

स्फूर्ति, स स्त्री (अ) शीताद ।

स्फारलेटिना, म पु (म) आरक्तज्वर, उदरं,
लोहितज्वर ।

स्फारर, म पु (अ) छात्र, विधार्थि
२ सुविद्वन्, भट्ट, प्रकाशपटित ।

—शिप, म पु (अ) छात्रवृत्ति (स्त्री)
२ पालित्व, निद्रता ।

स्फीम, स स्त्री (अ) यौवना, आयोजनं,
व्यवस्थितविचार, प्रयोग, युक्ति (स्त्री) ।

स्फूल, म पु (अ) विद्यालय, पाठशाला ।

—मास्टर, म पु (अ) शिक्षक, अध्यापक ।

स्वलन, म पु (म न) पतनं, भ्रंश, क्षय,
क्षसनं २ समार्गाद्व्युत्ति (स्त्री)-व्यवनं
विवर्तन प्रभृ, उन्मूलनमन्त्र ।

स्वस्वित, वि (म) पति, व्युत्त, भ्रष्ट,
२ क्षस्त, सुदुःख ३ विवर्तित ४ प्राण
५ उन्मूलनम् ।

स्वाप, म पु (अ स्वं) (आधिकारिक)
मुद्राङ्कितपत्र २ पत्रगुप्तमुद्रा, दे 'टाक की
टिम्प' ३ मुद्रा ४ मुद्राङ्क ।

स्टार्च, म पु (अ) श्लेष्मा ।

स्टीम, म स्त्री (अ) वाष्प ।

—इजन, स पु (अ) वाष्पयन्त्रम् ।

स्टीमर, म पु (अ) वाष्पयान ।

स्टूल, सं पु (अ) कर्चरीटम् ।

स्टेज, स पु (अ) रङ्गमञ्च भूमि (स्त्री)-
पीठ २ मंच ।

—मनेजर, म पु (अ) रङ्गमंचप्रबन्धक,
मन्त्रधार ।

स्टेचिसकोप, म स्त्री (अ) ऊपर परीक्षणी ।

स्टेशन, सं पु (अ) (वाष्पयन्त्र) स्थानम् ।

स्टेशनरी, स स्त्री (अ) स्थानमागधी ।

स्टैंड, स पु (अ) आपार, स्थापकम् ।

स्नम, स पु (सं) स्नूणा, स्थाणु, स्नप, मेढि यि २ तस्त्फय, प्रकाड-ड ३ सात्त्विक मन्त्रमेद ४ प्रतिपद्य २ मूच्छा, जाडयम् ।

स्तम्भक, वि (म) स्तम्भकर, रोपक २ ज्ञान, कर-जनक ३ बयिरोपक ४ मलावष्टम्भक ।

स्तम्भन, स पु (स न) अव, रोध-रोधन, निवारण २ शुक्रपाणविषय ३. स्तम्भक (औषध) ४ जड़ी निश्चेष्टी, करण ५ (स पु) मदनबाणविशेष ।

स्तम्भित, वि (म) अव, बद्ध, निवारित २ जड़ी, भूतहृत्, निस्तम्भय ३ स्थित, विरत ।

स्तम्भय, स पु स्त्री (स) उत्थानशय-या, दिम्ब ना, स्तनप पा, स्तम्भय-यायी, स्तन, पायक (पायिका)-पायिन (-पायिनी) ।

स्तन, स पु (स) कु(कु)न, उरो-उरमि, अ, वशी, ज-रह ।

—च्युक्त, स पु (स न) स्तन, मुख-अग्र-शिला-भूत, मेचकम् ।

—पान, स पु (स) स्तम्भयानि (स्त्री) ।

—पायी, स पु, दे 'स्तम्भय' ।

स्तम्भ, स पु (स न) क्षीर, दुग्धम् ।

स्तम्भ, वि (स) निक्षली-जड़ी, भूत निक्षेष्ट, क्षम, निस्तम्भ २ इष्ट निरुद्ध ३ इष्ट स्थिर ४ मंद अलस ५ दुराग्रहिन् ६ दृष्ट ।

—दृष्टि, वि (म) स्तम्भनयन, निनिर्देश ।

—बाहु, वि (मं) जन्तुस्तम्भ, निक्षेष्ट, हस्त-कर-बाहु मुञ्ज ।

—मति, वि (सं) मद्भुद्धि, बद्ध ।

स्तम्भना, स स्त्री (म) नटना, म्भन हीनता २ स्थिरता, दृढता ३ अधिरता, अवगन्त्यता ।

स्तर, स पु (म) दे 'परत' २ शय्या, जालनर, नल्य-स्वम् ।

स्तव, स पु (म) स्ताव, स्तुति (स्त्री) दे । २ स्तोत्र ३ ईश्वरप्रार्थना ।

स्तवक, स पु (म) पुष्प-कुसुम, मुच्छ-स्तव २ राशि अध्याय, परिच्छेद ४ स्तन ५ स्तोत्र ।

स्तवन, स पु (स न) गुणगोचन स्तुति (स्त्री) ।

स्तुत, वि (मं) प्रशंसित, प्रशम्न, श्लाघित, इक्षित, कीर्तित ।

स्तुति, स स्त्री (म) स्त(स्ता)व, रण, वर्णन कीर्तन-कथन, श्लाघा, स्तुति (स्त्री), श्ला, प्रशंसा दे ।

—करना, क्रि म, नु (अ प मे), स्तु (अ प अ), इड (अ आ ने), इनाड (व्या आ से), प्रश्न (व्या प मे) ।

—पाठक, स पु (स) भागध, चारण, वैनालिक ।

स्तुत्य, वि (स) नम्य, नाज्य, नवितम्य, प्रशम्य, प्रशमनीय, स्तोत्रम्य स्तवनीय, प्रश साई ।

स्तुप, स पु (म) मृदादि-कूट-राशि २ बौद्धचैत्य ।

स्तोन, स पु (म) चीर, तस्कर ।

स्तेय, स पु (स न) चौर्य, परद्रव्यहरण, स्तेयम् ।

स्तोत्रम्य, वि (म) दे 'स्तुत्य' ।

स्तोत्रा, वि (म नृ) प्रशंसक, स्तावक, नवित, नावक, वर्णक, स्तुतिवादेक ।

स्तोत्र, स पु (म न) छन्दोबद्ध देवगुण कीर्तन, स्तव, स्तुति (स्त्री) ।

स्तोम, स पु (म) स्तुति (स्त्री), स्तव २ यष्ट ३ राशि ।

स्त्री, स स्त्री (म) कनिता, महिला, रामा, नारी, दे २ परनी, माया ३ कौलिगी जति ।

—ग्रह, स पु (म) चन्द्रग्रहशुक्रग्रहा (ज्यो) ।

—क्षित, स्त्री वश विनित-वश्य ।

—धन, स पु (म न) स्त्रीस्वत्वात्पदोभूत धन (माता, पिता, भाई तथा पति मे प्राप्त, विवाह मस्कार के समय प्राप्त और नहेन) ।

—धर्म, स पु (म) कर्तु, पुष्प, रजम (न) २ मेयुन ३ स्त्रीक-व्य ४ स्त्रीसवधि विधानम् ।

—पुस्तकशा, स स्त्री (स) पोडा (स्तन इमश्रवादियुक्ता) ।

—पुरय, स पु (स) स्त्री, -पुन्यी-पुनी, मिथुन द्वाद, सुम्भन ।

—राज्य, स पु (म न) प्राचीनपदेश विशेष (महाभारत) ।

—लपट, वि पु (स) स्त्री, लोल शीड - चीर, वानुक ।

—लिंग, म पु (स न) खोनि- (खी), भग, स्त्रीचिह्न २ शब्दलिंगभेद (व्या) ।

—प्रत, सं पु (सं न) पत्नीप्रत, एकपत्नी परायणता ।

—समागम, सं पु (सं) स्त्री, -समर्ग - सम्भोग ।

—स्वभाव, सं पु (सं) महद्गुण, दे खोवा' २ नारीशीलम् ।

स्त्रीत्व, सं पु (सं न) नारीत्व, स्त्री-नारी, - धर्म भाव ।

स्त्रीण, वि (सं) स्त्रीमित्र, रमणीय ३ स्त्री, - सवधि-योग्य ।

स्थगित, वि (सं) विलग्न, व्याक्षिप्त ३ 'मुल्लव' २ आच्छादित ३ गुप्त ४ अव, रुद्ध ।

स्थपित, म पु (सं) बालमुशिल्विन् २ तप्तम् ।

स्थल, म पु (सं न) भूमि (स्त्री), भूभाग, स्थली २ शुष्क-निजल, -भूमि ३ स्थान ४ अवसर ।

—कमल, सं पु (सं न) पद्मा, पद्मचारिणी, अनिचरा, स्थलरहा ।

—चर, वि (सं) स्थल, न गमिन् चारिन्, भू, चर चारु ।

स्थली, सं स्त्री (सं) शुष्क, भूमि (स्त्री) - भूभाग २ समोन्नतम् (स्त्री) ३ स्थान, स्थलम् ।

स्थविर, म पु (सं) वृद्ध २ मज्जन (पु) ।

स्थाणु, म पु (सं) अशास्त्रवृक्ष, भ्रूव, शकु २ स्तम्भ, स्थूपा ३ शिव ४ स्थावरपदार्थ । वि (सं) अचल, स्थिर ।

स्थाण्वीश्वर, सं पु (सं न) तुरङ्गेश्वर, स्थाने शरणागतम्, स्थाणुनीधम् । २ स्थानेश्वरस्य लिंगविशेष ।

स्थान, सं पु (सं न) स्थल २ आनि वाम, गृह ३ भूमि (स्त्री) स्थली, भूभाग ४ पद, दे 'पदवी' ५ वर्णोच्चारणस्थान (व्या) ६ शयन, देश ७ देवस्थान, मन्दिर ८ अवसर ९ दद्या १० परिच्छेद, अध्यय ।

—च्युत, वि (सं) स्थानमग्न २ पद, च्युत प्रत ।

स्थानक, म पु (सं न) स्थान, स्थलम् २ पद, स्थिति (स्त्री) ३ ४ शरक्षेत्रगृहम्,

मुद्राभेद ५ नाटकशालास्थलविशेष ६ आलवाल, आवाल्वालम् ॥ मुराफेन ।

स्थानी, वि (सं निन्) सस्थान, पदयुक्त ७ स्थायिन् ३ उचिन, उपयुक्त ।

स्थानीय, वि (सं) स्थानिक, स्थानविशेष सवधिन् ।

स्थापक, म पु (सं) स्थापयितृ सस्थापक, प्रवर्तक, प्रारम्भक, स्थापनकर्त्ता २ निधायक ३ उत्पापक, उन्नायक ४ मूर्ति प्रतिमा, -कार ।

स्थापत्य, सं पु (सं न) वास्तु विद्या-शिल्प कला २ मयकमन्त्र (न), भवननिर्माणम् ।

स्थापन, सं पु (सं न) मिथान, न्यसन, निवेदन २ उत्पापन, उन्नयन, उन्नमन ३ सस्था पन, प्रवर्तन, प्रारम्भण ४ प्रतिपादन, साधनम् ।

स्थापना, सं स्त्री (सं) (मन्दिर) मूर्ति, प्रतिष्ठापनं निवेदन २ ३ दे स्थापनं (३ ४) ४ विनारागविशेष (न्या०) ।

स्थापित, वि (सं) सस्थापित, प्रवर्तन २ निदिन निवेदन, न्यसन ३ उत्पापित, उन्नयन, उन्नमन ४ स्थिर, दृढ ५ निश्चित ।

स्थापितर, सं पु (सं न) स्थापिता, स्थिरता, स्थैर्य, भूवना, नैस्वम् ।

स्थावी, वि (सं-विन्) भुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय २ विरस्थायिन्, दृढ ३ स्थिर, स्थास्तु, स्थायुक्त, स्थितिशील ४ विश्वसनाय ।

—भाउ, सं पु (सं) रसद भावविशेष (सा) (२ स्थायिभाव ॥ रति, हार, शौर, शोध, उत्साह, भव, जुगुप्सा, विस्मय और निर्वेद) ।

स्थाली, सं स्त्री (सं) उज्जा, पिठार री, दे पनीला ।

—गुलक न्याय, सं पु (सं) न्यायभेद, अशयुगशानेन पूणयुगशानानुमानम् ।

स्थानर, वि (सं) अचल, निश्चल, स्थिर ७ स्थविर, स्थातृ, स्थाणु, स्थायुर, स्थान्, स्थितिज्ञान । (सं न) अतगम प्रचल, मपति (स्त्री) ।

स्थित, वि (सं) विद्यमान, वनमान ७ उप विष्ट अग्नी ३ उच्यते ४ अवस्थित ।

—ग्रण, वि (सं) स्थिरस्थित, बुद्धिभी प्रज्ञ, मययुद्धिमय २ अन्मसनीयम् ।

स्थिति, सं स्त्री (सं) अवस्थ, आधार, अन्व २ निवास, अवस्थान ३ दद्या,

अवस्था ४ पर, दे 'पदवी' ७ अन्तित्व, सत्ता
६ प्रतीति ।

—स्थापकता, म स्त्री (म) कुचनीयता,
नम्यता, दे 'नचक' ।

स्थिर, वि (म) अचल निश्चल, अविचल
२ निश्चिन्त, स्थिरीकृत ३ शाप ४ इदं
५ नचक ६ स्थापन, स्थापन, भुव ६ नियत
७ विश्वमनीय ८ स्थायक, स्थास्तु ।

—स्थिर, वि (म) इहमन्त्र, स्थिर मति
धीबुद्धि ।

स्थिरता, स स्त्री (म) निश्चलता, अवलम्बना
स्थिरत्व २ दृढता, स्थिरता ३ स्थयित्व,
भुवता ४ ऐर्ष्य, धीरता ५ विरहविना,
स्थान्तुता ।

स्थूणा, म स्त्री (म) गृहलम्भ, दे 'लम्भ'
(१२) ।

स्थूल, वि (म) पीन, पीवर (नानी स्त्री)
पुष्ट, मास्य, मेदुर, मित्र, मेदम्बित, पावम,
पीवद् २ स्पष्ट, सुकोव ३ मूर्ख, अष्ट ४ विषम,
नतोक्त ।

—बुद्धि, वि (म) मदमति, अष्ट ।

स्थूलता, म स्त्री (म) पीनता, पीवरता,
मेदुरता, स्थूलत्व २ शुक्लास्त्व, भारवत्ता
३ विषमता ४ महाकायता ।

स्थैर्य, म पु (म न) दे 'स्थिरता' ।

स्थौल्य, स पु (स न) दे 'स्थूलता' ।

स्नान, वि (म) कृतस्नान, दे 'नहाया हुआ' ।

स्नानक, म पु (म) आप्नुवन्निन् ।

स्नान, म पु (स न) आप्ण (ध्या)व,
अभिपन्न, उपस्थान शीन, अवगाहनम् ।

—करना, कि अ, स्वा (अ व अ), अवगाह
(आ आ मे), दे 'नहाता' ।

—गृह, म पु (स न) स्नान, शाण आगार ।

स्नायु, म स्त्री (म पु) वस्त्रता, स्नमा,
नमा, शान्तपु, नानी स्नादि स्त्री, वायु
बाहिनी नानी, वातरश्मु (स्त्री) ।

स्निग्ध, वि (म) चिक्चण, चिक्क, चक्चण,
मत्तण, रुक्षा, अशुष्ट २ मज्जोह, सती, तैलक ।

स्निग्धता, म स्त्री (म) चिक्चणता, मज्जोहत्व,
रुक्षता २ तैलवत्ता, स्नेहवत्ता ३ प्रियता ।

स्नीड, वि (म) मृदुल, कोमल, स्निग्ध
२ अनुरक्त, अमक्त ।

स्नूया, म स्त्री (म) पुत्र, गृह (स्त्री) ।
स्नेह, म पु (म) प्रेमन् (पु न) अनु,
राग प्रति (स्त्री), प्रणय २ चिक्चणपदा
(घृतेनैव दि) ।

—करना, कि म, दे 'प्रेमकरता' ।

—मस्त्रत, वि (म) घृतनैव पक्व आग ।

—मार, म पु (म) मज्जा, दे । वि, नैव
प्रधान गृह्य ।

स्नेहनाय, वि (म) स्नेह, नैवार्ह २ प्रेम
पात्र भावन अनुगम, अहयोग्य ।

स्नेही, म पु (स = हिन्) स्नेहशील, अनु
रामित, प्रणयिन्, प्रेमिव, मित्रम् । वि (म)
चिक्चण, मत्तण ।

स्पर्श, स पु (अ) त्रिष्ठि अन्वयम् ।

स्पर्दन, म पु (म न) स्पर्द, स्पर्शकपन,
मस्तुत्तण, श्रिपक्ता ।

स्पर्द, स स्त्री (स) विनिगीया, मत्तण,
महामहमिन्ना, स्पर्मा, सप्तवत् ।

—करता, कि अ, प्रति, स्पर्श (आ आ
मे), मष्टु (आ प से), विनि (सन्न
विनिगीयते), आशभवितु वत् (आ आ से),
स्पर् (आ प से) ।

स्पर्श, म पु (म) स, स्पर्श शीन, ससर्ग,
सपर्क, परामर्श २ त्वनिन्द्रिय प्राक्पुगविशेष
३ कदितगपक्क (आ) ४ वायु ।

—करना, कि म, स, स्पर्श (अ प म),
दे 'टूना' ।

स्पष्ट, वि (स) परि, स्पृष्ट, प्रकट, व्यक्त,
प्रत्यक्ष, उल्लेख, उद्विक्त, विमल, पुष्टि, स्पष्टार्थ
म पु (म) वर्गोच्चारणप्रथनप्रकार (आ) ।

—कथन, स पु (म न) मरल निष्कपन,
मरण २ कथनप्रकारमेद परचवनीनामविनि
योक्तृनाम (आ) ।

—दन्ता, म पु (स न) स्पष्टनादिन् ।

स्पष्टनया, कि वि (म) प्रकट, स्पष्ट, व्यक्त,
स्पृष्ट प्रत्ययम् ।

स्पष्टता, स स्त्री (म) वैशद्य, विशदता,
स्पृष्टता, उच्चारता, सुकोषता, मरलता, आर्णव,
मास्त्व, निष्पात्ता ।

स्थिरि, म स्त्री (प्रे) नाव, आत्मन्, देहिन्,
जीव २ प्राण जीवन, शक्ति (स्त्री), वीर्य
३ नच, मत्त, मार ४ मयसत ।

—लेप, स पु, सारप्रदीप ।

मेथिलेटिड—, मिथिलितमयमार ।

रेक्टिफाइड—, शुद्धमयसार ।

स्पीच, स स्त्री (अ) व्याख्यान, वचनम् ।

स्पृहा, स स्त्री (ङ) कामना, इच्छा दे ।

स्पेक्ट्रास्कोप, स स्त्री (अ) रश्मिवर्णदर्शकम् ।

स्पेशल, वि (अ) विशिष्ट, विच्छेदण, असा
मान्य, अमापारण, सविशेष, विशेष ।

—गाड़ी, सं स्त्री (अ + हि) विशिष्टशकटी ।

स्फटिक, स स्त्री (स) स्फाट(दि)क, आभूष, स्फटिकोपल, भौतशिल्, सिनोपल, बिमर, स्वच्छ मणि, स्वच्छ, अमर-निस्तुष, रत्न, शिवप्रिय ।

स्फुट, वि (स) व्यक्त, प्रकट प्रकाशित, दे स्पष्ट विदित १ शुक्ल ४ नाना-बहु वि, विष ।

स्फुरण, स पु (स न) स्फुरणा, स्फुरित, स्फुरनं, स्फुर रणा, स्फ(म्फा)रण, द्रव्य किञ्चित्, चलनम् ।

स्फुलिग, स पु (स) अग्निरण, दे 'चिनगारी' ।

स्फूर्ति, सं स्त्री (स) क्षिप्रता, तीव्रता ७ शु कारितान्त्र, त्वरा २ स्फुरण ३ मानसी प्रेरणा ।

स्फोटक, स पु (स) पिस्तक, गट । वि, स्फोट ।

स्फोटन, सं पु (सं न) सशस्त्र, भेदन विद्रा रण २ प्रकाशन, प्रस्फापन ३ शब्द, ध्वनि ४ आकस्मिक, भजनं विद्रलन स्पुन्नम् ।

स्मय, स पु (सं) अभिमान, रूप ।

स्मर, स पु (स) स्मरणं मदन, न म २ स्मृति (स्त्री), स्मरणम् ।

स्मरण स पु (सं न) आध्वानं अनुवितन, २ स्मृति (स्त्री) ।

—युवना, वि स, अनु-स, स्मृ (भ्वा प अ), अनुचित (जु), अनुवृष (भ्वा प मे), आप्यै (भ्वा प अ) २ कठरथ-मुपसृक् ।

—दिलाना या—कराना, कि प्रे, न 'स्मरण वरता' के प्रे रूप ।

—रायना, वि स, चित्ते-चेतमि मनमि निधा (जु उ अ), मनमि धृ (जु) ।

—पत्र, स पु (म न) स्मरण-स्मारक पत्रम् ।

—शक्ति, स स्त्री (स) स्मृति (स्त्री),

स्मरण, धारणा, चि ता, आ ध्यान, आध्या, चर्चा, चितिति (स्त्री), चित, चितिया ।

स्मरणीय, वि (सं) आध्याय, अनुवितनीय, स्मन्य, स्मरणार्ह, मनसि धारणीय ।

स्मशान, स पु, दे 'स्मशान' ।

स्मारक, वि (स) अनुबोधक, स्मृतिकर । स- पु (स न) स्मृति-स्मरण, चिह्न ३ स्मार यदान, स्नेहाभिधानम् ।

स्मारक, वि (सं) स्मृति, विहित सवधि २ स्मरणसंबन्धितम् ।

स्मित, स पु (स न) ईषद्भाष्य, मदहास, दे 'भुसकराहट' ।

स्मृति, स स्त्री (स) दे 'स्मरणशक्ति' २ स्मरण, आध्यान, अनु, चितन-बोध ३- आर्यधर्मशास्त्राणि (स्मृति-स्मृति आदि) ।

—कार, सं पु (स) धर्मशास्त्रकार ।

—वर्दिनी, स स्त्री (स) ब्राह्मी ।

स्वदन, स पु (सं) रथ, दे ।

स्वात्, अन्य (स) दे 'शावत्' ।

स्थानपत्र, स पु (हि स्थाना) नैपुण्य, दाह्य, चातुर्वै २ कैवर्ष, शाठ्य, व्याज ।

स्थाना, वि (स स्थान) चतुर, तुदिमद २ धूर्त, कापटिक ३ दयस्क, युवन् । स पु, शृङ्ग २ ग्रामणी ३, चित्रितम् ।

—पत्र, स पु, दे 'स्थानपत्र' ।

स्थानी, ङ (स्त्री) (हि स्थाना) चतुरा, दक्षा, तुदिमती । स स्त्री, युवतीति (स्त्री), समकन्या, परिणया, उद्वाहा ।

स्थार, सं पु (सं श्रृगाल) नवुर, दे, 'शीदक' ।

स्थाह, वि (का) काल, कृष्ण, अमिन ।

—दिल, वि (का) दुष्ट, लल, पाप ।

स्थाही, सं स्त्री (धा) मशी, बीसी, मशि वि मि (सन स्त्री), मला २ बाल्मिक (पु), कृष्णा, श्यामता ३ नजलभेद ४ कल्प, रोग्यम् ।

—घट, —चूम, स पु, मनी शोषक तूमट (पत्रम्) ।

—जाना, शु, बीजन अति ३ (अ प ङ) ।

—लगाना, शु० अवयव परिवर्द्धि २ (भ्वा प म), बल्क (ना धा कर्त्तव्यति) ।

स्यूत, वि (मं) सून, निष्पत् २ सून,

व्यूत, प्रोत, पुनि, पुदिन ३ विद्ध । स पु
(म) स्योन, प्रसेव ।

स्रवण, स पु (म न) स्र(सा)व, प्रसाव,
२ गर्भ-पात-साव ३ मूत्र ४ प्रसेव ।

स्रष्टा, स पु (म ष्ट) विश्वसृन्, व्रजान्,
चतुसृत् । वि (म) रचयितृ निनाट ।

स्रुवा, मं पु (म स्त्री) स्रुव, स्रु (स्त्री),
स्रु (स्त्री) (यज्ञपात्रभेद) ।

स्रात, स पु (स न) स्रोतम (न), प्रवाह,
ओष, धारा, मशक २ नदी ३ देहउद्ग्राणि
(न बहु) ४ वक्षपरपरा ।

स्लीपर, म पु (अ स्लिप्पर) कफरीका ।

सुत्र—, म पु (अ) पूर्णकफरीका ।

स्लेट, म स्त्री (अ) लेसन शिला, अश्म
पाषाण, पट्टिका, *पाषाणी ।

स्व, मं पु (स) आत्मन् २ बहु, शानि
(पु) २ धनम् । वि (म) स्वीय, स्वकीय,
आत्मीय, स्वरु, नित्र, स्व-नित्र-आत्म- ।

—कार्य, म पु (म न) निजकृत्यम् ।

—कुटुम्ब, म पु (म न) नित्रपरिवार ।

—जन, म पु (स) बहुवर्ग, बाणवा (बहु) ।

—देश, सं पु (स) नाम-मात्र भूमि
(स्त्री) ।

—देशी, वि (स शीय) निजदेश, स्वधितृ
निमित्त ।

—धर्म, स पु (म) निजकृत्य २ सहज
गुण ।

—राज, मं पु (म राज्य) निजशामनम् ।

स्वकीय, वि (स) स्व, नित्र, आत्मीय, स्वीय ।

स्वकीया, स स्त्री (स) नायिकाभेद (म्),
स्वीया, स्वामिन्येवानुरक्ता ।

स्वगत, म पु (म न) आन-मनो-गत,
अधार्थ, नाशययोजिभेद (सा) ।

स्वच्छन्द, वि (सं) स्वतन्त्र स्वाधीन, स्वायत्त
२ नियन्त्राशय, स्वैरिन्द्र निरकुश, स्व
रुचि । किं वि (मं न) स्वातन्त्र्ये, स्वच्छन्द
३ स्वैर, निरकुश, यथेष्टम् ।

—चारिण, म स्त्री (म) वदन्ता ।

—चारो, वि (स रिन्) स्वेच्छानारिन्,
स्वैर, स्वैरिन् ।

स्वच्छन्दता, म स्त्री (म) स्वा-य, स्वाधीनता,
स्वतन्त्रता २ स्वैर(रि)ता, निरकुशता ।

स्वच्छ, वि (म) अमल, निमल, विमल, मल,

हीनरहित २ शुभ्र स्वैत, उज्ज्वल ३ पवित्र,
शुचि, वि, शुद्ध ४ स्पष्ट, विशद ५ स्वयं,
निरामय ६ निष्पट, प्रजु ७ पारदर्शक ।

स्वच्छता, म स्त्री (म) निमलता, विमलता
२ उज्ज्वलता ३ पवित्रता ४ पारदर्शकता ।

स्वच्छ, वि (म) ६ 'स्वच्छद' वि तथा
किं वि ।

स्वतन्त्रता, म स्त्री (स) दे 'स्वच्छदता' ।

स्वत, अव्य (म) स्वेच्छया, स्वयमेव, स्वै-छा
पूर्व कामन (सक अव्य) ।

—प्रमाण, वि (स) स्वत सिद्ध, स्वयंसिद्ध,
प्रमाणांतरनिरपेक्ष ।

स्वत्व, म प (म न) शक्ति (स्त्री),
अधिकार वश २ आधिपत्य, स्वामित्व,
प्रभुत्वम् ।

स्वप्न, स पु (म) स्वाप, प्रभुसम्प दान
२ निद्रा २ अमभवकल्पना, वृथामिथ्या
धामना, आभाम, स्वप्नसृष्टि (स्त्री) ।

—देखना, स्वप्न दुश (भ्वा प अ), स्व
प्नावर्त (ना धा)

—दोष, स पु (स) निद्राया शुनयात ।

—मं योलना, वि अ उत्स्वप्नावर्ते (ना धा) ।

—लेना, मु, अमभवकल्पना कृ, मनमा कल्प
(प्रे) ।

स्वभाव, म पु (स) धर्म, गुण, प्रकृति
संसिद्धि (स्त्री) स्वरूप, नि, मर्ग, भाव,
२ प्रकृति-मनोवृत्ति (स्त्री), शील ३ अ
भ्यास, नित्यव्यवहार ।

—मिद्ध, वि (म) सहज, प्राकृतिक,
स्वाभ विर ।

स्वभावत, अव्य (स) प्रकृत्या, ज-मत,
निसर्गन ।

स्वय, अव्य (स) आत्मना २ स्वत एव,
विनाऽऽयाम, प्रयत्न विना ।

—भू, म पु (स) ब्रह्मन् (पु) २ काल
३ कामदेव ४ विष्णु ५ शिव । वि (म)
स्वय, नात्र भून् स्वय, स्वयोनि ।

—वर, म पु (मं) स्वयवरण, स्वे-च्छया
पतिवरणम् ।

—वरा, म स्त्री (म) पतिवरा, वर्या ।

—सिद्ध, वि (म) स्वत सिद्ध २ स्वत-
सफल ।

—सेवक, म पु (स) स्वेच्छासेवक ।

—सेविका, म पु (म) स्वेच्छामविना ।

स्वर, म पु (स अन्व) स्वा २ परलोप
३ आनश शम् ।

स्वर, म पु (म) ध्वनि, शब्द नि स्व
(स्वा)न, नि नाद घोष क्वच, विरन,
वि,र(रा)न, छाद २ पटनदय सप्त
स्वरा (मगीन) ३ उदात्तद्विस्वरविक (व्या)
४ अव, माधा (व्या) ५ उच्छ्वसम् ।

—भग, सं पु (स) स्वर, श्रव जेद, गल
रीगभेद ।

—मन्त्रम, स पु (स) स्वरारोणरोक्षी
(मगात) ।

स्वरूप, म पु (स न) निरूप, आकार,
आहति (स्वा) २ मूर्ति (स्वा), चिन इ
३ प्रानि (स्वा), स्वभाव ४ देवादिभि
धृत रूप ५ देवादिरूपधारिन् । वि (म)
गुण्य, मम २ सुन्दर, मनोज्ञ ३ धटिन, प्राह ।
क्रि वि, रूपेण, रीत्या (उ प्रमाण स्वरूप =
प्रमाणरूपेण) ।

स्वर्ग, न पु (स) स्वरदेव अमर सुर-उर्ध्व
लोक, स्वर (अन्व), नाव निदिव,
विदशाल्य, मन्दर, शुक्रमवन, सुगाधार
२ इक्षर ३ सुप्त ४ सुमद रवान
५ अकाश शम् ।

—शाम, वि (सं) श्वग, लिप्प इ-पुन ।

—गमन, सं पु (स न) स्वर-स्वग-गति
(स्वा) गम, निधन, मरणम् ।

—गामा, वि (स-मिन्) स्वगमन-गन्तु २ स्व
गन्ध, स्वगत, मृत ।

—नर, स पु (स) व-पृष्ठ ।

—धनु, म स्त्री (सं) वामधेनु ।

—नद्या, म स्त्री (सं) स्वर्गावण, मदादिना ।

—पति, सं पु (स) इन्द्र ।

—पुरी, सं स्त्री (म) अमरावती ।

—लोक, सं ॥ (म) दे स्वर्ग (१) ।

—वधू, स स्त्री (स) स्वर्गस्त्री, अमरम
(स्वा) ।

—गाम्, सं पु (म) स्वर्गवाम २ मरण
निधनम् ।

—वामी, वि (म मिन्) दवलोत्तवामिन्
२ दिवगन, भेन, मृत, स्ववान, स्वर्गस्थ ।

स्वर्गीय, वि (म) स्वर्ग्य, लिप्प, ईद २ दे
'स्वर्गवामी' (२) ।

स्वर्ग्य, वि (म) दे 'स्वर्गीय' (१, २) ।

स्वर्ण, स पु (स न) दे 'सोना' (१) ।

स्वर्लोक, म पु (म) दे 'स्वर्ग' (१) ।

स्वल्प, वि (म) अल्प, अतिरलीक ।

स्वशूर, म पु (स श्वशूर) दे 'समुद्र' ।

स्वस्ति, अन्व (सं) वस्वान-मगल भद्र
भूवाव (अमीस) । स स्त्री (म) कल्पार्ण,
मगल २ सुखम् ।

—वाचन, स पु (म न) मगल्यमनपाठ
२ धामिरवृत्त्यभेद (गणेशपूजनदि) ।

स्वस्तिक, म पु (म) मगल्यचिह्नभेद
(३) २ मगलद्रव्य ३ चतुर्ध्व ।

स्वस्तिका, म स्त्री, दे 'स्वस्तिक' (१) ।

स्वस्वर्धन, म पु (म न) कार्यात्मै
मगल्यमनपाठ २ सत्पुत्रिताधनम् ३ दृष्टामै
नीवमानो मगल्यनलकलश । ४ दानप्राप्त्य
नंतर विप्रस्थाशीर्वाद ।

स्वस्थ, वि (स) अनामय, निरामय, नीरोग,
अरोग, कुशल, कुशलम्, सुस्थ, आरोग्यवन्,
नीरुच २, निष्पादि, व्याधि-रोग, रहित १
'सावधान' दे ।

—चित्त, वि, शा-तमनस्व ।

स्वाग, म पु (सं स्वाग >) (उपहासार्थ)
अनु, अरण-वार-कृति (स्त्री), विन्वन २
वैपानर, छप हृत्कवपट, द्यद ।

—रचना, क्रि स, वेध परिहृत् (प्रे),
वैपानर रच (चु) २ नद् (चु) मनिना
(स्वा प अ) ।

स्वागी, म पु (म स्वाग >) गट, अभिनट,
श्रीकृत्, रगानीत् २ अट ३ दे बहुकृषिया' ।
स्वागत, म पु (म न) उपचार, भमान,
ममावना, नद, नार-कृति (स्त्री) निया,
प्रत्युत्तमन, प्रत्युत्तमन, प्रत्युत्तन, प्रत्युद्,
गम-गति (स्वा) ।

—करना, क्रि म, प्रत्युत्तम (स्वा प अ),
प्रत्युत्तम (स्वा प से) ।

—समिति, म स्त्री (स) स्वागत-समाप्ति
समा ।

स्वातम्य, म पु (म न) दे 'स्वतन्त्रता' ।

स्वाति, म स्त्री (म) स्वाती, पञ्चदश
नक्षत्रम् ।

स्वाद्, सं पु (म) आम्वाद, रम २ आनद,
रमानुमति (स्वा) ३ इच्छा ४ मातृपदम् ।

—हेना, किं स, आ स्वाद (भ्वा आ मे), रस् (चु) २ ईषर ग्याद (भ्वा य से) । म पु, आ, स्वादन, रसनम् ।

स्वाद्विष्ट, वि (म स्वादिष्ट) सरम, सुरम, मध्य, हविर्हर (-री स्त्री) स्वादु २ मिष्ट ।

स्वादीला, वि (स स्वाद >) दे 'स्वादिष्ट' ।

स्वादु, वि (स) 'स्वादिष्ट २ मधुर, मिष्ट, ३ मनोज्ञ ।

स्वादुता, सं स्त्री (सं) सुरसता, स्वादवता २ मधुरता ।

स्वाधिपत्य, स पु (म न) निजप्रभुत्वम् ।

स्वाधीन, वि (स) दे 'स्वतन्त्र' ।

स्वाधीनता, म स्त्री (म) दे 'स्वतन्त्रता' ।

स्वान, म पु (स श्वन्) कुक्षुर, दे 'कुत्ता' ।

स्वाध्याय, स पु (स) वेदाध्ययन, धर्मशास्त्राभ्यास २ अध्ययन, विषयविशेषालुशीलनम् ।

स्वाप, स पु (म) निद्रा २ स्वप्न ३ अशान्ति ४ निस्पन्दता, स्वप्नान्ता ।

स्वाभाविक, वि (स) स्वभावसिद्ध, सहज, प्राकृतिक, नैसर्गिक, कृत्रिमता, रक्षण ।

स्वामित्व, स पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, स्वाम्यम् ।

स्वामिनी, सं स्त्री (स) गेरिनी, गृहिणी, गृहपत्नी, कदम्बिनी, पुरभी २ ईशिनी, रश्मरी, स्वत्ववर्गी, अधिकारिणी ३ धीरापा ।

स्वामी, स पु (स दिन्) प्रभु, अधि, प-पति भू, ईश्वर, ईशित, परिशुद्ध, नायक, नेतृ, आर्य, पालक २ गृहपति, कुडम्बिन, गृहिण ३ पति, भर्ता, पति ४ परमेश्वर ५ नृप ६ कार्तिकेय ६ परिव्राजकीपाधि ।

स्वाम्य, सं पु (स न) स्वामित्व, प्रभुत्व, आधिपत्य, अधिपति ।

स्वायत्त, वि (म) आत्मवश, निजअधिकारस्थ ।

—शामन, स पु (म न) म्यानिक्स्वरान्त्य ।

स्वाराज्य, म पु (स न) स्वाधीनशामन २ स्वगलीक ३ मण्डणा तादात्म्यम् ।

स्वार्थ, सं पु (सं) निजोद्देश्य, आमप्रयोजन २ आत्महित, निजलाभ ३ स्वधनम् ।

—स्वाग, म पु (सं) निजलाभोत्सर्ग ।

—स्वागी, वि (स दिन्) निजलाभोत्सर्गिन ।

—परायण, वि (म) स्वार्थ स्वहित-स्वलाभ, पर-परायण निष्ठ ।

—परायणता, सं पु (स) स्वाथ स्वहित स्वलाभ, परता निष्ठा बुद्धि-दृष्टि (दोनों स्त्री)

—साधक, वि (म) दे 'स्वार्थपरायण' ।

—साधन, स पु (म न) निजहितनिर्वहणम् ।

स्वार्थी, वि (स दिन्) दे 'स्वाथपरायण' ।

स्वावमानना, स स्त्री (स) स्वावमाननम्, आत्म भर्तृमान-गर्हानिन्दा ।

स्वावलम्बन, म पु (म न) आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय ।

स्वावलम्बी, वि (स दिन्) आत्मनिष्ठ, आत्मा श्रय आत्म श्रित, स्वाश्रित ।

स्वास, स पु (स श्वास्) दे 'साँस' ।

स्वामा, म स्त्री (स श्वास्) दे 'साँस' ।

स्वास्थ्य, स पु (सं न) आरोग्य, स्वस्थता, कुशल, नीरोगता, अरोगिता ।

—कर, वि (स) आरोग्य प्रद-वर्द्धक ।

स्वाहा, अव्य (म) इविर्दान, मन शब्द ।

—करना, मु नञ (प्रे), अपभ्यच् (चु) २ भस्ममाकुरु ।

स्वीकार, सं पु (स) अंगीकार २ स्वीकरण, अंगीकरण, ग्रहण आदान ३ वचन, प्रतिज्ञा ।

स्वीकार्य, वि (स) स्वीकरणीय, अंगीकार्य ।

स्वीकृत, वि (स) आदत्त, अंगीकृत, प्रतिगृहीत, २ प्रशस्त, अनु मं, मत ।

स्वीकृति, स स्त्री (स) सं अनुमति (स्त्री), अनुमोदन २ आदान, स्वीकार, प्रतिग्रह ।

स्वीय, वि (म) स्वनीय, निज, आत्मीय ।

स्वेच्छा, स स्त्री (स) निनाभिलाष, स्वरञ्छि (स्त्री) स्वच्छद ।

—चारी, वि (मं) स्वीर, प्रतिनिविष्ट, निरदुग, स्वच्छद ।

—सुयु, स पु (म) भीष्म २ स्वेच्छवा मरणम् । वि (स) स्वायत्तनिधनम् ।

स्वेद, म पु (म) घम, निदाघ, प्रस्वेद, स्वेद घर्म, गर्व उदक २ वाष्प ३ ताप ४ उष्मन् ५ स्वेदन ५ घर्मकारकमौषधम् ।

स्वेदन, वि (मं) घमजात (जू, लीस आदि) ।

स्वीर, वि (स) दे 'स्वच्छद' ।

स्वोपाजित, वि (स) आत्म निज स्व-अर्जित-उपाजित ।

ह

ह, देवनागरीवर्णमालावर्णवर्णिका व्यन्जनवर्ण,
हकार ।

हैकाना, कि प्रे, व 'हॉना' व प्रे रूप ।

हैकाना, कि स तथा प्रे, दे 'हॉना' तथा
हस्वाना ।

हैकारना, कि म, दे 'हुकारना' २ दे
'हलकारना' ।

हगाभा, म पुं (का-भट्ट) कागाभा, गुमुळ
७, कल्पा २ समर्थ, विष्णव ।

हनीरौ, म स्त्री (प) गण्डमान्, गन्धुर ।

हटर, म पु (ल) वडा छा, द 'होटा' ।

हटा, म पु (म) भातुमय रहलभाहम् ।

हडिया, म स्त्री (स हडिया) हडा ।

हडी, म स्त्री (सं) हडिया ।

हता, म पु (म-तृ) घातक, मारक, वध
करिन्, हन् (समामान्य में) ।

हम, म पु (सं) मरल, मानसीकम्,
च(ब)जा, क्षीराश, नागाश, चक्रपक्ष,
राजहम, श्वेतगह्व, कल्कठ, सिन्धुद
पक्ष, धवलपक्ष, मानमान्य २ मय ३ पर
मान्य ४ शुद्धामय ५ परिमान्यमेद ।

—हावि, म स्त्री (सं) वल्गमगनि ।

—हामिनी, वि स्त्री (सं) कल्कठामिनी ।

—हानिनी, वि स्त्री (म) मरु-वल्गमिन्,
भविनी, हमगदगता ।

—वाहन, म पु (न) मरुत (पु), हमरथ ।

—वाहनी, म स्त्री (म) मरुन्नी ।

हैमना, कि अ (म हमन) प्रवि, हम्
(भ्वा प म), हास्य ३ (मरु-मद
हैमना), निम (भ्वा आ ल) ३ (कवा
हैमना) अट्टहाम ४ नमाल्य ५ परिहाम
५ मुद (भ्वा आ म), हृष (टि प स) ।
त्रि म, अद-उर, हम् । म प, हाम, हास्य,
हमन, हमिगम् ।

—खेलना, म पु, विनोद, प्रमोद, अनन्द,
परिहास ।

—बोलना, म पु, हास्यान्त, मुरमभाषण ।

हैमने योग्य, वि, हास्य(भ्वा) ४ हमिगम्,
हास्य, हासक (स्त्री स्त्री) हास्यान्तम् ।

हैमने वाला, म पु, हामक, हामिन् ।

हैसमुख, वि (हि हैमना + म मुख >)
हास्यमुख(भ्वा, स्त्री स्त्री), स्मेरानन(ना, स्त्री
स्त्री), प्रमत्तप्रमुख(भ्वा, वदन (ना, स्त्री
स्त्री) । २ नर्मगर्भ, विनोदप्रिय, हास्यशील,
विनादिन् ।

हैमली, म स्त्री (म भम >) ण्डु (न),
चतुर्क, श्रीवन्धि (न) २ प्रेय, कठामरणमेद ।

हैमाह, म स्त्री (हि हैमना) हमन, हाम
२ अवहाम, उपहाम, लोच, निदा श्रवण ।

हैसाना, कि म, व 'हैमना' के प्रे रूप ।

हसिनी, म स्त्री, दे 'हमी' ।

हैमिवा, म पु (म हम >) स्वार, कवा
णक, स्वि ।

हसी, म स्त्री (म) वरटा-टो, च(ब)जागी,
हसिका, ब(वा)रणा, बरानी, मनुगमना,
मुदुगामिनी ।

हैमी, म स्त्री (हि हैमना) हाम, हास्य,
हमित, हमन हमिति (स्त्री) २ परिहाम,
नर्मन् (न), बौतुर, लीला, विनोद ३ उप
अव, हाम ४ लोक, उपवाद निदा, अपकीर्ति
(स्त्री) ।

—सुसी, म स्त्री, आनन्द, मोद ।

—खेल, म पु, विनोद, बौतुर २ मरु
मुलाध्य, कार्य, साधारणकारी ।

—ट्टा, म पु, द 'हैमी' (३) ।

—उदाता, मु, उप-अव, हम् (भ्वा प स),
सत्यम् निन् (भ्वा प म) ।

—खेल सममना, मु, सुकर-मुलाध्य मन्
(दि आ अ) ।

—मैं उदाता, मु, साधारण मत्वा उपर
(भ्वा आ म) ।

—मैं खीसी, मु, विनोद कल्ह, परिहाम,
उपद्वे परिणत ।

हैमोद, वि (हि हैमना) हास्य परिहाम-विनोद,
प्रियशील, ननगर्भ, विनोदिन्, बौतुविन् ।

—यन, म पु, हास्यशीलता, विनादप्रियता,
नर्मगर्भता ।

हैसीहूँ, वि (हि हैमना) हामो-मुत् २ परि
हासकुल ।

हज, वि (अ) सत्य, जन, अविनय, मध्य,

यथार्थ २ उचित, -यार्थ, धर्म्य । स पु (अ) अधिकार, स्वत्व २ प्रभुत्व, शक्ति (स्त्री) ३ कर्तव्य, धर्म ४ मत्प, ज्ञान, तथ्य ५ परमात्मन् ६ देय परिशोध्य ७ ग्रह प्राप्यन् ।

—भदाकरना, सु कर्तव्य पा(त्रे, पालयन्तिवै) ।

—दार, म पु (अ + का) अधिकारिन्, स्वत्ववद् ।

—नाटक, अथ्य (अ + का + अ) बलाद्, स्तरभम (दोनों अथ्य) २ व्यर्थ, निप्रयोजन ।

—मालिकाना, स पु (अ + का) स्वाम्यधिकार ।

—मौरूसी, स पु (अ) परंपरागत पौरुष, अधिकार ।

—शुका, म पु (अ) प्रतिवेशाधिकार ।

हकबकाना, कि अ (अनु हका बका) निशेधी निस्तम्भी नटी, भू, व्यमुद् (दि प वे) ।

हकला, वि (हि हकलाना) अव्यक्त गद्गद, बादिन्, स्तलितस्वर ।

हकलाना, कि अ (अनु हक) गद्गदवाचा बद् (भ्वा प से), स्तलद्वाच्यै-अस्पृष्टवणे भाव् (भ्वा आ से), स्तल (भ्वा प से) ।

स पु, स्तलन, गद्गद-अस्पृष्ट अव्यक्त, भाषणम् ।

हज्जारत, स स्त्री (अ), सुदृढा, तुच्छता, स्त्रुता ।

—की नगर से देखना, सु, अवमन् (दि आ अ), उपेक्ष (भ्वा आ से) ।

हकीकत, स स्त्री (अ) तथ्य, तत्त्व, सत्य २ तथ्यवाचा, सत्यवृत्तात् ।

—सै, सु, तत्त्वन्, वस्तुतः ।

हकीडी, वि (अ) सत्य, यथार्थ २ निज, अस्मीय, सीदर ३ इक्षरीय, पारमाधिक ।

हकीम, स पु (अ) आचार्य, विद्वान् २ वैद्य, चिकित्सक ।

नीम—, स पु, मिथ्या-कु अनुभवान्, वैद । नीम हकीम खनरे ज्ञान, लोकोक्ति, इक्ष्जान मयकारम्, अल्पबोधि भयावह ।

हकीमी, स स्त्री (अ हकीम) (यावन) चिक्किस्ताश्च २ (यावनी) वैधवृत्ति (स्त्री) ।

हकीर, वि (अ) तुच्छ, सुद २ उपेक्ष ।

हक्क, स पु (अ, हक्का बहु) न्वत्वानि, अधिकारा (दोनों बहु) ।

इकूमत, स स्त्री, दे 'इकुमत्' ।

हका बका, वि (अनु हक बक) विरमयापन्न, आश्चर्यचकित, सन्नान्त, नटी-आकुली निशेधी, भूत, निस्तम्भ ।

—होना, कि अ, दे, 'हकबकाना' ।

हगना, कि अ (ह दन) हद् (भ्वा आ अ) पुरीष-मल उत्सृज् (तु प अ), उच्चर (भ्वा प से) । स पु, हदन, मत्, उच्चार, रेफ, पुरोगोत्सर्ग ।

हगाना, कि प्रे, व 'हाना' के प्रे रूप ।

हचकोला, म पु (अनु हचक) उद्घात, उच्छेप उच्छलन, सङ्गोम ।

हज, स पु (अ) मकालात्रा, हज ।

हज (—ज), स पु (अ) सुख, आनन्द, हज २ लाभ प्राप्ति (स्त्री) ।

हजम, म पु (अ) जठरे पचन, विपरि, पाच, परिणाम (वि, (जठरे) पच, परिणन, नीर्ण २ सरूपत अपहृत, छानेन अत्मसाहृत ।

—होना, कि अ, दे 'पचना' । सु, कदापि हतवन्तुन स्वपार्श्वे स्थिति (स्त्री) ।

हजरत, स पु (अ) महात्मन्, महानन् २ महाशय 'महोदय' धीमन् ! (सवेषन वचन) ३ चूर्त, कितव (व्यग्य) ।

हजामत, स स्त्री (अ) केशादीना वपन, मुण्णत खौर २ प्रवृद्धा श्मश्रुवेणा (वह) ।

—बनना, कि अ, मुण्ड-वपु-श्रु-स्रु (कर्म) । म, वच्-श्रु-विमलम (कर्म) ।

—बनाना, कि स मुण्ड (भ्वा प से, तु) श्रोत्र कुर (तु प से) छिद् (ह प अ), श्रु-स्रु (तु प से) । सु, धन ह (भ्वा प अ) २ तच् (तु) ।

हजार, वि तथा स पु (का) दे 'सहस्र' ।

वि वि, सहस्र इड-असत्य-वारन् ।

हजारा, (का) सहस्ररत्न (पुं) २ धारा यच्, दे 'कौवार' ।

हजारी, स पु (का) सहस्रिन्, महवयोधा-ध्यक्ष ।

दम—, स पु, दशसहस्रिन् ।

पच—, स पु, पचसहस्रिन् ।

—बातारी, म पु, उच्चनीच-विविध तथनाथन, चना ।

हजम, म पु (अ) नपित, दे 'नार' ।

हट, म स्त्री, दे 'हठ' ।

हटना, कि अ (स घटन) स्थानान्तर या

(अ प अ), सु (स्वा प अ) २ अरु, दाद (अ प अ), अपसु ३ वनव्यान् विमलाभू, क'व्य त्यन (स्वा प अ) ४ दूरीभू, नेत्रगोचर (वि) वन (दि आ स) ५ स्थान (वि) वन, व्याक्षिप (कर्म) ५ नरा (दि प ने), वन (दि प म) ६ विचलित (वि) मू, प्रविशामा क। म पु तथा भाव, स्थानान्तरगमन, अर, सरणं सति (स्त्री), वनव्यान्विता, व्याक्षिप, विनव, शमन, नष्ट, (मकटादि का), विचलन, प्रविशामा ।

हटनेवाला, स पु, स्थानान्तरगमिन, अपयायु, अपमन, वनव्यान्विता, शमनोत्तुल, प्रविश विरोधित् ।

पट्टे न हट्टा, सु, पराहृत (वि) न वन, सज (वि) स्था (स्वा प अ) ।

हट्टाणा, क्रि प्रे, व 'हट्टा' क प्रे रूप ।

हट्टाणा, क्रि स (हि हट्टा) स्थानान्तर नी (स्वा प अ), अप, सु (प्रे) २ दूरीभू, अपनी ३ पलाय (प्रे) ४ प्रविशामा हट्टे । म पु तथा भाव, स्थानान्तर नवन, अपमा रण, अपनयन इ ।

हटा हुआ, वि, स्थानान्तरगत, अर, वान-ज गत-वन, दूरीभू, वनव्यान्वितामीभू, सान, नष्ट, विचलित ।

हट्ट, म पु (स) आवण, निगम, पण्य भूमि (स्त्री) बीविना, क्रयविक्रयस्थान २ पण्यगाला, दे 'हट्ट' ।

हट्टा-हट्टा, वि (स हट्ट+अनु) हट्टपु, मांस, हट्टाग, प्रमत्त, वन, महा-वधू, वाय । हट्टी, स स्त्री (म) हट्ट, अपा निम २ पण्यगाला (दे 'हट्ट') ।

हट, स स्त्री पु (स) वनत्वार, रम्य २ दुराग्रह, निर्वैध, प्रतिनिवस ३ हट्ट, प्रतिनिवस ४ वनव्यान्विता अनिवार ।

—करता, क्रि अ, दुराग्रह क, प्रतिनिवस (वि) वन (स्वा अ ३) ।

—धर्मो, म स्त्री (म हट्टम) हट, दरा द्र २ विचारमगोना दे 'वट्टपन' । वि दुराग्रह, प्रतिनिवस, निर्वैधर ।

—योग, स पु (स) वी-मेद, हटविषा ।

—योगी, स पु (म विर) हट्टयोग्याभिव ।

हट्टात्, अव्य (स) दुराग्रहेण, सनिर्वैध २ वनत्वार, सरमम ३ वनव्यान् ।

हट्टी, वि (म हट्टिन्) दे 'हट्टी' ।

हट्टीला, वि (स हट्ट >) दुराग्रहिन, प्रति निविष्ट, निर्वैधर २ हट्टमतिष्ठ, सत्यसत्त्वः । हट्ट, स स्त्री (म हट्टीतरी) अमया, अमृता, पय्या, श्रेयमी, शिवा, रसायनपना, प्राणदा, देवी, दिव्या ।

हट्टक, स स्त्री (अनु) उत्कटेष्टा, वीप्रामि राप ।

हट्टकाया, वि (देउ हट्टका) उत्तम- वपुः (प्राप पुत्रों के लिए) २ अस्तुत्तर, अनीच्छुक ।

हट्टगोला, स पु (हि हा+गिला) १ हट्टगिला, छगमेद ।

हट्टाल, स स्त्री (म हट्ट+ना) हट्ट तन, (विरोधादिप्रकाशनार्थ) सभ्य व्यवसाय कर्म, स्वाग ।

—करना, क्रि अ, सभ्य व्यवसाय त्यन् (स्वा प अ), हट्टाल क ।

हट्ट, वि (अनु) निगीर्ण, अठरमित, प्रमिन् २ वनगपहन ।

—करना, मु, दे 'हट्टना' (२) ।

हट्टपना, क्रि म (अनु हट्ट) आस्य निक्षिप् (तु प अ), नि (तु प मे), प्रम (स्वा आ मे), सत्वर मष्ट (तु) २ वप देन अपह (स्वा प अ), अन्यायेन आदा (तु आ अ) ।

हट्टवहाना, क्रि अ (अनु हट्ट+वह) त्वद् (स्वा आ से), मममन विषा (तु व म), आतुर, आतुर (वि) वन (दि आ म) । हट्टवाहिया, वि (हि हट्टवाही) त्वरित-नृ- शिप अशु, कारिन्, त्वराकुल ।

हट्टवही, स स्त्री (अनु) त्वरा, गूणि (स्त्री), रम्य-म, शिप्रा, शीघ्रता, २ संभ्रम, त्वरा, अनुरता-आनुता ।

हट्टहट्टा, क्रि स (अनु हट्ट+हट्ट) त्वद् (प्रे), त्वरित मष्ट (प्रे) । क्रि अ, वप वेध (स्वा आ मे) २ मष्ट चन् (स्वा प मे) ।

हट्टा, स पु (सं वहाविका) वटा, दे 'मि' ।

हट्टी, स स्त्री (मं हट्टी) अस्थि (न) अदिक, कुत्तं वीकम, मदीभव, मष्टवर,

विडन्, वकंर, श्वेदयित (भाव बहु) २ वड, वुडम् ।

हृदिर्षा गदला या तोन्ना, मु, पक्व तड (वु) ।

हृदिर्षा निरल अना, मु, अनिरुद्ध-अनिशीन अस्थिदोष (वि) अन् (दि आ मे) ।

हृत्, वि (स) प्रमापित, निवृद्धि, नि, हिंसित, निहत, सृणित, निवर्षित, विदमित, मरित, प्रतिपत्तिन, प्रमथित, आश्रित, विवित, वधित, व्यापादिन, पचत्व परलब्ध, गमिन-नीन प्रेषित २ उचित, प्रहृत, आहत, १ रहित, विहित (उ श्रीहत) ४ नशित, नष्ट, ध्वस्त, ध्वमित ५ पीडित, द्रस्त ६ निवृद्ध, उपवोदानर्ह ७ गुणित (गति) ८ व्यथित, अर्दित ।

—प्रभ, वि (स) निप्रभ, कर्निहोन ।

—तुष्टि, वि (म) मूलं, निवृद्धि ।

—भागी, वि (स गिन्) हन नद, मय्य, दुर्देव ।

—वार्य, वि (म्) निर्बल, अशक्त ।

—हृन्त्य, वि (स) हृत्पात्र, भग्न, वित्त हृदय उत्साह ।

हृत्क, स स्त्री (अ हृत् = पत्नी) अपमान, निरादर निरस्कार, अवज्ञा, मन हानि (स्त्री) ।

—हृङ्गती, स स्त्री (अ हृन् + हृन् >) मानहानि (स्त्री), अवधीरणा ।

—करना, क्रि ॥ (समुदाये) व्य भव, मन् (मे) अवज्ञा (कृ प अ), निरवृत् ।

हृत्ताश, वि (म) निराश, त्यक्त, अशा, अनीन हीन-रहित, निरपेक्ष ।

हृत्ताहत, वि (म) मृग्यन्, प्रेक्षन्, हव मृत, मृगित्वेन ।

हृत्तोमाह, वि (म) निर-मान उत्साह, मनो हत, भग्नोद्यम, विपणा, अवग्रह, रिक्त प्रति, बन्ध हत, स्तम्भितपेय ।

हृत्पा, सं पुं (सं हृत् >) मुक्ति (स्त्री), हृत्पी, स स्त्री वारय, दट ।

हृत्पा, स स्त्री (सं) हनन्, वध, घात, मृदन, हिसन, हिंसा, मारणम् ।

—करना, क्रि स., हन् (अ प अ, तथा प्रे घानयति), व्यापद् (मे), दे 'मारना' ।

हृत्पारा, स पु (स हृत्पाकार) घातक, मारक, वधकारिन्, हृत्, हन, प्राणहर ।

हृत्पारी, स स्त्री (हिं हृत्पारा) प्राण, हरी-हारिणी, वधकारिणी, घातिका २ हृत्पा, पाप-अपराध-शेष घातकम् ।

हृथ, स ॥ (म हृत्) वर, पानि ।

—कडा, स पु (सं हृत्कड क >) हृत्-लाघव, करकौशल, इन्द्रजाल २ गुप्तचेष्टा, प्रच्छन्न प्रयोग प्रयुक्ति (स्त्री), प्रनारणा, छल-लम् ।

—कडी, स स्त्री (स. हृत्कडक क >) हृत्, पाश निगड, करवधनी ।

—कडी रुमाना, क्रि स, पाणिपद्मेन वध (कृ प अ) सयम् (प्रे) ।

—हुत्, वि, तडनशील ।

—लना, स पु, पाणि-कर, पीडन, पाणि हृदयम् ।

—मार, सं स्त्री, गन हरित, शाला, दे 'कील' खाना ।

हृथनाल, सं स्त्री (हिं) अहन्तिनलम्, गन नेयशस्त्री ।

हृथ(धि) नी, स स्त्री (सं दतिनी) परिणा, करेण-य (दोनों स्त्री), इमी, मातंगी, गन योपित, क, रेणुका, व(का)सा, पचा, वटभरा ।

हृथिया, स पु (स हृत्पा) हृत्पा, अपोदश नक्षत्रम् ।

हृथियान, क्रि म (हिं हृथ) बलात् प्रहृ (कृ प से) धृ (वु) आदा (जु भा अ) २ चुर (वु), मुष् (कृ प से) १ कर्त्तुं स्वायत्तीकृत ।

हृथियार, स पु (हिं हृथियाना) अस्त्र, शस्त्र, आयुध, हनि (पु स्त्री), हृत् २ उपकरण, यत्र, दे 'औचार' ।

—यद्, वि, सदाय, सायुध, सत्रद, सत्र ।

—यौघना, मु, शस्त्राणि धृ (वु), मत्रहृ (दि प अ), सञ्जीव ।

हृयेली, स स्त्री (मं हृत्तल) करतल, तल-ल, प्रतल, ताल, प्रयाणि, प्रहृत्, फर्करीक ।

—सुजलाना, सु, वितलाम सभाव्यते ।
 —पर सिर रखना, सु, जीवनमोह त्यज्
 (स्वा प अ), प्राणान् अवाण् (सु) ।
 —म आना, सु, स्वाधिकारे आया (अ प अ) ।
 हथौडा, स पु (दि हाथ) महा, पन-विषन ।
 हथौडी, स स्त्री (दि हथौडा) वि,षन,
 दुषण, अयोपन ।
 हथ्यार, स पु, दे 'हथियार' ।
 हद्द, म स्त्री (अ) सीमा, दे ।
 —करना, सु, सीमा-भर्यादा अतिक्रम (स्वा
 प से) -उल्लप (स्वा आ से) ।
 —से ज्यादा, सु, अमीम, नि सीम, अमित,
 अपरिमित ।
 हनन, स पु (स न) दे 'हत्या' २ ताडन,
 प्रहरण ३ गुणनं, गुणाकार, पूरण (गणित) ।
 हननीय, वि (स) हन्तव्य, बघाई, शीर्ष
 श्लेष, बध ।
 हनु, सं स्त्री (सं पु स्त्री) हन् (स्त्री),
 कपोलद्वयपरमुलमाग २=वि(अ-नु)भुक्तम् ।
 —की जकबाहट, सं स्त्री हनुमह ।
 हनुमान, ॥ पु (सं हनुमण) मासुति, पवन
 पुत्र, बालुष्ठन, आंगन जैव, कपीन्द्र ।
 हप, स पु (भनु) स्वरितनिगण्णात्मको हपिति
 शब्द ।
 —कर जाना, सु, मत्वर निगू (पु प से) ।
 हफ्ता, सं पु (का) सप्ताह, दे ।
 हवर हवर, कि वि (अनु हट वट) शीघ्र,
 तात्पर, समभ्रमम् ।
 हवशी, स पु (अ) हवशीय, हवशदेश
 वासिन् २ कृष्णांग, वरुण ।
 हव्वा डव्वा, स पु (दि हाँक+अनु टव्वा)
 शिशुता आमरोगभेद, असनक ।
 हड्ड, स पु (अ) बाराबास ।
 —बेना, स पु (अ+का) अन्यायकारा
 वास ।
 हड्डी, मर्द (अ अण्) > कण्ठ (२६) >
 सं पु, अहकार ।
 हमरे, अव्य (का) मह, सात २ मम, तुल्य ।
 —अमर, सं पु (का+अ) एक-सम,
 व-नील-नाल, मह, खेतन जी वन् ।
 —निग, सं पु (का) सज्जन-नीय, मन्ग-
 गाप ।

—जोली, स पु (का+दि) सहचर, सति
 (पु) ।
 —दई, म पु (का) समदु स, समवेदन,
 सहायभूति, मत्त सुक, सानुकप ।
 —दई, स स्त्री, सहायभूति (नो), अनु व,
 समवेदना ।
 —निवाला, स पु (का) सह, भोजन (पु)
 भोजन ।
 —प्याला, सं पु (का) सहपायिन् ।
 —राह, अव्य (का) सह, साकम् ।
 —राही, स पु (का) सह, चारिन्-गामिन्,
 मित्रम् ।
 —वतन, स पु (का+अ) सम एक, देशीय,
 देशभान् ।
 —चार, वि (का) सम, सम, नल रेख, सपाट ।
 —सबज, सं पु (का) सहपाठिन् ।
 —सर, स पु (का) सम, गुण-नल पद ।
 —सरी, सं स्त्री (का) समता, समानता ।
 —साया, सं पु (का) प्रति, वासिन्-वेशिन्
 वेश ।
 हमल, सं पु (अ) गर्भ, दे ।
 हमला, सं पु (अ) युद्धयात्रा, यान
 २ अवस्कन्द, आक्रम, आक्रमण दे ३ प्रहार
 ४ क्रूरव्यवह ।
 —आवर, (हमलावर) वि पुं, आक्रामक,
 आक्रमण, चारिन्-वर्ण-कार, अवस्कन्दकृत् ।
 हमालत, म स्त्री (अ) मूढता, अज्ञता,
 मूर्खता, मूर्खत्व, मोल्यम् ।
 हमाम, सं पु (अ हमाम) स्नानागारम् ।
 हमारा, सव (दि हम) अस्माक, अस्मदीय -
 वाय (पु स्त्री न) ।
 हमामहमी, म स्त्री (दि हम) स्वार्थ, स्वार्थ
 परता २ अहमप्रिया, अहमहमिका ।
 हमें, सर्व (दि हम) अस्मान्, न २ अस्म
 स्व, न ।
 हमेल, स स्त्री (अ हमेल) > अहं मुदा,
 मला ।
 हमेसा, अव्य (का) मद, नित्यम् ।
 हय, सं पु (सं) अध, धोक्त (हया स्त्री) ।
 —घोत्र, स पु (सं) विष्णो अवतारविशेष
 २ वेदद्वारी राक्षसविशेष ।
 हया, म स्त्री (अ) लज्जा, प्रया ।

हरसिगार, स पु (न हारसिगार) पारि
जान-नक, मानक, रागपुष्पी, खरपनक ।
हरा, वि (स हरित) हरित, प(पा)लाश
२ प्रमज, प्रदृष्ट, प्रपुल्ल ३ अमि, नव, प्रपय,
४ आम, अपनक, अपरिणत ५ (त्रणदि)
अविरोधित, अशुष्क । स पु, हरित, पलाश
हरिद, नर्ण ।

—पन, स पु, हरितत्व, पलाशत्व २ अपरि
णति (स्त्री), अपकटना ३ नवता प्रत्ययना ।

—बाग, सु, आपातरमणीया बाग ।

—भरा, सु, सरस, शोपरहित, हरितकरु
ताभि आच्छादित (वि) ।

हराना, कि स (हि हारना) अभिपरि
परा, मू (स्वा प से), जि (स्वा प अ)
विपराजि (स्वा आ अ), दम् (प्रे)
२ (शत्रु) विफली-मोयी कृ ३ कलम् अम्
सिद् आयस (सप्त प्रे) ।

श्राण—, सु, मृ (प्रे), हन (अ प अ) ।

मन—, सु, मन नेत ह (स्वा प अ)
मुह (प्रे) ।

हराम, वि (अ) अधम्य, अ-याव्य, अवैध,
श्याय धर्म नियम विधि-विरुद्ध निषिद्ध, दूषित ।
श पु, शरार २ अधम, पाप दोष
३ व्यभिचार, जारकर्मन् (न) ।

—जार, स पु (अ + का) शनिगारिन,
औपस्थिक २ पाप, पापाचारिन ।

—वारी, सं स्त्री, पाप, अधर्म २ व्यभिचार,
जारकर्मन् (न) ।

—शोर, सं पु (अ + का) पापानीविन
पापमठिन् २ पराङ्माद, पराश्रयुष्ट ३
अरुस, उद्योगविमुख ।

—शोरी, सं स्त्री, पाप, आजीव आजीवन
२ पराश्रयभोजन ३ अल्पय, उद्योगविमुखा ।

—झादा, स पु (अ + का) जार, न जान
उत्पन्न, विनात (जारजा स्त्री) २ दुष्ट, खल,
पापिन् (गाली) ।

हरामी, वि, दे 'हरामजादा' (१२) ।

हरारत, स स्त्री (अ) ताप, दाह, ज्वर
२ मंदरपत्, ज्वर, ज्वराग्र ।

हरावल्, सं पु (ह्र) सेना मुख-अग्र, अग्र
नीक, नासीरचरा (बहु) ।

हरास, स पु (का हिराम) भय त्राम २
जाशका ३ विषाद ४ निरादर्श, निरज्ञता ।

हरा हुआ, वि, अव, हन, चोरित, स्तेनित,
मुषित, मुष्ट, २ आच्छिन्न, मद्धमा जाकृति
गृहीत धृत् ३ दूरीकृत, अपमारित ४ नाशित
ध्वमित ५ नीत ऊढ ।

हरि, स पु (सं) श्री, खर धर निवाम ।
पति-वस्त्र, विष्णु दे २ हृद् ३ अध
४ कपि ५ मिह ६ मूर्ध ७ चद्र
८ मङ्क ९ मय १० भक्ति ११ मयूर
१२ श्रीकृष्ण १३ श्रीराम १४ शिव
१५ यम । वि (स) (१२) पिगल
हरित, नर्ण ।

—श्या, स स्त्री (स) भगवच्छरितवर्णनम् ।

—कीर्तन, स पु (स न) भगवद्गुणगानम् ।

—गीतिका, स स्त्री (स) हरिगीता, छन्दो-
भेद ।

—चदन, स पु (सं पु न) नैलपणिक,
गोशीर्ष (चदनभेद) २ स्वगन्धवृक्षविशेष
३ पत्रपराग ४ कुबुम् ५ चन्द्रिका ।

—चाप, स पु (स) हृद् हरि, धनुम् (न) ।

—जन, स पु (सं) भगवद्भक्त, हृदसेवक ।

—ताल, स पु (स न) दे हरताल ।

—हार, सं पु (स न) प्रत्यागतीविशेष,
गंगाहारम् ।

—धाम, स पु (स-मन् (न)) शिणुभोक,
वेकुंठ हरि, पद पुरम् ।

—भक्त, सं पु (दे) 'हरिजन' ।

—भक्ति, स स्त्री (सं) हरि, भजन प्रेमन्
(पु न) मदनम् ।

—वश, सं पु (सं) श्रीकृष्णसत्तान २ पुरा
णग्रन्थविशेष ।

—चाहन, स पु (सं) गरुड २ हय
३ हृद् ।

हरिष्, सं पु (सं) मृग, पुरग ।

—कलक, सं पु (सं) धृगाव चद्र ।

—नयना, सं स्त्री, मृग हरिण नयनी नय
नेत्री-अश्ली ।

हरिणी, सं स्त्री (सं) दे 'हरिनी' ।

हरित, वि (सं) हरित, प(पा)लाश, हरित(द)-
वर्ण २ कपिल, पिग, पिगल, पिशग ।

हरिद्रा, सं स्त्री (सं) दे 'हरदी' ।

हरिन, स पु (मं हरिण) दे 'हरिण' ।
हरियाला, वि (दि हरा) हरित, हरिद्रव
२ शादल ।

हरियाली, सं स्त्री (हि हरा) हरितत्व,
विस्तार प्रसार, हरीनिमग्न (पुं) २ तर-
लता, मनुई विरवार, शाद, शादलता ।

हरिश्चन्द्र, स पु (स) विशुद्ध, त्रेतायुगे
नृपविनेय ।

हरि(री)स, स स्त्री (स हरीषा) हल-लाल,
दण्ड ।

हरीतकी, स स्त्री (मं) दे 'हृ' ।

हरीक, स पु (अ) शत्रु २ प्रति, दन्दिन
स्पादन् ।

हरीश, स पु (सं) वानरेन्द्र २ सुग्रीव
३ हनुमद ।

हर्ष, स पु (अ) विघ्न, अन्तराय २ हानि
क्षति (स्त्री) ।

हर्षा, म पु (सं हर्ष) दे 'हरनेवाला' ।

हर्ष, स पु, दे 'हरज' ।

हर्म्य, सं पु (मं न) प्रासाद, राजभवन
२ विशालभवन, धनिगृह ३ न(ना)रक ।

हर्षा, स पु, दे 'हृ' ।

हर्ष, म पु (स) पुलक, रोमाच दे ।
२ आनन्द, प्र, मेद, आहृद, विलास ।

—विषाद, सं पु (मं डी दि) मोदसेनौ,
आनन्दविषादौ ।

हर्षित, वि (मं) हृष्ट, दक्षित, प्रीत, प्र,
सुरित, प्रमत्त, प्रसन्न, आनन्दित ।

हल्, स पु (मं) शुद्धस्वरहीन, व्यञ्जन,
(कू से ह नक अक्षर) ।

हलन्, वि, (स) शुद्धस्वनान्न (शब्द) ।
म पु, दे 'हल्' ।

हल, सं पु (स न) लाल, हल, हलि,
गोदारण, मीर, सीरक ।

—चलना या जीतना, कि स, हल् (भ्वा
प मे) कृप (भ्वा प अ, सु उ अ) ।

—नीवी, म पु (स-विन्) शालिक, लो-
लिन्, कृपाण, कृपिन् ।

—धर, सं पु (सं) हल, पाणि भूत,
रत्नदेव ।

—मुख, स पु (स न) निरीष ५, फल
लम् ।

—वाहा, स पु (सह) हलवाहित, परहल
चाल्म ।

—वाही, म स्त्री (हि हलवाहा) कृषि (स्त्री),
वपणम् ।

हल्, म पु (अ) विवरण, व्याख्यान, माधन
२ निणय, समाधान, ममाधि ३ गणन,
सरयान ४ द्रावणं, विनयनम् ।

—करना, कि स, विष्ट (स्वा उ से),
व्याख्या (अ प अ) विशदयति (ना धा),
स्पष्टीकृ, उत्तर दा २ विद्रुविली (प्रे),
द्रवीकृ ।

हलक, स पु (अ) कठ, ग, निगरण ।

हलका, स पु (अ) वृत्त, वर्तुल, मडल
२ परिधि ३ समूह, निरुक्त ४ ग्रामादि
समूह ५ चक्रवलय-यम् ।

हलका, ॥ (स लघुक) लघु, अल्प-लघु
स्त्रीक, भार-तोल, सु-मुख, बोध २ विरल,
घनता-रहित ३ गाथ ४ अल्प, स्तोक ५ अल्प,
मूल्य-अथ ६ मंद, सख ७ सुच्छ, नीच, छद्म
८ सुकर, सुसाध्य ९ निश्चित, कृतकार्य
१० सहज, मनु ११ निकृष्ट, अपकृष्ट ।

—यन, स पु, लघुता, लापय, अल्पभारता,
सुखवासता २ क्षुद्रत्व, लघुता ३ अन्, मान
हेतुता, प्रविष्टाभाव ।

—करना, मु, लपयति (ना धा), लघुक
२ अवगण् (चु) अवमन् (प्रे), लुणाय
मन् (दि आ अ) ।

हलचल, (हि हिलना + चलना) संशोभ,
मरभ, सज्जम, सकुल, कोलाहल २ उपद्रव,
विप्लव, समद ३ कप, रपद ।

—मचना, कि अ, संशोभ सजग (दि आ से)-
प्रवृत्त (भ्वा आ से) ।

हल्दिया, स पु (दि हलदी) पाण्डु, रोग-
आमय, पाण्डुक, कामला ।

हलदी, स स्त्री (स हलदी) हरिद्रा, पीनिका,
पीता, वांचनी, वर्णवती, पिता, वर, वर्णिनी,
रजनी, नदा, मयला, मोभा ।

—उठना या चढ़ना, मु, विवाहात् शक्, वर
बधौ तैत्तहस्त्रिभ्यजनम् ।

—लगा के बैठना, मु, निरुपम एकत्र स्था
(भ्वा प अ) २ दपावलि (वि) धृ
(भ्वा आ से) ।

—हरी न पिठकरी, सु, व्यय विनैव ।

हलक, स पु (अ) शपथ, दे 'सौमद' ।

—नामा, स पु (अ + फा) शपथपत्रम् ।

हलवा, स पु (अ) कायह सयाव, मोहनभोग ।

—सोहन, स पु, शोभन मयाव कायह मोहनभोग ।

हलवाई(य)न, स स्त्री (हि हलवाई) काद विकी, मिष्टान्तविक्रेता (खादिकी, खादिकी) २ कादविक मिष्टान्तविक्रेता-खादिक, पत्नी ।

हलवाई, स पु (अ हलवा) खादिक, खादिक, कादविक, मिष्टान्तविक्रेता ।

हलक, वि (अ) हत, मारित ।

—करना, सु, हन् (अ प अ) ।

हलकत, स स्त्री (अ) १५, हया मृगु ३ विनाश ।

हल, वि (अ) धर्म, २। य देव, साक विधि धर्म, अनुकूल विहित, उचिन । स पु (अ) भक्ष्य पशु-जल (हलाम) ।

—प्रोरे, स पु (अ + फा) धम पुण्य-आजी विन् २ हलपू (पु), समार्थ, दे 'भगी' ।

—प्रोरी, न स्त्री, धम पुण्य-आजीव आजी वनम् ।

—करना, सु, न्यायन धर्मेण व्यवहृ(भवा प अ) २. शनै शनै हन् (अ प अ) (हलाम) ।

—का, पु, साक्षात्कूल, वैध, धर्म्य ।

—करी कमाई, सु, पुण्यरूपी, न्यायोपायित वनम् ।

—हलहल, स पु (स म) हल(ल)हल, हलहल, समुद्रमधनजी विधविशेष २ मालहूट, महाविष ३ गरल-ल, विषद ।

हला, न पु (स लन्) वरदन २ कृपाण । हलाम, वि (अ) नम्र, विनीत २ शान्त, शमान्वित ।

हलामी, स स्त्री (अ हलीम) नम्रता, विनय २ शान्त (स्त्री), प्रसाद ।

हलका, वि, द हलका ।

हलदा, न स्त्री, द 'हलदी' ।

हल्ला, न पु (अनु) कोल्हल वरवम्, सुन्दर, लज्जोश, विर(रा)व २ आक्रम, अवस्त-द ।

—करना, क्रि, अ कोलाहल क, उत्कृष्ट (भवा प अ) २ आक्रम (भवा प मे, भवा आ अ) ।

हवन, स पु (स न) होम, होत्र, यज्ञ दे २ अग्नि ३ हवनी होमकम् ।

—करना, क्रि, न, हु (जु उ अ), यन् (भवा उ अ) होमकुटे हवि शिप् (जु प अ) ।

—कुड, स पु (स न) हवनी-यज्ञहोम कुटम् ।

हवलदार, न पु (अ हवाल + फा दार)

हवालदार, सेनाधिकारिभेद ।

हवस, स स्त्री (फा) कामना, लालसा २ लुणा, दे ।

हवा, स स्त्री (अ) मन्द, पवन, वायु दे ।

२ भूत, प्रेत ३ रचानि, प्रमिद्धि (स्त्री) ४ विश्राम, प्रत्यय ५ उत्कटेष्टा ।

—प्रोरी, स स्त्री (अ + फा) पयदन, भ्रम, वायुमेवनम् ।

—चकी, स स्त्री (अ + हि) वायुचक्रा, पवनपेणी ।

—दार, वि (अ + फा) प्रवात, सुवात, पवनपूण ।

—उरडना, सु यज्ञ प्रत्यय नश्(दि प वे) ।

—करना, सु, वीन् (जु) ।

—खाना, सु, पर्यट (भवा प मे), वाउ सेव (भवा आ स) ।

—बाँधना, सु, रचानि वीति नम्(दि आ म) ।

—बाँधना, सु, वित्तम् (भवा आ से), आत्मान इलाप (भवा आ स) ।

—से बाँते करना, सु अनिवगेन धाव् (भवा प से) ।

—से लडना, सु, नित्य कल्होषन (वि) वृत् (भवा आ म) ।

—हो जाना, सु, मत्तर पलाय (भवा आ म) २ निरोधू, विनी (वन) ।

हवाई, वि (अ हवा) वायव (वी स्त्री), वायव्य-वायवीय (या स्त्री) २ नम म्ध, गहन, गामिन् चारिन् ३ निर्हल, निराधार ।

३ स्त्री, व्यवसा, अनिवर्तनरभेद ।

—अड्डा, स पु, विमन, वायुयान, रवाना निवेष्ट ।

—विला, महल, सं पु, खपुष्प, गगन
कुटुमम् ।

—चकी, स स्त्री, दे 'हवाचकी' ।

—जहाज़, स पुं (हि + अ) बायुव्योम
यनं, विमान-न, पवनपोत ।

हवाल, सं पु (अ अहवाल) दशा, अवस्था
२ परिणाम, गति (स्त्री) ३ वृत्त, समाचार ।

हवाला, म पु (अ) उल्लेख, निर्देश, संकेत
२ उदाहरण, दृष्टान्त ३ रक्षा रक्षण,
अधिकार ।

—देना, क्रि स, निर्दिश (तु प अ), उल्लिख
(तु प से) ।

—करना, मु, दे 'सौपना' ।

हवालात, स पु स्त्री (अ) शुक्ति (स्त्री),
निरोध २ भृगुतिगृहम् ।

—करना, मु शुक्तिगृहे निरोध (रु प अ) ।

हवाम, स पु (अ) इन्द्रियाणि हृषीवाणि
(न बहु) २ उपलब्धि (स्त्री), सवेदन
३ सहा, चेतय, दे 'होश' ।

हवि, स पु [स हविस (न)] हवनसामग्री,
हव्य, साम्राज्य, हवनीय, होमीयद्रव्यम् ।

हवेली, सं स्त्री (अ) हव्यं, भवन, पतिगृह
२ पत्नी ।

हव्य, सं पु (स न) दे 'हवि' ।

हशमत, स स्त्री (अ) गौरव, महिमन्
२ विभव, देशयम् ।

हसद्, म पु (अ) ईर्ष्या मत्सर ।

हसर, अव्य (अ) अनुसार, यथा- ।

—सौम्रीक, अव्य (अ) सामर्थ्यानुसार,
मथशक्ति (दोनों अव्य) ।

हसरत, सं स्त्री (अ) शोक, आधि, दुःखम् ।

हमीन, वि (अ) छन्दर, मुरूप ।

हस्त, म पु (ङ) कर, पाणि, दे 'हाम'
२ चतुर्विंशत्यशुलिपरिमाण ३ हस्त लिपि
(स्त्री), रेखनशीली ४ नक्षत्रविशेष ५ मुद्रा,
दे 'मुद्र' ।

—कार्य, सं पु (स न) करतमन् (न)
२ हस्तलिपि, दे 'दस्तकारी' ।

—होदाल, स पु (स न) पाणिपाद, हस्त,
हस्तपत्र चापत्यम् ।

—निया, सं स्त्री (स) दे 'हस्तन्या' (१०) ।

—क्षेप, ङ पु (स) प्राति, नधन रोधनं
२ परकार्य, चर्चाप्रतिपादन ।

—क्षेप करना, क्रि स परकार्येपु -याप्
(तु आ अ), परकायाणि चर्चं (तु प से)
निरूप (चु) ।

—गत, वि (स) प्राप्त, लब्ध, अधिगत, हस्तस्थ ।

—तल, सं पुं (स न) करतल, दे 'हथेली' ।

—प्राण, ङ पु (स न) करवाण दे
'दस्ताना' ।

—पृष्ठ, सं पुं (सं न) करपाणि पृष्ठम् ।

—मैथुन, स पु (स न) हस्तेन शुरुपातन
हृदयसंचालनम् ।

—रेखा, स स्त्री (स) करतल, रेखा रेखा ।

—छाद्यव, सं पु (सं न) हस्त, औशल
चापत्यम् ।

—लिखित, वि (स) हस्तेन लिपिबद्ध ।

—लिपि, स स्त्री (स) लेखनशीली ।

—सूत्र, स पुं (स न) मंगल्य करपत्र, सूत्र
मयं, कर्कण-बलयम् ।

—हस्ति, सं पुं (सं निम्) दे 'हाथी' ।

हस्तिनी, म स्त्री (ङ) दे 'हथनी' २ स्त्री
भेद (कामशास्त्र) ।

हस्ती, स पु, दे 'हाथी' ।

हस्ती, सं स्त्री (ङ) सत्ता, अस्तित्वम् ।

हस्ते, अव्य (स) द्वारा, द्वारेण ।

हहा, स स्त्री (अनु) अट्ट हास्य हान हस्ति,

हहाकार, हीही (अव्य), हास्यध्वनि
२ दैन्यसूचकध्वनि, अवि (अव्य), हहा
कृति (स्त्री) ३ अनुनयातिशय, मप्रणि
पात प्रार्थनम् ।

—खाना, मु, पादयो पतित्वा अनुनी (भ्वा
प अ)-प्राप् (तु आ से) ।

हॉ, अव्य (सं आम्) ओम्, एव, अध किं
२ तथेति, नाद, साधु (सब अव्य) ३ तथारि
४ दे 'यहाँ' ।

—हॉ, अव्य, आनाम्, ओमोम् २ न न,
मा मा, न, नहि, नो ।

—करना, मु, अंगी स्वी, कृ, अनुश (क उ
अ), अनुमन् (दि आ अ) ।

—जी हॉ जी करना, मु, चाड्ढभि प्रमद्
(प्रे)-उपच्छद (चु)-स्तु (अ प अ) ।

—मे हों मिलाना, सु, अविचार्यैव द्रव्यनि
मत्पापयति (ना था) २ दे हाँजी हाँ
जी करना ।

हाँक, स स्त्री (स हुम्बर) हुक्क (भ्वा),
अकारणणा, उच्चैराह्वान तारस्वरेण मबोधन
२ गगन ना, सुद्राह्वान, मिहनाद श्वेदा,
सनार्यमाकारणणा ३ श्रोताह्वान शब्द ध्वनि
४ रक्षार्थं सहायनार्थं, आह्वान-आकारणम् ।

—पुकार, स स्त्री, कोलाहल, उत्क्रोश ।

—देना या लगाना, सु, उच्चै आहु (प्रे),
तारस्वरेण आहु (भ्वा प अ), शब्दावते
(ना था) ।

हाँकमा, कि स (दि हाँक) दे 'हाँक देना'
१ सिङ्गनाद कृ, सुप्राय आहु (प्रे) २ वि
कल्प (भ्वा आ से) आत्मान इत्याच्
(भ्वा आ से) ४ पुरप्रणुद (भु प अ,
प्रे) प्रेर (प्रे), चर्चल (प्रे), चुर (भु),
अज (भ्वा प स) ५ अपसृ निष्क्रम (प्रे)
६ नीप (भु) । स पु तथा भाव, दे 'हाँक'
(१२) ३ विरक्षण, आत्महलघनया ४
प्रणोदन, प्रेरण, प्रचोदन, प्रचालन, प्रजन
५ अपसारण निष्कासन ६ नीपनम् ।

हाँकनेवाला, स पु, प्रेरक, वाहक, चालक,
प्रमोदक, प्रचोदक इ ।

हाँकी, स स्त्री (स हकी) हटिका २ कान्ठ,
हृदी हटिका ।

—पकना, सु, उपमप (कर्म), कूट, रच्
(कर्म), उपजाप कृ (कर्म) ।

हाँफ(प)ना, कि अ (अनु हफ हाँफ या
म हाविरा >) सरष्ट श्वम (अ प से),
मत्वर प्राण (अ प से) । स पु, श्वाश्वान,
त्वदितप्राणनम् ।

हाँसी, स स्त्री दे 'हँसी' ।

हा, अव्य (सं) ह्यशोरमयविस्मयकोपजनदा
सुचरनव्ययम् ।

हाड्डोवन, स पु (अ) उदवनम्, आर्द्र
जनम् ।

हाइड्रोकोजिया, स पु (अ) अक्कोग,
आल्क जन्, भय-सञ्ज्ञा ।

हाइड्रन, स पु (अ) ममस्विच्छ () ।
(उ राक्षसेवर) ।

हाइकोर्ट, स पु (अ) प्रधानन्यायालय,
उच्चाधिकरणम् ।

हाई स्कूल, स पु (अ) उच्च विद्यालय ।

हाउस, स पु (अ) गृह, गेह हं, अ(अ)
गार र्क २ सभा, परिषद ३ नृवदश ।

हाऊ, स पु (अनु) दे 'हौद' ।

हाकिम, स पु (अ) शासक, शानिद,
अभिनारिन् नियोगिन्, आधिकारिक ।

हाकिमी, स स्त्री (अ हाकिम) धामन,
अधिकार, प्रमुख अधिकृत्य, दिष्टि (स्त्री),
राज्यम् ।

हाँकी, स स्त्री (अ) अगलक्रीडाभेद ।

हाअत, स स्त्री (अ) आवश्यकता, अपेक्ष
२ कामना, लावसा ३ मन्मथ, उत्तमसुधा
४ गुणि (स्त्री), दे 'हवालान' (१) ।

हाज्रमा, सं पु (अ) पचन, विपरि, पाक,
पकि (स्त्री) २ जठर, भग्नि मनक,
पाचनशक्ति (स्त्री) ।

—हिगइना, सु, अग्निमाप ज्व (दि आ
से) भक्षण पच् (कर्म) ।

हाजिम, वि (अ) पाचक, पाचन, भग्नि
वहक ।

हाजिर, वि (अ) उपस्थित, पुर स्थित वर्ग
मान, विद्यमान २ सनद, मज्ज, उद्योग ।

—करना, कि स उपपु संमुख तथा (प) ।

—नवाव, वि (अ) प्रत्युत्पन्नमति, दिग्ग ।

—पवाबी, स स्त्री, प्रत्युत्पन्नमतिनास्व, वैद
ग्यम् ।

—च नाजिर, वि, प्रत्यक्षदर्शक ।

—होना कि अ, उदस्था (भ्वा उ अ)
उपस्थित (वि) भू ।

नैर—, वि, अनुपस्थित, अविद्यमान ।

हाजिरी, स स्त्री (अ) उपस्थिति (स्त्री),
विद्यमानता ।

—का रजिस्टर, सं प, उपस्थितिपत्रिका ।

—लेना, कि स उपस्थिति अंक (पु) ।

हाजिरीन, स पु (अ 'हाजिर' ला बहु)
उपस्थितवना (बहु०) धोतृवर्ग ।

—(न) जलसा, सं पु, सभ्या मरस्य
(बहु) ।

हाजी, स पु (अ) मक़ायानिन्, श्रावित
२ हुन मक़ायान् हज ।

- हाट, स स्त्री, दे 'हट' (१२) ।
 हाटक, सं पु (म न) सुवर्ग, दे 'खोना' ।
 हात्ता, म पु, दे 'हत्ता' ।
 हातिम, म पु (अ) जरबदेखीषोऽनुसार
 सामग्रीविशेष २ मुचहलामनुष्य ३ निपु
 रक्ष, मनुष्य ।
 हाथ, स पु (म हस्) कर, पाणि, द्वय
 पञ्चमाल, मुन्दल, जूत, कुम्भि २ च्छि
 विशालगुणपरिमाण ३ बार, दे 'आँव'
 ४ कर्मकर ५ दण्ड, कुम्भि (स्त्री), नारग
 ६ वक्ष, अधिरार ।
 —आना, मु, अधिगम-उपभू (कम) ।
 —उठाना, मु, गड (चु), प्रह (स्वा प अ) ।
 —क्री चालाकी, मु, हस्तगोशल, दे ।
 —क्री मैल, मु, मुच्छमुर असर, बस्तु (न) ।
 —बोँचना, मु, परिह-विरम (स्वा प अ),
 वर (चु) ।
 —चढ़ना, मु, दे 'हाथ आना' २ वर माया
 (अ प अ) ।
 —जोड़ना, मु, हस्ती समानोप अधना गजलि
 बद्धा भवता सागलि प्रार्थ (चु आ से) ।
 —अनुनी (स्वा प अ) मोच (स्वा आ से)
 —डालना, मु, दे 'हस्तक्षेप करना' ।
 —धोना, मु, विपुल (कर्म), वचिग विरहित
 विशेष (वि) भू ।
 —लगा होना, मु, दाहिनेग निधेनतया पीड
 (कम) ।
 —पर हाथ धरे रहना, मु, निरपोष निरुपम
 रथा (स्वा प अ) ।
 —पमारना, मु, पाच् (स्वा आ से) ।
 —पाँव धुलना मु, भवन निरुपमिभू,
 शोभन पटीभू ।
 —पाँव मारना, मु, अ वर (स्वा आ से),
 उचन (म उ अ) ।
 —फेरना, मु, हल (चु) ।
 —पड़ना, मु, प्रहीत आदानु प्रवृत् (स्वा
 आ से) ।
 —पोंधना, मु, दे 'हाथ पीटना' ।
 —मटना, मु, अनुपी (अ आ से),
 पश्चात्ताप के २ निराश दुःखिन (वि) भू ।
 —मारना, मु, हस्त अपह (स्वा प अ)
 २ जम्बिा प्रह (स्वा प अ) ।
 —मिलाना, मु, करौ स्थान (तु प अ)
 २ मनुष्याय सत्त (वि) भू ।
 —मे तरना, मु, बन्धे-अधिकारे रथा (प्रे) ।
 —लगाना, मु, दे 'हथ आना' २ आरम्भ
 (कम) ।
 —सुमेटना, मु, दाजान, विनानु निवृत्त
 (स्वा आ से)-विरम (स्वा प अ) ।
 —सार करना, मु, हट (अ प अ)
 २ अन्यथेन ह (स्वा प अ) ।
 —मे जाना, मु, दे 'हाथ धोना' ।
 हाथ हाथ, मु, मत्वर, शीघ्र २ कर हस्त, पर-
 वर्या ।
 हाथा, स पु (सं हस्त >) दे 'हानी'
 २ कुत्रापि मात्स्य हस्तविह्व ।
 —पाँट, म स्त्री, हस्ताहति (अन्य), समद,
 बलह ।
 —पाँई घरना, क्रि अ, हस्ताहति मुष्
 (दि आ से), कलहायते (ना भा) ।
 —बाँही, म स्त्री, दे 'हाथापाँई' ।
 हाथी, म पु (म हस्तिन्) करिव, वनिव,
 हस्त-वन्, द्विप, अनेकव, द्विरद, गज,
 नारा, कुत्तर, बारण, इम, सम्यैते,
 म(मा)निय, पमिन्, पुकारिन्, महावृत्,
 वशुर्पण, सिपुर, मरुद, मिम्वरालक,
 रदनिन्, महावल, द्रुमारि ।
 —खाना, म पु (हिन्-का) गजगृह,
 हस्तशला ।
 —दौत, स पु (स हस्तिदत्त) गजदत्त ।
 —पाँव, म पु, शीघ्र-द, शिन्धोपर-द,
 पवाँद, गशीर-बलनीय ।
 —बन, स इ आभार्य हस्तपक, हस्तिन,
 दे 'महावन' ।
 —पर चन्ना या बोधना, मु, मुनगृह (वि)
 भूत् (स्वा आ से) ।
 हाटमा, म पु (अ) दुष्टता, दे ।
 हानि, म स्त्री (स) क्षति (स्त्री), अद,
 चव हार, अमाय २ क्षय, नाश, अमाय,
 ३ स्वात्मवश ४ अनिष्ट, अहित, पशुमर्ष ।
 —करना, क्रि म, हानि क, नम (प्रे), क्रि
 (प्रे), अपनि (स्वा उ अ), क्षति जन (प्रे) ।
 —कारक, वि (म) हानि, कर-कार-कारिन्,
 अपचर-मय, कारिन्, नाशक, अनिष्टोत्पादक ।

—होना, क्रि अ, क्षति घन (दि आ से), नद् (दि प ने), विपुन् (कम), वि परि, हा (कम), विपुक्त हान-रहित (वि) भू।
हाक्रिज्ञ, स पु (अ) रक्षक, जट्ट २ *कुरानपाठिन।

हाक्रिजा, स पु (अ) स्मृति, दे 'स्मरण शक्ति'।

हामिल, वि (अ) भारवाह हक, भारिन् = नेट, प्रापक।

हामिला, स स्त्री (अ) गर्मिणी, गर्भवती, अन्तर्वर्ती, सत्तत्वा।

हामी, स स्त्री (दि हाँ) अनुमति स्वीकृति (स्त्री), स्वीकार, अनुज्ञा।

—भरना, सु, स्वी-अग्नी-क, अनुज्ञा (क् उ अ), अनुमत् (दि आ अ)।

हाय, अव्य (स हा) आ, अहट, पट, हट (सब अव्य)। स स्त्री, नि-दीर्घ-आम, उच्छ्वसित २ कट, पीडा)।

—हाय, अव्य (स हा हा) आ आ इ। स स्त्री, शोक २ व्याकुलता।

—पचना, ■, उष्णताप फल् (भ्वा प से)।

—मारना, सु, दीर्घ-अस् (अ प मे), (शोकेन) हा हा कृ, निष्वास मुच् (तु प अ)।

हार, स स्त्री (स हारि) पराजय, परि परा-अभि, भव २ आदि, क्लानि (स्त्री), आयास ३ हानि-क्षति (स्त्री)।

—जीत, स स्त्री, जयपराजयी (पु दि)।

—खाना, सु, दे 'हारना'।

—देना, सु, दे 'हराना'।

हार, स पु (स) कठ, भूषा आभरण माणा, प्रैव, प्रैवेयक २ दे 'मानिया का हार'।

—का मनसा, स पु, हार, मुष्टिमा शुल्का अस।

पूनों वा—, स पु, माला, माल्य, यन् (स्त्री) आपीड।

मोनियों वा—, स पु, मुक्तावली (स्त्री), मुक्ता, लता-माला, मौक्तिकमर, हारा।

रानों वा—, स पु, गणिमाला, गन्तावली (स्त्री)।

साने वा—, स पु, वनकमुश्रम्।

—हार, प्रत्य, दे 'हार'।

हारना, क्रि अ (स हारण >) परा, जि

(कर्म), अभिपण परि, भू (कर्म) अभिभूत पराजित (वि) भू २ विफल (वि) तद् (दि आ से) ३ अन् कम् (दि प से), खिद् (दि आ अ)। कि स, हा (जु प अ प्रे हापयनि), अप, ह (प्रे) २ नद्-क्षि (प्रे) ३ त्यज (भ्वा प अ) ४ दा (जु उ अ)। स पु तथा भाव, दे 'हार'।

हारने योग्य, वि, अभिभवनीय, पराजय।

—हाला, स पु, आमन्त्रपराजय, पराजित, वन्ध-प्राय।

हारा हुआ, दि, वि परा, जित, अभिपरा परि, भूत २ दृढ, हारित, नष्ट, ३ अन्-कमान्त, सिद्ध ४ अकृतकार्य।

हारमोन, स पु (अ) जीवनरत्न।

हारमोनियम, स पु (अ) *मधुरध्वनम्।

—हारा, प्रत्य (स-हार >) (प्राय कर्तृवाक्य प्रत्ययों, (अन्, नृच, लन् आदि) में अनुवाद किया जाता है। उ देनेहार=शायन, दाट्ट १०)।

हारिल, स पु (म हरितालक) हरितवर्ण-पीतभाद नीलचक्षु चटकभेद, हारि(री)त, हारीक।

हारी, वि (स हारिन्) अप, हर्तुं हारक, आच्छेदक, बलात् प्रहात २ बाहक, प्रापक, नायक, हर ३ लुटक, मुठक, मोचक, चौर ४ नाशक, ध्वंसक ५ समाहक, समाहृत् (हर आदि) मनो चैनो, हर।

हारीत, स पु (स) चौर, लुटन, वित्त २ स्थितिकारविशेष ३ दे 'हारिल'।

हार्टेकेल, स पु (अ) हस्त्यन्दनविरोध, हृदयावरोध।

हार्दिक, वि (स) हृदय, सवधिन् विषयक, चैत्त-स्त्री (स्त्री), चैत्तिय-स्त्री (स्त्री) मानस-स्त्री (स्त्री), मानसिय-स्त्री (स्त्री) २ निष्पत्ति, निष्पट ३ स्नेहसाल, मित्रपथ, स्नेहिन् अनुरागवत्, अनुरागिन्।

हाल, स पु (अ) अवस्था, दशा २ परि स्थिति (स्त्री) ३ समाचार, वृत्तान्त ४ विवरण, इतिवृत्त ५ चरित्र, वया ६ समाधि, प्रीतिवाचना ७ वनमानसाल। वि, वनमान, विद्यमान, उपस्थित, अव्य, अधुने २ दीर्घ, स्वरिन्।

- का, सु, अभि, नव, नूतन, अचिर, प्रत्यग्र ।
 —वेहाल होना, भु, शुभाय अनुभ, मगलात्
 भमगल, क्रमशो विकारवृद्धि (स्त्री) ।
 —मे, मु, वर्तमाने, आपुनिकम्पये, इदानीतने
 काले ।
 हाल^२, म स्त्री (स हल्लन) कप, कपन
 २ सपट्ट, स्मायात ३. लौह चक्रवलयम् ।
 हाल^३, म पु (अ) मुख, शाल, बाधकोष्ठ,
 आस्थानी ।
 हालत, म स्त्री (अ) दशा, अवस्था, स्थिति
 (स्त्री) २ आर्थिकावस्था ३ परिस्थिति
 (स्त्री) ।
 हालहल, स स्त्री (स हल्लनम् >) कलकल,
 कोलाहल २ उपद्रव, समद ।
 हालीं कि, अय्य (का) यपनि (अय्य) ।
 हाली, म स्त्री (स) मद्य, सुरा दे ।
 हालालहल, म पु, दे 'हलाहल' ।
 हाली, अय्य (अ हाल) शीत, मत्वरम् ।
 हाव, स पु (स) श्रुतारभावग केटा (लीला,
 विभ्रम, विलास आदि) आह्वानम् ।
 —भाव, म पु (स) पुरुषमनोहरौ स्त्रीवेष्टा
 भेद, विभ्रम, विलास, लीला ।
 हावनदस्ता, स पु (का) पल्लवमय, सल्ल,
 मुसल लेखी (दि) ।
 हाशिधा, म पु (अ-यह) प्रातः, उषान्,
 मीमा २ वलप्रातः, चीरी दि (स्त्री), दशा ।
 हास, स पु (सं) दे 'हँसी' (१४) ।
 —कर, वि (स) हास्यजनक २ अव-उप,
 हास्य ।
 हासिद, वि (अ) रंभा(धा)ट, इपुंभ्युं ।
 हासिल, वि (अ) लब्ध, अधिपान, प्राप्त दे ।
 हास्य, वि (ल) हाम, कर ननक उत्पादक,
 हाम, योग्य आनन्द २ अव उप, हास्य, अव
 उप, हासाहं। स पु (सं न) दे 'हँसी' (१४) ।
 —कर, वि (स) दे 'हास्य' वि (१२) ।
 हास्यास्पद, म पु (सं न) हामविषय
 २ उपहामविषय । वि, दे 'हास्य' (वि १२) ।
 हास्योत्पादक, वि (स) दे 'हास्य'
 (वि १२) ।
 हाहा, स पु (अनु) हास(म्य), शब्द
 ध्वनि, अट्टहाम, अनुनय-दैन्द, शब्द ध्वनि
 ३ अहह, कष्ट, हा हन ।

- ही ही, } स स्त्री, परिहास, विनोद ।
 —ठी ठी, }
 —खाना, सु, सदैव्य आकृ (प्रे)-प्रार्थ
 (चु आ मे) ।
 —ही ही करना, मु, हस् (भ्वा प से)
 २ परिहस, विनोदवाक्यानि उदीर (प्रे) ।
 हाहाकार, = पु (म) हाहा-ख शब्द
 ध्वनि २ अ वि, कोश, आ, कदन, कर्दिन,
 चीत्कार, मयन कोलाहल ।
 —करना, त्रि अ, हा हा कृ, हा हा ध्वनि
 उत्पद (प्रे) २ आवि, कस् (भ्वा प अ),
 आ, कद् (भ्वा प से) ।
 हिजीर, स पु (म) गजपद, बभन-भृत्पला
 रज्जु (स्त्री) ।
 हिडोल, स पु (म हिडोल) रागभेद ।
 हिडोला, स पु (स हिडोल-ला) हिडोल्क,
 २ दोल्-ला-लिरा प्रेला, आन्दोल, दिन्दोल
 ३ दोल्, गीतगीतिका ।
 हिद, स पु (का) भारत, भारतवर्ष,
 आर्यावर्त ।
 हिदवाना, म पु, दे 'तरबूद' ।
 हिंदवी, म स्त्री (का) भारतीयभाषा
 २ हिन्दीभाषा ।
 हिदसा, स पु (अ) अक (गगिन) ।
 हिंदी, वि (का) भारतीय, भारत, वर्षय
 देशीय । स पु, भारत, भारतवासिन्,
 भारतवर्षवासिन्, भारतीय । स स्त्री उत्तर
 भारतस्य मुरयभाषा, हिंदीभाषा ।
 हिदुस्तान, म पु (का हिदोस्तान) दे 'हिद'
 २ उत्तरभारतस्य मध्यमभाग (दिल्ली से
 पाने तक) ।
 हिदुस्तानी, वि (का हिदोस्तानी) दे 'हिंदी'
 वि । स पु, दे 'हिंदी' स पु । म स्त्री,
 अस्मिन्भारतीयभाषा, हिन्दुस्तानी ।
 हिद्, स पु (का) आर्य, वेद-स्मृति पुराण,
 अनुयायिन्-अनुगमिन, हिन्दु ।
 —पन, स पु, हिदुत्व, आर्यत्वम् ।
 हिदोस्तान, स पु (का) दे 'हिदुस्तान' ।
 हिसक, वि (मं) धान(तु)क, धानन, हिम,
 शरर, हन्त निमाह, वष-हिंसा, शीज
 २ माममङ्क, कथ्यद (पञ्च) ।

हिंसनीय, वि (स) हन्त्य, व्यापादनीय, मारणाय, बध्यः ।

हिम्ना, म स्त्री (स) अप-कार रुनि (स्त्री) त्रियावरण, पीडा बाधा, अदन २ वध, हत्या, हनन, हिसन, धन, मारण, निषूदनम् ।
—फरना, क्रि स, पीड् (चु), अपकृ व्यथ (प्रे), अर्द्ध (भ्वा प से, प्र) २ हन् (अ प अ), हिंस (रु प ने) व्यापद् मृ (प्रे), निषूद् (चु) ।

हिसारमक, वि (स) पीनाबाधा, आत्मक युक्त दायक २ हत्यात्मक, जीवगवयुक्त ।

हिम्नाष्टु, वि (स) हिंसय, घातय, हिंस, बधशील । स पु (स) हिंसक, कुक्कुर भक्षक शुनस भक्ष्य, भक्ष्यम् ।

हिंस, वि (स) दे हिंसकः ।

हिकमत, स स्त्री (अ) सञ्चगान, दर्शन २ शिष्य, वक्त्रशैल ३ उपाय, युति (स्त्री) ४ नीति (स्त्री), जय ५ मित व्यय ६ चिरित्सा, वैधकम् ।

हिकमती, वि (अ हिंसमत) कर्मवृत्त, कार्यपटु २ चतुर, विदग्ध ३ मितव्ययिन् ।

हिरायत, स स्त्री (अ) कथा, आश्रयानम् ।

हिरारस्त, सं स्त्री (अ) निरस्कार, अवगणना ।

—की नजर से देखना, मु लम्बयनि (ना पा), अवगन् (दि आ अ) अवगन् (चु) ।

हिचक, स स्त्री (हि हिचरना) आवि परि, गका, सदेह, रुधय, विरूप, निश्चय निणय, अभाव ।

हिचरना, क्रि अ (अनु हिच) दोलावते (ना पा), विकल्प (भ्वा आ से), आवि, गर् (भ्वा आ से), मसी (अ आ म) २ दे हिचकी आना ।

हिचाविचामा, वि अ, दे 'हिचरना' ।

हिचमिचाहट, स स्त्री, दे 'हिचक' ।

हिचमिची, स स्त्री, दे 'हिचक' ।

हिचमी, म स्त्री (अनु दिन) हि(हे)हा, दिविरा, दिष्मा, शणिवा ।

—आना, क्रि अ, दिव्य (भ्वा उ से) ।

—लगाना, मु, मरणोन्मुख (वि) वृत् (भ्वा आ से) २ दिक् ।

हिचर पि(मि)चर, स स्त्री, दे 'हिचक' २ दे 'टालमूल्' ।

हिजडा, म पु, दे 'हीजदा' ।

हिजरी, म पु (अ) यवनसवय (अव्य) (यह १५१७६२२ इ० अर्थात् आवण शुक्ल २, सवय ६७९ वि से चल है) ।

हिजाब, स पु (अ) अवगुठन २ लज्जा ।

हिज्ज, स पु (अ हिज्ज) शब्दाशुलोचरण ।

—कन्ना, क्रि स, शब्दाशुरागि वचर् (प्रे) ।

हिज्ज, स पु (अ) वियोग, विरह ।

हित, वि (स) लाभ, प्रद-दायक, उप-कारिण योगिन्, हिनकर २ अनुवृत्, योग्य २ हितेच्छु छुक, हितैषिन् । स पु (स न) लाभ, अर्थ २ मंगल, भद्र ३ अनुगुणता ४ स्वास्थ्य लाभ ५ स्नेह, अनुराग ६ मैत्री, हितेच्छा ७ मित ८ मवध, बहुता ९ सन्निध, वधु । अव्य, लाभाय, हिताय २ कारणात्, हिनो ३ अर्थ, कुते ।

—कर, वि (म) हित, कर्तृ-कारक-कारिण २ लाभ, दायक प्रद, उपयोग्य, फलवद् ३ स्वास्थ्य-कर प्रद ।

—काम, सं पु (स) हित, कामना इच्छा । वि (सं) हितैषिन् ।

—कारी, वि (स रिन्) दे 'हितकर' ।

—चित्तर, वि (स) हितेच्छु च्छुन, हितैषिन् ।

—चित्तन, स पु (स न) हितेच्छा, उप विवीर्य ।

—वार्दी, वि (स दिन्) सत्परामर्शिन् ।

हिताहित, म पु (सं न) हानिलाभी उप कारापकारी (पु दि), इष्टानिष्टे भद्राभेदे (न दि) ।

हिद्, म पु (भं दिन) मित्र, हितैषिन्, मुह्य २ मवधिन्, वधु ।

हितैषी, वि (सं पिन्) हितयितर, दे ।

हितोपदेश, म पु (सं) सत्परामर्शदान २ विष्णुगर्भरहितो नीतिप्रयविशेष ।

हिदायत, म स्त्री (अ) पथप्रदर्शन २ शिक्षा, अनुश्रुति (स्त्री) ।

हिनहिनाना, क्रि अ (अनु हिनहिन) ह्य ह्य (भ्वा आ से) ।

हिनहिनाहट, सं स्त्री (हि हिनहिनाना) हया, हेषा, ह(हे)षितम् ।

हिसं, म स्त्री (अ) लोभ, शृङ्गा, लिप्ता ।
हिसं, वि (अ हिम) दुग्ध, शृङ्ग, लोतुष ।

हिलना, क्रि अ (म हलन) नल चर (भ्वा
प मे), इया (अ प अ), गम् २ सु-स्रप्
(भ्वा प अ) ३ कप वेप स्पद् (भ्वा आ
मे) ४ दोलायते (ना था) प्रेम् (भ्वा
प से) इतस्तल विम चम् ५ (जले)
प्राक्श (तु प अ) । स पु रवा भाव,
चरन, चरण, अयन, यान, गमन, स्तरण,
सपण, नप, वेदन, स्पदन, चेष्टा, चेष्टत,
क्रिया प्रवृत्ति, व्यापार ।

—टोलना, मु, अट् प्रम् (भ्वा प से)
० धन् (दि प से) प्रवत् (भ्वा
आ से) ।

हिलनेशाला, वि, चर, चल, गम, चलन
गमन, दौल, कपमान, वेपमान, चेष्टमान,
स्पदमान ।

हिला हुआ, वि, चलित, स्रज यात, इत इ ।
हिलमा, क्रि अ (हि हिलगना, स अधि
ल्ग) सुपरिचित-नदसस्य रुक्तीहृद् (वि)
जन् (दि आ से) ।

—मिलना, क्रि अ परस्पर सरनेन वृत् (भ्वा
आ से) भ्यवह अस (दोनों भ्वा प अ) ।

हिलमिलवर, मु सौमनस्येन, मौहार्देन २ ॥
भूय, मिलित्वा ।

हिलमिला, मु, सुधारचित, गादोतीहृद्, नद
सख्य ।

हिलाना, क्रि म, न 'हिलना' (१२) क प्रे
रूप ।

हिलोर रा, स प (स हिलान्) उल्लो, ०
तरा, भा, काम (पु ग्वा) ।

हिलोरे लेना, मु, तरगायने (ना था), नर
गिन (वि) भू ।

हिलोर्गना, क्रि म (हि हिलोर) तरायति
उल्लोयति (ना था), इतरनन चल् (प्रे)
विष् (भ्वा क मे) ।

हिलोर, स पु दे 'हिलोर' ।

हिमाद्र, म न (अ) गम्जन ना, करयान
२ कपधन देनादेय, जेय विवरण ३ मणि,
४ दक्षिण ५ अर्ध-मूल्य, अन प्रम ५ निदम,

व्यवस्था ६ विचार, मत ७ रीति
(खा), विधि ।

—करना या लगाना, क्रि स, गप् (चु),
मल्या (अ प अ) ।

—किताब, म पु (अ) दे 'हिसद' (२) ।

—चलना, मु, व्यवहार-दानादान वृत् (भ्वा
आ से) ।

—सुखाना या सुखता करना, मु, कण निन्प्
धुष् (प्रे) ।

—चढ़ करना, मु, व्यवहार-त्यन (भ्वा प अ) ।

हिस्तीरिया, म पु (अ) दोषास्तरार, वात
गर्भादाय उन्नाद, इदमोह ।

हिस्सा, म पु (अ) विभाग, अश
२ वट, उद्गार ३ खड-ब, एकदेश ४ अंग,
अवयव ।

—करना, क्रि स, अष् (चु), विभम् (भ्वा
क अ) ।

—दार, स पु (अ + का) अशिर, अश
आहित, सह, भागिन् ।

—दारी, म स्त्री, सहभागिता, अशिता ।

हींग, स स्था [सं हिण्ड (पु न)] र(रा)
मठ, बाल्हीक, अङ्ग, धर्म-भाषानं, स्रपधूपन,
उग्रप्रभ रक्षोन्, अरण, अगुदमधम् ।

हींसना, क्रि अ (म हेवण) दे 'हिनहिनाना'
२ दे रेंकना' ।

ही, अव्य (न हि) दर, अवयव, वैकल
(सव अव्य) ।

हीक, म स्त्री (स हिक्का) दे 'हिक्की'
दुर्गंध ।

हीजळा, स पु (दैश) घ(प) न्-द, नृनीया
अष्टनि, वन्नीव, नपुसक ।

हीन, वि (अ) विरुद्ध, शय, बन्धन,
बन्धन, विरुद्ध, अनिर, वि, (उ धनहीन-
अधन इ) २ परि त्यक्त उत्पृष्ट ३ अपवृष्ट,
निवृष्ट नीच, अधम ४ क्षुद्र, तुच्छ ५ क्षुद्रित,
मिष, अम्बु, दुष्ट कु ६ दीन दरिद्र, अकिंचन
७ अल, उन्न, स्त्री ।

—गाति, वि (म) नीच, वर्ग ३ वि २ अ
पाचैय, पतिन ।

—घान, म पु (म न) बीजमप्रदायमेद ।

हीनता, म स्त्री (स) अभाव, राहित्य,
दुष्टि (स्त्री), न्यूनता २ छुद्रता, तुच्छता
३ निम्न, दृष्टता ।

हीमोग्लोबिन, स पु (अ) रक्तकण, रक्त
रक्षकम् ।

हीर^१, स पु (स) शिव २ इन्द्रवज्र ३ सप्त
४ द्वार ५ सिद्ध ६ हीरक ।

हीर^२, स पु (हि हीरा) सार, माराश,
धनर्मा, तत्त्व २ वीर्य, शुक्र ३ बल शक्ति
(स्त्री) ।

हीरक, स पु (स) > 'हीरा' ।

हीरा, स पु (स हीर) हीरक, वज्रज
रत्नमुत्प, सूचीमुख, दधीष्वात्थि (न),
वराकरम् ।

—मन, स पु (हि + म मणि) हेमवर्ण
स्वल्प शुक्रमेद, *हीरमणि ।

हीला, स पु (अ हील) व्याज, छद्मन् (न)
व्यपदेश, मिथ, २ साधन, उपाय ।

—करना, कि अ, वि, अपदिशू (तु प,
अ) क्पट *घन कृ ।

—बाज़, नि, कापटिक-छात्रिक (—की स्त्री) ।

—हवाला, स पु, दे 'हीला' ।

—निकलता, मु, उपाय या (कर्म),
साधन प्राप (कर्म) ।

हीहो, अन्य (म) हवाचर्चमूचकमन्त्रय,
(ह्य) हन् २ (आश्रय) अहह ।

हु, अन्य (म) ओ, आ, २ मातु, वाढ,
*स्तु ।

हुकार, स पु (स) हुकृति (स्त्री), हुकृता
अर्जनाशब्द २ गगन-ना, निनाद, हुहुत
३ चीत्कार, उल्लोश ।

हुकारना, कि अ (स हुनार >) निमत्स
(जु आ अ), तन (जु), अधिशिप (तु
प अ) २ गद्-गद्-निनद् (भ्वा प मे)
३ चीकृ, उल्लुश (भ्वा प अ) ।

हुडामन, स पु (हि हुन) *विषिषवमुत्प
२२२ ।

हुडो, स स्त्री (> २२) *विषिषव, धनपेणा
देशपत्रम् ।

हुकूमत, म स्त्री (अ) शामन, राज्य
२ अधिकार, प्रभुत्वम् ।

हुका, स पु (अ) *धूमपानयत्रम् ।

—पानी, स पु (अ + हि) सामानि
व्यवहार ।

—गुडगुडाना, मु, धूमपान कृ ।

—पाना बद् करना, मु, समानाय बहिष्-
अपाकी कृ जाने निष्कन् (प्रे) ।

हुकाम, स पु (अ हाकिम का बहु) शासक
अधिकारि-वर्ग इन्द्रम् ।

हुकम, स पु (अ) अदेश, आशा दे
२ अनुमति (स्त्री) ३ प्रभुत्व, अधिकार
४ नियम, विधि, उपदेश (धनशास्त्रादि का)
५ क्रीडापत्ररगमेद ।

—नामा, स पु (अ + का) आशापत्रम् ।

—बरदार, स पु (अ + का) अशा, पालक-
अनुमतिरनुवर्तिन्-अधीन ।

हुकमी, वि (अ हुकम) आशा, पालक-
अनुवर्तिन् २ अमोघ, सफल, निश्चिन्ता ३
लक्ष्य, भेदित-वेधिन् ४ विद्वत्पराहित, अवश्य
कर्तव्य, अनिवार्य ।

हुकूम, स पु (अ) अन, समूह मनुष्य-
समर-जोर ।

हुजूर, स पु (स) सामीप्य, मनिधि २
न्याय आग्य मभा ३ (सर्वोपनशब्द)
भगवन् । श्रीमन् । (सर्वोपन एक), भग
वन् 'श्रीमन्' । (सर्वोपन बहु) ।

हुजूरी, स स्त्री (अ हुजूर >) निकट्या,
समीपता २ उपस्थिति (स्त्री), विद्यमानता
३ राज-राजकीय-गभा । स पु विशिष्ट,
मेव *मृत्य २ राजमहामन्द, मन्त्र,
सन्नि ।

हुजत, म स्त्री (अ) कुतक, *व्यर्थयुक्ति
(स्त्री) २ विवाद, वाग्युद्धम् ।

—करना, कि अ, *वर्थ नर्क (जु) २ विवद
(भ्वा आ म), वाग्युद्ध कृ ।

हुजता, वि (अ हुजत) कुतार्किक
२ वन्द विवाद, प्रिय ।

हुडदगगा, स पु (अनु हुड + हि दगा)
उपद्रव, टनुल, मद्योभ ।

—ग्राही, वि (स हिन्) हृदयहारिन्, मनो मोहक ० रुचिकर, प्रिय ।

—वान्, वि (स-वत्) महदय, हृदयात् २ मातृक, रसिक ।

—विदारक, वि (सं) हृदयवेपिन्, शोक जनक, कण्ठोत्पादक ।

—स्पर्शी, वि (स-रिन्) हृदिस्पृश, प्रभावोत्पादक २ दयोत्पादक, करुणाजनक ।

—हारी, वि (स-रिन्) वेगोहर, मनो हारिन् ।

हृदयेश्वर, स पु (स) वल्लभ, प्रियतम, प्रेमपात्र २ पति, मन्त्र ।

हृदयेश्वरी, स स्त्री (स) हृदयेशा प्राणेशा, माता २ पत्नी, भार्या ।

हृद्गत, वि (म) आन्तर, आन्वन्तर, अभि, अन्तर, हृद्य, अन्तर, अर्दिन्-जन मानस, चैत्त २ अवगत, जात, बुद्ध ३ प्रिय, रचिन्तर ।

हृद्य, वि (स) (१२) दे 'हृद्गत' (१३) २ सुन्दर ३ शान्तिप्रद ४ स्वादु, सुरम ।

हृदीक, स पु (स न) इन्द्रिय, दे ।

हृदीकेश, स पु (स) विष्णु ० श्रीकृष्ण ३ तीर्थविशेष ।

हृष्ट, वि (स) हर्षित, सुप्रसन्न, प्रमुग्ध, आनन्दित, प्रीत, पुष्ट, प्रमनस ।

—पुष्ट, वि (स) हृष्ट, अग-देह नन, पीन, मांसल, बलवन् ।

हृगा, स पु (स अभ्यग >) मत्स्य कोटि (टी)रा ।

हृद्, स स्त्री (अनु) मन्दहामध्वनि ० दैन्य सूचनशब्द ।

हृ, अव्य (स) अग, भो, हृहो हृहो, अरे, अने, अयि, पाट्, प्याट् (सः अय) ।

हृक्क, वि (हि हिया+क्क) दे 'हृष्टपुष्ट' ० प्रवृत्त, उग्र ३ उद्द, विवान, धृष्ट ।

हृक्कदी, स स्त्री (हि हेम्) उग्रता चम्पा, उद्दता २ बल, बलात्कार, रमम् (न), रमस ।

हेच, वि (फा) तुच्छ, क्षुद्र ३ निस्मर, तत्त्वहीन ।

हेठ, कि वि (स मध स्थ >) नीचे, अध (दोनों अव्य) ।

हेठा, हि (हि. हेठ) अवर, अधर २ ऊन, हान ३ तुच्छ, क्षुद्र ।

—पन, मं पु, तुच्छता, क्षुद्रता, ऊनता ।

हेठो, स स्त्री (हि हेठा) मानहानि (खो), अवधीरणा, अपमान ।

हेडो, स पु (म) निरस्कार, अवज्ञा, अपमान ।

—ज, सं पु (म) कोष, कोप, रोग ।

हेडो, स पु (म) शिरम् (न), शीर्ष, मुण्ड, मस्तकम् २ मुख्य, प्रधान, अध्यक्ष ।

—कार्टर, स पु (अ) मुख्यालय, मुख्य कार्यालय ।

हेडिंग, स स्त्री (अ) शीर्षक, शिरपत्ति (खो) नामन् (न), सहा ।

हेन, स पु, दे हेतु' (१, २) ।

हेतु, स पु (स) प्रयोजन, अभिप्राय, निमित्त, उद्देश ० कारण, बीज, मूल ३ युक्ति-उपपत्ति (स्त्री), प्रमाण ४ अर्थार्थकारभेद (सा) ।

—वाद, स पु (स) जहापोद, तर्क ० कुतक, नास्तिकता, नास्तिक्यम् ।

—वादी, वि (म दिन्) तार्किक २ नास्तिक ।

—विद्या, स स्त्री (स) तत्त्व-हेतु, शास्त्रम् ।

—हेतुमद्भाव, स पु (म) कायकारण, भाव मवय ।

हेत्वाभाम, स पु (स) असद-दुष्ट, हेतु ।

हेमत, स पु (स) हेमन्, उन्माद, गरदन, हिमागम, अग्रहस्त्यपीपमासात्मक ऋतु ।

हेम, स पु [सं-अन् (न)] सुवर्ण, दे 'सोना' ।

—गिरि, स पुं (स) सुमेरु, हेम, अचल अट्टि ।

—चद्र, सं पु (मं) चैनाचायविशेष ।

हेय, वि (म) त्याज्य, त्यक्त्य, उत्सर्जनीय, हानव्य ० निकृष्ट, अपकृष्ट, गस, निन्द्य ।

हेरना, कि स (स अणे >) अन्विष
(दि प मे) गवेष् (भ्वा आ मे सु प मे)
२ दृष्ट (भ्वा ष अ) ३ विचर (प्रे) ।

—केरना कि स (अनु + हिं) परिच्य
विषयस (प्रे), अयथावि, कु, विनिमे
(भ्वा आ अ) ।

हेर केर, स पु (हिं हेरना + केरना) परिवर्त
तन, परिचलि (स्त्री), विनिमय २ विकार,
विक्रिया, विकृति (स्त्री) ३ विपर्याय,
क्रमाभाव, अव्यवस्था ४ वञ्चोक्ति (स्त्री),
बागाडबर ५ छपट, छल ६ अतट, भेद ।

हेरा-केरी, स स्त्री, दे हेर केर ।

हेलमेल, स पु (हिं हिलना + मिलना)
दृढ-गाढ सौहार्द सौहार्द सत्य मैत्री २ सगति
(स्त्री), संपर्क ३ परिचय ।

हेला, स स्त्री (स) अव-अप, मान, अवज्ञा,
निरस्कार २ प्रमाद, उपेक्षा ३ ब्रीडा, खेला
४ झुकर-मुसाध्य, कार्य ५ शृंगारचेष्टा, कंलि
(स्त्री)-जी ६ नारीणा सुरतलासता ।

हेला, स पु दे 'हला' ।

हे, अव्य (अनु) (निषेध) मा, मास्म, अल
२ (आश्चर्य) अरो, हो ।

—हे, अव्य (अनु) मा मा, अल अल २
हो हो ।

हे, कि अ (हिं होना) सति विद्यन्ते
वर्तन्ते (एट्, वट्) ।

हेडवेग, स पु (अ) (चममयी) कपेटिका
२ कर, प्रसेव सपुट ।

हेडल, स पु (अ) मुष्टि (स्त्री), वारग ।
हे, कि अ, (हिं होना) अलि विद्यते-वर्तते
(एट्) ।

हेकल, स स्त्री (सं ह + गल >) अथ
धैर्यमक २ 'हमे' ।

हेजा, स पु (अ-जङ्) विपूजिता, दे ।

हेट, स पु (अ) गुरट-आगल, शिरस्त्राण
शीर्षम ।

हेफ, अव्य (अ) हा, हन्, रोद, शोर ।

हेयत, स स्त्री (अ) नास, भयम् ।

—नार, वि (अ) भीम, भयकर ।

हेरत, सं स्त्री (अ) आश्चर्य, विस्मय ।

हेरान, वि (अ) चकित, विस्मित २ वि,
आकुल, उद्विग्न ।

हेवान, स पु (अ) पशु, चरि, मृग
२ जड, मूर्ख, असभ्य ।

हेवानियत, स स्त्री (अ) पशुना-त्व २
अशिष्टता, अमन्यता ३ क्रूरता ।

हेघानी, वि (॥ हेरान) पाशव, पशु-तुल्य
सम २ क्रूर, मिष्टर ।

हेमियत, स स्त्री (अ) म मर्थ, योग्यता
२ आर्थिकावस्था, धनबल ३ धन, वित्त
४ संमान । प्रतिष्ठा ५ मुख्य, अर्थ ।

हे है, अव्य (म हा हा) हट, हा हन्त,
कष्ट, दुःखम् ।

होठ, स पु (म ओठ) दगद-दशन,
उठ दे 'ओठ' ।

—कटना, सं पु, ओष्ठभेद ।

—काटना या खजाना, मु, कृष (दि प अ),
आन्नद्योष प्रवर्त्यति (ना भा) ।

—हिलाना, मु, वक्तु उपकम् (भ्वा आ अ) ।

हो, अव्य (स) 'हे' ।

होटल, सं पु (अ) भोजनशाला २ पांश
शाला ।

होद, स स्त्री (सं हार = पुद्) पण, ग्लह
२ प्रति, स्पर्द्धा, विजिगीषा ३ आग्रह ।

—बदनी, बौधना या लगाना, कि म.,
ग्लह (भ्वा ष से, चु), दिव् (दि प से),
पण (भ्वा आ से) २ विजिगीषते (सन्त),
स्पर्धे (भ्वा आ से) ।

होडावादी, स स्त्री } (हिं होद + बदना)
होडाहोकी, स स्त्री } (हिं होद) दे 'होद'
(१२) ।

होता, सं पु (म हान्) कटिगभेद, होत्रिन्,
होनवर्त, यष्ट ।

होत्र, स पु (अ न्) यज्ञ, पात्र, पद
हवनम् २ यज्ञ हवन सामग्री, हविस् (न),
हव्यम् ।

होत्री, सं पु (स त्रिन्), हात्र, यात्र,
यष्ट, कतिगभेद हासकम् ।

होनहार, वि (हिं हाना) मद्राग, उग्रनि
शीन्, प्राशान्नक, निद्रिपूतक २ भाविन्,

भविष्यत्, भविष्यन् । म स्त्री, मतिव्यवस्था,
नियति (स्त्री), भव्य, देव, विधि ।

होना, क्रि अ (स भग्न) भू अस् (अ प)
वृत् (भ्वा आ अ), विद् (दि आ अ),
अवस्था (भ्वा अ अ) २ भू च्च् (जि
आ से), सपद् (जि आ अ), परिणम
(भ्वा प अ) ३ कृ अनुष्ठा विधा (वम)
४ रच निर्मा (कम) ५ घट सवृत् (भ्वा
आ से), मन्त्रपद् (दि आ अ) अपत्
(भ्वा प ने) ६ (रोगप्रतिधि) पीड
(वम) ७ अति गति, इ (अ प अ),
व्यतिष्ठत् (भ्वा प ने) ८ उत्पद् (दि
आ अ), जन् (जि आ ने) ९ जीव
(भ्वा प ने) । म पु तथा भाव मत्ता,
अस्तित्व, अव स्थिति (स्त्री), मद्, नाव,
वल्ग, विद्यमानता १० ।

होने योग्य, भविष्य, शक्य, सम्भाव्य, सम्भव
नीय, सम्भावनीय, साध्य ।

होनेर ला, भविष्य, भविष्यत्, भविष्यन्,
दे 'होने योग्य' ।

हुआ हुआ, वि, भूत, वृत्त, जात, सपन्न,
निपन्न, अनुष्ठित, निहित, रचित, निर्मित,
व्यवस्थित ।

(जो) हुआ सो हुआ, मु, अतीत विस्मर
२ यद् भूत न तद्भावि ।

हो आना, मु, दृष्ट्वा मिलित्वा आगम्
(भ्वा प अ) ।

होकर या होने हुए, मु, मध्यग, मार्गेण ।

हो चुकना या-जाना, मु, स निप्, पद् (दि
आ अ), समाप् (स्त्वा प अ) ।

हो न हो, मु, नि नदेह, नि मशयम् ।

होनी, स स्त्री (हि होना) उत्पत्ति (स्त्री),
जन्मन् (न) २ घृत्, वृत्तान् ३ दे 'होन
हार' म स्त्री ४ सम्भाव्य शक्य-वार्ता ।

होम, स पु (स) देवयद्, दे 'हवन' ।

होमना, क्रि स, दे 'हवन करना' ।

होमियोपेथी, म स्त्री (अ) ममचिकित्सा,
चिकित्सापद्धतिविशेष ।

होरा, म स्त्री (म, दूनानी से लिया गया)
लग्न २ राश्यर्द्ध ३ जन्मघटिका ४ चातक,
चातकशास्त्र ५ दे 'धरा' (= ६० मिनट) ।

होला, स पु (स होलक) तुणाग्निभृष्टा
र्द्धपक्षरागीधान्यम् ।

होला, स पु (म होली) सिक्खानां होलि
कीर्तन ।

होली, स स्त्री (म) होलिका, होलका,
२ होलिकादहनार्थस्तुणकाष्ठराशि ३ होलि
नागीतम् ।

—खेलना, भु, होलिकोत्सवे रन् (भ्वा आ
अ), खेल-क्रीड (भ्वा प से), अन्योर्द्ध
रज (प्रे) ।

होल्डर, स पु (अ) लेखनीदण्ड २
लेखनी ।

होश, स पु (का) सहा, चैतन्य २ स्मरण,
स्थिति (स्त्री) ३ बुद्धि-मति (स्त्री) ।

—सद्, वि (का) भी बुद्धि-मति, मद् ।

—हवास, स पु (का + अ) सदाबुद्धी
२ चैतन्यम् ।

—उठना या जागर रहना, मु, (मायादिभि)
निस्तम्भी-जडौ अत्याकुली, भू ।

—करना, मु, सावधान-अवहित (वि) भू ।

—ठिकाने होना, मु, मोह भ्रान्ति (स्त्री)
जद् (दि प ने) २ चैत स्वास्थ्य आपद्
(दि आ अ) ३ गवनाश जद् (दि आ
से) ४ वृत्त अस्त्वा अनुत् (दि आ अ) ।

—दग होना, मु, आक्षय्य-लब्ध (वि) जद्
(दि आ से), चकित-चकित (वि) भू ।

—दिलाना, मु, स्थ (प्रे) ।

—में आना, मु, प्रकृति आपद् (दि आ अ),
सहा लम् (भ्वा आ अ) ।

—सँभालना, मु, ग्रीह प्रातववत्क (वि)
जन् २ सावधानी भू ।

होशियार, वि (का) बुद्धिमत्, चतुर, प्रज्ञ
२ निपुण, कुशल ३ सावधान, अवहित
४ घूत, मायाविन् ५ पञ्चबुद्धि ।

होशियारी, स स्त्री (का) बुद्धि-मत्ता,
२ दक्षता, नैपुण्य ३ सावधानता ।

होस्टल, स पु (अ होस्टेल) छात्रावास,
छात्रालय ।

हौकना, क्रि अ (स हुकरण) हुक, गर्ज
(भ्वा प से) २ दे हाफ(प)ना ।

- होआ, स पु (अनु हो) भूत, पिशाच, शक्तिनी, शिशुवासायै काल्पनिक भयमूलम् ।
 स स्त्री, दे 'होवा' ।
 होआ, स पु (अनु हाव) ओदरिकता, वस्त्ररता २ लोभ-वृष्णा, अनिदाय ।
 होआ, स पु (अ) कुल, जलाशय, सुद्र तटाग २ इन्द्रमुद्गाड, दे 'नाद' ।
 होआ, स ॥ (आ होनह) परिस्त्रो(ष्टो)म, प्रवेणी, कालिरण, कुल-आश्रयम् ।
 होल, सं पु (अ) मय, सजास ।
 —नाक, वि (अ + का) मयकर, वासन ।
 होले, कि वि (हि हल्मा) शनै, शनकै, मद २ मृद, कोमलम् (सब अय्य) ।
 होवा, स स्त्री (अ) आदमपत्नी, कृष्णा, पृथिव्यां प्रथमा नारी मानवजाते जननी च ।
 स पु, दे 'होआ' ।
 होस, स स्त्री दे 'हबस' ।
 होसला, स पु (अ) लालमा, उत्कंठा माहम, उत्साह ३ हर्ष, प्रपुल्लन ।
 —मद, वि (का) उत्कंठित, अत्यभिलाषिन् २ साहसिन्, वल्माहिन् ३ छष्ट, प्रपुल्ल ।
 —निकालना, मु, आवाञ्छा-कान्छा तृहः सपद (मे)-सम्पूर (मे) ।

—पस्त होना, मु, हतोत्साह भग्नहृदय (वि) मृ ।

हद, सं पु (स) अगाधमहाशय, महा तटाग २ तटाक, वासार, सरसी ३ नाद ।

हसित, वि (सं) अल्पीन्मूनी, कृत-मृत, सशिस, सनुचित ।

हसिमा, स स्त्री (स-मन् ह) हस्वता, अल्पमा, सुद्रता ।

हस्व, वि (स) लघु, सुद्र, दध्र, अल्प, दैर्घ्य आयास, शुन्य २ ऊन, न्यून, हीन ३ खर्व, न्यच् ४ अवनत, नीव ५ सुद्र, तुच्छ । स पु (स) वामन २ लघुवर्ग (अ इ उ इ) ।

हास, स पु (स) अपकष, अवनि (स्त्री), क्षय, अपोगति (स्त्री), अपचय, ध्वस, भ्रस ।

—होना, कि अ, शि (कर्म), हम (आ प मे), अपवि (कर्म) ।

ही, स स्त्री (स) कज्ज, क्षपा, व्रीडा ।

ह्रीद, स पु (स) आनन्द, प्र-मोद, हर्ष ।

ह्रिकी, स स्त्री (अ) आरुल्लस्यभेद ।

हेल, स पु (अ) निमाल, तिमि, हल-मत्स्य ।



प्रथम परिशिष्ट संस्कृत-शक्तियों का हिन्दी-अनुवाद

संस्कृत

अकालमेषवद् वित्तमःस्मादेति याति च ।

(कथ'रुत्तितागर)

असाध्यतैव महता महत्त्वस्य हि लक्ष्यगम् ।

(कथा०)

अगच्छन् वेनतेयोऽपि पद्मेकं न गच्छति ।

अगुणस्य हतं रूपम् ।

अङ्गमाख्या सुपं हि ह्रस्वा कि नाम पौरयम् ?

अङ्गीकृतं सुकृतिन परिपालयन्ति ।

अचिन्त्यं हि फलं सूते मधः सुकृतपादप ।

(कथा०)

अजीर्णं भोजनं विषम् ।

अज्ञता कस्य नामेह नोपहासाय जायते ?

अतिदानाद् बलिर्वदः ।

अतिपरिचयादवज्ञा, संततगमनादनादरो भवति ।

अतिभुक्तिर्तीवोक्तिः सद्यः प्राणापहारिणी ।

अतिलोभो न कर्तव्यः ।

अति सर्वत्र वक्ष्येत् ।

अनृणे पतितो वह्निः स्वयमेवोपनाम्यति ।

अधरेष्वलुप्तं हि योपिता रुदि हालाहलमेव केवलम् ।

अधर्मविपरुषस्य पच्यते स्वादु किं फलम् ?

(कथा०)

अधिकम्याधिकं फलम् ।

अनध्या याजिनां जरा ।

अनन्यगामिनीं पुंसां कीर्तिरेका पतिव्रता ।

अनपेक्ष्य गुणगुणो जनः स्वरश्चिं निश्चयनोऽनुधावति । (रि'शुन'वधे)

अनवसरे याचितमिति सत्याग्रमपि कुप्यते दाता ।

हिन्दी

धन अकाल-मेव के समान अकस्मात् आना-जता है ।

सुख न होना ही बड़ों के बड़प्पन का चिह्न है ।

बिन चक्के नो गइइ भी पग-भर भी नहीं जा सकता ।

निगुंन व्यक्ति का रूप किस काम का ?

गौर में सोने हुए की इरा में कहाँ की बोरना है ।

अच्छ लोग कछे दुईं बान की पूरा करते हैं ।

पुण्यरूपी वृक्ष शीम हो अचिन्त्य फल देता है ।

अपच में भोजन विष-रुस्य होता है ।

अज्ञान के कारण किसका उपहास नहीं होता ?

अल्पधिक दान से बलि की बेंचना पड़ा ।

बहुत मेन-बोण से अवज्ञा होनी है और किसी के दर्हाँ अधिक जाने से अनारदर ।

बहुत खाने और बहुत बोलने से गुस्सा बृष्ण हो जाती है ।

अल्पधिक लोभ नहीं करना चाहिए ।

नर दानों में 'अति' स्पन्द है ।

जो आग तृणदि पर नहीं पत्ती, वह स्वयमेव बुझ जाती है ।

स्त्रियों के ओठों में तो प्रभृत् रहता है किंतु हृदय में भदकर विष ।

कदा कभी अधर्मरूपी विषवृक्ष पर सरन फल लग सक्ते हैं ?

जितना गुड उतना मीठा ।

सदा बंधे रहनेवाले घोंटे बूढ़े हो जाते हैं ।

पुरुषों की स्त्रियों कीर्ति पतिव्रता नारी के समान होती है ।

बस्तुः मनुष्य उद्देश्य की उद्देश्य करके रुचि के अनुसार ही कार्य करता है ।

यदि कुप्रवृत्त पर मौन और तो दानो ननुष्य सत्याग्र पर भी ब्रोध करना है ।

अनार्य परदारप्यवहार । (अभिज्ञानशाकुन्तले)
अनार्यसंगमाद्वा विरोधोऽपि समं महा-
त्मभिः । (किराताजुनाये)

अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता
लताः ।

अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम् । (अभिज्ञान०)
अनुकूलेऽपि कलत्रे नीच परदारलम्पटो
भवति ।

अनुत्तेजः खलु पिङ्गमालनारः ।

अनुभवति हि मूढां पादपस्तीममुष्णं
शमयति परितपं छायाया संश्रिता-
नाम् । (अभिज्ञान०)

अनुसृत्य सतां वस्त्रं यन्मूल्यमपि तद् बहु ।

अनुकुर्वन्ते धमध्वनिं नहि गोमायुस्त्वानि
कसरी । (शिशु०)

अन्तःसारविहीनानामुपदेशो न विद्यते ।
अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिः कस्त
निरोद्धु क्षमः ?

अपये पदमर्पयन्ति हि भुक्तवन्तोऽपि रजो-
निनीलिताः । (रघुवत्)

अपन्थानं तु गच्छन्त सोदरोऽपि विमुञ्चति ।
अपायो मस्तकस्थो हि विषयग्रस्तचेतसाम् ।

(कथा०)

अपि धन्वन्तरिर्देवः किं करोति गतायुषि ।

अपि स्वदेहात् त्रिमुलेन्द्रियार्थाद्यशोधनार्तां
हि यशो गरीयः । (रघु०)

अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।

अपेक्षते हि विपद् किं पेलवमपेलवम् !
(कथा०)

अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि अनास्तिरस्त्रिक्रिया
रुमते ।

अप्राप्य नाम नेहस्ति धीरस्य व्यव-
सायिनः । (कथा०)

अप्रियस्य च पश्यस्य वक्ता श्रोता च
दुर्लभः ।

अवला यत्र प्रवला ।

अभद्रं भद्रं वा विधिस्तिरितमुन्मूलयति
कः ?

अमितसमयोऽपि मार्तण्डं भजते वैव कथा
शरीरिषु ! (रघु०)

अभोगस्य हत धनम् ।

पराई मियों में सम्बन्ध रखना आर्पोचिन् नहीं ।
अनार्यों (दुष्टों) के साथ मेल जोन की अपक्षा
महात्माओं में बेर अच्छा ।

विद्वान्, मियों जार लक्षों आश्रय के बिना
शोभा नहीं देती ।

पराई मियों वा ओर तानना न चाहिए ।
पत्नी के अनुकूल होने पर भी नीच मनुष्य
परदारभिगमन करता है ।

नम्रता बीरता का भूषण है ।

बृद्ध स्वयं तो बड़ी धूप सहना है, परन्तु शरण-
गनों के ताप से छाया में शान्त कर
देता है ।

मजनों के मार्ग पर चलने हुए धीन भी मिले
तो बहुत ममसिद्ध ।

मिष्ट मेधनार्जन मुनकर तो बहादुर है, गीदकों
की ध्वनि मुनकर नहीं ।

मनुष्य को शिक्षा देना कर्त्तव्य है ।

जब राजा ही अन्याय करने लग पड़े तब उसे
बोन रोक करना है ।

रजोगुण से अभिभूत विद्वान् भी कुमार्तणामी
बन जाते हैं ।

कुपयगामी का साथ सगा मर्द भी नहीं देता ।
विपत्तिर्षा विषयी लोगों के मिर पर मीढरानी
रहती है ।

जब आयु समाप्त हो जाती है तब वैद्य धन्वन्तरि
भी कुछ नहीं कर सकता ।

यशस्वी लोग, भोगों की तो बात ही क्या,
स्वशरीर में भी यश को श्रेष्ठ समझते हैं ।

पुत्रहीन व्यक्ति व जिन पर धना होता है ।
विपत्तिर्षा लक्ष्य की सोचना वा बहोरता नहीं
देता करती ।

जो बलवान् निज बल की बनी प्रकट नहीं
करता वह निरस्तार वा भागन बनता है ।

धीर और व्यवस्थायी व्यक्ति व जिन मक्षार में
कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं ।

वदवा परन्तु दिनकर का वदन और सुनने
वाले व्यक्ति दुर्लभ है ।

जहाँ मी सब हो ।

भुला हो या भूल, विपत्ति व लग को कीन
मिटो सकता है ?

नशान पर लोहा भी पिघल जाता है, प्राणियों
की तो बात ही क्या ?

जो भोगता नहीं, उसका धन व्यर्थ है ।

अमर्यणं शोणितकाहसया किं पदा स्पृशन्तं
दशति द्विजिह्वः ? (खु०)

अमृतं क्षीरभोजनम् ।

अमृतं प्रियदर्शनम् ।

अमृतं राजसंमानम् ।

अमृतं शिशिरे बद्धिः ।

अम्बुगर्भो हि जीमूतश्चातकैरभिनन्दते । (खु०)

अपशोभोरयः किं न कुर्वते बत माधवः !

(कथा०)

अयातपूर्वा परिवादगोचरं सता हि वाणी

गुणमेव भाषते । (किरातार्जुनीय)

अर्तुदग्धं सहतां ह्यगोचरः । (किरात०)

अर्थमनर्थं भावय नित्यं,

नास्ति ततः सुखलेशः सम्पद्यते ।

अर्थातुराणां न गुरुर्न बंधुः ।

अर्थो हि कन्या परकीय एव । (अमित्रान०)

अर्थो धंदो धोषमुपैति नूनम् ।

अल्पविधो महागर्वी ।

अल्पश्च कालो बहुवश विष्णाः ।

अल्पीयसोऽप्यामयतुल्यधृतेर्महापकाराय

रिपोर्विबुद्धिः । (किरात०)

अमन्तुनि कृतकलेसो मूर्खो यान्यवहास्य-

ताम् । (कथा०)

अविप्राजीवनं शून्यम् ।

अविनीता रिपुर्भार्या ।

अन्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि अर्थकरः ।

अशीलस्य हतं कुलम् ।

अमृतं न हि कल्याणं, व्यसने यो न

मुह्यति ।

अग्नेयसे न वा कस्य विश्वासो दुर्वने जने ?

अमन्तुष्टा द्विजा नष्टाः ।

अमन्मैत्री हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता ।

(किरात०)

अमारे दग्धसंमारे सार सारद्वल्लोचनाः ।

अस्तिद्वयां निवर्तन्ते न हि धीराः कृतो-

द्यमाः । (कथा०)

अग्निदेस्तु ह्येषा विद्या ।

क्या उग्र सर्प पाँव से छूनेवाले व्यक्ति को लहू
पीने की इच्छा से माटसा है ?

क्षीर रूपी भोजन अमृत है ।

प्रिय पदार्थ का दर्शन अमृत है ।

राजा में प्राप्त सम्मान अमृत है ।

जार्ज में अग्नि अमृत है ।

पपीहे जलपूर्ण बादल की ही प्रशंसा करते हैं ।

अपयश से डरने वाले मन्त्रन क्या नहीं करते ।

सज्जनों की वाणी, निन्दा के मार्ग से अपरिचित

होने के कारण, गुणों का ही वर्णन करती है ।

बड़े लोग किसी का जी नहीं दुप्राते ।

सदा ही धन की दुःखरूप समझो, वस्तुन उसमें

तनिक भी सुख नहीं ।

धन के लोभी गुरु और बन्धु एक का ध्यान

नहीं करते ।

कन्या पराया ही धन है ।

अधजल गंगरी छलरत जाए ।

थोड़ी विद्या वाला व्यक्ति बहुत ही गर्वीना

होता है ।

समय थोड़ा है और विघ्न बहुत ।

रोग की तरह स्वभाव वाले छोटे से शत्रु की

उन्नति से भी भारी अनिष्ट होता है ।

शुच्छ वस्तु के लिए बट उठाने वाला मूर्ख

उपहासस्पद बनता है ।

अविद्यापूर्ण जीवन मृता है ।

नष्टनाशहित परती शत्रु है ।

मित्रका मन ठिकाने न हो, उसकी कृपा भी

अवाकनी होती है ।

शीनरहित व्यक्ति की कुलीनता व्यर्थ है ।

जो विपत्ति में निमूढ़ नहीं होता वह अवश्य ही

कल्याणभागी बनता है ।

दुष्ट मन पर विश्वास करने से किमका अनिष्ट

नहीं होता ?

सज्जनों में आलस्य नष्ट हो जाते हैं ।

दुर्वर्तों की मित्रता करार की छाया के समान

अनर्थकारिणी होती है ।

इस दुःखपूर्ण निम्मार मसार में साररूप तो

केवल शृंगयनिर्वाही ही है ।

उद्यमी और कार्यसिद्धि से पूर्व नहीं स्वत्ते ।

मिथि के बिना विद्या व्यर्थ है ।

अस्थिरं जीवितं लोके ।
 अस्थिराः पुत्रद्वाराश्च ।
 अग्निं धनयौवने ।
 अस्वर्ग्यं लोकाविद्विष्टम् ।
 अहितो देहजो व्याधिः ।
 अहो चित्रानारा नित्यतिरिच नैतिर्नैवविद् ।

अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता । (किरात०)

अहो वैवाभिशासना प्राप्तेऽप्यर्थं पलायते ।
 (कथा०)

अहो रूपम्, अहो ध्वनिः ।
 आकण्डजलमनोऽपि आलिहत्येव जिह्वया ।

आचारः प्रथमो धर्मः ।
 आज्ञा गुरुणा ह्यविचारणीया । (रघु०)

आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत् ।
 आदानं हि विसर्गाय सता वारिमुचामिह ।
 (रघु०)

आपत्काले च कष्टेऽपि नोत्साहस्त्वज्यते
 बुधः । (कथा०)

आपन्तु धीरान् पुष्टान् स्वयमायान्ति
 संपदः । (कथा०)

आपदि स्फुरति प्रज्ञा यस्य धीरः स एव हि ।
 (कथा०)

आपद्यति सतीवृत्तं किं मुञ्चन्ति कुलस्त्रियः ?
 (कथा०)

आपन्नार्तिप्रशमनफला सपत्नो ह्युत्तमानाम् ।
 (मेघदूते)

आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि
 दासति । (कथा०)

आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थां कष्ट-
 संश्रयाः ।

आरब्धे हि मुदुष्वरेऽपि महता मय्ये विरामः
 कुतः । (कथा०)

आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः ।
 (नैषधीयचरिते)

आलस्योपहृता विद्या ।
 आचेष्टितो महासर्पश्चन्दनं किं त्रिपायते ?

आहारं व्यग्रहारे च त्यक्तलजः सुखी भवेत् ।

जगत् में जीवन अस्थिर है ।
 पुत्र और बलवत् अस्थिर हैं ।
 धन और यौवन अस्थिर हैं ।
 लोकविरुद्ध आचरण सुखदायक नहीं होता ।
 शरीर में उत्पन्न रोग सत्रु है ।
 नीतिच की नीति नियति के समान विचित्र
 रूपों वाली होती है ।

बलवान् से विरोध करने का परिणाम बुरा ही
 होता है ।

हाँ! देव से श्रापित लोगों के बने हुए काम भी
 बिगड़ जाते हैं ।

वाह! क्या रूप है और क्या स्वर !
 गले तक पानी में डूबा हुआ भी कुछ जल को
 जीभ से ही चाटता है ।

आचार सर्वोत्तम धर्म है ।
 गुरुजनों की आज्ञा का बिना विचारे ही पालन
 करना चाहिए ।

अपने रक्षार्थ पृथ्वी को भी त्यग ।
 मेघों के समान सप्तपुरुषों का आदान भी प्रदान
 के लिए होना है ।

विपत्ति और कष्ट के समय में भी बुद्धिमान्
 उत्साह नहीं छोड़ते ।

आपत्तियों में धैर्य रखने वालों के पास सम्प-
 तिर्थाँ स्वयमेव आती हैं ।

जिनकी बुद्धि आपत्ति में चमकती है, वह धीर है ।
 क्या कुलीन लज्जाएँ आपत्ति में भी समीप का
 त्याग करती हैं ?

उत्तम जनों का धन दुखियों के दुःख दूर करने
 पर ही मग्न होता है ।

कार्यारम्भ में होने वाला मगल, कार्यसिद्धि का
 सूचक होता है ।

धन का आगम और व्यय दोनों ही दुःखपूर्ण
 होते हैं, हम दुःखदायक धन को थिकार है ।

अरुण जिये हुए अत्यन्त यत्नित काम में भी
 बड़े लोग बीच में नहीं रवते ।

कुटिलों के साथ सरलता का व्यवहार नीति
 नहीं है ।

आलस्य विद्या का विनाशक है ।
 मगों से परिवेष्टित चन्दन क्या बिप्रेल हो
 जाता है ?

आहार और व्यवहार में स्वीच छोड़कर
 सुखी रहे ।

आहुः सप्तपदी मैत्री ।
इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः ।
इदं च नास्ति न परं ॥ लभ्यते ।
इन्द्रोऽपि लघुता याति स्वयं प्रया-
पितैर्गुणैः ।
इन्द्रनीचधगप्यग्निस्त्वया नात्येति पूष-
णम् । (शिशु०)

इत्थं धर्मेण योजयेत् ।
इहामुत्र च भारीणा परमा हि गतिः पतिः ।
(कथा०)
इष्ट्या हि विवेकपरिपन्थिनी । (कथा०)
ईश्वराणां हि विनोदरमिकं मनः । (विराट्०)
उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः । (अभिशप०)
उत्साहैरुधने हि वीरहृदये नाप्नोति खेदो-
न्मतरम् । (कथा०)
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।

उदारस्य तृणं वित्तम् ।
उदिते तु सहस्राक्षौ न स्वप्नोतो न चन्द्रमाः ।
उदिते परमानन्दे नाहं न त्वं न धै जगत् ।

उद्योगः पुरुषलक्षणम् ।
उन्नतो न सहते तिरस्त्रियाम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
उसं सुकृतबीजं हि मुनेष्वेव महत्फलम् ।
(कथा०)

उष्णचमन्यातपसंप्रयोगाच्छ्रेयं हि यत् सा
मृत्युनिर्जलस्य (एषु०)
उष्णो दहति धातारः शीतः कृष्णायते
काम् ।

अणकतो पिता शत्रुः ।
अद्विष्टस्त्विकरिणी ।
एको हि दोषो गुणमसिपाते निमज्जतीन्दो
किरणेष्विवाह् । (कुमार०)
क उष्णोदकेन नवमखिलकां सिञ्चति ! (अभि०)
दण्डाः सण्डाश्चैव विषामर्थं साधयेत् ।

कण्ठे सुधा वसति धै खलु सखनानाम् । (कथा०)
कमलवनमूपा मधुकरः ।
कर्तव्यं हि सतां वचः । (कथा०)
कर्तव्यो महदाश्रयः ।

मान पग साथ साथ चलने को मैत्री कहते हैं ।
न इधर के रहे न उधर के रहे ।
न यह रहा, न वह मिला ।
अपने मुँह मिथी मिट्टी बनकर इन्द्र भी गौरव-
हीन हो जाता है ।
ईश्वर के बहुत बड़े डेर की बजानेवाली भाग भी
अपनी ज्योति से सूर्य को मान नहीं कर
सकती ।

अमिताया पर्मानुसारिणी चाहि ।
लोक और परलोक में तियों का परम आश्रय
पति ही है ।

ईश्या विवेक की शत्रु है ।
धनादयः लोग विनोदी होते हैं ।
मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं ।
वीरों के उत्साहपूर्ण हृदय में रोद के लिये
अवकाश नहीं ।

उदारचरित लोगों के लिये तो सारी भूमि ही
कुटुम्ब है ।

उदार व्यक्ति के लिये धन तृणतुल्य है ।
सूर्य के उदय पर न जुगनु की चमक रहती है,
न चाँद की ।

अज्ञानन्द की प्राप्ति होने पर मैं, तू और जगत्
का शान नहीं रहता ।

उद्योग ही पुरुष का लक्षण है ।
उच्च व्यक्ति निरस्कार नहीं सहता ।
मूर्ख लोग उपदेश से प्रकुपित होते हैं, शान नहीं ।
उत्तम पार्श्व में बोधा हुआ पुण्यरूपी बीज महान्
फल देता है ।

जल का स्वाभाविक गुण ही शीतलता है, उसमें
गर्मी तो अग्नि या धूप के संस्पर्श से आती है ।
गर्म अद्भुत हाथ की जलला है, ठण्डा कठुपिन
करता है ।

ज्वाला लेनेवाला पिता शत्रु है ।
ऐश्वर्य वित्त को विद्वान् कर देता है ।
गुण समुदय में अकेला दोष ऐसे त्रिप जाता
है जैसे शिरणी में चाँद का कलक ।
मोक्ष के पथि जो गर्म जल से कोम मीचता है ।
विषा और धन का समग्र क्षण-क्षण में कग-कग
करके करते रहना चाहिए ।

अमृत सत्रनों के कण्ठ में ही रहता है ।
अमर कमल-मनुष्य का अलङ्कार है ।
सत्पुरुषों के वचनानुसार चलना चाहिए ।
आश्रय बड़ों का ही लेना चाहिए ।

कर्मणो गहना गतिः ।
 कर्मणो ज्ञानमतिरिच्यते ।
 कर्मदोषाद् दरिद्रता ।
 कर्मानुगो गच्छति जीव एकः ।
 कर्मायत्तं फल पुंसम् ।
 कलासीमा वाध्यम् ।
 कवय कि न पश्यन्ति ।
 कवले पतिता सद्यो वमयति ननु मक्षिका-
 भोक्तारम् ।
 कष्टं निर्धनिरस्य जीवितमहो दारिद्र्ये
 त्यज्यते ।
 कष्टं खलु पराश्रयः ।
 कष्टादपि कष्टतरं परगृहवास परार्त्तं च ।
 कस्त्यागं स्वकुटुम्बपोषणविधार्यव्यय
 कुर्वत ।
 कस्य नेष्ट हि यौवनम् ? (कथा०)
 कस्यचित् निमिषो हरणीयम् ।
 कस्य नीचद्वल धाल्यं गुरतासनवर्जितम् ?
 (कथा०)
 कस्य सत्सगो न भवेच्छुभः ? (कथा०)
 कः कालस्य न गोचराभ्युदयः ।
 कः पर प्रियवादिनाम् ।
 कः पैतामहगोलकेऽथ निपिलं सम्मानितो
 वर्तते ?
 कः प्राज्ञो बाण्डति स्नेहं वेदयामु भिकता-
 सु च ? (कथा०)
 कः सुनूयिनय विना !
 काकाः किमपराध्यन्ति हसेर्जग्धेषु शालिषु !
 (कथा०)
 कान्ता रूपवती शत्रु ।
 कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनमंगतिः ।
 (कथा०)
 कामातुराणां न मयं न शत्राः ।
 कामिनश्च दुतो विद्या ?
 कायः कस्य न वरलभः ?
 कालस्य कुटिला गतिः ।
 काले खलु समारब्धा फल दन्ति
 नीतयः । (रघु०)
 काले दत्त वरं हृत्पमशले धनुनापि किम् !
 (कथा०)

कर्म की गति गहन है ।
 कर्म से ज्ञान नदकर है ।
 दरिद्रता कर्म-दोष का फल है ।
 अनेका जीव कर्मानुसार गति पाता है ।
 मनुष्य को फल की प्राप्ति कर्मानुसार होती है ।
 कला की सीमा वाध्य है ।
 कवि क्या नहीं देखते ?
 इस में गिरी हुई मसूरी भोजनार्थ को तुरन्त
 वमन करा देती है ।
 हा ! निर्धन का जीवन एतना दुःखपूर्ण होता
 है कि कभी भी उसका माथ छीट देती है ।
 दूसरे का सरोमा दुःखदायक होता है ।
 पराये घर में निवास और पराये अन्न में निर्वाह
 सबसे बड़े दुःख हैं ।
 अपने कुटुम्ब के पालन में ही धन व्यय करने-
 वाले व्यक्ति का त्याग भी कोई त्याग है !
 यौवन कितने अजरा नहीं लगता ?
 किसी का भी कुछ भी चुराना नहीं चाहिए ।
 हम या शायद न होने से निमग्न बनकर उन्म-
 डल नहीं हो जाता ?
 सत्सह किम्का भला नहीं करता !
 फल के क्षेत्र से बाहर कीन है ।
 मधुरभाषी का कोई शत्रु नहीं होता ।
 हम ब्राह्मण में सर्वसम्मानित कीन हैं ?
 कीन-सा विद्वान् वेदवार्ता और रेत में स्नेह
 (प्रेम, तेज) चाहता है !
 विनय से रहित पुत्र क्या ?
 जब धानों को हम खा गये तब और क्या
 अपराध करेंगे ?
 छुरपा पत्नी शत्रु है ।
 खुरी भगत व्यसन रूपी वृक्ष को जड़ है ।
 कामपीडित व्यक्ति भय और लज्जा से रहित
 होते हैं ।
 कामी को विद्या नहीं ?
 शरीर जिसे प्यारा नहीं होता ?
 काल की चाल देखी होती है ।
 समय पर प्रयुक्त नीतिवाँ अवश्य फल लाती है ।
 मध्य पर दिया हुआ थोड़ा भी दान अनमय
 पर दिये हुए बड़े दान से अच्छा होता है ।

कालेन फलते वीर्यं, सखं साधुममागमः ।

का विद्या कविता विना ?

काश्मीरजस्य कपुतापि नितान्तरम्या ।

का ह्यजिजीवि विना हंसं, कश्च हंसोऽजिजीवी
विना ? (कथा०)

किं हि न भवेदोद्धरेच्छया ? (कथा०)

किं किं करोति न निरर्गलता गता स्त्री ?

किञ्चित्कालोपभोग्यानि यौवनानि धनानि
च ।

कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।

कुरूपता शीलतया शिराजने ।

कुरूपी बहुचेष्टिकः ।

कुलपथः का स्वामिभक्तिं विना ?

कुले कश्चिद्वन्धः प्रभवति नरः, श्लघ्य-
महिमा ।

कुचक्षणा शुभ्रतया विराजते ।

कुवाक्यान् च सौहृदम् ।

कुशिव्यमध्यापयतः कुतो यमः ?

कृतभाना शिव कुत ?

कृतार्थः स्वामिर्न द्वेष्टि ।

कृपणानुसारि च धनम् ।

कुर्ये कस्यास्ति सौहृदम् ?

केचिदज्ञानतो नष्टाः ।

केचिन्नष्टाः प्रमादतः ।

केवलौघि सुभगो तवाभ्युद किं पुनस्त्रिदश-
चारलान्छितः ? (उ०)

केषा न स्यादभिमतफला प्रार्थना क्षुत्तमेधु !
(मे०)

केषां नैरा कथय कविताकामिनी कौतुकाय !

को जानाति जनो जनार्दनमनोवृत्तिं कदा
कीदृशी ?

कोऽतिमार समर्थानाम् ।

को धर्मं कृपया विना ?

को न याति वर्षां लोकं मुखे पिष्टेन पूरितः ।

को नाम राजा प्रियः !

कोऽर्थान् प्राप्य न गर्वितः !

कोऽर्थी गतो गौरवम् ?

को विदेशः समर्थानाम् ।

को हि मार्गमार्गा वा व्यवसान् यो निरीक्षते ?
(कथा०)

तीर्थं का फलं विन्द्य मे परन्तु मत्सगि का फलं
शीघ्रं प्राप्तं होता है ।

कविता के विना विद्या कैसा ?

केसर की कच्चाटन नी अत्यन्त प्यारी होती है ।

हराहीन मरमी कैसी और मरसीहीन हम
कैसा ?

ईश्वर की इच्छा मे क्या नहीं हो सकता ?

निरकुश नारी क्या-क्या नहीं करती ?

यौवन तथा मन्त्रा मे कुछ कुछ ही फल तक
छूटे जा सकते हैं ।

बुरे राताओं मे राष्ट्रां का नाश हो जाना है ।

सुन्दर शील मे दुष्टपना भी मिल उठती है ।

कुरूप मनुष्य बहुत चेष्टाएं करता है ।

पतिभक्ति विहीन दुष्टवधू कैसा ?

कुल मे कौन हो अन्य व्यक्ति यशस्वी प्रभु
होता है ।

फटे पुराने वस्त्र भी स्वच्छ रहनेसे मिल उठते हैं ।

कुचक्षनों मे मित्रता नष्ट हो जाती है ।

कुशिव्य दो अध्यापक को यश कदा ?

कृतनों का क्याप कदा ?

पूर्ण-मनोरथ व्यक्ति स्वामी मे द्वेष करता है ।

धन कृपण के पोछे चलता है ।

निर्बन्ध या निर्धन मे कौन मित्रता करता है ?

कई लोग अज्ञान मे नष्ट हो गये ।

कई लोग प्रमाद मे नष्ट हो गये ।

नया मेघ वैसे भी सुन्दर होता है, परन्तु जब वह
इन्द्रधनुष मे युक्त हो तब तो वात ही क्या ?

उत्तम जनों के सम्मुख जी दुर्दै किनारी प्रार्थना
सफल नहीं होती ।

कहो तो, वह कविता-कामिनी किन के मन में
कौतुक उत्पन्न नहीं करती ?

कौन जानता है कि भगवान् के मन में इन्हीं
कर कैसा होता है ?

बलवान् के लिये दोर भी भार अधिक नहीं है ।

दया के विना धर्म केसा ?

समार मे निमके मुँह मे धाम डाल दो, वही
वश मे हो जाता है ।

राजाओं का प्यारा कौन होता है ?

धन पत्तर कौन गरिब नहीं होता ?

किम् याचक को गौरव प्राप्त हुआ ?

ममर्थं व्यभि क न्वि विदेश कौन-सा है ।

कौन व्यवसान् मनुष्य सुपथ कुपथ का ध्यान
रखन है ?

को हि विस्त रहस्य वा ह्यापु दक्कनोनि
गृहेषुम् । (वथा०)

को हि स्वक्षिरमक्षय्या विप्रश्चोल्लङ्घयेद्
गतिम् ? (वथा०)

त्रियाणा त्वलु घम्याणा मपन्न्यो मूलकारं
णम् । (कुमारमवे)

त्रियाभिद्धि सप्त भवति महता नोपकरणे ।

श्रुद्धे विधौ भवति मित्रममित्रमाश्रम् ।

त्रोधो मूलमनयनाम् ।

काश्रयोऽस्मि तुरामनाम् ?

क्षणविध्वामिन काया का चिन्ता मरणे रणे ।

क्षणे क्षणे यद्वतामुपति तदेव रूप रमणाय
ताया । (शिष्ट०)

क्षमया कि म विध्यति ?

क्षान्तिमुख्य तपो नास्ति ।

क्षार विवति पयोधेर्वर्ष्यम्भोषरो मधुर-
मम्भ ।

क्षितिषु कि जन्म कीर्ति विना ?

क्षाना नरा निष्करणा भवन्ति ।

क्षयागुराणा न हविर्न पक्वम् ।

ग(५) गगोपो भयङ्कर ।

गवस्य शौचन नास्ति ।

गगानुगतिको लोको न लोक पार
माधिक ।

गुणलुप्ता स्वयमेव सप्त ।

गुणान भूययते रूपम् ।

गुणा पूनाम्भानं गुणिषु न च लिङ्ग न च
वय ।

गुणा गुण वनि न वक्ति निर्गुण ।

गुणविहाना बहु नश्ययन्ति ।

गुप्ता नयन्ति हि गुणान महति । (निरात०)

गृह या पुण्यनिपत्ति स्यान्वनि अमर
कुल । (वथा०)

ग्रामम्भार्थे क्व त्यक्तम् ।

चक्राग्नि योग्येन हि याग्यमगम (निवध०)

गुरुवत् परिमन्त्र्य तु स्यान्ति सुगानि च ।

पशून् न्यसेत् पादम् ।

चपली भ्रिष्ट शूराणा रणे नयपगनया ।

(वथा०)

मिथ्या ममरति और मायताय बात को नहीं
टिपा मरती ।

अपन निर का परछाई और विधि की गति का
उलटपन जान कर सकता है ?

भामिक कुरता का मूल कारण धेठ पत्नियाँ
हानी हैं ।

बड़े लाभ स्वतन्त्रता में पाय मित्र काते हैं, उप
करणों में नहीं ।

विषाणा नद हा तो मित्र भा अमित्र बन
जाता है ।

जोष बनयों का नष्ट है ।

दुष्टों को आशय कहाँ ?

जब गरिग लगमदुर है तब रण में मरने में
चिन्ता है नो ।

काम्यविक सौन्दर्य कहाँ है जो अनुभूत नया-नया
होता पाय ।

क्षमा में क्या नहीं मित्र होना ?

क्षमा व तुल्य का तब नहीं है ।

भर सतुष्ट का सखा पानी पीता है और मधुर
जल बरसता है ।

भूमि पर कानूनी जीवन क्या ।

निधन छोड़ निद्रा बन पाते हैं ।

भूय म व्याकुल व्यक्ति न स्वाद देखो है न
पक्वता ।

फग का विस्मर-भाव भी भयकर होता है ।

बाता बन का गाव - यथ है ।

लोग भवन्त वस्तु हैं, तत्त्व की पहचान नहीं
करते ।

सम्पत्तियाँ स्वयं तुम्हें को लानी होती हैं ।

रुद्र गुणा का अन्तून कर देता है ।

गुनिया में गुण ही पूज्य होत हैं, न बाध विद्ध
और न गुरु ।

गुण का मूल गुण जानना है, निगुण नहीं ।

गुणहीन मनुष्य बाबाल होने हैं ।

गोव गुण स मित्ता है, मूढ़ में भरी ।

गहम्य म न पुण्य निय ना मरन है न
मन्दन में नहीं ।

गाँव की गमा व निर गुण की वक्ति दे दे ।

योग्य म बाग्य का भग्न हा शाना देता है ।

दुःख और सुख (गव व) चक्र व गुण घूमते हैं ।

दलकर हा पग मरना बर्हिष्ट ।

गुरु में बाध की नय या परानय अनिश्चित
होती है ।

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो यस्यास्ति विपुलं धनम् ।

चित्तमेतदमलीकरणीयम् ।

चित्ते वाचि क्रियाया च साधूनामेकरूपता ।

चित्रा गतिः कर्मणाम् ।

चिन्ता जग मनुष्याणाम् ।

चिन्ताममं नास्ति शरीरशोषणम् ।

चौराणामनुत्तं बलम् ।

चौरे गते वा किमु सावधानम् ?

उद्वेग्वनथा बहुलीभवन्ति ।

जडरं को न विभर्ति केवलम् !

जपतो नास्ति पातश्चम् !

जरा रूपं हरति ।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।

जातस्य हि भ्रूवो रुज्युः ।

जातापत्या पतिं द्वेष्टि ।

जातौ जातौ नवाचाराः ।

जानन्नि पशवो गन्धात् ।

जामाता दशमो ग्रहः ।

जारस्त्रीणां पतिः शत्रुः ।

जितशोभेन सत्रं हि जगदेतद् विजीयते ।

(पथा०)

जीनन् हि धीरोऽभिमतं किं नाम न यदा-
प्नुयात् । (कथा०)

जीवो जीवस्य जीवनम् ।

ज्ञानस्याभरणं क्षमा ।

ज्येष्ठप्राता पितुः समः ।

अदिनि पराशयवेदिनो हि विज्ञाः । (नैषध०)

कनान्तं गच्छ भोजनम् ।

तपोऽधीनानि ध्रैयासि, ह्युपायोऽन्यो न
नियते । (वया०)

तपोऽधीना हि संपदः । (वया०)

तमस्तपति धर्माशोः कथमाविर्भवन्त्यति ?

(अभिज्ञान०)

तस्करस्य कुतो धर्मः ?

तस्य तदेव मधुरं यस्य मनो यत्र मलम्बनम् ।

निष्ठयेकां निशां चन्द्रः श्रीमान् संपूर्ण-
मण्डलः ।

अति धनवान् चाण्डाल भी पूज्य है ।

इस चित्त को निर्मल करना चाहिए ।

सज्जनों के मन, वाणी और कर्म में समानता
रहती है ।

कर्मों की गति न्यारी ।

चिन्ता मनुष्यों का बुढ़ापा है ।

चिन्ता के समान शरीर को कोई भी नहीं
सुखाना ।

झूठ ही चौरा का बल है ।

चोर के भाग जाने पर सावधानता से क्या !

दोषों के कारण अनेक विपत्तियाँ आ बेरती है ।

केवल अपना पेट कौन नहीं भर लेता !

जप करने वाला पाप मुक्त रहता है ।

बुढ़ापा सौन्दर्य का नाशक है ।

बूँद-बूँद करके घटा भर जाता है ।

उपन्न व्यक्ति की मृत्यु अटल है ।

सवानवाणी नारी पनि से ब्रेच करती है ।

प्रत्येक जानि के आचरण अलग-अलग होते हैं ।

पशु गन्ध से पहचान जाते हैं ।

शामाद दमर्वा ग्रह है ।

कुल्हा की पनि शत्रु प्रतीत होता है ।

क्रोध का विनेता जगदि नहीं होता है ।

धैर्यशाली व्यक्ति जीविन रहे तो प्रत्येक अभी-
प्राप्त कर लेता है ।

प्राणी प्राणी का जीवन है ।

क्षमा क्षान का भूषण है ।

बड़ा भाई पिता के तुल्य है ।

विद्वान् लोग दूसरे के भाव को तुरन्त जान
जाते हैं ।

भोजन के अन्त में मट्ठे का सेवन करे ।

मुष्ट-सुविधाएँ तपस्या से ही प्राप्त होती हैं,
जिसी ज-य उप य से नदः ।

सपत्तियों तप के अधीन हैं ।

सूर्य के चमकने पर अन्धकार कैसे प्रकट होगा ?

चोर का धर्म कहाँ !

नियका मन जिसमें लगा हो, उसे वही प्रिय
होता है ।

१. शोभायित पूर्ण चाँद तो एक ही रात रहता
है । २. चार दिन की चाँदनी और फिर
अंधेरी रात है ।

धनं सर्वप्रयोजनम् ।
धनानि जीवितं चैव परार्थे प्राज्ञ उन्मृजेत् ।

धर्मक्षयकर क्रोधः ।
धर्मस्य तत्त्वं निदिनं गुहायाम् ।
धर्मं कीर्तिद्वयं स्थिरम् ।
धर्मं स नो यत्र न मन्यमस्ति ।
धर्मेण हीना पशुभिः समानाः ।
धिक्ष कल्पत्रमपुत्रकम् ।
धिक्ष पुत्रमग्निनीलं च ।
धियागता स्वर्गोपरम् ।
धियगृहं गृहिणीशून्यम् ।
धिरर्जोविर्न चोद्यमर्जितस्थः ।
धिरर्जोविर्न व्यर्थमनोरथस्थः ।
धिरर्जोविर्न शास्त्रकलोत्तिमस्थः ।

धृतेः श्रीगन्धि बालिशः । (कथा०)
ध्रुवं फलाय महते महतां मह संगमः । (कथा०)
न काचस्य कृते जातु युक्ता मुनामने
क्षतिः । (कथा०)
न काममदृशो रिपुः ।
न कृत्यवर्तनं युक्तं प्रदोसे बहिना गृहे ।
न पलु स उपरतो धम्य बल्लभो जग
स्मरति ।
न च धर्मो दयापरः ।
न चलति खलु वाक्य सजनानां कदाचित् ।
न च विद्याममो बन्धुः ।
न च व्याधिममो रिपुः ।
न चापत्यसमः स्नेहः ।
न जाने संसारः किमयुतमयः किं विषमयः ।
न ज्ञानात् परमं वसु ।
न तोषात् परमं सुखम् ।
न तोषो महतां सुखाः । (कथा०)
न दरिद्रस्या दुःखी लज्जशोणधनोऽयथा ।
न धर्मगृहेषु वयः समीक्ष्यते । (कुमार०)
न धर्ममदृशं मित्रम् ।
न नश्यति तमो नाम कृत्या दोषवर्जना ।
ननु प्रज्ञातेऽपि निष्कम्पागिरयः । (अभि०)
ननु वस्तुविज्ञेयनि मृदा गुणगुणा वचने
विपश्चिन्ताः । (किरात०)
न पुत्रात् परमो लाभः ।

धन सर्वप्रयुक्त प्रयोजन है ।
बुद्धिमत् मानव परोपकार के लिए धन और
जीवन त्याग दे ।
क्रोध धर्म का नाशक है ।
धर्म का तत्त्व गुहा में छिपा है ।
धर्म और कीर्ति ही दो स्थिर पदार्थ हैं ।
विमर्ष मृत्यु नहीं, वह धर्म नहीं ।
धर्महीन जन पशुतुल्य हैं ।
अपुत्र भारी विकार्य है ।
अनघ पुत्र धिकार्य है ।
सब दया की जननी आशा धिकार्य है ।
गृहिणीरहित घर धिकार्य है ।
उद्यमहीन का जीवन धिकार्य है ।
विज्ञान मनोरथ मनुष्य का जीवन धिकार्य है ।
प्राप्त नया कष्ट से रहित मानव का जीवन
धिकार्य है ।
धूलें लंग मूर्खों को ही उल्टा बनाते हैं ।
बर्षों की संगति का फल बड़ा होता है ।
जीव का प्राप्ति के लिए मीन की हानि
उचित नहीं ।
काम के समान शत्रु नहीं ।
घर में आर लयने पर कुर्यां छोड़ना उचित नहीं ।
विमर्ष स्मरण विषमन करते हैं, जने मरा न
समझिए ।
दया में बड़ा कोई धर्म नहीं ।
सज्जनों की बात कभी झूठी नहीं होती ।
विद्या के समान बन्धु नहीं ।
रोग के तुल्य शत्रु नहीं ।
मन्यति के प्रति प्रेम अप्रतिम है ।
न जाने यह जगत् अमृतमय है वा विषमय ।
ज्ञान में बड़ी अक्षि नहीं ।
मनोर ने बड़ा सुख नहीं ।
बड़े मोक्ष की प्रमत्तता व्यर्थ नहीं होती ।
निर्भय उनका दु गी नहीं होता जिना धन को
पाकर मनेवाला ।
धर्मवृद्धा की उमर नहीं देनी जानी ।
धन क समान मित्र नहीं ।
दापन का नाश करने में अयोग्य नष्ट नहीं होता ।
आँखें म पवन कभी नहीं दिलने ।
गुणग्राही लोग धन का गुण प्रदग करते हैं,
बन्धुविरोध का ध्यान नहीं करने ।
पुत्र प्राप्ति से बन्ध कोई लाभ नहीं ।

न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्त-
मानाम् ।

न भयं चास्ति जाग्रतः ।

न भवति पुनरुक्तं भाषितं सज्जनानाम् ।

न भार्यायाः परं सुखम् ।

न भूतो न भविष्यति ।

न सुखे परमा गतिः ।

नये च गौर्ये च वसन्ति सपदः ।

न रत्नमन्विष्यति सुख्यते हि तत् ।

(कुमार०)

नवा बाणी मुखे मुखे ।

न शरीर पुन पुन ।

न शान्ते परमं सुखम् ।

न शस्त्रं वेदं परम् ।

न स शक्नोति किं यस्य प्रज्ञा नापदि
हीयते ? (कथा०)

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा ।

न सुखे ध्वनिस्तादृश्यादृक् कास्ये
प्रजायते ।

न स्पृशति पल्लवाग्मं पत्ररघोऽपि
कुत्र कापि ।

न स्वच्छ व्यवहर्तव्यमामनो भूति-
मिच्छता । (कथा०)

न हि वृषमुपकार माधवो विस्मरन्ति ।

न हि तापयितुं शक्यं सागराग्ममृणो-
रुक्ता ।

न हि वृषकरमस्तीह किञ्चिदप्यवसायिनाम् ।
(कथा०)

न हि त्रायों विनेर्षया ।

न हि प्रपुल्लं महकारमेव कृसान्तरं कानु नि
पट्टपदाली । (खु०)

न हि वन्याऽनुते दुःखं यथा हि सुख-
पुत्रिणी ।

न हि सखावन्तं स्तुत्याप्यापद् निर्ल-
प्यते । (कथा०)

न हि सर्वविद् सर्वे ।

न हि सिंहा गजाम्बुदी भयाद् गिरिगुहा-
शय । (खु०)

न हि सुसम्प सिहस्य प्रविशन्ति मुखे दृगा ।

नातिशीङ्गितु भग्नाविच्छन्ति हि महौजम् ।
(विप्ल०)

नाधमंश्चिरद्वये । (कथा०)

प्राणान्तकारी ममव आ जाने पर भी उत्तम
मनुष्यों के स्वभाव में विकार नहीं आता ।

जाननेवाले को कोई डर नहीं ।

सम्बन्ध एक ही वान को बार-बार नहीं कहते ।

पत्नी में बड़ा कोई सुख नहीं ।

न हुआ है न होगा ।

मोक्ष में कौंचो कोई स्थिति नहीं ।

सपदाएँ नीति और सुखोपेक्षा में रहती हैं ।

रत्न किसी को नहीं खोना, उसी की खोज बँ-
जानी है ।

प्रत्येक मुख में वाणी वृक्ष-वृष-होनी है ।

शरीर बार-बार नहीं मिलता ।

शान्ति से बड़ा कोई सुख नहीं ।

वेद में बड़ा कोई शास्त्र नहीं ।

निमकी बुद्धि विपत्ति में भी स्थिर रहनी है, बड़
स्था नहीं कर सकता ।

बड़ सभा ही नहीं निमम वृद्ध न हों ।

कौम म जैनी ध्वनि उत्पन्न होनी है वैसी मोने
में नहीं ।

हाथी की हड्डियाँ निरुक्त आँखें तो भी बड़
जोड़ का बल नहीं टूटा ।

बुद्धि के स्पष्ट मनुष्य को स्वच्छ पूर्वक व्यवहार
नहीं करना चाहिए ।

श्रेष्ठ लोग किये हुये उपकार को नहीं भूलते ।

मनुष्य का जन्म निनरों की मशाल स गर्म नहीं
विश्रा जा सकता ।

अव्यवसाया अधिक क लिये जगत् में कोई भी
कार्य दुष्कर नहीं ।

मित्रों श्वा-रहित नहीं हाथी ।

भैरवे पुष्पिन अक्ष-वृद्ध पर पट्टकर अन्य
वृद्ध का श्वा नहीं करते ।

बाँस का बड़ डग नहीं होता जो वृक्षपुत्र
नरीकी ।

उत्तम व त्याग म ता सम्भारण अपरि पर
भी निश्चय नहीं मिलता ।

सब लोग मनुष्य नही जानते ।

हाथियों पर अजस्र करनेवाला सिंह हर के
कारण पर्वत-पुत्र में नहीं रहता ।

मोन हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं नहीं का
पुसते ।

आजम्बी जन पराजितों को अन्यधिक पेट
नहीं देना चाहते ।

अधर्म चिरकाल तक पन नहीं देता ।

नानृतापातकं परम् ।
नारीणां भूषणं पतिः ।
नारत्नैर्जलज्जमेति हिमेस्तु दाहम् । (नैषध०)
नालपीयान् बहु सुकृतं हिनन्ति दोषः ।
(किरान०)

नाममोक्ष परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत् ।
नास्ति कामममो व्याधिः ।
नास्ति क्रोधममो वह्निः ।
नास्ति चक्षु ममं तेजः ।
नास्ति आत्मसमं बलम् ।
नास्ति प्राणयमं भयम् ।
नास्ति वस्तुममं बलम् ।
नास्ति मेघसमं तोषम् ।
नास्ति मोहममो रिपुः ।
नास्त्यदयं महात्मनाम् ।

नास्त्यदो स्वामिमक्तानां पुत्रे वामनि वा
दृष्ट्वा । (कथा०)

नि.सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाङ्ग्यो नहान् ।
निजोऽप्यपत्ये करुणा कठिनप्रकृतेः कुतः ?
(प्रसन्नराजदे)

निरुपादये देशे पराङ्गोऽपि प्रमायते ।
निर्गम्य पुरं त्यजन्ति गणिकाः ।
निर्धनता सर्वापदामास्पदम् ।
निर्धनस्य कुतः सुखम् ?
निर्वाणशोषे किमु तैलदानम् ?
निवमन्ति पराक्रममाध्या

न विपादेन समं ससुख्यः । (किरान०)
निवमन्तर्दाराणि हान्यो बह्विर्न तु उदलितः ।

निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् ।
निष्पन्नास्त्ववमीदृन्ति लोकोपहमिताः
सदा । (कथा०)
निसर्गसिद्धो हि नारीणा सपनीषु हि
मत्सरः । (कथा०)

नि.सृष्टस्य कृतं जगत् ।
नीचाधरो हि महत्तामरमानहेतुः ।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण ।
(नेर०)

नीचैरनीचैरतिनीचनीचै-
संहरागैः फलमेव साध्यम् ।

भूठ मे दडा कोई पाय नहीं ।
पनि कियों का मूषन है ।
बमल धूप से नहीं, पाके मे सुगन्ता है ।
बोडे मे दोन मे बडुन से पुष्पों का नारा नहीं
होता ।

दूखे स्थान को देखे बिना पहले को न छोड़े ।
काम के समान कोई रोग नहीं ।
क्रोध के समान कोई तेज नहीं ।
नेत्र के समान कोई आग नहीं ।
आत्मा के तुल्य कोई बल नहीं ।
प्राणभय के तुल्य कोई भय नहीं ।
बन्धु के तुल्य कोई दल नहीं ।
मेघ के समान कोई जल नहीं ।
मोह के समान कोई शत्रु नहीं ।
रेनो कोई वस्तु नहीं जिसे महात्मा लोग न
दे सकें ।

अहो ! स्वानिमर्शों को न पुत्र वा मोह होना है
न प्राणों का ।

प्राय निक्कम्पी वस्तु का आडम्बर बहुत होता है ।
कठोर स्वभाववाले व्यक्ति को अपनी सन्तति
पर भी दया नहीं आती ।

बृद्धहीन देश में पराङ्ग भी बृद्ध माना जाता है ।
बेदयाद निर्धन पुरुष को छोड़ देती है ।
दरिद्रता सर दु खों का कारण है ।
निर्धन की मुल कहीं ?

दीरक कुल जाने पर तैल डालने से क्या ?
समृद्धिदा पराक्रम के आश्रय पर रहती है,
विवाद के साथ नहीं ।

लकड़ी के अन्दर विपन्नता अग्नि पर से दूदा
आ सकता है, जलनी पर से नहीं ।
राग-रहित के लिए पर ही तपोवन है ।

बुद्धिहीन व्यक्ति दुःख उठाते हैं तथा लोगों के
उपहासस्वर बनते हैं ।
कियों की सौनों के प्रति ईर्ष्या स्वभाविक है ।

कामनारहित के लिये अन्ध सु-तुल्य है ।
नीच का आश्रय लेना दंडे लोगों के लिये अन-
मानजनक होता है ।

पड़िये के हल के समान मनुष्य की अवस्था
ऊँचीनीची होती रहती है ।
नीचे, ऊँचे और अत्यन्त नीचे, सभी उपायों से
अभीष्ट सिद्ध करनी चाहिए ।

नीचो वदति, न कुरुते,
वदति न साधु क्रूरयेव ।
नैरुत सर्वो गुणमनिपात ।
न्याय्या वृत्ति समाचरेत् ।
न्याय्यात्पयः प्रविचलन्ति पद न धीराः ।

पद्मो हि नभसि क्षिप्त सेवु पतति मूर्धनि ।
(कथा०)

पद्मभिर्मिलितं किं यज्जगतीह न साध्यते ।
(नैषध०)

पदतो नास्ति मूर्धन्वम् ।
पदं हि सर्वत्र गुणनिधीयते ।
पदं महत् अमरस्य पेलुर्धं
शिरीषपुष्पं, न पुनः पतत्रिणम् । (कुमार०)
पद्मपत्रस्थितं चारि अन्ते मुक्ताफलमियम् ।

पयःपानं भुजंगानां केवलं विषवर्धनम् ।
पयोगते किं पलु सेतुर्धनम् ?
परदुःखेनापि दुःखिता विरलाः ।

परदुःखिर्विनाशाय ।

परमुक्ते हि कमले किमलेजायते रतिः ?
(कथा०)

परम लाभमरानिभद्रमाहुः । (किरा०)
परलोकावस्थ को वन्दु ?
परवृद्धिमत्परि मनो हि मानिनाम् । (विश्व०)

परसदनमिविष्ट को लघुर्व न याति ?

परहितविरतानामादरो नात्मकार्यं ।

परं प्रतिज्ञानफला हि बुद्धयः ।

परोपकारजं पुण्यं न स्याद्विपुलावैरपि ।

परोपकाराय सत्ता विमूढाय ।
परोपकारार्थमिदं शरीरम् ।
परोपदेशवेलायां क्षिप्ता सर्व भवन्ति वै ।

परोऽपि हितवान् वन्दुः ।
पर्यवानां मयं वज्रान् ।

नीच मनुष्य कहता है, करता नहीं । सज्जन
कहना नहीं, कर देता है ।

सभी गुण एकत्र नहीं रहते ।

जीवकोपार्जन न्याय के अनुसार करना चाहिए ।
धीर लोग न्याय के मार्ग से तनिक भी विचलित
नहीं होते ।

आमारा में केंरा हुआ कोचट पें रुनेवाले के
मिर पर ही पटना है ।

मसार में ऐसा कीदसा काम है जिसे पाँच
मनुष्य मिलकर नहीं कर सकते ।

अत्रयनशील मनुष्य मूर्ख नहीं रहता ।

गुण सर्वत्र अपना स्थान बना लेते हैं ।

शिरीष का पूरा अमर के कोमल चरण को तो
मह होता है, पक्षी के चरण को नहीं ।

कमल-पत्र पर पड़ा हुआ जल गोनी की शोभा
धारण कर लेता है ।

सोंपों की दूध पिलाने से उनका विष ही बढ़ता है ।

बाद के उतर जाने पर बर्फ नौवने में क्या लाभ ?

दूसरों के दुःख से दुःखित होनेवाले लोग
घोड़े ही हैं ।

दूमरों के मवानुसार आचरण विनाशकारी
होता है ।

क्या अँधरा दूमरे से मुक्त कमल में प्रेम करना है ?

शत्रु का नाश सब ने कहा लाभ कहा जाता है ।

दिवगत व्यक्ति का वन्दु कीद है ?

मानी मनुष्यों का मन दूसरों की उन्नति से
ईर्ष्या करता है ।

दूसरे के घर जाने से मित्रता गौरव क्षीण
नहीं होता ।

परोपकारपरायण लोग अपने कावों की परवाह
नहीं करते ।

मुर्खियां बड़ी हैं जो दूसरों के सङ्गेन ममझ
जाती हैं ।

परोपकार प्रण्य पुण्य ऐक्यो यक्षों क पुण्य से
श्रेष्ठ है ।

मज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं ।

यह शरीर परोपकार के लिए है ।

दूमरों को उपदेश देते समय तो मर मम्य बन
जाते हैं ।

हितकारक नेपाणा भी वन्दु ही है ।

पत्तों की वज्र में भय होता है ।

पाणौ पयसा दग्धे तर्जं पूरुषं पामर-
पिबति ।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति ।

पापप्रभाजान्नरकं प्रयाति ।

पितृदोषेण मूर्खता ।

पिपासितं काव्यरसो न पीयते ।

पीन्या मोहमयी प्रमादमदिराम्

उन्मत्तभूतं जगत् ।

पुण्यवन्तो हि सन्तानं पश्यन्त्युत्त-
मवम् । (कथा०)

पुनः क्षुरपविडनं ।

पुनश्चोत्तना दाराः ।

पुनर्हीनं गृहं शून्यम् ।

पुनरपि भयं यत्र नत्र मौल्यं हि कीदृशम् ?

पुनर्दंष्ट्री पुनरेव पापी ।

पुनर्नाराय पुनरेव भोगी ।

पुण्या अपि याणा अपि गुणच्युता कस्य न
भयाय ?

पूज्यं वाक्यं सरुद्धस्य ।

पूज्यपुष्पतया विद्या ।

प्रण्डन्नमप्युह्यते हि चेष्टा । (किता०)

प्रजानामपि दीनानां राजवं सद्यः पिता ।

प्रज्ञाशलं च सर्वेषु मुखं कार्येषु साधनम् ।
(कथा०)

प्रणामान्न सतां कोपः ।

प्रतिबद्धानि हि श्रेयः पूज्यपूनाम्यतिक्रमः ।
(रघुवश०)

प्राणव्ययाय शूराणां जायते हि रणात्मजः ।
(कथा०)

प्राणिना हि निकृष्टाणि जन्मभूमिः परा
प्रिया । (कथा०)

प्राणेष्वोऽन्यथमात्रा हि कृपणस्य गरी-
यसी । (कथा०)

प्राणैरपि हि शून्यानां श्यामिसरक्षणं घनम् ।
(कथा०)

प्राणोत्तीर्णमनिकलः । (कथा०)

प्राप्यते किं यदाः शुभ्रमनङ्गीकृत्य साहसम् ?
(कथा०)

प्रायः श्वश्रुरयोर्न दृश्यते सौहृदं लोके ।

दूष का जला छाठ को फूँक फूँक कर पीता है ।

मनुष्य योग्य होने पर धन प्राप्त करना है ।

पाप के प्रभाव से नरक को जाता है ।

मूर्खता पिता के दोष से होती है ।

ध्याने काव्यरस नहीं पिपा करते ।

मोहमयी प्रमाद मदिरा पीकर तगद उन्मत्त
हो गया है ।

वश को ऊँचा करनेवाली सन्तान पुण्यवानों
के घर ही होती है ।

मूर्ख पुन मूर्ख है ।

पत्नी पुन को जन्म देने के लिए ही होती है ।

पुनर्हीन घर सुना है ।

जहाँ पुन ने भी भय हो वहाँ सुग कैमा ?

फिर दरिद्री, फिर पापी ।

फिर बनी, फिर भोगी ।

पुण्य भी और वाण भी गुण (पुण, पणुष की
डोरी) से रहित हो जाने पर किसके लिए
भयकर नहीं होते ?

धनाढ्य का वाक्य पूज्य होता है ।

विद्या पिछले पुण्यों में मिलती है ।

चेष्टा शुभ बान को भी व्यक्त कर देती है ।

राजा दीन प्रजाओं का ब्यापक पिता है ।

मन कार्यों में मुक्तिवत् मन्त्रमे बड़ा साधन है ।

सज्जनों का काथ प्रणाम से समाप्त हो जाता है ।

पूज्यों की पूजा में उल्ट फेर कल्याणों का बाधक
होता है ।

मुद्र का भेदा शूरवीरों के प्राणधन के व्यापक
होता है ।

प्राणियों की अपनी निकृष्ट जन्मभूमि भी अत्यन्त
प्यारी लगती है ।

कजूर को बोटा-मा भी धन प्राणों से अधिक
प्यारा लगता है ।

प्राण देकर भी स्वामी की रक्षा करना सेवकों
का ऋण है ।

धीर जमीन को पा लेता है ।

जान जोषिम में डाले बिना वही शुभ वश प्राप्त
हो सकता है ?

ससार में प्रायः सामन्त में सौहार्द नहीं
देखा जाता ।

प्रायः समानविद्यः परस्परयदा पुरोभागा ।

प्रायः समानश्चिपत्तिकाले
धियोऽपि पुंसां मल्लिवीभवन्ति ।

प्रायः क्षियो भवन्तीह निसर्गावपना
शठाः । (कथ०)

प्रायः स्वं महिमानं श्रेयाजतिपद्यते हि
जनः ।

प्रायेण गृहिणीनेत्राः कम्पार्येषु कुटुम्बिनः ।
(कुमारममे)

प्रायेण भाषादौ.शीर्षं स्नेहान्धो नेलने
जनः । (कथ०)

प्रायेण भूमिपतयः प्रनदा रुनाश्च
या पार्श्वतो भवति तं परिवेष्टयन्ति ।

प्रायेण साधुवृत्तानानत्यायिन्यो विनक्तयः ।

प्रायेण सान्प्रयविधौ शुणानां
पराद्भुक्ती विश्रुज्ज प्रवृत्तिः । (जुनर०)

प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणस्तत्तो जायते ।

प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्र
यान्त्यापदः ।

प्रारम्भ्य शोचनजना न परिम्वजन्ति ।
प्रामादशिक्षरत्नोऽपि कः क्लिष्टश्चायते ?

प्रियबन्धुविनाशो यः कोऽपि न कः न
तापयेत् ? (कथ०)

प्रियमांसदुग्धविषोऽक्रितः किमरुहं करि
कुम्भजो मयि ? (दिगु०)

प्रियानादौ हृत्तं किल जगद्दर्शनं हि
भवति ।

फलं माग्यानुसारतः ।
वशाभितानुरोधेन किं न कुर्वन्ति साधवः ?

(कथ०)

वधिरस्य गान्धू ।
वधिरन्मन्त्रकर्म. छेदन् ।

वन्धुः को नाम दुष्टानाम् ?
वन्धुरप्यस्ति परः ।

बलं मूर्खस्य नीतिवन् ।
बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्वन् ।

बलीयसी केवलनीकरेण ।
बहुरना वमुन्धरा ।

बहुधनमलम्बमार य कथयन्ति त्रिप्र
लापी स ।

पुनर्विघ्नास्तु मया कृत्याणसिद्धयः । (कथा०)

बह्वक्षयं हि मदिनी ।

गालानां रोदनं बलम् ।

बुद्धयः कुत्रगाभिन्त्यो भवन्ति महतामपि ।

यदि कमनुमानिणी ।

बुद्धिं ताम् च सर्वत्र सुरय मित्रं न पौरुषम् ।

(कथा०)

बुद्धेः फलमनाम ।

बुभुक्षितं किं न ज्ञोति पात्रम् ?

बुभुक्षेत् न प्रतिभाति किञ्चित् ।

बुभुक्षितं प्राकरणं न भुज्यते ।

ब्रूयते हि फलनं सायना न तु कष्टेन निजो

पयोगिताम् । (नैषध०)

भक्त्या हि कृत्यन्ति महानुभवाः ।

भद्रं प्राप्नुयाद्भद्रमभद्रं चाप्यभद्रकृत् ।

(कथा०)

भये सीमां सुस्तु ।

भर्तृमार्गं नुसरणं क्षीणा च परमं व्रतम् ।

भग्निरलेषवहुणा सर्वस्यापीह मिद्वयः ।

(कथा०)

नरन्युदयकाले हि सन्कल्पाणरम्भराः ।

(कथा०)

भग्निरव्यता बलवती । (अभिज्ञान०)

भग्निरव्य भग्नयेव कर्मणातीवृती गतिः ।

भग्नस्य यस्य यत्कर्म स तत्कर्मैव विनश्यति ।

(कथा०)

नर्माभूतस्य भूतस्य पुनरागमव कुत ?

(नैषध०)

भागेनैव हि लभ्यते पुनरर्थो सर्वोत्तम

सेवकः ।

भाषामन नास्ति शरीरनोपणम् ।

भिक्षुको भिक्षुकं दृष्ट्वा श्वानवद् गुर्गुरायते ।

भिन्नरचिर्हि लोहः ।

जो अल्प मार्ग को बहुत शब्दों में करता है
वही विप्रलापी है ।

कल्याण की सिद्धि में मद्रा अनेक विघ्न पड़ते हैं ।

पृथ्वा आश्रयों से पूर्ण है ।

रोना ही बच्चों का बल है ।

बच्चों की बुद्धि भी कुमागतामिनी हो जाती है ।

बुद्धि कमों के अनुसार होती है ।

भव स्थानों पर बुद्धि ही मुख्य मित्र है, पुरुष
बाध नहीं ।

हठ का न होना ही बुद्धि का फल है ।

मूला मनुष्य कौन सा पाप नहीं करता ?

मूले को कुठ नहीं मथता ।

मूले लोग न्याकरण नहीं खाया करते ।

श्रेष्ठ लोग अपनी उपयोगिता वाणी से नहीं,

फल रो कहते हैं ।

महानुभाव लोग भक्ति (अर्द्धा) से ही प्रसन्न
होते हैं ।

भले का भला और बुरे का बुरा होता है ।

सबसे बड़ा भय मृत्यु है ।

पति निर्दिष्ट मर्त्य पर चलना स्त्रियों का परम
व्रत है ।

समार में सत्के कार्य अनेक कष्ट उठाने पर ही
सिद्ध होते हैं ।

जब अच्छे दिन आते हैं तब सभी काम शुभ
होने जाते हैं ।

होने शर बलवती है ।

बर्षों की गति ऐसी है कि होनी होकर ही
रहती है ।

१ जिसका काम उसी को साने, और बरे तो
कफली बाधे ।

२ जो काम जिसका न हो, उसे करने पर
मनुष्य नष्ट हो जाता है ।

भरमाभूत प्राणी लौटकर कैसे आ सकता है ?

सर्वोत्तम सेवक भग्न्य में ही प्राप्त होता है ।

पत्नी के समान शारीरिक सुख देनेवाला
बोई नहीं ।

भिखारी, भिखारी को देखकर कुत्ते के समान
घुराता है ।

लोगों की रधि मित्र मित्र है ।

भीता इव हि धीराणां दूरे यान्ति विपत्तयः ।

(कथा०)

भूयोऽपि सिद्धं पश्यन्मा घृतेन
न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ।

भोगो भूषयते धनम् ।

अष्टस्य का वा गतिः ?

मतिरेव बलाद् गरीयसी ।

मदमूढबुद्धिषु विवेकिता कुतः ? (शिशु०)

मद्यपस्य कुतः सत्यम् ? (कथा०)

मधुरविधुरमिश्रां सृष्ट्यो हा विधातुः ।

(प्रमत्तराघवे)

मन एत समानचरेत् ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।

मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महामनाम् ।

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति ह्यनं न च
सुखम् ।

मनोरथानामगतिर्न विद्यते । (कुमार०)

मरणं प्रवृत्तिः शरीरिणाम् ।

मर्दनं गुणवर्धनम् ।

मर्मवाक्यमपि नोच्चरणीयम् ।

महाननो धेनु गतः स पन्थाः ।

महात्मा महत्येन करोति विग्रमम् ।

महापतानां विलयो हि भूषणम् ।

मातलुंक्षिन्, सव प्रमादवदानो द्रोणा अपि
स्युर्गुणाः ।

माता दुश्चारिणी रिपुः ।

मातापितृभ्यां दातुं सन् न जानु मुत्सवं
श्रुते । (कथा०)

मातृजहा हि व मन्थ स्तम्भीभवति चन्धनैः ।

माया मम नास्ति शरीरपोषणम् ।

मानं भुज्जाने कुतः सुखम् ?

मितं च सारं च वचो हि दाग्मिता ।

मूढं परमपश्यनेयबुद्धिः ।

मूर्खस्य हि शास्त्रकथाप्रमगः ?

मूर्खस्य हृदयं मृन्पत्रम् ।

मूर्खणा बोधको रिपुः ।

मूर्खे हि मगः कस्यवास्ति शर्मणे ? (कथा०)

शून्यः सर्वत्र सुख्यता ।
मेघो गिरिजलविमर्षी च ।

मोहान् यमविवेकं हि श्रीशिराय न सेवते ।
(कथा०)

मौनं त्रिवेयं सततं सुधीभिः ।
मौनं यत्र धर्मायम् ।
मौनिनः कदाहो नास्ति ।
यतो मय ततो धर्मः ।
यतो धर्मस्ततो धनम् ।
यतो रूपं ततः शीलम् ।
यत्ने कृते यदि न भिष्यति कोऽत्र दोषः ?

यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राहंभीरपि ।

यत्राकृतिस्तत्र गुणा धमन्ति ।
यत्रास्ति हर्षमोविनयो न तत्र ।
यथा चित्तं तथा नाचो यथा वाचस्तथा
क्रिया ।
यथा वेशस्तथा भाषा ।
यथा वीचं तथा हृदयः ।
यथा भूमिस्तथा तोयम् ।
यथा राजा तथा प्रजा ।
यथा वृक्षस्तथा फलम् ।
यथाशक्त्यतिथेः पूरा धर्मो हि गृहमेधि-
नाम् । (कथा०)

यथौषधं स्वादु डितं च दुर्लभम् ।
यदि वाग्यन्तरादुता न कस्य परिभूतये ?
(कथा०)

यदेव रोषते धर्मैः भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।

यद्वायुः निजमहर्षद्वलितं तन्माजिर्जु-
क-क्षमः ?

यद्यपि शुद्धं लोकाविरुद्धं नो करणीयं नाच-
णीयम् ।

यद्वा तद्वा भविष्यति ।
यथा पुष्पैरवाप्यते ।
यथास्तु रक्ष्यं परतो यथाधनैः । (२५०)

यः क्रियावान् स पण्डितः ।
याचनान्न हि गौरवम् ।
याचना मोघा वरमणिगुणे नाधमे लब्ध-
कामा । (मेघ०)

मौन के सामने सब समान हैं ।
मेघ पर्वत और सागर दोनों स्थानों पर
बरसता है ।

मोहग्रस्त और विवेकहीन के पास लक्ष्मी अवश्य
नहीं ठहरती ।

बुद्धिमानों को निरन्तर चुप रहना चाहिए ।

मौन से सब काम मिट्ठ होते हैं ।

मौना का किमी में कलम नहीं होत ।

जहां मत्स्य है वहाँ धर्म है ।

जहाँ धर्म है वहाँ धन है ।

जहाँ रूप है वहाँ शील है ।

यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न हो तो हमने
यत्नकर्ता का क्या दोष ?

जहाँ विद्वान् नहीं होता वहाँ अल्पबुद्धि की
श्लाघा होता है ।

जहाँ रूप तहाँ गुण भी है ।

जहाँ लक्ष्मी होती है वहाँ नश्वरता नहीं ।

जैसा मन वैसी वाणी, जैसी वाणी वैसी क्रिया ।

जैसा देश वैसी भाषा ।

जैसा वीच वैसा अङ्गुर ।

जैसी भूमि वैसा जल ।

जैसा राजा वैसी प्रजा ।

जैसा वृक्ष वैसा फल ।

अनिधि की यथाशक्ति सेवा करना गृहस्थों का
धर्म है ।

जैसे स्वादिष्ट और गुणकारी दवा दुर्लभ है ।

अत्यधिक कोमलता में मिमिका निरादर नहीं
होता ?

जो निमेष अक्षर लगता है, वही उसके लिये
सुन्दर होता है ।

विधाता ने भाग्य में जो दत्त दिया है, उसे
कौन मिटा सकता है ?

लोचविग्रह शुद्ध वाग भी न करनी चाहिये ।

कुठ न कुठ तो होगा ही ।

यद्यपि पुण्यों में ही मिलता है ।

यद्यपि यों की शत्रु से यश की रक्षा करनी
चाहिए ।

जिसके कर्म अच्छे, वही पण्डित है ।

याचना गौरव को समाप्त कर देती है ।

नीच से याचना के सफल होने की अपेक्षा गुणी
से उसका निफल होना अच्छा ।

यादृशो य कृतो धाम्ना भवेत्तादृश एव स ।
(कथा०)

यादृशास्तन्त्रं काम तादृशो नश्यते पण ।
(कथा०)

यानरत्न हि सुरा ।

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यङ्गोऽपि सहाय
ताम् । (अनर्पराधे)

या यस्य प्रकृति स्वभावप्रणिता कदापि न
नश्यत्यते ।

युक्तियुक्त प्रवृत्तयोऽद्वात्माऽपि विवक्षय ।

युद्धस्य वार्ता रम्या स्यात् ।

ये तु ध्वन्ति निरर्थक परहित से के न
जानतीमहे ।

येन केन प्रकारेण प्रसिद्ध पुरगे भवेत् ।

यो यद् वपति धीन हि लभते सोऽपि
तत्फलम् । (कथा०)

रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ।

रत्नदीपस्य हि शिक्षा वात्ययापि न नश्यति ।

रत्नन्ययेन पापान को हि रक्षितुमर्हति ।

(कथा०)

रनेऽपि दोषा प्रभवन्ति रागिणाम् ।

वर हि भागिनो दान्यु, न दीन्य स्वचना
प्रत । (कथा०)

वर क्लृप्त्य पुंसा न च परकलत्राभिगमनम् ।

वर भिक्षाशिव न च परधनस्त्रादनुमुखम् ।

वर मौन कार्यं न च वचनमुक्त यदनुत्तम् ।

वर्तमानेन कालेन वनयन्ति विषयणा ।

वस्त्रपूत पिबेन्नलम् ।

वस्त्राणामातरो वरा ।

वामे विधौ न हि फलन्यभिवाञ्छितानि ।

वाम प्रधान रत्न योग्यताया ।

वासोविद्वान विनहाति लम्बा ।

विकारहेतो सति निश्चिन्त्यते

येषां न चेतामि त एव घोरा । (कुमार०)

विनीते करिणि निम्नहो विवाद ।

विचित्ररूपा रत्न चित्तवृत्तय । (किरात०)

विचित्र ने जिने नैसा बना दिया वन वैसा ही
होना ।

जिने तग होने हे वैसा करण बनना है ।

वर्णों ने घोड़ा रतन है ।

न्यायलुमार चरनेवाले की सहायता पण पक्षा
भी करते हैं ।

जो निम्नका महज स्वभाव है वह छोटा नहीं
जा सकता ।

जुद्धिनर को वच्चे की भी युक्तियुक्त धान मान
लेनी चाहिए ।

जुद्ध के मनाबार रोचक होते हैं ।

जो दूसरों के गार्थों को व्यर्थ हो नष्ट करने हैं वे
दिन कोपि के होते हैं हम नहीं जानते ।

मनुष्य का किता भी बराब से प्रसिद्ध प्राप्त
करनी चाहिए ।

नैसा होना वैसा कायेगा ।

नूर पुण्य मनुष्य की रक्षा करते हैं ।

रत्नों के दीये को ली माँझी में भी नहीं डुपगी ।

रत्न राना समर्थ है जो पत्थर के रक्षार्थ रत्न
व्यय करें ।

रत्न में भी दोष रागयुक्तों की दवा लेने हैं ।

रतिष्ठित-पक्षि की धुरी मन्त्रे विजु सम्पन्न
के सामने दोनना डुदी ।

पुरुषों का नपुंसक होना अजग, परमा
रम्यन पुरा ।

भीव मर्ग वर खाना अच्छा परदे धन व
भोग का सुख पुरा ।

झूठ बोधन की अपेक्षा नूर रहना अच्छा

जुद्धिनार वचनन काल के मनुष्य व्यवाह
करते हैं ।

वस्त्र में लानकर ही जल पीना चाहिए

धूप वस्त्र का मुद्रा है ।

वाम्य विपरीत हो तो अर्थात् मित्र नहीं होने ।

वाम्यना ने नी परिधान प्रधान होना है ।

वस्त्रविहीन की लक्ष्मी छोड़ जानी है ।

विकारन वस्तुओं की विषयनरा में जो दिन

जिन दिवस नहीं होने वे ही धीर हैं ।

हाथा के बच देने पर अजुग के बारे में
विवाद कैसा ?

विचित्र की कृतिवा के रूप विचित्र होने हैं ।

वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
वृद्धा नारी पतिव्रता ।
वेदान्तानन्ति पण्डिता ।
वैश्यान्नेनेव नृपनीतिरनेकरूपा ।

व्याघ्रस्य चापशरस्य पारणं पशुमारणम् ।
व्याधितस्योषध सिग्म् ।
व्रताभिरक्षा हि मत्तामलक्रिया । (किरा०)
शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या
शत्रोरपि ।
शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । (कुमार०)
शाम्येत् प्रत्युपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।
(कुमार०)

शास्त्राद् लब्धिर्यत्नीयवी ।
शीलं पर भूषणम् ।
शीलं भूषयते कुलम् ।
शीलं हि विदुषां धनम् । (कथा०)
शुभकृत्त हि मोदति । (कथा०)
शुभस्य शीघ्रम् ।
शुक्लेन्धने वह्निरपैति वृद्धिम् ।
शूर वृत्तश्च दृढलौहदं च
लक्ष्मी स्वयं याति निजामहेतो ।
शूरस्य मरणं तृणम् ।
शोभन्ते विप्रया विप्रा ।
श्यालको गृहनाशाय ।
श्रद्धया न विना दानम् ।
श्रेयसि केन कुर्याते ? (शिशु०)
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रम् ।
मत्सर्जना दोषगुणा भवन्ति ।
मन्त्रं शीलं कुलाङ्गणम् ।
मन्त्रं गुणभूषणं च विनयः ।
मन्त्रं गुणधामा वितरणम् ।
मन्त्रं सुखमीमा सुवदना ।
मं तात्रियस्त्राणमहं सता यः ।
मकटे हि परीक्ष्यन्ते प्राज्ञा शूराश्च मगरे ।
(कथा०)
सत्ता महासमुद्रादि पौरुषम् । (नेत्र०)
मता हि सद्मं सखलं प्रसूने ।
मता हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्त-
करणप्रवृत्तयः । (अमिश्रान०)
म ॥ निरधारिकं सज्जनानां शिवम् ।
मत्ताधीना हि सिद्धयः । (कथा०)

जो धर्म की बात नहीं कहते, वे वृद्ध नहीं ।
वृद्धा स्त्री पतिव्रता होती है ।
बुद्धिमान लोग वेद से ज्ञान पाते हैं ।
वैश्या के समान राजनीति भी अनेक रा-
धारण करती है ।
भेड़िण के उपवास की पारणा पशु वध होती है ।
औषध रोग का मित्र है ।
व्रत का पालन सज्जनों का भूषण है ।
शत्रु के भी गुणों का और शत्रु के भा दोषों का
कथन करना चाहिए ।
धर्म का प्रथम साधन शरीर ही है ।
दुष्ट जन उपकार से नहीं, अपकार से ही शान्त
होता है ।
शास्त्रों से रीति बलवती है ।
शील सर्वोत्तम भूषण है ।
शील कुल को अलङ्कृत करता है ।
शील ही विद्वानों का धन है ।
शुभ कार्य करने वाला दुःखी नहीं होता ।
भला काम शीघ्र ही कर देना चाहिए ।
सूखे ईश्वर में आश्रय ग्रहण फल जानी है ।
वीर, वृत्तश्च और दृढ मित्र के पास रहने के
लिध लक्ष्मी स्वयं जानी है ।
वीर के लिए शत्रु वृत्तव्य है ।
माझण विद्या से सुशोभित होते हैं ।
साला पर का नाश कर देता है ।
श्रद्धा रहित दान दान नहीं ।
मगल से यौन वृत्त होता है ।
शास्त्र कान का भूषण है ।
दोष और गुण संगति में होते हैं ।
शत्रु म मन्त्र की बशीमूत करना चाहिए ।
मन्त्रना सब गुणा का भूषण है ।
दान सब गुणों की सीमा है ।
सुखमी सर्व सुखों की सीमा है ।
सज्जनों की रक्षा में समय व्यक्ति क्षत्रिय है ।
बुद्धिमानों की परीक्षा सन्देह और शत्रुओं की
परीक्षा सशय में होती है ।
मन्त्रों का पौरुष बड़ों पर ही प्रवृत्त होता है ।
मन्त्रगति में सब कुछ प्राप्त होता है ।
सद्विषय विषयों में सत्पुरुषों का अन्तःकरण ही
प्रमाण होता है ।
मन्त्रों के विवेक की सीमा नहीं होती ।
मन्त्रगति उत्साह के अधीन है ।

सत्यं पुन कुलमग्रि कोऽपि दीपः ।
 सत्यपूतां वदेद् वाणीम् ।
 सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
 सत्यं न तद् यच्छलमभ्युपेति ।
 सत्यमेव जयते ।
 सत्येन धार्यते पृथ्वी ।
 सदसदा न हि विदुः कुर्वाणचननोहिता ।
 (७२०)

सदो भूषा सूक्तिः ।
 मन्त्रिः कुर्वति संगतिम् ।
 सन्निविष्टादं मैत्री च ।
 सन्निधुः लीलया प्रोक्तं तिलाहिसिन्धु-
 मक्षरम् ।
 स धार्मिणे यः परममं न स्तुजेत् ।
 सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते ।

संततिः शुद्धवंश्या हि परग्रेहं च धर्मेणे ।
 (७२०)

सतोप एव पुरस्म्य परं निधानम् ।
 संतोपतुल्यं धनमस्ति मान्यम् ।
 संधि कृत्वा तु हन्तव्यः संप्राप्तेऽश्वमे परु ।
 (७२०)

सभास्नं विद्वान् ।
 समये हि सर्वमुपकारि कृतम् । (गि.शु.०)

समानशीलस्यसनेषु सत्यम् ।
 सम्पूर्णकुम्भो न करोति शब्दम् ।
 मग्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ।
 (भावद्गीता)

सतिरतिरिं हि समुपैति विद्वानाम् । (गि.शु.०)
 सतिरूपमूर्ध्नांऽपि सारो न मधुरायते ।

सर्वः कालश्रेण नश्यति ।
 सर्वः कुरुक्षेत्रोऽपि चान्द्रति जन सत्त्वानु-
 रूप फलम् ।
 सर्वः कान्तमाप्नोति पश्यति । (अग्निमान्.०)
 सर्वः प्रियः सखि भवत्यनुरूपचेष्टः । (गि.शु.०)
 सर्वं कार्यं चराचरोऽभिरमते तत्त्वस्य
 को बल्लभः ?
 सर्वं जीवन्निराप्यते (कथा०)
 सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं निर्दोशमेकं यदा ।

अच्छ पुत्र ही बग न विच्छुण दीक है ।
 सत्य मे शोधिन वनी बोझो चाहिए ।
 सत्य कण्ठ का भूषा है ।
 वह सत्य नहीं तो छत्र का आश्रय लेता है ।
 सत्य की ही विजय होती है ।
 पृथ्वी को सत्य ही धारण त्रिवे हुए है ।
 बुरी नरियों के बचने ने मोहित लोग अच्छाई
 का बुराद नडा मनयने ।
 सुभा बन ममा का भूषा है ।
 सज्जनों का सा करना चाहिए ।
 शगडा और मैत्री सज्जनों से ही करनी चाहिए ।
 सज्जनों की खाना-पान बन भी पत्थर की
 लकीर होती है ।
 धार्मिक बही है तो दमरे का जी नहीं दुखाना ।
 सज्जन परीक्षा के अनन्तर ही कोई बात स्वीकार
 करते हैं ।
 शुद्ध वंश की मन्वान लोक परलोक में मुख
 दायक होती है ।
 सतोप ही मनुष्य का सर्वोत्तम कोप है ।
 सतोप के समान धन नहीं ।
 सन्धि करके भी अवसर प्राप्त होने पर शत्रु को
 मार देना चाहिए ।
 विद्वान् सभा का रत्न है ।
 समय पर किया हुआ सब कुछ उपकारक
 होता है ।
 समान शील तथा व्यसन वालों में मैत्री होती है ।
 भरा हुआ घटा टूट नहीं करता ।
 सम्मानित मनुष्य के बिना अपयश शत्रु से भी
 बुरा होता है ।
 समुद्र कभी खाली नहीं होता ।
 नदियों के जलमयूह से मर जाने पर भी समुद्र
 गीटा नहीं होता ।
 समय पाकर सब मर जाते हैं ।
 विपत्ति पड़ने पर भी सब लोग अपनी योग्यता-
 नुसार फल चरते हैं ।
 सबको अपनी दस्तु सुन्दर दिखाई देती है ।
 अनुकूल चेष्टाओंवाले सब व्यक्ति प्यारे लगते हैं ।
 लोग सभी को कार्य-वश प्यारे लगते हैं, वैसे
 कौन किसका प्रिय है ?
 बीबी मनुष्य सब कुछ पा लेते हैं ।
 सब रत्नों में कोई न कोई दोष होता है, निर्दोश
 को देखकर दण्ड है ।

सर्वं शून्यं द्रविदस्य ।
 सर्वं माययि नावयि कृत्स्नया प्रेम्ण
 परं केवलम् ।
 सर्वनाशाय मानुषः ।
 सर्वलोकाप्रतिष्ठायां यतन्ते बहवो जनाः ।

सर्गमे दुर्जनो विषम् ।
 सर्वारम्भास्तद्बुद्धिप्रस्थमूलाः ।
 मयांस्ववस्थासु रमणीयत्वमाकृतिप्रियोपा-
 णाम् । (अभिज्ञान)
 सर्वं गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ते ।
 मलज्जा गणिका नष्टा ।
 स मुहुर्बुध्यमाने यः स्यात् ।
 रहने विपस्वहस्यं ज्ञानी नैवापमानलेशमपि ।

सहसा विदधीत न प्रियाम्
 अविवेक परमापदा पश्यम् ।
 सहस्रेषु च पण्डितः ।
 सागर वर्जयित्वा कुत्र महानद्यवतरति ?
 (अभिज्ञान)

साधने हि नियमोऽन्यजनानां
 योगिना तु तपमाखिलमिच्छि । (नैषध)
 गाधु सौख्यं दुर्जनं प्रभवति प्रार्ता क्ली
 दुर्गुणे ।
 गाधूना दुर्जनाद् भयम् ।
 गानुदूले जगसाये विमिश्र- स्त्रियो भवेत् ।

गामानाधिरूपं हि तेजस्तिमिरयोः कुल ?
 (शिशुपालवध)

मार गृह्णति पण्डिता ।
 मिद्धिभूयसे विद्याम् ।
 सुखिता यद्यस्ति शन्येन रिम् ?

सुकृती चानुभूयैव हृत् समर्थस्तुते सुखम् ।
 (कथा)

सुखमास्ते नि स्पृह पुरय ।
 सुखार्थिन कुतो विद्या ?
 सुतप्तमपि पानीय शमयत्येव पावकम् ।

सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम् ।
 (शिरात)

सुलभो हि द्विधा भद्रो, दुर्लभा सम्पत्ता
 व्यप्ता । (शिरात)

दरिद्र के लिए सब कुछ सूना है ।
 सबकी सीमा है परन्तु कुलीन नारियों के प्रेम
 की सीमा नहीं ।
 मामा सर्वनाश कर देता है ।
 बहुत से व्यक्ति लोगों में प्रतिष्ठा पाने के लिए
 उद्योग करते हैं ।
 दुष्टजन के सभी अर्थों में विष रहता है ।
 सभी उद्योग दुमेरी भर धान के लिए हैं ।
 सुन्दर व्यक्ति सभी दशार्मा में सुन्दर लगते हैं ।

सभी गुण धन पर आश्रित रहते हैं ।
 लज्जाशील बेट्या नष्ट हो जाती है ।
 जो विपत्ति में सहायक है, वही मित्र है ।
 मानी मानव सहस्रों वृष्ट सड़ जाता है, परन्तु
 तनिक सा भी अपमान नहीं ।
 कोई भी कार्य एकाएक न करता चाहिए,
 अविवेक भारी आपत्तियों का कारण है ।
 सहस्रों में कोई एक विद्वान् होता है ।
 वही नदी सागर के सिवा कहाँ आश्रय लेती है ?

साधारण जन साधनों से कार्य सिद्ध करते हैं,
 योगियों को तप से सब मिद्धियाँ मिलनी हैं ।
 इस बन्धुग नाम के गुरे सुग में मग्न हो ख
 पाते हैं और दुर्जन अधिकार जमाने हैं ।
 सज्जनों को दुर्जनों से भय होता है ।
 भगवान् अनुकूल हो तो विरोधी भी निज
 बन जाते हैं ।
 प्रजापति और अधकार एकत्र होने रह सकते हैं ।

दुद्धिमान नारमाही होते हैं ।
 सिद्धि विद्या को अलङ्कृत करनी है ।
 यदि सुन्दर वाक्य रचना आनी हो तो राज्य में
 क्या लाभ है ?
 सुकृमी मनुष्य दुःख सहन भी कुल भोगता है ।

कामनारहित मनुष्य सुखी रहता है ।
 सुखी की विद्या कहाँ ?
 पानी मछे हो खुब गर्म हो फिर भी अग्नि को
 शान्त कर हो देता है ।
 ससार में सुन्दरता सुख है, गुण धारण दुर्लभ ।
 शत्रु का मांस करना मरत्य है, सज्जनों में
 प्रदत्ता दुर्लभ ।

सूयांपाये न खलु कमलं पुप्यति स्वामभि-
रयाम् । (तिसु०)

सूर्ये तप-यावरणाय दृष्टेः दल्पेन लोकेष्य
कथं तमिमा ? (रघुवक्षी)

सैवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्ययम्यः ।

स्तोत्रं कस्य न तुष्टये ? (कुमार०)

स्त्रियश्चरित्रं पुरस्स्य भाव्यं देवो न ज्ञानानि
कृतो मनुष्यः ?

स्त्रियो नष्टा दामर्ष्यहा ।

स्त्रीणां पतिः प्राणा न बाध्याः । (कथा०)

स्त्रीणां प्रियालोककलो हि वेषः । (कुमार०)

स्त्री पुंवच्च प्रभवति यदा तद्धि गेहं विनष्टम् ।

स्त्रीपुद्धिः प्रख्यायता ।

स्त्रीभिः कस्य न दण्डित भुवि मनः ?

स्त्री विनश्यति रूपेण ।

स्त्रीषु चारुण्यम- कुल- ? (कथा०)

स्नापितोऽपि बहुशो नहीलटगर्दमः किमु
हयो भवेत् क्षणित् ?

भुयात्वं पापानां कलमघनगेहेषु सुहृताम् ।

भृशान्नि न नृशयानां हृदयं बन्धुद्वयः ।

(नेष०)

भृशान्त्यास्मारुण्य क्रिमिव न हि रम्यं
सुगहसः ?

स्वकर्ममूत्रप्रयितो हि लोकः ।

मृगृहे पूज्यते मूर्खः ।

स्वभ्रामे पूज्यते प्रभुः ।

स्वेदेनानाम्य सरस्य नूनं
गुणादिस्त्यापि भवेद्वजा ।

स्वदेरो पूज्यते राजा ।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।

स्वपत्न्यजा हि निश्चेष्टाः, कुतो निद्रा
विवेकिताम् ?

स्वपदाख्यप्रमानस्य कल्याणां को हि
मन्यते ? (कथा०)

स्वभाव एव परोपकारिणाम् ।

स्वभावतः सर्वमिदं हि सिद्धम् ।

सूर्य के जल हो जाने पर कमल अपनी शाभा
को धरण नहीं करता ।

जब सूर्य तपकर रहा हो तब स्त्रियों की
दृष्टि कैसे बदल सकती है ?

सैवारूपी धर्म अत्यन्त गहन है, योगी भी
वहाँ तक नहीं पहुँच सकते ।

प्रशंसा से कौन प्रसन्न नहीं होता ?

स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाव्य को भाग्य न
भी नहीं जानना, मनुष्य भ । क्या जानेगा ?

पति हीन स्त्रियाँ नष्ट हो जाती हैं ।

स्त्रियों का जीवन पति है, बन्धु नहीं ।

स्त्रियों को नन्दनवर्द्धक परिधान पहननी है ।

जब स्त्री पुरुषवत् प्रभावशाली हो जाती है तब
पर नष्ट हो जाता है ।

स्त्री की पुद्धि प्रत्यकारिणी होती है ।

भूमि पर स्त्रियों ने जिस के हृदय को दण्डित
नहीं किया ?

स्त्री रूप ने नष्ट होती है ।

स्त्रियों में बाणों का मथन कदा ?

नदी के जल में बहुत बार नहाने पर भी
क्या नहीं लप्ता भी छोड़ा बनता है ?

निर्धन घरों की पुत्रवधू बनना सुन्दरियों के
पापों का फल है ।

भग्नस्त्रियों की सीस कुर जनों के हृदय को
प्रयाविन नहीं करती ।

यौवन में प्रविष्ट होती हुई युगनयनी की कौन-नी
बात सुनर नहीं होती ?

समार अपने कर्मों के मूल से गुँथा हुआ है ।

मूर्ख अपने घर में ही पूजा जाता है ।

ममयति अपने गाँव में ही पूजा जाता है ।

अने देश के गुणी न्यायिक की भी अपेक्षा नहीं
जाती है ।

राजा को पूजा अपने ही देश में होती है ।

अपने धर्म में भरजा गन्ना है, पर धर्म भयानक
होता है ।

अज्ञानी गहरी नींद में सोने है, विवेकियों को
बौद्ध कहाँ ?

अपनी पदवी से श्रेष्ठ हुए को वाश कौन
मानता है ?

परोपकारियों का वह स्वभाव ही है ।

यह सब स्वभाव से ही सिद्ध है ।

स्वभावरूपस्थाना पतनमपि भाग्य हि
भवति ।

स्वयमेव हि चातोऽग्ने मारय्य प्रतिपद्यते ।
(२५०)

स्वमुख नास्ति साध्वीना तासा अर्तुसुख
सुखम् । (कथ०)

स्वस्थ को यात्र पण्डित ?

स्वस्थे चित्ते बुद्धय मभवन्ति ।

स्वादुभिस्तु विषयहृतस्ततो
हु सन्निद्रियगणो निरायंते । (२५०)

स्वाधीना दयिता सुनायधि ।

हसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिथा वर्णयत्यप ।
(अभिज्ञा०)

ह हो पद्मसर कुत कतिपयेहंस्तेविना
श्रीस्तव ?

हृत क्षान् मियाहीनम् ।

हृत निर्णायक सैन्यम् ।

हृतश्चाज्ञानतो नर ।

हरति मनो मधुरा हि यौवनधरा ।

(किरात०)

हस्तस्य भूषण दानम् ।

हित परोऽपि स्वीकार्यं हेथ स्वोऽप्यहित
पुन । (कथा०)

हितमयो नन मित्रम् ।

हितमुक्, मित्रमुक्, दाकमुक् ।

हित मनोहारि च दुर्लभ वच । (किरात०)

हितोपदेशो मूलस्य कोपायैव न दान्तये ।

(कथा०)

हेम्न सलङ्घयते ह्यर्नो विशुद्धि द्यामिकापि
या । (२५००)

अर्यों हि लोके पुरुषस्य वन्तु ।

स्वभावतः पवित्र व्यक्तियों का पतन भी
भाग्याय ही होता है ।

पवन स्वयमेव अग्नि का सारथि बन जाता है ।

सन्धियों का अपना कोर मुख नहीं होता वे
पनि व मुख की ही अपना मुल ममसनी है ।
कौन स्वयं मनुष्य बुद्धिमान नहीं ?

स्वस्थ चित्त में ही सुविचार उत्पन्न होने है ।

स्वादित विषयों से आक्रान्त शत्रुओं को उनमें
हृन्ना रटिन है ।

सन्तान में पूव ही स्त्री स्वाधीन होगी है ।

हम वध से लेता है बीर उममें मिने नल को
छो देना है ।

अरे कमलर ! कुत हमों के जिना तुम्हरी
शोभा कहा ?

क्रिया-रहित क्षान व्यर्थ है ।

सेनातो के बिना सेना निरन्मी है ।

मनुष्य मग्नान से मारा जाता है ।

यौवन की मधुर शोभा मन को हर लेती है ।

दान हाथ का गहना है ।

हितकारक बेगाना भी स्वीकार्य है और अहित
कारक अपना भी त्याज्य ।

मित्र भला के लिख ही होता है ।

दिनकर वस्तु खानेवाला, शोभा खानेवाला,
मार-मन्त्री खानेवाला (स्वस्थ रहता है) ।

हितकर तथा मनोहर वचन दुर्लभ है ।

हितकारक उपदेश मूर्खों को बुद्धि करता है,
ज्ञान नहीं ।

सुवर्ण की सार-सोदार अग्नि में ही परली
जाती है ।

समार में धन ही मनुष्य का वधु है ।

द्वितीय परिशिष्ट

हिन्दी सूक्तियों के संस्कृत पर्याय

हिन्दी

अगूर सट्टे है ।

भडा सिराये बच्चे को तू चीन्हीं मत कर ।

अंडे सेये कोई बच्चे लये कोई ।

अंडे होगे तो बच्चे बहुतेरे हो जायेंगे ।

भान करण के अनुसार आचरण करे ।

अंतर्दा म रूप बुद्धी म छप्प ।

अत बुरे का बुरा ।

अत भले का भला ।

अत मत्ता सो गता ।

अदर से काले बाहर से गोरे ।

अधा क्या चाहे ? दो आँखें ।

अधा क्या जाने बसंत की बहार ?

अधा गुरु बहुरा चेला, दोनों नरक म
टलमटेल ।

अधा बाँटे रेवड़ियाँ फिर फिर अपनी ही को ।

अधी पीसे कुत्ता खाव ।

अधे क आगे रोये अपने दीदे खोये ।

अधे के हाथ घटेर लगना ।

अधे को अधा कहने से बुरा मानता है ।

अधे को अधेरे में बड़े दूर की सूझी ।

अधे को सब अधे ही दीखते हैं ।

अधेर नगरी चौपट राजा,

टक् सेर भात्री टके सेर राजा ।

अधों ने गाँव लूटा दीड़ियो रे लँगड़े ।

संस्कृत

१ अन्ध-हीनमुच्यते ।

२ दुष्प्राप्ता द्रष्टा अम्या ।

३ बाल-निपयति बृहान् ।

४ बृहानां मन्त्रो बाल ।

पश्येह मधुव्रीणां सञ्चितमयं हरन्त्यये ।

स्थिरे मूले भूया वृद्धि ।

मन पून समाचरेत् (मनु०)

१ रूपमन्त्रे छविवसने ।

२ निराहारे वृत्तो रूप निर्वसने च कुतश्छवि ।

१ दुरितस्य दुःखम् । २ दुष्टस्य कष्टम् ।

१ भद्रस्य भद्रम् । २ शुभस्य शुभम् ।

अन्ते मति सा गति ।

१ विप्रकुम्भा पयोमुखा ।

२ अन्त गात्रा वहि शैवा ।

इष्टलाम परसुराम् ।

१ गुणावभतस्य न वेत्ति बायस ।

२ लौचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणं किं करिष्यति ?

३ न भेक कोकनन्तीकिञ्चलास्वाकोविद ।

(कथासरित्सागर)

अधस्तात्पानुत्पन्नस्य शिनिपात पदे पदे ।

विवेकहितं सद्यः पश्यामी ।

पश्येह मधुव्रीणां सञ्चितमर्थं हरन्त्यये । (पंचनत्र)

१ अरण्ये रोन्त्या व्यर्थं मसमिनि हुतमेव च ।

२ अरण्यकण्ठमिव निष्प्रयोजनम् ।

अधस्य वतवीलाम् ।

न मयामयमप्रियम् ।

बालिशस्य मतिस्फूर्ति ।

१ पिच्छन दूने रसने सिताग्रि निपायते ।

२ पश्यति पिच्छोपहतं सञ्चिनुभ्रं शङ्कमपि पीतम् ।

नृपे मूढे नय कुन ?

१ अयं बध्वासुनो याति सप्तपञ्चनशेखर ।

२ अधेनुष्ठिनी ग्रामं पगो रे धाव सत्वरम् ।

अधो म फाना राजा ।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता ।
अकल बटी कि भैंस ?

अकलमद को इधारा, अहमरु को फटकारा ।
अकलमद से इधारा ही काफी है ।

अच्छी बात अच्छे की भी मान लेनी चाहिए ।
अच्छी वस्तु स्वयमेव प्रसिद्ध हो जाती है ।
अच्छी सतान सुख की खान ।

अक्का बनिया देय उधार ।
अटकेगा सो अटकेगा ।
अढ़ाई पाव कानी चौबारे रमोई ।
अति का भला न बोलना, अति की भली न
धुप्य । अति का भला न बरसना, अति
की भली न धुप्य ।
अदले का बदला ।

अधकल गगरी छलकत जाय ।
अधिकार बड़ा है न कि बल ।
अधेला न ठे, अधेली दे ।

अनहोनी होती नहीं होनी होनहार ।

अपना अपना गर गौर ।
अपना टेंगर न देखे
दूसरों की फुल्टी निहारें ।

अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है ।

अपना पैसा प्योटा तो परसया का क्या
दोष ?

अपना नहीं जो आए काम ।

अपना हाथ जगन्नाथ ।
अपनी अपनी टपट्टी अपना अपना राग ।

१ अनरस्तपादपे देश एरण्डोऽपि द्रुमायते ।
२ यत्र विदुज्जनो नास्ति इलाप्यस्तनास्यधीरपि ।
उत्पत्तिनोऽपि चण्डा शक्त किं भ्रातृ भडकुम् ?
१ शुद्धियस्य बन्ध तस्य निर्वुद्धेरनु कुतो बलम् ।
(पचनत्र)

२ यतिरेव बलाद् गरीयसी ।
३ प्रज्ञा नाम बल श्रेष्ठ निष्प्रज्ञस्य बलेन किम् ?
विशाय सहा, मूढ य दण्ड ।

१ अनुक्तमप्युहति पण्डितो जन ।
२ परेद्वितानाज्जगति हि बुद्धय ।
शुक्तिशुक्त प्रगृहीयाद् बलादपि विनक्षय ।

न हि कस्तुरिकामोद अपथेन विभाव्यते ।
१ मतनि शुद्धवश्याहि परत्रेह च शनगे ॥ (रघु०)
२ सुखमूलं सुमन्तति ।

परवदी विन क्रियते ?
सशय-मर विनश्यति ।
निस्सारस्य पदाथस्य प्रायेणाटम्बरो महाम् ।
अनि सवन बज्रयेत् ।

१ कृते प्रतिकृतिं कुर्यात् ।
२ भद्रो भद्रे खल सखे ।
३ शठे शास्त्र समाचरेत् ।
अद्वौ घणे घोषमुपैति मूनम् ।

१ यान प्रधान न दल प्रधानम् । (पचनत्र)
१ अन्वस्य हेतोर्बहुं हातुमिच्छन् विचारमूढः
प्रतिभाति मे त्वम् । (रघुवश)
२ दण्डमदस्त्वा निष्कं प्रयच्छति ।

न यद् भावि न तद् भावि भावि चैत्र तदन्यथा ।
(शिरोपदेश)

नित्री निम्न एव पर परश्च ।
छल सर्पमात्राणि परस्मिन्नाणि पश्यति ।
अत्मनो विन्वमात्राणि पश्यन्नापि न पश्यति ॥
(महाभारत)

१ जठर को न विभलि केवलम् ?
२ कान्धोऽपि जीवति विराय कान्ध मुङ्गे ।
१ आत्मवीया सदोशनेत को लाभ परदूषणे ?
२ समले सुवर्णे निरथो न निष ।

१ न एव केषु महापरो य ।
२ परोऽपि हिततर स्वीय ।
स्वातन्त्र्यमिष्टप्रदम् ।
स्वार्थमिदो हि वे मन्नास्तेषा साम्प्रत्य कुम् ?

१ जठर को न विभलि केवलम् ?
२ कान्धोऽपि जीवति विराय कान्ध मुङ्गे ।
१ आत्मवीया सदोशनेत को लाभ परदूषणे ?
२ समले सुवर्णे निरथो न निष ।

१ न एव केषु महापरो य ।
२ परोऽपि हिततर स्वीय ।
स्वातन्त्र्यमिष्टप्रदम् ।
स्वार्थमिदो हि वे मन्नास्तेषा साम्प्रत्य कुम् ?

अपनी इज्जत अपने हाथ ।

अपनी करनी पार उत्तरनी ।
अपनी सारङ्ग बावली होतो हँ ।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं कहता ।

अपनी देह किसे प्यारी नहीं ?

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरों का सगुन
तो बिगाड़े ।

अपनी पगड़ी अपने हाथ ।
अपनी बुद्धि पराया धन कई गुना दोखता है ।
अपने गरीबान में मुँह डाल कर देखना ।

अपने दही को कोई खट्टा नहीं कहता ।
अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ा मारना ।
अपने मुँह मियाँ मिट्टू ।
अपवाद से मौत भली ।
अब पछताप होत क्या जब चिढ़ियाँ खुग
गाईं खेत ।

अमी दिल्ली दूर है ।
अमीर को जान प्यारी, गरीब को जान भारी ।
अरहर की टट्टी गुजराती लाला ।
अलजामोशी नीमरक्षा ।
अज्ञाहारी सदा सुखी ।
अज्ञातफियाँ लुट्टी, कोयलों पर मुहर ।

अस्मी की आसद खौरासी का खूबै ।

आँख और कान में चार अंगुल का कक्र
होता है ।
आँख न दीदा काढ़े कसीदा ।
आँख से दूर दिल से दूर ।
आँखों के अंधे नाम नयन-सुख ।

१. लोके गुरुत्व विपरीतता वा स्ववेष्टितान्येव
नर नयन्ति । २. निजाधीन स्वगौरवम् ।
कृत्ये स्वकीये. सल्ल सिद्धिलब्धिः ।
१. अर्थाधीन जीवन्लोकोऽपि इमंज्ञानमपि सेवते ।
(पञ्चतन्त्र)

२. किञ्च कुर्वन्ति स्वाधिनः ?
निजमदननिविष्ट आ न मिहामते किम् ?
१. सर्व सत्त्वात्मीय कान्त पश्यति ।
२. न हि कश्चिन्निर्यतकमम्लमिष्यभिभाषते ।
(अश्वमेधोपदुष्टोऽपि) कायः कस्य न वल्लभः ?
(पञ्चतन्त्र)
आत्मशुद्ध्याऽपि विघ्नन्ति परकर्माणि दुर्जना ।

दे 'अपनी इज्जत अपने हाथ' ।
स्वमति परधनञ्चैव वृक्षवृद्धं हि दृश्यते ।
विरूपो यावद्वादर्थं पश्यति नात्मनो मुखम् ।
मन्यते तावद्दत्तमानमन्येभ्यो रूपवत्तरम् ।
(महाभारत)

दे 'अपनी छाछ को ---'
१. दुःपसिद्धं स्वदोषेण । २. स्वकरोणागारकर्षणम् ।
इन्द्रोऽपि लघुना याति स्वयं मरुत्यापितैर्युगैः ।
सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणान्दतिरिच्यते । (गीता)
१. निर्वाणदीपे किम् तैलदानम् ?
२. गतस्य शोचन नास्ति ।
३. गत शोचनस्य पण्डिताः ।
४. गते शोको निरर्षकः ।
अद्यापि दूरतः सिद्धिः ।
धनाढ्यो रक्षति प्राणान् निर्धनस्त्यक्तुमिच्छति ।
पाषाणे मृगमदलेपः ।
मीन स्त्रीभारलघुणम् ।
अल्पाहारी सदासुखी ।
१. निष्कापन्य, पणरक्षणम् ।
२. चन्दनदाह, शमीरक्षा ।
१. अल्प आयो व्ययो महान् ।
२. न्यूनायेऽधिकव्ययः ।
श्रवणे दर्शने चैव वर्तते महदन्तरम् ।

अन्धो वीक्षितुमुद्यतः ।
१. दूरता स्नेहनाशिनी । २. नयनदूर मनोदूरम् ।
१. यस्य पार्श्वे धनमस्ति सोऽपि धनपाल उच्यते ।
२. विचेन हीनो नाम्ना नरेशः ।

आँधी के आस ।

आई को कौन दारे ?

आई तो ईद वरात न आई तो जुम्मेरात ।

आई थी आस लेने मालिक बन बैठी ।

आई है जान के साथ जायगी जनाज़े के साथ

आप की खुरी न गए का गम ।

आग पानी का मेल कैसे हो सकता है ?

आग लगाने पर कूझों नहीं खोदा जाता ।

आग लगा पानी को दौड़े ।

आगे कूझों पीछे खाई ।

आगे जगह देखकर पाँव रखा जाता है ।

आगे दौड़ पीछे चौड़ ।

आगे नाथ न पीछे पगहर, सब से अल्ला
हुम्हार का गदहा ।

आज का काम कल पर मत छोड़ो ।

आदत सिर के साथ जाती है ।

आदि बुरा भत बुरा ।

आधा तीतर आधा बटेर ।

आधी छोड़ सारी को धावे,

ऐसा दूबे धाह न धावे ।

आप मरे जग परलै ।

आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता ।

आप हारे बहु को मारे ।

आ बला, गले लग ।

आमों की कमाई नींव में गँवाई ।

आम के आम गुठलियों के दाम ।

आम बोओ आम खाओ ।

आयगा सो जायगा राजा तक फकीर ।

आरत काह न करद कुकर्म ।

१ ज्ञानेन हीनोऽपि सुबोधमंथ ।

४ गुणैर्विरहितोऽपि गुणाकराख्य ।

अल्पार्थद्रव्यम् ।

१ अपि ध्वनन्तरिवैत्र किं करोति गतायुषि ।

२ मृत्योर्नास्ति भेषजम् ।

संशृत भोजन वित्तैः, दारिद्र्ये शुष्कमेव च ।

१ सन्धीप्रवेगे मुसलप्रवेग ।

२ अनन्तार्थ समायाता सञ्जाता गृहस्वामिनी ।

जीवनमगिनी रजा ।

१ सन्तुष्ट सदासुखी ।

२ कामालामयो सम ।

१ सामानाधिकरण्य हि तैजसिमिरयो कुत ।

२ जलानल्यो सहज कुत ?

१ सन्दीप्तो भवने तु कूपखनन प्रत्युद्यम कीदृश ?
(नीतिशतक)

२ न कूपखनन युक्त प्रदीप्तो वह्निना गृहे ।

१ अन्तर्दुष्ट क्षमायुक्त सर्वानर्थकर किम् ।

२ विषकुम्भ पयोमुख ।

इत कूपस्तनस्तटी ।

१ इष्टिपूत म्यसेत्पादम् । (मनु०)

२ नासमीक्ष्य पर स्थान पूर्वमायतनं त्यजेत् ।

पूर्वाधीनं तु वित्युत्पन्नं अमर्त्यं प्रत्युत्सुकम् ।

का विन्ता बभूवीनस्य ?

यद्यप्य कार्यं न च कुर्यात् ।

अभ्यासो हि दुस्समम् ।

१ दुरारम्भो दुरन्त स्थाय ।

२ दुर्लभास्तुफलं कुत ?

विषमयोगो न शुज्यते ।

यो भूवाग्नि परित्यज्य अभूवाग्नि निषेवते ।

भूवाग्नि तस्य नश्यति अभुवं नष्टमेव ॥ ॥

१ आत्मप्रलये जगत्प्रलय ।

२ आत्मनाशो जगत्प्रलय ।

१ नाशमयत्न विना सिद्धि ।

२ वाक्त्र निधनं तावत्र स्वयम् ।

निजापराधे मृत्युस्य भर्त्सनम् ।

विपत्ते । परिष्वस्व माम् ।

इतो कामरूपं क्षति ।

एका क्रिया इयर्थकरी प्रसिद्धा ।

यादृशमुष्येन वीजं तादृशं फलमाप्यते ।

जानत्स हि भूवो मृत्यु ।

आर्यो नन विन्न करोति पापम् ।

आलस्य खुरी बलर है ।

आलस वह क्या जमल न हो जिसका
क्रिया पर ।

आस पास घरसे दिल्ली पढी तरसे ।

आस्मा पर थूका अपने सिर ।

आम्मान से गिरा खनूर में अटका ।

आहारे ब्याहारे लज्जा न कारे ।

इक चुर हजार मुख ।

इक नागिन भर पय लगाई ।

इधर कूँ उधर खाई ।

इधर बाघ उधर खाई ।

इलान लाख, एक पय ।

इक भाऊ क मिताज है बेहद ।

अकल का बोल उठा नहीं सकता ॥

इम घर का पापा आदम ही निराला है ।

इस हाथ दे उस हाथ ले ।

इंद का जवाब परथर से ।

ईश्वर की निगाह सीधी हो तो किसी वस्तु
की कमी नहीं रहती ।

ईश्वर की निगाह सीधी हो तो कोई बाल
भी बौका नहीं कर सकता ।

ईश्वर की निगाह सीधी हो तो शत्रु भी
मित्र बन जाता है ।

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया ।

ईश्वर के नियम अटल हैं ।

ईश्वर फ रंग (खेल) प्यारे हैं ।

ईश्वर के सिवा कोई निर्दोष नहीं ।

ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए ।

ईश्वर से क्या दूर है ?

उसली में मिर दिया तो भूमलों का डर क्या ?

उतर गई छोई तो क्या करेगा कोई ?

उदार मनुष्य पात्र का विचार नहीं करते ।

उधार का खाना फूम का तापना बराबर है ?

१ अगच्छन्न वैवतेनोपेयि पदमेक न गच्छति ।

२ आलस्य हि मनुष्याणां शरीरस्यो ममारिषु ।

३ क्रियावान् स पण्डितः ।

सस्पृहा निर्भना दृष्टा नि स्पृहाणा धन बहु ।

पद्मो हि नममि क्षिप्तं श्रेष्ठं पतति भूर्धनि ।

इतो मुक्तस्ततो बद्धः ।

आहारे व्यवहारे च त्वत्कृत्स्नं सुखी भवेत् ।

मौनं सर्वसुखप्रदम् ।

दे 'एक तो करेला'

२ इनीन्द्रकूपस्ततो दन्दशक्तः ।

३ वनं कूपरस्तस्तटी ।

इनी व्याघ्रस्तस्तटी ।

पथ्ये सति गदतस्य किमौपनिषेवगै ?

अनुरागान्धमनसा विचारतइता कुत । (कपा.)

गृहमेव निलक्षणम् ।

१ इनी देय ततो ग्राह्यम् ।

२ त्वरितं फलं कर्मणाम् ।

३ शठे शाठ्यं समाचरेत् ।

४ शूते प्रतिकृतिं कुर्यात् । (चाणक्यनीति)

५ प्रमत्ने हि किमप्राप्यमस्तीह परमेश्वरे ।

६ विभिर्हि वदत्यस्यार्थान्चित्त्यान्तपि समुखं । (कपा)

श्रीकृष्णस्य कृपालवो यदि भवेत् कं कं निहन्तु
क्षमः ।

सामुद्रके जगन्नाथे विप्रियं सुप्रियो भवेत् ।

दैवी विचित्रा गतिः ।

भुवा परमेशनियमा ।

१ विधेर्विचित्राणि विचेष्टितानि ।

२ अहो विधेर्विचित्रैव गतिरदमुत्तकर्मणाम् । (कपा.)

३ अहो नवनवाभ्यांनिर्माणे रसिको विधिः ।

(कपा०)

४ दैवी विचित्रा गतिः ।

५ मधुरविधुरमिश्रा सद्यो वा विधातुः ।

विभुवनविषये कस्य दोषो न चास्ति ।

रामधाम शरणीकरणीयम् ।

किं हि न भवेदोषरेच्छया ?

रणे योद्धुं प्रवृत्तस्य शत्रुशलाघुं किं भयम् ।

१ निर्लब्धस्य कुतो भयम् ?

२ मानहीनमनुष्याणां लोकोज्यं किं वरिष्यति ?

मेघो गिरिजलधिबन्ध च ।

उदारभोजनं तृणतापसेवनम् ।

उधार दिया गाहक रोया ।
 उधार मुहब्बत की कँची है ।
 ऊधो मत माने की बात ।
 उन्नीस-बीस का तो फ़क़्त होता ही है ।
 उपजहि एक मग जल माहीं,
 जलज जोंक जिमि गुन बिलगाही ।
 उलटा घोर कोतवाल को उटे ।
 उलटे बाँस बरैली को ।
 ऊँट के मुँह में जीरा ।
 ऊँट की चोरी और झूके झूके ।
 ऊँची दुकान फीका पकवान ।
 ऊँट धोरे बहे जायें, गया कहे कितना पानी ?
 ऊँट तो कूदे बोरे भी कूदे ।
 ऊँट रे ऊँट तेरी बाँन मी कल सीधी ?
 ऊँटों के विवाह में गधे गवये ।
 ऊधो का लेना न माधो का देना ।
 ऊपर से पानी देना नीचे से जड़ काटना ।

एक भडा बह भी गदा ।
 एक भतार मी बीमार ।
 एक और एक ग्यारह होते हैं ।

एक कहाँ वस सुनो ।
 एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना ?
 एक के दूने से सौ के सवाए भले ।
 एक शुर हज़ार को हराए ।

एकता में बढ़ी शक्ति है ।

एक तो करेला कड़ुभा दूसरे मीम चडा ।

एक तो घोरी दूसरे सीनाज़ोरी ।
 एक यैली के चट्टे-बट्टे ।
 एक दिन मेहमान, दो दिन मेहमान, तीसरे
 दिन बलाए जान ।
 एक नज़ीर न सौ नमीहन ।
 एक पंथ दो काज ।

एक परहेज़, न सौ हकीम ।
 एक पुण्य दूसरे फलियाँ ।

उधार केगुलोपक ।
 उधार स्नेहनाशक ।
 तरब तरब हि मधुर बन्ध मनो यत्र सत्कर्मम् ।
 समयोरप्यल्पमन्नरम् ।
 न सोऽरप्यल्पगुणा भवति ।

दोषी पृच्छन्मवक्षिषेत् ।
 गङ्गा हिमाचल नयति ।
 १ दाशेरस्य मुखे नीर ।
 २ न स्तोत्रेन वस्त्रमरुति ।
 न महान्नि कर्मणि भवति गूढम् ।
 निस्सारस्य पदार्थस्य प्रायेणाकम्बरो नष्टात् ।
 यत्र शूरगणिर्नास्ति कानर किं करिष्यति ?
 नृत्यति पिनाकपणो तुर्यत्यन्देऽपि भूतवेताला ।
 १ सर्वपापमयो जन । २ मवदोषयुगो नर ।
 उट्टाणा विवाहे तु गीत गायनि गर्वमा ।
 निश्चिन्तो नर सुखी ।

१ अतदुष्ट क्षमायुक्त यदाऽनधर किल ।
 २ माक्यत्रपि वृथाभि नदीवैगो निकुणति ।
 ३ अत शत्रु बहि मुह्येत् ।
 काश्मासं शुनोऽपि हस्तिस्त्वयश्च तत्पुन ।
 एक कपोतपोत इयैना शतशोऽभिधावति ।
 १ सहति कावमाधिरा । २ समवायो दुरत्ययः
 ३ एकचित्ते दयारेव किममाध्य भवेदिदं ।
 (कथासंस्तितावर)

गात्या उत्तर दश ।
 अवधानरहित भवर्ग हि न्ययम् ।
 विज्ञप्ताधिक्ये लाभार्थक्यम् ।
 १ मौन सर्वार्थसाधनम् ।
 २ मौन विश्वविद् भुजम् ।
 १ समवायो दुरत्ययः ।
 २ सहति सर्वसाधिका ।
 १ जयमपरो गणस्वोपरि स्फोट ।
 २ सर्वव्यस्य मुरापान तनो वृक्षिकदशनम् ।
 अपराधित्वेऽपि धृष्टता ।
 दुष्टत्वे सर्वे समा ।
 १ प्राप्नुमिहो दिनद्वयम्, यमद्वयस्तत परम् ।
 २ प्रादुष्यत दिनद्वयम् ।
 कृतिश्चरैशशनाद् वरेयसो ।
 १ पन्ना किया द्वयधरती प्रसिद्धा । (महाभाष्य)
 २ देहस्या क्षीय ।
 पथ्य भिषगशनाद् वरम् ।
 १ पन्ना किया द्वयधरती प्रसिद्धा ।
 २ एक कृत्यं लोभपरलोचक्यन्दम् ।

एक बार मरना फिर मरने से क्या डरना ?
एक छोटी सी कुत्ते ।

एक मछली मारे जल को गद्दा करती है ।
एक ग्यान में दो तलवारों नहीं समा सकती ।

एक हमाम न सब नगे ।
एक श्राप से ताला नहीं बचती ।

एक हो लकड़ी से सब को हँकना ।
एक साथे सब साथे, सब साथे सब साथ ।
पेच करने को भी हुनर चाहिए ।
ऐसे बूढ़े बूढ़ को कान बोंध भुल देय ।
भोले की भीत बालू की भीत ।
भोले का मुँह लगाना अपनी इज्जत खोना ।
भौम चन्दे प्यास नहीं बुझती ।

और बात खोदो सही दाल रोटी ।
काची दुबाई का फल भोटा ।
कच्चे बोल न बोल ।
कन्या पराया घन होती है ।
कर्मगति दारे नाहि टरे ।

कर्म प्रधान बिस्व रचि राखा,
जो जस कहि सो उस बल चाखा ।
कर्मो की गति न्यारी ।

कल की छोटी भाज की बात करो ।
कर रहस्य परकाय हित सपति सँचहि
सुनान ।

का कर अद्वितीय उन यद्यपि होय समर्थ ।

काल मक्को खा जाता है ।
काला भस्म भस्म बराबर ।
काठ की निल्ली मो बन गई परन्तु म्याऊँ
कौन करेगा ?
कुत्ता कुत्ते का देरी ।

कुत्ते की दुम बारह बरस बड़ी में रखो तो
नी टेंनी की टेंनी ।

कुर्विध्वंसिन काया का चिन्ता मरने रणे ।
दे 'एक बनार सी वीरमा' ।

कुलेनैव कुपुत्रेण मलिन नायते कुलम् ।

१ नैवस्मिन्नेव बान्तरे सिंहदोरासनि क्वविद् ।

२ बन्धनोर्नैकव शासनम् ।

सर्वे सहवर्णिनः समा ।

१ नक्षेत्रेन हस्तेन तालिका समरसते । (पंचतन्त्र)

२ नैकास्त्री वरदे क्षम ।

योग्यायोग्यो विवेकाभाव ।

एकलक्ष्ये सर्वसिद्धिर्द्वार्षिक्येन काचन ।

पाप रौद्रात्पेक्षि ।

कृत्स्नीनय कृद्राय को नरो भोजनं दद्यात् ।

अस्थिर सुद्रसौहृदम् ।

सुद्रसगनिर्माननाशिनी ।

१ न तरालोकेन समितलादा ।

२ प्रादेयैः हन्तृ लुप्तविनाश ।

अत्रापान परित्यज्य सर्वमन्यत्रिरर्थकम् ।

वृत्तद्वये विषमिक परिणामेऽनृनोपमम् ।

ममवाक्यमपि नोच्छरणोपम् ।

अर्थो हि कन्या परकीय एव । (कमिष्ठान०)

१ अविद्याय भवत्येव कर्मणामोदृशी गतिः ।

२ अविद्यन्यानां हाराणि भवन्ति सर्वत्र ।

(कमिष्ठान०)

त्वकर्मवृत्तप्रथितो हि लोकः ।

दे 'जैसी काना वैसी भरबी' ।

१ जिज्ञा गति कर्मणाम् ।

२ गहनो कर्मणो गतिः ।

वर्तमानने कालेन वर्तमानि विचक्षता ।

१ आदानं हि विसर्गाय सत्ता वारिजवन्निदा । (ख)

२ आश्रयतिष्ठमनफलं मयरी मुपमानान् ।

(ख)

३ परीयकारक सत्ता विभूतयः ।

असहाय समर्थोऽपि वेवस्वी किं करिष्यति ।

(पंचतन्त्र)

सर्वान्प्रेक्ष्येन्नोऽवलः ।

सर्वे काश्चर्येण नन्दति ।

विरहुरमद्वार्या ।

सुलभा रम्या लोके कुलं हि उगात्रं नम् ।

१ मिथुको मिथुक इष्ट्वा शानवद्गुणं रायते ।

२ वाचको वाचको इष्ट्वा शानवद्गुणं रायते ।

उत्तरीचक एव नीच कीर्त्यि नैव विवहाति ।

क्या बूढ़ा क्या जवान मोतकेलिपुत्र सबान
खूँटे के बल बउडा कूटे ।
इबाजे का गवाह मैटक ।
गंगा गण गंगाराम जमुना गण जमुनादास ।
शरीर को खूँटा का मार ।
शरीर को संसार मूना ।

शरीर को सुख कहाँ ?

शुणी गुणों से आदर पाते हैं, आयु तथा
लक्ष्मणों से नहीं ।
गुरु बिना रात्र नहीं ।
शुस्मा बड़ा चटाल है ।

गेहूँ के साथ युन भी पिय जाता है ।
घर का जोगी जोगवा बाहर जोगी सिद्ध ।

घोड़ों का घर कितनी दूर ?
सुपही भीर खो तो ?
घमही जाय दमही न जाय ।
चार दिन की चाँदनी भी फिर अँधेरी रात ।
जगत् मेह-खाल है ।
जब बुरे दिन आते हैं बुद्धि मारी जाती है ।

जब भाव्य ही भीषा न हो तो काम कैसे
मिद हो ।
जब लग पैसा गौँट में तब लग ताको बार
क्यों शरीर मुक्त गीरी ।
कुरुत के वक्त गये को भी बाप कहा
जाता है ।
सहाँ न जाय रवि वहाँ जाय कवि ।
जान किसे प्यारी नहीं ।
जान है तो जहान है ।
जिसका काम उमी को साजे,
और करे तो टहली बाजे ।
जिमका भाप उमी का गीत गाएँ ।
जिमकी लाठी उमकी भँस ।
जिमके घर दाने उम के कमरे (सूर्य)
भी स्थाने ।
जितना गुद दालोगे उतना मोटा होगा ।
जितने मुँह उतनी चारों ।
जिनको कट्टर चाहिए तेहें माहमाह ।

मृधो मर्वत तुल्या ।
अन्वयमात्रव्यपदी नाव प्रायेण दु महां भवति ।
अहो रूपमहो ध्वनि ।
अजनि वैनमी वृत्ति मानव कान्तेदिन ।
देवो दुर्बलानर ।
१ सर्वं सत्यं द्रष्टव्यम् ।
२ सर्वस्य दक्षिणम् ।
१. निर्धनस्य पुत्र सुखम् ?
२ निर्धनता मर्तापदामप्यपन्नम् ।
गुणा पूजार्थान् गुणियु न च श्रित न च वर ।
विना हि शुभादेनैव सम्पूर्णं मिदं लुप्तम् ?
१. धर्मश्रमश्च श्रेष्ठः ।
२ श्रेष्ठो मूलमनर्थानाम् ।
अपेक्षन्ते हि विपदं किं पैश्वर्यमपेक्षन् ?
अवदेशानाम्य नरस्य नूनं गुणाधिक्यमपि भवे
दवगा ।
किं दूरं व्यवसायिनाम् ?
यथोपध स्वादु हितं च दुर्लभम् ।
प्रागेभ्योऽन्यथमात्रा हि हृषणस्य गरीयसीः (कथा ०)
निष्ठस्तेरां निष्ठां चन्द्र श्रीमान् संपूर्णमण्डलम् ।
गानागुणिको लोको न श्रेष्ठः परमाश्रितः ।
१ विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ।
२ प्रायः समापन्नविपत्तिकाले विपरीतवि पुनर्
मृत्तिना भवन्ति ।
१ वक्त्रे विधी वद वध व्यवसायविधिः ।
२ वधे विधी न हि वन्त्यभिवान्तिनाम् ।
अमृतमोहि विधीमृतधाम्निभिनन्दने । (१५)
क पर प्रियवारिनाम् ?
महानपि प्रमद्वेन नीचं मेविदुमिच्छति ।
कथं किं न वदमस्मि ?
कथं कथं न वदमः ।
आत्मार्ये वृषिर्वा स्वयम् ।
अजना कथं नानेद मोरहाम्य न दन ।
(वधान्तिस्वामर)
को न सति इह लोके पुनः शिष्टेन पूजितः ?
औचित्यं गगयति को विद्यापरायः ।
लक्ष्मीदम्प्य गृहं स एव भवति प्रायेण अजन्त-
वन्दनम् ।
अधिरम्याधिकं कथम् ।
नका वाणी मुने मुने ।
सुखमाप्ते नि मृद पुनः ।

जीम रोगों की जड़ है ।
जीवन का क्या भरोसा है ?
जैसा कारण वैसा कार्य ।

जैसा मुँह वैसी चपेट ।
वैसी करनी वैसी भरनी ।

जैसी रगत वैसी रगत ।

जैसे को तैसा ।

जो अपनी सहायता करते हैं ईश्वर भी
उनकी सहायता करता है ।
नो गरजते हैं वे धरमते नहीं ।
जो तुव को काँटा सुवे ताहि बोव तू फूल ।
जो पैदा हुआ सो मरेगा ।

जो मुख छद्म के चौकारे, वह न बल्लभ न
हुजारे ।
जो है निसको भावता सो ताही के पास ।
ज्ञान मे बदा कोई मुख नहीं ।
हुवा बस कबीर का उपजे पूत कमाल ।
तृष्णा बूझी नहीं होती ।
भोया घना बजे घना ।

दमनी की तुनिया टका सिरमुवाई ।

दया धर्म का मूल है ।

दिल दिल का सासी होता है ।

दुधार गाय की छात भली ।
दूध का जला छाछ भी फूँक कर पीता है ।
दूर के ढोल सुहावने ।
धन जोयन का गरव न कीन ।

रसमूला हि व्याधय ।

अस्थिर जीवित लोके ।

१ यथा नीज तथाङ्कर । २ यथा वृषस्तथा फल्गुम् ।
३ यादृशस्तनव काम तादृशो नायने पट ।
पात्रानुसार फल्गुम् ।

१ मद्रक्तप्राप्त्युपाद मद्र, अभद्रक्याप्यभद्रकृत ।
(कथा०)

२ मद्रममद्र वा कुनम रमनि कल्पये । (कथा०)

३ यो बदपति बीज हि लभते सोऽपि तरुलम् ।

४ कर्मावत्त फल्गु पुताम् । ५ 'करम प्रधान'

१ ससर्गजा दीपगुणा भवन्ति ।

२ प्रायेणावममथमोत्तमगुण ससर्गनो जायते ।

३ शठे शार्ङ्ग समाचरेत् ।

४ आजव हि कुटिलेषु न नीति । (नैषध)

दिवमेव हि साहाय्य कुरते संवशास्त्रिणाम् ।

नीचो वृत्ति न कुर्वते वदति न साधु करोयेव ।

क्षार पिबति पयोधेव वत्पशोधरो मधुरमग्म ।

१ क कालस्य न घोचरान्तरणम् ।

२ 'तत्तस्य हि भ्रुवो मृत्यु । (गीता)

३ मरण प्रकृति शरीरेणम् ।

४ उत्पद्यते विलीयते ।

प्राणिनां हि निकृष्टाऽपि वमभूमि परा मिषा ।

(कथा०)

न हि विचलति मैत्री दूरतोऽपि स्थितानाम् ।

नास्ति क्षान्तात्पर सुखम् ।

कुपुत्रेण कुल नष्टम् ।

दुष्टो का तरुणावते ।

१ अर्द्धां घटो घोषमुपैति नूनम् ।

२ गुणैर्विहीना बहु व्यस्यति ।

३ व्यस्यज्ञानी महाभिमानो ।

४ न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग् यादृक्कास्ये प्रनायते ।

५ न कान्तस्य कुने 'तत्तु मुक्ता मुक्तामणे ध्वनि ।

(कथा०)

२ रत्नव्ययेन पाषाण को हि रश्मितुमहति ? (कथा)

३ धर्मस्य मूल दया ।

४ को धर्म कृपया विना ?

विमल वस्तुधीयवच्च चेत्त वथयत्येव हितैषिण
रिपु वा ।

वादमीरजस्य बद्धतापि नितान्तरम्या ।

पाणी वयमा दग्धे तक्क फूट्कृत्य पामर पिबन्ति ।

दूरत पर्वता रम्या ।

१ अस्थिरे धनयौवने ।

२ निश्चितलोपयोग्यानि धौवनानि धनानि च ।

धर्महीन नर पशू समाना ।
न इधर के रहे न उधर क रहे ।

नदी नाव सजोगी मेले ।

नहि भ्रम कोउ जग माहीं, प्रभुवा पाइ
जाहि मद नाहीं ।
नहीं यह जन्म बारबार ।
नदी शील सम गहना दूजा ।

न होने की अपेक्षा थोड़ी अच्छी ।

निरन्तर प्रार्थ से कारुण्य का प्रज्ञाना भी
समाप्त हो जाता है ।
पर उपदेस कुशल बहुतेरे, जे आचरहि ते
नर न घनेरे ।

पर धर कबहुँ न जाइय जात घटत हे जोत ।
परहित मरिस धरम नहि भाई ।
पराधीन सपने सुख नाहीं ।
परोपकारी लोग स्वार्थ की चिन्ता नहीं करते ।

पहले तोलो पीछे बोलो ।

पाप का भाडा फूट ही जाता है ।
पैसा पापियों को पूज्य बना देता है ।
पैसा रहा न पास चार मुख से नहि बोलें ।
पैसा हाथ की मील है ।
पैसे से दोष भी गुण बन जाते हैं ।
प्रभुवा पाइ काहि मद नाही ।

प्राण जायें पर धर्म न जाई ।

प्राण जायें पर वचन न जाई ।
बदर क्या जाने बदरक का स्वाद ?

घटों का मार्ग ही ठीक मार्ग है ।
घटों की बढी बातें ।
घटों की संगत से बहुत लज होता है ।
घटी हुई (आयु) के हलाक़ हैं घटी हुई के नहीं ।
बदनाम जो होंगे तो क्या नाम न होगा ?
बहुत नियममिलि बल कर, करें छु चाहें सोया ।

धर्मण होना पशुभि समाना ।

१ इतो भ्रष्टस्तनो भ्रष्ट ।
२ इदं च नास्ति न परं च लभ्यते ।
३ समयतो भ्रष्ट ।

असंभाव्या अपि नृणा भवन्तीह समागमा ।

(कथा०)

अद्विधित्तविकारिणी ।

भस्मीभूतस्य भूतस्य (दिहस्य) पुनरागमनं कुत ?

१ शीलं परं भूषणम् ।
२ शीलं हि सर्वस्य नरस्य भूषणम् ।
३ बहिरन्मन्दवर्णं श्रेयम् ।
४ अभावादरूपता वरा ।

भक्ष्यमाणो निरदयः सुमेरुरपि दीयते ।

१ परोपदेशवैलाया शिष्टा सर्वे भवन्ति वै ।
२ परोपदेशे पाण्डित्य सर्वेषां गुरुः नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित्तु महात्मनः ॥

परमदननिविष्टः को लघुर्वै न याति ।
परोपकारेण पुण्यं न स्वाद्य क्रतुशतैरपि ।
कष्टं सतु पराश्रयः ।

१ परहितनिरात्मानामादरो नात्मकार्ये ।
२ परार्थप्रतिपक्षा हि नैक्यते स्वार्थमुत्तमा । (कथा)
शुक्तं न वा शुक्तमिदं विचिन्त्य वदेत् विपश्चिन्म
होऽनुरोधतः ।

नाथमर्थिरश्नुदये । (कथा)

चाण्डालोऽपि नरः पूज्यो वस्त्रास्ति विपुलं धनम् ।
वृक्षक्षीणफलः त्यजति विहगा ।
उदारस्य सृणु वित्तम् ।

मातृहृदिमं तव प्रमादवशतो दोषः अपि क्षुण्णः ।
१ कोऽर्थान् प्राप्य न गच्छति ॥

२ यत्रास्ति लक्ष्मीर्विनयो न तत्र ।

त्यजन्त्युत्तमसत्त्वा हि प्राणानपि न सत्यधम् ।

(कथा०)

न चलनि खनु नावय सज्जनाना कदाचिदः ।

१ न मेरुः कोरनदिनीकिनरस्वादकोविदः ।
२ किमिष्टमनः खरघुराणाम् ?

महान्तो येन मनः ॥ पन्था ।

अहह महता भिस्तेनामानश्चिरयिभूतम् ।

ध्रुवः कान्यः महते महता महसगम् । (कथा०)

प्रतिकारविधानमायुषः सति दोषे हि फलाय कथ्यते ।
येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ।
नृनामप्यमाराणां संहतिः कार्यसाधिका ।

वाता से काम नहीं चलता ।
बाप पर बेटा तुल्य पर घोड़ा ।
बिन घरनी घर भूत का देरा ।

प्रिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ।

बीती बात का शोक न करना चाहिए ।

सुरी संगत का बुरा फल ।

बूँद-बूँद पवने से धड़ा भर जाता है ।
भले काम में देर कैसी ?
भलो का संग करना चाहिए ।

भाग्य का मारा जहाँ जाता है विपत्ति भी
वही उसे जा घेरती है ।

भूख में सब कुछ स्वादु लगता है ।
भँस जा भागे बीन बजे भँस खड़ी पगुराय ।

मन के द्वारे द्वार हैं मन के जीते जीन ।

मन चगा तो कठौती में गंगा ।
मनस्वी लोग सुख-दुःख की परवाह नहीं करते
मरता क्या न करता ।

महात्माओं के मन, वाणी तथा कर्म में
समानता होती है ।
भाग्य गण सो भर गण ।

मित्र की पहचान विपद में ही होती है ।

न नश्यति तस्य नाम कृत्या द'पबर्णया ।
कार्ये निदानादि गुणानधीते । (नैषध०)
१ प्रियान'शे कृत्स्नं किल जगद्गण्य हि भवति ।
२ भाग्योद्धान गृहस्थस्य शु'यमेव गृह मतम् ।
३ भिग्वृह गृहिणीयन्तम् ।
१ सहसा विदधीत न क्रियामविवेक परमापदा
पदम् ।
२ सहसा हि कृत पाप (शत्र्यै) कथ मा भूदि
पचये । (कथा०)
१ गतस्य शोचन नास्ति ।
२ गते शोक निरर्थक ।
३ गत शोचन्त्यपडिता ।
असन्मेषी हि दोषाय कूलच्छायेव सेविता ।
(किराण०)
जलबिन्दुनिपातेन कमल पूर्यते पर ।
शुभस्य शीघ्रम् ।
१ सद्भिर्जुर्वीत सगतिम् ।
२ सद्भिरेव सहासीत ।
३ प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितस्तत्रापदा
भाजनम् ।
२ प्रायो गच्छति यत्र दैवदुष्टस्तत्रैव यान्त्या
पद । (नीति०)
शुभातुराणा न रुचिर्न पक्वम् ।
१ अन्धस्य दीप ।
२ बधिरस्य गीतम् ।
१ जिते चित्ते जित जगत् ।
२ जितचित्तेन सर्वं हि जगदेतद्विधीयते ।
३ जित जगत्त्वेन मनो हि येन । (शंकराचार्य)
निवृत्तरागस्य गृह तपोवनम् ।
मनस्वी कार्वाणी न गणयति दुःख न च सुखम् ।
१ दुमुक्षित किञ्च करोति पापम् ।
२ क्षीणा जना निष्कल्या भवन्ति ।
३ दारिद्र्यदोषेण करोति पापम् ।
मनस्येक वचस्येक कर्मेण्येक महारतनाम् ।
१ याचनान्त हि गौरवम् । २ याचनान्तरण वरन् ।
३ वर हि मानिनो मृत्युर्न दैन्य स्वतन्त्रता ।
(कथा०)
४ नोऽपी गतो गौरवम् ।
१ हेमन् सलङ्घ्यते द्यम्नी विशुद्धि दयमिकापि
वा । (रघु०)
२ मित्रस्य निक्थो विपत् ।
३ स सुहृद् व्यसने य स्यात् ।

मुक्ति तथा बधन का कारण मन ही है ।
 मूर्ख का बल मौन ।
 मूर्ख लोग भेद चाल चलते हैं ।
 मूर्खों की सगत से कौन सुख पाता है ?
 मेरे मन बहुत और है विधना क बहुत और ।
 मोह की फाँसी यही प्रचल है ।
 मौत का कोई इलाज नहीं ।
 योग्य, योग्य के साथ ही फवता है ।
 रत्निए मैलि कपूर न हीरा न होय सुगंध ।
 राम भए जेहि दाहिने सबे दाहिने ताहि ।

राम राम जपना पराया माल अपना ।
 रोग तथा शत्रु को छोटा न समझो ।

लालच बुरी बला है ।
 लोकमर्थादा का पालन अवश्य करना चाहिए ।
 लोभ पापों की खान ।

विद्या पुण्य कर्मों से भाती है ।
 विधाता झूठ हो तो मित्रभी शत्रु बन जाते हैं ।
 विधि का लिखा मिटाया नहीं जा सकता ।

शूरवीर मौत की परवाह नहीं करते ।
 शीर भूखा मर जाता है परन्तु घास नहीं खाता ।

संगठन में बड़ी शक्ति है ।

सत्समागम बड़ा दुर्लभ है ।
 सतो के कारण आप सँवारे ।

सतोप सबसे बड़ा धन है ।

सतोप सबसे बड़ा सुख है ।

समर में धन-सा सम्बन्धी बोटें नहीं ।

मन एव मनुष्याणा कारण बन्धमोक्षयो ।
 बल मूर्खस्य भौनित्वम् ।
 मूढ परप्रत्ययनेयवुद्धिः । (कान्दिदाम)
 मूर्खोंहैं संग कस्यास्ति रामणे ? (कथा०)
 को जानाति अनो जनार्दनमनोवृत्ति बदा कीइसी ?
 नास्ति मोक्षसमो रिपु ।
 अपि भवन्नरिर्वैय किं करोति गतावुषि ?
 चकास्ति योग्येन हि योग्यमगम ।
 किं मर्दिनोऽपि कस्तूरी, लघुनो दानि मौरभन् ?
 १ दाताणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भक्त्यभिमुखे विधी ॥
 २ इत्येऽनुकूले सर्वेऽनुकूला ।
 ३ दोषोऽपि गुणता दानि प्रभोर्भवति चेत्कृपा ।
 अहो विश्वास्य बद्धवन्तो धूर्तैरुत्तमिरीश्वरा ।
 अस्वीक्योऽप्यामयतुल्यवृत्तेर्महापाकाराय रिरोर्वि-
 बुद्धिः । (किरात)
 नान्ति दुष्णासमो व्याधि ।
 यद्यपि शुद्ध लोकविरुद्धनो करणीय नावरणीयम् ॥
 १ लोभ पापस्य कारणम् ।
 २ लोभमूलानि पापानि ।
 ३ पापानामाकरो लोभ ।
 पूर्वपुण्यतया विषा ।
 झूठे विषो भवति मित्रममित्रभावं ।
 १ अमर्दं भर्दं वा विभिलिखितमुन्मूलमनि क ?
 २ यद्वैनललाग्नत्रिदित तत्प्रोक्षितु क क्षम ?
 ३ यद्वाऽनिजभालपट्टिस्त्रि तन्मात्रितु क क्षम ?
 ४ त्रिस्त्रिपयि ललाटे प्रोज्झतु क समर्थ ?
 ५ शिरसि लिखितं लघुयति क ?
 शूरस्य मरणं दुर्लभम् ।
 १ न प्राणाते प्रकृतिविद्विर्जायते चोत्तमानाम् ।
 २ न स्मृतसि पञ्चसाम्भ पञ्चरोषोऽपि कुभट
 क्वापि ।
 ३ सर्वं कृच्छ्रान्नोऽपि शम्भुनि जग स्तनानुरूपं
 फलम् ।
 पञ्चमिमिलिते किं वज्रगतोह न साध्यते ।
 (नैषध)
 पुण्यैरेव हि लम्बते सुकृतिभिः ससंयतिदुर्लभाः ।
 देवेनैव हि साध्यते सदया शुभकमगाम् ।
 (कथा)
 १ सतोषतुल्य धनमग्नि नायव ।
 २ सतोष एव पुरुषस्य परनिधानम् ।
 ३ संतोष परमं धनम् ।
 ४ न तोषात् परमं सुखम् ।
 ५ सतोष परमं सुखम् ।
 अर्थो हि लोके पुत्रपत्य बन्धु ।

सच की ही जीत होती है ।
सदाचार सब से बड़ा धर्म है ।
सबको काम प्यारा है, काम प्यारा नहीं ।
सब लोग गुण तो किसी में नहीं होते ।
सब सब कुछ नहीं जानते ।
साँच बराबर तप नहीं शठ बराबर पाप ।
साँप निकल गया लकोर पोटा करो ।

सार सार को गहि रहे थोथा देय उझाय ।

सारी जाती देखकर भाधी लेय बचाय ।

सारी रात रोते रहे मरा भूक भी नहीं ।
सास-बहू में मेल कहाँ ?
सीख न दीजें बानरा जो बण्का घर जाय ।

सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता ।

सुख-दुःख सब के साथ लगे हुए हैं ।

सुत बिना सूता गेह ।

सुरदास जाको जासों हित सोई ताहि सुहाता
सोने में सुगन्ध ।

स्वभाव नहीं बदलता ।

होनहार किरती नहीं होये बिस्से बीस ।

हो विधना प्रतिकूल जब तब कैंट चढ़े पर
कूकर काटत ।

सत्यमेव जयते ।

आचार. परमो (प्रथमो) धर्मः ।

सर्व कार्यवशाज्जनोऽभिमाने तत्त्वस्य वो वदन् १
नैकत्र सर्वो गुणमनिपातः ।

१. न हि सबविद सर्वे । २. सर्वे सर्वं न जानन्ति ।

नास्ति सत्यस्वरो धर्मः, नानृणां पतनं परम् ।

१ चौरे गने वा किमु सवधानम् ?

२ पर्यागते किं खलु मेतुबन्ध ।

१ सारं मृच्छन्ति पण्डिताः ।

२ हसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ।

३ हमो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वज्रदत्त्यम् ।

(अभिज्ञान)-

१ सर्वनादो ममुरदत्ते, अर्द्धं त्यजति पण्डितः ।

२ ग्रामस्यार्थं कुन त्यजेत् ।

३ त्योदेक कुलस्यार्थं ।

परमार्थमविद्याय न भेदस्यै क्वचिन्मृभिः । (कथा.)

मायं श्वधूस्तुषयोर्न दृश्यते सौदृढ लोके ।

१ उपदेशो हि मूलांगा प्रकोपाय न शान्तये ।

२ द्वितीयोपदेशो मूलस्य कोपायैव न शान्तये ।

(कथा.)

३ मूलांगा बोधको रिपुः ।

१. आरंभं हि कुटिलेषु न नीतिः । (नैषध)

२ शान्त्यैव प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्जनः ।

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्तमो वा ।

नीचैर्गच्छत्युत्तरी च दशा चक्रनेमिक्रमेण । (मीन)

१ अपुत्रस्य गृहं शून्यम् ।

२ पुत्रहीनं गृहं शून्यम् ।

यदेव रोचते यस्मै भवेत् तत्तस्य सुन्दरम् ।

केरलोऽपि सुभगो नवान्मुदः, किं पुनरिदं शचाप-

लपिणः । (रघु)

१ दृष्टो यः कृतो धात्रा भवेत्तदृश एव सः ।

२. या यस्य प्रकृतिः स्वभावमतिना केनापि न

त्यज्यते ।

३. स्वायिनोऽपि बभूवो नदीजलैर्गर्दभः किमु इयो

भवेत् क्वचित् ?

१ प्राचीनकर्म बलवन्मुनयो वदन्ति ।

२ साध्यामाध्यविचारं हि नेशते भविष्यता ।

(कथा.)

३. हतविषिपरिपाकः केन वा लङ्घनीयः ?

४ भविष्यता बलवती ।

५ विधिरहो बलवानिति मे मतिः ।

अतो विधौ विपर्यस्ते न विपर्यस्त्यतीह विन् ।

तृतीय परिशिष्ट

अंग्रेजी संस्कृत शब्दावली

A

- Academy—१ शिक्षालय २ साहित्य विज्ञान कला परिषद् (स्त्री) ।
 Accountancy—लेखा सल्लेखन, बर्चस्व (न) ।
 Account—१ लेखा २ विवरणम् ।
 Accountant—लेखापाल ।
 Accountant general—महालेखापाल ।
 Acknowledgment—प्राप्तिपत्रम् ।
 Act—अधिनियम ।
 Acting—१ कार्यकारिन् २ अभिनय ।
 Ad hoc committee—तदर्थमिति (स्त्री) ।
 Adjournment motion—स्वयमग्रस्तव ।
 Administration—प्रशासनम् ।
 Administrator—प्रशासक ।
 Adult—वयस्क, प्रौढ ।
 Adult franchise—वयस्कमतधिकार ।
 Advance—अग्रिमधनम् ।
 Advocate—अधिवक्ता (पु) ।
 Advocate general—महाअधिवक्ता ।
 Aesthetics—सौन्दर्यशास्त्रम् ।
 Affidavit—दृष्टपत्रम् ।
 Affiliation—सम्बन्धनम्, सम्बन्धीकरणम् ।
 Agency—अभिकरणम् ।
 Agenda—कार्यसूची ।
 Agent—अभिकर्ता (पु) ।
 Agitation—आन्दोलनम् ।
 Agreement—१ सन्धिदा २ साम्प्रत्यम् ।
 Air conditioned—नियन्त्रितवायु ।
 Air-port—वायुपत्तनम् ।
 Air tight—*पवनवात, रोधक ।
 All India Radio—आकाशवाणी ।
 Allotment officer—आबंटनाधिकारिन् ।
 Alphabetically—वर्णक्रमानुसार, वर्णमालाक्रमेण ।

- Amenity—सुखसुविधा ।
 Anniversary—वार्षिकोत्सव ।
 Appeal—पुनरावेदनम्, पुनर्न्यायप्रार्थना ।
 Application—आवेदनपत्रम् ।
 Appointment—नियुक्ति (स्त्री) ।
 Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ ।
 Architect—वास्तुकार ।
 Aristocracy—अभिवातकुलीन, तन्त्रम् ।
 Assembly—सभा ।
 Assembly, legislative—विधानसभा ।
 Assessment officer—करनिर्धारणाधिकारिन् ।
 Assistant controller/director/secretary—सहायक, निबन्धक निदेशक—सचिव ।
 Associate member—सहसदस्य ।
 Atlas—मानचित्रावली ।
 Atmosphere—१ वायुमण्डलम् २ वातावरणम् ।
 Attesting officer—साक्ष्याधिकारिन् ।
 Attorney general—महान्यायवादिन् ।
 Audience—श्रोतृवर्ग ।
 Audit—जमापरीक्षा ।
 Auditor—लेखापरीक्षक ।
 Authority—१ प्राधिकारिन् २ प्राधिकार ।
 Autocracy—एकतन्त्रम् ।
 Autonomy—स्वायत्तशासनम्, स्वायत्तता ।
 Aviation—विमाननम्, विमानयात्रा ।

B

- Balance sheet—तुल्यपत्रम् ।
 Ballot box—मतपेटिका ।
 Ballot-paper—मतपत्रम्, दण्डाक्ष ।
 Bank—अभिकोष ।
 Banker—अधिकोषिन् ।

Basic Education—आधारिक शिक्षा ।

Bibliography—ग्रन्थसूची ।

Bill—१ विधेयम् २ प्राप्पम् ।

Biology—जीवविज्ञानम् ।

Birth control—जनननियन्त्रणम् ।

Black-out—ब्लैकआउट ।

Blood pressure—रक्तचाप ।

Board—मण्डली ।

Board District—मण्डल, जिल्ला पञ्चिका ।

Board, Municipal—नगर मण्डली-पञ्चिका ।

Board of Directors—निदेशकमण्डली ।

Body—निकाय ।

Bonafied—विश्वस्त, प्रामाणिक, सदाशय ।

Bonafides—विश्वस्तता, सदाशयता, प्रामाणिकता ।

Bond—बन्धनपत्रम् ।

Bonus—अभिलाम्भा ।

Booking-office—टिकटगृहम् ।

Broad-cast—व्यापकम् ।

Budget—आयव्ययकम् ।

Bye election—उपनिर्वाचनम् ।

Bye law—उपविधि ।

By post—दूरविमर्शम् ।

C

Cabinet—मन्त्रिमण्डलम् ।

Cadet—सैन्यछात्र ।

Calculator—गणक ।

Calendar—तिथिपत्रम्, पंचाङ्गम् ।

Calory—कलोरी ।

Candidate—१ परीक्षार्थी २ अभ्यर्थी ३ पदार्थी ।

Cantonment—कैंटनमेन्टम् ।

Capital—मूलधनम् ।

Capsule—पुगी ।

Case—काण्डम् ।

Cash Memo—विकयपत्रम्, विक्रयिका ।

Casting vote—निर्णायक मतम् ।

Casualty—हताहत ।

Cell—१ कोशम् २ कुटी ।

Census—जनगणना ।

Central Investigation Agency—केन्द्रीय अनुसन्धानाधिकारणी ।

Century—१ शती २ शताब्दी ।

Cess—उत्तर ।

Chairman—सभापति ।

Chamber of Commerce—वाणिज्य मण्डलम् ।

Chancellor—कुलपति ।

Chancellor, Pro-vice—उपकुलपति ।

Chancellor Vice—कुलपति ।

Charge d' Affairs—कार्यदूत ।

Charge sheet—अभिलेखनम् ।

Chart—१ रेखापत्रम् २ चित्रकलकम् ।

Charter—अधिकारपत्रम् ।

Chartered Accountant—अधिकृत पत्रितलेखक ।

Cheque—चेकम् देवादेश ।

Cheque Bearer—वाहकचेकम् ।

Cheque, Blank—निरकचेकम् ।

Cheque, Crossed—रेखितचेकम् ।

Cheque, Order—आदेशचेकम् ।

Chief Commissioner—मुख्यायुक्त ।

Chief Judge—मुख्यन्यायाधीश ।

Chief Justice—मुख्यन्यायाधिवक्ता ।

Chief Minister—मुख्यमन्त्रि (पु) ।

Chief of Air staff—वायुसेनाध्यक्ष ।

Chief of Army staff—सैन्यसेनाध्यक्ष ।

Chief of Naval staff—नौसेनाध्यक्ष ।

Chief of Protocol—नयाचारप्रमुख ।

C. I. D.—गुप्तचरविभाग ।

Circular—परिपत्रम् ।

Citizen—जनगरिक ।

Citizen ship—नागरिकता ।

Civil—नागरिक, भौतिक ।

Civil Code—व्यवहार-संहिता ।

Civil Court—व्यवहार न्यायालय, व्यवहार-रालय ।

Civilization—सभ्यता ।

Civil Service—नागरिकसेवा ।

Clause—खण्ड-इम् ।

Clock tower—घण्टा, घुम्तू स्तम्भ ।

Code—संहिता ।

Collector—संग्राहक, सम्राहक ।

Commerce—वाणिज्यम् ।

Commission—१ आयोग २. वर्तनम् ।
 Commissioner—आयुक्त ।
 Committee—समिति (स्त्री) ।
 Committee, Executive, working—
 कार्यकारिणी समिति (स्त्री), कार्यसमिति ।
 Committee, Select—प्रवरसमिति
 (स्त्री) ।
 Committee, Standing—स्थायिसमिति
 (स्त्री) ।
 Commonwealth—राष्ट्रमण्डलम् ।
 Communication—संचार ।
 Communiqué—विज्ञप्तिः (स्त्री) ।
 Communism—साम्यवादः ।
 Community Development—सामु-
 दायिक विकासः ।
 Company—समूहवायः ।
 Compensation—प्रतिवर, क्षतिपूर्ति
 (स्त्री) ।
 Complaint—१ अभियोगः २ परिवादः,
 परिवेदना ।
 Computer—समकलकम् ।
 Confederacy—राज्यसंघः ।
 Confederation—राज्यमण्डलम् ।
 Conference—सम्मेलनम् ।
 Constituency—निर्वाचनक्षेत्रम् ।
 Constituent Assembly—सविधानसभा ।
 Constitution—सविधानम् ।
 Consul—वाणिज्यदूत ।
 Context—सन्दर्भः, प्रसंगः, प्रकरणम् ।
 Continent—महाद्वीपः यम् ।
 Contingency fund—आकस्मिकतानिधिः,
 सांयोगिकनिधिः ।
 Contract—सविदा ।
 Contribution—अनुदानम् ।
 Control—नियन्त्रणम् ।
 Controller General—महानियन्त्रकः ।
 Convassing—उपायनम् ।
 Convener—संयोजकः ।
 Convention—१ रुटि (स्त्री) २ संगमनम् ।
 Co-operation—सहयोगः । सहकारिता ।
 Co-operative society—सहकारिमस्था ।
 Co-ordination—समन्वयः ।
 Copy—१ प्रतिलिपि (स्त्री) २ प्रतिलिपि (स्त्री) ।

Copyright—प्रकाशनाधिकारः ।
 Corporation—निगमः ।
 Cost—परिचयः ।
 Cottage Industry—कुटीरोद्योगः ।
 Council—परिषद् (स्त्री) ।
 Council, Advisory—परामर्शपरिषद्
 (स्त्री) ।
 Council of Ministers—मन्त्रिपरिषद्
 (स्त्री) ।
 Council of States—राज्यपरिषद् (स्त्री) ।
 Court—न्यायालयः ।
 Court, Criminal—दण्डन्यायालयः ।
 Court, District—मण्डलन्यायालयः ।
 Court, Federal—संघीयन्यायालयः ।
 Court, High—उच्चन्यायालयः ।
 Court, Martial—सेनान्यायालयः ।
 Court of Appeal—पुनर्विचारन्यायालयः ।
 Court of Wards—प्रतिपालकाधिकरणम् ।
 Court, Revenue—राजस्वन्यायालयः ।
 Court, Session—सत्रन्यायालयः ।
 Court, Subordinate—अधीनन्यायालयः ।
 Court, Supreme—उच्चतमन्यायालयः ।
 Credential—प्रत्ययपत्रम् ।
 Credit—१ प्रत्यय (हि. साम्)
 २. आकलनम् ।
 Criminal Law—दण्डविधि (इ.) ।
 Culture—संस्कृति (स्त्री) ।
 Currency—चलार्थः, मुद्रा ।
 Custodian—अभिरक्षकः ।
 Custody—अभिरक्षा ।
 Custom duty—सीमा, शुल्क शुल्कम् ।

D

Daily diary—दैनिकी ।
 Debit—विकलनम् ।
 Decentralization—विवेकीयकरणम् ।
 Declaration—घोषणा ।
 Decree—आहति (स्त्री) ।
 Deed—विदेखः ।
 Defence—रक्षा ।
 Delegate—प्रतिनिधिः ।
 Delegation—प्रतिनिधिमण्डलम् ।
 Democracy—लोकतन्त्रम् ।

Demonstrator—निदेशक ।
 Deputation—शिष्टमण्डलम् ।
 Deputy Commissioner—उपायुक्त ।
 Deputy Speaker—उपाध्यक्ष ।
 Designer—रूपकार ।
 Despatcher—प्रेषक ।
 Development Block—विकासखण्ड-म् ।
 Diplomacy—राजनय, कूटनीति (स्त्री) ।
 Directorate—निदेशालय ।
 Director General—महानिदेशक ।
 Director, Managing—प्रबन्धनिदेशक ।
 Disposal—व्ययनम् ।
 Disqualification—अनर्हता, अयोग्यता ।
 District—मण्डलम् ।
 District Board—मण्डलमण्डली ।
 Dividend—लाभांश ।
 Division—प्रभाग ।
 Divorce—विवाहविच्छेद, विवि-च्छेद ।
 Document—प्रलेख ।
 Draft—१ प्रारूपम् २. धनार्पणदेश ।
 Draftsman—प्रारूपकार ।
 Drainage—जलनिकास ।
 Drive—अभियानम् ।
 Duplicate Copy—अनुलिपि (स्त्री) ।
 Duty—१ शुल्क-कम्, २ कर्तव्यम् ।
 Duty, Custom—सीमाशुल्क-कम् ।
 Duty, Death—मरणशुल्क-कम् ।
 Duty, Estate—संपत्तिशुल्क-कम् ।
 Duty, Excise—उत्पादशुल्क-कम् ।
 Duty, Export—निर्यातशुल्क-कम् ।
 Duty, Import—आयातशुल्क-कम् ।
 Duty, Stamp—मुद्राशुल्क-कम् ।
 Duty, Succession—उत्तराधिकारशुल्क-कम् ।

E

Election—निर्वाचनम् ।
 Election, Bye—उपनिर्वाचनम् ।
 Election Commission—निर्वाचना-योग ।
 Election, Direct—प्रत्यक्षनिर्वाचनम् ।
 Election, Indirect—परोक्षनिर्वाचनम् ।
 Election, Campaign—निर्वाचनाभि-यानम् ।

Election, Tribunal—निर्वाचनाधिक-रणम् ।

Flector—निर्वाचक ।

Electoral Roll—निर्वाचकसूची ।

Electorate—१ निर्वाचनक्षेत्रम् ।

२ निर्वाचनक्रमम् ।

Electorate, Joint—संयुक्तनिर्वाचनपद्धति- (स्त्री) ।

Electorate, Separate—वृथानिर्वाचन-पद्धति (स्त्री) ।

Electorate, Separate—वृथानिर्वाचन-पद्धति (स्त्री) ।

Embassy—राज, दूतावास ।

Emergency—आपात ।

Emigration—परावास ।

Emporium—आषण ।

Employment Exchange—नियोजन-कार्यालय ।

Enfranchisement—समाधिकारदानम् ।

Enquiry clerk—पृच्छारिपिक ।

Equator—भूमध्यरेखा ।

Establishment Officer—स्थापना-धिकारिन् ।

Estates—सम्पद (स्त्री) ।

Excise—उत्पादशुल्क-कम् ।

Executive Engineer—कार्यपालकाभि-यन्तु ।

Ex-officio—पदेन ।

F

Family Planning Centre—परिवार-नियोजनकेन्द्रम् ।

Federal—संघीय ।

Federation—संघ ।

Fermentation—किण्वनम् ।

Feudalism—सामन्वाद ।

Finance—वित्तम् ।

Financial—वित्तीय ।

Financial Year—वित्तवर्ष भ्रम् ।

Fine—अर्थदण्ड ।

Fire Service—अग्निशमनसेवा ।

Flying Squad—उड़यनदलम् ।

Foreign Exchange—विदेशीयवित्तमय ।

Forensic Science—न्यायवैद्यविज्ञानम् ।
 Form—प्रपत्रम् ।
 Formula—सूत्रम् ।
 Franchise—भूतधिकार ।
 Freedom of press—मुद्रणस्वातन्त्र्यम् ।
 Freedom of speech—भाषणस्वातन्त्र्यम् ।
 Function—कृत्यम् ।
 Fund—निधि ।

G

Gallery—दीर्घा ।
 Gate keeper—द्वारपाल ।
 Gate pass—द्वारपत्रम् ।
 Gazette—राजपत्रम् ।
 Gazetteer—राजपत्रित विवरणम् ।
 Geologist—भू, विज्ञानिन्-बैज्ञानिक ।
 Germ—बीजाणु ।
 Glacier—हिमनदी ।
 Government—शासनम् ।
 Government, Hereditary—वैदिक
 शासनम् ।
 Government, Interim—अन्तरिम
 शासनम् ।
 Government, local self—स्थानीयस्वा
 यत्तशासनम् ।
 Government, Parliamentary—संस
 दीयशासनम् ।
 Government, Presidential—राष्ट्र
 प्रदीय प्रधानीय, शासनम् ।
 Government, self—स्वशासनम् ।
 Government, unitary—एकीयशासनम् ।
 Governor—१ राज्यपाल २ शासक ।
 Grant—अनुदानम् ।
 Grant in aid—सहायकानुदानम् ।
 Gratuity—उपदानम् ।
 Guarantee—प्रत्याभूति (स्त्री) ।

H

Habeas corpus—बन्दिप्रत्यक्षीकरणम् ।
 Handicrafts—हस्तशिल्पम्, हस्तकला ।
 Head Quarter—मुख्यालय, प्रधान
 कार्यालय ।
 Hereditary—वैदिक, आनुवंशिक ।
 Honorarium—भावेदयम् ।

Horticulturist—उद्यानकृषिविशेषज्ञ ।
 Hostess—सत्कारिणी ।
 House—१ मदनम् २ गृहम् ।
 House of people—लोकसभा ।
 Housing Department—आवासविभाग ।

I

Illiteracy—निरक्षरता ।
 Immigrant—आवासिन् ।
 Improvement Trust—नगरवृद्धार-
 मण्डलम् ।
 Incharge—प्रभारिन् ।
 Indian Administrative Service—
 भारतीय प्रशासनिकसेवा ।
 Indian Council of Agricultural
 Research—भारतीयकृषिसुसंधानपरिषद्
 (स्त्री) ।
 Indian Council of Medical Re-
 search—भारतीयचिकित्सानुसंधानपरिषद्-
 (स्त्री) ।
 In due course—यथासमयम् ।
 Industry—उद्योग ।
 Industry, cottage—कुटीरोद्योग ।
 In order of merit—योग्यताक्रमेण ।
 Inquiry—परिग्रह ।
 Inspection—निरीक्षणम् ।
 Institute—संस्थानम् ।
 Institution—संस्था ।
 Insurance—बीमा ।
 International—अन्तर-राष्ट्रीय (द्वि) य ।
 In toto—पूर्णा, पूर्णतया ।
 Investigator—अन्वेषक ।

J

Judge—न्यायाधीश ।
 Judge, additional—अपर-अतिरिक्त,
 न्यायाधीश ।
 Judge, extra—अतिरिक्त-न्यायाधीश ।
 Judiciary—न्यायपालिका ।
 Justice—१ न्याय २ न्यायपति, न्याया
 धिपति ।
 Justice, chief—मुख्य-न्यायपति-न्याया
 धिपति न्यायाधीश ।

L

Labour Commissioner—प्रमायुक्त ।

Land revenue—भूराजस्वम् ।
 Latitude—अक्षांश ।
 Law—विधि (पु) ।
 Law & order—विधिव्यवस्थे (स्त्री द्वि) ।
 Law Commission—विधि आयोग ।
 Legation—दूतावास ।
 Legislation—विधानम् ।
 Legislative assembly—विधानसभा ।
 Legislative council—विधानपरिषद् (स्त्री) ।
 Legislature—विधानमण्डलम् ।
 Letter of Introduction—परिचयपत्रम् ।
 Levy—१ कारोपणम् २ उद्ग्रहणम् ।
 Liaison officer—सम्पर्काधिकारिन् ।
 Licence—अनुमति (स्त्री) ।
 Lieutenant governor—उपराज्यपाल ।
 Life Insurance Corporation—जीवनमीमांनिकम् ।
 Literacy—साक्षरता ।
 Local board—स्थानीयमण्डली ।
 Local body—स्थानीयनिकाय ।
 Local government—स्थानीयशासनम् ।
 Longitude—रेखांश ।

M

Major—वयस्क ।
 Majority—१ बहुमतम् २ बहुसंख्या ।
 Mandamus—नरमादेश ।
 Manifesto—आविष्करणम् ।
 Marketing officer—पणनाधिकारिन् ।
 Maternity home—प्रसवशाला ।
 Matriarchy—मातृतन्त्रम् ।
 Medical Science—अयुर्विज्ञानम्, विज्ञानम् ।
 Member—सदस्य ।
 Memo—डायरी ।
 Memorandum—स्मरणपत्रम्, स्मृतिपत्रम् ।
 Meteorological Department—जल विज्ञान विभाग ।
 Meteorologist—जल, विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
 Migration—प्रवासनम्, प्रवास ।
 Military Engineering Service (M E S)—सैनिक-वास्तविकमेवा ।

Minerologist—खनिज-विज्ञानिन्-वैज्ञानिक ।
 Minister—मन्त्रिन् ।
 Ministry—१ मन्त्रालय २ मन्त्रिमण्डलम् ।
 Minor—अवयस्क ।
 Minority—१ अल्पसंख्यकवर्ग २ अल्प मतम् ।
 Mission—१ उद्देश्यम्, लक्ष्यम् २ प्रचारक-मण्डलम् ।
 Monopoly—एकाधिकार ।
 Motion—प्रस्ताव ।
 Motion of no confidence—अविश्वास प्रस्ताव ।
 Multipurpose—बहुदेशीय ।
 Municipal area—नगरक्षेत्रम् ।
 Municipal commissioner—नगरपाल, नगरपालिकासदस्य ।
 Municipal corporation—नगरनिगम, नगरमहापालिका ।
 Municipality—नगरपालिका ।
 Museum—समृद्धालय ।

N

Nation—राष्ट्रम् ।
 Nationalization—राष्ट्रीयकरणम् ।
 Nationality—राष्ट्रीयता ।
 National Physical Laboratory—राष्ट्रीयभौतिकप्रयोगशाला ।
 Nomination—मनोनयनम् ।
 Nominee—मनोनीत ।
 Notice—१ सूचना २ सूचनापत्रम् ।
 Notification—अभिसूचना ।
 Notified area—(अधि-) सूचितक्षेत्रम् ।

O

Oasis—मरुस्थानम् ।
 Observatory—वेधशाला ।
 Office—१ कार्यालय २ पदम् ।
 Officer—अधिकारिन् ।
 Officer incharge—प्रभारधिकारिन् ।
 Official Language—राजभाषा ।
 Officiating—स्थानापन्न ।
 Oligarchy—अतन्त्रम् ।
 Ordinance—अध्यादेश ।
 Organization—संघटनम् ।

Out door patients Department—
बहिरंगरोगविभाग ।

P

Pact—वचनपत्रम् ।

Parliament—समृद्ध (स्त्री) ।

Parliamentary secretary—संसदीय
सचिव ।

Pass—पारणम् ।

Passport—पारपत्रम् ।

Patents—पत्रम् ।

Patriarchy—पितृपुत्र्यम् ।

Patron—मरक्षक ।

Penalty—श्राप्ति (स्त्री) ।

Pending—१ रुन्धिन २ रुन्धमान ।

Pension—निवृत्तिवेतनम् ।

Personal Assistant—वैयक्तिकमहापत्र ।

Petition—याचिका ।

Planning Commission—योजनायोग ।

Plebiscite—जनमतसंग्रह ।

Police—मारुक्षक ।

Police force—मारुक्षकबलम् ।

Police station—मारुक्षकस्थानम् ।

Poll—मतदानम् ।

Polling station—मतदानस्थानम् ।

Portfolio—सविभाग ।

Ports department—वृत्तविभाग ।

Post—१ पत्रम् २ पत्रम् ।

Post-office—पत्रालय ।

Preference—प्रथिमानम् ।

Prerogative—परमधिकार ।

President—१ राष्ट्रपति २ प्रधान ।

Prime Minister—प्रधानमन्त्रि ।

Post & Telegraph Departt—पत्रतार
विभाग ।

Private Secretary—निजसचिव ।

Privilege—विशेषाधिकार ।

Privy purse—राजवृत्ति (स्त्री) ।

Procedure—प्रक्रिया ।

Proceedings—१ कार्यावली, कृत्वावली

• २ कृत्वावलीविवरणम् ।

Proclamation—उद्घोषणा ।

Project—प्रायोजनम् ।

Promissory note—वचनपत्रम् ।

Proof reader—मुद्रितपत्रशोधक ।

Provident fund—प्रविश्यनिधि (पु) ।

Provision—१ उपबन्ध २ भण्डारमाग्री ।

Provisional—अन्त कालीन ।

Proxy—प्रतिपत्री ।

Public Health—लोकस्वास्थ्यम् ।

Publicity—प्रचार ।

Public Relations Officer—जन
सर्पकाधिकारिन् ।

Public Service Commission—लोक
सेवायोग ।

Public Services—लोकसेवा ।

Public Works Department—लोक-
निर्माणविभाग ।

Q

Quality Control Officer—कौटि
निर्वाहकाधिकारिन् ।

Quarantine—संगरोध ।

Quorum—गणपूर्ति (स्त्री) ।

Quota—प्रत्यक्ष, निर्यात ।

R

Railway Board—रेलवेबोर्ड ।

Receptionist—स्वागतकर ।

Recommendation—अनुज्ञा ।

Record—अभिलेख ।

Records keeper—अभिलेखपाल ।

Recruitment—• सैन्यप्रवेश ।

Reference—निर्देश ।

Referendum—परिपृच्छा ।

Regent—राजप ।

Regional—क्षेत्रीय ।

Register—पञ्जी ।

Registered—पञ्जीकृत ।

Registrar—पञ्जीकार, पुनःसचिव ।

Registration—पञ्जीकरणम् ।

Regulation—विनियम ।

Rehabilitation Ministry—पुनर्वास-
मन्त्रालय ।

Reminder—अनुस्मरणम् ।

Report—प्रतिवेदनम् ।

Representation—प्रतिनिधानम् ।

Representative—प्रतिनिधि ।
 Republic—गणराज्यम् ।
 Requisition—अधिग्रहणम् ।
 Reservation—रक्षणम्, प्रारक्षणम् ।
 Reserved seat—रक्षित प्रारक्षित, स्थानम् ।
 Retirement—निवृत्ति (स्त्री) ।
 Returning officer—निर्वाचनाधिकारिन् ।
 Revenue—राजस्वम् ।
 Review—पुनर्विचारणम् ।
 Revision—पुनरीक्षणम् ।
 Rule—नियम ।

S

Safeguard—सुरक्षणम् ।
 Sales Tax—विक्रयकर ।
 Savings—व्यावृत्ति (स्त्री) ।
 Savings bank—व्यावृत्तिबचिकोष ।
 Schedule—अनुसूची ।
 Scheduled caste—अनुसूचितजनानि (स्त्री) ।
 Scheduled Tribe—अनुसूचितजनजनानि (स्त्री) ।
 Secondary Education Board—मध्य विद्याशिक्षासंस्थानम् ।
 Secretariate—सचिवालय ।
 Section officer—अनुभागधिकारिन् ।
 Secular—धर्मनिरपेक्ष, वैदिक ।
 Security—१ प्रतिभूति (स्त्री) २ सुरक्षा ।
 Security council—सुरक्षापरिषद् (स्त्री) ।
 Self-determination—आत्मनिर्णय ।
 Session—सत्रम् ।
 Sitting—उपवेश, उपविष्टि (स्त्री) ।
 Small Scale Industries—छोटोद्योग ।
 Socialism—समाजवाद ।
 Social Welfare—समाजवल्याङ्गम् ।
 Sovereign—प्रभु ।
 Sovereign democratic republic—संपूर्णप्रभुत्वसम्पन्नलोकतन्त्रात्मक गणराज्यम् ।
 Speaker—१ अध्यक्ष (लोकसभादीनाम्) २ वक्ता (पुं) ।
 Staff—कर्मचारिवृन्दम् ।
 State—१ राज्यम् । २ राष्ट्रम् ।
 State, Buffer—अन्तराष्ट्रम् ।

State, Totalitarian—एकदलराष्ट्रम् ।
 State Trading Corporation—राज्य व्यापारनिगम ।
 State, Unitary—एकीयराष्ट्रम् ।
 State, Welfare—हितकारिराष्ट्रम् ।
 Statistician—सांख्यिक ।
 Statistics—सांख्यिकी ।
 Statute—संविधि (पुं) ।
 Stenographer—आशुलिपिक ।
 Steno-typist—आशुटकक ।
 Stock Exchange—मेष्ठिवत्परम् ।
 Store keeper—भाण्डारिन् ।
 Subcontinent—उपमहाद्वीपम् ।
 Suffrage—मताधिकार ।
 Suffrage, Universal—सर्वमतधिकार ।
 Summon—आवाहनम् ।
 Superintendent—अधीक्षक ।
 Supervisor—पर्यवेक्षक ।
 Supplies—पूरुष, मभरणम् ।
 Suspension—निलम्बनम् ।
 Surcharge—अधिवर ।
 Survey—सर्वेक्षणम् ।
 Syndicate—अभिवद् (स्त्री) ।

T

Tabulator—तालिक मारणी, कार ।
 Tariff—शुल्कसूची ।
 Tax—कर ।
 Tax, Direct—प्रत्यक्षकर ।
 Tax, Entertainment—प्रमोदकर, मनोरञ्जनकर ।
 Tax Indirect—परोक्षकर ।
 Tax, Export—निर्यातकर ।
 Tax, Income—आयकर ।
 Tax, Sales—विक्रयकर ।
 Tax, Super—अतिवर ।
 Tax, Terminal—सीमाकर ।
 Technician—प्रविधिज्ञ ।
 Technique—प्रविधि ।
 Tele communication—दूरसंचार ।
 Telegraphist—सारसंकेतक ।
 Telephone Exchange—दूरभाषकेन्द्रम् ।
 Tenure—पदावधि (पुं) कार्यकाल ।

Territory—राज्यक्षेत्रम् ।
 Terrorism—आतङ्कवाद ।
 Terrorist—आतङ्कवादिन् ।
 Theocracy—धर्मनिरूपणम् ।
 Theory—सिद्धान्त ।
 Through proper channel—विविधम् ।
 Time keeper—समयपाल ।
 Toll—पयकर ।
 Totalitarianism—एकदलवाद ।
 Tourist—पर्यटक ।
 Tourist Depatt—पर्यटनविभाग ।
 Tracer—अनुरेखक ।
 Tractor—कर्षकसम् ।
 Trade mark—व्यापारचिह्नम् ।
 Trade Union—कामिकसम् ।
 Traffic—यातायातम् ।
 Training—प्रशिक्षणम् ।
 Training, Technical—प्रविधि प्रशि-
 क्षणम् ।
 Tramcar—रथयाणम् ।
 Transfer—१ स्थानान्तरणम् २ हस्तान्-
 रणम् ।
 Transition—संक्रमणम् ।
 Transport—परिवहनम् ।
 Treaty—सन्धि (५) ।
 Tribe—जनजाति (स्त्री) ।
 Tribunal—न्यायाधिकरणम् ।
 Tropic of Cancer—कर्करेखा ।
 Tropic of Capricorn—मकररेखा ।
 Trust—न्यास ।
 Trustee—न्यास निक्षेप, धारिन् ।
 Tube well—नल्लूय ।
 Typist—टंकक ।

U

Under Secretary—अवरसचिव ।
 Union—सङ्घ ।
 Union Public Service Commi-
 ssion—सर्वलोकेसेवायोग ।
 Unit—एककम् ।
 United Nations Organization—
 संयुक्तराष्ट्रसङ्घ ।

V

Vacancy—१ रिक्तस्थानम् २ रिक्ति-
 (स्त्री) ३ रिक्तता ।
 Verification officer—सत्यापनाधिका-
 रिन् ।
 Veto—प्रतिषेध-पक्ष, अधिकार ।
 Vice President—उपराष्ट्रपति ।
 Village Industry—ग्रामोद्योग ।
 Visas—दृष्टिक ।
 Vote—मतम् ।
 Vote by ballot—गुप्तमतदानम् ।
 Vote of censure—निन्दाप्रस्ताव ।
 Voter—मतदाता (पु) ।
 Vote, Single Transferable—एक-
 सङ्क्रमणीयमतम् ।

W

Warrant—अभिपत्रम् ।
 Will—इच्छापत्रम् ।
 Wireless operator—विनायकबालक ।
 Works Manager—वर्गशालाप्रबन्धक ।
 Writ—आदेशलेख ।

Z

Zonal Council—अञ्चलिकपरिषद् (स्त्री) ।

चतुर्थ परिशिष्ट

छन्दःपरिचय

छन्दः—संस्कृत में रचना प्रायः दो प्रकार की होती है—गण और पद्य । छन्दरहित रचना को गण कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य । जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है, उसे छन्द कहते हैं । जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहना है, उन्हें छन्द शास्त्र कहते हैं ।

वर्ण या अक्षर—छन्द शास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क ख आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते । अकेला स्वर या व्यंजन-सहित स्वर अक्षर कहलाता है । 'आ', 'का' और 'काम्' में छन्द शास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल एक 'आ' ही है । छन्द में अक्षर गिनते समय व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता ।

गुरु, लघु—ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, ए) को छन्द शास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ऋ, ए, ओ, औ) को गुरु । इसी प्रकार क, ख आदि लघु अक्षर हैं और का, की आदि गुरु । छन्द शास्त्र में निम्नलिखित को गुरु अक्षर माना गया है—

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गो च गुरुर्भवेत् ।

वर्णं सयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥

अर्थात् अनुस्वारयुक्त, दीर्घ, विभक्तयुक्त और सयुक्त अक्षरों से पूर्व वर्ण गुरु होता है । छन्द के पाद या चरण का अन्तिम अक्षर आवश्यकतानुसार लघु या गुरु माना जा सकता है । सो इस श्लोक के अनुसार 'कस' में 'क', 'काल' में 'का', 'दु रा' में 'दु' और 'युक्त' में 'यु' गुरु अक्षर हैं । छन्द के चरणों की लम्बाई और गति को ठीक रखने के लिए अक्षरों के गुरु-लघु के भेद को सम्यक् हृदयगत कर लेना चाहिए । गुरु का चिह्न (ऽ) है और लघु का (।) ।

गण—छन्द शास्त्र में तीन-तीन अक्षरों के समूह को गण कहा गया है । उन गणों के नाम, स्वरूप तथा उदाहरणों को निम्नलिखित तालिका से समझ लेना चाहिए—

गण-नाम	संक्षिप्तनाम	लक्षण	संकेत	उदाहरण
१ मगण	म	तीनों अक्षर गुरु	ऽ ऽ ऽ	भा-वाता, विधादी
२ नगण	न	तीनों अक्षर लघु	। । ।	निगम, सरल
३ भगण	भ	प्रथम अक्षर गुरु	ऽ । ।	भारत, इन्द्रिय
४ यगण	य	प्रथम अक्षर लघु	। ऽ ऽ	यशोदा, सुमित्रा
५ जगण	ज	मध्यम अक्षर गुरु	। ऽ ।	त्रिगीषु, जवान
६ रगण	र	मध्यम अक्षर लघु	ऽ । ऽ	राधिका, राक्षसी
७ मगण	स	अन्तिम अक्षर गुरु	। । ऽ	मविता, कमला
८ लगण	ल	अन्तिम अक्षर लघु	ऽ ऽ ।	तारेक्ष, आकाश

गणों का स्वरूप स्मरण रखने के लिए निम्नलिखित श्लोक कण्ठस्थ कर लेना चाहिए—

मस्तिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
भादिगुरु, पुनरादिलघुर्च ।
जो गुरुसध्यगतो, रलमध्य
सोऽन्तगुरु, कवितोऽन्तलघुस्त ॥

अर्थ—मगण में तीना गुरु, नगण में तीनों लघु भागण म आदि का अक्षर गुरु, वगण में अदि का लघु, जगण में मध्यम गुरु, नगण में मध्यम लघु सगण में अन्तिम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है ।

मात्रा—ह्रस्व या लघु अक्षर के उच्चारण में जितना समय लगता है उसे एक मात्रा कहते हैं और दीर्घ या गुरु के उच्चारण-काल को दो मात्रा । इसलिए जब छन्द में मात्राओं की गिनती की जाती है तब लघु की एक और गुरु की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं । छन्द शास्त्र में एक अक्षर की मात्राएँ दो से अधिक नहीं होती परन्तु सगीत में स्वर को यथेष्ट मात्राओं तक बढ़ाया जा सकता है । एक ही शब्द में अक्षरों और मात्राओं की सट्टया समान भी हो सकती है और भिन्न भिन्न भी । जैसे—‘कल’ में दो अक्षर हैं और दो ही मात्राएँ, ‘काल’ में दो अक्षर और तीन मात्राएँ, ‘काला’ में दो अक्षर और चार मात्राएँ ।

गति—छन्दों में अक्षरों या मात्राओं की नियत संख्या से ही काम नहीं बनता, उनमें गति अर्थात् लय या प्रवाह का भी ध्यान रखना पड़ता है । वार्णिक छन्दों में तो प्रायः गणों का क्रम प्रवाह को अनुगुण रखता है परन्तु मात्रिक छन्दों में इसकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता रहती ही है । जैसे—

अक्ष सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यते विशेषः ।

ज्ञानलवदुर्विदग्ध महापि नर त न रजयति ॥ (भर्तृहरि)

यदि उपशुक्त भाषां छन्द को यों पढ़ें—

‘आराध्य सुखमच्च विशेषः आराध्यते सुखतरम्’ तो कान गूँसत कहा देते हैं कि इसमें आधी छन्द की गति नहीं रही ।

गति—जिन छन्दों में एक एक चरण में अक्षरों या मात्राओं की संख्या बारीकी होती है उन्हें पढ़ने में भी कीट पठिन इ नहीं होती परन्तु लम्बे चरणों के पाठ में बीच में रुकना ही पड़ता है । उस दिशाम रुकने की ही गति या विराम कहते हैं । कुछ कवि इस बात का ध्यान रखते हैं कि यदि किसी शब्द की समाप्ति पर ही आगे परन्तु कभी-कभी वह किसी शब्द के मध्य में भी आ जाती है ।

चरण—अधिकतर छन्दों में चार चरण पाए जा सकते हैं, परन्तु कभी-कभी छन्द न्यूनाधिक चरणों का भी दिखाई देते हैं ।

छन्दों के भेद—छन्दों के मुख्य भेद दो हैं—वार्णिक छन्द और मात्रिक छन्द । मात्रिक छन्द को मात्रा छन्द भी कहा जाता है । वार्णिक छन्दों में गणों की संख्या और गणक्रम पर विशेष ध्यान रहना है तथा मात्रिक छन्दों में मात्राओं की संख्या और गति पर । वगवृत्तों के चरणों में गुरु लघु-वचन प्रायः समान होता है, परन्तु मात्रिक छन्दों में यह बचन नहीं होता । उक्त दोनों भेदों के तीन तीन ऋतु-तर भेद भी होते हैं—सम छन्द, अर्द्धसम छन्द और विषम छन्द । सम छन्दों के चारों चरणों में गणों या मात्राओं की संख्या समान होती है । अर्द्धसम छन्दों में प्रथम

और तृतीय चरणों की तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों की अक्षर या मात्रा-संख्या समान होती है। जो छन्द सत्त दोनों वर्णों में नहीं आते, उन्हें विषम कहते हैं।

नीचे संस्कृत के कुछ प्रसिद्ध छन्दों का परिचय प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार के लिए छन्दःशास्त्र, वृत्तरत्नावली, छन्दोमञ्जरी आदि ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं।

(क) वर्णवृत्त, सम्मल्लुन्द

प्रति चरण ८ अक्षरवाले छन्द

(१) अनुष्टुप् (अन्य नाम—श्लोक)

लक्षण—श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं, सर्वत्र लघु पञ्चमम्।

द्विचतुःपादयोर्ह्रस्वं, सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

अर्थ—इसके प्रत्येक पाद का पाँचवाँ वर्ण लघु होता है और छठा गुरु। सम (द्वितीय तथा चतुर्थ) चरणों का सातवाँ वर्ण लघु होता है और विषम (प्रथम तथा तृतीय) चरणों का सातवाँ वर्ण गुरु। शेष वर्णों के विषय में लघु गुरु की स्वतन्त्रता है।

उदाहरण—यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।

। ५ ५ । ५ ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

। ५ ५ । ५ ।

(२) विद्युन्माला

लक्षण—मो मो गो गो विद्युन्माला।

अर्थ—मगन, मगन और दो गुरु के क्रम से इसके प्रत्येक चरण में ८ वर्ण होते हैं; अर्थात् सब चरणों के सब वर्ण गुरु।

उदाहरण—

म म

गु गु

(क) मौनं ध्यानं भूमौ शय्या, गुर्वी तस्याः कामाऽश्वया।

५ ५ ५, ५ ५ ५, ५ ५

मेघोत्सङ्गे नृत्तासफा, यस्मिन्काले विद्युन्माला॥

(ख) गता माता तेरी घारा, कटै फरा मेरा सारा।

विद्युन्माला जैसी सोई, बीचीमाला तेरी मोई॥ (शुभादेवी)

प्रति चरण १० अक्षरवाले छन्द

(१) रत्नमवती (अन्य नाम—चम्पकमाला)

लक्षण—भूमौ सगुप्तौ रत्नमवतीयम्।

अर्थ—रत्नमवती के प्रत्येक पाद में सगण, मगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं।

उदाहरण—

भ भ स

भु

(क) भग्नमसत्यै कायसहस्रै, मोहमयी गुनी तव माया ।

५ १ १, ५ ५ ५, १ १ ५, ५

स्वप्नविलासा योगवियोगा, स्वप्नवती हा कस्य कृते श्री ॥

(रा) शान्ति नहीं तो जीवन क्या है, कान्ति नहीं तो जीवन क्या है ।

प्रेम नहीं तो आदर क्या है, प्यास नहीं तो सागर क्या है ।

(रामनरेश त्रिपा०)

(२) मत्ता

लक्षण—मत्ता ज्ञेया मभयगयुक्ता (विराम ४, ६) ।

अर्थ—मत्ता के प्रत्येक चरण में भगण, भगण, सगण और गुरु के क्रम से १० वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

भ भ स

भु

पीत्वा मत्ता मधु मधुवाली, कालिन्दीये तटवमकुञ्जे ।

५ ५ ५, ५ १ १, १ १ ५, ५

उहीष्यन्तीर्षजजनरामाः, कामासक्ता मधुजिति चक्रे ॥

प्रति चरण ११ अक्षरवाले छन्द

(१) इन्द्रवज्रा

लक्षण—इयादिन्द्रवज्रा यदि तो जगौ ग । (विराम पादान्त में)

अर्थ—इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण, जगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

त त ज

(क) गोष्ठे गिरि सव्यकरणे धृत्वा,

५ ५ १, ५ ५ १, ५ ५ ५

राटेन्द्रवज्राहतिभुक्तपृथ्वी ।

यो गोपुलं गोपपुलं च सुस्थं,

चक्रे स नो रक्षतु चक्रपाणि ॥

(ख) मैं जो नया अन्ध बिलोकना हूँ,

भाता मुझे सो नव मित्र सा है ।

देखूँ छमे मैं नित बार बार,

मानो मित्र मित्र मुझे पुराना ॥ (गिरधर शर्मा)

(२) उपेन्द्रवज्रा

लक्षण—उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ । (विराम पादान्त में)

अर्थ—उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और दो गुरु अक्षरों के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

ज त ज

(क) तितो जगत्पे भवममस्ते-
 १५ १,५५१, १५१, ५५
 गुंरुदितं ये गिरिषां स्मरन्ति ।
 उपास्यमानं कमलासनाय—
 रुनेन्द्रवज्रायुधवारिनाय ॥

(ख) दहा कि छोग कुछ काम कीने,
 परन्तु पूर्वापर मोच लीने ।
 बिना बिचारे यदि काम होगा,
 कभी न अच्छा परिणाम होगा ॥ (मैथिलीकरण गुप्त)

(३) उपजाति

लक्षण—जिम छन्द के कुछ चरण इन्द्रवज्रा के हों और कुछ रुनेन्द्रवज्रा के, वने उपजाति कहते हैं। इनके १६ भेद होते हैं।

टि०—मम-न-मख्यक अक्षर तथा समान यनिकाले अन्य छन्दों के भी इसी प्रकार के मिश्रण का नाम उपजाति ही है। जैसे वज्रस्थ और इन्द्रवज्रा (११ ११ अक्षरों के छन्द) के मिश्रण से भी उपजाति छन्द बनता है।

उदाहरण—(क) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूने, (इन्द्र.)
 क्रियाविधिज्ञ ममनेष्वसक्तम् । (उपे)
 शूरं कृतज्ञ हृदयैर्द्वं च, (इ.)
 लक्ष्मीः स्वयं वान्छति वासहेतोः ॥ (उ.)
 (ख) इच्छा न मेरी कुछ भी बन्नी मे, (इ.)
 जूबेर का भी जग में जूबेर । (उ.)
 इच्छा मुझे एक दहाँ दहाँ दे, (इ.)
 नये नये उत्तम प्रथ देखू ॥ (उ.) (विरपर शर्मा)

(४) दोषक (अन्य नाम—बन्धु)

लक्षण—दोषकनामनि भवत्यतो गौ । (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—दोषक छन्द के प्रत्येक चरण में वनि मगण और दो शुरु के क्रम से ११ बां होते हैं।

उदाहरण—

म म म

(+) दोषकमर्यविरोधकमुग्रं
 १११, ५११, ५११, ५५,
 छीचपलं युधि कातरचित्तम् ।
 स्याप्यपरं मतिहीनममाथं
 मुञ्चति यो शृपतिः स सुखो स्यात् ॥

(छ) पाकर मानव-देह धरा में,
पादववृत्ति तजो जितना है ।
पुच्छ विषाण विहीन पद्म जो,
होन न चङ्गत प्रेम करो तो ॥ (रामवहोरी शुक्ल)

(५) शालिनी

लक्षण—शालिन्पुष्पा मयै तर्गा योऽब्धिलोके ॥ (४, ७ पर विराम)

अर्थ—शालिनी के प्रत्येक पाद में मगण, दो तगण और दो गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं । अन्धि (४) और लोक (७) पर विराम होता है ।

बदाहरण—

म स ख
(क) अंधो हन्ति ज्ञानवृद्धि विघत्ते
५ ५ ३, ५ ५ १, ५ ५ १, ५ ५,
धर्म दत्ते काममर्थ च सूते ।
शुक्ति दत्ते सर्वदोषास्यमरणा,
पुंसां श्रद्धाशालिनी विष्णुभक्ति ॥
(ख) कैली कैली ठोकरें या रहा है,
तीखी पीछा चित्त में ला रहा है ।
तौ भी प्यारे । हाल तेरा वही है,
विद्वानों की पदती क्या यही है ॥ (छन्दशिक्षा)

(६) रघोद्धता

लक्षण—राजराविह रघोद्धता लगी । (विराम पाद के अन्त में)

अर्थ—रघोद्धता के प्रत्येक चरण में रगण, नगण, रगण और लघु गुरु के क्रम से ११ अक्षर होते हैं ।

बदाहरण—

र न र
(क) किं त्वया सुभट ! दूरवर्जित
५ १ ५, १ १ १, ५ १ ५, १ ५
नन्मनो न मुहदा प्रियं कृतम् ।
यत्पलायनपरायणस्य ते
याति धूलिरधुना रघोद्धता ॥

(७) स्वागता

लक्षण—स्वागतेति रनभाद्गुरुर्युग्मम् । (पादान्त में विराम)

अर्थ—स्वागता के प्रत्येक पाद में रगण, नगण, भगण और दो गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

र न भ

गु गु

(क) स्तनभङ्गविमलैर्गुणतुङ्गै-

५१५, ॥१, ५११, ५५

रयिनामभिमतारणसकै ।

स्वागताऽभिमुखनम्रशिरस्कैः

जीव्यते जगति साधुभिरेव ॥

(ख) रानि ! मोहि गहि नाथ कन्हाई,

साथ मोर जन आवत चारै ।

स्वागतार्थ मुनि आतुर माना,

पार देखि मुद सुन्दर गाना ॥ (भानु कवि)

प्रति चरण १२ अक्षरवाले छन्द

(१) वंशस्थ (नामान्तर-वंशस्थविल तथा वंशस्तनित)

लक्षण—जतौ छु वंशस्थमुदीरितं जतौ । (पादान्त में विराम)

अर्थ—वंशस्थ के प्रत्येक पाद में जगण, तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

ज छ ज र

(क) अनस्य सीमातपजार्तिवारणा

१५१, ५५१, १५१, ५१५

जयन्ति मन्तः सततं समुन्नतः ।

सितातपप्रप्रतिमा विभाम्ति ये

विशालवंशस्थतया गुणोचिताः ॥ (सुब्रह्मण्य)

(ख) स्वरूप होता भिमका न भव्य है,

न वाक्य होने जितके मनोप है ।

अतीव प्यारा बनता मदैव है

मनुष्य मो भी गुण के प्रभाव में ॥ (हरिऔध)

(२) इन्द्रवंशा

लक्षण—स्यादिन्द्रवंशा ततजैरसंयुतै । (पादान्त में विराम)

अर्थ—इन्द्रवंशा के प्रत्येक पाद में दो तगण, जगण और रगण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

त त ज र

(क) कुर्वीत यो देवगुरर्दिजन्मना-

५५१, ५५१, १५१, ५१५

गुर्वीपतिः पालनमर्थलिप्सया ।

तस्येन्द्रवंशोऽपि गृहीतजन्मना-

संज्ञायते श्रीः प्रतिकूलवर्तिनी ॥

(ख) यों ही बज हेतु हुए बिना नहीं,
होने बड़े लोग कठोर यों नहीं ।
वे हेतु भी यों रहते गुप्त हैं,
ज्यों यदि अम्बोजि में प्रसन्न हैं ॥ (चन्द्रहास)

(३) तोटक :

लक्षण—इह तोटकमग्न्युचिमे प्रथितम् । (पादान्न में विराम)

अर्थ—तोटक के प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं ।

उदाहरण—

म स म स

(क) स्थल तोटकमग्न्युचिमे

।। ५, ११५, ११५, ११५

प्रमदाऽधिकृत स्थमनोपहतम् ।

उपवाभिरद्युद्धमति सचिवं

नरनायक ! मोरकमायुधिकम् ॥ (छन्दोदृष्टि)

(स) अब लों न कहीं वह देख मिला,

इसका न जिसे उपदेश मिला ।

उम गौरव के गुण अग्न हुए,

गुण के गुण शिष्य समस्त हुए ॥ (नाथूराम शर्कर)

(४) द्रुतविलम्बित

लक्षण—द्रुतविलम्बितमाह नभो भरी । (पादान्न में विराम)

अर्थ—द्रुतविलम्बित के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, अगण और रगण के क्रम में ११ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

न म म र

(क) तराणिवापुलिने नखरलदी-

।।।, ५ ।।, ५ ।।, ५ ।।

पण्डित सह केलिकुन्दलात् ।

द्रुतविलम्बितचारविहारिण

हरिमहं हृदयेन मदा वहे ॥ (छन्दोमयी)

(स) मन ! रमा रमणी रमणीवता,

मिल गई यदि वे निवि शोभ मे ।

पर निमे न मिन्दी बबिना-मृषा

रमिता निकता-सम है उसे ॥ (रामचरित उपाध्याय)

(५) मौक्तिकदाम

लक्षण—स्तुतंगण वद मौक्तिकदाम । (पादान्न में विराम)

अर्थ—मौक्तिकदाम (हिन्दी, मौक्तिकदाम) वद के प्रत्येक चरण में चार सगण के क्रम में १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

ज ज ज ज

- (क) मया तव किञ्चिदकारि कदापि,
 । ५ ।, । ५ ।, । ५ ।, । ५ ।
 विलाग्निनि । वाक्यममुस्मरताऽपि ।
 तथापि मनस्तत्र नाश्वरानाथ,
 मज्जामि कुतो भ्रष्टीमपहाय ॥ (बाणीभूषण)
- (घ) बड़े जन को नहीं मॉगन जोग,
 फँदे हल साधन में लडु लोग ।
 रमापनि विष्णु असग अनूप,
 धर्या एहि कारण बानन रूप ॥ (देवीप्रसाद पूण)

(६) भुजङ्गप्रयात

लक्षण—भुजङ्गप्रयात भवेद्यैश्चतुर्भिः । (पादान में विराम)

अर्थ—भुजङ्गप्रयात के प्रत्येक खरण में चार यण के क्रम से १२ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

य य य य

- (क) धनैर्निष्कुलीना कुलीना भवन्ति,
 । ५ ५, । ५ ५, । ५ ५, । ५ ५
 धनैरापद मानवा निस्तरन्ति ।
 धनैर्मय परो बान्धवो नास्ति लोके,
 धनान्यर्जयन्त्यम् धनान्यर्जयन्त्यम् ॥
- (घ) अजमा न आरंभ तेरा हुआ है,
 किसी से नहीं जन्म तेरा हुआ है ।
 रहेगा सदा अठ तेरा ॥ होगा,
 किसी काल में नाश तेरा न होगा ॥ (नाभूषणशर्कर)

(७) स्रग्विणी

लक्षण—रैश्चतुर्भिर्गुणैः स्रग्विणी सम्मता । (पादान में वृत्ति)

अर्थ—स्रग्विणी के प्रत्येक पाद में चार रगण के क्रम से १२ अक्षर होते हैं ।

उदाहरण—

र र र र

- (क) इन्द्रनीलोपलनेव या निमिता
 ५ । ५, ५ । ५, ५ । ५, ५ । ५
 शानकुम्भदवालकृता शोभते ।
 नव्यमेघच्छवि पीतवासा हरे—
 मूर्तिरास्ता जयायोरमि स्रग्विणी ॥

(स) वे गृही धन्य है ओ मनोहारिणी,
 मिष्टमात्रो सुशीला मदाचरिणी ।
 धर्मशीला सती धीरताधारिणी,
 सुन्दरीयुक्त है प्रेमशृङ्गारिणी ॥ (रामनेत्र विपाठी)
 प्रति चरण १३ अक्षरवाले छन्द

(१) प्रहर्षिणी

लक्षण—श्यामाभिर्मनजरगा प्रहर्षिणीयम् । (विराम ३, १०)

अर्थ—प्रहर्षिणी छन्द के प्रत्येक पाद में मगण, नगण, जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३ वर्ण होते हैं । तीन और आदा (दिशा १०) पर बनि होती है ।

उदाहरण—

म म ज र

(क) से रेखाध्वजकुलिशातपन्नचिह्नं,
 S S S, 111, 131, 515, S
 सम्राजध्वजयुगं प्रसादलभ्यम् ।
 प्रधानमणतिभिरगुलीयु चक्र
 भौल्लिखक्युतमकरन्दरेणुगौरम् ॥ (रघुवश ५८८)
 (ख) मानो जू, रंग रहि प्रेम में तुम्हारे,
 प्राणों के, तुमहि अपार हो हमारे ।
 बैसी हो, बिचरु राम है कन्हारं,
 भावै जो, शरद प्रहर्षिणी जुन्दारै ॥ (भानुकवि)

(२) रुचिरा (नामान्तर—अतिरुचिरा)

लक्षण—चतुर्प्रहरितरुचिरा जमस्तजगा । (विराम ४, ९ पर)

अर्थ—रुचिरा या अतिरुचिरा छन्द के प्रत्येक चरण में जगण, मगण, सगण, जगण और गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं । चार और गह (९) पर बनि होती है ।

उदाहरण—

ज म म ज

(क) कदा मुख वरतनु कारणादृते,
 1 S 1, S 11, 11 S, 131, S
 तदागतं क्षणमपि कोपपात्रताम् ।
 भवर्षणि प्रहकलुपेन्दुमण्डला,
 विभावरी कथय कथ भविष्यति ॥ (मालविकाग्निमित्रम् ४१११)
 प्रति चरण १४ अक्षरवाले छन्द

(१) वसन्ततिलका (अन्य नाम—सिहोन्नता तथा उर्द्धावणी)

लक्षण—उक्ता वसन्ततिलका तमज्जा जगौ ग ।

अर्थ—वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में तगण, नगण, दो जगण और दो गुरु के क्रम से १४ वर्ण होते हैं ।

उदाहरण—

त म ज ज

गु शु

- (क) जाल्यं धियो हरति मित्रति वाचि सत्यं,
 ५ ५ १, ५ १ १, १ ५ १, १ ५ १, ५ ५
 मानोवति दिशनि पापमपाद्भोवि ।
 चेतः प्रमादयति दिक्षु तनोति कीर्ति,
 मत्स्यगतिः कथय किं न करोणि पुमाम् ॥ (नीतिशतक)
- (ए) रोषो दुस्वी विषम प्रापन मे पडे वी,
 सेवा अनेक करते निज ह्मन से थे ।
 ऐसा निरत मन में न मुझे दिखाया,
 कोरे जहाँ दुखित हो पर वे न होवे ॥ (हरिऔध)

प्रति चरण १५ वर्णवाले छन्द

(१) मालिनी

लक्षण—ननमयययुतेयं मालिनी भोगिल्लोके । (विराम ८, ७ पर)

अर्थ—मालिनी के प्रत्येक चरण में नगण, नगण, मगण और दो यगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । भोगी (८), लोके (७) पर यनि होती है ।

उदाहरण—

न न म य य

- (क) मनसि वचमि काये, पुण्यपीयूषपूर्णा-
 १ १ १, १ १ १, ५ ५ ५, १ ५ ५, १ ५ ५
 स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्राणयन्तः ।
 परगुणपरमाणून्, पर्वतीकृत्य नित्यं
 निजहृदि विरुसन्तः, समित सन्तः क्रियन्तः ॥ (नीतिशतक)
- (ए) सहृदय जन के जो, कठ का द्वार होता,
 मुदिन मपुकरी का, जीवनाधार होता ।
 बह कुमुम रंगीला, धूल में जा पड़ा है,
 नियति नियम तैरा, भी बटा ही कहा है ॥ (रूपनारायण पंडित)

(२) चामर (अन्य नाम—तूणक)

लक्षण—तूणक समानिका पदद्वयं विनान्तियम् ॥ (विराम ८, ७)

अर्थ—तूणक या चामर छन्द के प्रत्येक चरण में रगण, जगण, रगण, जगण और रगण के क्रम से १५ अक्षर होते हैं । आठवें और पादान्त में यनि होती है ।

उदाहरण—

र ज र ज र

- (क) मा सुगन्धितकं प्रकाशि भूतपूर्ति,
 १ १ ५, १ ५ १, ५ १ ५, १ ५ १, ५ १ ५
 पंचगणवाणजालपूर्णहेनितूणम् ।
 राधिका चित्तव्यं माधवाद्यमासि माधवे,
 मोहमेति निर्भरं त्वया दिना कलानिधे ॥

पञ्चचामर

लक्षण—जरौ जरौ ततो जगौ च पञ्चामरं बदेत् ॥ (८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर विराम)

अर्थ—पञ्चदशर छन्द के प्रत्येक पाद में जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और गुरु के क्रम में १६ वर्ण होते हैं। ८, ८ या ४, ४, ४, ४ पर यति होती है।

सदाहरण—

ज र ज र ज

(क) सुरद्रुमूलमण्डपे विचित्ररत्ननिर्मिते
 । ५ ।, ५ । ५ । ५ ।, ५ । ५ । ५ ।, ५
 लसद्वितानभूषिते सलीलविभ्रमालसम् ।
 सुरागानाभयलवीकरप्रपंचचामर-
 स्फुरत्समीरवीजित सदाप्युतं भजामि तम् ॥

(य) उसी उदार की कथा सरम्बती बघानती,
 उसी उदार से बरा कृतार्थ भाव मानती ।
 उसी उदार की सदा सजीव नीति कूजती,
 तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती ॥ (मैत्रिलीशरण गुप्त)

(१) शिखरिणी

लक्षण—रसै सुद्वैदिल्लया यमननभला ग- शिखरिणी । (६, ११ पर विराम)

अर्थ—जिस छन्द के प्रत्येक चरण में वगण, मगण, नगण, सगण, भगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर हों तथा रम (६) और रुद्र (११) पर वृत्ति हो उसे शिखरिणी कहते हैं।

अवसाहण—

य म न स भ

(क) करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुरादप्रणयिता,
 १३ ५, ५ ५ ५, १११, ११५, ५११, १३
 मुखे सत्प्रा वाणी, निजयिभुजयोर्वीर्यमनुलम् ।
 हृदि स्वच्छा वृत्ति, श्रुतमधिगतं च श्रवणयो-
 र्विनाप्यश्रयेण, प्रकृतिमद्वतां मण्डनमिदम् ॥ (अर्चहरि)

(॥) छटा कैसी प्यारी, प्रकृति निय के चन्द्रमुख की
नया नीला ओढ़े, बसत चटखीला गगन का ।
जरी-मम-रूपी, निस पर मित्रारे सव जड़े
गळे में स्वर्णगा, अनिलजिन माला सम पड़ी ॥ (सत्परायण रत्नी)

(२) पृथ्वी

लक्षण—जसौ जसयला वसुप्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः । (८, ९ पर विराम)

अर्थ—पृथ्वी एन्द के प्रत्येक पाद में जगण, सगण, जगण, सगण, यगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ वर्ण होते हैं। वसु (८) और ग्रह (९) पर यति होती है।

उदाहरण—

ज स ज स प ल गु
 (क) लभेत सिकृतासु तैलमपि यन्नतः पीडयन्
 । ५ ।, । १५, । ५ ।, । १ ५, । ५ ५, । ५
 पिबेच्च सुगवृष्णिकासु खलिलं पिपासादिद्वः ।
 कदाचिदपि पर्यटन्नाशविपाणामासादयेत्
 न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ (भवहरी)
 (ख) अगस्त अपिरात्र जू, वचन एक मेरे सुनी,
 मगस्त सब भानि भूतल सुदेश जो मैं सुनी ।
 सुनीर तरुखड भंडिन सगृह घोभा घरें,
 तहाँ हम निवाम की, विमल पर्णशाला करैं ॥ (रामचन्द्रिका)

(३) हरिणी

लक्षण—समरसलागः पद्मेर्द्धेयेर्द्धेयिणी मता । (६, ४, ७ पर विराम)

अर्थ—हरिणी के प्रत्येक चरण में नगण, सगण, मगण, रगण, सगण और लघु-गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। छठे, दसवें और सत्रहवें अक्षर के बाद विराम होता है।

उदाहरण—

न स म र स ल गु
 वहति भुवनधेर्णी शेषः फणाफलकस्थिता,
 । । ।, । १५, ५ ५ ५, ५ । ५, । १५, । ५
 कमठपतिना मध्येष्टं सदा स च धार्यते ।
 तमपि कुट्टे क्रोडाधीनं पयोधित्वाद्रा-
 दहह महता निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ॥ (भवहरी)

(४) मन्दाक्रान्ता

लक्षण—मन्दाक्रान्ताम्बुधिरमनगैर्मो भनौ तौ गयुगमम् । (४, ६, ७ पर विराम)

अर्थ—मन्दाक्रान्ता के प्रत्येक पाद में मगण, भगण, नगण, दो गण और दो गुरु के क्रम से १७ अक्षर होते हैं। अम्बुधि (सप्तर ४), रत (६) और नग (७) पर यति होती है।

उदाहरण—

म भ न त त ग गु
 (क) मौनान्मूक, प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा,
 ५ ५ ५, ५ । । ।, ५ ५ ।, ५ ५ ।, ५ ५
 एष्टः पार्श्वे भवति च वसन्दूरतोऽप्यप्रगल्भः ।
 सान्त्या भीर्यदिन सहते प्रायशो नाभिजातः,
 सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥ (भवहरी)

(१) शार्दूलविक्रीडित

लक्षण—सूर्याग्नेर्मसजस्वराः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम् । (१२, ७ पर निरात्र)

अर्थ—शार्ङ्गविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, सगण, अगण, सगण, दो तगण और गुरु के क्रम से ११ वर्ण होते हैं। यति स्वर्ग (१२) और अन्ध (७) पर होती है।

उदाहरण—

म स ख स व व

(क) केयूराणि न भूषयन्ति पुरर्यं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
 ५५५, १ १ ५, १५१, ११५, ५५१, ५५ १, ५
 न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ।
 वाष्येका समलङ्करोति पुरर्यं वा संस्कृता धार्यते,
 क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ (महर्षिः)

(ख) छोटे और बड़े जहाज जल में, देखो वहाँ वे खड़े,
सो भी हृदय विचित्र किन्तु हमको, वे हार्नकारी बड़े ।
ते जाते वरवस्तु देशभर की जाने वहाँ की कहाँ,
छाते जेजल कपरी चटक की, जीर्ण विदेशी यहाँ ॥ (कन्दीलाल गोस्वामी)

(१) गीतिका

लक्षण—सज्जा भरी सलगा यदा कथिता तदा स्वात् गीतिका । (५, ७, ८ पर विराम)

अर्थ—पौटिका छन्द के प्रत्येक चरण में सृगण, जगण, खगण, भगण, रागण, लगण और लघु गुरु के क्रम से २० वर्ण होते हैं। पाँचवें, बारहवें और बीसवें अक्षर के बाद यति होती है।

कथा—

स ल ज भ र स

(क) करतालचंचलकंदनस्वनमिश्रणेन मनोरमा,
 ११५, १११, १११, ५११, ५१५, ११५, ११५
 रमणीयवेषुनिनादरगिमसंगमेन सुखावहा ।
 बहुलानुरागनिवाभराससमुद्रवा तद रागिणे,
 विदधौ हरिं खलु वल्लवीजनचारचामरगीतिका ॥

(ख) मज नीम री ! सुखी सुखी सुन मो वहा तित भायके,
नय कान् लखन बानवी सह राम को नित भायके ।
पद मो सुरीरहि राम के कान् धाम की लय बावह,
करवीन टे अति दीन के तित गीति बान् सुनावह ॥ (बान् कवि)

प्रति चरण २१ वर्णवाले छन्द

(१) स्रग्धरा

रङ्गा—अम्भैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् । (७, ७, ७ पर विराम)

अर्थ—स्रग्धरा के प्रत्येक पद में मण्ड, रग, भग, नयन और तीन धगग के क्रम से २१ अक्षर होते हैं । सानवें, चौदहवें और इक्कीसवें अक्षर के अन्त में यति होती है ।

उदाहरण—

म र म न य य य

(क) प्राणाधातास्त्रित्तिः, परधनहरणे संयमः, सत्यवाक्यं,

५ ५ ५, ५ १ ५, ५ १ १, १ १ १ १ ५ ५, १ ५ ५, ५ १ ५ ५

काले शक्त्या प्रदानं, युवतिजनकया, मूकभावः परेपाम् ।

वृष्णास्रोतोविभंगो, गुरुषु च विनयः, सर्वभूतानुकम्पा,

सामाभ्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहृतविधिः, श्रेयस्सामैष पन्थाः । (नवहरी)

(ख) नाना फूलों-फलों में, अनुपम जगत् की, बाटिका है विविधा,

भौता है नैवेद्य हो, मधुप झुक तप कोविन्द पानशील ।

कौट भी है अनेकों, पर धन हरने में सदा अग्रगामी,

चौर है एक माली, छुपि इन सबकी, जो सदा से रहा है ॥ (रामनेश त्रिपाठी)

(ख) वर्णवृत्त, अर्द्धस्रग्धरा छन्द

(१) वियोगिनी (अस्य नाम—सुन्दरी)

रङ्गा—विषमे सप्तज्ञा गुरुः समे, सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।

अर्थ—विनोगिनी के विषम (प्रथम, द्वितीय) चरणों में दो सग, जगण और गुरु के क्रम से

१०-१० अक्षर और सम (तृतीय, चतुर्थ) चरणों में मगण, मगण, रगण, रगु और गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर होते हैं । (१०, ११, १०, ११) ।

उदाहरण—

स स ल

(क) सहसा विदधीत न क्रियाम्,

१ १ ५, १ १ ५, १ ५ १, ५

अविवेकः परमापदां पदम् ।

वृणुते हि विदुष्यकारिणं

स म र

लगु

गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥ (किराताजुनीय २।३०)

१ १ ५, ५ १ १, ५ १ ५, १ ५

(ख) चिर-काल रम्य हो रहा,

दिस मयङ्ग नवीन्द्र का कहा ।

दय हो उम काटिदास की,

कविता—केलि—कला—विलास की ॥ (छन्दरत्नावली)

(२) हरिणप्लुता

लक्षण—सयुगात् सलघू विषमे गुर्युजि नभौ भरकौ हरिणप्लुता ।

अर्थ—हरिणप्लुता छन्द के विषम चरणों में तीन सगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और सम चरणों में नगण दो भगण और रगण के क्रम से १२-१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

स स स
 स्फुक्फेनचया हरिणप्लुता,
 ॥ ५, ॥ ५, ॥ ५, ॥ ५
 बलिमनोज्ञनटा तरणे सुता ।
 कलहसकुलारवशालिनी,
 न म म र
 विहरतो हरति स्म हरेर्मन ॥ (छन्दोमञ्जरी)
 ॥ १, ५ ॥ १, ५ ॥ १, ५ ॥ १, ५ ॥
 (३) अपरवक्त्र

लक्षण—अयुजि मनरला गुर समे ।

तदपरवक्त्रमिदं नञी जरौ ॥

अर्थ—अपरवक्त्र वृत्त के विषम चरणों में दो नगण, एक रगण और लघु-गुरु के क्रम से ११-११ अक्षर और समचरणों में नगण, दो जगण और रगण के क्रम से १०-१२ अक्षर होते हैं ।

(११, १२, ११, १२)

उदाहरण—

म न र
 स्फुटमुमधुरवेणुगीतिभि-
 ॥ १, ॥ १, ५ ॥ ५, ॥ ५
 स्तम्भपरवक्त्रमवेच साधवम् ।
 सुगयुवतिगणै नम स्थिता
 न ज ज र
 भजवनिता पृतचित्तविभ्रमा ॥ (छन्दोमञ्जरी)
 ॥ १, ५ ॥ १, ५ ॥ ५, ५ ॥ ५ ॥

(४) पुष्पिताग्रा (नामान्तर औपचन्द्रसिद्ध)

लक्षण—अयुजि नयुगरेषतो यकारो,

युनि च नचौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।

अर्थ—पुष्पिताग्रा के विषम चरणों में दो नगण, रगण और यगण के क्रम से १०-१२ अक्षर तथा सम चरणों में नगण, दो जगण, रगण और गुरु के क्रम से १३-१३ अक्षर होते हैं ।

(१०, १३, १०, १३)

उदाहरण—

न न र य

(क) अथ मदनवधूरपप्लवान्त

॥ १, १११, ३१३, १३३

व्यसनकृशा परिपालयांबभूव ।

शशिन इव दिवातनस्य लेखा

म ज ज र

किरण परिस्रवधूसरा प्रदापम् ॥ (कुमारसम्भव ४१४९)

॥ ११, १३१, १३१, ३१३, ३

(स) प्रभु सम नहि अन्य कोर दाना,

सुप न जु व्यावत तीन लोक प्राता ।

मकल असन कामना विहरै,

हरि नित रेबहु निच चित्त आई ॥ (मानुक्वि)

(ग) वर्णवृत्त, विष्णु छन्द

उद्गता

लक्षण—प्रथमे सञौ यदि सलौ च नसजगुस्काण्यमन्तरम् ।

यद्यथ भनजलगाः स्युरथो सजसा जगौ च भवतीयमुद्गता ॥

अर्थ—उद्गता के प्रथम चरण में सग, जग, सग और लु के क्रम से १० अक्षर, द्वितीय चरण में नग, सग, जग और गुरु के क्रम से १० अक्षर, तृतीय चरण में भग, नग, जग और लु गुरु के क्रम से ११ अक्षर तथा चतुर्थ चरण में सग, जग, सग, जग और गुरु के क्रम से १३ अक्षर होते हैं । (१०, १०, ११, १३)

उदाहरण—

स ज स

अथ वासवस्य वचनेन,

॥ ३, १३१, १३१, १

म स ज

रचिवदनखिलोचनम् ।

॥ ११, १३१, १३१, १३

म न ज

वलान्तिरहितमभिराधयितुं,

३ १ १, १११, १३१, १३

स ज स ज

विधिवत्तपांसि विदुषे धनजयः ॥ (किरातार्जुनीय १११२)

॥ १३, १३१, १३१, १३१, ३

(घ) मात्रिक वा जाति छन्द

आर्या (विषम छन्द)

लक्षण—यस्या. पादे प्रथमे, द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।

अष्टादश द्वितीये, चतुर्थके पञ्चदश सार्यो ॥

अर्थ—आर्याछन्द के प्रथम और द्वितीय चरण में १२ १२ मात्राएँ, द्वितीय में १८ तथा चतुर्थ में १५ मात्राएँ होती हैं । (१२, १८, १२, १५ मात्राएँ)

उदाहरण—

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ	
(क) सिंह शिशुरपि निपतति,	= १२
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ	
मदमलिनकपोलभित्तिषु राजेषु ।	= १८
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ	
मृत्तिरियं सत्त्वता,	= १२
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ	
न राज्ञ वयस्तेजसा हेतु ।	= १५

- (ख) कवि निर्धन भी होकर,
गठ की सेवा कभी न करता है ।
रत्नाकर में जाकर,
हंस वनी क्या विचरना है ॥ (राजचरित उपाध्याय)



पञ्चम परिशिष्ट

संस्कृत-साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय

अनाङ्गद्वय—ये चेदिदेश के कलचुरीवंशीय नृप नरेन्द्रवर्धन के पुत्र थे। वास्तविक नाम माण्डरान (माण्डराज) था। समय अष्टम शतक का उत्तरार्ध है। इनकी कृति 'रापस वत्सराज' (नाटक) में वदयन तथा वासवदत्ता की प्रसिद्ध कथा है। 'भायुराजसमो बभे नान्य कलचुरिः कवि' (राजशेखर)।

अश्वघोष दीक्षित—इनका जन्म मारवाजगोत्रीय रत्नराज के गृह में १५५४ ई० में काञ्ची के समीप कण्ठपलम में हुआ था। ये अनेक वर्षों तक वेङ्गोर और विजयनगर की राजसभाओं में सम्मानित रहे। प्रख्यात वैष्णव भट्टोनीदीक्षित को वेदान्त इन्होंने पढ़ाया था। पूर्व तथा उत्तरमीमांसा के ये पारङ्गुषा पंडित थे। १६२९ ई० में इन्होंने स्वाराष्ट्र विद्वान् पुत्रों की उपस्थिति में विद्वन्वरध में सर्वप्रमाणविसर्जन किया। काव्य, अलंकार, तर्क, दर्शन आदि अनेक विषयों पर इन्होंने १०४ ग्रंथों की रचना की जिनमें से काव्यकृतियाँ निम्नलिखित हैं—शिवप्रकाशिका, दशकुमार चरितप्रभू, पंचरत्नस्तव, शिष्यकर्णामृत, नैराभ्युदायक, भक्तभरत्स्तव, शान्तिस्तव, रामायण-साधुपर्यायनिर्णय, भरतस्तव, भरद्वाजस्तव, आदित्यरत्नोत्तरस्तव आदि। बभ्रुमतीचित्रनेत्रिकाश (नाटक), चित्रमीमांसा, वृत्तिवार्त्तिक, मुद्ररत्नानन्द (अलंकार) आदि के अतिरिक्त इन्होंने कई ग्रंथों पर टीकाएँ भी रची हैं।

अमरक—इस कवि का ब्रह्म, वैश्व, बाल आदि अष्टाक्षर हैं। आनन्दवर्द्धन ने 'ध्वन्यालोक' में इन के 'अमरकदातक' के श्रृङ्गारी मुक्तकों की सरसता की मुक्तकठ से प्रशंसा की है। अतः ये नवमी शताब्दी से पूर्व विद्यमान थे। वे शब्द-कवि न थे, रस-कवि थे। हिन्दी के विहारी, पद्माकर आदि कवियों पर इनके काव्य का पर्याप्त प्रभाव लक्षित होता है।

अश्वघोष—संस्कृत के बौद्ध कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। इनका जन्म साकेत में सम्भवतः आश्वमेधश में सुवर्णाक्षी के गर्भ से हुआ था। परम्परानुसार ये महाराज कनिष्क (७८ ई०) के दूत तथा आश्रित कवि थे। ये दार्शनिक तथा समीक्षक भी थे। बौद्ध धर्म के बाद इन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार में भरसक सहयोग दिया। 'सौन्दरानन्द' तथा 'बुद्धचरित' इनके प्रख्यात महाकाव्य हैं। 'सौन्दरानन्द' के १८ सर्ग हैं। उनमें बुद्ध के उपदेश से उनके अनुचर नन्द द्वारा पत्नी सुदरी के परिचय तथा दीक्षाग्रहण की कथा है। 'बुद्धचरित' के २८ सर्गों में से १७ उपलब्ध हैं और बुद्धचरित विषयक है। वैदभी रीति में रचित ये महाकाव्य संस्कृत काव्यसाहित्य के अलंकार हैं। अश्वघोष संस्कृत के प्रथम बौद्ध नाटककार हैं। इनके तीन नाटक उपलब्ध हुए हैं। 'शारिपुत्र-प्रकरण' नौ सर्गों में है और पूर्ण है। इसमें बुद्ध के उपदेश से शारिपुत्र और मौद्गल्यायन के दीक्षित होने का चित्रण है। शेष दो नाटक लुप्तनामक और संहित हैं। उनमें एक का प्रधानक 'प्रबोधचन्द्रोदय' के समान रूपकप्रकार है और दूसरे का 'वृत्तकटिन' के तुल्य वैश्यानायकप्रणयप्रकार है।

आर्यशूर—ये बौद्धकवि सम्भवतः पाँचवीं शताब्दी में विद्यमान थे। 'जातकमाला' तथा 'पारमिता-नमाम' इनकी दो प्रख्यात कृतियाँ हैं। इनकी कीर्ति का आधार-साम्भ 'जातकमाला' है जिसमें महात्मा बुद्ध के २४ जन्मों की कथाएँ गद्य पद्यमयी सरस भाषा में वर्णित हैं। दूसरे काव्य में दान, शील, क्षान्ति आदि विषयों पर रचना की गई है। 'जातकमाला', 'पारमिताम' के आधार पर रचित स्वतंत्र कृति है। इसके 'पद्यभाग' के समान गद्यभाग भी सुश्लिष्ट, सुन्दर तथा सरस

है।' जातकमाला के कुछ अंश का चीनी में अनुवद १६० और ११२७ ई० के मध्य में किया गया था।

कलहण (कल्याण)—इनके पिता वणपक काश्मीरनरेश हर्ष (१०४८-११०१ ई०) के प्रधानमंत्री थे। वे अलकदत्त नामक व्यक्ति के आश्रित थे। इन्होंने राज-दरबार से दूर रहकर अपनी प्रवृत्ति ऐतिहासिक काव्यकृति 'राजतरंगिणी' की रचना सुस्तल के तनुज राजा जयसिंह (११२७-५९ ई०) के शासनकाल में की थी। 'राजतरंगिणी' का निमित्तिकाल ११४८-११५० ई० है। इसमें काश्मीर के राजनीतिक इतिहास, भौगोलिक विवरण, सामाजिक व्यवस्था, साहित्यिक समृद्धि आदि का सविस्तर और रोचक उल्लेख किया गया है। 'राजतरंगिणी' काव्य तथा इतिहास दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें काश्मीर के प्राचीन काल से लेकर बारहवीं शती तक का विश्वसनीय वृत्त प्रस्तुत किया गया है।

कविराज सूरि—जयन्तपुरी के राजा कामदेव (११८७-९७ ई०) के सम्बन्धित माधवभट्ट की छोटी उपाधि कविराज थी। इनकी रचना 'राघवपाण्डवीय' अपने उग की अपूर्व कृति है जिसका अनुकरण परबर्ती अनेक कवियों ने किया। इसका प्रत्येक पद्य छिष्ट है और रामायण तथा महाभारत दोनों से सम्बन्धित अर्थ व्यक्त करता है। इसी के अनुकरण पर हरदत्त ने 'राघव नैषधीय', चिदंबर ने 'राघवपाण्डवपादवीय' और विश्वामाधव ने 'पार्वतीदत्तमणीय' नामक काव्यों की सृष्टि की। इस प्रकार की छिष्ट रचनाएँ सस्कृत के अतिरक्त सभी भाषाओं में अलभ्य हैं और सम्भवतः अलभ्य रहेंगी।

कालिदास—कुछ विद्वान् इन्हें ई० पू० प्रथम शताब्दी में मानते हैं तो कुछ छोटी शती ई० की में। कोई इनकी जन्मभूमि काश्मीर मानता है, कोई बंगाल और कोई उज्जयिनी। बहुमत उज्जयिनी के प्रति विशेष पक्षपात तथा सूक्ष्म भौगोलिक परिचय के आधार पर कालिदास उज्जयिनीवासी प्रतीत होते हैं।

कविर्षा—कृतसंहार, कुमारसम्भव, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, रघुवन्ध, अभिज्ञान शाकुन्तल, मेघदूत।

'कुमारसम्भव' तथा 'रघुवन्ध' महाकाव्य हैं। 'कुमारसम्भव' के १७ सर्गों में शिव-पार्वती के विवाह, कार्तिकेय की उत्पत्ति तथा तारकाशूर के वध की कथा है। 'रघुवन्ध' के १९ सर्गों में सूर्य वशी रानाओं का कीर्तमान है। मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल—तीनों नाटक हैं। प्रथम में राजा अग्निमित्र और मालविका की, द्वितीय में राजा पुरुरावा और अम्बरा उर्वशी की तथा तृतीय में राजा दुष्यन्त और शाकुन्तला की प्रेमकथा का वर्णन है। 'कृतसंहार' और 'मेघदूत' मन्त्रुत गीतिकाव्य की प्राचीनतम कृतिर्षा हैं। कृतसंहार के १४४ पद्यों में शकुन्तला की सुन्दर वर्णन है तथा उनका प्रेमियों के हृदय पर प्रभाव अंकित किया गया है। 'मेघदूत' के १२१ पद्यों में एक निर्वासित विरही यक्ष की मनोव्यथा का हृदयस्पर्शी चित्रण किया गया है। कालिदास की सर्वप्रियता का कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, प्णित्योपेत, परिष्कृत शैली। इन्होंने सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे हैं। उपमाओं में वे अपना जोड़ नहीं रखते। भाव, रस, भाषा, शैली, छन्द, अलंकार जिस किमी भी दृष्टि से देखें कालिदास उत्कृष्टतम ठहरते हैं।

कुमारदास—मिथल की जनधनि के अनुसार कुमारदास ने वहाँ ५१७-५२६ ई० तक शासन किया था। आधुनिक विद्वान् इन्हें ६५० और ७५० ई० के बीच में मानते हैं। इनके महाकाव्य 'जानकीहरण' के २५ में से १५ सर्ग ही प्राप्त हैं। कथा रामायण की पुरानी ही है परन्तु वणत-शैली अभिरूप है। प्रसाद, सुकुमारता, शब्दसौष्ठव तथा नादसौन्दर्य कृति के उल्लेख्य गुण हैं। रामचंद्र (९०० ई०) ने इसकी प्रशंसा में यों लिखा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।

कवि कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः ॥

रुबुश की विद्यमानता में जानकीहरण करना या नौ रावण का काम है या फिर कुमारदाम का ।
कृष्ण मिश्र—‘अबोधकद्रोह’ नामक रूपक नाटक के रचयिता कृष्ण मिश्र नेबालमुक्ति के राना
 जीनिवर्मा के शासनकाल में ११०० ई० के लगभग विद्यमान थे । भाम के ‘बालचरित’ के समान
 इस नाटक में विवेक, मोह, शान, विद्या आदि भवों को नवी पुरुष पात्रों के रूप में कल्पित किया
 गया है । इसी कृति के अनुकरण पर यशपाल ने ‘मोहपराजय’, बैरानाथ ने ‘मकरपस्योदय’
 तथा कविकर्णपुर ने ‘चेतन्यबन्दोदय’ की रचना की । हिन्दी कवि केशवदाम ने ‘विज्ञानगीता’
 में इसका छन्दोबद्ध अनुवाद किया है । दार्शनिक दृष्टि में कृति महत्त्वपूर्ण है ।

शेमेन्द्र—सिंधु के पौत्र तथा प्रकाशेन्द्र के पुत्र शेमेन्द्र का जन्म काश्मीर के एक धनाढ्य और
 उदार परिवार में हुआ था । इन्होंने आचार्य अभिनवगुप्त से साहित्याध्ययन किया था । ये
 ११वीं शती के मध्य में विराजमान थे । लैबमडल में रहते हुए भी ये परम वैष्णव थे और
 इसका कारण था भागवताचार्य सोमपाद की शिक्षा ।

इनके बृहदाकार अनेक ग्रंथों में से प्रमुख ये हैं—राम यमजरी, भ रतमजरी तथा बृहत्कथा
 मञ्जरी । ये क्रमशः रामायण, महाभारत और गुणाढ्य की बृहत्कथा के आधार पर रचित स्वतन्त्र
 काव्यकृतियाँ हैं । ‘दशावतारचरित’ में विष्णु के दशावतारों का तथा ‘बोधिमत्स्यवदान’
 कथ्यलता में जानक कथाओं का सरल सुन्दर वर्णन है । अन्धाकार कृतियों में कलविलाम, चतुर्वर्ग
 मग्नह, चारुचर्या, नीतिकल्पतरु, समयमादका और सेन्यमेवक्रोपदेश व्यवहारविषयक सुन्दर
 काव्यकृतियाँ हैं । इनकी रचनाएँ साहित्यिकता से पूर्ण भी हैं और लोकोपकार की भावना से
 ओत प्रीत भी ।

गोवर्धनाचार्य—ये बंगाल के अन्तिम हिन्दू नरेश लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) की सभा के प्रति
 भित्त कवि थे । ‘आयसप्तशती’ इसकी एकमात्र रचना है जो ‘हाल’ की ‘गाथासप्तशती’ के
 अनुकरण पर रचित है । ‘गाथासप्तशती’ तो हालकृत संग्रह है परन्तु ‘आयसप्तशती’ केवल
 आचार्य की रचना है । इसमें संयोग तथा वियोग शृंगार की विविध दशाओं का मार्मिक चित्रण
 पुष्ट भावों छन्द में किया गया है । नागरिक चलनाओं की शृङ्गारिक चैष्टाओं तथा ग्रामीण
 रमणियों की स्वामाविक लक्ष्मियों का उन्नत अत्यन्त रमणीय है । हिन्दी के विहारी आदि शृङ्गारी
 कवि भी इनके प्रभाव में अडूते नहीं रहे ।

जगन्नाथ (पंडितराज)—आंध्र प्रादेश काशीनिवासी पेरुमट्ट तथा लक्ष्मीदेवी के
 पुत्र थे । इन्होंने काव्य और अलंकार का अध्ययन अपने पिता से किया और न्याय, व्याकरण
 आदि विषयों का ज्ञानेन्द्रमिश्र, महेशाचार्य, खण्डदेव, शेष वीरेश्वर आदि से । दिल्लीपर शाहजहाँ
 (शासन १६२८-६१ ई०) ने इन्हें दाराशिकोह के शिक्षार्थ दिल्ली में बुलवा लिया था । उसके
 पश्चात् बृहदवस्था में इनका स्वर्गवास १६७४ ई० में मथुरा में हुआ । कहते हैं, किनी यवनी के
 प्रेमजाल में फँसने के कारण इन्हें स्वभावानीयों का कोपभावन भी बनना पड़ा था ।

गंगालहरी, सुपालहरी, अमृतलहरी, करुणालहरी और लक्ष्मीलहरी इनके सरस काव्यस्तोत्र
 हैं । ‘नगदानरण’ में दाराशिकोह का, ‘आमरविलाम’ (गणनाम्य) में नवाब आसफ़ख़ाँ का और
 प्राणामरण में कामरूपधिपति प्राणनारायण का वर्णन है । इनकी अन्य कृतियाँ ‘चित्रमीमांसा
 राटन’, मनोरमाकुचमर्दन तथा ‘मामिनीविलाम’ हैं । इनकी सर्वोत्तम कृति ‘रसगंगाधर’ नामक
 अलंकारशास्त्र है जिसमें इनके प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा अप्रतिम काव्य प्रतिभा का पूर्ण परिचय
 प्राप्त होता है । इन्हें अपने पाण्डित्य और कवित्व पर जो अभिमान था, वह अनुचित न था ।

जयदेव—मान अंकों के प्रसिद्ध संस्कृत नाटक ‘प्रसन्नराघव’ के कर्ता जयदेव का परिचय अभी
 निमित्ताच्छन्न है । सुनते हैं, ये मिथिलावासी थे । ये १४वीं शती से पूर्व हुए हैं । ‘प्रसन्नराघव’
 में रामायणीय कथा सुचारु रीति से चित्रित की गई है । मञ्जुल पदावली तथा प्रमादोपेत कविता

के कारण नाटक का नाम संभव है। 'रामचरितमानस' के कई स्थलों पर हम तात्त्विक और कवि का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

जयदेव—अमर काव्य "गीतगीविन्द" के रचयिता जयदेव जगन्नाथपति लक्ष्मणसेन (१११६ ई०) के समकालीन थे। कथान के बन्दुल्लिख नामक स्थान में इनका जन्म हुआ था। वे राधाकृष्ण का भक्ति के रूप में पूजनका पदो हुए थे और उसी रस से पूर्ण 'गीतगीविन्द' नामक गीतिकाव्य भी है। १२ मर्गों का यह गीतिकाव्य इतना सरस व मधुर है कि वात्सिधान्त को वृत्तियों को भी प्राप्त करता है। भाव-सौष्ठव, बक्ष्यनोत्कर्ष और सुललित पदावली के कारण रचना अपने ढंग की एक ही है।

तिहमलादा (रानी)—रानी जगन्नुत राय की पत्नी तिरमलादा ने 'वर्दाम्बिकापरिणयचम्पू' की रचना १५२१ ई० के बीच में किसी समय की। इसमें अजयुत राय और वर्दाम्बिका के प्रेम तथा परिणय का वर्णन है। संभव है, रानी ने नज्मान्तर से अपनी ही कथा अन्तित की हो। कृति से कवी की पुष्ट वक्ष्यना तथा संस्कृत भाषा पर पूर्ण अभिज्ञान का परिचय मिलता है।

त्रिविक्रम भट्ट—शास्त्रित्यगाथा। त्रिविक्रम का सिंहादित्य, नेमादित्य (देवादित्य) के पुत्र थे। राजकूट नृपति चतुर्षु इन्द्र (१२४-१२९ ई०) के समकालीन थे। 'नलचम्पू' (दमयन्तीकथा) और नन्दालसाचम्पू इनकी विख्यात कृतियाँ हैं। ये संस्कृत-साहित्य के सर्वश्रेष्ठ रसैक-कवि हैं। 'नलचम्पू' में सरस तथा चमत्कारपूर्ण श्लेषों का प्रानुस है। इस कृति के वननीय उद्धरणों को भोजरान तथा विश्वनाथ ने अनेकत्र उद्धृत किया है। नलचम्पू संस्कृत का प्रथम उपलब्ध चम्पू है।

दक्षी—कहा जाता है कि दक्षी का जन्म भारवि की चौथी पीढ़ी में हुआ था। इनकी माता का नाम गौरी तथा पिता का योगदत्त था। ये सप्तमी शती के उत्तरार्द्ध तथा अष्टमी के पूर्वार्द्ध में विद्यमान थे और काशी के पल्लवनेशों की सभा में रहते थे।

इनकी तीन रचनाएँ हैं—दशकुमारचरित, काव्यादश तथा अवन्तिमुदरीकथा (?)। एक किंवदन्ती के अनुसार दक्षीने काव्यादश की रचना पल्लवनेश के पुत्र के शिषार्थ की थी। 'दशकुमारचरित' नामक प्रथम गद्यकाव्य में दस कुमारों के रोमाञ्चजनक चरित प्रस्तुत किये गये हैं। छन्द-अष्ट, मात्राष्ट तथा स्तयानुस से परपूर्ण होने के कारण रचना अत्यन्त सुनीव है। पात्रों के चरित्र सुन्दर शैली में हैं तथा हास्य और व्यंग्य से पूरा है। भाषाशैली के विचार से भी यह रचना उत्कृष्ट है। भाषा प्रवाहपूर्ण, परिष्कृत तथा सुहृदों में भाष्कृत है। जो पदलक्षण्य दक्षी में है वह अन्यत्र दुर्लभ है। कहा भी है—'दण्डित परमनित्यम्'। कुछ आलोचक वाम्नीकि और व्यान के अनन्तर उन्हें ही तीसरा कवि मानते हैं—

जाते जगति बहमीकी कविरित्यभिधाऽभवत् ।

कवी इति ततो व्यासे कवपस्त्वयि दण्डिते ॥

दामोदर मिश्र—इनके महानाटक 'हनुमच्छटक' की रचना ८५० ई० के पूरु दूर थी। इसमें १४ अंक हैं और कथानक रामायण पर आधुन है। प्रस्तावना और प्राकृत का अभाव, पद्यों की मधुरता, गद्य की चतुरता, पात्रों की बहुलता तथा विदूषक की अविवक्षितता इसकी मुख्य विशेषताएँ हैं। इसके दो स्वरूप हैं—प्रथम दामोदर मिश्र कृत, द्वितीय किमें ९ अंक हैं, मधुसूदन-चित्र हैं।

दिदनाग—'कुन्दमला' नाटक के रचयिता दिदनाग या धीरनाग (अथवा धीरनाग) पाँचवीं शती के शीघ्र दार्शनिक दिदनाग से सर्वथा भिन्न है। ये १००० ई० के लगभग हुए हैं। 'कुन्दमला' की कथा 'उत्तररामचरित' के स्नान वैदेहीवनवास पर आधुन है। इन पर उत्तर रामचरित का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। यह नाटक 'उत्तररामचरित' का सरस तो नहीं परन्तु किशोरावस्था में उत्तम बढकर है। शैली प्रसन्नपूर्ण है तथा वरजन्तस की व्यञ्जना अच्छी हुई है।

घोषी—जयदेव ने 'गीतगोविन्द' (१४) में घोषा का 'धुनिम्' लिखा है। ये गावर्धनाचार्य तथा जयदेव के साथ राजा लक्ष्मणसेन (१११६-१०) की सभा में विद्यमान थे। महाकाव्य छन्द में लिखे हुए इनका 'पवनदूत' में १०४ पद्य हैं। मलयचल में कुवलयवती नाम्नी गावर्धकन्या त्रिविवर्णी लक्ष्मणसेन पर आसक्त हो गई और उसने उसने विदेश जाने पर पवन द्वारा संदेश भेजा। 'देवदूत' का प्रभाव इस कृति पर स्पष्ट दिखाई देता है। काव्य में भक्तमोक्ष तथा वाक्यविग्रह मनोरम हैं।

नारायणरविन्द—यह बंगाल के राजा घनचन्द्र का आश्रित थे। इन्होंने १४वीं शती में पूर्व 'दिनोदय' की रचना बहुत सीमा तक 'धनंजय' के आधार पर की। यह लोक काम-इंदीय नीतिशास्त्र से मिल गया है। हितोपदेश में नीति-मन्त्रों को लेकर गद्य-पद्यमयी रचनाएँ हैं। भाषा सरल एवं मुरार है।

पद्मगुप्त—ये धारानरेश मुनि तथा उनके पुत्र मिथुराज (नवमाहमाक) के मन्त्र-कवि थे। इन्होंने 'नवमाहमाकचरित' काव्य की रचना म० १००५ ई० के आनंदसम को की। काव्य का विषय कृति नाम से ही अनुमित हो जाता है। उसमें मिथुराज और शशिप्रभा के विवाह आदि का उल्लेख है। ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से भी कृति महत्त्वपूर्ण है। कृति में १८ सर्ग तथा १९ प्रकार के श्लोक हैं और कुल १५०० पद्य हैं। भाषा व शैली कान्दिदाम में प्रभावित है। काव्य का साधुर्ण तथा वर्णनशैली प्रशस्त है।

बाणभट्ट—बाणभट्ट के पूर्व अत्यन्त विद्वान् थे और सोनरीरवर्ती प्रीतिकूट नगर में रहते थे। बाण भू जय वाक्यादिकगोपी चित्रमानु के गृह में हुआ था। कुम्भगिरी में पठार बाग पड़ले नी आकरा घूमते रहे परन्तु भैरवने पर महान् विद्वान् तथा सघात हृषयधन के समारंजन बन गये। बाग अपनी 'कादम्बरी' को पूरा नहीं कर पाये थे कि राजा का निश्चय आ पहुँचा। उस अनूर्ण कृति को इनका पुत्र पुलिन या पुलिन्दभट्ट ने पूर्ण किया। कहते हैं राजा का विवाह मयूर कवि की पुत्री से हुआ था और उनकी एक भिन्न मन्त्रान थी। बाण का स्फुरण साधनों शरी में हुआ। उनकी प्रत्याप्त कृतिवाँ ये हैं—

१ 'चण्डीशतक' में दूरी भगवती की प्रशंसा है।

२ 'हृषचरित' के प्रथम दो उच्छ्वासों में कवि का आत्मचरित है और शेष छह में हर्ष का चरित। यह रचना बड़ी ओजस्विनी तथा समामवकुल है। सस्कृत की प्रचीनतम उपन्यास आरय रिकी है।

३ 'कादम्बरी' इनकी उत्कृष्टतम कृति है। ऐतिहासिक भाग (पूर्वाङ्क) बाणभट्ट के और उत्तराङ्क पुलिन्दरचित। नव, भाषा, कल्पना, वर्णन, रस-मयी दृष्टियाँ में कादम्बरी अनुपम है।

४ 'पावनीपरिणय' नाटक में शिव-पावनी के विवाह का वर्णन है, यह लोग हम किसी अन्य बाग की कृति कहते हैं।

५ 'मुकुटाक्षितक' नाटक की इनकी रचना कहा गया है परन्तु अभी तक प्राप्त नहीं हुआ।

किसी न तो समग्र संसार को ही बाण का चूड़ा कहा है—'वाणाब्धित नग्न सर्वम्।' गोविन्दनाथ ने तो बाण को वाणी का अवतार ही माना है—

जाता शिरगण्डिनी प्राग् यथा शिरगण्डि तथागच्छामि।

प्रागभ्यमधिकमाप्नु वाणो वाणी वभूवेति ॥

विहण—अपने ऐतिहासिक महाकाव्य 'विक्रमादित्यचरित' में विहण ने स्वपरिचय भी प्रस्तुत किया है। विहण कश्मीर और नागद्वी के पुत्र तथा इष्टगय और अनन्द के माता थे। आश्रयता की रीति में वे कादम्बरी से निकलकर मथुरा, प्रयाग, काशी आदि जाने हुए कल्याणनगर के आश्रयवशीय विक्रमादित्य षष्ठ (१८-६-११२७) का समा में जा

पहुँचे। उक्त काव्य में कवि ने निम्न आश्रयदाता तथा उससे वंश का विस्तृत वर्णन किया है। १८ सर्गों के इस काव्य में मातुर्य एवं प्रेम की भाषा प्रचुर है तथा वेदों की रोति प्रयुक्त की गई है। यह काव्य जनूठी शक्तियों तथा वीर, शूद्र और वरुण राम में पूर्ण है।

भट्टनारायण—नरक विशेष वृत्त अभी तक अविदित है। सुनते हैं, वे उन पाँच कवीश्वरों में से थे जिन्हें बगनेश 'आदिशार' ने वग में वैदिकधर्म प्रचारार्थ बुलाया था। आदिशार ७१५ ई० में गौडगिरिपति के पद पर आसीन हुए थे। इनका नाटक 'वेणीमहार' ८०० ई० में रचा जा चुका था। कवि की उक्त एकमात्र कृति का विषय है महाभारत का युद्ध। रचना में गौरी रोति तथा ओजगुण विविध रूप में मिलता है। नाटकीय सिद्धान्तों के प्रदर्शनार्थ नाटक 'स्वयंभोगी' है।

भट्टि या भट्टिवासी—'भट्टिवाण्य' (रावणवध) के रचयिता का विशेष वृत्त अज्ञात है। इस महाकाव्य के अन्तिम पद्य से ज्ञात होता है कि कव्यमी नरेश श्रीधरमेन की समा में कवि समाहित था। भट्टि का समय छठी शती का उत्तरार्ध तथा सप्तमी का पूर्वार्ध है।

उक्त महाकाव्य की रचना सरलता से व्याकरण सिखाने की की गई थी। इसके २२ सर्गों में १६२४ श्लोक हैं। इसके प्रकीर्ण, प्रसन्न, अलङ्कार और तिङन्त नामक चार भागों में व्याकरण तथा अलङ्कारों का सुन्दर निरूपण हुआ है। राम-कथा के साध-माध पद्यों की व्याकरण ज्ञान भी पूरा होता है। काव्यत्व की दृष्टि से भी ग्रन्थ उपादेय है। कवि ने इसके उद्देश्य के विषय में स्वयं लिखा है—

दीपतुल्य प्रबन्धोऽयं शब्दलक्षणचक्षुषाम्।

हस्तादर्श इवान्धाना भवेद् व्याकरणाद् भूते ॥

और ॥ उद्देश्य की पूर्ति में कृति मय्यं हुई है।

भर्तृहरि—भर्तृहरि का नाम विना प्रसिद्ध है उतना ही जीवन चरित अशुद्ध। कुछ लोग १६ महाराज विक्रमादित्य का अग्रज मानते हैं परन्तु अधिकतर विद्वान् इन्हें प्रत्यात बधाकरण भर्तृहरि से अभिन्न कहते हैं। कुछ लोग इन्हें बीर कहते हैं परन्तु इनकी कृतियाँ इन्हें अद्वैतवादी वैदिकधर्मी घोषित करती हैं। इनका समय सप्तमी ज्ञाती कहा जाता है।

इनके तीन शतक प्रसिद्ध हैं—नीतिशतक, शूद्रारशतक और वैराग्यशतक। भर्तृहरि ने जो पञ्चान नामांकित अनुभव प्राप्त किया था उसी की स्वरूपियों में अन्तित कर अक्षय वंश प्राप्त किया है। धार्मिक कृतियों में जैसे गीता प्रख्यात है, लौकिक कृतियों में जैसे ही इनकी शतशतकी।

भवभूति—इनके नाटकों की प्रस्तावना से विदित होता है कि इनका जन्म विदर्भ (बरार) के पणपुर नगर में उदुम्बरवर्दी निम्न परिवार में हुआ था। इनका परिवार कृष्णवज्रुर्ध्व का अभ्येता तथा सोमयात्री था। ये भट्टगोपाल वंश की तथा नीलकण्ठ के पुत्र थे। इनकी बहन की नाम ननुकर्णी या तथा इनका निजी नाम श्रीकण्ठ था। भवभूति इनका प्रथम प्रदत्त नाम था और य शाननिधि के शिष्य थे। इनका जीवन-काल सम्भवतः ६५०-७५० ई० के मध्य में होगा। ये प्रत्यात भीमासक कुमारिल भट्ट के भी शिष्य थे और दार्शनिक जगन् में भट्ट उम्मेक के नाम से विख्यात थे।

इनके तीन रूपक प्राप्त हुए हैं—महावीरचरित, मालतीमाधव और उत्तररामचरित। महावीरचरित के छह अंकों में श्रीराम का चरित प्रस्तुत किया गया है। नाटक वीररत्न प्रधान है। मालतीमाधव दस अंकों का विशाल 'प्रकरण' है। इसमें मालती तथा माधव की काल्पनिक प्रेम-कथा की भावपूर्ण दृष्टि से उपन्यस्त किया गया है। उत्तररामचरित में सीतानीवन का बहुत ही वर्यान्तक वर्णन है। सात अंकों की यह रचना भवभूति की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें कवि ने राम के विनाश से निर्जीव पत्थरों तक की रत्नावा है। कवि ने अपने कल्पना बल से वास्तविक

रामायण के कई प्रसंगों में परिवर्तन कर दिये हैं। इनकी कविता में भाव तथा भाषा का अटुल्य सामञ्जस्य है। भाषा में भवानुकूल परिवर्तन करने में ये विशेष निपुण थे। यों तो सभी रसों की अभिव्यक्ति में ये कुशल थे परन्तु कर्णरस की व्यञ्जना में तो विशेष दक्ष थे। नाटककारों में कालिदास के पश्चात् इन्हीं का नाम लिया जाना है।

भारवि—‘अवन्तिमुन्दरीक्या’ के अनुसार ये दाक्षिणात्य थे और पुलकेशी द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (शामनकाल ६१५ ई०) के समकालीन थे। कुछ विद्वान् इन्हें त्रवणकोरवासी बताते हैं। इनका समय ६०० ई० के लगभग है।

‘किरातार्जुनीय’ महाकाव्य ही इनकी एकमात्र प्राप्त कृति है। महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें पूर्णतया विद्यमान हैं। इसका कथानक, जो महाभारत के वनपर्व पर आधारित है, इस प्रकार है—घट में पराजित पाण्डव जब व्रतवन में रह रहे थे तब उनके गुप्तचर ने दुर्योधन के सुसंवस्थित शामन की स्तुति की। इस पर द्रौपदी और भीमसेन ने युधिष्ठिर को युद्धार्थ उत्तेजित किया परन्तु धर्मपुत्र ने प्रतिशामग अनुचित माना। वेदव्यास की प्रेरणा से अर्जुन शिवजी में पाशुपतास्त्र प्राप्त करने को इन्द्रकील पर्वत पर पहुँचे। उनकी उग्र तपस्या को अप्सरार्य भी मनन न कर सकी। पक्षे अर्जुन ने किरातवेशी शिव को अपनी शक्ति से प्रसन्न कर पाशुपतास्त्र की प्राप्ति की।

समग्र संस्कृत-वाङ्मय में किरातार्जुनीय-भा ओन पूरा काव्य अन्य नहीं है। १८ सर्गों के इस महाकाव्य में प्रधान रस वीर है, अन्य रस गौण। अर्थगौरव अर्थात् बोधे शब्दों में विशाल और गम्भीर अर्थ की सन्निविष्ट कर देना भारवि की उसकेस्य विद्यमानता है जिसके कारण ‘भारवेदरंगौरवम्’ उक्ति प्रख्यात हो चुकी है। भारवि का काव्य आपात्तन कठिन है परन्तु अर्थ व्यक्त होने पर वेते ही आनन्ददायक मित्र होता है जैसे नारियल की जटा और खोल तोड़ देने पर लम्का फल। इन्हीं गुणों के कारण महाकाव्यों का बहुत्वयी (किरात, माय और नैषध) में ‘किरातार्जुनीय’ का स्थान प्रमुख है।

भास—प्रख्यात नाटककार भास के काल के सम्बन्ध में विद्वानों में ऐकमत्य नहीं है। कुछ इन्हें तीसरी शती ईसवी का बताते हैं तो कुछ ई० पू० दूसरी शती का। इनके तेरह नाटक प्रायः हुए हैं जिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. **प्रतिमा नाटक**—इसमें राम-वनवाम में रावणवध तक की घटनाओं का उल्लेख है। केकय में लौटते हुए भरत देवकुल में दशरथ की प्रतिमा देखकर उनकी मृत्यु का अनुमान करते हैं। अन्त्य गण्डक को उक्त नाम दिया गया है।

२. **अभिषेक नाटक**—राम के राम्याभिषेक का वृत्त है।

३. **पञ्चरत्न**—महाभारत में सम्बन्धित एक कथित घटना के आधार पर रचा गया है। दुर्योधन की शर्त के अनुसार द्रोण ने पाण्डवों की पाँच रातों में हँस लिया और दुर्योधन ने उन्हें अथा राज्य दे दिया, यही कथानक-भास है।

४-८ **मध्यमन्यायीय, दूतघटोत्कच, कर्णभार, दूतवाक्य, कर्णभग** के कथानक महाभारत के विशिष्ट प्रसंगों से सम्बन्धित हैं।

९. **बालचरित**—का सम्बन्ध बालकृष्ण की लीलाओं से है।

१०. **दरिद्रचारुदत्त**—इसमें निर्धन परन्तु चरित्रवान् चारुदत्त और गुणग्राहिनी वेश्या वसन्तमेना के प्रणय का विवर्ण है।

११. **अविमर्श**—में एक प्राचीन आख्यायिका को नाटकीय रूप दिया गया है।

१२. **प्रतिज्ञाघोषन्यरायण**—इसमें मन्त्री घोषन्यरायण को नीति में बल्लराज उद्यम के बारासुन होने तथा अवन्तिकुमारी वासवदत्ता से उनके विवाह का वर्णन है।

१३ स्वप्नवासवदत्त—इसे 'प्रतिज्ञायौगन्धरायण' का उत्तरार्द्ध कहना उचित है। इसमें उदयन का मगधकुमारी पद्मावती से विवाह और वासवदत्ता हैं पुनर्मिलन वर्णित है। यही भाग की सर्वोत्तम कृति है।

भास नवों रसों की व्यञ्जना में कुशल है। उनके चरित्र चित्रण मनोवैज्ञानिक हैं और मवाद चुस्त तथा सशक्त। मकड़े कही बात यह है कि ये नाटक अभिनेय के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं।
श्रीच—मिथुल के पुत्र परमार-वशीव राजा भीम की राजधानी मालवा की धार या धारानगरी थी, वहाँ इन्होंने १०१८-१०६३ ई० तक शासन किया। पिता का मृत्यु के अनन्तर बालक भीम, राज्यलोप्य चाचा भुज के हार्थों कावचवर्तित होने को ये वे परन्तु भाग्यवश हथ गये। ये बहुत उदार, विद्वान् तथा विद्वानों के आश्रयदाता थे। भोजप्रबन्ध आदि कई ग्रंथों में इनकें गुणों की कथारें मिली हैं।

शृङ्गारमञ्जरी (आलपयिका), विष-विनोद (काव्य), शिवदत्त (मनोत्र), शिवनन्दनवर्णन (शिवमनोन्मत्ता), सुभाषित, मनीषप्रकाशित, शृङ्गारप्रकाश, रामायणचम्पू और सरस्वती वधायण इनकी कृतियें कही जाती हैं।

मल्लक—बादमीरनरेश महानदि मंसूर प्रख्यात आल्मकारिक इय्यक के शिष्य थे और मुहम्मद-शिष्य दोनों ही काशीनरेश राजा जयसिंह (११२९-१० ई०) के समर्पित थे। स्वर्गीय पिता का आशानुसार ही मल्लक ने 'श्रीगणेशचरित' नामक २५ सर्गों के सुन्दर महाकाव्य की रचना की जिसमें छन्द और शिष्टुर का युक्त वर्णित है। इनकी शैली कालिदासानुसारिणी है। प्राकृतिक दृश्यों, सरस भावों तथा प्रभावक वस्त्रनामों की कौमल्य पदावली में व्यक्त करने में मल्लक विशेष कुशल है।

अमूरमह—ये बाणमह के सगे सम्बन्धी थे और बाराणसी के पूर्व रहते थे। बाण के समान य भाष्यवर्द्धन की सभा में बने थे। इन्होंने अपने कुछ रोग के निवारणार्थ सगंधा वृत्त में 'सूर्यशतक' स्तौत्र का प्रणयन किया जो वस्तुतः प्रौढ और मार्मिक कृति है। ये सूर्यदेव के रथ, जय आदि उपरदणों के वर्णन में तथा अनुप्रासमयी भाषा के प्रयोग में विशेष सफल हुए हैं।

आश—महाराजि माघ का विनामह सुप्रभदेव गुजरात के वर्मलान नामक राजा का मुख्यमंत्री थे और पिता दत्तक मराठक विद्वान् तथा बदान्य। माघ का जन्म भीममाल नगर में हुआ था और य धारा का भीम से मित्र किसी अन्य राजा से के मित्र थे। सुसम्पन्न कुल में उत्पन्न होने पर भी, कहते हैं इनकी मृत्यु अत्यधिक उदारता के कारण, हरिदास-वत् हुई थी। ये सातवीं शती के उत्तरार्द्ध में विद्यमान थे।

ये अपने एकमात्र उपलब्ध महाकाव्य 'शिशुपाल-वध' के कारण अमर हो गये हैं। बीम सर्गों का इस महाकाव्य में युधिष्ठिर का राजमूक यज्ञ में श्रीकृष्ण के हार्थों शिशुपाल का वध का विस्तृत वृत्त वर्णित है। काव्य के अध्ययन से माघ की राजनीतिज्ञता और अनकाप्रियता का अच्छा परिचय प्राप्त हो जाता है। माघ केवल रसमिद कवि ही नहीं, सर्वज्ञास्त्रविद गम्भीर विद्वान् भी थे। शास्त्रीय मिश्रणों का जितना सुन्दर सरस प्रतिपादन शिशुपालवध में उपलब्ध होता है, किसी अन्य काव्य में नहीं। माघ का पांडित्य सर्वतोमुखी है, वेद तथा दर्शन में लेकर राजनीति तक की विशेषज्ञता इनकें ही काव्य में दिखाई देती है। नव-नव शब्दों के प्रयोग तथा व्याकरणानुरूप नव-नव शब्दरूपों के व्यवहार के कारण भी माघ विशेष प्रख्यात हैं।

किसी भारतीय आलोचक का मत है—

उपमा कालिदासस्य, भारवेर्यर्गारवम्।

दण्डिन पदालित्वं, माघे सन्ति त्रयो गुणा ॥

मुरारि—'अनन्तराज' नाटक के रचयिता मुरारि मीदगम्भगोत्री वर्धमानक तथा तत्पुत्री के पुत्र थे। ये समवन माहिष्मती (दक्षिण में दिवन मान्धाता नगरी) के निवासी थे और ८०० ई०

के लगभग वर्तमान थे। 'अनर्पराध' सात-अर्कों का और भवभूति के महावीरचरित से प्रभावित नाटक है। उसमें ताड़कावध से लेकर रामराज्याभिषेक तक की घटनाएँ वर्णित हैं। कविता प्रौढ़ तथा पांडित्यपूर्ण है, वर्णन प्रशस्त हैं और शब्दराशि विशाल है। इनकी उपमाओं की मौलिकता देखकर ही कहा गया है—'भारतेऽनूतीय एव'।

रत्नाकर—कादंबरी महाकवि रत्नाकर, अमृतमानु के पुत्र और काश्मीर-नरेश जयापीड (८०० ई०) के समापण्डित थे। इनके 'हरविजय' महाकाव्य में ५० सर्ग तथा ४३२१ पद्य हैं। आकार के कारण ही नहीं, काव्योचित अन्य गुणों के कारण भी यह महाकाव्य संस्कृतवाङ्मय में विशिष्ट स्थान रखता है। यह महाकाव्य छलित, मधुर, प्रभासोपेत भाषा तथा चित्र, मर्मक और श्लेष के चमत्कारों से मण्डित है।

इस महाकाव्य में शहर द्वारा अन्धक असुर के वध का वर्णन है। रत्नाकर ने 'शिशुपालवध' की मात करने के लिए इस काव्य का प्रणयन किया था और उनका प्रथम न्यर्थ नहीं हुआ।

राजशेखर—ये 'महाराष्ट्रचूडामणि' कविवर मङ्गलजलद के प्रपौत्र तथा दुर्दुक और शीशवती के पुत्र थे। ये स्वयं यायावर क्षत्रिय थे और इनकी पत्नी अवन्तिमुन्दरी चौहान, मल्लक और प्राकृत की प्रकाण्ड विदुषी थीं। राजशेखर महाराष्ट्र, सम्भवतः विजय के रहनेवाले थे और कश्मीर-नरेश महेंद्रपाल के गुरु थे। अतः इनका काल नवीं शती का उत्तरार्ध तथा दशमी का पूर्वार्ध माना जाता है। राजशेखर पुरुरा विद्वान् थे और अपने की बाल्मीकि तथा भवभूति का अवतार समझते थे। वे भूगोल के बहुत बड़े पण्डित थे परन्तु इनका इस विषय का ग्रन्थ 'भुवनकोष' आज अप्राप्य है। ये संस्कृत, प्राकृत, देशाची तथा अपभ्रंश के दिग्गज विद्वान् तथा लेखक थे।

इनके चार नाटक उपलब्ध हैं—कर्पूरमञ्जरी, विद्वशात्मजिका, बालरामायण और बाल-भारत अथवा प्रवण्डपाण्डव। 'कर्पूरमञ्जरी' प्राकृत में लिखित एक 'मट्टक' है जिसमें चण्डपाल तथा राजकुमारी कर्पूरमञ्जरी का विवाह चित्रित किया गया है। विद्वशात्मजिका चार अङ्गों की प्रेमाख्यानत्मक नाटिका है। बालरामायण दश अङ्गों का महानाटक है। बालनक्षत्राभारत के दो ही अंक प्राप्त हैं। मायाकौशल तथा सुन्दर वक्तियों से युक्त होने पर भी इनके नाटक नाटकीय कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नहीं माने जाते। इनका महाकाव्य 'हरविजय' तो आज उपलब्ध नहीं है परन्तु 'काव्यमीमामा' इनका अलंकारविषयक प्रौढ़ ग्रन्थ है।

चन्द्रराज—कालिङ-नरेश परमदिदेव (११६१-१२०३ ई०) के मन्त्री वत्सराज के छह रूपक उपलब्ध हुए हैं—१ किरातार्जुनीय-व्यायोग, २ कर्पूरचरित, ३ हास्यचूडामणि, ४ तन्मिणी-हरण, ५ त्रिपुरदाह और ६ समुद्रमवन। किरातार्जुनीय-व्यायोग की रचना भारवि के 'किरातार्जुनीय' के आधार पर हुई है। कर्पूरचरित 'माण' के अनुसार कर्पूर ने स्वरोचक अनुभव वर्णित किये हैं। हास्यचूडामणि एफाकी प्रहसन है। तन्मिणीहरण चतुरात्मक 'महानुग' है। त्रिपुरदाह चतुरात्री 'किम' में विरुद्ध शिव द्वारा त्रिपुर असुर के पुर के विध्वंस का वर्णन है। समुद्रमवन 'पद्मी' 'सम्भवतः' है जिसमें समुद्रमवन तथा लक्ष्मी-विष्णु के विवाह का चित्रण है। मास के पश्चात् वत्सराज ने ही अनेक प्रकार के रूपकों की रचना की है। इनके लब्धाकार नाटकों की शैली मरठ और सगुच्छ है। उनमें नाटकीय किशोरीलता और रोचकता प्रचुर है।

बाल्मीकि—कहते हैं बाल्मीकि पहले एक दसु थे परन्तु उत्तमनि से ऋषि बन गये। वे भारत के आदिनि माने जाते हैं और रामायण आदिकाव्य। श्रद्धालु लोगों का विश्वास है कि रामायण की रचना श्री राम के आभिर्भाव से सहस्रों वर्ष पूर्व की जा चुकी थी परन्तु आधुनिक विद्वान् इसे आज से प्रायः छह सहस्र वर्ष पूर्व की कृति बनाते हैं। अधिकतर विद्वान् इसके उत्तरकाण्ड को पूर्ण- और बालकाण्ड को अंशतः प्रक्षिप्त मानते हैं। रामायण में २४०० श्लोक हैं जिनमें बहुलता अनुष्टुप् छन्द की है। उत्तरी भारत, बंगाल तथा काश्मीर में रामायण के

को सम्बर्ण प्राप्त होते हैं उनमें पर्याप्त पाठभेद है। सच्चा कवि और उत्तम महाकाव्य कैसा होना चाहिये, यह हमें वाल्मीकि रामायण से ही विदित होता है। सामान्य मनुष्य गृहस्थ बनता है परन्तु गार्हस्थ्य को सफल बनाना रितना दुष्कर है, इसे गृहस्थ ही जानने हैं। इसी उच्च उद्देश्य की निधि का मार्ग वाल्मीकि ने दर्शाय, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत आदि के दिव्य चरित्रों में प्रगल्भ किया है। किन्ती विद्वान् का यह विचार अत्युक्तियुक्त नहीं है कि मत्सर भर के साहित्य में सदाचार और काव्यत्व का गिनना सुन्दर मिश्रण वाल्मीकि-रामायण में हुआ है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। रामायण वर्णरत्न प्रधान महाकाव्य है। इसमें वास्तव प्रकृति तथा मानवीय प्रकृति का अत्यन्त मनोरम चित्रण हुआ है। यह प्राचीन भारत की सभ्यता का उज्ज्वल दर्पण है। यही कारण है कि इसके उदात्त आदर्शों तथा पवित्र कथा के आधार पर परम्परा अक्षरशः कवियों ने अपने काव्य, नाटक, चम्पू आदि की रचना की तथा इस पर लिखक, शृङ्गारलिखक, रामायणकूट, वाल्मीकिस्त्यर्यन्तरणि, विवेकलिखक आदि अनेक-दोहारे लिखकर विद्वानों ने अपने प्रयाम को सफल समझा।

विशालखट्ट—इनके पिनामह बटेश्वरदत्त अथवा बत्सराज कहीं के सामन्त थे और पिता भास्करदत्त वा दृष्ट ने महाराज-मन्त्री प्राप्त की थी। विशालखट्ट राजनीति, दर्शन और ज्योतिष के विशेषज्ञ थे। ये वैदिकधर्मावलम्बी थे परन्तु साम्प्रदायिक कट्टरता से रहित थे। इन्होंने अपने प्रख्यात राजनीतिक तथा कूटनीतिक नाटक 'मुद्राराक्षस' की रचना छोटी शशी ईश्वरी के उत्तरार्द्ध में की थी। नाटक में चाणक्य का समग्र उद्योग इसी उद्देश्य को सिद्धि के लिए है कि राक्षस को चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मन्त्री बना दिया जाय और अन्ततः वे उसमें सफल होते हैं। राजनीतिक चालों तथा चरित्र-चित्रण की दृष्टि से नाटक विशेष महत्त्वपूर्ण है। विशालखट्ट की दूसरी रचना 'देवीचन्द्रगुप्त' के कुछ ही उद्धरण अन्य कृतियों में प्राप्त हुए हैं। उन्हीं के आधार पर चन्द्रगुप्त के अग्रज रामगुप्त की मृता ऐतिहासिकों ने स्वीकृत की है।

विष्णुधर्मा—महिलारोम्य के शासक अमरशक्ति अपने मूर्ख राजकुमारों को चतुर बनाने के लिए योग्य शिक्षा की खोज में थे। इस कार्य को विष्णुधर्मा नामक ब्राह्मण ने पंचनख की रचना द्वारा छह मास में ही पूर्ण कर दिया। 'पंचतथ' का रचना-काल १०० ई० के लगभग माना जाता है। छोटी शशी में इसका पहला भाग में अनुवाद भी हो गया था। बराबिक आरम्भ में इसके बारह भाग थे परन्तु वर्तमान में इसके पाँच भाग हैं—मित्रभेद, मित्र-सम्प्राप्ति, काकोलक्ष्मीय, लघु प्रणाल, अपरीक्षितकारक। इस कथा-ग्रन्थ में कथाएँ गद्य में हैं और शिक्षाप्रद बातें पद्यों में। एक एक मुख्य कथा के अन्तर्गत अनेक गीत कथाएँ दी गई हैं। सदाचार, व्यवहार और नीति के शिक्षार्थ यह कृति अत्यन्त उपयोगी है और यही कारण है कि अनेक विदेशी भाषाओं तक में अनूदित हो चुकी है।

वैजयाधरि—यै मद्रास प्रान्त के श्रीवैष्णव थे। इन्होंने अपने 'विश्वगुणादर्शचम्पू' में मद्रास में अथेजों के दुराचार का भी वर्णन किया है जिससे ये सत्रहवीं शती के मध्य के प्रतीत होते हैं। इनका यद्यो विस्तारक काव्य तो 'लक्ष्मीमहल' है जिसकी एक सहस्र ललित व भावपूर्ण पद्यों की रचना कहते हैं, इन्होंने एक ही रात में कर दी थी। काव्य में इतने तत्प्राप्त अन्यासाधारण की छटा अवलोकनीय है। इस अत्यन्त सरस व उत्प्रेक्षाबल रचना से कवि अमर हो गया है।

व्याम—व्यामजी का पूरा नाम कृष्णदेवायन व्याम था। ये पराशर और सत्यवती के पुत्र थे। सुनते हैं, रग से कृष्ण होने के कारण कृष्ण, दीप में उत्पन्न होने के कारण देवायन तथा वैदिक मन्त्रों की वर्तमान व्यवस्थित रूप देने के कारण ये व्याम कहलाए। भारतीय परंपरा उन्हें महाभारत, १८ पुराणों तथा ऋक्षसूत्रों का वर्ण मानती है, परन्तु आधुनिक विद्वान् महाभारत को न प्रवक्तृ मानते हैं न प्रकरणीन। उनका मत है कि महाभारत के विभिन्न अंशों की रचना अनेक विद्वानों द्वारा समय-समय पर होती रही और उसे वर्तमान रूप ३२० ई० १०० तथा ५० ई० के मध्य में किसी समय प्राप्त हुआ।

किया गया है। कृति का प्रेमि प्रेमविषयक अंश माग-कृत 'दरिद्रबारदक्ष' से बहुत अधिक प्रभावित है परन्तु राजनानिभ भाग कवि की निजी सम्पदा है। 'मृच्छकटिक' की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्रचुर भाषा है। निनी प्राकृत इस नाटक में प्रयुक्त हुई है जतनी अन्य किसी में भी नहीं। नाटक में पात्रों का चरित्र तथा समाज का चित्र सरल शैली में सम्यक् चित्रित किया गया है। नाटक का प्रधान रस मृदुहार है।

श्रीहर्ष—श्रीहर्ष का जन्म हीर पण्डित और यामलदेवी के गृह में हुआ था। हीर पण्डित कान्य कुब्जेष्टर जयचन्द्र के पिता विजयचन्द्र की सभा के प्रधान पण्डित थे परन्तु सयोगवश मैथिल नैयायिक उदयनाचार्य से शास्त्रार्थ में पराजित हो गये थे। मरणाशय हीर ने पुत्र को कहा— 'यदि तुम सुपुत्र हो तो मेरे विजेता को पराजित करना' श्रीहर्ष ने सगल्ल पर विजितामणि मन्त्र का वर्ष भर जप किया और सकलमनोरथ हुए। श्रीहर्ष, जयचन्द्र की सभा के रतन तो थे ही, सम्भवतः विजयचन्द्र की सभा को भी सुभूषित करते रहे होंगे, क्योंकि उन्होंने 'विजयप्रशस्ति' उन्हीं के नाम पर रची है। ये रसमिद कवि ही न थे, प्रकण्ठ पण्डित भी थे, जैसा कि इनके 'नन्दनखण्डसाध' से सिद्ध होता है। इनका सिद्ध योगी होना नैषधकाण्ड के भक्त्य दलोक से सिद्ध होता है—

य. साक्षात् कुरुते समाधिषु परं ब्रह्म प्रमोदायनम्।

इनका आभिर्भावकाल बारहवीं शती का उत्तरार्ध है।

श्रीहर्ष ने अपनी कृतियों का उल्लेख 'नैषध' में इस क्रम से किया है—(१) देवर्षिचरण प्रकरण (दृष्टान्त), (२) विनयप्रशस्ति, (३) खण्डनखण्डबाध (विद्वान्), (४) गौडीयशुक्रभयशस्ति, (५) अणववर्णन, (६) छिन्दप्रशस्ति, (७) शिवशक्तिसिद्धि, (८) नवसाहस्रकचरितचन्द्र, (९) नैषधीयचरितः। सुविख्यात 'नैषधीय चरित' में २२ सर्ग हैं और २८३० श्लोक। हमने मूल-दमयन्ती की कथा का सरल तथा सुविरचित वर्णन है। नैषध में देवर्षि तथा शक्तिदत्त का अद्भुत मिश्रण है। वक्त्रोक्ति के प्रयोग में श्रीहर्ष विशेष कुशल है। मानवशु तथा कलावश दोनों की अभिव्यक्ति नैषधकाव्य में मार्मिक ढंग से की गई है। किमी आलोचक का यह पक्ष नैषध के महाभाष्य का सच्चा निदर्शक है—

तावद्वा भारवेर्भाति यावन्माधस्य मोदयः।

उदितो नैषधे काम्ये क माधः क च, भारविः ॥

सुचन्द्र—अविदित-भूत सुचन्द्र अपने एकमात्र वधकाव्य 'वामवदत्ता' से अक्षुप्त कीर्ति के भागी बने हैं। इस काव्य की कथा का वासवदत्ता की प्राचीन कथा से राई-रत्नी मात्र का भी सम्बन्ध नहीं है। पूर्ण कथानक कवि के उर्वर मस्तिष्क की रचना है। अनुमानतः इसकी रचना सातवीं शती के प्रथम चरण में की गई थी।

अनि संक्षेप में कथा यह है कि राजकुमार विजितामणि स्वप्न में एक सुन्दर कन्या को देख-बर मुग्ध हो जाता है और जगने पर मित्र भरनन्द के साथ उसकी खोज में निकल पड़ता है। उधर सुमधुपुर की राजकुमारी वामवदत्ता भी स्वप्न में एक सुखी युवक को देखकर स्वयंवर में आये युवकों का विचार त्याग देती है। कई विज्ज-भाषाओं के अनन्तर प्रेमियों का सुख मिठन हो जाता है। 'वामवदत्ता' एक वर्णनबहुल आख्यायिका है जिसमें उपमा, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास की बहुलता है परन्तु समग्र या अग्रगण्य तो प्रतिपद पाया जाता है जहाँ कवि की कल्पना प्रगल्भीय है, वहाँ श्लेष की 'अनि' तथा तन्मयित दुरुहता असुचिकर हो गई है।

सोद्वल—ये सुचन्द्र के छात्रप्रदेश के निवासी थे और कौकशापीय मुमुग्गिगत्र (१०६० ई०) के आश्रित थे। इनका 'उदयसुन्दरीकथ' चम्पूकाव्य है जिसमें प्रणिहात प्रेयस मय्यवाहन और नानानृप निखण्डनिलक की पुत्री उदयसुन्दरी के विचार का वर्णन है। कृति भाग के दर्शचरित

में प्रभावित है और उसने भाषा का माधुर्य और लालित्य प्रशंसनीय है। लेखक कमनीय बलवान् करने में कुशल है।

सोमदेव सूरि—ये जैनकवि राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराजदेव के समकालीन थे। ९५८ ई० में रचित इनका 'यशस्विन्यकचम्पू' में अवन्ति-नरेश यशोधर की कथा का वर्णन है। रानी की सजात चान्से में राजा की विरक्ति, चष तथा पुनर्जन्म की घटनाओं का रोचक उल्लेख है। जैनधर्म के पालन के महत्त्व को सम्यक् व्यक्त किया गया है। इसमें अनेक अज्ञात वाक्यरूपों और कृत्रियों का उल्लेख है, अगण्य साहित्य के इतिहास के विचार से भी कृति महत्त्वपूर्ण है।

हरिचन्द्र—जैनकवियों में हरिचन्द्र का नाम विशेष उल्लेख्य है। ये काव्यस्थ भद्रिदेव तथा रथ्यादेवी के सनुज थे। सम्भवतः इनका समय म्यारहवीं शती है। इनके 'धर्मशार्ङ्गानुदय' नामक महाकाव्य में पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथजी का चरित्र वर्णित है। नैदभी रीति में उपनिबद्ध इस काव्य की भाषा अतिमुन्दर और अलंकृत है। जैनसाहित्य में २१ सर्गों के इस महाकाव्य का बड़ी स्थान है जो नैवध और शिशुपालवध का माहान साहित्य में।

हरिवर्धन—ये धानेर के महाराज प्रभाकरवर्धन के द्वितीय पुत्र थे और अग्रज राज्यवर्धन के पश्चात् सिंहासनासीन हुए थे। इन्होंने ६०६-६४८ तक शासन किया था। बाणभट्ट, भट्टभट्ट और दिव्यकर इन्हीं के सभापटिन थे। इनके तीन रूपक मिलते हैं—रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानन्द। प्रथम दो संस्कृत की प्राचीनतम नाटिकाएँ हैं और बत्सरज उदयन की प्रणयनधर्मों के आधार पर प्रणीत हैं। नागानन्द का आधार एक बौद्ध कथानक है जिसमें सर्गों को गरुड से बचाने के लिए जीमूतवाहन आरमत्तमर्षण कर देता है। इस उच्चादर्श के कारण नागानन्द विद्वत्समाज में विशेष सम्मानित है।

हेमचन्द्र—प्रसिद्ध जैनमुनि हेमचन्द्र का जन्म द्वादशवें १०८८ ई० में हुआ। इनके पिता का नाम छठियशेरी और माता का पहिनी था। इनकी माता ने इन्हे पाँच वर्ष के वय में ही देवेन्द्र सूरि को सौंप दिया और ये विषाध्ययन में संलग्न हो गये। ये संस्कृत और प्राकृत वाङ्मय के विभिन्न विभागों में ऐसे निष्णात हो गये कि 'कलिकालसर्वज्ञ' कहाने लगे। इनके संहृत प्राकृत ग्रन्थों की पङ्क्तिस्तथा सङ्घे तीन करोड़ हैं। ये गुजरात में राजा जयसिंह और गुजरात की सभा में रहे थे और इनकी प्रेरणा से जैनधर्म राज्यधर्म बन गया था। इन्होंने अन्तर्ज्ञ समाधि से ११७३ ई० में प्राणत्याग किया। इनके 'कुमारपालचरित' में १८ सर्ग हैं—पहले २० संस्कृत में और अन्तिम ८ प्राकृत में। 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'स्वविरावली-चरित' में जैन सन्तों की जीवनिर्वाह है। कुछ अन्य कृतियाँ ये हैं—कान्यानुशासन, छन्दोज्ञानमन, देशीनाममाला, अभिधनचिन्तामणि, अनेकार्थसंग्रह, निषट्टरोष, शब्दानुशासन, योगशास्त्र।

तथा 'भेच' मुहावरे इसी के समानार्थक है। उदाहरण—'बिरलबिरला एव जना वगति मन्दिरेवमाचरन्ति प्रयत्नवशपरस्परैवावनेष्यते।'।

६. अरण्यरोदन्याय—उक्त न्याय का अर्थ है निर्जन में रोने की वशावत। ग्राम, नगर आदि में रोनेवाले व्यक्ति से उम्मा नष्ट पूरा न हो और उसे नष्ट करने का उद्योग भी किया जाता है। परन्तु सुनसान स्थान में रोना तो सबका व्यर्थ है। 'ग्री प्रगर जिमि' व्यर्थ कार्य के लिए या किसी क्रूर के समक्ष प्रार्थना के समय पर यह न्याय होता है। यथा—'अरण्यरोदनमेव घना दग्धे माहव्ययाचन शायशो भवति।'।

७. अरन्धतीप्रदर्शनन्याय—अरन्धतीप्रदर्शन न्याय अर्थात् अरन्धती मन्त्र दिखाने का न्याय। इसकी व्याख्या स्वामी शंकराचार्य ने इस प्रकार की है—'अरन्धती त्रिदशविबुधस्तत्समीपस्था स्थूला तारमसुखा प्रथममरन्धतीति ग्रहयित्वा, तां प्रत्यारब्धय एवाश्रयतीमेव ग्राहयति।' अर्थात् किसी को अरन्धती दिखाने का इच्छुक व्यक्ति पहले उसके समीपवर्ती किसी बड़े मन्त्र को ही अरन्धती बताता है और उसके बाद वास्तविक अरन्धती को दिखाता है जिसका प्रकाश मन्द होता है। इस प्रकार जहाँ किसी सूक्ष्म वस्तु के स्पष्टीकरणार्थ पहले किसी स्थूल वस्तु को बताने निषेध किया जाता है, वहाँ 'अरन्धतीमनुव्रन्याय' का प्रयोग होता है। यथा—'अयमेव सूर्यो देव इति पूर्वमुद्दिश्य तत्पश्चात्—वास्तविकी देवस्तदनुव्रतीति अरन्धती प्रदर्शनन्यायेन गुरु शिष्य श्रापयति।'।

८. अशोकवनिन्याय—अशोकवनिन्याय अर्थात् अशोक-नामक वृक्षों की वाटिका का न्याय। रावण ने अपहृत सीता को अशोकवाटिका में रखा था परन्तु यह कहना कठिन है कि अन्यत्र कहीं न रखकर वहाँ क्यों रखा? इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य की निष्पत्ति के अनेक समान उपायों में से किसी एक का प्रयोग किया जाए, परन्तु यह न बताया जा सके कि अन्यो को छोड़ उसी को क्यों प्रयुक्त किया गया है, वहाँ 'अशोकवनिन्याय' व्यवहृत होता है। जैसे—'शायो निर्वेका स्वामिन स्वसेवकान् अशोकवनिना'वायेन। वविधकार्येषु प्रवर्तयन्ति।'।

९. अस्मलोष्टन्याय—अस्मलोष्टन्याय अर्थात् पत्थर और डेले का न्याय। जिस प्रकार मिट्टी का टोला रुद से बठोर होता है और पत्थर स कीमल, उसी प्रकार कोई मनुष्य अपने से छोटी की अपेक्षा तो महार होता है और बड़ी की अपेक्षा क्षुद्र। उदाहरण—'अस्मिन् ससारे सर्वे सापेक्षमस्मलोष्टवत्, न हि किमपि अत्यन्तमुत्तुष्टमपकृष्ट वा कथयितुं शक्यते।'।

१०. अभिकुण्डलन्याय—अभिकुण्डलन्याय अर्थात् साँप की कुण्डलाकार स्थिति का न्याय। साँप स्वभावतः कुण्डली मार कर बैठता है, इसके लिए उसे प्रवास नहीं करना पड़ता। इसी प्रकार जहाँ किसी प्रदार्थ के स्वाभाविक धर्म का उल्लेख किया जाता है, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'अभिकुण्डलवत् स्वाभाविकं हि बन्धे काव्यं न हि तत्र तस्य महाप्रदासस्थापना।'।

११. आकाशमुष्टिहननन्याय—इस न्याय का शब्दार्थ है आकाश को मुक्ती से पीटने की वशावत। जैसे आकाश को मुक्ती से पीटना असंभव है, वैसे ही किसी को असंभव कार्य करते देस इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है। यथा—'आकाशमुष्टिहननमेव तवायमुद्योगो प्रथानमन्त्रि पदप्राप्तये।'।

१२. आग्रसेकपितृवर्णन्याय—इस न्याय का अर्थ है, आम खींचने और पितरों के तर्पण करने की वशावत। आग्रह वही है जो हिन्दा की वशावत 'एक पय को काज' का है। जहाँ एक क्रिया में दो प्रयोजनों की सिद्धि अभीष्ट हो वहाँ इस न्याय का प्रयोग न्याय्य है। यथा—'सत्सत्पदस्या आग्रसेकपितृवर्णन्यायेन राष्ट्रसेवामपि कुर्वन्ति, पर्याप्त नेतन चापि प्राप्नुवन्ति।'।

१३. आशामोक्षकृतन्याय—इस न्याय का अर्थ है—प्रत्यादिन लट्ठुओं में से एक मनुष्य का दृष्टान्त । लट्ठु साने पर ही प्रसन्नता का प्रकाशन उचिन है । जो मनुष्य काल्पनिक लट्ठुओं से हृष्टि का अनुभव कर मुग्ध होना है, वह सचाना नहीं माना जाता । सो वास्तविक और वास्तविक प्रसन्नता में भेद करना ही समीचीन है । जैसे—को नाम व्यवहारपटुमानको वात्पाशामोक्षकृतन्याय दृश्यते ।

१४. इषुकारन्याय—इस न्याय का अर्थ है, बाण बनानेवाले का दृष्टान्त । यह 'याव महाभारत के द्वाविंशतम के १७८वें अध्याय के निम्नलिखित श्लोक पर आधृत है—'इषुकारो नर वक्षिदिश वात्तकमानस । समीपेनापि गच्छत राजानं नावबुद्धवान् ।' भाव यह कि एक बाणनिर्माता बाण-निर्माण में इतना निमग्न था कि वह पास में जाते हुए राजा को भी न देख सता । इसी प्रकार की एकाग्रचित्ता के लिए यह न्याय व्यवहृत होता है । यथा—'विद्यात्रय स्वप्नभाष्ययन इत्य निमग्न आसीत् यदिषुकारन्यायेन कक्षायामागतम् याचकमपि न ज्ञातवान् ।'

१५. इषुवेगोक्षयन्याय —इस न्याय का अर्थ है—बाणवेग के नाश का दृष्टान्त । अनुप से जैसे हुए राज की मति क्रमशः क्षीण होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है । इसी प्रकार जहाँ किसी पदार्थ में उष्णता, ताप, आदि का क्रमशः क्षय और अन्त में विनाश हो जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है यथा—'इयं सृष्टिरिषुवेगक्षयन्यायेन कारेण स्वयमेव प्रलयमुपैति ।'

१६. उत्खातवध्नोरगन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, निर्दन्त किये हुए सर्प का दृष्टान्त । दौड़ खलाब देने पर सर्प की अचरता नष्ट हो जाती है । इसी प्रकार वहाँ किसी बात पर पदार्थ की अनिष्टकर भाव का निवारण कर उसकी पातकता नष्ट कर दी जाती है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है । यथा—'इन्द्रप्रदक्षिणया यतोक्तच हत्वा कर्णं पाण्डवेभ्य उत्खातवध्नोरिव नितपद्रव सजात ।'

१७. उट्टलगुडन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—ऊँट और लकड़ी का दृष्टान्त । ऊँट पर लकड़ी का भार प्रायः लादा जाता है । आवश्यकता के समय वहीं से एक लकड़ी निकालकर (उट्टलचालय) ऊँट को पीट भी देता है । इसी प्रकार जहाँ विरोधी की शक्ति से ही विरोधी की शक्ति का खण्डन कर दिया जाये अथवा बैरियों के उपकरण से ही बैरियों का नाश कर दिया जाये वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है । जैसे—'सर्वो गृहस्थ उट्टलगुडन्यायेन चौरशत्रौ च और गताशुमकरोत् ।'

१८. उपरवृष्टिन्याय —इस न्याय का अर्थ है, पन में वर्षा का दृष्टान्त । भूमि उर्वरा होती है वृष्टि सफल होती है । उपर में बरसना न बरसना बराबर है । इसी प्रकार वहाँ कोई कार्य सवया बेकार हो वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है । यथा—'इमा सुधाम्यन्द्रियं सूक्तयोऽरमिरेभ्य उपरवृष्टिदन्तिभ्यम् ।'

१९. एकवृत्तगतपल्लवयन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, एक टटल पर लगा दो पत्तों की तुलना । जैसे एक टटल पर वहीकभी दो भी पल्ल लग जाते हैं, जैसे ही जब इधर भ्रमि व बल से वीर शब्द दो अर्थ देता है या एक क्रिया पल्लुगम की माधिका होती है, तब यह न्याय व्यवहृत होता है । यथा—'एकवृत्तगतपल्लवयन्यायेन देवदत्त आहूतदेवमप्यस्य भारतायनात्तरणं प्रतिनिधित्वमपि चाकरोत् ॥'

२०. कदवकोरक (गोलक) न्याय —कदवकोरक न्याय अर्थात् कदव की बलियों का न्याय । कहा जाता है कि कदव की सब बलियों पर साथ बिकसित हो उठती है । इसी प्रकार वहाँ

कुछ व्यक्ति एकदम उठ खड़े हों या सब लोग एक साथ ही कार्य में जुट जायें वहाँ इस न्याय का व्यवहार किया जाता है। यथा—‘श्रीकृष्णचन्द्रप्रबोधय कम्बजोरकन्यायेन प्रहृष्टा बभूव पण्डवाः ।’

२१. कफोष्णिगुडन्यायः—उक्त न्याय का शब्दार्थ है कोहनी और गुट की कहावत। यदि किसी की कोहनी पर कुछ गुड़ लगा दिया जाय और उसे जिहा से चाटने को कहा जाय तो वह अपने उद्योग में कदापि सफल न होने के कारण उपहामास्पद बनेगा। इसी प्रकार इस उक्ति का प्रयोग तरमानेवाली परन्तु अल्प्य वस्तु के विषय में होता है। यथा—‘सरोवरे पतितं प्रति निम्बं नीक्ष्य कफोष्णिगुडन्यायेन चन्द्रप्रहणाय प्रयतते किञ्चु ।’

२२. कम्बलनिर्णयन्यायः—अर्थ है—कम्बल स्वच्छ करने का इष्टान्त। कई बार मनुष्य कम्बल की मिट्टी झाड़ने के लिए उसे अपने पाँव पर झन्कते हैं। इस एक क्रिया के दो फल होते हैं। कम्बल भी स्वच्छ हो जाता है और पाँव भी सड़े जाते हैं। इस प्रकार यह न्याय हिन्दी के ‘क पध दो नाव’ का समानार्थक है। उदाहरण—‘द्य सायमह भ्रमणार्थं नागच्छन्, प्रदर्शनीक्षेत्र एवाभ्रमन् पथ कम्बलनिर्णयन्यायेन भ्रमणमपि जान, नवज्ञानश्चाप्युपलब्धम् ।’

२३. करिबुहिन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—हाथी की विन्धाड का न्याय। प्रश्न होता है, ‘विन्धाड’ के साथ ‘हाथी’ शब्द के प्रयोग की आवश्यकता नहीं क्योंकि ‘विन्धाड’ शब्द हाथी की चीख के लिए ही प्रयुक्त होता है। उत्तर यह है कि ऐसे वाक्यों में ‘करानू’ प्रतीत होने वाला शब्द विशिष्टता का सूचक होता है। यहाँ ‘करि’ शब्द मन्त्र या प्रबल हाथी के लिए व्यवहृत हुआ है। ऐसे ही अवसरों पर जहाँ कोई शब्द व्यर्थ प्रतीत होता हुआ भी विशिष्टतामूचक हो, यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘किं कवेस्तरय काव्येन किं काण्डेन धनुष्मत् । परस्य हृदये रत्नं न पुनर्यदि यच्छिदः ॥ इति । अस्मिन् इलोके ‘कवे’ इति पद करिबुहिन्यायेन प्रयुक्तम् ।’

२४. काकतालीयन्यायः—काकतालीयन्याय अर्थात् बीए और ताड़ के फल की कहावत। एक कोआ ताड़ के वृक्ष पर बैठा ही था कि एकाएक ऊपर की शाखा से उसका भारी फल टूट कर बीए के मिर पर आ गया जिससे वह मर गया। इस प्रकार की आकस्मिक घटना के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘अपहृत ममेद पुस्तक काकतालीयन्यायेन पुनरभिगम मापगात् ।’

२५. काकदधिघातकन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—दही को बिगाड़ने वाले कौओं का इष्टान्त। आशय यह है कि जब किसी की कौओं से दही की रक्षा करने के लिए कहा जाता है तब वह रक्षक कुत्तों आदि से भी दही की रक्षाता ही है। इसलिए जहाँ एक वस्तु अनेक का प्रतिनिधित्व करती है, अर्थात् उपलक्षण होती है, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—‘अधनीलोऽयं मदनमोहनारूपोपन्यासी आधेत्यज्य इति तातेनोपदिष्टं सुपुत्रोऽन्यानि कुम्भान्नाभीनैः काकदधिवान्नन्यायेन ।’

२६. काकदन्तगवेषन्यायः—काकदन्तगवेषन्याय अर्थात् कौए के दाँत की रोज का न्याय। बिड़िया के दूध तथा दूध के सींग के समान कौए के दाँत नहीं होते। इसलिए इस न्याय का प्रयोग वहाँ किया जाता है जहाँ कोई निमी नितान्त निरर्थक कार्य के लिए उद्योगशील हो। उदाहरण—‘मामान्येषु सार्वजनिकपुस्तकालयेषु पुरातनग्रन्थरत्नानामन्वेषणं तु काकदन्तगवेषणमेव ।’

२७. काकसिगोलकन्यायः—काकसिगोलकन्याय अर्थात् कौए की आँख के डेले का न्याय। जैसे कि कौए का पर्याय ‘दकाश’, ‘एकदृष्टि’ आदि सरकृत शब्द में व्यक्त होता है कि लोगों का यह विश्वास रहा है कि कौआ दो आँखें रखता हुआ भी देखता एक ही आँख से है। तात्पर्य यह है कि उसे बिचर देसना होता है, उधर की आँख में उसकी पुतली चली जाती है। इसी

प्रकार इस न्याय का व्यवहार वहाँ होता है। वहाँ राज्य के किसी दण्ड का अन्वय एक से अधिक तरफ किया जाय अथवा कोई व्यक्ति आक्षेपकानुसार एक से अधिक पक्षों से सम्बन्ध रखे। यथा—'दलिनोद्विषोर्मध्ये वचात्मान समर्पयन्'। द्विधीमन्वेन वर्त्तत वक्त्रिवदलक्षितः ॥' (कामन्दकीय नीतिसार - १।२४)

२८. कुत्साम्रणयनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—कृतनिर्माण का न्याय। विमान लोहा अपने क्षेत्रों की निचरों के लिए ही नदीनालों से कूल निकालने है। परन्तु प्यास लाने पर हमें से पानी पी लेते हैं। इसी प्रकार वहाँ एक उद्देश्य से किये हुए कार्य से दूसरा कार्य भी निम्न का लिया जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। यथा—'मृगावेन देशसेवायां रक्षा मेवतः कदाचिन् कुत्साम्रणयनन्यायेन समस्मदस्या अपि जायते।'।

२९. कूपनहूकन्यायः—इस न्याय का अर्थ है कूपों के मेढक की बहावत। कूप का मेढक कूप में रहता है, इसलिए कूपों से विस्तृत या विस्त्राण स्थान का अनुमान नहीं कर सकता। इस न्याय का प्रयोग उस अनुभवहीन व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसका पालनपोषण सन्तुष्टि बना करण में हुआ हो और जो सार्वजनिक जीवन तथा मनन आदि की गतिविधि में अलक्षित हो। यथा—'अथ खनु देशमत्तोऽपि कूपनहूक एव मन्यते युगधर्मस्य' 'सन्तुष्टेयुः कुडुम्बकम्' इति लक्षणात्।'

३०. कूपपत्रघटिकान्यायः—कूपपत्रघटिकान्याय अर्थात् अरहट की घटियों (लोहों) का न्याय। अरहट की घाटी के मध्य बँधे हुए लोहों की दशा समान नहीं होती। जब कुछ लोहे नीचे पानी से मरते हैं, तभी ऊपर के लोहे रिक होते हैं। कुछ पूर्ण लोहे एक ओर से ऊपर की ओर हैं तो कुछ रिक नीचे की ओर हैं। समार में मनुष्यों के मरण की दशा भी इसी प्रकार भिन्न-भिन्न है। इसी अर्थ में इस न्याय का प्रयोग यों होता है—'कूपमन्वघटिका इव अन्योऽन्यमुपनिष्ठन्ते रायः'।'

३१. क्षीरनीरन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—दूध और पानी का वृष्टान्त। जब दूध और पानी परस्पर मिल जाते हैं तब यह जानना दुष्कर होता है कि उनमें दूध या पानी किसका और कहाँ है। इसी प्रकार जब दो या अधिक पदार्थों में पवित्र सम्बन्ध बनाना हो तब दूध-पानी की उपमा दी जाती है। यथा—'क्षीरनीरन्यायेन साधनानामेव मित्राणां मैत्री भवेत्स्वरी भवति।'।'

३२. गगनरोमम्यन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, आकाश की जुगली या पागुर बनने का न्याय। यदि कोई पशु नीचे आकाश की घास का मैदान मानकर मुँह हिलाता हुआ यह समझने लगे कि घास की जुगली कर रहा है तो उसका यह उद्योग निरर्थक निष्फल होगा। इसी प्रकार क निरर्थक उद्योग के विषय में इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'लोचसेवां दिना शास्त्रपठोऽपि भित्तौ ननु गगनरोमम्य इव।'।'

३३. गण्डुरिकाप्रवाहन्यायः—इस न्याय का अर्थ है मेढियाधसान। यदि मेढों के झुंड में से एक नेत्र नदी आदि में गिर जाए तो जोड़ मेढों की रोके नहीं रुकती और नदी में बूँद पड़ती है। इसी प्रकार वहाँ लोग समझने पर भी मत्पण का अनुसरण न करें और अन्ध-गुन्ध किसी के पक्षि चलने आदि, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'न जनु गण्डुरिकाप्रवाह विचारानि केमरिणः।'।'

३४. गुडजिह्विकान्यायः—उत्त न्याय का अर्थ है, गुड की जिह्वा पर लाने की बहवत। प्रायः बहुत बड़ी दवारें प्रसन्नगुडहूँक नहीं पीती। जब उनके हिन में लिए उन्हें यह विज्ञानी अने कार्य होती है तब गुडिमन् मनुष्य पहले उनकी जिह्वा पर गुड का लेप कर देते हैं। इससे और अधिक बहवत गुड का लून हो जाती है। इसी प्रकार जब किसी मनुष्य की किसी दुष्कर कार्य में मूढ़ बनना होता है तब कोई मन्त्रमन्त्र आदि दे दिया जाता है। देने ही अवसर इस न्याय में

प्रयोगार्थ उपयुक्त होते हैं। जैसे—'न हि लोकाः प्रायशो विना गृहत्रिहिरा दुष्करमनुभवन्ते ।'

३२ घटुकुटीप्रभातन्याय — घटुकुटीप्रभातन्याय अर्थात् चुगी को चौकी के समीप तबेरा होने का न्याय। चुगी से बचने के लिए गाड़ीवान आदि रात को उन मार्गों में निरन्तरता का यत्न करते थे जिनमें चुगी देने में बच पायें। परन्तु कभी-कभी दुर्भाग्यवश प्रभात वहाँ हो जाता था जहाँ चुगी की चौकी समीप होती थी। इस प्रकार उनके क्रिये-कार्य पर पानी फिर जाना था। इस वहावन का प्रयोग हमें ही अवसरों पर किया जाता है जिन पर परिहाय वस्तु अवश्य हो समझ आ जाती है। यथा—'कानिचिद् वस्तून्वेकान्येव क्रेतुमह मध्याह्ने आपणमगच्छन्, परन्तु घटुकुटीन्यायेन मोहनस्तत्र भा विक्रमनोरय व्यदधात् ।'

३३ घृणाक्षरन्याय — घृणाक्षरन्याय अर्थात् घुन या किमी अन्य कीड़े द्वारा रुकड़ी आदि में कोई अक्षर बन जाने का न्याय। घुन आदि कीड़े लकड़ी, पुस्तक के पत्रे आदि को घाते रहते हैं। कभी-कभी उनके रज से कोई अक्षर-सा बन जाता है, जिसे देख कौतुक होता है। इसी प्रकार दैवयोग से होने वाली बातों के लिए इस न्याय का व्यवहार होता है। पूर्वोक्त अन्धचटक-न्याय का आशय भी इसी प्रकार का है। यथा—'प्राचीनइत्यन्विष्टप्रत्यान्वेषणाय गतेन मया तत्र 'विमाननिर्माणम्' अपि घृणाक्षरन्यायेन विगतम् ।'

३४ चन्दनन्याय :—इस न्याय का अर्थ है, चन्दन के तेल की उपमा। यदि शरीर के किसी एक भाग पर चन्दन के तेल की बूँद या चन्दन का लेप लगाया जाए तो उसके आच्छादक प्रभाव का समय शरीर में अनुभव होता है। इसी प्रकार जहाँ एकत्र स्थित पदार्थ व्यापक प्रभाव डाले वहाँ हम न्याय का व्यवहार होता है। यथा—'चन्दनन्यायेन प्रसरति दिग्दिगन्ता घृणा-धुगद्वं महात्मना कीर्ति ।'

३५ चौरापरामाण्डव्यनिग्रहन्याय — इस न्याय का अर्थ है, चोरों के अपराध पर माण्डव्य को दण्ड देने की कहावत। महामारत के आदिपर्व में श्रद्धि अणीमाण्डव्य के मीनवन से सम्बन्धित तप की कथा आती है। जब वे तपोमग्न थे तब चोर, चुराई हुई मन्थि के सहित उनके आश्रम में आ गिरे। रात-कर्मचारियों ने चोरों के साथ उन्हें भी पकड़ लिया और लगे सूजी पर चढ़ाये। अन्त में मुनिजी छोट तो दिये गये परन्तु सूजी की अणी के शरीर में रह जाने के कारण अणीमाण्डव्य कहलाने लगे। इसी प्रकार जहाँ 'कोरे कोई और भरे कोई' का व्यवहार होता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'वशाचिन्नु नृपः कुसयाननुष्टापरार्थेन सर्वानिव प्राप्तवानि चौरापरामाण्डव्यनिग्रहन्यायेन दण्डयति ।'

३६ छत्रिन्याय :—उक्त न्याय का अर्थ है, छात्रेवालों की कहावत। आशय यह है कि यदि किसी जाति हुए जन समुदाय में अनेक लोगों ने छत्रियाँ ठानी हुई हों तो हम उन सबको 'छात्रे वाले लोग' कह देते हैं चाहे सबके पास छत्रियाँ न भी हों। इसी प्रकार जहाँ कुछ एक के सम्बन्ध में कही-हुई बात सब पर चरितार्थ कर दी जाती है, वहाँ हम न्याय का व्यवहार उचित होता है। जैसे—'पुरा देवा राहु मुरमेव मेनिरे छत्रिन्यायेन ।'

३७ जामातुशुद्धिन्याय — इस न्याय का अर्थ है—तमई कुन पुनरीक्षण की कहावत। मेरुतुंग के 'प्रबन्धविन्तामणि' में कहानी यों दी गई है कि विक्रमादित्य ने राजकुमारी के लिए वर हँदने का काम वररुचि को सौंपा। राजकुमारी ने वररुचि से पढ़ते समय एक दिन उनकी अवस्था की थी, इसलिए चतुराई से वररुचि ने एक मूढ को राजा का जामाता बना दिया। वररुचि के उपदेशानुसार जामाता चुप ही रहता था परन्तु राजकुमारी ने परोक्षार्थ एक पुस्तक उसे दोहराने की दी। उसने अक्षरों के ऊपर के बिन्दु और मात्रार्थ नखछेदिनी से मिया डाली। कुमारी पहचान गई कि यह तो कोई चरवाहा है। तब मे मूर्ख से शोषण-कार्य कराने के सम्बन्ध

में यह न्याय चल पड़ा है। यथ—वैश्विष्य अयोग्यजनै करितं कार्यं ज्ञानादशुद्धिवदुपहा-
सात्परमेव भवति ।

४१ तिलतण्डुलन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है—निम्न और चञ्चल की उपमा। दूध और पानी
भी मिलते हैं तथा निल और चञ्चल भी। परन्तु प्रथम मेल में दूध पानी का पथक्त्व ऊपेय
होता है, दिनाय के स्पष्ट। नि-चञ्चल की तरह जहाँ मेल नो हो परन्तु दोनों पदार्थ पृथक्
पृथक् प्रतीत भी होते हों, वहाँ तिलतण्डुलन्याय का प्रयोग किया जात है। जैसे—‘वथ नाम
मौनमेव’ पण्डितानामकृताया आच्छादनं भवितुमर्हति विदुषा समाजे, तिलतण्डुलयो स्पष्टं
पृथक्दशनात् ।

४२ तुलोद्यमनन्याय —इस न्याय का अर्थ है—तुला को उठाने की कहावत। आशय यह है
कि जब तुला का एक पन्ना हाथ में उठाया जाता है तब दूसरा स्वयमेव नीचे चला जाता है।
इसी प्रकार जहाँ एक जिंदा से दूसरी किया करना भी अभिप्रेत होता है वहाँ इस न्याय का
व्यवहार होता है। जैसे—‘आनताविनभावान्न हन्यादेवाविचारयन्, तेन हि शुचीप्रयत्नम्यायेन’
दुष्टनारी जायते देवप्रसन्नम् ।

४३ मृणमक्षणन्याय :—इस न्याय का अर्थार्थ है—मिनका खाने का न्याय। भारत में यह
रीति रही है कि जब कोई व्यक्ति किसी के सम्मुख दाँतों से मिनका दबा लेगा या तब इसका
आशय होता था—पराजय की स्वीकृति। देवी दशा में यह अवश्य माना जाता है। हिन्दी में
यह वक्ति ‘दाँतों तले मिनका दबाना’ के रूप में प्रचलित है। पराजय की स्वीकृति के अर्थ में
इसका प्रयोग भी होता है—‘आर्थे पराजिता रिषव खलु मृणमक्षणन्यायेन निजप्रमाणानुरक्षन् ।’

४४ दग्धेऽनवह्निन्याय :—इस न्याय का अर्थ है—उस अग्नि का दृष्टाव जो ईंधन की अलकट
स्वर्ध भी उल्लस गइ हो। इसी प्रकार जहाँ कोई वस्तु अपने कार्य को सम्पन्न कर स्वर्ध भी समाप्त
हो जाय, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। ‘अलकटकरोपुन्याय’ का अर्थ भी ऐसा ही है।
यथा—‘पाण्डवना कोप दुर्वीचनान्नात् विनाश्य दग्धेऽनवह्निन्यायेन शान्त ।’

४५ देहलीदीपकन्याय :—देहलीदीपकन्याय अर्थात् देहली में रखे हुए दीपक का न्याय। कमरे
के कोने में रखा हुआ दीपक तो कमरे को ही आलोकित करता है परन्तु देहली में पर रखा
हुआ अन्दर और बाहर दोनों ओर प्रकाश देता है। इसी प्रकार जहाँ कोई छन्द, वाक्यांश
या कोर अन्य वस्तु दो तरफ अपना प्रभाव डाल रही हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है।
उदाहरण—‘भवति हि पितृर्धर्मार्थं भवितव्यं भोजनस्यातिथ्युपकरणत्वं देहलीदीपकन्यायेन ।’

४६ घान्मपलालन्याय —इस न्याय का अर्थ है—अनाज और भूते का दृष्टान्त। जिस प्रकार
लोग अनाज को ग्रहण कर लते हैं और भूते को त्याग देते हैं, उसी प्रकार जहाँ सारसहित वस्तु
की लिया तथा निस्सार हो छोड़ दिया जाता है, वहाँ इस न्याय का व्यवहार होता है। जैसे—
‘मासो गुपे सर’ निस्सारम् अपाग्य वस्तु-घान्मपलालन्यायेन ।

४७ नष्टाश्वदग्धरथन्याय —इस न्याय का अर्थ है—गुप्त घोड़ों और जने रथ की कहावत।
कहावत की आधार-कथा इस प्रकार है कि दो यन्त्री अपने अपने रथों में यात्रा करते हुए रात
को एक गाँव में ठहरे। देवयोग से रात को गाँव में अग लगे जिनमें एक के घोड़े गुप्त हो गये और
दूसरे का रथ जल गया। तब एक न घोड़ों को दूसरे के रथ में जोड़ दिया गया और यात्रा जारी
रही। इसी प्रकार यह न्याय वहाँ व्यवहृत होता है जहाँ पारस्परिक लाभ के लिए मित्र जुल्फत
काम किया जाय। जैसे—‘अपदुरहमितिहमे तथा पुस्तव तु गर्भे, मये नष्टाश्वदग्धरथन्या-
येनेवासी परीक्षमुचरिष्याव ।’

४८ नात्मिकाग्रेण कर्णमूलरूपेणन्याय — इस न्याय का अर्थ है—जब की नीर से कान की अपोभाग की खींचने की कहवत । जैसे नार के अग्रभाग में कान के निचले भाग की खींचना अमम्भ्र है, वैसे ही अत्रत्य विषयों में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—
'यो वै विषादी परिश्रम विनैव विद्वान् अनितुमिच्छति, मन्तु नात्मिकाग्रेण कर्णमूलं कपति ।'

४९ नृपनापितपुत्रन्याय — नृपनापितपुत्रन्याय अथवा राजा और नार के बेटे की कहावत । कहा जाता है, कि एक राजा ने अपने माई की राज्य भर में मुन्दरतम बालक लाने का आदेश दिया । वह नार मरे देश में बहुत घूमा फिरा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक दिखाई न दिया जैसा नि राजा चाहता था । विवश होकर वह घर लौट आया । उसका अपना पुत्र न स्वरूप धा न सुश्रुण परन्तु उसे वही सुन्दरतम प्रतीत हुआ । इसलिए वह उसे ही लेकर राजा के समक्ष जा उपस्थित हुआ । पहले तो राजा यह समझकर कि यह भेरा उपशम कर रहा है, कुछ हुआ; परन्तु कुछ सोचने पर उसे इस मनोवैज्ञानिक तथ्य का बोध हुआ कि प्रत्येक व्यक्ति आत्मीय पदार्थ को ही सर्वोत्तम समझता है । अतः इस न्याय का प्रयोग उन्हीं अवसरों पर होता है जिनमें कोई व्यक्ति अपनी बुरी वस्तु को भी अच्छी समझता है । यथा—'अज्ञानमपि स्व कुलवय नृपनापितपुत्रन्यायेन सत्त्वाम्यपदे गणयन्ति ।'

५० पक्षालनन्याय — पक्षालनन्याय अर्थात् कीचड़ खोने का न्याय । शरीर पर लग कीचड़ को सभ्य मनुष्य तुरन्त धो डालता है । परन्तु उसमें वही अच्छी बात यह है कि कीचड़ लगने ही न दिया जाय । इसी प्रकार परिस्थितियों से पहले ही बचना उत्तम है जिनमें पड़ने के पक्षधर फिर उनके प्रभाव की मिटाने का यत्न किया जाय । जैसे—'पक्षाघातादि वित्तस्य वरं पूर्वममद्ग्रह । प्रक्षालनादि पक्वस्य दूरादस्पृशेन वरम् ।'

५१ पम्बन्धन्याय — इस न्याय का अर्थ है लँगड़े और अंधे की कहावत । न अथा मार्ग देखा सकता है न पंगु पथ पर चल सकता है । परन्तु यदि पंगु अंधे के कर्णों पर बैठ जाय तो दोनों निश्चिन्त यात्रा कर सकते हैं । इसी प्रकार जहाँ पारस्परिक कामार्थ सहयोग किया जाय, वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—'सुवक्ताऽपि देवदत्तो न पण्डितः, सुपण्डितोऽपि यद्देवदत्तो वक्तृत्वविहीनः, तथापि तौ पम्बन्धन्यायेन संगत्स्व स्वदेशसेवायां सन्तुष्टौ दृश्येते ।'

५२ पिष्टपेषणन्याय — पिष्टपेषणन्याय अर्थात् पीसी हुई वस्तु को पुन पीसने का न्याय । गेहूँ, मक्का आदि की तो पीसा जाता है परन्तु उनके आगे की पीसना निरर्थक होता है । साथ ही वह पेया पेषण की मूर्तता का धोतर माना जाता है । इसी प्रकार के अनावश्यक और अनर्थकारियों के सम्बन्ध में उक्त न्याय का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है—'महान् दोष एवाय बद्धिः सुकस्य पुन पुनर्वचनम्, पिष्टपेषणं हि तत् ।'

५३ पुष्टगुडन्याय — इस न्याय का अर्थ है, मोठे टटे का दूधान । आशय यह है कि यदि भीरने वाला कुत्ते की ओर मोठा टटा फेंका जाय तो वह मनुष्य दूधरे कुत्तों की भी लग कर शान्त बन देगा । इसी प्रकार नहाँ एक क्रिया से एकधियन वार्यों की मिद्धि हो जाय, वहाँ इन्हीं न्याय का प्रयोग होता है । जैसे—'हीरोऽसौमानात्मकोऽनगरदोरणुमाम्बां विज्वल्योर्महं युद्धं पुष्टगुडन्यायेन निमिषेण समाप्तिमाप्नु ।'

५४ प्रधानमहलनियर्हणन्याय — इस न्याय का अर्थ है, मुख्य शत्रु के विनाश की कहावत । आशय यह है कि जब प्रबलतम वैरो का विनाश कर दिया जाता है तो सामान्य वैरी स्वयमेव वग्न हो जाते हैं । इसी प्रकार जब भारी बाधाएँ मिट जाती हैं तो सामान्य विघ्न बाधक नहीं बन सकते । जैसे—'हतयोर्ध्वमद्रोणयोनिस्थितं पद्माभूरपाण्डवानां विजयः प्रधानमहलनियर्हणन्यायेन ।'

२६. प्रपानकरतन्वाय —अथवा तन्वाय अथवा शर्वन की उपना । शर्वन बनाने के लिए अनेक द्रव्यों को मिश्रित करना पड़ता है । शर्वन का स्वप्न उनन स विनी एक के भी तुल्य नहीं होता । इसी प्रकार जहाँ अनेक वस्तुओं के संयोग से एक विलक्षण पदार्थ निर्मित हो जाय वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है । यथा—‘अभिमन्यु किं प्रपानकरतन्वादेन वृक्षोऽप्यद्वयं पुनैस्त्वचिचयः ।’

२७. फलवत्प्रहकारन्याय —इस न्याय का अर्थ है—अम के फलित पेड़ का दृष्टान्त । अम का फलवत् वृक्ष फल ही नहीं देता, भले-भरि यात्रियों को सुआध और छाया भी प्रदान करता है । इसी प्रकार जहाँ कोई क्रिया अष्टौ फल के अनिरिक्त भी होर फल दे, वहाँ हम न्याय का प्रयोग किया जाता है । यथा—‘बुद्धेर्नष्टि हि ज्ञान प्रत्यवधिभी मादुबधन, प्रथमदिभी पितृ नेत्रयोर्विक’शमित्रो च भवति बगस्य फलवत्प्रहकारन्यायेन ।’

२८. बहुराजदेशन्याय —इस न्याय का शाब्दार्थ है—अनेक राजाओं के देश की गृहवत् । जहाँ एकधिक राजाओं का शासन होता है वहाँ उनकी परस्पर विरोधी आशाओं के कारण प्रकाश भंगी पड़ता हो उठता है । यथा—‘परिनिवृत्तुने मानापित्रोर्वैमत्य विचिन्ते तत्रातिदुःखिणि भवति सन्निबहुराजकदेशवत् ।’

२९. बीजाङ्कुरन्याय —बीजाङ्कुरन्याय अथवा बीज और अङ्कुर का न्याय । इस न्याय का उद्देश्य बीज और अङ्कुर के पारस्परिक कारण-कार्यमत्व से हुआ है । बीज से अङ्कुर उत्पन्न होता है अतः बीज कारण है, अङ्कुर कार्य । परन्तु अणु चकर उन्नी अङ्कुर से बीज भी उत्पन्न होता है, इसलिए अङ्कुर कारण और बीज कार्य बन जाता है । इस प्रकार जहाँ दो पदार्थ एक दूसरे के कारण और फल भी हों वहाँ यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है । जने—‘स्वात्म्येन वित्तमधिगम्यते विद्येन च पुन स्वस्म्य बीजाङ्कुरवत् ।’

३०. मण्डूकप्लुतिन्याय —उक्त न्याय का अर्थ है, मँडक की छलाह की लोकोक्ति । मँडक सदाय समम मर्ग का स्वर्ग करना हुआ नहीं चलाता, छलाहें लगाया जाता है, जिससे मध्यस्थी स्थान अस्पष्ट रह जाता है । इसी प्रकार जहाँ कोई नियम सदा पर समानरूप से लागू न हो, बीच-बीच में कई वस्तुओं की छोटपा जाय, अथवा कोई काम बीच-बीच में छोड़कर दिया जाए वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है । यथा—‘अस्माकमध्यापक पञ्चमस्तुतं मण्डूकप्लुतिन्यायेन पाठपठितं तु यथाकमम् ।’

३१. मांस्वदन्याय —मत्स्य न्याय अर्थात् मछलियों का दृष्टान्त । प्रायः यह देखा जाता है कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को हडप जाती हैं । इस प्रकार जहाँ बलवान् निर्बल को मारने या मरने लग जाय वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है । हिन्दी की लोकोक्ति ‘जित्नी लाठी, उन्नी भँस’ भी इसी भाँति की व्यक्त करती है । उदाहरण देखिए—‘सुरासुरासं वै यदि पादौ मांस्वदन्याय प्रवर्तते, तर्हि किमश्वत्थम् ।’

३२. रथकारन्याय —‘रथ न्याय का अर्थ है—रथकार (रथ बनानेवाले) का दृष्टान्त । शास्त्र में कहा गया है कि रथकार ब्राह्मणों में अग्नि की स्थापना करे । प्रश्न उठता है, रथकार का अर्थ रथ बनाने वाला कोई भी व्यक्ति है या विशेष उपजाति का मनुष्य । तैमिनि ने निर्णय दिया है कि केवल ब्राह्मणों का व्यक्ति ही । इस प्रकार इस न्याय का भाव यह है कि शर्मों का रुढ़ या प्रचलित अर्थ बौद्धिक अर्थों से बचाना होता है । यथा—‘अथ तु रथकारन्यायेन कार्यपटुदेव कुशलो मन्यते न पूषवत् शूरो कृते कुशलमनदक्ष एव ।’

३३. राजपुरप्रवेशन्याय —इस न्याय का शाब्दार्थ है—राजधानी में प्रवेश का दृष्टान्त । राजपुर में प्रवेश करने का नियम यह है कि दक्षिण बनकर पर्याय से प्रविष्ट हुआ जाए । जो उच्छाङ्गल

इस नियम को भंग करता है, उसके पिटने की आज्ञाका रहती है। इसी प्रकार जहाँ किसी कार्य को नियमानुसार करना अभीष्ट हो, वहाँ इस न्याय का प्रयोग करते हैं। दृष्टान्त लीजिए—
'परिमत् तु विद्यालये छात्रा रात्रिपुरप्रवेशन्यायेन स्वकृता प्रविशन्ति न तत्र कोलाहली जायते ।'

६३. रमाक्षिप्तकाष्ठन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, नमक की खान और लकड़ी का दृष्टान्त। यह प्रसिद्ध है कि जो वस्तु नमक की खान में फेंकी जाती है, नमक बन जाती है। इसी प्रकार जहाँ कुम्भगनि के प्रबन्ध प्रभाव से अन्य वस्तु भी वैसी बन जाए, वहाँ इस न्याय का प्रयोग उचित है। यथा—'विनीता अपि जना अधिकार प्राप्य रमाक्षिप्तकाष्ठन्यायेन दृष्टा भवन्ति ।'

६४. लोहचुम्बकन्यायः—लोहचुम्बकन्याय अर्थात् लोहे और चुम्बक का न्याय। यह न्याय उस सम्बन्ध को व्यक्त करता है जिसके कारण दो पदार्थ दूर होते हुए भी, स्वभावः एक-दूसरे के समीप जाने का उद्योग करते हैं। जैसे—'दूरस्था अपि सज्जना लोहचुम्बकवत् मिथो मिलितुं वाञ्छन्ति ।'

६५. बरुबन्धनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है, बगुले को एकजने का दृष्टान्त। किसी ने बगुला एकजने की रीति यह बताया कि जब बगुला बैठा हो तो चुपके से उसके मिर पर मक्खन रख देना चाहिये। जब मक्खन धूप से थिलथिलर उसकी आँखों में पड़ेगा तो वह अन्धा हो जायगा और झट पकड़ लिया जाएगा। वस्तुतः यह विधि हास्यास्पद है क्योंकि बगुला तभी क्यों न पकड़ लिया जाए जब उसके मिर पर मक्खन रखा जाए। इसी प्रकार जहाँ सहज सरल विधि को छोड़कर किसी हास्यास्पद ढंग को स्वीकृत किया जाता है वहाँ उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। जैसे—'बरुबन्धनन्यायप्रदाय एवार्थं यद् गलबण्डिकारारेण अवयते मार्जारगमे मूषाणा-मात्मरक्षाविचारः ।'

६६. वनसिंहन्यायः—इस न्याय का शब्दार्थ है—वन और सिंह का दृष्टान्त। सिंह न हो तो लोग वन को ही काट डालें और वन न हो तो सिंह को ही मार डालें। ये दोनों वस्तुतः एक-दूसरे के रक्षक हैं। इसी प्रकार जहाँ पदार्थ परस्पर रक्षक हों वहाँ इस न्याय का प्रयोग किया जाता है। जैसे—'न काण्डु सेव्यमेवकी अन्योऽन्य इत्यु पारयत वनसिंहवद-योऽन्याभ्रयत्वात् ।'

६७. वह्निधूमन्यायः—वह्निधूमन्याय अर्थात् अग्नि और धुँएँ के निरन्तर साथ-साथ रहने का न्याय। जहाँ धुँआँ होगा वहाँ अग्नि होगी ही है। इसी प्रकार जहाँ एक पदार्थ का दूसरे से अनिवार्य साहचर्य बताया जाए वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। जैसे—'यश्च योगेश्वरः कृष्णः यश्च धनुर्धरः पार्थः, तत्र विजयो वह्निधूमन्यायेन निश्चित एव ।'

६८. विषकृमिन्यायः—विषकृमिन्याय अर्थात् विष के कीड़ों का न्याय। साधारण प्राणी तो विष के प्रभाव में मर जाते हैं, परन्तु विष के कीड़े विष में ही उत्पन्न होते हैं, उसी को खाते हैं और फिर भी जीवित रहते हैं। इस न्याय का प्रयोग उन अवसरों पर होता है जिन पर सामान्य प्राणी तो प्राणों से हाथ धो बैठते हैं परन्तु व्यक्तिविशेष सुरक्षित रहते हैं। जैसे—'हरिजनानां कर्म कुर्वन् स भान्यास्तु अचिरात् कालकवलितो भवेयुः ते च हरिजना पुन विषकृमिन्यायेन दीर्घजीविनो भवन्ति ।'

६९. विषवृक्षन्यायः—विषवृक्षन्याय अर्थात् विषैले पेड़ का न्याय। कालिदास ने 'कुमारसम्भव' में कहा है—'विषवृक्षोऽपि सबर्ष्य स्वयं क्षेतुमसंप्रतम्' अर्थात् यदि विष का वृक्ष भी स्वयं लगाया और पाला पोसा गया हो तो उसे काटना या उखाड़ना उचित नहीं होता। इसी प्रकार जिस व्यक्ति का स्वयं पालन पोषण किया हो, वह बड़ा होने पर अनिष्टकर भी सिद्ध हो, तो भी उसका विध्वंस समीचीन नहीं। यही इस न्याय का अर्थ है। उदाहरण द्रष्टव्य है—'विषवृक्षन्यायमनुसरता पित्रा कुपुत्रस्पाप्यदिनं कर्तुं न पार्यते ।'

७० दीक्षितहरन्याय — 'बोवितर' नाम कर्षात्तरण औषधम् का न्याय । नदी, मत्तोर, समुद्र आदि में इन देशों में कि नदी कनरा एक दूसरी को नव तक ओओ दनेनी वनी है वद एक वे मव नव तक नई — पदुवनी । इसी प्रकार वद कृत्त वस्तु या व्यक्ति एक दूसरे को सहजता से सम्बन्ध तक वा पदुवने है तव इस न्याय का निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया गया है—'बोवितर'न्यायेन अन्योन्मीयकारि खतु मकन्निड जीविताम् ।'

७। वृद्धकुमारीदास्य(वर)न्याय—वृद्धकुमारों के प्यार अथवा वृद्धी कन्या को वर का न्याय। दशवर्ति ने महाभारत में लिखा है कि जब इन्द्र ने एक वृद्धी कन्या को वर माँगने को कहा तब वह बोली—'पुत्रा न वदुःखं पृथुकोदयः काञ्चनपाया मुञ्चोरे' अर्थात् मेरे पुत्र मुझ को पादों में प्रमूत दूध और घी से सुन्न करवा लेंगे। अब यदि यह वर प्राप्त हो जाय तो पति, सन्तान, धन, दूध, घी, सुवर्ण आदि सभी पदार्थ स्वतः प्रवृत्त हो जाते हैं। इसी प्रकार वहाँ कोई इसी वस्तु माँगी जाय मिलके साथ अनेक उपयोगी द्रव्यों की प्राप्ति अनिवार्य हो जाय, वहाँ इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—'स्वर्गैः राजर्षिभ्यश्चन्द्रमणिभिश्चन्द्रमणि वर देव वाचमनेन न्यवृद्धेन आत्मनः हृते दैवेन न्यवे पत्नी पुत्र पौत्रश्च वरः ।'

५२ श्यालनकुलन्याय —इमं नयं का अर्थ है—साँर और नेवले की कहावत। साँर और नेवले में जलमिश्र हो जाता है। वे वहाँ एक-दूसरे को देखने हैं, रुक जाते हैं। उहाँ की तरह जब दो वस्तुओं में स्वभाविक नैर हो तब श्यालनकुलन्याय (अग्निकुलन्याय) का व्यवहार होता है। यय—'अपत्ते तु रुधमरीरुमोदशाभ्यन्तनकुलवद इत्ययम्।'

७३ शतपत्रपत्रशतमेदव्याय .—उक्त न्याय का अर्थ है—हमारे के सौ पत्रों को देने का दृष्टान्त । यह कोई व्यक्ति कर्म के सौ फल पत्रों को एक से देता है तब देना लाज है कि तब पत्र पत्र-साथ ही छिड़ गये हैं । परन्तु बलुन छिड़ते एक दूसरे के अलग हो रहे हैं । इसी प्रकार बड़ा कर्मर होने का । अनेक विषयों का एक साथ होना कहा जाता है, वहाँ यह न्याय व्यर्थ होना है । अतः—“पुंति सुत भुक्ता सा भव्यो कर्मिना मूर्खिना सुतं च पात पत्रपत्रशतमेदव्याय ।”

४१ शालमन्याय—‘इस न्याय का अर्थ है वर्तनी का इष्टान्न । मूर्ख अपना जलते हुए दांत को देख देता मुग्ध होता है कि प्रणीत एक को बिन्ता नहीं करता । इसी प्रकार मूर्ख लोग विषमों से अहट होकर प्रणियों से हाथ भी बैठते हैं । आबकल इनका प्रयोग प्रसमा के लिए भी किया जाता है । दोनों क इष्टान्न एक ही वस्त्र में देखें—‘विषयेषु यन्मदन्ते मूढाः, प्रमत्ता कामुका’, राष्ट्रवेण्या न राष्ट्रभक्त ।’

५ शाखाचन्द्रन्याय—शाखाचन्द्रन्याय अर्थात् वृक्ष की शाखा और जड़ का न्याय । अकारण में चन्द्र तो बहुत दूर होता है परन्तु प्रत्यक्ष यदि के दिन किसी को दिखाने के लिए प्रायः कहा जाता है—'देखो, वह वृक्ष का शाखा के ऊपर है ।' इसी प्रकार जहाँ कोई पदार्थ हो तो बहुत दूरवर्ती पर उसका दिखाने के लिए ऐसे पदार्थ की ओर मकड़ किया जाय जो उसके समाप्त प्रमाण होना हो, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है । जैसे—'शाखाचन्द्रन्यायिन पेरिसनारामनि रोम सन्निपन्नितनेव इत्यदि काश्चि मनश्चित ।'

७१ शिरोवेष्टनेन नामिहास्पन्ध्याय — उक्त न्याय का अर्थ है—बहु की सिर के पीछे से लकड़ लकड़ की छूने का दृष्टान्त । लकड़ की समान से छूना झुकर है, बहु पीछे से लकड़ छूना झुकर । उर उरन्त्येव नवज नमिहस्पन्ध्या हा ता बहु की सिर के पीछे में झुकर छूने में दोर लग नहीं है । १३१ प्रकार का लोग किन्तु कानों की पीछे दृष्ट से नहीं करते, प्रमादितकर अर्थात् कह

महते या देते हैं। देने का अवसरों पर उक्त न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘को लामोजेन शिरोविष्टनेन नामिकम्पर्येन, प्रकृतं सप्तं बुद्धिः’

७७ श्रुतजोषामनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—जुन की दूँट को मँथा करने का दृष्टान्त। कुत्ते की पूँट अनेक यत्न करने पर भी मीथी नहीं होती, प्रयत्न करने वाले का श्रम व्यर्थ ही निरुद्ध होता है। इसी प्रकार जहाँ काम के लिए किया हुआ उद्योग मक्का निरुद्ध रहे, वहाँ यह न्याय व्यवहृत होता है। यथा—‘श्रुतजोषामनन्यायः सप्तं बुद्धिः’

७८ शशोद्धतनन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—मृग को उद्यत करने का दृष्टान्त। मृगशिक प्रत्यक्ष जीव शरीर के शोषार्थक है, निर्जिव के नहीं। इसी प्रकार जहाँ सर्वथा निरुद्ध उद्योग किया जाता है, वहाँ यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘पक्षिणननिर्जिवन्तर मुनिनजीगस्य पुन मारते सन्ध्यायन शशोद्धतननेव’

७९ सिंहावलोकनन्यायः—सिंहावलोकनन्याय अर्थात् सिंह के समान देखने का न्याय। चउठा हुआ सिंह सामने गो देखता ही है, बायीं-बायीं देर बढ़ पड़े भी दृष्टिपन कर लेता है कि कोई भक्ष्य वस्तु पट्टे के मोतर पड़े भी हो या नहीं। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति अपने-अपने कार्य करता हुआ निरुद्ध कार्य पर भी कुछ ध्यान करता है, तब सिंहवलोकनन्याय का प्रयोग होता है। जैसे—‘सिंहवलोकनं सिंहावलोकनं कथमेव’

८० मिहताटीनन्यायः—अर्थात् रेत से तेल निकालने की कहावत। जैसे रंगे या राश के सिर पर सीता नहीं निकलते वैसे ही रेत से तेल की उत्पत्ति असम्भव है। इसी प्रकार की असम्भव वस्तु के लिए यह न्याय प्रयुक्त होता है। यथा—‘मिहताटीनन्यायः कथमेव’

८१ सुन्दोपमुन्दन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—सुन्द और उपसुन्द की वपना। महाभारत के अधिपर्व (अध्याय २०९-२१२) में सुन्दोपमुन्द नाम के दो कन्ये अन्तर भागनों की कथा आती है। उन्हें गृह करने के लक्ष्य से राजा ने विषकर्मा की एक भविष्य सुन्दरी (विरोचना) निर्माण करने को कहा। राजा ने विरोचना को उन भविष्यों के पक्ष के उपाय-सौधान ने भेजा। दोनों उसे देख मुग्ध हो गये और एक-दूसरे की ओर खींचने लगे। अन्त में दोनों क्रुद्ध होकर एक पडे और दोनों ही मर गये। इन्हीं के समान जब दो स्त्रियें एक-दूसरे परार्थ एक-दूसरे के नाशक हों, तब इस न्याय का प्रयोग होता है। जैसे—‘सुन्दोपमुन्दन्यायः कथमेव’

८२ सूचीकटाह्नन्यायः—सूचीकटाह्नन्याय अर्थात् सूची और काँडे का न्याय। किसी छोटा का पत्र जब एक व्यक्ति कहावा बनवाने जा पहुँचे और दूसरा सूँ, तब छोटा पत्र पड़े सूँ बनाता है क्योंकि उसे वह सूँ ही अन्त काँडे में बन लेता है। इसी प्रकार इस न्याय का अर्थ यह है कि कठिन तथा दीर्घकालीन कार्य पड़े करना चाहिए और सुकर तथा अल्पकालीन कार्य पड़े। जैसे—‘सूचीकटाह्नन्यायः कथमेव’

८३ सूत्रप्रदाशकुनिन्यायः—इस न्याय का अर्थ है—सूत्र में बंधे हुए सूत्रों का दृष्टान्त। सूत्र से बंधा हुआ पक्षी न श्वर-उपर स्वच्छन्द उड़ सकता है, न कहीं गिरने का विधान कर सकता है। विस पराधीन व्यक्ति की दशा समझने के लिये, उसके विषय में यह न्याय प्रयुक्त किया जाता है। यथा—‘सूत्रप्रदाशकुनिन्यायः कथमेव’

८४ सोपानारोहणन्याय —सोपानारोहणन्याय अर्थात् साढ़ियाँ चढ़ने का दृष्टान्त । जैसे मनुष्य छत पर एकाएक नहीं जा पहुँचना, एक-एक साढ़ी चढ़कर ही पहुँचना है, वैसे ही ज्ञानादि की प्राप्ति भी क्रमशः ही होती है । ऐसे ही अवसर इस न्याय के प्रयोगार्थ उचित है । जैसे—
'सोपानारोहणन्यायेनैव भवति विचोदचचो विघाथिना, धनवृद्धिश्च सम्भनानाम् ।'

८५ स्थालीपुलाकन्याय —स्थालीपुलाकन्याय अर्थात् देगचे और पुलाक का न्याय । जब किसी देगचे में चावल पकाये जाते हैं तब पाचक प्रत्येक दाने को निवाल कर नहीं देखा कि वह गल गया है या नहीं । दो बार दाने देखकर ही अनुमान कर लेता है कि सब के सब गल गये या कुछ कमर है । इसी प्रकार जहाँ किसी मनुष्य के दो-चार व्यक्तियों से सबके सम्बन्ध में कुछ अनुमान किया जाता है, वहाँ इस न्याय का हम प्रकार व्यवहार किया जाता है—'विघाथ-निरीक्षका स्थालीपुलाकन्यायेनैव विघाथिनां योग्यता परीक्षन्ते ।'

८६ स्थावरजगमविषयन्याय —अर्थ है—स्थवर और जगम विष का दृष्टान्त । पीपों और खनिज द्रव्यों के विष स्थवर विष कहलाने हैं तथा प्रमियों के विष जगम विष । कहते हैं, विष को विष नष्ट करता है, जैसे कि महाभारत की कथा में भीमसेन को दुर्योधन द्वारा दिया हुआ स्थवर विष नदा में सर्पों के जगम विष में डूर हो गया था । इसी प्रकार जहाँ एक वस्तु का प्रतिकार दूसरा से हो जाय, वहाँ यः न्याय प्रयोज्य है । यथा—'वर्जमाने बहुना रोमाणां विकित्ता स्थावरजगमविषयन्यायेनैव विधीयते ।'

८७ स्थूगानिखनन्याय —स्थूगानिखनन्याय अर्थात् खवा गाढने का न्याय । जैसे भूमि में खवा गाढना हो तो उसे बार-बार हिलाकर गहरा ठहरा जाता है, वैसे ही अपने पक्ष के अनुमर्षन के लिए जब जोर बला, लेखक अदि अनेक युक्तियाँ, दृष्टान्त आदि प्रस्तुत करता है तब यह न्याय प्रयुक्त होता है । यथा—'स्थूगानिखनन्यायेन समर्थयान प्रवक्ता स्वकीय पक्ष दृष्टान्तपरम्परया ।'

८८ स्वामिभृत्यन्याय —स्वामिभृत्यन्याय अर्थात् मानिक और नौकर का न्याय । स्वामी और सेवक में पोषक तथा पोष्य या धारक और धर्य का सम्बन्ध होता है । इसी प्रकार का सम्बन्ध जहाँ दो वस्तुओं या व्यक्तियों में दिखार दे, वहाँ उक्त न्याय व्यवहृत होता है । यथा—'इह लोके सवन्न ज वेधरयो व्यवहार स्वामिभृत्यन्यय इव दृश्यते ।'

८९ स्वेदजननिमित्तेन शाकटस्थागन्यायः —इस न्याय का अर्थ है—पसीने से छतरन कीड़ों के कारण बल पँक देने का न्याय । इसी को कहीं पर 'यूक्ताभिया कन्वास्यागन्याय' भी कहते हैं जिसका हिन्दी रूपान्तर 'जुओं के छर से गुदड़ी नहीं पँकी जाती' है । आशय यह है कि सामान्य भयों से भीत होकर भारी हानि सहन करना बुद्धिमत्ता नहीं है । यथा—'परीक्षाया वैषम्यमपि सम्भवतीति भवन परीक्षाया छात्रा न सम्मिलिता भवेदुरिति न, स्वेदजननिमित्तेन स्वागन्यायेन ।'

९० हृदनन्याय —हृदनन्याय का अर्थ है—शील और भय का दृष्टान्त । इसका आशय 'वनमिह्न्याय' के समान है । विस्तरार्थ वहाँ देखिए ।

सप्तम परिशिष्ट

प्राचीन भारत का भौगोलिक परिचय

मातृसंस्कृति से अपना सन्ध स्थापित करने के लिए जहाँ मातृभाषा का परिचय आवश्यक है, वहाँ मातृभूमि के विषय में भी कुछ न कुछ ज्ञान अपरिहार्य है। इसी ध्येय से प्रस्तुत अनुक्रम में हम जोड़ रहे हैं।

जिस बृद्ध भारत के विषय में हम मृदा गर्व अनुभव करते हैं, उसके तीर्थादि स्थानों के सम्बन्ध में परिचयात्मक सकेन प्राचीन साहित्य में जहाँ-जहाँ विपरीत पड़े हैं। सस्कृत-नाटकों के कथा प्रवाह को भी, उनकी पृष्ठभूमि के अभाव में, समझ सकना असम्भव है। हमारी विभिन्न बोलियों, रीति-वृत्तियों, कवि-समयोक्तियों के मूलोद्गम भी तो लोक-संस्कृति के यही उर्वर प्रदेश ही थे। राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का जिनका श्रेय अश्वमेध का परम्परा को अनुगम करने वाले हमारे चक्रवर्ती सम्राटों को रहा है, उतना ही श्रेय इस देश के महाकावियों (बर्मीकि, व्यास) को भी है। मेघदूत का सदेशहर बादल स्वयं कवि का उदार हृदय है, जिसके मुक्त ध्येय में उमड़ने-उठने में भारत, मानो एक घोटले में आवद्ध हो गया है।

हमारे प्राचीन भूगोल को लेकर बोरें कमरुद अनुसन्धान अभी तक नहीं किया गया। श्री नन्दलाल देवी की 'दि निकोमार्किनल डिक्शनरी ऑफ प्लेण्ट एण्ड मिनीमल इण्डिया' (प्रथम संस्करण १८८९, द्वितीय १९२७) आज स्वयं सशोधन चाहती है। डा० वासुदेवशरण अन्नाल ने जिस प्रकार पाणिनिवालीन तथा वाणवालीन भारतवर्ष के सामूहिक रूप को एकवृत्त करने का यत्न किया है, जिस प्रकार डा० ऑरेलेस्टाइन ने काश्मीर के विस्तृत नामों का उद्धार किया था, उसी प्रकार की छद्म-भारत की क्रमिक कहानी के लेखक को अभी जन्म लेना है।

प्राचीन भारत के कुछ एक नामों का तुलनात्मक ज्ञान हम कर रहे हैं, इस आशा से कि कोई अज्ञात युवक, एक ही सही, उस 'प्रथम प्रभात' के संपर्क से पुलकित होकर अनुसन्धान की इस अछूती दिशा में प्रयत्नशील हो जाए।

अंग—प्राचीन भारत के १६ 'राजनीतिक' जनपदों में एक, जो कभी रोमपाद (रामायण) तथा कर्ण (महाभारत) के शासन में था। आन्ध्र भागलपुर के आसपास का प्रदेश।

अजानगिरि—पञ्जाब की 'झुलेमान' पर्वतमाला (पृष्ठ ७०)।

अगस्त्याश्रम—नासिक, कोल्हापुर (दन्वर्), उत्तरप्रदेश, गढ़वाल, सतपुड़ा आदि में कृषि अगस्त्य के नाम से प्रसिद्ध आश्रम। अगस्त्य ही वे 'चरित्र विजयी' बोर थे, जिन्होंने सर्वप्रथम आर्य-सभ्यता का दक्षिण में प्रवेश समझा किया था। लोग का विश्वास है कि अगस्त्य अज भी साधुपर्णी के उद्गम स्रोत (तिनिवेली में) 'अगस्त्यकूट' पर समाधिस्थ हैं।

अचिन्त—मध्यभारत में एलोरा के प्राय ६० मील उत्तरपूर्व की ओर 'अजिष्ठा' ('अन्ता' उच्चारण अशुद्ध है) नामक गुहा मन्दिर, जहाँ (बौद्धों के) योगाचार्य मत्त के संस्थापक आर्य अन्न का प्रथम 'आश्रम' था। गुहाओं में अन्वचित्रकला का अद्भुत विहार के स्थिर 'अचल' के आदेश पर ५वीं-६ठी शती में सम्पन्न हुआ था।

अचि(जि)रावती—अवध की राप्ती (रेवती) नदी, जिस पर कभी अश्वस्ती नगर बसा हुआ था। २ इरावती (राप्ती)। (पृष्ठ ७०)

• संकेतों के विवरण के लिए ग्रन्थारम्भ में संकेत-सूची देखिए।

अरुणोद—काश्मीर का एक सरोवर (आधु० अरुणोद), जिसके तट पर कभी 'सिद्धाश्रम' अवस्थित था। (कादम्बरी)

अनन्तनाग—नेहलम के दक्षिण तट पर स्थित (काश्मीर की) प्राचीन राजधानी। (आधु० रत्नामाला)

अनन्तरायन—ब्रह्मदेव का पञ्चनामपुर, जहाँ एक मन्दिर में विष्णु की शैलनाग पर प्रभुता में अति शक्तिशाली मूर्ति स्थापित है। (पद्य० उत्तर०)

अनहिलपत्तन—बलभी-साम्राज्य के विध्वंस पर 'बनराज' द्वारा गुजरात (कच्छ-बड़ोदा) में (७४६ ई०) प्रतिष्ठापित एक (आधु० अनहिलवाळ) नगर।

अनुराधपुर—मिहल (मीथेन) की पुरानी राजधानी, जहाँ महिन्द तथा सवमित्रा द्वारा रोहित शक्तिशाली शासक से विद्रोह 'अनुराध' आज भी विद्यमान है। (महाकवि)

अनूप—दक्षिण मालव देश, हृदय, महिष (माहिषक)। (हरिवंश०)

अन्तर्बद्ध—गंगा तथा यमुना के अन्तर्गत दोआब। (अविष्क०)

अपरा—अरुण-निम्न। (अष्टाङ्ग०)

अपरान्त (क)—कौण्य तथा मगध, पश्चिमी घाट। (रघु०, मत्स्य०)

अभिलारा (रि)—पेशावर डिबित्तन में एक विजय, उरुदा (आधु० हजारा), जिसे अजुन ने (ममपर्व०, पद्य०) अपनी उत्तर दिशिबद्ध में जीता था।

अमरकण्ठक—गोहवाना में मेकल पतमाज का एक भाग, जो नर्मदा तथा शोण का उद्गमस्थल है, आम्रकूट (?) (पद्य०, स्कन्द०, मेघदूत)।

अमरावती—आश्रम में कृष्ण के तट पर, बैतारदा के प्राय २० मील पश्चिम की ओर स्थित प्रसिद्ध बौद्धस्थल (का मध्य स्थान) जिसे चतुर्थ शती के अन्त में आर्यों ने निर्मित किया था।

अम्बर—जयपुर (के समीप प्राचीन नगर अम्बर)। इसकी मूल प्रतिष्ठा माधवा के पुत्र अम्बरीष न की थी तथा 'वर्तमान' रूपान्तर मानसिंह ने अम्बर के दिनों में किया था। (अविष्क०)

अयोध्या—'राम-राज्य का पुनीत भवभवन', अवध। बौद्धयुग में सरयू नदी अयोध्या की उत्तरकोमल तथा दक्षिणकोमल में विभक्त करती थी। अयोध्या ॥ चालुक्य तीर्थ का पुनरुद्धार ५वीं शती में किनी शुभ 'विक्रमादित्य' ने किया था।

अरण्य—मैथिल, दण्डक, नैमिष, कुशवर्ण, अपरावृत्त, जम्बुवर्ण, पुष्कर, हिमालय तथा अरण्य का जो तीर्थ-वन में परिगणन होता है। (देवी०)

अरणाचल—कैलाश के पश्चिम में एक पर्वतमाला। २ दक्षिण भारत में स्थित 'महामूर्ति' (शिवजी महाराज) की शक्ति 'मौलिक' मूर्तियों में एक—'अग्निप्रतिष्ठा' जहाँ प्रतिष्ठित है। (अष्टाङ्ग०)

अरुणोद—गङ्गा। (स्कन्द०)

अरुणोद—कावेरी। (हरिवंश०)

अरुणोद—(राजपूताना की) मिरीही स्थित में अरुणोद पर्वतमाला की 'आरु' शक्ति, जहाँ से विशिष्ट ने विश्वमित्र के विन्दु मुक्त करने के लिए 'परमर' जैसे वीर को एक 'अग्निमुक्त' से उत्पन्न किया था। (महाभा०, पद्य०)

अरुणोद—यद्यपि तुर्वर की राजधानी, जिसका नामकरण, मन्वन्त, गङ्गा में बहती अरुणोद (अपरनन्दा, यमुना) नामक नदी के अनुकरण पर हुआ था। (स्कन्द०)

अरुणोद—मालव राज्य की 'राजधानी' उज्जयिनी (उज्जैन), जिसे ७-८वीं सदी में मालवा बहते आते हैं। कभी यह मन्वन्तवर्णक विक्रमादित्य की 'राजधानी' थी। ७ विष्णु (नदी का एक नाम), जिस पर प्राचीन उज्जैन स्थित था।

अविमुक्त—काशी, वाराणसी (बनारस) । (शिव०, मत्स्य०) ।

अशमक—(दशकुमारचरित में) दिर्भ के अधीन एक राज्य, जो अश्वदास के टीकाकार मद्रुपमी के अनुसार, महाराष्ट्र है—और कभी अन्नन्ती-साम्राज्य के उत्तर-पश्चिम में था । (कुर्य० इण०, नादक०) वक्षु (अशमन्वती आगू) की सम्पत्त का देश—जोसिदाना, 'पाताल' ।

अशमन्वती—वक्षु (आस्तस), इक्षु, यक्षु, आम् दरिया । (रघु०)

अस्तिनदा—जनाब की रक्त घाट ।

अहिच्छत्र—रोहीण्यक्ष मे दरेली मे २० मील पश्चिम की ओर, आधुनिक रामनगर; महिषीत्र, छत्रवती । (महा०)

आदर्शावली—अरबदी एर्वन्माला । (दे० आर्योवर्त)

आनर्त्त—अनर्त्त (तथा मल्लदेश का कुछ अंश), जिसकी राजधानी कभी कुरास्थली (इरिका) थी । उत्तर गुजरात की राजधानी का नाम भी कभी आनर्त्तपुर (आनन्दपुर, आधु० बाढनगर) रहा था । (भागवत०)

आन्ध्र—गोदावरी तथा कृष्णा नदियों का 'मध्यदेश', राज० अमरावती । सरियों यहाँ देहों के पक्षों तथा कल्याणपुर के खोलों का उत्पान पनन होता रहा । स्वयं आन्ध्रों का राजवंश, हरिहम से, सातवाहन अथवा सातकर्ण के नाम से अधिक प्रसिद्ध है । (गृह्य०, अनर्थराज्य)

भापगा—(पश्चिमी पनाब की) रावी के पश्चिम में एक सरिता । २. कुरुक्षेत्र में चितौग नदी की एक सहायिका, जिसे ओघवती तथा 'आपगा' भी कहते हैं । (वासन०)

आभीर—नर्मदा के मुह ने के गिद, गुजरात का दक्षिणपूर्वी भाग । (ब्रह्माण्ड०, महाभा०)

आन्नकूट—अमरकण्ठक ।

आतिकाया—आस (विपाशा) की एक घाट ।

आर्योवर्त्त—(मनु के अनुसार) हिमाद्रि तथा विन्ध्य के मध्य में स्थित देश, उत्तरार्ध । पश्चिम के समुद्र में आवाखरों की चार 'पार्वती' मर्यादाएँ थीं—१. उत्तर में हिमालय, २. दक्षिण में पारियात्र, ३ पश्चिम में आदर्शावली, तथा ४ पूर्व में काल्कवन । राजशेखर के बाल-रामायण के अनुसार दक्षिणभारत तथा उत्तरभारत को शाभाविक विभाजन देखा है—नर्मदा ।

आरापल्ली—अलबेरुनी का बेस्ताबल अथवा आमाबल, आजकल का अदमदाबाद ।

इन्द्रपुर—इन्दौर । (स्कन्दपुरा के अमिलेख, शक्रविजय)

इन्द्रप्रस्थ—पुरानी दिल्ली, बृहत्स्थल, खाण्डवप्रस्थ (महाभा०) । कहते हैं पुराने किले का निर्माण (बलिगुण ६५३ में ?) युधिष्ठिर ने किया था, लोकभाषा में उसे आज भी 'इन्द्रप्रस्थ' कहते हैं । महाभारतकाल में यह युधिष्ठिर की राजधानी थी, किले का पुनर्निर्माण हुमायूँ का किया बतलाते हैं ।

इ (ऐ) रावती—रावी (पनाब) २ (अबध की) राती (अचिरावती) । (गृह्य०)

इमिपत्तन—अपिपत्तन, भारनाथ ।

उदण्ड(न्त)पुर—पन्ना जिले का 'विहार' शहर, जो कभी बंगाल के बाल राजाओं की राजधानी था । यहाँ नीलितम्ब अवलोकितेश्वर की चन्दनमयी मूर्ति से सुशोभित एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार भी है । (बर्निज अवज्ञान)

उग्र—देरल (देवीपु०) । बिहार में महास्थान (पद्म०) ।

उच्च—वरण, उल्हदशहर, जहाँ जनमेजय ने 'नागसत्र' (अर्थात् पुराणों के प्रवचन) का प्रचलन किया था ।

उज्जयिनी—प्राचीन मालवदेश (अर्थात् अवन्ता) की राजधानी । तीसरी सदी ई० पू० में बिन्दुसार के शमनरत्न में असीक यहाँ राज्यपाल थे । विक्रमादित्य मल्लप्रवर्तक ने शकों को

(५७ ई० पू०) पराजित कर इस अपनी राजधानी बनाया था । चंद्रगुप्त विक्रमादित्य (ई०) ने सुराष्ट्र-मालव देश के शत्रुओं को भारत से निर्वासित कर उज्जैन की प्राचीन परम्पराओं को अन्ततः समाप्त कर दिया । गाथाओं में उदयन की प्रेम लीलाओं का भी इधर से ही सम्बन्ध रहा है । शहर के मध्य में वभी यहाँ कालप्रियनाथ भगवान् का एक मन्दिर था, जहाँ शिव पुराण के प्रसिद्ध १२ ज्योतिर्लिंगों में एक की प्रतिष्ठा थी ।

उ(ओ)ड़—उड़ीसा, उत्कल (उत्-कलिम्, अर्थात् कलिंग का उत्तर भाग) । हमरी दक्षिणी सीमा पर जगन्नाथ (पुरी) का प्रख्यात मन्दिर था । पुराणों के युग में उत्कल तथा कलिम्ग का विभाजन हो चुका था ।

उत्तरकुर्ग—गढ़वाल तथा हूणदेश का उत्तरीय भाग, जो हिमालय के परतः प्रदेशों का एक पुत्र था—और जिसे अर्जुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के साम्राज्य का अङ्ग बना लिया था ।

उत्तरापथ—काश्मीर तथा बाबुल का 'एक राज्य' । २ उत्तर भारत (भारतवर्ष) ।

उत्तरमग्न—काश्मीर में 'मग्न' प्रान्त, जिसमें अवस्ता का 'मयानन वाणों' (आर्य अपवर्ग) भी सम्मिलित था ।

उत्तरविदेह—नेपाल का दक्षिण भाग, जिसकी राजधानी मन्थजती थी । (स्वयम्भू पुराण)

उत्पलारण्य—कादपुर से १४ मील दूर (आयु० बिदूर), 'वाल्मीकि आश्रम', जहाँ सीता ने प्रवास में रुक तथा कुश की जन्म दिया था । यहीं पर, सरस्वती तथा वृषङ्गा के 'मध्यदेश' (महावर्त्त) में ध्रुव के पिता उत्तानपाद ने 'प्रतिष्ठान' की स्थापना की थी ।

उदयगिरि—उड़ीसा में सुबनेश्वर के पाँच मील पूर्व एक पर्वत, जिसकी प्रसिद्ध गुहाओं में ई० ५०० पू०—५०० ई० के सहस्र वर्षों में भारतीय कलाकार अपना सर्वस्व उकेलते रहे ।

उदीच्य (भूमि)—सरस्वती के उत्तर पश्चिम का प्रदेश । (अमरकोश)

उरग (पुर)—कादमीर के पश्चिम में, जेहलम तथा सिन्ध नदियों के बीच का प्रदेश (इनारा), उरसा, अभिसारा (मत्स्य०) । २ त्रिचनोपल्ली = उरेपुर, जो छठी शती में पाण्डवों की राजधानी थी, जागपत्तन (?) । (रघु०) ११वीं शती में चोर्गों का सम्पूर्ण तमिल देश पर प्रभुत्व जम चुका था । 'पवनदूत' का वनि इसे, साम्रपर्वी पर प्रतिष्ठित करना हुआ, भुजंगपुर नाम से स्मरण करता है ।

उरविज्व (हल)—'गया' के ६ मील दक्षिण में, 'बुद्धगया', जहाँ ६ठी शती ई० पू० में भगवान् बुद्ध ने बोध प्राप्त किया था । यहीं से बौद्धधर्म की शाखाओं का देश विदेश में प्रसारण हुआ था । आज यहाँ एक महान् विहार भी है, जिसकी स्थापना छठी शती ई० पू० में अमरदेव ने की थी ।

अक्षपर्वत—विन्ध्य की पूर्व शाखा जो शोण, शुक्तिमती, बर्भदा, महानदी आदि का उद्गम है ।

अधिपत्तन—(काशी में) हस्तिपत्तन, सारनाथ । (ललितविस्तर)

अध्यमूक—किष्किन्धा में (वृहभद्रा पर) पम्पा का उद्गमस्त्रोत ।

(अध्य) श्रमगिरि—मैसूर में बैलूर के उत्तर में एक पर्वतशृङ्खला, जहाँ स्वामी शंकराचार्य ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए (चार मठों में, दक्षिण में) 'शङ्करा' का प्रसिद्ध मठ स्थापित किया था । (शंकरविजय)

एल(र)पुर—एलोरा ।

एरण्डपट्ट—खानदेश । (हरिवंशप्रशस्ति)

एरिकिण—परण ।

औदुम्बर—ति० गुरदामपुर ।

कल्याणम—म्हारनपुर तथा गढ़वाल में ॥ गुजराती मातिनी ('चुका') नदी के किनारे कवि कण्व का आश्रम था, जहाँ शकुन्तला का अरण्यपोषण हुआ था । (कोट्यद्वार से ५ सिन्धुतीर्थ की दूरी पर) । (शनपथ०)

कनक—रावनगिर । (पृष्ठ ०)

कनिकपुर—रावनगर से दम मील दक्षिण की ओर कनिक की बसाई नगरी, जहाँ ७८ ई० में अन्तिम 'बौद्धमार्गी' का अधिवेशन तथा 'यक स्तर' का प्रवर्तन हुआ था ।

कन्या(कुमारी)—'केय कौमोरिन' (सु)कुमारी ।

कपिलनाम्नु—शत्रुओं की राजधानी, सगवान् बुद्ध की जन्मभूमि—जो आज कैलाश से २५ मील उत्तरपूर्व में, 'भुइला' के नाम से विदित है ।

कपिलाश्रम—बंगाल में 'मागधमगम' तीर्थ, जहाँ महाराज सगर के अश्वमेधीय अश्व का दूत ने अपहरण किया था ।

कपिला—कुभा (पातुल) नदी के नाम पर उसका 'उत्तरप्रदेश' भी 'कपिला' कहलाने लगा; सभी कपिला नगरी 'गान्धार' साम्राज्य की राजधानी थी । २ रघुवंश में उडोमा की 'स्वर्गरेखा' (नदी) को कवि ने 'कपिला' (पलाशिनी) कहा है ।

कपिल—(पूर्वा) अफगानिस्तान । अरग । (राजत०, मार्कण्डेय०) यास्क के अनुसार 'गलचा' भाषणा का प्रदेश, जहाँ आज भी (') रूख (गवों) का द्विवाचक प्रयोग (मात्र 'शव = म्रेत' नहीं) होता है, और जिसे अजुन ने अपनी दिग्विजय में युधिष्ठिर के माघाज्य में जीता था । (महा०)

कस्तोया—रगुण, दीनानपुर, बोगरा में से गुजरती हुई एक तीर्थ नदी सदाशिव, जो कभी बगल तथा कानरूप (आसम) की विधानक देखा थी । (स्कन्द०)

कर्णसुवण—(बंगाल में) मुर्शिदाबाद जिले में, रगामाटा (कानलोना), जो की अदिशा की राजधानी थी ।

कर्णट—कुम्भलगिर, राज० कल्याणपुर ।

कर्तपुर—कुमाऊँ, गढ़वाल, अन्धोडा, कापडा का पर्वतीय राज्य—जिसे समुद्रगुप्त ने विजित कर गुप्त साम्राज्य का अंग कर लिया था । (हरिपेग०)

ककुब्ज—(ईदराबाद में हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध) गोकुब्ज, 'सर्वदर्शनसमूह'—कार भाषाचार्य की जन्मभूमि ।

कहळि(टि)—(केरल में) शायराचार्य की जन्मभूमि ।

कलिङ्ग—'उत्तरी सरकार' का इलाका, जिसकी 'बुद्धविजय' से विजय हुए अशोक ने 'धर्मविजय' की प्रेरणा ली थी । 'कलिङ्गविजय', भरत ही की नहीं, विश्व भर की आत्मा में एक नवजन्म के नाम का मुहूर्त है । (एच० जी० वेल्स)

कलिंगनगर—(उड़ीसा में) भुवनेश्वर (पुरी) । (दशकुमार०)

कल्याणपुर—(निजाम साम्राज्य में) बीदर के ३ मील पश्चिम में, चासुब्यों (के कुम्भलगिर) की राजधानी ।

काशी (पुर)—वर्तमान, जो शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'विष्णुकाशी' मन्दिर के लिए तथा 'नारन्दा विश्वविद्यालय' के लिए प्रसिद्ध है । अष्टभूर्ति शिव की 'भौतिक' मूर्तियों में 'आकाश-त-व' की प्रतीय मूर्ति (चिदम्बरम्) इधर दक्षिण में हो क्यों मिलती है ? (दे० अरुणचल)

कान्यकुब्ज—विश्वामित्र की जन्मभूमि (रामायण), तथा (बौद्धयुग) में दक्षिण-भाषाओं की राजधानी—वर्तमान । हर्षवर्धन से पूर्व यह कुछ समय तक मौखरियों की राजधानी भी रहा । हमा के ('त्रिकोण' दुर्ग के) दक्षिण-पश्चिम में स्थित 'रगमहल' से ही शूचीराज ने सयोगिता का हरण किया था । (मविष्ण०)

कामरूप—असम (अक्षोम, उच्चारण 'आमाम' नहीं) जिसकी राजधानी था—प्राग्ज्योतिष । कुछ विद्वान् प्राग्ज्योतिष का कामाख्या अथवा गोदावरी से एकोकरण करते हैं । (मेघदूत,

कालिका पु०) मुछ हो, 'कामदहन' का भाग का सारा वातावरण (तीर्थों तथा लोचवाडमय की साक्षी पर) इधर ही अधिक उचित उतरता है। (मेघदूत)

काम्पिल्य—दक्षिण पंचाल (हुणददेश) की राजधानी।

कार्तिकेयपुर—(कुमाऊँ में) देवनाथ (चैद्यनाथ) तीर्थ। (देवी पु०)

कालीघाट—सती से सम्बद्ध हस्ती 'पीठ' के आधार पर 'कल्कटा' का नामकरण हुआ प्रतीत होता है।

काश्यपपुर—उपनिषदों के 'चर्चवेति' युग में ऋषि काश्यप द्वारा सम्थापित (उपनिवेशित) नगरों, प्रदेशों का 'सर्वनाम', यथा—काश्मीर, मुक्तान।

काश्यपीगंगा—पुञ्जान की साबरमती (नदी)। (पद्य०)

किम्पुर (देश)—नेपाल।

किरात (देश)—नेपाल के सुदूरपूर्व की ओर किरातों की बस्ती—(त्रिपुरा) निपारा, जहाँ 'त्रिपुरेश्वरी' का तीर्थमन्दिर है। (महा०)

किष्किन्धा—तुङ्गभद्रा के दक्षिण तट पर धारवाड में आज भी इसे उनी पुराने नाम से लोग जानते हैं। लोचगाथा के अनुसार, यहाँ (राक्षस) बाली का ध्वंस हुआ था। भयोध्या से विष्किन्धा तथा विरिष्किन्धा में लड़ा—कुल दो सौ मील की दूरी थी। 'लहका'—'निहल' (सीहोन) नहीं है।

कुण्डमास—वैशाखी का एक और नाम, जो महावीर की जन्मभूमि था और आधुनिक मुत्तपुरपुर (निहल) में अवस्थित था। (जैनध्वज)

कुण्डिमपुर—विदर्भ की प्राचीन राजधानी, बीदर (?)। (मानवीमाधव)

कुन्तल (देश)—जमदा, तुङ्गभद्रा, पश्चिमनागर और गीशावरी से सीमित इस प्राचीन देश ने पाण्डवों तथा मराठों के हाथ कई उत्थान पतन देखे, वरुं राजधानियाँ (वस्थापन, नासिक) बदलीं। (दशकुमार०, वाराणस)

(कुन्ती) भोज—मालवदेश का एक पुराना नगर, जहाँ पाण्डवों की माता का बाल्यकाल, 'कुन्तीभोज' की छत्रछाया में बीता था।

कुभा (कुडु)—काकुल (नदी)।

कुमारवन—कुमाऊँ, कूर्माचल। (विराटपर्व)

कुम्भधोज—तमोर तल में चोनों की राजधानी तथा बिष्णुपीठ रहा है। (चैतन्यचरित०)

कुहक्षेत्र—'महा' नगरों का धर्मक्षेत्र भी, मुदधुव भी—धानेसर।

कुहजागल—हर्मिन पुर के दक्षिण पश्चिम का 'आरण्यक' प्रदेश।

कुलिन्द (देश)—कभी मन्त्रज तथा गुणा के बीच का सारा प्रदेश 'कुलिन्द' कहलाता था, आज गढ़वाल व स. प. (बत्तार) दिल्ली तथा महारनपुर उसमें शामिल करने होंगे। (महा०)

कुल्ल—कुल्ल, वभी कुलिन्द का ही एकाश था। (बृहत्संहिता)

कुशा(भवन)पुर—मगध में गोमती के तट पर, मुक्तानपुर। वरुं कुशा की पुरानी राजधानी भयोध्या की छत्रछाया, कुशा इधर आ बसा था। (रघु०)

कुशाग्रपुर—मगध की प्राचीन राजधानी, राजगृह, गिरिवज्र।

कुशाग्रपीठ—दक्षिण। इतिहास में आनसों की राजधानी मीरही है। प्रसिद्ध विद्वत् कोष ने इसे (कुशी) का 'हृत्परी काय पुञ्जान' पर भ्रमति देने हुए) श्रीहण, दयानन्द तथा गोपी की जन्मभूमि होने का श्रेय दिया है।

कुशीनगर—जहाँ भगवान् बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था, गोरारपुर के निकट आधु० 'कसिया' गाँव (विष्णु)।

कुसुमपुर—पाटलिपुत्र (पटना) । (मुद्राराक्षस)

कुमाँचल—कुमाँ। कुमारवन ।

कुक्ष्य—व्यास तथा सत्यव्रत के बीच का प्रदेश, जिसकी एक राजकुमारी (कैकेयी) की रीति से राम को वनवास मिला था ।

कुसल—अयोध्या । जब कुसल सभ्रज्य की (उत्तर, दक्षिण) दो भागों में विभक्त कर दिया गया, उनकी राजधानियाँ भी क्रमशः कुशावती तथा श्रावस्ती बन गईं । भागवान् बुद्ध के समय में कुसल एक बलशाली साम्राज्य था, कपिलवस्तु तथा बनारस उसके अन्तर्गत थे । बिन्दु, ३०० ई० पू० में इसका मगध में समावेश हो गया और इसी राजधानी भी मगध की न रहकर पाटलिपुत्र हो गई । कहीं-कहीं दक्षिण-कुसल की प्रसिद्ध 'महाकुसल' नाम से भी मिलती है ।

कुशाग्रम्भी—इलाहाबाद के प्राय ३० मील पश्चिम की ओर 'कोमग' जो कभी वसुदेव की राजधानी थी । (बृहत्कथा, आस)

क्रौञ्च (देश)—कुर्ग । (कावेरीमाहात्म्य)

क्रौञ्च (रन्ध्र, पर्वत)—'तिम्बत तथा भारत' में (कुमाँ की पाटी में) प्रवेशद्वार, जिसका 'उद्घाटन' परशुराम ने किया था । कुछ विद्वानों के अनुसार यह 'वर्मा-भामा' की पूर्वीय पर्वतमाला का स्रोतक है । रामायण के अनुसार क्रौञ्चपर्वत कैलास का वह भाग है जहाँ मानसरोवर नील शोभायमान है । तो क्या 'कैलास' शिवपार्वती के इस क्रीडा दौलों का एक सामान्य नाम है और तथैव क्या मानसरोवर का भी ?

क्षप(स)—विष्टवाल तथा वितस्ता के बीच का इलाका, जिस पर कभी खसों का 'साम्राज्य' था । कुछ विद्वानों के अनुसार इन पाषाणयुग समूहों की परास्त करके ही चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य' बने थे, किन्तु अधिक सम्भव यही है कि शकाधिपति किदार को बहुत तक सदेव कर चन्द्रगुप्त ने खसों का नामदेव ही किया हो था, साथ ही गुप्तों की दूर पुकी प्रतिष्ठा का उद्धार करके वे बराह-अवनार भी कहलाये । (देवीचन्द्रगुप्त, हर्षचरित, खण्ड १३)

राजसाङ्ख्य—हस्तिनापुर । (भागवत०)

राजेन्द्रमोक्ष—गंगा तथा गण्डकी के संगम पर प्रसिद्ध तीर्थ (भागवत०) । शोणपुर ।

राज्यमादत—कैलाश की दक्षिणी शृङ्गा, जहाँ कभी हनुमान का आवास था—यद्विकाश्रम भी यहीं स्थित है । (कालिका०, विक्रमो०)

राधिपुर—कान्यकुब्ज (कन्नौज) जिसे विधामित्र के पिता ने बसाया था ।

राधधार, राधवर्देश—कमुल नदी के साथ-साथ बसा हुआ कुनार तथा सिन्ध नदियों का 'मध्यदेश', जिसमें कभी पेशावर तथा रावलपिण्डी समाविष्ट होते थे । पुरुरपुर (पेशवर) तथा तलशिला इसकी दो राजधानियाँ थीं ।

गिरिकर्णिका—(गुजरात में) साबरमती ।

गिरिनगर—गिरिनार-जंगल में एक पर्वतमाला, जहाँ नेमिनाथ तथा पार्श्वनाथ के प्रसिद्ध मन्दिर हैं । कभी शक्ति दत्तात्रेय का आवास था । अशोक के कुछ शिलालेख यहाँ भी अभिलिखित हुए थे । सुदर्शन शूल का तथा उसके उद्धारक रुद्रदामन् का नाम भी इससे सम्बद्ध है । (स्क २०, बृहत्स०)

गिरिवज्र—(बिहार में) मगध की प्राचीन राजधानी—राजगृह—'वज्र' के द्वारा सस्थापित होने से इसे वसुमती भी कहा जाता है (रामायण) ; 'उद्भय' में इसे कुसुमपुर भी कहने लगे थे । प्रसिद्ध विषविषालय 'विक्रमशिला (बिहार)' यहीं स्थित था । (महावग्ग)

गृध्रवृट—'गिरिनगर' के दक्षिण की ओर रत्नगिरि शृङ्खला का एक भाग, जहाँ उपोसन्न युद्ध पर

देवदत्त ने शिवा पैंकी थी : यहीं, जीवक वन में, अज्ञानशत्रु तथा उसके प्रधानमन्त्री वर्षकार ने स्वयं भगवान् की सेवा में उपस्थित हो, 'पाटलिपुत्र' को स्थापना-योजना बनाई थी । (बुद्धचर्य)
गुप्तफासी—(उड़ीसा में) सुवनेखर । (कुमाऊँ में) शोणितपुर (हरिवंश) ।

गोरण—(उत्तर गो०) गगोत्तरी से ८ मील दूर, भगोरथ का 'तपोवन' । (दक्षिण गो०) करवाल में गेंडिया तीर्थ ।

गोकुल—कृष्ण के राज्यकाल की क्रीडाभूमि—व्रज गोकुल मथुरा से ६ मील पर है ।

गो(गौ)तमी—गोदावरी । (शिव०)

गोनर्द(न्द)—पंजाब, ज्योति बादमीर के राजा गोनर्द ने इसे जीन लिया था । एक 'गोनर्द' अवध में भी है, (रोडा), जहाँ महासायबवार पद्मनभि ने जन्म ग्रहण किया था ।

गोपनचन—आहु० गोभा । (बिक्रमांकदेवचरित) ।

गोपाद्रि—१ रोहतास (पर्वत) । २ काश्मीर में 'तल्ले सुनेमान', जिस शालों में 'शङ्कराचार्य' पर्वत भी कहा गया है । ३ ग्वालियर । (राजतरंगिणी)

गोवर्धन—वृन्दावन से १८ मील दूर, बड़ी पर्वत जिसे ('बैथो' ग्राम में) बाल कृष्ण ने अपनी जगन्नी पर उठा लिया था ।

गौड़—(मगध साम्राज्य से जुक्त हुए) बंगाल की प्रविष्टा (जहाँ सदी में) इस नाम से हुई थी । यह अंग देश के दक्षिण में था । (हय०)

गोमती, चर्मण्वती (दे० 'रन्ध्रपुर') । गोमल ।

घर्घरा—पगार नदी, जो कुमाऊँ में निकल कर सरयू में आ मिलती है । (पद्य०)

वक्षु—वक्षु (वक्षु) और आम्र नामक नदी जो महाभारत, रघुवंश तथा चन्द्र के महारोली ३ भित्ति के अनुसार 'शाकद्वीप' में बहती थी ।

चन्द्रनगिरि, मलयगिरि—मालावार घाट । (ब्रिक्रम०)

चन्द्रना—मावरमनी ।

चन्द्रभागा—चनाब (चन्द्रिका), जिसकी एक शाखा अम्बिकनी थी ।

चम्पा—इयामाद्वीप (झुन्माग) । २ अंग तथा मगध के बीच रहनेवाली चम्पा नदी (पद्य०) ।

३ चम्प । रियासत (राजतरंगिणी) । ४ अंग देश की राजधानी (जिसका पुराना नाम 'मालिनी' था) ।

चम्पारण्य—(मध्य भारत में) राजिम के पाँच मील उत्तर में, जैनों का एक तीर्थ (जेमिनि भारत) । २ पटना टिबीवन में 'चम्पारन' । (शक्तिमप्रहमन्य)

चरणाद्रि—(मिर्जापुर में) चुनर का प्रसिद्ध अनेक दुर्ग, जिसे बंगाल के पाल राजाओं ने ८-१०वीं सदियों में बनवाया था ।

चरित्रपुर—(उड़ीसा में) पुरी का तीर्थ, तीर्थपुरी ।

चर्मण्वती—'रन्ध्रपुर' गोमती नदी ।

चिन्ताभूमि—मन्थल परगना में, वैद्यनाथ अथवा देवघर, जहाँ १२ ज्योतिर्लिंगों में एक (राजन द्वारा स्थापित) है ।

चित्रकूट—कुन्देरगुह में पयस्विनी मन्दाकिनी के तट पर वह पर्वत-तीर्थ, जहाँ भगवान् रामचन्द्र ने अपने प्रवास की कुछ आघावधि बितायी थी ।

चिदम्बरम्, चित्तम्बरम्—दक्षिण में शिव की पाँच औनिक भूतियों में 'अवधानन्द' का प्रविष्टा-स्थान । (देखी मग०) ।

चेदि—'रानी मि'पु' तथा लोंग के मध्यवर्त, कुन्देरगुह तथा मध्यप्रान्त का कुछ भाग, जो अभी 'शिपुवा' की राजधानी था ।

चैत्यगिरि—भीष्म से तीन मील उत्तर की ओर, १२-नार—वहाँ अशोक का समुदाय था। (कविलवस्तु में तुम्बिनी, मरनाथ में बोधगया, काला में मृन्दाव, आवस्ता में नवन, मगध में राजगृह वैदाली, कुशीनार आदि बौद्धों के ८०२ 'स्थ' बताते हैं।) कुछ विद्वानों ने इसी स्थिति-मगध साची तथा विदिशा में भी को है (महावंश)

चोल—पिनाकिनी (पेनार) तथा कुण नदियों के बीच में कोरुमण्डोल घाट तिमरी राजधानी, कावेरी पर अवस्थित, 'उदैपुर' थी।

जयपुर—(नाल के शाहाबाद जिले में) जयपुर कृषि का आश्रम।

जन(क)स्थान—गोदावरी तथा कृष्णा के बीच का प्रदेश (जनरपुर विद्रोह) तथा औरंगाबाद को 'पञ्चे' दण्डकारण्य का एक भाग था—दण्डकारण्य में पंचवटी (नामिक) भी शामिल थी। (भवभूति)

जमशनि—गाडीपुर में ('जमानिया' नाम से प्रसिद्ध) कृषि परशुराम का आश्रम।

जाबालिपुर—जबलपुर। (प्रबन्धविनमसि)

जयपुर—प्राचीन मरहमदेश, विराटनगर।

लाहुरी—गंगा। किन्तु, जहू का आश्रम आनकल, मुक्तानगर (भागलपुर) के समुच्च गंगा से निकल रही एक चट्टान पर था, ऐसा बताते हैं।

जौनपुर—पूना जिले का जुनेर—चौधरी क्षत्रप राजा महपान की राजधानी था।

जौनपुर—यवननगर, जूनागढ़।

जैवन (विहार)—आवली से १ मील दक्षिण की ओर 'जौनौमरिया' नाम का टीला, वहाँ कभी उपवन के अन्दर आवली के छोटे दानवार 'अनध पिण्डक' सुदृष्ट ने एक 'विहार' स्थापित किया था। (सुदृष्ट)

जालामुखी—काठा में एक 'पीठ', वहाँ 'सती' की तस्वीरें थीं। जालामुखी पर्वत का ऊँचाई १२८४' है, वहाँ १८८२' पर महेश्वरी की एक 'मूर्ति' स्थापित है।

जालामुखी—जोदा नागपुर, जिसको राजा मधुमिह की पराजय के अनन्तर अक्षर ने १५८५ ई० में मुगल-साम्राज्य में मिला लिया था।

जहू—ज्याम तथा जिन्धु के मध्य का प्रदेश, पञ्चन। (मृन्दाविक)

जहूशिला—जिला रावलपिण्टी का एक प्राचीन नगर, जहाँ बौद्धों में एक प्रसिद्ध विश्व विद्यालय था। पणिनि जहूशिल-विषपीठ में 'चारु' थे। रिन्दावदान में अंकित है कि कुछ किमी पूर्वतम में 'भद्रशिला' का राजा थे, वहाँ एक ब्राह्मण मिथु ने उनका सिर काट डाला था। तब से भद्रशिला की स्त्री 'तक्षशिला' बढने लगी। बौद्धों में यहाँ पणिनि के 'महान् व्याकरण' का अ-यज्ञ मिथु का होना (तब भनुर्वेद का पाठ्यक्रम में सम्मवेश) हमारी शैली 'पानी' तथा अहिंसा विषय पर धारणाओं की एकदम निमूल निम्न कर देना है।

जपनी—ताप्ती, तामनी। (मेरुद्वार)

जमना—(अथ में) तम नदी, जिसके तट पर बाल्मीकि का 'अदि' जीवन बना था।

जालपुर—कावेरी पर चोल राजाओं की पुरानी राजधानी 'तटक'। तीमरी सदी से यहाँ गावस का राज्य रहा था, जिसे ११वीं सदी में चौहानों ने तमिळ देश से उखाड़ फेंका।

जाम्रणी—(बौद्ध काल्प में) मिडल द्वीप। २ दक्षिण में अगस्त्यकूट पर्वत से उद्भूत जाम्रणी नदी। (सुवर्ण)

जाम्रणी—प्राचीन सुवर्ण देश की एक नदी एवं राजधानी, मौर्यकाल से लेकर पुर्तगाल के पान तक (एक मील वर्ष) इसका यथावत् ऐतिहासिक महत्त्व रहा। (महा०, २३०)

जौनमुक्ति—निरहुत। (देवीमण०)

मुंगमडा—नेहरू के दक्षिण-पश्चिमी मोड़ान पर कृष्णा की सहायक नदी ।

मुण्डीरमण्डल—द्रविड़ देश का एक भाग, 'तोण्डमण्डल' (वीरोनम् ?) जिसकी राजधानी काञ्चीपुर थी । (भक्तिमन्त्र)

मुत्तक—पूर्वी तुर्विम्मान । (मन्त्र)

मुथार—यूनानी लेखकों का 'मिथिला' तथा अरबों लेखकों का 'मुहारिम्मान', जिन्होंने दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम के ।

मृगया—मिथिला । इन्द्रायि और (कविप्रकाश) में 'मृगयि नदी' ।

त्रिकुट्ट, त्रिविष्टप—(त्रिष्वन्) । १ त्रिकुट्ट (मिथिल में भी ?) । २ जुनर ।

त्रि(क)लिंग—नेपाली ।

त्रिराम—जालंधर—'राहो-ब्यान्-मन्त्र' का 'नि-ग्रह' ।

त्रिपदी(ति)—त्रिपदि, वेदिकी । रामायण में यहाँ विचित्राक्ष की मूर्ति स्थापित की थी, 'राम-गंगाधर' व रचयिता पण्डितराज जालंधर की जन्मभूमि ।

त्रिपुरा—त्रिराम देश, निपारा—ओ वामरूप के अङ्गों का ।

त्रिपुरी—नवपुर से भाग मोड़ पश्चिम में, नर्मदा तट पर, 'त्रिपुरी' जहाँ महादेव ने त्रिपुरासुर का वध किया था (कृष्ण) । २ वन्चुरियों की राजधानी—चेदिनगर । ३ शाणितपुर ।

त्रिवेणी—(मयाग में) गङ्गा-यमुना-सरस्वती का, तथा पूर्व की ओर गङ्गा की दक्षिण-तट पर—का 'मामन्धीय' । (बंगाल में 'मुन' त्रिवेणी, इलाहाबाद में 'मुन'-त्रिवेणी) ।

त्रिशिरपल्ली—'त्रिचनापल्ली', जहाँ रविवर का मेलापनि रखा करता था ।

ब्रह्मन्त्र—भक्ति में २० मील पर, प्रसिद्ध गोदावरी-तीर्थ ।

दक्षिणनागा—गोदावरी अथवा कावेरी अथवा नर्मदा अथवा तुङ्गभद्रा ।

दक्षिणगिरि—इलाहाबाद (काश्मिर), जिसकी राजधानी 'चेदिन' थी, भूपाल राज्य ।

दक्षिणमथुरा—मथुरा अथवा मीन-हो, पण्डितों की प्राचीन राजधानी ।

दक्षिणपथ—दक्षिणात्य अथवा, अर्थात् 'दक्षिण के दक्षिण का मार्ग' ।

दण्डकाश्य—विष्णु तथा शिवान्त्य के मध्य का 'महाकान्तार' अथवा 'महाराष्ट्र', जो अजमेर के पश्चिम में था । (भवभूति)

दुर्ग—(मद्रास में) नीलीगिरि पर्वत-माला ।

दुर्गवती—(तुङ्गभद्रा में) दमोह ।

दुर्गपुर—(मद्रास में) मन्मथपुर (मन्मथपुर) अर्थात् दमोह ।

दुर्ग—'दुर्ग' मन्मथ दण्ड । (दक्षिण-पश्चिम) जिसका राजधानी (अर्थात् के मध्य में) 'चेदिनगिरि' थी ।

दुर्गोक्त—जालंधर । (निष्पण्डित)

दुर्गलिंग—दक्षिण ।

दुर्गलिंग—मन्मथपुर में २५ मील का दूरी पर; 'मन्मथ' के निकट, 'दुर्ग' पर 'दुर्ग' का अर्थ है 'अजमेर' ।

दुर्गती—अजमेर और सरहिंद के मध्य की नदी, घग्गर ।

देवगिरि—'नर्मदा राज्य में, दक्षिण-पश्चिम । १ महाराष्ट्र (देवराष्ट्र ?) में । मिथिल । २. अजमेर की एक राजधानी । (मन्मथ)

देवपत्तन—प्रभास = मारजाप ।

देवपुर—मध्यमन्मथ में, महानदी तट पर देश न मंगल पर, राजस्थान ।

देवराष्ट्र, महाराष्ट्र (?)—मनुस्मृत्य की दक्षिण विजय के मध्य इसका राजा कुबेर था ।

नि (न) (जना (रा))—पत्सु नदा (अवधोप), जिसमें तट पर भगवान् बुद्ध को बोध प्राप्त हुआ था ।

पञ्चकंदार—गढ़वाल की पर्वतमाला पर वेदरनाथ, तुद्रनाथ, रद्रनाथ, मध्यमेधर, वलेश्वर नाम ५ (महादेव के अंगों के चोकर) पाँच मूढ़ । (बदरीविशाल)

पञ्चगौड—बंगाल में प्राचीन विनाय—पुण्ड्र, रङ्ग, मगध, तारुमति, वारेन्द्र । (राजन०)

पञ्चग्राम—दे० पाणिग्रन्थ ।

पञ्चतीर्थ—हरिद्वार की पश्चिमी घाटी में (सप्त, सीता, अमृत, राम, सूर्य) कुण्ड । (स्वन्द०)

पञ्चद्विह—ड्राविड बर्णों गुजरात महाराष्ट्र, आन्ध्र—दक्षिण के निम्न विभाग का आधार, भूगोल नहीं, प्रजातियों का 'अन्तर्जातीय मेल' है ।

पञ्चतद—पञ्चादः । कुक्षेत्र में एक तीर्थस्थान । कुष्णा, वेन, तुद्र, मद्रा, वीन (नदियों का) 'दक्षिणी' पञ्चाल ।

पञ्चपथार—भिन्न सगमों पर अवस्थित देव, कर्ण, रद्र, नन्द तथा विष्णु—'प्रवाह' तीर्थ ।

पञ्चवदरी—वदरीनाथ, वृद्धवदरी, मविष्यवदरी, आदिवदरी, पाण्डुरंश्वर आदि ।

पञ्चवटी—नारसिख्य (नामिक), जहाँ रावण ने सीता का अपहरण किया था । यहीं दूर्पणखो तथा मारीच के घाण्ट हुए थे ।

पञ्चाल—रोहिलखण्ड, जो पहले मग की धारा द्वारा दक्षिण तथा उत्तर पञ्चालों में विभक्त था । उत्तर पञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी, दक्षिण (जहाँ की द्रौपदी थी) की कापिल्य ।

पञ्चक्षेत्र—उड़ीसा में, 'नौशाक' नाम से प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर ।

पञ्चपुर, पद्मावती—मन्मथि की जन्म तथा दीक्षाभूमि, आधु० पञ्चपथाया (चिन्मयनगर = विद्यानगर) । (उत्तरचरित)

पम्पा—किरिन्धा में, तुद्रमन्त्रा की एक धारा । यहाँ पर, कव्यमूक के चरणों में 'पम्पा' सरोवर भी है ।

पयस्विनी—गङ्गातट में, पापनाशिनी नदी ।

परुणी—हरावती (पञ्चव की रावी) नदी ।

पर्णशा—राजपूताना में, जम्बल की एक धारा, वनाम् ।

पल्लव-ट—पल्लव दशानपुर ।

पलाशिनी—कपिला, सुवर्णरेखा ।

पल्लव—दक्षिण में, कोरामण्डल से साधित देश—राज० काञ्ची ।

पद्मनाभ—पारियात्र की, एक हिन्दुत्व की, एक पर्वतमाला ।

पद्मपतिनाथ—(नेपाल) मृगशली न, महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर ।

पश्चिम सागर—अरब सागर ।

(अ०) पट्ट(न)व—प्राचीन पार्थ (फारम) राज्य का 'मद्र' प्रदेश । यहाँ की 'पट्टवी' जिरि में 'नेन्द' अवस्था को सर्वप्रथम लघुशब्द दिया गया था । पट्ट देश वभी (अरवी) घोटों के जिरि भा विद्यमान था ।

पाटलिपुत्र—पटना, जिसका मूल निर्माण अजतशत्रु (४८० ई० पू०) में किया था । मगध की प्राचीन राजधानी गिरिद्विज (राजगृह) का स्थान बदर, पाटलिपुत्र की नदी राजधानी लम्बाय ने बनाया था ।

पाटेल्य—बुद्ध-युग में 'पश्चिमी' भारत—जिसमें बुरु, पंचाल, अवन्ती, गान्धार, कम्बोज, शरमेन आदि सम्मिलित थे । (महावग्ग)

प्राणिग्रन्थ—धानीपन । प्राणि, शाप, इन्द्र, निम्न, मन्व—ये पाँच 'ग्रन्थ' (ग्राम) लेकर भी

सुषिष्ठिर सन्तुष्ट था, किन्तु दुर्योधन न माना। इन 'पाँच आर्यों' के नाम महाभारत में तथा वेणीसवार में कुछ भिन्न हैं।

पाण्डू (पाण्डव)—दक्षिण के अथु० नित्रेवेही तथा मधुरा सिन्धुन—जो समय-समय पर अपनी राजधानी—उरपुर > मधुरा > कोल्हट—बदलते रहे। यहाँ के राजा पुरु ने २६ ई० पू० में अपने दूत रोम भेजे थे।

पाताल—(रामायण में) अजन्मवती (अजू) के उत्तर में और मल्ल के द० पू० अस्मक = 'अग्निमाना' देश।

पापनादिनी—पद्मसिन्धु।

पारमहन्त्र—मिरर। (अथर्वशास्त्र)

पारसीर, पारुय—कामर। (रघु०, विष्णु०)

पारुहर—मिरर में 'धन पारकर'। (पाणिनि)

पारिया(पा)र—विन्ध्य की पश्चिमी छाया, जो कभी आयाँदूँ की दक्षिणी सीमा थी। (महाभारत)

पारनी—(कुरुक्षेत्र में घघरा = हृष्यती) बागर नदी, जो पञ्जाब के हिन्दी पञ्जाबी जनपदों की प्राकृतिक 'न' है।

पिनाकिनी—(मद्रास में) जम्बिदुर्ग से उदगता, 'पेनर' नदी।

पिष्टपुर—गोदावरी में, 'पिठापुर'। (हरिवंशप्रशस्ति)

पुण्ड्रवर्धन—पंचगौड (बगाल) में, गंगा तथा हेमाद्रिकूट का 'मध्यदेश'।

पुण्यपत्तन—पुणे, पूना, पुनक।

पुरुषपुर—गन्धार देश की (एक) राजधानी, पेजावर। (वि० खीराख)

पुरगोत्तमक्षेत्र—(बिहार में) पुरी।

पुलिन्द—भारत की पूर्वा (कामरूप) तथा पश्चिमीय (कुम्भेरखण्ड, सागर) सीमाओं पर कभी पुलिन्दों तथा दाहुरों के घर थे।

पुष्कर—भारत से ६ मील दूर, झील 'पोखरा'। महाभारत के समय से यहाँ उत्सवमकेनों की सभा (स्नेह ?) जलियाँ रहा करती थी।

पुष्काम्नीप—मध्य-एशिया में, 'बैख'रा'।

पुष्करावती—प्राचीन गन्धार की राजधानी—जिसे भरत ने अपने पुत्र के नाम से बसाया था और जिस (अष्टनगर) पर सिक्न्दर का पहला अक्रमन हुआ था।

पुष्करावती नगर—रगून। (दीपवश)

पुष्पपुर—कुसुमपुर, पटना।

पूर्वगंगा—नमदा।

पृथूदक—करनाल में, सरस्वती नदी पर, 'पिहीवा'—जहाँ इस्लाम 'महायोगितीर्थ' अवस्थित है।

पृष्ठचम्पा—बिहार।

पौरव—जैहलम के पूर्व में, पौरवों का राज्य—जहाँ सिक्न्दर पुर की 'अग्निपरीक्षा' पर चर्चित रह गया था।

प्रतिष्ठान—उत्पलखण्ड (बिहूर), जहाँ के (राजा अजानपद के पुत्र) मुख ने मधुरा में दोर तपस्या की थी। शक्तिग्रन्थों में गोदावरी के तट पर अद्य(इम)क (महाराष्ट्र) की (राजधानी) का उल्लेख 'महापुरी' प्रतिष्ठान नाम से हुआ है। इलाहाबाद के समुद्र गंगा पार झुंसी की आज भी 'प्रतिष्ठानपुर' कहते हैं। तिल पुरदासपुर (औदुम्बर) की राजधानी पठानकोट का भी पुराना नाम 'प्रतिष्ठान (कोट ?)' ही था।

प्रत्यग्रह—अहिच्छत्र ।

प्रभास—काठियावाड (जूनागढ़) में मोमनाथ का प्रसिद्ध तीर्थ, प्राचीन नाम देवपत्तन । यहाँ भगवान् कृष्ण का प्राणीत्सर्ग हुआ था ।

प्रयाग—प्राचीन कोसल का वह भाग, जिसकी राजधानी प्रसिद्धान (शूँसी) थी । इतिहास में पुरुरवा (दुष्यन्त), नहुष, ययाति, पुरु, भरत का सम्पर्क शहर से ही अधिक रहा है, आधुनिक श्लाहावाद ।

प्रवरपुर—प्रवरमेन द्वितीय द्वारा प्रतिष्ठापित (काश्मीर की राजधानी) श्रीनगर ।

प्रस्थल—किरोन्नपुर पन्चाला सिरमा के अन्तर्गत प्रदेश । (मार्क०)

इक्षवन्—गोदावरी के तट पर, जनस्थान में भोग्यात्मन (औरंगाबाद) की पहाडियाँ, जिन्हें रामायण में मात्स्यवान् (गिरि) भी कहा गया है ।

प्रह्लादपुरी—मुल्तान ।

प्राग्योतिष—प्राचीन 'कामरूप' की राजधानी—कामाख्या, गोहाटी ।

प्राच्य—(सरस्वती के) दक्षिण पूर्व का भारतवर्ष ।

कस्तुरी—निरंजना नदी—भगवान् बुद्ध के नव जन्म एवं बोध की भूमि । (अश्वमेध)

वर्ग—'बंगाल', किन्तु दे० पंचगौड़ ।

वद्री—यदुरिकाधम, वद्रीनाथ । दे० पंचवद्री ।

बालुकेश्वर—(बम्बई के निकट) 'मालाबार हिल' ।

बालोक्ष—बलोविस्तार । (अवदानकल्पलता)

बिन्दुसर—गोतरी के दो मील दक्षिण की ओर, 'रुद्र हिमालय' पर प्रसिद्ध सरोवर, जो भगोरव भी सपोमि था ।

वेत्सनागर—वैश्यनगर (?) भूपाल में, लौची के निकट, भीमसा से तीन मील पर, वैश्यनगर, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी था । दे० चैत्यगिरि ।

प्रक्षकुण्ड—महापुत्र का उदगम स्थान ।

प्रक्षदेश—बर्मा ।

प्रक्षनाल—काशी में, 'मणिकर्णिका' कुण्ड ।

प्रक्षपिदेश—महावर्त तथा यमुना के अन्तर्गत देश—जिसमें कुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल तथा शूरसेन समाविष्ट थे । (मनुसं०)

प्रक्षसर—रामहृद् ।

प्रक्षवर्त—सरस्वती तथा इषद्वती का 'मध्यप्रदेश', जो आर्यों का प्रथम 'वपनिवेश' था ।

भद्रा—यारुद, तथा बारकद की जलप्रपात नदी ।

भर (भृगु) कच्छ ?—मड़ोच, जहाँ कामन ने राजा बली का अभिमान भग किया था ।

भारतवर्ष—भरत के नाम से 'भारतवर्ष' कहलाने से पूर्व हमारे देश का नाम 'हिमाद्र' अथवा 'हिमवत' था । अर्थात् मूल अर्थों में भारतवर्ष 'उत्तर भारत' का नाम था । मार्कण्डेय तथा विष्णु पुराण के अनुसार भारतवर्ष की सीमाएँ थी—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र, पश्चिम में मवन तथा पूर्व में विराट् । दक्षिणावर्ध में प्रथम प्रवेश आस्त्य ने, पश्चात् अशोर के धर्म ने तथा समुद्रगुप्त की बाहुओं ने किया था ।

भार्गव—पश्चिमी आस्त्य । (महाभ०)

भाम्करक्षेत्र—प्रयाग । (प्रायश्चित्तनक्ष)

भोम(१)—विदर्भ (देश एवं नदी) ।

भोज (पाल)—मध्यभारत में, गंगा और वे बनावे (झीलें) के पालों (शायों) का नाम पर 'भूपाल' (देश) ।

भोटांग—नामीर—नामरूप के अन्तर्गत देश, भूटान, तिब्बत । (ताप्लेन्ड) ।

भानुदत्त—(अवध में) मन्दिग्राम, आदरसा—वहाँ भरत ने राम के विद्वेग में १४ वर्ष काटे थे । (मर्वावतार)

मगध—दक्षिण बिहार, जिसको राजधानी गिरिवज्र थी । अजातशत्रु ने वैशाली के बुज्जियों की उन्नति पर रोष रखने के लिए 'पाटलिग्राम' को नई राजधानी में परिवर्तन कर दिया था । यहीं पर भीम ने जरामन्थ का वध किया था ।

मणिवर्णिका—कुल्लू की पाटी में व्यास की एक धारा, जिसके निकट कुण्डों के गरम पानी में सन्जियाँ आग के बिना उबाली जा सकती हैं ।

मणितट—(आपाम में) मणिपुर । (मथ०)

मत्स्य—जयपुर का प्राचीन क्षेत्र, जिसमें अधु० अलवर तथा भरतपुर शामिल थे । पाण्डवों का अज्ञानवाम शर ही विराट के महलों में गुजरा था ।

मद्र—रावी नदी का मध्यदेश, जिसकी राजधानी शाकल (म्याल्कोट) थी । शन्य तथा अश्वपति (सार्विको का पिता) यहाँ के राजा रहे । 'माद्री' कन्या अपने रूप-लावण्य के लिए प्रसिद्ध थी ।

मधुपुरी—मधुरा (मधुरा) । इसे शत्रुघ्न ने बसाया था । मधु (राक्षस) की नगरी समवन । आत्मक की 'महोली' है (जहाँ 'मधुवन' तीर्थ भी है) ।

मध्यदेश—हिमगिरि, विन्ध्य, सरस्वती और प्रयाग के अन्तर्गत देश (जिसमें अन्तर्वेद सम्मिलित था), वीर ग्रन्थों का 'महिम्नदेश' । इसमें कुरु, पंचाल, मत्स्य, योष्य, कुन्ती, शरसेन आदि का समावेश होता था । (मनु०)

मध्यमराष्ट्र—दक्षिणकोसल, महाकोसल । (अर्धशास्त्र)

मन्दाकिनी—गङ्गा में, केदारपति से उद्गत, कालीगंगा । (मन्दारिनि)

मन्दारगिरि—भागलपुर की एक पहाड़ी, जो 'लमुद्रमन्थन' में मथन-दण्ड के रूप में प्रयुक्त हुई थी ।

मर—(यन्त्र, स्थल)—राजपूताना, मारवाड ।

मरुवृक्षा—मन्वदवा, असिनी (चनाब की एक धारा, 'मरु') के पश्चिम में ।

मयूर—हरिश्चर के निवृत्त, मायापुरी ।

मलयगिरि—पश्चिमी घाट का दक्षिण भाग, 'त्रावनकोर दिक्' ।

मलयालम्—मल्लार, मालबार—जिसके अन्तर्गत कोचीन त्रावनकोर का सारा प्रदेश था । (राजावली) ।

मल्लदेश—मालव-देश, मुलतान ।

मल्लराष्ट्र—मल्लराष्ट्र ।

महती, महिता—(मालवा में) माही नदी ।

महाकोसल—दक्षिणकोसल ।

महाकौटिक—नेपाल में सात 'वोसियों' से निर्मित एक और 'सप्तसिन्धु' देश, जहाँ 'तामोर-अरुणसुन' की 'त्रिनेणी' भी है ।

महाराष्ट्र—कृष्णा-गोदावरी के इस 'मध्यदेश' को पहले 'दक्षिण' भी कहा करते थे, अश्मक भी । अशोक ने यहाँ महाधर्मरक्षित को भेजा था । 'मान्धर्म्य, क्षत्रप, राष्ट्रकूट, चालुक्य-जिने ही राजवंशों के उत्थान पतन के अनन्तर, दक्षिण में, मराठों का युग आता है ।

महावन—वन, गोलुल ।

महिष(मण्डल)—मन्वदेश अथवा हृदय राज्य (अधु० मैसूर में कुछ अधिक), राज० माहिष्मती । यहीं शक्र तथा मण्डन मित्र का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था । (दापनश)

महेन्द्र—उड़ीसा से मधुरा तक व्यापक पवनशृङ्खला ।

महोत्सव—उद्देष्टा का 'महोवा', जिसके नाम पर वसी-वसी सारे के सारे बुन्देलखण्ड को भी महोत्सव कह देते थे । (प्रबोधचन्दोदय)

महोदधि—बंगाल की खाड़ी । (रघु०)

महोदय—कान्यकुब्ज, गाविपुर ।

मातंगी—य मरूप में, दक्षिण पूर्व की ओर, हीरों की खानों के लिए प्रसिद्ध एक 'फट्टी' ।

मानस—गङ्गा में निधन (हृणदेश) में केलाय के चरणों में प्रसिद्ध पुण्य स्थान ।

मायपुरा—मयूर । हरिद्वार-जनखण्ड मयापुरी की त्रिपुरी ।

मारकण्ड—समरकण्ड ।

मारव—मारवाड, मरस्थल ।

मातिनावन—मल्ल (शाख) ।

माल()—(विदेह के पूर्व तथा मगध के उत्तर पश्चिम में) एक 'इयायल' देश ।

मालिनी—हरितनापुर के निकट की 'मन्नाकिनी', जिस पर कण्व ऋषि का आश्रम था ।

माल्यवद्—गुप्तमद्रा पर मलयगण गिरि ।

मित्रवन—मुलवान ।

मिथिला—मनपुर, विदेह । 'मन्नाकिनी' विश्वविद्यालय की स्थापना ने मिथिला एवं विजयशिला को मृन्निक्षेप कर दिया था ।

मीनाक्षी—मधुरा ।

मुक्तेश्वरी—शङ्खाबाद की 'मुक्तेश्वरी' के विपरीत, दुयली पर त्रिवेणी या 'विप्रलम्भ' संगम ।

मुण्डा—टीग नामपुर में, जि० रांची ।

मुद्रग(ल)गिरि—(विहार में) मुगद, "हों कभी मुद्रगल ऋषि का आश्रम था और जहाँ मुद्र के महान् (नय मोगलायत न 'श्रुतिविमोदि' श्रेष्ठी की धर्म में दीक्षित किया था । (भारतमाहात्म्य)

मुरा—माना की एक धारा । नमदा । मरल = मालावार ।

मू(मी)पवत्—बादमीर में एक पर्वत, जिस पर सोम बहुत था ।

मूलस्थान—मातृस्थान (?), मुलवान । प्रसिद्ध ऐतिहासिक पूछे ने नाम—'भुलपति' के आधार पर इसे 'सृष्टि का उद्गम' माना है । पौराणिक गाथाओं के अनुसार वहाँ मृमिह से द्वारा हिरण्य गशिपु का वध हुआ था, जो, इसका एक नाम महादपुरी (अर्थात् 'होली' का मूलस्थान) भी है । उपचरित के अनुसार मालवदेश, रामायण के अनुसार मल्लदेश भी । मूलानियों ने इनके को हिरण्यपुरी (हिरण्यगशिपु की पुरी, होला = हिरण्य = Aura ?) कहा है ।

मृषिक—जिध का ऊपर का भाग, रघु० 'अलौर' ।

र(मि)गदाव—सारनाथ, 'वन्म-इपवन' या 'मुल विहार' ।

मुक्तिवर्षा—पञ्चांश (वनाम्) पर मोक्ष-गाथाओं का एक देश, मार्त्त = मारवाड ।

मेकल—विजय वा पण्डित, अमरकण्टक शृङ्खला, 'मेकलकम्बका' (नर्मदा) का उद्भव ।

मेवना (द)—पू० ब्रह्म की एक नदी । आगाम में, 'समुद्रोमुख' मलयुव ।

मेदपान—मेवद ।

मेहलु—मसु (बाबुल) की एक धारा ।

मेनारु—'विवालि' शृङ्खला ।

मोक्षदा—हरिद्वार, मधुरा, काशी, काशी आदि (मान) 'मोक्षदा' पुरी मानी गई है ।

मौलि—'रोहतम हिरा' ।

मौलिना(स्था ?)न—मालव, मल्ल, मूल-स्थान, मुलवान ।

यज्ञपुर—उड़ीसा में बैतरणी नदी पर, ययातिपुर—जो छठी-दसवीं सदियों में बैसरी राजवंश की राजधानी था ।

यव—'जावा' द्वीप, जिसे गुजरात के एक राजकुमार ने सातवीं सदी के आरम्भ में बसाया था । (महाकाण्ड०)

यवननगर, जूर्णनगर—गुजरात का जूनागढ़ । वसु नदी का क्षेत्र, अश्मक 'अक्सियाना', जहाँ (५वीं सदी ई० में) हूणों की एक उपजाति 'ज्वॉ-ज्वॉ' (यवनी) रहा करती थी । (रघु०)

युक्तेष्णी—बंगाल की 'विप्रलम्भा' मुक्त्येषी के विपरीत, प्रयाग की 'सम्भोगिनी' त्रि-वेणी ।

यौधेय—बदायलपुर का जोहिय बाड़, जो महाभारत तथा युगयुग में यौधेयों का सीमान्त था । बाइबिल में इन्हें 'दुर' तथा १६वीं सदी के यात्रावृत्तों में 'आयुध' कहा गया है ।

रत्नद्वीप—मिहल ।

रत्नपुर—विलामपुर के १५ मील उत्तर, (मयूरध्वज हैद्यों की) दक्षिणकोसल की राजधानी ।

रथस्था—अवध की राप्ती (रेवती) नदी ।

रन्तिपुर—गोमती तट पर 'रिन्ताम्बूर' । गोमती (चर्मजली) के तट पर रत्नदेव का दैनिक 'गोमहल साव' (यज्ञ) होता था ।

रसा—अवस्ता की 'रन्हा' नदी, अथवा यूनानियों की 'रक्माटिस'—जो शकों नामों हूणों का मूल-आवास थी ।

रसातल—कैस्पियन सागर के उत्तर की ओर, हूण राज्य, पश्चिमी तानार । हूणों की विभिन्न नानियों के आधार पर रसानल के सात लोक थे—अतल, नितल, बिदल, तलानल, महातल, सुतल, पाताल (?) ।

राजारह—मगध की प्राचीन राजधानी, जिसे (गिरिवज्र ने उत्तर में) विभिसार ने बसाया था ।

राजपुरी—(काश्मीर में) पुछ के द० पू०, 'राचीरी' ।

राड़—'पंचगौड़' का पश्चिमी प्रदेश ।

रामगिरि—कालिदास के यज्ञ की तथा रामायण के शम्भूक की तपोभूमि—मध्यभारत में, 'रामटेक' पर्वतशृङ्खला ।

रामणीयक—आर्मीनिया । (महा०)

रामदासपुर—अधुतसर—गुरु नानक का, रामदास द्वारा प्रस्तुत, 'शान्ति नरेतन' ।

रामद्वद—(कुवक्षेत्र में) 'ब्रह्मसर' तीर्थ, जो राजा कुरु की तपोभूमि, पुरूरवा उर्वशी की मरेण भूमि तथा कृत्र की मृत्युभूमि था । यहीं 'प्रतिष्ठा'-मंग कर कृष्ण ने भीष्म के विशद 'सुदर्शन चक्र' उठाया था—चक्रतीर्थ ।

रामेश्वरम्—सिंहल तथा भारत के मध्य, सेतुबन्ध ।

रावणद्वद—वैलास ने निकट, 'अनन्ततप्त' सरोवर, रावण की तपोभूमि ।

रैवती—अचिरायती (राप्ती) ।

रैषा—नर्मदा—

रैवत (तक्ष)—जैन सन्त नेमिनाथ की जन्मभूमि, गुजरात का गिरिनार पर्वत ।

रोह (हि)—अफगानिस्तान ।

रोहितक—बंगाल के शाहाबाद जिले में विन्ध्य की एक शाखा, रोहिताश्व (श्व) । पंथाव ने 'रोहितक' का स्थापक रोहिताश्व (हरिश्चन्द्र का पुत्र) नहीं था—अपितु यह नाम ही स्वयं 'बहु-धञ्ज' का पर्याय एवं अपभ्रंश है ।

रौंका—विन्ध्याचल, जो कि भारत की रीठ (तु० पतानी में 'रुक्') है । रावण की 'रुक्' (गोंडवाना ?) कहीं विन्ध्य शिखर पर थी—जहाँ के गोंड आजकल भी अपने को रावण व वंशज बताते हैं, जहाँ ने ओरबा आज भी अपने को वानरों के वंशज बताते हैं, जहाँ हर टील् (मृक) की 'रौंका' तथा हर नदी को 'गोदा' कहते हैं । स्वयं रामायण के अनुसार अयोध्या

किष्कि ध्या-रुवा २०० मील का अन्तर था। बराहमिहिर के अनुसार उज्जयिनी और रुवा पर दो अक्षांश पर स्थित थीं, पुराणों के अनुसार भी रुवा तथा मिहल दो भिन्न भिन्न द्वीप हैं। सातृश्य का प्रथम 'आरोध', सभरत, चर्मनोत्ति में मिलना है, और आज तो 'सेतुबन्ध' आदि किनारे ही 'तीर्थों' ने इतिहास की स्पष्टता एवं परम्परा को सर्वथा धूमिल कर दिया है।

ल(न)वपुर—लवकोट, लोमपुर, लौहोर (राजत०), लोहोर।

ला(ना)ट (देवा)—दक्षिण गुजरात (माही-ताप्ती का दोआब)।

ली(नी) राजल (न)—बुद्ध तथा सुआना की तपोभूमि-पुनर्वर्धभूमि—निर्जना(रा), फल्लु।
(अभयपोष)

लुमि(क्षि)नी—नेपाल की तराई में, 'रम्मेन्द्रे'—भगवान् बुद्ध का जन्म तपोवन, जिसका स्थान बौद्धों के ८ चैत्यों में प्रथम है।

लोअकानन—कुमाऊँ में, गंग कवि का आश्रम, 'लोधमूना'। (रघु०)

लौहिर्य—ब्रह्मपुत्र नदी, जहाँ परशुराम ने मातृहत्या के पाप को भीषा था, कालिदास के दिनों में प्राग्ज्योतिष की सीमा।

लक्ष्—बल्लु, रक्षु, पल्लु—भौकमम् अर्थात् आम्र दरिया।

लश—लक्ष (देश)।

लटपल्लपुर—गायकवाक की राजधानी, बमोदा।

लक्ष्—ललाहाबाद के पश्चिम में उदयन का राज्य, राज० कौशाभी।

लन—ब्रजमण्डल के १२ वर्गों—वृन्दा, मधु, लुमुर आदि—का सर्वनाम, वामनपुराण के अनुसार कुक्षेत्र के ७ वर्गों का।

लरदा—मध्यभारत में 'बर्षा' नदी।

लराहक्षेत्र—काश्मीर में, जेहलम के तट पर, 'बाराभूला'।

लर्धमान (कोटि)—काशी तथा प्रयाग का मन्व्यवर्ता, अस्थिर (ग्राम), जहाँ महावीर ने 'क्षेत्र' 'सिद्धि' पारर प्रथम 'वर्षा' वितार्थ की।

लर्षे—लराहपुराण में वर्णित—जीर, निषध, वेत, हेम, हिमवत, शृङ्गवत—६ पर्वत।

ललभि—ललभि युग में सुराष्ट्र की राजधानी।

लशिष्टाश्रम—अवध में अशुंद (आव्) पर्वत पर, तथैव कामरूप में, लशिष्ट का तपोवन।

लसुधारा—भलकमन्दा।

लसोटक—हैदराबाद-दक्खिन में, कैल्लिह बवनों का—तथा अनन्तर (बाकाटक) विन्ध्य शक्ति द्वारा सत्पापिन गुह्यराजनी—राज्य।

लानापिपुर—बीकानूर में, 'काशी'—जो छोटी नदी में महाराष्ट्र राज पुलकेशी की राजधानी थी।

लामनस्थली—जूनगढ़ के निम्न, बनधाली। राजस्थान की 'बनस्थली' (?)।

लारणसी—'वरणा' तथा 'अस्सी' के संगम पर अवस्थित होने से, काशी का पर्याय नाम।

लारमोहिआश्रम—जानपुर से १४ मील दूर, विहूर (उत्पलारण्य)—जहाँ भगवान् राम ने यक्षिण अश्व को लव बुद्ध ने भीष किया था।

लशिष्टी—गोमती नदी, चर्मवती (?)।

लार्दीक—व्यास तथा समलन का दोआब (वेन्ग के उत्तर में), पञ्जाब।

लार्दीक—ल(१)द्वीप, रेवित्या की राजधानी, बल्लु। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने, शकपिपति को बल्लु तक पदेष्ट कर, मानी बराह-अवतार द्वारा पृथ्वी का उद्धार करते हुए भुवस्वामिनी तथा गुप्तसाम्राज्य की 'नन्त्र रक्सी' थी। (मेहरीनी अभिलेख, मुद्रारक्षम, रघुवंश)

लिरमपुर—दावा में, 'बल्लालपुरी'—आदिशूर की तथा सेन राजाओं की राजधानी।

- चित्रमशिला—आठवीं सदी के राजा धर्मपाल द्वारा स्थापित बौद्ध विहार, जिम्का महत्त्व, आतिर, 'नवद्वीप विद्यापीठ' की स्थापना के अनन्तर ही कुछ घटा था।
- विजयनगर—बंगाल के राजशाही डिवीजन में, सेन राजाओं की राजधानी। विद्यानगर।
- विनस्ता—विन्मसा (?) , वेहलम (नदी)।
- विदिशा—मालवा में बेनवा (वेन्नवती) नदी पर गीन्सा, जो प्राचीन दशार्ण की राजधानी थी, विशाला। (मेम०)
- विदेह—दरभंगा में जनरपुरी, तीरमुक्ति (निरहुन), मिथिला, जनस्थान।
- विद्यामगर—गुप्तभद्र पर विजयनगर के ब्रह्म राजाओं की राजधानी, विजयनगर।
- विनशन—कुश्नेत्र (सरहिन्द, पटियाला) में जहाँ मस्बनी कुत हो चानो हैं, वह तीर्थ।
- विनादिनी—गुजरात में बनाम नदी।
- विनीतपुर—उद्योमा में, कटक।
- विन्ध्यपाद—ताप्ती आदि का उद्गम, 'सप्तपुडा' पर्वनश्रेणी।
- विपादा—ग्यास नदी।
- विराटनगर—मत्स्यदेश, जयपुर—पण्डितों का महानवासगृह।
- विशाला—अबनी की राजधानी, उज्जैन (उज्जयिनी)। बौद्ध युग में वैशाली की राजधानी, बसाइ।
- विशाखा (पत्तन)—विजगापट्टम्।
- विश्वामित्राश्रम—जहाँ गङ्गा का बंध हुआ था, बिहार के शाहाबाद जिले में बक्सर, वेदगर्भपुरी।
- वीनभयपत्तन—प्राचीन 'वीचिग्राम', अन्नाहाबाद से १२ मील दक्षिण पश्चिम, 'विठा'—जहाँ कई ऐतिहासिक मुद्राएँ मिली हैं।
- वृद्धकाशी—नगम का तीर्थ, 'पुद्गुवेलिगोपुरम्'।
- वैकटगिरि—मद्रास में, तिरुचि के निकट, 'तिरुमलई' पर्वत।
- वैंगी—गोदा-कृष्णा के अम्नगैंग, आन्ध्रों की राजधानी।
- वैण्डी—कृष्णा नदी।
- वेन्नवती—बेनवा नदी।
- वेदारण्य—सजोर में, अगस्त्य का तपोवन।
- वेदगर्भपुरी—बक्सर, 'जहाँ विश्वामित्र को 'गायत्री' ने आलोकित किया था।'
- वेन—मध्यमार्तीय गंगा, गोदावरी की एक धारा।
- वैकुण्ठ—साम्रलिसी पर एक तीर्थ।
- वैतरणी—परशुराम के भगीरथ प्रयत्न से 'अवतारित', उड़ीसा की गंगा—जहाँ कभी ययाति-पुर बना था।
- वैशाली—मगध विदेह के मध्य का प्राचीन साम्राज्य, जो आजकल मुजफ्फरपुर जिले का दक्षिणी भाग ठहरता है। बौद्ध युग में यह बुद्धियों-लिखतियों की राजधानी थी।
- व्याघ्रसरोवर—बक्सर, विश्वामित्राश्रम।
- शकरतीर्थ—नेपाल में, जहाँ शिव ने 'पार्वती विजय' के लिए तप किया था।
- शंकराचार्य—काश्मीर में, 'तस्ते सुलेमान', सन्धिमान गिरि।
- शंकास्य—कान्यकुब्ज।
- शकस्थान—भीस्तान, शकों का मूल देश जहाँ से वे मध्य-एशिया की ओर बढ़े।
- शतद्रु—मनलज।

रामवृकाश्रम—मध्यभारत में, रामगिरि (रामटेक) । (रामा०)

रार्यणावत्—रामहृद, ब्रह्मसरोवर ।

शाकभरि—पश्चिमी राजपूताना में, 'सामर'—वहाँ शमिष्ठा ने देवयानी को 'देवीरानी' रूप में दबेल दिया था ।

शाकद्वीप—मध्यएशिया में 'शक-भूमि', 'तारतरी'—बोखारा तथा समरकन्द के मध्यगन 'साश्शिया' अथवा 'सोन्दिहाना' ।

शाकल—मद्र देश की राजधानी, स्वानकोट ।

शान्ति—साँची । (महा०)

शाङ्गनाथ—सारनाथ ।

शालानुर—प्राचीन गान्धार में, पाणिनि की जन्मभूमि ।

शालमली (द्वीप)—काल्पया । मैसोपोटामिया । मीरिया । (ब्रह्माण्ड०)

शाल्व—कुरुक्षेत्र के निवृत्त सत्यवाच के पिता सुगमसेन का राज्य, जिसमें जोधपुर, नयपुर, अलवर शामिल थे—मार्तिकावत । शाखपुर = सौभनगर (अलवर) उसकी राजधानी थी ।

शिवालय—एलोरा ।

शिरोवन—प्राचीन चेर (केरल) की राजधानी, तटवल् ।

शुक्तिमती—(उड़ीसा में) सुवर्णरेखा नदी ।

शुद्धक—मिन्ध तथा सनलन के मध्यगन देश, राज० उच्च ।

शूरसेन—कृष्ण के बाबा क नाम से विख्यात राज्य, राज० मथुरा ।

शुपरक—सुपारग, चरत ।

शुद्धगिरि—शुद्धेरी, दक्षिण में वहाँ वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए शकराचार्य ने अपने चार मठों में एक स्थापित किया था ।

शोषाद्रि—त्रिपदी, निरुपति, निरुमल्ल ।

शोवाल—शिवालय, एलोरा । रामटेक । (रामगिरि)

शोण—गौडवाना में अमरकण्टक से उद्गम नदी, जो मगध की पश्चिमी (प्राकृतिक) सीमा थी ।

शोणप्रस्थ—मोनीपत ।

शोणितपुर—कुमाऊँ में, वैद्यारगंगा (मन्दाकिनी) के तट पर, एक नगर ।

आमाम में, आधु० तैलपुर ।

शौरिपुर—नेमिनाथ की जन्मभूमि, मथुरा । मध्यदेश की 'शौरसेनी' हमारी (वर्तमान) 'राष्ट्र भाषा' की जननी थी ।

शवणाश्रम—अवध में, जहाँ दशरथ ने शिकार करते हुए अग्ने माना-पिता के शकलिते बड़े शवण को भूल से मार डाला था ।

श्रावस्ती—अवध में, गौता तिले में, राप्ती नदी के तट पर, आधु० 'सहेन महेन' । बुद्ध-युग में श्रावस्ती गौरव के शिखर पर थी ।

श्रीपथ—नयपुर से १० मील उत्तर में, 'विमाना'—'वधवमपुरी' ।

श्रीप(१)द—सिंहल का 'शुद्धज जिन' ।

श्रीकण्ठ, कुरुनागल, महाकान्तार—निसकी राजधानी विलासपुर थी ।

श्रीसैत्र—उड़ीसा में, पुरी ।

श्रीनगर—कादमीर की राजधानी, जिसकी स्थापना ५वीं सदी में प्रवरसेन द्वितीय ने की थी ।

श्रीरंगपट्टन—(मैसूर में) आधु० 'मेरिंगपट्टन' ।

श्रीरील—कृष्णा के दक्षिण में एक तीर्थ पर्वत ।

श्रीस्थानक—(बम्बई में) 'थाना', जो अभी उत्तरी कोङ्कण की राजधानी था ।

श्रीहट्ट—मिस्हेन । (योगिनी०)

श्लेष्मातक—नेपाल में, पशुपतिनाथ के उत्तर-पूर्व, उत्तर-मोरुण ।

पद्मी—रम्बर से १० मील उत्तर की ओर, मानमेन दीप ।

मंगम (तीर्थ)—रामेश्वरम् ।

मंज्या—मालवा में, यमुना की धारा, सिन्धु ।

मदानीरा—प्राचीन पुण्ड्र की एक नदी, जो 'पार्वतीपरिणय' के क्षण में शिव के दाह में छूटे पसीने से जनमी थी—करतोया । गण्डकी । राप्ती ।

मपादलस—शाकम्भरि ।

सप्तकुलाचल—महेन्द्र, मलय, मध्य, सुक्तिमान्, गन्धमादन, विन्ध्य, पारिवात्र ।

सप्तगंगा—गंगा, कावेरी, गोदावरी, नागपर्णी, सिन्धु, सरयू, नर्मदा ।

सप्तगंडकी—गंडकी के 'सप्तमुख' ।

सप्तगोदावरी—गोदावरी के 'सप्तमुख' ।

सप्तद्वीप—जम्बु, प्लक्ष, शाल्वन्ती, कुश, कौञ्ज, वाक, पुष्कर ।

सप्तमोक्षदापुरी—दे० मोक्षदा ।

सप्तर्ष—महाराष्ट्र में सतारा ।

सप्तसागर—जम्बुद्वीप (भारत) की 'समुद्रीय' सीमाएँ—स्वर्ण, क्षीर, सुरा, घृत, रघु, दधि, स्वादु ।

सप्तसिन्धु—पञ्जाब, प्राचीन भारतवर्ष । (उत्तरापथ)

सप्ततट—बग अर्थात् पूर्वा बंगाल ।

सप्तपञ्चक—कुश्नेत्र ।

सरयू—(अवध में) पागला नदी ।

सरोवर—महाण्डपुराण के मानस आदि १२ तीर्थसर, विशेष बाराणससर ।

सह्याद्रि—कावेरी के उत्तर में, पश्चिमी घाट की उत्तरी शृङ्खला (मलयादि) । कावेरी का एक नाम सह्याद्रि जा भी है ।

साची—भीमसा के द० पू० में, प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ, शालि ।

साकेत—अवध, अयोध्या ।

सागरसगम—'गंगासुख' पर कपिलाश्रम, जहाँ मगर के महत् पुत्र 'भन्म' हुए थे ।

साभ्रमती—साबरमती ।

साम्बपुर—मुलतान ।

सारस्वत—अजमेर में, पुष्कर सरोवर ।

सिंहल—सीलोन । लंका कुछ ओर थी—'विन्ध्यपाद' में ।

सिद्धपुर—कपिल ऋषि की जन्मभूमि, भगीरथ की तपोभूमि—विन्धुसर ।

सिद्धाश्रम—शाहजहाँ में, बक्सर—जहाँ विष्णु ने वामनावतार ग्रहण किया था ।

सिन्ध्रा—मालवा में, 'शिव्रा' नदी—जिस पर उज्जैन बसा था ।

सुगन्धा—गोदावरी पर, नासिक ।

सुदर्शन—जम्बु दीप । काठियावाड़ की प्रसिद्ध ऐतिहासिक शील, जिसका सौर्यकाल में निर्माण तथा, गुप्त युग तक, कितनी ही बार 'उद्धार' हुआ था ।

सुदाम(ग)पुरी—गांधी तथा कृष्ण की 'नन्मभूमि', पोरबन्दर । (कीर्ध)

सुपारग—शूर्पारक, सरत ।

सुप्रहृष्य—मद्रास में, कुमारस्वामी (तीर्थ) ।

सुभद्रा—इरावती नदी ।

(सु)मागधी—पटना की शोण नदी, जिस पर कभी राजकुँह बना हुआ था ।

सुमनस्य—श्रीप(१)द ।

सुमेरु—गङ्गा में, बदरीनाथ के निकट, पञ्चपर्वत (मद्र हिमा०)—स्वर्णगिरि अथवा हेमकुट नहीं ।

सुरय (अद्रि)—नर्मदा आदि का क्षेत्र, अमरकण्ठक ।

सु(मी)राष्ट्र—सूर्यपुर, सुपारम (मृग), कठिवक्ता तथा सुन्दर का कुछ अर्थ ।

सुगन्धु—गन्धर्वदेश की नदी, स्वान ।

सुवर्णसूक्ति—शङ्खदेश (वसा)

सुवर्णगिरि—(गैर म) मास्वी । अशोक के समय में चार 'रावणा' क्षत्रिय—दक्षिण, उत्तर, नैऋत्य तथा सुवर्णगिरि ।

सुवर्णप्रात—(दाका में) मानारगाँव ।

सुवर्णरेखा—गिरिनार की पलाशिनी । चढीना की कविता ।

सुद्ध—यम तथा कल्पि क अन्तर्गत देव, राक्ष, दे० पञ्चमी ।

सूर्यनगर—श्रीनगर ।

सूर्यपुर—मृग । यहाँ शक्राचार्य ने अपनी 'वदार्थ' रची थी ।

सुनुवन्त—भारत तथा सिंहल के बीच में, श्रीप(१)द ।

सोम पर्वत—अमरकण्ठक ।

सोमनगर—शास्वपुर (अन्वर) ।

सौवीर—विन्ध्य तथा मद्र का अन्तर्देश (योधेय ?) ।

सौराज्य—कुमाऊँ अथवा गङ्गा का पुराना नाम । महाभारतयुग में ददा शिवों का अनुत्पन्न होता था—प्रसीत ने श्वर हा अनुत्पन्न में लोहा लिया था । (वि० पुरुषपुर)

स्थाने(श्वी)श्वर—धानेसर (कुरुक्षेत्र), स्थानुवीर्य ।

सुत—तीनसर जिनमें, काशी ।

हमद्वार—श्रीशिवार ।

हम्याहरण—अथवा म, हरद्वार में २८ मील उत्तर-पूर्व, एक तीर्थ—जहाँ भगवान् राम ने (१ वग) मन्मथता का पाप प्रशान्त किया था ।

हरकल—वग, दे० 'पञ्चमी' ।

हरसेन—सुवर्णेश्वर ।

हरिद्वर्ष—उत्तर कुट, जिसमें विन्ध्य का दक्षिणी भाग शामिल था ।

हस्तिनापुर—कुशों की प्रान्त राजधानी, राजमाहारा, किन्तु जनमेजय के दो पीढ़ी बाद, नयी राजधानी काँताम्बी हो गई थी ।

हिरण्यपर्वत—सुदग(ल)गिरि, सुगिर ।

हिरण्यवाहु—शाण नदी ।

हृषीकेश—बदरीनाथ तथा हरिद्वार के मध्यस्थित प्रसिद्ध तीर्थ, 'अपिदेश' ।

हेमकुट—वैष्णव ।

हेमवन्त—भारतवर्ष ।

हेमवती—गङ्गा के निकट, महाद से उद्गत अपिकुल्या नदी । इरावती । शतद्रु (मठुन), या विश्व के इतिहास में सौमी भारत में पृष्ठ गरी ।

हेडय—अनूपदेश अथवा 'माहिष्मती राज्य' अथवा मालवदेश ।

ह्यादिनी—शङ्खपुर नदी ।

सहायक ग्रन्थों की सूची

हिंदी-ग्रन्थ

- १ हिन्दी शब्दसागर—नामरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
- २ भाषा शब्दकोश—डा. रमादाकर शुक्ल ।
- ३ हिन्दुस्तानी कोश—श्री रामनरेश त्रिपाठी ।
- ४ प्रामाणिक हिन्दी कोश—श्री रामचन्द्र वभा ।
- ५ हिन्दी पर्यायवाची कोश ।
- ६ पारिभाषिक शब्दकोश—श्री मुकुन्दलाल श्रीवास्तव ।
- ७ भारत भूमि और उसके निवासी—श्री जयचन्द्र बिद्यालक्षार ।
- ८ भारत के इतिहास की रूपरेखा— " "
- ९ इतिहास प्रवेश— " "
- १० इतिहास मीमांसा— " "
- ११ पाणिनिवाचीन भारतवर्ष— डा. वासुदेवशरण अग्रवाल ।
- १२ हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन— " "
- १३ भारत ब्राह्मण (बेंगला)— घोषाल
- १४ केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् की शब्द सूचियाँ ।
- १५ बृहत् हिन्दी कोश—पण्डित प्रसाद ।

संस्कृत-ग्रन्थ

- १ पद्मचन्द्रकोश ।
- २ संस्कृत हिन्दी कोश—भाष्ये ।
- ३ वाचस्पत्य कोश ।
- ४ शब्दवत्पद्म ।
- ५ शब्दार्थचिन्तामणि ।
- ६ अमरमिह, हेमचन्द्र, केशव, हलायुध आदि कोश ।
- ७ सिद्धान्तकौमुदी ।
- ८ शुभाधिनरत्नभांडायार ।
- ९ शुभाधिनरत्नाकर ।